श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी

जैन कोन्फरन्स

स्वर्ण-जयन्ती-ग्रन्थ

स्थापना
मन् १९०६

स्वर्ण-जयन्ती
सन् १९५६

सपादक
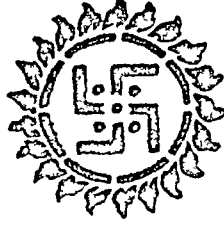
भीखालाल गिरधरलाल शेठ
धीरजलाल के० तुरखिया

प्रकाशक

अ. भा. श्वे. स्था. जैन कॉन्फरन्स

१३९० चाँदनी चौक, दिल्ली

ई० सं०
१९५६

[तेरहवां अधिवेशन]
भीनासर-बीकानेर
ता० ४-५-६ अप्रैल ५६

वी० स० २४८२
वि० स० २०१२
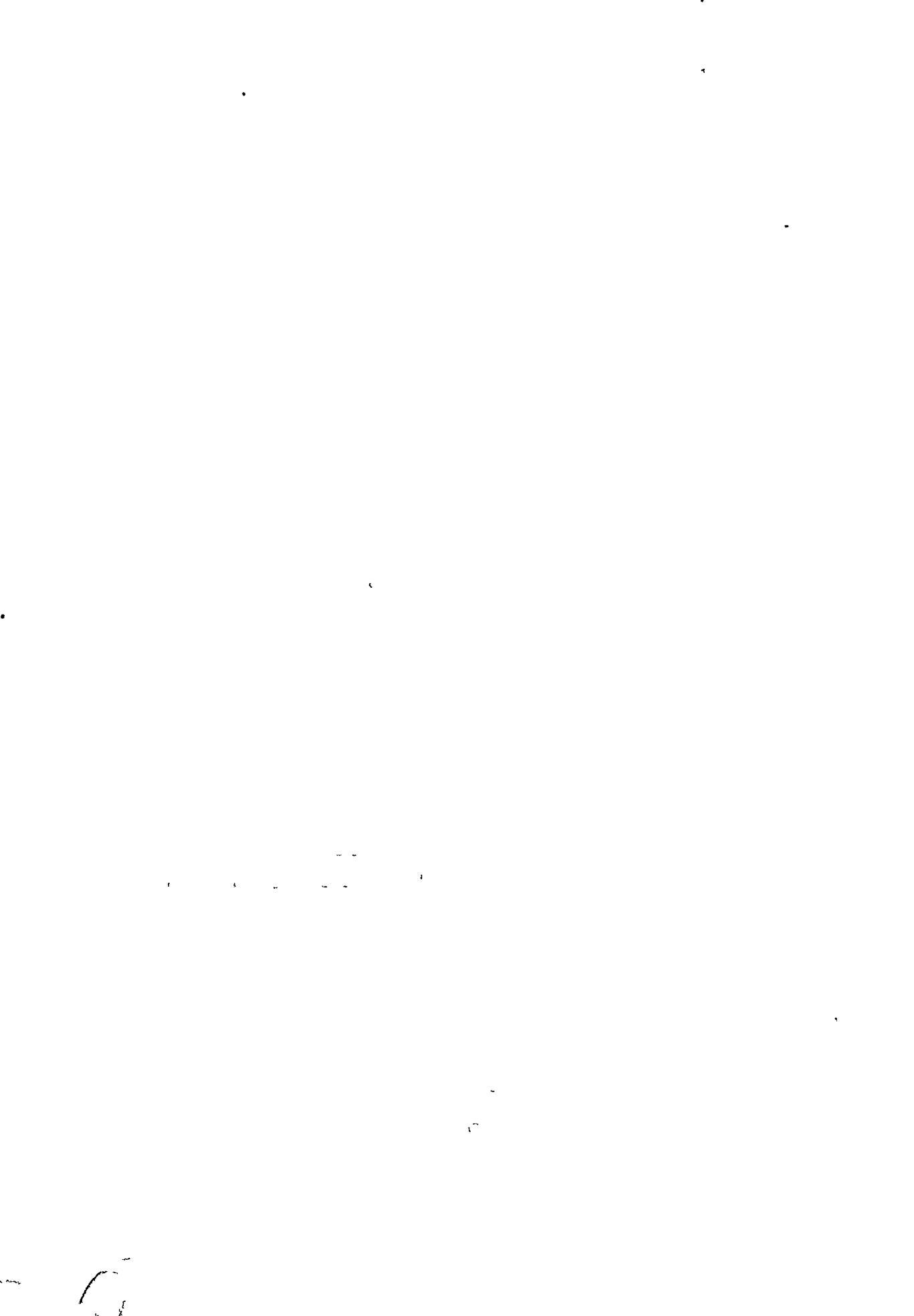
आमुख

श्री अ० भा० श्वे० स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स के ५० वर्षीय स्वर्ण-जयन्ती अधिवेशन के शुभ-प्रसंग पर कॉन्फरन्स के संक्षिप्त इतिहास-ग्रन्थ को प्रकाशित करते हुए अति हर्ष होता है। इस इतिहास का प्रकाशन का भी एक लघुतम इतिहास है। आज से छ माह पूर्व कॉन्फरन्स का इतिहास प्रकाशित करने का विचार उत्पन्न हुआ था और तभी इस विचार को मूर्त रूप देने का निर्णय भी किया गया। किसी भी इतिहास के आलेखन के लिये तद्‌रूप लेखन-सामग्री व्यवस्थित संपादन करने की समय-मर्यादा, तथा जैन समुदाय की सक्रिय सहानुभूति होना नितान्त आवश्यक है। किन्तु समयाभाव तथा कार्याधिकता के कारण इस स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ को चाहिए जैसा समृद्ध नहीं बना सके इसके लिये हमे खेद है। तदपि ग्रन्थ के गौरव को बढ़ाने के लिये यथाशक्य प्रयत्न किया है। हमको ज्ञात है कि इस जयन्ती-ग्रन्थ को चिरस्मरणीय बनाने के लिये इसके अन्तर्गत अनेक विषयो का समावेश करना अत्यावश्यक था किन्तु हमें यथासमय श्रावक-संघों श्रीमन्तों, विद्वानों तथा संस्थाओ के परिचय-पत्र नहीं मिल सके अत इस ग्रन्थ मे स्थान नहीं दे सके। इसके लिये हम क्षमा-प्रार्थी है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि यह ग्रन्थ स्था० जैन समाज की भावी डिरेक्टरी बनाने मे अवश्यमेव उपयोगी सिद्ध होगा।

यह ग्रन्थ निम्नोक्त नौ परिच्छेदों मे विभक्त किया गया है —

प्रथम-परिच्छेद में—जैन संस्कृति, धर्म, साहित्य व तत्वज्ञान का संक्षिप्त परिचय

द्वितीय-परिच्छेद में—स्थानकवासी जैनधर्म का संक्षिप्त इतिहास

तृतीय-परिच्छेद में—स्था० जैन कॉन्फरन्स का संक्षिप्त इतिहास

चतुर्थ-परिच्छेद मे—स्था० जैन कॉन्फरन्स की विशिष्ट प्रवृत्तियां

पचम-परिच्छेद में—स्था० जैन साधु-सम्मेलन का संक्षिप्त इतिहास

षष्ठम-परिच्छेद मे—स्था० जैनधर्म के उन्नायक मुनिराजों का संक्षिप्त परिचय

सप्तम परिच्छेद मे—वर्तमान स्था० साधु-साध्वी नामावली, स्था० जैन धर्म के उन्नायक श्रावकों का संक्षिप्त परिचय

अष्टम-परिच्छेद मे—स्था० जैन शिक्षण संस्थाओं, श्रीसंघो, प्रकाशन संस्थाओ तथा पत्र-पत्रिकाओ का संक्षिप्त परिचय

सक्षेपत इस जयन्ती-ग्रन्थ मे स्था० जैन समाज के चतुर्विध श्रीसंघ का संक्षिप्त परिचय देने का यथा-शक्य प्रयत्न किया गया है।

जैन शिक्षण संस्थाओं, प्रकाशन संस्थाओं और पत्र-पत्रिकाओं का इस ग्रन्थ में नाम-निर्देश के साथ परिचय देने का भरसक प्रयत्न किया है। विलंब से मेटर आने के कारण विशेष परिचय दे नहीं सके है इसके लिये क्षमार्थी है।

इस ग्रन्थ मे सार और असार का हसवृत्तिवत् विवेक करके सारवस्तु को ग्रहण करने तथा योग्य सूचना भिजवाने की विनम्र प्रार्थना है। ताकि भविष्य मे उसका सदुपयोग किया जा सके।

जिन २ धर्म प्रेमी बन्धुओं ने इस ग्रन्थ के गौरव को वृद्धिंगत करने मे अपने नाम अग्रिम ग्राहकश्रेणी मे लिखवाये है तथा लेखन, सशोधन एव प्रकाशनादि कार्यो में सक्रिय सहकार प्रदान किया है उन सबको हम इस स्थल पर आभार मानते हैं।

दिल्ली

ता० २६-३-१६५६

निवेदक

भीखालाल गिरधरलाल सेठ

धीरजलाल के० तुरखिया

सपादक—स्वर्ण-जयन्ती-ग्रन्थ

प्रथम-परिच्छेद

जैन-संस्कृति, धर्म, साहित्य व तत्त्वज्ञान का संक्षिप्त-परिचय

संस्कृति का स्रोत

संस्कृति का स्रोत ऐसे नदी के प्रवाह के समान है जो अपने प्रभव-स्थान से अन्त तक अनेक दूसरे छोटे-मोटे जल-स्रोतों से मिश्रित, परिवर्धित और परिवर्तित होकर अनेक दूसरे मिश्रणों से भी युक्त होता रहता है और उद्गमस्थान में पाए जाने वाले रूप, रस, गन्ध तथा स्वाद आदि में कुछ न कुछ परिवर्तन भी प्राप्त करता रहता है। जैन कहलाने वाली संस्कृति भी उस संस्कृति-सामान्य के नियम का अपवाद नहीं है। जिस संस्कृति को आज हम जैन-संस्कृति के नाम से पहचानते हैं उसके सर्वप्रथम आविर्भावक कौन थे और उनसे वह पहिले-पहल किस स्वरूप में उद्गत हुई इसका पूरा-पूरा सही वर्णन करना इतिहास की सीमा के बाहर है। फिर भी उस पुरातन-प्रवाह का जो और जैसा स्रोत हमारे सामने है तथा वह जिन आधारों के पट पर बहता चला आया है उस स्रोत तथा उन साधनों के ऊपर विचार करते हुए हम जैन-संस्कृति का हृदय थोड़ा बहुत पहिचान पाते है।

जैन-संस्कृति के दो रूप

जैन-संस्कृति के भी, दूसरी सस्कृतियों की तरह, दो रूप है। एक बाह्य और दूसरा आन्तर। बाह्य रूप वह है जिसे उस सस्कृति के अलावा दूसरे लोग भी ऑख, कान आदि बाह्य इन्द्रियों से जान सकते है। पर संस्कृति का आन्तर-स्वरूप ऐसा नहीं होता। क्योंकि किसी भी संस्कृति के आन्तर-स्वरूप का साक्षात् आकलन तो सिर्फ उसी को होता है जो उसे अपने जीवन मे तन्मय कर ले। दूसरे लोग उसे जानना चाहें तो साक्षात् दर्शन कर नहीं सकते। पर उस आन्तरसंस्कृतिमय जीवन बिताने वाले पुरुष या पुरुषों के जीवन-व्यवहारों से तथा आस-पास के वातावरण पर पड़ने वाले उनके प्रभावों से वे किसी भी आन्तर-रूप का, संस्कृति का अन्दाजा लगा सकते है। संस्कृति का हृदय या उसकी आत्मा इतनी व्यापक और स्वतत्र होती है कि उसे देश, काल, जात-पांत, भाषा और रीति-रस्म आदि बाह्य-स्वरूप न तो सीमित कर सकते है और न अपने साथ बांध सकते है।

जैन-संस्कृति का हृदय-निवर्त्तक-धर्म

अब प्रश्न यह है कि जैन-संस्कृति का हृदय क्या चीज है? उसका संक्षिप्त जवाब तो यही है कि निवर्त्तक धर्म जैन-संस्कृति की आत्मा है। जो धर्म निवृत्ति कराने वाला अर्थात् पुनर्जन्म के चक्र का नाश करने वाला हो या उस निवृत्ति के साधनरूप से जिस धर्म का आविर्भाव, विकास और प्रचार हुआ हो वह निवर्त्तक-धर्म कहलाता है। यह, निवर्त्तक-धर्म, प्रवर्त्तक-धर्म का बिल्कुल विरोधी है। प्रवर्त्तक-धर्म का उद्देश्य समाज-व्यवस्था के

साथ-साथ जन्मान्तर का सुधार करता है, न कि जन्मान्तर का उच्छेद। प्रवर्त्तक-धर्म के अनुसार काम, अर्थ और धर्म, तीन पुरुषार्थ है। उसमे मोक्ष नामक चौथे पुरुषार्थ की कोई कल्पना नहीं है। प्रवर्त्तक धर्मानुयायी जिन उच्च और उच्चतर धार्मिक अनुष्ठानों से इस लोक तथा परलोक के उत्कृष्ट सुखों के लिए प्रयत्न करते थे उन धार्मिक अनुष्ठानो को निवर्त्तक-धर्मानुयायी अपने साध्य मोक्ष या निवृत्ति के लिए न केवल अपर्याप्त ही समझते बल्कि वे उन्हें मोक्ष पाने मे बाधक समझ कर उन सब धार्मिक अनुष्ठानों को आत्यन्तिक हेय बतलाते थे। उद्देश्य और दृष्टि मे पूर्व पश्चिम जितना अन्तर होने से प्रवर्त्तक-धर्मानुयायियों के लिए जो उपादेय वही निवर्त्तक-धर्मानुयायियों के लिए हेय बन गया। यद्यपि मोक्ष के लिए प्रवर्त्तक-धर्म बाधक माना गया पर साथ ही मोक्षवादियों को अपने साध्य मोक्ष पुरुषार्थ के उपायरूप से किसी सुनिश्चित मार्ग की खोज करना भी अनिवार्य-रूप से प्राप्त था। इस खोज की सूझ ने उन्हें एक ऐसा उपाय सुझाया जो किसी बाहरी साधन पर निर्भर न था। वह एकमात्र साधक की अपनी विचार शुद्धि और वर्त्तन-शुद्धि पर अवलंबित था। यही विचार और वर्तन की आत्यन्तिक-शुद्धि का मार्ग निवर्त्तक धर्म के नाम से या मोक्ष-मार्ग के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

हम भारतीय-संस्कृति के विचित्र और विविध ताने-बाने जांच करते हैं तब हमे स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि भारतीय आत्मवादी दर्शनों मे कर्म-काण्डी मीमांसक के अलावा सभी निवर्त्तक धर्मवादी हैं। अवैदिक माने जाने वाले बौद्ध और जैन-दर्शन की संस्कृति तो मूल मे निवर्त्तक धर्मस्वरूप है ही पर वैदिक समझे जाने वाले न्याय-वैशेषिक, सांख्य, योग तथा औपनिषद-दर्शन की आत्मा भी निवर्त्तक-धर्म पर ही प्रतिष्ठित है। वैदिक हो या अवैदिक सभी निवर्त्तक-धर्म, प्रवर्त्तक-धर्म को या यज्ञ-यागादि अनुष्ठानों को अन्त मे हेय ही बतलाते हैं। और वे सभी सम्यग्‌ज्ञान या आत्मज्ञान को तथा आत्मज्ञानमूलक अनासक्त जीवन-व्यवहार को तथा आत्मज्ञानमूलक अनासक्त जीवन व्यवहार को उपादेय मानते है एवं उसी के द्वारा पुनर्जन्म के चक्र से छुट्टी पाना सम्भव बतलाते है।

निवर्त्तक-धर्म के मन्तव्य और आचार

शताब्दियों ही नही बल्कि सहस्राब्दि पहिले से लेकर जो धीरे-धीरे निवर्त्तक-धर्म के अङ्ग-प्रत्यङ्ग रूप से अनेक मन्तव्यो और आचारो का भ० महावीर-बुद्ध तक के समय मे विकास हो चुका था वे संक्षेप मे ये है :—

१. आत्म शुद्धि ही जीवन का मुख्य उद्देश्य है, न कि ऐहिक या पारलौकिक किसी भी पद का महत्त्व।
२. इस उद्देश्य की पूर्ति मे बाधक आध्यात्मिक मोह, अविद्या और तज्जन्य तृष्णा का मूलोच्छेद करना।
३. इसके लिए आध्यात्मिक ज्ञान और उसके द्वारा सारे जीवन व्यवहार को पूर्ण निस्तृष्ण बनाना। इसके वास्ते शारीरिक, मानसिक, वाचिक, विविध तपस्याओ का तथा नाना प्रकार के ध्यान, योग-मार्ग का अनुसरण और तीन, चार या पांच महाव्रतों का यावज्जीवन अनुष्ठान करना।
४. किसी भी आध्यात्मिक वर्णन वाले वचनों को ही प्रमाणरूप से मानना, न कि ईश्वरीय या अपौरुषेय रूप से स्वीकृत किसी खास भाषा मे रचित ग्रन्थों को।
५. योग्यता और गुरुपद की कसौटी एकमात्र जीवन की आध्यात्मिक शुद्धि, न कि जन्मसिद्ध वर्ण-विशेष। इस दृष्टि से स्त्री और शूद्र तक का धर्माधिकार उतना ही है, जितना एक ब्राह्मण और क्षत्रिय पुरुष का।

६. मद्य, मांस आदि का धार्मिक और सामाजिक-जीवन मे निषेध। ये तथा इनके जैसे लक्षण जो प्रवर्त्तक-धर्म के आचारों और विचारों से जुदा पड़ते थे वे देश मे जड़ जमा चुके थे, और दिन-ब-दिन विशेष बल पकड़ते जाते थे।

निग्रंथ जैन-धर्म

न्यूनाधिक उक्त लक्षणों को धारण करने वाली अनेक संस्थाओं और सम्प्रदायों में एक ऐसा पुराना निवर्त्तक-धर्मी सम्प्रदाय था, जो भ० महावीर के पहिले बहुत शताब्दियों से अपने खास ढंग से विकास करता जा रहा था। इसी सम्प्रदाय में पहिले अभिनन्दन ऋषभदेव, यदुनन्दन, नेमिनाथ और काशीराजपुत्र पार्श्वनाथ हो चुके थे, या वे इस सम्प्रदाय में मान्य पुरुष बन चुके थे। इसी सम्प्रदाय के समय-समय पर अनेक नाम प्रसिद्ध रहे। यति, भिक्षु, मुनि, अणगार, श्रमण आदि जैसे नाम तो इस सम्प्रदाय के लिए व्यवहृत होते थे पर जब दीर्घ-तपस्वी महावीर इस सम्प्रदाय के मुखिया बने तब संभवतः वह सम्प्रदाय 'निर्ग्रन्थ' नाम से विशेष प्रसिद्ध हुई। आज 'जैन' शब्द से महावीर-पोषित सम्प्रदाय के 'त्यागी', 'गृहस्थ' सभी अनुयायिओं का जो बोध होता है इसके लिए पहिले 'निग्गंथ' और 'समणोवासग' आदि 'जैन' शब्द व्यवहृत होते थे।

जैन-संस्कृति का प्रभाव

यों तो सिद्धान्ततः सर्वभूतदया को सभी मानते है पर प्राणिरक्षा के ऊपर जितना जोर जैन-परंपरा ने दिया, जितनी लगन से उसने इस विषय मे काम किया उसका नतीजा सारे ऐतिहासिक-युग मे यह रहा है कि जहां-जहां और जब-जब जैन लोगो का एक या दूसरे क्षेत्र मे प्रभाव रहा सर्वत्र आम जनता पर प्राणिरक्षा का प्रबल संस्कार पड़ा है। यहां तक कि भारत के अनेक भागों मे अपने को अजैन कहने वाले तथा जैन विरोधी समझने वाले साधारण लोग भी जीव-मात्र की हिंसा से नफरत करने लगे है। अहिंसा के इस सामान्य संस्कार के ही कारण अनेक वैष्णव आदि जैनेतर परम्पराओ के आचार-विचार पुरानी वैदिक-परम्परा से बिल्कुल जुदा हो गए हैं। तपस्या के बारे मे भी ऐसा ही हुआ है। त्यागी हो या गृहस्थ सभी जैन तपस्या के ऊपर अधिकाधिक झुकते रहे हैं। इसका फल पड़ौसी समाजो पर इतना अधिक पड़ा है कि उन्होने भी एक या दूसरे रूप से अनेकविध सात्विक तपस्याएं अपना ली है। और सामान्य रूप से साधारण जनता जैनो की तपस्या की ओर आदरशील रही है। यहां तक कि अनेक बार मुसलमान सम्राट् तथा दूसरे समर्थ अधिकारियों ने तपस्या से आकृष्ट होकर जैन-सम्प्रदाय का बहुमान ही नहीं किया है बल्कि उसे अनेक सुविधाएं भी दी है, मद्य-मांस आदि सात व्यसनों को रोकने तथा उन्हे घटाने के लिए जैन-धर्म ने इतना अधिक प्रयत्न किया है कि जिससे वह व्यसनसेवी अनेक जातियों में सुसमर्थ हुआ है। यद्यपि बौद्ध आदि दूसरे सम्प्रदाय पूरे बल से इस सुसंस्कार के लिए प्रयत्न करते रहे पर जैनों का प्रयत्न इस दिशा मे आज तक जारी है और जहां जैनों का प्रभाव ठीक-ठीक है वहां इस स्वैर-विहार के स्वतंत्र युग में भी मुसलमान और दूसरे मांसभक्षी लोग भी खुल्लम-खुल्ला मद्य-मांस का उपभोग करने मे सकुचाते है। लोकमान्य तिलक ने ठीक ही कहा था कि गुजरात आदि प्रान्तों मे जो प्राणिरक्षा और निर्मांस-भोजन का आग्रह है वह जैन-परम्परा का ही प्रभाव है।

जैन-विचारसरणी का मौलिक सिद्धान्त यह है कि प्रत्येक वस्तु का विचार अधिकाधिक पहलुओं और अधिकाधिक दृष्टिकोणों से करना और विवादास्पद विषय मे बिल्कुल अपने विरोधी-पक्ष के अभिप्राय को भी उतनी

ही सहानुभूति से समझने का प्रयत्न करना जितनी कि सहानुभूति अपने पक्ष की ओर हो। और अन्त में समन्वय पर ही जीवन व्यवहार का फैसला करना। यों तो यह सिद्धान्त सभी विचारकों के जीवन में एक या दूसरे रूप से काम करता ही रहता है। इसके सिवाय प्रजाजीवन न तो व्यवस्थित बन सकता है और न शांति लाभ कर सकता है। पर जैन विचारकों ने उस सिद्धांत की इतनी अधिक चर्चा की है और उस पर इतना अधिक जोर दिया है कि जिससे कट्टर-से-कट्टर विरोधी सम्प्रदायों को भी कुछ-न-कुछ प्रेरणा मिलती ही रही है। रामानुज का विशिष्टाद्वैत, उपनिषद् की भूमिका के ऊपर अनेकान्तवाद ही तो है।

जैन-परम्परा के आदर्श

जैन-संस्कृति के हृदय को समझने के लिए हमें थोड़े से उन आदर्शों का परिचय करना होगा जो पहिले से आज तक जैन परम्परा में एक से मान्य हैं और पूजे जाते हैं। सब से पुराना आदर्श जैन-परम्परा के सामने ऋषभदेव और उनके परिवार का है। भ० ऋषभदेव ने अपने जीवन का बहुत बड़ा भाग उन जवाबदेहियों को बुद्धि पूर्वक अदा करने मे बिताया जो प्रजापालन की ज़िम्मेवरी के साथ उन पर आ पड़ी थी। उन्होंने उस समय के बिल्कुल अपढ़ लोगों को लिखना पढ़ना सिखाया, कुछ काम-धन्धा जानने वाले वनचरों को उन्होंने खेती-बाड़ी तथा बढ़ई, कुम्हार आदि के जीवन पयोगी धन्धे सिखाए, आपस मे कैसे बरतना, कैसे समाज-नियमों का पालन करना यह सिखाया। जब उनको महसूस हुआ कि अब बड़ा पुत्र भरत प्रजाशासन की सब जवाबदेहियों को निबाह लेगा तब उसे राज्य-भार सौंप कर गहरे आध्यात्मिक प्रश्नों की छान-बीन के लिए उत्कट तपस्वी होकर घर से निकल पड़े।

ऋषभदेव की दो पुत्रियां ब्राह्मी और सुन्दरी नाम की थीं। उस जमाने मे भाई-बहिन के बीच शादी की प्रथा युगल-युग मे प्रचलित थी। सुन्दरी ने इस प्रथा का विरोध करके अपनी सौम्य तपस्या से भाई भरत पर ऐसा प्रभाव डाला कि जिससे भरत ने न केवल सुन्दरी के साथ विवाह करने का विचार ही छोड़ा बल्कि वह उसका भक्त बन गया। ऋग्वेद के यमीसूक्त मे भाई यम ने भगिनी यमी की लग्न-मांग को तपस्या मे परिणत कर दिया और फलतः भाई-बहिन के लग्न की युगल-युग में प्रतिष्ठित प्रथा ही नाम-शेष हो गई।

ऋषभ के भरत और बाहुबली नामक पुत्रों मे राज्य के निमित्त भयानक युद्ध शुरू हुआ। अन्त में द्वन्द्व युद्ध का फैसला हुआ। भरत का प्रचण्ड-प्रहार निष्फल गया। जब बाहुबली की बारी आई तो समर्थतर बाहुबली को जान पड़ा कि मेरे मुष्टि-प्रहार से भरत की अवश्य दुर्दशा होगी तब उसने उस भ्रातृविजयाभिमुख क्षण को आत्मविजय मे बदल दिया। उसने यह सोचा कि राज्य के निमित्त लड़ाई मे विजय पाने और वैर, प्रतिवैर तथा कुटुम्ब-कलह के बीज बोने की अपेक्षा सच्ची विजय अहंकार और तृष्णा-जय मे ही है। उसने अपने बाहुबल को क्रोध और अभिमान पर ही जमाया और अवैर से वैर के प्रतिकार का जीवन-दृष्टान्त स्थापित किया। फल यह हुआ कि अन्त मे भरत का भी लोभ तथा गर्व खर्व हुआ।

एक समय था जब कि केवल क्षत्रियों मे ही नहीं पर सभी वर्गों मे मांस खाने की प्रथा थी। नित्यप्रति के भोजन, सामाजिक उत्सव, धार्मिक-अनुष्ठान के अवसरो पर पशु-पक्षियों का वध ऐसा ही प्रचलित और प्रतिष्ठित था जैसे आज नारियलों और फलों का चढ़ाना। उस युग मे यदुनन्दन नेमिकुमार ने एक अजीब कदम उठाया। उन्होंने अपनी शादी पर भोजन के वास्ते क़त्ल किये जाने वाले निर्दोष पशु-पक्षियों की आर्त्त-मूक वाणी से सहसा पिघल कर निश्चय किया कि वे ऐसी शादी न करेंगे जिसमे अनावश्यक और निर्दोष पशु-पक्षियों का वध होता

हो। उस गम्भीर निश्चय के साथ वे सबकी सुनी अनसुनी करके बारात से शीघ्र वापिस लौट आए। द्वारका से सीधे गिरनार पर्वत पर जाकर उन्होंने तपस्या की। कौमारवय में राजपुत्री का त्याग और ध्यान-तपश्चर्या का मार्ग अपना कर उन्होंने उस चिर-प्रचलित पशु-पक्षी-वध की प्रथा पर आत्म-दृष्टान्त से इतना सख्त प्रहार किया कि जिससे गुजरात-भर में और गुजरात के प्रभाव वाले दूसरे प्रान्तों मे भी वह प्रथा नाम-शेष हो गई और जगह-जगह आज तक चली आने वाली पिंजरापोलों की लोकप्रिय संस्थाओं में परिवर्तित हो गई।

भ० पार्श्वनाथ का जीवन-आदर्श कुछ और ही रहा है। उन्होंने एक बार दुर्वासा जैसे सहजकोपी तापस तथा उनके अनुयायियों की नाराजगी का खतरा उठाकर भी एक जलते सांप को गीली लकड़ी से बचाने का प्रयत्न किया। फल यह हुआ कि आज भी जैन-प्रभाव वाले क्षेत्रों मे कोई सांप तक को नहीं मारता।

दीर्घ-तपस्वी महावीर ने भी एक बार अपनी अहिंसा वृत्ति की पूरी साधना का ऐसा ही परिचय दिया। जब जंगल मे वे ध्यानस्थ खड़े थे, एक प्रचण्ड विषधर ने उन्हे डस लिया, उस समय वे न केवल ध्यान मे अचल ही रहे बल्कि उन्होंने मैत्री-भावना का उस विषधर पर प्रयोग किया जिससे वह 'अहिंसा-प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः।' इस योगसूत्र का जीवित उदाहरण बन गया। अनेक प्रसंगों पर यज्ञ-यागादि धार्मिक कार्यों मे होने वाली हिंसा को तो रोकने का भरसक प्रयत्न वे आजन्म करते ही रहे।

ऐसे ही आदर्शों से जैन-संस्कृति उत्प्राणित होती आई है और अनेक कठिनाइयों के बीच भी उसने अपने आदर्शों के हृदय को किसी न किसी तरह संभालने का प्रयत्न किया है, जो भारत के धार्मिक, सामाजिक और राजकीय इतिहास मे जीवित है। जब कभी सुयोग मिला तभी त्यागी तथा राजा, मन्त्री तथा व्यापारी आदि गृहस्थों ने जैन-संस्कृति के अहिंसा, तप और संयम के आदर्शों का अपने ढंग से प्रचार किया।

संस्कृति का उद्देश्य

संस्कृति मात्र का उद्देश्य है मानवता की भलाई की ओर आगे बढ़ना। यह उद्देश्य तभी वह साध सकती है जब वह अपने जनक और पोषक राष्ट्र की भलाई मे योग देने की ओर सदा अग्रसर रहे। किसी भी संस्कृति के बाह्य अङ्ग केवल अभ्युदय के समय ही पनपते हैं और ऐसे ही समय वे आकर्षक लगते हैं। पर संस्कृति के हृदय की बात जुदी है। समय आफत का हो या अभ्युदय का, उसकी अनिवार्य आवश्यकता सदा एक सी बनी रहती है। कोई भी संस्कृति केवल अपने इतिहास और पुरानी यशोगाथाओं के सहारे न जीवित रह सकती है और न प्रतिष्ठा पा सकती है जब तक वह भावी निर्माण मे योग न दे। इस दृष्टान्त से भी जैन-संस्कृति पर विचार करना संगत है। हम ऊपर बतला आए है कि यह संस्कृति मूलतः प्रवृत्ति, अर्थात् पुनर्जन्म से छुटकारा पाने की दृष्टि से आविर्भूत हुई। इसके आचार-विचार का सारा ढांचा उसी लक्ष्य के अनुकूल बना है। पर हम यह भी देखते हैं कि आखिर में वह संस्कृति व्यक्ति तक सीमित न रही। उसने एक विशिष्ट समाज का रूप धारण किया।

निवृत्ति और प्रवृत्ति

समाज कोई भी हो वह एक मात्र निवृत्ति की भूल-भुलैयों पर न जीवित रह सकता है और न वास्तविक निवृत्ति ही साध सकता है। यदि किसी तरह निवृत्ति को न मानने वाले और सिर्फ प्रवृत्तिचक्र का ही महत्त्व मानने वाले आखिर में उस प्रवृत्ति के तूफान और आंधी मे ही फंसकर मर सकते हैं तो यह भी उतना ही सच है कि प्रवृत्ति का आश्रय बिना लिये निवृत्ति हवा का किला ही बन जाता है। ऐतिहासिक और दार्शनिक सत्य यह है कि

प्रवृत्ति और निवृत्ति एक ही मानव-कल्याण के सिक्के के दो पहलू हैं। दोष, गलती, बुराई और अकल्याण से तब तक कोई नहीं बच सकता जब तक वह साथ उसकी एवज में सद्गुणों की पुष्टि और कल्याणमय प्रवृत्ति में बल न लगावे। कोई भी बीमार केवल अपथ्य और कुपथ्य से निवृत्त होकर जीवित नहीं रह सकता। उसे साथ-ही-साथ पथ्य सेवन करना चाहिए। शरीर से दूषित रक्त को निकाल डालना जीवन के लिये अगर जरूरी है तो उतना ही जरूरी उसमें नए रुधिर का संचार करना भी है।

निवृत्तिलक्षी प्रवृत्ति

ऋषभ से लेकर आज तक निवृत्तिगामी कहलाने वाली जैन-संस्कृति भी जो किसी न किसी प्रकार जीवित रही है वह एक मात्र निवृत्ति के बल पर नहीं किन्तु कल्याणकारी प्रवृत्ति के सहारे पर। यदि प्रवर्त्तक-धर्मी ब्राह्मणों ने निवृत्ति मार्ग के सुन्दर तत्त्वों को अपनाकर एक व्यापक कल्याणकारी संस्कृति का ऐसा निर्माण किया है जो गीता में उज्जीवित होकर आज नये उपयोगी स्वरूप में गांधीजी के द्वारा पुनः अपना संस्करण कर रही है तो निवृत्तिलक्षी जैन-संस्कृति को भी कल्याणाभिमुख आवश्यक प्रवृत्तिओं का सहारा लेकर ही आज की बदली हुई परिस्थिति में जीना होगा। जैन-संस्कृति में तत्त्वज्ञान और आचार के जो मूल नियम हैं और वह जिन आदर्शों को आज तक पूंजी मानती आई है उनके आधार पर वह प्रवृत्ति का ऐसा मंगलमय योग साध सकती है जो सबके लिए क्षेमंकर हो।

श्रमण-परम्परा के प्रवर्तक

श्रमण-धर्म के मूल प्रवर्तक कौन कौन थे, वे कहाँ कहाँ और कब हुए इसका यथार्थ और पूरा इतिहास अद्यावधि अज्ञात है पर हम उपलब्ध साहित्य के आधार से इतना तो निःशंक कह सकते हैं कि नाभिपुत्र ऋषभ तथा आदि विद्वान् कपिल ये साम्य धर्म के पुराने और प्रबल समर्थक थे। यही कारण है कि उनका पूरा इतिहास अंधकार-ग्रस्त होने पर भी पौराणिक-परंपरा में से उनका नाम लुप्त नहीं हुआ है। ब्राह्मण-पुराण ग्रंथों में ऋषभ का उल्लेख उग्र तपस्वी के रूप में है सही पर उनकी पूरी प्रतिष्ठा तो केवल जैन परंपरा में ही है, जब कि कपिल का ऋषि रूप से निर्देश जैन कथा-साहित्य में है फिर भी उनकी पूर्ण प्रतिष्ठा तो सांख्य-परंपरा में तथा सांख्यमूलक पुराण ग्रंथों में ही है। ऋषभ और कपिल आदि द्वारा जिस आत्मौपम्य भावना की और तन्मूलक अहिंसा-धर्म की प्रतिष्ठा जमी थी उस भावना और उस धर्म की पोषक अनेक शाखा-प्रशाखायें थीं जिनमें से कोई बाह्य तप पर, तो कोई ध्यान पर, तो कोई मात्र चित्तशुद्धि या असंगता पर अधिक भार देती थी, पर साम्य या समता सब का समान ध्येय था।

जिस शाखा ने साम्यसिद्धि-मूलक अहिंसा को सिद्ध करने के लिए अपरिग्रह पर अधिक भार दिया और उसी में से अगार-गृह-ग्रंथ या परिग्रहबंधन के त्याग पर अधिक भार दिया और कहा कि जब तक परिवार एवं परिग्रह का बंधन हो तब तक कभी पूर्ण अहिंसा या पूर्ण साम्य सिद्ध हो नहीं सकता, श्रमणधर्म की वही शाखा निर्ग्रन्थ नाम से प्रसिद्ध हुई। इसके प्रधान प्रवर्तक नेमिनाथ तथा पार्श्वनाथ ही जान पड़ते हैं।

वीतरागता का आग्रह

अहिंसा की भावना के साथ-साथ तप और त्याग की भावना अनिवार्य रूप से निर्ग्रन्थ धर्म में ग्रथित तो हो ही गई थी परंतु साधकों के मन में यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि बाह्य तप और बाह्य त्याग पर अधिक भार

देने से क्या आत्मशुद्धि या साम्य पूर्णतया सिद्ध होना संभव है? इसी के उत्तर में से यह विचार फलित हुआ कि-राग-द्वेष आदि मलिन वृत्तियों पर विजय पाना ही मुख्य साम्य है। इस साम्य की सिद्धि जिस अहिंसा, जिस तप या जिस त्याग से न हो सके वह अहिंसा, तप या त्याग कैसा ही क्यों न हो पर आध्यात्मिक दृष्टि से अनुपयोगी है। इसी विचार के प्रवर्तक 'जिन', कहलाने लगे। ऐसे जिन अनेक हुए है। सच्चक, बुद्ध, गोशालक और महावीर ये सब अपनी-अपनी परम्परा मे जिन रूप से प्रसिद्ध रहे है परंतु आज जिनकथित जैन धर्म कहने से मुख्यतया महावीर के धर्म का ही बोध होता है जो राग-द्वेष के विजय पर ही मुख्यतया भार देता है। धर्म विकास का इतिहास कहता है कि उत्तरोत्तर उदय मे आने वाली नयी-नयी धर्म की अवस्थाओं मे उस-उस धर्म की पुरानी अविरोधी अवस्थाओं का समावेश अवश्य रहता है। यही कारण है कि जैन धर्म निर्ग्रन्थ-धर्म भी है और श्रमण-धर्म भी है।

श्रमण-धर्म की साम्य दृष्टि

अब हमें देखना यह है कि श्रमण धर्म की प्राणभूत साम्य-भावना का जैन परंपरा मे क्या स्थान है? जैन श्रुत रूप से प्रसिद्ध द्वादशांगी या चतुर्दश पूर्व में 'सामाइय'—'सामायिक' का स्थान प्रथम है, जो आचारांग सूत्र कहलाता है। जैनधर्म के अंतिम तीर्थंकर महावीर के आचार विचार का सीधा और स्पष्ट प्रतिबिम्ब मुख्यतया उसी सूत्र मे देखने को मिलता है। इसमे जो कुछ कहा गया है उस सब मे साम्य, समता या सम पर ही पूर्णतया भार दिया गया है।' 'सामा' इस प्राकृत या मागधी शब्द का संबंध साम्य, समता या सम से है। साम्य-दृष्टिमूलक और साम्य-दृष्टि पोषक जो-जो आचार विचार हों वे सब सामाइय-सामायिक रूप से जैन परंपरा में स्थान पाते है। जैसे ब्राह्मण-परंपरा मे सन्ध्या एक आवश्यक कर्म है वैसे ही जैन परंपरा मे भी गृहस्थ और त्यागी सब के लिए छः आवश्यक कर्म बतलाये है जिनमे मुख्य सामाइय है। अगर सामाइय न हो तो और कोई आवश्यक सार्थक नहीं है। गृहस्थ या त्यागी अपने-अपने अधिकारानुसार जब-जब धार्मिकजीवन को स्वीकार करता है तब तब वह 'करेमि भंते! सामाइय' ऐसी प्रतिज्ञा करता है। इसका अर्थ है कि हे भगवन्! मैं समता या समभाव को स्वीकार करता हूँ। इस समता का विशेष स्पष्टीकरण आगे के दूसरे ही पद मे किया गया है। उसमे कहा है कि मैं सावद्ययोग अर्थात् पाप व्यापार का यथाशक्ति त्याग करता हूँ। 'सामाइय' की ऐसी प्रतिष्ठा होने के कारण सातवीं सदी के सुप्रसिद्ध विद्वान जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण ने उस पर विशेषावश्यकभाष्य नामक अति विस्तृत ग्रंथ लिख कर बतलाया है कि धर्म के अंगभूत श्रद्धा, ज्ञान और चारित्र ये तीनो ही 'सामाइय' है।

सच्ची वीरता के विषय में जैन धर्म

सांख्य, योग और भागवत जैसी अन्य परंपराओं मे पूर्व काल से सम्यदृष्टि की जो प्रतिष्ठा थी उसीका आधार लेकर भगवद्गीताकार ने गीता की रचना की है। यही कारण है कि हम गीता मे स्थान-स्थान पर समदर्शी साम्य, समता जैसे शब्दों के द्वारा साम्यदृष्टि का ही समर्थन पाते है। गीता और आचारांग की साम्य भावना मूल में एक ही है, फिर भी वह परंपरा भेद से अन्यान्य भावनाओ के साथ मिलकर भिन्न हो गई है। अर्जुन को साम्य भावना के प्रबल आवेग के समय भी भैक्ष्य-जीवन स्वीकार करने से गीता रोकती है और शस्त्रयुद्ध का आदेश करती है, जब कि आचारांग-सूत्र अर्जुन को ऐसा आदेश न कर के यही कहेगा कि अगर तुम सचमुच क्षत्रिय वीर हो तो साम्यदृष्टि आने पर हिंसक शस्त्रयुद्ध नहीं कर सकते बल्कि भैक्ष्यजीवन पूर्वक आध्यात्मिक शत्रु के साथ युद्ध के द्वारा ही सच्चा क्षत्रियत्व सिद्ध कर सकते हो। इस कथन की द्योतक भरत-बाहुबली की कथा

जैन साहित्य में प्रसिद्ध है, जिसमें कहा गया है कि सहोदर भरत के द्वारा उग्र प्रहार पाने के बाद बाहुबली ने जब प्रतिकार के लिए हाथ उठाया तभी समभाव की वृत्ति के आवेग में बाहुबली ने भैक्ष्यजीवन स्वीकार किया पर प्रतिप्रहार करके न तो भरत का बदला चुकाया और न उससे अपना न्यायोचित राज्यभाग लेने का सोचा। गांधीजी ने गीता और आचारांग आदि में प्रतिपादित साम्य भाव को अपने जीवन में यथार्थ रूप से विकसित किया और उसके बल पर कहा कि मानव संहारक युद्ध तो छोड़ो, पर साम्य या चित्तशुद्धि के बल पर ही अन्याय के प्रतिकार का मार्ग भी ग्रहण करो। पुराने संन्यास या त्यागी जीवन का ऐसा अर्थ–विकास गांधीजी ने समाज में प्रतिष्ठित किया है।

साम्य-दृष्टि और अनेकान्तवाद

जैन-परंपरा का साम्य-दृष्टि पर इतना अधिक भार है कि उसने साम्य-दृष्टि को ही ब्राह्मण-परंपरा में लब्धप्रतिष्ठ ब्रह्म कहकर साम्यदृष्टिपोषक सारे आचार विचार को 'ब्रह्मचर्य' 'बम्भचेराई' कहा है, जैसा कि बौद्ध में परंपरा ने मैत्री आदि भावनाओं को ब्रह्मविहार कहा है। इतना ही नहीं पर धम्मपद और शांतिपर्व की तरह जैन ग्रंथ में भी समत्व धारण करनेवाले श्रमण को ही ब्राह्मण कहकर श्रमण और ब्राह्मण के बीच का अंतर मिटाने का प्रयत्न किया है।

साम्य-दृष्टि जैन परंपरा में मुख्यतया दो प्रकार से व्यक्त हुई है:—(१) आचार में (२) विचार में। जैन धर्म का बाह्य अभ्यन्तर, स्थूल-सूक्ष्म सब आचार साम्य-दृष्टि मूलक अहिंसा के केन्द्र के आस-पास ही निर्मित हुआ है। जिस आचार के द्वारा अहिंसा की रक्षा और पुष्टि न होती हो ऐसे किसी भी आचार को जैन-परंपरा मान्य नहीं रखती। यद्यपि सब धार्मिक-परंपराओं ने अहिंसा-तत्त्व पर न्यूनाधिक भार दिया पर जैन परंपरा ने उस तत्त्व पर जितना भार दिया है और उसे जितना व्यापक बनाया है उतना भार और उतनी व्यापकता अन्य धर्म परंपरा में देखी नहीं जाती। मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतंग और वनस्पति ही नहीं बल्कि पार्थिव जलीय आदि सूक्ष्मातिसूक्ष्म जन्तुओं तक की हिंसा से आत्मौपम्य की भावना द्वारा निवृत्त होने के लिए कहा गया है।

विचार में साम्य-दृष्टि की भावना पर जो भार दिया गया है उसी में से अनेकान्त-दृष्टि या विभाज्यवाद का जन्म हुआ है। केवल अपनी दृष्टि या विचारसरणी को ही पूर्ण अन्तिम सत्य मान कर उस पर आग्रह रखना यह साम्य दृष्टि के लिए घातक है। इस लिए कहा गया है कि दूसरों की दृष्टि का भी उतना ही आदर करना जितना अपनी दृष्टि का। यही साम्य दृष्टि अनेकान्तवाद की भूमिका है। इस भूमिका में से ही भाषाप्रधान स्याद्वाद और विचारप्रधान नयवाद का क्रमशः विकास हुआ है। मीमांसक और कपिल-दर्शन के उपरांत न्याय दर्शन में भी अनेकांतवाद का स्थान है। महात्मा बुद्ध का विभाज्यवाद और मध्यममार्ग भी अनेकान्त दृष्टि के ही फल है, फिर भी जैन परंपरा ने जैसे अहिंसा पर अत्यधिक भार दिया है वैसे ही उसने अनेकान्त दृष्टि पर भी अत्यधिक भार दिया है। इस लिए जैन-परंपरा में आचार या विचार का कोई भी विषय ऐसा नहीं है जिस पर अनेकान्तदृष्टि लागू न की गई हो तो जो अनेकान्त दृष्टि की मर्यादा से बाहर हो। यही कारण है कि अन्यान्य परंपराओं के विद्वानों ने अनेकांत-दृष्टि को मानते हुए भी उस पर स्वतंत्र साहित्य रचा नहीं है, जब कि जैन परंपरा के विद्वानों ने उसके अंगभूत स्याद्वाद, नयवाद आदि के बोधक और समर्थक विपुल स्वतंत्र साहित्य का निर्माण किया है।

अहिंसा

हिंसा से निवृत्त होना ही अहिंसा है। यह विचार तब तक पूरा समझ में आ नहीं सकता जब तक यह न बतलाया जाय कि हिंसा किस की होती है और हिंसा कौन और किस कारण से करता है और उसका परिणाम क्या है। इसी प्रश्न को स्पष्ट समझाने की दृष्टि से मुख्यतया चार विद्यायें जैन परंपरामे फलित हुई हैं–(१) आत्मविद्या (२) कर्मविद्या (३) चारित्रविद्या और (४) लोकविद्या। इसी तरह अनेकांत-दृष्टि के द्वारा मुख्यतया श्रुतविद्या और प्रमाणविद्या का निर्माण व पोषण हुआ है। इस प्रकार अहिंसा, अनेकांत और तन्मूलक विद्यायें ही जैन धर्म का प्राण है जिस पर आगे संक्षेप मे विचार किया जाता है।

आत्मविद्या और उत्क्रान्तिवाद

प्रत्येक आत्मा चाहे वह पृथ्वीगत, जलगत, या वनस्पतिगत हो या कीट, पतग, पशु, पक्षी-रूप हो या मानव रूप हो वह सब तात्त्विक दृष्टि से समान है। यही जैन आत्मविद्या का सार है। समानता के इस सैद्धान्तिक विचार को अमल मे लाना उसे यथासंभव जीवन व्यवहार के प्रत्येक क्षेत्र मे उतारने के भाव से प्रयत्न करना यही अहिंसा है। आत्मविद्या कहती है कि यदि जीवन-व्यवहार मे साम्य का अनुभव न हो तो आत्म साम्य का सिद्धान्त कोरा वाद मात्र है। समानता के सिद्धान्त को अमली बनाने के लिए ही आचारांग-सूत्र के अध्ययन में कहा गया है कि जैसे तुम अपने दुःख का अनुभव करते हो वैसे ही पर दुःख का अनुभव करो। अर्थात् अन्य के दुःख का आत्मीय दुःख रूप से सवेदन न हो तो अहिसा सिद्ध होना संभव नही।

जसे आत्म समानता के तात्त्विक विचार मे से अहिसा के आचार का समर्थन किया गया है वैसे ही उसी विचार मे से जैन-परंपरा मे यह भी आध्यात्मिक मतव्य फलित हुआ है कि जीवगत शारीरिक, मानसिक आदि वैषम्य कितना ही क्यो न हो पर आगतुक है–कर्ममूलक है, वास्तविक नही है। अतएव क्षुद्र अवस्था मे पड़ा हुआ जीव भी कभी मानवकोटि मे आ सकता है और मानव कोटिगत जीव भी क्षुद्रतम वनस्पति अवस्था में जा सकता है, इतना ही नहीं बल्कि वनस्पति जीव विकास के द्वारा मनुष्य की तरह कभी सर्वथा बंधनमुक्त हो सकता है। ऊच-नीच गति या योनि का एवं सर्वथा मुक्ति का आधार एक मात्र कर्म है। जैसा कर्म, जैसा सस्कार या जैसी वासना वैसी ही आत्मा की अवस्था, पर तात्त्विक रूप से सब आत्माओं का स्वरूप सर्वथा एक-सा है जो नैष्कर्म्य अवस्था मे पूर्ण रूप से प्रकट होता है। यही आत्मसाम्यमूलक उत्क्रान्तिवाद है।

कर्म-विद्या

जब तत्त्वतः सब जीवात्मा समान है तो फिर उनमे परस्पर वैषम्य क्यों? तथा एक ही जीवात्मा मे कालभेद से वैषम्य क्यो? इस प्रश्न के उत्तर मे से ही कर्मविद्या का जन्म हुआ है। जैसा कर्म वैसी अवस्था यह जैन मान्यता वैषम्य का स्पष्टीकरण तो कर देती है, पर साथ ही साथ यह भी कहती है कि अच्छा या बुरा कर्म करने एवं न करने में जीव ही स्वतत्र है, जैसा वह चाहे वैसा सत् या असत् पुरुषार्थ कर सकता है और वही अपने वर्तमान और भावी का निर्माता है। कर्मवाद कहता है कि वर्तमान का निर्माण भूत के आधार पर और भविष्य का निर्माण वर्तमान के आधार पर होता है। तीनों काल की पारस्परिक संगति कर्मवाद पर ही अवलवित है। यही पुनर्जन्म के विचार का आधार है।

वस्तुतः अज्ञान और रागद्वेष ही कर्म है। अपने-पराये की वास्तविक प्रतीति न होना अज्ञान या जैन परंपरा के अनुसार दर्शन मोह है। इसी को सांख्य, बौद्ध आदि अन्य-परंपराओं में अविद्या कहा है। अज्ञान-जनित

इष्टानिष्ट की कल्पनाओं के कारण जो-जो वृत्तियां, या जो-जो विकार पैदा होते हैं वही संक्षेप में राग-द्वेष कहे गये हैं। यद्यपि राग द्वेष हिंसा के प्रेरक हैं पर वस्तुतः सब की जड़ अज्ञान-दर्शन मोह या अविद्या ही है, इसलिए हिंसा की असली जड़ अज्ञान ही है। इस विषय मे आत्मवादी सब परम्पराएं एकमत हैं।

आध्यात्मिक जीवन की आधार-शिला चारित्र-विद्या

आत्मा और कर्म के स्वरूप को जानने के बाद ही यह जाना जा सकता है कि आध्यात्मिक उत्क्रान्ति में चारित्र का क्या स्थान है। मोक्षतत्त्वचिंतकों के अनुसार चारित्र का उद्देश्य आत्मा को कर्म से मुक्त करना ही है। चारित्र के द्वारा कर्म से मुक्ति मान लेने पर भी यह प्रश्न रहता ही है कि स्वभाव से शुद्ध ऐसे आत्मा के साथ पहले-पहल कर्म का सबध कब और क्यों हुआ या ऐसा संबध किसने किया? इसी तरह यह भी प्रश्न उपस्थित होता है कि स्वभाव से शुद्ध ऐसे आत्मतत्त्व के साथ यदि किसी न किसी तरह से कर्म का संबध हुआ मान लिया जाय तो चारित्र के द्वारा मुक्ति सिद्ध होने के बाद भी फिर कर्म सबध क्यों नहीं होगा? इन दो प्रश्नों का उत्तर आध्यात्मिक सभी चितकों ने लगभग एकसा ही दिया है। सांख्य-योग हो या वेदान्त, न्यायवैशेषिक हो या बौद्ध इन सभी दर्शनों की तरह जैन-दर्शन का भी यही मंतव्य है कि कर्म और आत्मा का संबंध अनादि है क्योंकि उस संबंध का आदिक्षण सर्वथा ज्ञानसीमा के बाहर है। सभी ने यह माना है कि आत्मा के साथ कर्म अविद्या या माया का संबंध प्रवाह रूप से अनादि है फिर भी व्यक्तिरूप से वह कर्मवासना की उत्पत्ति जीवन में होती रहती है सर्वथा कर्म छूट-जाने पर जो आत्मा का पूर्ण शुद्ध रूप प्रकट होता है उसमे पुनः कर्म या वासना उत्पन्न क्यों नहीं होती इसका खुलासा तर्कवादी आध्यात्मिक चिंतकों ने यों किया है कि आत्मा स्वभावतः शुद्ध पक्षपाती है। शुद्ध के द्वारा चेतना आदि स्वभाविक गुणों का पूर्ण विकास होने के बाद अज्ञान या रागद्वेष जैसे दोष जड़ से ही उच्छिन्न हो जाते है अर्थात वे प्रयत्नपूर्वक शुद्धि को प्राप्त ऐसे आत्मतत्त्व मे अपना स्थान पाने के लिए सर्वथा निर्बल हो जाते हैं।

चारित्र का कार्य जीवनगत वैषम्य के कारणों को दूर करना है, जो जैन परिभाषा मे 'संवर' कहलाता है। वैषम्य के मूल कारण अज्ञान का निवारण आत्मा की सम्यक् प्रतीति से होता है और रागद्वेष जैसे क्लेशों का निवारण माध्यस्थ्य की सिद्धि से। इसलिए आन्तर चारित्र मे दो ही बाते आती है। (१) आत्म-ज्ञान-विवेक ख्याति (२) माध्यस्थ्य या रागद्वेष आदि क्लेशों का जय। ध्यान, व्रत, नियम, तप, आदि जो-जो उपाय आन्तर चारित्र के पोषक होते है वे ही बाह्य-चारित्र रूप से साधक के लिए उपादेय माने गये हैं।

आध्यात्मिक जीवन की उत्क्रान्ति आन्तर-चारित्र के विकासक्रम पर अवलंबित है। इस विकासक्रम का गुणस्थान रूप से जैन-परपरा मे अत्यंत विशद और विस्तृत वर्णन है। आध्यात्मिक उत्क्रान्ति-क्रम के जिज्ञासुओं के लिए योगशास्त्रप्रसिद्ध मधुमती आदि भूमिकाओं का बौद्धशास्त्र-प्रसिद्ध सोतापन्न आदि भूमिकाओं का, योगवाशिष्ठप्रसिद्ध अज्ञान और ज्ञान भूमिकाओं का, आजीवक-परंपरा प्रसिद्ध मंदभूमि आदि भूमिकाओं का और जैन परपरा प्रसिद्ध गुणस्थानो का तथा योगदृष्टियों का तुलनात्मक अध्ययन बहुत रसप्रद एवं उपयोगी है, जिसका वर्णन यहाँ सभव नहीं। जिज्ञासु अन्यत्र प्रसिद्ध लेखों से जान सकता है।

मैं यहाँ उन चौदह गुणस्थानों का वर्णन न करके सक्षेप में तीन भूमिकाओं का ही परिचय दिये देता हूँ, जिनमे-गुणस्थानों का समावेश हो जाता है। पहिली भूमिका है बहिरात्म, जिसमे आत्मज्ञान या विवेक-ख्याति का उदय ही नहीं होता। दूसरी भूमिका अन्तरात्म है जिसमे आत्मज्ञान का उदय होता है पर रागद्वेष

आदि क्लेश मंद होकर भी अपना प्रभाव दिखलाते रहते है। तीसरी भूमिका है परमात्म। इसमें रागद्वेश का पूर्ण उच्छेद होकर वीतारागत्व प्रकट होता है।

लोक-विद्या

लोकविद्या में लोक के स्वरूप का वर्णन है। जीव—चेतन और अजीव—अचेतन या जड़ इन दो तत्त्वों का सहचार ही लोक है। चेतन-अचेतन दोनों तत्त्व न तो किसी के द्वारा कभी पैदा हुए है और न कभी नाश पाते हैं फिर भी स्वभाव से परिणामान्तर पाते रहते है। संसार काल मे चेतन के ऊपर अधिक प्रभाव डालने वाला द्रव्य एकमात्र जड़-परमाणुपुंज-पुद्गल है, जो नानारूप से चेतन के संबंध मे आता है और उसकी शक्तियों को मर्यादित भी करता है। चेतन-तत्त्व की साहजिक और मौलिक शक्तियां ऐसी है जो योग्य दिशा पाकर कभी न कभी उन जड़ द्रव्यों के प्रभाव से उसे मुक्त भी कर देती है। जड़ और चेतन के पारस्परिक प्रभाव का चेत्र ही लोक है और उस प्रभाव से छुटकारा पाना ही लोकान्त है। जैन-परम्परा की लोकक्षेत्र विषयक कल्पना सांख्ययोग, पुराण और बौद्ध आदि परम्पराओं की कल्पना से अनेक अंशों मे मिलती जुलती है।

जैन-परम्परा न्यायवैशेषिक की तरह परमाणुवादी है, सांख्ययोग की तरह प्रकृतिवादी नहीं है तथापि जैन-परम्परा संमत परमाणु का स्वरूप सांख्य-परम्परा-संमत प्रकृति के स्वरूप के साथ जैसा मिलता है वैसा न्यायवशेषिक-संमत परमाणु स्वरूप के साथ नही मिलता, क्योंकि जैन संमत परमाणु सांख्य समत प्रकृति की तरह परिणामी है, न्यायवैशेषिक समत परमाणु की तरह कूटस्थ नहीं है। इसी लिये जैसे एक ही सांख्य संमत प्रकृति पृथ्वी, जल, तेज, वायु आदि अनेक भौतिक सृष्टियों का उपादान बनती है वैसे ही जैन संमत एक ही परमाणु पृथ्वी, जल, तेज आदि नानारूप मे परिणत होता है। जैन परम्परा न्यायवैशेषिक की तरह यह नही मानती कि पार्थिव, जलीय आदि भौतिक परमाणु मूल में ही सदा भिन्न जातीय है। इसके सिवाय और भी एक अन्तर ध्यान देने योग्य है। वह यह कि जैन समत परमाणु वैशेषिक संमत परमाणु की अपेक्षा इतना अधिक सूक्ष्म है कि अन्त मे वह सांख्य-संमत प्रकृति जैसा ही अव्यक्त बन जाता है। जैन-परम्परा का अनन्त परमाणुवाद प्राचीन सांख्य समत पुरुष-बहुत्वानुरूप प्रकृतिबहुत्ववाद से दूर नहीं है।

जैनमत और ईश्वर

जन-परपरा सांख्योग-मीमांसक आदि परंपराओं की तरह लोक को प्रवाह रूपसे अनादि और अनंत ही मानती है। वह पौराणिक या वैशेषिक-मत की तरह उसका सृष्टि-संहर नही मानती। अतएव जैन परंपरा में कर्ता-संहर्ता रूप से ईश्वर जैसे स्वतत्र व्यक्ति का कोई स्थान ही नहीं है। जैन सिद्धान्त कहता है कि प्रत्येक जीव अपनी-अपनी सृष्टि का आप ही कर्ता है। उसके अनुसार तात्त्विक-दृष्टि से प्रत्येक जीव में ईश्वरभाव है जो मुक्ति के समय प्रकट होता है। जिसका ईश्वर-भाव प्रकट हुआ है वही साधारण लोगों के लिए उपास्य बनता है। योगाशास्त्र संमत ईश्वर भी मात्र उपास्य है। कर्ता-संहर्ता नहीं, पर जैन और योगशास्त्र की कल्पना में अन्तर है। वह यह कि योगशास्त्र-संमत सदा मुक्त होने के कारण अन्य पुरुषों से भिन्न कोटि का है, जबकि जैनशास्त्र समत ईश्वर वैसा नहीं है। जैनशास्त्र कहता है कि प्रयत्नसाध्य होने के कारण हर कोई योग्य-साधन ईश्वरत्व लाभ करता है और सभी मुक्त समानभाव से ईश्वररूप से उपास्य हैं।

श्रुत विद्या और प्रमाण विद्या

पुराने और अपने समय तक मे ज्ञात ऐसे अन्य विचारकों के विचारों का तथा अपने स्वानुभवमूलक अपने विचारों का सत्यलक्षी संग्रह ही श्रुतविद्या है। श्रुतविद्या का ध्येय यह है कि सत्यस्पर्शी किसी भी विचार या विचारसरणी की अवगणना या उपेक्षा न हो। इसी कारण से जैन परम्परा की श्रुतविद्या नव-नव विद्याओं के विकास के साथ विकसित होती रही है। यही कारण है कि श्रुतविद्या मे संग्रह नयरूप से जहां प्रथम सांख्य-संमत सदद्वैत लिया गया वहीं ब्रह्माद्वैत के विचार-विकास के बाद संग्रहनय रूप मे ब्रह्माद्वैत-विचार ने भी स्थान प्राप्त किया है। इसी तरह जहां ऋजुसूत्र नयरूप से प्राचीन बौद्ध क्षणिकवाद संग्रहीत हुआ है वहीं आगे के महायानी विकास के बाद ऋजुसूत्र नयरूप से वैभाषिक, सौत्रान्तिक, विज्ञानवाद और शून्यवाद इन चारों प्रसिद्ध बौद्ध-शाखाओं का संग्रह हुआ है।

अनेकान्त-दृष्टि का कार्यप्रदेश इतना अधिक व्यापक है कि इसमे मानव-जीवन की हितावह ऐसी सभी लौकिक-लोकोत्तर विद्याये अपना अपना योग्य स्थान प्राप्त कर लेती है। यही कारण है कि जैन श्रुतविद्या में लोकोत्तर विद्याओं के अलावा लौकिक विद्याओं ने भी स्थान प्राप्त किया है।

प्रमाणविद्या मे प्रत्यक्ष, अनुमिति आदि ज्ञान के सब प्रकारों, का उनके साधनों का तथा उनके बलाबल का विस्तृत विवरण आता है। इसमे भी अनेकान्त-दृष्टि का ऐसा उपयोग किया गया है कि जिससे किसी भी तत्त्वचिंतक के यथार्थ विचार की अवगणना या उपेक्षा नहीं होती, प्रत्युत ज्ञान और उसके साधन से संबंध रखने वाले सभी ज्ञान-विचारों का यथावत् विनियोग किया गया है।

यहां तक का वर्णन जैन परंपरा के प्राणभूत अहिंसा और अनेकान्त से संबंध रखता है। जैसे शरीर के विना प्राण की स्थिति असंभव है वैसे ही धर्म-शरीर के सिवाय धर्मप्राण की स्थिति भी असंभव है। जैन-परपरा का धर्म-शरीर भी संघ-रचना, साहित्य, तीर्थ, मन्दिर आदि धर्मस्थान, शिल्पस्थापत्य, उपासनविधि, ग्रंथसंग्राहक भांडार आदि अनेक रूप विद्यमान है। यद्यपि भारतीय-सस्कृति विरासत के अविकल अध्ययन की दृष्टि से जैनधर्म के ऊपर सूचित अगों का तात्त्विक एवं ऐतिहासिक वर्णन आवश्यक एवं रसप्रद भी है।

जैनागम

बारह अंगः—अब यह देखा जाय कि जैनों के द्वारा कौन-कौन से ग्रन्थ वर्तमान मे व्यवहार मे आगमरूप से माने गये है ?

जैनों के तीनों सम्प्रदायों में इस विषय मे तो विवाद है ही नही कि सकल श्रुत का मूलाधार गणधर ग्रथित द्वादशांग है। तीनों सम्प्रदाय मे बारह अंगों के नाम से विषय मे भी प्रायः ऐकमत्य है। वे बारह अंग ये है:—

(१) आचार, (२) सूत्रकृत, (३) स्थान, (४) समवाय, (५) व्याख्याप्रज्ञप्ति, (६) ज्ञातृधर्मकथा, (७) उपासकदशा, (८) अंतकृद्दशा, (९) अनुत्तरौपपातिकदशा, (१०) प्रश्नव्याकरण, (११) विपाकसूत्र, (१२) दृष्टिवाद।

तीनों सम्प्रदाय के मत से अन्तिम अग दृष्टिवाद का सर्वप्रथम लोप हो गया है।

स्थानकवासी के आगम-ग्रन्थ

श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय के मत से दृष्टिवाद को छोड़ कर सभी अंग सुरक्षित हैं। अगबाह्य के विषय मे स्था० सम्प्रदाय का मत है कि सिर्फ निम्नलिखित ग्रन्थ ही सुरक्षित है।

अंगबाह्य मे १२ उपांग, ४ छेद, ४ मूल और १ आवश्यक इस प्रकार सिर्फ २१ ग्रंथ का समावेश है, वह इस प्रकार से है:—

बारह उपांग—(१) औपपातिक (२) राजप्रश्नीय (३) जीवाभिगम (४) प्रज्ञापना (५) सूर्यप्रज्ञप्ति (६) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति (७) चन्द्रप्रज्ञप्ति (८) निरयावली (९) कल्पवतंसिका (१०) पुष्पिका (११) पुष्पचूलिका (१२) वृष्णिदशा।

शास्त्रोद्धार मीमांसा मे (पृ० ४१) आ० अमोलखऋषिजी म०ने लिखा है कि चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति ये दोनों ज्ञाताधर्म के उपांग है। इस अपवाद को ध्यान मे रख कर क्रमशः आचारांग का औपपातिक इत्यादि क्रम से अंगों के साथ उपांगों की योजना कर लेना चाहिए।

४ छेद—१ व्यवहार २ बृहत्कल्प ३ निशीथ ४ दशा-श्रुतस्कन्ध।

४ मूल—१ दशवैकालिक २ उत्तराध्ययन ३ नन्दी ४ अनुयोग और १ आवश्यक इस प्रकार सब मिलकर २१ अग-बाह्यग्रंथ वर्तमान में है।

२१ अंगबाह्य ग्रन्थों को जिस रूप मे स्थानकवासियों ने माना है, श्वेताम्बर मूर्तिपूजक उन्हें उसी रूप में मानते है। इसके अलावा कई ऐसे ग्रंथों का भी अस्तित्व स्वीकार किया है जिन्हें स्थानकवासी प्रमाणभूत नहीं मानते या लुप्त मानते है।

स्थानकवासी के समान उसी संप्रदाय का एक उपसंप्रदाय तेरहपथ को भी ११ अंग और २१ अंगबाह्य ग्रंथों का ही अस्तित्व और प्रामाण्य स्वीकृत है, अन्य ग्रथों का नहीं।

यद्यपि वर्तमान मे कुछ स्थानकवासी विद्वानों की, आगम के इतिहास के प्रति दृष्टि जाने से तथा आगमों की निर्युक्ति जैसी प्राचीन टीकाओं के अभ्यास से, वे यह स्वीकार करने लगे है कि दशवैकालिक आदि शास्त्रों के प्रणेता गणधर नहीं किन्तु शय्यंभव आदि स्थविर है तथापि जिन लोगों का आगम के टीका-टिप्पणियों पर कोई विश्वास नहीं तथा जिन्हे सस्कृत टीका ग्रन्थों के अभ्यास के प्रति ध्यान नहीं है उन का यही विश्वास प्रतीत होता है कि अंग और अंगबाह्य दोनों प्रकार के आगम के कर्त्ता गणधर ही थे, अन्य स्थविर नहीं।

आगमों का विषय

जैनागमों मे से कुछ तो ऐसे है जो जैन आचार से सम्बन्ध रखते हैं जैसे आचारांग, दशवैकालिक आदि। कुछ उपदेशात्मक है जैसे उत्तराध्ययन, आदि। कुछ तत्कालीन भूगोल और खगोल आदि सम्बन्धी मान्यताओं का वर्णन करते है जैसे जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, सूर्य प्रज्ञप्ति आदि। छेदसूत्रों का प्रधान विषय जैन साधुओं के आचार सम्बन्धी औत्सर्गिक और आपवादिक नियमों का वर्णन व प्रायश्चित्तों का विधान करता है। कुछ ग्रन्थ ऐसे है जिनमे जिनमार्ग के अनुयायियोंका चरित्र दिया गया है जैसे उपासकदशांग, अनुत्तरोपपातिक दशा आदि। कुछ में कल्पित कथाएं देकर उपदेश दिया गया है जैसे ज्ञातृधर्म कथा आदि। विपाक में शुभ और अशुभ-कर्म का विपाक कथाओं द्वारा बताया गया है। भगवती सूत्रमें भगवान महावीर के साथ हुए संवादों का सग्रह है। बौद्धसुत्तपिटक की तरह नाना विषयके प्रश्नोत्तर भगवती मे संगृहीत है।

दर्शनके साथ सम्बन्ध रखने वालों में खासकर सूत्रकृत, प्रज्ञापना, राजप्रश्नीय, भगवती, नन्दी, स्थानांग, समवाय और अनुयोग सूत्र मुख्य है।

सूत्रकृत में तत्कालीन मन्तव्योंका निराकरण करके स्वमत की प्ररूपणा की गई हैं। भूतवादियों का निराकरण करके आत्माका पृथक अस्तित्व बतलाया है। ब्रह्मवाद के स्थान में नानात्मवाद स्थिर किया है। जीवन और शरीरको पृथक बताया है। कर्म है। और उसके फलकी सत्ता स्थिर की है। जगदुत्पत्ति के विषय में नानावादों का निराकरण करके विश्वको किसी ईश्वर या ऐसे ही किसी व्यक्ति ने नही बनाया, वह तो अनादि अनन्त हैं, इस बात की स्थापना की गई है। तत्कालीन विनयवाद, अक्रियावाद और अज्ञानवाद का निराकरण करके सुसंस्कृत क्रियावाद की स्थापना की गई है।

प्रज्ञापनामे जीवके विविध भावो को लेकर विस्तार से विचार किया गया है।

राजप्रश्नीय मे पार्श्वनाथ की परम्परा मे हुए केशीश्रमण ने श्रावस्ती के राजा पएसी के प्रश्नों के उत्तर मे नास्तिकवाद का निराकरण करके आत्मा और तत्सम्बन्धी अनेक बातों को दृष्टान्त और युक्ति पूर्वक समझाया है

भगवतीसूत्र के अनेक प्रश्नोत्तरों मे नय, प्रमाण आदि अनेक दार्शनिक विचार बिखरे पड़े हैं।

नन्दीसूत्र जैन दृष्टि से ज्ञान के स्वरूप और भेदोंका विश्लेषण करनेवाली एक सुन्दर कृति है।

स्थानांग और समवायांग की रचना बौद्धो के अगुत्तरनिकाय के ढग की है। इन दोनों मे भी आत्मा, पुद्गल, ज्ञान, नय और प्रमाण आदि विषयों की चर्चा की गई है। भगवान् महावीर के शासन मे हुए निन्हवों का वर्णन स्थानांग में हैं। ऐसे सात व्यक्ति बताए गये है जिन्होंने कालक्रम से भगवान् महावीर के सिद्धातों की भिन्न-भिन्न बात को लेकर अपना मतभेद प्रगट किया है। वे ही निन्ह्व कहे गये है।

अनुयोग मे शब्दार्थ करने की प्रक्रिया का वर्णन मुख्य है किन्तु प्रसङ्ग से उसमे प्रमाण और नय का तथा तत्त्वों का निरूपण भी अच्छे ढंग से हुआ है।

जैन तत्त्वज्ञान का मूल तत्त्व—अनेकान्त

जैनधर्म का मूल

कोई भी विशिष्ट दर्शन हो या धर्म पन्थ, उसकी आधारभूत—उसके मूल प्रवर्तक पुरुष की—एक खास दृष्टि होती है; जैसे कि—शकराचार्य की अपने मतनिरूपण मे 'अद्वैतदृष्टि' और महात्मा बुद्ध की अपने धर्म—पन्थ प्रवर्तन में 'मध्यम प्रतिपदा दृष्टि' खास दृष्टि है। जैनदर्शन भारतीय दर्शनों मे एक विशिष्ट दर्शन है और साथ ही एक विशिष्ट धर्म—पन्थ भी है, इसलिए उसके प्रवर्तक और प्रचारक मुख्य पुरुषों की एक खास दृष्टि उसके मूल मे होनी ही चाहिए और वह है भी। यही दृष्टि अनेकान्तवाद है। तात्त्विक जैन विचारणा अथवा आचार व्यवहार कुछ भी हो वह सब अनेकान्त-दृष्टि के आधार पर किया जाता है और उसी के आधार पर सारी विचार धारा फैलती है। अथवा यों कहिये कि अनेक प्रकार के विचारों तथा आचारों में से जैन विचार और जैनाचार क्या हैं ? कैसे हो सकते है ? इन्हे निश्चित करने वा कसने की एक मात्र कसौटी भी अनेकान्त दृष्टि ही है।

अनेकान्त का विकास और उस का श्रेय

जैन-दर्शन का आधुनिक मूल-रूप भगवान महावीर की तपस्या का फल है। इसलिए सामान्य रूप से यही समझा जा सकता है कि जैन-दर्शन की आधार भूत अनेकान्त-दृष्टि भी भगवान महावीर के द्वारा ही पहले पहल स्थिर की गई या उद्‌भावित की गई होगी। परन्तु विचार के विकास क्रम और पुरातन इतिहास के चिंतन करने से साफ मालूम पड़ जाता है कि अनेकान्त दृष्टि का मूल भगवान महावीर से भी पुराना है। यह ठीक है कि जैन-साहित्य मे अनेकान्त दृष्टि का जो स्वरूप आजकल व्यवस्थित रूप से और विकसित रूप से मिलता है वह स्वरूप भगवान महावीर के पूर्व-वर्ती किसी जैन या जैनेतर साहित्य में और उसके समकालीन बौद्ध साहित्य में अनेकान्त दृष्टि-गर्भित बिखरे हुए विचार थोड़े बहुत मिल ही जाते है। इसके सिवाय भगवान महावीर के पूर्ववर्ती भगवान पर्श्वनाथ हुए है जिनका विचार आज यद्यपि उन्ही के शब्दों में--असल रूप में नहीं पाया जाता फिर भी उन्होंने अनेकान्त दृष्टि का स्वरूप स्थिर करने मे अथवा उसके विकास में कुछ न कुछ भाग जरूर लिया है, ऐसा पाया जाता है। यह सब होते हुए भी उपलब्ध-साहित्य का इतिहास स्पष्टरूप से ही यही कहता है कि २५०० वर्ष के भारतीय साहित्य में जो अनेकान्त-दृष्टि का थोड़ा बहुत असर है या खास तौर से जैनवाङ्मय मे अनेकान्त दृष्टि का उत्थान होकर क्रमशः विकास होता गया है और जिसे दूसरे समकालीन दार्शनिक विद्वानों ने अपने-अपने ग्रन्थों में किसी न किसी रूप में अपनाया है उसका मुख्य श्रेय तो भगवान महावीर को ही है; क्योंकि जब हम आज देखते है तो उपलब्ध जैन-प्राचीन ग्रंथों में अनेकान्त दृष्टि की विचार धारा जिस स्पष्ट रूप में पाते हैं उस स्पष्ट रूप में उसे और किसी प्राचीन ग्रन्थ मे नहीं पाते।

जैन विचारकों ने जितना जोर और जितना पुरुषार्थ अनेक दृष्टि के निरूपण में लगाया है, उसका शतांश भी किसी दर्शन के विद्वानों ने नहीं लगाया। यही कारण है कि आज जब कोई 'अनेकान्तवाद' या 'स्याद्वाद' का उच्चारण करता है तब सुनने वाला विद्वान् उससे सहसा जैन-दर्शन भाव ग्रहण करता है। आजकल के बड़े-बड़े विद्वान् तक भी समझते है कि 'स्याद्वाद' यह तो जैनों का ही एक वाद है। इस समझ का कारण है कि जैन विद्वानों ने स्याद्वाद के निरूपण और समर्थन में बहुत बड़े-बड़े ग्रन्थ लिख डाले हैं, अनेक युक्तियों का आविर्भाव किया है और अनेकान्तवाद के शस्त्र के बल से ही उन्होंने दूसरे दार्शनिक विद्वानों के साथ कुश्ती की है।

इस चर्चा से दो बातें स्पष्ट हो जाती है--एक तो यह कि भगवान महावीर ने अपने उपदेशों में अनेकान्तवाद का जैसा स्पष्ट आश्रय लिया है। वैसा उनके समकालीन और पूर्ववर्ती दर्शन प्रवर्तकों में से किसी ने भी नहीं लिया है। दूसरी बात यह कि भगवान महावीर के अनुयायी जैन आचार्यो ने अनेकान्त दृष्टि के निरूपण और समर्थन करने में जितनी शक्ति लगाई है उतनी और किसी भी दर्शन के अनुगामी आचार्यो ने नहीं लगाई।

अनेकांत दृष्टि के मूल तत्त्व

जब सारे जैन विचार और आचार की नींव अनेकान्त दृष्टि ही है तब पहले यह देखना चाहिए कि अनेकान्त दृष्टि किन तत्त्वों के आधार पर खड़ी की गई है? विचार करने और अनेकान्त दृष्टि के साहित्य का अवलोकन करने से मालूम होता है कि अनेकान्त दृष्टि सत्य पर ही खडी है। यद्यपि सभी महान् पुरुष सत्य को पसन्द करते हैं और सत्य की ही खोज तथा सत्य के ही निरूपण में अपना जीवन व्यतीत करते है, तथापि सत्य निरूपण की पद्धति और सत्य की खोज सब की एक सी नहीं होती। म० बुद्ध जिस शैली से सत्य का निरूपण

करते हैं या शंकराचार्य उपनिषदों के आधार पर जिस ढंग से सत्य का प्रकाशन करते हैं उससे भ० महावीर की सत्य प्रकाशन की शैली जुदा है। भ० महावीर की सत्य प्रकाशन शैली का ही दूसरा नाम 'अनेकान्तवाद' है। उसके मूल में दो तत्त्व हैं—पूर्णता और यथार्थता। जो पूर्ण है और पूर्ण होकर भी यथार्थ रूप से प्रतीत होता है वही सत्य कहलाता है।

अनेकान्त की खोज का उद्देश्य और उसके प्रकाशन की शर्तें

वस्तु का पूर्ण रूप मे त्रिकालाबाधित—यथार्थ दर्शन होना कठिन है, किसी को वह हो भी जाय तथापि उसका उसी रूप मे शब्दों के द्वारा ठीक-ठीक कथन करना उस सत्यद्रष्टा और सत्यवादी के लिए भी बड़ा कठिन है। कोई इस कठिन काम को किसी अंश मे करने वाले निकल भी जाएं तो भी देश, काल, परिस्थिति, भाषा और शैली आदि के अनिवार्य भेद के कारण उन सब के कथन मे कुछ न कुछ विरोध या भेद का दिखाई देना अनिवार्य है। यह तो हुई उन पूर्णदर्शी और सत्यवादी इनेगिने मनुष्यों की बात, जिन्हें हम सिर्फ कल्पना या अनुमान से समझ या मान सकते है। हमारा अनुभव तो साधारण मनुष्यों तक परिमित है और वह कहता है कि साधारण मनुष्यों में भी बहुत से यथार्थवादी होकर भी अपूर्ण दर्शी होते है। ऐसी स्थिति में यथार्थवादिता होने पर भी अपूर्ण दर्शन के कारण और उसे प्रकाशित करने की अपूर्ण सामग्री के कारण सत्यप्रिय मनुष्यों की भी समझ मे कभी-कभी भेद आ जाता है और सस्कार भेद उनमे और भी पारस्परिक टक्कर पैदा कर देता है। इस तरह पूर्णदर्शी और अपूर्णदर्शी सभी सत्यवादियों के द्वारा अन्त मे भेद और विरोध की सामग्री आप ही आप प्रस्तुत हो जाती है या दूसरे लोग उनसे ऐसी सामग्री पैदा कर लेते है।

ऐसी वस्तुस्थिति देख कर भ० महावीर ने सोचा कि ऐसा कौन सा रास्ता निकाला जाय जिससे वस्तु का पूर्ण या अपूर्ण सत्यदर्शन करने वाले के साथ अन्याय न हो। अपूर्ण और अपने से विरोधी होकर भी यदि दूसरे का दर्शन सत्य है, इसी तरह अपूर्ण और दूसरे से विरोधी होकर भी यदि अपना दर्शन सत्य है तो दोनों को ही न्याय मिले, इसका भी क्या उपाय है ? इसी चितनप्रधान तपस्या ने भगवान को अनेकान्तदृष्टि सुझाई, उनका सत्य संशोधन का संकल्प सिद्ध हुआ। उन्होंने उस मिली हुई अनेकान्तदृष्टि की चाबी से वैयक्तिक और सामष्टिक जीवन की व्यावहारिक और पारमार्थिक समस्याओं के ताले खोल दिये और समाधान प्राप्त किया। तब उन्होंने जीवनोपयोगी विचार और आचार का निर्माण करते समय उस अनेकान्त दृष्टि को निम्नलिखित मुख्य शर्तों पर प्रकाशित किया और उसके अनुसरण का अपने जीवन द्वारा उन्हीं शर्तों पर उपदेश दिया। वे शर्तें इस प्रकार है :—

१—राग और द्वेषजन्य संस्कारों के वशीभूत न होना अर्थात् तेजस्वी मध्यस्थ भाव रखना।

२—जब तक मध्यस्थ भाव का पूर्ण विकास न हो तब तक उस लक्ष्य की ओर ध्यान रखकर केवल सत्य की जिज्ञासा रखना।

३—कैसे भी विरोधी भासमान पक्ष से न घबराना और अपने पक्ष की तरह उस पक्ष पर भी आदरपूर्वक विचार करना तथा अपने पक्ष पर भी विरोधी पक्ष की तरह तीव्र समालोचक दृष्टि रखना।

४—अपने तथा दूसरों के अनुभवों मे से जो-जो अंश ठीक जंचे, चाहे वे विरोधी ही प्रतीत क्यों न हों—उन सबका विवेक—प्रज्ञा से समन्वय करने की उदारता का अभ्यास करना और अनुभव बढ़ने पर पूर्व के समन्वय में जहां गलती मालूम हो वहां मिथ्याभिमान छोड़ कर सुधार करना और इसी क्रम से आगे बढ़ना।

अनेकान्त साहित्य का विकास

भगवान महावीर ने अनेकान्त दृष्टि को पहिले अपने जीवन में उतारा था और उसके बाद ही दूसरों को इसका उपदेश दिया था इसलिए अनेकान्त दृष्टि की स्थापना और प्रचार के निमित्त उनके पास काफी अनुभव बल और तप बल था। अतएव उनके मूल उपदेश में से जो कुछ प्राचीन अवशेष आजकल पाये जाते हैं उन आगमग्रन्थों में हम अनेकान्त दृष्टि को स्पष्टरूप से पाते हैं सही, पर उसमे तर्कवाद या खण्डनमण्डन का वह जटिल जाल नहीं पाते जो कि पिछले साहित्य मे देखने में आता है। हमे उन आगम ग्रन्थों मे अनेकान्त दृष्टि का सरलस्वरूप और संक्षिप्त विभाग ही नजर आता है। परन्तु भगवान के बाद जब उनकी दृष्टि पर सम्प्रदाय कायम हुआ और उसका अनुगामी समाज स्थिर हुआ तथा बढ़ने लगा, तब चारों ओर प्रज्ञा होने पर हमले होने लगे। महावीर के अनुगामी आचार्यों मे त्याग और प्रज्ञा होने पर भी, महावीर जैसा स्पष्ट जीवन का अनुभव और तप न था। इसलिए उन्होंने उन हमलों से बचने के लिए नैयायिक गौतम और वात्स्यायन के कथन की तरह कथावाद के उपरान्त जल्प और कहीं-कहीं वितण्डा का भी आश्रय लिया है। अनेकान्त दृष्टि का जो तत्त्व उनको विरासत में मिला था उसके संरक्षण के लिए उन्होंने जैसे बन पड़ा वैसे कभी वाद किया, कभी जल्प और कभी वितण्डा। परन्तु इसके साथ ही साथ उन्होंने अनेकान्त दृष्टि को निर्दोष स्थापित करके उसका विद्वानों में प्रचार भी करना चाहा और इस चाहजनित प्रयत्न से उन्होंने अनेकान्त दृष्टि के अनेक मर्मो को प्रकट किया और उनकी उपयोगिता स्थापित की। इस खण्डन-मण्डन, स्थापन और प्रचार के करीब दो हजार वर्षो मे महावीर के शिष्यों ने सिर्फ अनेकान्तदृष्टि विषयक इतना बड़ा ग्रन्थ समूह बना डाला है कि उसका एक खासा पुस्तकालय बन सकता है। पूर्व-पश्चिम और दक्खिन-उत्तर हिन्दुस्तान के सब भागों में सब समयों में उत्पन्न होने वाले अनेक छोटे बड़े और प्रचन्ड आचार्यों ने अनेक भाषाओं मे केवल अनेकान्तदृष्टि और उसमे से फलित होने वाले वादों पर दण्डकारण्य से भी कहीं विस्तृत, सूक्ष्म और जटिल चर्चा की है। शुरु मे जो साहित्य अनेकान्त दृष्टि के अवलम्बन से निर्मित हुआ था उसके स्थान पर पिछला साहित्य, खास कर तार्किक साहित्य —मुख्यतया अनेकान्तदृष्टि के निरूपण तथा उसके ऊपर अन्य वादियों के द्वारा किये गये आक्षेपों के निराकरण करने के लिए रचा गया। इस तरह संप्रदाय की रक्षा और प्रचार की भावना में से जो केवल अनेकान्त विषयक साहित्य का विकास हुआ है उसका वर्णन करने के लिए एक खासी जुदी पुस्तिका की जरूरत है। तथापि इतना तो यहां निर्देश कर देना ही चाहिए कि समन्तभद्र और सिद्धसेन, हरिभद्र और अकलङ्क, विद्यानन्द और प्रभाचन्द्र, अभयदेव और वादिदेवसूरि तथा हेमचन्द्र और यशोविजयजी जैसे प्रकाण्ड विचारको ने जो अनेकान्तदृष्टि के बारे में लिखा है वह भारतीय दर्शन साहित्य मे बड़ा महत्त्व रखता है और विचारकों को उनके प्रन्थों मे से मनन करने योग्य बहुत कुछ सामग्री मिल सकती है।

फलितवाद

अनेकान्तदृष्टि तो एक मूल है, उसके ऊपर से और उसके आश्रय पर विविध वादों तथा चर्चाओं का शाखाप्रशाखाओं की तरह बहुत बड़ा विस्तार हुआ है। उसमें से मुख्य दो वाद यहां उल्लिखित किये जाने योग्य हैं- एक नयवाद और दूसरा सप्तभंगीवाद। अनेकान्तदृष्टि का आविर्भाव आध्यात्मिक साधना और दार्शनिक प्रदेश में हुआ इसलिए उसका उपयोग भी पहले पहल वहीं होना अनिवार्य था। भगवान के इर्दगिर्द और उनके अनुयायी आचार्यों के समीप जो-जो विचार धाराएं चल रहीं थीं उनका समन्वय करना अनेकान्तदृष्टि के लिए आवश्यक-

था। इसी प्राप्त कार्य में से 'नयवाद' की सृष्टि हुई। यद्यपि किसी किसी नय के पूर्ववर्ती और उत्तरवर्ती उदाहरणों में भारतीय दर्शन के विकास के अनुसार विकास होता गया है। तथापि दर्शन प्रदेश में से उत्पन्न होने वाले नयवाद की उदाहरणमाला भी आज तक दार्शनिक ही रही है। प्रत्येक नय की व्याख्या और चर्चा का विकास हुआ है पर उसकी उदाहरण माला तो दार्शनिकक्षेत्र के बाहर से आई ही नहीं। यही एक बात यहां समझाने को पर्याप्त है कि सब क्षेत्रों को व्याप्त करने की ताकत रखने वाले अनेकान्त का प्रथम आविर्भाव किस क्षेत्र में हुआ और हजारों वर्षों के बाद तक भी उसकी चर्चा किस क्षेत्र तक परिमित रही?

भारतीय दर्शनों में जैन दर्शन के अतिरिक्त, उस समय जो दर्शन अति प्रसिद्ध थे और पीछे से जो अति प्रसिद्ध हुए उनमें वैशेषिक, न्याय, सांख्य, औपनिषद्-वेदान्त, बौद्ध और शाब्दिक—ये ही दर्शन मुख्य हैं। इन प्रसिद्ध दर्शनों को पूर्ण सत्य मानने में वस्तुतः तात्त्विक और व्यावहारिक दोनों आपत्तियां थीं और उन्हें बिल्कुल असत्य कह देने में सत्य का घात था इस लए उनके बीच में रहकर उन्हीं में से सत्य के गवेषण का मार्ग सरल रूप में लोगों के सामने प्रदर्शित करना था। यही कारण है कि हम उपलब्ध समग्र जैन-वाङ्मय में नयवाद के भेद प्रभेद और उनके उदाहरण तक उक्त दर्शनों के रूप में तथा उनकी विकसित शाखाओं के रूप में ही पाते हैं। विचार की जितनी पद्धतियां उस समय मौजूद थीं, उनके समन्वय करने का आदेश—अनेकान्तदृष्टि ने किया और उसमें से नयवाद फलित हुआ जिससे कि दार्शनिक मारामारी कम हो, पर दूसरी तरफ एक एक वाक्य पर अधैर्य और नासमझी के कारण पण्डितगण लड़ा करते थे। एक पण्डित यदि किसी चीज को नित्य कहता तो दूसरा सामने खड़ा होकर यह कहता कि वह तो अनित्य है, नित्य नहीं। इसी तरह फिर पहला पण्डित दूसरे के विरुद्ध बोल उठता था। सिर्फ नित्यत्व के विषय में ही नहीं किन्तु प्रत्येक अंश में यह झगड़ा जहां-तहां होता ही रहता था। यह स्थिति देखकर अनेकान्त दृष्टि वाले तत्कालीन आचार्यों ने उस झगड़े का अन्त अनेकान्त दृष्टि के द्वारा करना चाहा और उस प्रयत्न के परिणाम स्वरूप 'सप्तभङ्गीवाद' फलित हुआ। अनेकान्त दृष्टि के प्रथम फलस्वरूप नयवाद में तो दर्शनों को स्थान मिला है और उसी के दूसरे फलस्वरूप सप्तभङ्गीवाद में किसी एक ही वस्तु के विषय में प्रचलित विरोधी कथनों को या विचारों को स्थान मिला है। पहले वाद में समूचे सब दर्शन संगृहीत हैं और दूसरे में दर्शन के विशकलित मन्तव्यों का समन्वय है। प्रत्येक फलितवाद की सूक्ष्म चर्चा और उसके इतिहास के लिए यहां स्थान नहीं है और न उतना अवकाश ही है तथापि इतना कह देना जरूरी है कि अनेकान्त दृष्टि ही महावीर की मूल दृष्टि और स्वतन्त्र दृष्टि है। नयवाद तथा सप्तभङ्गीवाद आदि तो उस दृष्टि के ऐतिहासिक परिस्थिति—अनुसारी प्रासंगिक फल मात्र हैं। अतएव नय तथा सप्तभङ्गी आदि वादों का स्वरूप तथा उनके उदाहरण बदले भी जा सकते है, पर अनेकान्त दृष्टि का स्वरूप तो एक ही प्रकार का रह सकता है-भले ही उसके उदाहरण बदल जायँ।

अनेकान्त दृष्टि का असर

जब दूसरे विद्वानों ने अनेकान्त-दृष्टि को तत्त्वरूप में ग्रहण करने की जगह सांप्रदायिकवाद रूप में ग्रहण किया तब उसके ऊपर चारों ओर से आक्षेपों के प्रहार होने लगे। बादरायण जैसे सूत्रकारों ने उसके खण्डन के लिए सूत्र रच डाले और उन सूत्रों के भाष्यकारों ने उसी विषय में अपने भाष्यों की रचनाएँ कीं। वसुबन्धु, दिग्नाग, धर्मकीर्ति और शांतरक्षित जैसे बड़े-बड़े प्रभावशाली बौद्ध विद्वानों ने भी अनेकान्तवाद की पूरी खबर ली। इधर से जैन विचारक विद्वानों ने भी उनका सामना किया। इस प्रचण्ड संघर्ष का अनिवार्य परिणाम यह आया कि एक ओर से अनेकान्त-दृष्टि का तर्कबद्ध विकास हुआ और दूसरी ओर से उसका प्रभाव दूसरे विरोधी

सांप्रदायिक विद्वानों पर भी पड़ा। दक्षिण हिन्दुस्तान में प्रचण्ड दिगम्बराचार्यों और प्रकाण्ड मीमांसक तथा वेदान्त विद्वानों के बीच शास्त्रार्थ की कुश्ती हुई उससे अन्त में अनेकान्त-दृष्टि का ही असर अधिक फैला। यहाँ तक कि रामानुज जैसे बिल्कुल जैनत्व विरोधी प्रखर आचार्य शंकराचार्य के मायावाद के विरुद्ध अपना मत स्थापित करते समय आश्रय सामान्य उपनिषदों का लिया पर उनमे से विशिष्टाद्वैत का निरूपण करते समय अनेकान्त-दृष्टि का उपयोग किया, अथवा यों कहिये कि रामानुज ने अपने ढग से अनेकान्त-दृष्टि को विशिष्टाद्वैत की घटना में परिणत किया और औपनिषद तत्त्व का जामा पहना कर अनेकान्त-दृष्टि मे से विशिष्टाद्वैतवाद खड़ा करके अनेकान्त दृष्टि की ओर आकर्षित जनता को वेदान्त मार्ग पर स्थिर रखा। पुष्टि मार्ग के पुरस्कर्ता वल्लभ जो दक्षिण हिन्दुस्तान मे हुए, उनके शुद्धाद्वैत विषयक सब तत्त्व है तो औपनिषदिक पर उनकी सारी विचारसरणी अनेकान्त-दृष्टि का नया वेदान्तीय स्वांग है। इधर उत्तर और पश्चिम हिन्दुस्तान मे जो दूसरे विद्वानों के साथ श्वेताम्बरीय महान् विद्वानों का खण्डनमण्डन-विषयक द्वन्द्व हुआ उसके फल स्वरूप अनेकान्तवाद का असर जनता मे फैला और सांप्रदायिक ढंग से अनेकान्तवाद का विरोध करने वाले भी जानते अनजानते अनेकान्त-दृष्टि को अपनाने लगे। इस तरह वाद रूप में अनेकान्तदृष्टि आज तक जैनों की ही बनी हुई है। विकृत रूप में हिन्दुस्तान के हरएक भाग मे फैला हुआ है। इसका सबूत सब भागों के साहित्य में से मिल सकता है।

व्यवहार में अनेकान्त का उपयोग न होने का नतीजा

जिस समय राजकीय उलट फेर का अनिष्ट परिणाम स्थायीरूप से ध्यान आया न था, सामाजिक बुराइयां आज की तरह असह्यरूप मे खटकती न थीं, औद्योगिक और खेती की स्थिति आज के जैसी अस्तव्यस्त हुई न थी, समझ पूर्वक या बिना समझे लोग एक तरह से अपनी स्थिति मे सतुष्ट-प्राय थे और असतोष का दावानल आज की तरह व्याप्त न था, उस समय आध्यात्मिकसाधना मे से आविर्भूत अनेकान्तदृष्टि केवल दार्शनिक प्रदेश मे रही और सिर्फ चर्चा तथा वादविवाद का विषय बन कर जीवन से अलग रह कर भी उसने अपना अस्तित्व कायम रखा, कुछ प्रतिष्ठा भी पाई, यह सब उस समय के योग्य था। परन्तु आज स्थिति बिलकुल बदल गई है, दुनिया के किसी भी धर्म का तत्त्व कैसा ही गभीर क्यो न हो, पर अब वह यदि उस धर्म की सस्थाओं तक या उसके पण्डितों तथा धर्मगुरुओं के प्रवचनों तक ही परिमित रहेगा तो इस वैज्ञानिक प्रभाव वाले जगत में उसकी कद्र पुरानी कब्र से अधिक नहीं होगी। अनेकान्त-दृष्टि और उसकी आधारभूत अहिंसा—ये दोनों तत्त्व महान् से महान् हैं, उनका प्रभाव तथा प्रतिष्ठा जमाने मे जैन सम्प्रदाय का बड़ा भारी हिस्सा भी है पर कोई बीसवीं सदी के विषम राष्ट्रीय तथा सामाजिक जीवन मे उन तत्त्वो से यदि कोई खास फायदा न पहुँचे तो मंदिर, मठ और उपाश्रयों मे हजारों पण्डितों के द्वारा चिल्लाहट मचाये जाने पर भी उन्हे कोई पूछेगा नहीं, यह निःसशय बात है। जैनलिंगधारी सैकड़ों धर्मगुरु और सैकड़ों पंडित अनेकान्त के वाल की खाल दिन रात निकालते रहते हैं और अहिंसा की सूक्ष्म चर्चा मे खून सुखाते तथा सिर तक फोड़ा करते हैं, तथापि लोग अपनी स्थिति के समाधान के लिए उनके पास नहीं फटकते। कोई जवान उनके पास पहुँच भी जाता है तो वह तुरन्त उनसे पूछ बैठता है कि "आप के पास जब समाधानकारी अनेकान्त दृष्टि और अहिंसा तत्त्व मौजूद है तब आप लोग आपस में ही गैरों की तरह बात-बात में क्यों टकराते हैं? मंदिर के लिए, तीर्थ के लिए, धार्मिक प्रथाओं के लिए, सामाजिक रीति रिवाजों के लिए—यहां तक कि वेश रखना, कैसा रखना, हाथ मे क्या पकड़ना इत्यादि बालसुलभ बातों के लिए—आप लोग क्यों आपस मे लड़ते हैं? क्या आप का अनेकान्तवाद ऐसे विषयों मे कोई मार्ग निकाल नहीं सकता? क्या आप के अनेकान्तवाद में और अहिंसा तत्त्व में प्रीविकाउन्सिल, हाईकोर्ट अथवा

मामूली अदालत जितनी भी समाधानकारक शक्ति नहीं है ? क्या हमारी राजकीय तथा सामाजिक उलझनों को सुलझाने का सामर्थ्य आप के इन दोनों तत्त्वों में नहीं है ? यदि इन सब प्रश्नों का अच्छा सामाधानकारक उत्तर आप असली तौर से 'हां' में नहीं दे सकते तो आप के पास आकर हम क्या करेंगे ? हमारे जीवन में तो पद पद पर अनेक कठिनाइयां आती रहती हैं उन्हें हल किये बिना यदि हम हाथ में पोथियां लेकर कथंचित् एकानेक, कथंचित् भेदाभेद और कथचित् नित्यानित्य के खाली नारे लगाया करें तो इससे हमें क्या लाभ पहुँचेगा ? अथवा हमारे व्यावहारिक तथा आध्यात्मिक जीवन में क्या फर्क पड़ेगा ?" और यह सब पूछना है भी ठीक, जिसका उत्तर देना उनके लिए असंभव हो जाता है।

इस में सन्देह नहीं कि अहिंसा और अनेकान्त की चर्चावाली पोथियों की उन पोथीवाले भण्डारों की उनके रचने वालों के नामों की तथा उनके रचने के स्थानों की इतनी अधिक पूजा होती है कि उसमें सिर्फ फूलों का ही नहीं किन्तु सोने-चांदी तथा जवाहरात तक का ढेर लग जाता है तो भी उस पूजा के करने तथा करानेवालों का जीवन दूसरों जैसा प्रायः पामर ही नजर आता है और दूसरी तरफ हम देखते हैं तो स्पष्ट नजर आता है कि गांधीजी के अहिंसा तत्त्व की ओर सारी दुनिया देख रही है और उनके समन्वयशील व्यवहार के कायल उनके प्रतिपक्षी तक हो रहे हैं ! महावीर की अहिंसा और अनेकान्तदृष्टि की डौंडी पीटने वालों की ओर कोई श्रीमान् आंख उठा कर देखता तक नहीं और गांधीजी की तरफ सारा विचारक-वर्ग ध्यान दे रहा है इस अंतर का कारण क्या है ? इस सवाल के उत्तर में सब कुछ आजाता है।

अब कैसा उपयोग होना चाहिए ?

अनेकान्त दृष्टि यदि अध्यात्मिक मार्ग में सफल हो सकती है और अहिंसा का सिद्धान्त यदि आध्यात्मिक कल्याणसाधक हो सकता है तो यह भी मानना चहिए कि ये दोनों तत्त्व व्यावहारिक जीवन का श्रेय अवश्य कर सकते हैं क्योंकि जीवन व्यावहारिक हो या आध्यात्मिक-पर उसकी शुद्धि के स्वरूप में भिन्नता हो ही नहीं सकती और हम यह मानते हैं कि जीवन की शुद्धि अनेकान्तदृष्टि और अहिंसा के सिवाय अन्य प्रकार से हो ही नहीं सकती। इस लिए हमें जीवन व्यावहारिक या आध्यात्मिक कैसा ही पसंद क्यों न हो पर यदि उसे उन्नत बनाना इष्ट है तो उस जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनेकान्तदृष्टि को तथा अहिंसा तत्त्व को प्रज्ञापूर्वक लागू करना ही चाहिए। जो लोग व्यावहारिक जीवन में इन दो तत्त्वों का प्रयोग करना शक्य नहीं समझते उन्हें सिर्फ आध्यात्मिक कहलानेवाले जीवन का धारण करना चाहिए। इस दलील के फलस्वरूप अन्तिम प्रश्न यही होता है कि तब इस समय इन दोनों तत्त्वों का उपयोग व्यावहारिक जीवन में कैसे किया जाय ? इस प्रश्न का देना ही अनेकान्तवाद की मर्यादा है।

जैन समाज के व्यावहारिक जीवन की कुछ समस्याएँ ये हैं:—

१—समग्र विश्व के साथ जैन धर्म का असली मेल कितना और किस प्रकार का हो सकता है ?

२—राष्ट्रीय आपत्ति और संपत्ति के समय जैन धर्म कैसा व्यवहार रखने की इजाजत देता है ?

३—सामाजिक और सांप्रदायिक भेदों तथा फूटों को मिटाने की कितनी शक्ति जैन धर्म में है ?

यदि इन समस्याओं को हल करने के लिए अनेकान्तदृष्टि तथा अहिंसा का उपयोग हो सकता है तो वही उपयोग इन दोनों तत्त्वों की प्राण पूजा है और यदि ऐसा उपयोग न किया जासके तो इन दोनों की पूजा सिर्फ पाषाणपूजा या शब्दपूजा मात्र होगी परन्तु मैंने जहां तक गहरा विचार किया है उससे यह स्पष्ट जान पड़ता है कि उक्त तीनों का ही नहीं किन्तु दूसरी भी वैसी सब समस्याओं

का व्यावहारिक समाधान, यदि प्रज्ञा है तो अनेकान्तदृष्टि के द्वारा तथा अहिंसा के सिद्धान्त के द्वारा पूरे तौर से किया जा सकता है उदाहरण के तौर पर जैनधर्म प्रवृत्ति मार्ग है या निवृत्ति मार्ग ? इस प्रश्न का उत्तर, अनेकान्तदृष्टि की योजना करके, यों दिया जा सकता है—"जैन धर्म प्रवृत्ति और निवृत्ति उभय मार्गावलम्बी है। प्रत्येक क्षेत्र मे जहां सेवा का प्रसग हो वहां अर्पण की प्रवृत्ति या आदेश करने के कारण जैन धर्म प्रवृत्तिगामी है और जहां भोगवृत्ति का प्रसंग हो वहां निवृत्ति का आदेश करने के कारण निवृत्तिगामी भी है।" परन्तु जैसा आज कल देखा जाता है, भोग मे—अर्थात दूसरो से सुविधा ग्रहण करने मे-प्रवृत्ति करना और योग में-अर्थात् दूसरों को अपनी सुविधा देने में-निवृत्ति धारण करना, यह अनेकान्त तथा अहिंसा का विकृतरूप अथवा इनका स्पष्ट भग है। श्वेताम्बरीय झगड़ों मे से कुछ को लेकर उन पर भी अनेकान्तदृष्टि लागू करनी चाहिये नग्नत्व और वस्त्रधारित्व के विषय मे द्रव्यार्थिक, पर्यायार्थिक-इन दो नयो का समन्वय बराबर हो सकता है। जैनत्व अर्थात् वीतरागत्व यह तो द्रव्य (सामान्य) है और नग्नत्व, तथा वस्त्रधारित्व, एवं नग्नत्व तथा वस्त्रधारण के विविधस्वरूप-ये सब पर्याय (विशेष) हैं। उक्त द्रव्य शाश्वत है पर उसके उक्त पर्याय सभी अशाश्वत तथा अव्यापक हैं। प्रत्येक पर्याय यदि द्रव्यसम्बद्ध है-द्रव्य का बाधक नहीं है—तो वह सत्य है अन्यथा सभी असत्य है। इसी तरह जीवनशुद्धि यह द्रव्य है और स्त्रीत्व या पुरुषत्व दोनों पर्याय हैं। यही बात तीर्थ के और मन्दिर के विषय में घटानी चाहिए। न्यात, और फिर्कों के बारे में भेदाभेद भङ्गो का उपयोग करके ही झगड़ा निपटाना चाहिए। उत्कर्ष के सभी प्रसङ्गों मे अभिन्न अर्थात् एक हो जाना और अपकर्ष के प्रसगों मे भिन्न रहना अर्थात् दलबन्दी न करना। इसी प्रकार वृद्धलग्न अनेकपत्नीग्रहण, पुनर्विवाह जैसी विवादास्पद विषयों के लिए भी कथंचित् विधेय अविधेय की भगी प्रयुक्त किये बिना समाज समंजस रूप से जीवित रह नहीं सकता।

चाहे जिस प्रकार से विचार किया पर आज कल की परिस्थिति मे तो यह सुनिश्चित है कि जैसे सिद्धसेन-समंतभद्र आदि पूर्वाचार्यो ने अपने समय के विवादास्पद पक्ष-प्रतिपक्षों पर अनेकान्त वा और तज्जनित नय आदि वादों का प्रयोग किया है वैसा हीं हमे भी उपस्थित प्रश्नों पर उनका प्रयोग करना ही चाहिए। यदि हम ऐसा करने को तैयार नहीं हैं तो उत्कर्ष की अभिलाषा रखने का भी हमे कोई अधिकार नहीं है।

अनेकान्त की मर्यादा इतनी विस्तृत और व्यापक है कि उसमे से सब विषयों पर प्रकाश डाला जा सकता है। इसलिए कोई ऐसा भय न रखे कि प्रस्तुत व्यावहारिक विषयों पर पूर्वाचार्यो ने तो चर्चा नहीं की फिर यहां क्यों की गई ? क्या यह कोई उचित समझेगा कि एक तरफ से समाज मे अविभक्तता की शक्ति की जरूरत होने पर भी वह छोटी-छोटी जातियों अथवा उपजातियो मे विभक्त होकर बरबाद होता रहे, दूसरी तरफ से विद्या और उपयोग की जीवनप्रद संस्थाओं मे बल लगाने के बजाय धन, बुद्धि और समय की सारी शक्ति को समाज तीर्थ के झगड़ों मे खर्च करता रहे और तीसरी तरफ जिस विधवा मे संयम पालन का सामर्थ्य नहीं है उस पर संयम का बोझ समाज बलपूर्वक लादता रहे तथा जिसमे विद्याग्रहण एवं संयमपालन की शक्ति है उस विधवा को उसके लिये पूर्ण मौका देने का कोई प्रबन्ध न करके उससे समाज कल्याण की अभिलाषा रखे और हम पण्डितगण सन्मतितर्क तथा आप्तमीमांसा के अनेकान्त और नयवाद विषयक शास्त्रार्थों पर दिन रात सिरपच्ची किया करें ? जिसमे व्यवहार बुद्धि होगी और प्रज्ञा की जागृति होगी वह तो यही कहेगा कि अनेकान्त भाव की मर्यादा मे से जैसे कभी आप्त मीमांसा का जन्म और सन्मतितर्क का आविर्भाव हुआ था वैसे ही उस मर्यादा मे से आजकल 'समाज मीमांसा' और 'समाज तर्क' का जन्म होना चाहिए तथा उसके द्वारा अनेकान्त के इतिहास का उपयोगी पृष्ठ लिखा जाना चाहिए।

अपेक्षा या नय

मकान किसी एक कोने में पूरा नहीं होता। उसके अनेक कोने भी किसी एक ही दिशा में नहीं होते। पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण आदि परस्पर विरुद्ध दिशा वाले एक-एक कोने पर खड़े रहकर किया जाने वाला उस मकान का अवलोकन पूर्ण तो नहीं होता, पर वह अयथार्थ भी नहीं। जुदे-जुदे सम्भवित सभी कोनों पर खड़े रहकर किये जाने वाले सभी सम्भवित अवलोकनों का सार समुच्चय ही उस मकान का पूरा अवलोकन है। प्रत्येक कोणसम्भवी प्रत्येक अवलोकन उस पूर्ण अवलोकन का अनिवार्य अङ्ग है। वैसे ही किसी एक वस्तु या समग्र विश्व का तात्त्विक चिन्तन दर्शन भी अनेक अपेक्षाओं से निष्पन्न होता है। मन की सहज रचना, उस पर पड़ने वाले आगन्तुक संस्कार और चिन्त्य वस्तु का स्वरूप इत्यादि के सम्मेलन से ही अपेक्षा बनती है। ऐसी अपेक्षाएँ अनेक होती है, जिनका आश्रय लेकर वस्तु का विचार किया जाता है। विचार को सहारा देने के कारण या विचार स्रोत के उद्गम का आधार बनने के कारण वे ही अपेक्षाएँ दृष्टि-कोण या दृष्टि बिन्दु भी कही जाती हैं। सम्भवित सभी अपेक्षाओं से—चाहे वे विरुद्ध ही क्यों न दिखाई देती हों—किये जाने वाले चिन्तन व दर्शनों का सारसमुच्चय ही उस विषय का पूर्ण—अनेकान्त दर्शन है। प्रत्येक अपेक्षासम्भवी दर्शन उस पूर्ण दर्शन का एक-एक अङ्ग है जो परस्पर विरुद्ध होकर भी पूर्ण दर्शन में समन्वय पाने के कारण वस्तुतः अविरुद्ध हीं है।

जब किसी मनोवृत्ति विश्व के अन्तर्गत सभी भेदों को-चाहे वे गुण, धर्म या स्वरूप कृत हों या व्यक्तित्वकृत हों—भुलाकर अर्थात् उनकी ओर झुके बिना ही एक मात्र अखण्डताका ही विचार करती है, तब उसे अखण्ड या एक ही विश्व का दर्शन होता है। अभेद की उस भूमिका पर से निष्पन्न होने वाला 'सत्' शब्द के मात्र अखण्ड अर्थ का दर्शन ही संग्रह नय है। गुण धर्म कृत या व्यक्तित्व कृत भेदों की ओर झुकने-वाली मनोवृत्ति से किया जाने वाला उसी विश्व का दर्शन व्यवहार नय कहलाता है, क्योंकि उसमे लोकसिद्ध व्यवहारों की भूमिका रूप से भेदों का खास स्थान है। इस दर्शन मे 'सत्' शब्द की अर्थ मर्यादा अखण्डित न रहकर अनेक खण्डों मे विभाजित हो जाती है। वही भेदगामिनी मनोवृत्ति या अपेक्षा-सिर्फ कालकृत भेदों की ओर झुककर सिर्फ वर्तमान को ही कार्यक्षम होने के कारण जब सत् रूप से देखती है और अतीत अनागत को 'सत्' शब्द की अर्थ मर्यादा मे से हटा देती है तब उसके द्वारा फलित होने वाला विश्व का दर्शन ऋजुसूत्र क्योंकि वह अतीत-अनागत के चक्रव्यूह को छोड़कर सिर्फ वर्तमान की सीधी रेखा पर चलता है।

उपर्युक्त तीनों मनोवृत्तियां ऐसी है जो शब्द या शब्द के गुण-धर्मों का आश्रय बिना लिये ही किसी भी वस्तु का चिन्तन करती है। अतएव वे तीनों प्रकार के चिन्तन अर्थ नय है। पर ऐसी भी मनोवृत्ति होती है जो शब्द के गुण धर्मों का आश्रय लेकर ही अर्थ का विचार करती है। अतएव ऐसी मनोवृत्ति से फलित अर्थचिन्तन शब्द नय कहे जाते है। शाब्दिक लोग ही मुख्यतया शब्द नय के अधिकारी है, क्योंकि उन्ही के विविध दृष्टि बिन्दुओं से शब्दनय में विविधता आई है।

जो शाब्दिक सभी शब्दों को अखण्ड अर्थात् अव्युत्पन्न मानते है वे व्युत्पत्ति भेद से अर्थ भेद न मानने पर भी लिङ्ग, पुरुष, काल आदि अन्य प्रकार के शब्दधर्मों के भेद के आधार पर अर्थ का वैविध्य बतलाते हैं। उनका वह अर्थभेद का दर्शन शब्द नय या साम्प्रत नय है। प्रत्येक शब्द को व्युत्पत्ति सिद्ध ही मानने वाली शाब्दिक पर्याय अर्थात् एकार्थक समझे जाने वाले शब्दों के अर्थ मे भी व्युत्पत्ति भेद से भेद बतलाते है। उनका वह शक्र, इन्द्र आदि जैसे पर्याय शब्दों के अर्थ भेद का दर्शन समभिरूढ नय कहलाता है। व्युत्पत्ति के भेद

से ही नहीं, बल्कि एक ही व्युत्पत्ति से फलित होने वाले अर्थ की मौजूदगी के भेद के कारण से भी जो दर्शन अर्थ भेद मानता है वह एवंभूत नय कहलाता है। इन तार्किक छः नयों के अलावा एक नैगम नाम का नय भी है। जिसमें निगम अर्थात् देश रूढ़ि के अनुसार अभेदगामी और भेदगामी सब प्रकार के विचारों का समावेश माना गया है। प्रधानतया ये ही सात नय हैं। पर किसी एक अंश को अर्थात् दृष्टिकोण को अवलम्बित करके प्रवृत्त होने वाले सब प्रकार के विचार उस-उस अपेक्षा के सूचक नय ही है।

शास्त्र मे द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक ऐसे दो नय भी प्रसिद्ध हैं पर वे नय उपर्युक्त सात नयों से अलग नहीं है किन्तु उन्हीं का संक्षिप्त वर्गीकरण या भूमिका मात्र है। द्रव्य अर्थात् सामान्य, अन्वय, अभेद या एकत्व को विषय करने वाला विचार मार्ग द्रव्यार्थिक नय है। नैगम- संग्रह और व्यवहार—ये तीनों द्रव्यार्थिक ही हैं। इननें से संग्रह तो शुद्ध अभेद का विचार होने से शुद्ध या मूल ही द्रव्यार्थिक है जब कि व्यवहार और नैगम की प्रवृत्ति भेदगामी होकर भी किसी न किसी प्रकार के अभेद को भी अवलम्बित करके ही चलती है। इसलिए वे भी द्रव्यार्थिक ही माने गये हैं। अलबत्ता वे संग्रह की तरह शुद्ध न होकर अशुद्ध— मिश्रित ही द्रव्यार्थिक हैं।

पर्याय अर्थात् विशेष, व्यावृत्ति या भेद को ही लक्ष्य करके प्रवृत्त होने वाला विचार पथ पर्यायार्थिक नय है। ऋजुसूत्र आदि बाकी के चारों नय पर्यायार्थिक ही माने गए हैं। अभेद को छोड़कर एक मात्र भेद का विचार-ऋजुसूत्र से शुरू होता है इसलिए उसी को शास्त्र में पर्यायार्थिक नय की प्रकृति या मूलाधार कहा है। पिछले तीन नय उसी मूलभूत पर्यायार्थिक के एक प्रकार से विस्तारमात्र हैं।

केवल ज्ञान को उपयोगी मान कर उसके आश्रय से प्रवृत्त होनेवाली विचार धारा ज्ञान नय है तो केवल क्रिया के आश्रय से प्रवृत्त होनेवाली विचार धारा क्रिया नय है। नयरूप आधार-स्तम्भों के अपरिमित होने के कारण विश्व का पूर्ण दर्शन-अनेकान्त भी निस्सीम है।

सप्तभंगी

भिन्न भिन्न अपेक्षाओं दृष्टिकोणों या मनोवृत्तियों से जो एक ही तत्त्व के नाना दर्शन फलित होते हैं उन्हीं के आधार पर भंगवाद की सृष्टि खड़ी होती है। जिन दो दर्शनों के विषय ठीक एक दूसरे के बिल्कुल विरोधी पड़ते हों ऐसे दर्शनों का समन्वय बतलाने की सृष्टि से उनके विषयभूत भाव अभावात्मक दोनों अंशों को लेकर उन पर जो सम्भवित वाक्य—भङ्ग बनाये जाते है। वही सप्तभंगी है। सप्तभंगी का आधार नयवाद है, और उसका ध्येय तो समन्वय है अर्थात् अनेकान्त कोटि का व्यापक दर्शन करना है; जैसे किसी भी प्रमाण से जाने हुए पदार्थ का दूसरे को बोध कराने के लिए परार्थ अनुमान वाक्य की रचना की जाती है, वैसे ही विरुद्ध अंशों का समन्वय श्रोता का समझाने की दृष्टि से भंग वाक्य की रचना भी की जाती है। इसतरह नयवाद और भंगवाद अनेकान्त दृष्टि के क्षेत्र मे आप ही आप फलित हो जाते है।

दर्शनान्तर में अनेकान्तवाद

यह ठीक है कि वैदिक परम्परा के न्याय, वेदान्त आदि दर्शनों में तथा बौद्ध दर्शन में किसी एक वस्तु के विविध दृष्टियों से निरूपण की पद्धति तथा अनेक पक्षों के समन्वय की दृष्टि भी देखी जाती है। फिर भी प्रत्येक वस्तु और उनके प्रत्येक पहलू पर संभवित समग्र दृष्टि बिन्दुओं मे विचार करने का आत्यंतिक आग्रह तथा उन समग्र दृष्टि बिन्दुओ के एक मात्र समन्वय में ही विचार की परिपूर्णता मानने का दृढ़ आग्रह जैन परंपरा के सिवाय अन्यत्र कहीं नहीं देखा जाता। इसी आग्रह मे से जैन तार्किकों ने अनेकान्त, नय और सप्तभंगी वाद

का बिल्कुल स्वतंत्र और व्यवस्थित शास्त्र निर्माण किया जो प्रमाण शास्त्र का एक भाग ही बन गया और जिसकी जोड़ का ऐसा छोटा भी ग्रन्थ इतर परंपराओं में नहीं बना। विभज्यवाद और मध्यम मार्ग होते हुए भी बौद्ध परंपरा किसी भी वस्तु में वास्तविक स्थायी अंश देख न सकी उसे मात्र क्षणभंग ही नजर आया। अनेकान्त शब्द से ही अनेकान्त दृष्टि का आश्रय करने पर भी नैयायिक परमाणु, आत्मा आदि को सर्वथा अपरिणामी ही मानने-मनवाने की धुन से बच न सके। व्यवहारिक व पारमार्थिक आदि अनेक दृष्टियों का अवलम्बन करते हुए भी वेदान्ती अन्य सब दृष्टियों को ब्रह्मदृष्टि से कम दर्जे की या बिल्कुल ही असत्य मानने मनवाने से बच न सके। इसका एक मात्र कारण यही जान पड़ता है कि उन दर्शनों में व्यापक रूप से अनेकान्त भावना का स्थान न रहा जैसा दर्शन में रहा। इसी कारण से जैन दर्शन सब दृष्टियों का समन्वय भी करता है और सभी दृष्टियों को अपने अपने में तुल्य बल व यथार्थ मानता है। भेद-अभेद, सामान्य-विशेष, नित्यत्व-अनित्यत्व आदि तत्त्वज्ञान के प्राचीन मुद्दों पर ही सीमित रहने के कारण वह अनेकान्त दृष्टि और तन्मूलक अनेकान्त व्यवस्थापक शास्त्र पुनरुक्त, चर्वित चर्वण या नवीनता शून्य जान पड़ने का आपाततः सम्भव है फिर भी उस दृष्टि और उस शास्त्र निर्माण के पीछे जो अखण्ड और सजीव सर्वांश सत्य को अपनाने की भावना जैन परम्परा में रही और जो प्रमाण शास्त्र में अवतीर्ण हुई उनका जीवन के समग्र क्षेत्रों में सफल उपयोग होने की पूर्ण योग्यता होने के कारण ही उसे प्रमाण-शास्त्र को जैनाचार्यों की देन कहना अनुपयुक्त नहीं।

जैन शासन में गण-तन्त्र

गणतन्त्र-प्रजातन्त्र भारतवासियों की पुरानी वसियत है। अगर हम में अन्याय मात्र का सामना करने की नैतिक बल मौजूद हो तथा निस्सार मतभेदों एवं स्वार्थों को तिलांजलि देकर राष्ट्र, समाज और गणधर्म की रक्षा करने के लिये बलिदान करने की क्षमता आजाय तो किसका सामर्थ्य है जो हमें अपने पूर्वजों की संपत्ति के अधिकार या उपयोग से वंचित कर सके? गणधर्म में जो असीम शक्ति विद्यमान है, उसका अगर हम लोग सदुपयोग करना सीख लें तो जैनधर्म विश्व में सूर्य की भांति चमक उठे।

गण अर्थात् समूह। गण का प्रत्येक सभ्य राष्ट्र की प्रतिष्ठा तथा व्यवस्था बनाये रखने के लिए उत्तरदायी रहे, उसे कहते हैं गणतन्त्र। सबल के द्वारा निर्बल का सताया जाना या इसी प्रकार का कोई दूसरा अत्याचार गणतन्त्र कभी सहन नहीं कर सकता। निर्बल की सहायता करना, निर्बल को न्याय दिलाने के लिये सर्वस्व का भोग देना पड़े तो भी पर पीछे न देना, यह गणधर्म पालने वालों का महान् व्रत होता है।

गणतन्त्र की यह व्यवस्था आधुनिक प्रजासत्तात्मक राज्यप्रणाली से तनिक भी उतरती श्रेणी की नहीं थी। जैनयुग में नवलिच्छवी और नवमल्ली जाति के अठारह गण राज्यों का गणतन्त्र इतिहास में प्रसिद्ध है। अठारह गणराज्यों का वह गणतन्त्र सबलों द्वारा सताई जाने वाली निर्बल प्रजा को पीड़ा से मुक्त कराने के लिये और उनकी सुख-शान्ति की व्यवस्था करने के लिए तन, मन, धन का व्यय करने में नहीं झिझकता था। असहायों की सहायता करने में ही गौरव मानता था।

गणतन्त्र की इस पद्धति में गणधर्म का पालन करने वाली प्रजा को कितना सहन करना पड़ता था उसका इतिहास-प्रसिद्ध उल्लेख जैन-शास्त्रों में मिलता है।

(नोट—प्रज्ञाचक्षु पं० सुखलालजी पं० दलसुखभाई मालवणिया तथा श्री शान्तिलालभाई व० सेठ के लेखों से साभार संकलित)।

ओ३म् अर्हम्

श्री अखिल भारतवर्षीय स्था० जैन कोन्फरन्स-स्वर्ण-जयन्ती-ग्रन्थ

द्वितीय-परिच्छेद

जैन धर्म का संक्षिप्त इतिहास

लेखक : पं० रत्न मुनि श्री सुशील कुमार जी "भास्कर" सा० रत्न, शास्त्री,

आदि—युग

आदि युग का प्रारम्भ प्राचीनतम है। वह जितना प्राचीन है उतना ही अज्ञात भी है। मानव-सभ्यता का अरूणोदय हुआ—उस दिन को ही आदि काल का प्रथम दिन मान ले तो अनुचित न होगा।

इस युग का नाम भगवान आदिनाथ के नाम से ही आदि-युग रखा गया है।

भगवान आदिनाथ आर्य-सस्कृति के सृष्टा, वर्तमान अव-सर्पिणी-काल मे जैन धर्म के प्रथम संस्थापक, परम दार्शनिक और मानव-सभ्यता के जन्म-दाता के रूप मे प्रसिद्ध हैं।

वर्तमान इतिहास भगवान ऋषभदेव (आदिनाथ) के विषय में मौन है क्योंकि इतिहासकारों की दृष्टि २४०० वर्ष से पूर्व काल को जानने तथा पहुँचने मे असमर्थ है।

इसलिए भगवान ऋषभदेव के विषय मे जानने के लिये हमें जैन शास्त्र, वेद, पुराण और स्मृति ग्रन्थों का आधार लेना पड़ता है।

भगवान ऋषभदेव के संबंध मे वैदिक साहित्य मे बहुत कुछ वर्णन मिलता है। श्रीमद् भागवत् के पंचम और बारहवे स्कध मे उनके विषय मे विस्तृत उल्लेख है। इस स्थान पर भगवान ऋषभदेव को मोक्ष धर्म के आद्य-प्रवर्तक माने गये है।

भगवान ऋषभदेव के काल को जैन धर्म मे युगलिया काल कहा जाता है। पुराणों मे भी ऐसा ही कहा गया है। वेद मे यम-यमी के संवाद से भी जैनधर्म के अनुकूल वर्णन की सत्यता प्रमाणित होती है।

तत्कालीन मानव, प्राकृतिक-जीवन यापन करते थे और उनका मन प्राकृतिक दृश्यों और उनकी समृद्धि ही मे लवलीन रहता था। उस समय के मानव सरल स्वभाव के थे और उनकी व्यवस्था भी अत्यन्त सरल थी। उनका निर्वाह प्रकृति-जन्य-कल्पवृक्षों द्वारा होता था। एक ही मां-बाप से युगल रूप में पैदा हुए वे कन्या और पुत्र आगे जाकर दम्पति के रूप मे जीवन व्यतीत करने लगते थे।

उत्तरोत्तर कल्पवृक्ष अल्प फलदायी होने लगे जिसके कारण युगलियों मे कलह और असतोष व्याप्त होने लगा। ऐसे समय मे भगवान ऋषभदेव का जन्म हुआ। उन्होंने लोगों को केवल प्रकृति पर आश्रित ही न रखा किन्तु स्वावलम्बी बनने के लिये उपदेश दिया। लोगों को असि, मसि और कृषि आदि जीवन निर्वाह के साधन और जीवनोपयोगी वस्तुएं बनाना सिखाया अर्थात् युगलिया-युग का निवारण किया।

एक ही माता-पिता की संतान के बीच मे जो दाम्पत्य-जीवन यापन किया जाता था—उसका भी निराकरण कर भगवान ऋषभदेव ने वैवाहिक प्रथा प्रारंभ की। अपने साथ मे पैदा हुई सहोदरा सुमगला के साथ अपना दाम्पत्य-जीवन तो व्यतीत किया ही किन्तु विवाह-प्रणाली को व्यवस्थित रूप देने के लिए और इस प्रणाली को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना में विकसित करने के लिये सुनन्दा नाम की एक कन्या के साथ विधिवत् विवाह किया। यह कन्या अपने सहोदर भाई के अवसान के कारण हतोत्साहित और अनाथ बन गई थी। इस काल मे और इस क्षेत्र मे यह सर्व प्रथम विधि पूर्वक विवाह था।

इन दोनों स्त्रियों से भरत-बाहूबली आदि सौ पुत्र और ब्राह्मी तथा सुन्दरी नाम की दो कन्याओं की प्राप्ति हुई।

वर्तमान संस्कृति के आद्य-पुरुष को मिले हुए सौभाग्य को लेकर ही आज भी "शत पुत्रवान् भव" का आशीर्वाद दिया जाता है।

भगवान ऋषभदेव का जन्म स्थान अयोध्या था, जिसको विनीता भी कहा जाता है। आपका जन्म तीसरे आरे के अंतिम भाग मे चैत्र वद अष्टमी को मध्य रात्रि मे और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र मे नाभि कुलकर की रानी मरुदेवी की कुक्षि से हुआ था।

भगवान ऋषभदेव के राज्य-शासन के समय को हम निर्माण काल कह सकते है क्योंकि उनके ज्येष्ठ पुत्र भरत युवावस्था के पश्चात् राज्याधिकारी बनने के मार्ग पर आगे बढ़ रहे थे। वे राजनीति में भी अत्यन्त निपुण थे। बाहूबली मे शारीरिक बल तत्कालीन वीरों के लिये स्पर्धा का विषय बन गया था।

भगवान ऋषभदेव की पुत्री ब्राह्मी ने ब्राह्मी-लिपि का आविष्कार किया था और सुन्दरी ने गणित-शास्त्र का प्रचलन जारी किया था।

भगवान ऋषभदेव आत्मदर्शी और वस्तु तत्त्व के विज्ञाता थे। इस देश मे कल्याण चाहने वाले लोगों के लिए एक सुयोजित मार्ग स्थापित करना चाहते थे। इस कारण ससार के प्रति उन्हे वैराग्य होना—यह स्वाभाविक था। उन्होंने अपना राज्य अपने पुत्रो को बांट दिया और स्वय ससार का त्याग करके चार हजार पुरुषों के साथ भगवती दीक्षा अगीकार कर ली।

एक हजार वर्ष तक आत्म-साधना और तपश्चर्या करते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान तथा जनपद विहार करते हुए अन्त मे पुरिमताल नगर मे उनको केवलज्ञान हुआ। केवलज्ञान के पश्चात् आपने चतुर्विध संघ रूप तीर्थ की स्थापना की। अतः इस अवसर्पिणी काल मे ही आप आदि तीर्थंकर कहलाये। वैदिक-शास्त्रों के अनुसार वे प्रथम 'जिन' बने और उपनिषदों के अनुसार 'ब्रह्म' तथा 'भगवान' और परम-पद प्राप्त करने वाले सिद्ध, बुद्ध तथा अजर-अमर परमात्मा हुए।

प्रहार करने के लिए उठा हुआ बाहूबली का हाथ निष्प्रयोजन वापिस कैसे लौटता? सामने वाले का अथवा अपना घात करने के स्थान पर उन्होंने उस मुष्टि का उपयोग अभिमान का घात करने मे लगाया। उन्होंने ऊपर को उठे हुए हाथों से ही केश-लोचन किया और साधु-व्रती बने।

इस प्रकार इस क्षेत्र मे सर्व प्रथम सम्राट बनने का सौभाग्य भरत को प्राप्त हुआ। भरत के सबध मे विस्तृत वर्णन जैन अथवा जैनेतर ग्रन्थों मे सहज ही मिल सकता है।

भरत और बाहूबली

भगवान ऋषभदेव के इन दोनों पुत्रों के नाम जैन ग्रन्थों मे सुविख्यात है।

भरत के नाम से ही इस क्षेत्र का नाम 'भरत' या 'भारत' हुआ। इस अवसर्पिणी काल मे भरत सर्व प्रथम चक्रवर्ती राजा थे। उनकी सत्ता स्वीकार करने के लिये उनका भाई बाहूबली किसी प्रकार भी तैयार नही था। बाहूबली को अपने बल पर अभिमान था। परिणामतः दोनों के बीच मे युद्ध हुआ। जैन शास्त्रो मे यह युद्ध घटना सर्वाधिक प्राचीन है।

यद्यपि इस समय सेनाओं का निर्माण हो चला था, फिर भी मानव जाति का निष्प्रयोजन विनाश करना उस समय अनुचित समझा जाता था। इसलिए पांच प्रकार के युद्ध निश्चित किये गये जैसे कि :—दृष्टि-युद्ध, नाद-युद्ध, मल्ल-युद्ध, चक्र-युद्ध और मुष्टि-युद्ध।

१—दृष्टि-युद्ध मे जो पहले आँख बन्द करदे वह हारा हुआ माना जाय।

२—नाद-युद्ध मे जिसकी आवाज अपेक्षा कृत क्षीण हो, वह हारा हुआ माना जाय।

अथवा जिसकी आवाज़ अपेक्षाकृत सशक्त हो या अधिक समय तक टिक सके, वह जीता हुआ माना जाय।

विश्व के लोग वैज्ञानिक आविष्कारों के आधार पर अगणित मानव-सहार-युद्ध भी करते है–उनके स्थान पर इस प्रकार के निर्दोष युद्ध यदि हों तो मानव जाति का कितना कल्याण हो! मल्ल-युद्ध, चक्रयुद्ध और मुष्टि-युद्ध जैसे संहारक और घातक युद्ध उस समय भी थे किन्तु इनका उपयोग अन्तिम समय में किया जाता था। जबकि उनका उपयोग अनिवार्य एव अपरिहार्य हो जाता था।

चौथे युद्ध मे भरत ने चक्र छोड़ा किन्तु वन्धुओं पर उसका असर नही होता है। अतः वह वापिस लौट गया।

अन्तिम युद्ध में वाहूबली ने भरत को मारने के लिए घूंसा उठाया किन्तु शीघ्र ही उन्हे विवेक जागृत हुआ और इन्द्र ने समझाया अतः उन्होंने अपनी मुट्ठी ऊपर ही रोक ली। यदि इस मुट्ठी का प्रहार हो जाता तो भरत न जाने कहाँ लुप्त हो जाते! उनका पता तक न लगता। इस प्रकार की असीम शक्ति वाहूवली की कही जाती है।

छद्मावस्था और केवलज्ञानावस्था मिलकर कुल एक लाख पूर्व दीर्घ काल तक सयम का आराधन कर, अष्टापद गिरि पर पद्मासन से स्थित होकर अभिजित नक्षत्र मे वे परिनिर्वाण को प्राप्त हुए।

ऋषभदेव के पश्चात् के बाईस तीर्थंकर

भगवान ऋषभदेव के बाद के बाईस तीर्थंकरों का इतिहास सभवित है और महत्त्व पूर्ण है किन्तु उसके सबन्ध मे विस्तृत वर्णन नही मिल सकता। इसलिए उनके नाम और उनके सम्बन्ध की सामान्य जानकारी ही यहां दी जाती है।

क्रम	नाम	पिता	माता	स्थान
२.	अजितनाथ	जितशत्रु	विजयादेवी	अयोध्या
३.	सभवनाथ	जितार्थराजा	सैन्यादेवी	श्रावस्ती
४.	अभिनन्दन	सवर राजा	सिद्धारथरानी	विनिता
५.	सुमतिनाथ	मेघरथराजा	सुमगला	कुशलपुरी
६.	पद्मप्रभु	धर राजा	सुतिया	कौशाम्बी
७.	सुपार्श्वनाथ	प्रतिष्ठ सैन	पृथ्वी	काशी
८.	चन्द्र प्रभु	महासेन	लक्ष्मा	चन्द्रपुरी
९.	सुविधिनाथ	सुग्रीव	रामादेवी	काकदी
१०.	शीतलनाथ	दृढ़रथ	नदारानी	भद्दिलपुर
११	श्रेयांसनाथ	विष्णुसेन	विष्णुदेवी	सिंगपुरी
१२	वासुपूज्य	वसुपूज	जयादेवी	चपापुरी
१३.	विमलनाथ	कर्त्तावरम	श्यामा	कपिलपुर
१४.	अनतनाथ	सिंहसेन	सुयशा	अयोध्या
१५.	धर्मनाथ	भानुराजा	सुव्रता	रतनपुर
१६.	शांतिनाथ	विश्वसैन	अचिरा	हस्तिनापुर

१७.	कुंथुनाथ	सूरराजा	श्रीदेवी	हस्तिनापुर
१८.	अरहनाथ	सुदर्शनराजा	श्रीदेवी	हस्तिनापुर
१९.	मल्लिनाथ	कुंभ राजा	प्रभावती	मिथिला (मथुरा)
२०.	मुनिसुव्रत	मित्रराजा	पद्मावती	राजग्रही
२१.	नमिनाथ	विजयसेन	वप्रादेवी	मिथिला (मथुरा)
२२.	नेमनाथ (अरिष्टनेमी)	समुद्रसेन	शिवादेवी	द्वारिका
२३.	पार्श्वनाथ	अश्वसेन	वामादेवी	वनारस

इन वाईस तीर्थ-करों में से १६ वें श्री शांतिनाथ, १७ वें श्री कुंथुनाथ और १८ वें श्री अहरनाथ ये तीन तीर्थंकर अपने राज्य काल मे चक्रवर्ती थे।

उन्नीसवे श्री मल्लीनाथजी स्त्री रूप मे थे। जैन धर्म में स्त्री भी तीर्थंकर हो सकती है। यह सत्य का सर्व श्रेष्ठ प्रमाण है। विश्व के किसी भी धर्म में स्त्री को धर्म सस्थापक के रूप मे महत्व नहीं दिया गया है। जैनधर्म की यह उल्लेखनीय विशेषता है।

बीसवे तीर्थकर श्री मुनिसुव्रतजी के समय में श्रीराम और सीता हुए तथा वाईसवें अरिष्टनेमी (नेमनाथ) के समय में नवमे वासुदेव श्री कृष्ण हुए थे।

अरिष्टनेमी जब विवाह करने के लिए जा रहे थे तब मांसाहार के लिए वाड़े में वन्द किये गये पशुओं का करुण-क्रन्दन सुनकर उन्हें वचाने के लिए विवाह-मंडप से वापिस लौट गए और परम कल्याणकारी सयम-धर्म को स्वीकार किया। श्री कृष्ण और उनका परस्पर का संवाद जैनागमों मे काफी मिलता है।

तेईसवे तीर्थकर पार्श्वनाथ ने पशु-संरक्षण और जीव-दया का महात्म्य वताया। उनका कमठ ऋषि के साथ का वार्तालाप जैन-आगमों मे प्रसिद्ध है।

भगवान-महावीर

भगवान पार्श्वनाथ के २५० वर्ष पश्चात् और आज से २५५३ वर्ष पूर्व चौवीसवे तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन क्षत्रिय-कुंड-नगर के सिद्धार्थ राजा और रानी त्रिशला देवी की कूख से हुआ। उनका जन्म से नाम वर्द्धमान था।

बाल सुलभ खेल-कूद करते हुए वे युवावस्था को प्राप्त हुए और उनका विवाह यशोदा नाम की राजकन्या के साथ हुआ और जिसके परिणाम स्वरूप आपको प्रियदर्शना नाम की एक कन्या हुई।

अपने माता पिता के स्वर्गवासी हो जाने के पश्चात् आपने दीक्षा लेने की तैयारी वताई किन्तु बड़े भाई नदी-वर्धन ने आपको बहुत समय तक संसार मे रुकने के लिये कहा। पिता श्री की अनुपस्थिति में छोटे भाई को वड़े भाई की आज्ञा का पालन करना चाहिये। इस आदर्श को मूर्तरूप देने के लिये श्री वर्द्धमान दो वर्ष तक संसार मे रहे। इस वीच मे सचित्त जल त्याग आदि तपश्चर्या स्वीकार कर संयम के लिये प्राथमिक भूमिका तैयार करते रहे। अंत में एक वर्ष तक "वार्षिक दान" देकर दीक्षित हो गये।

दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् साढ़े बारह वर्ष और एक पक्ष तक भगवान महावीर ने घोर तपश्चर्या की जिससे चार घनघाती कर्म क्षय हुए। जृंभिका नगरी के वाहर ऋजुबालिका नदी के उत्तरवर्ती नदी के किनारे सामाजिक गाथापति कृष्णी के क्षेत्र में चउविहार छट्ठ करके शाल वृक्ष के समीप दिवस के पिछले प्रहर मे गोदोहन

के आसन में बैठे हुए जब धर्मध्यान में विचरण कर रहे थे—वैशाख शुक्ला दशमी को अत्यन्त प्रकाशमय केवलज्ञान और केवलदर्शन प्रकट हुए।

केवलज्ञान की प्राप्ति के बाद धर्मदेशना देते हुए ३० वर्ष तक भगवान ने ग्रामानुग्राम विचरण किया।

हुंडावसर्पिणी-काल के प्रभाव से भगवान महावीर का प्रथम उपदेश खाली गया क्योंकि उस देशना में केवल देवता थे, मनुष्य नहीं। दूसरे समय की देशना में वेद-वेदांगों के पारंगत ब्राह्मण पंडित शिष्य बने जिनमें इन्द्रभूति (गौतम) विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

भगवान महावीर के समय मे समाज का अधःपतन हो चला था। उस समय मानव जाति की एकता के स्थान पर ऊँच-नीच की भावना का भूत जातिवाद के नाम पर खड़ा कर दिया गया था। स्त्रियों और शूद्रों को धर्म और पुण्य-कार्य के लाभ से वंचित कर दिया गया था।

धर्म से प्राप्त होने वाला सुख मरने के बाद की बात कहलाती थी। स्वर्ग की कुंजी यज्ञ और यज्ञ की कुंजी उसके अधिकारी ब्राह्मणों के यज्ञोपवीतों में बंधी रहती थी। यज्ञों मे पशुओं की हिंसा और सोमरस का पान होता था। नरमेध यज्ञ भी होते थे और मजे की बात उस समय की यह थी कि वैदिक हिंसा—हिंसा नहीं किंतु स्वर्ग प्राप्ति का आधार मानी जाती थी।

धर्म के नाम पर चलने वाले किन्तु वास्तविक धर्म से विरुद्ध क्रियाकांडों के विरोध में भगवान महावीर ने क्रांति की। धार्मिक मान्यताओं का मूल्यांकन बदलने के लिए एक अद्भुत क्रांति की। आपका उपदेश था "धर्म का मूल अहिंसा, संयम और तप है। मानव मानवता के नाते एक समान है। भले वह स्त्री हो या पुरुष—चाहे कोई क्यों न हो—धर्माराधन का सब को समान अधिकार है।"

दूसरी देशना के समय इन्द्रभूति आदि मुख्य ग्यारह विद्वानों और उनके साथ में ४४०० ब्राह्मण जो भगवान महावीर से वाद-विवाद कर उन्हे पराजित करने की भावना से आये थे—उन्होंने उपदेश सुना और यथार्थता समझ कर सबके सब भगवान महावीर के शिष्य हो गये। ये ग्यारह विद्वान जैन शास्त्रों मे ग्यारह गणधर के रूप में प्रसिद्ध है। उनके नाम इस प्रकार है:—

(१) इन्द्रभूति (२) अग्निभूति (३) वायुभूति (४) व्यक्त (५) सुधर्मा (६) मंडित (७) मौर्यपुत्र (८) अंकपित (९) अचलभ्रात (१०) मैतार्य (११) प्रभास।

प्रभु की वाणी के उपदिष्ट तत्त्वों को सूत्र रूप मे गूंथ कर द्वादशांग को व्यवस्थित रूप से बनाये रखने का कार्य इन गणधरों ने किया।

जैनागमों मे भ० महावीर और गौतम तथा पंचम गणधर सुधर्मा और जंबू स्वामी के बीच में होने वाले वार्तालाप के प्रसंग स्थान-स्थान पर मिलते हैं।

भगवान महावीर के ३० वर्ष के धर्मोपदेश के समय में उनके चतुर्विध संघ मे १४,००० साधु और ३६,००० साध्वियां हुई। लाखों की सख्या में जैनधर्म के अनुसार आचरण करने वाले श्रावक एवं श्राविकाएं बनीं।

साधुओं में जिस प्रकार इन्द्रभूति (गौतम) मुख्य थे उसी प्रकार साध्वियों में महासती चन्दनबाला मुखिया थीं।

छद्मावस्था और केवल-पर्याय मिलकर ४२ वर्ष की दीक्षा पर्याय के समय मे उन्होंने एक अट्ठिग्राम में, एक वाणिज्यग्राम मे, पांच चम्पा नगरी में, पांच पृष्ठ चम्पा में, चौदह राजग्रही में, १ नालंदापांडा मे ६ मिथिला

मे, २ भद्रिका नगरी मे, १ आलंभिका नगरी में १ सावत्थिया नगरी मे इस प्रकार ४१ चातुर्मास किये और ४२ वे चातुर्मास के लिये वे पावापुरी मे पधारे—जिसका अपर नाम अपापापुरी था। भगवान महावीर का यहा यह अंतिम चातुर्मास था। यह चातुर्मास पावापुरी के राजा हस्तिपाल की विनती से उनकी शाला मे व्यतीत किया। भगवान का मोक्ष-समय निकट था अतः अपनी पुण्यमयी और जगत के समस्त हित से जीवों की हितकारी वाग्धारा अविरत रूप से प्रवाहित कर रहे थे, जिससे भव्य जीवों को यथार्थ मार्ग प्राप्त हो सके।

आयुष्य कर्म का क्षय निकट जान कर प्रभु ने आसोज वद १४ को संथारा किया। अपने शिष्य गौतम स्वामी को समीपवर्ती ग्राम मे देवशर्मा नाम के एक ब्राह्मण को बोध देने के लिये भेजा। चतुर्दशी और अमावस्या के दो दिन के १६ प्रहर तक प्रभु ने सतत उपदेश दिया। जीवन के उत्तरभाग मे दिये गये ये उपदेश "उत्तराध्ययन सूत्र" मे सग्रहीत है। इस प्रकार उपदेश देते-देते आजसे २४६१ वर्ष के ऊपर जब चौथे आरे के तीन वर्ष और साढ़े आठ महिने शेष थे—कार्तिक वदी अमावस्या अर्थात दीपावली की रात्रि मे भगवान महावीर निर्वाण-पद को प्राप्त हुए।

देवशर्मा को प्रतिबोध देने के लिए गये हुए गौतम-स्वामी जब वापिस लौटे और जब उन्होंने भगवान महावीर के निर्वाण होने का समाचार जाना तब अत्यन्त आर्द्र बन गये। भगवान महावीर के प्रति उनके हृदय मे अत्यधिक स्नेह था किन्तु महापुरुषों मे रही हुई निर्बलता क्षणिक होती है। गौतम स्वामी को भी थोड़ी देर बाद सत्य का प्रकाश मिला। उन्होंने जान लिया कि प्रभु के प्रति दर्शाया जाने वाला स्नेह भी केवल ज्ञान की प्राप्ति मे विघ्न रूप है। विचारश्रेणी का रूप बदला "सत्य ही—मै मोह में पड़ा हुआ हूँ। प्रभु तो वीतरागी थे। प्रत्येक आत्मा अकेली होती है, मैं अकेला हूँ। मेरा कोई नही—उसी प्रकार मै भी किसीका नही" इस प्रकार की एकत्व भावना विचारने लगे। क्षपक-श्रेणी पर आरूढ हुए गौतम स्वामी ने तत्क्षण घनघाती कर्मो का क्षय कर दिया और भगवान महावीर की निर्वाण गमन की रात्रि मे लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त कर लिया।

—o—

बुद्ध और महावीर

भगवान महावीर और बुद्ध समकालीन थे। बुद्ध शाक्य वंशीय कपिलवस्तु के राजा शुद्धोधन के पुत्र थे। इन्होंने भी संसार को निस्सार समझ कर उसका त्याग किया और तपश्चर्या धारण कर बोधिसत्व बने। बुद्ध अपने को 'आर्हत' मानते थे। भगवान महावीर को यदि अधिक मे अधिक सामना करना पड़ा था तो बुद्ध से।

महावीर और बुद्ध की तुलना हम इस प्रकार कर सकते है:—

	महावीर	बुद्ध
पिता	सिद्धार्थ	शुद्धोधन
माता	त्रिशला	महामाया
जन्म स्थान	क्षत्रिय-कुण्डग्राम	कपिल वस्तु
काल	ई. पू. ५९८	ई. पू. ५६५ या ५७५
पत्नि	यशोदा	यशोधरा
सन्तान	प्रियदर्शना (पुत्री)	राहुल (पुत्र)

आदितप	१२॥ वर्ष	६ वर्ष
निर्वाण	वि० सं० पूर्व ४७० वर्ष	वि० सं० पूर्व ४८५ वर्ष
आयुष्य	७२ वर्ष	८० वर्ष
व्रत	पंञ्च महाव्रत	पंचशील
सिद्धांत	अनेकान्तवाद	क्षणिकवाद
मुख्य शिष्य	गौतम	आनन्द

भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध मे जिस प्रकार विभिन्नता है उसी प्रकार कुछ समानता भी है।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह तथा तृष्णा-निवृत्ति आदि मे महावीर के समान बुद्ध की दृष्टि भी अत्यन्त गहन थी। ब्राह्मण-संस्कृति के सामने ये दोनों श्रमण-संस्कृति के जाज्वल्यमान नक्षत्र थे।

जीवन-शोधन, अहिंसा पालन और श्रमणों के लिये आवश्यक नियमों मे भी दोनों महापुरुषों के विधानों में बहुत कुछ समानता है।

निष्क्रमण के पश्चात् बुद्ध ने भी कठोर तप किया था, किन्तु पीछे से तप के प्रति उनमे घृणा के भाव पैदा हो गये और 'मध्यम प्रतिपदा' का मार्ग स्थापित किया।

भगवान महावीर की शिष्य परम्परा

भगवान महावीर के निर्वाण के बाद गौतम स्वामी को केवलज्ञान हुआ। बारह वर्ष तक केवलज्ञानी के रूप मे वे विचरण करते रहे और धर्म प्रचार तथा संघ-व्यवस्था आदि करते रहे।

१ सुधर्मा स्वामी—गौतम स्वामी के केवलज्ञानी हो जाने से भगवान महावीर के प्रथम पट्टधर-आचार्य पद-विभूषित होने का गौरव श्री सुधर्मा स्वामी को मिला। बारह वर्ष तक आपने संघ को आंतरिक तथा बाह्य-दोनो प्रकार से रक्षण, पोषण और संवर्धन किया। श्री सुधर्मा स्वामी को ९२ वें वर्ष की अवस्था मे जब केवलज्ञान हुआ तब संघ-व्यवस्था का कार्य उनके शिष्य जम्बू स्वामी को दिया गया। श्री सुधर्मा स्वामी साठ वर्ष तक केवली के रूप मे विचरण करते रहे और १०० वर्ष की आयुष्य पूर्ण कर निर्वाण-पद को प्राप्त हुए।

२ जम्बू स्वामी—सुधर्मा स्वामी को केवलज्ञान होने के पश्चात् श्री जम्बू स्वामी पाट पर आये। श्री जम्बू स्वामी एक श्रीमन्त व्यापारी के पुत्र थे। अखूट सम्पत्ति होने पर भी वैराग्य होने के कारण आपने विवाह के दूसरे दिन ही आठ पत्नियों को त्याग कर दीक्षा ले ली। इनके साथ विवाहित आठों स्त्रियां, उन स्त्रियों के माता पिता, अपने खुद के माता-पिता और उनके घर मे चोरी करने के लिये आये हुए ५०० चोर-इस प्रकार कुल ५२७ विरक्त आत्माओं ने भगवती दीक्षा स्वीकार कर अपना जीवन सफल किया।

श्री सुधर्मा स्वामी के निर्वाण के पश्चात् श्री जम्बू स्वामी को केवलज्ञान हुआ। वे ४४ वर्ष तक केवलज्ञानी के रूप मे विचरण कर मोक्ष पधारे।

इस अवसर्पिणी काल की जैन परम्परा मे केवलज्ञान का स्रोत भगवान ऋषभदेव से प्रारभ होता है। श्री जम्बू स्वामी अंतिम केवलज्ञानी थे। उनके निर्वाण के साथ-साथ दस विशेषताओं का भी लोप होगया:—

१. परम-अवधिज्ञान २. मनःपर्यवज्ञान ३. पुलाक लब्धि ४. आहारक शरीर ५. क्षायिक-सम्यक्त्व ६. केवलज्ञान ७. जिनकल्पी साधू ८. परिहार-विशुद्धि-चारित्र ९. सूक्ष्म-संपराय-चारित्र १०. यथाख्यात् चारित्र। इस प्रकार भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात् ६४ वर्ष तक केवलज्ञान रहा।

३ प्रभव स्वामी:—जम्बू स्वामी को केवलज्ञान होने के बाद प्रभव स्वामी आचार्य-पद पर विराजमान हुए। वे जयपुर के राजा जयसेन के कुमार थे। प्रजा को कष्ट देने के कारण उन्हें देश निकाला दिया गया। इस कारण ये भीमसेन नामक चोर के साथी बन गये और इस भीमसेन के मरण के पश्चात् ये ५०० चोरों के सरदार होगये।

जम्बू स्वामी विवाह करके जब पीछे लौटे तब उनको ९९ करोड़ का दहेज मिला। यह घटना सुन कर अपने साथियों को लेकर प्रभव जम्बू के यहां चोरी करने गया। प्रभव चोर की यह विशेषता थी कि वह जिस घर में चोरी करने जाता, उस घरवालों को मन्त्र-बल से निद्रामग्न कर देता था। इस प्रकार उसने सेवकों और प्रहरियों को निद्राधीन बना कर धन की गठड़ियां बांध लीं और रवाना होने लगा। किन्तु आश्चर्य की बात यह हुई कि उठाने पर भी उसके पांव उठते न थे। वह विचार में पड़ गया कि ऐसा क्यों होता है? ऐसा किसका प्रभाव है कि जिससे मेरा मंत्र-बल निष्फल होता है।

दूसरी तरफ जम्बू स्वामी महा-सयमी और बालब्रह्मचारी थे। विवाह की प्रथम रात्रि मे आठों स्त्रियों की विनती और अनेक प्रकार से समझाने पर भी उन्होंने व्रतभग नहीं किया। प्रभव चोर उनके शयन-कक्ष के समीप गया और कमरे मे होने वाली बातचीत ध्यान पूर्वक उसने सुनी। जम्बू स्वामी की वाणी सुनकर और चारित्र के प्रति दृढ़ता देखकर प्रभव प्रभावित हुआ और प्रातःकाल होने पर अपने साथियो सहित जम्बू स्वामी के साथ संयम स्वीकार कर लिया। इस समय प्रभव की आयु ३० वर्ष की थी। बीस वर्ष तक उन्होंने ज्ञानादिक साधना की और ५० वर्ष की आयु मे वे समस्त जैन सघ के आचार्य बने।

४ स्वयंभव स्वामी—प्रभव स्वामी के बाद स्वयंभव आचार्य हुए। ये राजगृही के ब्राह्मण-कुल मे उत्पन्न हुए थे और वेद-वेदांगों मे निष्णात थे। एक बार श्री प्रभव स्वामी से आपकी भेंट हुई। प्रभव स्वामी ने द्रव्य और भाव-यज्ञ का विलक्षण स्वरूप समझाया। इससे स्वयंभव को प्रतिबोध हुआ और उन्होने दीक्षा ले ली।

स्वयंभव स्वामी के 'मनक' नाम का एक पुत्र था। उसने भी दीक्षा ली। आचार्य ने अपने ज्ञान से जब यह जाना कि उनका अंतकाल समीप है, तब अल्प समय मे जिन-वाणी का रहस्य समझाने के लिए शास्त्रों का मन्थन कर नवनीत के रूप मे दशवैकालिक-सूत्र की रचना की।

५ यशोभद्र—वीर-निर्वाण सं० ९८ मे यशोभद्र आचार्य-पद पर प्रतिष्ठित हुए। वीर-निर्वाण सं० १०८ में संभूति विजय ने दीक्षा ली।

६ यशोभद्र और संभूति विजय—दोनों ही संघ के आचार्य थे। इन्होंने कुशलता पूर्वक संघ की व्यवस्था संभाली।

भद्रबाहु-युग

भद्रबाहू स्वामी की दीक्षा वीर नि० सं० १३९ के बाद आचार्य यशोभद्र स्वामी के पास हुई। स्थूलिभद्र दीक्षा वीर नि० स० १४६ अथवा सं० १५० में हुई। भद्रबाहू स्वामी गृहस्थाश्रम मे ४५ वर्ष तक रहे और ७० वर्ष तक गुरु महाराज की सेवा सुश्रूषा करके चौदह पूर्व का ज्ञान प्राप्त किया चौदह वर्ष तक संघ के एक मात्र आचार्य रहे। वीर नि० स० १७० में ९९ वर्ष की अवस्था मे कालधर्म को प्राप्त किया। (संशयास्पद)

भद्रबाहू स्वामी के समय में भयंकर दुष्काल पड़ा। एक समय की बात है कि कार्तिकशुक्ला पूर्णिमा के दिन महाराज चन्द्रगुप्त ने पौषध किया था। उस समय रात्रि के पिछले भाग में उन्होंने सोलह स्वप्न देखे। उन

स्वप्नों में एक बारह फन वाला सांप भी था। इस स्वप्न का फल भद्रबाहू स्वामी ने बताया कि बारह वर्ष का दुष्काल पड़ेगा। सकट की इन घड़ियों में उन्होंने महाराज चन्द्रगुप्त को दीक्षा दी और उसके बाद दक्षिण मे कर्णाटक की तरफ विहार कर गए।

श्रुत-केवली भद्रबाहू स्वामी के जाने के पश्चात् संघ को बहुत ही क्षोभ हुआ। दुष्काल भी भयानक रूप से ताण्डव-नृत्य कर रहा था। ऐसे कठिन समय में श्रावक-गण भद्रबाहू स्वामी को याद करने लगे।

भद्रबाहू स्वामी के जाने के पश्चात् संघ का नेतृत्व श्री स्थूलिभद्र के हाथों मे आया किन्तु वे शास्त्रों के पूर्ण रूप से ज्ञाता न थे। अतः भद्रबाहू स्वामी को वापिस लाने के लिये श्रावक-सघ दक्षिण मे गया किन्तु उस समय आप 'महाप्राण' नाम के मौन व्रत मे थे। फिर भी विचार-विनिमय करके उन्होंने संघ को बताया कि मैं अभी लौटने की स्थिति मे नहीं हूँ। तब श्रावक-संघ ने १४ पूर्व का ज्ञान स्थूलिभद्रश्री को देने के लिए भद्रबाहू स्वामी को समझाया।

श्री संघ मगध को वापिस लौटा और स्थूलिभद्रजी को समस्त वृत्तान्त कह सुनाया। श्री स्थूलिभद्रजी कुछ और साधुओं के साथ विहार कर भद्रबाहू स्वामी के पास आये और विद्याभ्यास प्रारंभ किया। कठोर ज्ञान-साधना से घबरा कर अन्य साधू तो अभ्यास मे आगे न बढ़ सके किन्तु स्थूलिभद्रजी अपने अभ्यास मे बढते ही गये। एक दिन 'रूप-परावर्तिनी' विद्या का निर्णय करने के लिये उन्होंने सिह का रूप धारण किया। सिह को देख कर निकटवर्ती साधू भयभीत हो गये। अपने साथी मुनिराजों को भयभीत हुआ जानकर वे अपनी पूर्वावस्था-मुनि-अवस्था मे आ गये। रूप परिवर्तन का यह समाचार सुनकर भद्रबाहू स्वामी अत्यन्त खिन्न हुए जिससे उन्होंने अब तक पढाये हुए दस-पूर्व के आगे पढाने से इन्कार कर दिया। इस प्रकार १४ पूर्व मे से १० पूर्व का विच्छेद हो गया।

श्री स्थूलिभद्र-युग

श्री स्थूलिभद्र नवमे नदराजा (नागर ब्राह्मण) के महामंत्री शकडाल के ज्येष्ठ-पुत्र थे। वीर-निर्वाण स० १५६ मे आपने दीक्षा ग्रहण की।

संसारावस्था मे समस्त कुटुम्ब को छोड़ कर बारह वर्ष तक वे कोशा नाम की वैश्या के घर मे रहे थे। उनके पिता की मृत्यु के बाद राजा ने उन्हें अपना मंत्री बना लिया, किन्तु पिता की मृत्यु से उन्हें वैराग्य हो गया और राज दरबार छोड़कर चल दिये। मार्ग मे संभूतिविजय नाम के आचार्य मिले। आचार्य के चरणों मे उन्हे शान्ति मिली और उनसे दीक्षा ग्रहण करली।

दीक्षा लेने के बाद गुरु की आज्ञा लेकर कोशा वैश्या के घर चातुर्मास किया। वहां वे तनिक भी विचलित नहीं हुए और वैराग्यभाव मे दृढ़ बने रहे।

भद्रबाहू स्वामी के अंतेवासी-शिष्य विशाखाचार्य अपने गुरू भद्रबाहू स्वामी के कालधर्म प्राप्त करने के बाद मगध मे आये और उन्होंने देखा कि स्थूलिभद्र के साधू वनों और उद्यानों के बदले नगर मे रहने लगे है। इससे उन्हे बहुत ही बुरा लगा। इस सम्बन्ध मे स्थूलिभद्रजी से उनकी चर्चा हुई किन्तु दोनों मे कोई खास समाधान नहीं हो सका। इस कारण दोनों के साधू अलग-अलग विचरने लगे। यहां से जैन सघ मे दो शाखाएं फूटीं, किन्तु अलग-अलग सम्प्रदाय नहीं बनी। श्री स्थूलिभद्र जी के पास वीर नि० सं० १७६ मे आर्य महागिरी ने दीक्षा ग्रहण की।

श्री स्थूलिभद्रजी ने सघ व्यवस्था, धर्म प्रचार तथा आत्म-साधना करते हुए वीर नि० सं० २१५ में कालधर्म प्राप्त किया।

श्री स्थूलिभद्रजी से लेकर लौंकाशाहजी के समय तक का विहंगावलोकन

श्री स्थूलिभद्रजी के पश्चात् आर्य महागिरी और आर्य सुहस्ति के नाम आचार्य के रूप में हमारे सामने आते हैं।

भद्रबाहू स्वामी और स्थूलिभद्रजी के समय में सचेलकत्त्व और अचेलकत्त्व के प्रश्न पर उठा हुआ मतभेद कालान्तर में उग्र बनता गया और उसमें से जैन धर्म की दो सम्प्रदायें चल निकलीं। सचेलकत्त्व को मानने वाले श्वेताम्बर कहलाये और अचेलकत्त्व को मानने वाले दिगम्बर।

आर्य महागिरी, आर्य सुहस्ति, आर्य सुप्रतिबद्ध, उमास्वाति, आचार्य गुणसुन्दरजी और कालिकाचार्य का समय विक्रम् के पूर्व का है। वीर-निर्वाण के ४७० वर्ष बाद विक्रम-संवत् प्रारंभ हुआ।

इसके बाद श्री विमल-सूरी आर्यदिन्न अथवा स्कंदिलाचार्य और पादलिप्तसूरी हुए। इस समय के बीच में भगवान महावीर द्वारा प्रयुक्त लोकभाषा, अर्ध-मागधी की तरफ से हट कर शनैः शनैः जैनाचार्य, विद्वानों की भाषा अर्थात् संस्कृत की तरफ झुके। मूल आगमों के आधार पर संस्कृत में महान ग्रन्थों की रचना होने लगी।

अब आचार्य वृद्धवादि तथा कल्याण-मंदिर स्तोत्र के रचयिता श्री सिद्धसेन दिवाकर और दूसरे भद्रबाहू स्वामी का समय आया।

वीर नि० सं० ६८० और विक्रम सं० ५१० में देवड्ढीगणि क्षमाश्रमण ने वल्लभीपुर में श्रुत-रक्षा के लिए साधू-मुनिराजों की एक परिषद् बुलाई जिसमें आज तक जो भी आगम-साहित्य कंठस्थ रहने के कारण विलुप्त होता जाता था—उसे लिपिबद्ध कराया।

इसके बाद श्री भक्तामर स्तोत्र के रचयिता श्री मानतुंगाचार्य, जिनभद्रगणि, हरिभद्र सूरि आदि आचार्य हुए। इनके बाद नव अंगों के टीकाकार श्री अभयदेव सूरि, जिनदत्त सूरि और गुजरात में जैनधर्म की विजय पताका फहराने वाले हेमचन्द्राचार्य आदि अनेक संत हुए। इनके संबंध में भी काफी साहित्य उपलब्ध हो सकता है।

सामान्यतः जैसा सब जगह बनता है—वैसे ही जैन श्रमण संघ में भी शनैः शनैः शिथिलता आने लगी। क्रिया-कांड और समाचारी के संबंध में मतभेद खड़े हो जाने के कारण पृथक-पृथक संघ और गच्छ अस्तित्त्व में आने लगे। इन मतभेदों के बावजूद भी अब तक संघ में जो एकता-अविछिन्नता दिखने में आती थी, किन्तु अब चौरासी गच्छ खड़े हो गये।

अनेक बार दुष्काल पड़ने के कारण श्रमण साधुओं के लिए विशुद्ध रूप से चारित्र का पालन अति कठिन होगया था। संकट काल की इस विषमता से चैत्यवाद प्रारंभ हुआ और सहज सुलभ साधन-प्राप्ति की लालसा से इसका उत्तरोत्तर विकास होता गया।

चारित्र कठोरतम मार्ग में रही हुई कठिनाइयों के कारण साधु-वर्ग अपनी साधना के मार्ग से पीछे हटने लगा और प्रायः अर्ध-संसारी जैसी स्थिति में आगया।

पन्द्रहवीं और सौलहवीं शताब्दी में जैन संघ में एकता अथवा संगठन नाममात्र का भी न रहा। यति-वर्ग अपनी महत्ता बढ़ाने का प्रयत्न कर रहा था। यह वर्ग वैद्यकी, औषधि, यंत्र, मंत्र एवं तांत्रिक आदि विद्या द्वारा लोक-संग्रह की भावना का अनुसरण करने लगा।

इस शिथिल-काल में जैन सघ मे एक ऐसे महायुद्ध की आवश्यक्ता थी जो सघ मे ऐक्यता स्थापित करता, साम्प्रदायिकता के स्थान पर संगठन का बिगुल बजाता, धार्मिक ज्ञान का प्रचार करता और क्रियोद्धार के लिए सक्रिय कार्य करता।

धर्म-क्रान्ति का उदय काल

यूरोप और एशिया इन दोनों महाद्वीपों मे विक्रम की पन्द्रहवीं और सोलहवी सदी का समय अत्यंत महत्व का है।

एक तरफ राजनैतिक परिवर्तन, अराजकता और स्वर्ण-युग था तो दूसरी तरफ धार्मिक उथल-पुथल, असहिष्णुता और शांति।

इन दोनों शताब्दियों में धर्म-क्रांति की ज्वाला और क्रियाकांडों के प्रति उदासीनता, संतों की पवित्र परम्परा, सुधारकों का समुदाय, सर्वधर्म-समभाव की भावना, अहिंसा की प्रतिष्ठा और गुणों का पूजन-अर्चन इस समय का उतार-चढाव था।

चौदहवीं शताब्दि के अंत से लेकर पन्द्रहवी शताब्दि के प्रारम्भ तक समस्त जगत मे अराजकता और धार्मिक असहिष्णुता फैल गई थी।

यूरोप मे धर्म के नाम पर अनेक अत्याचार हुए। रोमन, कैथोलिक और प्रोटेस्टेन्टों ने ईश्वर के नाम पर एक दूसरे के प्रति भयंकर घृणा और विद्वेष का विष फैलाया। जर्मनी के मार्टिन ल्यूथर ने और फ्रांस मे जॉन ऑफ आर्क ने अपना बलिदान देकर नव-चेतना का सचार किया।

धार्मिक अव्यवस्था परिवर्तन के इस काल मे सुधारवादी और शांति प्रेमियों की शक्ति भी अपना काम कर रही थी और अंत मे इसकी ही विजय हुई। धार्मिक अशांति का अंधकार दूर हुआ और भारत मे अकबर बादशाह ने, इंग्लैण्ड मे रानी एलिजाबेथ ने तथा अन्य-अनेक व्यक्तियों ने इस स्वर्णिम युग में सामाजिक नव चेतना और सुरक्षा के कार्य किये।

भारत मे इसका सर्वाधिक प्रभाव जातिवाद की सकुचितता के विरुद्ध पड़ा। इतिहास मे यह प्रथम समय था कि मुग़ल बादशाह-"देवानाम् प्रिय' कहलाये। उनकी राज्य-सभा सर्व धर्मो का समन्वयात्मक-सम्मेलन के समान बन गई।

वीर पुरुषों ने राज्यसभा में राजपुरुषों को प्रभावित करके धर्म और समाज की सुरक्षा के प्रयत्न प्रारंभ किये। इस समय संतों, महन्तों, साधुओं, सन्यासियों, औलियाओं, पीरों और फकीरों ने भी अपने-अपने ढंग के कार्य दर्शाये।

"अल्लाह एक है"—"ईश्वर एक है" और इनका स्थान प्रेम मे रहा हुआ है—इस प्रकार की ध्वनि गूज रही थी।

धर्म और राजनीति के एकीकरण का जो श्रेय आज गांधीजी को दिया जारहा है उसका वास्तविक बीजारोपण तो कबीर, नानक और सूफी संतों के समय में ही हो चला था।

जितना महत्व क्रांति की व्यापकता का है उतना ही महत्व उसके प्रणेताओं का भी है। इस दृष्टि से क्रांति के अग्रगण्य नायकों मे वीर लौंकाशाह केवल धार्मिक ही नहीं किन्तु सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रों मे भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

धर्मप्राण लौंकाशाह

स्थानकवासी समाज वीरवर लौंकाशाह के पुण्य प्रयत्नों का परिणाम है। जैन समाज की रूढ़िवा और जड़ता का नाश करने के लिए उन्होंने अपना जीवन-प्रदीप प्रज्ज्वलित किया और जड़-पूजा के स्थान पर गुण पूजा की प्रतिष्ठा की। जड़ता केवल स्वरूप को जानती थी जबकि गुण-पूजा ने उपयोगिता और कल्याणकारिता को बल देकर मानव मात्र को महत्व दिया।

शक्रेन्द्र ने एक बार भगवान महावीर से पूछा कि, "भगवन्! आपके नाम-नक्षत्र पर महाभस्म ना का नक्षत्र बैठा है, उसका फल क्या है?"

तब भगवान ने उत्तर में कहा कि "हे इन्द्र! इस-भस्म ग्रह के कारण दो हजार वर्ष तक सच्चे साधू-साध्वियों की पूजा मंद होगी। ठीक दो हजार वर्ष बाद यह ग्रह उतरेगा, तब फिर से जैनधर्म में नव-चेतन जागृत होगी और योग्य पुरुष तथा साधू-संतों का यथोचित सत्कार होगा।"

भगवान महावीर की यह भविष्य वाणी अक्षरशः सत्य निकली। वीर-निर्वाण के ४७० वर्ष बा विक्रम संवत् प्रारंभ हुआ और विक्रम के १५३१ वें वर्ष में अर्थात् (४७०+१५३१=२००१) वीर-संवत् २००१ वे वर्ष में वीर लौंकाशाह ने धर्म के मूल-तत्त्वों को प्रकाशित किया और इस प्रकार गुण-पूजक धर्म विस्तार पाने लगा

धर्मप्राण लौंकाशाह के जन्म-स्थान, समय और माता पिता के नाम आदि के संबंध में भिन्न-भिन्न अभिप्राय मिलते है, किन्तु विद्वान संशोधनों के आधारभूत निर्णय के अनुसार श्री लौंकाशाह का जन्म अरहटवा में चौधरी गौत्र के, ओसवाल गृहस्थ सेठ हेमाभाई की पवित्र पति-परायणा भार्या गंगाबाई की कूख से विक्रम-संव १४७२ कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को शुक्रवार ता० १८—७—१४१५ के दिन हुआ था।

लौंकाशाह का मन तो प्रारंभ से ही वैराग्यमय था, किन्तु माता-पिता के आग्रह के कारण उन्हों स० १४८७ में सिरोही के सुप्रसिद्ध शाह ओघवजी की विचक्षण तथा विदुषी पुत्री सुदर्शना के साथ विवाह किया विवाह के तीन वर्ष बाद उन्हे पूर्णचन्द्र नाम का एक पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ। इनके तेईसवें वर्ष की अवस्था में मात का और चौबीसवे वर्ष में पिता का देहावसान होगया।

सिरोही और चन्द्रावती इन दोनों राज्यों के बीच में युद्धजन्य-स्थिति के कारण अराजकता और व्यापारिक अव्यवस्था प्रसरित हो जाने से वे अहमदाबाद में आ गए और वहां जवाहिरात का व्यापार करने लगे अल्प समय में ही आपने जवाहिरात के व्यापार में अच्छी ख्याति प्राप्त करली।

तत्कालीन अहमदाबाद के बादशाह मुहम्मद उनकी बुद्धि-चातुर्य से अत्यत प्रभावित हुये और लौंकाशाह को अपना खजांची बना लिया।

एक समय मुहम्मदशाह के पुत्र कुतुबशाह ने अपने पिता को मतभेद होने के कारण विष देकर मरवा डाला। ससार की इस प्रकार की विचित्र स्थिति देख कर लौंकाशाह का हृदय कांप उठा। संसार से विरक्त होने के लिये उन्होंने राज्य की नौकरी छोड़ दी।

श्री लौंकाशाह प्रारंभ से ही तत्त्व-शोधक थे। उन्होंने एक लेखक-मंडल की स्थापना की और बहुत से लहिये (लिखने वाले) रख कर प्राचीन शास्त्रों और ग्रन्थों की नकलें करवाने लगे तथा अन्य धार्मिक कार्य में अपना जीवन व्यतीत करने लगे।

एक समय ज्ञानसुन्दरजी नाम के एक यती इनके यहां गौचरी के लिये आये। उन्होंने लौंकाशाह

के सुन्दर अक्षर देख कर अपने पास के शास्त्रों की नकल कर देने के लिये कहा। लौंकाशाह ने श्रुत-सेवा का यह कार्य स्वीकार कर लिया।

ज्यों-ज्यों वे शास्त्रों की नकले करते गये त्यों त्यो शास्त्रों की गहन बातों और भगवान की प्ररूपणाओं का रहस्य भी समझने गये। उनके नेत्र खुल गये। संघ और समाज मे बढ़ती हुई शिथिलता और आगमों के अनुसार आचरण का अभाव उन्हे दृष्टि-गोचर होने लगा।

जब वे चैत्यवासियों के शिथिलाचार और अपरिग्रही-निर्ग्रन्थों के असि-धारा के समान प्रखर संयम का तुलनात्मक विचार करते तब उनको मन में अत्यंत क्षोभ होता था।

मन्दिरों, मठों और प्रतिमाग्रहों को आगम की कसौटी पर कसने पर उन्हे मोक्ष-मार्ग में कहीं पर भी प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा का विधान नही मिला। शास्त्रों का विशुद्ध ज्ञान होने से अपने समाज की अंध-परम्परा के प्रति उन्हे ग्लानि हुई। शुद्ध जैनागमों के प्रति उनमे अडिग श्रद्धा का आविर्भाव हुआ। उन्होंने दृढ़ता पूर्वक घोषित किया कि "शास्त्रों से बताया हुआ निर्ग्रन्थ-धर्म आज के सुखाभिलाषी और सम्प्रदायवाद को पोषण करने वाले कलुषित हाथों में जाकर कलंक की कालिमा से विकृत हो गया है। मोक्ष की सिद्धि के लिये मूर्तियों अथवा मंदिरों की जड़-उपासना की आवश्यकता नही है किन्तु तप, त्याग, संयम और साधना के द्वारा आत्म-शुद्धि की आवश्यक्ता है।"

अपने इस दृढ़ निश्चय के आधार पर उन्होंने शुद्ध शास्त्रीय उपदेश देना प्रारंभ किया। भगवान महावीर के उपदेशों के रहस्य को समझ कर उनके सच्चे प्रतिनिधि बन कर ज्ञान दिवाकर-धर्मप्राण लौंकाशाह ने अपनी समस्त शक्ति को संचित कर मिथ्यात्व और आडम्बर के अधकार के विरुद्ध सिंह-गर्जना की। अल्प समय मे ही उन्हें अद्भुत सफलता मिली। लाखों लोग उनके अनुयायी बन गये। सत्ता के लोलुपी व्यक्ति लौंकाशाह की यह धर्म-क्रांति देख कर घबरा गये और यह कहने लग गये कि "लौंकाशाह नाम के एक लहिये ने अहमदाबाद में शासन के विरोध मे विद्रोह खड़ा कर दिया है।" इस प्रकार उनके विरोध मे उत्सूत्र-प्ररूपणा और धर्म-भ्रष्टता के आक्षेप किये जाने लगे।

इस प्रकार की इन बातों को अनहिलपुर पाटन वाले श्रावक लखमशी भाई ने सुनीं। लखमशी भाई उस समय के प्रतिष्ठित, सत्ता-सम्पन्न तथा साधन-सम्पन्न श्रावक थे। लौंकाशाह को सुधारने के विचार से वे अहमदाबाद में आये। उन्होंने लौंकाशाह के साथ गंभीरता पूर्वक बातचीत की। अंत मे उनकी भी समझ मे आगया कि लोकाशाह की बात यथार्थ है और उनका उपदेश आगम के अनुसार ही है।

मूर्तिपूजा और लौंकाशाह

मूर्तिपूजा के सम्बन्ध मे श्रा० लखमशीभाई के प्रश्नों के उत्तर मे लौंकाशाह ने कहा कि:—
"जैनागमों मे मूर्तिपूजा के सम्बन्ध मे कहीं भी विधान नहीं है। ग्रन्थों और टीकाओं की अपेक्षा हम आगमों को विश्वसनीय मानते है। जो टीका अथवा टिप्पणी शास्त्रों के मूलभूत हेतु के अनुकूल हो वही मान्य की जा सकती है। किसी भी मूल आगम मे मोक्ष की प्राप्ति के लिये प्रतिमा की पूजा का उल्लेख नही है। दान, शील, तप और भावना अथवा ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप आदि धार्मिक अनुष्ठानों मे मूर्ति पूजा अतर्निहित नहीं हो सकती।"

धर्मप्राण लौंकाशाह

स्थानकवासी समाज वीरवर लौंकाशाह के पुण्य प्रयत्नों का परिणाम है। जैन समाज की रूढ़िवाद और जड़ता का नाश करने के लिए उन्होंने अपना जीवन-प्रदीप प्रज्ज्वलित किया और जड़-पूजा के स्थान पर गुण-पूजा की प्रतिष्ठा की। जड़ता केवल स्वरूप को जानती थी जबकि गुण-पूजा ने उपयोगिता और कल्याणकारिता को बल देकर मानव मात्र को महत्व दिया।

शक्रेन्द्र ने एक बार भगवान महावीर से पूछा कि, "भगवन्! आपके नाम-नक्षत्र पर महाभस्म नाम का नक्षत्र बैठा है, उसका फल क्या है?"

तब भगवान ने उत्तर में कहा कि "हे इन्द्र! इस-भस्म ग्रह के कारण दो हजार वर्ष तक सच्चे साधू-साध्वियों की पूजा मंद होगी। ठीक दो हजार वर्ष बाद यह ग्रह उतरेगा, तब फिर से जैनधर्म में नव-चेतना जागृत होगी और योग्य पुरुष तथा साधू-संतों का यथोचित सत्कार होगा।"

भगवान महावीर की यह भविष्य वाणी अक्षरशः सत्य निकली। वीर-निर्वाण के ४७० वर्ष बाद विक्रम संवत् प्रारंभ हुआ और विक्रम के १५३१ वें वर्ष मे अर्थात् (४७०+१५३१=२००१) वीर-संवत् २००१ के वर्ष मे वीर लोंकाशाह ने धर्म के मूल-तत्त्वों को प्रकाशित किया और इस प्रकार गुण-पूजक धर्म विस्तार पाने लगा।

धर्मप्राण लौंकाशाह के जन्म-स्थान, समय और माता पिता के नाम आदि के संबध मे भिन्न-भिन्न अभिप्राय मिलते है, किन्तु विद्वान सशोधनों के आधारभूत निर्णय के अनुसार श्री लौंकाशाह का जन्म अरहटवाड़े में चौधरी गौत्र के, ओसवाल गृहस्थ सेठ हेमाभाई की पवित्र पति-परायणा भार्या गंगाबाई की कूख से विक्रम-संवत् १४७२ कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को शुक्रवार ता० १८—७—१४१५ के दिन हुआ था।

लोंकाशाह का मन तो प्रारंभ से ही वैराग्यमय था, किन्तु माता-पिता के आग्रह के कारण उन्होंने स० १४८७ में सिरोही के सुप्रसिद्ध शाह ओघवजी की विचक्षण तथा विदुषी पुत्री सुदर्शना के साथ विवाह किया। विवाह के तीन वर्ष बाद उन्हे पूर्णचन्द्र नाम का एक पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ। इनके तेईसवें वर्ष की अवस्था मे माता का और चौवीसवे वर्ष में पिता का देहावसान होगया।

सिरोही और चन्द्रावती इन दोनों राज्यों के बीच मे युद्धजन्य-स्थिति के कारण अराजकता और व्यापारिक अव्यवस्था प्रसरित हो जाने से वे अहमदाबाद मे आ गए और वहां जवाहिरात का व्यापार करने लगे अल्प समय मे ही आपने जवाहिरात के व्यापार मे अच्छी ख्याति प्राप्त करली।

तत्कालीन अहमदाबाद के बादशाह मुहम्मद उनकी बुद्धि-चातुर्य से अत्यंत प्रभावित हुये और लौंकाशाह को अपना खजांची बना लिया।

एक समय मुहम्मदशाह के पुत्र कुतुबशाह ने अपने पिता को मतभेद होने के कारण विष देकर मरवा डाला। ससार की इस प्रकार की विचित्र स्थिति देख कर लौंकाशाह का हृदय कांप उठा। संसार मे विरक्त होने के लिये उन्होंने राज्य की नौकरी छोड़ दी।

श्री लौंकाशाह प्रारभ से ही तत्त्व-शोधक थे। उन्होंने एक लेखक-मंडल की स्थापना की और बहुत मे लहिये (लिखने वाले) रख कर प्राचीन शास्त्रों और ग्रन्थो की नकले करवाने लगे तथा अन्य धार्मिक कार्य मे अपना जीवन व्यतीत करने लगे।

एक समय ज्ञानसुन्दरजी नाम के एक यती इनके यहां गौचरी के लिये आये। उन्होंने लौंकाशाह

के सुन्दर अक्षर देख कर अपने पास के शास्त्रों की नकल कर देने के लिये कहा। लौंकाशाह ने श्रुत-सेवा का यह कार्य स्वीकार कर लिया।

ज्यों-ज्यों वे शास्त्रों की नकले करते गये त्यों त्यो शास्त्रों की गहन बातों और भगवान की प्ररूपणाओं का रहस्य भी समझने गये। उनके नेत्र खुल गये। संघ और समाज मे बढ़ती हुई शिथिलता और आगमों के अनुसार आचरण का अभाव उन्हे दृष्टि-गोचर होने लगा।

जब वे चैत्यवासियों के शिथिलाचार और अपरिग्रही-निर्ग्रन्थों के असि-धारा के समान प्रखर संयम का तुलनात्मक विचार करते तब उनको मन में अत्यंत क्षोभ होता था।

मन्दिरों, मठों और प्रतिमागृहों को आगम की कसौटी पर कसने पर उन्हे मोक्ष-मार्ग में कहीं पर भी प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा का विधान नही मिला। शास्त्रों का विशुद्ध ज्ञान होने से अपने समाज की अंध-परम्परा के प्रति उन्हे ग्लानि हुई। शुद्ध जैनागमों के प्रति उनमे अडिग श्रद्धा का आविर्भाव हुआ। उन्होंने दृढ़ता पूर्वक घोषित किया कि "शास्त्रों से बताया हुआ निर्ग्रन्थ-धर्म आज के सुखाभिलाषी और सम्प्रदायवाद को पोषण करने वाले कलुषित हाथों मे जाकर कलंक की कालिमा से विकृत हो गया है। मोक्ष की सिद्धि के लिये मूर्तियों अथवा मंदिरो की जड़-उपासना की आवश्यकता नहीं है किन्तु तप, त्याग, संयम और साधना के द्वारा आत्म-शुद्धि की आवश्यक्ता है।"

अपने इस दृढ़ निश्चय के आधार पर उन्होंने शुद्ध शास्त्रीय उपदेश देना प्रारंभ किया। भगवान महावीर के उपदेशों के रहस्य को समझ कर उनके सच्चे प्रतिनिधि बन कर ज्ञान दिवाकर-धर्मप्राण लौंकाशाह ने अपनी समस्त शक्ति को संचित कर मिथ्यात्व और आडम्बर के अंधकार के विरुद्ध सिंह-गर्जना की। अल्प समय मे ही उन्हे अद्भुत सफलता मिली। लाखों लोग उनके अनुयायी बन गये। सत्ता के लोलुपी व्यक्ति लौंकाशाह की यह धर्म-क्रांति देख कर घबरा गये और यह कहने लग गये कि "लौंकाशाह नाम के एक लहिये ने अहमदाबाद मे शासन के विरोध मे विद्रोह खड़ा कर दिया है।" इस प्रकार उनके विरोध मे उत्सूत्र-प्ररूपणा और धर्म-भ्रष्टता के आक्षेप किये जाने लगे।

इस प्रकार की इन बातों को अनहिलपुर पाटन वाले श्रावक लखमशी भाई ने सुनीं। लखमशी भाई उस समय के प्रतिष्ठित, सत्ता-सम्पन्न तथा साधन-सम्पन्न श्रावक थे। लौंकाशाह को सुधारने के विचार से वे अहमदाबाद में आये। उन्होंने लौंकाशाह के साथ गभीरता पूर्वक बातचीत की। अंत में उनकी भी समझ मे आगया कि लौंकाशाह की बात यथार्थ है और उनका उपदेश आगम के अनुसार ही है।

मूर्तिपूजा और लौंकाशाह

मूर्तिपूजा के सम्बन्ध में श्री लखमशीभाई के प्रश्नों के उत्तर में लौंकाशाह ने कहा कि:— "जैनागमो मे मूर्तिपूजा के सम्बन्ध मे कहीं भी विधान नहीं है। ग्रन्थों और टीकाओं की अपेक्षा हम आगमों को विश्वसनीय मानते है। जो टीका अथवा टिप्पणी शास्त्रों के मूलभूत हेतु के अनुकूल हो वही मान्य की जा सकती है। किसी भी मूल आगम मे मोक्ष की प्राप्ति के लिये प्रतिमा की पूजा का उल्लेख नहीं है। दान, शील, तप और भावना अथवा ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप-आदि धार्मिक अनुष्ठानों मे मूर्ति पूजा अतर्निहित नहीं हो सकती।"

"शास्त्रों में पञ्च महाव्रत, श्रावक के बारह व्रत, बारह प्रकार की भावना तथा साधू की दैनिक-चर्या आदि सबका विस्तार युक्त वर्णन है। किन्तु प्रतिमा-पूजा का मूल-आगमों में कहीं पर भी वर्णन नहीं है"।

"ज्ञातासूत्र तथा रायप्पसेणी-सूत्र मे अन्य चैत्यों के वंदन का वर्णन है, किन्तु मुक्ति की सहायता के लिए किसी भी जैन साधू अथवा श्रावक ने नित्य-कर्म के अनुसार तीर्थंकर की प्रतिमा का कहीं पूजन किया हो—ऐसा वर्णन नहीं आता"।

जो लखमशी लौंकाशाह को समझाने के लिए आये थे, वे खुद समझ गये। लौंकाशाह की निर्भीकता और सत्य प्रियता ने उनके हृदय को प्रभावित कर दिया और वे लौंकाशाह के शिष्य बन गये।

एक समय अरहट्टवाड़ा, सिरोही, पाटण और सूरत इस प्रकार चार शहरों के संघ यात्रा के लिए निकले! वे अहमदाबाद मे आये। उस समय वर्षा की अधिकता के कारण उनको अहमदाबाद मे रुक जाना पड़ा। इसलिये चारों संघों के संघपति-नागजी, दलीचंदजी, मोतीचंदजी और शंभूजी को श्री लौंकाशाह से विचार-विनिमय करने का अवसर मिला।

लौंकाशाह के उपदेश, उनके जीवन, वीतराग-परमात्मा के प्रति सच्ची भक्ति और आगमिक-परम्परा पर गहरी श्रद्धा का उन चारों संघो पर गहरा असर पड़ा। इस गहरे प्रभाव का यह परिणाम हुआ कि उनमें से पैंतालीस श्रावक लौंकाशाह की प्ररूपणा के अनुसार मुनि बनने के लिए तैयार होगये।

इसी समय ज्ञानजीमुनि हैदराबाद की तरफ विहार कर रहे थे। उनको लौंकाशाह ने बुलाया और वैशाख शुक्ला ३ सं० १५२७ मे उन पैंतालीस व्यक्तियों को ज्ञानजी मुनि द्वारा दीक्षा दिलवाई।

इन पैंतालीस मुनियों ने अपने मार्ग-दर्शक और उपदेशक के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने के लिए अपने संघ का नाम "लौंकागच्छ" रखा और अपने आचार-विचार और नियम लौंकाशाह के उपदेश के अनुसार बनाये।

लौंकाशाह का धर्मप्रचार और स्वर्गवास

जैसा कि हमने पहले पढा है कि लौंकाशाह की आगम मान्यता को अब बहुत अधिक समर्थन मिलने लगा था। अब तक तो वे अपने पास आने वालों को ही समझाते और उपदेश देते थे, परन्तु जब उन्हे विचार हुआ कि क्रियोद्धार के लिये सार्वजानिक रूप से उपदेश करना और अपने विचार जनता के समक्ष उपस्थित करना आवश्यक है, तब उन्होंने वैसाख शुक्ला ३ सवत् १५२६ ता० ११—४—१४७ से सरे आम सार्वजनिक उपदेश देना प्रारंभ कर दिया। इनके अनुयायी दिन प्रतिदिन बढ़ने लगे। स्वभावतः ये विरक्त तो थे ही किन्तु अब तक कुछ कारणों से दीक्षा नही ले सके। जबकि क्रियोद्धार के लिये यह आवश्यक था कि उपदेशक पहले स्वयं आचरण करके बताये अतः मिगसर शुक्ला ५ संवत् १५३६ को ज्ञानजी मुनि के शिष्य सोहनजी से आपने दीक्षा अंगीकार कर ली। अल्प समय मे ही आपके ४०० शिष्य और लाखों श्रावक आपके श्रद्धालु बन गये। अहमदाबाद से लेकर दिल्ली तक आप ने धर्म का जयघोष गुंजा दिया। आपने आगम-मान्य सयम-धर्म का यथार्थ पालन किया और इसी का उपदेश दिया।

अपने जीवन काल में किसी भी क्रांतिकार की प्रतिष्ठा नहीं होती। सामान्य जनता उसे एक पागल के रूप मे मानती है। यदि वह शक्तिशाली होता है तो उसके प्रति ईर्ष्या से भरी हुई विष की दृष्टि से देखा जाता है और उसे शत्रु के रूप में मानती है। लौंकाशाह के सम्बन्ध में भी ऐसा ही बना। जब वे दिल्ली से लौट रहे थे तब बीच मे अलवर मे मुकाम किया। उन्होंने अट्ठम (तीन दिन का उपवास) का पारणा किया था।

समाज के दुर्भाग्य से श्री लोंकाशाह का प्रताप और प्रतिष्ठा नहीं सही जाने के कारण उनके शिथिलाचारी और ईर्ष्यालु विरोधी लोगों ने उनके विरुद्ध में कुचक्र रचा। तीन दिन के इस उपवासी तपस्वी को पारने में किसी दुष्ट बुद्धि के अभागे ने विषयुक्त आहार बहरा दिया। मुनि श्री ने उस आहार का सेवन कर लिया।

औदारिक शरीर और वह भी जीवन की लम्बी यात्रा से थका हुआ होने के कारण उस पर विष का तात्कालिक असर होने लगा। विचक्षण पुरुष शीघ्र ही समझ गए कि उनका अन्तिम काल समीप है, किन्तु महा मानव मृत्यु से घबराता नहीं है। वे शांति से सो गये और चौरासी लाख जीव-योनियों को क्षमा कर शुक्लध्यान में लीन हो गये। इस प्रकार इस युग-सृष्टा ने अपने जीवन से नये युग को अनुप्राणित करके चैत्र शुक्ला एकादशी संवत् १५४६ ता० १३ मार्च को देवलोकवासी हुए।

लौंकाशाह की परम्परा और स्थानकवासी सम्प्रदाय

लोंकाशाह की परम्परा की देखभाल करने वाला एक विशाल समुदाय तो उनके जीवन-काल में ही खड़ा होगया था, परन्तु उसे कोई विशेष नाम नहीं दिया गया।

लौंकाशाह के उपदेश से जो ४५ श्रीमंतों ने दीक्षा ग्रहण की थी, उन्होंने अपने धर्म गुरु के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये अपने गच्छ का नाम "लौंका-गच्छ' रखा। किन्तु उन्होंने यति-धर्म को ही स्वीकार कर उसमें कुछ नवीनता ला दी थी। वे दया धर्म को सर्वोत्कृष्ट धर्म मानते थे और आरंभ-समारंभ का—यहां तक कि उपाश्रय बनाने तक का निषेध करते थे।

शिथिलाचारी चैत्यवासियों को धर्मप्राण लौंकाशाह के—विशुद्ध शास्त्र-सम्मत निर्ग्रन्थ-धर्म के स्पष्टीकरण से विद्वेष खड़ा होगया और उनके द्वारा उपदिष्ट शुद्ध धर्म का पालन करने वाले संघ को विद्वेषी 'ढूंढिया' कहने लगे। किन्तु शुद्ध सनातन-धर्म का आचरण करने वाले सहिष्णु श्रावकों ने समभाव से ऐसा विचार किया कि :—

"वास्तव में यह 'ढूँढिया शब्द लघुता का द्योतक नहीं है। धार्मिक क्रियाओं के आडम्बर-युक्त आवरणों को भेद कर उसमें से अहिंसामय सत्य-धर्म-शोधन (ढूंढने) करने वालों को दिया गया 'ढूंढिया' शब्द का यह विरुद सत्य ही गौरवान्वित करने वाला है।

इस संबंध में स्व० श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह ने अपनी तटस्थता बताते हुए अपने 'ऐतिहासिक नोंध' में लिखा है कि "मूलतः इस शब्द का रहस्य इस प्रकार है :—

"ढूँढत ढूँढत ढूँढ लियो सब, वेद, पुराण, किताब में जोई।
जैसे मही में माखन ढूँढत, ऐसो दया मे लियो है जोई॥
ढूंढत है तब ही वस्तु पावत, बिन ढूंढे नहीं पावत कोई।
ऐसो दया मे धर्म है ढूंढ्यो," जीवदया" बिन धर्म न होई।"

लौंकाशाह के १०० वर्ष बाद ही लौंकागच्छ तीन विभागों में विभाजित होगया और वे गादीधारी यतियों के रूप में फिरसे रहने लगे—(१) गुजराती लोंकागच्छ (२) नागौरी लौंकागच्छ (३) उत्तरार्ध लौंकागच्छ।

लौंकागच्छ के दसवे पाट पर वज्रांगजी यति हुए। उनकी गादी सूरत मे थी। उनका चारित्र-बल क्षीण होगया था। उनमें शिथिलता और परिग्रह घर कर गया था अतः उनके समय मे भिन्न-भिन्न स्थानों पर क्रियोद्धारक संत दिखाई दिये।

सोलहवीं सदी के उत्तरार्ध में और सतरहवीं सदी में पांच महापुरुष आगे आये। उन्होंने लौंकाशाह की अमर-क्रांति को पुनर्जीवित किया। इन पांच महापुरुषों के नाम इस प्रकार हैं:—

(१) पूज्य श्री जीवराजजी महाराज (२) पूज्य श्री धर्मसिंहजी महाराज (३) पूज्य श्री लवजीऋषिजी महाराज (४) पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज (५) पूज्य श्री हरजीऋषीजी महाराज (इनका इतिहास अभी उपलब्ध नहीं है)

पूज्य श्री जीवराजजी महाराज

पूज्य श्री जीवराजजी महाराज का जन्म सूरत शहर में श्रावण शुक्ला १४ सं० १५८१ को मध्य रात्रि में श्री वीरजीभाई की धर्म परायणा और पति परायणा भार्या श्रीमती केसर बाई की कुक्षि से हुआ।

जिस घर मे आपका जन्म हुआ वह केवल कुल-दीपक पुत्र के अतिरिक्त और सब दृष्टियों से सम्पन्न था। यह कमी भी बालक जीवराज के जन्म से दूर हो गई। अतः इस बालक का जन्मोत्सव धूम धाम से किया गया। इनका बचपन और लालन-पालन स्नेह-मधुर वातावरण में व्यतीत हुआ था। ये अत्यन्त रूपवान थे और वाणी से अत्यंत मधुर थे।

बाल्यावस्था में से ज्यों ही आपने किशोरावस्था में प्रवेश किया कि आपको पाठशाला में बिठा दिया गया। अपनी विचक्षण-बुद्धि और अद्भुत-स्मरण शक्ति के कारण अत्यल्प समय में ही आपने पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर ली।

विद्याभ्यास के बाद एक सुन्दर कन्या के साथ आपका विवाह कर दिया गया। यतियों के सम्पर्क के कारण बचपन से ही श्री जीवराजजी को धार्मिक ज्ञान मिलता रहा था। आप प्रारंभ से ही वैराग्य-भावना वाले थे। विवाह, विलास, ललना और लावण्य, रूप, रस, रंग और गंध ये सब मिल करके भी इन्हें अपनी ओर नहीं खींच सके। उनकी वैराग्य वृत्ति और उनके जल-कमलवत निर्लिप्त व्यवहार ने बहुत काल तक उन्हे संसार में नहीं रहने दिया। हृदय मे रही हुई वैराग्य-भावना तरंगित होने लगी। बुद्धि की प्रौढ़ता ज्ञान के साक्षात्कार के लिये उन्हे आह्वान कर रही थी। अंत में संसार-त्याग की प्रबल-भावना और प्रबल लालसा जगी और इसके लिए माता पिता के पास से दीक्षा की आज्ञा मांगी। माता-पिता ने आपको बहुत समझाया किन्तु ज्ञान के आग्रह के सामने संसार का आग्रह नहीं टिक सका। इस प्रकार सं० १६०१ मे उन्होंने पूज्य श्री जगाजी यति के पास से दीक्षा ग्रहण करली।

दीक्षा ले लेने के पश्चात् आपने आगमों का अभ्यास प्रारंभ किया। ज्यों-ज्यों अभ्यास बढ़ता गया त्यों-त्यों आगम प्रणीत साधु-चर्या और यति जीवन दोनों के बीच का अंतर उन्हे दृष्टिगोचर होने लगा और आपको दृढ़ विश्वास होगया कि :—"आगम-प्रणीत—आगम-प्रतिपादित-मार्ग से ही आत्मा का कल्याण संभवित है।"

जब यति-मार्ग मे आगमिक अनुकरण और अपरिग्रही जीवन की तेजस्विता—इन दोनों का अभाव आपको विदित हुआ तब यति मार्ग के प्रति आपको असन्तोष होने लगा। आपके मन में केवल यही गूंज रहा था कि :— "सुत्तस्स मग्गेण चरिज्ज भिक्खू।"

अपने अन्तर्द्वन्द्व की बात आपने गुरुदेव को कही किन्तु क्रान्तिकारियों के अनुरूप तेज और शक्ति

आपमें नहीं थी। गुरु ने आपको समझाया कि:— "हे शिष्य! आज के इस भयंकर समय में साधु-धर्म-युक्त कठोर जीवन का पालन शक्य नही है। शास्त्रों का मार्ग आदर्श-मार्ग है किन्तु वह व्यवहार्य नही है।"

गुरु के इस प्रकार समझाने से आपका विचार-द्वन्द्व शांत न हुआ अपितु उनकी अशांति उग्रतर बढती ही गई। आपने गुरु को आगमानुसारी जीवन-यापन करने का आग्रह करते रहे। एक समय गुरुदेव के सामने श्री भगवती-सूत्र के बीसवें शतक का पाठ सामने रख दिया उसमे यह अधिकार था कि:—"भगवान महावीर का शासन लगातार २१,००० वर्ष तक अटूट चलेगा।"

तब गुरुदेव ने कहा कि:—"मैं तो जिस मार्ग पर चल रहा हूँ उसी मार्ग पर चल सकूंगा, किन्तु तुम्हारी यदि इच्छा हो तो तुम आगमानुसार संयम-मार्ग वहन करो।"

लगातार ७ वर्ष से चला आरहा यह वैचारिक द्वन्द्व आज समाप्त हुआ। संवत् १६०८ मे पांच साधुओं के साथ आपने पंच-महाव्रत युक्त आर्हती-दीक्षा ग्रहण करली।

आर्हती-दीक्षा लेने के पश्चात् शास्त्राज्ञानुसार आपने वेष धारण किया। आज स्थानकवासी साधुओं का जो वेष है उसका प्रामाणिक रूप से पुनः प्रचलन श्री जीवराजजी महाराज द्वारा प्रारभ हुआ।

भद्रबाहू स्वामी के युग से स्थविर-कल्प में आने वाले मुनियों ने वस्त्र और पात्र ग्रहण किये थे और दुष्काल की भीषणता के कारण वे अपने पास मे दण्ड आदि भी रखने लग गये थे।

श्वेताम्बर-परम्परा में साधुओं के चौदह उपकरण ग्रहण किये गये है। समयानुसार और भी आगे बढ़ा गया और अब कान तक का लम्बा दण्डा (दण्डी) स्थापनाचार्य (ठवणी) और सिद्धचक्र आदि कैसे और कब आये! इसके लिये तो हम इतना ही कह सकते हैं कि मुखवस्त्रिका, रजोहरण, चादर और चोलपट्टा आदि के अतिरिक्त जो भी वस्तुए है, उन सब का समावेश परिस्थितिवश हुआ है।

इन सब उपकरणों में से श्री जीवराजजी महाराज ने वस्त्र, पात्र, मुंहपत्ती, रजोहरण, रजस्त्राण एवं प्रमार्जिका के अतिरिक्त अन्य उपकरणों का त्याग किया अथवा आवश्यक्ता पड़ने पर उन्हे ऐच्छिक वस्तुओं का रूप दिया गया। किन्तु स्थापनाचार्य और सिद्धचक्र आदि को तो अनावश्यक बता कर मुनियों को निर्लोभता का मार्ग बताया। उपकरणों के संबध मे यह सर्व प्रथम व्यवस्था निर्धारित की गई।

साधुमार्गियों की तीन मान्यताएं

(१) बत्तीस आगम (२) मुंहपत्ती (३) चैत्यपूजा की सर्वांशतः विमुक्ति।

(१) श्री जीवराजजी महाराज ने आगमों के विषय मे लौंकाशाह की बात स्वीकार की परन्तु आवश्यक-सूत्र को प्रामाणिक मान कर इकतालीस आगम के बदले बत्तीस आगम माने। लौंकाशाह की तरह ही उन्होंने अन्य टीका और टिप्पणियों की अपेक्षा मूल आगमों को ही श्रद्धापात्र माने। इस परम्परा को स्थानकवासी समाज ने आज तक मान्य रखी है। स्थानकवासी समाज निम्नांकित आगमों को प्रमाणभूत मानता है :—

११ अंग-सूत्र:—१ आचारांग २ सूत्रकृतांग ३ स्थानांग ४ समवायांग ५ व्याख्या प्रज्ञप्ति (भगवती) ६ ज्ञाताधर्मकथा ७ उपासकदशांग ८ अंतकृत ९ अनुत्तरोपपातिक १० प्रश्न-व्याकरण ११ विपाक-सूत्र

१२ उपांग सूत्र—१ उववाई २ रायप्पसेणी ३ जीवाभिगम ४ पन्नवणा ५ सूर्य-प्रज्ञप्ति ६ जम्बूद्वीप-प्रज्ञप्ति ७ चन्द्र-प्रज्ञप्ति ८ निरयावलिका ९ कल्पवतंसिका १० पुष्पिका ११ पुष्पचूलिका १२ वह्निदशा

४ मूलसूत्र:— १ दशवैकालिक २ उत्तराध्ययन ३ नंदी ४ अनुयोगद्वार

४ छेदसूत्र:— १ बृहत्कल्प २ व्यवहार ३ निशीथ ४ दशाश्रुतस्कंध। १ आवश्यक सूत्र:—इन प्राचीन शास्त्रों में जैन परम्परा की दृष्टि से आचार, विज्ञान, उपदेश, दर्शन, भूगोल, एवं खगोल आदि का वर्णन है।

आचार के लिये—आचारांग, दशवैकालिक आदि, उपदेशात्मक-उत्तराध्ययन, वि० दर्शनात्मक-सूत्रकृतांग, प्रज्ञापना, रायप्पसेणी नंदी, ठाणांग, समवायांग, अनुयोगद्वार। वि० भूगोल-खगोल के लिये-जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, चन्द्र-प्रज्ञप्ति, सूर्य प्रज्ञप्ति, वि० प्रायश्चित विशुद्धि के लिये-छेदसूत्र और आवश्यक। जीवन-चरित्रों का समावेश उपासक दशांग, अनुत्तरववाइ आदि में है। ज्ञाताधर्म-कथांग आख्यानात्मक है। विपाक-सूत्र कर्म विषयक और भगवती-संवादात्मक है।

इन सूत्रों में जैन-दर्शन के मौलिक तत्त्वों की प्ररूपणा विस्तृत रूप से देखी गई है। अनेकान्त-दर्शन आदि के विचार, अंग और दृष्टि-समस्त विषय जैनागमों मे संग्रहीत और संग्रथित हैं।

२—जैन धर्म की समस्त शाखाओं में स्थानकवासी शाखा की विशेष रूप से दो विशेषताएं हैं। १-स्थानकवासी मुंहपत्ती को आवश्यक और २-मूर्तिपूजा को आगम-विरुद्ध होने से अनावश्यक मानते हैं।

जैन साधुओं का सर्वाधिक प्रचलित और परिचित चिन्ह है "मुंहपत्ती" किन्तु दुर्भाग्य से जैन मुनियों के जितने प्रतीक है उनमे से एक के संबंध मे भी समस्त समाज एक मत नहीं है।

मुंहपत्ती और रजोहरण ये दोनों जैन मुनियों की खास निशानियां हैं। साधु के मुख पर मुंहपत्ती और बगल में रजोहरण इन दोनों के पीछे जैनधर्म की आत्माहिंसा की महान भावना रही हुई है। रजोहरण की उपयोगिता के लिये श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों सम्प्रदाय एक मत हैं। दिगम्बर साधु रजोहरण के स्थान पर मोर पिच्छी का उपयोग करते है। इसमें वस्तु-भिन्नता है किन्तु उद्देश्यभिन्नता नहीं।

मुंहपत्ती की उपयोगिता और महत्ता के लिये विवाद है। श्वेताम्बर मुंहपत्ती को आवश्यक साधन मानते हैं कि जिसके विना वाणी और भाषा निरवद्य नहीं हो सकती और वायुकाय के जीवों की रक्षा असंभव हो जाती है। किन्तु दिगम्बर मुंहपत्ती को अनावश्यक और समूर्च्छिम जीवों की उत्पत्ति का कारण मानते हैं।

शास्त्रों के आधारभूत प्रमाणों को स्वीकार करें तो दिगम्बरों और श्वेताम्बरों के दृष्टिकोण शास्त्रों से भिन्न चले जाते हैं। सैद्धांतिक दृष्टि से जैन साधु के आदर्श के संबंध मे भगवान महावीर के अहिंसा-सिद्धान्त के आधार पर हम विचार कर सकते हैं। श्वेताम्बर शास्त्रों मे मुंहपत्ती के लिये आवश्यक विधान है। साधु के चौदह उपकरणों मे मुंहपत्ती को मुख्य उपकरण माना गया है। भगवती-सूत्र के १६ वें शतक के दूसरे उद्देशे मे भगवन् का फरमान है कि:—

"गोयमा! जाहेणं सक्के देविंदे देवराया सुहुमकायं अणिजूहित्ताणं भासं भासइ, ताहेणं सक्के देविंदे देवराया सावज्जं भासं भासइ।"

अर्थात्—हे गौतम! शक्र-देवेन्द्र जब वस्त्रादिक से मुख ढांके विना (खुले मुंह) बोलता है, तब उसकी भाषा सावद्य होती है।

अभयदेव सूरि ने अपनी व्याख्या में मुंह ढकने का विधान किया है। उन्होंने लिखा है कि-"वस्त्रादिक से मुख ढांक कर बोलना यह ही सूक्ष्मकाय जीवों का रक्षण है"।

योगशास्त्र के तृतीय प्रकाश के ८७ वे श्लोक का विवरण देते हुए श्री हेमचन्द्राचार्य लिखते हैं कि:—

"मुखवस्त्रमपि सम्पातिम जीव रक्षणादुष्ण मुखवात विराध्यमान बाह्य वायुकाय जीव रक्षणात् मुखे धूलि प्रवेश रक्षणाच्चोपयोगीति।"

अर्थात्-मुख-वस्त्र संपातिम जीवों की रक्षा करता है। मुख से निकलते हुए उष्ण-वायु द्वारा विराधित होते हुए बाह्य वायुकाय के जीवों की रक्षा करता है तथा मुख में जाती हुई धूलि को अटकाता है अतः यह उपयोगी है।

इस प्रकार श्वेताम्बर सम्प्रदाय ने मुंहपत्ती को स्वीकार किया है, किन्तु मूर्तिपूजक समाज हमेशा मुख पर मुंहपत्ती बांधी हुई रखने का विरोधी है। इसलिये वे हाथ में मुंहपत्ती रखते है। किन्तु स्थानकवासी हमेशा मुख पर मुंहपत्ती बांधना आवश्यक मानते है। दोनों ही अपनी-अपनी मान्यता के अनुसार प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

किन्तु जैनेतर ग्रन्थों में जो जैन साधुओं का वर्णन आता है उसके आधार पर मुंह पर मुंहपत्ती बांधने की प्रणाली प्राचीन मालूम होती है। जैसे कि शिव-पुराण के इक्कीसवें अध्याय के पन्द्रहवे श्लोक में जैन साधु का वर्णन इस प्रकार किया है :—

हस्ते पात्रं दधानश्च, तुण्डे वस्त्रस्य धारकाः।
मलिमान्येव वस्त्राणि, धारयन्तोऽल्प भाषिणः॥

अर्थात्—जैन साधु हाथ मे पात्र रखते है, मुंह पर वस्त्र धारण करते हैं, वस्त्र मलिन होते हैं और अल्प-भाषण करते है।

पुराण चाहे जितने अर्वाचीन हों किन्तु मुंहपत्ती मुंह पर बांधना या हाथ में रखना इस विवाद की अपेक्षा तो पुराण प्राचीन ही हैं। इसलिये स्थानकवासियों का मुंह पर मुंहपत्ती बांधना भी प्राचीन है।

हित-शिक्षा रास के उपदेशक अधिकार में भी कहा गया है कि:—

मुख बांधी ते मुंहपत्ती, हेठी पाटोधार।
अति हेठी दाठी थई, जोतर गले निराधार॥
एक काने ध्वज सम कही, खंभे पछेड़ी ठाम।
केड़े खोसी कोथली, नावी पुण्य ने काम॥

जैनागमों में तथा जैन साहित्य मे मुंहपत्ती को वाचना, पृच्छना, परावर्तना तथा धर्म-कथा के समय में आवश्यक उपकरण कहा गया है।

वसति-प्रमार्जन, स्थंडिल-गमन, व्याख्यान-प्रसंग तथा मृतक-प्रसग में मुंहपत्ति का आवश्यक विधान करने मे आया है।

पन्यास जी महाराज श्री रत्नविजयजी गणि ने "मुंहपत्ती चर्चा सार" नाम की एक पुस्तक का संग्रह किया है, जिसमें इस विषय पर काफी प्रकाश डाला गया है।

स्थानकवासियों से अपने को अलग बताने के लिये ही मूर्तिपूजक मुंह पर मुंहपत्ती नहीं बांधते ऐसा हम श्री विजयानन्द सूरि (आत्मारामजी) महाराज ने कार्तिक वद अमावस्या सं० १९६७ बुधवार को सूरत से मुनि श्री आलमचन्दजी महाराज को जो पत्र लिखा था, उस पर से जान सकते हैं। श्री विजयवल्लभ सूरिजी जो कि उस समय वल्लभविजयजी कहलाते थे। उनके द्वारा लिखित पत्र की प्रतिलिपि इस प्रकार है:—

"मुंहपत्ती विषे हमारा कहना इतना ही है कि मुंहपत्ती बांधनी अच्छी है और घणे दिनों से परम्परा चली आई है, इनको लोपना अच्छा नहीं है। हम बंधनी अच्छी जाणते हैं, परन्तु हम ढूंढिये लोक में से मुंहपत्ती तोड़के निकले हैं, इस वास्ते हम बंध नहीं सकते हैं और जो बंधनी इच्छीए तो यहां बड़ी निंदा होती हैं।"

श्री जीवराजजी महाराज ने भी शास्त्रों के प्रमाणानुसार और उभय-पक्षों के तर्कों पर विचार करके मुंह पर मुंहपत्ती बांधने का निश्चय किया।

साम्प्रदायिकता मनुष्य के मानस को गुलाम बना देती है। मुंहपत्ती की उपयोगिता स्वीकार करने वाले भी मुंहपत्ती मे उपयोग में लिये जाने वाले धागे का विरोध करते है। किन्तु एक कान से दूसरे कान तक मुंहपत्ती बांधने में कपड़ा अधिक काम में लाना पड़ेगा। इस दृष्टि से यदि इसका काम केवल थोड़े से धागे से ही चल सकता हो तो उतना ही परिग्रह कम हुआ। परिग्रह बढ़ाने मे धर्म है या घटाने में? इन सब दृष्टियों से विचार कर जीवराजजी महाराज ने धागे के साथ मुंहपत्ति बांधना स्वीकार किया।

मूर्तिपूजा के संबंध में लोकाशाह के विचार हम जान गये है उन्हीं विचारों को श्री जीवराजजी महाराज ने मान्य रखा और मूर्तिपूजा को धार्मिक विधियों मे अनावश्यक माना।

श्री जीवराजजी महाराज यति-धर्म में से जब अलग हुए तब उनके साथ अन्य पांच यति भी निकले और उन्होंने आपको पूरा सहयोग दिया।

इनका शुद्ध संयम-मार्ग देखकर लोगों की उनके प्रति भाव-भक्ति बढ़ने लगी, इस कारण यति-वर्ग ने उनके विरुद्ध मे विरोध खड़ा करना प्रारंभ किया। किन्तु उन सब विरोधों से न घबराते हुए वे अहिंसा के सजग प्रहरी बन कर अनेक प्रान्तों मे घूमते रहे। मालव-प्रदेश में धर्म जागृति लाने का श्रेय भी आपको ही है।

अनेक प्रान्तों मे विचरते हुए वे आगरा आये। यहां आपका शरीर निर्बल बनने लगा। अंतिम समय निकट जान कर, आहार का सम्पूर्ण रूप से परित्याग कर आपने समाधि-पूर्वक काल-धर्म प्राप्त किया।

आपके समय मे ही आपके अनुयायियों की संख्या बहुत अधिक बढ़ गई थी। आपके स्वर्गवास के पश्चात् आचार्य धनजी, विष्णुजी, मनजी तथा नाथूरामजी हुए।

कोटा-सम्प्रदाय, अमरचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय, स्वामीदासजी महाराज की सम्प्रदाय, नाथूरामजी महाराज की सम्प्रदाय, स्वामीदासजी महाराज की सम्प्रदाय एवं नाथूरामजी महाराज की सम्प्रदाय आदि दस-ग्यारह सम्प्रदायें आपको अपना मूल-पुरुष मानती हैं।

मुनि श्री धर्मसिंहजी

जिस प्रकार श्री लौकाशाह ने जड़वाद और आडम्बर के विरोध में मोर्चा खड़ा किया था, उसी प्रकार श्री धर्मसिंहजी महाराज ने भी लौकागच्छ मे आई हुई कुरीतियों को उन्मूलन करने के लिए उद्घोषणा की।

लौकाशाह की सेना की आंतरिक स्थिति को सुदृढ़ करने वाले स्थानकवासी समाज के मूल प्रणेताओं मे आप द्वितीय हैं।

श्री धर्मसिंहजी महाराज का जन्म सौराष्ट्र के हालार-प्रान्त के जामनगर में हुआ था। दशा श्रीमाली जिनदास आपके पिता और शिवादेवी आप की माता का नाम था।

एक समय लौंकागच्छीय मुनि श्री देवजी का व्याख्यान श्रवण कर आपको संसार के प्रति वैराग्य उत्पन्न हुआ और दीक्षा लेने का निर्णय किया। पन्द्रह वर्षीय कुमार धर्मसिंहजी ने माता-पिता से जब आज्ञा मांगी

तो माता-पिता ने आपको बहुत समझाया किन्तु प्रबल वैराग्य-भावना के कारण वे झुके नहीं। इतना ही नहीं आपकी वैराग्य-वृत्ति से प्रभावित होकर इनके माता-पिता ने भी आपके साथ दीक्षा ग्रहण कर ली।

अप्रतिभ बुद्धि तथा विलक्षण प्रतिभा का आपको प्रकृति से वरदान था। अल्प समय में ही बत्तीस आगम, तर्क, व्याकरण, साहित्य तथा दर्शन का ज्ञान आपने प्राप्त कर लिया। श्री धर्मसिंहजी मुनि एक साथ दोनों हाथों से लिख सकते थे और अवधान कर सकते थे। किन्तु विद्वत्ता के साथ चारित्र का सामान्यतया मेल बहुत कम दिखने मे आता है। तब श्री धर्मसिंहजी मे विद्वत्ता के साथ २ चारित्र की उत्कृष्टता भी विद्यमान थी।

आपके हृदय में यतियों के शिथिलाचारी जीवन के प्रति असंतोष जागृत हुआ। आपने अत्यन्त नम्रता-पूर्वक यति श्री शिवजी के सन्मुख निवेदन किया कि:—"गुरुदेव! पांचवे आरे का बहाना लेकर आज जो शिथिलाचार का पोषण हो रहा है, उसको देखकर आपके समान सिंह पुरुष भी यदि विशुद्ध मुनि-धर्म का पालन नहीं करेंगे तो फिर कौन करेगा? आप मुनि-धर्म के पालन की प्रतिज्ञा लीजिये—मै भी आपके साथ आज्ञानुसार संयम का पालन करूंगा।" गुरु ने अत्यन्त प्रेम-पूर्वक शिष्य की बात सुनी और कुछ समय तक प्रतीक्षा करने के लिये कहा।

श्री धर्मसिंहजी ने गुरु की आज्ञा मानली और श्रुत-धर्म की सेवा करने के लिए आपने सूत्रों के ऊपर टब्बा लिखना आरंभ किया। आपने सत्ताईस सूत्रों के टब्बे लिखे। ये टब्बे इतने सुन्दर ढंग से लिखे गये कि इन टब्बों को आज तक स्थानकवासी साधु प्रामाणिक मानते आये हैं। सुन्दरता और स्पष्टता इसी से जानी जा सकती है कि गुजराती भाषा होने पर भी स्थानकवासी साधुओं को समझने में कोई अड़चन पैदा नहीं होती।

इसके बाद आपने फिर से गुरु को निवेदन किया कि—"अब विशुद्ध संयम पालन करने के लिये बाहर निकल जाने की मेरी तीव्र लालसा है। यदि आप तैयार होते हों तो हम दोनों शुद्ध-चारित्र के मार्ग की ओर मुड़ें।"

गुरु ने कहा कि:—"हे देवानुप्रिय! तुम देख सकते हो कि मैं इस गादी और वैभव को छोड़ सकने की स्थिति में नहीं हूँ। फिर भी तुम्हारे कल्याण के मार्ग में विघ्न रूप बनना मैं नहीं चाहता। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो तुम आगमानुसार चारित्र का पालन करो। किन्तु यहां से निकलने पर तुम्हारे सामने अनेक प्रकार के विरोध खड़े होंगे। उनके सामने टिक सकने की क्या तुममे क्षमता है? यह जानने के लिए मुझे तुम्हारी परीक्षा लेनी होगी। अतः आज रात को दिल्ली दरवाजे के बाहर (अहमदाबाद मे) जो दरगाह है—वहां आज रात भर रह कर कल सवेरे मेरे पास आना।"

धर्मसिंह मुनि ने गुरु की आज्ञा शिरोधार्य करके दरगाह मे प्रवेश किया और उसके अधिकारी से रात्रिवास करने की आज्ञा मांगी।

यह वह समय था जब अहमदाबाद का इतना विकास नहीं हुआ था। रात को शहर से बाहर कोई भी नहीं निकल सकता था। और उस दरगाह मे तो रात्रि मे कोई भी नहीं रह सकता था। अतः वहाँ के मुसलमान अधिकारी ने कहा कि:—"महाराज यहाँ रात को कोई नहीं रह सकता। रात के समय जो भीतर जाता है उसका केवल शव ही प्रातः काल हाथ लगता है। आप व्यर्थ ही क्यों मरना चाहते हैं?" किन्तु धर्मसिंहजी ने कहा कि:—"मुझे अपने गुरु की आज्ञा है कि मैं रात को यहां रहूँ! अतः आप मुझे आज्ञा दीजिये।"

वहां के लोगों ने विचारा कि यह कोई अद्भुत आदमी है। यदि यह मरना ही चाहता है तो हम क्या

करें ! अतः उन्होंने कहा कि "महाराज ! यदि आप रात को रहना ही चाहते है तो हमे इसमे कुछ भी आपत्ति नहीं है, किन्तु यदि आपको कुछ हो गया तो उसके हम जिम्मेवार नही ।' इस पर धर्मसिंहजी ने कहा कि:—"ं किसी को किसी प्रकार का दोषी नही ठहरायेगे ।"

वे दरगाह में पहुँचे । संध्या काल होने पर वे ध्यान, कायोत्सर्ग और शास्त्र-स्वाध्याय मे लग गये एक प्रहर रात बीत गई तब दरगाह का पीर अपनी क । पर आया और उसने देखा कि एक साधु स्वाध्याय ं बैठा हुआ है । उसने शास्त्रों की वाणी सुनी । आज तक ऐसी वाणी उसने कभी भी नहीं सुनी थी । साधु की तरप उसने नजर दौड़ाई तो उसने मुनि को स्वाध्याय में लीन पाया । मुनि की दृष्टि मे किसी प्रकार की विचलितता क उसने अनुभव नहीं किया । यक्ष का हृदय परिवर्तित हो गया । जो आज तक मिलने वाले मनुष्यों का संहार करत आ रहा था वह आज इस मुनि की सेवा-सुश्रूषा करने लगा । धर्मसिहजी ने उसे उपदेश दिया जिसके फलस्वरू यक्ष ने किसी को न मारने की प्रतिज्ञा मुनि से ग्रहण की ।

जिन लोगों ने दरगाह में जाते हुए कल साधु को देखा था आज प्रातः काल उसका शव देखने व कोतूहल से विशाल संख्या मे एकत्रित हो गये, किन्तु लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब सूर्योदय हो पर धीर, वीर, गंभीर, प्रतापी, तथा ओजस्वी श्री धर्मसिहजी मुनि बाहर पधारे ।

श्री शिवजी मुनि ने यह घटना सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता व्यक्त की और उन्होंने धर्मसिहजी को शास्त्र सम्मत शुद्ध-संयम के मार्ग पर विचरने की आज्ञा दे दी ।

अपने गुरु का आशीर्वाद प्राप्त कर और उनसे अलग होकर श्री धर्मसिहजी अहमदाबाद पधारे । उ समय अहमदाबाद मे चैत्यवासियों की शक्ति अत्यन्त प्रबल थी और मुनि लोग अर्ध ससारी के समान होक रहते थे । इस स्थिति में इस पूर्ण संयमी को योग्य स्थान कैसे मिलता ! अतः आपने दरियापुर दरवाजे के पहरेदार व कोठड़ी में रह कर दरवाजे पर ही बैठ कर उपदेश देना शुरू किया । इसलिये आपकी सम्प्रदाय "दरियापु सम्प्रदाय" इस नाम से प्रसिद्ध हुई । श्री धर्मसिहजी मुनि के उपदेश का प्रभाव अहमदाबाद निवासियों पर खू पड़ा । तत्कालीन अहमदाबाद के बादशाह के कामदार श्री दलपतराय भी आपसे प्रभावित हुए । इस प्रकार क्रमश आपका शिष्य-परिवार और अनुयायी बढ़ने लगे । यह घटना वि० सं० १६६२ की है ।

पूज्य श्री धर्मसिंहजी महाराज का अध्ययन अत्यन्त गहन था । अपने जीवन-काल मे जैन-साहित्य की बेजोड़ सेवा का महान् कार्य आपने किया ।

श्री धर्मसिहजी महाराज की मान्यताओं मे दूसरी सम्प्रदायो से कुछ भिन्नता है । उसमे मुख्य भेद श्रावकों के प्रत्याख्यान मे है । और यह भेद छः कोटि और आठ कोटि का है । साधुओ को तो तीन करण औ तीन योग से-नौ कोटि से त्याग होता है किन्तु इनमें से दूसरी सम्प्रदायों के श्रावक दो करण तीन योग से—छ कोटि से प्रत्याख्यान करते हैं । जबकि धर्मसिंहजी की यह मान्यता थी कि श्रावक मन की अनुमोदना के सिवाय शेष आठ कोटि से प्रत्याख्यान कर सकता है समाचारी के विषय मे प्रायः प्रत्येक सम्प्रदाय की पारस्परिक-तुलन मे भिन्नता मालूम होती है । दरिया-पुरी और अन्य सम्प्रदायों के बीच मे भी अन्तर है । आयुष्य टूटने की मान्यता मे भी भिन्नता है ।

धर्मसिहजी महाराज का प्रचार-क्षेत्र समस्त गुजरात और सौराष्ट्र का प्रदेश था । पूज्य श्री धर्मसिंहजी स्मारण गांठ के दर्द के कारण दूरवर्ती प्रदेशों में विहार नहीं कर सके । वि० सं० १७२८ के आसोज वदी ४ को ४३ वर्ष की अवस्था मे आप देवलोक सिधारे ।

आज आपके चौवीसवें पाट पर पूज्य श्री ईश्वरलालजी महाराज आचार्य-पद पर विराजमान है। आप बड़े ही शांत, दांत, धीर, गंभीर और शास्त्रों के समर्थ-ज्ञाता है।

इस सम्प्रदाय की यह एक और विशेषता है कि इसमें से शाखा-प्रशाखाओं के समान अन्य सम्प्रदायें नहीं फूटीं। आज तक एक ही शृंखला अविछिन्न-रूप से चली आ रही है।

श्री लवजीऋषिजी महाराज

श्री लवजी ऋषिजी के पिताजी का देहावसान उनकी बाल्यावस्था में ही हो गया था अतः अपनी विधवा माता फूलाबाई के साथ अपने नाना वीरजी वोरा के यहां रहते थे। वीरजी वोरा दशा श्रीमाली वणिक थे। खंभात के नवाब साहब भी आपकी धाक मानते थे। आपके पास लाखों की सम्पदा थी।

इस समय सूरत में लौंकागच्छ की गादी पर वज्रांगजी यति थे। वीरजी वोरा आपके पास आते-जाते थे। बालक लवजी भी अपनी माता के साथ वहां आते-जाते थे। अपनी धर्म-परायण माता के पास बैठ कर धर्म-क्रिया के पाठ सुनते और मन में उनका चिन्तन-मनन करते थे।

एक समय वीरजी वोरा अपनी पुत्री और बालक लवजी के साथ श्री वजांगजी के दर्शनार्थ उपाश्रय मे गये थे। उस समय प्रसंग वशात् वज्रांगजी ने लवजी का हाथ देखा और सामुद्रिक-शास्त्र के आधार पर अनुमान किया कि यह बालक बड़ा होने पर महापुरुष बनेगा।

वीरजी वोरा ने वज्रांगजी मुनि से इस बालक को शास्त्राभ्यास कराने के लिए कहा। यतिजी ने कहा कि सर्वप्रथम इन्हें सामायिक-प्रतिक्रमण सीखना चाहिए। लवजी ने उत्तर दिया कि:—"सामायिक-प्रतिकमण तो मुझे याद है।"

यतिजी ने आपकी परीक्षा ली। सात वर्ष के बालक से पूछने पर जब आपको मालूम हुआ कि इन्हे सामायिक-प्रतिक्रमण आते है तो आपको अत्यन्त हर्ष हुआ और इन्हे पढ़ाना मंजूर किया।

शास्त्राभ्यास करते हुए भगवान महावीर की वैराग्यमयी-वाणी से अध्यात्म-रस में ये लवलीन होने लगे। पार्थिव-विषय बाहर से मधुर किन्तु भीतर से हलाहल-विष से परिपूर्ण किंपाक-फल के समान क्षणभंगुर के स्वभाव-वाले प्रतीत होने लगे। अपनी माता तथा मातामह को ससार त्यागने की आपने भावना प्रगट की। माता तथा स्वजनों ने आपको खूब समझाया किंतु लवजी अपने निश्चय मे दृढ़ बने रहे। आखिर इनकी जीत हुई।

वि० स० १६६२ मे अत्यन्त भव्य-समारोह के साथ आपने दीक्षा धारण की और ध्यान पूर्वक शास्त्राभ्यास मे तल्लीन हो गये। गुरु वज्रांगजी को भी लवजी मुनि पर प्रगाढ़-स्नेह था। अत्यन्त सावधानी और प्रेम के साथ आप लवजी को अभ्यास कराते और अपने अनुभव सुनाते थे।

निरंतर श्रुताभ्यास से लवजी मुनि मे संयम के प्रति दृढ़-रुचि उत्पन्न हुई। वे सर्वत्र व्याप्त यति-वर्ग की शिथिलाचारिता और संग्रहवृत्ति के प्रति गुरु का लक्ष्य खींचते और शुद्ध-संयम पालन करने के लिए विनती करते।

गुरुदेव उनकी बात को स्वीकार करते किन्तु शुद्ध-संयम पालन के लिये परम्परा का परिवर्तन करने अथवा यति-वर्ग से अलग होने के लिए वे तैयार नही थे। गहन विचार-विमर्श के पश्चात् लवजी ऋजिषी ने यति-वर्ग से अलग होकर वि० सं० १६६४ मे शुद्ध-दीक्षा ग्रहण की। एक प्राचीन पट्टावली के अनुसार अपने दो गुरु भाइयों भाणजी और सुगाजी के साथ शुद्ध-दीक्षा धारण करने का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार इस सम्बन्ध मे दो मान्यतायें है।

लवजी ऋषिजी की मधुर-वाणी और उनके तप-तेज के कारण उनका प्रचार होने लगा। श्री जीवराजजी महाराज और धर्मसिंहजी महाराज ने यति-वर्ग के विरुद्ध जो विद्रोह जगाया था, उसमें तीसरे लवजी ऋषिजी भी सम्मिलित हो गये। इसलिए यति-वर्ग लवजी ऋषिजी को अपना शत्रु समझने लगा।

यति-वर्ग द्वारा रचित षड़यन्त्र के कारण वीरजी वोरा भी लवजी ऋषिजी से क्रुद्ध हो गये और खंभात के नवाब को पत्र लिखकर लवजी ऋषिजी को कैद करा दिया। जेल के पहरेदारों ने इस साधु की धर्मचर्या और जीवन की दिव्यता देख कर बैगम साहिबा के द्वारा नवाब सा. को समझाया और पूर्ण सम्मान के साथ आपको मुक्त कराया।

इस प्रकार यति-वर्ग का षड़यन्त्र निष्फल हो जाने से वे और भी अनेक प्रकार से आपको दुःख देने लगे किन्तु लवजी ऋषिजी शान्त और अक्रोध-भाव से अपनी संयम-साधना में मग्न रहते थे।

एक वार अहमदाबाद मे लवजी ऋषिजी विराजते थे। यति-वर्ग ने उस समय षड़यन्त्र रच कर उनके तीन शिष्यों को मरवा डाला। इस सम्बन्ध की शिकायत लवजी ऋषिजी के श्रावकों ने दिल्ली के दरबार मे पहुँचाई। उसकी जांच होने पर उनके शिष्यों के शव जो मंदिरों मे गाड़ दिये गये थे—बरामद हुए। अतः काजी ने उस मंदिर को तोड़ देने का आदेश दिया।

ऐसा होते देख कर लवजी ऋषिजी के पच्चीस श्रावकों ने काज़ी से प्रार्थना की कि:— "भले ही ये लोग मार्ग भूल गये हों और इन्होंने चाहे जितना निकृष्ट कार्य किया हो, फिर भी ये हमारे भाई ही है। हम मूर्ति-पूजा को नहीं मानते किन्तु ये लोग मूर्ति-पूजा द्वारा ही जिनेश्वर देव की आराधना करते हैं। इसलिये यदि मंदिर तोड़ दिया जायगा तो इन्हें अपार-वेदना होगी। हम वीतराग प्रभु के उपासक है अतः इनके दुख के निमित्त वनना हमारे लिए शोभनीय नहीं है। अतः मंदिर तोड़ देने का आदेश आप रद्द कीजिये।"

काज़ी ने अपना आदेश रद्द किया और भविष्य मे साधुमार्गियों को ऐसे संकट सहन न करने पड़ें—ऐसा प्रबंध कर दिल्ली चले गये।

इस प्रकार हम जान सकते है कि लवजी ऋषिजी के समय में यतियों का विरोध करना कितना संकटमय था। अन्त में एक समय विहार करते हुए लवजी ऋषिजी बुरहानपुर पधारे। वहां इनके प्रतिस्पर्धियों ने एक हलवाई की पत्नि के द्वारा विष-मिश्रित मोदक वहराये। आहार पानी निपटाने के वाद विष की प्रतिक्रिया होने लगी। लवजी ऋषिजी ने सब कुछ समझ लिया और अपने शिष्यों को गुजरात की तरफ़ विहार करने की आज्ञा प्रदान की। आपने अत्यन्त शांति पूर्वक समाधि-मरण से स्वर्ग गमन किया।

दरियापुरी-सम्प्रदाय पट्टावली मे ऐसा उल्लेख मिलता है कि पूज्य श्री धर्मसिंहजी और लवजी ऋषिजी का अहमदावाद में सम्मिलन हुआ था किन्तु छः कोटि और आठ कोटि तथा आयुष्य टूटने के अभिप्राय दोनों के समान नहीं हो सके।

पूज्य श्री लवजी ऋषिजी की परम्परा अति विशाल है। आज भी स्थानकवासी समाज में खंभात संघाडा-गुजरात में, ऋषि सम्प्रदाय मालवा तथा दक्षिण में और पंजाब में पूज्य अमरसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय आप द्वारा अनुप्राणित विशाल संख्या मे विद्यमान हैं।

श्री धर्मदासजी महाराज

पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज का जन्म अहमदाबाद के पास 'सरखेज' नामक ग्राम में संघपति जीवनलाल रालीदासजी की धर्मपत्नि हीराबाई की कुक्षि से चैत्र शुक्ला ११ सं० १७०१ में हुआ था। आप जाति के भावसार थे। उस समय सरखेज मे ७०० घर थे। ये सब लौंकागच्छी थे।

सरखेज मे उस समय लौंकागच्छ के केशवजी यति के पक्ष के श्री पूज्य तेजसिंहजी बिराजते थे। आपके पास ही श्री धर्मदासजी ने धार्मिक-ज्ञान प्राप्त किया।

एक समय 'एकल-पात्रिया' पथ के एक अगुआ श्री कल्याणजी भाई अपने पंथ के प्रचारार्थ सरखेज आये। धर्मदासजी प्रारंभ से ही वैराग्यमय थे अतः कल्याणजी के उपदेश का आप पर उत्तम प्रभाव पड़ा शास्त्रों मे वर्णित शुद्ध संयमी-जीवन के आचारों के साथ तुलना करते हुए यतियों के शिथिलाचारी-जीवन से उन्हें दुःख हुआ। इस कारण यतियों से दीक्षा लेने की आपकी इच्छा नहीं थी। कल्याणजी भाई के उपदेश से प्रभावित होकर माता पिता से आज्ञा लेकर धर्मदासजी उनके शिष्य बन गये।

एक वर्ष तक कल्याणजी के सम्पर्क में रहकर आपने शास्त्राभ्यास किया। शास्त्रों का अभ्यास करते हुए उनकी एकल-पात्रिया-पंथ से श्रद्धा हट गई। आपने इस अज्ञान-मूलक मान्यता का परित्याग किया और वि० सं० १७१६ में अहमदाबाद के दिल्ली दरवाजे के बाहर स्थित बादशाह की वाटिका में स्वतन्त्र-रूप से शुद्ध-दीक्षा अंगीकार करली।

ऐसा कहा जाता है कि एक समय अहमदाबाद मे आपका पूज्य श्री धर्मसिंहजी म० से विचार-विनिमय हुआ था किन्तु आठ कोटि और आयुष्य टूटने की मान्यता पर एकमत नहीं हो सके।

इसी प्रकार लवजी ऋषिजी के साथ भी आपका मिलन हुआ था, किन्तु यहां भी सात विषयों पर समाधान नहीं हो सकने के कारण आपने स्वतन्त्र-रूप से दीक्षा ग्रहण की। फिर भी मुनि धर्मसिंहजी और धर्मदासजी महाराज के बीच में अत्यधिक प्रेम था।

दीक्षा के बाद पहले दिन गौचरी लेने के लिये आप शहर में गये। अकस्मात् वे ऐसे घर में पहुंचे जहां साधुमार्गियों के द्वेषी रहते थे। उन्होंने मुनि को आहार के बदले राख बहराई। पवन के कारण राख हवा में उड़ गई और थोड़ी सी पात्र में रह गई। धर्मदासजी महाराज यह राख लेकर शहर में बिराजित धर्मसिंहजी महाराज के पास आये और गौचरी में राख मिलने की घटना कह सुनाई।

धर्मसिंहजी मुनि ने कहा कि:—"धर्मदासजी! इस राख का उड़ना यह सूचित करता है कि उसके समान आपकी कीर्ति भी फैलेगी और आपकी परम्परा खूब विकसित होगी। जिस प्रकार बिना राख के घर नहीं होता, उसी प्रकार ऐसा कोई ग्राम अथवा प्रान्त नहीं रहेगा जहां आपके भक्त न होंगे।"

यह घटना वि० सं० १७२१ की है। आपके गुरुदेव का स्वर्गवास आपकी दीक्षा के २१ दिन के बाद मिगसर वद ५ को हुआ था। इस कारण लोगों में ऐसा भ्रम फैल गया कि धर्मदासजी म० स्वयंबोधी थे।

अब धर्मदासजी पर पूर्ण सम्प्रदाय की जिम्मेवरी थी और आपने इस जिम्मेवरी को अत्यन्त कुशलतापूर्वक निभाई। भारत के अनेक प्रान्तों में विचरण कर आपने धर्म का प्रचार किया।

आपके गुणों से आकर्षित होकर आपके अनुयायी-संघ ने सं० १७२१ में मालव-प्रान्त के मुख्य नगर उज्जैन में भव्य-समारोह के साथ आपको आचार्य-पद से विभूषित किया।

पूज्य धर्मदासजी महाराज ने कच्छ, काठियावाड़, बागड़, खानदेश, पंजाब, मेवाड़, मालवा, हाड़ौती और ढुंढार आदि प्रांतों में धर्म का प्रचार करते हुए परिभ्रमण किया।

श्री धर्मदासजी महाराज की शिष्य-परम्परा तत्कालीन मुनियों से सर्वाधिक है। आपके ६६ शिष्य थे, जिनमे से ३५ तो संस्कृत और प्राकृत के विद्वान थे। इन ३५ विद्वान मुनियों के साथ शिष्यों का एक-एक समुदाय बन गया था।

इतने शिष्यों और प्रशिष्यों के बड़े परिवार की व्यवस्था तथा शिक्षण का प्रबन्ध करना एक व्यक्ति के लिये अत्यन्त कठिन था। इस कारण पूज्य धर्मदासजी महाराज ने धारा नगरी मे समस्त शिष्य-परिवार को एकत्रित कर चैत्र शुक्ला १३ सं० १७७२ को २२ सम्प्रदायों मे विभाजित कर दिया। स्थानकवासी समाज मे २२ सम्प्रदायों का नाम अत्यधिक प्रचलित है। इसे 'बाईस-टोला' भी कहा जाता है। ये एक ही गुरु के परिवार की अलग-अलग बाईस टोलियां है। इन बाईस सम्प्रदायों के नाम इस प्रकार है:—

(१) पूज्य श्री धर्मदासजी म० की सम्प्रदाय (२) पू० श्री धन्नाजी म० की सं० (३) पू० श्री लालचन्दजी म० की सं० (४) पू० श्री मन्नाजी म० की सं० (५) पू० श्री बड़े पृथ्वीराजजी म० की सं० (६) पू० श्री छोटे पृथ्वीराजजी म० की सं० (७) पू० श्री बालचन्दजी म० की सं० (८) पू० श्री ताराचन्दजी म० की सं० (९) पू० श्री प्रेमचन्द जी म० की सं० (१०) पू० श्री खेतसीजी म० की सं० (११) पू० श्री पदार्थजी म० की सं० (१२) पू० श्री लोकमलजी म० की स. (१३) पू० श्री भवानीदासजी म० की सं० (१४) पू० श्री मलूकचन्दजी म० की सं० (१५) पू० श्री पुरुषोत्तमजी म० की सं० (१६) पू० श्री मुकुटरायजी म० की सं० (१७) पू० श्री मनोहरदासजी म० की सं० (१८) पू० श्री रामचन्द्रजी म० की स० (१९) पू० श्री गुरुसहायजी म० की सं० (२०) पू० श्री वाघजी म० की सं० (२१) पू० श्री रामरतनजी म० की स० (२२) पू० श्री मूलचन्दजी म० की सं०। इस प्रकार २२ मुनियों के नाम से २२ सम्प्रदायों का गठन हुआ।

पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज के स्वर्गवास की घटना उनके जीवन काल से भी अधिक उज्जवल और रोमांचक है। जब आपने यह सुना कि धारा नगरी मे आपके एक शिष्य ने संथारा धारण किया है किन्तु मन के भाव शिथिल पड़ जाने के कारण और अनशन की प्रतिज्ञा नहीं निभा सकने के कारण तोड़ना चाहता है। तो यह बात सुनते ही आपने यह सन्देश पहुँचाया कि मैं वहां आता हूँ और मेरे आने तक तुम प्रतिज्ञा भंग न करना। उस मुनि ने आपकी आज्ञा मान ली।

पूज्य श्री ने शीघ्रता से विहार किया और सन्ध्या होते-होते धारा नगरी मे पहुँच गये। भूख और प्यास से आकुल-व्याकुल संथारा लिये हुए मुनि अन्न और जल के लिए बिल-बिला रहे थे। पूज्य श्री ने इस मुनि को प्रतिज्ञा पालन के लिए खूब समझाया किन्तु मुनि के साहस और सहनशीलता की शक्ति का बांध टूट चुका था। अतः उन पर उपदेश का कुछ भी असर न पड़ा।

पूज्य श्री ने शीघ्र ही अपने कधे पर का बोझ उतारा। सम्प्रदाय की जिम्मेवरी मूलचन्दजी महाराज को दी। समस्त संघ के सन्मुख अपना मंतव्य प्रगट किया और शीघ्र ही धर्म की दीप-शिखा को जाज्वल्यमान बनाये रखने के लिये अपने उस शिष्य के स्थान पर खुद संथारा करके बैठ गये।

शरीर का धर्म तो विलय होने का ही है। क्रमशः शरीर कृश होता गया। एक दिन शांत-वातावरण मे जब वर्षा की झिरमिर २ बूंदें पड़ रही थीं तब ऐसे सुखद और स्निग्ध समय मे नश्वर देह को त्याग कर आप पंडित-मरण को प्राप्त हुए।

सं० १७६६ अथवा १७२७ मे धर्म की कीर्ति की रक्षा के लिए आपने अपने शरीर का इस प्रकार बलिदान दिया।

धन्य हो उस महान् आत्मा को!!

स्थानकवासी समाज का पुनरुत्थान

पू० श्री धर्मसिहजी महाराजकी सम्प्रदाय सुसंगठित और अविछिन्न रही। उनके सिवाय पूज्य श्री जीवराजजी महाराज, लवजी ऋषिजी महाराज और धर्मदासजी तथा हरजी ऋषिजी महाराज की शिष्य-परम्परा में विभाजन होकर अनेक सम्प्रदाये खड़ी होगईं। थोड़े-थोड़े विचार-मतभेद को लेकर एक दूसरे के बीच मे से एकता की भावना लुप्त होती गई। "नमो लोए सव्व साहूणं" की आराधना करने वाले श्रावकों के हृदयों में भी "यह मेरे गुरू "वे तुम्हारे गुरू" की मनोवृत्ति जागृत होगई थी। इस प्रकार अत्यन्त विशाल होता हुआ भी स्थानकवासी समाज छिन्न-भिन्न होने की हालत मे होगया।

सन् १८६४ मे दिगम्बर भाइयों ने आंतरिक और साम्प्रदायिक दल-बन्दियों से ऊपर उठ कर एक दिगम्बर कॉन्फरन्स की स्थापना की। सन् १६०२ मे मूर्तिपूजक कॉन्फरन्स का निर्माण हुआ।

स्था० समाज की खंभात सम्प्रदाय के उत्साही मुनि श्री छगनलालजी महाराज ने स्थानकवासी समाज का संगठन के प्रति ध्यान आकर्षित कराया। जैन-समाज के सुविख्यात लेखक, निडरवक्ता, प्रसिद्ध-दार्शनिक, स्वतन्त्र-विचारक स्व० श्री वाड़ीलाल मोतीलाल शाह ने श्रावक-समाज को एकीकरण के लिए प्रेरणा दी।

सामाजिक कार्यों में तो श्रावक एक रूप थे ही, किन्तु धार्मिक कार्यों में साम्प्रदायिकता के कारण विभाजित हो गये थे। समय को समझ कर, कलह के परिणामों को देखकर सभी लोगों ने एकीकरण की योजना की सराहना की, जिसके फलस्वरूप सन् १६०६ में अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स की स्थापना की गई।

स्था० जैन कॉन्फरन्स के अधिवेशन किस समय और कहां २ हुए उनका विवरण इस प्रकार है:—

प्रथम्	सन् १६०६	मौरवी		द्वितीय	सन् १६०८	रतलाम
तृतीय	,, १६०६	अजमेर		चतुर्थ	,, १६१०	जालन्धर (पंजाब)
पंचम	,, १६१३	सिकन्द्राबाद		षष्ठम	,, १६२५	मलकापुर
सप्तम	,, १६२७	बम्बई		अष्टम	,, १६२७	बीकानेर
नवम	,, १६३३	अजमेर				

अजमेर के नवमें अधिवेशन के समय स्थानकवासी समाज के साधुओं का सम्मेलन भी हुआ था।

सम्राट खारवेल, राजा सम्प्रति, मथुरा तथा अंत मे वल्लभीपुर के साधु-सम्मेलन के १४७६ वर्ष पश्चात् विविध सम्प्रदायों के साधुओं को एक साथ और एक ही जगह देखने का प्रसग अहोभाग्य से स्थानकवासी समाज को अजमेर मे ही मिला।

उस समय स्थानकवासी-समाज में ३० सम्प्रदाये थीं। उनमे से २६ सम्प्रदायों के प्रतिनिधि इस सम्मेलन में उपस्थित हुए। साधु-सम्मेलन मे मुनियो की संख्या ४६३ और साध्वियों की सख्या ११३२ थी। इस प्रकार कुल श्रमण-सघ मे १५६५ साधु-साध्वी विराजमान थे।

इस सम्मेलन मे दूर-दूर के साधुओं का पारस्परिक-परिचय और उनमे ऐक्यता का बीजारोपण हुआ।

इसके बाद दसवां अधिवेशन घाटकोपर में और ग्यारहवां अधिवेशन मद्रास मे हुआ। उसी समय वृहत्-साधु-सम्मेलन यथाशीघ्र भरने का निर्णय किया गया।

अजमेर साधु-सम्मेलन के समय के बीजारोपण का फलरूप परिणाम सादड़ी वृहत्-साधु-सम्मेलनके समय देखा गया। सम्मेलन मे सम्मिलित मुनिवरों ने विचार-विमर्ष के पश्चात् अपनी-अपनी सम्प्रदायों को एक वृहत्-संघ में विलीन करना स्वीकार किया।

बैसाख शुक्ला ३ (अक्षय-तृतीया) के पवित्र दिन सम्मेलन प्रारभ हुआ और बैसाख शुक्ला ७ को श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-संघ के नेतृत्व मे संघ-प्रवेश-पत्र पर हस्ताक्षर कर के पूज्य श्री आत्मारामजी महाराज को आचार्य के रूप में स्वीकार कर बाईस सम्प्रदायों के एक महान श्रावक-संघ का निर्माण हुआ।

व्यवस्था के लिये समितियां निर्माण की गईं। कितने ही महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुए और कॉन्फरन्स ने मुनि-सम्मेलन के सभी प्रस्तावों का उत्साह पूर्वक अनुमोदन किया और सम्पूर्ण सहयोग देने की प्रतीज्ञा की। मुनि-सम्मेलन के निर्देशानुसार श्रावक-संघ को सुव्यवस्थित बनाने की तरफ भी ध्यान दिया गया। इसके साथ साधु-सम्मेलन के प्रस्तावों को अमल मे लाने के लिए इक्कावन सभासदों की एक संघ-ऐक्य सं० समिति की नियुक्ति हुई।

१७ फरवरी सन् १९५३ को मंत्री मुनिवरों तथा निर्णायक-समिति के मुनिवरों का सम्मेलन सोजत में हुआ। सादड़ी-सम्मेलन के समय चातुर्मास निकट होने के कारण पूरी तरह से विचार-विमर्ष नहीं हो सका था। अतः जो कार्य अधूरे रह गये थे, उनके संबंध मे यहां विचार किया गया।

इस समय मे मुनियों की एकता, पारस्परिक सद्भाव, आत्म-साधना और समाज-कल्याण की भावना सर्व मुनिराजों के हृदय मे छलकती थी।

इस सम्मेलन मे सचित्ताचित्त, ध्वनिवर्धक-यन्त्र, तिथि-निर्णय के प्रश्न आदि पर गंभीरता से विचार-विनिमय हुआ, किंतु अंतिम रूप से निर्णय नहीं हो सका। पूज्य श्री ज्ञानचन्दजी म० सा० के स्थ० मुनि श्री रत्नचंद्रजी म० आदि ठा० ५ तथा श्री नन्द कुँवरजी म० की सतियां जो वर्द्धमान स्था० श्रमण-संघ मे सम्मिलित नहीं हुई। उनके प्रतिनिधि रूप मे पं० समर्थमलजी म० सा० के साथ विचार-विनिमय हुआ। फलतः उनसे वात्सल्य सबध आगामी-सम्मेलन तक कायम हुआ। विवादास्पद बातों पर सब साथ मिल कर विचार कर सकें इसके लिए उपाचार्य श्री गणेशीलालजी महाराज, प्रधानमत्री श्री आनन्द ऋषिजी महाराज, सहमंत्री श्री हस्तीमलजी महाराज, कविरत्न श्री अमरचन्दजी महाराज, शांति-रक्षक व्याख्यान-वाचस्पति श्री मदनलालजी महाराज—इन पांच बड़े संतों का एकत्रित-चातुर्मास कराने का निर्णय किया गया। पं० मुनि श्री समर्थमलजी महाराज का चातुर्मास भी कराया गया। इसके लिये जोधपुर श्री-संघ की विनती स्वीकृत की गई। विवादास्पद वस्तुओं का उपयोग आगामी सम्मेलन तक न करने का आदेश दिया गया इस प्रकार अत्यन्त प्रेम पूर्वक इस सम्मेलन की समाप्ति हुई।

———

श्री लौंकागच्छ और पांच धर्मसुधारकों की परम्परा

श्री लोंकाशाहजी के बाद लौंकागच्छ के नाम से पुनः यति-परम्परा निम्न प्रकार चालू हो गई:—

श्री भाणजी, भिदाजी, भीमाजी, जगमालजी, सखोजी, रूपचंदजी तथा श्री जीवाजी।

श्री जीवाजी महाराज के तीन शिष्य थे:—जगाजी महाराज, बड़े वरसिंहजी, तथा कुंवरजी ऋषि।

१. जगाजी महाराज के शिष्य श्री जीवराजजी हुए। आपने वि० स० १६०८ में क्रियोद्धार किया।

२. बड़े वरसिंहजी महाराज और बाद की परम्परा इस प्रकार है:—छोटे वरसिंहजी, यशवन्त ऋषिजी, रूपसिंहजी, दामोदरजी, कर्मसिंहजी, केशवजी, और तेजसिंहजी।

अ:-केशवजी पक्ष के यतियों मे से वज्रांगजी के पाट पर श्री लवजी ऋषिजी वि० सं० १६९२-१७०४ में महावीर स्वामी के ७७ वे पाट पर हुए।

ब:-केशवजी के शिष्य तेजसिहजी के समय मे एकल-पात्रिया-श्रावक कल्याणजी के शिष्य धर्मदासजी हुए। लौंकागच्छ की यति-परपरा मे से ५ सुधारकों की परम्परा इस प्रकार चली:—

क:-केशवजी यति की परम्परा में श्री हरजी ऋषि हुए। आपने सं० १७८५ मे क्रियोद्धार किया।

३. कुंवरजी ऋषि के बाद, श्रीमलजी, श्री रत्नसिंहजी, केशवजी, और शिवजी ऋषि हुए।

अ:-श्री शिवजी ऋषिजी के दो शिष्य हुए:—श्री संघराजजी और इनके पाट पर-श्री सुखमलजी, भागचंदजी, वालचंदजी, मानकचंदजी, मूलचंदजी, जगतचंदजी, रत्नचंदजी, नृपचंदजी (यह यति परंपरा चली)-इनकी गादी बालापुर में है।

श्री शिवजी ऋषिजी के दूसरे शिष्य धर्मसिंहजी मुनि हुए। आपने स० ११८५ मे शुद्ध मुनि-धर्म अंगीकार कर दरियापुरी-सम्प्रदाय चलाया।

(१) श्री जीवराजजी महाराज की परम्परा

श्री शिवराजजी महाराज के दो शिष्य हुए:—श्रीधनजी महाराज और श्री लालचंदजी महाराज।

१. आचार्य श्री धनजी के बाद मे श्री विष्णुजी, मनजी ऋषिजी और नाथूरामजी हुए। श्री नाथूरामजी महाराज के लक्ष्मीचंदजी, और रायचंदजी म० हुए।

श्री लक्ष्मीचदजी के शिष्य छत्रपालजी के दो शिष्य हुए:-राजा रामाचार्य और उत्तमचन्द्राचार्य।

श्री राजा रामाचार्य के पाट पर श्री रामलालजी और फकीरचंदजी महाराज हुए। श्री फकीरचंदजी महाराज के शिष्य फूलचंदजी महाराज इस समय विद्यमान है।

श्री उत्तमचन्द्राचार्य के पाट पर श्री रत्नचन्द्रजी और श्री भज्जुलालजी हुए। और इनके शिष्य मोतीलालजी हुए।

श्री रायचंदजी के शिष्य रतिरामजी और इनके शिष्य नंदलालजी हुए जिनके तीन शिष्य हुए:—श्री जोंकीरामजी, किशनचंदजी और रूपचंदजी।

श्री जोंकीरामजी के बाद चैनरामजी और घासीलालजी हुए। श्री घासीलालजी के तीन शिष्य हुए:-श्री गोविंदरामजी, जीवनरामजी और कुन्दनलालजी। इनमें से गोविंदरामजी के शिष्य श्री छोटेलालजी इस समय विद्यमान हैं।

श्री किसनचन्दजी के बाद मे अनुक्रम से–बिहारीलालजी, महेशदासजी, बृषभाणजी और सादिरामजी हुए।

२. पूज्य श्री लालचन्दजी महाराज के चार शिष्य हुए :–श्री अमरसिंहजी, शीतलदासजी, गंगारामजी, और दीपचंदजी।

१. श्री अमरसिंहजी महाराज का पाटानुक्रम इस प्रकार है:—श्री तुलसीदासजी, सुजानमलजी, जीतमलजी, ज्ञानमलजी, पूनमचदजी, जेठमलजी, नैनमलजी, दयालुचंदजी, और ताराचंदजी।

२. श्री शीतलदासजी महाराज का पाटानुक्रम :–श्री देवीचंदजी, हीराचदजी, लक्ष्मीचंदजी, भैरूंदासजी, उदयचंदजी, पन्नालालजी, नेमचदजी, वेणीचंदजी, प्रतापचंदजी, और कजोड़ीमलजी।

३. श्री गंगारामजी महाराज का पाटानुक्रम :—श्री जीवनरामजी, श्रीचन्दजी, जवाहरलालजी, माणकचंदजी, पन्नालालजी, और चन्दन मुनिजी।

४. दीपचंदजी महाराज के दो शिष्य हुए :—श्री स्वामीदासजी, और मलूकचन्दजी।

(अ) स्वामीदासजी म० की परम्परा इस प्रकार है :—श्री उग्रसेनजी, घासीरामजी, कनीरामजी, ऋषिरायजी, रंगलालजी और फतहचन्दजी।

(ब) श्री मलूकचन्दजी महाराज के शिष्य नानगरामजी हुए। इनके शिष्य वीरभानजी हुए।

श्री वीरभानजी के बाद क्रमशः–श्री लक्ष्मणदासजी, मगनमलजी, गजमलजी, धूलमलजी और पन्नालालजी हुए। बाद मे श्री सुखलालजी, हरकचदजी, दयालचंदजी और हगामीलालजी हुए।

(२) पूज्य श्री धर्मसिंहजी महाराज की परम्परा

पूज्य श्री धर्मसिंहजी म० के पाट पर, श्री सोमजी ऋषिजी, मेघजी ऋषिजी, द्वारकादासजी, मोरारजी, नाथाजी, जयचंदजी, मोरारजी, नाथाजी, जीवनजी, प्रागजी ऋषि, शकर ऋषिजी, खुशालजी, हर्षसिंहजी, मोरारजी, झवेर ऋषिजी, पुंजाजी, छोटे भगवानजी, मलूकचदजी, हीराचन्दजी, श्री रघुनाथजी, हाथीजी, उत्तमचन्दजी और ईश्वरलालजी, (श्री ईश्वरलालजी महाराज इस समय विद्यमान हैं)।

यह सम्प्रदाय दरियापुरी आठ कोटि सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध है। इसमे एक ही पाटानुक्रम चलता आया है।

(३) पूज्य श्री लवजी ऋषिजी महाराज की परम्परा

पूज्य श्री लवजी ऋषिजी के बाद में उनके शिष्य सोमजी ऋषिजी पाट पर आये। आपके दो शिष्य हुए :–श्री कानजी ऋषि और हरदासजी ऋषि।

श्री कानजी ऋषि के शिष्य तिलोक ऋषिजी और इनके दो शिष्य हुए :—श्री काला ऋषिजी और मंगला ऋषिजी।

१. काला ऋषिजी दक्षिण की तरफ विचरे और इनकी सम्प्रदाय 'ऋषि-सम्प्रदाय' कहलाई। इनके पाटानुक्रम में–बहुजी ऋषिजी, धन्ना ऋषिजी, खुबाजी ऋषि, चेना ऋषिजी, अमोलख ऋषिजी, देवजी ऋषिजी, और श्री आनन्द ऋषिजी म०। (श्री आनन्द ऋषिजी म० वर्तमान मे श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण-संघ के प्रधान मंत्री-पद पर विराजमान हैं)।

२. श्री मंगला ऋषिजी गुजरातमे खंभात की तरफ विचरे अतः आपकी सम्प्रदाय 'खंभात सम्प्रदाय' के नाम से प्रसिद्ध हुई। आपका पाटानुक्रम इस प्रकार चला:–श्री रणछोड़जी, नाथाजी, वेचरदासजी, वड़े माणकचन्दजी, हरखचंदजी, भाणजी, गिरधरलालजी, छगनलालजी और गुलाबचदजी। (इस सम्प्रदाय मे वर्तमान काल में कोई साधु नहीं है–केवल साध्वियां है)।

३. श्री सोमजी ऋषिजी के दूसरे शिष्य हरदास ऋषिजी के पाट पर श्री वृन्दावनजी, भवानीदासजी, मलूकचन्दजी, महासिंहजी, कुशालसिंहजी, छजमलजी, और रामलालजी हुए।

श्री रामलालजी महाराज के शिष्य श्री अमरसिंहजी महाराज की 'पंजाब सम्प्रदाय' बनी। इस सम्प्रदाय में अनुक्रम से:-श्री मोतीरामजी, सोहनलालजी, काशीरामजी और पू० श्री आत्मारामजी महाराज हुए। (श्री आत्मारामजी म० वर्तमान में श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-सघ के आचार्य-पद पर बिराजमान है)।

श्री रामलालजी महाराज के दूसरे शिष्य श्री रामरतनजी म० मालवा-प्रान्त मे बिचरे। आपकी (मालवा-सम्प्रदाय) रामरतनजी महाराज की सम्प्रदाय कहलाती है।

(४) पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज की परम्परा

पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज के ९९ शिष्य थे। उनमे से सर्व प्रथम शिष्य श्री मूलचन्दजी महाराज काठियावाड मे विचरे। बाद में श्री धन्नाजी, छोटे पृथ्वीराजजी, मनोहरदासजी और रामचन्द्रजी हुए।

ये पांचों सम्प्रदाये इस प्रकार विकसित हुईः—

१. श्री मूलचन्दजी महाराज के ७ शिष्य हुए:—श्री पंचाणजी, गुलाबचन्दजी, बणारसीजी, श्री इच्छाजी, विट्ठलजी, वनाजी, और इन्द्रजी।

(क) श्री पंचाणजी महाराज के दो शिष्य हूए:—श्री इच्छाजी और रतनशी स्वामी।

श्री इच्छाजी स्वामी के पाट पर:—श्री हीराजी स्वामी, छोटे कानजी म०, अजरामरजी स्वामी, देवराजजी, भाणजी, करमशी और अविचलजी स्वामी। यह सम्प्रदाय 'लींबडी-सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध है।

श्री अविचलजी स्वामी के शिष्य हरचंदजी स्वामी हुए। आपकी सम्प्रदाय 'लींबडी मोटी-सम्प्रदाय' बनी। इसका पाटानुक्रम इस प्रकार है:—श्री हरचंदजी, देवजी, गोविन्दजी, कानजी, नथुजी, दीपचंदजी, लाधाजी, मेघराजजी, देवचंदजी, लवजी, गुलाबचंदजी और धनजी स्वामी।

श्री अविचलजी स्वामी के दूसरे शिष्य श्री हीमचंदजी से 'लींबड़ी छोटी-सम्प्रदाय' चली। इस सम्प्रदाय में पाटानुक्रम से:—श्री हीमचंदजी, गोपालजी, मोहनलालजी, मणीलालजी और केशवलालजी महाराज हुए।

(ख) श्री पंचाणजी महाराज के दूसरे शिष्य श्री रतनशी स्वामी का पाटानुक्रम इस प्रकार है:-श्री रतनशी स्वामी डुंगरशी स्वामी, रवजी, मेघराजजी, डाह्याजी, नेनशीजी, आंबाजी, छोटे नेनशीजी और देवजी स्वामी। श्री देवजी के शिष्य जयचन्दजी और उनके शिष्य प्राणलालजी महाराज हुए। देवजी स्वामी के शिष्य जादवजी और इनके शिष्य पुरुषोत्तमजी महाराज हुए। ये दोनों विद्यमान है। यह सम्प्रदाय "गौंडल सम्प्रदाय" के नाम से प्रसिद्ध हुई।

२. श्री गुलाबचदजी महाराज की परम्परा इस प्रकार है:—श्री गुलाबचंदजी, बालजी, बड़े नागजी, मूलजी म०, देवचंदजी म० तथा मेघराजजी म०, पूज्य संघजी महाराज। यह सम्प्रदाय 'सायला-सम्प्रदाय' कहलाती है।

३. श्री बणारसीजी म० के शिष्य जयसिंगजी म० हुए। यह सम्प्रदाय 'चूड़ा-सम्प्रदाय' कहलाती है। इस समय इसमे कोई साधु नहीं है।

४. श्री इच्छाजी महाराज के शिष्य रामजी महाराज हुए। इनकी सम्प्रदाय 'उदयपुर-सम्प्रदाय' कहलाती है। आजकल इसमे कोई साधु नहीं है।

५. श्री विट्ठलजी महाराज से 'धांगध्रा-सम्प्रदाय' चली इसमे अनुक्रमसे:-श्री विट्ठलजी, मूखणजी और वशरामजी हुए। श्री वशरामजी के शिष्य जसाजी महाराज बोटाद की तरफ आये। इसलिये आपकी सम्प्रदाय

'बोटाद-सम्प्रदाय' कहलाई। इसका पाटानुक्रम इस प्रकार है:—श्री जसाजी महाराज, अमरचन्दजी महाराज, और माणकचन्दजी महाराज।

६. श्री वनाजी महाराज की सम्प्रदाय 'बरवाला-सम्प्रदाय' कहलाई। इसका पाटानुक्रम इस प्रकार है:—श्री वनाजी, पुरुषोत्तमजी, बणारसीजी, कानजी महाराज, रामरूपजी, चुन्नीलालजी, उम्मेदचन्दजी, और मोहनलालजी महाराज।

७. श्री इन्द्रजी महाराज कच्छ में विचरे। आपकी परम्परा इस प्रकार चली:—श्री इन्द्रजी, भगवानजी, सोमचन्दजी, करसनजी, देवकरणजी, और डाह्याजी।

श्री डाह्याजी महाराज के दो शिष्य हुए:—श्री देवजी महाराज और श्री जसराजजी महाराज। इनकी पृथक सम्प्रदाय चली।

श्री देवजी महाराज की परम्परा 'कच्छ आठ कोटि बड़ी-पक्ष' के नाम से कहलाती है। इस परम्परा में अनुक्रम से:—श्री देवजी, रंगजी, केशवजी, करमचंदजी, देवराजजी, मोणशीजी, करमशीजी, वृजपालजी, कानजी, नागजी, और श्री कृष्णजी महाराज हुए। जो इस समय विद्यमान है।

(ग) श्री जसराजजी महाराज की परम्परा:—'कच्छ आठ कोटि छोटी-पक्ष' के नाम से कहलाती है। इस सम्प्रदाय की परम्परा इस प्रकार है:—श्री जसराजजी, नथुजी, हंसराजजी, वृजपालजी, डुंगरशी, शामजी और श्री श्री लालजी स्वामी (जो इस समय विद्यमान है)

(२) पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज के दूसरे शिष्य धन्नाजी महाराज के शिष्य भूदरजी महाराज के तीन शिष्य हुए:—श्री जयमलजी, रघुनाथजी और श्री कुशालाजी म०।

(क) श्री जयमलजी महाराज की पाट परम्परा में:—श्री रामचन्द्रजी, आसकरणजी, सबलदासजी और श्री हीराचन्दजी। यह सम्प्रदाय 'जयमलजी म० की सम्प्रदाय' कहलाती है।

(ख) पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज के समय मे उनके एक शिष्य भीखणजी हुए। इनके द्वारा उत्सूत्र की प्ररूपणा होने के कारण पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज ने संवत् १८१५ के चैत्र वदी ६ शुक्रवार को अपनी सम्प्रदाय से बाहर कर दिया। संवत् १८१७ के आषाढ़ शुक्ला १५ को १३ साधुओं और १३ श्रावकों का सहयोग लेकर दया-दान विरोधी तेरह-पंथ की स्थापना की, जो इस समय भी विद्यमान हैं।

श्री रघुनाथजी महाराज के पाट पर:—श्री टोडरमलजी, दीपचन्दजी और श्री भैरूंदासजी हुए। श्री भैरूंदासजी के दो शिष्य हुए:—श्री खेतशीजी और चौथमलजी। दोनों की अलग-अलग सम्प्रदायें चलीं।

(क) श्री खेतशीजी म० के पाट पर अनुक्रम से:—श्री भीखणजी, फौजमलजी और श्री संतोकचन्दजी हुए।

(ख) श्री चौथमलजी म० के पाट पर:—श्री संतोकचन्दजी, रामकिशनजी, उदयचन्दजी और शार्दूलसिंहजी महाराज हुए।

(ग) श्री कुशालाजी महाराज के शिष्य:—श्री गुमानचन्दजी और रामचन्द्रजी हुए। इनकी भी अलग-अलग सम्प्रदायें चलीं।

श्री गुमानचन्द्रजी म० के पाटानुक्रम में:—श्री दुर्गादासजी, रत्नचन्दजी, कजौड़ीमलजी, विनयचन्दजी, सौभाग्यचन्द्रजी और पू० मुनि श्री हस्तीमलजी महाराज हैं। जो वर्तमानमें श्री वर्ध० श्रमण-संघ में सहमंत्री-पद पर हैं।

श्री रामचन्द्रजी महाराज के पाटानुक्रम में:—श्री चिमनीरामजी, नरोत्तमजी, गंगारामजी, जीवनजी, ज्ञानचन्दजी और श्री समर्थमलजी हुए। यह सम्प्रदाय श्री समर्थमलजी महाराज की सम्प्रदाय कहलाती है।

३. पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज के तीसरे शिष्य श्री छोटे पृथ्वीराजजी म० का पाट इस प्रकार है:—श्री दुर्गादासजी, हरिदासजी, गंगारामजी, रामचन्द्रजी, नारायणदासजी, पूरणमलजी, रोड़ीदासजी, नरसीदासजी, एकलिंगदासजी और श्री मोतीलालजी।

४. पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज के चौथे शिष्य श्री मनोहरदासजी म० का पाट इस प्रकार चला:—श्री भागचन्दजी, शीलारामजी, रामदयालजी, लूनकरणजी, रामसुखदासजी, ख्यालीरामजी, मंगलसेनजी, मोतीरामजी और पृथ्वीचन्द्रजी।

५. पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज के पांचवें शिष्य श्री रामचन्द्रजी की सम्प्रदाय की पट्टावली इस प्रकार है:—श्री माणकचन्द्रजी, जीवराजजी, पृथ्वीचन्द्रजी, बड़े अमरचन्द्रजी, केशवजी, मोकमसिंहजी, नन्दलालजी, छोटे अमरचन्दजी, चंपालालजी, माधव मुनिजी और श्री ताराचन्दजी महाराज। (जो आज विद्यमान है।)

महाराष्ट्र-मंत्री श्री किशनलालजी महाराज, श्री नंदलालजी महाराज के शिष्य हैं। प्र० वक्ता श्री सौभाग्यमलजी महाराज श्री किशनलालजी महाराज के शिष्य है।

पूज्य धर्मदासजी महाराज ने अपने बड़े शिष्य समुदाय को व्यवस्थित रखने के लिए सभी शिष्यों और प्रशिष्यों को बुलाकर चैत्र शुक्ला १३ सं० १७७२ मे उन्हें बाईस-सम्प्रदायों में विभाजित कर दिया। इन बाईस-सम्प्रदायों के नाम इस प्रकार है:-(१) पू० श्री धर्मदासजी महाराज की सम्प्रदाय (२) श्री धन्नाजी म० की सं० (३) श्री लालचंदजी म० की सं० (४) श्री मन्नाजी म० की स० (५) श्री बड़े पृथ्वीराज जी म० की सं० (६) श्री छोटे पृथ्वीराज जी महाराज की सं० (७) श्री बालचंदजी म० की स० (८) श्री ताराचंदजी म० की सं० (९) श्री प्रेमचंदजी म० की सं० (१०) श्री खेतशीजी म० की सं० (११) श्री पदारथजी म० की सं० (१२) श्री लोकमलजी म० की सं० (१३) श्री भवानीदासजी म० की स० (१४) श्री मलूकचंदजी म० की सं० (१५) श्री पुरुशोत्तमजी म० की स० (१६) श्री मुकुटरायजी म० की सं० (१७) श्री मनोहरदासजी म० की सं० (१८) श्री रामचंद्रजी म० की सं० (१९) श्री गुरुसहायजी म० की सं० (२०) श्री बाघजी म० की सं० (२१) श्री रामरतनजी म० की सं० तथा (२२) श्री मूलचंदजी म० की सं०।

(५) पूज्य श्री हरजी ऋषिजी म० की परम्परा

श्री केशवजी पक्ष के यतियों की परम्परा में सं० १७८५ में पांचवें धर्म-सुधारक हरजी ऋषिजी हुए। उनके पाट पर श्री गोदाजी ऋषि और परशुरामजी महाराज हुए।

श्री परशुरामजी महाराज के शिष्य श्री लोकमलजी और खेतशीजी की अलग-अलग सम्प्रदायें चलीं।

श्री लोकमलजी महाराज के पाट पर:—श्री मयारामजी और दौलतरामजी हुए।

(अ) श्री दोलतरामजी के गोविंदरामजी और लालचंदजी ये दो शिष्य हुए।

श्री गोविंदरामजी की पाट-परम्परा इस प्रकार है:—श्री फतहचंदजी, ज्ञानचन्दजी, छगनलालजी, रोडमलजी, और प्रेमराज जी हुए।

श्री लालचंदजी के पाट पर श्री शिवलालजी, उदयसागरजी और चौथमलजी महाराज हुए।

श्री चौथमलजी महाराज के बाद यह सम्प्रदाय दो भागों में विभाजित हो गई। पहले विभाग में पू० श्री श्रीलालजी म०, पू० श्री जवाहरलालजी महाराज और पूज्य श्री गणेशीलालजी म० है। (पू० श्री गणेशीलालजी म० वर्तमान में श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-संघ के उपाचार्य-पद पर हैं)

दूसरे विभाग मे पू० श्री मन्नालालजी, नंदलालजी, खूबचंदजी और सहस्रमलजी महाराज हैं—जिन्होंने श्रमण-संघ की एकता के लिए आचार्य-पद का त्याग किया और अभी मंत्री-पद पर है।

श्री खेतशीजी का पाटानुक्रम इस प्रकार हैं:- श्री खेमशीजी, फतहचंदजी, अनोपचंदजी, देवजी महाराज, चम्पालालजी, चुन्नीलालजी, किशनलालजी, बलदेवजी, हरिश्चंद्रजी और मांगीलालजी।

भगवान महावीर से लेकर श्री लौंकाशाह तक की परम्परा

स्थानकवासी-धर्म के स्तम्भ-रूप और धार्मिक-क्रांति के पांच प्रणेताओं का इतिहास और इन पांच के शिष्य-समुदाय का परिचय तथा वर्णन हम पिछले पृष्ठों से जान चुके है। अब हम भगवान् महावीर-से लौंकाशाह तक की परम्परा बतलाना आवश्यक समझते हैं।

भगवान् महावीर स्वामी के पश्चात् पाटानुक्रमः-(१) श्री सुधर्मास्वामी वीर सं० ६ (२) श्री जम्बूस्वामी वीर सं० १२ (३) श्री प्रभव स्वामी वी० सं० २० (४) श्री स्वयंभव स्वामी वीर स० ७५ (५) श्री यशोभद्रस्वामी वीर सं० ६६ (६) श्री संभूति विजय वी० सं० १४८ (७) श्री भद्रबाहू स्वामी वी० सं० १५६ (८) श्री स्थूलिभद्रजी वी० स० १७० (६) श्री आर्य महागिरि वी० सं० २१५ (१०) श्री आर्य सुहस्ति अथवा बाहुल स्वामी वी० स० २४५ (११) श्री सायन स्वामी अथवा सुवन स्वामी अथवा सुप्रति वद्ध स्वामी वी० सं० २६१ (१२) श्री इन्द्रदिन्न अथवा वीर स्वामी वी० सं० ३३६ (१३) श्री सुंदिलाचार्य अथवा आर्यदिन्न स्वामी वी० सं० ४२१ (१४) श्री वैर स्वामी अथवा जीतधर स्वामी अथवा आर्य समुद्र स्वामी वी० स० ४७६ (१५) श्री वज्रसेन स्वामी अथवा मगु स्वामी वी० सं० ५८४ (१६) श्री भद्रगुप्त अथवा आर्य रोह स्वामी अथवा नदला स्वामी वी० स० ६६६ (१७) श्री वयर स्वामी अथवा फाल्गुणी मित्र अथवा नाग हस्त स्वामी (१८) श्री आर्य रक्षित अथवा धरणीधर अथवा रेवत स्वामी (१६) श्री नदिल स्वामी अथवा शिवभूति अथवा सिंहगण स्वामी (२०) श्री आर्य नाग हस्ती अथवा आर्यभद्र अथवा थंडलाचार्य (२१) श्री रेवती आचार्य अथवा हेमवंत स्वामी अथवा आर्य नक्षत्र स्वामी (२२) श्री नागजिन स्वामी अथवा सिंहाचार्य वी० स० ८२० (२३) श्री गोविन्द स्वामी अथवा सुंदिलाचार्य अथवा नागाचार्य अथवा भूत-दिन्न स्वामी (२५) श्री गोविंदाचार्य अथवा श्री छोहगण स्वामी (२५) श्री भूत दिन्नाचार्य अथवा दूषगणी (२७) श्री देवद्धिगणि क्षमा-श्रमण।

उपरोक्त सत्ताईस पाटों के नाम अलग-अलग पट्टावलियों मे लगभग एक समान ही नाम पढ़ने में आते है। भले ही उनका क्रम आगे-पीछे हो सकता है किन्तु सत्ताईसवे पाट पर श्री देवद्धिगणि क्षमा-श्रमण का नाम सब तरह की पट्टावलियों मे पाया जाता है।

पजाब की पट्टावली के अनुसार अठ्ठाईसवे पाट से आगे पाटों की परम्परा इस प्रकार हैः—

(२८) श्री वीरभद्र स्वामी (२६) श्री शंकर भद्र स्वामी (३०) श्री यशोभद्र स्वामी (३१) श्री वीरसेन स्वामी (३२) श्री वीर ग्रामसेन स्वामी (३३) श्री जिनसेन स्वामी (३४) श्री हरिसेन स्वामी (३५ श्री जयसेन स्वामी (३६) श्री जगमाल स्वामी (३७) श्री देवर्षिजी स्वामी (३८) श्री भीमऋषिजी (३६) श्री कर्मजी (४०) राजर्षिजी (४१) श्री देवसेनजी (४२) श्री शक्रसेनजी (४३) श्री लक्ष्मीलालजी (४४) श्री रामर्षिजी (४५) श्री पद्मसूरिजी (४६) श्री हरिसेनजी (४७) श्री कुशलदत्तजी (४८) श्री जीवन ऋषिजी (४६) श्री जयसेनजी (५०) श्री विजय ऋषिजी (५१) श्री देवर्षिजी (५२) श्री सूर-सेनजी (५३) श्री महासूरसेनजी (५४) श्री महासेनजी (५५) श्री जयराजजी (५६ श्री गजसेनजी (५७) श्री मिश्रसेनजी

(५८) श्री विजयसिंहजी (५९) श्री शिवराज ऋषिजी (६०) श्री लालजी (६१) श्री ज्ञान ऋषिजी। श्री ज्ञान ऋषिजी के पास लौंकाशाह के उपदेश से (६२) श्री भानुलुनाजी, भीमजी, जगमालजी तथा हरसेनजी ने दीक्षा ग्रहण की। (६३) श्री पल्जी महाराज और (६४) श्री जीवराजजी।

दरियापुरी सम्प्रदाय की पट्टावली के अनुसार २८ वे पाट से परम्परा इस प्रकार है :—

(२८) श्री आर्य ऋषिजी (२९) श्री धर्माचार्य स्वामी (३०) शिवभूति आचार्य (३१) सोमाचार्य (३२) आर्यभद्र स्वामी (३३) विष्णुचन्द्र स्वामी (३४) धर्मवर्धमानाचार्य स्वामी (३५) भूराचार्य (३६) सुदत्ताचार्य (३७) सुहस्ति आचार्य (३८) वरदत्ताचार्य (३९) सुबुद्धि आचार्य (४०) शिवदत्ताचार्य (४१) वीरदत्ताचार्य (४२) जयदत्ताचार्य (४३) जयदेवाचार्य (४४) जयघोषाचार्य (४५) वीर चक्रधराचार्य (४६) स्वातिसेनाचार्य (४७) श्रीवंताचार्य (४८) श्री सुमति आचार्य (४९) श्री लौंकाशाह जिन्होंने अपने उपदेश से ४५ भव्यात्माओं को दीक्षा दिला कर और स्वयं ने सुमति-विजयजी के पास सं० १५०९ मे पाटण में दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा-पर्याय मे आपका नाम श्री लक्ष्मी विजय मुनि था।

इस प्रकार कोई भी पट्टावली किसी भी पट्टावली से नहीं मिलती, किन्तु प्रयत्न और संशोधन किया जाय, तो निश्चित परम्परा और क्रम मिल सकता है। यदि इसके संबंध मे विस्तृत और निश्चित रूप से गवेषणात्मक अनुसधान किया जाय तो इतिहास के लिये वह सामग्री अतीव उपयोगी सिद्ध होगी।

महत्वपूर्ण-इतिहास

वीर सं० २० में	श्री जंबू स्वामी मोक्ष गये तब दस बोलों का विच्छेद हो गया।
वीर सं० १६४ मे	राजा चन्द्रगुप्त हुए।
वीर स० १७० के	(आसपास) आर्य सुहस्ति के १२ शिष्यों के ३३ गच्छ हुए।
वीर स० ४७० मे	विक्रम-संवत् शुरु हुआ।
वीर स० ६०५ मे	शालिवाहन का सवत् प्रारम्भ हुआ।
वीर सं० ६०९ में	दिगम्बर और श्वेताम्बर इस प्रकार जैन धर्मावलंबियों के दो विभाग हुए।
वीर सं० ६२० में	चन्द्र गच्छ की चार शाखायें प्रारम्भ हुई।
वीर सं० ६७० में	सांचेर मे वीर-स्वामी की प्रतिमा स्थापित हुई।
वीर सं० ८८२ में	चैत्यवास प्रारम्भ हुआ।
वीर सं० ९८० में	श्री देवढ्ढिगणि (देवर्द्धिगणि) क्षमा-श्रमण द्वारा वल्लभीपुर मे सूत्र लिपि बद्ध कराये गये।
वीर स० ९९३ में	कालिकाचार्य ने पंचमी के बदले चतुर्थी को सांवत्सरिक-प्रतिक्रमण किया।
वीर सं० १००० मे	समस्त पूर्वो का विच्छेद हो गया।
विक्रम स० ९९४ में	बड़-गच्छ की स्थापना हुई।
विक्रम सं० १०२६ मे	तक्षशिलाका-गच्छ की स्थापना हुई।
विक्रम स० ११३६ में	नवांगी टीकाकार अभयदेव सूरि हुए।
विक्रम स० ११८४ में	अचल-गच्छ की स्थापना हुई।
विक्रम सं० १२२९ में	हेमचन्द्राचार्य हुए।
विक्रम सं० १२०४ में	मूर्तिपूजक खरतर-गच्छ की स्थापना हुई।
विक्रम सं० १२१३ में	जगतचन्द्रजी के द्वारा मूर्तिपूजक तपा-गच्छ की स्थापना हुई।

विक्रम स० १ ३६ में	पुनमिया-मत स्थापित हुआ।
विक्रम सं० १२५० में	आगमिया-मत स्थापित हुआ।
विक्रम सं० १५३१ में	भस्मग्रह उतरा और श्री लौंकाशाह ने शुद्ध-धर्म का पुनरुद्धार किया। साधुओं में आई हुई शिथिलता दूर की गई।
विक्रम सं० १८१७ में	आषाढ़-शुक्ला १५ को दया-दान विरोधी तेरह-पंथ प्रारम्भ हुआ।
विक्रम सं० १९६१ में	श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स की स्थापना की गई। (ई० सन् १९०६)
विक्रम सं० १९८९ में	श्री स्थानकवासी साधु-समाज का प्रथम साधु-सम्मेलन अजमेर में हुआ और इस सम्मेलन की प्रथम बैठक चैत्र शुक्ला १० बुधवार के दिन हुई।
विक्रम सं० २००९ में	स्थानक-वासी समाज के बाईस-सम्प्रदायों के मुनिवरों का सम्मेलन वैशाख शु० ३ को सादड़ी (मारवाड़) मे प्रारम्भ हुआ और वैशाख शु० ९ को बाईस-सम्प्रदायों का एक "श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-संघ" बना और जैन-धर्म दिवाकर पूज्य श्री आत्मारामजी महाराज को आचार्य के रूप मे स्वीकृत किया गया।

नोटः—कृपया पाठक निम्न पृष्ठों पर सुधार कर पढ़ें।

१. पृष्ठ ३३ पंक्ति ८ पर—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह तया तृष्णा-निवृत्ति आदि में महावीर के समान बुद्ध की दृष्टि भी अत्यन्त गहन थी—इसके स्थान पर—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, तृष्णा-निवृत्ति आदि के लिये बुद्ध उपदेश देते थे। किन्तु उनकी दृष्टि भ० महावीर के समान गहन नहीं थी—ऐसा पढ़ें।

२. पृष्ठ ३३ पंक्ति ८ पर—ता० १२ मार्च—के साथ सन् १४९० और जोड़ कर पढ़े।

३. पृष्ठ ४० पंक्ति २३ में—ता० ११—४—१४७ के बदले सन् १४७३ पढ़ें।

४. पृष्ठ ३५ पंक्ति १७ पर—१० पूर्व का विच्छेद के बदले ४ पूर्व का विच्छेद हो गया ऐसा पढ़ें।

५. पृष्ठ ३५ पंक्ति २० पर—वीर सं० १५६ के बदले १४६ या १५० पढ़े।

तृतीय-परिच्छेद

श्री अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स का संक्षिप्त-इतिहास

श्री० श्वे० स्था० जैन कांन्फरन्स की स्थापना

हिन्दुस्तान मे जब राजकीय और सामाजिक संस्थाओं की स्थापना कर विविध संगठन स्थापित किये जा रहे थे, तब जैन-समाज के मुख्य-मुख्य फिर्कों में भी इस तरह की प्रवृत्तियां शुरु हुई और उन्होंने भी अपने अपने संगठन कायम किये। श्वेताम्बर जैनों ने मिलकर श्वेताम्बर जैन कॉन्फरन्स की स्थापना की और दिगम्बरों ने अपनी दिगम्बर जैन-महासभा की। ईस्वी सन् १६०० के आसपास इन संगठनों की शुरुआत हुई। स्थानकवासी जैन समाज के अग्रगण्य सज्जनों ने भी अपना संगठन करने का निवेदन किया और सन् १६०६ मे मोरवी (काठियावाड़) में कुछ भाइयों ने मिल कर अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स की स्थापना की। कॉन्फरन्स की स्थापना में मोरवी के प्रतिष्ठित शेठ श्री अम्बावीदासजी डोसाणी और धर्मवीर श्री दुर्लभजी भाई जौहरी का मुख्य भाग रहा और उन्हीं की प्रेरणा से कॉन्फरन्स का प्रथम अधिवेशन मोरवी में हुआ।

प्रथम-अधिवेशन, स्थान-मोरवी

कॉन्फरन्स का प्रथम अधिवेशन सन् १६०६ में ता० २६, २७, २८, फरवरी को मोरवी में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन की अध्यक्षता राय सेठ चांदमलजी अजमेर वालों ने की थी। मोरवी में यह कॉन्फरन्स का सर्व प्रथम अधिवेशन होने पर भी समाज में उत्साह की लहर फैल गई और स्थान-स्थान से समाज-प्रिय सज्जनों ने उपस्थित होकर इसमें सक्रिय-भाग लिया। इस अधिवेशन में कुल १४ प्रस्ताव पास किये गये थे—जिनमें से उल्लेखनीय प्रस्ताव निम्न है :—

प्रस्ताव १—मोरवी के महाराजा सा० सर वाघजी बहादुर जी० सी० आई० ई० ने कॉन्फरन्स का पेट्रन-पद स्वीकार किया एतदर्थ उनका आभार माना गया।

इससे स्पष्ट है कि कॉन्फरन्स के प्रति मोरवी-नरेश की पूर्ण सहानुभूति थी और मोरवी-स्टेट में स्थानकवासी जनों का कितना प्रभुत्व था!

प्रस्ताव २—दूसरी विशेषता इस अधिवेशन की यह थी कि—इस अधिवेशन का सारा खर्च मोरवी निवासी सेठ श्री अम्बावीदास भाई डोसाणी ने दिया था अतः दूसरे प्रस्ताव मे उनका आभार माना गया।

प्रस्ताव ३–जिन-जिन स्थानों पर जैन शाला हों, उन्हे भली-भाँति चलाने की, जहां न हों वहां स्थापित करने की तथा उनके लिये एक व्यवस्थित पाठ्य-क्रम (जैन-पाठावली) तैयार करने की एवं साधु-साध्वियों के लिये सिद्धान्त-शाला-की सुविधा कर देने की आवश्यक्ता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है।

प्रस्ताव ४–मे हुनर, उद्योग तथा शिक्षा पर भार दिया गया।

प्रस्ताव ५–यह कॉन्फरन्स अपने विविध-फिर्कों के भाइयों के साथ प्रेम-पूर्वक व्यवहार करने की भार पूर्वक विनती करती है।

प्रस्ताव ६–स्थानकवासी जैन जाति की डिरेक्टरी तैयार करने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है।

प्रस्ताव १०–बाल, वृद्ध-विवाह तथा कन्या-विक्रय करने का निषेध किया गया। मृत्यु-भोज में पैसे का खर्च न कर—वह रुपया शिक्षा-प्रसार में खर्च करने की भलामण की गई।

प्रस्ताव १२–मुनिराजों के सबंध मे था। उसमे सरकार से प्रार्थना की गई थी कि जैन मुनिराजों को बिना टैक्स लिये ही पुल के ऊपर से जाने दिया जाय।"

(नोट:—प्रथम मोरवी-अधिवेशन की मेनेजिग-कमेटी तथा प्रान्तिक-सेक्रेट्रियों की नामावली कॉन्फरन्स के इतिहास के अन्त मे दी जा रही है।)

द्वितीय-अधिवेशन, स्थान-रतलाम

मोरवी-अधिवेशन के दो वर्ष बाद सन् १९०८ में ता० २७, २८, २९ मार्च को रतलाम मे कॉन्फरन्स का दूसरा अधिवेशन हुआ, जिसकी अध्यक्षता अहमदाबाद निवासी सेठ केवलदास त्रिभुवनदास ने की थी।

इस अधिवेशन मे रतलाम और मोरवी के महाराजा सा० तथा शिवगढ़ के ठाकुर सा० भी पधारे थे। प्रारंभ मे कॉन्फरन्स के प्रति राजा–महाराजा की भी पूर्ण सहानुभूति थी तथा स्था० जैन-सघो की भी राज्यों मे अच्छी प्रतिष्ठा थी। जिससे राजा, महाराजा भी समय २ पर उपस्थित होकर कार्यवाही मे सक्रिय-भाग लिया करते थे—यह उपरोक्त दोनों अधिवेशनों की कार्यवाही से स्पष्ट है। इस अधिवेशन मे रतलाम के महाराजाधिराज सज्जनसिहजी बहादुर ने कॉन्फरन्स का पेट्रन पद स्वीकार किया अतः उन्हें धन्यवाद दिया गया। प्रस्ताव न. ३ और न० ४ मे मोरवी-नरेश तथा शिवगढ़ ठाकुर साहब का आभार माना गया, जिन्होंने इस अधिवेशन मे पधारने का कष्ट किया। अन्य प्रस्तावों मे से मुख्य २ प्रस्ताव ये हैं:—

गत अधिवेशन की तरह जैनियों के सभी फिर्कों मे मेल-जोल वढ़ाना, परस्पर निंदात्मक-लेख नही लिखना, जीवदया के प्रचार मे सहयोगी होना, धार्मिक-शिक्षण तथा धार्मिक पाठ्य-क्रम आदि के लिये प्रस्ताव पास किये गये।

प्रस्ताव ६–मे गत वर्ष कॉन्फरन्स मे जो फड हुआ और दाताओं ने अपनी इच्छानुसार जिन २ खातों मे रकम प्रदान की, वह रकम उन २ खातों में ही व्यय करने का तय किया गया।

प्रस्ताव १२–हर एक प्रान्त के स्था० जैन भाई अपने २ प्रान्तों की आवश्यक्ताओं की पूर्ति के लिये तथा कॉन्फरन्स के ध्येयों का प्रचार करने के लिये अपने २ प्रान्तों मे प्रान्तीय-कॉन्फरन्स भराने का प्रयत्न करें।

प्रस्ताव १३–आगामी एक वर्ष के लिये कॉन्फरन्स का हैड-ऑफिस अजमेर मे रखने का निर्णय किया गया।

प्रस्ताव १४–कॉन्फरन्स के जनरल सेक्रेट्री के स्थान पर निम्नोक्त सज्जनों की नियुक्ति की गई:—

(१) राय सेठ चांदमलजी, अजमेर (२) शेठ केवलदास त्रिभुवनदास, अहमदाबाद (३) सेठ अमरचंदजी पित्तलिया, रतलाम (४) श्री गोकलदासजी राजपाल, मोरवी (५) लाला गोकलचदजी जौहरी, देहली।

प्रस्ताव १५–प्रत्येक जगह के संघ अपने यहां हर एक घर से प्रति वर्ष चार आना वसूल करे और उस रकम की व्यवस्था कॉन्फरन्स इस प्रकार करे:–

३/४ आना हिस्सा धार्मिक-शिक्षा मे	१ आना हिस्सा	स्वधर्मी सहायता में
३/४ ,, ,, व्यवहारिक-ज्ञान मे	३/४ ,, ,,	जीव-दया मे
३/४ ,, ,, कॉन्फरन्स-निभाव में		

उक्त प्रस्ताव का अमल हर एक प्रतिनिधि तथा विजीटर अपने २ संघ मे करायेंगे ऐसी कॉन्फरन्स आशा रखती है।

अन्य प्रस्ताव धन्यवादात्मक थे–जिनमे श्री दुर्लभजी त्रिभुवनदास जौहरी को दो वर्ष तक कॉन्फरन्स की निस्वार्थ सेवा करने के लिये, श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह का अखबारी प्रचार करने के लिये तथा स्वयसेवकों का आभार माना गया था। इस अधिवेशन मे कुल २० प्रस्ताव पास हुए।

तृतीय–अधिवेशन, स्थान–अजमेर

कॉन्फरन्स का तीसरा अधिवेशन सन् १९०९ मे ता० १०, ११, १२ को अजमेर मे हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्रीमान् सेठ बालमुकन्दजी मूथा अहमदनगर वालों ने की थी।

इस अधिवेशन मे मोरवी-नरेश सर बाघजी बहादुर और लीम्बड़ी के ठाकुर सा० श्री दौलतसिहजी पधारे थे अतः उनके प्रति धन्यवाद प्रदर्शित किया गया। बड़ौदा-नरेश सर सियाजीराव गायकवाड पधार न सके थे, परन्तु उन्होंने अधिवेशन की सफलता के लिये अपनी शुभ-कामना का मार्ग-दर्शक पत्र भेजा था अतः उनके प्रति भी आभार प्रदर्शित किया गया। उक्त मार्ग-दर्शक पत्र नीचे दिया जा रहा है :—

H. H. THE GAEKWAD'S LETTER.

Laxmi Vilas Palace,
Baroda 7th March 1909.

Dear Seth Chandmal,

The desirability of such conferences.

It was with very great pleasure that I received the deputation from your Sangh led by your son, inviting me to attend the Third Swetamber Sthanakwasi Conference that meets in your City, in the middle of March. Had it not been for the pressure of important work I should have very gladly availed myself of this opportunity to join you in your deliberation and once more testify to my personal interest in the reform movement that your conference is carrying on. I recall with pleasure the Third Swetamber Conference that assembled in Baroda in the year 1904, and I followed with interest the proceedings of its next sessions in my state at Pattan, the succeeding year.

The ideal to be striven for.

2. Conferences such as yours are capable of doing much good provided they do not become completely sectarian and re-aetionary. The aim of all such conferences should be the removal of social evils that are special to the sect or community holding them, and the preparation of such community for the greater unification of the nation. Having this ideal in mind, I could even wish that there should be more conferences of a similar nature in India—Conferences that devote time and energy for the up-lifting of the illiterate, caste—ridden, and unenterprising masses from their depressed condition.

Necessity of Social Reform.

3. I have gone through the proceedings of your first two conferences, and I am glade to observe that in the short yet comprehensive programme you have very rightly given prominence to social reform and education. Some of the present customs, such as early marriage, kanya vikraya, polygamy, are a great descredit to any society. They could easily be abolished or modified by the abolishment of sub-castes, the existence of which, I learn, is against the principles and spirit of Jainism. The mere passing of resolutions will not achieve much. It is for every intelligent man among you to set his face sternly against the continuance practices in his own private and family relationship.

The root—evil of Caste.

4. But the root evil is the system of caste Caste in its present form has done more evil than good. It has limited the horizo in life of all who were bound by it. It has prohibited that free intercourse among other communities which is the soundest mode of education. It has a most disintegrating effect upon national spirit and unity. It has obscured national ideals and interests. It may have some good points, but in its present development it has proved a great enemy to reform and the conservor of ignorant superstition Your community has not the sanction (so called) of the Shastras to justify the existence of caste. The history of caste among Jains show that for centuries you struggled against its introduction and it was very recently that intercourse with other sects or communities was prohibited. For centuries you admitted among your brotherhood—for yours was a brotherhood with a common belief—people of different castes and professions, and had full intercourse with them after admission in spite of differences in social status and mode of life. Not many generations ago, Jains of all castes used to interdine and intermarry with the people of the corresponding castes among Hindus, and it is a pity that the tendency is to discourage such intercourse. During the last century castes have multiplied by scores, but there is scarcely a single instance where the contrary process has been observed. Therefore further disintegration must be stopped and the unification of the existing divisions ought to be commenced. Caste is essentially an *artificial* distinction between man and man. There are so many natural differences between men, in the way of physical, moral and intellectual endowment, that there is really no necessity for us to set up unnatural differences, to further draw them apart; The experience and example of other peoples ought to convince us that men may be trusted to find their natural level in society,

without any effort on the part of those in authority to establish artificial barriers, which only serve to choke and dam the great stream of progress. *Just as you revolted against the orthodox belief in idolatry*, you can also set aside the unmeaning distinctions of caste, at least so far as your sect is concerned. If that be done I do not conceive of any stronger evidence to justify the existance of your conference. Besides doing a great service to your community you can set a practical example for other sects to follow.

But it must be borne in mind that mere breaking of castes is not necessarily an end in itself. The narrow caste ideal must be replaced by a broader ontlook and wider sympathy for national welfare. Just as you are zealous of your caste observances, you should with a like tenacity strive to encourage national unity. The ultimate goal is the welfare of the conntry.

Education.

5. Most of the injurious social customs you will find upon close scrutiny, are the outcome of ignorance of moral, social and physical laws.

Diffuse knowledge of those laws among the people, and I am sure these pernicious growths upon the social organism will automatically disappear. You shall not then have to pass empty resolutions to unheeding and careless audiences You must therefore strain every effort for the enlightenment of the masses. Education is the surest panacea of social evils in India

Village Schools

6. It is gratifying to note in the resolutions of the last conference that you have recognised the responsibility of every local Sangha to provide proper facilities for the Education of the children of your community in their town or village. By means of a strong and sympathetic supervising staff you can see how far this duty is properly discharged. In this respect you should always try to be self—reliant and independent of external help. You must be prepared to have your own schools if necessary and impart therein instructions best suited to your requirements.

Illiteracy.

7. I dare say you have studied the last census statistics Do they not reveal a very sad and depressing situation for a practical and business community such as yours? Among the Jains of all India only 48% of the males are literate and in the Bombay Presidency 52%. Of your ladies only 1·8 P.C. are "literate" in all India, and 2% in the Bombay Presidency. No country can claim a high place in civilization when 50% of males and 98 P C. of females remain uneducated and illiterate Here is a vast field for your energies to work and achieve some substantial results.

Scholarship Funds.

8 In this connection you can organize funds for scholarships for higher education, especially for the advanced study of commerce and some of the applied Sciences. You are a

business community and it is quite proper that your sons should have training in these subjects This will do a material good to your people.

Historical research.

9. But I am sorry to miss in your programme any provision for research work in your history and Sacred books The history and tenents of your creed are hardly known to non-Jains beyond the narrow circle of a few oriental scholars It was believed for centuries by all outsiders that Jainism was an offshoot of Buddhism and its study was neglected no account of this belief And who dispelled this misunderstanding ? Not the members of your community A German scholar was required to announce to the world that Jainism was independent of Buddhism and was able to prove that your 23rd Tirthankara was not a mythological personage and that he lived as early as 700 B. C. I do not hereby means to say that there are not learned men among you I know full well that there are a good many who are well-versed in all the details of your abstruse philosophy and subtle intricacies of logic The age of blind belief is gone and the world is not going to believe in anything on mere authority, however old it may be You shall have to establish by the concrete evidence of Science and sound reasoning that your religion antedates the Vedas, if it is to be accepted by the world of scholar-ship

The Sacred books.

10. In the first place you must find out where and what your Scriptures are Most of them are buried in the archives of Pattan and Jasalmere. For centuries they have remained uncared for—the food for moth and worm. I fear some of them have already perished. It will be advantageous in the interest of your religion and its preservation to have a central collection, if the custodians are inclined to be liberal and part with them for a noble purpose They may be edited, translated and printed. Perhaps your Sadhus with the aid of some Shastries may do this You might start a few research scholarships for young men of your religion, who could be sent to Germany to be trained under Oriental Scholars in research work and higher studies, and on their return entrusted with some particular line of work.

History yet to be written.

11. The history of your religion has yet to be written—when and how it originated, how it developed, the schism between Swetambaras and Digambaras, its spread in Southern India, its influence at Court, causes of its decline. At present, there is no one book where all the principles of your religion could be had in a readable form. You can have such a comprehensive work prepared in English as well as in Vernaculars, for the information of outsiders. You can have special subjects investigated, such as origin and development of caste among Jains, effects of Hinduism upon your religion and the habits and customs of your people, effects of Jain religion upon Brahmanism and other sects, the differences among the various sects of Jainism, their origin and effect upon the community in general I am sure the result of these investigations would be to your advantage. You will be in a position to place before orthodox and conservative members of your sect an authoritative statement to guide them in

future This will make your reform movements easier and will remove the misunderstanding and ignorance that pervade our people.

Emphasis on the national ideal.

12. As I said in the beginning, in all your attempts at reform and progress do no for a moment miss the national ideal. Always remember that you form a part of that larger society which must be moulded into the Indian nation India has suffered much from disunion and apathy Unity must be your watch-word within and outside your religion

All India Jain Conference

13 I know an attempt was made to hold a combined conference of all sects of your religion, instead of holding separate ones If you have once failed in the attempt you can renew it and I am sure, some day, with better counsel prevailing, you will succeed. It seems the younger generation is willing to join and they have made a start by holding an All India Jain Conference at Surat. The ball has been set rolling and you can accelerate its motion by your help There is no inherent difficulty in the matter. All the sects have identical programmes as I find upon comparison of the resolutions of all the three Conferences

Regard for humanity.

14 Before I conclude there are one or two other matters on which, with your indulgence I may be permitted to say a few words. You know that all religions are apt to go to extremes in some particular In your care for animal and lower life you are not to forget the welfare of your fellow mortals. I know that you are alive to the necessity of rendering all possible help to your backward and poor co-religionists, but you will realise that the larger circle of humanity has better claim for sympathy and help than the lower life. Every act of mercy to the animal world is a good deed, but such good deeds are intensified in equality when done to the poor and the out-caste among human beings.

15. There are so many urgent problems to be solved in the realm of social reform that our first attention and most earnest care should be given to them There is evil of infant marriage which is the cause of puny and defective off-spring and the source of much unnecessary physical suffering The rate of mortality among infants in this country is shamefully high, and a determined effort must be made to stamp out this evil by training up nurses and midwives, and by inculcating the need of more sanitary habits, of better food, better houses and better clothing And then there are the problems of enforced widowhood, which is the source, I fear in many cases of much misery. The so-called "*Social-evil*" may not be as acute in this country as in the Western Society, yet it is a problem which all thinking men cannot afford to ignore. I shall not attempt to set forth a panacea for this evil, but merely suggest the problem to you as one that should not escape the attention of any Society that wishes to raise itself and maintain a proud and distinguished position among the nations of the world, which it cannot do unless it is prepared to cope courageously with the evils of life.

Free expression of opinion.

16. On several occasions I have observed that free discussion is not permitted in some of the Conferences. Only approved speakers are allowed to deliver set speeches. On this account it is very seldom that divergent views are placed before the audience. Perhaps you think that free discussion is not convenient in large assemblies but at least in the Committee on resolutions there should be the freest opportunity for the discussion of all points of view, radical, moderate or conservative If this is inconvenient you may have fewer subjects taken up. But no radical view should be crushed And in particular no attempt should be made to coerce the opinions of the younger and more progressive element in your Conference.

Free discussion of ideas.

17 I attach great importance to free discussion and ventilation of thought Thought is a measure of progress of a community. In India where even people's minds move in one groove and are hide-bound by usage and custom, it is highly desirable that more than usual facility should be given for the expression of new ideas. And if, under your present organization you can not permit more time for discussion, I would suggest that different speeches should be written, taken as read, and published for the good of all. Another alternative would be that people should be encouraged to write essays on different social topics, to be published under the authority of the Conferenee, and with its criticisms. Let reason be your guide rather than your mere authority.

Conclusion.

18 In conclusion I want to thank you for the kind invitation to attend your Conference, which I should be glad to do were it not for the pressure of other engagements You will pardon me for the few remarks I have made in this letter if they appear too candid. When I am called to attend your Conference, which has my hearty sympathy, I feel that I must speak out the truth as I see it, even though it may be somewhat unpalatable, my regard is for the welfare of India, and when that is concerned there should be no compromise of views.

Wishing the Conference every suecess.

I am,

Yours sincerely,

(Sd.) SAYAJI RAO GAEKWA

इस अधिवेशन में शिक्षा-प्रसार तथा बेकारी निवारण आदि २ प्रस्ताव पास किये गये जिनमें से मुख्य २ इस प्रकार हैं:—

प्रस्ताव ६—(धार्मिक शिक्षा बढ़ाने के विषय में) हिन्दुस्तान में कई स्थानों पर अपने संघों की तरफ से जैन पाठशालाएँ चल रही हैं जिन्हें देख कर कॉन्फरन्स को बड़े सन्तोष का अनुभव होता है। जहां ऐसी धार्मिक संस्थाएँ नहीं है वहाँ के अग्रगण्य सज्जनों से कॉन्फरन्स विनती करती है कि वे भी अपने यहां ऐसी संस्थाएँ शुरू करें।

जैन तत्त्वज्ञान तथा साहित्य के प्रचार के लिये और प्राचीन इतिहास-संशोधन के लिये जैन ट्रेनिंग कॉलेज, रतलाम में खोलने का जो पिछली मेनेजिंग कमेटी में प्रस्ताव पास किया गया था और उसके लिये १००) रु० मासिक की स्वीकृति दी गई थी, उसके बजाय अब २५०) रु० मासिक की स्वीकृति दी जाती है। यह रुपया धार्मिक फंड में से दिया जाएगा।

इस कार्य के लिए सेठ श्री अमरचन्दजी सा० पित्तलिया रतलाम, लाला गोकुलचंदजी नाहर दिल्ली तथा श्री सुजानमलजी बांठिया पिपलोदा निवासी की जनरल-सेक्रेट्री के रूप मे नियुक्ति की जाती है। ये जैसा उचित समझें योग्य मेम्बरों का सलाहकार बोर्ड और कार्यकारिणी-समिति का चुनाव कर सकेंगे।

प्रस्ताव ७—(व्यवहारिक-शिक्षा बढ़ाने के विषय मे)

उच्च शिक्षा के लिये बम्बई में एक बोर्डिंग-हाउस खोलने का प्रस्ताव रख कर उसके लिये मासिक १००) रु० की सहायता देने का जो प्रस्ताव पिछली मेनेजिंग कमेटी ने पास किया था, परन्तु इतनी सी रकम में निर्वाह होना कठिन होने से २५०) रु० मासिक सहायता व्यवहारिक-फंड में से देने की स्वीकृति दी जाती है।

(क) बोर्डिंग-हाउस में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को धार्मिक-शिक्षा अवश्य लेनी पड़ेगी। अध्यापकों का वेतन चार आना-फंड के अन्तर्गत ३/४ आना हिस्सा व्यवहारिक शिक्षण-फंड में से देने का पिछली मेनेजिंग कमेटी में पास किया गया था, परन्तु अब वेतन उपरोक्त सहायता में से ही देने का तय किया जाता है।

(ख) इस बोर्डिंग के सेक्रेट्री के रूप में श्री गोकुलदास राजपाल मोरवी, वकील पुरुषोत्तम मावजी राजकोट, सेठ जेसंग भाई उजमसी अहमदाबाद तथा सेठ मेघजी भाई थोभण, बम्बई की नियुक्ति की जाती हैं। ये जैसा भी उपयुक्त समझें उतने मैम्बरों की सलाहकार-समिति और कार्यवाहक-कमेटी बनाले।

प्रस्ताव ६—गत वर्ष जो मेनेजिंग-कमेटी बनाई गई थी, उसे निम्नोक्त अधिक सत्ताएँ दी गई:—

(अ) प्रति वर्ष कॉनफरन्स कहां और कैसे करना? उसकी व्यवस्था तथा प्रमुख चुनने का अधिकार। जो संघ अपने खर्च से कॉन्फरन्स भराएगा, उसे प्रमुख की नियुक्ति का अधिकार वहां की स्वागत-समिति को रहेगा, परन्तु कॉनफरन्स की जनरल-कमेटी की स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक होगा।

(ब) चार आना-फंड की व्यवस्था, चौथी कॉन्फरन्स हो वहां तक करने की सत्ता दी जाती है।

(क) कॉनफरन्स का हैड-ऑफिस कहां रखना और उसकी व्यवस्था कैसे करनी?

प्रस्ताव १०-(विरोध मिटाने के लिये) कॉन्फरन्स-फंड की वसूली मे यदि कोई विरोधी प्रयत्न करेगा तो कॉन्फरन्स उसके लिये योग्य विचार करेगी।

प्रस्ताव ११-(श्रमण-संघ को सुसंगठित करने के विषय में)

जिन २ मुनि-महाराजों की सम्प्रदाय में आचार्य नहीं है उन २ सम्प्रदायों में आचार्यों की नियुक्ति कर दो वर्ष में गच्छ की मर्यादा बांध देनी चाहिए—ऐसी सभी मुनिराजों से नम्र प्रार्थना की गई।

प्रस्ताव १२–(स्वधर्मी भाइयों का नैतिक-जीवन-स्तर उच्च बनाने के लिये)

प्रत्येक शहर या गांव के अग्रेसरों को कॉन्फरन्स ने यह सलाह दी कि अपने यहां किसी स्वधर्मी भाई में यदि नैतिक-व्यवहार से विरुद्ध कोई बड़े दोष प्रतीत हों तो उसे योग्य शिक्षा दें जिससे दूसरों को भी शिक्षा मिले।

प्रस्ताव १६–गत वर्ष जो जनरल-सेक्रेटरी नियुक्त किये गये हैं इन्हें ही चतुर्थ-अधिवेशन तक चालू रखे जायं। श्रीमान् सेठ बालमुकन्दजी मूथा, सतारा को भी जनरल-सेक्रेटरी के रूप में चुना जाता है।

प्रस्ताव १७–बी० बी० एंड सी० आई० रेलवे, आर० एस० रेलवे, नार्थ वेस्टर्न रेलवे, साउथ रोहिलखंड रेलवे, बी० जी० रेलवे, शाहदरा-सहारनपुर रेलवे आदि ने कॉन्फरन्स में आने वाले सज्जनों को कन्सेशन देने की जो सुविधा दी अतः उनका तथा बम्बई-समाचार, सांज वर्तमान एवं जैन-समाचार आदि पत्रों ने अपने रिपोर्टर भेजे अतः उनका भी आभार माना गया।

प्रस्ताव १८–इस अधिवेशन के कार्य में अजमेर के स्वयंसेवकों ने जिस उत्साह से भाग लेकर सेवा की है उसके लिये उनका आभार माना गया और अध्यक्ष श्री बालमुकन्दजी मूथा की तरफ से उनको रजत-पदक भेंट देने का निश्चय घोषित किया गया।

प्रस्ताव १९–अजमेर कॉन्फरन्स के कार्य को सफलता पूर्वक सम्पन्न कराने में अजमेर-संघ का और मुख्यतः दी० बहादुर सेठ श्री उम्मेदमलजी तथा राय सेठ श्री चांदमलजी का अन्तःकरण से आभार माना गया। राय सेठ श्री चांदमलजी ने कॉन्फरन्स का सम्पूर्ण खर्च तथा हेड-ऑफिस का कार्यभार अपने सिर पर लेकर जो महान सेवा की है उसके लिये उन्हें मान-पत्र देने का तय किया गया। इस अधिवेशन में मुख्य २२ प्रस्ताव पास हुए।

चतुर्थ-अधिवेशन, स्थान-जालंधर (पंजाब)

कॉन्फरन्स का चतुर्थ-अधिवेशन मार्च सन १९१० में ता० २७, २८, २९ को दी० बहादुर सेठ श्री उम्मेदमलजी लोढ़ा की अध्यक्षता में जालंधर (पंजाब) में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में कुल २७ प्रस्ताव पास हुए। जिनमें से मुख्य ४ प्रस्ताव ये हैं—

प्रस्ताव ३–(सरकारों में जैन-त्यौहारों की छुट्टियों के विषय में)

बम्बई सरकार ने कुछ जैन त्यौहारों की छुट्टियाँ स्वीकार करली हैं अतः कॉन्फरन्स उसका हार्दिक आभार मानती है तथा अन्य प्रान्तों की सरकारों से व भारत सरकार से भी अनुरोध करती है कि वह भी जैन त्यौहारों की छुट्टियाँ स्वीकार कर आभारी करें।

प्रस्ताव ६–(अधिवेशनों में फीस मुकर्रर करने के विषय में)

कॉन्फरन्स-अधिवेशन में भविष्य के लिये प्रतिनिधियों का शुल्क ४) रु० दर्शकों का ३) रु० बालकों का १॥) रु० (१२ वर्ष से छोटे) तथा स्त्रियों का १) रु० तय किया गया।

प्रस्ताव ७–(हिन्दी भाषा की प्रमुखता के लिये) भविष्य में कॉन्फरन्स की कार्यवाही हिन्दी-भाषा और हिन्दी लिपि में ही रखी जावे।

प्रस्ताव १०–(जीवदया के विषय में)

कई प्रसंगों पर जीवित जानवरों का भोग दिया जाता है। इसी तरह पशुओं का मांस तथा उनके अवयवों से बनी हुई वस्तुओं का प्रचार बढ़ जाने से बहुत हिंसा होती है। उसको अटकाने के लिये उपदेशकों द्वारा, लेखकों द्वारा प्रचार, तथा साहित्य द्वारा योग्य-प्रचार कराने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है।

(ब) छोटे-बड़े जानवरों के लिये पांजरापोल खोलने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। और जहां ऐसी संस्थायें है उनके कार्य को बढ़ाने की सूचना करती है।

(स) जीव-हिंसा बंद करने वाले और जीवदया के काम में प्रोत्साहन देने वाले राजा-महाराजा तथा अहिंसा के प्रचारकों को यह कॉन्फरन्स धन्यवाद देती है।

प्रस्ताव १२–(स्वधर्मियों की सहायता के विषय में)

हमारी समाज के अशक्त, निरुद्यमी और ग़रीब जैन बन्धुओं, विधवा-बहिनों और निराश्रित-बालकों की दुखी अवस्था दूर करने के लिये उन्हे औद्योगिक-कार्यो में लगाने तथा अन्य तरह से सहायता पहुँचाने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। और श्रीमन्त-भाइयों का ध्यान इस ओर केन्द्रित करने का आग्रह करती है।

प्रस्ताव १३–(रात्रि-भोजन बंद करने के विषय मे)

हमारी समाज में कई स्थानों पर तो जातीय-रात्रि-भोजन बंद ही है पर जहां बंद न हों वहां के श्री-संघ से कॉन्फरन्स अनुरोध करती है कि वे भी अपने यहां रात्रि-भोजन बंद करदें।

प्रस्ताव १४–(साधु-साध्वियों को टॉल-टैक्स से मुक्त कराने के विषय मे)

पंजाब-प्रान्त में जहां २ रेलवे पुलों पर चलने का 'टॉल-टैक्स' लगता है वहां जैन साधु-साध्वियों से ऐसे टैक्स की मांग न की जाय। इस सम्बन्ध मे जैसे अन्य रेलवे-कम्पनियों ने टैक्स माफ किये है वैसे ही पंजाब की एन० डब्ल्यू० आर० से भी अनुरोध करने के लिये एक डेप्युटेशन भेजा जावे। रेलों के पुल पर से गुज़रने की स्वीकृति के लिये पंजाब-सरकार को दरख्वास्त भेजी जावे।

प्रस्ताव १६–कॉन्फरन्स का अधिवेशन आयंदा से दिसम्बर माह में भरा जावे।

प्रस्ताव १७–(कॉन्फरन्स के प्रचार के विषय मे)

कॉन्फरन्स को सुदृढ़ बनाने के लिये तथा उसके प्रस्तावों का अमल कराने के लिये कॉन्फरन्स के अग्रगण्य-सज्जनों की एक कमेटी बनाई जाय और वह इसके लिये प्रवास करे। सुयोग्य-उपदेशकों द्वारा भी प्रचार कराया जाय।

प्रस्ताव १६–इस कॉन्फरन्स का पांचवा-अधिवेशन हो वहां तक निम्नोक्त सज्जनों को जनरल-सेक्रेट्री के पद पर नियुक्त किये जाते है:—

राय सेठ चांदमलजी रियांवाले अजमेर, दी० बहादुर सेठ उम्मेदमलजी लोढा अजमेर, सेठ बालमुकन्दजी मूथा सतारा, सेठ अमरचन्दजी पित्तलिया रतलाम, लाला गोकलचन्दजी नाहर जौहरी दिल्ली, श्री गोकलदास राजपाल महेता मोरवी तथा दीवान ब० बिशनदासजी जैन जम्मु (काश्मीर)

इस कॉन्फरन्स मे भी मोरवी-नरेश सर वाघजी बहादुर अपने युवराज श्री लखधीरजी के साथ पधारे थे। चूडा के ठाकुर सा० श्री जोरावरसिंहजी भी पधारे थे अतः इन दोनों का आभार माना गया।

कपूरथला के महाराजा सा० की तरफ से भी कॉन्फरन्स को सहायता प्राप्त हुई थी। रेलवे-कम्पनियों ने अधिवेशन मे आने वाले सज्जनों को कन्सेशन दिया एतदर्थ इनका तथा पंजाब-संघ-स्वयं-सेवकों का भी आभार माना गया। स्वयं-सेवकों को प्रमुख सा० तथा दी० ब० सेठ उम्मेदमलजी सा० की तरफ से रजत-पदक देने की घोषणा की गई।

पंचम-अधिवेशन, स्थान-सिकन्द्राबाद

कॉन्फरन्स का पांचवा अधिवेशन सन् १९१३ में ता० १२, १३, १४ अप्रैल को सिकन्द्राबाद में जलगांव निवासी सेठ लछमनदासजी मुलतानमलजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव तथा निर्णय किये गये। सभी मिला कर २१ प्रस्ताव पास हुए जिनमे से मुख्य २ निम्न हैं :—

प्रस्ताव ४ (अ)—(शास्त्रोद्धार के विषय में) जैन-शास्त्रों के संशोधन और प्रकाशन के लिये यह कॉन्फरन्स प्रयास करेगी।

शास्त्रोद्धार के लिये निम्नोक्त सज्जनों की एक कमेटी नियुक्त की जाती है :—

श्रीमन् रा० ब० ला० सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी जौहरी हैदराबाद, श्रीमान् शास्त्रज्ञ बालमुकन्दजी मूथा सतारा, श्रीमान् अमरचन्दजी पित्तलिया रतलाम, श्रीमान् केसरीचन्दजी भंडारी इन्दौर, श्रीमान् दामोदर भाई जगजीवन भाई दामनगर, श्रीमान् पोपटलाल केवलचन्द शाह राजकोट, डा० जीवराज घेलाभाई अहमदाबाद, डॉ० नागरदास मूलजी ध्रुव वढवाण-कैम्प, श्रीमान् हजारीमलजी बांठिया भीनासर तथा श्रीमान् मुलतानमलजी मेघराजजी ब्यावर। नाम बढ़ाने की सत्ता कॉन्फरन्स ऑफिस को दी जाती है।

प्रस्ताव ४ (ब)—(धार्मिक तथा व्यवहारिक-शिक्षण के विषय में)

रतलाम जैन ट्रेनिंग-कॉलेज तथा बम्बई बोर्डिंग-स्कूल की नीव मजबूत बनाने के लिये, उसके विधान मे आवश्यक परिवर्तन करने के लिये तथा ग्रान्ट बढ़ाने की जरूरत हो तो उसका निर्णय करने के लिये निम्नोक्त सज्जनों की एक सिलेक्ट कमेटी बनाई जाती है :—

श्रीमान् लछमनदासजी मुल्तानमलजी मूथा, जलगांव, श्रीमान् बालमुकन्दजी चन्दनमलजी मूथा, सतारा, श्रीमान् कुंवर छगनमलजी रियांवाले अजमेर, श्रीमान् गोकलचन्दजी राजपाल भाई मेहता, मोरवी व इन्दौर, श्रीमान् कुन्दनमलजी फिरोदिया, अहमदनगर, श्रीमान् फतहचन्दजी कपूरचन्दजी लालन, श्रीमान् कुंवर वर्धमानजी पित्तलिया, रतलाम, श्रीमान् केसरीचन्दजी भंडारी, इन्दौर, श्रीमान् वाडीलाल मोतीलाल शाह अहमदाबाद, श्रीमान् दुर्लभजी त्रिभुवन-जौहरी जयपुर व मौरवी, श्रीमान् लखमीचन्दजी खोखानी मोरवी, श्रीमान् किशनसिहजी, श्रीमान् मिश्रीमलजी बोहरा, श्रीमान् फूलचन्दजी कोठारी भोपाल, श्रीमान् बछराजजी रूपचन्दजी, श्रीमान् कुंवर मानकचन्दजी मूथा अहमदनगर तथा डॉ० धारसी भाई गुलाबचन्द, गौंडल।

प्रस्ताव ५—जिन प्रान्तों मे से चार आना-फंड ७५% नियमित प्राप्त होगा, उन प्रान्तों मे यदि बोर्डिंग खोले जायेंगे तो कॉन्फरन्स-फंड में से बोर्डिंग खर्च का एक तृतीयांश खर्च दिया जायगा। ऐसी स्थिति में वहां धार्मिक-शिक्षण अनिवार्य होना चाहिये।

प्रस्ताव ६—विद्वान् मुनि श्री जवाहरलालजी म० के सम्बन्ध में दक्षिण में जो असन्तोष फैल रहा है उसका निराकरण करने के लिये कॉन्फरन्स की सब्जेक्ट-कमेटी ने निम्नोक्त सज्जनों की एक स्पेशियल-कमे नियुक्त की:—

श्रीमान् बालमुकन्दजी मूथा सतारा, श्रीमान् लछमनदासजी मूथा जलगांव, श्रीमान गोकलदास भाई जौ मोरवी, श्रीमान् कुं० छगनमलजी रियांवाले अजमेर, श्रीमान् वर्धमानजी पित्तलिया, श्रीमान् बछराजजी रूपचन्द श्रीमान् कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्रीमान् फूलचंदजी कोठारी भोपाल, श्रीमान् नथमलजी चौरडि

नीमच, श्रीमान् वीरचंदजी सूरजमलजी, श्रीमान् शिवराजजी सुराना सिकन्द्राबाद, श्रीमान् लल्लूभाई-नारायणदास पटेल इटोला।

इस कमेटी ने ता० १३ को जो निम्नोक्त प्रस्ताव तैयार किया है उसे यह कॉन्फरन्स मान्य रखती है।

'इन्दौर के बारे में शुरुआत मे जो लेख कॉलेज-सेक्रेट्री श्री केसरीचंदजी भंडारी तथा कॉलेज के प्रिंसिपल श्री प्रीतमलाल भाई कच्छी के प्रकट हुए है उन्हे पढ़ने से, अन्य पत्रों की जांच करने से तथा हकीकत सुनने से ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों को भगाने का जो आरोप मुनि श्री मोतीलालजी म० तथा श्री जवाहरलालजी म० पर लगाया है, वह सिद्ध नहीं होता है अतः कमेटी मुनि श्री को निर्दोष ठहराती है।

प्रस्ताव ७—(बालाश्रम खोलने के विषय मे)

दक्षिण-प्रान्त मे एक जैन बालाश्रम खोला जाय जिसको कॉन्फरन्स की तरफ से मासिक १००) रु० की सहायता देने का तय किया जाता है। उस आश्रम की व्यवस्था करना और कहां खोलना इसका निर्णय निम्नोक्त सज्जनों की कमेटी करेगी :—

श्री लछमनदासजी मुलतानमलजी जलगांव, श्री बालमुकन्दजी मूथा सतारा, श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्री सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी जौहरी हैदराबाद तथा श्री बछराजजी रूपचंदजी पांचोरा।

प्रस्ताव ८—(समाज-सुधार के विषय मे)

बाल-लग्न, वृद्ध-विवाह, तथा कन्या-विक्रय, आदि हानिकारक रिवाजों को दूर करने से अपनी समाज का हित किया जा सकेगा। अतः कॉन्फरन्स आग्रह-पूर्वक अनुरोध करती है कि :—

(अ) पुत्र की उम्र कम से कम १६ वर्ष और कन्या की उम्र कम से कम ११ वर्ष की होने से पूर्व उनका विवाह नहीं किया जाय।

(ब) अधिक से अधिक ४५ वर्ष की उम्र के बाद विवाह नहीं किया जाय।

(ए) अनिवार्य कारणों के सिवाय जाति की आज्ञा लिये बिना एक स्त्री की मौजूदगी मे दूसरा विवाह नहीं किया जाय।

(ड) कन्या-विक्रय का रिवाज वन्द करने के लिये हर एक संघ के सद्गृहस्थों को ठोस प्रयत्न अवश्य करना चाहिए।

(ई) आतिशबाजी, वैश्या-नृत्य, विवाह और मृत्यु-प्रसंगों मे फिजूल खर्च बंद करना या कम करना चाहिए

प्रस्ताव ९—स्थायी ग्रांट के सिवाय अन्य सभी तरह की ग्रांट की व्यवस्था के बारे मे सभी जनरल-सेक्रेट्रियों की सलाह ली जाय और बहुमति के अनुसार ऑफिस द्वारा कार्य किया जाय।

(ब) जालंधर-कॉन्फरन्स मे प्रतिनिधि, दर्शक आदि के शुल्क के बारे मे जो प्रस्ताव पास किया गया उसमे कम-ज्यादा करने का अधिकार भविष्य मे आमंत्रण देने वाले संघ को नहीं रहेगा।

(क) कॉन्फरन्स का अधिवेशन प्रति वर्ष किया जाय। यदि किसी गांव के संघ की तरफ से आमंत्रण प्राप्त न हो तो कॉन्फरन्स के खर्च से किसी अनुकूल स्थान पर अधिवेशन भरने का निर्णय किया जाय।

(ड) कॉन्फरन्स मे आने वाले डेलिगेट (प्रतिनिधि) तथा विजीटर आदि की व्यवस्था उनके स्वयं के खर्च से की जायगी।

(ई) यह कॉन्फरन्स प्रत्येक गांव और शहर के स्वधर्मी-भाइयों से आग्रह पूर्वक भलामण करती है कि वे चार आना-फंड मे अपनी सहायता भेजे। सहायक-मंडल के मैम्बर बन कर और धर्मार्थ-पेटी मंगाकर शक्ति अनुसार कॉन्फरन्स को सहायता पहुँचावें।

पंचम-अधिवेशन, स्थान-सिकन्द्राबाद

कॉन्फरन्स का पांचवा अधिवेशन सन् १९१३ में ता० १२, १३, १४ अप्रैल को सिकन्द्राबाद जलगांव निवासी सेठ लछमनदासजी मुलतानमलजी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन मे कई महत्व प्रस्ताव तथा निर्णय किये गये। सभी मिला कर २१ प्रस्ताव पास हुए जिनमें से मुख्य २ निम्न हैं:—

प्रस्ताव ४ (अ)—(शास्त्रोद्धार के विषय में) जैन-शास्त्रों के संशोधन और प्रकाशन के लिये यह कॉन्फरन्स प्रय करेगी।

शास्त्रोद्धार के लिये निम्नोक्त सज्जनों की एक कमेटी नियुक्त की जाती है:—

श्रीमन् रा० ब० ला० सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी जौहरी हैदराबाद, श्रीमान् शास्त्रज्ञ बालमुकन्द मूथा सतारा, श्रीमान् अमरचन्दजी पित्तलिया रतलाम, श्रीमान् केसरीचन्दजी भंडारी इन्दौर, श्रीमान् दामो भाई जगजीवन भाई दामनगर, श्रीमान् पोपटलाल केवलचन्द शाह राजकोट, डा० जीवराज घेलाभाई अहमदाबा डॉ० नागरदास मूलजी ध्रुव वढवाण-कैम्प, श्रीमान् हजारीमलजी बांठिया भीनासर तथा श्रीमान् मुलतानमल मेघराजजी ब्यावर। नाम बढ़ाने की सत्ता कॉन्फरन्स ऑफिस को दी जाती है।

प्रस्ताव ४ (ब)—(धार्मिक तथा व्यवहारिक-शिक्षण के विषय में)

रतलाम जैन ट्रेनिंग-कॉलेज तथा बम्बई बोर्डिंग-स्कूल की नींव मजबूत बनाने के लिये, उस विधान में आवश्यक परिवर्तन करने के लिये तथा ग्रान्ट बढ़ाने की जरूरत हो तो उसका निर्णय करने के लि निम्नोक्त सज्जनों की एक सिलेक्ट कमेटी बनाई जाती है:—

श्रीमान् लछमनदासजी मुल्तानमलजी मूथा, जलगांव, श्रीमान् बालमुकन्दजी चन्दनमलजी मूथ सतारा, श्रीमान् कुंवर छगनमलजी रियांवाले अजमेर, श्रीमान् गोकलचन्दजी राजपाल भाई मेहता, मोर व इन्दौर, श्रीमान् कुन्दनमलजी फिरोदिया, अहमदनगर, श्रीमान् फतहचन्दजी कपूरचन्दजी लाल श्रीमान् कुंवर वर्धमानजी पित्तलिया, रतलाम, श्रीमान् केसरीचन्दजी भंडारी, इन्दौर, श्रीमान् वाडीला मोतीलाल शाह अहमदाबाद, श्रीमान् दुर्लभजी त्रिभुवन-जौहरी जयपुर व मौरवी, श्रीमान् लखमीचन्दजी खोरवा मोरवी, श्रीमान् किशनसिंहजी, श्रीमान् मिश्रीमलजी बोहरा, श्रीमान् फूलचन्दजी कोठारी भोपाल, श्रीमान् बछराज रूपचन्दजी, श्रीमान् कुंवर मानकचन्दजी मूथा अहमदनगर तथा डॉ० धारसी भाई गुलाबचन्द, गौंडल।

प्रस्ताव ५—जिन प्रान्तों में से चार आना-फंड ७५% नियमित प्राप्त होगा, उन प्रान्तों मे यदि बोर्डिंग खोले जायेंगे तो कॉन्फरन्स-फंड मे से बोर्डिंग खर्च का एक तृतीयांश खर्च दिया जायगा। ऐसी स्थिति वहां धार्मिक-शिक्षण अनिवार्य होना चाहिये।

प्रस्ताव ६—विद्वान् मुनि श्री जवाहरलालजी म० के सम्बन्ध मे दक्षिण में जो असन्तोष फैल रहा है उसका निराकरण करने के लिये कॉन्फरन्स की सब्जेक्ट-कमेटी ने निम्नोक्त सज्जनों की एक स्पेशियल-कमेटी नियुक्त की:—

श्रीमान् बालमुकन्दजी मूथा सतारा, श्रीमान् लछमनदासजी मूथा जलगांव, श्रीमान् गोकलदास भाई जौहरी मोरवी, श्रीमान् कुं० छगनमलजी रियांवाले अजमेर, श्रीमान् वर्धमानजी पित्तलिया, श्रीमान् बछराजजी रूपचन्दजी श्रीमान् कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्रीमान् फूलचंदजी कोठारी भोपाल, श्रीमान् नथमलजी चौरडिया

नीमच, श्रीमान् वीरचदजी सूरजमलजी, श्रीमान् शिवराजजी सुराना सिकन्द्राबाद, श्रीमान् लल्लूभाई-नारायणदास पटेल इटोला।

इस कमेटी ने ता० १३ को जो निम्नोक्त प्रस्ताव तैयार किया है उसे यह कॉन्फरन्स मान्य रखती है।

'इन्दौर के बारे में शुरुआत मे जो लेख कॉलेज-सेक्रेट्री श्री केसरीचंदजी भंडारी तथा कॉलेज के प्रिंसिपल श्री प्रीतमलाल भाई कच्छी के प्रकट हुए हैं उन्हे पढ़ने से, अन्य पत्रों की जांच करने से तथा हकीकत सुनने से ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों को भगाने का जो आरोप मुनि श्री मोतीलालजी म० तथा श्री जवाहरलालजी म० पर लगाया है, वह सिद्ध नहीं होता है अतः कमेटी मुनि श्री को निर्दोष ठहराती है।

प्रस्ताव ७—(बालाश्रम खोलने के विषय मे)

दक्षिण-प्रान्त मे एक जैन बालाश्रम खोला जाय जिसको कॉन्फरन्स की तरफ से मासिक १००) रु० की सहायता देने का तय किया जाता है। उस आश्रम की व्यवस्था करना और कहां खोलना इसका निर्णय निम्नोक्त सज्जनों की कमेटी करेगी :—

श्री लछमनदासजी मुल्तानमलजी जलगांव, श्री बालमुकन्दजी मूथा सतारा, श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्री सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी जौहरी हैदराबाद तथा श्री बछराजजी रूपचंदजी पांचोरा।

प्रस्ताव ८—(समाज-सुधार के विषय मे)

बाल-लग्न, वृद्ध-विवाह, तथा कन्या-विक्रय, आदि हानिकारक रिवाजों को दूर करने से अपनी समाज का हित किया जा सकेगा। अतः कॉन्फरन्स आग्रह-पूर्वक अनुरोध करती है कि :—

(अ) पुत्र की उम्र कम से कम १६ वर्ष और कन्या की उम्र कम से कम ११ वर्ष की होने से पूर्व उनका विवाह नहीं किया जाय।

(ब) अधिक से अधिक ४५ वर्ष की उम्र के बाद विवाह नहीं किया जाय।

(ए) अनिवार्य कारणों के सिवाय जाति की आज्ञा लिये विना एक स्त्री की मौजूदगी मे दूसरा विवाह नहीं किया जाय।

(ड) कन्या-विक्रय का रिवाज बन्द करने के लिये हर एक संघ के सद्गृहस्थों को ठोस प्रयत्न अवश्य करना चाहिए।

(ई) आतिशबाजी, वेश्या-नृत्य, विवाह और मृत्यु-प्रसगों मे फिजूल खर्च बंद करना या कम करना चाहिए

प्रस्ताव ९—स्थायी ग्रांट के सिवाय अन्य सभी तरह की ग्रांट की व्यवस्था के बारे मे सभी जनरल-सेक्रेट्रियों की सलाह ली जाय और बहुमति के अनुसार ऑफिस द्वारा कार्य किया जाय।

(ब) जालधर-कॉन्फरन्स मे प्रतिनिधि, दर्शक आदि के शुल्क के बारे मे जो प्रस्ताव पास किया गया उसमे कम-ज्यादा करने का अधिकार भविष्य मे आमन्त्रण देने वाले सघ को नहीं रहेगा।

(क) कॉन्फरन्स का अधिवेशन प्रति वर्ष किया जाय। यदि किसी गांव के संघ की तरफ से आमंत्रण प्राप्त न हो तो कॉन्फरन्स के खर्च से किसी अनुकूल स्थान पर अधिवेशन भरने का निर्णय किया जाय।

(ड) कॉन्फरन्स मे आने वाले डेलिगेट (प्रतिनिधि) तथा विजीटर आदि की व्यवस्था उनके स्वयं के खर्च से की जायगी।

(ई) यह कॉन्फरन्स प्रत्येक गांव और शहर के स्वधर्मी-भाइयों से आग्रह पूर्वक भलामण करती है कि वे चार आना-फंड मे अपनी सहायता भेजें। सहायक-मंडल के मेम्बर बन कर और धर्मार्थ-पेटी मंगाकर शक्ति अनुसार कॉन्फरन्स को सहायता पहुँचावें।

प्रस्ताव १२—(संवत्सरी-पर्व एक साथ मनाने के विषय में)

अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी जैन भाई एक ही दिन सम्वत्सरी-पर्व का आराधन करें यह आवश्यक है। इस बारे मे भिन्न २ सम्प्रदायों के मुनि-महात्माओं और श्रावकों के साथ पत्र-व्यवहार द्वारा योग्य निर्णय कर लेने की सूचना कॉन्फरन्स हैड-ऑफिस को करती है।

प्रस्ताव १३—(दीक्षा में दखल न करने के बारे में जोधपुर-स्टेट से निवेदन)

हाल ही में जोधपुर स्टेट में ऐसा क़ानून लागू हुआ है कि २१ वर्ष से कम उम्र के व्यक्ति को साधु न बनाना यानि दीक्षा नहीं देना और मारवाड़ मे जितने भी साधु हैं उनका नाम सरकारी रजिस्टर मे लिखा जा चाहिये—ये दोनों ही बाते जैन-शास्त्रों के फरमान से विरुद्ध है। अतः यह कॉन्फरन्स नम्रता-पूर्वक जोधपुर स्टेट निवेदन करती है कि यह धर्म से सम्बन्धित बात है और धर्म के बारे मे ब्रिटिश-सरकार भी जब एतराज़ न करती है तो जोधपुर-स्टेट को भी महरबानी कर जैन साधुओं को उक्त कानून से मुक्त कर देना चाहिये। ऐ उक्त प्रस्ताव कॉन्फरन्स-ऑफिस द्वारा जोधपुर-स्टेट की सेवा में योग्य आज्ञा मगवाने के लिए भेजा जाय।

प्रस्ताव १४—(योग्य-दीक्षा के विषय में)

यह कॉन्फरन्स हिन्दुस्तान के समस्त स्था० जैन श्री-संघों को सूचना करती है कि जिस वैरागी को दी देनी हो, उसकी योग्यता आदि की पूरी २ जांच स्थानीय-संघ को कर लेनी चाहिये। यदि ५० घरों की संख्या ग में न हो तो पास के दूसरे गांव के ५० घरों की लिखित सम्मति प्राप्त किये बाद ही दीक्षा दिलानी चाहिये।

निम्न प्रान्तों के निम्नोक्त सज्जन मंत्री नियुक्त किये जाते हैं:-

श्री कुंदनमलजी फिरोदिया अहमदनगर (दक्षिण), श्री मोतीलालजी पित्तलिया अहमदनगर (दक्षिण) श्री वीरचंदजी चौधरी, इच्छावर (सी० पी०), श्री गुमानमलजी सुराना बुरहानपुर (सी० पी०)। श्री केसरीमल गुगलिया धामनगांव (बरार), श्री मोहनलालजी हरकचंदजी आकोला (बरार)। श्री राजमलजी ललवानी जामने (खानदेश), श्री रतनचंदजी दोलतरामजी बाघली (खानदेश)। श्री मगनलालजी नागरदास बकील लींबड़ी (झालावाड़ श्री दुर्लभजी केशवजी खेतानी बम्बई (बम्बई), श्री जगजीवन दयालजी घाटकोपर (बम्बई)। श्री उमरशी कानजी भा देशलपुर (कच्छ)। श्री आनंदराजजी सुराना जोधपुर (मारवाड़), श्री विजयमलजी कुंभट (जोधपुर)। श्री सिरेमल लालचंदजी गुलेजगढ़ (कर्नाटक)।

प्रांतीय-मंत्रियों को यह अधिकार दिया जाता है कि वे अपने २ क्षेत्र की एक कमेटी बना लें और 'चा आना-फंड धर्माथ-पेटी' की रकम अपने २ प्रांतों से वसूल कर के ऑफिस को भेज दें। इस फंड की व्यवस्था पू निर्णयानुसार अलग २ फंडों में की जायगी। (प्रमुख सा० की ओर से

प्रस्ताव ३—(बम्बई मे कॉन्फरन्स-ऑफिस रखने के विषय में)

कॉन्फरन्स-ऑफिस आगामी दो साल के लिए सं० १९८२ की कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा से बम्बई मे रहे और 'जैन-प्रकाश' पत्र भी बम्बई से ही प्रकट किया जाय। ऑफिस की वर्किंग-कमेटी में सेठ श्री मेघजी भाई थोभण जे० पी० प्रेसिडेन्ट, सेठ श्री वेलजीभाई लखमशी तथा जौहरी सूरजमल लल्लूभाई को जॉइन्ट सेक्रेट्री नियत किये जाते हैं। उपरोक्त तीनों सज्जनो ने बम्बई जैसे केन्द्र-स्थान में ऑफिस को ले जाने का जो सेवा-भाव दिख लाया है उसके लिये कॉन्फरन्स हार्दिक धन्यवाद देती है। प्र० श्री मोतीलालजी मूथा। अनु० श्री वरधमानजी पित्तलिया, श्री सरदारमलजी भंडारी।

प्रस्ताव १४—(जैन ट्रेनिंग कॉलेज खोलने के बारे में)

सभ्य कही जाने वाली सारी दुनिया का ध्यान आजकल अहिंसा की ओर आकर्षित हुआ है। ऐसे समय में यह आवश्यक है कि अहिंसा का सर्वदेशीय-स्वरूप बतलाने वाला जैन तत्वज्ञान का शिक्षण ठीक पद्धति से प्राप्त हो सके, अतः एक जैन ट्रेनिग कॉलेज खोलने का निश्चय किया जाता है और उसके लिये स्थान आदि के बारे में योग्य निर्णय करने का अधिकार निम्नोक्त सदस्यों की इस समिति को दिया जाता है :—

श्री प्रमुख सा० मेघजी भाई J. P. बम्बई, श्री लजीभाई वेलखमसी बम्बई, श्री सूरजमल लल्लुभाई जौहरी बम्बई, श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह बम्बई, श्री दुर्लभजी भाई त्रिभुवन जौहरी जयपुर, श्री नथमलजी चौरडिया नीमच, श्री वर्धमानजी पित्तलिया रतलाम, श्री मोतीलालजी कोटेचा मलकापुर, श्री चिमनलाल पोपटलाल शाह घाटकोपर, श्री कुंदनमलजी फिरोदिया अहमदनगर तथा श्री लक्ष्मणदासजी मुल्तानमलजी जलगांव। प्रस्तावक—श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह। अनु० वर्धमानजी पित्तलिया, दुर्लभजी भाई जौहरी तथा पद्मसिंहजी जैन।

प्रस्ताव १५—(जैन फिर्कों के साथ भ्रातृ-भाव बढ़ाने के विषय में)

यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है कि जैन-धर्म की उन्नति के लिए भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के साथ परस्पर भ्रातृ-भाव और प्रेम-पूर्ण व्यवहार की नितान्त आवश्यकता है। अतः प्रत्येक गांव और शहर के संघों को सूचना करनी है कि वे अपने क्षेत्र के क्लेश दूर कर शांति और प्रेम बढ़ाने का प्रयत्न करें। जैनों के तीनों फिर्कों में ऐक्य की स्थापना के लिए प्रत्येक सम्प्रदाय के २५-२५ गृहस्थों का एक सम्मेलन हो। ऐसा यदि प्रसंग आवे तो अपनी तरफ से द्रव्य और श्रम का सहयोग भी दिया जाय ऐसी कॉन्फरन्स अपनी इच्छा प्रकट करती है।

प्रस्ताव १६—(जीव दया के विषय में)

(अ) निराधार-जानवरों की रक्षा करने के लिए जिन २ स्थानों पर पांजरापोल हों उनकी अधिक उन्नति करने के लिए तथा जिन २ स्थानों पर पांजरापोल न हों वहां स्थापित करने के लिए यह कॉन्फरन्स प्रत्येक-संघ को भलामण करती है।

(ब) यह कॉन्फरन्स जिन-जिन वस्तुओं की बनावट में जीव-हिंसा होती है उन-उन वस्तुओं का उपयोग नहीं करने की भलामण करती है।

(क) अन्य धर्मावलंबियों में भोजन के निमित्त या देवी-देवताओं के नाम पर जो जीव-हिंसा होती है उसे पैम्फ्लेटों और उपदेशकों द्वारा बंद कराने का प्रयत्न किया जाय।

प्रस्ताव १७—इस कॉन्फरन्स का छठा अधिवेशन न हो वहां तक निम्नोक्त सज्जनों की जनरल-सेक्रेट्री के रूप में नियुक्ति की जाती है :—

श्री सेठ चांदमलजी रियांवाले अजमेर, दी० व० उम्मेदमलजी लोढा अजमेर, श्री वालमुकन्दजी मूथा सतारा, श्री अमरचंदजी पित्तलिया रतलाम, श्री गोकलचंदजी नाहर दिल्ली, श्री गोकलदास राजपाल मेहता मोरवी, दी० व० श्री० विशनदासजी जैन जम्मु, श्री लछमनदासजी मुलतानमलजी जलगांव तथा ला० सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी हैदराबाद।

इस कॉन्फरन्स में सेवा देने वाले स्वयं सेवकों को श्री नथमलजी चौरडिया और सभापति श्री लछमनदासजी मुल्तानमलजी की तरफ से पदक भेंट दिये गये।

षष्ठम-अधिवेशन, स्थान-मलकापुर

कॉन्फरन्स का छठा अधिवेशन बारह वर्ष बाद मलकापुर में सन् १६२५ में ता० ७-८-६ जून को हुआ
जिसकी अध्यक्षता श्रीमान् सेठ मेघजी थोभण जे० पी० बम्बई ने की। स्वागताध्यक्ष श्री मोतीलालजी कोटेचा,
मलकापुर निवासी थे। इस अधिवेशन मे कुल २७ प्रस्ताव पास किये गये जिनमें से निम्न मुख्य २ हैं:—

प्रस्ताव २—(प्रान्तों के विषय में) समस्त भारतवर्ष के निम्नोक्त विभाग किये जाते हैं:—

१ पंजाब २ मारवाड़ ३ मेवाड़ ४ मालवा ५ सयुक्तप्रांत ७ मध्यभारत ७ मध्यप्रदेश ८ उत्तर गुजरात
६ दक्षिण गुजरात १० हालार ११ झालावाड़ १२ गोहिलवाड़ १३ सोरठ १४ कच्छ १५ दक्षिण १६ खानदेश
१७ बरार १८ बंगाल १६ निजाम हैदराबाद २० मद्रास २१ बम्बई २२ सिंध और २३ कर्णाटक।

निम्नोक्त प्रांतों के निम्नोक्त सज्जन मंत्री नियुक्त किये जाते है :—

(दक्षिण) (१) श्री कुंदनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, (२) श्री मोतीलालजी पित्तलिया अहमदनगर, (सी०पी०)
—(१) श्री पीरचंदजी चौधरी इच्छावर,(२) श्री गुमानमलजी सुराना बुरहानपुर, (बरार)—(१) श्री केसरीमलजी गुगलिया
धामनगांव, (२) श्री मोहनलालजी हरकचंदजी आकोला, (खानदेश)—(१) श्री राजमलजी ललवानी जामनेर, (२)
श्री रतनचंदजी दोलतरामजी बाघली, (झालावाड)—(१) श्री मगनलालजी नागरदासजी वकील लींबड़ी, (बम्बई)—(१)
श्री दुर्लभजी केशवजी खेताणी बम्बई, (२) श्री जगजीवन दयालजी घाटकोपर, (कच्छ)—(१) श्री उमरशी कानजी भाई
देशलपुर, (मारवाड़)—(१) श्री आनदराजजी सुराना जोधपुर, (२) श्री विजयमलजी कुंभट जोधपुर, (कर्नाटक)—(१)
श्री सिरेमलजी लालचंदजी गुलेजगढ़।

प्रांतीय-मंत्रियों को यह अधिकार दिया जाता है कि वे अपने २ क्षेत्र की एक कमेटी बनालें और 'चार
आना फंड' धर्मार्थ-पेटी की रकम अपने २ प्रांत से वसूल कर ऑफिस को भेज दें। इस फंड की व्यवस्था पूर्व
निर्णयानुसार अलग २ फंडों में की जायगी। (प्रमुख सा० की ओर से)

प्रस्ताव ३—(बम्बई मे कॉन्फरन्स-ऑफिस रखने के विषय मे)

कॉन्फरन्स-ऑफिस आगामी दो साल के लिये सं० १६८२ की कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा से बम्बई मे
रहे और प्रकाश-पत्र भी बम्बई से ही प्रकट किया जाय। ऑफिस की वर्किंग-कमेटी मे सेठ श्री मेघजीभाई थोभण
जे० पी० प्रेसिडेन्ट, और सेठ श्री वेलजीभाई लखमशी तथा जौहरी सूरजमल लल्लुभाई को जॉइन्ट-सेक्रेट्री नियत
किये जाते हैं। उपरोक्त तीनों सज्जनों ने बम्बई जैसे केन्द्र स्थान में ऑफिस को ले जाने का जो सेवा-भाव दिखलाया
है उसके लिये कॉन्फरन्स हार्दिक धन्यवाद देता है। प्रस्तावक मोतीलालजी मूथा। अनु० श्री वर्धमानजी पित्तलिया,
श्री सरदारमलजी भंडारी।

प्रस्ताव ४—(जैन ट्रेनिंग कॉलेज खोलने के बारे मे)

सभ्य कही जाने वाली सारी दुनिया का ध्यान आजकल अहिंसा की ओर आकर्षित हुआ है। ऐसे
समय मे यह आवश्यक है कि अहिंसा का सर्वदेशीय-स्वरूप बतलाने वाला जैन तत्वज्ञान का शिक्षण ठीक पद्धति से
प्राप्त हो सके, अतः एक जैन ट्रेनिंग कॉलेज खोलने का निश्चय किया जाता है और उसके लिए स्थान आदि के
बारे मे योग्य निर्णय करने का अधिकार निम्नोक्त सदस्यों की समिति को दिया जाता है।

प्रमुख सा० श्री मेघजी भाई थोभण बम्बई, श्री वेलजी भाई लखमसी बम्बई, श्री सूरजमल लल्लुभाई
जौहरी बम्बई, श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह बम्बई, श्री दुर्लभजी भाई त्रिभुवन जौहरी जयपुर, श्री नथमलजी चौरडिया

नीमच, श्री वर्धमानजी पित्तलिया रतलाम, श्री मोतीलालजी कोटेचा मलकापुर, श्री चिमनलाल पोपटलाल शाह घाटकोपर, श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्री लक्ष्मणदासजी मुल्तानमलजी जलगांव,

प्रस्तावक—श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह, श्री वर्धमानजी पित्तलिया, श्री दुर्लभजीभाई जौहरी, श्री पद्मसिंहजी जैन

प्रस्ताव ५—(हानिकारक रिवाजों को त्यागने के विषय मे)

जैन समाज मे से बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, कन्या-विक्रय, एक स्त्री होते हुए दूसरी स्त्री (शादी) करना, मद्य-सेवन, वैश्या-नृत्य कराना आदि हानिकारक रिवाजों को दूर करने की व लग्न तथा मृत्यु-प्रसंग पर फिजूल खर्ची कम कर सन्मार्ग में व्यय करने की प्रत्येक श्री-संघ के शिश करे।

प्रस्तावक—श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया। अनु० श्री राजमलजी ललवानी, श्री अमरचंदजी पुगलिया।

प्रस्ताव ६– (जनरल-सेक्रेट्री का चुनाव)

निम्नोक्त सद्‌गृहस्थों को जनरल-सेक्रेटरी के पद पर नियुक्त किये जाते है:—

सेठ श्री मेघजी भाई थोभण जे० पी० वम्बई, सेठ श्री लक्ष्मणदासजी मुल्तानमलजी जलगांव, सेठ श्री मगनमलजी रियाँवाले अजमेर, सेठ श्री वर्धभानजी पित्तलिया रतलाम, सेठ श्री मोतीलालजी मूथा सतारा, सेठ श्री ज्वालाप्रसादजी जौहरी हैदराबाद, सेठ श्री गोकलचंदजी नाहर दिल्ली, सेठ श्री सूरजमल लल्लुभाई जौहरी वम्बई, सेठ श्री वेलजीभाई लखमशी नप्पु वम्बई, सेठ श्री केशरीमलजी गूगलिया धाणक, सेठ श्री मोतीलालजी कोटेचा मलकापुर।

प्रस्ताव ९—(जीव-हिंसा बंद कराने वालों को धन्यवाद)

माहियर-राज्य में शारदा देवी पर होता हुआ पशु-वध हमेशा के लिये बंद कर दिया, इसके लिये यह कॉन्फरन्स माहियर-महाराजा सा० व दीवान हीरालाल भाई अजारिया और सेठ श्री मेघजी भाई थोभण को धन्यवाद देती है। (प्रमुख सा० की तरफ से)

प्रस्ताव १०—(अनाथ वालकों के लिये) अनाथ वालकों के उद्धार के लिये आगरा मे जैन-अनाथालय खोला गया है उसके प्रति इस कॉन्फरन्स की सहानुभूति है। (प्रमुख सा० की तरफ से)

प्रस्ताव ११–श्रीमान् दानवीर सेठ नाथूलालजी गोदावत छोटी सादड़ी वालों ने सवा लाख रु० की बड़ी रकम निकाल कर, 'श्री स्थानकवासी सेठ नाथूलालजी गोदावत जैन गुरुकुल' और जैन-पाठशाला खोली हैं और बीकानेर वाले सेठ अगरचंदजी भैरोंदानजी सेठिया ने जैन-शास्त्रोद्धार, कन्याशाला, पाठशाला, लायब्रेरी, आदि संस्थाएं करीब दो लाख रुपयों की उदारता से खोली हैं अतः यह कॉन्फरन्स इन दोनों महाशयों को धन्यवाद देती है। (प्रमुख सभा की तरफ से)

प्रस्ताव १३—(श्री सुखदेवसहाय प्रिन्टिंग-प्रेस का स्थानान्तर इन्दौर मे)

कॉन्फरन्स-ऑफिस का सुखदेवसहाय जैन प्रिंटिंग-प्रेस को सब सामान के साथ श्रीयुत् सरदारमलजी भंडारी की देख रेख मे सं० १९८२ की कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा के पहले-पहले इन्दौर भेज दिया जाय। इसमे जब तक अर्धमागधी-कोष के तीनों भाग छप न जायं वहां तक वहीं छापते रहें। इसके खर्च के लिये मासिक रु० २५०) तक श्रीयुत् सरदारमलजी भंडारी को दिये जायं। पुस्तक छप जाने पर प्रेस इन्दौर मे रखना या दूसरी जगह,

यह ऑफिस की इच्छा पर रहेगा। कोष छप जाने का काम अधिक से अधिक दो वर्ष में पूरा हो जाना चाहिए। पुस्तकों की मालिकी कॉन्फरन्स की रहेगी। अजमेर से इन्दौर प्रेस पहुँचाने का तथा फिट करने का जो खर्च होगा वह ऑफिस की तरफ से दिया जायगा। मंत्री तरीके श्री सरदारमलजी भंडारी को नियत किये जाते हैं और वर्किंग कमेटी इन्दौर में बनाली जायगी।

प्रस्ताव २४—(खादी प्रचार के विषय मे)

जैन धर्म के मूल आधारभूत अहिंसा-धर्म को ख्याल मे रखकर यह कॉन्फरन्स सभी स्थानकवासी भाई-बहिनों से अनुरोध करती है कि वे शुद्ध-खादी का व्यवहार करे। अन्य प्रस्ताव, शोक प्रस्ताव व धन्यवादात्मक थे।

पगार फंड—इस अधिवेशन में जैन ट्रेनिंग कॉलेज-फंड के लिए अपील की गई थी फलस्वरूप १२ हजार रुपयों का फंड हुआ था।

मलकापुर-अधिवेशन टिकिट-शुल्क की आय से ही पूर्ण सफल हो गया, यह इस अधिवेशन की विशेषता थी। आम जनता खर्च के भय से भी अधिवेशन कराने में घबराती थी। लेकिन इस अधिवेशन मे यह बतला दिया कि डेलीगेट, विजीटर और स्वागत समिति के सदस्यों की फीस से ही अधिवेशन जैसा महान् कार्य किया जा सकता है और आमंत्रण देने वालों को यश और सफलता प्राप्त हो सकती है।

सप्तम-अधिवेशन, स्थान-बम्बई

कॉन्फरन्स का सातवां अधिवेशन बम्बई मे दानवीर सेठ श्री भैरोंदानजी सेठिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। स्वागत-प्रमुख सेठ श्री मेघजी भाई थोभण बम्बई थे। इस अधिवेशन में कुल ३२ प्रस्ताव पास किये गये जो पिछले सभी अधिवेशनों से संख्या की दृष्टि से अधिक थे। मुख्य-मुख्य प्रस्ताव इस प्रकार है :-

प्रस्ताव १—(स्वामी श्रद्धानन्दजी के खून के प्रति दुःख प्रकाशन)

अपने देश के प्रसिद्ध नेता और कर्म-वीर स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज का एक धर्मान्ध मुसलमान द्वारा खून हुआ है उसे यह सभा महान राष्ट्रीय हानि समझ कर अत्यंत खेद तथा खूनी के प्रति तिरस्कार प्रकट करती है।

प्रस्ताव नं० १—(प्रान्तीय-शाखाओं के विषय मे)

कॉन्फरन्स का प्रचार-कार्य योग्य पद्धति से तथा व्यवस्थित रुप से चले इसके लिये प्रत्येक प्रांत मे एक-एक ऑनेररी प्रान्तीय-मंत्री की नियुक्ति की जाती है।

(ब) प्रत्येक प्रान्तीय-मंत्री को उनकी सूचनानुसार एक वैतनिक-सहायक रखने की छूट दी जाती है। उसके खर्च के लिये ऑफिस की तरफ से आधी सहायता दी जायगी और यह सहायता २०) रू० मासिक से अधिक नही होगी। शेष खर्च के लिये प्रान्तीय मंत्री स्वयं प्रबन्ध करे। उस प्रान्त मे से एकत्रित हुए रुपया फंड मे से कॉन्फरन्स के नियमानुसार जो रकम उस प्रान्त को दी जायगी, उसका उपरोक्त खर्च में उपयोग करने का अधिकार रहेगा।

(क) जिन सज्जनों ने प्रांतीय-मंत्री बनना स्वीकार किया है और भविष्य मे भी जो बनने को तैयार हैं उनमें से ऑफिस प्रांतीय-सेक्रेट्री का चुनाव करें।

प्रस्ताव ३—(वीर-संघ स्थापना के विषय में)

श्री श्वे०स्था० जैन समाज के हित के लिये अपना जीवन समर्पण करने वाले सज्जनों का एक वीर-संघ स्थापित करने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है । इसके लिये आवश्यक नियमोपनियम बनाने के लिये निम्नोक्त सज्जनों की एक कमेटी बनाई जाती है। यह कमेटी ३ मास के अन्दर अपनी रिपोर्ट कार्य कारिणी समिति को सौंप दे ।

सेठ श्री भैरोंदानजी सेठिया बीकानेर, सेठ श्री सूरजमल लल्लुभाई जौहरी बम्बई, सेठ श्री वेलजी-लखमशी नप्पु बम्बई, सेठ श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, सेठ श्री अमृतलालभाई दल्पतभाई रायपुर, सेठ श्री राजमलजी ललवानी जामनेर, सेठ श्री चिमनलाल चक्कुभाई शाह बम्बई ।

प्रस्ताव ४—(संवत्सरी की एकता के विषय मे)

समस्त स्थानकवासी-समाज में संवत्सरी-पर्व एक ही दिन मनाया जाय, यह आवश्यक है । इसके लिये निम्नोक्त सज्जनों की एक कमेटी नियत की जाती है। वे सज्जन अपनी-अपनी संप्रदाय का पक्ष न करते हुए पूर्ण विचार विनिमय द्वारा संवत्सरी के लिये एक दिन निश्चित करें, तदनुसार समस्त संघ संवत्सरी पाले । सभी मुनि-महाराजों से भी प्रार्थना है कि वे इस प्रस्ताव को कार्य रूप में परिणत करने के लिये उपदेश दें और स्वयं भी इसे कार्य रूप मे परिणत करे ।

कमेटी के मैम्बर:-श्री सेठ चन्दनमलजी मूथा, सतारा, श्री सेठ किशनदासजी मूथा, अहमदनगर, श्री ताराचन्दजी बांठिया, जामनगर, श्री देवीदासजी लक्ष्मीचंदजी घेवरिया, पोरबंदर ।

प्रस्ताव ६—(विविध-प्रवृत्तियों की आवश्यकता के विषय मे)

अपनी समाज को सुसंगठित करने के लिये प्रत्येक गांव और शहर मे मित्र-मंडल, भजन-मंडली, व्यापार शाला और स्वय-सेवक-मंडलों की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। और हर एक गांव के आगेवानों से ऐसे मंडल शीघ्र स्थापित करने का आग्रह करती है।

प्रस्ताव ७—(जाति-बहिष्कार के विरोध मे)

किसी भी स्थान के पंच छोटे-छोटे दोषों के लिये किसी व्यक्ति या परिवार का जन्म भर के लिये जाति बहिष्कार नहीं करे ऐसा यह कॉन्फरन्स उनसे आग्रह करती है।

प्रस्ताव ८—(शिक्षण-प्रचार के सम्बन्ध मे)

यह कॉन्फरन्स प्रत्येक प्रकार की शिक्षा के साथ-साथ आवश्यक धार्मिक-शिक्षण रख कर एक 'स्थानकवासी जैन शिक्षा-प्रचार-विभाग' की स्थापना करती है । वह निम्नोक्त कार्य करने का अधिकार जनरल-कमेटी को देती है ।

(१) गुरुकुल जैसी संस्था स्थापित करने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती हैं। और जनरल-कमेटी को सूचना करती है कि फंड की अनुकूलता होते ही गुरुकुल खोल दिये जायें ।

(२) जहां-जहां कॉलेज हों वहां-वहां उच्च-शिक्षण लेने वाले विद्यार्थियों के लिये छात्रालय खोलना और स्कॉलरशिप देने की व्यवस्था करना ।

(३) उच्च-शिक्षण प्राप्त करने के लिये भारतवर्ष से बाहर जाने वाले विद्यार्थियों को 'लोन' के रूप में छात्रवृति भी देना और कॉलेजियन-छात्रों को कला-कौशल, शिल्प और विज्ञान की उच्च-शिक्षा प्राप्त करने के लिये छात्रवृति देना ।

(४) प्रौढ़ अध्यापक तथा अध्यापिकाएं तैयार करना। (५) स्त्री-शिक्षण के लिये स्त्री-समाजों की स्थापना करना। (६) जैन ज्ञान-प्रचारक-मंडल द्वारा निश्चित की गई योजना को कार्य में परिणत करना और जैन-साहित्य का प्रचार करना।

(७) हिन्दी तथा गुजराती दोनों विभागों के लिये अलग अलग सैन्ट्रल-लायब्रेरी स्थापित करना तथा पब्लिक लायब्रेरियों में जैन-साहित्य की अलमारियां (कपाट) रखना

इसके बाद सेठ मेघजीभाई थोभणभाई ने खड़े होकर कहा कि:- "पूना की आबोहवा अच्छी है, शिक्षा के साधन भी प्रचुर है तथा खर्च भी कम आवेगा अतः पूना मे उच्च शिक्षण लेने वाले विद्यार्थियों के लिये एक बोर्डिंग खोली जाय। इसके लिये निम्न सज्जनों की एक कमेटी वनाई गई जिसके हाथ मे बोर्डिंग संबंधी पूरी सत्ता रहेगी।

सेठ सुरजमल लल्लुभाई जौहरी बम्बई, सेठ वेलजी लखमसी नप्पु बम्बई, सेठ वृजलाल खीमचन्द शाह सोलीसीटर बम्बई, सेठ मोतीलालजी मूथा सतारा, सेठ कुदंनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, सेठ मेघजी भाई थोभण भाई जे० पी० बम्बई।

इस प्रस्ताव का सेठ सूरजमल लल्लु भाई जौहरी तथा अन्य सज्जनों के अनुमोदन करने से जयजिनेन्द्र की ध्वनि के बीच इसके लिये फंड की शुरुआत की गई और उसी समय अच्छा फंड भी हो गया।

प्रस्ताव ६—(सादड़ी के स्था० भाइयो के विषय में)

जैन धर्म के तीनों सम्प्रदायों मे ऐक्य और प्रेम-भाव उत्पन्न करने का समय आ गया है और इसके लिये तीनों सम्प्रदायों मे प्रयत्न भी शुरु हो रहे हैं। ऐसी स्थिति मे घाणेराव-सादड़ी के स्थानकवासी भाइयों के प्रति वहां के मन्दिरमार्गी भाइयों की तरफ से जो अन्याय हो रहा है, वह सर्वथा अयोग्य है। ऐसा समझ कर यह कॉन्फरन्स श्वे० जैन कॉन्फरन्स और उसके कार्य-कर्ताओं को सूचित करती है कि वे इस संबंध मे शीघ्र ही योग्य व्यवस्था कर सादड़ी-स्थानकवासी भाइयों पर जो अन्याय हो रहा है उसे दूर करें और परस्पर मे प्रेम बढावें।

यह कॉन्फरन्स मारवाड़, मेवाड़, मालवा और राजपूताना के स्वधर्मी-बंधुओं को सूचित करती है कि वे अपने सादड़ी निवासी स्वधर्मी-बंधुओं के साथ जाति नियमानुसार बेटी-व्यवहार कर सहायता करें। इस प्रस्ताव को सफल करने के लिये कॉन्फरन्स-ऑफिस व्यवस्था करे।

प्रस्ताव १०—(शत्रुंजय-तीर्थ के टैक्स के विरोध में सहानुभूति)

समस्त भारतवर्ष के स्था० जैनों की यह परिषद श्री शत्रुंजय-तीर्थ संबंधी उपस्थित हुई परिस्थिति पर अपना आन्तरिक दुख प्रकट करती है और पालीताणा के महाराजा तथा एजेंट टु दी गवर्नर-जनरल के निर्णय के विरुद्ध अपना विरोध प्रकट करती है। आशा है ब्रिटिश सरकार इस विषय मे श्वेताम्बर-बंधुओं का अवश्य न्याय करेगी। मुख्यतः पालीताणा-नरेश से यह परिषद ऐसी आशा करती है कि श्वेताम्बर-बंधुओं की धार्मिक-भावना और हक को मान लेने की उदारता प्रकट करेगी।

प्रस्ताव १२—(महिला-परिषद के विषय में)

कॉन्फरन्स-अधिवेशन के साथ २ 'महिला-परिषद' का अधिवेशन भी अवश्य होना चाहिये। यह महिला परिषद कॉन्फरन्स की एक संस्था है अतः उसका ऑफिस-व्यय कॉन्फरन्स दे।

प्रस्ताव १६–(जोधपुर-नरेश को धन्यवाद ! मादा-पशुओं की निकास-बंदी और संवत्सरी को जीव-हिंसा बंदी के लिये)

महाराजाधिराज जोधपुर-नरेश ने अपनी स्टेट में मादा-पशुओं का निकास हमेशा के लिये बंद कर दिया है और जैनियों की प्रार्थना स्वीकार कर सम्वत्सरी के दिन जीव-हिंसा बंद रख कर उस दिन छुट्टी रखने का हुक्म फरमाया है। और इसके लिये परिषद धन्यवाद देती है। और आशा करती है कि वे भविष्य में भी ऐसे पुण्य-कर्म में योग देते रहेंगे। इस प्रस्ताव की नकल महाराजा जोधपुर-नरेश की सेवा में तार द्वारा भेजी जाय।

प्रस्ताव १७—(श्राविकाश्रम की आवश्यकता के विषय में)

यह परिषद् श्राविकाश्रम की आवश्यकता स्वीकार करती है और बम्बई में श्राविकाश्रम स्थापित कर या अन्य चालू संस्था के साथ चलाने के लिये प्रमुख सा० ने जो १०००) रु० प्रदान किये है, उसमें सहायता देने के लिये अन्य भाई-बहिनों से आग्रह-पूर्वक अनुरोध करती है। साथ ही दूसरी संस्था को साथ २ चलाने में धर्म संबंधी कोई बाधा उपस्थित न हो इसका पूरा ध्यान रखने को सूचित करती है।

मारवाड़ के लिये बीकानेर में सेठियाजी द्वारा स्थापित श्राविकाश्रम का लाभ लेने के लिये मारवाड़ी बहिनों का ध्यान आकर्षित किया जाता है और इस उदारता के लिये सेठियाजी को हार्दिक धन्यवाद देती है।

प्रस्ताव १८—(गौ-रक्षा व पशु-रक्षा के विषय में)

यह परिषद् बम्बई सरकार से प्रार्थना करती है कि गौ-वध तथा दूध देने वाले और खेती के लायक उपयोगी पशुओं का वध बंद करने का प्रबंध करे। बम्बई-कौन्सिल के सभी सदस्यों से आग्रह-पूर्वक निवेदन करती है कि वे इसको सफल बनाने का योग्य प्रयास करें।

प्रस्ताव १९—(जैन-गणना के विषय मे)

भारतवर्ष के समस्त स्थानकवासियों की डिरेक्टरी कॉन्फरन्स के खर्च से प्रति दस वर्ष में तैयार की जाय। प्रथम डिरेक्टरी कॉन्फरन्स की तरफ से चालू वर्ष मे की जावे।

प्रस्ताव २०—(वेजीटेवल-घी के बहिष्कार के विषय में)

यह कॉन्फरन्स प्रस्ताव करती है कि वर्तमान में भारतवर्ष में अधिक परिमाण में वेजीटेवल-घी के प्रचार से देश के दुधारु और खेती के उपयोगी पशुओं को हानि पहुंचने की संभावना है। इस वेजीटेवल घी में चरबी का मिश्रण होता है और स्वास्थ्य सुधारक-तत्त्व उसमें बिल्कुल नहीं होने से उससे धार्मिक-क्षति के साथ २ स्वास्थ्य की भी हानि होती है। अतः यह परिषद प्रस्ताव करती है कि अहिंसा और आरोग्य को लक्ष्य में रख कर वेजीटेवल-घी का सर्वथा बहिष्कार किया जाय और उसके प्रचार में किसी भी तरह का उत्तेजन न दिया जाय।

प्रस्ताव २१—(बर्मा के बौद्धों का मांसाहार रोकने के विषय मे)

बर्मा प्रांत में रहने वाली बर्मन-जनता अपने बौद्ध-सिद्धान्त के विरुद्ध मांसाहार कर रही है। अतः यह कॉन्फरन्स प्रस्ताव करती है कि अच्छे उपदेशकों को भेज कर बर्मा मे मांसाहार रोकने का प्रयत्न किया जाय।

प्रस्ताव २२—(तीनों जैन फिर्कों की कॉन्फरन्स बुलाने के विषय में)

समाज के साथ संबंध रखने वाले अनेक सामान्य प्रश्न समाज के सामने आते हैं। इन प्रश्नों का निराकरण करने के लिये तथा जैनियों के तीनों फिर्कों में परस्पर सद्भाव उत्पन्न करने के

लिये यह परिषद तीनों सम्प्रदायों की एक संयुक्त-कॉन्फरन्स की आवश्यकता स्वीकार करती है और यह प्रवृत्ति शुरु करने के लिये सभी फिर्कों के आगेवान-नेताओं की एक कमेटी बुलाने के लिये कॉन्फरन्स-ऑफिस को सत्ता देती है।

प्रस्ताव २३—(साधु-सम्मेलन की आवश्यकता के विषय में)

भारत के समस्त स्था० जैन साधु-मुनिराजों का सम्मेलन यथा शीघ्र भरने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। इसके लिये कॉन्फरन्स ऑफिस को योग्य प्रबंध करने की सूचना दी जाती है।

प्रस्ताव २४—(चार आने के स्थान पर १) रुपया फंड के लिये)

कॉन्फरन्स ने जो चार आना फंड स्थापित किया है, उसके बजाय अब से प्रत्येक घर से १) रु० प्रति वर्ष लेने का तय किया जाता है। प्रतिनिधि वही हो सकेगा जिसने वार्षिक १) रु० दिया होगा।

प्रस्ताव २८—(गुरुकुल प्रारंभ करने के विषय में)

ब्रह्मचर्याश्रम अथवा गुरुकुल को अपनी समाज की बड़ी जरूरत है। उससे हम सच्चे सेवक पैदा कर सकेंगे । कॉन्फरन्स यदि ऐसी स्वतंत्रत-संस्था के लिये आवश्यक सहायता नहीं दे सकती हो तो जैन ट्रेनिंग कॉलेज के साथ ही यह काम चलाया जाय। कॉलेज को मिलने वाले ग्रांट (सहायता) से ३ वर्ष तक हम कार्य चला सकेंगे—ऐसी योजना की जा सकती है। इस संबंध में निर्णय करने की सत्ता निम्नोक्त सदस्यों की कमेटी को दी जाती है। वे यथाशीघ्र अपना अभिप्राय प्रकट करें।

श्रीयुत सेठ भैरोंदानजी सेठिया बीकानेर, श्रीयुत सेठ वर्धमानजी पित्तलिया रतलाम, श्रीयुत सेठ दुर्लभजी भाई जौहरी जयपुर, श्रीयुत सेठ आनंदराजजी सुराणा जोधपुर, श्रीयुत बाबू हुक्मीचदंजी उदयपुर, श्रीयुत सेठ धूनमचदंजी खींवसरा, ब्यावर श्रीयुत सेठ मगनमलजी कोचेटा भॅवाल। शेष प्रस्ताव धन्यवादात्मक थे।

इस अधिवेशन के साथ स्था० जैन महिला-परिषद का भी आयोजन किया गया था ,जिसमें श्री आनंदकुंवर बाई (धर्मपत्नी सेठ वर्धमानजी पित्तलिया, रतलाम) आदि के भाषण हुए थे।

महिला-समाज के लिये कई उपयोगी तथा प्रगतिशील प्रस्ताव भी पास किये गये थे। शिक्षा-प्रसार गृहोद्योग, पर्दा-प्रथा का परित्याग तथा मृत्यु के बाद शोक रखने की प्रथा आदि को समाप्त करने के प्रस्ताव पास हुए थे।

अष्टम-अधिवेशन, स्थान-बीकानेर (राज०)

कॉन्फरन्स का आठवां-अधिवेशन सन् १६२७ मे ता० ६, ७, ८ अक्टूबर को श्रीमान् भिलापचदंजी वेद (झांसी वाले) के खर्च से बीकानेर में सम्पन्न हुआ। जिसकी अध्यक्षता जैन धर्म के प्रखर विचारक श्रीयुत वाडीलाल मोतीलाल शाह ने की। इस अधिवेशन के स्वागत-प्रमुख श्रीमान् भिलापचदंजी वेद बीकानेर थे । इस अधिवेशन में लगभग ४ हज़ार प्रतिनिधि और प्रेक्षकों की उपस्थिति थी। महिलाऐं भी काफी संख्या मे उपस्थित हुई थीं। इस अधिवेशन की सफलता के लिये देश के गण्यमान नेताओं तथा संस्थाओं, महात्मा गांधीजी, लाला लाजपतराय, श्वे० मूर्ति पू० कॉन्फरन्स, पं० अर्जुनलालजी सेठी अजमेर, बाबू चम्तपरायजी जैन बेरिस्टर, श्री ए० बी० लट्ठे दीवान कोल्हापुर, सेठ बिडलाजी,

बम्बई, श्रीयुत अंबालाल भाई सारा भाई अहमदाबाद, श्री नानालाल भाई दलपतराय कवि, ब्रह्मचारी शीतल प्रसादजी आदि के शुभ-संदेश प्राप्त हुए थे।

इस अधिवेशन में कुल २७ प्रस्ताव पास किये गये जिनमें से मुख्य-मुख्य इस प्रकार हैं:—

प्रस्ताव १-(जैन समाज की अखंड-एकता के लिये)

जैन-समाज की उज्ज्वलता और जैन समाज की रक्षा तथा प्रगति के लिये यह कॉन्फरन्स चाहती है कि भिन्न २ जैन-सम्प्रदायों के त्यागी तथा गृहस्थ-उपदेशकों, नेताओं तथा पत्रकारों में आजकल जो धार्मिक प्रेम के रूप में खोटा (झूठा) दिखावा दिखाई देता है उसे दूर करने के लिये पूर्ण सावधानी रखी जाय। जैन तत्व-ज्ञान, व्यवहारिक शिक्षण, समाज सुधार और स्वदेश सेवा से सम्बन्धित सभी काम सभी सम्प्रदायों के संयुक्त बल से किये जायं। इसके लिये बम्बई कॉन्फरन्स के समय जो प्रस्ताव नं० १२ पास किया गया था उसका शीघ्र अमल होना यह कॉन्फरन्स चाहती है।

प्रस्ताव २-(सार्वजनिक-जीवदया-खाता, घाटकोपर की प्रशंसा)

दुधारू गाय भैंसों तथा उनके बच्चों को कसाई-खाने में जाने से बचाकर उनकी परम रक्षा का जो महान कार्य घाटकोपर सार्वजनिक-जीवदया खाता कर रहा है उसकी यह कॉन्फरन्स प्रशसा करती है और सभी सघों से तथा ट्रस्टियों से भलामण करती है कि वे इस संस्था की तन, मन और धन से योग्य मदद करें।

प्रस्ताव ३—कॉन्फरन्स के विधान मे संशोधन करने के लिये निम्नोक्त सज्जनों की एक कमेटी बनाई जाती है। यह कमेटी अपने बनाये हुए विधान को जनरल-कमेटी के सभ्यों को पोस्ट द्वारा भेजकर उनकी राय मालूम करे और योग्य प्रतीत हो तो तदनुसार सुधार कर नया विधान छपा कर प्रकट करे।

सभापतिजी, रेज़ीडेन्ट जनरल-सेक्रेट्री, श्री मेघजीभाई थोभण बम्बई, श्री सूरजमल लल्लुभाई जौहरी, श्री कुदंनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्री नगीनदासभाई अमुलखराय घाटकोपर, श्री अमृतलाल रायचंद भाई जौहरी बम्बई।

प्रस्ताव ६-(जैन शिक्षक बनाने के संबंध मे)

जैनशाला, तथा धार्मिक-ज्ञान के साथ २ प्राथमिक-शिक्षण देने वाली अपनी जैन स्कूलों के लिये जैन शिक्षकों की कमी न रहे इसके लिये जहां-जहां सरकार तथा देशी-राज्यों की तरफ से ट्रेनिंग कॉलेज चलते हों वहां २ के जैन स्कॉलरों को जैनधर्म संबंधी शिक्षा देने की तथा उनकी वापिस परिक्षा लेने की व्यवस्था के साथ-साथ उनको छात्रवृत्ति भी दी जाय।

प्रस्ताव १०-('जैन-प्रकाश' की व्यवस्था के संबंध में)

यह कॉन्फरन्स आग्रह करती है कि धर्म,संघ और कॉन्फरन्स के हितार्थ जैन-प्रकाश की व्यवस्था अब से सभापतिजी अपने हाथ मे रखें और इसकी हिंदी तथा गुजराती दोनों भिन्न २ आवृत्ति निकालें।

प्रस्ताव १२-(जैन धर्मानुयायियों मे रोटी-बेटी का व्यवहार चालू करने के संबंध मे)

उच्च-कोटि की जातियों मे से जो व्यक्ति खुले रूप मे जैनधर्म स्वीकार करें उसके साथ रोटी-बेटी का व्यवहार करना जैनियों का कर्तव्य है, ऐसा यह कॉन्फरन्स तय करती है।

प्रस्ताव १३-(बोर्डिंग को सहायता देने के बारे में)

जेतपुर(कठियावाड़) में स्था० जैन विद्यार्थियों के लिये एक बोर्डिंग-हाउस खोल दिया जाय तो उसके लिये

पांच वर्ष तक ७५)रु मासिक किराये वाला अपना मकान विना किराये के देना और मासिक २५) रु० की आय करा लेना तथा ५० गद्दे अपनी तरफ से बोर्डिंग को भेट देना-ऐसे वचन जेतपुर निवासी भाई-जीवराज देवचंद दलाल की तरफ से प्राप्त हुए थे। अतः इस पर से कॉन्फरन्स यह ठहराती है कि उपरोक्त व्यवस्थानुसार संस्था शुरु हो तब से पाँच वर्ष तक संस्था को व्यवहारिक शिक्षण-फंड में से मासिक ५०) रु० की सहायता दी जाय। संस्था में धार्मिक-शिक्षण का प्रबंध रखना आवश्यक होगा।

इसी तरह के प्रस्ताव जयपुर और ओसिया (मारवाड) के आस-पास भी बोर्डिंग खुलने पर कॉन्फरन्स की तरफ से ५०) रु० की सहायता देने के किये गये।

प्रस्ताव २०—मेसर्स अमृतलाल रायचंद जौहरी, श्री जेठालाल संघवी, श्री मोतीलालजी मूथा तथा श्री जीवराज देवचंद की एक कमेटी बनाई जाती है। यह कमेटी हिंद के किसी भी भाग में से अपंग जैनों, विधवाओं और अनाथ बालकों को ढूंढ कर उनकी रक्षा के लिये स्थापित की हुई संस्थाओं मे उन्हें पहुँचायेगी और शक्य हुआ तो उन्हें वहां से स्वधर्म संबंधी ज्ञान भी मिलता रहे, ऐसा प्रबंध भी करावेगी। इस कार्य के लिये निराश्रित फंड मे से ५०) की रकम श्रीयुत अमृतलाल रायचंद जौहरी को सौंप दी जाय।

प्रस्ताव २५ (सादडी प्रकरण के संबंध मे)

(अ) मारवाड़, मेवाड़ तथा मालवा के स्थानकवासी-भाइयों से यह कॉन्फरन्स आग्रह पूर्वक भलामण करती है कि घाणेराव सादड़ी के स्वधर्मी-भाइयों को धर्म के लिये जिस कठिनाई का सामना करना पड़ा है उसका ख्याल करके उनके साथ प्रेम से कन्या-व्यवहार करे।

(ब) गोडवाड़-प्रांत के श्वेताम्बर मूर्ति-पूजक तथा स्थानकवासी जैनों के बीच सैकड़ों वर्षो से लग्न-व्यवहार होने पर भी कुछ धार्मिक झगड़ों को निमित्तभूत बना कर सामाजिक-ऐक्य में जो विघ्न डाला गया है उसे दूर करने के लिये तथा सामाजिक व्यवहार के बीच मे नहीं पड़ने की मुनि-महाराजों से प्रार्थना करने के लिये श्वेताम्बर मूर्तिपूजक कॉन्फरन्स-ऑफिस को यह कॉन्फरन्स समस्त जैन-समाज के हित के लिये आग्रह पूर्वक भलामण करती है।

(क) इस प्रस्ताव को क्रियान्वित करने के लिये आवश्यक-कार्यवाही करने की सत्ता सभापतिजी को दी जाती है।

प्रस्ताव २६—(सादगी धारण करने वाली विधवा बहिनों को धन्यवाद)

श्रीमती केशरबेनजी (सुपुत्री श्री नथमल चौरड़िया), श्रीमती आशीबाई, (सुपुत्री श्री गणपतदासजी पूंगलिया), श्रीमती जीवाबाई (सुपुत्री श्री चतुर्भुजजी बोरा) आदि विधवा बहिनों ने गहने तथा रंगीन-वस्त्र पहनने का त्याग कर हाथ से कती और बुनी हुई खादी के वस्त्र पहनने की जो प्रतिज्ञा धारण की है उसके लिये यह कॉन्फरन्स उनको धन्यवाद देती है और अन्य विधवा-बहिनों को उनका अनुसरण करने की भलामण करती है। शेष प्रस्ताव धन्यवादात्मक थे।

नवम-अधिवेशन, स्थान-अजमेर

कॉन्फरन्स का नवमां अधिवेशन साढ़े पांच वर्ष बाद अजमेर मे ता० २२, २३, २४, २५ अप्रैल सन् १९३३ को सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्रीयुत हेमचंदभाई रामजीभाई महेता, भावनगर ने की। इस अधिवेशन के स्वागत-प्रमुख राजा बहादुर ज्वालाप्रसादजी थे। यह अधिवेशन विगत अधिवेशनों से अधिक महत्त्वपूर्ण था। विगत

अधिवेशनों में सभी प्रस्ताव भलामण के रूप में ही मुख्यतः हुए थे, परन्तु इस अधिवेशन के प्रस्तावों में स्पष्ट निर्देश दिया गया था। इतना तो मानना ही पड़ेगा कि अजमेर-अधिवेशन स्था० जैन समाज में क्रांति की चिनगारी प्रकट करने वाला था। श्री बृहत्साधु-सम्मेलन के साथ २ यह अधिवेशन होने से ४०-४५ हजार की उपस्थिति इस समय थी। अधिवेशन के लिये खास लौंकाशाह नगर बसाया गया था। यह अधिवेशन अभूत पूर्व था। इस अधिवेशन में आभार प्रस्तावों को छोड़ कर २५ प्रस्ताव पास किये गये थे, जिन में से मुख्य-मुख्य ये हैं:-

प्रस्ताव २-(जेल-निवासी श्री पूनमचंदजी रांका के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने के लिये)

इस कॉन्फरन्स को श्री पूनमचंदजी रांका नागपुर वाले जैसे धार्मिक-नेता की आज की अनुपस्थिति से खेद है। उनके ता० ४ मार्च से लिए गए अनशन व्रत के लिये चिन्ता है। उन्हें खंडवा की गरम-जेल में भेजे गये हैं अतः यह कॉन्फरन्स सरकार से प्रार्थना करती है कि उनकी मांगों को स्वीकार करले अथवा उनको जेल से शीघ्र मुक्त कर दे।

प्रस्याव ३- (धार्मिक संस्थाओं की सगठित व्यवस्था के विषय मे)

यह कॉन्फरन्स प्रस्ताव करती है कि हिन्दुस्तान मे स्था० जैनों की जहां २ धार्मिक और व्यवहारिक संस्थाएं चलती है या जो नई शुरू हों उन संस्थाओं की तरफ से शिक्षण-क्रम, पाठ्य-पुस्तकें, फड, बालक बालिकाओं की संख्या आदि आवश्यक विवरण मंगा कर एकत्रित किया जाय और शिक्षण-परिषद के प्रस्ताव पर ध्यान देते हुए अब क्या कार्य करने योग्य है इस पर सलाहकार और परीक्षक-समिति जैसा पूरा काम करने के लिये एक बोर्ड नियत किया जाय। इस बोर्ड मे हर एक प्रांत की तरफ से एक-एक मेम्बर की नियुक्ति की जाय और सभी शिक्षण-संस्थाएं मिल कर अपने पांच सभ्यों को इस बोर्ड मे भेजें।

प्रस्ताव ४ - (वीर-संघ के विषय मे)

श्री श्वे० स्थानकवासी समाज के हित के लिये स्वयं अपना जीवन-समर्पण करने वाले सज्जनों का वीर-संघ और त्यागी-वर्ग (ब्रह्मचारी-वर्ग) स्थापित करने की आवश्यकता को यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। इसके लिये कौन २ से साधनों की आवश्यकता है, उनको किस प्रकार एकत्रित करना, किन २ सेवकों की कैसी योग्यता होनी चाहिये, संघ का क्रम और उसके नियमोपनियम क्या है इत्यादि हर एक विषय का निर्णय करने के लिये निम्नोक्त भाइयों की एक कमेटी नियुक्त की जाती है। उक्त दोनों वर्गो द्वारा जैनधर्म का प्रचार भी किया जायगा अतः इस संबंध मे आज से तीन मास के अंदर यह कमेटी अपनी स्कीम तैयार करके 'प्रकाश' में प्रकट करे और जनरल-कमेटी में पेश करे। इस संबंध मे जो कोई सूचनाएं करनी हों वे कमेटी के मंत्रीजी को देवें। कमेटी के सभ्यों के नाम नीचे मूजब हैं:-

प्रमुख श्री और मंत्री श्री चिमनलाल पोपटलाल शाह बम्बई, श्री वेलजी भाई लखमशी नप्पु बम्बई, श्री मोती-लालजी मूथा सतारा, श्री जेरालालभाई रामजीभाई बम्बई, श्री अमृतलाल रायचद जौहरी बम्बई, ला० जगन्नाथजी जैन खार, डॉ० बृजलालजी डी० मेघाणी बम्बई, तथा श्री दुर्लभजीभाई जौहरी जयपुर।

इस कमेटी का कोरम चार का होगा। मंत्री पद पर श्री चिमनलाल चक्कुभाई शाह रहेंगे।

प्रस्ताव ५- (जैन-फिर्कों की एकता के विषय मे)

जैनों के सभी फिर्कों में परस्पर प्रेम बढ़ाने से जैनधर्म प्रगति पाकर आगे बढ़ सकता है। ऐसा यह कॉन्फरन्स मानती है और इसलिये प्रस्ताव करती है कि जैनियों के अन्य फिर्कों को उनकी कॉन्फरन्स द्वारा प्रेम

बढ़ाने यथा मतभेद भूल कर ऐक्य-साधन से जो-जो कार्य संयुक्त-चल से हो सकें वे सभी कार्य करने की विनती करें। यह प्रवृत्ति कॉन्फरन्स ऑफिस करेगा।

प्रस्ताव ६—(सादड़ी के स्थानकवासी-जैनों के विषय में)

एकता के इस युग में सादड़ी के स्थानकवासी भाइयों का जो अठारह वर्ष से श्वे० मूर्तिपूजक भाइयों ने बहिष्कार किया है इस विषय में बम्बई कॉन्फरन्स के प्रस्तावानुसार श्वे० मूर्तिपूजक कॉन्फरन्स को इस कॉन्फरन्स की तरफ से पत्र दिया गया था, लेकिन उसने मौन ही रक्खा इसलिये यह कॉन्फरन्स उसके इस व्यवहार पर अत्यन्त असंतोष प्रकट करती है और उससे पुनः विनती करती है कि वह इस बहिष्कार को दूर करने का भगीरथ प्रयत्न करे और एकता संबंधी अपनी कॉन्फरन्स में किये हुए प्रस्तावों का सच्चा परिचय दे।

नोट—यह कॉन्फरन्स खुशी से यह नोंध करती है कि श्रीयुत गुलाबचंदजी ढ्ढा की सूचनानुसार सादड़ी के दोनों पक्षों का समाधान करने के लिये दोनों पक्षों के चार-चार और एक मध्यस्थ—इस प्रकार नौ सभ्यों की एक पंच-कमेटी नियत कर जो निर्णय आवे वह दोनों पक्षों को मान्य रखने का ठहराया जाता है। अपनी तरफ से चार नाम निम्न लिखित है :—

श्री दुर्लभजीभाई जौहरी जयपुर, श्री नथमलजी चौरडिया नीमच, दी० ब० श्री मोतीलालजी मूथा सतारा, तथा श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर। मध्यस्थ – पं० प्यारेकिशनजी झाबुआ दीवान।

मूर्तिपूजक-जैनों की तरफ के चार नाम श्री गुलाबचदंजी ढढ्ढा से लेकर कॉन्फरन्स-ऑफिस भिजवा दिए जाएं जिससे कार्यारंभ हो सके।

प्रस्ताव ७—(खादी और स्वदेशी-प्रेम बढ़ाने के विषय में)

अहिंसा-धर्म के कट्टर उपासको को चर्बी वाले और रेशमी कपड़े त्याज्य होने चाहिये। बिना चर्बी का स्वदेशी तथा हाथ का कता-बुना शुद्ध कपड़ा काम मे लाने से स्वदेश-सेवा का भाव भी प्रकट होता है। इस लिये यह कॉन्फरन्स सभी को शुद्ध कपड़े और स्वदेशी चीज़ काम मे लाने का आग्रह करती है।

प्रस्ताव ८—(साधु-सम्मेलन कार्यवाही-योजना की स्वीकृति)

साधु-सम्मेलन के लिये दूर २ प्रांतों से बहुत कष्ट उठा कर जो २ मुनिराज यहां पधारे है उनका यह सभा उपकार मानती है। साधु-सम्मेलन का कार्य अत्यन्त दुःसाध्य और कष्टमय होते हुए भी मुनिराजों ने १५ दिनों मे परिश्रमपूर्वक पूरा किया है। इस सम्मेलन मे मुनि-महाराजों ने जो योजना बनाई है, वह इस सभा को मजूर है। पूज्य श्री जवाहरलालजी म० ने जो जाहिर निवेदन का नोट दिया वह ऑफिस मे रख लिया गया है। पूज्य श्री जवाहरलालजी म० इस सम्मेलन में १६३ साधु-साध्वियों की ओर से आते है, ऐसा फॉर्म भरकर आया है। योजनाये बनाने मे समय २ पर शामिल रहकर सम्मति देते रहे है अत वे योजनायें उन पर भी बंधनकारक है।

ये योजनायें समस्त स्था० जैन साधुओं के लिये बनाई गई हैं, जो उपस्थित और अनुपस्थित सभी साधुओं के लिये बंधनकारक है। ऐसा यह कॉन्फरन्स ठहराती है।

प्रस्ताव—१० (साधु-सम्मेलन के नियम पलवाने के लिये श्रावक-समिति)

साधु-सम्मेलन द्वारा प्रदत्त आज्ञा और चतुर्विध श्री-संघ को की हुई प्रार्थना को शिरोधार्य कर साधु-सम्मेलन के नियमों का योग्य पालन कराने के लिये श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स को एक स्टेन्डिग कमेटी बनाने की आवश्यकता प्रतीत होती है। उक्त कमेटी मे ३८ प्रान्तों के ३८ मैम्बर चुने जावें। इनके अतिरिक्त प्रमुख सा० और दोनों मन्त्रीजी मिलकर कुल ४१ मैम्बर चुने जायं। ये सभी मैम्बर मिलकर १० को-ओप्ट मैम्बरों का चुनाव करे। उपरोक्त क्रम से निम्नोक्त नाम प्रांतवार चुने गये है:—

श्री ला० टेकचदंजी जंडियाला, श्री चुनीलालजी डेराइस्माइलखान, श्री ला० गोकलचदंजी नाहर दिल्ली, श्री आनंदराजजी सुराणा जोधपुर, श्री भैरोंदानजी सेठिया बीकानेर, श्री अनोपचदंजी पुनमिया सादड़ी, श्री केशुलालजी ताकड़िया उदयपुर, श्री कन्हैयालालजी भंडारी इन्दौर, श्री हीरालालजी नांदेचा खाचरोद, श्री चोथमलजी मूथा उज्जैन, श्री कल्याणमलजी बेद अजमेर, श्री सरदारमलजी छाजेड़ शाहपुरा, श्री सुलतानसिंहजी जैन बड़ौत, श्री फूलचदंजी जैन कानपुर, श्री अचलसिंहजी जैन आगरा, श्री दीपचदंजी गोठी बेतुल, श्री सुगनचंदजी लुणावत धामणक, श्री रतीलाल हकिमचंद कलोल, श्री वाडीलाल डाह्यभाई अहमदाबाद, श्री जैसिंहभाई हरकचंद अहमदावाद, डॉ० श्री पोपटलाल श्री कमलाल संघवी, श्री मोहनलाल मोतीचंद गठ्डा, श्री पुरुशोतमचंद मवेरचंद जुनागढ़, श्री उमरसीभाई कानजी देशलपुर, श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, दी० ब० श्री मोतीलालजी मूथा सतारा, श्री पूनमचंदजी नाहटा भुसावल।

यह जनरल स्टेंडिंग-कमेटी के मैम्बर आगामी कॉन्फरन्स जब तक नई कमेटी न चुने वहां तक कायम रहे। कोई भी साधु-साध्वी शिथिल बनें और श्रावकों की तरफ से उनके लिये योग्य कार्यवाही करने की मांग साधुओं की कमेटी से की गई हो तो तीन मास के अंदर वह योग्य कार्यवाही करे। यदि वह तदनुसार न करे और आवश्यक कदम न उठावे तो यह स्टेंडिंग-कमेटी इस प्रबंध मे विचार कर अन्तिम निर्णय दे। इस प्रकार यह कॉन्फरन्स निश्चय करती है।

प्रस्ताव—११ (आगम-विद्या-प्रचारक-फंड के विषय मे)

यह सभा श्रीयुत हंसराजभाई लक्ष्मीचंदजी की ओर से आई हुई 'हंसराज जिनागम विद्या प्रचारक-फंड' नामक स्कीम पढ़ कर इसके अनुसार उनके १५०००) रु० की भट सधन्यवाद स्वीकार करने का प्रस्ताव करती है। और उसके विषय मे उनके साथ समस्त प्रबंध करने का अधिकार जनरल कमेटी को देती है। तथा श्री हंसराज भाई से यह विनती करने का तय करती है कि जहां तक संभव हो ग्रन्थों का प्रकाशन हिन्दी भाषा में हो तो अधिक उपयोगी होगा।

प्रस्ताव १२—(कुप्रथाओं को त्यागने के विषय मे)

अपनी समाज मे चलने वाली निम्न बातें धर्म विरुद्ध और अनुचित हैं। जैसे कि कन्या-विक्रय वर-विक्रय, वृद्ध-विवाह, वाल-विवाह, वहु-विवाह, अनमेल-विवाह, मृत्युभोज, वैश्या-नृत्य, आतिशबाजी, हाथीदांत, रेशम आदि को मांगलिक समझ कर उपयोग करना, विधवाओं को अनादर की दृष्टि से देखना, अश्लील गीतों का गाना, होली-खेलना, लौकिक-पर्वो का मनाना, मिथ्यात्वी देवी-देवताओं को मनाना आदि बातें शीघ्र बंद हों, तो ऐसी साधु-सम्मेलन की भी सूचना है। अतः यह कॉन्फरन्स सभी जैन भाइयों से आग्रह करती है कि इन कुरिवाजों को यथा-शीघ्र छोड़ दें।

प्रस्ताव १३—(धार्मिक-उत्सवों में भी कम खर्च करने के विषय में)

धर्म के निमित्त होने वाले तप-महोत्सव, दीक्षा-महोत्सव, संथारा-महोत्सव, चातुर्मास में दर्शनार्थ आना-जाना, लोच-महोत्सव तथा मृत्यु-महोत्सव आदि के लिये आमंत्रण देना उत्सव करना और अधिक खर्च करना यह सब धार्मिक और आर्थिक-दृष्टि से लाभप्रद नहीं है। ऐसा साधु-सम्मेलन का भी मन्तव्य है। अतः उक्त उत्सवों में खर्च कम किया जाय।

प्रस्ताव १४—(सिद्धान्त-शाला के विषय में)

वैरागियों को शिक्षा देने के लिए अनुकूल-स्थान पर शिद्धान्त-शाला खोलना आवश्यक प्रतीत होता है। फिलहाल तो सेठ हंसराज भाई के दान का कार्य जहां आरम्भ हो वहीं पर शाला का कार्य शुरू किया जाय। दीक्षित मुनिराज भी अपने कल्पानुसार सिद्धान्त-शाला का लाभ ले सकेंगे। पाँच वैरागी मिलने से मासिक १००) रु० श्री जैन ट्रेनिंग-कालेज फंड मे से दिये जावे। सिद्धान्त-शाला की व्यवस्था, नियमोपनियम निश्चय करना, और आचार संबंधी क्रियाओं मे विद्वान मुनियों की सलाह अनिवार्य होगी।

प्रस्ताव १६—(श्रावक-जीवन के विषय मे)

मुनिवर्ग के सुधार की जितनी आवश्यकता है उतनी ही श्रावक-श्राविकाओं के जीवन सुधार और धार्मिक-भावना से वृद्धि करने की भी आवश्यकता है अतः साधु-सम्मेलन की तरफ से जो निम्न सूचनायें आई है उनका पालन करने के लिये यह कॉन्फरन्स सभी भाई-बहिनों से अनुरोध करती है।

(१) पांच वर्ष के बालक तथा बालिकाओं को धार्मिक शिक्षा दी जावे।
(२) १८ वर्ष तक लड़के को व १४ वर्ष तक लड़की को ब्रह्मचारी रखना चाहिये।
(३) छः तिथियों मे पलिलोती (हरी) का त्याग करें।
(४) रात्रि-भोजन का त्याग करे।
(५) कंद-मूल का त्याग करे। जीमणवार में कंद-मूल का उपयोग न करें।
(६) पर्व के दिन उपवास आदि व्रत करें और ब्रह्मचर्य रखें। सामायिक-प्रतिक्रमण अवश्य करें।
(७) अभक्ष्य-पदार्थो का सेवन वन्द करें।
(८) विधवा-बहिनों के साथ आदर का आचरण करना चाहिये।
(९) हर रोज श्रावक को कम से कम सामायिक और स्वाध्याय तो अवश्य करना चाहिये।
(१०) प्रांत वार ४१ ग्रहस्थों की कमेटी जो साधु-सम्मेलन के प्रस्तावों का पालन कराने का ध्यान रखेगी वही श्रावकों के नियम पालन की भी देख-रेख रखे।

प्रस्ताव १७—(दान प्रणालि द्वारा कॉन्फरन्स की सहायता के विषय मे)

अपनी समाज में दान की नियमित प्रणालि शुरु हो और सामाजिक-सुधार का कार्य कॉन्फरन्स भली प्रकार कर सके, इसके लिये यह कॉन्फरन्स सभी स्थानकवासी जैनों से आग्रह करती है कि:—

(अ) प्रत्येक स्थानकवासी जैन के घर से प्रतिदिन एक पाई नियमित निकाली जाय और इस तरह मासिक या छः मासिक रकम एकत्रित करके हरएक गांव का श्री-संघ कॉन्फरन्स को भेजता रहे।

(ब) हिंद में हर एक स्था० जैन अपने यहां जब भी विवाह-शादी हो तो उस समय १) रु० कॉन्फरन्स फंड मे दे।

(स) लग्न, जीमनवार, धार्मिक-उत्सव (दीक्षा, तप, मृत्यु, लोच) आदि के खर्च घटाकर बचत की रकम पारमार्थिक कार्य में लगाने के लिये कॉन्फरन्स-ऑफिस को भेज दें। कॉन्फरन्स, दाता की इच्छानुसार सदुपयोग करेगी।

नोट – (अ, ब) के अनुसार आई हुई सहायता का उपयोग चार आना-फंड की तरह भिन्न-भिन्न पारमार्थिक कार्यों में होगा।

प्रस्ताव १८—(कॉन्फरन्स-ऑफिस-कार्यवाही हिन्दी मे हो)

हिन्दी भाषा मे अधिक लोग समझते हैं और राष्ट्रीय-भावना से भी हिन्दी का प्रयोग करना योग्य है। अतः यह कॉन्फरन्स तय करती है कि कॉन्फरन्स की कार्यवाही जहां तक हो सके हिन्दी में की जाय।

प्रस्ताव १९—(जीव-दया के विषय मे)

दूध देने वाले पशुओं का कत्ल होने से देश का पशु धन नष्ट होता है तथा धर्म, राष्ट्र और समाज को धार्मिक तथा आर्थिक दृष्टि से भयंकर हानि होती है। उसको रोकने मे ही सच्ची जीव-दया है। अतः इस संबंध में होने वाले भिन्न २ संस्थाओं के प्रयास अधिक उपयोगी और कार्यसाधक हों, ऐसा प्रबंध करने के लिये यह परिषद् निम्नोक्त सज्जनों की एक कमेटी बनाती है और सभी जैनों से अपने घर गाय-भैंस रखने का आग्रह करती है।

श्री वर्धमानजी पित्तलिया, रतलाम, श्री अमृतलाल रायचंद भाई जौहरी बम्बई, श्री मोतीलालजी मूथा सतारा, श्री चिमनलाल पोपटलाल शाह बम्बई, श्री जगजीवन दयाल भाई।

प्रस्ताव २०—(एकल-विहारी साधु-साध्वियों के विषय में)

वर्तमान समय मे एकल-विहार असह्य होने से यह कॉन्फरन्स अकेले विचरने वाले साधु-साध्वियों को चेतावनी देती है कि वे आषाढ़ शुक्ला १५ तक वे किसी न किसी सम्प्रदाय में मिल जायं। यदि वे नहीं मिले तो कोई भी श्री-संघ एकल-विहारी साधु का चतुर्मास न करावे। वृद्धावस्था, अस्वस्थता, आदि अनिवार्य कारणों से अकेले रह गये हों तो उनकी बात अलग है। चारित्र-हीनों का यह भेष रखना जैन समाज को धोखा देना है। इस तरह साधु-भेष रखने का उन्हें कोई हक नहीं है, जो कि धार्मिक चिह्न हैं। अतः किसी भी ऐसे भेषधारी में दोष देख कर उनका भेष उतारने का प्रयत्न भी श्री-संघ कर सकेगा और कॉन्फरन्स भी योग्य-कार्यवाही करेगी। बीमारी, वृद्धावस्था आदि से विहार न कर सकने वालों की सेवा मे सम्प्रदाय के साधुओं को भेजना चाहिये।

प्रस्ताव २१—(साहित्य-निरीक्षण के लिये उप-समिति)

अपनी समाज में साहित्य-प्रकाशन का कार्य बढ़ाना जरूरी है, परन्तु जो भी साहित्य हो वह समाज और धर्म को उपयोगी होना चाहिये। अतः यह कॉन्फरन्स प्रकाशन के योग्य साहित्य को सर्टिफाइड (प्रमाणित) करने के लिये निम्न साधुओं तथा श्रावकों की एक समिति नियत करती है। हर तरह का साहित्य ऑफिस द्वारा इस समिति को भेजकर सर्टिफाई कराकर प्रकट किया जाय।

शतावधानी पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म०, उपाध्याय पं० मुनि श्री आत्मारामजी म०, पूज्य श्री अमोलख ऋषिजी म०, पं० मुनि श्री घासीलालजी म०, श्री भैरोंदानजी सेठिया बीकानेर, श्री वर्धमानजी पित्तलिया रतलाम, श्री हरजसरायजी जैन अमृतसर, श्री ठाकुर लक्ष्मणसिंहजी देवास, श्री धीरजलाल भाई के० तुरखिया, ब्यावर।

प्रस्ताव २२—(समाज सेवकों का सम्मान)

यह कॉन्फरन्स श्री दुर्लभजीभाई जौहरी की अनन्य धर्म-सेवा की कदर करते हुए 'जैन धर्मवीर' की और श्री नथमलजी चौरडिया को 'जैन समाज-भूषण' की उपाधि से सुशोभित करती है।

प्रस्ताव २३—(बीकानेर-सरकार से अनुरोध)

श्री मज्जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहिरलालजी म० द्वारा रचित 'सद्धर्म-मंडन' और चित्रमय अनुकम्पा-विचार नामक जो पुस्तकें प्रकट हुई हैं, उनके विषय में बीकानेर सरकार की ओर से बीकानेर निवासी स्थानकवासी जैनियों को ऐसा नोटिस मिला है कि ये पुस्तकें जब्त क्यों न की जावें ? इस नोटिस का उत्तर बीकानेर निवासी स्था० जैनियों की ओर से बीकानेर गवर्नमेंट को दिया जा चुका है। आशा है बीकानेर गवर्नमेंट उस पर न्याय दृष्टि से विचार करेगी। फिर भी यह कॉन्फरन्स बीकानेर-सरकार से प्रार्थना करती है कि उक्त दोनों पुस्तकें धार्मिक विचारों का प्रचार करने के लिये और स्था० जैन समाज को अपने धर्म-मार्ग पर स्थिर रखने के निमित्त से ही प्रकाशित की गई है, किसी के धार्मिक-भावों पर आघात पहुँचाने के लिये नहीं। अतः बीकानेर-सरकार इन पुस्तकों पर हस्तक्षेप करने की कृपा करे।

नोटः—इस प्रस्ताव की नकल बीकानेर-नरेश को भेजने की सत्ता प्रमुख सा० को दी जाती है।

शेष प्रस्ताव आभारात्मक थे। इस अधिवेशन में लींबडी-नरेश सर दौलतसिंहजी पधारे थे अतः उनका आभार माना गया।

इस अधिवेशन के साथ २ श्री स्था० जैन नवयुवक परिषद, महिला परिषद और शिक्षण परिषद भी हुई थी-जिनकी संक्षिप्त-कार्यवाही नीचे दी जाती है।

श्री श्वे० स्था० जैन युवक-परिषद, अजमेर

स्था० जैन युवक-परिषद का अधिवेशन सन् १९३३ मे ता० २४ अप्रैल को सेठ अचलसिंहजी जैन आगरा की अध्यक्षता में अजमेर में सम्पन्न हुआ। इसके स्वागताध्यक्ष श्री सुगनचंदजी लूणावत, धामणगांव वाले थे। सभा में जो प्रस्ताव पास किये गये थे उनमें से मुख्य-मुख्य ये हैं :—

प्रस्ताव ४—(अस्पश्यता निवारण के विषय मे)

यह परिषद् जैन सिद्धान्तानुसार अस्पृश्यता का निषेध करती है और अनुरोध करती है कि अन्य जैनेतर भाइयों की तरह ही अस्पृश्य (हरिजन) भाइयों से भी व्यवहार किया जाय।

प्रस्ताव २६—(अहिंसक-स्वदेशी-वस्तुओं का व्यवहार करने के विषय में)

यह परिषद धार्मिक तथा देश-हित की दृष्टि से, रेशम, हिंसक-वस्त्र और हाथी-दांत के चूड़े के उपयोग का निषेध करती है और नवयुवकों तथा नवयुवतियों से अनुरोध करती है कि केवल स्वदेशी-वस्तुओं का ही व्यवहार करें।

प्रस्ताव ६—(कुप्रथाओं को त्यागने के विषय में)

यह परिषद, अयोग्य-विवाह, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, कन्या-विक्रय, वर-विक्रय, फिजूलखर्ची, मृत्युभोज आदि कुप्रथाओं का सर्वथा विरोध करती है। और जो पर्दा-प्रथा अत्यन्त हानिकारक है, उसे यथाशक्य हटाने का प्रयत्न करने का प्रस्ताव करती है।

अन्त मे एक प्रस्ताव पास कर निम्नोक्त सज्जनों की एक कार्यकारिणी-समिति बनाई गई।

सेठ श्री अचलसिंहजी जैन आगरा, अध्यक्ष, लाला मस्तरामजी M. A. अमृतसर, (मंत्री), लाला

रतनचंदजी जैन अमृतसर, (मंत्री) ठाकुर किशनसिंहजी चौधरी (सदस्य), ठा० सुगनसिंहजी चौधरी (सदस्य), डॉ० श्री वृजलाल मेघाणी (सदस्य), श्री डाह्यालाल मणिलाल मेहता (सदस्य), श्री सुगनचंदजी लूणावत, (सदस्य) श्री शांतिलाल दुर्लभजीभाई जौहरी (सदस्य), श्री सेठ राजमलजी ललवानी जामनगर (सदस्य), श्री हरलालजी वरलोटा पूना (सदस्य), श्री दीपचंदजी गोठी वेतूल (सदस्य), श्री चांदमलजी मास्टर मन्दसौर (सदस्य), श्री छोटेलालजी जैन दिल्ली (सदस्य), श्री मगनमलजी कोटेचा अचरपाकम् (सदस्य), श्री आनन्दराजजी सुराणा जोधपुर (सदस्य), श्री अमोलखचंदजी लोढ़ा बगड़ी, (सदस्य)।

श्री श्वे० स्था० जैन महिला-परिषद् अजमेर

श्री श्वे० स्था० जैन महिला परिषद् का अधिवेशन ता० २५ अप्रैल सन् १९३३ को अजमेर मे हुआ था। इसकी अध्यक्षता श्रीमती भगवती देवीजी (धर्मपत्नी सेठ अचलसिंहजी जैन आगरा) ने की। स्वागत-भाषण श्रीमती केसर बेन चौरडिया (सुपुत्री श्री नथमलजी चौरडिया, नीमच) ने पढ़ा। महिला-परिषद् मे जो प्रस्ताव पास किए गए थे उनमें से मुख्य ये हैं:—

प्रस्ताव १—(शिक्षण प्रचार के विषय में)

यह महिला-परिषद् समस्त जैन-समाज की महिलाओं में शिक्षा की कमी पर खेद प्रकट करती है और भविष्य मे पुरुषों की तरह ही अधिक से अधिक शिक्षा प्राप्त करने के लिये सब बहिनों से अनुरोध करती है।

प्रस्ताव २—(पर्दा-प्रथा हटाने के विषय में)

यह परिषद् पर्दे की प्रथा को स्त्री-जाति की उन्नति में बाधक और त्याज्य समझ कर उसे घृणा की दृष्टि से देखती है और सब बहिनों से उसे छोड़ने का अनुरोध करती है।

प्रस्ताव ३—(स्वदेशी-वस्त्रों के विषय में)

यह परिषद् समस्त बहिनों से अपील करती है कि वे अपने देश तथा धर्म की रक्षा के लिये खद्दर या स्वदेशी-वस्त्रों का ही उपयोग करें।

प्रस्ताव ४—(बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह के विरोध में)

यह परिषद् बाल-विवाह तथा वृद्ध-विवाह को स्त्री-जाति के अधिकारों का हरण करने वाला तथा उन पर अत्याचार समझती है। अतः इन्हे सर्वथा बंद कर देने का जोरदार अनुरोध करती है।

प्रस्ताव ५—(रोने-पीटने की कुप्रथा का त्याग करने के विषय में)

यह परिषद् स्त्रियों में प्रचलित रोने-पीटने की प्रथा को निन्दनीय मानती है और बहिनों से अनुरोध करती है कि वे इस अमानवीय कार्य को बिल्कुल बंद कर दें।

प्रस्ताव ६—(कुरूढ़ियों के त्याग के विषय में)

यह परिषद् उन सभी निरर्थक-रूढ़ियों की निंदा करती है, जो हमारे स्त्री-समाज मे प्रचलित हैं। जैसे कि गालियाँ, कामोत्तेजक गीतों का गाना, मिट्टी ढेले (शीतलादि) कबरें, भैरू भवानी की पूजा करना आदि। साथ ही सभी बहिनों से इन्हें छोड़ने का अनुरोध करती है।

प्रस्ताव ७—(कन्या-गुरुकुल के विषय में)

यह परिषद् श्री सेठ नथमलजी चौरडिया को उनके सत्तर हजार रुपयों के दान पर धन्यवाद देती है और आग्रह करती है कि जितना शीघ्र हो सके इस धन से कन्या-गुरुकुल की स्थापना की जाय।

श्री श्वे० स्था० जैन शिक्षा परिषद

अजमेर-अधिवेशन के समय विशेष रूप से निर्मित 'लौंका नगर' में श्वे० स्था० जैन-परिषद् का भी आयोजन किया गया था। इस परिषद् के अध्यक्ष शांति-निकेतन के प्रो० श्री जिनविजयजी थे। बनारस से पं० सुखलाल जी भी आये थे। अध्यक्ष का विद्वतापूर्ण भाषण हुआ था। परिषद् में पास हुए मुख्य प्रस्ताव इस प्रकार है :-

प्रस्ताव १—(स्था० जैन संस्था का संगठन)

यह परिषद् ऐसा मन्तव्य प्रकट करती है कि स्थानकवासी जैन-समाज की भिन्न-भिन्न प्रांतों में चलने वाली अथवा भविष्य मे शुरु होने वाली सभी शिक्षण संस्थायें बोर्डिंग, बालाश्रम, गुरुकुल आदि कम से कम खर्च मे अधिक कार्यसाधक सिद्ध हों इस हेतु वे सभी संस्थायें एक ऐसे तंत्र (व्यवस्था) के नीचे आवे कि जो तंत्र उन संस्थाओं का निरीक्षण, शक्य सहयोग और उनकी कठिनाइयॉ तथा त्रुटियों को दूर करने का जवाबदारी अपने उपर ले और इस तरह उस तंत्र को स्वीकार कर सभी संस्थाए उनके प्रति जवाबदार रहें।

प्रस्ताव २—(धार्मिक पाठय-क्रम के विषय में)

यह शिक्षण परिषद् निम्न तीन बातों के लिये विशेष प्रबंध करने की आवश्यकता महसूस करती है :-

(अ) केवल धार्मिक-पाठशालाओं में तथा अन्य संस्थाओं के लिये धार्मिक अभ्यास-क्रम ऐसा होना चाहिए कि वह जगत को उपयोगी सिद्ध हो तथा समयानुकूल भी हों।

(ब) गुरुकुल तथा ब्रह्मचर्याश्रम के लिये, धार्मिक तथा व्यवहारिक शिक्षण के लिये और भिन्न संस्थाओं के लिये उक्त दृष्टि से अभ्यास-क्रम बनाना चाहिये।

(क) उपरोक्त प्रस्तावों को अमल में लाने के लिये पाठ्य पुस्तकें तथा आवश्यक पाठ्य पुस्तके तय करनी चाहिये।

प्रस्ताव ३—(साधु-सध्वियों के विषय मे)

यह शिक्षण-परिषद् वर्तमान परिस्थिति मे साधु सध्वियों के लिये व्यवस्थित तथा कार्य-साधक अभ्यास की खास आवश्यकता मानती है। जिससे शास्त्रोक्त तथा इतर ज्ञान भलि-भांति प्राप्त किया जाय। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिये इस परिषद् के तत्वावधान मे एक केन्द्र-संस्था तथा अन्य संस्थाऐं प्रान्तवार स्थापित करे। इस संस्था का मुख्य तत्त्व ऐसा होना चाहिये कि समस्त साधु-संघ को अनुकूल हो और शिक्षण के लिये बाधक न हो।

इस संस्था मे पढ़ने वाले साधु-सध्वियों को उनकी योग्यतानुसार प्रमाण-पत्र देना और विविध शिक्षण द्वारा उनके जीवन को अधिक कार्यसाधक एवं विशाल बनाना।

प्रस्ताव ४—(दीक्षार्थियों की परीक्षा के विषय मे)

इस परिषद् की दृढ़ मान्यता है कि साधु-पद सुशोभित करने और सुशिक्षित बनाने के लिये प्रत्येक साधु-साध्वी दीक्षार्थी की परीक्षा करें। योग्य शिक्षण देने से पहले दीक्षा देने से वह गुरु-पद की अवहेलना करेगा अतः साधुत्व के लिये निरीक्षण और परीक्षा कर लेने के बाद ही दीक्षा दी जाय।

दसवां-अधिवेशन, स्थान-घाटकोपर

कॉन्फरन्स का दसवां अधिवेशन अजमेर-अधिवेशन के ८ वर्ष बाद सन् १९४१ मे घाटकोपर (बम्बई) में किया गया इस अधिवेशन के प्रमुख श्रीमान् सेठ वीरचन्द भाई मेघजी थोभण बम्बई थे। स्वागताध्यक्ष

श्री धनजीभाई देवशी भाई घाटकोपर थे। इस अधिवेशन मे कुल २८ प्रस्ताव पास किये गये थे, जिनमे से मुख्य ये थे :—

प्रस्ताव ३—(राष्ट्रीय महासभा की प्रवृत्तियों में सहयोग देने के विषय मे)

राष्ट्रीय महासभा के रचनात्मक कार्य-क्रम में और मुख्यतः निम्नोक्त कार्यों मे शक्य सहयोग देने के लिये यह कॉन्फरन्स प्रत्येक भाई बहिन से साग्रह अनुरोध करती है।

खादी से आर्थिक असमानता दूर होती है। सामाजिक समानता की भावना प्रकट होती है। गरीबी और भुखमरी कम होती है। खादी में कम से कम हिंसा होती है अतः प्रत्येक जैनधर्मी का कर्तव्य है कि वह खादी का ही उपयोग करे।

ग्रामोद्योग के उत्तेजन में तथा स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग में राष्ट्र की आर्थिक आबादी है, हिन्द के गांवों का उद्धार है और राजकीय परतंत्रता दूर करने का उत्तम साधन है। अतः प्रत्येक जैनी को स्वदेशी वस्तुएं ही उपयोग मे लानी चाहिये।

जैन धर्म में अस्पृश्यता को कोई स्थान नही है। जैन-धर्म प्रत्येक मनुष्य की सामाजिक-समानता को मानता है अतः प्रत्येक जैन का यह कर्तव्य है कि अस्पृश्यता को दूर करें और राष्ट्रीय महासभा हरिजन उद्धार के के कार्य में योग्य सहयोग दे।

प्रस्ताव ४—(धार्मिक शिक्षण-समिति की स्थापना)

यह कॉन्फरन्स मानती है कि जैन-धर्म के संस्कारों का सिन्चन करने वाला धार्मिक-शिक्षण हमारी प्रगति के लिये आवश्यक है। अतः चालू शिक्षण में जो कि निर्जीव और सत्वहीन है, परिवर्तन कर उसे हृदय-स्पर्शी और जीवित-शिक्षण बनाने को नितान्त आवश्यकता है। इसके लिये शिक्षण-क्रम शौर पाठ्य-क्रम तैयार करने के लिये तथा समग्त हिंद मे एक ही क्रम से धार्मिक-शिक्षण दिया जाय, परीक्षा ली जाय तथा इसके लिये एक योजना बनाने के निमित्त निम्नोक्त भाइयों की को-ऑप्ट करने की सत्ता के साथ एक धार्मिक-शिक्षण-समिति बनाई जाती है। इस शिक्षण-समिति की योजना मे जैन-नीति का गहरा अभ्यास करने वालों के लिये भी अभ्यास-क्रम का प्रबंध किया जायगा।

श्रीमान मोतीलालजी मूथा, सतारा प्रमुख, श्रीमान खुशालभाई खेगारभाई बम्बई, श्रीमान जेठमलजी सेठिया बीकानेर, श्रीमान् चिमनलाल पोपटलाल शाह बम्बई, श्रीमान मोतीलालजी श्रीश्रीमाल रतलाम, श्रीमान् कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्रीमान् लाला हरजसरायजी जैन अमृतसर, श्रीमान् केशवलाल अम्बालाल खम्भात, श्रीमान् चुन्नीलाल नागजी बोरा राजकोट, श्रीमान् माणकचन्दजी किशनदासजी मूथा नगर, श्रीमान् धीरजलाल के० तुरखिया ब्यावर मन्त्री।

प्रस्ताव ५—(महावीर-जयन्ती की छुट्टी के विषय में)

श्री अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स भगवान महावीर के जन्म दिवस की आम छुट्टी के लिये सभी प्रान्तीय एवं केन्द्रीय-सरकार से अपनी मांग करती है। भारत के समस्त जैनियों को चाहिये कि वे इसके लिये सहयोग पूर्वक योग्य प्रवृत्ति करें।

(ब) जिन २ देशी राज्यों ने अपने २ प्रान्तों में भगवान महावीर के जन्म-दिवस की आम छुट्टी स्वीकार कर ली उनका कॉन्फरन्स पूर्ण आभार मानती है और शेष राज्यों से अनुरोध करती है कि वे भी तदनुसार आम छुट्टी की जाहिरात करें।

(स) सभी जैन भाइयों को उस दिन अपना व्यापार आदि बंद रखने का अनुरोध करती है।

प्रस्ताव ६—(कन्या-शिक्षण के विषय में)

कन्या-शिक्षा की आवश्यकता के प्रति आज दो मत न होने पर भी इस दिशा में हमारी प्रगति बहुत मंद और असंतोषजनक है। अतः अपनी कन्याओं को योग्य शिक्षण देकर संस्कारी बनाना प्रत्येक माता-पिता का कर्तव्य है।

प्रस्ताव ७—(सामाजिक-सुधार के विषय में)

बाल-लग्न, असमान वय के विवाह, कन्या-विक्रय तथा बहु-पत्नीत्व की अनिष्टता के बारे मे मतभेद न होने पर भी यत्र-तत्र ऐसे बनाव बनते रहे है जो कि शोचनीय हैं। ऐसे प्रसंग संभव न हों ऐसा लोकमत जागृत करना चाहिये और ऐसे अनिष्ट प्रसंगों में किसी भी स्थानकवासी स्त्री-पुरुषों को भाग नहीं लेना चाहिये। यह कॉन्फरन्स भलामण करती है कि:—

१. विवाह की वय कन्या की कम से कम १६ वर्ष की और वर की २० वर्ष की होनी चाहिये।

२. विवाह-सम्बन्ध स्थापित करने में आज की प्रचलित भौगोलिक और जाति-विषयक मर्यादा आधुनिक सामाजिक-परिस्थिति के साथ बिलकुल असंगत और प्रगति में बाधक है अतः इन मर्यादाओं को दूर करना चाहिये।

३. लग्न वर-वधु की सम्मति से होने चाहिये। जिन २ क्षेत्रों में इसके लिये प्रतिबंध हो वहां ये शीघ्र उठ जाने चाहिये।

प्रस्ताव ८—(पूना बोर्डिंग का मकान फंड करने के विषय में)

पूना-बोर्डिंग के लिये मकान बनाने के लिये बोर्डिंग समिति ने पूना मे प्लॉट (जमीन) खरीद ली है, जहां ८० विद्यार्थी रह सकें ऐसा मकान बांधने का निर्णय किया जाता है। उस मकान के लिये तथा बोर्डिंग में अभ्यास करने वाले गरीब विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देने के लिये फंड करने का प्रस्ताव किया जाता है और प्रत्येक भाई-बहिन इसमें अपना शक्य सहयोग अवश्य दे ऐसा यह कॉन्फरन्स अनुरोध करती है। यह फंड बोर्डिंग-समिति एकत्रित करे और उससे यथा-शीघ्र मकान बंधावे ऐसा निश्चय किया जाता है।

प्रस्ताव १०—(मुनि-समिति की बैठक करने के विषय मे)

साधु-साध्वी सघ की एकता ही स्थानक वासी समाज के अभ्युत्थान का एकमात्र उपाय है। इसके लिये मुनि-समिति के चार सभ्यों ने एक योजना का मसविदा तैयार किया है, उसका मूल सिद्धान्त उपयोगी है। यह योजना साधु-समिति द्वारा विशेष विचारणीय है अतः अजमेर साधु-सम्मेलन मे नियोजित मुनि-समिति की एक बैठक योग्य समय और स्थान पर बुलाने का यह अधिवेशन प्रस्ताव करता है। उस कार्य को करने के लिये निम्नोक्त भाइयों की एक समिति बनाई जाती है।

श्री चुनीलाल भाईचंद महेता बम्बई, श्री मानकलाल अमुलखराय मेहता बम्बई, श्री जगजीवन दयालजी बम्बई, श्री गिरधरलाल दामोदर दफ्तरी बम्बई, श्री जीवनलाल छगनलाल संघवी अहमदाबाद, श्री दीपचंद गोपालजी थाना व बम्बई, श्री जमनादास उदाणी घाटकोपर, श्री कालुरामजी कोठारी ब्यावर, श्री पूनमचंदजी गांधी हैद्राबाद, दी० ब० श्री मोतीलालजी मूथा सतारा, श्री रतनलालजी नाहर बरेली, रा० सा० श्री टेकचंदजी जैन जंडियाला, श्री ला० रतनचंदजी हरजसरामजी जैन अमृतसर, दी० ब० श्री विशनदासजी जम्मु, श्री घोंडीरामजी मूथा पूना, श्री नवलमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्री कल्याणमलजी बेद अजमेर, श्री प्रेमराजजी बोहरा पीपलिया, श्री जीवाभाई भणसाली पालनपुर, श्री मानमलजी गुलेच्छा खींचन, श्री चुन्नीलाल नागजी वोरा राजकोट, रा० सा० श्री ठाकरसीभाई

मकनजी धीया राजकोट, रा० सा० मणिलाल वनमालीदास शाह राजकोट, श्री सरदारमलजी छाजेड शाहपुर (मंत्री), श्री धीरजलाल भाई के० तुरखिया ब्यावर।

उपरोक्त समिति को इस कार्य के लिये सम्पूर्ण प्रबध करने तथा फंड करने की सत्ता दी जाती है।

प्रस्ताव ११—(स्त्री-शिक्षण-सहायता फंड के विषय मे)

कन्या तथा स्त्री-शिक्षण और विधवा-बहिनों की शिक्षा के लिये एक फंड एकत्रित करने का तय किया जाता है। यह फंड कॉन्फरन्स के पास रहेगा परन्तु उसकी व्यवस्था बहिनों की एक समिति करेगी। इसके लिये निम्न बहिनों की एक समिति को-ऑप्ट करने की सत्ता के साथ बनाई जाती है:—

श्रीमती नवलबेन हेमचंदभाई रामजीभाई बम्बई, श्रीमती लक्ष्मीबेन वीरचंदभाई मेघजीभाई बम्बई, श्रीमती चंचलबेन टी० जी० शाह बम्बई, श्रीमती केशरबेन अमृतलाल रामचंद जौहरी बम्बई, श्रीमती शिवकुंवरबेन-पुंजाभाई, बम्बई, श्रीमती चंपाबेन-उमेदचंद गुलाबचंद बम्बई,

प्रस्ताव १२—(संघ-बल बनाने के विषय में)

यह अधिवेशन दृढ़ता पूर्वक मानता है कि अपने में जहां तक संघ-बल उत्पन्न न हो वहां तक संघ की उन्नति होना बहुत कठिन है। अतः प्रत्येक संघ को अपना २ विधान तैयार कर संगठन करने के लिये यह अधिवेशन आग्रह करता है।

प्रस्ताव १३—(वीर-संघ की नियमावली व संचालन के विषय में)

वीर-सघ का प्रस्ताव और फंड बम्बई, अधिवेशन से हुआ है, नियमावली भी बनाई गई है, परन्तु अब तक कार्यरूप में वीर-सघ बना नहीं है। अतः यह कॉन्फरन्स निर्णय करती है कि स्था० जैन-समाज को आजीवन अथवा उचित समय के लिये सेवा देनेवाले स्था० जैन-समाज के सच्चे श्रावक, फिर चाहे वे गृहस्थी हों या ब्रह्मचारी उनका 'वीर सेवा-संघ' शीघ्र बना लिया जाय। वीर-संघ के सदस्य की योग्यता और आवश्यकतानुसार जीवन प्रबंध के लिये 'वीर-संघ फंड' का उपयोग किया जाय।

वीर-संघ की नियमावली मे संशोधन करने और वीर-संघ की योजना को शीघ्र अमल में लाने के लिये निम्नोक्त सज्जनों की एक समिति बनाई जाती है।

श्री वर्धमानजी पित्तलिया रतलाम, श्री सरदारमलजी छाजेड शाहपुरा, श्री कुंदनमलजी फिरोदिया अहमद-नगर, श्री जगजीवन दयालजी घाटकोपर।

प्रस्ताव १४—बनारस गवर्नमेन्ट संस्कृत कॉलेज मे जैन दर्शन शास्त्री और जैन-दर्शन-आचार्य परीक्षाओं की योजना को यह कॉन्फरन्स सन्तोष की दृष्टि से देखती। परन्तु उपरोक्त नियमों का अभ्यास करने-कराने के लिये अभी तक किसी भी अध्यापक की नियुक्ति नहीं हुई है, इस पर खेद प्रकट किया जाता है। जैन-दर्शन का भारतवर्ष और संसार की विभिन्न संस्कृतियों में एक आदरणीय स्थान है। इस संबंध मे केवल परीक्षाओं की योजना ही पर्याप्त नहीं है अतः यह कॉन्फरन्स यू० पी० सरकार से भार पूर्वक अनुरोध करती है कि उपर्युक्त कॉलेज में जैन-दर्शन के अध्ययन और अध्यापन के लिये अध्यापक की नियुक्ति के लिये बजट मे उचित फंड का प्रबंध करे।

इस प्रस्ताव की एक नकल यू० पी० प्रांत के गवर्नर, शिक्षण-मंत्री तथा कॉलेज के प्रिंसिपल और रजिस्ट्रार को भेजा जावे।

प्रस्ताव १५—(सिद्धांत-शालाओं के विषय में)

वर्तमान में साधु-साध्वियों के शास्त्राभ्यास के लिये विभिन्न-स्थानों पर वैतनिक पंडित रखे जाते हैं जिससे

अलग २ संघों को काफी व्यय उठाना पडता है। इससे छोटे २ गांवों मे ये चतुर्मास भी नहीं हो सकते हैं। अतः यह सभा भिन्न २ प्रान्तों मे सिद्धान्त-शालाएं खोलने के लिये अलग २ प्रान्तों के संघों से विनती करती है। जब ये संस्थाएं आरम्भ हो जायं तब उस प्रान्त में विचरने वाले सभी सम्प्रदायों के साधु-मुनिराज अपने शिष्यों को पढाने के लिये वहां भेजे ऐसी प्रार्थना की जाती है।

प्रस्ताव १६—(साम्प्रदायिक-मंडल विरोध के विषय में)

यह कॉन्फरन्स समाज से अनुरोध करती है कि समाज का संगठन बढ़ाने के लिये और साम्प्रदायिक क्लेश न बढ़े इसके लिये साम्प्रदायिक-संगठनों की स्थापना न करे।

प्रस्ताव १७—(जैन-गणना के विषय मे)

अखिल भारतवर्ष के स्था० जैनों की संख्या तथा वास्तविक परिस्थिति का अभ्यास करने के लिये जन-गणना करना नितान्त आवश्यक है। अतः यह निर्णय किया जाता है कि इस कार्य को आरंभ कर दिया जाय इसके लिये कॉन्फरन्स-ऑफिस द्वारा तैयार किये गये फॉर्म सभी संघों को भेज दिये जायं और अमुक समय की मर्यादा मे उनसे वापिस भरवाकर भिजवा देने का अनुरोध किया जाय।

प्रस्ताव १८—(स्था० जैन-गृह बनाने के विषय में)

व्यापार, उद्योग या नौकरी के लिए दूर-देशावरों में अपने स्वधर्मी-भाई निर्भयता और आसानी से जा सके और परदेश मे स्वधर्मी-भाइयों के सहवास मे रह कर उनके सहयोग से व्यापार-धंधों द्वारा अपने जीवन को सुख-शांतिमय बना सकें इसके लिए हिंद से बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, करांची, अहमदाबाद, दिल्ली, इन्दौर, कानपुर आदि बड़े २ व्यापार-केन्द्रों मे तथा हिन्द से बाहर रंगून, एडन, मोम्बासा, कोबे (जापान) आदि केन्द्रों में अपने स्वधर्मी भाइयों को उचित रूप से रहने और खाने की सुविधा मिले, ऐसी व्यवस्था के साथ-साथ श्री स्थानकवासी जैन-गृह, (S. S. Jain Homes) सर्वत्र स्थापित करने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। आर्थिक प्रश्न का निवारण करने और इस योजना को अमल में लाने के लिये उन २ केन्द्रों के श्री संघों और श्रीमन्त सज्जनों से भलामण करती है।

प्रस्ताव २०—हिन्द की स्था० जैनों की व्यापारिक पेढ़ियों, दुकानों और कारखानों के नाम तथा यूनिवर्सिटी में पास हुए ग्रेजुएट—बी० ए० भाई-बहिन अपने नाम के साथ १) रु०, कॉन्फरन्स-ऑफिस को भेज दे। उनके नाम कॉन्फरन्स की तरफ से पुस्तक-रूप में प्रकट किये जायेंगे।

प्रस्ताव २२—(पार्श्वनाथ-विद्याश्रम, बनारस के विषय मे)

'श्री सोहनलाल जैन धर्म-प्रचारक-समिति, अमृतसर'—जो जैन-दर्शन और इतिहास के उच्चाभ्यास के लिए स्था० जैन विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देती है, जिसका कार्य श्री पार्श्वनाथ-विद्याश्रम, बनारस द्वारा हो रहा है उसे यह कॉन्फरन्स पसंद करती है और स्था० विद्यार्थियों तथा श्रीमन्तो का ध्यान उस तरफ आकर्षित करती है।

प्रस्ताव २३—(जैनों की एकता के विषय मे)

यह कान्फरन्स जैन-समाज की एकता का आग्रह पूर्वक समर्थन करती है और जब कभी परस्पर की एकता में बाधक प्रसंग खड़ा हो तो उसका योग्य उपाय कर एकता को पुष्ट करने का प्रयत्न करने के लिए हर एक स्था० जैन भाई-बहिन से प्रार्थना करती है। जैन समाज के तीनों फिर्कों के कतिपय मान्यता-भेद बाजू रख कर परस्पर मे समान रूप से स्पर्श करने वाले ऐसे अनेक प्रश्नों की चर्चा करने के लिए तथा आन्तरिक एकता बढ़ाने

के लिये समस्त जैन समाज की संयुक्त-परिषद् बुलाने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। और ऐसी को योजना होगी तो उसमें पूर्ण सहयोग देना जाहिर करती है।

प्रस्ताव २५-(बेकारी निवारण के विषय मे)

अपने समाज मे व्याप्त बेकारी निवारण के लिये आज की यह सभा (Jain unemployment Information Bureau) स्थापित करने का निश्चय करती है। अपनी समाज के श्रीमन्त और उद्योगपतियों से विनती करती है कि वे शक्य हों उतने जैन भाइयों को अपने यहां काम पर लगा कर इस बेकारी को कम करें।

प्रस्ताव २७-श्री आखिल भारतवर्षीय स्था० जैन संघों का प्रतिनिधित्व करने वाली यह कॉन्फरन्स श्री राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति वर्धा के संचालकों से विनती करती है कि समिति की परीक्षाओं की पाठ्य पुस्तकों में जिस तरह अन्य धर्मों के विशिष्ट पुरुषों का चरित्र-वर्णन दिया गया है उसी तरह जैन-महापुरुषों का जीवन-चरित्र भी देने की आवश्यकता समझें। शेष प्रस्ताव धन्यवादात्मक थे।

घाटकोपर का यह दसवां अधिवेशन, फंड की दृष्टि से भी सर्वोत्तम रहा। पूना-बोर्डिंग के लिये ४५ हजार का फड जमा हुआ। स्त्री शिक्षण और विधवा सहायक-फंड में भी १० हजार रु० का फंड हुआ। दूसरी विशेषता इस अधिवेशन की यह थी कि कॉन्फरन्स के पुराने विधान मे परिवर्तन कर नया लोकशाही-विधान बनाया गया जिसमे सदस्य फीस १) रु० रख कर हर एक भाई को सभासद का अधिकार दिया गया था।

अ० भा० श्वे० स्था० जैन युवक-परिषद

स्था० जैन युवक-परिषद का द्वितीय-अधिवेशन ता० १०--४--४१ को घाटकोपर मे हुआ। प्रमुख के स्थान पर पंजाब के सुप्रसिद्ध लाला हरजसराय जी जैन B. A. शोभायमान थे। स्वागताध्यक्ष थे डा० वृजलाल धरमचद मेघाणी। सभा में कुल १८ प्रस्ताव पास किये गये, जिनमे से मुख्य ये थे:--

(४) वीर-संघ की योजना (६) सर्वदेशीय शिक्षा-प्रचारक-फंड की योजना (७) आर्थिक-असमानता निवारण (८) ऐच्छिक-वैधव्य पालन अर्थात् बलात् नहीं। (६) जैनों के तीनों फिर्कों का एकीकरण (१२) स्त्री-शिक्षा प्रचार (१४) जैन-बैंक की स्थापना (२७) जैन युवक-संघ की स्थायी संस्था बनाना (१८) युवक-संघ का विधान बनाना आदि २। लाला हरजसरायजी जैन का भाषण बड़ा मननीय था। आपने सामयिक समस्याओं पर अच्छा प्रकाश डाला था।

स्था० जैन महिला-परिषद

घाटकोपर-अधिवेशन के समय महिला-परिषद का भी आयोजन किया गया था, जिसकी अध्यक्षा थीं श्रीमती नवलबेन हेमचंदभाई रामजीभाई मेहता। आपका भी भाषण बड़ा सुन्दर था जिसमे स्त्री-समाज की उन्नति के उपाय बताये गये थे।

सम्मेलन मे स्त्री शिक्षा-प्रचार, समाज-सुधार, प्रौढ़-शिक्षण आदि कई प्रस्ताव पास किये गये थे।

ग्यारहवां-अधिवेशन, स्थान-मद्रास

घाटकोपर-अधिवेशन से लगभग ८ साल बाद कॉन्फरन्स का ग्यारहवां अधिवेशन सन् १६४६ ता० २४-२५-२६ को मद्रास मे किया गया। जिसकी अध्यक्षता बम्बई लेजिस्लेटिव-असेम्बली के स्पीकर माननीय श्री

अलग २ संघों को काफी व्यय उठाना पडता है। इससे छोटे २ गांवों में ये चतुर्मास भी नहीं हो सकते हैं। अतः यह सभा भिन्न २ प्रान्तों मे सिद्धान्त-शालाएं खोलने के लिये अलग २ प्रान्तों के संघों से विनती करती है। जब ये संस्थाएं आरम्भ हो जायं तब उस प्रान्त में विचरने वाले सभी सम्प्रदायों के साधु-मुनिराज अपने शिष्यों को पढाने के लिये वहां भेजे ऐसी प्रार्थना की जाती है।

प्रस्ताव १६—(साम्प्रदायिक-मंडल विरोध के विषय में)

यह कॉन्फरन्स समाज से अनुरोध करती है कि समाज का संगठन बढ़ाने के लिये और साम्प्रदायिक क्लेश न बढ़े इसके लिये साम्प्रदायिक-संगठनों की स्थापना न करे।

प्रस्ताव १७—(जैन-गणना के विषय मे)

अखिल भारतवर्ष के स्था० जैनों की संख्या तथा वास्तविक परिस्थिति का अभ्यास करने के लिये जन-गणना करना नितान्त आवश्यक है। अतः यह निर्णय किया जाता है कि इस कार्य को आरंभ कर दिया जाय इसके लिये कॉन्फरन्स-ऑफिस द्वारा तैयार किये गये फॉर्म सभी संघों को भेज दिये जायं और अमुक समय की मर्यादा में उनसे वापिस भरवाकर भिजवा देने का अनुरोध किया जाय।

प्रस्ताव १८—(स्था० जैन-गृह बनाने के विषय में)

व्यापार, उद्योग या नौकरी के लिए दूर-देशावरों मे अपने स्वधर्मी-भाई निर्भयता और आसानी से जा सके और परदेश मे स्वधर्मी-भाइयों के सहवास मे रह कर उनके सहयोग से व्यापार-धंधों द्वारा अपने जीवन को सुख-शांतिमय बना सकें इसके लिए हिंद से बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, करांची, अहमदावाद, दिल्ली, इन्दौर, कानपुर आदि बड़े २ व्यापार-केन्द्रों मे तथा हिन्द से बाहर रंगून, एडन, मोम्बासा, कोवे (जापान) आदि केन्द्रों मे अपने स्वधर्मी भाइयों को उचित रूप से रहने और खाने की सुविधा मिले, ऐसी व्यवस्था के साथ-साथ श्री स्थानकवासी जैन-गृह, (S. S. Jain Homes) सर्वत्र स्थापित करने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। आर्थिक प्रश्न का निवारण करने और इस योजना को अमल मे लाने के लिये उन २ केन्द्रों के श्री संघों और श्रीमन्त सज्जनों से भलामण करती है।

प्रस्ताव २०—हिन्द की स्था० जैनों की व्यापारिक पेढ़ियों, दुकानों और कारखानों के नाम तथा यूनिवर्सिटी में पास हुए ग्रेजुएट—बी० ए० भाई-बहिन अपने नाम के साथ १) रु०, कॉन्फरन्स-ऑफिस को भेज दे। उनके नाम कॉन्फरन्स की तरफ से पुस्तक-रूप मे प्रकट किये जायेंगे।

प्रस्ताव २२—(पार्श्वनाथ-विद्याश्रम, बनारस के विषय मे)

'श्री सोहनलाल जैन धर्म-प्रचारक-समिति, अमृतसर'—जो जैन-दर्शन और इतिहास के उच्चाभ्यास के लिए स्था० जैन विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देती है, जिसका कार्य श्री पार्श्वनाथ-विद्याश्रम, बनारस द्वारा हो रहा है उसे यह कॉन्फरन्स पसंद करती है और स्था० विद्यार्थियों तथा श्रीमन्तो का ध्यान उस तरफ आकर्षित करती है।

प्रस्ताव २३—(जैनों की एकता के विषय मे)

यह कान्फरन्स जैन-समाज की एकता का आग्रह पूर्वक समर्थन करती है और जब कभी परस्पर की एकता में बाधक प्रसंग खड़ा हो तो उसका योग्य उपाय कर एकता को पुष्ट करने का प्रयत्न करने के लिए हर एक स्था० जैन भाई-बहिन से प्रार्थना करती है। जैन समाज के तीनों फिर्कों के कतिपय मान्यता-भेद बाजू रख कर परस्पर मे समान रूप से स्पर्श करने वाले ऐसे अनेक प्रश्नों की चर्चा करने के लिए तथा आन्तरिक एकता बढ़ाने

के लिये समस्त जैन समाज की संयुक्त-परिषद् बुलाने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। और ऐसी को योजना होगी तो उसमें पूर्ण सहयोग देना जाहिर करती है।

प्रस्ताव २५-(बेकारी निवारण के विषय में)

अपने समाज में व्याप्त बेकारी निवारण के लिये आज की यह सभा (Jain unemployment Information Bureau) स्थापित करने का निश्चय करती हैं। अपनी समाज के श्रीमन्त और उद्योगपतियों से विनती करती है कि वे शक्य हों उतने जैन भाइयों को अपने यहां काम पर लगा कर इस बेकारी को कम करें।

प्रस्ताव २७-श्री अखिल भारतवर्षीय स्था० जैन संघों का प्रतिनिधित्व करने वाली यह कॉन्फरन्स श्री राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति वर्धा के संचालकों से विनती करती है कि समिति की परीक्षाओं की पाठ्य पुस्तकों में जिस तरह अन्य धर्मों के विशिष्ट पुरुषों का चरित्र-वर्णन दिया गया है उसी तरह जैन-महापुरुषों का जीवन-चरित्र भी देने की आवश्यकता समझें। शेष प्रस्ताव धन्यवादात्मक थे।

घाटकोपर का यह दसवां अधिवेशन, फंड की दृष्टि से भी सर्वोत्तम रहा। पूना-बोर्डिंग के लिये ४५ हजार का फंड जमा हुआ। स्त्री शिक्षण और विधवा सहायक-फंड में भी १० हजार रु० का फंड हुआ। दूसरी विशेषता इस अधिवेशन की यह थी कि कॉन्फरन्स के पुराने विधान मे परिवर्तन कर नया लोकशाही-विधान बनाया गया जिसमें सदस्य फीस १) रु० रख कर हर एक भाई को सभासद का अधिकार दिया गया था।

अ० भा० श्वे० स्था० जैन युवक-परिषद

स्था० जैन युवक-परिषद का द्वितीय-अधिवेशन ता० १०--४--४१ को घाटकोपर में हुआ। प्रमुख के स्थान पर पंजाब के सुप्रसिद्ध लाला हरजसराय जी जैन B. A. शोभायमान थे। स्वागताध्यक्ष थे डा० बृजलाल धरमचंद मेघाणी। सभा में कुल १८ प्रस्ताव पास किये गये, जिनमें से मुख्य ये थे:--

(४) वीर-संघ की योजना (६) सर्वदेशीय शिक्षा-प्रचारक-फंड की योजना (७) आर्थिक-असमानता निवारण (८) ऐच्छिक-वैधव्य पालन अर्थात् बलात् नहीं। (६) जैनों के तीनों फिर्कों का एकीकरण (१२) स्त्री-शिक्षा प्रचार (१४) जैन बैंक की स्थापना (१७) जैन युवक-संघ की स्थायी संस्था बनाना (१८) युवक-संघ का विधान बनाना आदि २। लाला हरजसरायजी जैन का भाषण बड़ा मननीय था। आपने सामयिक समस्याओं पर अच्छा प्रकाश डाला था।

स्था० जैन महिला-परिषद

घाटकोपर-अधिवेशन के समय महिला-परिषद का भी आयोजन किया गया था, जिसकी अध्यक्षा थीं श्रीमती नवलबेन हेमचंदभाई रामजीभाई मेहता। आपका भी भाषण बड़ा सुन्दर था जिसमें स्त्री-समाज की उन्नति के उपाय बताये गये थे।

सम्मेलन मे स्त्री शिक्षा-प्रचार, समाज-सुधार, प्रौढ़-शिक्षण आदि कई प्रस्ताव पास किये गये थे।

ग्यारहवां-अधिवेशन, स्थान-मद्रास

घाटकोपर-अधिवेशन से लगभग ८ साल बाद कॉन्फरन्स का ग्यारहवां अधिवेशन सन् १६४६ ता० २४-२५-२६ को मद्रास मे किया गया। जिसकी अध्यक्षता बम्बई लेजिस्लेटिव-असेम्बली के स्पीकर माननीय श्री

कुन्दनमलजी फिरोदिया ने की। स्वागताध्यक्ष सेठ मोहनमलजी चोरडिया, मद्रास थे। अधिवेशन का उद्‌घाटन मद्रास-राज्य के मुख्य मंत्री श्री कुमारस्वामी राजा ने किया था।

दूर प्रान्त से यह अधिवेशन होने पर भी समाज में जागृति की लहर व्याप्त हो गई थी। उपस्थिति ५-६ हजार के लगभग हो गई थी। अधिवेशन व्यवस्था बहुत अच्छी थी। आने वाले महमानों को हर तरह की सुविधा प्रदान की गई थी। विगत अधिवेशनों से यह अधिवेशन अपने ढंग का अलौकिक ही था, जो आज भी लोगों की जबान पर छाया हुआ है।

इस अधिवेशन में सभी मिलाकर १६ प्रस्ताव पास किए गये। कार्यवाही का संचालन बड़ी सुन्दरता से प्रमुख महोदय ने किया। कई पैचीदे प्रश्न भी उपस्थित हुए थे, परन्तु उन सबका निराकरण बड़ी शांति के साथ हुआ। इसका श्रेय इस अधिवेशन के सुदक्ष और योद्धा प्रमुख श्री फिरोदियाजी सा० को ही है।

अधिवेशन की सफलता के लिए कई तार व संदेश प्राप्त हुए थे जिनमें से मुख्यतः—भारत के प्रथम गवर्नर-जनरल माननीय श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य, दिल्ली-केन्द्रीय-सरकार के रेल्वे-मंत्री माननीय श्री के० संथानम्, दिल्ली-केन्द्र धारा-सभा (Parliament) के स्पीकर माननीय श्री गणेशवासुदेव मावलंकर, दिल्ली-बम्बई प्रांत के मुख्य मंत्री श्री बी० जी० खेर, बम्बई, श्री नगीनदास मास्टर श्री भू० पू० प्रमुख बम्बई प्रांतीय-कांग्रेस कमेटी, बम्बई, श्री एल० एल० सीलम, बम्बई, श्री सिद्धराज ढढ्ढा, जयपुर, श्री मेघजी सोजपाल, प्रमुख-जैन श्वेताम्बर-कॉन्फरन्स, बम्बई, श्री चीनु भाई लालभाई सोलीसीटर, बम्बई, श्री दामजी भाई जेठाभाई, मंत्री-श्री जैन श्वे० कॉन्फरन्स, बम्बई, श्री श्रेयांसप्रसादजी जैन, बम्बई, श्री अमृतलाल कालीदास जे० पी० बम्बई, श्री कांतिलाल ईश्वरलाल जे० पी० बम्बई, श्री शांतिलाल एम० शाह बम्बई, राय बहादुर राज्य-भूषण सेठ श्री कन्हैयालालजी भण्डारी, इन्दौर, कॉन्फरन्स के भूतपूर्व प्रमुख श्री हेमचदभाई रामजीभाई मेहता, गोंडल, दीवान बहादुर श्री मोतीलालजी मूथा, सतारा, श्रीमान् सेठ भैरोंदासजी सेठिया, बीकानेर, सेठ श्री शांतिलाल मगलदास, अहमदाबाद, सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया, भीनासर और ला० हरजसरायजी जैन, अमृतसर थे।

इस अधिवेशन मे कुल १६ प्रस्ताव पास हुए थे जिनमे से मुख्य २ ये हैं:—

प्रस्ताव १—सैकड़ों वर्षों की गरीबी और अज्ञानतापूर्ण गुलामी के बाद विश्वव्यापी प्रचड ब्रिटिश-सल्तनत से अहिंसक मार्ग द्वारा भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई, यह समस्त हिन्दुस्तानियों के लिए महान् गौरव, स्वाभिमान और आनद का विषय है। आजादी के बाद प्रथम बार होने वाला कॉन्फरन्स का यह अधिवेशन भारत को प्राप्त आजादी के लिए अपना हार्दिक आनंद व्यक्त करता है। हिंद जैसे महान भव्य और प्राचीन राष्ट्र की आजादी विश्व के लिए अति महत्व का प्रसंग है। इससे वर्तमान विश्व के अन्तर्राष्ट्रीय-प्रवाह मे अनेक परिवर्तन होना संभव है तथा समस्त एशियाई प्रजा में नूतन जागृति पैदा होगी। इस प्रकार हिन्द आजाद होने से समस्त विश्व को विशिष्ट अहिंसक-प्रकाश और मार्ग-दर्शन मिलेगा और विश्व की समस्त गुलाम-प्रजा का मुक्ति-मार्ग सरल होगा।

प्रस्ताव ५—(जन-गणना के सम्बन्ध मे) श्री श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स का यह अधिवेशन केन्द्रीय-सरकार से प्रार्थना करता है कि आगामी जन-गणना के समय हिन्दू, मुस्लिम, पारसी, सिक्ख, क्रिश्चियन जैसे धर्मवाचक शब्द हैं वैसे जैन भी धर्म-वाचक शब्द होने से जन संख्या की जानकारी के लिए 'माहिती-पत्रक' मे जैन का भी कॉलम रखा जावे और उसे भरने वालों को यह विशेष रूप से सूचना दी जावे कि जनता को पूछकर जैन हों तो

उनके नाम जैन कालम में भर दिये जायं। साथ ही जैन भाइयों को सूचित किया जाता है कि आगामी जन-गणना में वे अपना नाम जैन कॉलम में ही लिखावें।

इस प्रस्ताव की नकल केन्द्रीय-सरकार के गृह-विभाग को भेजने की सत्ता प्रमुख श्री को दी जाती है।

प्रस्ताव ६- (संघ-ऐक्य योजना के लिये)

धर्म और समाज के उत्थान के लिए संगठन और उच्च चरित्र की आवश्यकता है। स्था० जैन धर्म में भी वर्षों से संगठन का विचार चल रहा है। अजमेर का साधु सम्मेलन भी इसी विचार का फल था। अजमेर व घाटकोपर के अधिवेशनों में भी यही आन्दोलन था। संगठन की अखंड विचारधारा से ता० २२-१२-४८ को ब्यावर में कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी हुई उसमें संघ-ऐक्य का प्रस्ताव हुआ। ब्यावर श्री-संघ ने संघ-ऐक्य की त्रिवर्षीय प्रतीक्षा की और जनरल-कमेटी के बाद तुरन्त ही मान्यवर फिरोदिया जी सा० के नेतृत्व में डेप्युटेशन संघ ऐक्य के लिये निकल पड़ा। संघ-ऐक्य की योजना बनाई गई, जिसमें प्रारंभ में एकता की भूमिका रूप सात कलमें तात्कालिक अमल में लाने की तथा स्थायी रूप में एक आचार्य और एक समाचारी में सभी स्था० जैन सम्प्रदायों का एक श्रमण संघ बनाने की योजना तैयार की गई। इस योजना के यह अधिवेशन हृदय से स्वीकार करता है और उसकी सिद्धि में स्था० जैन धर्म का उत्थान देखता है। आज तक कॉन्फरन्स ने इसके बारे में जो कार्य किया है उसके प्रति यह अधिवेशन संतोष व्यक्त करता है।

जिन सम्प्रदायों के मुनिवरों और श्री-संघों ने इसे स्वीकार किया है, उन्हें यह अधिवेशन साभार धन्यवाद देता है, वैसे ही जिन्होंने अजमेर साधु सम्मेलन के प्रस्तावों का पालन किया है उनका भी आभार मानता है। और जिनकी स्वीकृति नहीं मिली है उनसे साग्रह अनुरोध करता है कि वे यथाशीघ्र संघ-ऐक्य की योजना को स्वीकार करें।

प्रस्ताव ७—(साधु-सम्मेलन बुलाने के विषय में)

यह अधिवेशन संघ-ऐक्य योजना को सफल बनाने के लिए भारत की सभी सम्प्रदायों का सम्मेलन योग्य स्थान व समय पर बुलाने की आवश्यक्ता महसूस करता है और साधु-सम्मेलन बुलाने के लिए तथा उस कार्य में सर्व प्रकार से सहयोग देने के लिए निम्न सदस्यों की एक 'साधु सम्मेलन नियोजक समिति' नियुक्त करता है। बृहत्साधु-सम्मेलन दो वर्ष तक में बुला लेना चाहिये और इसकी पृष्ठ भूमिका तैयार करने के लिये यथावश्यक प्रांतीय साधु-सम्मेलन करना चाहिये। इसका संयोजन श्री धीरजलाल केशवलाल तुरखिया करेंगे। समिति के निम्न सदस्य हैं:—

श्री धीरजलाल के० तुरखिया, ब्यावर, श्री जवाहरलालजी मुणोत, अमरावती, श्री गिरधरलाल दामोदर दफ्तरी, बम्बई, श्री शांतिलाल दुर्लभजी जौहरी, जयपुर, श्री देवराजजी सुराना, ब्यावर, श्री सरदारमलजी छाजेड, शाहपुरा, श्री हरजसरायजी जैन, अमृतसर, श्री गणेशमलजी बोहरा, अजमेर, श्री आनंदराजजी सुराना, दिल्ली, श्री जगजीवन दयाल बम्बई, श्री वल्लभजी लेराभाई सुरेन्द्रनगर, श्री बालचंदजी श्री श्रीमाल रतलाम, श्री खेतशीभाई खुशालचंद कोठारी, श्री जादवजी मगनलाल भाई वकील, सुरेन्द्रनगर, श्री जसवन्तमलजी इन्जीनियर, मद्रास। इस समिति को आवश्यकतानुसार विशेष सदस्यों को सम्मिलित करने की सत्ता दी जाती है।

प्रस्ताव ६—(धार्मिक-संस्थाओं का संयोजन)

(अ) समस्त स्थानकवासी समाज मे धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कार्य करने वाली संस्थाओं का निम्न प्रकार से Affiliation (सयोजन) करने का यह अधिवेशन ठहराव करता है।

(१) संस्थाओं का एफिलिएशन करने की सत्ता मैनेजिंग-कमेटी को रहेगी।

(२) एफीलिएशन फीस २) रु० रहेगी। (३) एफीलिएशन करने की अर्जी के साथ संस्था को अपने विधान की नकल और अन्तिम वर्ष का आय-व्यय का हिसाब भेजना पड़ेगा।

(४) एफीलिएटेड संस्था को प्रति वर्ष आय व्यय का पक्का हिसाब एवं वार्षिक विवरण भेजना पड़ेगा

(५) 'जैन प्रकाश' एफीलिएटेड संस्था को २५ प्रतिशत कम चदे मे भेजा जायगा।

(६) 'जैन प्रकाश' मे सिर्फ एफीलिएटेड-संस्थाओं के ही समाचार विवरण एवं आर्थिक सहायता की अपीलें प्रकट होंगी। (७)एफीलिएटेड संस्थाओं की सूची प्रतिवर्ष जनरल कमेटी मे रखी जायगी। (८) शक्य होगा वहां एफीलिएटेड संस्था को कॉन्फरन्स आर्थिक सहायता देगी।

(ब) पाठशालाएें, जैन कन्याशालाएें तथा अन्य जैन शिक्षण-संस्थाओं को सुव्यवस्थित और सम्बन्धित करने के लिये तथा धार्मिक-शिक्षण के प्रचार के लिये यथाशक्य व्यवस्था करना यह अधिवेशन आवश्यक समझता है और इसको सक्रिय बनाने के लिये एक सुयोग्य-विद्वान निरीक्षक रख कर कार्य करने के लिये कॉन्फरन्स-ऑफिस को सत्ता देता है।

प्रस्ताव ६—(तीनों फिर्कों की एकता के लिये)

वर्तमान प्रजातंत्रीय-भारत मे जैन समाज को सुदृढ़, एक और अखडित रखना बहुत आवश्यक है। क साम्प्रदायिक-मान्यता-भेदों को दूर रख कर जैनों के तीनों फिर्कों की सामान्य बाते और मूल-सिद्धान्तों पर एक होकर कार्य करने को प्रवृत होना चाहिये। अतः यह अधिवेशन अपने श्वेताम्बर और दिगम्बर भाइयों की महासभाओं से सम्पर्क रख कर समस्त जैनों के सगठन की प्रवृत्ति मे ही शासन-उन्नति मानता है। और इसके लिए सक्रिय प्रयत्न करते रहने का कॉन्फरन्स-ऑफिस को आदेश देता है।

प्रस्ताव १०—(धार्मिक पाठ्य-पुस्तकों के विषय मे)

धार्मिक-शिक्षण समिति द्वारा जैन विद्यार्थियों के लिये पाठ्य पुस्तके जनरल-कमेटी की सूचनानुसार तैयार कराई है, जिनमे से दो पुस्तके हिन्दी मे छप गई है और पांच पुस्तके छपने वाली हैं। इस कार्य पर यह अधिवेशन संतोष प्रकट करता है और रतलाम व पाथर्डी परीक्षा-बोर्ड को तथा सब स्था० जैन शिक्षण संस्थाओं को इन पाठ्य-पुस्तकों को पाठ्य-क्रम में स्थान देने का साग्रह अनुरोध करता है।

प्रस्ताव १२—(सरकारी-कानून के बारे में)

अ० भा० श्वे० स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स का यह अधिवेशन भारत की वर्तमान प्रजातत्रीय-केन्द्रीय और प्रांतीय-सरकारों से मान पूर्वक किन्तु दृढ़ता पूर्ण सानुरोध करता है कि नये २ ऐसे कानून न बनायें जायं जिससे कि जैनधर्म की मान्यताओं, सिद्धांतों और संस्कृति को बाधा पहुँचती हो अथवा जैनों के दिल दुखते हों। सरकार की शुभ भावना और दिल दुखाने की वृत्ति न होने पर भी धार्मिक मान्यता और सिद्धांतों के रहस्य की अनभिज्ञता के कारण गत वर्षो मे कुछ ऐसी घटनाएें लोगों के सामने आई है। जैसे कि:—

(अ) हिन्दू शब्द की व्याख्या स्पष्ट करते हुए हिन्दू व्याख्या मे जैनियों का समावेश करना।

नोटः—हिन्द की प्रजा के किसी वर्ग का या अमुक एक धर्म का अनुयायी तरीके उल्लेख किया जावे तब जैनों का स्पष्ट और स्वतंत्र उल्लेख करना चाहिये।

(ब) बेकार भिखारियों में ही अपरिग्रही और आत्मार्थी साधु-मुनियों को गिन लेना । (क) दीक्षार्थियों के अभ्यास की योग्यता के विषयों में कानूनी पराधीनता लाना आदि । धर्म और संस्कृति के संरक्षण के लिए जैन धर्म को स्वतंत्र रखना चाहिये ।

यह प्रस्ताव केन्द्रीय और प्रांतीय-सरकारों के मुख्य मंत्रियों को भेजने की सत्ता प्रमुख श्री को दी जाती है।

प्रस्ताव १३—(पशु-वध बंदी के लिये)

यह अधिवेशन वर्तमान भारत-सरकार को श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखता है, क्योंकि भारत सरकार महात्मा गांधीजी के सत्य और अहिंसा के सिद्धान्त को मानती है । अतः सरकार से सानुरोध प्रार्थना करता है कि भारतवर्ष में गो वध और दूध देने वाले मवेशियों का कत्ल कानून द्वारा रोका जावे तथा खेती की रक्षा के लिये बंदर, सुअर, रोज, हिरण आदि पशुओं को मारने के लिए प्रान्तीय सरकारें जो कानून बनाती हैं वे न बनाये जायं, जिससे राष्ट्र का हित होगा तथा अहिंसक गौ प्रेमी भारतवासियों के दिल को सन्तोष होकर भारत सरकार के प्रति श्रद्धा बढ़ेगी ।

इस प्रस्ताव की नकल केन्द्रीय धारा-सभा के प्रधान को भेजने की सत्ता प्रमुख श्री को दी जाती है ।

प्रस्ताव १४—(साहित्य-सर्टिफाइ तथा तिथि-निर्णय-समिति)

यह अधिवेशन कॉन्फरन्स की विविध प्रवृत्तियों को सुव्यवस्थित और वेग पूर्वक चलाने के लिए निम्नोक्त विभिन्न समितियां नियुक्त करता है । इससे पूर्व बनी हुई समितियों के सदस्य मौजूद नहीं हैं और कुछ नये उत्साही कार्य-कर्ताओं की आवश्यकता होने से पुरानी समितियों की पुनर्रचना इस प्रकार की जाती है:—

(क) साहित्य सार्टिफाइ-समिति—अपने समाज में साहित्य प्रकाशन का कार्य बढ़ाना जरूरी है, किन्तु साहित्य जितना भी हो, समाज एवं धर्म को उपयोगी होना चाहिये । अतः प्रकाशन-योग्य साहित्य को प्रमाणित करने के लिये निम्न मुनिवरों और श्रावकों की एक समिति बनाई जाती है । इस प्रकार का साहित्य कॉन्फरन्स-ऑफिस द्वारा उक्त समिति को भेजकर प्रमाणित करा कर प्रकट किया जावे ।

पूज्य श्री आत्मारामजी म०, श्री आनंदऋषिजी म०, श्री उपा० श्री अमरचंदजी म०, प्रवर्तक श्री पन्नालालजी म०, श्री धीरजलाल के० तुरखिया, श्री हरजसरायजी जैन, श्री बालचंदजी श्रीश्रीमाल, श्री दलसुखभाई मालवणिया,

कॉन्फरन्स-ऑफिस कम से कम २ मुनिवर और गृहस्थों की अनुमति लेकर इस पर प्रमाण-पत्र देगी । जिसके पास साहित्य अवलोकनार्थ भेजा जाय वे अधिक से अधिक १ मास में देखकर अपने अभिप्रायों के साथ साहित्य लौटा देवें । कॉन्फरन्स-आफिस ४ मास के अन्दर २ प्रमाण पत्र या अभिप्राय लेखक को लौटा दे । जो मुनिराज और श्रावक साहित्य-प्रकाशन करने की इच्छा रखते हैं उनको यह अधिवेशन अनुरोध करता है कि वे अपना साहित्य प्रमाणित करके प्रसिद्ध करें ।

(ब) तिथि निर्णायक-समितिः—वार्षिक तिथियां और पर्व तिथियों का निर्णय करके प्रकाशित करने के लिये निम्न सदस्यों की समिति बनाई जाती है ।

पूज्य श्री हस्तीमलजी म०, प्रवर्तक श्री पन्नालालजी म०, पं० मुनि श्री छोटेलालजी म० पं० मुनि श्री अमरचंदजी म०, पूज्य श्री ईश्वरलालजी म०, श्री उमरसी कानजीभाई भाराणी देशलपुर, श्री हर्षचंद कपूरचंद दोशी

बम्बई, श्री खीमचंद मगनलाल वोरा बम्बई, श्री धीरजलाल के० तुरखिया व्यावर, श्री चुनिलाल कल्याणजी कामदार बम्बई ।

उक्त सदस्यों के अभिप्राय एकत्रित करके कॉन्फरन्स-ऑफिस अंतिम निर्णय करेगी ।

प्रस्ताव १५—(जिनागम-प्रकाशन के लिये)

कॉन्फरन्स की जयपुर जनरल-कमिटी के प्रस्ताव नं० १२ के अनुसार जिनागम-प्रकाशन-समिति व्यावर ने जो कार्यारम्भ किया है और अभी जो मूल-पाठों का संशोधन करा कर अनुवाद का कार्य किया जा रहा है, इस कार्य से यह अधिवेशन संतोष प्रकट करता है और अब प्रकाशन प्रारम्भ करना जरूरी समझता है। प्रकाशन प्रारंभ होने से पहले पूज्य श्री आत्मारामजी म०, पूज्य श्री आनन्दऋषिजी महाराज, पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज, और पं० हर्षचन्द्रजी महाराज को बता कर बहुमत से मिलने वाले संशोधन पूर्वक इसे प्रकाशित किया जाये ।

आर्थिक-व्यवस्था के लिये कॉन्फरन्स-ऑफिस को निम्न प्रकार से व्यवस्था करने की सूचना दी जाती है:—

(क) आगम प्रकाशन के लिए एक लाख रुपये तक का फंड करे ।

(ख) आगम प्रेमी श्रीमानों से एक आगम-प्रकाशन खर्च का वचन ले ।

(ग) आगम-बत्तीसी की ग्राहक संख्या अधिकाधिक प्राप्त करने का प्रयास करे ।

प्रस्ताव १६—(श्राविकाश्रम के लिये)

ब्यावर की गत सामान्य सभा मे श्राविकाश्रम-फंड को और अधिक बढ़ाने के लिये जो प्रस्ताव हुआ था उसे मूर्त स्वरूप देने मे श्री टी० जी० शाह, श्री लीलाबेन कामदार तथा श्री चंचलबेन शाह ने जो परिश्रम उठाया था उस के लिये आज का यह अधिवेशन उनको हार्दिक धन्यवाद देता है ।

घाटकोपर मे आगरा रोड पर खरीदे गये ८५०००) रु० के मकान को यह सभा मान्य करती है ।

उक्त मकान को आवश्यकतानुसार ठीक करा कर उसमें श्राविकाश्रम शुरु करने तथा उसकी व्यवस्था करने के लिये और आवश्यक नियमादि बनाकर श्राविकाश्रम संचालन के लिये एक समिति नियुक्त करने की सत्ता जनरल-कमेटी को दी जाती है ।

प्रस्ताव १७—(विधान संबधी)

यह अधिवेशन कॉन्फरन्स की विधान-समिति के द्वारा तैयार किये गये और जनरल-कमेटी के द्वारा संशोधित हुए विधान को मंजूर करता है ।

प्रस्ताव १८— (बाल-दीक्षा विरोधी प्रस्ताव)

दीक्षा देने के लिये यह आवश्यक है कि जिसको दीक्षा दी जावे वह इस योग्य हो कि दीक्षा के अर्थ और मर्म को समझ सके । साधु-जीवन का ग्रहण करना इतने महत्व का है कि वह बाल्यावस्था के बाद ही किया जाना चाहिये । बाल-दीक्षा के अनेक प्रकार के अनिष्ट परिणाम वर्तमान मे देखे गये है । यह कॉन्फरन्स हमारे पूज्य मुनिवरों एवं महा सतियों से सविनय प्रार्थना करता है कि वे देशकाल एवं समय की गतिविधि का ध्यान रखते हुए राजकीय कानून बने उसके पूर्व ही १८ वर्ष से कम उम्र के किसी भी बालक को दीक्षा न देने का निश्चय करके देश के सामने आदर्श उपस्थित करे ।

अगर कोई दीक्षार्थी कुछ कम उम्र का हो व उसकी सर्वदेशीय योग्यता मालूम होती हो तो कॉन्फरन्स के सभापति को अपवाद रूप में उसे दीक्षित कराने के बारे मे सम्मति का अधिकार दिया जाता है ।

शेष प्रस्ताव धन्यवादात्मक थे। इस अधिवेशन में आने वाले भाइयों की भोजन व्यवस्था के लिए स्व० जैसिंगभाई की तरफ से २५ हजार रुपये प्रदान किये गये थे। इस अधिवेशन के स्वागत-मंत्री श्री ताराचन्दजी गेलडा और श्री जसवन्तमलजी इंजीनियर थे। खजांची श्रीमान इन्द्रचन्दजी गेलडा और शंकरलालजी श्रीश्रीमाल थे। अधिवेशन की व्यवस्था में श्रीमान् मांगीचन्दजी भंडारी, श्री शंभूमलजी वेद, श्री सूरजमलभाई जौहरी, श्री कन्हैयालाल ईश्वरलाल, डॉ० यू० एम० शाह, श्री खींवरावजी चोरडिया, श्री मगनमलजी कुंभट, श्री भागचन्दजी गेलडा, श्री कपूरचन्दभाई सुतरिया-केप्टेन-स्वयं-सेवक दल एवं श्रीमती सवितावेन गिजुभाई-नायिका महिला स्वयं सेविका दल का प्रमुख हाथ था। इस अधिवेशन की फिल्म भी उतारी गई थी।

इस अधिवेशन के मौके पर ही भारत जैन-महामंडल का भी वार्षिक-अधिवेशन किया गया था। स्था० जैन युवक-सम्मेलन व महिला-परिषद् भी हुई थी, जिसका विवरण आगे दिया गया है।

अ० भा० श्वे० स्था० जैन युवक-परिषद का तृतीय-अधिवेशन स्थान—मद्रास

युवक परिषद का तीसरा अधिवेशन मद्रास में ता० २५—१२—४६ को श्रीयुत दुर्लभजी भाई केशवजी खेताणी, वम्बई की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। अध्यक्ष महोदय का भाषण काफी विचारणीय था जिसमें आधुनिक प्रश्नों की चर्चा की गई थी।

इस परिषद में कुल ११ प्रस्ताव पास किये गये थे जिनमें से मुख्य ये हैं:—

प्रस्ताव ३—(संघ-ऐक्य योजना में सहयोग देना)

यह संघ निश्चय करता है कि अ० भा० श्वे० स्थानकवासी कॉन्फरन्स की तरफ से सम्प्रदायों को समाप्त कर जो वृहत्साधु-संघ बनाने का निश्चय किया गया है, जिसके लिये कार्य भी शुरु कर दिया गया है, उस कार्य को पूर्णतया सफल बनाने में हार्दिक-सहयोग देंगे और उसके लिए जितने भी त्याग की आवश्यकता होगी वह करने के लिए कटिबद्ध रहेंगे।

प्रस्ताव ४—(खेती का कार्य अपनाने के विषय में)

यह परिषद युवकों से आग्रह करती है कि दिन-प्रतिदिन बढ़ती हुई बेकारी और भविष्य में आने वाली आर्थिक मंदी को लक्ष्य में रखकर युवकों को हुनर, उद्योग और खेती की तरफ अपना लक्ष्य केन्द्रित करना चाहिए। विशेषतः सामुदायिक खेती का कार्य करते हुए अपनी आजीविका के साथ देश की अन्न की कमी को पूरी करने में अपना पूर्ण सहयोग दें।

प्रस्ताव ५—(जन-गणना के लिए प्रचार)

सन् ५०-५१ में भारत-सरकार की ओर से सारे देश की जन-गनणा होने वाली है। जैनों की सही संख्या जानी जा सके, इसके लिये यह परिषद युवक-मंडलों तथा जैन भाइयों से प्रार्थना करती है कि वे जाति या धर्म के खाने में अपने को जैन ही लिखावे। इस कार्य के लिये यह परिषद अध्यक्ष महोदय को यह अधिकार देती है कि योग्य कार्य-कर्ताओं की एक प्रचार-समिति का निर्माण करे।

प्रस्ताव ६—(जैन-एकता के विषय में)

जैनों के सब सम्प्रदायों में आपसी प्रेम, भाई-चारा और सहयोग-भावना की वृद्धि के लिए अपनी स्व-साम्प्रदायिक मान्यता का पालन करते हुए भी दूसरे कई क्षेत्रों में, खास कर सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक

क्षेत्रों में सब सम्प्रदायों के युवक जैनधर्म और समाज को स्पर्श करने वाले विषयों में एकमत होकर मिले-जुले और एक मंच पर एकत्र हो सके ऐसे प्रयत्न करने के लिये यह परिषद् युवकों से प्रार्थना करती है

भारत जैन-महामंडल और भारतीय जैन स्वयं सेवक-परिषद् जैसी संस्थायें इस दिशा में जो प्रयत्न कर रही हैं, उन्हें यह परिषद् आदर की दृष्टि से देखती है और उनके कार्यों की प्रगति के लिये जैन युवक-परिषद् के कार्य-कर्ताओं से प्रार्थना करती है।

प्रस्ताव ७—(जाति-भेद निवारण)

समय के प्रभाव को देखते हुए यह परिषद् जैन धर्मावलम्बियों में प्रचलित जाति-भेद के निवारण को बहुत आवश्यक मानती है। दस्सा-बीसा, ढाया-पांचा ओसवाल, पोरवाल आदि जाति-भेद के कारण पारस्परिक सामाजिक संबंधों में कई कठिनाइयां आती हैं, और क्षेत्र संकुचित होने से कई प्रकार की हानियां होती हैं। इस दिशा में आवश्यक कदम बढ़ाने के लिये भिन्न २ प्रान्तों के युवक कार्य-कर्ताओं की एक समिति स्थापित की जाती है, जो इन जातियों में पारस्परिक विवाह संबंधों द्वारा जाति भेद निवारण का प्रयत्न करेगी। परिषद् अपने इस कार्य में कॉन्फरन्स के सहयोग की आशा रखती है।

प्रस्ताव ६—(जैन साहित्य-प्रचार)

अखिल भारतीय श्वे० स्थानकवासी जैन युवक-परिषद् का यह अधिवेशन निश्चय करता है कि हमारी कॉन्फरन्स प्राचीन तथा अर्वाचीन जैन-साहित्य का पर्यालोचन करके कुछ ऐसी पुस्तकें चुने और प्रमाणित करें जिनसे सर्व-साधारण विशेषतया जैन समाज, जैन-संस्कृति का परिचय प्राप्त कर सके। साथ में यह भी निश्चय करती है कि कॉन्फरन्स ऐसे साहित्य को विभिन्न भाषाओं में छपाकर भारत तथा विदेश के विश्व-विद्यालयों को मुफ्त भेजे जिससे समस्त विश्व को एक प्राचीन और महान धर्म की जानकारी मिले।

जैन महिला-परिषद्, स्थान-मद्रास

अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन महिला-परिषद् का अधिवेशन ता० २४—१२—४६ को श्रीमती जमना बहिन नवलमलजी फिरोदिया, अहमदनगर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। परिषद् में पास किये गये कतिपय मुख्य प्रस्ताव इस प्रकार हैं:—

प्रस्ताव ४—(स्त्री-शिक्षण के विषय में)

जमाना बदल गया है। स्त्रियों के लिये पुरुषों के समकक्ष होने के सभी सयोग प्राप्त हैं, ऐसे समय में लग्न के बाजार में मूल्यांकन बढ़े इस दृष्टि से नहीं, किन्तु आर्थिक स्वावलम्बन का गौरव प्राप्त हो और मुसीबत में सहायक हो उतना शिक्षण वर्तमान में स्त्रियों को मिलना चाहिए और माता-पिता को पढाना चाहिये ऐसा आज की यह परिषद् मानती है।

प्रस्ताव ५—(पर्दा-प्रथा के विरोध में)

मध्यकालीन युग के मुस्लिम राज्य काल में चारित्र के रक्षण के लिए सौन्दर्य को छुपाने के लिए पर्दा-प्रथा प्रचलित हुई थी, किन्तु आज उसकी कोई आवश्यकता नहीं है। इतना ही नहीं वर्तमान में यह प्रथा स्त्रियों के विकास को रोकने वाली और घरेलू व्यवस्था में अति कठिनाइयाँ पैदा करने वाली होने से उनका बिल्कुल त्याग करने और कराने का जोर से प्रयत्न करना चाहिए।

प्रस्ताव ६—(मृत्यु के बाद की कुप्रथा निवारण के विषय में)

किसी की मृत्यु होने पर उसके पीछे रोना-धोना. छाती-पीटना और युवक, युवतियों के हृदयद्रावक

अवसान के बाद खूब घी से चुपड़ी हुई रोटी, दाल, भात, शाक आदि जीमना, तथा वृद्धों की मृत्यु के बाद जीमनवार करना यह बहुत ही घृणास्पद रुढि है। यह प्रथा बिल्कुल बंद करनी चाहिए और प्रत्येक मृतात्मा की शांति के लिए उसके आप्त-जनों को मिल कर दिन के कुछ भाग में नवकार-मंत्र का मौन-जाप करना चाहिए।

प्रस्ताव ७—(लग्न क्षेत्र विशाल करने के विषय में)

लग्न करना यह प्रत्येक मनुष्य का व्यक्तिगत प्रश्न होने पर भी समाजिक जीवन के साथ वह इतना ओत-प्रोत हो गया है कि हमें इसमें समयानुसार परिवर्तन करना चाहिये। हम जैन हैं, भगवान महावीर के अर्थात् श्रमण सस्कृति के उपासक हैं अत. एक ही प्रकार के संस्कारी-क्षेत्र तक अर्थात् समस्त भारत के जैनों तक लग्न की मर्यादा बनाई जाय तो हमारे पुत्र-पुत्रियों को योग्य वर कन्या प्राप्त होने में सरलता होगी। इस कार्य में आज समाज या राज्य का कोई बन्धन नहीं है, केवल मन के बन्धन को तोड़ने का आन्दोलन जगाना चाहिये।

प्रस्ताव ८—(दुःखी बहिनों के लिये आश्रम-व्यवस्था)

(अ) श्वसुर-गृह में दुःखी होने पर भी इज्जत को हानि पहुँचे इस कारण से अथवा लोक-निंदा के भय से पीहर में रखे नहीं, तब ऐसी बहिनें मृत्यु का आश्रय लेती है। ऐसी बहिनों के लिये समाज की ओर से निर्भय-आश्रय स्थान की आवश्यकता है।

(ब) ऐसे मरण-प्रसंग पर समाज को केवल हाहाकार करके, चुप न रहते हुए उस मृत्यु में जो निमित्त-भूत हो उनको कठोर शिक्षा देनी चाहिये तथा पति के दुख से मरने पर उस पुरुष को कोई अपनी लड़की न दे।

प्रस्ताव ९—(संघ-ऐक्य योजना को सहयोग)

सम्प्रदाय-वाद के किले को तोड़ कर संघ-ऐक्य योजना के लिये हमारी कॉन्फरन्स की ओर से जो प्रयत्न हो रहे है, उसमें पुरुषों के साथ बहिनों को भी अपना सहयोग देना चाहिये। इस योजना के भंग करने वाले को कोई सहयोग न दे।

बारहवां-अधिवेशन, स्थान-सादड़ी (मारवाड़)

कॉन्फरन्स का बारहवां अधिवेशन सन् १९५२ को ता० ४-५-६ श्रीमान् सेठ चम्पालालजी सा० बांठिया, भीनासर की अध्यक्षता में सादड़ी (मारवाड़) में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन का उद्घाटन राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री टीकारामजी पालीवाल ने किया। आप के साथ राजस्थान-सरकार के वित्त और शिक्षा-मंत्री श्री नाथुरामजी मिरधा भी थे। स्वागत-प्रमुख श्री दानमलजी बरलोटा, सादड़ी निवासी थे।

यह अधिवेशन ऐतिहासिक-अधिवेशन बन गया था, क्योंकि यह बृहत्-साधु-सम्मेलन के अवसर पर ही किया गया था। इस सम्मेलन और अधिवेशन के समय लग-भग ३५ हजार स्त्री-पुरुष बाहर से आये थे। ग्रीष्म ऋतु होने पर भी व्यवस्थापकों ने जो व्यवस्था की थी वह बहुत सुन्दर थी।

अधिवेशन के सफलता-सूचक तार व पत्र काफी संख्या में आये थे। जिनमें से मुख्य ये थेः—मान० श्री कन्हैयालालजी एम० मुंशी, खाद्य-मंत्री-भारत-सरकार न्यू० दिल्ली, मान० श्री अजीतप्रसादजी जैन पुनर्वासमंत्री-भारत-सरकार, मान० श्री शांतिलालजी शाह, श्रम-मन्त्री—बम्बई सरकार। श्री भोलानाथजी मास्टर, पुनर्वास-मन्त्री-राजस्थान सरकार, श्री यू० एन० ढेबर मुख्यमंत्री—सौराष्ट्र सरकार, श्री रसिकभाई पारिख, गृह-मंत्री—सौराष्ट्र सरकार। जोधपुर महाराणीजी दादीजी साहिबा, जोधपुर। श्री सिद्धीराजजी ढढ्ढा, खेमली। इनके सिवाय स्था० जैन-संघों के व अग्रेसरों के भी शुभ-संदेश प्राप्त हुए थे।

अधिवेशन में कुल १५ प्रस्ताव पास किये गये थे, जिनमें से मुख्य २ निम्न हैं:—

प्रस्ताव २—(जैन-दर्शन को सरकारी पाठ्य-क्रम में स्थान देने के विषय मे)

भारतीय-संस्कृति में जैन-दर्शन, साहित्य, स्थापत्य, प्राकृत और अर्ध-मागधी भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है, परन्तु यह खेदकी बात है कि भारतीय विश्व-विद्यालयों के पाठ्य-क्रम मे उसे योग्य स्थान नहीं दिया गया है। इससे आज का यह अधिवेशन भारत-सरकार एवं सभी विश्व-विद्यालयों से अनुरोध करता है कि भारतीय-संस्कृति के सर्वांगीण-अध्ययन के लिये उपरोक्त विषयों के अध्ययन की भी व्यवस्था करें।

इस सम्बन्ध मे पत्र-व्यवहार तथा अन्य कार्यवाही करने के लिये निम्न सज्जनों की एक समिति नियुक्त की जाती है।

श्री चम्पालालजी बांठिया–प्रमुख-भीनासर, श्री कुंदनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्री चिमनलाल चकुभाई शाह बम्बई, श्री अचलसिंहजी जैन आगरा, श्री हरजसहायजी जैन अमृतसर।

प्रस्ताव ३—(महावीर जयन्ती की छुट्टी के विषय मे)

सन्० १९४० की सरकारी जन-गणना के अनुसार भारत मे जैनों की सख्या लगभग ११ लाख है। परन्तु भारत में जैनों की संख्या २० लाख से भी अधिक है ऐसी जैनों की तीनों मुख्य संस्थाओं की मान्यता है। जैन समाज हमेशा से राष्ट्रवादी रहा है। इतना ही नहीं किन्तु आजादी की लड़ाई मे भी वह आगे रहा है। आजादी प्राप्त होने के बाद भी जैनों ने अपने विशिष्टाधिकार की मांग नहीं की है, बल्कि जब भी ऐसा प्रसंग आया है तो अलग मताधिकार के लिये अपना विरोध ही प्रदर्शित किया है। जैन समाज भारत-सरकार के समक्ष केवल इतनी ही मांग करता है कि जिस अहिंसक-शास्त्र के बल पर आजादी प्राप्त हुई है उस अहिंसा के प्रवर्तक भगवान महावीर के जन्म दिन चैत्र शुक्ला १३ को हिंद भर मे आम छुट्टी के रूप मे मान्य किया जाय।

(२) यह अधिवेशन जैन-समाज को भी अनुरोध करता है कि वह महावीर-जयंती के दिन अपना व्यवसाय व्यपार-धंधा आदि बंद रखें।

(३) बम्बई-सरकार, राजस्थान-सरकार और अन्य जिन २ सरकारों ने 'महावीर जयन्ती' की आम छुट्टी स्वीकृत करली है, उनका यह अधिवेशन आभार मानता है।

प्रस्ताव ४—(धार्मिक पाठ्य-पुस्तकों की मान्यता बढ़ाने के विषय में)

स्थानकवासी जैन-समाज की धार्मिक एवं व्यवहारिक शिक्षण-संस्थाओं में विद्यार्थियों को धार्मिक-शिक्षण देने के लिये कॉन्फरन्स ने विद्वद्-समिति के सहयोग से मैट्रिक तक की कक्षाओं के लिये जो पाठ्य-पुस्तकें तैयार की है, उनमें से चार भाग गुजराती और पांच भाग हिन्दी मे प्रकट हो चुके है। इस कार्य के प्रति यह अधिवेशन संतोष प्रकट करता है और समस्त हिन्द की जैन पाठशालाओं से एवं श्री-संघ के संचालकों से अनुरोध करता है कि वे इन पाठ्य-पुस्तकों को सभी शिक्षण-संस्थाओं में पाठ्य-क्रम के रूप में मंजूर करें।

प्रस्ताव ५—(स्वधर्मी सहायक फंड के विषय मे)

पंजाब-सिंध राहत-फंड मे से सं० २००८ के वर्ष के लिये रू० ५०००) का बजट मंजूर किया गया है। उस रकम को पंजाब-सिंध राहत-फंड में रख कर शेष रकम रु० ७१६०६-२-६ रहते है, जिसमें से दी गई लोन की रकम रू० ५६३९५) लोन खाते मे रखकर शेष रु० १४२११–२–६ स्वधर्मी सहायक-फंड में ले जाने का निश्चित किया जाता है।

(२) लोन खाते में जो रकम जमा आवे, उसके बारे में आगे विचार किया जायगा।

(३) स्वधर्मी सहायक फंड मे ले ली गई रकम की व्यवस्था के लिये निम्नोक्त कमेटी बनाई जाती है:—

श्रीमान् चम्पालालजी बांठिया, श्री कुंदनमलजी फिरोदिया, श्री चिमनलाल चकुभाई शाह, श्री आनंदराजजी सुराना, श्री वनेचंद भाई दुर्लभजी जौहरी, श्री हरजसरायजी जैन, कॉन्फरन्स के एक मानद् मंत्री Ex-officio

प्रस्ताव ६—(जीव-हिंसा रोकने के विषय में)

पशु-पक्षियों का निकास अन्य देशों मे वेक्सीनेशन एवं अन्य प्रयोगों के लिये हो रहा है, उसे एवं प्रान्तीय-सरकारों द्वारा समय २ पर बंदर-जैसे मूक प्राणियों को मारने के जो हुक्म निकाले गये है, ये राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की मान्यता अहिंसा के सिद्धान्त तथा राष्ट्रीय-सरकार की शान के विरुद्ध है। अतः कॉन्फरन्स का यह बारहवां अधिवेशन भारत सरकार से अनुरोध करता है कि यह निकास शीघ्रातिशीघ्र बंद कर दिया जाय एवं बंदर आदि के मारने के जिन प्रान्तों मे हुक्म चालू है वे हुक्म वहां की प्रान्तीय-सरकारें वापस खींच लें। देवी-देवताओं के निमित्त से जिन लाखों पशुओं का वध होता है, उसे बंद करने का भी यह अधिवेशन राष्ट्रीय-सरकार एवं प्रान्तीय सरकारों से अनुरोध करता है।

प्रस्ताव ७–(गौ वध और जीव-हिंसा रोकने के विषय में)

यह कॉन्फरन्स भारत की वर्तमान राष्ट्रीय-सरकार के प्रति आदर और श्रद्धा की दृष्टि से देखती है, क्योंकि हमारी सरकार अहिंसा के परम उद्धारक भगवान महावीर प्ररूपित सिद्धान्त का एवं महात्मा गांधीजी की अहिंसा की नीति का अनुकरण करती है। उनकी इस नीति के अनुसार यह अधिवेशन मध्यस्थ-सरकार को अनुरोध करता है कि

(अ) भारतवर्ष मे गौ-वध एवं दूध देने वाले पशुओं भी एवं मादा-पशुओं के कत्ल को रोकने के लिये खास कानून बनाया जाय।

(ब) कृषि-उद्योग की कही जाने वाली रक्षा के नाम पर प्रान्तीय-सरकारें रोज, बंदर, हिरन, हाथी आदि प्राणियों की हिंसा करने के लिये कायदे बना रही है, उसे एवं प्रान्तीय सरकारों ने जहां २ मछली मारने का आदेश दिया है उसे त्वरित रोका जाय।

यह अधिवेशन स्पष्ट रूप से मानता है कि इस तरह की हिंसा रोकने से, जिन अहिंसा के सिद्धांतों से आजादी मिली है उन सत्य और अहिंसा के सिद्धान्तों का प्रचार होगा और राष्ट्र का भी एकान्ततः हित ही होगा। इतना ही नहीं सत्य, अहिंसा एवं गौरक्षा के प्रेमी भारतवासियों को इससे सन्तोष होगा और परिणाम स्वरूप जनता की राष्ट्रीय-सरकार के प्रति श्रद्धा में विशेष वृद्धि होगी।

प्रस्ताव ८–(आगम-प्रकाशन के लिये)

जयपुर की कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी के प्रस्ताव न० १२ और मद्रास अधिवेशन के प्रस्ताव नं० १५ के अनुसार ब्यावर में आगम-बत्तीसी के मूल-पाठों का संशोधन कार्य हमारे समाज के विद्वान् एवं शास्त्र-विशारद मुनिराजों के मार्ग-दर्शन द्वारा हो रहा है। इन मूल-पाठों का कार्य और पांच अंग-सूत्रों का शब्दानुलक्षी अनुवाद पूर्ण हुआ है। इनमे से 'आचारांग-सूत्र' प्रकाशन हेतु गुरुकुल प्रिंटिंग प्रेस, ब्यावर को सौंपा गया है। इस कार्य को समाज की ओर से अत्याधिक सहयोग मिला है और कई सूत्रों के प्रकाशन के लिये दाताओं की तरफ से नियत रकम भेंट दी गई है, उसकी इस अधिवेशन मे नोंध ली जाती है और आगम-प्रकाशन के इस कार्य के प्रति

संतोष प्रकट किया जाता है। इसे शीघ्र ही पूर्ण करने के लिये आवश्यक कार्यवाही करने का यह अधिवेशन कॉन्फरन्स-ऑफिस को अनुरोध करता है।

प्रस्ताव १०-(साधु-सम्मेलन के विषय में)

कॉन्फरन्स की तरफ से शुरु की गई संघ-ऐक्य योजना जो पिछले तीन वर्ष से चल रही है और जिसे सफल बनाने के लिये कॉन्फरन्स एव साधु-सम्मेलन-नियोजक समिति ने सतत् अविश्रांत प्रयत्न किया है। फलस्वरूप अधिकांश पू० मुनिराजों ने हार्दिक सहयोग दिया है। इतना ही नहीं, परन्तु भीषण गर्मी मे भी अपने स्वास्थ्य की परवाह किये बिना दूर-दूर से उग्र विहार कर बृहत् साधु-सम्मेलन सादड़ी में पधार कर और साम्प्रदायिक मतभेदों को दूर कर प्रेम-पूर्वक सगठित होकर स्थानकवासी जैन-समाज और धर्म के उत्कर्ष के लिये एक आचार्य और एक समाचारी की सुदृढ़ योजना बनाकर 'श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-संघ' की, स्थापना की है, उसके लिये सब मुनिराजों के प्रति यह अधिवेशन सम्पूर्ण श्रद्धा और आदर प्रदर्शित करता है और बहुमान की दृष्टि से देखता है। भगवान महावीर के शासन मे बृहत्-साधु-सम्मेलन एक अद्वितीय और अभूतपूर्व घटना है—जो जैन शासन के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में चिरस्मरणीय स्थान प्राप्त करती है।

(ब) बृहत्-साधु-सम्मेलन-सादड़ी मे हुई कार्यवाही का यह अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स का १२-वां अधिवेशन हार्दिक अनुमोदन करता है और सम्मेलन के प्रस्तावों के पालन मे श्रावकोचित सर्वांगी और हार्दिक सहकार दृढ़ता पूर्वक देने की अपनी सभी तरह की जवाबदारी स्वीकार करता है और इसके लिये हिंद के सभी स्था० जैन-सघों को यह अधिवेशन अनुरोध करता है कि साधु-सम्मेलन के प्रत्येक प्रस्तावों का पूर्ण पालन कराने के लिये सभी अपनी २ जवाबदारी के साथ सक्रिय कार्य करें।

(क) जो-जो सम्प्रदाय और मुनिराजों के प्रतिनिधि सादड़ी साधु-सम्मेलन में किसी कारणवश नहीं पधारे है, उन्हे यह अधिवेशन साग्रह अनुरोध करता है कि वे श्री 'वर्धमान स्था० जैन श्रमण-संघ' मे एक वर्ष मे शामिल हो जायं, इसमे ही उनका व स्था० जैन समाज का गौरव है।

(ड) यह अधिवेशन भारपूर्वक घोषणा करता है कि समस्त हिंद के 'श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-संघ' के संगठन में जो साधु-साध्वीजी शामिल नहीं हो जावेंगे, उनके लिये कॉन्फरन्स को गंभीर विचार करना होगा।

सन् १९३३ में अजमेर साधु-सम्मेलन मे आरभित कार्य आज सफल हो रहा है, इससे यह अधिवेशन हार्दिक सन्तोष प्रकट करता है।

प्रस्ताव ११-सादड़ी बृहत् साधु-सम्मेलन मे हुए 'श्री वर्धमान स्था० जैन श्रमण-सघ' की स्थापना और उसमे बनाये गये विधान और नियमों के पालन कराने के लिये एवं वर्तमान श्रमण-सघ के आचार्य और मंत्री-मंडल के साथ सतत-सम्पर्क मे रह कर साधु-सम्मेलन के प्रस्तावों का अमल कराने के लिये निम्न सभ्यों की को-ऑप्ट करने की सत्ता के साथ एक 'स्थायी समिति' बनाई जाती है।

श्री चम्पालालजी बांठिया-प्रमुख-भीनासर, श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्री धीरजलाल के० तुरखिया-मंत्री-ब्यावर, श्री मोतीलालजी मुथा सतारा, श्री मानकचंदजी मुथा अहमदनगर, श्री देवराजजी सुराना, ब्यावर, श्री मोहनमलजी चौरडिया मद्रास, श्री जवाहरलालजी मुणोत अमरावती, श्री रतनलालजी मित्तल आगरा, श्री वनेचंदभाई दुर्लभजी जौहरी जयपुर, श्री रतनलालजी चौरडिया फलौदी, श्री शांतिलाल मंगलदास शेठ अहमदाबाद,

श्री जेठमलजी सेठिया बीकानेर, श्री जादवजी मगनलाल वकील सुरेन्द्रनगर, श्री जेठालाल प्रागजी रूपाणी जुनागढ़, श्री गांडालाल नागरदास वकील बोटाद, श्री रा० ब० मोहनलाल पोपटभाई राजकोट, श्री सरदारमलजी छाजेड शाहपुरा, श्री अनोपचंद हरिलाल शाह खंभात, श्री वेलजी लखमशी नप्पु बम्बई, श्री चिमनलाल चकुभाई शाह बम्बई, श्री दुर्लभजी केशवजी खेताणी, बम्बई, श्री चिमनलाल पोपटलाल शाह बम्बई, श्री प्राणलाल इंदरजी सेठ बम्बई, श्री गिरधरलाल दामोदर दफ्तरी बम्बई, श्री सुगनराजजी वकील रायचूर, श्री सौभाग्यमलजी कोचेटा जावरा, श्री डॉ० नाराणजी मोनजी वेरा बम्बई, श्री मिश्रीलालजी बाफना मन्दसौर, श्री राजमलजी चौरडिया चालीसगांव, श्री हीराचंदजी खींवसरा पूना, श्री ताराचंदजी सुराना यवतमाल, श्री चिम्मनसिंहजी लोढ़ा ब्यावर, श्री सेठ छगनमलजी मूथा बंगलौर, श्री हीरालालजी नांदेचा खाचरोद, श्री चांदमलजी मारू मंदसौर, श्री सुजानमलजी मेहता जावरा, श्री बापूलालजी बोथरा रतलाम, श्री रतनचंदजी सेमलानी सादड़ी (मारवाड़), श्री अनोपचंदजी पूनमिया सादड़ी (मारवाड) श्री लल्लुभाई नागरदास लींबडी, श्री प्रेमचंदभाई भूराभाई लींबडी, श्री सुगनचंदजी नाहर धामणगांव, श्री कल्याणमलजी वेद अजमेर, श्री अर्जुनलालजी डांगी भीलवाडा, श्री उमरावमलजी ढढ्ढा अजमेर, श्री जेवतभाई दामजीभाई मांडवी, श्री जेसिंगभाई पोचाभाई अहमदाबाद, श्री माणकचंदजी छल्लाणी मैसूर, श्री कॉन्फरन्स के मंत्री। शेष प्रस्ताव धन्यवादात्मक थे।

इस अधिवेशन के साथ महिला-परिषद भी हुई थी जिसकी अध्यक्षता श्रीमती ताराबेन बांठिया (धर्मपत्नी सेठ चम्पालालजी बांठिया) ने की। आपका स्त्री-समाज की उन्नति के लिये बड़ा सुन्दर भाषण हुआ। अन्य कई बहिनों के भाषण हुए थे, जिनमें प्रमुख वक्ता श्री लीलाबेन कामदार थीं।

इसके साथ २ युवक-परिषद् का भी आयोजन किया गया था। जिसकी अध्यक्षता प्रो० इन्द्रचन्द्रजी जैन एम० ए० ने की थी। कई वक्ताओं के सामाजिक विषयों पर भाषण हुए थे।

कॉन्फरन्स का विधान

कॉन्फरन्स की स्थापना तो सन् १९०६ में हो गई थी, परन्तु कॉन्फरन्स का विधान सर्व प्रथम सन् १९१७ की मैनेजिंग-कमेटी मे अहमदावाद में बनाया गया था। जो सन् २५ में मलकापुर-अधिवेशन द्वारा संशोधित किया गया था। शुरू-शुरू मे कॉन्फरन्स की मैनेजिंग कमेटी ही सर्वोपरि सत्ता थी। इस विधान के बाद जनरल कमेटी को सर्वोच्च सत्ता दी गई। सन् ४१ मे कॉन्फरन्स का दसवां अधिवेशन घाटकोपर मे हुआ। उसमे श्री चिमनलाल चकुभाई शाह ने कॉन्फरन्स का नया विधान बनाकर पेश किया जिसमें हर एक व्यक्ति को कॉन्फरन्स का मैम्बर बनने का अधिकार दिया गया था। इससे पूर्व कम से कम १०) रू० देने वाला ही कॉन्फरन्स का मैम्बर बन सकता था परन्तु इस नये विधान में सामान्य मैम्बर फीस १) रू० कर दी गई। यद्यपि उस समय जब कि यह विधान घाटकोपर अधिवेशन में पेश किया गया था सभा मे काफी ऊहापोह हुआ था। परन्तु अन्त में यह लोकशाही विधान स्वीकृत कर लिया गया।

कॉन्फरन्स का यह नया विधान स्वीकृत हो जाने पर भी समाज मे वह सफलता के साथ चल न सका। आखिरकार एक लोकशाही विधान बनाने के लिये, जो कि समाज मे सफलता के साथ चल सके, एक समिति बनाई गई और उस समिति ने सन् ५० मे मद्रास के ग्यारहवें अधिवेशन मे अपना नया लोकशाही विधान प्रस्तुत किया जो प्रस्ताव १७-द्वारा सर्वानुमति से स्वीकार किया गया। इस अधिवेशन में लोकशाही विधान के लिये वातावरण निर्माण हो चुका था और चारों तरफ संघ-ऐक्य की भावना प्रसरित हो चुकी थी अतः इस नये विधान का सभी ने स्वागत किया। तब से कॉन्फरन्स का यह विधान अमल मे आ रहा है।

सन् १९५३ में कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी जोधपुर में हुई, उस समय इस विधान मे कुछ संशोधन किया गया था। वर्तमान में कॉन्फरन्स का जो विधान अमल में आरहा है वह इस प्रकार है:—

श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स का संशोधित नया

विधान

ग्यारहवॉ मद्रास-अधिवेशन में प्रस्ताव नं० १७ द्वारा सर्वानुमति से स्वीकृत और जोधपुर जनरल-कमेटी द्वारा संशोधित

१. नाम—इस संस्था का नाम श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स रहेगा।

२. उद्देश्य निम्न होंगे :—(अ) मानव समाज के नैतिक और धार्मिक-जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयत्न करना। (ब) गरीब, असहाय और अपंग को हर प्रकार से सहायता देना। (क) स्त्री-समाज के उत्थान के लिये शिक्षण-संस्थाएं और हुनर-उद्योगशाला आदि चलाना। (ख) श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैनों की धार्मिक. सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक शिक्षा विषयक और सर्वदेशीय उन्नति और प्रगति करना। (ग) जैनधर्म के सिद्धान्तों का प्रचार करना और एतदर्थ उपदेशक एव प्रचारक तैयार करना, और नियुक्ति करना। (घ) धार्मिक-शिक्षा देने का प्रबन्ध करना, एतदर्थ संस्थाएं चलाना, पाठ्य-पुस्तकें तैयार करना, शिक्षक तैयार वरना आदि। (ङ.) जैन इतिहास, जैन-साहित्य आदि का सशोधन कराना और प्रकाशन करना। (च) जैन-शास्त्रों का प्रकाशन करना-कराना। (श) साधु-साध्वियों के अभ्यास का प्रबन्ध करना। (ज) साधु-साध्वियों के आचार विचार की शुद्धि के साथ पारस्परिक व्यवहार विस्तृत हो ऐसे प्रयत्न करना। (झ) विभिन्न सम्प्रदायों को मिटाकर एक श्रमण-संघ और एक श्रावक-संघ की स्थापना के लिए कार्यवाही करना। (ञ) स्थानकवासी जैनों का संगठन करना और एकता की स्थापना करना। (ट) सामाजिक-रिवाजों में समयानुकूल सुधार करना। (ठ) जैनधर्म के सभी फिर्कों मे प्रेम स्थापित करना।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिये आवश्यकतानुसार

(१) संस्थाये स्थापित करना, स्थापितों को चलाना अथवा चलती हुई असाम्प्रदायिक संस्थाओं की मदद करना। (२) अनुकूल समय पर सम्मेलन, प्रदर्शन, और अधिवेशन करना। (३) उपरोक्त उद्देश्यों से काम करने वाली संस्थाओं और व्यक्तियों के साथ मिल कर कार्य करना, कराना और ऐसी संस्थाओं के साथ सम्मिलित होना या अपने में समावेश करना अथवा उनको मदद करना। (४) व्याख्यानों का आयोजन करना, पुस्तकें तैयार कराना, प्रकाशित करना तथा पत्र-पत्रिकाएं प्रसिद्ध करना। (५) जनरल-कमेटी समय २ पर निश्चित करे ऐसी प्रवृतियॉ आरंभ करना। (६) कॉन्फरन्स के उद्देश्यों को पूर्ण करने मे मदद रूप हो सके इसके लिये फंड करना कराना और स्वीकार करना तथा उसका उपयोग जनरल-कमिटी की मजूरी से करना। (७) शक्य हो वहां जैनों के अन्य फिर्कों तथा अजैनों के साथ मिल कर कार्य करना।

(३) रचना—कॉन्फरन्स सभासदों के प्रचार नीचे मूजब रहेंगे :—

(१) अठारह वर्ष या इससे अधिक उम्र के कोई भी स्थानकवासी स्त्री या हो पुरुष:—(अ) वार्षिक रुपया १) एक शुल्क दे तो सामान्य सभासद माना जावेगा। (व) वार्षिक रु० १०) दस शुल्क

सहायक सभासद माना जावेगा। (क) एक साथ रु० ५०१) या इससे अधिक शुल्क देने वाले प्रथम-श्रेणी के और २५१) रु० देने वाले द्वितीय-श्रेणी के आजीवन-सभासद माने जावेंगे। (ख) एक साथ रु० १५०१) देने वाले वाइस-पेट्रन और रु० ५००१) देने वाले पेट्रन कहलायेंगे।

(२) जनरल-कमेटी मान्य करे ऐसे संघ और संस्थाओं के प्रतिनिधि, जिनमें से प्रत्येक प्रतिनिधि को वार्षिक रु० १०) भरने पड़ेंगे वे सभासद, प्रतिनिधि-सभासद कहलायेंगे। प्रत्येक संघ या संस्था प्रति दो वर्ष में अपने प्रतिनिधि नियुक्त करेगी।

(३) जो व्यक्ति कॉन्फरन्स की ऑनेररी सेवा करते है, वे कॉन्फरन्स के मानद् सभासद गिने जावेंगे। मानद् सभ्य पद देने का अधिकार कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी को रहेगा। यह अधिकार दूसरी जनरल-कमेटी मिले वहां तक ही रहेगा और प्रति वर्ष मानद् सदस्यों की नामावली जनरल-कमेटी में तय की जायगी। ऐसे सभ्य जनरल कमेटी के भी सभ्य माने जावेंगे।

नोटः—(१) यह विधान अमल में आये तब तक जिन्होंने कॉन्फरन्स के किसी भी फंड में एक मुश्त रु० २५१) या इससे अधिक रकम दी हो, वे कॉन्फरन्स के आजीवन-सदस्य माने जावेंगे।

(२) सभासदों को मताधिकार प्राप्त करने का समय आये तब कम से कम ३ मास पूर्व उन्हें सभासद बन जाना चाहिए और अपना शुल्क जमा कर देना चाहिए।

(३) ब-क-ख के सभासदों को 'जैन प्रकाश' बिना मूल्य दिया जावेगा।

(४) वंश-परम्परा के मौजूदा सभ्य चालू रहेंगे लेकिन उन्हें आजीवन-सभासद बनने के लिये प्रार्थना की जाय।

४. प्रांत—कॉन्फरन्स के इस विधान के लिये भारतवर्ष के निम्न प्रांत निश्चित किये जाते हैं:—

(१) बम्बई (शहर और उपनगर), (२) मद्रास और तामिलनाड, (३) आंध्र और हैद्राबाद (४) बंगाल, उड़ीसा और बिहार (५) संयुक्त-प्रान्त (दिल्ली सहित) (६) पंजाब और ओरिसा (७) पूर्वी राजस्थान (८) पश्चिमी राजस्थान (अजमेर प्रान्त सहित) (९) मध्यभारत, (१०) मध्यप्रदेश (सी० पी०) (११) महाराष्ट्र, (१२) गुजरात, (१३) सौराष्ट्र, (१४) कच्छ (१५) केरल (कोचीन, मलबार, त्रावणकोर), (१६) कर्नाटक।

जनरल-कमेटी मंजूर करेगी उस स्थान पर प्रान्त का कार्यालय रहेगा। जनरल-कमेटी प्रांतों की भौगोलिक मर्यादा निश्चित कर सकेगी और ऐसी भौगोलिक मर्यादा मे एवं प्रांतों की संख्या में आवश्कतानुसार परिवर्तन कर सकेगी।

५. प्रांतिक-समिति—कार्यवाहक-समिति समय-समय पर प्रांतिक-समितियॉ रचेगी और उसकी रचना-कार्य एवं सत्ता निश्चित करेगी।

६. जनरल-कमेटी—जनरल-कमेटी निम्नोक्त सभासदों की होगी:—(१) सर्व आजीवन सभासद, सर्व वाइस-पेट्रन और पेट्रन (२) सर्व प्रतिनिधि सभासद। (३) सामान्य और सहायक-सभासदों के प्रतिनिधि—जो प्रति दस सभ्यों में से चुने जावेंगे। (४) गतवर्षों के प्रमुख।

७ कार्यवाहक समिति—प्रति वर्ष जनरल-कमेटी कार्यवाहक समिति के लिए ३० सभ्यों का चुनाव करेगी। कार्यवाहक समिति अपने अधिकारी नियुक्त करेगी। कार्यवाहक समिति के अधिकारी जनरल-कमेटी एवं कॉन्फरन्स के अधिकारी माने जावेंगे। अधिवेशन के प्रमुख बाद में दो बर्ष तक कार्यवाहक-समिति के प्रमुख रहेंगे।

८. कार्य विभाजन और सत्ता—(१) कॉन्फरन्स अधिवेशन के प्रस्तावों के आधीन रहकर जनरल-कमेटी कॉन्फरन्स का सम्पूर्ण कार्य एवं व्यवस्था करेगी। कॉन्फरन्स की सम्पूर्ण सत्ता जनरल-कमेटी के हस्तक रहेगी।

(२) कार्यवाहक-समिति कॉन्फरन्स के अधिवेशन एवं जनरल-कमेटी के प्रस्तावों के आधीन रह कर, कॉन्फरन्स की सम्पूर्ण प्रवृत्तियों को अमल मे लाने के लिये योग्य कार्यवाही करेगी और उसके लिये उत्तरदायी रहेगी।

(३) इस विधान को अमल मे लाने और इस विधान में उल्लेख न हुआ हो ऐसी सभी बातों के सम्बन्ध में इस विधान से विरोधी न हो ऐसे नियमोपनियम बनाने और समय पर प्रांतीय एवं अन्य समितियों को आदेश देने की एवं उसमे समय २ पर परिवर्तन करने की कार्यवाहक-समिति को सत्ता रहेगी। कार्यवाहक-समिति प्रांतीय और अन्य समितियों की कार्यवाही पर नज़र एवं नियन्त्रण रखेगी और उसका हिसाब-देखेगी।

९. समिति की बैठके—(१) प्रमुख और मत्रियों की आवश्यकनानुसार अथवा कार्यवाहक-समिति के ७ सभ्यों की लिखित विनती से कार्यवाहक-समिति की बैठक, कार्यवाहक-समिति की आवश्यकतानुसार, अथवा जनरल-कमेटी के २५ सभ्यों की लिखित विनती से जनरल-कमेटी की बैठक बुलाई जायगी।

लिखित विनती से बुलाई गई कार्यवाहक और जनरल-कमेटी की बैठक के लिए उस विनती में बैठक बुलाने का हेतु स्पष्ट होना चाहिये।

कार्यवाहक-समिति की बैठक के लिये ७ दिन और जनरल-कमेटी की बैठक के लिये १४ दिन पूर्व सूचना देनी होगी। प्रमुख एवं मंत्रियों को तात्कालिक आवश्यकता महसूस हो तो इससे भी कम मुद्दत मे बैठक बुला सकेंगे।

(२) कार्यवाहक-समिति की बैठक के लिये ७ सभ्य और जनरल-कमेटी की बैठक के लिए ३० सभ्य या उसके कुल सभ्यों की १।५ संख्या की उपस्थिति (दोनों में से जो संख्या कम हो) कार्य साधक उपस्थिति मानी जायगी। जिसमें १० सभ्य आमंत्रण देने वाले प्रांत के सिवाय अन्य प्रांतों के होना जरूरी है। किसी बैठक में कार्य साधक उपस्थिति न हो तो वह स्थगित रहेगी और दूसरी बैठक मे कार्य साधक उपस्थिति की आवश्यकता नहीं रहेगी। किन्तु ऐसी दूसरी बैठक में प्रथम की बैठक में जाहिर हुए कार्य-क्रम के अलावा अन्य कार्य नहीं हो सकेंगे। स्थगित हुई बैठक २४ घंटे बाद मिल सकेगी।

(३) जनरल-कमेटी की बैठक वर्ष में कम से कम एक बार, वर्ष पूर्ण होने पर तीन मास मे बुलानी पड़ेगी और उस बैठक मे अन्य कार्यों के उपरान्त निम्न कार्यवाही की जायगी:—(अ) कार्यवाहक-समिति का चुनाव। (ब) कार्यवाहक-समिति एक वर्ष के अपने कार्य का विवरण पेश करेगी। (क) ऑडिट हुआ हिसाब और आगामी वर्ष का आनुमानिक बजट भी स्वीकृति के लिये पेश किया जायेगा।

(४) अधिवेशन के पूर्व कम से कम एक दिन और अधिवेशन के बाद यथाशीघ्र जनरल-कमेटी की बैठक बुलाई जावेगी।

१०. अधिवेशन—(१) कार्यवाहक समिति निश्चित करे उस समय और स्थल पर कॉन्फरन्स का अधिवेशन होगा।

(२) जिस संघ की ओर से अधिवेशन का आमंत्रण मिलेगा, वह संघ अधिवेशन के खर्च के लिये जिम्मेवर रहेगा और अधिवेशन के लिये सम्पूर्ण प्रबन्ध करेगा।

कार्यवाहक-समिति की निगहरानी मे और सूचनानुसार आमंत्रण देने वाला संघ स्वागत-समिति की रचना करेगा और अधिवेशन की संपूर्ण व्यवस्था करेगा। अधिवेशन का खर्च बाद करते हुए जो बचत रहे, उसका २५ प्रतिशत उस संघ का रहेगा और शेष रकम कॉन्फरन्स की रहेगी।

अधिवेशन के बाद तीन मास मे स्वागत-समित को अधिवेशन का सम्पूर्ण हिसाब कार्यवाहक-समिति के आगे पेश करना पड़ेगा।

(३) तीन वर्ष तक किसी भी संघ की ओर से अपने खर्च से अधिवेशन करने का आमंत्रण न मिले तो कॉन्फरन्स के खर्च से अधिवेशन किया जा सकेगा।

(४) अधिवेशन के प्रमुख का चुनाव स्वागत समिति का अभिप्राय जानकर कार्यवाहक-समिति करेगी।

(५) अधिवेशन में मताधिकार निम्न सभ्यों को रहेगा:—(अ) प्रतिनिधि की टिकिट खरीदने वाले। (ब) स्वागत-समिति की टिकिट खरीदने वाले। (क) कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी के सभी सभ्यों को।

(नोट:—प्रतिनिधि एवं स्वागत समिति की टिकटों का शुल्क अधिवेशन के पहले कार्यवाहक-समिति तय करेगी।)

(६) अधिवेशन की विषय-विचारिणी-समिति की रचना इस प्रकार होगी :—(अ) जनरल-कमेटी के उपस्थित सभ्यों मे से २५ प्रतिशत सभ्य। (ब) प्रत्येक प्रांत के पॉच सभ्य। (क) स्वागत-समिति के सभ्यों मे से २५ सभ्य (ख) अधिवेशन के प्रमुख की ओर से ४ सभ्य। (ग) कॉन्फरन्स के वर्तमान सर्व अधिकारी (घ) भूतकाल के प्रमुख।

११. अधिवेशन के प्रमुख की समय-मर्यादा—अधिवेशन के प्रमुख उसके बाद दो वर्ष तक कॉन्फरन्स एवं जनरल-कमेटी के प्रमुख रहेंगे। दो वर्ष मे अधिवेशन न हो तो बाद मे होने वाली जनरल-कमेटी की प्रथम बैठक मे दो वर्ष के लिए प्रमुख का चुनाव होगा।

१२. विशिष्ट फंड—विशिष्ट उद्देश्य से कॉन्फरन्स को प्राप्त फंडों में से कॉन्फरन्स के खर्च के लिये कार्यवाहक-समिति निश्चित करे तदनुसार १० प्रतिशत तक लेने का कॉन्फरन्स को अधिकार रहेगा।

विशिष्ट उद्देश्य को लेकर किये गये फण्ड का उपयोग उस उद्देश्य के लिये निरुपयोगी या अशक्य मालूम हो तो कॉन्फरन्स के दूसरे उद्देश्यों के लिये उस फण्ड अथवा उसकी आय का उपयोग करने की सत्ता जनरल-कमेटी की खास बैठक को होगी।

१३. ट्रस्टी—अपनी प्रथम बैठक के ससय जनरल-कमेटी आजीवन सभासदों, पेट्रनों, वाइस पेट्रनों में से पॉच ट्रस्टियों का चुनाव करेगी। तत्पश्चात् प्रति पॉच वर्षो मे ट्रस्टियों का चुनाव जनरल-कमेटी करेगी।

१४. कॉन्फरन्स की मिल्कियत—(१) जनरल-कमेटी के मंजूर किये गये बजट के अनुसार आवश्यक रकम कॉन्फरन्स के मन्त्रियों के पास रहेगी। कॉन्फरन्स की तदुपरांत की रोकड़, जामिनगीरियॉ, जरूरी खत, दस्तावेज आदि कॉन्फरन्स के ट्रस्टियों के पास रहेंगे।

(२) जनरल-कमेटी अथवा कार्यवाहक-समिति के प्रस्तावानुसार ट्रस्टी-गण कॉन्फरन्स के मंत्रियो को आवश्यक रकम देंगे।

१५. स्थावर मिल्कियत—कॉन्फरन्स की सभी स्थावर मिल्कियत ट्रस्टियों के नाम रहेगी।

१६. करार आदि--कॉन्फरन्स की ओर से स्थावर मिल्कियत से संबंधित न हो ऐसे खत-पत्र, लेखन और करारनामे कॉन्फरन्स के मंत्रियों के नाम रहेंगे। कॉन्फरन्स को दावा करना पड़ेगा तो कॉन्फरन्स के मंत्रियों के नाम से होगा।

१७. कार्यालय--कॉन्फरन्स का कार्यालय जनरल-कमेटी निश्चित करेगी उस स्थान पर रहेगा।

१८. वर्ष--कॉफन्रन्स का वर्ष १ जुलाई से ३० जून तक का होगा।

१६. चुनाव और मताधिकार--चुनाव या मताधिकार संबंधी कोई मतभेद या तकरार हो, अथवा निर्णय की आवश्यकता हो तब कार्यवाहक-समिति का निर्णय अंतिम माना जावेगा।

२०. विधान में परिवर्तन--इस विधान में परिवर्तन करने की सत्ता जनरल-कमेटी को रहेगी। बैठक में उपस्थिति सभ्यों की ३।४ बहुमति से विधान में परिवर्तन हो सकेगा। विधान मे संशोधन एवं परिवर्तन की स्पष्ट सूचना कार्य-विवरण में प्रकट कर देनी चाहिये।

२२. मध्यकालीन व्यवस्था--(१) इस विधान को अमल में लाने और तदनुसार प्रथम जनरल-कमेटी तथा कार्यवाहक-समिति की रचना करने के लिये जो कुछ भी कार्यवाही करनी पड़े तो तदनुकूल करने की सत्ता इस अधिवेशन के प्रमुख को दी जाती है।

(२) इस विधान को अमल मे लाने मे जो कुछ भी कठिनाई या असुविधा मालूम हो तो उसे दूर करने के लिये योग्य कार्यवाही करने की सत्ता इस अधिवेशन के प्रमुख को रहेगी।

(३) यह विधान चैत्र शुक्ला त्रयोदशी सं० २००६ (चैत्री सं० २००७) से अमल में आता है।

नोट:--किसी कारण इस समय के बीच में इस विधान के अनुसार सभ्य बनाना और जनरल-कमेटी तथा कार्यवाहक-समिति की रचना न हो सके तो तब तक पुराने विधान के अनुसार सभ्यपद, जनरल-कमेटी तथा कार्यवाहक-समिति चालू रहेगी।

अन्य बातों में यह विधान अमल मे आवेगा और इन सभी कालमों मे बताई गई सभी बातों का निर्णय इस अधिवेशन के प्रमुख करेंगे।

मोरवी-अधिवेशन के पश्चात् कॉ० ऑफिस के संचालनार्थ बनाई गई निम्न सर्व प्रथम मैनेजिंग-कमेटी

प्रमुख–राय सेठ श्री चांदमलजी सा० रियांवाले, अजमेर। सभ्य (१) नगर सेठ श्री अमृतलालभाई वर्धमानभाई, मोरवी (२) देशाई श्री वनेचन्दभाई राजपालभाई मोरवी (३) सेठ श्री अंबावीदासभाई डोसाणी मोरवी (४) पारिख श्री वनेचन्दभाई पोपटभाई मोरवी (५) दफ्तरी श्री गोकलदास भाई राजपाल भाई, ऑ० मेनेजर (६) श्री वनेचन्द भाई पोपटभाई, मोरवी, एकाउन्टेन्ट (७) मेहता श्री सुखलालभाई मोनजीभाई मोरवी, ट्रेजरर (८) श्री लखमीचन्दभाई माणकचन्दभाई खोखाणी मोरवी, ऑ० सेक्रेट्री (९) सेठ श्री गिरधरलालभाई सौभाग्यचन्द्रभाई मोरवी, ऑ० जॉइन्ट सेक्रेट्री (१०) मेहता श्री मनसुखलालभाई जीवराजभाई मोरवी, ऑ० ज० सेक्रेट्री (११) जौहरी श्री दुर्लभजीभाई त्रिभुवनदासभाई मोरवी ऑ० ज० सेक्रेट्री।

प्रारंभ में बहुत वर्षों तक कॉ० ऑफिस का कार्य-संचालन निम्न जनरल-सेक्रेटरियों तथा प्रांतिक सेक्रेटरियों के नेतृत्व में होता रहा

जनरल-सेक्रेटरी:—

(१) सेठ श्री केवलदासभाई त्रिभुवनदासभाई, अहमदाबाद (२) सेठ श्री अमरचन्दजी पित्तलिया, रतलाम, (३) लाला श्री सादीरामजी गोकलचन्दजी, दिल्ली, (४) श्री गोकलदासभाई राजपालभाई, मोरवी, (५) राय सेठ श्री चांदमलजी रियांवाले, अजमेर, (६) सेठ श्री वालमुकन्दजी चन्दनमलजी मूथा, सतारा। (७) दी०-ब० श्रीविशनदासजी, जम्मु। (८) दी० ब० श्री उम्मेदमलजी लोढ़ा, अजमेर।

प्रांतिक-सेक्रेटरी:—

(पंजाब)—(१) लाला श्री नथमलजी, अमृतसर, (२) लाला श्री रलारामजी, जालंधर। (मालवा)—(१) सेठ श्री चांदमलजी, पित्तलिया, जॉवरा (२) श्री सुजानमलजी बांठिया, पिपलोदा, (३) श्री फूलचन्दजी कोठारी, भोपाल। (मेवाड़)—(१) श्री बलवंतसिंहजी कोठारी, उदयपुर, (२) श्री नथमलजी चौरड़िया, नीमच। (मारवाड़)—(१) सेठ श्री सभीरमलजी बालिया, पाली, (२) श्री नोरत्नमलजी भांडावत, जोधपुर, (३) सेठ श्री गणेशमलजी मालू, बीकानेर। (राजपूताना)—(१) सेठ श्री शार्दूलसिंहजी मुणोत, अजमेर, (२) श्री आनन्दमलजी चौधरी, अजमेर (३) श्री राजमलजी कोठारी, जयपुर, (४) श्री गुलाबचन्दजी कांकरिया, नयाशहर (५) श्री छोटेलालजी चुन्नीलालजी जौहरी, जयपुर, (६) श्री घीसूलालजी चौरड़िया, जयपुर। (ग्वालियर)—(१) श्री चांदमलजी नाहर, भोपाल, (२) श्री सौभाग्यमलजी मूथा, इच्छावर (भोपाल)। (हाड़ौती, ढुंढार, शेखावाटी)—(१) लाला श्री कपूरचन्दजी, आगरा। (काठियावाड़)—(१) श्री पुरुषोत्तमजी मावजी वकील, राजकोट, (२) श्री वनेचन्दभाई देशाई, मोरवी, (३) सेठ श्री देवशीभाई धरमशी (मोटी-पक्ष) मांडवी, (४) सेठ श्री देवशीभाई भाणजी (नानी-पक्ष) खंधार। (कच्छ)—(१) सेठ श्री मेघजी देवचन्दभाई, भुज, (२) सेठ श्री अनोपचन्दभाई वीरचन्दभाई, भुज, (३) सेठ श्री माणकचन्दभाई पानाचन्दभाई सघवी, मांडवी। (उत्तर-गुजरात)—(१) सेठ श्री जमनादासभाई नारायणदासभाई, अहमदाबाद, (२) सेठ श्री माणकलालभाई अमृतलालभाई अहमदाबाद। (दक्षिण-गुजरात) (१) रा० ब० श्री कालीदासभाई नारायणदासभाई, इटोला, (२) वकील श्री मगनलालभाई प्रेमचन्दभाई, सूरत। (सिंध)—(१) सेठ श्री प्रागजीभाई पानाचन्दभाई, करांची। (बम्बई)—(१) सेठ श्री मेघजीभाई थोभण जे० पी०, बम्बई, (२) श्री सूरजमलभाई भोजूभाई सोलीसीटर, बम्बई, (३) ज० से० श्री बृजलालभाई खीमचन्दभाई शाह, बम्बई। (खानदेश-बरार)—(१) सेठ श्री लछमनदासजी श्रीमाल, जलगांव। (निज़ाम-राज्य)—(१) लाला नेतरामजी रामनारायणजी, हैद्राबाद, (२) ज० से० श्री रामलालजी कीमती, हैद्राबाद। (दक्षिण)—(१) सेठ बालमुकन्दजी चंदनमलजी मूथा, सतारा, (२) श्री उत्तमचन्दजी चांदमलजी कटारिया श्रीगोंदा, (३) श्री भगवानदासजी चंदनमलजी, पित्तलिया, अहदनगर। (मद्रास)—(१) श्री सोहनराजजी कुचेरावाले, मद्रास। (मलबार)—(१) श्री भगवानजी डूंगरशी, कोचीन। (बगाल)—(१) सेठ श्री अगरचन्दजी भैरोंदानजी सेठिया, कलकत्ता, (२) ज० से० श्री धारसीभाई गुलाबचन्दभाई संघाणी, कलकत्ता। (ब्रह्मदेश)—(१) सेठ श्री पोपटलालभाई डाह्याभाई, रंगून। (अरबिस्तान)—(१) सेठ श्री हीराचन्दभाई सुन्दरजी, एडन। (अफ्रीका)—(१) श्री मोहनलालभाई माणकचन्दभाई, खंडारिया, पिटर्सबर्ग।

गत ५० वर्षों में स्था० जैन कॉन्फरन्स के तेरह बृहत्-अधिवेशन हुए

क्रम	स्थान—सन्—तारीख	अध्यक्ष—स्वागताध्यक्ष
प्रथम	मोरवी फरवरी सन् १९०६ ता० २६, २७, २८	अ०— सेठ श्री चांदमलजी रियांवाले, अजमेर। स्वा०—सेठ श्री अमृतलाल वर्धमाण, मोरवी।
द्वितीय	रतलाम मार्च सन् १९०८ ता० २७, २८, २९	अ०— सेठ श्री केवलदास त्रिभुवनदास अहमदाबाद। स्वा०—सेठ श्री अमरचन्दजी पित्तलिया, रतलाम।
तृतीय	अजमेर मार्च सन् १९०९ ता० १०, ११, १२	अ०— शास्त्रज्ञ सेठ बालमुकन्दजी मूथा, सतारा। स्वा०—राय सेठ श्री चांदमलजी सा० अजमेर।
चतुर्थ	जालंधर मार्च सन् १९१० ता० २७, २८, २९	अ०— दी० ब० श्री उम्मेदमलजी लोढा, अजमेर
पंचम	सिकन्द्राबाद अप्रैल सन् १९२३ ता० १२, १३, १४	अ०— सेठ श्री लछमनदासजी श्रीश्रीमाल जलगांव। स्वा०—रा० ब० श्रीसुखदेवसहायजी हैदराबाद।
षष्ठम	मल्कापुर (म० प्र०) जून सन् १९२५ ता० ७, ८, ९	अ०— सेठ श्री मेघजीभाई थोभण जे० पी० बम्बई। स्वा०—सेठ श्री मोतीलालजी कोटेचा, मल्कापुर।
सप्तम	बम्बई दिस०-जन० सन् १९२६-२७ ता० ३१, ता० १, २	अ०— सेठ श्री भैरोंदानजी सेठिया, बीकानेर। स्वा०—सेठ श्री मेघजीभाई थोभण, बम्बई।
अष्टम	बीकानेर अक्टूबर सन् १९२७ ता० ६, ७, ८	अ०— तत्वज्ञ श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह, घाटकोपर। स्वा०—सेठ श्री मिलापचन्दजी बेद, झांसी-बीकानेर।
नवम	अजमेर अप्रैल सन् १९३३ ता० २२, २३, २४, २५	अ०— सेठ श्री हेमचन्द रामजीभाई, भावनगर। स्वा०—लाला ज्वालाप्रसादजी जैन, महेन्द्रगढ।
दशम	घाटकोपर अप्रैल सन् १९४१ ता० ११, १२, १३	अ०— सेठ श्री वीरचन्द मेघजीभाई, बम्बई। स्वा०—सेठ श्री धनजीभाई देवशीभाई, घाटकोपर।
एकादशम	मद्रास दिसम्बर सन् १९४९ ता० २४, २५, २६	अ०— श्रीमान कुन्दनमलजी फिरोदिया, अहमदनगर। स्वा०—सेठ श्री मोहनमलजी चौरड़िया, मद्रास।
द्वादशम	सादड़ी मई सन् १९५२ ता० ४, ५, ६	अ०— सेठ श्री चंपालालजी बांठिया, भीनासर। स्वा०—सेठ श्री मोहनमलजी बरलोटा, सादडी।
त्रयोदशम	भीनासर (बीकानेर रा०) अप्रैल सन् १९५६ ता० ४, ५, ६	अ०— सेठ श्री बनेचन्द दुर्लभजी जौहरी, जयपुर। स्वा०—सेठ श्री जयचन्दलालजी रामपुरिया, बीकानेर।

अजमेर-ऑफिस से दिल्ली-ऑफिस पर्यन्त कॉन्फरन्स-ऑफिस के निम्न संचालक मंत्रीगण रहे

अजमेर-कॉ०-ऑफिस :—(१) ज० से० राय सेठ श्री चांदमलजी, रियांवाले, (२) ऑ० सेक्रेट्री-कु० श्री छगनमलजी (३) असि० से० श्री वेचरदासभाई वीरचन्दभाई तलसाणिया। तदनन्तर-(१) डॉ० श्री धारसी भाई गुलावचन्दभाई संघाणी तथा (२) श्री झवेरचन्दभाई जादवजी कामदार ने कार्य किया।

दिल्ली—कॉ०-ऑफिस (१) ज० से० लाला गोकलचन्दजी जौहरी।
रतलाम—कॉ०-ऑफिस (१) ज० से० सेठ श्री वर्धमानजी पित्तलिया।
सतारा—कॉ०-ऑफिस (१) ज० से० दी० ब० श्री मोतीलालजी मूथा।

वम्बई-कॉ०-ऑफिस—

(१) ज० से० सेठ श्री वेलजीभाई लखमशी नप्पुभाई,
(२) ज० से० सेठ श्री सूरजमलभाई लल्लूभाई जौहरी,
(३) ज० से० श्री चिम्मनलाल चक्कुभाई शाह, सोली०
(४) ज० से० श्री खीमचन्दभाई मगनलालभाई वोरा,
(५) मंत्री श्री चिमनलालभाई पोपटलालभाई शाह,
(६) मंत्री—श्री टी० जी० शाह,
(७) मंत्री—श्री निहामचन्दभाई मूलचन्दभाई सेठ,
(८) मंत्री श्री नवलचन्दभाई अभयचन्दभाई मेहता,
(९) मंत्री—श्री चुन्नीलालभाई कल्याणजीभाई कामदार,
(१०) मंत्री—श्री गिरधरलालभाई दामोदरभाई दफ्तरी,
(११) उप—प्रमुख—श्री दुर्लभजीभाई के० खेताणी।

दिल्ली-कॉ०-ऑफिस आने के पश्चात् मंत्री पद पर जिन्होंने सेवा दी

उप प्रमुख—डॉ० श्री दौलतसिंहजी कोठारी M A. Ph. D.,

प्रधान-मंत्री—सेठ श्री आन्दराजजी सुराना, M. L. A.,

मंत्रीगण—

लाला हेमचन्दजी नाहर,
लाला गुलाबचन्दजी जैन,
लाला हरजसरायजी जैन,
श्री भीखालालभाई गि० सेठ,
श्री धीरजलालभाई के० तुरखिया,
लाला गिरधरलालजी जैन M. A.,
लाला उत्तमचन्दजी जैन B. A. L. L. B.,
लाला अजितप्रसादजी जैन B. A. L. L. B.

नोट :—पृष्ठ नं० ७६, ७७ पर सिकन्द्राबाद अधिवेशन के प्रस्ताव नं० १४ के बाद भूल से मल्कापुर अधिवेशन के प्रस्ताव नं० २, ३, ४ छप गए हैं अतः कृपया पाठक इन्हें न पढ़ें।

प्रारंभिक अल्प समय में प्रान्तिक-कॉन्फरन्सें बुलवाई

(१) बोडेश्वर (लींबडी) में झालावाड़ बीसा श्रीमाली स्थानकवासी जैनों की प्रथम-प्रान्तिक-कॉन्फरन्स सं० १९६२ में भाद्र शुक्ला ६ मंगलवार को, लींबड़ी-नरेश श्री यशवन्त सिंहजी K. C I. की अध्यक्षता में हुई। जिसमें ग्यारह ताल्लुके के अग्रगण्य सज्जन पधारे थे। कार्यवाही आठ दिन तक चली। कॉन्फरन्स का संपूर्ण खर्च संघवी श्री धारसी भाई रवा लींबड़ी निवासी ने उठाया।

(२) श्री गौंदा (दक्षिण) में श्रीमान् सेठ बालमुकन्दजी, हजारीमलजी सतारा निवासी की अध्यक्षता में श्री ओसवाल जैन प्रान्तिक-कॉन्फरन्स हुई। इसमे समाज सुधार विषयक प्रस्तावों के अतिरिक्त श्वेताम्बर मूर्ति-पूजक तथा स्थानकवासी जैनों की संयुक्त कॉन्फरन्स करके ऐक्यता संस्थापन करने का प्रस्ताव भी हुआ।

(३) बढवाण (सौराष्ट्र) में झालावाड़ बीसा श्रीमाली स्था० जैनों की तृतीय बैठक हुई।

(४) गोहिलवाड़ दशा श्रीमाली जैनों की कॉन्फरन्स घोघा (सौराष्ट्र) मे बुलाई।

(५) कलोल में गुजरात के विभिन्न ग्रामों की कॉन्फरन्स बुलाई।

(६) पंजाब-प्रान्तिक-कॉन्फरन्स का प्रथम अधिवेशन जंडियाला में हुआ।

(७) पंजाब-प्रान्तिक-कॉन्फरन्स का द्वितीय अधिवेशन स्यालकोट मे हुआ।

(८) झालावाड़ दशा श्रीमाली स्थानकवासी जैनों की प्रान्तिक-कॉन्फरन्स लींबड़ी में बुलाई।

चतुर्थ-परिच्छेद

श्री अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स की विशिष्ट प्रवृत्तियां

कॉन्फरन्स प्रारम्भ होने के पश्चात् आरम्भ होने वाली शुभ प्रवृत्तियां

(१) जैन समाज की विभिन्न सम्प्रदायों में एक ही दिवस संवत्सरी कराने के लिये सतत-प्रयत्न किया गया।
(२) जगह २ उपदेशकों द्वारा धर्म प्रचार, कुरूढ़िएँ तथा फिजूल खर्ची बंद कराने के लिए शुभ प्रयत्न किए गये।
(३) कॉन्फरन्स के विविध खातों के लिये फंड किया गया।
(४) स्था० समाज की डिरेक्टरी अर्थात् जन-गणना के लिए प्रयत्न किया गया।
(५) बम्बई, तथा अहमदाबाद मे परीक्षा निमित्त आने वाले परीक्षार्थियों को ठहराने एवं भोजनादि का प्रबन्ध किया गया।
(६) करीब एक सौ देशी राज्यों को जीव-दया अर्थात् प्राणियों का वध बंद कराने के लिए अपीलें भेजकर जगह २ हिंसा बंद कराने का प्रयत्न किया गया।
(७) जैन मुनियों को रेल्वे पुल पार करने पर लगने वाले टॉल-टैक्स से मुक्त कराने का प्रयत्न किया गया।
(८) जैन मुनियो तक की तलाशी लेकर नये वस्त्रों पर जो कस्टम लिया जाता था उसे बंद कराने का प्रयत्न किया गया।
(९) कच्छ मांडवी-खाते मे सेठ मेघजी भाई थोमणभाई से रु० २५ हजार दिलवाकर 'संस्कृत-पाठशाला' खुलवाई।
(१०) लींबडी-संप्रदाय के साधुओं का लींबडी मे, दरियापुरी सं० के साधुओं का कलोल मे और खंभात सं० के साधुओं का खंभात मे सम्मेलन करवा कर सुधार करवाए। इसी समय लींबडी-संप्रदाय के शिथिलाचारियों को संघाड़े से पृथक किये तथा कइयों को उसी वक्त अलग कराए।
(११) व्यवहारिक-शिक्षण के लिये बम्बई में बोर्डिंग-हाउस तथा धार्मिक-शिक्षण के लिये रतलाम में जैन ट्रेनिंग-कॉलेज की स्थपना की।
(१२) 'अर्ध-मागधी-भाषा शिक्षण-माला' की रचना करने के लिये प्रयत्न किया।
(१३) सम्प्रदाय वार साधु-साध्वियों की गणना की गई।
(१४) जैन साधु-साध्वियों को पब्लिक-भाषण देने के योग्य बनवाए।
(१५) अहमदाबाद मे शा नाथालाल मोतीलालजी की उदारता से 'दशा श्रीमाली-श्राविकाशाला' तथा जामनगर मे 'बीसा श्रीमाली-श्राविकाशाला' की स्थापना कराई।

प्रारंभिक अल्प समय में प्रान्तिक-कॉन्फरन्सें बुलवाईं

(१) बोडेश्वर (लींबडी) में झालावाड़ बीसा श्रीमाली स्थानकवासी जैनों की प्रथम-प्रान्तिक-कॉन्फरन्स सं० १९६२ में भाद्र शुक्ला ६ मंगलवार को, लींबड़ी-नरेश श्री यशवन्त सिंहजी K. C. I. की अध्यक्षता में हुई। जिसमें ग्यारह ताल्लुके के अग्रगण्य सज्जन पधारे थे। कार्यवाही आठ दिन तक चली। कॉन्फरन्स का संपूर्ण खर्च संघवी श्री धारसी भाई रवा लींबड़ी निवासी ने उठाया।

(२) श्री गौंदा (दक्षिण) में श्रीमान् सेठ बालमुकन्दजी, हजारीमलजी सतारा निवासी की अध्यक्षता में श्री ओसवाल जैन प्रान्तिक-कॉन्फरन्स हुई। इसमें समाज सुधार विषयक प्रस्तावों के अतिरिक्त श्वेताम्बर मूर्ति-पूजक तथा स्थानकवासी जैनों की संयुक्त कॉन्फरन्स करके ऐक्यता संस्थापन करने का प्रस्ताव भी हुआ।

(३) बढवाण (सौराष्ट्र) में झालावाड़ बीसा श्रीमाली स्था० जैनों की तृतीय बैठक हुई।

(४) गोहिलवाड़ दशा श्रीमाली जैनों की कॉन्फरन्स घोघा (सौराष्ट्र) में बुलाई।

(५) कलोल में गुजरात के विभिन्न ग्रामों की कॉन्फरन्स बुलाई।

(६) पंजाब-प्रान्तिक-कॉन्फरन्स का प्रथम अधिवेशन जंडियाला में हुआ।

(७) पंजाब-प्रान्तिक-कॉन्फरन्स का द्वितीय अधिवेशन स्यालकोट मे हुआ।

(८) झालावाड़ दशा श्रीमाली स्थानकवासी जैनों की प्रान्तिक-कॉन्फरन्स लींबड़ी में बुलाई।

चतुर्थ-परिच्छेद

श्री अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स की विशिष्ट प्रवृत्तियां

कॉन्फरन्स प्रारम्भ होने के पश्चात् आरम्भ होने वाली शुभ प्रवृत्तियां

(१) जैन समाज की विभिन्न सम्प्रदायों मे एक ही दिवस संवत्सरी कराने के लिये सतत-प्रयत्न किया गया।

(२) जगह २ उपदेशकों द्वारा धर्म प्रचार, कुरूढ़िएँ तथा फिजूल खर्ची बंद कराने के लिए शुभ प्रयत्न किए गये।

(३) कॉन्फरन्स के विविध खातों के लिये फंड किया गया।

(४) स्था० समाज की डिरेक्टरी अर्थात् जन-गणना के लिए प्रयत्न किया गया।

(५) बम्बई, तथा अहमदावाद मे परीक्षा निमित्त जाने वाले परीक्षार्थियों को ठहराने एवं भोजनादि का प्रबन्ध किया गया।

(६) करीब एक सौ देशी राज्यों को जीव-दया अर्थात् प्राणियों का वध बद कराने के लिए अपीले भेजकर जगह २ हिंसा बद कराने का प्रयत्न किया गया।

(७) जैन मुनियों को रेल्वे पुल पार करने पर लगने वाले टॉल-टैक्स से मुक्त कराने का प्रयत्न किया गया।

(८) जैन मुनियों तक की तलाशी लेकर नये वस्त्रो पर जो कस्टम लिया जाता था उसे बंद कराने का प्रयत्न किया गया।

(९) कच्छ मांडवी-खाते मे सेठ मेघजी भाई थोमणभाई से रु० २५ हजार दिलवाकर 'संस्कृत-पाठशाला' खुलवाई।

(१०) लींबडी-संप्रदाय के साधुओं का लींबडी मे, दरियापुरी सं० के साधुओं का कलोल मे और खंभात सं० के साधुओं का खभात मे सम्मेलन करवा कर सुधार करवाए। इसी समय लींबडी-संप्रदाय के शिथिलाचारियों को संघाड़े से पृथक किये तथा कइयों को उसी वक्त अलग कराए।

(११) व्यवहारिक-शिक्षण के लिये बम्बई मे बोर्डिंग-हाउस तथा धार्मिक-शिक्षण के लिये रतलाम में जैन ट्रेनिंग-कॉलेज की स्थपना की।

(१२) 'अर्ध-मागधी-भाषा शिक्षण-माला' की रचना करने के लिये प्रयत्न किया।

(१३) सम्प्रदाय वार साधु-साध्वियों की गणना की गई।

(१४) जैन साधु-साध्वियों को पब्लिक-भाषण देने के योग्य बनवाए।

(१५) अहमदावाद मे शा नाथालाल मोतीलालजी की उदारता से 'दशा श्रीमाली-श्राविकाशाला' तथा जामनगर मे 'वीसा श्रीमाली-श्राविकाशाला' की स्थापना कराई।

(१६) श्री पीताम्बर हाथीभाई गालाणपुर वालों से रु० १८ हजार की उदारता से स्थानकवासी जैन विद्यार्थियों को स्कॉलरशिप दिलवाले की व्यवस्था की।

(१७) धार्मिक ज्ञान के प्रचारार्थ स्थान स्थान पर जैन पाठशालाएं, कन्या शालाएं, श्राविका-शालाएं, पुस्तकालय मडल, सभाएं तथा वाचनालय खुलवाए। और व्यवहारिक-शिक्षण प्रचार के लिये बोर्डिंग, तथा उद्योगशालाएं खुलवाई।

(१८) जैनियों मे ऐक्य वृद्धि के लिये प्रयत्न किए।

(१९) संप्रदायों को अपनी मर्यादा बांधने के लिये, एकल विहार तथा अज्ञा से पृथक रहने का निषेध किया और आचार्य नियुक्ति के लिये प्रेरणा देकर व्यर्वास्थित करने के लिये प्रयत्न किये।

(२०) निराश्रित बहिनो, भाइयों, और बालकों को आश्रय दिलवाने के प्रयत्न किए।

(२१) हजारों भीलों से मसाहार तथा मदिरा-पानादि छुड़वाए। दशहरा एव नवरात्रियों मे राजा-महाराजाओं द्वारा होनेवाली जीव-हिंसा को कम करवाई तथा देवस्थानों मे होती हुई पशु-पक्षी-हिंसा को रुकवाने के लिये प्रयत्न किये।

(२२) साधु-मुनिराजों को अन्यान्य प्रान्तों मे विचरण करने की तथा पब्लिक-भाषण देने के लिए सफल प्रेरणा दी। जिसके फल स्वरुप राजा—महाराजा, सरकारी अधिकारी तथा अजैन लोग आकर्षित हुए और उन्होंने हिंसा, शिकार, मद्य-मांस, कुव्यसन आदि सेवन करने के त्याग किए। इस प्रकार जैनधर्म, नीति और सदाचार का प्रचार बढने लगा।

(२३) जैन तिथि-पत्र (अष्टमी-पक्खी की टीप) तैयार कराया।

(२४) जैनों के तीनों फिर्कों की सयुक्त-कॉन्फरन्स बुलाने का प्रयत्न किया और परस्पर विरोधी लेखो, पैम्फ्लेटों का तथा दीक्षित साधुओं को भगाने या बदलाने की विरोधी प्रकृति को रुकवाने के लिए प्रयत्न किए।

(२५) महावीर-जयंती, समस्त फिर्कों के जैन एक साथ मिलकर मनाए इसके लिए प्रेरणा दी और प्रयत्न किया।

(१) श्री स्था० जैन-बोर्डिंग, बम्बई

व्यवहारिक-शिक्षण मे विद्यार्थियों को सुविधा देने के लिये बम्बई मे ता०-१-६-१९०१ मे एक 'श्री स्था० जैन-बोर्डिंग' आरंभ किया गया, जिसका प्रबध निम्न लिखित सज्जनों को सुपुर्द किया गया:—

जनरल-सेक्रेट्री :—श्रीमान् सेठ मेघजीभाई थोमणभाई, बम्बई, श्रीमान् वकील पुरुषोत्तमभाई मावजीभाई, राजकोट, श्रीमान् गोकलदासभाई राजपाल, मोरवी, श्रीमान् जैसिंहभाई उजमशीभाई, अहमदाबाद,

कुछ वर्षों के बाद श्री बृजलालभाई खीमचदभाई शाह सोलीसीटर के मंत्रीत्व मे बोर्डिंग चला और बादमें फंड के अभाव मे बंद करना पडा।

(२) श्री जैन ट्रेनिंग-कॉलेज, रतलाम

स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स की तरफ से सन् १९०९ मे श्री जैन ट्रेनिंग-कॉलेज की रतलाम मे ता० २९-८-१९०९ को स्थापना की गई। कार्यवाहक-समिति निम्न प्रकार बनाई गई:—

श्री सेठ अमरचंदजी पित्तलिया, रतलाम (प्रमुख), श्री लाला गोकलचंदजी जौहरी दिल्ली, (उप प्रमुख), ला० श्री सुजानमलजी बांठिया, पिपलोदा (मंत्री), श्री वरदभाणजी पित्तलिया, रतलाम (मंत्री), श्री केशरीचंदजी भंडारी देवास (मंत्री), श्री मिश्रीमलजी बोराना रतलाम (सह-मंत्री)।

रतलाम मे यह संस्था ८ वर्ष तक अच्छी तरह चलती रही। सेठ अमरचंदजी बरधभाणजी पित्तलिया आदि ने इसकी अच्छी देख-रेख रखी। इस बीच इस संस्था से बहुत से सुयोग्य विद्वान भी तैयार होकर निकले। जैन समाजके प्रसिद्ध सन्त आत्मार्थी पं० मुनि श्री मोहन ऋषिजी म०, श्री चुन्नीलालजी म० आदि इसी ट्रेनिंग कॉलेज की देन हैं, जिन्होंने तत्कालीन समाज मे काफी जागृति पैदा की थी। मारवाड़ जैसे क्षेत्र मे अनेकों स्थानों पर आप मुनिवरों ने अपने उपदेशों द्वारा पाठशालाएं, गुरुकुल वाचनालय, श्राविकाशालाएं आदि की स्थापना कराई और शिक्षा का प्रसार किया। बगड़ी, बलून्दा की पाठशाला, ब्यावर जैन-गुरुकुल व भोपालगढ़-विद्यालय की स्थापना मे आपका ही उपदेश रहा हुआ था। जैन ट्रेनिंग-कॉलेज के तीन टर्म्स मे अच्छे सुयोग्य कार्यकर्ता तैयार हुए और उन्होंने स्था० जैन धर्म और समाज की तथा कॉन्फरन्स की सुन्दर सेवा की। श्री धीरजलालभाई के० तुरखिया, तथा श्री मोतीरामजी श्रीश्रीमाल आदि इसी जैन ट्रेनिंग कॉलेज के स्नातक हैं।

यदि यह ट्रेनिग कॉलेज इसी तरह आगे भी बराबर चलती रहती तो समाज को अच्छे कार्यकर्ताओं की आज कमी नहीं रहती। परन्तु दुर्भाग्य से ८ साल बाद सन् १९१८ मे यह संस्था बंद हो गई।

(३) 'जैन-प्रकाश' का प्रकाशन

श्री अ० भा० श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स की स्थापना सन् १९०६ मे मोरवी मे हुई। उसके ७ साल बाद 'जैन-प्रकाश' का प्रकाशन चालू किया गया। कॉन्फरन्स के प्रति धीरे-धीरे समाज मे उत्साह फैलता गया और लोग उससे आकर्षित होते गये, तब यह आवश्यक समझा गया कि कॉन्फरन्स का एक निजी मुख-पत्र प्रकाशित होना चाहिये जिससे कि सारे समाज को कॉन्फरन्स की गति-विधियों से परिचित कराया जा सके। अतः सन् १९१३ मे 'जैन-प्रकाश' का जन्म हुआ, जो आज भी विगत ४२ वर्षों से समाज की सेवा करता चला जा रहा है।

प्रारंभ मे 'जैन-प्रकाश' साप्ताहिक रूप से ही नियमित निकलता रहा। सन् सन्१९१३ से १९३६ तक साप्ताहिक रूप से नियमित निकलता रहा। १ जून सन् १९३६ से अहमदाबाद जनरल-कमेटी के प्रस्ताव नं० १२ के अनुसार इसे पाक्षिक कर दिया गया।

ता० २६-१२-१९३६ को कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी भावनगर मे हुई। उसमे यह निर्णय किया गया कि ता० १ जनवरी सन् १९३७ से पुन 'जैन प्रकाश' को साप्ताहिक कर दिया जाय। तदनुसार प्रकाश पुनः साप्ताहिक रूप से प्रकाशित होने लगा। सन् १९४१ तक 'प्रकाश' साप्ताहिक ही निकलता रहा। ता० २५-१२-१९४१ को अहमदनगर मे कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी हुई, उसमे पुन. प्रस्ताव नं० ११ द्वारा यह तय किया गया कि 'प्रकाश की हिन्दी और गुजराती आवृत्ति दोनों एक साथ न निकाल कर अलग-अलग प्रकाशित की जाय। प्रति सप्ताह क्रमशः एक-एक आवृत्ति निकाली जाय। इस तरह सन् १९४१ के बाद 'प्रकाश' पुनः पाक्षिक कर दिया गया। महीने मे दो बार हिन्दी और दो बार गुजराती 'जैन प्रकाश' प्रकट होने लगा। और गुजराती तथा हिन्दी ग्राहकों को अलग-अलग आवृत्ति भेजी जाने लगी। सन् १९५४ के अन्त तक इसी तरह जैन-प्रकाश दोनों भाषाओं में अलग-अलग पाक्षिक रूप मे निकलता रहा। इस बीच कई बार 'जैन-प्रकाश को साप्ताहिक कर देने के लिये विचारा गया और जनरल-कमेटी मे प्रस्ताव भी पास किये गये, परन्तु साप्ताहिक रूप से प्रकट न हो सका। आखिर जब कॉन्फरन्स का कार्यालय बम्बई से दिल्ली स्थानान्तरित हुआ तब पुनः 'जैन-प्रकाश' को साप्ताहिक करने का विचार किया गया और २ दिसम्बर सन् १९५४ से 'जैन प्रकाश' की दोनों आवृत्तियां (हिन्दी

और गुजराती) एक कर दी गई और पुनः यह हिन्दी-गुजराती द्विभाषा-साप्ताहिक के रूप में कर दिया गया। इससे भी कइयों को संतोष न हुआ और हिन्दी व गुजराती भिन्न-भिन्न आवृत्तियां निकालने की सूचनाएं आने से बीकानेर ज० क० के आदेशानुसार सं० २०१२ तद० ता० १-१२-५४ से गुजराती और हिन्दी पृथक साप्ताहिक रूप में निकल रहा है। 'जैन प्रकाश' के अब तक निम्न सम्पादक रह के हैं :—

(१) डॉ० धारसीभाई गुलाबचंद संघाणी, (२) श्री झवेरचंद जादवजी कामदार, (३) पं० बालमुकुन्दजीशर्मा, (४) श्री रतनलालजी बघेलवाल, (५) पं० दुखमोचनजी झा, (सन् २२-२३ दो वर्ष) (६) श्री दुर्गाप्रसादजी (सन् २४-२५ दो वर्ष) (७) जौहरी सूरजमल लल्लुभाई (ऑ) (८) श्री झवेरचंद जादवजीभाई कामदार (९) श्री सुरेन्द्रनाथजी जैन (दो वर्ष) (१०) श्री त्रि० बी० हेमाणी (कुछ समय) (११) श्री डाह्यालाल मणिलाल मेहता (४ वर्ष) (१२) श्री हर्षचन्द्र मफतचंद दोशी, (९ वर्ष) (१३) श्री नटवरलाल कपूरचंद शाह, (३ वर्ष) (१४) श्री गुलाबचंद नानचद शेठ, (२ वर्ष) (१५) श्री रमणिकलाल तुरखिया, (१६) श्री एम० जे० देसाई, (६ वर्ष) (१७) श्री रत्नकुमार जैन 'रत्नेश' (८ वर्ष)

जैन प्रकाश पहले कुछ वर्षों तक अजमेर से निकला करता था, परन्तु बम्बई ऑफिस जाने के बाद वह बम्बई से ही प्रकाशित होता रहा। बम्बई से दिल्ली ऑफिस आजाने पर अब यह दिल्ली से ही प्रकाशित हो रहा है। वर्तमान में 'जैन प्रकाश' का सम्पादक-मंडल इस प्रकार है:—

श्री खीमचंद मगनलाल वोरा	मानद् सम्पादक	सम्पादक
श्री धीरजलाल के० तुरखिया	,, ,,	शांतिलाल वनमाली शेठ

'जैन प्रकाश' स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स का मुख-पत्र है जो विगत ४२ वर्षों से समाज की सेवा कर रहा है। समाज की जागृति में और कॉन्फरन्स की प्रवृत्तियों के प्रचार मे 'जैन प्रकाश' का महत्त्वपूर्ण भाग रहा है। स्था० जैन समाज का अभी यही एक मात्र प्रामाणिक साप्ताहिक-पत्र है। स्था० जैन साधु-साध्वियों के विहार-समाचार और मुनिराजों तथा विद्वानों के धार्मिक तथा सामाजिक-लेख तथा कॉन्फरन्स की प्रवृत्तियां आदि इसमें प्रकट होते रहते है।

(४) श्री सुखदेवसहाय जैन-प्रिंटिंग-प्रेस

स्व० राजा बहादुर श्री ला० सुखदेव सहायजी ने सन् १९१३ में पांच हजार रुपये कॉन्फरन्स को प्रेस के लिये प्रदान किये थे, जिनसे सन् १९१४ मे प्रेस खरीदा गया। यह प्रेस सन् १९२५ तक अजमेर मे चलता रहा और कॉन्फरन्स का 'जैन प्रकाश' भी यहीं से प्रकाशित होता रहा। कॉन्फरन्स ने अपनी जनरल-कमेटी मे यह प्रेस बेच देने का प्रस्ताव किया। सन् १९२५ के बाद यह प्रेस इन्दौर चला गया था, जहां श्रीयुत् सरदारमलजी भंडारी इसकी देख-रेख रखते थे। अर्ध-मागधी भाषा का प्रसिद्ध कोष—पहला और दूसरा भाग इसी प्रेस मे छपकर तैयार हुआ था। जब कॉन्फरन्स का दफ्तर बम्बई चला गया तो बम्बई-प्रेस का स्थानान्तर इन्दौर से बम्बई मे करना व्ययशील होने से जनरल-कमेटी ने सन् १९२९ मे उसे इन्दौर में ही बैच देने का प्रस्ताव पास किया। सन् १९३० में भी पुनः इसी प्रस्ताव को दोहराया गया। अन्त में वह बैच दिया गया। प्रेस की बिक्री से खर्च निकालने पर रु० १३९१।-)॥ मिले, जो कॉन्फरन्स की वहियों मे 'श्रीसुखदेव सहाय जैन प्रिंटिंग-प्रेस' खाते में जमा कर लिये गये।

ता० १०-५-१६३६ को कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी अहमदाबाद मे हुई। उसमे पुनः प्रेस खरीदने का निर्णय किया गया। रु० १३६१) तो पहले के जमा थे ही और रु० २५००) कॉन्फरन्स ने अपनी ओर से प्रदान किए। इस प्रेस का नाम 'सुखदेव सहाय जैन-प्रिंटिंग प्रेस' ही रखने का तय किया। तदनुसार बम्बई मे प्रेस खरीद लिया गया था और 'जैन-प्रकाश' तथा कॉन्फरन्स के अन्य प्रकाशन उसी में छपकर प्रकट होने लगे।

परन्तु आगे चल कर प्रेस मे घाटा रहने लगा तो ता० २४-१-१६४१ की जनरल-कमेटी मे प्रस्ताव नं० १० के द्वारा प्रेस को बेच देने का निर्णय किया गया। इसके बाद कॉन्फरन्स का अपना प्रेस न रहा।

(५) श्री अर्ध-मागधी-कोष का निर्माण

जैन धर्म के साहित्य का अधिकांश भाग अर्ध-मागधी भाषा मे है। जिस भाषा का प्रामाणिक कोष होता है उस भाषा के अर्थो को समझने मे कोई बाधा उपस्थित नहीं होती। बिना कोष के उस भाषा का सच्चा ज्ञान प्राप्त करना कठिन है। कोष और व्याकरण भाषा के जीवन होते है। व्याकरण की गति तो विद्वानों तक ही सीमित होती है, परन्तु कोष वह वस्तु है जिसका उपयोग विद्वान और साधारण वर्ग भी समान रूप मे कर सकते हैं। अतः कोष की महत्ता स्पष्ट है। इन्हीं विचारों से प्रेरित हो सर्व प्रथम सन् १६१२ मे श्री केशरीचन्दजी भंडारी, इन्दौर को 'अर्ध-मागधी-कोष' बनाने का विचार आया और वे इस ओर सक्रिय रूप से जुट भी गये। उन्होंने जैन सूत्रों मे से लगभग १४ हजार शब्दों का संकलन किया। उसी समय इटली के प्रसिद्ध विद्वान डॉ० स्वाली ने भी श्री जैन श्वेताम्बर कॉन्फरन्स को इसी प्रकार का एक कोष बनाने की अपनी इच्छा व्यक्त की थी। जब यह बात श्री केशरीचन्दजी भंडारी को ज्ञात हुई तो उन्होंने अपना दिया हुआ शब्द सग्रह डॉक्टर स्वाली को भेजने के लिये श्वे० कॉन्फरन्स को भेज दिया। परन्तु बीच मे ही युद्ध प्रारभ हो जाने से तथा अन्य कई कारण उपस्थित हो जाने से डॉक्टर स्वाली यह काम नहीं कर सके। तब उन्होंने अपनी स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स से ही इस प्रकार का कोष प्रकट करने का अपना विचार प्रदर्शित किया और कॉन्फरन्स ने भी इस उपयोगी कार्य को अपने हाथ मे लेना स्वीकार कर लिया।

कोष का कार्य कॉन्फरन्स ने अपने व्यय से करना स्वीकार कर लिया था, पर उसके निर्माण आदि की सारी व्यवस्था का कार्यभार कॉन्फरन्स ने श्री भंडारीजी को ही सौंप दिया था। शुरू मे विद्वानों की सहायता तथा अन्य साधनों के अभाव मे इस कार्य की सन्तोषप्रद प्रगति न हो सकी। सन् १६१६-१७ मे जब भंडारीजी बम्बई गये तो वहां उनकी भेंट शतावधानी पं० मुनि श्री रतनचन्द्रजी म० से हो गई। मुनि श्री संस्कृत और प्राकृत-भाषा के प्रकांड विद्वान थे। उनसे श्री भंडारीजी ने कोष-निर्माण की बात की और यह कार्य अपने हाथ मे ले लेने का अनुरोध किया। मुनि श्री ने उनकी बात को स्वीकार करते हुए कोष बनाने का आश्वासन दिया। इस अवधि में भी दो वर्ष तो यों ही व्यतीत हो गये। मुनि श्री कारणवश कुछ न कर सके। लेकिन शेष तीन वर्षों में आपने अनवरत श्रम करके कोष का काम पूरा कर दिया। इतनी थोड़ी अवधि मे इतना बड़ा कार्य कर देना, यह आप जैसे सामर्थ्यवान विद्वानों का ही काम था। इस कार्य मे लींबड़ी-सम्प्रदाय के पंडित मुनि श्री उत्तमचंदजी म०, पजाब के उपाध्याय श्री आत्मारामजी म० तथा पं० श्री माधव मुनिजी म० और कच्छ आठ कोटि-सम्प्रदाय के पं० मुनि श्री देवचन्दजी स्वामी ने भी पूर्ण सहयोग दिया है। इस कोष मे अर्ध मागधी के साथ २ आगमों, भाष्य, चूर्णिका आदि मे आने वाले समस्त शब्दो का अर्थ दिया गया है। फिर भी यह कोष आगमों का होने से इसका नाम अर्ध-मागधी-कोष ही रखा गया है।

और गुजराती) एक कर दी गईं और पुनः यह हिन्दी-गुजराती द्विभाषा-साप्ताहिक के रूप मे कर दिया गया। इससे भी कइयों को संतोष न हुआ और हिन्दी व गुजराती भिन्न-भिन्न आवृत्तियां निकालने की सूचनाएं आने से बीकानेर ज० क० के आदेशानुसार सं० २०१२ तद० ता० १-१२-५४ से गुजराती और हिन्दी पृथक साप्ताहिक रूप में निकल रहा है। 'जैन प्रकाश' के अब तक निम्न सम्पादक रह के हैं :—

(१) डॉ० धारसीभाई गुलाबचंद संघाणी, (२) श्री झवेरचंद जादवजी कामदार, (३) पं० बालमुकुन्दजीशर्मा, (४) श्री रतनलालजी बघेलवाल, (५) पं० दुखमोचनजी झा, (सन् २२-२३ दो वर्ष) (६) श्री दुर्गाप्रसादजी (सन् २४-२५ दो वर्ष) (७) जौहरी सूरजमल लल्लुभाई (ऑ) (८) श्री झवेरचंद जादवजीभाई कामदार (९) श्री सुरेन्द्रनाथजी जैन (दो वर्ष) (१०) श्री त्रि० वी० हेमाणी (कुछ समय) (११) श्री डाह्यालाल मणिलाल मेहता (४ वर्ष) (१२) श्री हर्षचन्द्र मफरचंद दोशी, (९ वर्ष) (१३) श्री नटवरलाल कपूरचंद शाह, (३ वर्ष) (१४) श्री गुलाबचंद नानचंद शेठ, (२ वर्ष) (१५) श्री रमणिकलाल तुरखिया, (१६) श्री एम० जे० देसाई, (६ वर्ष) (१७) श्री रत्नकुमार जैन 'रत्नेश' (८ वर्ष)

जैन प्रकाश पहले कुछ वर्षों तक अजमेर से निकला करता था, परन्तु बम्बई ऑफिस जाने के बाद वह बम्बई से ही प्रकाशित होता रहा। बम्बई से दिल्ली ऑफिस आजाने पर अब यह दिल्ली से ही प्रकाशित हो रहा है। वर्तमान में 'जैन प्रकाश' का सम्पादक-मंडल इस प्रकार है:—

श्री खीमचंद मगनलाल वोरा	मानद् सम्पादक	सम्पादक
श्री धीरजलाल के० तुरखिया	,, ,,	शांतिलाल वनमाली शेठ

'जैन प्रकाश' स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स का मुख-पत्र है जो विगत ४२ वर्षों से समाज की सेवा कर रहा है। समाज की जागृति मे और कॉन्फरन्स की प्रवृत्तियों के प्रचार में 'जैन प्रकाश' का महत्त्वपूर्ण भाग रहा है। स्था० जैन समाज का अभी यही एक मात्र प्रामाणिक साप्ताहिक-पत्र है। स्था० जैन साधु-साध्वियों के विहार-समाचार और मुनिराजों तथा विद्वानों के धार्मिक तथा सामाजिक-लेख तथा कॉन्फरन्स की प्रवृत्तियां आदि इसमें प्रकट होते रहते है।

(४) श्री सुखदेवसहाय जैन-प्रिंटिंग-प्रेस

स्व० राजा बहादुर श्री ला० सुखदेव सहायजी ने सन् १९१३ में पांच हजार रुपये कॉन्फरन्स को प्रेस के लिये प्रदान किये थे, जिनसे सन् १९१४ मे प्रेस खरीदा गया। यह प्रेस सन् १९२५ तक अजमेर में चलता रहा और कॉन्फरन्स का 'जैन प्रकाश' भी यहीं से प्रकाशित होता रहा। कॉन्फरन्स ने अपनी जनरल-कमेटी मे यह प्रेस बैच देने का प्रस्ताव किया। सन् १९२५ के बाद यह प्रेस इन्दौर चला गया था, जहां श्रीयुत् सरदारमलजी भंडारी इसकी देख-रेख रखते थे। अर्ध-मागधी भाषा का प्रसिद्ध कोष—पहला और दूसरा भाग इसी प्रेस मे छपकर तैयार हुआ था। जब कॉन्फरन्स का दफ्तर बम्बई चला गया तो बम्बई-प्रेस का स्थानान्तर इन्दौर से बम्बई मे करना व्ययशील होने से जनरल-कमेटी ने सन् १९२९ मे उसे इन्दौर में ही बैच देने का प्रस्ताव पास किया। सन् १९३० में भी पुनः इसी प्रस्ताव को दोहराया गया। अन्त में वह बैच दिया गया। प्रेस की बिक्री से खर्च निकालने पर रू० १३९१।–)।।। मिले, जो कॉन्फरन्स की बहियों में 'श्रीसुखदेव सहाय जैन प्रिंटिंग-प्रेस' खाते में जमा कर लिये गये।

ता० १०-५-१६३६ को कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी अहमदाबाद मे हुई। उसमे पुनः प्रेस खरीदने का निर्णय किया गया। रु० १३६१) तो पहले के जमा थे ही और रु० २५००) कॉन्फरन्स ने अपनी ओर से प्रदान किए। इस प्रेस का नाम 'सुखदेव सहाय जैन-प्रिंटिंग प्रेस' ही रखने का तय किया। तदनुसार बम्बई में प्रेस खरीद लिया गया था और 'जैन-प्रकाश' तथा कॉन्फरन्स के अन्य प्रकाशन उसी में छपकर प्रकट होने लगे।

परन्तु आगे चल कर प्रेस मे घाटा रहने लगा तो ता० २४-१-१६४१ की जनरल-कमेटी मे प्रस्ताव नं० १० के द्वारा प्रेस को बेच देने का निर्णय किया गया। इसके बाद कॉन्फरन्स का अपना प्रेस न रहा।

(५) श्री अर्ध-मागधी-कोष का निर्माण

जैन धर्म के साहित्य का अधिकांश भाग अर्ध-मागधी भाषा मे है। जिस भाषा का प्रामाणिक कोष होता है उस भाषा के अर्थों को समझने मे कोई बाधा उपस्थित नहीं होती। बिना कोष के उस भाषा का सच्चा ज्ञान प्राप्त करना कठिन है। कोष और व्याकरण भाषा के जीवन होते है। व्याकरण की गति तो विद्वानों तक ही सीमित होती है, परन्तु कोष वह वस्तु है जिसका उपयोग विद्वान और साधारण वर्ग भी समान रूप मे कर सकते है। अतः कोष की महत्ता स्पष्ट है। इन्हीं विचारों से प्रेरित हो सर्व प्रथम सन् १६१२ मे श्री केशरीचन्दजी भंडारी, इन्दौर को 'अर्ध-मागधी-कोष' बनाने का विचार आया और वे इस ओर सक्रिय रूप से जुट भी गये। उन्होंने जैन सूत्रों मे से लगभग १४ हजार शब्दों का संकलन किया। उसी समय इटली के प्रसिद्ध विद्वान डॉ० स्वाली ने भी श्री जैन श्वेताम्बर कॉन्फरन्स को इसी प्रकार का एक कोष बनाने की अपनी इच्छा व्यक्त की थी। जब यह बात श्री केशरीचन्दजी भंडारी को ज्ञात हुई तो उन्होंने अपना दिया हुआ शब्द सग्रह डॉक्टर स्वाली को भेजने के लिये श्वे० कॉन्फरन्स को भेज दिया। परन्तु बीच में ही युद्ध प्रारंभ हो जाने से तथा अन्य कई कारण उपस्थित हो जाने से डॉक्टर स्वाली यह काम नहीं कर सके। तब उन्होंने अपनी स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स से ही इस प्रकार का कोष प्रकट करने का अपना विचार प्रदर्शित किया और कॉन्फरन्स ने भी इस उपयोगी कार्य को अपने हाथ मे लेना स्वीकार कर लिया।

कोष का कार्य कॉन्फरन्स ने अपने व्यय से करना स्वीकार कर लिया था, पर उसके निर्माण आदि की सारी व्यवस्था का कार्यभार कॉन्फरन्स ने श्री भंडारीजी को ही सौंप दिया था। शुरू मे विद्वानों की सहायता तथा अन्य साधनों के अभाव मे इस कार्य की सन्तोषप्रद प्रगति न हो सकी। सन् १६१६-१७ मे जब भंडारीजी बम्बई गये तो वहां उनकी भेट शतावधानी पं० मुनि श्री रतनचन्द्रजी म० से हो गई। मुनि श्री संस्कृत और प्राकृत-भाषा के प्रकांड विद्वान थे। उनसे श्री भंडारीजी ने कोष-निर्माण की बात की और यह कार्य अपने हाथ मे ले लेने का अनुरोध किया। मुनि श्री ने उनकी बात को स्वीकार करते हुए कोष बनाने का आश्वासन दिया। इस अवधि मे भी दो वर्ष तो यों ही व्यतीत हो गये। मुनि श्री कारणवश कुछ न कर सके। लेकिन शेष तीन वर्षो मे आपने अन-वरत श्रम करके कोष का काम पूरा कर दिया। इतनी थोड़ी अवधि मे इतना बड़ा कार्य कर देना, यह आप जैसे सामर्थ्यवान विद्वानों का ही काम था। इस कार्य मे लींबड़ी-सम्प्रदाय के पडित मुनि श्री उत्तमचंदजी म०, पजाब के उपाध्याय श्री आत्मारामजी म० तथा पं० श्री माधव मुनिजी म० और कच्छ आठ कोटि-सम्प्रदाय के प० मुनि श्री देवचन्दजी स्वामी ने भी पूर्ण सहयोग दिया है। इस कोष में अर्ध मागधी के साथ २ आगमों, भाष्य, चूर्णिका आदि मे आने वाले समस्त शब्दों का अर्थ दिया गया है। फिर भी यह कोष आगमों का होने से इसका नाम अर्ध-मागधी-कोष ही रखा गया है।

इस कोष के ५ भाग है। चार भागों मे तो आगम-साहित्य के शब्दों का संग्रह किया गया है। पांचवें भाग में जो शब्द छूट गये, उनका और महाराष्ट्रीय तथा देशी प्राकृत-भाषा के शब्दों का भी संग्रह किया गया है जिससे यह कोष प्राकृत-भाषा का पूरा कोष हो गया है।

इस कोष में अर्ध-मागधी, संस्कृत, गुजराती, हिंदी और अंग्रेजी, इस प्रकार पांच भाषाएं दी गई हैं। अर्ध-मागधी-कोष, ५ वे भाग के प्रकाशन मे सेठ केदारनाथजी जैन, रोहतक वाले, सोरा कोठी, दिल्ली ने लगभग २५००) रु० की सहायता प्रदान की थी।

अर्ध-मागधी कोष का पहला भाग सन् १६२३ मे, दूसरा सन् १६२७, तीसरा सन् १६३०, चौथा सन् १६३२ और पांचवां भाग सन् १६३८ मे प्रकाशित हुआ।

यह उल्लेखनीय है कि कोष के आद्य प्रेरक श्री केशरीमलजी भंडारी, कोष का पहला भाग ही छपा हुआ देख सके, लेकिन उसमे भी वे मानसिक व्याधि से 'दो-शब्द' न लिख सके। सन् १६२५ मे उनका स्वर्गवास हो गया। उनके बाद उनके सुपुत्र श्री सरदारमलजी भंडारी ने कोष की व्यवस्था संभाली और अपने पिता श्री का मनोरथ पूर्ण किया।

प्रस्तुत कोष के निर्माण में शतावधानी पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० ने जो श्रम उठाया वह उल्लेखनीय है। यह कोष आज अर्ध-मागधी भाषा का प्रामाणिक कोष माना जाता है। इंगलैंड, फ्रांस, जर्मनी आदि कई पाश्चात्य देशों में भी यह कोष भेजा गया है और अब भी वहां से इसकी मांग आ रही है।

जब तक यह कोष रहेगा तब तक शता० पं० रत्न श्री रत्नचन्द्रजी म० का नाम और उनका यह काम अमर बना रहेगा। पांचों भागों का मूल्य अभी २५०) रु० है।

(६) श्री जैन ट्रेनिंग-कॉलेज, बीकानेर

सन् १६२५ मे मल्कापुर अधिवेशन के समय, जो कि कॉन्फरन्स का छठा अधिवेशन था, पुनः जैन-ट्रेनिंग-कॉलेज स्थापित करने का प्रस्ताव पास किया गया और कुछ फंड भी एकत्रित किया गया। कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी ने जो कि ता० ३, ४, ५ अप्रैल सन् १६२६ को बम्बई मे हुई थी, ट्रेनिंग-कॉलेज इस बार तीन वर्ष के लिये बीकानेर मे चलाने का निर्णय कर उसकी सारी व्यवस्था का भार दानवीर सेठ भैरोदानजी सेठिया को सौंप देने का तय किया। तदनुसार ता० १६-८-१६२६ को बीकानेर मे जैन-ट्रेनिंग-कॉलेज का उद्घाटन हुआ। यह उद्घाटन-समारोह बीकानेर महाराजा श्री भैरोंसिंहजी K. C. S. I. द्वारा सानंद सम्पन्न हुआ। कॉलेज मे २० छात्र प्रविष्ट हुए, जिनमे से १२ गुजरात-काठियावाड़ के थे और ८ मेवाड़-मालवा के।

सुपरिन्टेन्डेन्ट के रूप मे श्री धीरजभाई के० तुरखिया की नियुक्ति की गई। कॉलेज की कमेटी इस प्रकार बनाई गई थी :—

जौहरी सूरजमल लल्लुभाई बम्बई, सेठ वीरचंद मेघजीभाई थोभण बम्बई, सेठ वेलजीभाई लखमशी नप्पु बम्बई, सेठ भैरोदानजी सेठिया बीकानेर, सेठ बरधभानजी पित्तलिया रतलाम, सेठ कनीरामजी बांठिया भीनासर, मेहता बुधसिंहजी वेद आबू, सेठ मोतीलालजी मूथा सतारा, सेठ सरदारमलजी भंडारी इंदौर, सेठ आनंदराजजी सुराना जोधपुर, सेठ दुर्लभजीभाई त्रिभुवन जौहरी जयपुर।

यह संस्था सन् १६२८ के मई मास तक बीकानेर मे रही। बाद मे कॉलेज-कमेटी के सभ्यों के निर्णय से यह जयपुर आई और उसका संचालन धर्मवीर श्री दुर्लभजी भाई जौहरी को सौंपा। जुलाई सन् १६२८ से विद्यार्थी

जयपुर आए और कॉलेज का कार्य आरंभ हुआ। ता० १५ फरवरी सन् १९३१ तक कॉलेज जयपुर रहा। बाद मे अर्थाभाव की वजह से ब्यावर-गुरुकुल के साथ ही मिला दिया गया। इसकी दो टर्म्स में अच्छे २ युवक कार्यकर्ता तैयार हुए।

ट्रेनिंग-कॉलेज मे विद्यार्थियों को न्यायतीर्थ तक अध्ययन करने की तथा संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं की पूरी २ जानकारी करने की सुव्यवस्था की गई थी। ट्रेनिंग-कॉलेज को ब्यावर-गुरुकुल के साथ मिलाने से पूर्व ही ट्रेनिंग-कॉलेज के छात्र अपना २ पाठ्य-क्रम समाप्त कर चुके थे। इसके बाद जो छात्र आगे अध्ययन करना चाहते थे उन्हे मासिक छात्रवृत्ति दी जाती थी। लेकिन ट्रेनिंग-कॉलेज के रूप मे जो स्वतत्र संस्था जैन समाज में बड़े आदर के साथ चल रही थी वह १५ फरवरी सन् १९३१ मे बद कर दी गई। समाज के उत्थान मे इस कॉलेज का प्रमुख भाग रहा है क्योकि इसी से तैयार होकर कार्यकर्ता निकले है जो समाज मे आज भी अपनी सेवा दे रहे है। प० हर्षचद्रजी दोशी, प० खुशालचन्द्रजी, पं० प्रेमचन्द्रजी लोढा, प० दलसुखभाई मालवणिया, पं० शांतिलाल व० शेठ आदि इसी ट्रेनिंग-कॉलेज का फल हैं। कॉलेज की उस समय समाज मे बहुत प्रतिष्ठा थी। पं० बेचरदासजी, पं० मुनि श्री विद्याविजयजी आदि विद्वानों ने कॉलेज का निरीक्षण कर प्रसन्नता प्रकट की थी। छात्रों को केवल शास्त्रीय और व्यवहारिक ज्ञान ही नहीं, किन्तु भ्रमण द्वारा भी उन्हें विशेष ज्ञान कराया जाता था।

दुर्भाग्य से यदि यह सस्था बद न हुई होती तो आज समाज मे कार्यकर्ताओं की कमी न होती। सस्थाएं तो उसके बाद कई खुली और बंद हुईं, परन्तु इस जैसी संस्था का प्रादुर्भाव आज तक न हुआ। आज ऐसी संस्था की नितांत आवश्यकता है।

(७) श्री श्वे० स्था० जैन-विद्यालय, पूना

सन् १९२७ मे कॉन्फरन्स का ७ वां अधिवेशन बम्बई मे हुआ था, उस समय इस विद्यालय की शुरुआत हुई। शुद्ध जल-वायु और उच्च शिक्षा की सुव्यवस्था होने से पूना स्थल पसन्द किया गया। तब से सन् १९४० तक यह विद्यालय पूना मे किराये के मकान मे ही चलता रहा। सन् १९४१ में जब कॉन्फरन्स का घाटकोपर मे अधिवेशन हुआ तो उसमे पूना-विद्यालय के लिये स्वतन्त्र मकान बनवाने का निर्णय किया गया। लेकिन उस समय लड़ाई के कारण कार्यारम्भ न हो सका। घाटकोपर-अधिवेशन मे इसके लिये ५० हजार रुपयों का फण्ड भी हुआ था। सन् १९४६ मे मकान का कार्य प्रारम्भ किया गया। श्री टी० जी० शाह इस कार्य के लिये बम्बई से पूना जा कर रहे। परन्तु महगाई की वजह से खर्च अधिक होने से ५० हजार रु० व्यय हो जाने पर भी ६० हजार रुपयों की और आवश्यकता प्रतीत हुई। अतः ता० १५ जून सन् १९४७ की कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी मे यह प्रश्न उपस्थित किया गया। पूना विश्व-विद्यालय की कमेटी ने टूटती रकम के लिये यह प्रस्ताव किया कि "कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी और बम्बई हाई-कोर्ट की स्वीकृति लेकर पूना-विद्यालय की पूरी मिल्कियत जैन एज्युकेशन-सोसायटी बम्बई को इस शर्त पर सौप दिया जाय कि पूना विद्यालय का भवन पूरा करने मे जो कुछ भी टोटा रहे और इसके सम्बन्ध मे पूना विद्यालय की कमेटी ने जो कुछ देना किया हो, जो सब मिला कर ६०,०००) रु० के लगभग होगा, उसे जैन एज्युकेशन-सोसायटी भरपाई करे और पूना-विद्यालय अभी जिस तरह से चल रहा है कम से कम उसी तरह से सोसायटी चलाती रहे।"

उपरोक्त प्रस्ताव कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी मे पेश किया गया था। इसके साथ एक दूसरा प्रस्ताव भी पेश किया गया था कि यदि ऊपर का प्रस्ताव जनरल-कमेटी को मान्य न हो तो धन की तात्कालिक आव-

श्यकता के कारण कॉन्फरन्स फंड में पूना-विद्यालय को तीन टके के ब्याज से १२ मास में भर देने की शर्त पर ३० हज़ार रुपयों की लोन दी जाय।

अन्त मे काफी विचार-विमर्श के बाद पूना विद्यालय को ३० हज़ार रु० का लोन देने का प्रस्ताव पास किया गया।

इस तरह की सहायता से विद्यालय का नया मकान अक्टूबर सन् १९४७ मे जाकर एक मंजिला बन पाया, पर उस पर ८५०००) रु० का कर्ज़ हो गया, जिसे एकत्रित कर चुकाना कठिन प्रतीत होने लगा। अतः पुनः ४ अप्रैल सन् १९४८ की कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी मे जो कि बम्बई मे हुई थी, विद्यालय को ऐज्युकेशन-सोसायटी बम्बई को सौंप देने का बोर्डिंग-कमेटी ने प्रस्ताव किया। तत्कालीन परिस्थिति मे इतना रुपया एकत्रित करना कठिन था और किसी ने भी इसकी जिम्मेवरी लेना स्वीकार नहीं किया फलतः जनरल-कमेटी पूना-बोर्डिंग-कमेटी का वह प्रस्ताव बहुमत से स्वीकृत हो गया। प्रस्ताव इस प्रकार है:—

(२) पूना बोर्डिंग कमेटी ने जैन एज्युकेशन-सोसायटी को पूना-बोर्डिंग सौंप देने का जो नीचे मूजब प्रस्ताव किया है उसे मंजूर किया जाता है और तदनुसार पूना-बोर्डिंग सोसायटी को सौंप देने का निर्णय किया जाता है।

पूना बोर्डिंग-कमेटी का प्रस्ताव:—कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी और बम्बई हाई-कोर्ट की मंजूरी लेकर पूना विद्यालय की तमाम मिल्कियत स्था० जैन एज्युकेशन सोसायटी, बम्बई को निम्न शर्तो पर सौंप देना—

(१) मकान का काम सोसायटी पूरा करे। (२) विद्यालय का जो देना है वह सोसायटी दे। (३) पूना विद्यालय अभी जिस प्रकार चलता है कम से कम उसी प्रकार सोसायटी चलावे। (४) कॉन्फरन्स के अधिवेशन की मंजूरी बिना विद्यालय को सोसायटी स्थानान्तर नही करे और न बन्द करे।

(५) विद्यालय फंड मे जिसने एक साथ १०००) रु० अथवा इससे अधिक रकम दी हो और जो सोसायटी का सभ्य न हो उसको सोसायटी के नियमानुसार सभ्य माने।

कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी और हाई-कोर्ट की मजूरी मिलने पर इस प्रस्ताव पर अमल करना और विद्यालय की मिल्कियत सोसायटी के नाम पर करने मे जो कोई दस्तावेज़ लिखना पड़े या दूसरी कोई लिखावट लिखनी पड़े तो विद्यालय-ट्रस्टियों को इसकी सत्ता दी जाती है।

इस विद्यालय का मकान बनाने मे श्री टी० जी० शाह, स्थानीय मंत्री श्री परशुरामजी चौरडिया, इंजीनियर, श्री शंकरलालजी पोकरना और श्री नवलमलजी फिरोदिया ने काफी दिलचस्पी ली।

जनरल-कमेटी के एक प्रस्तावानुसार पूना विद्यालय स्था० जैन एज्युकेशन सोसायटी, बम्बई को सौंप दिया गया, जिसका सचालन अभी सोसायटी ही कर रही है।

इस विद्यालय मे मैट्रिक से ऊपर के छात्र भरती किये जाते है। अब तक कई विद्यार्थी यहां से वकील, डॉक्टर और ग्रेजुएट होकर निकल चुके है।

(८) श्री श्राविकाश्रम की स्थापना

सन् १९२६ मे कॉन्फरन्स का सातवां अधिवेशन बम्बई मे हुआ था। उसमें सर्व प्रथम श्राविकाश्रम की स्थापना करने का एक प्रस्ताव पास किया गया और उसी समय अधिवेशन के प्रमुख दानवीर सेठ भैरोंदानजी सेठिया ने एक हजार रुपये प्रदान कर इस फंड की भी शुरुआत कर दी। धीरे धीरे यह फंड बढ़ता गया और सन

१९४७ तक लगभग ११ हजार रुपये हो गये। इस बीच मे श्राविकाश्रम की स्वतन्त्र व्यवस्था न हो सकी। लेकिन जो बहिनें पढ़ना चाहती थीं उन्हे बम्बई स्थित तारदेव मे चलने वाली दिगम्बर जैन श्राविकाश्रम मे छात्रवृत्ति देकर कॉन्फरन्स व्यवस्था कर देती थी। इस तरह इस फड का उपयोग केवल छात्रवृत्ति देने तक ही सीमित रहा।

ता० ३-४ अप्रैल सन् १९४८ को बम्बई मे कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी हुई, उसमें पुनः श्राविकाश्रम के लिये विचारणा की गई और उसकी आवश्यकता स्वीकार करते हुए इसके लिये योग्य प्रयत्न करने के लिए निम्न भाई-बहिनों की एक समिति बनाई गई। श्राविकाश्रम स्थापना-समिति निम्न प्रकार है:—

श्री केशरबेन अमृतलाल झवेरी, श्री चचलबेन टी० जी० शाह, श्री लीलावतीबेन कामदार, श्री फूलकुंवर-बेन चौरडिया, श्री रभाबेन गांधी, श्री विद्याबेन शाह, श्री कमलाबेन वसा, श्री चिमनलाल चकुभाई शाह, श्री चिमनलाल पोपटलाल शाह, श्री चुनीलाल कामदार, श्री न्यालचद मूलचंद शेठ, श्री बचुभाई प्रेमजी कोठारी श्री टी०-जी० शाह, श्री चुनीलाल रायचद अजमेरा।

पुराना फड बढ़ाने के लिये कोशिश शुरु की गई पर हिन्दुस्तान का विभाजन हो जाने से निर्वासितों को व्यवस्था आदि कार्य पैदा हो गये जिससे श्राविकाश्रम-फड की वृद्धि न की जा सकी।

सन् १९४८ के दिसम्बर मास मे कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी हुई। उसमे पुनः श्राविकाश्रम की आवश्यकता का प्रस्ताव स्वीकार किया गया और उसके लिये आर्थिक सहयोग देने की समाज से प्रार्थना की गई।

ब्यावर की यह जनरल-कमेटी महत्त्वपूर्ण थी। सघ ऐक्य योजना भी इसी कमेटी मे तैयार हुई थी। समाज के कई अग्रगण्य सज्जन इस कमेटी मे उपस्थित हुए थे। वातावरण मे कुछ जोश आया हुआ था। अतः श्राविकाश्रम के इस प्रस्ताव की प्रस्ताविका श्रीमती चचल बेन शाह और लीलाबेन कामदार ने उसी समय यह प्रतिज्ञा ग्रहण की कि जब तक ५००००) रु० पूरे न होंगे तब तक हम बम्बई मे पैर नहीं रखेगी। इन बहिनों की प्रतिज्ञा सुन कर श्री टी० जी० शाह के हृदय मे भी जोश उमड़ आया और उन्होंने भी 'जब तक इस फड मे एक लाख रुपय न होगे तब तक दूध पीने का त्याग कर दिया।' श्राविकाश्रम के लिये की गई इस त्रिपुटी की प्रतिज्ञाओं का उस समय सभा पर अच्छा असर हुआ और जैन गुरुकुल-ब्यावर का वार्षिक महोत्सव होने से उसी मीटिंग मे ८०००) रु० का फड भी हो गया।

ब्यावर से इस त्रिपुटी का प्रवास प्रारम्भ हुआ। क्रमशः उन्होंने पाली, अजमेर, उदयपुर, चित्तौड़, निबा-हेड़ा, मदसौर, रतलाम, जावरा, खाचरौद, इन्दौर, उज्जैन, अहमदाबाद, खंभात, पालनपुर दिल्ली, जयपुर पूना आदि का प्रवास किया और श्राविकाश्रम के लिये रुपया एकत्रित किया। श्री चंचलबेन और लीलाबेन की प्रतिज्ञा सेठ आनन्दराजजी सुराना के प्रयत्न से दिल्ली मे आकर पूर्ण हुई। श्री टी० जी० शाह की प्रतिज्ञा सेठ रामजी भाई हसराज कामाणी, बम्बई ने, ११,१११) रु० देने की स्वीकृति देकर पूर्ण कराई। ता० २८ २-१९५० तक इस फड मे १,१४२५१) रु०-१० आ०-९ पा० एकत्रित हुए।

इसके सिवाय दो हजार गज जमीन घाटकोपर मे डॉ० दामजी भाई के सुपुत्र श्री चुनीलाल भाई ने श्राविकाश्रम को भेट प्रदान की है, उसकी कीमत २० हजार रु० के लगभग है। किन्तु यह जमीन टाउन-प्लेनिग स्कीम मे होने से अभी तात्कालिक इसका उपयोग नहीं हो सकता है। ता० ३०-८-४९ को घाटकोपर मे स्टेशन के बिलकुल पास ही २५ सौ वर्ग गज जमीन वाला दो मंजिला बना बनाया शेठ वरजीवनदास त्रिभोवनदास नेमचंद का बगला ८५ हजार रु० मे खरीदा गया। इस मकान मे किरायेदार रहने से इसका उपयोग भी श्राविकाश्रम के

लिये नहीं हो सकता था अतः श्राविकाश्रम व्यवस्थापक-समिति ने इसके ऊपर एक और मंजिल बनाने का तय किया। २४-५-५३ को यह कार्य आरम्भ हुआ जो ता० २४-६-५३ को पूरा हुआ। इस अर्से मे बम्बई मे श्री टी० जी० शाह जो इस समिति के उत्साही मंत्री है, ने पर्यूषण-पर्व में लगभग १० हजार रुपए का फंड एकत्रित किया। फुटकर सहायता भी समय-समय पर कॉन्फरन्स के प्रचारकों द्वारा आती रहती है। लेकिन अब इस फंड मे मकान आदि बना लेने पर कुछ शेष नहीं रहता।

श्राविकाश्रम शुरु करने के लिये आवश्यक सामान तथा हुनर-उद्योग के साधन बसाने के लिये २५ हजार रुपयों की आवश्यकता है। श्राविकाश्रम व्यवस्थापक-समिति इसके लिये प्रयत्नशील है।

गत विजयादशमी (सं० २०१२ गु० २०११) आसौज शु० १० से श्राविकाश्रम प्रारम्भ कर दिया है। संख्या मे श्राविकाये इसका लाभ लेवे यह जरूरी है।

(६) श्री पंजाब-सिंध सहायता-कार्य

देश के स्वतंत्र होते ही पंजाब पर जो मुसीबत आई उससे हमारे जैनी भाइयों को भी अवर्णनीय कठिनाइयों का मुकाबला करना पड़ा। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के विभाजन से पंजाब के कई शहरों पर जहां कि हमारे जैनी भाई काफी संख्या मे रहते थे, मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा। सितम्बर सन् १६४७ मे कॉन्फरन्स पर निराश्रित भाइयों के लगातार पत्र, तार और संदेश आने शुरु हो गये और इस विषम-स्थिति में वे कॉन्फरन्स से यथाशक्य सहायता की मांग करने लगे। कॉन्फरन्स ने इस विकट प्रश्न को अपने हाथ मे लेने का निर्णय किया। रावलपिंडी में अपने १२०० भाई फँसे हुए थे, अत सर्व प्रथम कॉन्फरन्स ने वहां का ही प्रश्न अपने हाथ में लिया। पंजाब-सिंध निराश्रित सहायता-फंड की शुरुआत करते हुए सर्व प्रथम कॉन्फरन्स ने १००१) रु० प्रदान किये। बम्बई सकल श्री संघ ने भी १००१) रु० प्रदान कर इस फंड को आगे बढ़ाया। 'जैन प्रकाश, मे इसकी जाहिरात प्रकट कर सहयोग देने की अपील की गई। फलतः समस्त समाज ने अपना लक्ष्य इस ओर केन्द्रित किया और शक्य सहयोग प्रदान करना आरंभ किया। जोधपुर, सैलाना, मन्दसौर, ब्यावर, कुशालगढ़, डग आदि २ शहरों के श्रीसंघों ने निराश्रितों को यथोचित तादाद मे अपने यहां बसाने की इच्छा भी प्रकट की। इस तरह यह कार्य शीघ्रता पूर्वक चलने लगा।

रावलपिंडी के जैनों को बचाने के लिये सर्व प्रथम हवाई जहाज भेजने की कठिनाई कॉन्फरन्स के सम्मुख खड़ी हुई। क्योंकि इसके बिना और कोई साधन नहीं था। इसके साथ २ फौजी सिपाहियों की समस्या भी थी। क्योंकि रावलपिंडी शहर से हवाई स्टेशन लगभग २-३ मील की दूरी पर है, जहां पर बिना सिपाहियों की संरक्षणता के जाना खतरनाक था। अतः इसके लिये ता० २-१०-४७ को कॉन्फरन्स के मंत्री श्री टी० जी० शाह दिल्ली गये। वहां उन्होंने बहुत प्रयत्न किये पर फौजी सिपाहियों की व्यवस्था न हो सकी। उधर निराश्रित भाइयों को बचाने की नितान्त आवश्यकता थी अतः कॉन्फरन्स ने अपना हवाई जहाज भेजने का निर्णय किया। ता० १८—१०—१६४७ को पहला विमान श्री रोशनलालजी जैन और श्री मुनीन्द्रकुमारजी जैन की संरक्षणता में भेजा गया था इसके बाद दूसरा चार्टर विमान ता० २६—१०—१६४७ को श्री मुनीद्रकुमारजी जैन और श्री नौतमलालजी देसाई की संरक्षणता में भेजा गया था। इन दोनो विमानों मे कुल ५२ व्यक्तियों को रावलपिंडी से सही सलामत जोधपुर पहुँचाया गया। इन दोनों विमानों को भेजने मे २२ हजार रु० खर्च हुए थे।

इसके बाद तीसरे विमान की योजना की जा रही थी, कि परिस्थिति ने पल्टा खाया और काश्मीर का प्रश्न जटिल बन गया। हमारी सरकार ने काश्मीर को तात्कालिक मदद पहुँचाने के लिये अपने सब विमान रोक

लिये। फल स्वरूप कॉन्फरन्स का यह कार्य स्थगित हो गया। लेकिन इसके कुछ दिनों बाद ही हमारी राष्ट्रीय सरकार ने पाकिस्तानी इलाकों से सभी निराश्रित भाई-बहिनो को सकुशल हिंद में पहुँचा दिया। रावलपिंडी के १२०० भाई-बहिनों मे से शुरु मे जब वहां दंगा शुरु हुआ था तब ४-५ भाई मारे गये थे, शेष सभी वहां से हिंद मे आ गये। यह कार्य समाप्त हो जाने पर कॉन्फरन्स ने अपना ध्यान सहायता कार्य की ओर केन्द्रित किया और निम्न स्थानों पर सहायता केन्द्र स्थापित किये:—

दिल्ली, अमृतसर, अम्बाला, लुधियाना, जालंधर, और होशियारपुर।

इन सहायता केन्द्रों द्वारा शरणार्थी जैन भाइयों को खाने-पीने, रहने और वस्त्र आदि की तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने का तय किया गया। शरणार्थी भाई अपने पैरों पर खड़े रह सके इसके लिये उन्हें ५००) रु० तक का लोन देने का भी तय किया।

पंजाब की तरह जनवरी सन् १६४८ मे कराची में भी दंगे फसाद हुए। कॉन्फरन्स ने करांची-संघ को भी आश्वासन दिया और शक्य सहायता करने की तत्परता दिखाई। परन्तु करांची के हमारे भाई पहले ही सतर्क हो चुके थे अतः विशेष हानि नहीं उठानी पड़ी। फिर भी जिन २ भाइयों की मांग आई उन्हे कॉन्फरन्स ने लोन आदि देकर सहायता प्रदान की।

यह सब फंड लगभग पौने दो लाख रुपयों का हुआ था। उसमे से १,५००००) रु० तो एरोप्लेन, रेल, मोटर, आदि वाहनों द्वारा अपने भाइयो को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने और लोन तथा पुनर्वास के कार्य मे खर्च किया गया।

शेष रुपया सादड़ी अधिवेशन के आदेशानुसार स्वधर्मी सहायक-फंड मे ले जाया गया, जिसमें से आज भी गरीब भाई-बहिनो को सहायता दी जाती है।

इस कार्य मे दिल्ली केन्द्र के व्यवस्थापक सेठ आनंदराजजी सुराणा ने अत्यधिक श्रम और उत्साह से कार्य किया। अमृतसर के श्री हरजसरायजी जैन ने भी काफी परिश्रम किया और इसमे अपना सहयोग दिया।

यह उल्लेखनीय है कि इस फंड मे से मुख्यतः स्थानकवासी जैन भाइयों के अतिरिक्त श्वेताम्बर, दिगम्बर जैन भाइयों को व जैनेतर भाइयो को भी बिना किसी भेदभाव के सहायता दी गई। और अब भी दी जाती है।

विभाजन के समय तो पं० नेहरू, डॉ० जानमथाई, श्रीमती जानमथाई और उस समय के पुनर्वास-मंत्री श्री मोहनलाल सक्सेना की विशेष सूचनाओ से भी कई जैनेतर भाइयों को सहायता दी गई। उस समय हमारे ये नेता कॉन्फरन्स के इस कार्य से बड़े प्रभावित हुए थे।

कॉन्फरन्स के विगत इतिहास मे यह पहला रचनात्मक कार्य था जिसने कॉन्फरन्स की प्रतिभा बढाई ही नहीं, पर लोगो के दिलों मे आदर्श भावना का भी निर्माण किया। इस कार्य का प्रभाव समाज मे अच्छा पड़ा। फलतः कॉन्फरन्स के प्रति लोगो की श्रद्धा जागृत हुई और वह कुछ कर सकने में समर्थ भी हुई।

(१०) पुष्पाबेन वीरचंद मोहनलाल वोरा विद्योत्तेजक-फण्ड

चूड़ा निवासी श्री वीरचंद मोहनलाल वोरा की ओर से जैन बालक-बालिकाओं के लिये कॉन्फरन्स को ५ हजार रुपयों की भेंट मिली है। अतः इसी नाम से प्रतिवर्ष मैट्रिक से नीचे अभ्यास करने वाले छात्रों को प्रतिवर्ष ५००) रुपये छात्र वृत्तियों मे दिये जाते है। श्री वीरचद भाई व्यापारार्थ बम्बई आये थे, जहां उन्होने

अपने श्रम से अच्छी प्रगति की। उनकी इकलौती पुत्री श्री पुष्पाबेन जिसे कि उन्होंने मैट्रिक तक अभ्यास कराया था, शादी होने से कुछ ही मास बाद स्वर्गवासी हो गई, जिसका उन्हें बड़ा दुःख पहुँचा था। अपनी उसी प्रिय पुत्री की अमर यादगार मे वे कुछ रकम शिक्षण-कार्य मे खर्च करना चाहते थे अतः उन्होंने अपनी यह भावना कॉन्फरन्स के मंत्री श्री खीमचंदभाई वोरा से प्रकट की। श्री वोराजी ने उन्हे 'पढमं नाणं तओ दया' की उक्ति याद दिलाई और श्री वीरचंद भाई ने उनके कथनानुसार जैन छात्रों को स्कूल फीस और पाठ्य-पुस्तकों के लिये ५ हजार रु० की भेट दी। सन् १९४६ से इस खाते मे से प्रतिवर्ष ५००) रु० की छात्रवृत्ति दी जाती है। अब इस फंड मे लगभग ५००) रु० ही शेष रहे है। जबकि आज इस फंड की उपयोगिता बहुत है। क्योंकि कई गरीब छात्रों को इससे सहायता मिलती है अतः किसी भी तरह यह फंड चालू रहे यही हमारा प्रयत्न होना चाहिये।

(११) श्री आगम–प्रकाशन

हंसराज जिनागम विद्या-प्रचारक फंडः–सन् १९३३ मे श्री हंसराजभाई लखमीचद (धारीवाल) ने जिनागमों के सम्पादन और शिक्षण के लिये कॉन्फरन्स को १५ हजार रुपये प्रदान किये थे। कॉन्फरन्स के नवमे अजमेर-अधिवेशन मे प्रस्ताव न० ११ द्वारा उनकी यह योजना स्वीकार करली गई थी। इस फंड मे से उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, सूत्रकृतांग और आचारांग इन चार सूत्रों का हिन्दी मे प्रकाशन कराया गया। इसके बाद सन् १९४६ मे जयपुर की जनरल-कमेटी मे आगम-प्रकाशन के लिये पुनः प्रस्ताव पास किया गया और उसकी योग्य कार्यवाही करने के लिये कॉन्फरन्स के मत्री-मडल को निर्देश दिया गया था। तदनुसार ता०–२९–१२–४३ को बम्बई में एक मीटिंग (मत्री-मडल की) की गई, जिसमे इस पर गभीर विचार-विनिमय कर आगम-संशोधन और प्रकाशन कार्य शीघ्र प्रारभ करने के लिये विज्ञ मुनिराजों का सम्पादक-मंडल और पंडित मुनिवृंद एवं विद्वानों का सहकारी-मंडल बनाने का एवं भाई श्री धीरजलाल के० तुरखिया को मत्रीत्व पद पर नियुक्त कर ब्यावर मे कार्यालय रखने का तय किया गया। आगम-सम्पादक-समिति निम्न प्रकार हैः—

पूज्य श्री आत्मारामजी म०, पूज्य श्री गणेशीलालजी म०, पूज्य श्री आनंदऋषिजी म०, पूज्य श्री हस्तीमलजी म०, पूज्य श्री माणकचदजी म०, पूज्य श्री नागचंदजी म०, गणि श्री उदयचंदजी म०, प० मुनि श्री चौथमलजी म०, प० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म०, पं० मुनि श्री हर्षचन्द्रजी म०, उपाध्याय श्री अमरचंदजी म०, पं० मुनि श्री पुरुषोत्तमजी म०, पं० मुनि श्री पन्नालालजी म०, पं० मुनि श्री नानचंदजी म०, पं० मुनि श्री मिश्रीमलजी महराज।

सहकारी-मंडल'–(विद्वद् मुनिवर्ग) युवाचार्य श्री शेषमलजी म०, पं० मुनि श्री गब्बूलालजी म०, प० मुनि श्री हेमचन्द्रजी म०, पं० मुनि श्री सिरेमलजी म०, पं० मुनि श्री रत्नचन्दजी म०, आत्मार्थी मुनि श्री मोहनऋषिजी म०, पं० मुनि श्री पूनमचंदजी म०, प० मुनि श्री कन्हैयालालजी म०, (विद्वद्वर्ग) प० बेचरदासजी, प्रो० बनारसीदासजी M. A. Ph D, प्रो० अमृतलाल स० गोपाणी M. A. Ph. D., श्री अमोलखचंदजी एल० सुरपुरिया M A LL B. पं कृष्णचन्द्रजी शास्त्री, पं० पूर्णचन्द्रजी दक, राव साहब मणिलाल शाह, श्री प्राणजीवन मोरारजी शाह, श्री झवेरचंद जादवजी, कामदार।

स्व० हंसराजभाई ने आगम प्रकाशन के लिये १५०००) रु० प्रदान किये थे उसी से इस कार्य की शुरुआत हो सकी। उनका फोटू हर एक प्रकाशन में देने का कॉन्फरन्स ने स्वीकार किया। तदनुसार अब तक के पूर्व प्रकाशनों मे उनका चित्र दिया गया है।

ता० १०-८-१९४८ के दिन मंत्री-मंडल की बैठक में किसी भी व्यक्ति का फोटू आगम-बत्तीसी में प्रकट न किया जाय, ऐसा निर्णय किया गया था। परन्तु स्व० हंसराजभाई के साथ में की गई उपर्युक्त शर्त के बाबत क्या किया जाय? यह प्रश्न मंत्री-मंडल के सामने खड़ा हुआ। इस बारे में मंत्री-मंडल श्रीमान् रामजीभाई कामाणी से मिला और वार्तालाप किया। श्री कामाणीजी ने सहर्ष अपनी शर्त वापिस खींच ली और अपने पिता द्वारा शुरु किये गये इस ज्ञान-यज्ञ में १० हजार रु० की और अधिक सहायता देने की स्वीकृति प्रदान की।

ब्यावर में यह कार्य चलता रहा। ता० २४-२५-२६ दिसम्बर सन् १९४९ को मद्रास में कॉन्फरन्स का ग्यारहवां अधिवेशन हुआ, उसमें प्रस्ताव नं १५ द्वारा इस कार्य के प्रति सन्तोष व्यक्त किया गया। प्रकाशन-कार्य प्रारंभ होने के पहिले पूज्य श्री आत्मारामजी म०, पूज्य श्री आनंदऋषिजी म०, पूज्य श्री हस्तीमलजी म० और पं० मुनि श्री हर्षचन्द्रजी म० को बताकर बहुमत से मिलने वाले संशोधनों सहित इसे प्रकाशित करने का निर्णय किया गया।

आर्थिक-व्यवस्था के लिये कॉन्फरन्स-ऑफिस को निम्नोक्त सूचनाएँ भी की गईं:—(क) आगम-प्रकाशन के लिये एक लाख रु० तक का फंड करे। (ख) आगम प्रेमी श्रीमानों से एक आगम-प्रकाशन के खर्च का वचन ले। (ग) आगम-बत्तीसी की ग्राहक-संख्या अधिक से अधिक प्राप्त करने का प्रयास करे।

आगम-प्रकाशन-समिति का ब्यावर में निम्न कार्य हुआ:—

(१) 'जिनागम प्र० की योजना' प्रो० बनारसीदासजी M A Ph D. को रखकर हिन्दी तथा गुजराती में प्रकाशित कराई गयी।

(२.) स्था० जैन भंडारों (लींबडी, जेतपुर, बीकानेर, पाटण आदि) से आवश्यक सामग्री एकत्रित करके विद्वद् मुनिवरों एवं विद्वानो से आगमोदय-समिति के सूत्रों पर संशोधन करवाया। पं० मुनि श्री हस्तीमलजी म० सा०, पं० मुनि श्री आनंद ऋषिजी म० सा०, पं० मुनि श्री कन्हैयालालजी म० सा०, पं० चंपक मुनिजी म० सा०, पं० कवि श्री नानचंदजी म० सा०, पं० मुनि श्री हर्षचन्द्रजी म० सा० आदि ने संशोधन कार्य में सहयोग दिया था। आगम-वारिधि पं० मुनि श्री आत्मारामजी म० सा० अन्तिम निर्णायक रहे।

(३) आगमों के पद्य-विभाग की संस्कृत-छाया तैयार कराई गई।

(४) पारिभाषिक शब्द-कोष हिन्दी व गुजराती में तैयार किया गया।

(५) प्रथम ५ अंग-सूत्रों का शब्द-अर्थ हिन्दी व गुजराती में तैयार किया गया।

तत्पश्चात् प्रकाशन कार्य प्रारंभ करना था। आचरांगादि में आवश्यक टिप्पणियां भी तैयार करायी गई थीं किंतु इसी बीच साधु-सम्मेलन सादड़ी के समय साहित्य-मंत्री आदि की व्यवस्था बदली। उस समय विद्वान् पं० मुनि श्री पुण्य विजयजी म० भी वहीं थे जो जेसलमेर के पुराने भंडार के आधार पर आगमों के मूल-पाठों का भी संशोधन कर रहे थे। श्वे० आगम-साहित्य के मूल-पाठ एकसा हों ऐसा विचार होने से तबतक के लिये प्रकाशन-कार्य स्थगित किया गया।

आगम प्रेमी श्रीमानों ने अपनी तरफ से अमुक २ आगम प्रकाशित करने के और सूत्र-बत्तीसी के पहिले से ग्राहक बनने के वचन भी दे दिये थे। भीनासर साधु-सम्मेलन में इस विषय में विचार होगा।

(१२) धार्मिक पाठ्य-पुस्तकें

कॉन्फरन्स के घाटकोपर अधिवेशन मे प्रस्ताव नं० ४ से धार्मिक शिक्षण-समिति बनाई गई प्रस्ताव नं० ४ निम्न प्रकार है :—

प्रस्ताव ४—(धार्मिक-शिक्षण-समिति की स्थापना)

यह कॉन्फरन्स मानता है कि जैन धर्म के संस्कारों का सिंचन करनेवाला धार्मिक-शिक्षण हमारी प्रगति के लिये आवश्यक है। अतः चालू शिक्षण में जो कि निर्जीव और सत्वहीन है, परिवर्तन कर उसे हृदय-स्पर्शी और जीवित-शिक्षण बनाने की नितांत आवश्यकता है। इसके लिये शिक्षण-क्रम और पाठ्य-क्रम तैयार करने के लिये तथा समस्त हिंद मे एक ही क्रम से धार्मिक-शिक्षण दिया जाय तथा परीक्षा ली जाय, इसकी एक योजना बनाने के लिये निम्नोक्त भाइयों की को-ऑप्ट करने की सत्ता के साथ एक धार्मिक-शिक्षण समिति बनाई जाती है। इस शिक्षण समिति की योजना मे जैन-दर्शन का गहरा अभ्यास करने वालों के लिये भी अभ्यास-क्रम का प्रबन्ध किया जायेगा :—

श्रीमान् मोतीलालजी मूथा सतारा प्रमुख, श्रीमान् खुशालभाई खेंगार बम्बई, श्रीमान् जेठमलजी सेठिया बीकानेर, श्रीमान् चिमनलाल पोपटलाल शाह बम्बई, श्रीमान् मोतीलालजी श्रीश्रीमाल रतलाम, श्रीमान् कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्रीमान् ला० हरजसरायजी जैन अमृतसर, श्रीमान् केशवलाल अबालाल खंभात, श्रीमान् चुन्नीलाल नागजी वोरा राजकोट, श्रीमान् माणकचदजी किशनदासजी मुथा नगर, श्रीमान् धीरजलाल के० तुरखिया मन्त्री ब्यावर।

उक्त प्रस्ताव के आधार पर धार्मिक-ज्ञान सस्थाओ मे और जैन-छात्रालयों तथा विद्यालयों मे उपयोगी हो इसके लिए एक ही सरल पद्धति से सर्वांगीण धार्मिक-शिक्षण देने योग्य जैन पाठावली (सीरीज) तैयार करने का कार्य आरंभ किया गया। विद्वानो की उपसमिति बनाई गई, पाठ्यक्रम की रूपरेखा निर्धारित की गई और जैन पाठावली के सात भाग बनाने का निर्णय किया गया।

इस समिति का कार्यालय भी मानद् मत्री श्री धीरजलाल के० तुरखिया के पास ही जैन-गुरुकुल, ब्यावर मे रखा था। कॉन्फरन्स-ऑफिस के सक्रिय सहयोग से मत्रीजी ने उत्साह पूर्वक उक्त कार्य प्रारभ किया। समाज के विद्वानो के सहयोग से जैन पाठावली के सात भागो का मजमून तैयार किया गया। इसमे श्रीमान् सतबालजी का परिश्रम मुख्य है। पं० नटवरलाल क० शाह, न्यायतीर्थ का सहयोग, प्रो० अमृतलाल स० गोपाणी M A Ph. D. का सशोधित कॉपियाँ तैयार करने का प्रयत्न, प० शोभाचद्रजी भारिल्ल का हिन्दी अनुवादन, प० सौभाग्यचद्रजी गो० तुरखिया के लेखन कार्य आदि २ सहयोग से जैन-पाठावली का कार्य सम्पन्न हुआ। हिन्दी भाषा मे ५ भाग और गुजराती भाषा में ५ भाग प्रकाशित कराये गये। गुजराती प्रूफ सशोधन और छपाई में श्रीमान् चुन्नीलाल वर्धमान शाह, अहमदाबाद ने सेवा भाव से अच्छा सहयोग दिया।

प्रकाशन खर्च मे श्रीमान् हस्तीमलजी सा० देवड़ा, (बगडी निवासी) सिकन्द्राबाद वालो ने रु० ५०००) की उदार सहायता दी जिससे प्रकाशन कार्य शीघ्रता से हुआ।

जैन-पाठावली के प्रत्येक भाग मे ४-४ विभाग है। (१) मूलपाठ, (२) तत्त्व-विभाग, (३) कथा-विभाग और (४) काव्य-विभाग। प्रथम चार भाग पाठावली मे नैतिक-शिक्षण के साथ २ सामायिक, प्रति-क्रमण मूल, विस्तृत अर्थ, भावार्थ, समझ आदि। तत्त्वज्ञान में नव तत्त्व, षट्काल, षट्द्रव्य, २५ बोल, कर्म-स्वरूप आदि क्रमशः संक्षिप्त और विस्तृत बोधप्रद पद्धति से दिया है। रोचक शैली से धार्मिक कथाएं और काव्य दिये है।

जैन पाठावली पांचवे भाग में संक्षिप्त प्राकृत व्याकरण दिया है और बाद मे आगमों के छोटे २ सूत्र

मूल विभाग में, क्रमशः उच्च तत्त्वज्ञान, संक्षिप्त जैन इतिहास कथा विभाग मे तथा आगमों के काव्यमय संवाद काव्य-विभाग मे दिये है।

जन पाठावली के प्रचार के लिये प्रयत्न किया, और 'धार्मिक-परीक्षा बोर्ड पाथर्डी' के पाठ्यक्रम मे स्थान देने का भी आग्रह किया। परिणामतः अनेक धार्मिक पाठशालाओं ने इस पाठावली को अपनाई जिससे पहिले और दूसरे भाग की तीन २ आवृत्तियॉ तक छपानी पड़ी है। यही इसके आदर का प्रमाण है।

'श्री तिलोकरत्न स्था० जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड' ने पाठावलियों को पाठ्-क्रम में स्थान देने के साथ २ पाठावली के पांचों ही भाग का पूरा स्टॉक खरीद लेने की, छठे और सातवे भागों तथा पांच भागों की नई आवृत्तियां कॉन्फरन्स की आज्ञा से और कॉन्फरन्स के नाम से छपाने की इच्छा ज़ाहिर की। प्रचार और प्रबन्ध की दृष्टि से उचित समझ कर पाठावली का स्टॉक तथा पूछकर छपाने की आज्ञा प्रदान की। बोर्ड ने जैन पाठावली का छठा भाग भी छपा दिया है। सातवॉ भाग और स्था० जन धर्म का इतिहास भी छपा देंगे।

(१३) संघ-ऐक्य योजना

कॉन्फरन्स को स्थापित हुए आज ४६ वर्ष व्यतीत हो गये है। इस लम्बी अवधि मे कॉन्फरन्स ने यदि कोई अपूर्व और अद्वितीय कार्य किया है तो वह सघ ऐक्य योजना का है। यह कार्य केवल रचनात्मक ही नहीं क्रांतिकारी और आध्यात्मिक उन्नति का पोषक भी कहा जा सकता है। वर्षो के प्रयत्नो से इस योजना द्वारा सादड़ी (मारवाड़) मे श्री वर्धमान स्था० जैन श्रमण-संघ की स्थापना हुई। लगभग बत्तीस मे से बाईस सम्प्रदायों का एकीकरण हुआ। उपस्थित सम्प्रदायों के साधु अपनी २ शास्त्रोक्त पदवियां छोड़कर श्रमण-सघ मे सम्मिलित हुए। अपने देश मे राजकीय-क्षेत्र मे जैसे सात सौ राज्यों का विलीनीकरण होकर सयुक्त-राज्यो की स्थापना हुई वैसे ही लगभग डेढ हज़ार साधु-साध्वियों का यह एक ही आचार्य की नेश्राय मे सगठन हुआ है। स्था० जैन समाज की यह अजोड़ सिद्धि कही जा सकती है। गुजरात-सौराष्ट्र और कच्छ की सम्प्रदायों का एकीकरण होना अभी शेष है। इसके लिये प्रयत्न चल रहे है। इन सभी सम्प्रदायों के श्रमण-सघ मे मिल जाने पर यह श्रमण-संघ स्था० समाज की एकता का एक अपूर्व प्रतीक बन जावेगा। पूरा वर्णन साधु सम्मेलन के प्रकरण मे देखे।

(१४) अन्य सहायता कार्य

कॉन्फरन्स के पास निम्नोक्त फंड है, जिनमे से स्थानकवासी जैन भाई-बहनों को बिना किसी प्रान्त भेद के योग्य सहायता भेजी जाती है।

स्त्री–शिक्षण फंडः—

इस फंड मे से विधवा बहिनों को और विद्याभ्यास करने वाली बहिनों को छात्रवृत्ति के रूप में सहायता दी जाती है। कोई भी अनाथ, दीन, दुखी बहिन अर्जी दे कर सहायता ले सकती है। सारे हिन्दुस्तान मे से सैकड़ों अर्जियां आती है, जो लगभग सभी स्वीकार की जाती है और फ्ंड के परिणाम मे सबको यथायोग्य सहायता भेजी जाती है।

श्री आर० वी० दुर्लभजी छात्रवृत्ति फंडः—

कॉलेजों मे पढ़ने वाले छात्रों को प्रतिवर्ष रु० ३०००) लगभग की छात्रवृत्तियां दी जाती है।

श्री खीमचन्द मगनलाल वोरा छात्रवृत्ति फण्डः—

कॉलेजों में पढने वाले छात्रो को प्रति वर्ष रु० १०००) लगभग की छात्रवृत्तियॉ दी जाती हैं।

स्वधर्मी सहायक-फण्ड :—

इस फंड में से गरीब भाई-बहिनों को तात्कालिक सहायता दी जाती है।

उपरोक्त सभी फंडों में अर्जियों की संख्या बहुत होती है। परन्तु फंडों में विशेष रकम न होने से, दी जाने वाली रकम बहुत थोड़ी होने से सबको अधिक प्रमाण में योग्य सहायता नहीं भेजी जा सकती है। फंड तो लगभग पूरे होने आये हैं अतः दोनों श्रीमानों को उदारता प्रदर्शित कर इन फंडों की रकमों को ब[illegible] चाहिये, जिससे कि समाज के दीन दुखी भाइयों को थोड़ी बहुत भी मदद पहुंचती रहे।

(१५) प्रांतीय-शाखायें

कॉन्फरन्स का प्रचार और सेवा-क्षेत्र बढ़ाने के लिये 'प्रान्तीय-शाखायें' खोलने का निर्णय किया तदनुसार बम्बई, मध्यभारत, महाराष्ट्र और राजस्थान मे प्रान्तीय शाखायें खुल गई हैं। कलकत्ता (बगाल, बि[illegible] आसाम), मद्रास (मद्रास प्रान्त, मैसूर, केरल), गुजरात (कच्छ, सौराष्ट्र, गुजरात) और पंजाब आदि में भी प्रान [illegible] शाखाये खोलने के प्रयत्न चल रहे हैं।

जिन २ प्रान्तों मे प्रान्तीय शाखाये नहीं खुली हैं, वहॉ के आगेवानों को अपने २ प्रान्त मे प्रान[illegible] शाखाये खोलने का प्रयत्न करना चाहिये। वर्तमान प्रान्तीय शाखाये और मत्री इस प्रकार हैं:—

प्रान्त	केन्द्र-स्थान	मंत्री
(१) मध्यभारत-मेवाड़	जावरा	श्री सुजानमलजी मेहता
(२) राजस्थान (मारवाड़)	जोधपुर	श्री ऋषभचंदजी कर्णावट
(३) बृहत्-गुजरात व बम्बई	बम्बई	श्री खीमचंदभाई म० बोरा श्री गिरधरलालभाई दफ्तरी
(४) बगाल बिहार-आसाम	कलकत्ता	श्री जसवन्तमलजी लोढा

(१६) कॉन्फरन्स की तरफ से प्रकाशित-साहित्य

(१) अर्ध-मागधी कोष—आगम तथा मागधी-भाषा के अभ्यास मे यह कोष प्रमाणभूत माना जाता है शता० पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० कृत यह शब्द कोष ५ भागों मे प्रकाशित हुआ है। प्रत्येक भाग की छु[illegible] कीमत ५०) रु० है। पांचों भागों की एक सेट की कीमत २५०) रु० है।

इंग्लैड, फ्रान्स, जर्मनी आदि पश्चिम के कई देशो मे यह कोष भेजा गया है और अब भी वहां से इ[illegible] कोष की मांग आती रहती है।

(२) उत्तराध्ययन सूत्र—श्री सतबालजी कृत हिन्दी मे अनुवाद। पृष्ठ सं० ४१४, कीमत २) रु०, (३) दश[illegible] कालिक सूत्र—श्री सतबालजी कृत हिन्दी मे अनुवाद। पृष्ठ सं० १६० कीमत ।।।) आना। (४) आचारांग सूत्र—[illegible] गो० जी० पटेल कृत छायानुवाद। हिन्दी मे पृष्ट १४४ कीमत ।।।) आना। (५) सूत्रकृतांग-सूत्र—श्री गो० [illegible] पटेल कृत छायानुवाद। पृष्ठ १४२, कीमत ।।।) आना। (६) सामायिक-प्रतिक्रमण-सूत्र-सामायिक और प्रतिक्र[illegible] सरल और शुद्ध भाषा मे अर्थ सहित प्रकट किया गया है। गुजराती आवृत्ति की कीमत १० आना और [illegible] आवृत्ति की छः आना। पोस्टेज चार्ज अलग।

नोटः—मिलने का पता—श्री अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स, १३६०, चान्दनी चौक, दिल्ली

श्री श्वे० स्था० जैन कॉ० की सुदृढ़ता, समृद्धि तथा प्रगतिशीलता के लिये योजना व अपील

योजना :—हमारी यह कॉन्फरन्स (महासभा) भारत के समस्त स्थानकवासी (आठ लाख) जैनों की प्रतिनिधि-संस्था है। इसकी स्थापना सन् १९०६ में मोरवी (सौराष्ट्र) में हुई थी। इसी कॉन्फरन्स-माता की कृपा से हम काश्मीर से कोलम्बो और कच्छ से बर्मा तक भारत के प्रत्येक प्रान्त मे फैले हुए स्वधर्मी भाइयों के परिचय मे आये, एक-दूसरे के सुख-दुःख के सम-भागी बने और पारस्परिक सहयोग से धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और व्यावसायिक सम्पर्क बढ़ा कर विकास कर सके। कॉन्फरन्स के लगभग ५० वर्ष के कार्यकाल मे भिन्न-भिन्न स्थानों पर १२ अधिवेशन हुए और जनरल-कमेटी की बैठकें प्रतिवर्ष होती रही हैं। कॉन्फरन्स ने स्था० जैन समाज एवं धर्म सम्बन्धी अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव एवं कार्य किये, जो जैन इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अंकित है। मुख्य कार्य निम्नानुसार हैः—

'जैन-प्रकाश' हिन्दी और गुजराती-भाषा में ४२ वर्षों से पाक्षिक एवं साप्ताहिक रूप में नियमित प्रकाशित होता रहा है। जैन ट्रेनिंग-कॉलेज रतलाम, बीकानेर, जयपुर मे सफलता पूर्वक चला। वम्बई और पूना में जैन-बोर्डिंग की स्थापना की। पजाब व सिंध के निर्वासित भाइयों के लिये रु० ४ लाख ६० हजार एकत्रित करके सहायता दी। अर्द्धमागधी-कोष के ५ भाग, कुछ आगमों के अनुवाद और धार्मिक पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन किया। स्थानकवासी श्रमण सम्प्रदायों का 'श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण-संघ' के रूप मे सगठन किया। जीव-दया, स्वधर्मी-सहायता, विधवा-सहायता, सामाजिक-सुधार आदि अनेक कार्य किये और किये जा रहे है। श्राविकाश्रम के लिए सवा लाख रुपये का भवन घाटकोपर मे बन गया है और शीघ्र ही सचालित होने वाला है।

कॉन्फरन्स की अनेकविध प्रवृत्तियों द्वारा स्था० जैन समाज की अधिकाधिक सेवा करने के लिये स्थानक-वासी जैन श्रीमानों, विद्वानों, सम्पादकों, युवकों आदि सब आबाल-वृद्ध के हार्दिक सक्रिय सहयोग की हमे अपेक्षा है। इतना ही नहीं हमारे त्यागी मुनिवरों और महासतियों के आशीर्वाद और पथ-प्रदर्शन भी प्रार्थनीय है।

सोजत मे मत्री मुनिवरों की बैठक के समय कॉन्फरन्स की जनरल-सभा (ता० २५-१-५३) मे कॉन्फरन्स का प्रधान कार्यालय दिल्ली मे रखने का दीर्घदृष्टिपूर्ण निर्णय हुआ। तदनुसार कॉन्फरन्स ऑफिस फरवरी सन् १९५३ से (१३८०, चांदनी चौक) दिल्ली मे चल रहा है। कॉन्फरन्स का प्रधान-कार्यालय, मानो स्थानकवासी जैन समाज का 'शक्ति गृह' (Power House) है। यह जितना स्थायी, समृद्ध और शक्ति-सम्पन्न होगा उतना ही अधिक समाज को सक्रिय-सहयोग, प्रेरणा तथा पथ-प्रदर्शन कर सकेगा यह निर्विवाद बात है। इसके लिये स्था० जैन समाज का गौरव युक्त मस्तक ऊंचा उठाने वाला एक भव्य 'कॉन्फरन्स-भवन' भी ले लिया है, जिसमे अनेकविध प्रवृत्तियां चलें जो समस्त स्था० जैन समाज शक्ति संचयगृह (Power House) बन कर भारत मे और विदेशों मे भी जैनत्व, जैन संस्कृति, शिक्षण, साहित्य प्रचार, धर्म प्रचार, सगठन, सहायता, सहयोग रूप प्रकाश फैलाएगा, प्रेरणा देगा, मार्ग-दर्शन करेगा और स्था० धर्म व समाज को प्रगतिशील बनाएगा।

भवन निर्माण दिल्ली में क्यों ?

भारतीय गणतन्त्र की राजधानी-दिल्ली का वर्तमान मे सारे विश्व मे अभूतपूर्व और महत्वपूर्ण स्थान है। राजनीति के साथ २ संस्कृति, साहित्य, शिक्षण और व्यवसाय का भी केन्द्र स्थान है। संसार के सभी देशों के दूतावास (Ambassadors) यहां है। सारे विश्व का सम्पर्क दिल्ली से जोड़ा जा सकता है। यही कारण है कि भारत के सभी राजनैतिक दलों (Political Parties) के केन्द्र भी दिल्ली में ही

हैं। प्रत्येक समाज और धर्म की प्रतिनिधि संस्थाओं के प्रधान कार्यालय दिल्ली में स्थापित हुए है और हो रहे हैं, जिससे बहिर्जगत् के साथ वे अपना सम्पर्क स्थापित करके अपना परिचय और प्रचार का क्षेत्र बढ़ा सकेंगे।

दिल्ली, जैसे भारतवर्ष का केन्द्र है वैसे जैन समाज के लिये भी मध्यवर्ती स्थान है। पंजाब, राजस्थान, मध्यभारत, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, पेप्सु आदि सन्निकट प्रान्तों में स्था० जैनों की अधिक संख्या है। सौराष्ट्र, कच्छ, गुजरात, बम्बई, मद्रास, कलकत्ता, महाराष्ट्र आदि सुदूर प्रान्तों के जैन बन्धुओं का आवागमन राजनैतिक और व्यावसायिक कारणों से दिल्ली मे होता ही रहता है। इस प्रकार सब का सम्पर्क दिल्ली से है।

केन्द्रीय-राजसभा (Parliament) में २२ सदस्य (M P) और दिल्ली स्टेट धारा-सभा में ३ सदस्य (M. L. A) कुल २५ जैन होने से उनके सक्रिय सहयोग द्वारा जैन धर्म और समाज के हितों की रक्षा का सफल प्रयत्न किया जा सकता है। इतना ही नही राष्ट्रपति, मत्री-मडल, अन्य धारासभ्यों और विदेशी राजदूतों का ध्यान जैनधर्म के विश्वोपयोगी उदात्त सिद्धान्तों की ओर आकृष्ट किया जाय तो जैनधर्म के प्रचार मे बहुत बड़ा योग मिल सकता है।

कॉन्फरन्स-भवन मे निम्नोक्त कार्य-प्रवृत्तियाँ प्रारम्भ करने की भावना है और इसी के अनुरूप ही 'भवन निर्माण' करने की योजना कार्यान्वित हुई है :—

१. प्रधान कार्यालय—जिसमे स्था० जैन समाज की समस्त कार्य-प्रवृत्तियों का केन्द्रीय-करण, चतुर्विध सघ से सम्पर्क और प्रान्तीय शाखाओं को तथा प्रचारकों को मार्गदर्शन एवं नियत्रण की व्यवस्था होगी।

२. 'जैन प्रकाश'-कार्यालय—जिसमे कॉन्फरन्स के साप्ताहिक मुख-पत्र जैन प्रकाश के सपादन, प्रकाशन व वितरण की व्यवस्था होगी।

३. जिनागम एवं साहित्य का सम्पादन और प्रकाशन-विभाग—का विद्वान मुनिवरों द्वारा कार्य संपन्न होगा। जिसमे ३२ जिनागमों का संशोधित मूल-पाठ, अर्थ, पाठांतर, टिप्पणियां, पारिभाषिक शब्द-कोष आदि नूतन-शैली से समृद्ध सपादन व प्रकाशन होगा। इसके अतिरिक्त :—

(अ) जैनधर्म का परिचय-ग्रन्थ (जैन-गीता)—के रूप मे ३२ सूत्रों के सार रूप जैनधर्म के विश्वोपयोगी उदात्त सिद्धान्तों का सुन्दर सकलन किया जायगा। इसको भारतीय तथा विदेशीय भिन्न-भिन्न भाषाओं अनुवाद करा कर विश्व मे अन्य धर्मावलबियों के पास गीता, कुरान, बाइबिल, धम्मपद की तरह स मान्य जैनधर्म का सपूर्ण परिचय दे सके ऐसी महावीर-वाणी-जैन गीता निर्ग्रन्थ प्रवचन का प्रकाश व घर-घर मे प्रचार किया जायगा।
वर्तमान के तृष्णापूर्ण हिंसक-युग मे एटम-बम्ब, हायड्रोजन-बम्ब की कल्पनामात्र से त्रस्त संसार लिये अहिंसा के अवतार शान्तिदूत भगवान महावीर का यह शान्ति-शस्त्र (Peace-Bomb) का का करेगा। विश्व-शांति स्थापित करने मे सहायक हो सकेगा।

(ब) जैन साहित्य-माला का प्रकाशन—सर्वोपयोगी इस साहित्य-माला मे अहिंसा, सत्य, आत्मिक-शान्ति, विश्वप्रेम सेवाधर्म, कर्त्तव्य, संयम, संतोष आदि विविध विषयों का सुरुचिकर, सुपाच्य, आकर्षक प्रकाशन सस्त मूल्य में वितीर्ण किया जायेगा। जिसको सर्व-साधारण जनता प्रेम से पढ़े और जीवन मे उतार सके।

४. जैन स्थानक और व्याख्यान-भवन (Lecture-Hall)—नई दिल्ली मे स्था० जैनों की अत्यधिक

संख्या होने पर भी स्था० जैनों का कोई धर्म-स्थानक नहीं है। अतः इसकी पूर्ति भी इस भवन से होगी। मुनिगण को ठहरने का और व्याख्यान-वाणी का तथा धर्मध्यान का इससे लाभ होगा। व्याख्यान-हॉल बन जाने से अनेक भारतीय और विदेशीय विद्वानों के व्याख्यान-द्वारा संपर्क स्थापित किया जा सकेगा और विश्व के नेताओं को आमन्त्रित कर जैनधर्म से प्रभावित किये जा सकेंगे।

५. शास्त्र-स्वाध्याय—इसी स्थान मे नियमित शास्त्रों का और धर्मग्रन्थों का स्वाध्याय-वांचन होता रहे ऐसी व्यवस्था की जायगी।

६. शास्त्र-भण्डार—हमारे श्वेताम्बर और दिगम्बर जैन भाइयों के आरा, जयपुर, जैसलमेर, पाटण, खंभात, कोडाई, बड़ौदा, कपडवंज आदि अनेक स्थानों पर प्राचीन शास्त्र-भण्डार और पुस्तक-संग्रह है परन्तु वैसा स्था० जैनधर्म का एक भी विशाल शास्त्र भडार कहीं भी नहीं है। स्था० जैन शास्त्र एवं साहित्य आज कहीं गृहस्थों के पास तो कोई स्थानकों की आलमारियों मे, पिटारों मे या अन्य प्रकार से अस्त व्यस्त बिखरे पड़े है, उन सबको एकत्रित करके सुरक्षित और सुव्यवस्थित एक केन्द्रीय-शास्त्र-भडार (ग्रन्थ-सग्रह) की अनिवार्य आवश्यकता है।

७. सिद्धान्तशाला—स्था० जैन धर्म का आधार मुनिवर और महासतियांजी है। वे जितने ज्ञानी, स्वमत-परमत के ज्ञाता और चारित्रशील होंगे उतना ही जैनधर्म का प्रभाव बढ़ेगा अतः साधु-साध्वियों के व्यवस्थित शिक्षण की आवश्यकता है। इसके लिए केन्द्रीय 'सिद्धान्तशाला' यहां स्थापित करना और उसकी शाखाएं अन्य प्रान्तों मे भी चालू करना अत्यावश्यक है।

८. वीर-सेवा संघ—जैन साधु-साध्वी पैदल-विहारी और मर्यादाजीवी होने से सुदूर-प्रान्तों मे और विदेशों मे विचर नहीं सकते हैं। अल्प-संख्यक होने से सर्वत्र पहुँच भी नहीं सकते, जिससे सर्व क्षेत्रों मे पूर्ण धर्म प्रचार नहीं होता। इसके लिए स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी म० सा० की कल्पना तथा बम्बई और बीकानेर कॉन्फरन्स के निर्णयानुसार साधु-वर्ग और गृहस्थ-वर्ग के बीच का एक त्यागी ब्रह्मचारी वर्ग तैयार करना जरूरी है। जो 'वीरसेवा सघ' के नाम से 'जैन मिशनरी' के रूप मे काम करेगा। ऐसे संसार से विरक्त और धर्म-प्रचार में जीवन देने वालोको सुविधा-पूर्वक रहने की और कर्म करने की व्यवस्था इस भवन मे की जायगी। इनके द्वारा देश विदेश मे धर्म प्रचार और सांस्कृतिक सम्पर्क बढाया जा सकेगा।

९. जैन ट्रे०-कॉलेज—समाज में कार्यकर्त्ता, उपदेशक, प्रचारक और धर्माध्यापक तैयार करने के लिए जैन ट्रेनिग-कॉलेज की अनिवार्य आवश्यकता है। कॉन्फरन्स ने पहिले भी रतलाम, बीकानेर तथा जयपुर में जैन ट्रेनिंग कॉलेज कुछ वर्षों तक चलाई थी। आज समाज मे जो इनेगिने कार्य-कर्ता दीख रहे हैं, इसी कॉलेज का फल है। वर्तमान मे समाज में सच्चे प्रभावक कार्यकर्ता और धर्माध्यापकों की बहुत आवश्यकता दीख रही है अतः इसी भवन में जैन ट्रेनिंग कॉलेज चलाने का विचार है।

१०. उद्योगशाला—कॉन्फरन्स की तरफ से गरीब स्वधर्मियों को, विधवा बहिनों को और विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष हजारों की सहायता दी जाती है, परन्तु यह तो, गर्म तवे पर जलबिंदु की तरह है। समाज में शिक्षा बढ़ने पर भी बेकारी बढ़ रही है। इसका एकमात्र उपाय उद्योग-उत्पादन बढ़ाना तथा जाति-परिश्रम की भावना जगाना ही है। इसके लिए कॉन्फरन्स भवन मे 'उद्योगशाला' स्थापित करना चाहते है। जिसमें गृह-उद्योग, मशीनरी, रिपेरिंग, बिजली आदि के हुन्नर-कला द्वारा परिश्रम प्रतिष्ठा जागृत करके रोजाना रु० ५-७ कमा सकें ऐसी व्यवस्था होगी जिससे स्वधर्मी भाई सुखपूर्वक जीवन निर्वाह कर सकें। आगरा के दयाल-बाग का प्रारंभ भी इसी प्रकार हुआ था।

११. मुद्रणालय—(प्रिंटिंग-प्रेस) भी इस भवन में चलाया जायगा जो उद्योगशाला का एक अंग बनेगा और इसी मे 'जैन-प्रकाश', आगम तथा साहित्य-प्रकाशन का कार्य भी होता रहेगा। जैन संस्थाओं का भी शुद्ध प्रकाशन कार्य किया जा सकेगा। कई स्वधर्मी भाइयों को इस उद्योग मे लगा सकेंगे।

१२. अतिथिगृह—दिल्ली भारत का सब प्रकार का केन्द्र होने से अपने भाई दिल्ली आते है। नई दिल्ली मे ठहरने के लिए कोई स्थान नहीं है और होटलों मे ठहरना खर्चीला और असुविधा-जनक होता है अतः उनको कुछ दिन ठहरने के लिए कॉन्फरन्स भवन मे समुचित प्रबन्ध वाला अतिथिगृह बनाना भी निहायत जरूरी है। अपनी कॉन्फरन्स इतनी समृद्ध होनी चाहिए कि—

भारत भर में जहां २ स्था० जैनों के १५-२० घर हों, वहां सर्वत्र स्वाध्याय करने के लिए धर्मस्थान बनाने की व्यवस्था मे कम से कम आधा आर्थिक सहयोग दिया जा सके। जैसे श्वे० मूर्तिपूजक जैनों मे आणदजी कल्याणजी की पेढी है।

स्था० जैन समाज की सभी कार्य-प्रवत्तियो को प्रगतिशील बनाने के लिए और केन्द्रीय दफ्तर को स्थायी, समृद्ध, प्रभावशाली और कार्यक्षम बनाने के लिये नई दिल्ली मे 'कॉन्फरन्स भवन' का निर्माण करना और उसमे प्रसिद्ध जैन तत्त्वज्ञ, स्व० वा० मो० शाह की 'महावीर मिशन की योजना' और स्व० धर्मवीर दुर्लभजी-भाई जौहरी की 'आदिनाथ आश्रम' की योजना को मूर्तरूप देना अब मेरे जीवन का ध्येय बन गया है। जिसे मैं अविलम्ब कार्यरूप मे देखना चाहता हूं।

अपील

उपर्युक्त योजना को क्रियान्वित करने के लिये रु० २॥ लाख कॉन्फरन्स-भवन निर्माण मे, रु० १ लाख आगम और साहित्य के लिए तथा रु० १॥ लाख ऊपर वर्णित प्रवृत्तियों के लिए; इस प्रकार पांच लाख रुपए की मैं स्था० जैन समाज से अपील करता हूं। इतने बड़े और समृद्ध समाज मे से:—

५१-५१ हजार रुपए देने वाले दो सज्जन, १०-१० हजार रुपये देने वाले दस सज्जन, ५-५ हजार रुपये देने वाले बीस सज्जन, १-१ हजार रुपये देने वाले सौ सज्जन मिलने पर शेष, १ लाख रुपये इससे छोटी २ रकमें जन साधारण से एकत्रित हो सकेंगी।

मेरे उक्त विचारों को सुनते ही समाज के पुराने सेवक श्री टी० जी० शाह ने रु० ११११) देने का तुरन्त ही लिख दिया है, परन्तु उनसे मैं रु० ५ हजार खुशी से ले सकूंगा।

मुझे अत्यन्त खुशी है कि, स्व० धर्मवीर दुर्लभजी भाई के सुपुत्र श्रीमान् वनेचन्दभाई और श्री खेलशकरभाई जौहरी ने इस कार्य के लिये रु० ५१ हजार का वचन देकर मेरी आशा को बल दिया है। तथा दिल्ली में ४-५ भाइयो ने ५-५ हजार के वचन देकर मेरे उत्साह को बढ़ाया है। मेरी आशा के प्रदीप राजकोट के दानवीर वीराणी बन्धु, श्री केशुभाई पारेख, बम्बई के दानवीर मेघजीभाई का परिवार, सर चुन्नीलालभाई मेहता, कामाणी ब्रदर्स, श्री सघराजका आदि, मद्रास के सेठ श्री मोहनमलजी चौरडिया, गेलड़ा बन्धु आदि, कलकत्ता के—कांकरिया बन्धु, दुगगड़जी आदि मारवाड़ी भाई और गुजराती साहसिक व्यापारी बन्धु आदि, अहमदाबाद के मिल मालिक सेठ शांतिलालभाई मंगलदास तथा अन्य श्रीमान व्यापारी बन्धु, बीकानेर, भीनासर के सेठिया, बांठिया

और वेद परिवार के बन्धुओं के अतिरिक्त खानदेश, दक्षिण, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, मध्यभारत और राजस्थान के धर्म प्रेमी श्रीमान सज्जन तथा कच्छ, सौराष्ट्र, गुजरात, मारवाड़ के, देश विदेशों के साहसिक व्यापारी बन्धुओं के समक्ष पांच लाख रुपये की मांग बहुत बड़ी नहीं है। वे आसानी से मेरी इस मांग को पूरी कर सकते हैं।

मैं तो उम्मीद करता हूं कि--मेरी इस प्रार्थना को पढ कर ही समझदार सज्जन स्था० जैन समाज के उत्थानकार्य के लिये अपने-अपने उदार आश्वासन (वचन) भेज देंगे।

इस प्रकार स्था० जैन समाज अपनी प्रगति के लिये, धर्म सेवा के लिये इस धर्मयज्ञ में यथाशक्ति अपना 'अर्घ्य' देवें और इस योजना को सफल बनावें यही कामना है।

इस अपील को सम्पन्न करने के लिये कुछ समय के बाद प्रतिनिधि मण्डल (Deputation) भी प्रयत्न करेगा। स्था० जैन समाज अपने उत्थान के लिये सर्वस्व देने को तैयार है ऐसा जौहर दिखाने मे अग्रसर होगी इसी भावना और श्रद्धा के साथ। निवेदक :—आनन्राज सुराना M L. A (प्र० म० अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉ० दिल्ली)

संघ का महत्त्व

व्यक्ति से बढ़कर आज संघ का महत्त्व है। संघ के महत्त्व के सामने व्यक्ति का महत्त्व अकिंचन सा प्रतीत होता है। संघ मे समस्त व्यक्तियो की शक्तियां गर्भित है। संघ की उन्नति के लिये यदि व्यक्ति का सर्वस्व भी होम हो जाय तब भी वह ननूनच नहीं करे। व्यक्ति का व्यक्तित्व संघ को उन्नत शिखर पर पहुंचाने मे ही है। संघ की भलाई व्यक्ति की भलाई और संघ की अवनति व्यक्ति की अवनति है। संघ का सम्मान करना, वात्सल्य भाव रखना तथा कमजोरी को दूर कर शुद्ध हृदय से सेवा करना ही व्यक्ति के जीवन का परम लक्ष्य है।

व्यक्ति को भद्रबाहू स्वामी के जीवन-आदर्श को सामने रखकर संघ की उत्तरोत्तर वृद्धि मे सम-भागी बनना ही श्रेयस्कर है। उन्होने सघ के बुलावे का तकाजा होने पर अपनी चिर-साधना को भी बालाए ताक रख संघ की बिखरी हुई शक्तियों को एकत्रित करने मे ही जीवन का महत्त्वपूर्ण अग समझा।

एकाकी रहने मे व्यक्ति की शोभा नहीं है। अकेला वृक्ष जिस प्रकार रेगिस्तान में सुशोभित नहीं होता उसी प्रकार संघ से पृथक व्यक्ति मे भी सौंदर्य नहीं टपकता। एक से अनेक और अनेक से एकता के साकार रूप मे ही सौंदर्य है, प्रेम है, शक्ति है, जोश है और होश का आभास है। संघ के निराश्रित बन्धुओं को आश्रय देना, बेकारों को रोजगार, देना, रोगियों को रोग से वंचित करना, अशिक्षितों मे शिक्षा प्रचार करना, विधवा माता-बहिनों की सार संभाल करना, त्यागी वर्ग की सेवा करना तथा संघ की प्रत्येक शुभ प्रवृति मे सक्रिय भाग लेकर संघबल मे अभिवृद्धि करना ही सच्चा सघ-वात्सल्य दर्शाना है।

आज प्रत्येक व्यक्ति मे यह भावना जागृत होनी ही चाहिये कि वह समाज का एक आवश्यक अग है। एक बडी मशीनरी का सचालन उसके आश्रित रहे हुए असख्य छोटे २ पुर्जो से ही होता है। यदि एक भी पुर्जे में कोई खराबी आ जाती है तो वह मशीन गति-अवरुद्ध हो जाती है। ठीक इसी रूप मे सघ भी एक महान यंत्र है जिसमे चतुर्विध संघ रूप अलग २ आवश्यक पुर्जे सवन्धित है। यदि एक भी साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका। वर्ग रूप पुर्जा विचलित अवस्था मे हो जाएगा तो संघ रूप मशीनरी की अबाध गति मे भी रुकावट आजायेगी। अतः प्रत्येक वर्ग का कर्त्तव्य है कि संघ की शक्ति अविछिन्न रहे वही प्रयत्न करे।

आज भारतवर्ष के समस्त संघों का संगठन ही यह कॉन्फरन्स है।

—धर्मपाल मेहता

नई दिल्ली में स्था० जैन-समाज का विशाल सांस्कृतिक केन्द्र

('जैन-भवन' के लिए खरीदी हुई कोठी का एक दृश्य)

लिखते हुए हर्ष होता है कि लम्बे समय से स्था० जैन-समाज जिसके लिये आतुरता से राह देख रहा था, उसकी पूर्ति हो गई है। अर्थात् नई दिल्ली में लेडी हार्डिंग रोड पर नं० १२ की शानदार कोठी ३४६४ वर्ग गज़ की ज़मीन खरीद कर रु० १० हज़ार देकर रसीद करा ली है और बहुत जल्दी रुपये देकर रजिस्ट्री कराना है। अभी यह कोठी एक मंजिला है। आगे आम सड़क लेडी हार्डिंग रोड है, पीछे डॉक्टर लेन है। दि० जैन नसियांजी के पास है, बिड़ला मन्दिर १॥ फर्लांग पर है। अतः यह कोठी बहुत अच्छे मौके पर अतीव उपयुक्त स्थान पर स्थित है। रजिस्ट्री सहित रु० १,८००००) खर्च होंगे और रु० ७५०००) उस पर लगाने से व्याख्यान हॉल, अतिथि गृह आदि की आवश्यकता पूरी हो सकेगी।

भारत की राजधानी में स्था० जैनों का भवन होना नितान्त आवश्यक था। कोठी के पास ही स्था० जैनों की बस्ती होने से धर्म स्थानक की पूर्ति हो जाती है। कॉन्फरन्स द्वारा स्था० जैन धर्म के प्रचारार्थ और समाज के हितार्थ जैन ट्रेनिंग कॉलेज, ब्रह्मचारी सेवासघ, साहित्य-सशोधन, प्रकाशन और औद्योगिक-शिक्षण आदि २ अनेकविध प्रवृत्तियां करने के लिए मैंने जो योजना और पांच लाख रुपयों की अपील स्था० जैनों के सामने रक्खी थी उसकी पूर्ति करने तथा धर्म और समाज का गौरव बढाने का समय आ गया है।

प्रार्थी संघसेवक—आनन्दराज सुराणा M. L. A. प्र० मं० श्वे० स्था० जैन कॉ० दिल्ली।

पंचम-परिच्छेद

श्री अ० भा० श्वे० स्था० जैन साधु-सम्मेलन का संक्षिप्त इतिहास

समाज-संगठन और समाज-शान्ति के लिए पर्यूषण और संवत्सरी आदि पर्वों का सारे स्था० जैन-समाज में एक ही साथ होना आवश्यक है। इसका प्रयत्न कॉन्फरन्स ने किया। अनेक साधु-श्रावकों ने इसे पसन्द किया। कॉन्फरन्स ने ५ वर्ष का तिथि-पत्र निकाला जिसको बहुतसी सम्प्रदायों ने स्वीकार किया। पंजाब में इन दिनों में तिथि-विषयक पत्री और परंपरा का अत्यन्त झगड़ा चला था। पचवर्षीय तिथिपत्र मनवाने और पंजाब का झगड़ा शान्त करने के लिए आचार्य श्री सोहनलालजी म० सा० की सेवा में, निम्न सज्जनों का प्रतिनिधि मंडल ता० ७, ८, ९ अप्रैल सन् १९३१ को गया :—

१. लाला गोकुलचन्दजी जौहरी दिल्ली, २. सेठ वर्द्धमानजी पित्तलिया रतलाम, ३. सेठ अचलसिंहजी आगरा, ४. सेठ केशरीमलजी चौरड़िया जयपुर, ५. श्री धूलचन्दजी भंडारी रतलाम, ६. रा० सा० टेकचन्दजी जंडियाला और ७. सेठ हीरालालजी खाचरोद।

आचार्य श्री ने कॉन्फरन्स की बात स्वीकार की; परन्तु १ साल में अखिल भारतवर्षीय स्था० जैन साधु-सम्मेलन बुला कर इसका निर्णय और संगठन करने का फरमाया।

आचार्य श्री से प्रेरणा पाकर कॉन्फरन्स अ० भा० साधु-सम्मेलन करने का आन्दोलन चलाया। ता० ११-१०-३१ को दिल्ली में कॉन्फरन्स की ज० क० में 'साधु सम्मेलन' करने का निर्णय किया गया। स्थान व समय निश्चित करने और व्यवस्था के लिए ३१ सदस्यों की समिति बनी। श्री दुर्लभजी त्रिभुनदास जौहरी को मंत्री नियुक्त किये। सं० १९८९ के माघ-फाल्गुन का समय विचारा। वहां तक प्रत्येक सम्प्रदायों को अपना २ साम्प्रदायिक और प्रान्तीय संगठन करके अपने २ मुनि प्रतिनिधि चुनने का ऐलान किया।

स्था० जैन समाज में उत्साह की लहर फैल गई। मंत्रीजी श्री दुर्लभजी भाई जौहरी ने श्री धीरजभाई तुरखिया को अपना साथी बनाकर देशव्यापी दौरा प्रारम्भ कर दिया।

तीन बड़े प्रान्तीय-सम्मेलन और अन्य साम्प्रदायिक-सम्मेलन हुए।

गुर्जर साधु-सम्मेलन

राजकोट में माघ कृष्णा ८ ता० १-३-३२ से प्रारम्भ हुआ। उस वक्त जो साधु-साध्वी थे और राजकोट सम्मेलन में मुनि पधारे थे वे निम्न थे :—

सम्प्रदाय	साधु	साध्वी	पधारे हुए मुनि
१. दरियापुरी	२१	६०	श्री पुरुषोत्तमजी म०, ईश्वरलालजी म० ठा० ५
१. लींबडी मोटा	२६	६६	श्री वीरजी म०, शता० रत्नचन्द्रजी म० ठा० ६
३. गोंडल	१५	६२	श्री कानजी म०, पुरुषोत्तमजी म० ठा० ३
४. लीबडी छोटा	७	१६	श्री मणिलालजी म० ठा० २
५. बोटाद	६	×	श्री माणकचन्दजी म० ठा० २
६. सायला	४	×	श्री संघजी स्वामी ठा० २
७. खंभात	८	१०	नहीं पधार सके
८. बरवाला	३	२४	नहीं पधार सके

निम्न प्रकार संगठन, साधु-समिति और प्रस्ताव हुए :—

भिन्न २ सम्प्रदायों का संगठन

इस संगठन में सम्मिलित होने वाली संप्रदायों की एक सयुक्त-समिति बनाई जाती है। वह इस तरह, कि जिस सम्प्रदाय मे दो से दस तक साधु हों, उसका एक प्रतिनिधि, ११ से २० ठाणे [illegible] २ प्रतिनिधि, २१ से ३० तक तीन प्रतिनिधि। इस तरह प्रति १० ठाणे साधु के लिए एक प्रतिनिधि [illegible] है। आ[illegible] चाहे जितने ठाणे हों, उनकी तरफ से एक प्रतिनिधि और जि[illegible] में [illegible] ही [illegible] सम्प्रदाय की तरफ से समिति में सम्मिलित चाहे जिस सम्प्रदाय के [illegible] ति [illegible] सकता है। शेष सम्प्रदायों की संख्या, अब फिर प्रकाशित होगी।

इस हिसाब से, वर्तमान मुनि संख्या के प्रमाण तथा [illegible] जोड़ कर, लींबडी बड़ी सम्प्रदाय ४ प्रतिनिधि, दरियापुरी सम्प्रदाय के [illegible] लींबडी छोटी सम्प्रदाय के २ प्रतिनिधि, बोटाद सम्प्रदाय का १ [illegible] खंभात सम्प्रदाय के दो प्रतिनिधि और बरवाला सम्प्रदाय के २ प्रति[illegible] की एक समिति नियुक्त की जाती है। इस समिति मे एक [illegible] (कार्यवाहक) रहेंगे। अध्यक्ष और मन्त्रियों की पसन्दगी, समिति [illegible] की पसन्दगी अपनी २ सम्प्रदाय वाले करे।

इस वर्ष के लिये पसन्द की हुई साधु-समिति

अध्यक्ष:—शतावधानी पण्डित श्री रत्नचन्द्रजी महाराज

सम्प्रदायवार-मन्त्रीगण

लींबडी-सम्प्रदाय—	कवि श्री नानचन्द्रजी महाराज।
दयापुरि-सम्प्रदाय—	मुनि श्री पुरुषोत्तमजी महाराज।
गींडल-सम्प्रदाय—	मुनि श्री पुरुषोत्तमजी महाराज।
लींबड़ी छोटी-सम्प्रदाय—	मुनि श्री मणिलालजी महाराज।
खंभात-सम्प्रदाय—	मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज।
बोटाद-सम्प्रदाय—	मुनि श्री माणेकचन्द्रजी महाराज।
बरवाला-सम्प्रदाय—	पूज्य श्री मोहनलालजी महाराज।
सायला-सम्प्रदाय—	पूज्य श्री संघजी महाराज।

कच्छी मन्त्रियों तथा सम्प्रदायवार प्रतिनिधि-मुनियों के शेष नाम, अब फिर प्रकट होंगे।

२—इस समिति का नाम 'गुर्जर-साधु-समिति' रखा जाता है। (गुजराती-भाषा बोलने वालों का समावेश 'गुर्जर' शब्द में होता है)।

३—इस समिति की बैठकें, तीन २ वर्षों के पश्चात् माघ महीने में की जावें। स्थान और तिथि का निर्णय चार महीने पहले अध्यक्ष तथा मन्त्रियों से सलाह करके कर लेना चाहिए। सभ्यों को आमन्त्रण भेजने आदि का कार्य, प्रान्तिक-सम्मेलन-समिति के द्वारा हो सकता है।

४—समिति के एकत्रित होने का यदि कोई खास-प्रसंग उपस्थित हो तो चातुर्मास के अतिरिक्त, चाहे जिस अनुकूल-समय में बैठक की जा सकती है। किन्तु इसके लिए प्रतिनिधियों को दो मास पहले आमन्त्रण मिल जाना चाहिए।

५—कम-से-कम नौ सभ्यों के उपस्थित होने पर, समिति की कार्य-साधक हाज़िरी (कोरम) गिनी जावेगी यानि कामकाज चालू किया जा सकेगा। किन्तु अध्यक्ष और मन्त्रियों की उपस्थिति आवश्यक होगी।

६—प्रत्येक बात का निर्णय, सर्वानुमति से और कभी बहुमत से हो सकेगा। जब दोनों तरफ समान मत होंगे, तब अध्यक्ष के दो मत गिनकर, बहुमत से प्रस्ताव पास किया जा सकेगा।

७—कामकाज का पत्र-व्यवहार, प्रत्येक सम्प्रदाय के मन्त्री के द्वारा करवाना चाहिए। मन्त्री-अध्यक्ष की सम्मति प्राप्त करके उसका निर्णय कर सकेंगे। यदि कोई विशेष कार्य होगा तो अध्यक्ष तथा सब मन्त्रीगण सर्वानुमति से और कभी बहुमत से पत्र द्वारा खुलासा कर सकेंगे।

समिति का कार्य

८—प्रत्येक सम्प्रदाय वालों को, जहां तक हो सके अपनी-अपनी सम्प्रदाय की परिषद करके साधु-साध्वियों का संगठन करना चाहिए। उसमें भी, खास कर जिस सम्प्रदाय में अलग-अलग भेद पड़े हुए हों, साधु-साध्वी, निरंकुश होकर, अपनी २ मर्जी के मुताबिक आचरण कर रहे हों, उस सम्प्रदाय को तो अवश्य ही परिषद करके अपना संगठन करना चाहिए। यदि, वह कार्य उस सम्प्रदाय के मन्त्री का किया न हो सके, तो दूसरी

गुर्जर साधु-सम्मेलन

राजकोट में माघ कृष्णा ८ ता० १-३-३२ से प्रारम्भ हुआ। उस वक्त जो साधु-साध्वी थे और राजकोट सम्मेलन में मुनि पधारे थे वे निम्न थे :—

सम्प्रदाय	साधु	साध्वी	पधारे हुए मुनि
१. दरियापुरी	२१	६०	श्री पुरुषोत्तमजी म०, ईश्वरलालजी म० ठा० ५
१. लींबडी मोटा	२६	६६	श्री वीरजी म०, शता० रत्नचन्द्रजी म० ठा० ६
३. गोंडल	१५	६२	श्री कानजी म०, पुरुषोत्तमजी म० ठा० ३
४. लीवडी छोटा	७	१६	श्री मणिलालजी म० ठा० २
५ वोटाद	६	×	श्री माणकचन्दजी म० ठा० २
६. सायला	४	×	श्री संघजी स्वामी ठा० २
७. खंभात	८	१०	नहीं पधार सके
८. वरवाला	३	२४	नहीं पधार सके

निम्न प्रकार संगठन, साधु-समिति और प्रस्ताव हुए :—

भिन्न २ सम्प्रदायों का संगठन

इस संगठन मे सम्मिलित होने वाली संप्रदायो की एक सयुक्त-समिति वनाई जाती है। वह इस तरह, कि जिस सम्प्रदाय मे दो से दस तक साधु हो, उसका एक प्रतिनिधि, ११ से २० ठाणे तक के २ प्रतिनिधि, २१ से ३० तक तीन प्रतिनिधि। इस तरह प्रति १० ठाणे साधु के लिए एक प्रतिनिधि भेज सकते है। आर्याजी चाहे जितने ठाणे हो, उनकी तरफ से एक प्रतिनिधि और जिस सम्प्रदाय मे केवल अर्याजी ही हों उस सम्प्रदाय की तरफ से समिति मे सम्मिलित चाहे जिस सम्प्रदाय के एक मुनि को प्रतिनिधि वना कर भेजा जा सकता है। शेष सम्प्रदायो की संख्या, अब फिर प्रकाशित होगी।

इस हिसाब से, वर्तमान मुनि संख्या के प्रमाण तथा आर्याजी की तरफ से एक मुनि प्रतिनिधि जोड़ कर, लींवडी वड़ी सम्प्रदाय ४ प्रतिनिधि, दरियापुरी सम्प्रदाय के ४ प्रतिनिधि, गोंडल सम्प्रदाय के ३ प्रतिनिधि लींवडी छोटी सम्प्रदाय के २ प्रतिनिधि, वोटाद सम्प्रदाय का १ प्रतिनिधि, सायला सम्प्रदाय का १ प्रतिनिधि, खंभात सम्प्रदाय के दो प्रतिनिधि और वरवाला सम्प्रदाय के २ प्रतिनिधि। इस तरह ८ सम्प्रदायों के १६ प्रतिनिधियों की एक समिति नियुक्त की जाती है। इस समिति मे एक अध्यक्ष और जितनी सम्प्रदायें है, उतने ही मन्त्री (कार्यवाहक) रहेंगे। अध्यक्ष और मन्त्रियों की पसन्दगी, समिति सर्वानुमत या वहुमत से करे और प्रतिनिधियों की पसन्दगी अपनी २ सम्प्रदाय वाले करें।

इस वर्ष के लिये पसन्द की हुई साधु-समिति

अध्यक्षः—शतावधानी पण्डित श्री रत्नचन्द्रजी महाराज

सम्प्रदायवार-मन्त्रीगण

लींबडी-सम्प्रदाय—	कवि श्री नानचन्द्रजी महाराज।
दयापुरि-सम्प्रदाय—	मुनि श्री पुरुषोत्तमजी महाराज।
गोंडल-सम्प्रदाय—	मुनि श्री पुरुषोत्तमजी महाराज।
लींबड़ी छोटी-सम्प्रदाय—	मुनि श्री मणिलालजी महाराज।
खंभात-सम्प्रदाय—	मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज।
बोटाद-सम्प्रदाय—	मुनि श्री माणेकचन्द्रजी महाराज।
बरवाला सम्प्रदाय—	पूज्य श्री मोहनलालजी महाराज।
सायला-सम्प्रदाय—	पूज्य श्री संघजी महाराज।

कच्छी मन्त्रियों तथा सम्प्रदायवार प्रतिनिधि-मुनियों के शेष नाम, अब फिर प्रकट होंगे।

२—इस समिति का नाम 'गुर्जर-साधु-समिति' रखा जाता है। (गुजराती-भाषा बोलने वालों का समावेश 'गुर्जर' शब्द में होता है)।

३—इस समिति की बैठकें, तीन २ वर्षों के पश्चात् माघ महीने में की जावें। स्थान और तिथि का निर्णय चार महीने पहले अध्यक्ष तथा मन्त्रियों से सलाह करके कर लेना चाहिए। सभ्यों को आमन्त्रण भेजने आदि का कार्य, प्रान्तिक-सम्मेलन-समिति के द्वारा हो सकता है।

४—समिति के एकत्रित होने का यदि कोई खास-प्रसंग उपस्थित हो तो चातुर्मास के अतिरिक्त, चाहे जिस अनुकूल-समय में बैठक की जा सकती है। किन्तु इसके लिए प्रतिनिधियों को दो मास पहले आमन्त्रण मिल जाना चाहिए।

५—कम-से-कम नौ सभ्यों के उपस्थित होने पर, समिति की कार्य-साधक हाज़िरी (कोरम) गिनी जावेगी यानि कामकाज चालू किया जा सकेगा। किन्तु अध्यक्ष और मन्त्रियों की उपस्थिति आवश्यक होगी।

६—प्रत्येक बात का निर्णय, सर्वानुमति से और कभी बहुमत से हो सकेगा। जब दोनों तरफ समान मत होंगे, तब अध्यक्ष के दो मत गिनकर, बहुमत से प्रस्ताव पास किया जा सकेगा।

७—कामकाज का पत्र-व्यवहार, प्रत्येक सम्प्रदाय के मन्त्री के द्वारा करवाना चाहिए। मन्त्री-अध्यक्ष की सम्मति प्राप्त करके उसका निर्णय कर सकेंगे। यदि कोई विशेष कार्य होगा तो अध्यक्ष तथा सब मन्त्रीगण सर्वानुमति से और कभी बहुमत से पत्र द्वारा खुलासा कर सकेंगे।

समिति का कार्य

८—प्रत्येक सम्प्रदाय वालों को, जहां तक हो सके अपनी-अपनी सम्प्रदाय की परिषद करके साधु-साध्वियों का संगठन करना चाहिए। उसमे भी, खास कर जिस सम्प्रदाय में अलग-अलग भेद पड़े हुए हों, साधु-साध्वी, निरंकुश होकर, अपनी २ मर्जी के मुताबिक आचरण कर रहे हों, उस सम्प्रदाय को तो अवश्य ही परिषद् करके अपना संगठन करना चाहिए। यदि, वह कार्य उस सम्प्रदाय के मन्त्री का किया न हो सके, तो दूसरी

सम्प्रदाय के मन्त्री या मन्त्रियों से मदद लेनी चाहिए। यदि ऐसा करने से भी कार्य न चले तो अध्यक्ष तथा सब मन्त्रियों से सहायता मांगनी चाहिए। यदि इससे भी कार्य पूरा न हो, तो समिति की बैठक बुलाई जावे और किसी भी तरह वह मतभेद मिटा कर सन्धि करनी चाहिए।

९—प्रत्येक सम्प्रदाय वालों को, अपने २ क्षेत्रों के मुख्य-मुख्य व्यक्तियों को बुलाकर, क्षेत्रों का संगठन करना चाहिए। इसमे भी, जिस सम्प्रदाय का क्षेत्र पर अंकुश न हो, उस सम्प्रदाय को तो अवश्य ही क्षेत्रों के मुख्य व्यक्तियों की परिषद् करनी चाहिए। जो क्षेत्र, सम्प्रदाय के साधुओं में भेद डलवाने मे मददगार होते हों, उन्हें समझाकर एक सत्ता के लिए नीचे लाना चाहिए। चौमासे की विनती, प्रत्येक सम्प्रदाय की रीति के अनुसार उन जगहों पर भेजने का प्रबन्ध करवाना और समिति के नियमों का पालन करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। यह कार्य यदि उस सम्प्रदाय के मन्त्री न कर सके, तो ऊपर कही हुई रीति से दूसरों से मदद मांगने पर दूसरों को उनकी मदद करनी चाहिए।

१०—एक सम्प्रदाय के क्षेत्र मे, समिति की किसी दूसरी सम्प्रदाय के साधुओं को, अपनी जरूरत से या क्षेत्र खाली रहता हो इस दृष्टि से चातुर्मास करने की आवश्यकता पड़े तो चातुर्मास करने वालों को उस सम्प्रदाय के अग्रेसरों की अनुमति प्राप्त करके वहां चातुर्मास करना चाहिए। इस तरह दूसरे क्षेत्र में चातुर्मास करने वालों को उस सम्प्रदाय की परम्परा के विरुद्ध प्ररूपणा करनी चाहिए।

११—दूषितपन के कारण सम्प्रदाय मे बाहर निकाले हुए और स्वच्छन्द रीति से विचरने वाले साधु साध्वी को, चातुर्मास के किसी भी क्षेत्र वालों को अपने यहां चातुर्मास नही करवाना। यदि कोई ऐसे साधु साध्वियों का चातुर्मास करवाएगा, तो समिति उस क्षेत्र का समाधान होने तक बहिष्कार करेगी।

१२—एकलविहारी या संघाड़े के बाहर निकाले हुए साधु साध्वी चाहे जिस तरह समाधान करके, एक वर्ष के भीतर अपनी सम्प्रदाय मे मिल जांय, यदि समिति चाहती है। यदि वे एक वर्ष मे न मिलें तो इसका वन्दोबस्त करने का कार्य साधु-समिति, श्रावक-समिति के सुपुर्द करे अर्थात् समिति को इसके लिए समुचित व्यवस्था करनी चाहिए।

१३—किसी साधु-साध्वी को, अकेले न विचरना चाहिए। यदि किसी कारणवश कहीं जाना पड़े, तो सम्प्रदाय के अग्रेसर की मन्जूरी के बिना न जाना चाहिए। कदाचित् कभी सहायता देने वाले के अभाव मे अकेले ही रहना पड़े तो सम्प्रदाय के अग्रेसर कहे, उसी ग्राम मे रहना चाहिए। अग्रेसर की आज्ञा के बिना यदि दूसरे ग्राम मे जायेंगे, तो संघाड़े के बाहर गिने जावेंगे और उनके लिए नियम न० ११ तथा १२ लागू समझे जावेंगे।

१४—आज्ञा मे रहने वाले किसी शिष्य अथवा शिष्या को असमर्थ होने या ज्ञान-शून्य होने के कारण गु पृथक् न कर सकेंगे। यदि अलग कर देंगे, तो उन्हे दूसरे नये शिष्य या शिष्या करने के लिए, उस संघाड़े अग्रेसर लोग स्वीकृति न दे सकेंगे।

१५—बड़ा अपराध करने वाले शिष्य को, उस ग्राम मे श्रीसंघ के अग्रेसरों को साथ रख कर गु पृथक् कर सकते है, इस तरह से गुरु द्वारा पृथक् किए हुए या भागे हुए साधु को सम्प्रदाय के अग्रेसरों की मंजूर के बिना फिर संघाड़े में नहीं मिलाया जा सकता।

१६—कोई साधु-साध्वी अपना समुदाय छोड़े, अथवा किसी के दोष के कारण सम्प्रदाय वाले उन्हे संघाड़े से बाहर निकाले, तो उनका परम्परा सम्बन्ध भण्डार की पुस्तकों पर कोई अधिकार न रहेगा।

१७—इस समिति में सम्मिलित प्रत्येक सम्प्रदाय वालों को, बारह व्यवहारों (सम्भोगों) में से तीसरे, पांचवे और छठे व्यवहार के अतिरिक्त शेष नौ व्यवहार करने चाहिए। उन नौ के नाम नीचे दिये जाते है :—

(१) उपाधि वस्त्र-पात्र का लेना देना।
(२) सूत्र-सिद्धान्त का वांचन लेन देन।
(३) नमस्कार करना या खमाना।
(४) बाहर से आने पर खड़े होना।
(५) वैयावच्च करनी।
(६) एक ही जगह उतरना।
(७) एक आसन पर बैठना।
(८) कथा प्रबन्ध का कहना।
(९) साथ-साथ स्वाध्याय करना।

१८—यदि भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के विद्यार्थी-मुनियों के लिए कोई संस्था खड़ी हो और उसमे अपनी इच्छानुसार संस्कृत भाषा, प्राकृत भाषा तथा सूत्रों का अध्ययन करने के लिए विद्यार्थी-मुनि रहे तो वे विद्यार्थी-मुनि तथा अध्यापक मुनि परस्पर जब तक संस्था मे रहें, बारहों प्रकार के व्यवहार कर सकते है, ऐसा यह समिति निश्चित करती है।

१९—किसी के भी दीक्षित शिष्य को, फिर वह चाहे अपनी सम्प्रदाय का हो या दूसरी सम्प्रदाय का हो, बुरी सलाह देकर अलग न करवाना चाहिए। निभाने की बात अलग है। ठीक इसी तरह किसी के उम्मीदवार को भी न बहकाना चाहिए।

एक संवत्सरी के सम्बंध में

२०—अष्टमी, पक्खी और संवत्सरी, अपनी सभी सम्प्रदाय वालों को एक ही दिन करनी चाहिये। महा-सम्मेलन के समय, सर्वानुमति से जो पद्धति मुकर्रर हो, वह पद्धति हमारी इस समिति को स्वीकार करनी चाहिये।

दीक्षा के सम्बंध में

२१—दीक्षा लेने वाले उम्मीदवार को, उसके अभिभावकों से छिपाकर इधर उधर भगाना नहीं। उम्मीदवार की शारीरिक सम्पत्ति अच्छी तरह देख लेना चाहिए। किसी प्रकार के दोष वाला न हो, कर्जदार या अपराधी भी न हो। प्रकृति अच्छी हो, वैराग्यवान हो, उसके आचरण मे कोई ऐब न हो, ऐसे उम्मीदवार को ही पसन्द करना चाहिए। उम्मीदवार को एकाध वर्ष अपने साथ रखकर, प्रकृति तथा वैराग्य का पूर्ण परिचय करने के बाद, जब उसकी योग्यता का निर्णय हो जाय तब उसके अभिभावक की लिखित आज्ञा प्राप्त करके, श्रीसंघ तथा सम्प्रदाय के अग्रेसरों की सम्मति प्राप्त करने के बाद ही उसे दीक्षा देनी चाहिये। उम्मीदवार भाई या बाई की उम्र बिल्कुल कम या बहुत अधिक नहीं होनी चाहिए, बल्कि योग्य अवस्था होनी चाहिए। अयोग्य दीक्षा पर समिति का अंकुश रहेगा।

शिक्षा प्रबंध

२२--विद्याभिलाषी मुनियों तथा विद्याभिलाषिनी साध्वियों के लिये, भिन्न २ दो संस्थाए, स्थल, कल्प आदि का निर्णय करके कायम होनी चाहिए। संस्कृत, प्राकृत, थोकड़े और सूत्र का ज्ञान देने के बाद, उपदेश किस तरह देना चाहिए, यह भी सिखलाना चाहिये। तीन वर्ष, पांच वर्ष, या सात वर्ष तक पूरा अभ्यास करके परीक्षा में पास हों, तब तक अपने चेले या चेलियों को, अच्छी देखरेख वाली संस्थाओं मे रखना चाहिए। ऐसी संस्थाए कायम हो जाने के बाद, अलग अलग जगहों पर शास्त्री रखने की प्रणाली वन्द कर देनी चाहिए। आर्याओं को, दूसरी आर्याओं अथवा स्त्री शिक्षिका के पास अभ्यास करना चाहिए, किन्तु पुरुष शिक्षक के पास नहीं।

व्याख्यान दाता की योग्यता

२३—व्याख्यानदाता को, शास्त्रकुशल होना चाहिए, स्वमत और परमत का ज्ञाता होना चाहिए और देशकाल का जानकर होना चाहिए। भीतर ही भीतर मनोमालिन्य पैदा करवाने वाला न होना चाहिए तथा अपनी महत्ता एवं दूसरों की हलकाई बतलाने वाला भी न होना चाहिए। एकान्त व्यवहार अथवा एकान्त निश्चय दृष्टि से स्थापन उत्थापन करने वाला न होना चाहिए, बल्कि व्यवहार तथा निश्चय इन दोनों नय को मान देने वाला होना चाहिए। ज्ञान का उत्थापन करने वाला न होना चाहिए। सरल, समदर्शी, धर्म की सच्ची लगन वाला और समाधि भाव मे रहने वाला होना चाहिए। ऐसी योग्यता वाले को ही व्याख्यान देने का अधिकार मिलना चाहिये।

साहित्य-प्रकाशन संबंधी

२४—मुनियों को, साहित्य-प्रकाशन नहीं, बल्कि यदि हो सके तो, साहित्य रचना करनी चाहिए साहित्य के दो भाग हो सकते है। आगम-साहित्य और आगम के बाद दूसरा धार्मिक-साहित्य। पहले आगम साहित्य का उद्धार होना चाहिए। आगम के सम्बन्ध मे होने वाली शङ्काएं निर्मूल हों, आगम की सत्यता पूर्ण तरह प्रमाणित हो जाय, इस तरह से आगम-साहित्य की योजना होनी चाहिए। अभी अथवा महा-सन्मेलन के अवसर पर, विद्वान् मुनियों की एक कमेटी बना कर द्रव्यानुयोग और चरणकरणानुयोग का पृथक्करण करना चाहिए। मुनियों द्वारा रची हुई पुस्तकों का प्रकाशन करने के लिए विद्वान्-श्रावकों की एक संस्था स्थापित होनी चाहिए। अथवा कॉन्फरन्स की आन्तरिक सभा को यह कार्य अपने हाथ मे लेना चाहिए। मुनियो को प्रकाशन कार्य से कुछ भी सम्बन्ध रखने की आवश्यकता न रहनी चाहिये। यदि रहे, तो केवल इतनी ही, कि छपने मे किसी प्रकार की अशुद्धि न रह जाय, इस बात का ध्यान रखना चाहिए। पुस्तकों के क्रय-विक्रय के साथ मुनियों का कुछ सम्बन्ध न रहे, ऐसी श्रावकों की एक समिति स्थापित होनी चाहिए। निकम्मी पुस्तके, जिनमे कि धार्मिक साहित्य न हो, विषयों की योजना न हो, भाषा की शुद्धि न हो और समाज के लिए उपयोगी भी न हो, ऐसे साहित्य के प्रकाशन मे, कॉन्फरन्स को रोक लगानी चाहिए, ताकि समाज का पैसा वरवाद न हो। विद्वान् साधुओं और श्रावकों की समिति पास करे, वही पुस्तक पास हो सके, ऐसा बन्दोवस्त कॉन्फरन्स को करना चाहिए, ऐसी साधु-समिति की इच्छा है। शिक्षित समाज को, धार्मिक साहित्य के अनुशीलन की वड़ी आतुरता जान पड़ती है, किन्तु वैसे साहित्य के अभाव के कारण, अन्य धर्मो का साहित्य पढ़ा जा रहा है। परिणामतः बहुत से लोगों की श्रद्धा का घुमाव, अन्य धर्मों की तरफ हो जाता है। इस स्थिति को रोकने के लिये यह सम्मेलन अच्छे धार्मिक साहित्य की रचना को अत्यन्त आवश्यक समझता है। जिस तरह से बुद्ध चरित्र प्रकाशित हुआ है, उसी तरह से महावीर

चारित्र की अच्छी से अच्छी पुस्तक क्यों न प्रकाशित हो ? सम्मेलन की यह भी इच्छा है, कि विद्यार्थियों के लिए जैन पाठमाला, अच्छे से अच्छे रूप में तैयार की जावे। इसके अतिरिक्त बहुत साहित्य तैयार करना है। इस सम्बन्धमें, विद्वान् मुनियों तथा विद्वान् श्रावकों को, संयुक्त रूप में कार्य करना चाहिए, ऐसी समिति की इच्छा है। साहित्य की रचना करने वाले मुनियों को साहित्य रचना में पुस्तकों की आवश्यकता पड़ती है। उनकी पूर्ति साधु-समिति को अपने भण्डार से या बाहरी पुस्तकालयों से करनी चाहिए अथवा पुस्तक प्रकाशन-समिति को वैसे साहित्य की पूर्ति करनी चाहिए।

साधु-समाचारी

(प्राचीन से प्राचीन, जितनी समाचारियां प्राप्त हो सकीं, उन सबको हमने बांचा है और विचार किया है। उन सबको दृष्टि में रखकर, शास्त्रसम्मत और देशकालानुसार शक्य घटा बढी भी की है। समाचारों के बहुत से बोल देश आश्रित, कुछ सम्प्रदाय आश्रित और कुछ बारीक तथा व्यावहारिक हैं। जितने जरूरी समझे गए, उतने ही बोल प्रकाशित किए जाते हैं। बाकी सब मुनियों की जानकारी मात्र के लिए गुप्त रख लिए जाते हैं।)

२५—दीक्षा के समय, समवसरण में पुस्तकों का खरडा न करवाना चाहिए और दीक्षा देने से पूर्व अंजलि में आई वस्तुओं या किसी को अनुराग पूर्वक दी हुई वस्तुओं में से, दीक्षा का पाठ बोल दिए जाने के बाद कुछ भी न लेना चाहिए। पहले से ही पुस्तक लिखने का आर्डर दे दिया गया हो, उसकी तो बात दूसरी है, किन्तु दीक्षा के अवसर पर, दीक्षा वाले के उपकरणों के अतिरिक्त दूसरे साधुओं या आर्याजी के लिए कुछ भी न लेना चाहिए।

२६—साधु-साध्वियों को, दीक्षा में या उसके बाद सब प्रकार रेशमी-वस्त्र डोरियें शरबती मलमल, वायल आदि पतले वस्त्र न लेने चाहिएं। इसी तरह सिन्धी कम्बलों के समान पट्टी वाली चद्दरें या बड़ी रंगीन किनारी वाले टॉवल्स नए न लेने चाहिये। यदि पुराने हों तो उन्हें भीतर ही भीतर काम में लेना चाहिये। (जब तक बन सके, समय धर्म की रक्षा करते हुए वस्त्र वहरने चाहिएं)।

२७—चातुर्मास के क्षेत्रों में, व्याख्यान अथवा वॉचन के समय के अतिरिक्त, साधुजी के उपाश्रय में स्त्रियों को और आर्याजी के उपाश्रय में पुरुषों को, आवश्यक कार्य के बिना न बैठे रहना चाहिए। बाहर ग्रामों से आये हुए लोगों की बात अलग है। किसी आर्याजी को सूत्र की वांचनी देनी हो तो अनुकूल समय पर, दो घण्टे से अधिक वांचनी न देनी चाहिये। और वह भी खुले हॉल में बैठकर, एकान्त में बैठकर नहीं।

२८—साधुओं को दो से कम और साध्वीजी को तीन से कम न विचरना चाहिए। यदि किन्हीं आर्याजी के साथ तीसरी आर्याजी विचरने वाली न हो और सम्प्रदाय के अग्रेसर उन्हें स्वीकृति दे दें, तो दूसरी बात है।

२९—प्रत्यक्ष में अप्रतीतिकारी गिने जाने वाले घर में, साधु-साध्वियों को अकेले न जाना चाहिये।

३०—श्रावकों को, अपनी धार्मिक क्रियायें करने के लिए जो मकान बनाये हों (फिर उनका नाम चाहे जो हो) उनमें साधु लोग उतर सकते है। हां, खास तौर पर मुनियों के लिए ही बनाये गये हों, तो उनमें नहीं उतर सकते।

३१—मन्त्र-तन्त्र का प्रयोग करके दूसरों को परेशान करना या भविष्य बतलाना यह मुनि-धर्म के विरुद्ध है, ऐसा यह समिति निश्चित करती है।

३२—साधु-साध्वी के फोटो खिंचवाना, उन्हे पुस्तकों में छपाना या गृहस्थ के घर पर दर्शन पूजन के लिए रखना, समाधि-स्थान बनाना, पाट पर रुपए रखना, पाट को प्रणाम करना आदि जड़पूजा, हम लोगों की परम्परा के विरुद्ध है। इसलिए समिति को इसकी रोक करनी चाहिये और श्रावक-समिति को इसमें मदद पहुंचानी चाहिये।

३३—संवत्सरी सम्बन्धी कागज न छपवाये जावें, और न वैसे कागज लिखें या लिखवाये ही जावें। छोटे साधु-साध्वी को बड़ों की मन्जूरी के बिना कागज न लिखवाने चाहिएं। महत्वपूर्ण पत्र संघ के मुख्य व्यक्ति के हस्ताक्षर के बिना न भेजने चाहिए।

३४—श्रावक समिति के सभ्यों का चुनाव, साधु-समिति की सलाह लेकर करना चाहिए, ऐसी साधु-समिति की इच्छा है।

३५—समिति के मन्त्री अथवा अध्यक्ष के नाम आये हुए महत्वपूर्ण पत्र, सम्मेलन-समिति के मन्त्री श्री दुर्लभजीभाई जौहरी के पास इस शर्त पर रक्खे जावे कि जब साधु-समिति की बैठक हो अथवा उस विषय पर विचार करने का मौका मिले, तब वे कागज समिति के सामने पेश करें।

३६—उपरोक्त जो नियम सर्वानुमति से बनाये गये है, उन्हें समिति के प्रत्येक साधु-साध्वी को प्रभु की साक्षी से पालना चाहिये। इसमे यदि कोई हस्तक्षेप करेगा या नियम का उल्लंघन करेगा, तो समिति उसे उचित दण्ड देगी। अपराधी का कोई पक्षपात न करे। यदि कोई पक्षपात करेगा तो वह पक्षपाती भी अपराधी माना जावेगा।

उपरोक्त मसविदे मे, एक मास के भीतर जो २ सूचनाएं प्राप्त होंगी, वे समिति की दृष्टि से गुजार क[र] यह मसविदा पक्के के रूप मे प्रकाशित कर दिया जावेगा।

मुनिराजों की समिति द्वारा दी हुई सूची

कि साधु-समिति को, श्रावक-समिति की कहा २ मदद चाहियेगी ?

जिन २ सम्प्रदायों में, साधु-साध्वियों मे दलबन्दी है, वहां मतभेद करने मे, साधु-समिति के सा[थ] श्रावक-समिति की आवश्यकता होगी। इसके लिये, सम्प्रदायों के क्षेत्रों मे, प्रभावशाली व्यक्तियों की एक कमे[टी] बनाई जावे और उसकी नियमावली भी बना ली जावे।

एकलविहारी या दूषित-साधुओं को समझाने का कार्य भी श्रावक समिति को करना होगा।

क्षेत्रों का सगठन करने मे श्रावक-समिति की सहायता की जरूरत होगी। इस व्यवस्था की रचना [के] समय नही पधारे हुये साधुओं और खास संघों की सम्मति प्राप्त करने में भी श्रावक-समिति की आवश्यकत[ा] होगी।

साधु-साध्वियों के फोटो पुस्तक मे छपते हों या किसी उपाश्रय मे रक्खे हों, तो उन्हे नष्ट करवाने तथ[ा] समाधि-स्थानों की रचना, पाट पर रुपया रखना या पाट को प्रणाम करना आदि जड़पूजा रोकने का कार्य भ[ी] श्रावक-समिति को करना होगा।

श्रावक-समिति का प्रस्ताव

मुनिराजों द्वारा रची हुई व्यवस्था और बताई हुई लिस्ट के अनुसार कार्य करने के लिए सम्प्रदायवा[र] श्रावकों की एक समिति मुकर्रर करना तय किया जाता है।

इस समिति के प्रधान, सेठ दामोदरदास जगजीवनभाई चुने जाते है। इस समिति मे, सम्प्रदायवार गृहस्थों के नाम प्राप्त करके, उनमे से सभ्य चुनना निश्चित किया जाता है। इस तरह सम्प्रदायवार सभ्यों के नाम प्राप्त करने के लिए, पत्र-व्यवहार आदि प्रबन्ध करने और प्रमुख श्री की सूचना के अनुसार या उनकी सलाह लेकर कार्य करने को, एक वैतनिक मनुष्य रख लेना निश्चित किया जाता है, और इसके लिए रु० १०००) एक हजार का चन्दा करना तय किया जाता है। जब तक पूरी नई समिति का चुनाव न हो जाय, तब तक श्री दुर्लभजी त्रिभुवन जौहरी और श्री भाईचन्दजीभाई अनूपचन्द मेहता को, प्रमुख श्री की सहायता का कार्य करने के लिए नियुक्त किया जाता है और इन तीनों महानुभावों की कमेटी को सम्पूर्ण सत्ता दी जाती है।

श्री राजकोट ता० ७-३-१९३२ ई०	दामोदर जगजीवन प्रमुख—श्रावक समिति

पाली मे फाल्गुन शु० ३, ४, ५ ता० १०, ११, १२ मार्च सन् १९३२ से प्रारम्भ हुआ जिसमे ६ सम्प्रदायों के ३२ मुनिवरों की उपस्थिति थी।

श्री मारवाड़-प्रान्तीय स्थानकवासी-जैन साधु-सम्मेलन की पहली बैठक, पाली मे सं० १९८८ वीर सं० २४५८ की शुभ मिति फाल्गुन शुक्ला ३ गुरुवार से प्रारम्भ हुई। जिसमे निम्न प्रकार से उपस्थित थी।

(१) पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री दयालचन्द्रजी महाराज ठाणे ४।
(२) पूज्य श्री नानकरामजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री पन्नालालजी म० ठा० ३।
(३) पूज्य श्री स्वामीदासजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री फतेहचन्दजी महाराज ठाणे ४।
(४) पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री धीरजमलजी महाराज ठाणे ६।
(५) पूज्य श्री जयमलजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री हजारीमलजी महाराज ठाणे ११।
(६) पूज्य श्री चौथमलजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री शार्दूलसिंहजी महाराज ठाणे ४।

उपरोक्त मुनिराजों ने सम्मिलित होकर शास्त्र-परम्परा, देश, काल एवं समयानुकूल निम्न-प्रस्ताव सर्वानुमति मे पास किये है।

(१) प्रस्तावो का पालन करवाने और सम्प्रदायों की सुव्यवस्था रखने के लिये, एक संयोजक-समिति मुकर्रर की जाय, जिसका चुनाव इस प्रकार से किया जावेः—

जिस सम्प्रदाय मे १ से १० मुनि हों, उस सं० के २ प्रतिनिधि
" " ११ से २० " " ४ "
" " २१ से ३० " " ६ "

इस तरह, १० मुनिराजों मे से २ प्रतिनिधि लिए जांय। तदनुसार, पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय के २ प्रतिनिधि, पूज्य श्री जयमलजी महाराज की सम्प्रदाय के ४ प्रतिनिधि, पूज्य श्री स्वामीदासजी महाराज की सम्प्रदाय के २ प्रतिनिधि, पूज्य श्री नानकरामजी महाराज की सम्प्रदाय का १ प्रतिनिधि, पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की सम्प्रदाय के २ प्रतिनिधि और पूज्य श्री चौथमलजी महाराज की सम्प्रदाय का १ प्रतिनिधि। इस तरह, इन प्रतिनिधियों की समिति मुकर्रर की जाती है।

प्रत्येक सम्प्रदाय के प्रतिनिधियों में से, एक-एक मन्त्री चुना जायगा।

प्रत्येक-सम्प्रदाय के प्रवर्तक भी उसी सम्प्रदाय के मुनियों के बहुमत से चुने जावेंगे।

इस तरह, इस वक्त के लिए निम्नानुसार चुनाव किया जाता है:—

सम्प्रदाय	प्रवर्त्तक	मन्त्री
(१) पूज्य श्री अमरसिंहजी म०	पं० मुनि श्री दयालचन्द्रजी म०	पं० मुनि श्री ताराचन्द्रजी म०
(२) पूज्य श्री नानकरामजी म०	पं० मुनि श्री पन्नालालजी म०	प० मुनि श्री पन्नालालजी म०
(३) पूज्य श्री स्वामीदासजी म०	पं० मुनि श्री फतेहचन्दजी म०	पं० मुनि श्री छगनलालजी म०
(४) पूज्य श्री रघुनाथजी म०	पं० मुनि श्री धीरजमलजी म०	पं० मुनि श्री मिश्रीलालजी म०
(५) पूज्य श्री जयमलजी म०	पं० मुनि श्री हजारीमलजी म०	पं० मुनि श्री चौथमलजी म०
(६) पूज्य श्री चौथमलजी म०	पं० मुनि श्री शार्दूलसिंहजी म०	पं० मुनि श्री शार्दूलसिंहजी म०

(१) अध्यक्ष और मन्त्रियों का चुनाव समिति तथा सम्प्रदाय वाले करेंगे। प्रतिनिधि, अध्यक्ष और मन्त्री, ३-३ वर्ष के लिए चुने जावेंगे। इस अवधि के बाद उन्हीं को रखना या बदलना, यह बात समिति एवं सम्प्रदाय के मुनियों के अधीन है।

(२) इस संस्था का नाम 'मरुधर साधु-समिति' होगा।

(३) समिति की बैठकें, ३-३ वर्षों से करना निश्चित किया जाता है।

बैठक का स्थान और तिथि आदि ४ मास पहले से, अध्यक्ष तथा मन्त्री मिलकर नियत करे और आमन्त्रणादि का कार्य शुरू करे। इसके लिए, फाल्गुण मास श्रेष्ठ होगा।

(४) समिति एकत्रित करने योग्य, यदि कोई खास-कार्य होगा तो चातुर्मास के अतिरिक्त चाहे जि समय कर सकते है। किन्तु प्रतिनिधियों को २ मास पूर्व आमन्त्रण देना होगा।

(५) समिति का कार्य, उपरोक्त-नियमानुकूल सुचारु-रूप से चलाने और इन नियमों का प्रचार करने लिये, निम्नोक्त-मुनिवरों के जिम्मे किया जाता है। पत्र-व्यवहार, इन्हीं मुनियों की सम्मति से होगा:—

(१) प० मुनि श्री ताराचन्दजी महाराज, (२) पं० मुनि श्री पन्नालालजी महाराज, (३) पं० मुनि श्री मि लालजी महाराज, (४) प० मुनि श्री छगनलालजी महाराज, (५) पं० मुनि श्री चौथमलजी महाराज, (६) पं० मुनि शार्दूलसिंहजी महाराज।

(६) आर्याजी के साथ, कारण विशेष के अतिरिक्त, आहार-पानी का संभोग (लेन देन) बन्द कि जाता है।

(७) व्याख्यान के समय के अतिरिक्त यदि आर्याजी, मुनिराजों के स्थान पर ज्ञानार्थ आवे, तो कम कम १ स्त्री और १ पुरुष (गृहस्थ) का वहां उपस्थित होना आवश्यक है। तथा खुले स्थान में ही बैठ सकती है यदि कार्यवश आना पड़े, तो खड़ी खड़ी पूछकर वापस लौट जांय।

(८) मुनिराजों को, आर्याजी के स्थान (निवास) पर न तो जाना ही चाहिये, न वहां बैठना ही चाहिए यदि. संथारा और पुस्तक प्रतिलेखन के कारण जाना पड़े, तो बिना श्रावक या श्राविका की उपस्थिति के, वा नहीं बैठ सकेंगे।

(९) मुनिराजों के स्थान पर, बहिनों को व्याख्यान के समय के अतिरिक्त, पुरुषों की उपस्थिति के बिना न आना और न बैठना ही चाहिए।

(१०) साधुजी २ ठाणे से और साध्वीजी ३ ठाणे से कम, आज्ञा के बिना नहीं विचर सकतीं।

(११) दीक्षा, योग्य-व्यक्ति देखकर तथा शास्त्रानुकूल एवं श्रीसंघ की सम्मति से दी जावेगी।

(१२) साधु-समाचारी, (शास्त्रानुसार दस प्रकार की) नियमित रूप से की जावे।

(१३) पाक्षिक-पत्रिका के अतिरिक्त, तपोत्सव, क्षमापना पत्रिकादि न छपवाई जावें, लेखादि की बात अलग है।

(१४) मन्त्र, यन्त्र, तन्त्रादि अष्टांग निमित्त प्ररूपणा करना, मुनिधर्म से विरुद्ध है। अतः इसका त्याग करें।

(१५) अष्टमी और चतुर्दशी को प्रत्येक-मुनि उपवास, आयबिल, एक ठाना, पांचविगय त्याग आदि तप करें। बाल, वृद्ध और विद्यार्थी की बात अलग है। यदि कारणवश उपरोक्त तप न किए जाय, तो मास में दो उपवास करें। अथवा सूत्र की ५०० गाथा की सज्झाय करें।

(१६) अप्रतीतिकारी-गृहस्थ के घर पर किसी भी कार्य से मुनिराज न पधारें।

(१७) साधुजी, अपना फोटो न खिचवावें।

(१८) दीक्षा मे अपव्यय तथा अप्रमाणित खर्च को रोकें।

(१९) प्रतिदिन, कम से कम ५०० गाथा का स्वाध्याय करें अथवा कम से कम नमोत्थुणं की ५ माला फेरें। व्याख्यान के अलावा, कम से कम २ घण्टे तक जिनवाणी का मनन करेंगे। विहार और अस्वस्थ होने की बात अलग है।

(२०) वस्त्र—बहुमूल्य, रंगीन, रेशमी, चमकीले, फैन्सी और बारीक न लेंगे न पहनेंगे। कारणवश दो चातुर्मास हो जावेंगे, तो भी व्याख्यान एक ही होगा।

(२१) उपरोक्त संगठित सम्प्रदायों के साथ, ११ संभोगों (आहार के अतिरिक्त) की छूट दी जाती है।

(२२) आर्याजी के विषय मे, कमेटी प्रत्येक सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक तथा मन्त्री को ज्ञान क्रिया के सम्बन्ध मे नियम बनाने की आज्ञा देती है। जो आर्याजी, उपरोक्त प्रवर्त्तक तथा मन्त्रीजी द्वारा बनाये हुए नियमों का भंग करेंगी उन्हे व्यवहार से बाहर किया जावेगा। इसकी सूचना छ:हों सम्प्रदायों को दे दी जावेगी और वे ऐसी आर्याजी से कोई व्यवहार न रक्खेंगे।

(२३) जो मुनि, अपनी सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक तथा कमेटी द्वारा बनाये हुए नियमों का भंग करेंगे, उनको प्रवर्त्तक तथा मन्त्री सम्भोग (१२ व्यवहारों) से अलग करके, छ:हों सम्प्रदायों के प्रवर्त्तकों को सूचना दे देंगे, ताकि उनसे कोई सम्बन्ध न रक्खें।

(२४) प्रत्येक क्षेत्र मे, उक्त छः सम्प्रदायों मे से एक चौमासा होगा। कदाचित् किसी कारणवश दो चातुर्मास हो जावेंगे, तो व्याख्यान एक ही होगा।

(२५) कोई भी मुनि, छः सम्प्रदायो के क्षेत्र मे विचरें, तो उस क्षेत्र के अधिष्ठाता-मुनि की सम्प्रदाय की समाचारी के विरुद्ध प्ररूपणा न करेंगे और गुरु आम्नाय भी अपनी नहीं करावेंगे।

(२६) पक्खी और संवत्सरी, छःहो सम्प्रदाय एक करेंगे। इस सम्बन्ध में, जो विशेष बात बृहत्-सम्मेलन में तय होगी, वह सर्व सम्मति से स्वीकार की जावेगी।

(२७) इन छः सम्प्रदायों के सम्भोगी मुनियों में से यदि कोई मुनि, किसी कारणवश किसी दूसरी सम्प्रदाय मे रहना चाहेगे, तो वे अपने प्रवर्त्तक तथा मन्त्री की आज्ञा लेकर एवं रखने वालों के नाम का आज्ञा-पत्र प्राप्त करके वहां रह सकते है। इस अवस्था मे, रास्ते मे, आदमी के साथ अकेले जा सकते है।

(२८) कोई प्रवर्त्तक-मुनि, अपनी सम्प्रदाय के किसी मुनि से, छःहों सम्प्रदाय के प्रवर्त्तकों की आज्ञा प्राप्त किए बिना, सम्भोग नहीं तोड़ सकते।

(२९) इन छः सम्प्रदायों के मुनियों मे, जो मुनि यहां हाजिर नहीं है, उन्हे उस सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक तथा मन्त्री, अपनी सम्प्रदाय मे ले सकेंगे तथा छहो सम्प्रदाय के प्रवर्त्तकों को इसकी सूचना दे देंगे।

(३० जो मकान गृहस्थों ने, अपने धर्म-ध्यान के लिए बनाया है, उसका फिर चाहे जो नाम रक्खा गया हो—उसमें मुनि ठहर सकते है। किन्तु साधुओं के निमित्त बनाये हुए मकान मे ठहरने का निषेध है।

राजकोट साधु-सम्मेलन मे, शतावधानी पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज आदि मुनिराजों तथा विद्वान श्रावकों ने, महासम्मेलन की नींव के रूप मे तथा हम लोगों के लिए मार्गदर्शक जो कार्यवाही की है, उस पर यह साधु-सम्मेलन, अपनी ओर से सन्तोषपूर्वक हार्दिक धन्यवाद प्रकट करता है।

मरुधर मुनियों का द्वितीय सम्मेलन सं० १९८४ माघ शु० ३, ४, ५ ता० १४, १५,१६ जनवरी १९३३ ब्यावर में हुआ। ५ सम्प्रदाय के मुनि ठा० २८ तथा आत्मार्थी मुनि श्री मोहन ऋषिजी म० (आमंत्रित) उपस्थित थे। बृहत्साधु-सम्मेलन अजमेर मे पधारने वाले दूरस्थ प्रान्तों के मुनिवरों के स्वागत और सेवा के लिए मुनि समितियां बनाई। प्रतिनिधि चुने और ३६ प्रस्ताव पास किये।

श्री पंजाब-प्रांतिक साधु-सम्मेलन, होशियारपुर

विक्रमाब्द १९८८ चैत्र कृ० ६ रविवार से होशियारपुर मे प्रारम्भ हुआ। गणिजी श्री उदयचन्दजी म० सा० सम्मेलन के सभापति और उपाध्याय श्री आत्मारामजी म० सा० मंत्री चुने गये। युवाचार्य काशीरामजी म० सा० आदि १८ मुनिवर मुख्य २ पधारे थे। जो सकारण नहीं पधार सके थे, उनका सन्देश और प्रतिनिधित्व मिला था। उपाध्यायजी म० का वक्तव्य प्राकृत (मागधी) मे था जो बड़ा रोचक, मार्गदर्शक और सरल परन्तु ओजस्वी था। इस सम्मेलन मे, निम्न-लिखित-प्रस्ताव, सर्वानुमति से स्वीकृत हुएः—

"श्री सुधर्मागच्छाचार्य पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज, श्रीसंघ के परम हितैषी तथा दीर्घदर्शी हैं। आप ही की अत्यन्त कृपा और विचारशक्ति के द्वारा साधु-सम्मेलन का जन्म हुआ है। आप ही की कृपा से, ऑल इण्डिया श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स ने जागृत होकर बृहत् मुनि-सम्मेलन की नींव डाली है। जिसके कारण सभी प्रान्तों मे जागृति फैल गई है, जैसा कि जैन प्रकाश से प्रकट है। पंजाब का श्री संघ कुछ अर्से से बिखरा हुआ था, जो आप ही की कृपा से पुनः प्रेम सूत्र में बंध गया है। जो पारस्परिक तर्क-वितर्क के लिए कटिबद्ध था, वही आज सहानुभूति पूर्वक जैन धर्म के प्रचार कार्य मे लगा दिखाई दे रहा है। आप ही की कृपा से, काठियावाड, मारवाड़, गुजरात, कच्छ और दक्षिण प्रान्त मे जो कई गच्छ बिखरे हुए थे, वे भी प्रेम-सूत्र में बंध गए है। इस लिए उपरोक्त महाचार्य के गुणों का अनुभव करते हुए, उनका सच्चे हार्दिक भावों से, धन्यवाद करना चाहिए।

यह प्रस्ताव, पं० मुनि श्री रामस्वरूपजी महाराज ने साधु-सम्मेलन के सन्मुख प्रस्तुत किया, जो सर्वानुमति से, जयध्वनिपूर्वक स्वीकृत हुआ।

उपाध्यायजी महाराज और प्रवर्तिनी आर्याजी श्री पार्वतीजी महाराज की ओर से निम्न प्रस्ताव उपस्थित किये गये :—

(१) ऑल-इण्डिया कॉन्फरन्स की ओर से प्रकाशित पत्तीपत्र का प्रतिरूप पत्तीपत्र प्रकाशित करना चाहिये। यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

(२) पूज्य मुनि श्री अमरसिंहजी महाराज के बनाये हुए बत्तीस नियमों के अनुसार गच्छ को चलना चाहिये।

सर्वसम्मति से निश्चित, हुआ कि पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज के बनाये हुए, पंजाबी साधु-संघ की मर्यादा के जो बत्तीस नियम है, वर्तमान मे यह मुनि-सम्मेलन उन्हीं को उचित समझता है। अजमेर मे होने वाले अखिल-भारतीय साधु-सम्मेलन के पश्चात् आवश्यकता होने पर पंजाबी साधु-सघ एकत्रित होकर फिर विचार कर सकेगा।

(३) पक्षपात के वश होकर वर्द्धमान, वीरसन्देश आदि पत्रों और विज्ञापनों द्वारा, चतुर्विध संघ के सम्बन्ध मे जो गलत लेख प्रकाशित होते रहे है, उनके लिए तिरस्कार-सूचक प्रस्ताव पास होना चाहिये।

इस प्रस्ताव का गणी मुनि श्री उदयचन्द्रजी महाराज ने बड़े ही मार्मिक शब्दों मे अनुमोदन किया। जिसका वहा उपस्थित कई मुनिराजों ने समर्थन किया।

अन्त मे यह प्रस्ताव निम्न स्वरूप में पास हुआ, कि:—'यह मुनि-मण्डल (साधु-सम्मेलन कुछ वर्ष पूर्व जो विज्ञापनबाजी और जैन आफताब, वर्द्धमान तथा वीर-सन्देश के लेखों के द्वारा, दोनो पक्ष के अर्थात् पत्रीपक्ष और परम्परापक्ष के मुनिराजों एव आर्याओं या चतुर्विध संघ पर राग-द्वेष आदि के वशीभूत होकर, असत्य और व्यर्थ लेख लिखे तथा छापे गये है, उन्हे शुद्धान्तःकरण से अत्यन्त शोकप्रद, निन्दनीय, संघ की क्षति करने वाले और धर्म के लिये हानिकारक मानता हुआ तिरस्कार की दृष्टि से देखता और निकृष्ट कृत्य समझ कर अमान्य मानता है।'

(४) पहले के निन्दात्मक पत्र फाड़ दिए जावे। भविष्य मे जिस साधु या आर्या की आचार विषयक कोई बात सुनी जावे, तो उससे कहे बिना किसी गृहस्थ से न कहनी चाहिये। यदि वे न मानें तो उनके साथ यथोचित बर्ताव करना चाहिये। यदि कोई, उस व्यक्ति से कहे बिना ही कोई बात लोगों से कह दे, तो उसे भी यथोचित शिक्षा देनी चाहिये। इस नियम की रचना हो जाने के पश्चात् यदि किसी मुनि या आर्या के पास, किसी के निन्दात्मक-पत्र हों, तो उन्हें फाड़ डाले। भविष्य मे न तो अपने पास कोई इस प्रकार के पत्र रक्खे और न ऐसा पत्र लिखें किंवा लिखने के लिये किसी को उत्तेजना ही दें। यदि कोई गृहस्थ आदि, किसी साधु या साध्वी के विषय मे कोई बात कहे, तो उस मुनि या आर्या से पूछे बिना, उस बात पर विश्वास न किया जाय और न जनता के सामने वह अप्रकट बात रक्खी ही जाय। यदि, कोई मुनि या आर्या, उपरोक्त नियम का पालन न करे, तो उन्हें यथोचित-शिक्षा दी जानी चाहिये। इस नियम की रचना के पश्चात् भी यदि मुनि या आर्याएं इस प्रकार के पत्रों को रक्खेंगी तो अपमानित और श्रीसंघ की चोर समझी जायंगी। यह प्रस्ताव, सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

(५) साधु या आर्याएं, किसी भाई या बहिन को, अपने दर्शनों का नियम न करवावें।

सर्व-सम्मति से यह तय हुआ कि प्रेरणा करके अपना पक्षीय बनाने के लिये, ऐसा नियम न कर-वाया जावे।

(६) सब आचार्यों पर मुख्याचार्य होने चाहिए।

सर्व-सम्मति से पास हुआ, कि यह प्रस्ताव बृहत्सम्मेलन मे रक्खा जाय।

(७) शकित प्रश्नों का यथोचित समाधान होना चाहिये, अर्थात् शास्त्रोद्धार होना चाहिये।

सर्व-सम्मति से पास हुआ, कि प्रतियो मे जो लिखित अशुद्धियां हों, उन्हें प्राचीन प्रतियों के आधार पर शुद्ध करने का कार्य, अखिल भारतवर्षीय साधु-सम्मेलन पर छोड़ दिया जाय जो अजमेर मे होने वाला है।

[श्री उपाध्यायजी महाराज के प्रस्ताव]

(१) श्री प्रवर्तिनीजी की आज्ञा के बिना जो आर्याएं है, वे श्री प्रवर्तिनीजी की आज्ञा मे की जावें। यदि वे यों न माने तो गणी, आचार्य और उपाध्याय उन्हें समझाकर आज्ञा में करें और फिर प्रवर्तिनीजी से कहा जावे, कि वे उन्हें भलीभांति आज्ञा मे रक्खें। निश्चय हुआ कि, यह प्रस्ताव वर्तमान आचार्य से सम्बन्ध रखता है।

(२) सब आचार्यों के एकत्रित हो जाने पर, फिर गणी, आचार्य और उपाध्याय, प्रवर्तिनीजी से मिल कर चार गणावच्छेदिकाएं नियत करें, जिससे सब आचारों की भलीभांति रक्षा की जा सके। यह प्रस्ताव भी वर्तमान आचार्य मे सम्बन्ध रखता है।

(३) जो साधु या आर्याएं आचार्य श्री की आज्ञा मे हों उनके साथ साधु व आर्याएं वन्दना आदि क्रियाओं का यथाविधि पालन करे। स्वेच्छापूर्वक यानी बिना आचार्य महाराज की आज्ञा वन्दनादि व्यवहार न छोड़ें, जिससे संघ मे एकता तथा प्रेम की वृद्धि और आज्ञा का पालन होता रहे।

[युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज के प्रस्ताव]

(१) दीक्षा से पूर्व, वैरागी को अर्थसहित प्रतिक्रमण सिखलाना चाहिये। यदि उसका कोई बुजुर्ग या मित्र भी साथ ही दीक्षित होना चाहता है, तब उसका प्रतिक्रमण मूलमात्र सम्पूर्ण होना चाहिये।

(२) निश्चित्-कोर्स समाप्त किए बिना, आम जनता मे उपदेश न देना चाहिए।

पास हुआ कि एक कमेटी बनाई जाय, जो कोर्स नियत करे। यह प्रस्ताव, बृहत्सम्मेलन में भी रखा जावे।

(३) प्रत्येक गच्छ में आचार्य होने चाहिये, और सब आचार्यो पर एक मुख्याचार्य होना चाहिये, उनके मातहत, मुनियों की एक कौन्सिल होनी चाहिए।

सर्वसम्मति से पास हुआ, कि यह प्रस्ताव बृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय।

(४) सब गच्छों का मुख्य नाम, श्री सुधर्मागच्छ होना चाहिये। उपनाम जो-जो हों वही रहें। (सर्व-सम्मति से स्वीकार किया गया।)

(५) किसी का साधु, यदि क्लेश करके आ गया हो, तो उसे समझा कर फिर वहीं भेज देना चाहिए, अपने पास न रखना चाहिये। (यह भी सर्वसम्मति से मंजूर किया गया।)

(६) मुनियों को, आर्याओं के मकान में जाना और बैठना नहीं। यदि, कारणवश जाना पड़े; तो बिना श्रावक और श्राविका की मौजूदगी के वहां न ठहरे। इसी प्रकार से आर्याओं के विषय मे भी समझें। (सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव भी स्वीकार हुआ।)

(७) प्रत्येक प्रान्त मे, एक स्थविर साधुशाला होनी चाहिये। सर्व सम्मति से निश्चित हुआ, कि यह प्रस्ताव बृहत्सम्मेलन मे रक्खा जाय।

(८) एक सम्प्रदाय से निकले हुए साधु को दूसरा कोई साधु दीक्षित न करे। (यह प्रस्ताव भी सर्व सम्मति से पास हुआ।)

(९) साधु व आर्याएं, फ़ोटो न खिचवावें।

सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव इस रूप में पास हुआ, कि उदीरणा करके अपनी मान-प्रतिष्ठा के लिए फ़ोटो न खिचवावें। यदि, वेष प्रचारार्थ किसी का फोटो हो, तो बात दूसरी है। लेकिन, श्रावकों व भक्तजनों को चाहिए, कि उसकी पूजा न करें। क्योंकि, वह केवल लिबास की यादगार के बतौर है। (आख़री निर्णय के लिए बृह-सम्मेलन मे रक्खा जाय।)

(१०) भण्डोपकरण, गृहस्थ को देकर अन्य नगर न पहुँचाये जावे। (सर्व सम्मति से यह भी स्वीकृत हुआ)

(११) सब गच्छों की श्रद्धा-परूपणा एक होनी चाहिये। (सर्व सम्मति से पास हुआ, कि यह प्रस्ताव बृहत्सम्मेलन मे रक्खा जाय।)

(१२) जहां तक हो सके, स्वदेशी-वस्त्र ही लेने चाहियें। (सर्वसम्मति से पास, बृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय)

[मुनि श्री रघुवरदयालजी के शिष्य मुनि श्री दुर्गादासजी महाराज के प्रस्ताव]

(१) क्या श्री भगवान महावीर के सिद्धान्तों का सन्देश, प्रत्येक मनुष्य तक पहुँचाना आवश्यक है? (सर्व सम्मति से निश्चित हुआ, कि पहुँचाना ज़रूरी है।)

(२) अगर ज़रूरी है तो वह सन्देश कैसे पहुँचाया जा सकता है? (सर्व सम्मति से पास हुआ, कि तहरीर व तकरीर द्वारा।)

(३) प्रत्येक श्रावक-श्राविका के लिए रात्रि-भोजन का त्याग निहायत ज़रूरी है। (सर्व सम्मति से पास हुआ, कि सभी साधु तथा आर्याओं को चाहिये, कि इस विषय पर उपदेश करते रहें।)

(४) जिस साधु का अपने शहर मे चातुर्मास करवाना हो, उस गच्छ की स्वीकृति के विना न करवाया जावे। (सर्व सम्मति से निश्चित हुआ, कि बृहत्साधु-सम्मेलन में यह प्रस्ताव रक्खा जाय।)

(५) पूज्य श्री अमरसिहजी महाराज का वार्षिक-दिवस, आषाढ़ कृष्णा २ को मनाना चाहिये। (सर्व सम्मति से स्वीकृत।)

(६) तीन वर्ष मे, प्रत्येक प्रांत का साधु-सम्मेलन होना चाहिये और दस वर्ष के पश्चात् बृहत्साधु-सम्मेलन होना चाहिये। (सर्व सम्मति से निश्चित हुआ, कि बृहत्साधु-सम्मेलन मे यह प्रस्ताव रक्खा जाय।)

(७) जो वर्तमान आचार्य हों, उनका वार्षिक पाटमहोत्सव होना चाहिये। (सर्व-सम्मति से स्वीकृत।)

(८) मुनि पाठशाला, पंजाब मे शीघ्र स्थापित होनी चाहिये। (सर्वसम्मति से पास हुआ, कि शीघ्र स्थापित होनी चाहिये।)

[मुनि श्री नरपतरायजी महाराज के प्रस्ताव]

(१) अन्य प्रांतों के साधु यदि किसी प्रांत में आवें, तो जिस शहर में मुनि-महाराज विराजमान हों, उनकी परीक्षा और स्थानीय-मुनियों की स्वीकृति के विना उनका व्याख्यान न होना चाहिए। (निश्चित हुआ, कि यह प्रस्ताव महा-सम्मेलन मे रक्खा जाय।

(२) जो मुनि गच्छ से बाहर हों या शिथिलाचारी हों, उनका कोई गृहस्थ आदर-सत्कार न करे और न चातुर्मास, तथा व्याख्यान ही करवावे। (सर्व सम्मति से पास हुआ, कि यह भी महासाधु-सम्मेलन मे रक्खा जाय।)

(३) पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय का जो कोई साधु अलग घूमता हो और मुनियों के समझाने से न समझता हो, तथा जिसके कारण संघ एवं धर्म की हानि होती हो, उसका इन्तज़ाम श्रावक वर्ग को शीघ्रातिशीघ्र करना चाहिये। (सर्व सम्मति से पास)

[मुनि श्री सोमचन्द्रजी महाराज का प्रस्ताव]

(१) दीक्षा किस आयु वाले को दी जावे ? (निश्चित हुआ, कि यह भी महा-सम्मेलन मे रक्खा जाय।)

[मुनि श्री रामस्वरूपजी महाराज के प्रस्ताव]

(१) आल इण्डिया मुनि-सम्मेलन के लिए चुनाव होना चाहिये। (सर्व-सम्मति से स्वीकृत।)

(२) समस्त गच्छों के आचार्यों की श्रद्धा-प्ररूपणा अवश्य एक ही होनी चाहिये, जिससे जनता को धर्म के भिन्न २ रूप न मालूम हों। (सर्व सम्मति से पास हुआ, कि यह प्रस्ताव बृहत्सम्मेलन मे रक्खा जाय।

(३) वर्तमान-सूत्रों के आधार पर एक ऐसा ग्रन्थ तैयार होना चाहिये, जिससे अजैन भी सुगमतापूर्वक लाभ उठा सके। सर्व-सम्मति से पास हुआ, बृहत्सम्मेलन मे रक्खा जाय।

(४) व्याख्यानदाताओ के लिए, एक ऐसी पुस्तक तैयार होनी चाहिये, जिसके आधार पर व्याख्यानदाता एक ही श्रेणी का उपदेश दे सके। (सर्व-सम्मति से पास हुआ, कि बृहत्सम्मेलन मे रक्खा जाय।)

(५) प्रत्येक मुनि को, कम-से-कम आधा घण्टा प्रतिदिन ध्यान करना चाहिये। (यह भी सर्वानुमति से स्वीकृत हुआ।)

(६) पांच-सात ऐसे मोटे २ नियम या विषय चुन लेने चाहिये, जो श्री जैन-धर्म मे खास महत्त्व रखते हों। जैसे कि ज्ञान, दर्शन, चारित्र, ब्रह्मचर्य आदि जिनके द्वारा धर्म का प्रचार सामान्य मुनि भी कर सके साथ ही, उन्हे खास खास और विषयों की भी शिक्षा दी जावे। (सर्व सम्मति से यह पास हुआ, कि मुनि श्री उपाध्यायजी के बनाये हुए ६-७ भागों को, मुनियों को अच्छी तरह पढ़ लेना चाहिये।)

(७) जैन धर्म, केवल जातिगत धर्म न होना चाहिये। (यह निश्चित हुआ, कि घृणा हमारे पास नहीं है। क्योंकि यह मोहनीय कर्म प्रकृति है। लेकिन नफरत को छोड़, समयानुकूल विवेक से बर्तना चाहिए। यह प्रस्ताव भी बृहत्सम्मेलन मे रक्खा जाय)।

[श्री गणीजी महाराज का प्रस्ताव]

(१) भविष्य मे, यदि संयम की वृद्धि करने वाले आचार-व्यवहार की भी कोई नई व्यवस्था रची जावे, तो बड़े साधु-सतियों की सर्वानुमति के विना न रची जावे और न उसका व्यवहार ही किया जावे, जिससे सघ में किसी प्रकार का भेद पैदा न हो। (सर्वानुमति से स्वीकृत)

[प्रवर्तक मुनि श्री विनयचन्द्रजी महाराज का प्रस्ताव]

(१) जो श्रावक लोग वन्दना करते है, उन्हे प्रत्युत्तर मे एक ऐसा शब्द कहना चाहिये, जो सर्वदेशीय और धर्म ध्यान के प्रति उद्योतक हो। इसलिए, मेरे विचार से, वन्दना करने वाले के प्रति धर्म-वृद्धि कहना चाहिये। (सर्व-सम्मति से यह प्रस्ताव पास हुआ, कि श्रावक लोगों की वन्दना के प्रत्युत्तर में दया पालो या धर्म-वृद्धि, ये दो शब्द कहे जायं। (यह प्रस्ताव बृहत्-सम्मेलन में रक्खा जाय।)

(२) मुनियों के नामों के साथ प्रत्येक मुनि के नाम से पूर्व 'मुनि' शब्द होना चाहिये। (सर्व सम्मति से पास हुआ, कि मुनियों के नाम से पूर्व मुनि शब्द लगाया जाय, जैसे कि--प्रवर्तक मुनि श्री विनयचन्द्रजी आदि।)

[मुनि श्री नेकचन्द्रजी महाराज का प्रस्ताव]

(१) सब मुनियों को, अपने गुरु और आचार्य आदि पदधारियों की आज्ञानुसार वृद्ध रोगी और निराधारों की सेवा करनी चाहिये। (सर्वानुमति से मन्जूर हुआ।)

गणी श्री उदयचन्द्रजी महाराज का प्रस्ताव:--

(१) यदि बृहत् साधु-सम्मेलन मे सवत्सरी आदि का प्रस्ताव सर्व सम्मति मे न हो सके, तो क्या किया जाय? (निश्चित हुआ कि यदि सर्व सम्मति से न हो सके, तो बहु सम्मति को स्वीकार किया जाय।)

अन्त में, सर्व-मुनि-मण्डल की ओर से, पजाब प्रान्त की बिरादरियों को निम्नलिखित सन्देश दिया गया :—

"जिस प्रकार हमारी सब तरह से एकता हो गई है, पत्री-पत्र आदि की धर्म तिथियां एक हो गई हैं, उसी प्रकार से आप लोगों को भी उचित है कि पारस्परिक वैमनस्य-भाव को छोड़ कर, धर्म क्रियाओं मे एकता धारण करें, जिससे धर्म और प्रेम की वृद्धि हो।

धन्यवाद !

मैं, आलइण्डिया श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन-कॉन्फरन्स के (आचार्य पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज के पास) भेजे हुए डेप्युटेशन की योग्यता और दीर्घदर्शिता की प्रशसा किये बिना नहीं रह सकता, जिसने हमारे गच्छ से एकता स्थापित करवा दी और इस महान् कार्य को प्रारम्भ करके, प्रत्येक प्रान्त मे जागृति पैदा करवा दी।

इसके अतिरिक्त, श्री आचार्य महाराज का जितना गुणानुवाद किया जाय कम है, क्योंकि आप श्री ने ही डेटेप्युशन की प्रार्थना पर टीप के अनुसार गच्छ को चलने की आज्ञा देकर शान्ति की स्थापना करवा दी।

साथ ही गणावच्छेदक मुनि श्री लालचन्द्रजी महाराज, गणावच्छेदक तथा स्थविरपद विभूषित स्वर्गस्थ मुनि श्री गणपतिरायजी महाराज, स्थविरपद विभूषित स्वर्गवासी श्री जवाहिरलालजी महाराज, स्थविरपद विभूषित मुनि श्री छोटेलालजी महाराज तथा प्रवर्तिनीजी पार्वतीजी आदि समस्त गच्छ के मुनियों तथा आर्याओं को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने श्री आचार्य महाराज से, डेप्युटेशन की प्रार्थना को स्वीकृत करते हुए, आज्ञा मंगवानी शुरू (प्रारम्भ) कर दी। जिससे आज पूज्य श्री मुनि अमरसिंहजी महाराज का गच्छ एक रूप मे दृष्टिगोचर हो रहा है। राजकोट तथा पाली मुनि-मण्डल को धन्यवाद देना अत्यन्त आवश्यक समझता हूँ, कि जिन्होंने अजमेर साधु-सम्मेलन को सरल तथा सार्थक बनाने मे प्रान्तीय-सम्मेलन करके पूरा-पूरा सहयोग दिया है।

अन्त मे यहां उपस्थित प्रवर्तक मुनि श्री विनयचन्द्रजी, उपाध्याय मुनि श्री आत्मारामजी, मुनि श्री नेकचन्दजी, मुनि श्री खुशालचन्दजी, युवाचार्य मुनि श्री काशीरामजी, पं० मुनि श्री नरपतरायजी, पं० मुनि श्री रामस्वरूपजी आदि मुनियों का और गणावच्छेदक मुनि श्री छोटेलालजी, प्रवर्तक मुनि श्री बनवारीलालजी (जिन्होंने अपना एक सम्मति-पत्र उपाध्यायजी को देकर इस कार्य की पूर्ति की) साथ ही प्रवर्तिनी आर्या श्री पार्वतीजी (जिन्होंने अपना एक सम्मति पत्र उपाध्यायजी के हाथ मुनि-मण्डल होशियारपुर मे भेजा) तथा आचार्य महाराज (जिन्होंने अपनी ओर से युवराज मुनि श्री काशीरामजी को यहां भेजा) एवं गणावच्छेदक श्री लालचन्दजी महाराज (जिन्होंने

अपनी ओर से मुनि श्री नेकचन्दजी तथा पं० मुनि श्री रामस्वरूपजी को भेजा) गणावच्छेदक मुनि श्री जयरामदासजी तथा प्रवर्तक मुनि श्री शालिग्रामजी (जिन्होंने उपाध्यायजी को होशियारपुर मुनि-सम्मेलन में पधारने की आज्ञा दी) आदि को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, क्योंकि यह सब उन्हीं महानुभावों की कृपा का फल है, जो आज होशियारपुर मुनि-सम्मेलन, आनन्दपूर्वक अपने कार्य को सफल कर सका है। (ह० गणि उदयचन्दजी–अध्यक्ष)

साम्प्रदायिक-सम्मेलन

सं० १९८८ वैशाख कृष्णा ६ बुधवार से लीम्बडी (मोटा) सम्प्रदाय का साधु-सम्मेलन हुआ। मुनिवर ठा० २२ पधारे थे।

गुर्जर श्रावक-समिति की बैठक भी यहां लीम्बडी मे ही ता० २५, २६, २७ मई सन् १९३२, वैसाख कृ० ६, ७, ८ बुध-गुरु-शुक्रवार को हुई।

सं० १९८९ ज्येष्ठ शु० ५ गुरुवार से इन्दौर मे ऋषि-सम्प्रदाय का सम्मेलन हुआ और बिखरी हुई सम्प्रदाय ने ८० वर्ष बाद आगमोद्धारक, बा० ब्र० अमोलख ऋषिजी म० सा० को आचार्य पद दिया। मुनिराज ठा० १४ पधारे थे। शेष के सन्देश और प्रतिनिधित्व प्राप्त थे। कार्यवाही के साथ १०५ प्रस्ताव पास किये।

ता० २६-२-३३ से पूज्य श्री मुन्नालालजी म० सा० की सम्प्रदाय का सम्मेलन भीलवाड़ा मे हुआ। मुनि ठा० ३६ सम्मिलित हुए थे। पूज्य श्री अमोलख ऋषिजी म० सा० ठा० ६ भी इस अवसर पर पधारे थे। तीन दिन की कार्यवाही मे प्रगतिशील ११ प्रस्ताव पास किये गये।

दरियापुरी-सम्प्रदाय के साधु-साध्वियों का सम्मेलन ता० ५, ६ दिसम्बर सन् १९३२, सं० १९८९ मिगसर शु० ८, ९ सोम-मंगलवार को कलोल मे हुआ। मु० ठा० १५ और महासतियाँ ठा० ११ की तथा श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति मे ३५ प्रस्ताव हुये।

ऋषि-सम्प्रदायी सन्त सम्मेलन प्रतापगढ़ (मालवा) मे सं० १९८९ पोष कृ० से हुआ। महासतीजी ठा० तथा मार्गदर्शन के लिये पूज्य श्री आदि ठा० १६ भी उपस्थित थे। कुल १५ प्रस्ताव पास किये।

जमनापार के पूज्य श्री रतनचन्द्रजी म० की सम्प्रदाय के मुनिवरों ने महेन्द्रगढ मे सम्मिलित होकर पूज्य श्री मोतीरामजी म० सा० को आचार्यपद दिया।

कच्छ आठ कोटी मोटीपक्ष का सम्मेलन मांडवी मे सं० १९८९ पौष शु० १५ मगलवार को किया। ३८ प्रस्ताव पास करके वैमनस्य मिटाकर संगठित हुए।

श्रावकों की साधु-सम्मेलन मे उत्साहवर्धक कार्यवाही :—

(१) प्रान्तीय और साम्प्रदायिक साधु-सम्मेलनों को प्रेरणा और मार्गदर्शन दिया।

(२) जो २ साधु-सम्मेलन हुये, उनकी सुदृढ़ता के लिये श्रावक-समितियों का भी निर्माण कराया।

(३) प्रान्त २ मे उत्साह जगाने के लिये तथा साधु-सम्मेलन समिति के श्रावकों को सतत् जागृत और कर्तव्य परायण रखने के लिये भिन्न २ स्थान पर १४ बैठकें कीं।

(४) भारत व्यापी दौरा करने के लिये चार डेप्युटेशन बनाये जिनमे बड़े २ अग्रेसर श्रावकों ने लम्बे समय तक साथ दिया।

(५) सम्मेलन के समय अशांति के प्रसंग को रोककर अनुकूल वातावरण फैलाने के लिये ६ सज्जनों और २ मंत्रियों की 'श्री साधु-सम्मेलन संरक्षक समिति' बनी। जिसने अजमेर साधु-सम्मेलन के दिनों मे समय २ पर पांच बैठकें कीं और जाहिर निवेदनों द्वारा शांति का प्रयत्न किया।

उपरोक्त प्रत्येक प्रवृत्तियों मे मंत्रीजी स्व० धर्मवीर श्री दुर्लभजी भाई जौहरी की तथा सहमंत्री श्री धीरजलाल के० तुरखिया उपस्थित रहते थे और प्ररणा देते थे। आवश्यकता पड़ने पर श्रीमान् सरदारमलजी सा० छाजेड़ ने भी सहमन्त्री पद का भार सभाला।

अजमेर सम्मेलन को सफल बनाने के लिये अजमेर के उत्साही युवक भाइयों ने तथा श्रीसंघ ने काफी परिश्रम किया। देश २ के अग्रेसरों ने अजमेर मे एक २ मास पूर्व अपना निवास बना लिया। और तन, मन, धन का भोग दिया।

अ० भा० श्वे० स्था० साधु-सम्मेलन, अजमेर

जैन समाज के ही नहीं, अपितु आर्यावर्त के इतिहास मे अजर-अमर पुरी अजमेर का साधु-सम्मेलन एक चिरस्मरणीय और उज्ज्वल प्रसंग बना रहेगा। श्रमण भगवान महावीर के निर्वाण के बाद सबसे प्रथम पटना मे, बाद मे लगभग ३०० वर्ष के मथुरा मे और वीर-सवत् ९८० मे काठियावाड़ की राजधानी वल्लभीनगरी मे श्री देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण के नेतृत्व मे जैन साधुओं का बृहत् साधु-सम्मेलन होने का और जैन-सूत्र-सिद्धान्त लिपि-बद्ध करने का ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध होता है।

वल्लभी के बाद आज लगभग १५०० वर्ष बाद समस्त आर्यावर्त के स्थानकवासी जैन-समाज के सभी गच्छ, सम्प्रदाय, उप-सम्प्रदाय आदि के पूज्य और पडित मुनिराज एकत्रित हुए जिन्होंने जैन-समाज के उत्थान के लिए और ज्ञान, दर्शन, चारित्र की श्रीवृद्धि के लिए, विचार-विनिमय करके एक विधान बनाने का शुभनिश्चय प्रकट कर अजमेर के इस सम्मेलन का ऐतिहासिक रूप प्रदान कर दिया। इस सम्मेलन की शुरूआत ता० ५-४-३३ से अजमेर मे हुई, जिसमे २२५ मुनिराजों ने भाग लिया। सम्मेलन ता० १९-४-३३ तक चला।

सम्मेलन मे पधारने के लिए हमारे इन त्यागी मुनिराजों ने सैकड़ों मीलों का प्रवास किया था और नाना परिषहों को सहन करते हुए वे अजमेर पधारे थे। यहां हम विस्तार-भय से आने वाले सभी मुनिराजों का नाम न देकर केवल उनकी सख्या और प्रतिनिधि मुनिराजों के नाम ही प्रकट कर रहे हैं।

१ पूज्य श्री धर्मसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय (दरियापुरी)

इस सम्प्रदाय मे मुनि २० और आर्याजी ५९ = कुल संख्या ७९ साधु-सन्त थे, जिनमे से ७ सन्त अजमेर पधारे थे। प्रतिनिधि मुनिराज ४ थे जिनके नाम इस प्रकार है :—

१. पं० मुनि श्री पुरुषोत्तमजी म०, २. पं० मुनि श्री हर्षचन्द्रजी म०, ३. पं० मुनि श्री सुन्दरजी म०, ४. पं० मुनि श्री आपचन्द्रजी म०।

ये सन्त वीरगाम से लगभग ३२५ मील का विहार कर अजमेर पधारे थे।

२ खंभात-सम्प्रदाय

इस सम्प्रदाय मे मुनि ८ आर्याजी १० = कुल संख्या १८ साधु साध्वी थे। जिनमे से ५ मुनिराज सम्मेलन में आये थे। प्रतिनिधि मुनियों के नाम इस प्रकार है :—

१. पूज्य श्री छगनलालजी म०, २. पं० मुनि श्री रतनचन्द्रजी म० ।

ये सन्त अहमदाबाद से लगभग ३०० मील का विहार कर पधारे थे।

३ लींबड़ी (छोटी) सम्प्रदाय

मुनि २६ आर्याजी ६६ = कुल संख्या ६५ । सम्मेलन में ११ मुनिराज पधारे थे। प्रतिनिधि मुनिराजों के नाम इस प्रकार है :—

१. तपस्वी मुनि श्री शामजी म०, २. शता० पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म०, ३. कविवर्य पं० मुनि श्री नानचन्द्रजी म०, ४. पं० मुनि श्री पूनमचन्दजी म० ।

ये सन्त लींबडी से लगभग ४२५ मील का विहार कर पधारे थे।

४ लींबड़ी (नानी) सम्प्रदाय

मुनि ७ आर्याजी १६ = कुल संख्या २६ । सम्मेलन मे ३ मुनिराज पधारे थे। प्रतिनिधि मुनिराज ये पं० मुनि श्री मणिलालजी म० ।

ये सन्त लींबडी से लगभग ४२५ मील का विहार करके पधारे थे ।

५ गौंडल-सम्प्रदाय

मुनि २०, आर्याजी ६६ = कुल संख्या ८६ । सम्मेलन में २ मुनिराज पधारे थे जिनमें से प्रतिनिधि ये थे
१. पं० मुनि श्री पुरुषोत्तमजी म० ।

आप आबू तक ही पधार सके । पांव की तकलीफ से आगे आपका विहार न हो सका ।

६ बोटाद-संप्रदाय

मुनि १०, आर्याजी नहीं = कुल संख्या १० । सम्मेलन मे ३ मुनिराज पधारे थे। जिनमें से प्रति ये थे :—पं० मुनि श्री माणकचन्दजी म० ।

ये सन्त पालियाद से लगभग ४६० मील का विहार कर पधारे थे।

७ सायला-संप्रदाय

मुनि ४ आर्याजी नहीं = कुल संख्या ४ । इस सम्प्रदाय के साधु सम्मेलन में नहीं पधारे थे। प अपना प्रतिनिधित्व बोटाद-सम्प्रदाय के पं० मुनि श्री शिवलालजी म० को दिया था।

८ आठ-कोटि (मोटी पक्ष) संप्रदाय

मुनि २२, आर्याजी ३६ = कुल संख्या ५८ । सम्मेलन मे ३ सन्त पधारे थे और तीनों ही प्रति ये थे :—

१. युवाचार्य श्री नागचन्द्रजी म०, २. पं मुनि श्री चतुरलालजी म०, ३. मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० ।

ये सब कांडाकरा (कच्छ) से लगभग ५५० मील का विहार कर पधारे थे।

९ पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ६५, आर्याजी ११० = कुल संख्या १७५ । सम्मेलन मे ४१ सन्त पधारे थे प्रतिनिधि ये थे :—

१. पूज्य श्री जवाहरलालजी म० ।

आपके साथ चार सलाहकार मुनिराज भी पधारे थे। आप जोधपुर से १५० मील का विहार कर पधारे थे।

१० पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ४४, आर्याजी ३१ = कुल संख्या ७५। सम्मेलन मे ३७ मुनिराज पधारे थे। जिनमे से प्रतिनिधि मुनिराज इस प्रकार थे :—

१. पूज्य श्री मन्नालालजी म०, २. प्र० व० पं० मुनि श्री चौथमलजी म०, ३. पं० मुनि श्री शेषमलजी म०।

पूज्य श्री मन्नालालजी म० मन्दसौर से लगभग १६० मील का विहार कर डोली में पधारे थे। प्र० व० चौथमलजी म० मनमाड से ६०० मील का विहार कर पधारे थे।

(११) पूज्य श्री नानक रामजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ५, आर्याजी १० = कुल संख्या १५। सम्मेलन मे ४ मुनिराज पधारे थे, जिनमें से २ प्रतिनिधि मुनिराज ये थे :—

१. प्रवर्त्तक मुनि श्री पन्नालालजी म०, २. पं० मुनि श्री हगामीलालजी म०।

विहार किशनगढ़ से १६ मील।

१२ पूज्य श्री स्वामीदासजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ५, आर्याजी १२ = कुल संख्या १७। सम्मेलन मे ५ मुनिराज पधारे थे। प्रतिनिधि मुनिराजों के नाम ये हैं :—

१. प्रवर्तक मुनि श्री फतहलालजी महाराज, २. पं० मुनि श्री छगनलालजी म०। विहार पीह (मेरवाड़) से १५ मील।

१३ पूज्य श्री रतनचंद्रजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ६, आर्याजी ३८ = कुल सख्या ४७। सम्मेलन मे ८ मुनिराज पधारे थे। प्रतिनिधि मुनिराजों के नाम इस प्रकार हैं :—

१. पूज्य श्री हस्तीमलजी म०, २. पं० मुनि श्री भोजराजजी म०, ३. पं० मुनि श्री चौथमलजी म०। विहार रतलाम से २५० मील।

१४ पूज्य श्री ज्ञानचंदजी महाराज की संप्रदाय

मुनि १३, आर्याजी १०५ = कुल सख्या ११८। सम्मेलन मे १० मुनिराज पधारे थे। प्रतिनिधि मुनियों के नाम इस प्रकार हैं :—

१. प० मुनि श्री पूरणमलजी म०, २. पं० मुनि श्री इन्द्रमलजी म०, ३. पं० मुनि श्री मोतीलालजी म० ४. प० मुनि श्री सिरेमलजी म०, ५. प० मुनि श्री समरथमलजी म०।

१५ पूज्य श्री मारवाडी चौथमलजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ३, आर्याजी १५ = कुल संख्या १८। प्रतिनिधि मुनिराज इस प्रकार हैं :—

१. प० मुनि श्री चांदमलजी म० (पू० श्री जयमलजी म० की सम्प्रदाय के), २. पं० मुनि श्री रूपचन्दजी म०। विहार सोजत रोड से ७५ मील।

१६ पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ६, आर्याजी ८१ = कुल संख्या ६० । सम्मेलन मे ७ मुनिराज पधारे थे, जिनमें से प्रतिनिधि मुनिराजों के नाम इस प्रकार है :—

(१) प्रवर्तक मुनि श्री दयालचन्द्रजी म०, (२) पं० मुनि श्री ताराचन्दजी म०, (३) प० मुनि श्री हेमराजजी म०, (४) पं० मुनि श्री नारायणदासजी महाराज । विहार समदड़ी से १४० मील ।

१७ पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ४, आर्याजी १५ = कुल सख्या १६ । सम्मेलन मे ४ मुनिराज पधारे थे । प्रतिनिधि मुनिराज निम्न थे :—

(१) प्रवर्तक मुनि श्री धीरजलालजी म०, (२) मंत्री मुनि श्री मिश्रीमलजी म० ।

१८ पूज्य श्री जयमलजी महाराज की संप्रदाय

मुनि १३, आर्याजी ६० = कुल संख्या १०३ । सम्मेलन मे ११ मुनिराज पधारे थे । प्रतिनिधि मुनिराज के नाम इस प्रकार है :—

(१) प्रवर्तक मुनि श्री हजारीमलजी म०, (२) पं० मुनि श्री गणेशमलजी म०, (३) मंत्री मुनि श्री चौथमजी म०, (४) पं० मुनि श्री वक्तावरमलजी म०, (५) पं० मुनि श्री चांदमलजी म० । विहार ब्यावर से ३३ मील ।

१६ पूज्य श्री एकलिंगदासजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ८, आर्याजी ३५ = कुल संख्या ४३ । सम्मेलन मे ४ मुनिराज पधारे थे । जिनमे से प्रतिनि मुनिराज ये थे :—

(१) पं० मुनि श्री जोधराजजी म०, (२) पं० मुनि श्री बिरदीचंदजी म० । विहार देवगढ़ से १०० मील ।

२० पूज्य श्री शीतलदासजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ५, आर्याजी ११=कुल संख्या १६ । सम्मेलन मे ५ मुनिराज पधारे थे । प्रतिनिधि मुनियों के ना इस प्रकार है :—

(१) प० मुनि श्री भूरालालजी म०, (२) पं० मुनि श्री छोगालालजी म० । विहार पहुना (मेवाड़) ६० मील ।

२१ पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज की संप्रदाय

मुनि २४, आर्याजी ८१=कुल संख्या १०५ । सम्मेलन मे १६ सन्त पधारे थे । प्रतिनिधि मुनियों की नामावली इस प्रकार है :—

(१) पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी म०, (२) तप० मुनि श्री देवजी ऋषिजी म०, (३) पं० मुनि श्री आनन्द ऋषिजी म०, (४) आत्मार्थी मुनि श्री मोहन ऋषिजी म०, (५) पं० मुनि श्री विनय ऋषिजी म० । विहार भोपाल से ४१० मील ।

२२ पूज्य श्री धर्मदासजी म० की संप्रदाय

मुनि १५, आर्याजी ७४ = कुल सख्या ८६ । सम्मेलन मे ६ मुनिराज पधारे थे । जिनमे प्रतिनिधि मुनिराज ये थे :—

(१) प्रवर्तक मुनि श्री ताराचन्दजी म०, (२) मुनि श्री किशनलालजी म०, (३) पं० मुनि श्री सौभाग्यमल जी म०, (४) पं० मुनि श्री सूरजमलजी म०। विहार उज्जैन से २६६ मील।

२३ श्री रामरतनजी महाराज की सम्प्रदाय

मुनि ३ आर्याजी २ = कुल सख्या ५। सम्मेलन में २ मुनिराज पधारे थे। प्रतिनिधि मुनि ये थे :—
प० मुनि श्री धनसुखजी म०। विहार शाहपुरा से लगभग ६० मील।

२४ पूज्य श्री दौलतरामजी म० (कोटा) की संप्रदाय

मुनि १३, आर्याजी २६ = कुल संख्या ३६। सम्मेलन में ७ मुनिराज पधारे थे। प्रतिनिधि मुनिराज निम्न थे :—

(१) पं० मुनि श्री रामकुमारजी म०, (२) पं० मुनि श्री बिरदीचन्दजी म०, (३) तपस्वी मुनि श्री देवीलालजी म०।

विहार सवाई माधोपुर से १२५ मील। तपस्वी मुनि श्री देवीलालजी म० घोटी से ५८८ मील का विहार विहार कर अजमेर पधारे थे।

२५ पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ७३, आर्याजी ६० = कुल १३३। सम्मेलन में २५ सन्त पधारे थे। प्रतिनिधि मुनिराजों की नामावली इस प्रकार है :—

(१) युवाचार्य मुनि श्री काशीरामजी म०, (२) गणि० मुनि श्री उदयचन्दजी म०, (३) उपाध्याय मुनि श्री आत्मारामजी म०, (४) पं० मुनि श्री मदनलालजी म०, (५) पं० मुनि श्री रामजीलालजी म०।

विहार रामपुरा (पंजाब) से ४८० मील।

२६ पूज्य श्री नाथूरामजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ७, आर्याजी १० = कुल संख्या १७। सम्मेलन में २ सन्त पधारे थे और दोनों ही निम्न प्रतिनिधि थे :—

(१) पं० मुनि श्री फूलचन्दजी म०, (२) पं० मुनि श्री कुन्दनमलजी म०। विहार मलेर कोटला से ४७५ मील।

२७ पूज्य श्री मोतीलालजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ७, आर्याजी नहीं = कुल संख्या ७। सम्मेलन में ४ मुनिराज पधारे थे। प्रतिनिधि मुनिराज ये थे :—(१) मुनि श्री पृथ्वीचन्दजी म०।

अजमेर साधु-सम्मेलन में सकारण न पधार सकने वाले मुनिराज

१ गौंडल-सम्प्रदाय

मुनि २०, आर्याजी ६६ = कुल संख्या ८६।
प्रतिनिधि मुनि आबू तक आकर पैर की बीमारी से आगे न बढ़ सके।

२ गौंडल-संघाणी-सम्प्रदाय

आर्याजी २५, मुनि नहीं। सम्प्रदाय में मुनि न होने से पधार न सके।

३ बरवाला-संप्रदाय

मुनि ४, आर्याजी २०=कुल संख्या २४। सभी वृद्ध मुनि होने के कारण पधार न सके।

४ कच्छ आठ-कोटि (छोटी-नानी) पक्ष

मुनि १४, आर्याजी २५=कुल संख्या ३०। शारीरिक कारण से न पधार सकेंगे। ऐसा पत्र आया।

इस सम्मेलन के समय समस्त भारतवर्ष में विचरण करने वाले स्थानकवासी जैन-साधुओं की संख्या ४६३ और आर्याजी की संख्या ११३२, कुल १५९५ साधु-साध्वियो की संख्या थी। एकल-विहारी और संप्रदाय से बाहर सन्तों की संख्या अलग समझनी चाहिये।

इन मुनिराजों में से अजमेर-सम्मेलन के समय २३८ मुनिराजों की ओर ४० साध्वियों की उपस्थिति थी। प्रतिनिधि मुनिराज ७६ थे।

सम्मेलन लाखनकोठरी ममैयों के नोहरे में भीतरी चौक के वट-वृक्ष के नीचे हुआ था।

इस सम्मेलन के समय समस्त हिंद के कोने २ से दर्शनार्थियो का जन-समूह उमड़ पड़ा था। लगभग ५० हजार भाई-बहिन इस समय अजमेर में आये थे। इतने बड़े जन-समूह की व्यवस्था करना बड़ा कठिन काम था, फिर भी अजमेर संघ ने तथा सम्मेलन के संयोजको ने जो व्यवस्था की थी वह अपूर्व ही थी।

अ० भा० स्था० जैन मुनि संमेलन का सं०-विवरण

प्रारंभ ता. ५-४-३३ समाप्ति ता. १६-४-३३

सम्मेलन में प्रतिनिधियों की बैठक

प्रस्तावना—अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी समाज में भिन्न २ बत्तीस ३२ सम्प्रदाय है। जिनमें कुल मुनियों की संख्या ४६३ और आर्याजी की संख्या ११३२ है। इनमे से २६ सम्प्रदायों के मुनिराज २४० की संख्या में उपस्थित हो सके थे। उनमे से निम्नोक्त ७६ मुनिराज अपनी २ सम्प्रदाय का प्रतिनिधित्व लेकर पधारे थे :—

(१) पूज्य श्री मन्नालालजी म० (पूज्य श्री हुक्मीचंदजी म० की स०), (२) पं० मुनि श्री खूबचन्दजी म० (पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० की स०), (३) प्र० व० पं० मुनि श्री चौथमलजी म० (पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० की सं०) (४) पं० मुनि श्री शेषमलजी म० (पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० की स०), (५) पूज्य श्री अमोलख ऋषिजी म० (ऋषि सं०), (६) तप० मुनि श्री देवजी ऋषिजी म० (ऋषि स०), (७) पं० मुनि श्री आनन्दऋषिजी म० (ऋषि स०) (८) पं० मुनि श्री मोहन ऋषिजी म० (ऋषि सं०), (९) पं० मुनि श्री विनय ऋषिजी म० (ऋषि सं०), (१०) पं० मुनि श्री पूर्णमलजी म० (पू० श्री ज्ञानचन्दजी म० की सं०), (११) पं० मुनि श्री इन्द्रमलजी म० (पू० श्री ज्ञानचन्दजी म० की स०), (१२) पं० मुनि श्री श्रेयमलजी म० (पूज्य श्री ज्ञानचन्दजी म० की सं०), पं० मुनि श्री समर्थमलजी म० (पूज्य श्री ज्ञानचन्दजी म० की सं०), (१४) पं० मुनि श्री मोतीलालजी म० (पूज्य श्री ज्ञानचन्दजी म० की सं०), (१५) पं० मुनि श्री ताराचन्दजी म० (पूज्य श्री माधव मुनिजी म० की सं०), (१६) पं० मुनि श्री किशनलालजी म० (पूज्य माधव मुनिजी म० की सं०), (१७) प० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म० (पूज्य माधव मुनिजी म० की सं०), (१८) पं० मुनि श्री सूर्यमलजी म० (पूज्य माधव मुनिजी म० की सं०), (१९) पं० मुनि श्री धनसुखजी म० (पूज्य श्री रामरतनजी म० की सं०) (२०) प० मुनि श्री छोगालालजी म० (पूज्य श्री शीतलदासजी म० की सं०), (२१) प० मुनि श्री भूरालालजी म० (पू० श्री शीतलदासजी म० की सं०), (२२) पूज्य श्री हस्तीमलजी म० (पूज्य श्री रतनचन्दजी म० की सं०), (२३) पं० मुनि श्री भोजराजजी म० (पूज्य श्री रतनचन्द्रजी म० की सं०), (२४) पं० मुनि श्री चौथमल

म० (पूज्य श्री रतनचन्द्रजी म० की सं०) (२५) पं० मुनि श्री पृथ्वीचन्द्रजी म० (पूज्य श्री मोतीलालजी, म० की सं०) (२६) गणी श्री उदयचन्दजी म० (पूज्य श्री सोहनलालजी म० की सं०), (२७) उपाध्याय श्री आत्मारामजी म० (पूज्य श्री सोहनलालजी म० की सं०), (२८) युवाचार्य श्री काशीरामजी म० (पूज्य श्री सोहनलालजी म० की सं०), (२९) पं० मुनि श्री मदनलालजी म० (पूज्य श्री सोहनलालजी म० की सं०), (३०) पं० मुनि श्री रामजीलालजी म० (पूज्यश्री सोहनलालजी म० की सं०) (३१) पूज्य श्री जवाहरलालजी म० (पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० की सं०), (३२-३५)—चार सलाहकार (पू० श्री हुक्मीचन्दजी म० की सं०), (३६) पं० मुनि श्री माणकचन्दजी म० (बोटाद-सम्प्रदाय), (३७) पं० मुनि श्री शिवलालजी म० (सायला सं०), (३८) शास्त्रज्ञ श्री मणिकलालजी म०, (लींबडी नानी सं०), (३९) पं० मुनि श्री पूनमचन्दजी म० (लींबडी नानी सं०), (४०) तपस्वी मुनि श्री शामजी स्वामी (लींबडी मोटी-सं०), (४१) शता० पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० (लींबडी मोटी सं०), (४२) कविवर्य पं० मुनि श्री नानचन्द जी म० (लींबडी मोटी-सं०), (४३) पं० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म० (अवधानी) (लींबडी मोटा-सं०), (४४) पूज्य श्री छगनलालजी म० (खंभात-सं०), (४५) प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० (खंभात सं०), (४६) पं० मु० श्री पुरुषोत्तमजी म० (दरियापुरी सं०), (४७) पं० मुनि श्री हर्षचन्द्रजी म० (दरियापुरी सं०), (४८) पं० मुनि श्री सुन्दरलालजी म० (४९) प० मुनि श्री आपचन्दजी म० (दरियापुरी सं०), (५०) युवाचार्य श्री नागचन्द्रजी म० (आठकोटी मोटी पक्ष), (५१) प० मुनि श्री चतुरलालजी म० (आठ कोटी मोटी पक्ष), (५२) पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० (आठ कोटी मोटी पक्ष), (५३) प्रवर्तक श्री दयालचन्द जी म० (पूज्य श्री अमरसिंहजी म० की सं०), (५४) पं० मुनि श्री ताराचन्दजी म० (पू० श्री अमरसिंहजी म० की सं०), (५५) पं० मुनि श्री हेमराजजी म० (पू० श्री अमरसिंहजी म० की सं०), (५६) प० मुनि श्री नारायणदासजी महाराज (पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय) (५७) प० मुनि श्री हजारीमलजी म० (पू० श्री जयमल्लजी म० की सं०), (५८) प० मुनि श्री गणेशीमलजी म० (पू० श्री जयमल्लजी म० की सं०), (५९) पं० मुनि श्री चौथमलजी म० (पूज्य श्री जयमल्लजी म० की सं०), (६०) पं मुनि श्री वक्तावरमलजी म० (पूज्य श्री जयमल्लजी म० की सं०), (६१) पं० मुनि श्री चेनमलजी म० (पू० श्री जयमल्लजी म० की सं०), (६२) पं० मुनि श्री धैर्यमलजी म० (पू० श्री रघुनाथजी म० की सं०), (६३) पं० मुनि श्री मिश्रीलालजी म० (पू० श्री रघुनाथजी म० की सं०), (६४) प० मुनि श्री फतेहलालजी म० (पू० श्री स्वामीदासजी म० की सं०), (६५) पं० मुनि श्री छगनलालजी म० (पू० श्री स्वामीदासजी म० की सं०), (६६) पं० मुनि श्री पन्नालालजी म० (पू० श्री नानकरामजी महाराज की सं०) (६७) पं० मुनि श्री हगामीलालजी म० (पू० श्री नानकरामजी म० की सं०) (६८) पं० मुनि श्री चांदमलजी म० (पूज्य श्री चौथमलजी म० की सं०), (६९) पं० मुनि श्री रूपचन्दजी म० (पूज्य श्री चौथमलजी म० की सं०) (७०) पं० मुनि श्री फूलचन्दजी म० (पूज्य श्री नाथुरामजी म० की सं०), (७१) पं० मुनि श्री कुन्दनमलजी म० (पूज्य श्री नाथुरामजी म० की सं०), (७२) पं० मुनि श्री जोधराजजी म० (पूज्य श्री एकलिंगदास जी म० की सं०), (७३) पं० मुनि श्री वृद्धिचन्द्रजी म० (पूज्य श्री एकलिंगदासजी म० की सं०), (७४) पं० मुनि श्री रामकुमारजी म० (पूज्य श्री दौलतरामजी म० कोटा सं०), (७५) पं० मुनि श्री वृद्धिचन्द्रजी म० (पूज्य श्री दौलतरामजी म० कोटा सं०) (७६) पं० मुनि श्री देवीलालजी म० (पूज्य दौलतरामजी म० कोटा सं० ।

उपर्युक्त ७६ मुनिराजों की बैठक समान आसन पर गोलाकार रूप में हुई थी। मध्य में हिन्दी और गुजराती के लेखक मुनिराज विराजमान थे। वक्ता मुनिराज अपने अपने स्थान पर ही खड़े होकर अपने विचार प्रकट करते थे। इन प्रतिनिधि मुनिराजों की सभा में शान्तिरक्षा के लिए गणी श्री उदयचन्द्रजी म० तथा शता० प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० को शांतिरक्षक चुना गया था। हिंदी लेखक श्री उपाध्यायजी आत्मारामजी म० और

गुजराती लेखक लघु शतावधानी श्री सौभाग्यचन्द्रजी म० नियुक्त किये गये थे। दोनों के सहायक के रूप मे मुनि श्री मदनलालजी म० तथा विनय ऋषिजी महाराज चुने गये थे। कार्यवाही प्रारम्भ होने से पूर्व शता० प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० का मंगलाचरण होता था। सम्मेलन का कार्य-क्रम सरल बनाने के लिये निम्नोक्त २१ मुनिराजों की एक विषय निर्धारिणी समिति का सर्वानुमति से चुनाव किया गया था जो सभा मे पेश किए जाने वाले विचारणीय विषयों का निर्णय करती थी।

(१) गणी श्री उदयचन्दजी म०, (२) पू० श्री अमोलक ऋषिजी म०, (३) पं० मुनि श्री छगनलालजी म०, (४) उपध्याय श्री आत्मारामजी म०, (५) पं० मुनि श्री मणिलालजी म०, (६) प० मुनि श्री पुरुषोत्तमजी म०, (७) पं० मुनि श्री श्यामजी म०, (८) पं० मुनिश्री हर्षचन्द्रजी म०, (९) शतावधानी पं० मुनि श्री रतनचन्द्रजी म०, (१०) प्र० व० पं० मुनि श्री चौथमलजी म०, (११) कविवर्य श्री नानचन्द्रजी म०, (१२) युवाचार्य श्री काशीरामजी म०, (१३) पं० मुनि श्री ताराचन्दजी म०, (१४) पं० मुनि श्री पन्नालालजी म०, (१५) पं० मुनि श्री चौथमलजी म०, (१६) पं० मुनि श्री पृथ्वीचन्दजी म०, (१७) पं० मुनि श्री कुन्दनलालजी म०, (१९) पं० मुनि श्री समरथमलजी म०, (२०) पं० मुनि श्री मोहन ऋषिजी म०, (२१) पूज्य श्री हस्तीमलजी म०।

इस समिति का कोरम ११ का रखा गया था। प्रतिदिन प्रतिक्रमण के बाद रात्रि मे इस समिति की बैठक होती थी।

मुनि-सम्मेलन की कार्यवाही

प्रस्ताव १—(प्रतिनिधियों का निर्णय)

विभिन्न सम्प्रदायों को समान समाचारी से एक सूत्र मे ग्रथित करने के लिये और सम्मेलन द्वारा की हुई कार्यवाही को अमल मे लाने के लिए-२१ मुनियों की संख्या वाली सम्प्रदाय मे से १, बाईस से इक्कावन मुनियों की संख्यावाली सम्प्रदायों मे से २, बावन से ८१ मुनिसंख्या वाली सम्प्रदायो मे से तीन और इससे अधिक मुनि संख्यावाली सम्प्रदायों मे से चार प्रतिनिधि चुने जायं। इस क्रम से निम्नोक्त मुनि-समिति कायम की जाती है :—

सम्प्रदाय	प्रतिनिधि संख्या	नाम
(१) पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० की सम्प्रदाय	४	१. पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज
		२. ,, ,, मुन्नालालजी महाराज आदि २
(२) ” सोहनलालजी म० की ”	४	१. युवा० श्री काशीरामजी महाराज
		२. गणी श्री उदयचन्दजी ”
		३. उपा० श्री आत्मारामजी ”
		४. पं० मुनि श्री मदनलालजी ”
(३) पूज्य श्री लवजी ऋषिजी म० की ,,	२	१. पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी महाराज
		२. पं० मनि श्री आनंद ऋषिजी म०
(४) खंभात-संम्प्रदाय	१	१. पूज्य श्री छगनलालजी महाराज
(५) पूज्य श्री रतनचन्दजी म० की ,,	१	१. ” श्री हस्तीमलजी ”
(६) दरियापुरी-सं०	१	१. पं० मनि श्री पुरुषोत्तमजी ”
(७) लींबडी-सं० (मोटा)	२	१. शता० श्री रतनचन्द्रजी महाराज

सम्प्रदाय	प्रतिनिधि संख्या	नाम
		२. कविवर्य श्री नानचन्द्रजी महाराज
(८) लींबडी (नानी) सं	१	१. प० मुनि श्री मणिलालजी "
(९) कच्छ आठकोटी (मोटी पक्ष) सं०	२	१. युवा० श्री नागचन्दजी "
		२. प० मुनि श्री देवचन्दजी "
(१०) पूज्य श्री मोतीरामजी म० (जमनानगर) की सं०	१	१. पूज्य श्री पृथ्वीचन्द्रजी "
(११) " जयमल्लजी महाराज की सम्प्रदाय	१	१. पं० मुनि श्री हजारीमलजी "
(१२) " रघुनाथजी "	१	१. " मिश्रीमलजी "
(१३) " चोथमलजी "	१	१. " शार्दूलसिंहजी "
(१४) " अमरसिंहजी "	१	१. " दयालचन्दजी "
(१५) " नानकरामजी "	१	१. " पन्नालालजी "
(१६) " स्वामीदासजी "	१	१. पं० मुनि श्री फतेहचन्दजी "
(१७) " नाथूरामजी "	१	१. " फूलचन्दजी "
(१८) " धर्मदासजी "	३	१. पूज्य श्री ताराचन्दजी "
		२. पं० मुनि श्री सौभाग्यमलजी "
		३. " समस्थमलजी "
(१९) पूज्य श्री शीतलदासजी म० की सं०	१	१. " छोगलालजी "
(२०) " रामरतनजी म० "	१	१. " धनसुखजी "
(२१) " कोटा सं०	१	१. " रामकुमारजी "
(२२) " एकलिंगदासजी म० की सं०	१	१. " जोधराजजी "
(२३) " बोटाद सं०	१	१. " माणकचन्दजी "
(२४) " गोंडल सं०	१	१. " पुरुषोत्तमजी "
(२५) " सायला-सं०	१	१. " संघजी "
(२६) " बरवाला सं	१	१. " मोहनलालजी "

प्रस्ताव २—(अध्यक्ष व मन्त्री का चुनाव)

इन उपरोक्त ३८ मुनियों में से प्रांतानुसार निम्नोक्त पांच कार्यवाहक-मन्त्री और एक अध्यक्ष नियत किये जाते हैं :—

(१) गुजरात, काठियावाड़ और कच्छ के मन्त्री शता० पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० ।

(२) पंजाब-प्रांत के मन्त्री—उपाध्यायजी श्री आत्मारामजी म० ।

(३) दक्षिण प्रांत के मन्त्री—पं० मुनि श्री आनन्दऋषिजी म० ।

(४) मेवाड़, मालवा-प्रांत के मन्त्री—पू० श्री हस्तीमलजी म० ।

(५) मारवाड़ प्रांत के मन्त्री—पं० मुनि श्री छगनलालजी म० ।

अध्यक्ष-पद पर पू० श्री सोहनलालजी म० नियुक्त किए गए ।

प्रस्ताव ३—(प्रतिनिधि की योग्यता व कार्य)

(१) प्रत्येक सम्प्रदाय के समझदार-निष्पक्षपाती व न्याय दृष्टि वाले मुनि श्री को ही प्रतिनिधि चुनें

(२) साधु सम्मेलन मे प्रस्तावित प्रस्तावों का यथातथ्य पालन कराते हुए सम्प्रदाय में शांति का राज्य स्थापित करना और विशिष्ट कार्य हो तो मंत्री को सूचित करना प्रत्येक प्रतिनिधि का कर्तव्य है।

प्रस्ताव ४—(मन्त्री की योग्यता व कार्य)

(१) मन्त्री-प्रभावशाली-बुद्धिमान और कार्यदक्ष होने चाहिये।

(२) अपने प्रान्त की प्रत्येक सम्प्रदाय पर लक्ष्य रखते हुए प्रतिनिधियों को पूर्णरूप से मदद करना और कोई विशिष्ट कार्य हो तो पांचों मन्त्री मन्त्रणा करके निर्णय होवे वैसा कार्य करना मत्री का कर्तव्य है।

प्रस्ताव ५—(अध्यक्ष की योग्यता व कार्य)

(१) अध्यक्ष-प्रभावशाली, प्रौढ़, अनुभवी-शास्त्रज्ञ देश-काल के जानकार और चारों तीर्थ पर वात्सल्य भाव रखने वाले होने चाहिये।

(२) समिति के प्रत्येक अंग का निरीक्षण करते रहना, परस्पर का संगठन कायम रखना और परस्पर प्रेम-वृद्धि का प्रयत्न करना।

(३) किसी भी सम्प्रदाय को समाचारी के नियम पालन के लिये अथवा प्रेमवृद्धि, शिक्षा इत्यादि कार्यों में सहायता की आवश्यकता हो तो उसका प्रबन्ध करना।

(४) सकल श्रीसंघ की उन्नति हो ऐसा कार्य मन्त्री द्वारा कराना और समाज मे जागृति हो ऐसे उपाय करना अध्यक्ष का कर्त्तव्य है।

प्रस्ताव ६—(समिति का कार्य-क्षेत्र)

(१) इस साधु सम्मेलन में जो कार्यवाही हो उसके पालन करने पर अधिक लक्ष्य देना।

(२) उत्तरोत्तर सम्प्रदायों मे परस्पर प्रेमवृद्धि, ऐक्य वृद्धि, व संगठन दृढ़ हो ऐसा प्रचार करना। भविष्य में इसका सम्मेलन ११ वर्ष में भरने के लिये यथायोग्य प्रवन्ध करना।

(३) ज्ञान-प्रचारक मण्डल व दर्शन प्रचारक मडल के हर एक प्रकार से सहायता करना और उनको सुदृढ़ बनाना।

(४) जैन-समाज के सामाजिक सुधार पर ध्यान रखते हुए जैनेतर समाज में जैनधर्म का प्रचार करना।

(५) इस समिति की बैठक प्रत्येक पांच वर्ष मे भिन्न २ प्रांतों मे करना जिसके लिए उपयुक्त स्थान तथा समय का निर्णय प्रतिनिधियों की सलाह लेकर अध्यक्ष कर सकते है।

नोट—कार्य विशेष प्रसंग उपस्थित होने पर इस अवधि के पूर्व भी प्रांतिक-सम्मेलन भरा जा सकता है।

(६) प्रांतीय सम्मेलन तथा बृहत्सम्मेलन का कोरम प्रतिनिधि संख्या के दो तृतीयांश भाग के अनुसार समझना। यदि कोई कारणवश न आ सके तो अन्य द्वारा अपना मत प्रदर्शित करना चाहिये। कार्यवाहक मन्त्री व अध्यक्ष की उपस्थिति तो कोरम मे अनिवार्य है।

(७) समिति के प्रस्ताव यथाशक्य सर्वानुमति से या बहुमति मे पास हो सकते हैं। यदि समान मत हों तो अध्यक्ष के दो मत लेकर बहुमत से प्रस्ताव पास किया जा सकता है।

(८) कोई भी सम्प्रदाय किसी भी अन्य सम्प्रदाय की निंदा या टीका-टिप्पणी न करें।

(९) पांच वर्ष मे प्रांतीय-सम्मेलन के पहले २ निकटवर्ती सम्प्रदायें मिल कर अपने गण की व्यवस्था करें और बारह ही संभोग खुले करें।

प्रस्ताव ७—(दीक्षा-विषयक)

(१) दीक्षार्थी दीक्षा लेने से पूर्व अपने गुरु महाराज को ऐसा प्रतिज्ञापत्र लिख कर देवे कि 'मैं आपकी आज्ञा में ही संयम पालता हुआ विचरूंगा, आज्ञा बिना कोई काम करूंगा नहीं। मेरे पास जो शास्त्र, उपाधि इत्यादि हैं वे सब आपकी नेश्राय के है इसलिए जब तक सम्प्रदाय की और आपकी आज्ञा मे रहूँगा तब तक उन पर मेरा अधिकार है।

(२) दीक्षा लेने वाले की आयु उत्सर्ग मार्ग मे १६ वर्ष की निश्चित की जाती है। अपवाद मार्ग में तत्सम्प्रदाय के आचार्य श्री और जिन सम्प्रदाय मे आचार्य न हों तो उसके कार्यवाहक पर छोड़ी जाती है।

(३) योग्य व्यक्ति को ही आचार्य अथवा कार्यवाहक श्रीसघ की अनुमति से दीक्षा दे सकते हैं।

(४) अभ्यास-दीक्षार्थी को कम से कम साधु प्रतिक्रमण तो आना ही चाहिए।

(५) जाति—हम जिस जाति से आहार-पानी ले सकते है। ऐसे ही उच्च जातिवन्त को दीक्षा दे सकते हैं।

(६) भंडोपकरण—दीक्षा प्रसंग पर दीक्षार्थी के कल्पानुसार जितने वस्त्र-पात्र उपकरणादि लेने की आवश्यकता है उससे अधिक उसके निमित्त से लेना नहीं।

(७) दीक्षोत्सव—दीक्षा प्रसग पर श्रावक वर्ग अधिक आडम्बर करे तथा दीक्षोत्सव एक दिन से अधिक करें उस निमित्त से अथवा तो तपोत्सव, लोचोत्सव, सवत्सरी क्षमापना—या मुनि दर्शन की आमन्त्रण पत्रिका निकाले तो इन सब आडम्बरों को मुनिराज उपदेश द्वारा रोके।

(८) पुनः दीक्षा—मुनि वेष मे जिसने चौथे महाव्रत का भंग किया हो ऐसा सप्रमाण सिद्ध हो जाय तो उसका वेष लेकर सम्प्रदाय के बाहर कर सकते है। उसको अन्य सम्प्रदाय वाले दीक्षा न दें। कदाचित् उसका मन चारित्र मार्ग मे पुनः स्थिर हो जाने का विश्वास हो जाय तो साम्प्रदायिक सघ की आज्ञा से उसी सम्प्रदाय मे पुनः वह दीक्षा ग्रहण कर सकता है।

(९) अन्य सम्प्रदाय से कोई साधु या साध्वी आ जाय तो उसको समझा कर मूल सम्प्रदाय मे भेज देवें—यदि सम्प्रदाय के अग्रेसर की आज्ञा प्राप्त हो जाय तो योग्यता देखकर अपनी सम्प्रदाय की मर्यादानुसार उसको रख सकते है।

(१०) बिना किसी विशेष कारण के कोई साधु या साध्वी दीक्षा छोड़कर चला गया हो और फिर वह कहीं दीक्षा लेना चाहे तो उस सम्प्रदाय के आचार्य या कार्यवाहक की अनुमति लेकर पुनः दीक्षा दे सकते हैं। परन्तु अस्थिर दशा से दुबारा चारित्र छोड़ दे तो फिर उसको दीक्षा देना नहीं।

(११) किसी भी दीक्षार्थी को उसके संरक्षक या सम्बन्धियों की आज्ञा मिलने के पहले मुनिवेष पहनने की प्रेरणा करना नहीं, और उसको किसी प्रकार की सहायता भी करना नहीं। कदाचित् वह अपनी इच्छा से ही मुनिवेष धारण कर ले तो उसको कहीं भी अपने साथ रखना नही। आहार-पानी देना या दिलाना नहीं। जो कोई साधु या साध्वी इसके विरुद्ध आचरण करेगा तो उसको शिष्यहरण का प्रायश्चित आवेगा।

(१२) किसी भी अन्य सम्प्रदाय के दीक्षार्थी, शिष्य और शिष्या को अपनी सम्प्रदाय में लेने के लिये फरमाना नही।

(१३) अपने शिष्य का दोष जानकर उसके गुरु आहार-पानी अलग कर सकते हैं तथा बड़ा दोष हो तो आचार्य तथा स्थानीय संघ की सम्मति लेकर सम्प्रदाय से बाहर भी कर सकते हैं। परन्तु ज्ञान की कमी होने से, प्रकृति न मिलने से या अगोपांग अशक्त होने से अपने शिष्य को अलग नहीं कर सकते हैं। जो आचार्य, कार्यवाहक या गुरु इन कारणों से अपने शिष्य को अलग कर देगा तो उसको नये शिष्य या शिष्या करने का अधिकार नहीं रहेगा।

प्रस्ताव ८– (एकलविहारी के लिये)

एकल-विहारी तथा स्वच्छन्दाचारी मुनियों को यह सम्मेलन सूचना करता है कि वे एक वर्ष के अंदर अपनी सम्प्रदाय में मिल जावें। अन्यथा ऐसे मुनिराजों के साथ केवल आहार-पानी और उतरने के लिये मकान के अतिरिक्त अन्य सत्कार श्री संघ न करे।

नोट—इस प्रश्न को जल्दी से निपटाने के लिये एकल विहारी तथा स्वच्छंदाचारी से निवेदन है कि वे अपनी अनुकूलता तथा प्रतिकूलता का निर्णय करके साधु-सम्मेलन-समिति को ज्ञान करावें।

(२) एक से अधिक जो गुरु अथवा आचार्य की आज्ञा बिना स्वतंत्र विचरते हैं ऐसे मुनिराजों को एक वर्ष के अन्दर २ अपनी सम्प्रदाय में अथवा अन्य सम्प्रदाय में मिल जाना चाहिये। ऐसा करने वाले साधु-सम्मेलन की आज्ञा में गिने जायेंगे अन्यथा ऐसे मुनिराजों के साथ एकल-विहारी का बर्ताव श्री संघ कर सकेगा।

(४) आचार्य तथा सम्प्रदाय के मुख्य मुनिराजों से नम्र निवेदन है कि वे प्रकृति न मिलने से या ज्ञान की न्यूनता से सम्प्रदाय से अलग रहे हुए मुनिराजों को अपने में मिलाने के लिये एक वर्ष तक यत्न करें और फिर भी नहीं मिल सकें तो अन्य सम्प्रदाय में जाने के लिये आज्ञा दे देवे।

(४) सम्प्रदाय के आचार्य तथा कार्यवाहक की आज्ञा बिना विचरने वाले साधु-साध्वियों का व्याख्यान चतुर्विध श्री संघ नहीं सुने तथा उनका पक्ष भी नहीं करे। चारित्रवान को करने योग्य विधि-वंदन या सत्कार नहीं करे, मकान व आहार-पानी की मनाई नहीं है।

प्रस्ताव ९—(चातुर्मास के संबंध में)

(१) स्थानीय स्थानकवासी सकल श्री संघ की सम्मति से संघ जिस सम्प्रदाय को विनती करे वही सम्प्रदाय वहां चातुर्मास करे, अन्य नहीं तथा सकल श्री संघ एकत्रित होकर विनती न करे तो कोई भी सम्प्रदाय वहां चातुर्मास नहीं करे।

(२) स्थानीय एकल विहारी श्रीसंघ की प्रार्थना से शेषकाल अथवा चातुर्मास में एक ग्राम या नगर में एक ही व्याख्यान करे। यदि सकारण अन्य सम्प्रदाय के मुनिराज वहां विराजते हो तो भी पृथक् व्याख्यान तो देवे ही नहीं।

(३) स्थानीय सकल श्री संघ की विनती से जहां पर साध्वीजी का चातुर्मास निश्चित हो वहां पर साधुजी चातुर्मास नहीं करे। परन्तु कारण वशात् मुनिराजों का विराजना हो तो मुनि श्री की आज्ञा बिना आर्याजी का व्याख्यान नहीं हो सकेगा।

(४) फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा के पहले किसी भी सम्प्रदाय को चातुर्मास की विनती स्वीकार नहीं करना चाहिए। श्रीसंघ को भी विनती आचार्यश्री या कार्यवाहक को भेजनी चाहिये।

(५) क्षेत्र विभाग—एक सम्प्रदाय के चतुर्मासिक क्षेत्र की मर्यादा मे अन्य सम्प्रदाय के मुनियों को रहना हो तो वे उस सम्प्रदाय के मुख्य मुनि की सम्मति से रहे और उस सम्प्रदाय की परम्परा के विरुद्ध प्ररूपणा नहीं करें।

प्रस्ताव १०—(चातुर्मासिक कल्प के सबंध मे)

(१) चातुर्मास पूर्ण होने के बाद पुनः शेषकाल रहने की इच्छा हो तो दो माह के बाद रह सकते हैं और दो चातुर्मास अन्य क्षेत्र मे करने के बाद उसी जगह तीसरा चातुर्मास कर सकते है।

(२) चातुर्मास करने के बाद दो माह के पश्चात् का समय शेषकाल गिना जाय। कदाचित् उससे कम दिन रह जायं तो फिर से आकर रह सकते है परन्तु शेषकल्प (एक मास मे बाकी रहे हुए दिनो से अधिक रहना चाहे तो जितने दिन अधिक रहना हो उनसे दुगुने दिन अन्य क्षेत्र मे रह आने के बाद ही शेष कल्प मे बाकी रहे हुए दिनों से अधिक रह सकते है।

(३) जितने साधु साध्वीजी शेषकाल या चातुर्मास मे साथ रहे है उन सभी के लिये कल्प सबंधी ऊपर का नियम समान है। परन्तु उनमे जो बड़े तथा उनसे भी अधिक प्रव्रज्या वाले, दूसरे मुख्य साधुजी के साथ वे ऊपर के कल्प अनुसार रह सकेंगे।

(४) साधु या साध्वीजी को स्थिरवास रहने की आवश्यकता पड़े, तब अपने आचार्य या कार्यवाहक मुनिराज की आज्ञानुसार जिस क्षेत्र मे रहने का फरमावे उसमे रह सकते है।

नोट—आचार्य व कार्यवाहक को चाहिये कि वे उनके लिये भिन्न २ क्षेत्र रोके नहीं।

(५) स्थिरवास मे रहे हुए साधु साध्वीजी की सेवा मे रहे हुए सन्तों या साध्वियों का भी प्रतिवर्ष परिवर्तन होता रहे तो अच्छा है।

(६) जहां श्री सघ मे क्लेश चलता हो अथवा जहां जाने से सघ मे अश्रेय होना संभव हो वहां चातुर्मास या शेष कल्प करना नहीं।

श्री ज्ञान-प्रचारक मण्डल की योजना

प्रस्ताव ११—(श्री ज्ञान-प्रचारक मडल की योजना)

पंजाब के लिये—(१) पू० श्री सोहनलालजी म० (शास्त्रीय) (२) गणीजी श्री उदयचन्दजी म० (आर्य समाज के सामने) (३) उपाध्यायजी आत्मारामजी म० (शास्त्रीय) (४) प० मुनिश्री हेमचन्द्रजी म० (५) कविवर्य श्री अमरचन्द्रजी म० (६) प० मुनि श्री फूलचन्दजी म० (संयोजनादि कार्यक्रम) (७) प० मुनि श्री अमरचदजी म० (काव्यादि)

मारवाड के लिये :—(१) पू० श्री अमोलकऋषिजी म० (२) पू० श्री जवाहरलालजी म० (३) पं० मुनि श्री पन्नालालजी म० (४) पू० श्री हस्तीमलजी म० (५) (युवा० श्री गणेशीलालजी म० (६) पं० मुनि श्री आनंदऋषिजी म० (७) पं० मुनि श्री सूर्यमुनिजी म० (८) पं० मुनि श्री चौथमलजी म०

गुजरात काठियावाड के लिये:—(१) पं० मुनि श्री मोहनलालजी म० (प्रश्नोत्तर) (२) पं० मुनि श्री मणिलालजी म० (भूगोल खगोल) (३) पं० मुनि श्री मूलचंदजी म० (शास्त्रीय) (४) शता० पं० मुनि श्री रतनचन्द्रजी म० (निबंध, अध्यापन) (५) पं० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म० (निबंध, अध्यापन) (६) पं० मुनि श्री छोटेलालजी म० (लेखन) (७) पं० मुनि श्री हर्षचन्दजी म० (लेखन, अध्यापन)

कच्छ के लिये:—(१) पं० मुनि श्री नागचंदजी म० (२) पं० मुनि श्री देवचंदजी म०

प्रस्ताव १२—नये तैयार न हो वहां तक निम्नोक्त वक्ताओं में से दर्शन प्रचारक मंडल नियत किया जाता है।

प्र० व० पं० मुनि श्री चौथमलजी म० (मालवा) कविवर्य श्री नानचन्दजी म० (काठियावाड) पं० मुनि श्री पन्नालालजी म० (मारवाड) पं० मुनि श्री अजीतमलजी म० (पंजाब) युवाचार्य श्री काशीरामजी म० (पंजाब) पं० मुनि श्री मदनलालजी म० (पंजाब) पं० मुनि श्री प्रेमचन्दजी म० (पंजाब) पं० मुनि श्री नरदत्तरायजी म० (पंजाब) पं० मुनि श्री शुक्लचन्दजी म० (पंजाब) पं० मुनि श्री रामसरूपजी म० (पंजाब) पं० मुनि श्री मोहनऋषिजी म० (पंजाब) पं० मुनि श्री आणंदऋषिजी म० (पंजाब) पं० मुनि श्री कृष्णाचन्द्रजी म० (मालवा) पं० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म० (मालवा) पं० मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म० (मारवाड) पं० मुनि श्री छगनलालजी म० (मारवाड) पं० मुनि श्री मिश्रीलालजी म० (मारवाड)

प्रस्ताव १३—मुनिराजों तथा साध्वियों को प्रकाशन कार्य के साथ बिल्कुल संबंध नहीं रखना चाहिये क्योंकि यह कार्य कॉन्फरन्स की प्रकाशन-समिति के आधीन है। साधु-साध्वियों को क्रय-विक्रय के साथ भी किसी प्रकार का संबंध नहीं रखना चाहिये।

नोट—साहित्य परीक्षक साधु श्रावक समिति जिस पुस्तक को पास करे उस का प्रकाशन हो सकेगा निरुपयोगी साहित्य पर समिति का अंकुश रहेगा।

प्रस्ताव १४—साधु व साध्वियों के लिये अभ्यास का प्रबंध शाला रूप में होना चाहिये। इस योजना का अमल होने से पूर्व आर्याजी साध्वीजी या शिक्षित बहिन के पास से पढ़ें। यदि धर्मज्ञ पुरुष के पास अभ्यास करना पड़े तो दो बहिनो की साक्षी बिना अभ्यास नही करना।

प्रस्ताव १५—ज्ञान प्रचारक मंडल की योजनानुसार सिद्धान्त-शाला आदि संस्था आरंभ होने पर पृथक २ स्थानों पर पंडितों का रखना बंद कर देना।

प्रस्ताव १६—शास्त्रोद्धारक मंडल, व्याख्यातृवर्ग तथा विद्याध्ययन करने के लिये प्रविष्ट हुए मुनिराज परस्पर बारह संभोग खुला करें ऐसा तय किया जाता है।

प्रस्ताव १७—प्रत्येक सम्प्रदाय के आचार्य तथा कार्यवाहकों से यह सम्मेलन प्रार्थना करता है कि वे अपनी २ सम्प्रदाय में आर्याजी का भी सुव्यवस्थित संगठन करें और उनकी ज्ञानवृद्धि हो ऐसे उपाय करें।

प्रस्ताव १८—(प्रतिक्रमण संबंधी) (१) साधु-श्रावक प्रतिक्रमण, विधि, पाठशुद्धि-अशुद्धि, दीक्षाविधि और प्रत्याख्यानविधि का निर्णय करने के लिये निम्नोक्त मुनियों की एक समिति नियुक्त की जाती है जो बहुमति से जो निर्णय करेगी वह सब को मान्य होगा:—

(१) पूज्य श्री अमोलखऋषिजी म० (२) पूज्य श्री हस्तीमलजी म० (३) उपाध्याय श्री आत्मारामजी म० (४) पूज्य श्री छगनलालजी म० (५) पूज्य श्री सौभाग्यमलजी म० (६) पूज्य श्री शामजी स्वामी

(२) साधु-साध्वियों को मुनि प्रतिक्रमण देवसी, रायसी, पक्खी, चौमासी और सम्वत्सरी का एक ही प्रतिक्रमण करना, दो नहीं। और कायोत्सर्ग देवसी रायसी ४ लोगस्स, पक्खी को ८ चौमासिक १२ और सम्वत्सरी को २० लोगस्सका करना। इसी तरह श्रावक गण को भी करने बाबत यह सम्मेलन सूचित करता है।

प्रस्ताव १९—(प्रायश्चित विषयक)

प्रायश्चित-विधि का निर्णय करने के लिये यह सम्मेलन निम्नोक्त ३ मुनराजों को नियत करता है और वे छः मास के अन्दर जो निर्णय देंगे वह सब को मान्य होगा:—

(१) पूज्य श्री मुन्नालालजी म० (२) पूज्य श्री अमोलकऋषिजी म० (३) पं० मुनि श्री मणीलालजी म०

प्रस्ताव २०—(आगमोद्धार विषयक)

आगम साहित्य का संशोधन करने के लिये और पाठकों को सरलता से सूत्रज्ञान हो ऐसे आगमों के संस्करण तैयार कराने के लिये निम्न लिखित मुनिराजो की एक आगमोद्धारक समिति कायम की जाती है।

(१) गणी श्री उदयचंद्रजी म० (२) शता० पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० (३) पं० मुनि श्री मणिलालजी म० (४) पूज्य श्री अमोलखऋषिजी म० (५) पूज्य श्री आत्मारामजी म० (६) युवा० श्री काशीरामजी म० (७) पं मुनि श्री अमरचंद्रजी म० (८) पूज्य श्री हस्तीमलजी म० (९) शता० पं० श्री सौभाग्यचन्द्रजी म० (१०) पं० मुनि श्री मोहनलालजी म० (११) पं० मुनि श्री घासीलालजी म० (१२) पं० मुनि श्री प्यारचंदजी म० (१३) पूज्य श्री हेमचंदजी म० (१४) पं० मुनि श्री सूरजमलजी म०

इस समिति के सदस्य मुनिराज चातुर्मास में यथा संभव प्रयत्न करेंगे और चातुर्मास के बाद एक स्थान पर सभी सदस्य एकत्रित होकर साथ रहने का स्थान निश्चित कर उपरोक्त आगमोद्धार का कार्य करेंगे।

प्रस्ताव २१—पक्खी-सम्वत्सरी विषयक

यह साधु सम्मेलन, पक्खी, चौमासी, सम्वत्सरी आदि तिथि-पर्व का निर्णय करने के लिए कॉन्फरन्स ऑफिस को सत्ता देता है कि ऑफिस निष्पक्षपात एवं लौकिक तथा लोकोत्तर ज्योतिषशास्त्रज्ञ विद्वान मुनियों और श्रावकों का, लौकागच्छीय विद्वान और अन्य विद्वानो की सलाह लेकर लौकिक व लोकोत्तर मार्ग का अविरोधी मध्यम श्रेणी का मार्ग अनुसरण करके पक्खी, चौमासी सम्वत्सरी आदि पर्वों का सर्वदा के लिए निर्णय करें। जिसके अनुसार हम सब चलें और उस निर्णय के विरुद्ध कोई पर्व नहीं करे।

नोट :—नं० (१) यह निर्णय कॉन्फरन्स की छपी हुई पंचवर्षीय टीप के पूरी होने से पहले ही हो जाना चाहिये।

नोट नं (२) पंजाब मे पूज्य श्री सोहनलाल जी महाराज साहब की सम्प्रदाय तथा गुजरात, काठियावाड़ और कच्छ की सम्प्रदाय वाले मुनि एवं पर्व और सभी तिथियां कॉन्फरन्स की टीप के अनुसार करें। पक्खी-चौमासी सम्वत्सरी तो सब सम्प्रदाय वाले एक ही करेंगे।

प्रस्ताव २२—(सचित्ताचित्त विषयक)

सचित्ताचित्त निर्णय के लिये:—(१) शतावधानी पं० मुनि श्री रतनचन्द्रजी म० (२) उपाध्याय श्री आत्मारामजी म० और (३) सलाहकार पू० श्री जवाहरलालजी म०, इन तीन मुनियों की समिति नियत की गई थी। उनका निर्णय इस प्रकार रहा:—

(१) केले के विषय में वृहत्कल्प-सूत्र मे 'तालपलंब' शब्द है, उसमें ताल शब्द से ताड-फल लिया जाता है और पलंब शब्द से भाष्यकार ने तो उपयोगी फल मात्र लिया है। परन्तु टीकाकारने कदली फल स्पष्ट रूप से लिखा है। ताल शब्द से तो कदली फल नहीं लिया जा सकता, परन्तु पलंब शब्द से कदली फल लिया जा सकता है।

एक अनुभवी माली कदली फल के लिये लिखता है कि 'हजारों केले के वृक्षों मे एक आध ही बीजवाला केला मिलता है, जिसमे बैंगन के समान बीजों का गुच्छा होता है और सूखने के बाद वे ऊग सकते हैं। ऐसे बीजवाले केले बहुत ही मोटे होते हैं।

इस अनुभवी के शब्दों से सामान्य केले की जाति तो उचित ही माननी चाहिये। कोई विलक्षण केला बीजवाला हो तो वह सचित्त है, किन्तु सामान्य केले तो अचित्त ही मानने में आते है। किसी केले में काली झांई दिखाई दे तो उसका निर्णय माली के पास से कर लेना चाहिये।

(२) धान्य सचित्त है या अचित्त ? इसका निर्णय करने के लिये प० मुनि श्री कुन्दनलालजी म० ने निम्नोक्त प्रस्ताव रखा:—

(अ) तीन प्रकार की योनियां श्री पन्नवणाजी के नव मे पद में जीव सचित्त, अचित्त और मिश्र, बताई हैं। इन तीनों मे जीव पैदा हो सकता है या नहीं ?

(ब) धान्यादि मे जो २४ प्रकार का अनाज बताया गया है, जिसका आयुष्य तीन से सात वर्ष का सूत्र मे बताया हैं; इस अवधि के बाद उसको सचित्त समझना या अचित्त ?

(क) पांच स्थावर में एक जीव रहता है या नहीं, यदि एक ही जीव रहता हो तो उसकी आहार विधि क्या है ?

नोट—इन प्रश्नों का बहुमत से जो निर्णय होगा वह मुझे मान्य होगा। यह प्रस्ताव सभा मे पास होने के बाद इसका निर्णय करने के लिये निम्नोक्त १० मुनिराजों की समिति बनाई गई थी:—

(१) पू० श्री अमेलकऋषिजी म० (२) पू० श्री छगनलालजी म० (३) पू० श्री हस्तीमलजी म० (४) युवा० श्री काशीरामजी म० (५) युवा० श्री नागचदजी म० (६) पं० मुनि श्री मणीलालजी म० (७) पं० मुनि श्री शामजी स्वामी (८) पं० मुनि श्री ननचदजी म० (९) पं० मुनि श्री समर्थमलजी म० (१०) सलाहकार पूज्य श्री जवाहरलालजी म०। इन मुनियों की समिति ने बहुमति से जो निर्णय दिया वह इस प्रकार है:—

(अ) सचित्त, अचित्त और मिश्र तीनों योनियों से जीव पैदा हो सकते हैं।

(ब) चौवीस-प्रकार के धान्य शास्त्रीय प्रमाण से ७ वर्ष की अवधि पूर्ण हुए पश्चात् अबीज हो सकते हैं तथा योनियों का नाश हो जाता है। इससे अबीज और अयोनी धान्य अचित्त होना संभव है।

शास्त्र मे 'बीजाणि हरियाणीव परिवज्जंतो चिट्ठेज्जा' इत्यादि पर बीजों का ससर्ग सूत्रकार ने निषेध किया है। अबीज का निषेध नही है और ठाणांग आदि मे सात वर्ष की अवधि बाद बीज को अबीज होना कहा है। इससे अबीज को अचित्त मानना यह आगम प्रमाण से सिद्ध है। परन्तु लौकिक व्यवहार के लिये ससर्ग नहीं करना और उसे टालना यही उचित है।

चार स्थावर से भिन्न वनस्पति का निरूपण शास्त्र मे मिलता है—जैसे ठाणांग सूत्र में सात वर्ष तक बीज को सचित्त होना। अतएव प्रत्येक बीज मे एक बीज का होना आगम प्रमाण से सिद्ध होता है। वनस्पति के आहारक विधान अनेक तरह है अतः निश्चय ज्ञानी गम्य है।

(३) सचित्ताचित-निर्णायक-समिति यह सूचित करती है कि अनेक फलों तथा वस्तुओं का सचित्ताचित निर्णय करना आवश्यक है। जैसे—

(१) ऋतु पक्व फल (बीज रहित) (२) केला (३) संतरा (४) पिस्ता (५) किशमिश (६) अंगूर (७) नारंगी (८) बादामगिरी (९) कालीमिर्च (१०) खरबूजा (११) सरदा (१२) इलायची (१३) सफेद मिर्च (१४) तरबूज (१५) द्राक्ष (१६) बड़ीहरड़ (१७) सेंधानमक (१८) सेव (१९) पीपल (२०) अनारदाना शक्कर के संयोग

से अचित्त होते हैं या नहीं ? (२१) बर्फ, जो मशीन से बनाया जाता है सचित्त है या अचित्त ? (२२) बैटरी की बिजली सचित्त है या अचित्त ?

उपरोक्त निर्णय किसी अनुभवी द्वारा कॉन्फरन्स-ऑफिस करवा ले, क्योंकि यह कार्य प्रयोग रूप में मुनियों से नहीं हो सकता है।

प्रस्ताव २५—(आक्षेप निराकरण के विषय में)

यू० पी० प्रांत से आई हुई दरख्वास्त पर विचार विनिमय करके यह सम्मेलन प्रकट करता है कि कॉन्फरन्स स्वयं अपनी तरफ से 'आक्षेप निवारिणी समिति' मुकर्रर करे जिसके द्वारा समाज पर होने वाले आक्षेपों का निराकरण किया जा सके। इस समिति को साहित्यादि संबंधी आवश्यकता प्रतीत हो तो मुनि-मंडल से भी सहायता मिल सकेगी।

प्रस्ताव २६—(समाचारी के विषय में)

(१) शय्यातर की आज्ञा लेने के बाद वापिस संभलाने तक उसके घर का आहार-पानी त्याग करना।

(२) मकान मालिक को या पहले से ही मकान जिसके सुपुर्द हो, उसको, यदि पंचायती हो तो पंचों में से एक व्यक्ति को शय्यांतर गिनना।

(३) साधु-साध्वी बाहर गांव से दर्शनार्थ आये हुए गृहस्थियों से निर्दोष आहार ले सकते हैं। इसमें दिनों की मर्यादा की आवश्यकता नहीं है।

(४) अपने साथ विहार में चलने वाले गृहस्थ से आहार-पानी लेना नहीं, कोई गृहस्थ अकस्मात आजाय तो उसकी बात अलग है।

(५) साधु-साध्वियों को रेशम, वायल, अरंडी और बारीक वस्त्र उपयोग में देना नहीं, जहां तक मिल सके खादी अथवा स्वदेशी वस्त्रों का ही उपयोग करना।

(६) साधु साध्वी अपनी उपाधि गृहस्थ से उठवायें नहीं तथा उसकी नेश्राय में रखें नहीं।

(७) शास्त्रानुसार तेले के तप तक धोवण काम में लेना इसके उपरांत तपश्चर्या में धोवण पीवें तो वह अवशन तप नहीं गिना जाय।

(८) साधु-साध्वी अपने दर्शन करने के लिये आने का व इसी प्रकार का अन्य उपदेश देकर गृहस्थों को नियम करावे नहीं।

(९) नई समकित देते समय हर एक (स्थानकवासी) पंच महाव्रतधारी को गुरु मानना, ऐसा बोध कराना।

(१०) मुनि महात्मा अपने उपदेश में प्रत्येक श्रावक को यही फरमावें कि 'पंचमहाव्रतधारी' इस सम्मेलन के नियमानुसार चलने वाले प्रत्येक साधु-साध्वी का सत्कार करना, किसी प्रकार का रागद्वेष युक्त साम्प्रदायिक भेदभाव रखना नहीं।

(११) जो मकान श्रावकों के धर्म-ध्यान निमित्त से बना हो, उसका नाम लोक व्यवहार में भले कुछ भी हो, ऐसे निर्दोष स्थान का निर्णय करके साधु-साध्वीजी वहां उतर सकते हैं। उतरने वाले और नहीं उतरने वाले परस्पर टीका टिप्पणी नहीं करें।

(१२) लोक व्यवहार में जिस सम्प्रदाय का आचार-व्यवहार शुद्ध है, उसके साथ प्रत्येक सम्प्रदायवाले परस्पर प्रेम सत्कारादि वात्सल्य भाव रखें तथा एक साथ ही व्याख्यान बांचे।

(१३) स्व साम्प्रदायिक या अन्य साम्प्रदायिक मुनि की लघुता बताने के भाव से उस सम्प्रदाय के आचार्य या कार्य वाहक को सूचित किये बिना अन्य साधु या गृहस्थ के समक्ष उसके दोष प्रकट करना नहीं।

(१४) स्थानकवासी साधु-सामाज में किसी सम्प्रदाय या किसी व्यक्ति के विरुद्ध किसी प्रकार का हेंडबिल या खबर छपाना नहीं।

(१५) गुम नाम वाले पत्रों व हेंडबिलों पर लक्ष्य देना नहीं।

(१६) कम से कम मुनि २ और साध्वीजी ३ की संख्या में विचरें। अधिक से अधिक आचार्य, ठाणापति, स्थविर रुग्ण और विद्यार्थी के अतिरिक्त पांच से अधिक विचरें नहीं और साथ में भी नहीं रहें। आचार्य देश काल को देख कर जहां तक हो सके कम से कम मुनि पास में रखे।

(१७) आचार्य अथवा कार्यवाहक-आचारांग व निशीथ सूत्र के तथा देश काल के जानकार प्रौढ़ साधु को ही संघाडे का मुखिया बनावे, वैयावच्चादि कारण तो सामान्यतया सब के लिये खुले है।

(१८) सभी मुनिराजों व आर्यिकाओं को सुखे-समाधे सब प्रान्तों में विचरना चाहिये। छोटे २ गांवों का भी वीरवाणी से सिंचन होता रहे ऐसा प्रबन्ध होना चाहिये।

(१९) प्रत्येक सम्प्रदाय के सर्व साधु-साध्वी दो या तीन वर्ष मे एक बार अपने आचार्य श्री व कार्य-वाहक की उपस्थिति मे सम्मिलित हों और अपनी सम्प्रदाय की भावी उन्नति की विचारणा करें। तथा साधु समाचारी के नियमों को दृढ़ करें। जो आज्ञा से दूर-देशावर मे विचरते हों और न मिल सके तो उनकी बात अलग है।

(२०) सभी सम्प्रदायों की श्रद्धा व प्ररूपणा एक ही रहनी चाहिये।

(२१) व्याख्यान समय के अतिरिक्त साधुजी के मकान में स्त्रियों को और साध्वीजी के मकान में पुरुषों को जाना या बैठना नहीं। यदि जाना या बैठना पड़े तो साधुजी के स्थान पर में समझदार पुरुष और साध्वीजी के स्थान पर समझदार स्त्री की सम्मति बिना बैठना नहीं।

(२२) साधुजी, साध्वीजी के मकान पर या साध्वीजी, साधुजी के मकान पर बिना कारण जावें या बैठे नहीं। यदि आवश्यकता हो, तो गृहस्थ पुरुष और स्त्री की साक्षी बिना बैठे नहीं।

(२३) गोचरी, पानी, औषधादि कारण बिना असमय मे गृहस्थ के घर में एकाएक साधु या साध्वीजी जावें नही और अपने स्थान से बाहर जाना हो तो बड़ों की आज्ञा लेकर के ही जावें।

(२४) साधु साध्वियों को अपना फोटू खिंचवाना नहीं। किसी साधु साध्वी के पगले, छतरी, चबूतरा या पादपूजा होती हो तो स्पष्ट उपदेश देकर उस आरंभ को रोकना, स्थानक में या अपने पास साधु साध्वी फोटू रखे नहीं।

(२५) धातु की कोई भी चीज अपने पास या अपने नेश्राय में साधु-साध्वी रखें नहीं।

(२६) गृहस्थों को अपने हाथ से पत्र लिखना नहीं, प्रश्नोत्तर व चर्चा की बात अलग है।

(२७) टिकिट वाले कार्ड लिफाफे साधु-साध्वी अपने पास या अपनी नेश्राय मे रखें नहीं।

(२८) हिंदी पेन पाडिहारी लेकर के भी साधु साध्वी अपने उपयोग में लावें नहीं।

(२९) चूर्ण आदि किसी भी प्रकार की औषधि साधु-साध्वी अपने पास या अपने नेश्राय में रखे नही।

(३०) प्रत्येक साधु साध्वी को चारों (काल) समय स्वाध्याय करना चहिये। चारों समय का स्वाध्याय कम से कम १०० गाथा का तो होना ही चाहिये। जिसको शास्त्र का ज्ञान न हो वह भले ही नवकार मंत्र का जाप करें।

(३१) प्रतिदिन साधु-साध्वी को प्रातः काल प्रार्थना करनी चाहिये। प्रार्थना मे 'लोगस्स या नमोत्थुणं स्तुति में कहना चाहिए।

(३२) यह साधु सम्मेलन प्रकट करता है कि अधिक से अधिक ११ वर्षों में प्रत्येक प्रांत के मुनिराजों का सम्मेलन हो और भिन्न २ प्रदेश मे विचरती हुई साध्वियों का भी प्रांतिक सम्मेलन भरना।

(३३) सम्प्रदाय में यदि कोई नया परिवर्तन करना चाहें तो उसके आचार्य अथवा कार्यवाहक कर सकते है, परन्तु उनको मुख्य मुनियों की सलाह ले लेनी चाहिये और अन्य मुनिराज यदि कोई परिवर्तन करना चाहें तो आचार्य अथवा कार्यवाहक और मुख्य मुनिराजों की सम्मति बिना नही कर सकते है।

प्रस्ताव २७—(जयंती दिवस के विषय मे)

इस साधु सम्मेलन जैसे अपूर्व अवसर की सर्वदा स्मृति बनाये रखने के लिये समाज स्थानकवासी जैनों को चैत्र शुक्ला१० का दिवस 'स्था० साधु-सम्मेलन जयती' के रूप मे मनाते रहना चाहिये। उस दिन सम्मेलन निर्धारित नियमों का पालन करते रहने की घोषणा करके समाज की जागृत रखे। ऐसी इस सम्मेलन को शुभ भावना है। शेष प्रस्ताव धन्यवादात्मक थे।

सचित्ताचित्त निर्णय

अजमेर साधु-सम्मेलन के प्रस्ताव २२ के अनुसार सचित्ताचित्त विषय मे जो निर्णय कॉन्फरन्स ने दिया वह इस प्रकार है। यह निर्णय कॉन्फरन्स निर्वाचित समिति द्वारा ता०१०-११-३३ को जयपुर मे दिया था। समिति की मीटिंग मे जो भाई उपस्थित हुए थे उनके नाम इस प्रकार है:—

(१) प्रमुख श्री हेमचदभाई रामजीभाई मेहता (२) श्री दुर्लभजीभाई त्रिभुवन जौहरी (३) श्री केशरीमलजी चौरडिया (४) श्री सौभागमलजी मेहता, जावरा (५) ला० श्री टेकचदजी भडियालागुरु (सलाहकार) (६) श्री हरजसरामजी जैन अमृतसर (७) श्री उमरशीभाई कानजी, देशलपुर।

प्रस्ताव २—सचित्त, अचित्त निर्णय के विषय मे कितने ही निर्णय प्रख्यात माली और खेतीवाडी के निष्णातों के अभिप्राय मगाने मे आये थे। वे अभिप्राय तथा इस सबध मे श्री साधु-सम्मेलन मे हुए ऊहापह की हकीकत 'सब कमेटी' के समस्त पढ़कर सुनाई गई थी। इस विषय मे काफी विचार विमर्श होने के बाद यह सब कमेटी प्रस्ताव करती है कि:—

प्रस्ताव ३—(क) सचित्त, अचित्त का निर्णय करने का काम बहुत मुश्किल होने से विद्वानों Scientist के अभिप्राय प्राप्त करने का काम कॉन्फरन्स चालू रखेगी परन्तु अभी तक जो अभिप्राय मिला है उसे ध्यान में रखकर नीचे की पेटा कलम (ख) के अनुसार निर्णय किया जाता है। इसके बाद जो विद्वानों के परिवर्तन मिलेगें उनके अनुसार वर्तमान निर्णयों मे परिवर्तन या सुधार करने की आवश्यकता प्रतीत हुई तो 'सब कमेटी परिवर्तन या सुधार जाहिर करदेगी।

(ख) निम्नोक्त वस्तुएं सचित्त या अचित्त हैं, यह बात भारत के समस्त स्थानकवासी चतुर्विध श्री संघ की जानकारी के लिये प्रसिद्ध की जाती है:—

१. ऋतु पक्वफल-(बीज सहित) यह किन फलों को लक्ष्य में लेकर लिखा गया है, यह जाने बिना अभि-प्राय प्राप्त किया नहीं जा सकता।

२. केला—पकी हुई लाल छाल वाला हरी छाल वाला और सुनहरी केले का गर्भ अचित्त है। इसलि छाल उतरा हुआ सूझता केला अचित्त मानना चाहिये। बीज वाले बड़े केले की विशेष जाति होती है उसमे सचि बीज होना संभव है।

३. संतरा-नारंगी—बिना बीज का ताजा रस और बिल्कुल निर्बीज फांकों को अचित्त मानना

४. पिश्ता-बादाम—पिश्ता की पूरी गिरी और बादाम की पूरी गिरी सचित्त मालूम होती है। टूटी फू गिरी अचित्त है।

किशमिश-बिना डंठल की निर्बीज छोटी किशमिश अचित्त है।

अंगूर निर्बीज बनाना अशक्य है इसलिये सचित्त मानना चाहिये।

कालीमिर्च, लौंग, सफेद मिर्च, पीपल-बाजार में आने से पहिले उबाल ली जाती है अतः अचित्त है।

खरबूजा, सरदा—बिल्कुल बीज रहित और छाल रहित सूझता मिले तो अचित्त गिना जा सकता है

तरबूज-इसका बिल्कुल निर्बीज होना अशक्य है अतः सचित्त गिनना।

इलायची-उबालने के बाद ही यह बेची जाती है, फिर भी कभी २ इसमें जीव पड़ जाते हैं अतः पू इलायची अकल्पनीय है।

बड़ी हरड़—पूरी सचित है। सेंधा नमक—खाने का हो तो सचित्त और पकाया हुआ हो तो सचित्त

सेव, नासपाती—पूरा हो तो सचित्त, बीज और छाल-रहित टुकडे अचित्त कहे जा सकते है

अनार—इसके दाने शक्कर के साथ मिले हो तब भी सचित्त है।

बर्फ—सचित्त है। मशीन से बाहर निकली हुई आईसक्रीम अचित्त है।

बिजली—यह हिंसा का शस्त्र है इसलिये मुनि को कल्पनीय नहीं है।

(१) सब कमेटी ने अपने इस निर्णय मे जिन चीजों को अचित्त जाहिर किया है, वे चीजें जो मुनिरा उपयोग में लें उनकी निंदा किसी दूसरे मुनिराजों को न करना चाहिये।

(२) जिन चीजों को सचित्त माना है उनका उपयोग किसी भी मुनिराज को कल्पनीय नहीं है।

प्रस्तावक—रा० सा० टेकचंद जी, अनु० दुर्लभजी भाई जौहरी, सौभागमलजी महेता

श्री अखिल भारतवर्षीय जैन वीर संघ

अजमेर साधु-सम्मेलन में संगठन की ओर ठोस कार्यवाही करने के लिये एक साधु- समिति की स्थापन की गई थी। उसकी बैठक ता०-१२-५-४० वैशाख शुक्ला ५ को घाटकोपर (बम्बई) में हुई थी। जिसमें वयोवृ प्रवर्तक श्री ताराचंदजी म० शतावधानी श्री रतनचन्द्रजी म० तथा पंजाब केसरी पूज्य श्री काशीरामजी म० दी विहार कर उपस्थित हुए थे। घाटकोपर संघ ने सभी सम्प्रदायों के मुख्य २ मुनिवरों की सेवा में आमंत्रण भे थे। परन्तु दूरी की वजह से कोई मुनिराज पधार न सके थे, लेकिन अपनी सहानुभूति का सन्देश भिजवा दिया गया।

उपस्थित मुनिराजों ने दीर्घदृष्टि से विचार करते हुए समस्त स्थानकवासी जैन साधुओं को एक सू में ग्रथित होने की आवश्यकता स्वीकार की और इसके लिये एक योजना भी तैयार की जब तक कि इन विभि सम्प्रदायों को मिटा कर एक नहीं कर दिया जायगा और समचारी एक न बना दी जायगी तब तक संगठ

की ओर और संघ ऐक्य की ओर ठोस प्रगति नहीं हो सकेगी। तदनुसार उपस्थित मुनिराजों ने जैन वीर-संघ की एक योजना तैयार की थी, जो संगठन की दिशा मे दूसरा महान प्रयत्न भी इस योजना का सर्वत्र स्वागत ही किया गया था। परन्तु समय परिपक्व न होने से उसका अमल न हो सका। परन्तु विचारों मे यह योजना घर कर गई फलतः कॉन्फरन्स की ज० क० ता०—२१—२२ दिसम्बर ४८ का ब्यावर गुरुकुल की तपोमय भूमि में संघ ऐक्य योजना का प्रस्ताव किया गया।

संघ-ऐक्य की तात्कालिक योजना

ता० २१-२२ दिसम्बर ४८ को ब्यावर में कॉन्फरन्स की जनरल मीटिंग गुरुकुल की तपोभूमि में हुई। इस जनरल-कमेटी मे सम्पूर्ण समाज के कई आगेवान व्यक्ति उपस्थित हुए थे। प्रमुख थे श्रीमान् कुंदनमलजी फिरोदिया। अजमेर और घाटकोपर की विचारधारा मन ही मन चल रही थी। संगठन की जो ज्योति इस दोनों स्थानों पर प्रज्वलित हो चुकी थी वह अखंडरूप में जल रही थी अतः इस जनरल कमेटी मे उस विचारधारा ने काफी जोर पकड़ा और संघ-ऐक्य के बारे मे जोश पूर्ण भाषण हुए। अन्त में वही संघ-ऐक्य को मूर्तरूप देने के लिये संघ-ऐक्य योजना भी तैयार की गई और उसकी स्वीकृति के लिये वहीं से मुनिराजों की सेवा मे डेप्युटेशन भी रवाना हुआ।

संघ ऐक्य का स्वीकृति पत्र, जिस पर कि मुनिराजों की स्वीकृति ली गई, इस प्रकार था:—

साम्प्रदायिक मतभेद और महत्व के कारण स्था० जैन समाज छिन्न-भिन्न हो रहा है। साधु साधुओं में और श्रावक श्रावकों मे मतभेद बढ़े है और बढ़ते जा रहे हैं। समाज-कल्याण के लिये ऐसी परिस्थिति का अन्त लाकर ऐक्य और संगठन करना आवश्यक है। साधु और श्रावक दोनों के सहकार और शुभ भावना द्वारा ही यह सफल होगा अतः साधु-साध्वी और कॉन्फरन्स को मिल कर इस कार्य मे लगना चाहिये।

इस कार्य के लिये तात्कालिक कुछ नियम ऐसे होने चाहिए कि जिसमे ऐक्य का वातावरण उत्पन्न हो और साथ २ एक ऐसी योजना करनी चाहिए कि संगठन स्थायी और चिरंजीवी बने।

उक्त उद्देश्य से निम्न बातें तुरन्त ही कार्य रूप में रखने का हमारा निर्णय है।

(१) एक गांव मे एक चातुर्मास हो। (२) एक गांव मे एक ही व्याख्यान हो। (३) सब साधु-श्रावक कॉन्फरन्स की टीप के अनुसार एक सम्वत्सरी करें। (४) सब साधु-साध्वी अजमेर साधु सम्मेलन के प्रस्ताव अनुसार एक प्रतिक्रमण करें। (५) किसी सम्प्रदाय के संबंध में निन्दात्मक सम्मेलन न होना चाहिये। (६) साम्प्रदायिक मंडल या समितियाँ मिटा दी जायं। (७) कोई साधु साध्वी अपनी सम्प्रदाय छोड़कर अन्य सम्प्रदाय में जाना चाहे तो इनके पूज्य-प्रवर्तक या गुरु की स्वीकृति बिना नहीं लिया जाय।

स्थायी योजना के रूप में एक समाचारी और एक ही आचार्य के नीचे एक श्रमण संघ और एक श्रावक-संघ बनाया जाय। एकता और संगठन का यही एक मात्र उपाय है।

उपरोक्त तात्कालिक बातें कार्य रूप मे लाते कोई मतभेद हो तो श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया जो निर्णय देवें वह हमको मंजूर होगा।

एक समाचारी एवं श्रमण संघ और एक श्रावक-संघ के संबंध में अजमेर अधिवेशन (साधु-सम्मेलन) की समाचारी तथा मुनि-समिति की तरफ से घाटकोपर मे जो वीर-संघ की योजना हुई थी, उसको लक्ष्य में रख

कर कॉन्फरन्स ऑफिस एक समाचारी, एक श्रमण संघ और एक श्रावक-संघ की योजना तैयार करे तथा हमको अभिप्राय के लिये भेजे। इस संबध मे मिली हुई सूचनाओं पर पूरा विचार विनिमय द्वारा श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया जो अन्तिम योजना और बंधारण तैयार करेगें वह हमको मजूर होगा।

तात्कालिक कार्यक्रम में रखने योग्य बातों की प्रमुखता अधिक है। अतः इन्हें कार्यान्वित करने के लिये सब साधु और श्रावक प्रमाणिकता से पूर्ण सहकार देगें ऐसी हमारी आशा और विनती है।

जो-जो सम्प्रदायें यह कार्यक्रम स्वीकार करें वे श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया निश्चित करें, तब कार्यान्वित करने को तैयार हैं।

इस योजना पर लगभग सभी सम्प्रदायों के मुनिराजों की स्वीकृति प्राप्त हुई। इसका अमल सन् ४६ की महावीर जयंती (सं० २४७५ चैत्र शुक्ला १३) से शुरु हुआ। कॉन्फरन्स के मद्रास-अधिवेशन में संघ ऐक्य योजना सर्वानुमति से पास हुई। दो वर्ष मे साधु-सम्मेलन और बीच २ मे प्रान्तीय-साधु सम्मेलन और साम्प्रदायिक संगठन करने के लिए 'साधु-सम्मेलन नियोजक समिति' की भी स्थापना की गई, जिसके मंत्री श्री धीरजलाल के० तुरखिया नियुक्त किये गये। राजस्थान की १७ सम्प्रदायों का सम्मेलन व्यावर मे हुआ, जिसमे ६ सम्प्रदायों का प्रतिनिधित्व था। कॉन्फरन्स द्वारा प्रकाशित वीर-संघ की योजना व समाचारी का इन्होंने संशोधन किया। ६ सम्प्रदायों मे पूज्य श्री आनन्दऋषिजी की सम्प्रदाय, पूज्य श्री सहस्त्रमलजी की सम्प्रदाय, पूज्य श्री धर्मदासजी म० का मालवा सं०, पूज्य श्री शीतलदासजी म० की सं० और कोटा सं० (स्थ० मुनि श्री रामकुमारजी आदि) में से ५ सम्प्रदायों ने अपनी सम्प्रदायो के नाम और पदवियों का मोह त्याग कर 'वीर वर्धमान श्रमण-संघ' स्थापित किया। पूज्य श्री आनन्दऋषिजी म० को अपना आचार्य चुना और वृहत् साधु सम्मेलन तक 'संघ-ऐक्य' का आदर्श खड़ा किया।

इसके बाद गुलाबपुरा मे ४ बड़े मुनिराजों का स्नेह-सम्मेलन हुआ। लींबडी, गोंडल, खीचन आदि में भी साम्प्रदायिक-सम्मेलन होते रहे। पंजाब प्रान्तीय सम्मेलन लुधियाना मे गुजरात प्रान्तीय सम्मेलन सुरेन्द्रनगर (सौराष्ट्र) मे हुए। इसके बाद सं० २००६ मे वैशाख शुक्ला ३ को सादड़ी (मारवाड़) मे वृहत् साधु-सम्मेलन हुआ और उसमे संघ-ऐक्य योजना को मूर्त स्वरूप देकर एक आचार्य की नियुक्ति की गई। सभी सन्तों ने अपनी २ सम्प्रदाय और पदवियों का मोह छोड़ कर एक ही समाचारी मे आबद्ध होना स्वीकार कर संघप्रियता का एक ऐतिहासिक आदर्श उपस्थित किया। इस वृहत्-साधु-सम्मेलन की कार्यवाही आगे दी जा रही है।

श्री वृहत्साधु-सम्मेलन सादड़ी का संक्षिप्त-विवरण

प्रारंभ ता० २७—४—५२ समाप्ति ता० ७—५—५२

मिति वैशाख शुक्ला ३ मिति वैसाख शुक्ला १२

वृहत्साधु-सम्मेलन सं० २००६ में वैशाख शुक्ला ३ (अक्षय तृतीया) को सादड़ी (मारवाड़) में आरम्भ हुआ। संगठन की भावना समाज में तीव्र रूप में व्याप्त हो चुकी थी अतः सर्वत्र सम्मेलन के प्रति जागृति पैदा हो रही थी। सम्मेलन के समय दर्शनार्थ जाने के लिए सभी भाई-बहिन अपने २ प्रोग्राम नियत कर रहे थे। और जो कार्यवश पहुँच न पा रहे थे वे मन ही मन खिन्न भी हो रहे थे। जब यह सम्मेलन भरने का तय हुआ, तब समय कम था, और मुनिराज सम्मेलन स्थान

से काफी दूर-दूर थे, लेकिन संघ-ऐक्य की जो प्रबल भावना उनके हृदय में लहरें मार रही थी, उसके समक्ष यह दूरी भी नगण्य थी। हमारे कष्टसहिष्णु मुनिवर अपने स्वास्थ्य की परवाह किये बिना ही और भीषण गर्मी में भी उग्रतम विहार द्वारा अपने लक्ष्य-स्थान की ओर बढ़ते चले जा रहे थे। वे सब यथा समय पैदल यात्रा द्वारा अपने स्थान पर पधार गये थे। सम्मेलन में पधारने वाले सन्त जहां २ भिन्न २ सम्प्रदायों के साथ मिलते थे तो परस्पर में बड़ी उदारता और सहृदयता प्रकट करते थे। संगठन की वह हवा ही ऐसी व्याप्त हो चली थी कि उसमें पूर्वका द्वेष-भाव उड़ गया था और सर्वत्र प्रेम का आनंददायक वातावरण फैल गया था। सम्मेलन में २२ सम्प्रदायों के प्रतिनिधि उपस्थित हुए थे और सभी ने प्रेम पूर्वक सम्मेलन की कार्यवाही में भाग लेकर उसे यशस्वी बनाया। इस सम्मेलन की कार्यवाही व्यवस्थित रूप से और शांति से चलती थी, जिसे देखकर बम्बई धारा सभा के स्पीकर मान्यवर श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया ने कहा था कि सम्मेलन में, शांति विवेक और शिष्टता पूर्ण जो कार्य हो रहा है, वह धारा सभा से भी अच्छा हो रहा है। यह सम्मेलन ११ दिन तक चला था। लगभग ३५००० भाई बहिन दूर दूर गावों से दर्शनार्थ आये थे। सम्मेलन के व्यवस्थापकों की सुव्यवस्था से सभी लोगों को बड़ा आराम रहा और गर्मी की ऋतु में भी पानी आदि का बड़ा आराम रहा। क्षेत्र की दृष्टि से व्यवस्था के लिये जो-जो साधन जुटाये गये थे निस्संदेह वे उल्लेखनीय थे। सभी प्रतिनिधि मुनिराज लोंकाशाह जैन गुरुकुल के नवीन भव्य-भवन में ठहरे हुए थे और वहीं उसके विशाल हॉल में उनकी मीटिंगें हुआ करती थीं। गुरुकुल-भवन के आस-पास लौंकाशाह नगर बसाया गया था, विशाल तम्बू लगाये गये थे जो दूर से बड़े आकर्षक लगते थे। सादड़ी का यह सम्मेलन निस्संदेह बड़ा सफल सम्मेलन था, जिसकी चर्चा उसके आस-पास तक कई दिनों तक चलती रही। आने-जाने वाले दर्शनार्थी जहां भी पहुंचते सामने वाला यही पूछ बैठता—क्या सादड़ी से आ रहे हो? श्वेतांबर, दिगम्बर और तेरापंथी अखबारों ने भी सम्मेलन की सफल कार्यवाही की भूरी २ प्रशंसा की।

इस सम्मेलन में सभी सम्प्रदायों का विलीनीकरण होकर एवं 'श्री व० स्था० जैन श्रमण-संघ, की स्थापना हुई और एक आचार्य के नेतृत्व में एक ही समाचारी का निर्माण हुआ। जिसकी संक्षिप्त कार्यवाही इस प्रकार है:—

सम्मेलन में पधारे हुए प्रतिनिधि मुनिराजः—

(१) पूज्य श्री आत्मारामजी म० की सम्प्रदाय। मुनि ८८ आर्या ८१ प्रतिनिधि ४-(१) उपाध्याय श्री प्रेमचंदजी म० (२) युवा० श्री शुक्लचंदजी म० (३) व्या० वा० श्री मदनलालजी म० (४) वक्ता प० मुनि श्री विमलचंदजी म०।

(२) पूज्य श्री गणेशीलालजी म० की सम्प्रदाय। मुनि ३४ तथा आज्ञानुसारिणी रंगूजी, मेताजी, खेताजी की आर्या ७१।

प्रतिनिधि ५—(१) पूज्य श्री गणेशीलालजी म० (२) पं० मुनि श्रीमलजी म० (३) पं० मुनि श्री नानालालजी म० (४) पं० मुनि श्री सुमेरचन्दजी म० (५) पं० मुनि श्री आईदानजी म०।

(३) पूज्य श्री आनंदऋषिजी म० की सम्प्रदाय। मुनि १६ तथा आर्या ८५।

प्रतिनिधि ५—(१) पूज्य श्री आनंदऋषिजी म० (२) पं० मुनि श्री उत्तमऋषिजी म० (३) कवि श्री हरिऋषिजी म० (४) पं० मुनि श्री मोतीऋषिजी म० (५) पं० मुनि श्री भानुऋषिजी म०।

[४] पूज्य श्री खूबचंदजी म० की सम्प्रदाय के मुनि ६५ तथा आर्या ३८।

प्रतिनिधि ५--[१] पं० मुनि श्री कस्तुरचंदजी म० [२] उपा० श्री प्यारचंदजी म० [३] पूज्य श्री शेषमलजी म० [४] पं० मुनि श्री मनोहरलालजी म०।

[५] पूज्य श्री धर्मदासजी म० की सम्प्रदाय। मुनि २१ तथा आर्या ८६।

प्रतिनिधि ५--[१] पं० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म० (२) पं० मुनि श्री सूर्यमुनिजी म० (३) शता० पं० मुनि श्री केवल मुनिजी म० [४] पं० मुनि श्री मथुरा मुनि जी म० [५] पं० मुनि श्री सागर मुनि जी म०।

[६] पूज्य श्री ज्ञानचन्द्रजी महाराज की सम्प्रदाय। मुनि १३ तथा आर्या १०५।

प्रतिनिधि ४--[१] पण्डित मुनि श्री पूर्णमलजी महाराज (अनुपस्थित) (२) आत्मार्थी श्री इन्द्रमलजी म०, (३) पण्डित मुनिश्री लालचन्द्रजी महाराज, (४) पण्डित मुनि श्री मोहनलालजी महाराज।

[७] पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज की सम्प्रदाय। मुनि ६ तथा आर्या ३३।

प्रतिनिधि २--[१] पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज, [२] पण्डित मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी महाराज।

[८] पूज्य श्री शीतलदासजी महाराज की सम्प्रदाय। मुनि ५ तथा आर्या ७।

प्रतिनिधि १—पण्डित मुनि श्री छोगालालजी महाराज।

[९] पूज्य श्री मोतीलालजी महाराज की सम्प्रदाय। मुनि १४ तथा आर्या ३०।

प्रतिनिधि २--[१] पण्डित मुनि श्री अम्बालालजी महाराज, (२) पण्डित मुनि कवि श्री शांतिलालजी म०

[१०] पूज्य श्री पृथ्वीचन्द्रजी महाराज की सम्प्रदाय मुनि १३।

प्रतिनिधि १--उपा० कवि श्री अमरचन्दजी म०।

[११] पूज्य श्री जयमलजी म० की सम्प्रदाय के स्थ० पं० मुनि श्री हजारीमलजी म० के। मुनि ६ तथा आर्या २६।

प्रतिनिधि २—[१] श्री पण्डित मुनि श्री बृजलालजी म०, [२] पण्डित मुनि श्री मिश्रीलालजी म०।

[१२] पूज्य श्री जयमलजी महाराज की सम्प्रदाय के पण्डित मुनि श्री चौथमलजी महाराज के मुनि ६ तथा आर्या ५१।

प्रतिनिधि ३—[१] पं० मुनि श्री चांदमलजी म०, [२] पण्डित मुनि श्री लालचंदजी महाराज, [३] उपा० श्री जीतमलजी महाराज।

[१३] पूज्य श्री नानकरामजी महाराज की सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री पन्नालालजी महाराज के मुनि ६ तथा आर्या ८।

प्रतिनिधि १—पण्डित मुनि श्री सोहनलालजी महाराज।

[१४] पूज्य श्री अमरचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय। मुनि ७ तथा आर्या ६५।

प्रतिनिधि ३—[१] मंत्री मुनि श्री ताराचन्दजी म०, [२] स्थ० मुनि श्री नारायणदासजी महाराज, [३] पण्डित मुनि श्री पुष्कर मुनिजी महाराज।

[१५] पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की सम्प्रदाय। मुनि २ तथा आर्या २६।

प्रतिनिधि २—(१) मंत्री मुनि श्री मिश्रीमलजी महाराज, (२) पण्डित मुनि श्री रूपचन्दजी म०।

(१६) पूज्य श्री चौथमलजी म० की सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री शार्दूलसिंहजी महाराज-मुनि ४ तथा आर्या ७।

प्रतिनिधि १—पण्डित मुनि श्री रूपचंदजी महाराज।

(१७) पूज्य श्री स्वामीदासजी महाराज की सम्प्रदाय—मुनि ७ तथा आर्या १६।

प्रतिनिधि २—(१) पण्डित मुनि श्री छगनलालजी महाराज (अनुपस्थित) (२) पण्डित मुनि श्री कन्हैयालालजी महाराज।

(१८) ज्ञातृपुत्र महावीर संघीय मुनि-३ तथा आर्या २।

प्रतिनिधि १—पण्डित मु० फूलचन्दजी म०।

(१६) पूज्य श्री रूपचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय-मुनि ३ तथा आर्या ४।

प्रतिनिधि १—पण्डित मुनि श्री सुशीलकुमारजी म०।

(२०) पण्डित मुनि श्री घासीलालजी महाराज के मुनि ११।

प्रतिनिधि १—पं० मुनि श्री समीरमलजी म०। (पहले पं० मुनि श्री प्यारचन्दजी महाराज को प्रतिनिधित्व दिया गया।

(२१) पूज्य श्री जीवनरामजी महाराज की सम्प्रदाय-मुनि ३।

प्रतिनिधि १—कवि श्री अमरचन्दजी महाराज के शिष्य श्री विजय मुनिजी म०।

(२२) बरवाला-सम्प्रदाय (सौराष्ट्र) के-मुनि ३ तथा आर्या १८।

प्रतिनिधि १—पण्डित मुनि श्री चम्पकलालजी महाराज। कुल उपस्थित सम्प्रदाय २२, मुनि ३४१, आर्याजी ७६८। प्रतिनिधि संख्या ५४। अनुपस्थित २।

प्रतिनिधित्व

(१) कोटा-सम्प्रदाय के प० मुनि श्री रामकुमारजी म० ने अपने मुनि व आर्याजी का प्रतिनिधित्व पं० मुनि श्री प्यारचन्द्जी म० को दिया।

(२) कोटा-सम्प्रदाय के पं० मुनि श्री जीवराजजी म० तथा पं० मुनि श्री हीरामुनि जी म० ने सम्मेलन मे होने वाले सभी प्रस्तावों की स्वीकृति भेजी है।

सम्मेलन की कार्यवाही ता० २७-४-५२ को मध्यान्ह के २ बजे प्रारम्भ हुई। प्रस्ताव निम्न प्रकार थे:-

प्रस्ताव १—(शान्तिरक्षक का चुनाव)

विचार-विमर्श के पश्चात् सर्व सम्मति से यह निर्णय किया जाता है, कि सभा का संचालन करने के लिए शान्तिरक्षक का पद पूज्य श्री गणेशीलालजी महाराज एवं व्याख्यानवाचस्पति मदनलालजी म० को दिया जाता है।

प्रस्ताव २—(दर्शक मुनियों को आज्ञा तथा रिपोर्टरों की नियुक्ति)

विचार-विमर्श के बाद सर्वानुमति से निर्णय हुआ कि अप्रतिनिधि मुनि दर्शक के रूप में रह सकते हैं उन्हें बोलने एवं परामर्श देने का अधिकार नहीं रहेगा और अपवाद रूप में श्री फिरोदियाजी (कॉन्फरन्स के प्रेसीडेन्ट) भी बैठ सकते हैं।

सर्वानुमति से पास किया जाता है कि, गुजराती की रिपोर्ट लेने के लिये श्री चम्पक मुनिजी म० को एवं हिन्दी रिपोर्ट लेने के लिये मुनि आईदानजी म० को रिपोर्टर के तौर पर रक्खा जावे।

प्रस्ताव ३—(विषय निर्धारिणी का चुनाव)

पूर्ण विचार विमर्श के पश्चात् विषय निर्धारणी कमेटी का सर्वानुमति से पास हो गया और इसके लिए १५ सदस्यों का चुनाव कर लिया गया।

[१] पू० श्री आनन्द ऋषिजी म०, [२] पूज्य श्री हस्तीमलजी म० [३] पं० मुनि श्री प्यारचन्दजी म० [४] उपा० श्री अमरचन्दजी म० [५] पं० मुनि श्री इन्द्रमलजी म०, [६] पं० मुनि श्री श्रीमलजी म०, [७] उपा० श्री प्रेमचन्दजी म०, [८] पं० मुनि श्री लालचन्दजी म०, [९] पं० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म०, [१०] मधुकर पं० मुनि श्री मिश्रीलालजी म०, [११] प० मुनि सुशील कुमारजी म०, [१२] मरुधर मन्त्री पं० मुनि मिश्रीमलजी म०, [१३] पं० मुनि श्री अम्बालालजी म०, [१४] व्या० वा० श्री मदनलालजी म० और [१५] पं० मुनि श्री पुष्कर मुनिजी (ता० २७-४-५२ की रात्रि को पास)।

प्रस्ताव ४—(कार्य-प्रणाली)

जो प्रस्ताव पास होंगे, वे यथाशक्य सर्वानुमति से अथवा बहुमत से अर्थात् जो प्रस्ताव ऐसे प्रसंग पर पहुँच जाय कि उन्हें बहुमत से पास करना आवश्यक हो जाता है तो प्रस्ताव बहुमत से पास किये जा सकेंगे। बहुमत से तात्पर्य ३।४ अर्थात् ७५% से लिया जायगा।

प्रस्ताव ५—(मत-गणना)

बहुत विचार विमर्श के बाद सर्वानुमति से यह निर्णय किया गया कि—वोटिंग (मतगणना) प्रत्यक्ष में भी लिये जा सकते है।

प्रस्ताव ६—(एक आचार्य के नेतृत्व में)

बृहत्साधु-सम्मेलन सादड़ी के लिए निर्वाचित प्रतिनिधि मुनिराज यह निर्णय करते हैं कि अपनी २ सम्प्रदाय और साम्प्रदायिक पदवियों का विलीनीकरण करके, "एक आचार्य के नेतृत्व में एक संघ" कायम करते हैं। (सर्वानुमति से ता० २८-४-५२ मध्याह्न को पास।)

प्रस्ताव ७-(संघ का नाम)

इस संघ का नाम 'श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ' रहेगा। (सर्व सम्मति से पास ता० २९ प्रातःकाल)।

प्रस्ताव ८-(व्यवस्थापक मन्त्री-मण्डल)

शासन को सुविधा-पूर्वक प्रगति देने के लिये और सुव्यवस्था के लिए एक आचार्य के नीचे एक 'व्यवस्थापक मन्त्रि-मण्डल' बनाया जाय। (सर्व सम्मति से पास)

प्रस्ताव ९—(मन्त्री-मण्डल की संख्या)

व्यवस्थापक मन्त्री-मण्डल के १६ सदस्य होंगे। (सर्व सम्मति से पास)

प्रस्ताव १०-(मन्त्री-मण्डल का कार्यकाल)

व्यवस्थापक मन्त्री-मण्डल का कार्यकाल तीन साल तक रहेगा। (सर्व सम्मति से पास)

प्रस्ताव ११—(संवत्सरी पर्व-निर्णय)

संवत्सरी पर्वाराधन के विषय से कतिपत सम्प्रदायों में मतभेद था, उन सभी सम्प्रदायों का एकीकरण करने के लिए दूसरे श्रावण तथा प्रथम भाद्रपद मे संवत्सरी करने वाला जो बहुल पक्ष है, वह पक्ष संघ ऐक्य के हेतु "दो श्रावण हो तो भाद्रपद में और दो भाद्रपद हों तो दूसरे भाद्रपद मे संवत्सरी करना" प्रेमपूर्वक स्वीकार करता है। (सर्व सम्मति से पास ता० ३० प्रातःकाल)।

प्रस्ताव १२—(पाक्षिक तिथि-निर्णय)

पाक्षिक तिथियों का निर्णय करने के लिये ८ साधुओं की कमेटी बनाई गई:—

(१) पूज्य श्री गणेशीलालजी म०, (२) पूज्य श्री आनन्द ऋषिजी म०, (३) पूज्य श्री हस्तीमलजी म०, (४) युवाचार्य श्री शुक्लचन्दजी म०, (५) पं० मुनि श्री कस्तूरचन्दजी म०, (६) उपाध्याय श्री अमरचन्दजी म०, (७) मरुधर मन्त्री श्री मिश्रीमलजी म०, (८) पं० मुनि श्री सुशीलकुमारजी म०।

प्रस्ताव १३—(तिथि-निर्णय कबसे ?)

पाक्षिक तिथियों के सम्बन्ध में कमेटी का जो निर्णय हो वह आगामी वर्ष माना जाय और आगमी वर्ष पाक्षिक पत्र कमेटी के विचार से प्रकट हो। (सर्व सम्मति से पास)

प्रस्ताव १४—(दीक्षा के सम्बन्ध मे)

(अ) "श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ" के मनोनीत आचार्य और व्यवस्थापक मन्त्री, शास्त्र दृष्टि एवं लोकदृष्टि पर गंभीर विचार करके दीक्षार्थी की वय, वैराग्य, शिक्षण आदि की योग्यता का यथोचित निर्णय करें। (सर्व सम्मति से पास ता० २-५-५२ प्रातः)

(ब) श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण संघ मे जो दीक्षार्थी दीक्षा लेना चाहे वह आचार्य श्री या दीक्षा-मन्त्रीजी की आज्ञा से अपने अभीष्ट गुरुपद के योग्य, सुयोग्य मुनि को गुरु बना सकेगा। यह नियम आगामी सम्मेलन तक समझा जावे। आगामी सम्मेलन मे इस पर विचार किया जावेगा। (सर्व सम्मति से पास ता० ४-५-५२ मध्यान्ह)

प्रस्ताव १५—(प्रतिक्रमण के सम्बन्ध मे)

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के साधु साध्वियों को देवसी, रायसी, पक्ष, चौमासी, संवत्सरी का एक ही प्रतिक्रमण करना चाहिये और कायोत्सर्ग मे देवसी, रायसी को ४, पक्खी को ८ चौमासी को १२ और संवत्सरी को २० लोगस्स का ध्यान करना चाहिए (सर्व सम्मति से पास ता २-५-५२ मध्याह्न)

प्रस्ताव १६–(मुखवस्त्रिका का परिणाम)

मुखवस्त्रिका का परिणाम आत्मअंगुल से चौड़ाई मे १६ और लम्बाई में २१ अंगुल का होना चाहिए। (सर्व सम्मति से पास)

प्रस्ताव १७–(सचित्ताचित्त निर्णायक समिति)

सचित्ताचित्त निर्णायक कमेटी का सर्वानुमति से चुनाव हुआ:—

(१) पूज्य श्री आनन्द ऋषिजी म०, (२) पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज, (३) उपाध्याय श्री अमरचन्दजी महाराज, (४) उपाध्याय श्री प्रेमचन्दजी महाराज, (५) पं० मुनि श्री प्यारचन्दजी महाराज (६) पं० मुनि श्री

जी महाराज, (७) मरुधर-मन्त्री श्री मिश्रीमलजी महाराज, और (८) पं० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म० । (ता० २-५-५२ रात्रि को पास)

इलायची, पिश्ता, केले, अंगूर आदि फलों की सचित्त-अचित्तता और, ध्वनिवर्धक-यंत्र के संचालन में काम आने वाली बिजली और बेटरी की सचित्ताचित्तता का निर्णय यह समिति करेगी ।

प्रस्ताव १८—(आचार्य का चुनाव)

सं० २००९ वैशाख शुक्ला ९ को श्री वर्द्धमान तथा स्था० जैन श्रमण-संघ के आचार्य श्री जैनधर्म दिवाकर साहित्यरत्न पूज्य श्री आत्मारामजी म० सा० नियत किए जाते हैं और उपाचार्य पूज्य श्री गणेशीलालजी म० सा० नियत किये जाते है । यह प्रस्ताव सहर्ष प्रेमपूर्वक सर्वसम्मति से पास किया जाता है। (ता० ३-५-५२ प्रातःकाल)

प्रस्ताव १९—(व्यवस्थापक मन्त्री-मण्डल का चुनाव)

व्यवस्थापक मन्त्री-मण्डल के १६ मन्त्रियों का चुनाव निम्न प्रकार हुआ:—

प्रधान-मन्त्री (१)—पं० मुनि श्री आनन्दऋषिजी म० । सहायक-मन्त्री—(२) पं० श्री हस्तीमलजी म० एवं (३) पं० मुनि श्री प्यारचन्दजी म०, (४) मुनि श्री पन्नालालजी म०, (५) मरुधर केशरी श्री मिश्रीलालजी म०, (६) पं० मुनि श्री शुक्लचन्द्रजी म०, (७) पं० मुनि श्री किशनलालजी म०, (८) धर्मोपदेष्टा श्री फूलचन्दजी म० (९) पं० मुनि श्री प्रेमचन्दजी म०, (१०) पं० मुनि श्री पृथ्वीचन्द्रजी म०, (११) पं० मुनि श्री घासीलालजी म०, (१२) पं० मुनि श्री पुष्कर मुनिजी म०, (१३) पं० श्री मोतीलालजी म०, (मेवाड़ी), (१४) पं० मुनि श्री समर्थमलजी म०, (१५) मुनि श्री छगनमलजी म०, (मरुधर), (१६) पं० मुनि श्री सहस्रमलजी महाराज । (सर्व सम्मति से पास ता० ३ प्रात)

प्रस्ताव २०—(मन्त्री-मण्डल का कार्यविभाग)

मन्त्रीमण्डल का कार्य-विभाग निम्नानुसार है:—

विभाग		मन्त्री
१. प्रायश्चित	—	प्र० मंत्री श्री आनन्दऋषिजी महाराज पं० मुनि हस्तीमलजी ,,
२. दीक्षा	—	,, समर्थमलजी ,, ,, सहस्रमलजी ,,
३. सेवा	—	,, शुक्लचन्दजी ,, ,, किशनलालजी ,,
४. चातुर्मास	—	,, प्यारचन्दजी ,, ,, पन्नालालजी ,,
५. विहार	—	,, मोतीलालजी ,, ,, मिश्रीमलजी महाराज

६. आक्षेप निवारक	—	पं० मुनि श्री पृथ्वीचन्दजी महाराज " मिश्रीमलजी "
७. साहित्य-शिक्षण	—	" घासीलालजी " " हस्तीमलजी " " पुष्कर मुनिजी "
८. प्रचार	—	" प्रेमचन्द्रजी " " छगनलालजी " " फूलचन्दजी "

नोटः—इस मन्त्री-मंडल का कार्य तीन वर्ष तक रहेगा। यदि मन्त्री-मडल में कोई मतभेद होगया हो तो आचार्य श्री फैसला करेंगे। मन्त्री-मण्डल यथाशक्य प्रति वर्ष मिले, अगर न मिल सके तो तीसरे वर्ष अवश्य मिलना ही होगा। कोई मन्त्री कारणवश नहीं पधार सके तो अपनी सर्व सत्ता, अधिकार देकर प्रतिनिधि बनाकर भेज देवें। यह मन्त्री-मण्डल अखिल भारतीय श्री वर्द्धमान श्रमण सघ के शासन का उत्तरदायित्व वहन करेगा। आक्षेप निवारक मन्त्री, श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण सघ पर आये हुए आक्षेपों का निराकरण करेंगे। (सर्व सम्मति से पास ता० ५ प्रातः)

प्रस्ताव २१—(आचार्य-पद प्रदान विधि)

आचार्य-पद चद्दर की रस्म वैशाख शक्ला १३ (स० २००६) बुधवार को दिन के ११॥ बजे अदा की जायगी।

उसके पूर्व सब मुनि 'प्रतिज्ञा पत्र' मय दस्खत के तैयार रखेंगे, जो आचार्य-पद पर विराजते ही आचार्य श्री के चरणों मे भेट कर देगे। (सर्व सम्मति से पास, ता० ५ प्रातः काल)

प्रस्ताव २२—(संघप्रवेश का प्रतिज्ञा-पत्र)

मैं मेरी सम्प्रदायिक पदवियाँ विलीनीकरण करके 'श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण संघ' में प्रविष्ट होता हूँ। संघ के बंधारणानुसार आचार्य और मन्त्री मडल की आज्ञानुसार प्रवृत्ति करूँगा।

मैंने अपने आचार्य, गुरुजन तथा वड़े मुनिराज (प्रवर्तिनी, गुराणी तथा बड़ी साध्वी) के समक्ष शुद्ध हृदय से आज तक मे लगे हुए जानते अजानते सभी दोषों की आलोचना कर ली है और छेद पर्यायवाद करके आज मेरी दीक्षा पर्याय····की है।

मेरे भविष्य काल के चारित्र के सबंध मे श्रमण संघ के आचार्य श्री और मन्त्रियों एवं गुरुजनों को कोई शंका उत्पन्न होगी तो वह सिद्ध होने पर आचार्य श्री और प्रायश्चित मंत्री की आज्ञानुसार मैं उसका प्रायश्चित करूँगा।

श्रमण संघ के बँधारण और समाचारी का मैं यथायोग्य पालन करूंगा।

मिति····· हस्ताक्षर·········(इस प्रतिज्ञा फॉर्म के अनुसार ही इस नये संघ में सबको प्रविष्ट होना चाहिए) (सर्व सम्मति से पास ता० ४ प्रातः काल)

प्रस्ताव २३—(चातुर्मास की विनती)

चातुर्मास संबंधी विनती पत्र माघ शुक्ला १५ तक आचार्य श्री के पास भेज देने चाहिए। आचार्य

श्री उन पर विचार विनिमय करके फाल्गुन शुक्ला १५ तक चातुर्मास मन्त्री के पास भेज देंगे और चैत्र शुक्ला १३ तक चातुर्मास-मन्त्री चातुर्मास की घोषणा कर देंगे। (सर्व सम्मति से पास, ता० ५ प्रातःकाल)

प्रस्ताव २४—(श्रमण संघ की समाचारी)

वस्ती (मकान) संबंध मे—स्थानक संबंधी निर्णय—

(१) पहले के जितने भी अलग २ सम्प्रदायों के श्रावकों के धर्म ध्यान करने के जो पंचायती स्थान (मकान) हैं, उनका वर्तमान मे जो भी नाम है, उन सबका और भविष्य मे भी श्रावक संघ धर्मध्यान करने के लिए जो स्थान (मकान) बनावे, उन सबका नाम "श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन स्थानक" रखना चाहिए। (सर्व सम्मति से पास ता० १ मई प्रातःकाल)

(२) पहले के सभी धर्म ध्यान करने के स्थान (मकान) जिन २ के अधिकार में हैं, वे अधिकारी एक वर्ष में वे स्थान (मकान) "श्री वर्द्धमान स्थानक वासी जैन श्रावक संघ" को सौंप देवे। भविष्य मे भी जो स्थान (मकान) पंचायती रूप से धर्मध्यान करने के लिये बने, वे भी इस श्रावक संघ की अधीनता मे रहें। पहिले के जो २ स्थान (मकान) एक वर्ष मे इस श्रावक सघ को नहीं सौंपे जायेंगे तथा भविष्य में जो स्थान (मकान) पंचायती रू से धर्मध्यान के लिए बनेंगे, वे इस श्रावक संघ के अधीन नही होंगे तो उनमें भी उक्त श्रमण संघ के साधु-सा नहीं ठहरेंगे। (सर्व सम्मति से पास ता० १ मई प्रातःकाल)

(३) शय्यान्तर–रात्रि प्रतिक्रमण से लेकर फिर आज्ञा वापिस लौटाने तक शय्यान्तरत्व स्वीकार कि जाय। आज्ञा लौटाने के बाद अगर उसी गांव में रहे तो आठ प्रहर तक शय्यान्तर के घर को टालना और य उस गांव से विहार करने जैसी स्थिति हो तो शय्यान्तरत्व नहीं रह जाता। (सर्व सम्मति से पास ता० ३०· ५२ मन्याह्न)

(४) कोई पंचायती मकान क्लेशवाला हो तो तत्कालीन परिस्थिति का विचार कर उसमें उतरना नही (सर्व सम्मति से पास)

(५) जिस मकान में शृङ्गारादिक फोटू, चित्र या दर्पणादि पर आवरण डाल दिया हो या उतार लि हों, उस मकान में साधु-साध्वी ठहर सकते हैं। निर्दोष स्थान न मिलने पर उपर्युक्त स्थान मे ठहराना पड़े एक रात्रि से ज्यादा न ठहरे। (सर्व सम्मति से पास)

(६) जिस गांव में स्थानापन्न (ठाणापति) साधु-साध्वी हो, उस गांव में यदि साधु-साध्वी विहा करते २ पधारें तो स्थापन्न साधु-साध्वी के स्थान पर ही उतरें। स्थान संकोच के कारण यदि अन्य स्थान प उतरना भी पड़े तो उनकी सेवा में बाधा न पडे इसको दृष्टि में रखकर उनकी आज्ञा से उतर सकते हैं (सर्व सम्मति से पास)

(७) गांव में विराजते समय अन्य वृद्ध, तपस्वी तथा रोगी साधु साध्वियों की खबर पूछ-ताछ औ यथाशक्य सेवा करना (अन्योन्य के स्थानक पर जाते समय समझदार स्त्री या पुरुष को साथ में रखना) (सर्व सम्मति से पास)

प्रस्ताव २५—(वस्त्र पात्र सम्बन्धी)

(१) एक साधु या साध्वी चार पात्र से अधिक न रखें। यदि कारणवश एकाध पात्र अधिक रखना पड़े तो आचार्य श्री तथा तत्सम्बन्धी अधिकारी मन्त्रीजी की आज्ञा से रख सकते हैं।

(२) पात्रों को सफेदा, बेलतेल व वारनिश के सिवाय रंग चढाना नहीं। (सर्व सम्मति से पास ता० १ मई प्रातःकाल)

(३) साधु ७२ हाथ और अर्याजी ९६ हाथ से अधिक वस्त्र रखें नहीं। रोगादि कारणवश अधिक रखना पड़े तो आचार्य श्री तथा तत्संबंधी मुनि की आज्ञा लेकर रखें।

(४) रंगीन या रंगीन किनारी वाले वस्त्र वापरना नहीं।

(५) अति बारीक वस्त्र जिसमें अंग दिखाई दें, ऐसे वस्त्र की चादर ओढ कर ठहरे हुए स्थान से बाहर गोचरी आदि के लिए जाना नहीं।

(६) वस्त्र पड़िहारा लेकर वापरना नहीं।

(७) धातु का पात्र कारणवश पड़िहारा लाये हों तो सूर्यास्त के पहले वापस दे देना। (सर्व सम्मति से पास ता० १ मध्याह्न)

प्रस्ताव २६—(गोचरी विषयक)

(१) एषणा के ४२ दोष टालककर प्रासुक और ऐषनिक आहार-पाणी साधु-साध्वी अपनी आवश्यकतानुसार लेवे, परन्तु नित्य प्रति एक ही गृहस्थ के घर से बिना कारण आहार लेवे नहीं।

(२) चुलिया (चणिवारा) वाले किवाड़, जमीन से घिसते हुए किंवाड तथा लम्बे अर्से से बन्द हों ऐसे किंवाड खुलवा कर कोई चीज लेना नहीं। गृहस्थ के बन्द किंवाड़ खोलकर प्रवेश करना नहीं (जाली आदि का आगार)

(३) पड़िहारी लाई हुई औषधि सूर्यास्त के पहले वापस दे देना। कारणवश पहुँचाया न जा सके या रखना जरूरी हो तो पास के किसी गृहस्थ के मकान मे अथवा सेवा मे (साथ मे) रहने वाले भाई को दे देवें।

(४) गोचरी आदि ऐषणा के लिए गए हुए साधु साध्वी गृहस्थों के साथ वार्तालाप करने के लिए ठहरें नहीं और न बैठें ही। (सर्व सम्मति से पास ता० १० मध्याह्न)

(५) पारस्परिक क्लेश की क्षमायाचना करके आहार-पानी करना।

(६) दो गाउ (२ कोस) से ऊपर ले जाकर आहार-पानी करना नहीं तथा प्रथम प्रहर का चतुर्थ प्रहर में करना नहीं।

(७) गोठ,दया, नवकारसी, स्वामी वात्सल्य, संघ, विवाह, प्रीतिभोज, मृत्युभोज आदि जीमणवारों में गोचरी जाना नहीं। अनजान से उस तरफ गया हो तो विना लिये वापस लौट जाय।

(८) (एक दिन पहले का अचित्त जल (धोवणादि) अथवा वर्ण-गंध-रस चलित आहार ग्रहण करना नहीं।

(९) प्रत्येक साधु को एक दिन मे ३ बार विगय से अधिक नहीं लगाना और प्रणीत आहार प्रति दिन नहीं लिया जाय। (वृद्ध, ग्लान, तपस्वी, विद्यार्थी का आगार) (सर्व सम्मति से पास ता० १ मई)

(१०) साधु-साध्वी बाहर गाँव से दर्शनार्थ आये हुए गृहस्थियों से आहार ले सकते हैं। इसमें दिनों की मर्यादा की आवश्यकता नहीं। (सर्व सम्मति से पास ता० ५)

प्रस्ताव २७—(प्रकीर्णक)

(१) सुबह का व्याख्यान और दोपहर का शास्त्रादि वांचन या चौपाई जो करीबन दो घण्टे तक होता है, उस समय के उपरान्त साधुओं के मकान मे साध्वियों को और स्त्रियों को नहीं बैठना चाहिए और साध्वियों के स्थान में पुरुषों को नहीं बैठना चाहिए यदि किसी खास कारण से बैठना ही पड़े तो साधुजी के मकान में

समझदार पुरुष की और साध्वीजी के मकान में समझदार स्त्री की साक्षी के बगैर नहीं बैठना चाहिए। मंगलि श्रवण, प्रत्याख्यान तथा संथारे के समय का आगार। (सर्व सम्मति से पास ता० ३ मध्याह्न)

(२) अकेला मुनि, अकेली साध्वी या अकेली स्त्री के साथ बात करें नहीं। इसी तरह अकेली साध्वी अकेले साधु का अकेले पुरुष से बात-चीत नही करें। (एकान्त स्थान मे स्त्री के पास खड़ा रहना या बैठना नहीं। (सर्व सम्मति से पास ता० २)

(३) नासिका (तमाखू) सूंघने की नई आदत डालना नहीं। पहले की आदत छोड़ना। नहीं छूटे चौविहार के पच्चक्खाण के बाद सूंघना नहीं।

(४) "श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण संघ" से बाहर किये हुए साधु-साध्वी के साथ आहार प करना नहीं, वन्दना व्यवहार, व्याख्यान, स्वाध्याय, पठन-पाठनादि सहयोगी व्यवहार भी करे नहीं। (सर्व सम से पास ता० १ मध्याह्न)

(५) साधु-साध्वियों को रुपये के लेन-देन मे हस्तक्षेप करना नहीं। पुस्तक, शास्त्रादि खरीदने छपाने के लिए किसी आदमी को रखकर लेन-देन कराना नहीं।

(६) साधु-साध्वियों ने कोई गद्य-पद्य साहित्य तैयार किया हो, वह तत्सम्बन्धी मन्त्री अथवा प्रका समिति के पास पहुंचाना, योग्य साहित्य वहां से प्रकाशित होगा, परन्तु छापने-छपाने की प्रवृत्ति मे साधु-सा को भाग लेना नही।

(७) धातु की कोई चीज साधु-साध्वी अपनी नेश्राय मे रक्खे नही।

(८) पोस्ट की टिकिट अथवा टिकिट वाले कार्ड कवर साधु-साध्वी रक्खे नहीं तथा गृहस्थ स्त्री को अपने हाथ से पत्र लिखना नहीं।

(९) बिना कारण साधु-साध्वी दर्शनादि के नाम से गृहस्थ के घर जावे नहीं।

(१०) साधु-साध्वी को छिद्रान्वेषी होना नहीं, पर निन्दा करना नही, कोई किसी से दोष हो गया तो आचार्य व तत्सम्बन्धी मन्त्री और सघाड़े के अग्रेसर के अलावा अन्य किसी के पास कहना नहीं।

(११) दोषों का प्रायश्चित्त हो जाने के बाद फिर कोई उसे प्रकट करे नहीं।

(१२) यत्र, मंत्र, तंत्र, तावीज, जड़ी-बूटी, तेजी-मन्दी, फीचर आदि का प्रयोग बताना नही तथा औषधादि क्रिया का उपयोग गृहस्थ के लिए संसारविषयक करना नही।

(१३) साधु-साध्वी आपस मे व गृहस्थ को भी क्लेशवर्द्धक, कठोर एवं अपमानसूचक शब्द कहें नहीं भूल से अपशब्द निकल जाय तो क्षमायाचना करें।

(१४) दिन मे बगैर कारण सोना नहीं। (वृद्ध, विहार, बीमार, तपस्वी का आगार) बगैर कारण सो पड़े तो २५० गाथाओ का स्वाध्याय करे।

(१५) विना कारण तैल मर्दन करना नही, कराना नही और अंजन आंजा नहीं।

(१६) जहां तक बन सके (यथाशक्य) सब वस्त्र पात्रों का दो वक्त प्रतिलेखन करना।

(१७) स्थविर, बीमार अथवा तपस्वी की सेवा मे मन्त्री जिसे रहने की आज्ञा दे, वे साधु या साध्वी सहर्ष साथ रहकर सेवा करें। वैयावच्ची साधु-साध्वीजी का बने वहां तक प्रतिवर्ष स्थान परिवर्तन कर (अपवाद रूप में प्रवर्त्तकजी का निर्णय सब साधु-साध्वी मान्य रखेंगे)

(१८) सिर के बालों का वर्ष में दो बार लोच करना। (वृद्ध मुनि अथवा जिसके कम बाल बढ़ते हों, वे भले ही एक बार करें, परन्तु युवक साधु को तो दो बार करना ही चाहिए। संवत्सरी के दिन गाय के रोएं जितने भी बड़े बाल किसी साधु-साध्वी के सिर पर नहीं रहने चाहिए।

(१९) तपस्या, दीक्षा-महोत्सव, संवत्सरी क्षमापना, दीपावली के आशीर्वाद आदि की पत्रिकाएं साधु-साध्वी अपने हाथ से गृहस्थ को लिखे नहीं, छपावे नहीं तथा दर्शनार्थ बुलावे भी नहीं।

(२०) फोटू खिचवा नहीं, पाट, गादी, पगले आदि की जड़ मान्यता करना नहीं, कराना नहीं। समाधि, पगला और गुरु के चित्रों को धूप, दीप अथवा नमस्कार करने वाले को उपदेश देकर रोकना।

(२१) वस्त्र के, कंतान के, रबर के अथवा अन्य प्रकार के जूते अथवा मौजे पहनना नही।

(२२) गृहस्थ से हाथ, पांव या सिर दबवाना नहीं अथवा किसी प्रकार की सेवा कराना नहीं।

(२३) अविश्वासी घर अथवा दुकान पर किसी साधु-साध्वी को जाना नहीं। जिसके लिए रुपया आदि दिलाने का संकेत करना पड़े, ऐसे गृहस्थ पुरुष या स्त्री को साधु-साध्वीजी के पास रखे नहीं। (सर्व सम्मति से पास ता० २ मई प्रातःकाल)

(२४) गृहस्थ लोग अपने उत्सव के निमित्त जो सभा-मण्डप या मंच तैयार करें, उसका श्रमण-संघ व्याख्यान आदि के लिए उपयोग में ला सकते हैं। (सर्व सम्मति से पास ता० ४ मध्याह्न)

(२५) जिस क्षेत्र में वयोवृद्ध सन्त व शरीरिक कारण से सन्त विराजित हों वहां पर विदुषी प्रभाविका सतिजी का आगमन हो गया हो और श्री संघ विदुषी सतिजी का व्याख्यान श्रवण करने के लिए उत्सुक हो तो वहां विराजित सन्तों की अनुमति से अवसर देखकर व्याख्यान दे सकते हैं। अवसर देखकर अन्य मुनि भी अनुमति देने की उदारता करें। (सर्व सम्मति से पास ता० ५ मध्याह्न)

प्रस्ताव २८—(सम्यक्त्व (समकित) देना)

सम्यक्त्व देते समय देव के रूप में वीतराग देव को देव तरीके स्वीकार कराना, पंच महाव्रत, पांच समिति, ३ गुप्त का पालन करने वाले को गुरु तरीके स्वीकार कराना, अहिंसा परमो धर्मः को धर्म रूप में स्वीकार कराना, श्रमण संघ के आचार्य को धर्माचार्य के रूप में स्वीकार कराना। तीसरे पद मे उनका नामोच्चार कराना। (सर्व सम्मति से पास ता० ४ मध्याह्न)

प्रस्ताव २९—(श्रमण संघ में शामिल करना)

१. सादड़ी सम्मेलन मे वृहत् गुजरात के सन्त (बरवाला के अतिरिक्त) नहीं पधारे हैं। स्थानकवासी जैन धर्म के एक प्रान्त के मुनियों का अलग रहना ठीक नहीं। यह सम्मेलन हृदय से चाहता है कि, गुजरात, कच्छ और सौराष्ट्र के मुनिवर इस श्रमण सघ मे प्रविष्ट हो जावें। इसके लिए यह सम्मेलन यह चाहता है कि, चातुर्मास के बाद स० २००९ के माघ मास तक गुर्जर प्रान्तीय सम्मेलन होकर वे सब श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ से संगठित हो जावें। कॉन्फरन्स और वृहत्-गुजरात के श्रावक इसके लिए पूर्ण प्रयत्न करें।

२. संघ से बाहर रहे हुए साधु साध्वियों को संघ में प्रवेश कराने का अधिकार दोनों आचार्य (आचार्य उपाचार्य) और प्रधान मन्त्री को दिया जाता है कि, वे द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव को देखकर उन्हें संघ में प्रविष्ट कर सकते हैं। उसे यह श्रमण-संघ स्वीकार कर सकेगा।

२. जिन जिन सम्प्रदायों के मुनिवर इस संघ में प्रविष्ट हुए हैं, वे अपनी अपनी सम्प्रदाय के संत-सतियों को संघ के विधानानुसार संघ में प्रविष्ट कराने का यथाशीघ्र प्रयत्न करें। (सर्व सम्मति से पास ता० ५ मध्याह्न)

प्रस्ताव ३०—(पारस्परिक व्यवहार)

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ में प्रविष्ट होने वाले मुनियों के पारस्परिक ११ संभोग (व्यवहार) फरजियात होंगे (खुले रहेंगे) और बारहवां आहार पानी करने का मरजियात (ऐच्छिक) होगा। (सर्व सम्मति से पास ता० ४ रात्रि)

प्रस्ताव ३१—(श्रावक संघ को चेतावनी)

जो संघ सामूहिक रूप से इस श्रमण संघ के नियमों को बार-बार तोड़ेंगे, तो वहां चातुर्मास नहीं करना चाहिए। शेषकाल का आगार। (सर्व सम्मति से पास ता० ५ मध्याह्न)

प्रस्ताव ३२—(मंगल-कामना)

१. हम सब उपस्थित प्रतिनिधि मुनि हृदय से यह कामना करते हैं कि यह बृहत्साधु सम्मेलन सफल हो, साधु साध्वियों के लिए ज्ञान, दर्शन, चारित्र में वृद्धिकारक हो, सर्वत्र प्रेमपूर्वक एकता का साम्राज्य स्थापित करने वाला बने ऐसी हम कामना करते हैं। आत्म साक्षी से हम सब अपने वचन पालन में सुदृढ़ रहें। (सर्व सम्मति से पास ता० ६-५-५२)। मंगल पाठ के साथ सम्मेलन की कार्यवाही शान्ति पूर्वक सफल हुई।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण-संघ का

विधान

उद्देश्य—वर्द्धमान स्था० जैन समाज में भिन्न २ सम्प्रदायों का अस्तित्व है। इन सम्प्रदायों में प्रचलित भिन्न २ परम्परा और समाचारी में एकता लाकर समस्त सम्प्रदायों का एकीकरण करना, परस्पर में प्रेम और ऐक्य की वृद्धि करना, संयम मार्ग में आई हुई विकृतियों को दूर करना और एक आचार्य के नेतृत्व में एक और अविभाज्य 'श्रमण-संघ बनाना।

नाम—इस संघ का नाम 'श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-संघ' रहेगा।

कार्यक्षेत्र—'श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ' का कार्य क्षेत्र इस प्रकार रहेगा:—

१—आत्म शुद्धि के लिये श्रद्धा, प्ररूपणा में एकता और चारित्र में शुद्धता एवं वृद्धि करना तथा शिथिलाचार एवं स्वच्छन्दाचार रोकना।

२—समस्त साधु साध्वियों को सुशिक्षित तथा सुसंस्कृत बनाने के लिए व्यवस्था करना।

३—आगम-साहित्य का संशोधन व भाषान्तर करना तथा जैनधर्म के प्रचार के लिए रुचिवर्धक नया साहित्य निर्माण करना।

४—धार्मिक शिक्षण में वृद्धि हो ऐसा पाठ्यक्रम तैयार करना।

५—जैन तत्त्वज्ञान का व्यापक प्रचार करना।

६—चतुर्विध श्री संघ में ऐक्य बढ़ाने के प्रयत्न करना।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण [illegible] होने

१—प्रत्येक सम्प्रदाय के साधु-साध्वीजी को अ[illegible] ायिक (त्याग कर) उक्त संघ में प्रविष्ट होने का प्रतिज्ञा-पत्र भर[illegible]

२—अपने गुरुजनों अथवा बड़े मुनिराज (साध्वी[illegible] क्रम करके श्रमण संघ में प्रविष्ट होते समय पूर्व दीक्षा मानी[illegible]

साधु-साध्वीजी को संघ में प्रवेश होते समय का प्रतिज्ञा-पत्र

मैं मेरी सम्प्रदाय, एवं साम्प्रदायिक पदवियों का 'श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ' में प्रविष्ट होता हूँ। मैं संघ के बंधारण अनुसार आचार्य और मन्त्री मण्डल की आज्ञानुसार प्रवृत्ति करूंगा।

मैंने अपने आचार्य, गुरुजन तथा बड़े मुनिराज (प्रवर्तिनी, गुराणी, बड़ी साध्वी) के समक्ष शुद्ध हृदय से आज तक में लगे हुए जानते अजानते सभी दोषों की आलोचना कर ली है और छेद पर्याय बाद करते आज मेरी दीक्षा पर्याय .... की है।

मंत्रियों, गुरुजनों तथा श्रमण संघ के आचार्य श्री को मेरे भविष्यकाल के चारित्र के सम्बन्ध में कोई शंका उत्पन्न होगी तो उसका प्रायश्चित्त करूंगा।

श्रमण संघ के बंधारण और समाचारी का मैं यथायोग्य पालन करूंगा।

ता०.................................. १९५६ हस्ताक्षर ....

बंधारण

श्री 'वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण संघ' का बंधारण निम्न प्रकार का होगा:—

१-इस श्रमण संघ के 'एक आचार्य' रहेंगे। जिनकी नेश्राय मे संघ के सब साधु साध्वी रहेंगे।

२-आचार्य श्री अतिवृद्ध हों अथवा कार्य करने मे अक्षम हों तो मन्त्री मंडल 'उपाचार्य' नियुक्त करेगा और उपाचार्य श्री आचार्य श्री के सब अधिकार सम्हालेंगे।

३—आचार्यश्री की अनुपस्थिति मे मन्त्री-मंडल आचार्य की नियुक्ति करेगा।

४—शासन की सुव्यवस्था के लिये तथा आचार्य श्री को मददरूप होने के लिये आचार्य श्री की इच्छा मुजब की संख्या का एक मन्त्री मण्डल होगा जो आचार्यश्री की आज्ञा के अनुसार कार्य करेगा। मन्त्री-मण्डल बनाते समय आचार्य श्री मुख्य २ मुनिराजों की सलाह लेंगे।

५-मंत्रियों के रिक्तस्थान की पूर्ति आचार्य श्री की सलाह अनुसार मंत्री-मंडल कर सकेगा।

६-मंत्री मंडल की संख्या घटाने बढ़ाने और कार्य विभाग मे आवश्यक फेरफार करने की सत्ता आचार्य श्री की होगी।

७-मंत्रीमंडल को आवश्यक विभाग सुपुर्द किए जायेंगे। मंत्री मंडल में १ प्रधान मंत्री और प्रधान मंत्री की इच्छानुसार २ सहायक मंत्री होंगे।

८-प्रधान मंत्री, सहमंत्रियों के सहयोग से मंत्री मंडल के कार्य की देखभाल करेंगे तथा समय २ पर आवश्यक समाचार आचार्य श्री को देते रहेंगे। आचार्य श्री की आज्ञा और सूचनाओं को मंत्रीमंडल कार्यान्वित करेगा।

९—मंत्रीगण एक से अधिक विभाग सम्भाल सकेंगे तथा संयुक्त विभाग की जवाबदारी ले सकेंगे।

१०—आचार्य श्री यावज्जीवन के लिये होंगे।

११—मंत्रीमंडल का कार्यकाल ३ वर्ष का रहेगा। तीन वर्ष के बाद आचार्य श्री मंत्रीमंडल चुनेंगे। उस समय मुख्य मुनिवरों की सलाह लेंगे।

पसंदगी

१-आचार्य श्री की पसन्दगी मंत्रीमंडल करेगा उनके रिक्तस्थान पर मंत्रीमंडल नई नियुक्ति कर सकेगा।

२-मंत्रीमंडल की सभा यथासमय प्रतिवर्ष अथवा तीन वर्ष मे अवश्य होगी।

३-बृहत् साधु सम्मेलन प्रति ५ वर्ष मे अथवा ७ वर्ष मे तो अवश्य आचार्यश्रीजी, मंत्रीमंडल के परामर्श से करावेंगे।

कार्यप्रणाली—यथा संभव सभाओं का कार्य सर्वानुमति से होगा। बहुमत का प्रसंग आवे तो ३/४ मत से अर्थात् ७५% से होगा।

आचार्य श्री का कर्तव्य और अधिकार

१—साधु साध्वियों के चातुर्मास के लिये श्री संघों से जो विनति पत्र आवेंगे उस पर अपनी सूचना देंगे और प्रधान मंत्री के द्वारा चातुर्मास मंत्री को योग्य करने के लिए भिजवायेंगे।

२—मंत्रीमंडल और प्रधान मंत्री के कार्य की देखभाल करेंगे, और योग्य आज्ञा व सूचनाएं प्रधान मंत्री को भेजेंगे।

३-शेष काल और चातुर्मास में साधु साध्वियों का लाभ अधिक क्षेत्रों को मिले, धर्म का अत्यधिक प्रचार हो, ऐसी व्यवस्था प्रधान मंत्री द्वारा करायेंगे।

४-साधु साध्वियों के ज्ञान, दर्शन, चारित्र की वृद्धि के हेतु श्रद्धा, प्ररूपणा की एकता हेतु और चतुर्विध श्री संघ का उत्थान एवं कल्याण हेतु यथायोग्य कार्यवाही करते रहेंगे।

५—श्रमण संघ के सब साधु साध्वी पर आचार्य श्री का अधिकार होगा तथा दीक्षार्थियों की योग्यता देखकर दीक्षा की आज्ञा देंगे।

६—श्रमण संघ से बाहिर के साधु-साध्वियों को तथा संघ मे मिलने की इच्छा रखने वाले अन्य साधु साध्वियों को यथाविधि मिलाने का अधिकार आचार्य श्री को होगा।

७—प्रधान मंत्री और मंत्री-मंडल के कार्य को सुचारु रूप से चलाने और शासन की सुव्यवस्था के लिए आज्ञा व सूचनाएं दे सकेंगे।

उपाचार्य श्री के अधिकार एवं कर्त्तव्य

१—आचार्य श्री जितनी २ सत्ता और अधिकार देंगे तदनुसार अधिकारपूर्ण उत्तरदायित्वपूर्ण शासन सम्हालेंगे।

मन्त्री मण्डल के कर्तव्य एवं अधिकार

१-योग्यतानुसार सुपुर्द किये हुए विभागों का कार्य सम्भालना और उन्नति बनाने के लिए साधु साध्वियों को आज्ञा और सूचना देते रहना आवश्यक है।

२-परस्पर मंत्रियो से सहकारपूर्ण कार्य करना।

३-आचार्य श्री और प्रधान-मंत्री की आज्ञा एवं सूचनाओं का पालन करना करवाना।

४-अपनी कार्यवाही और गति विधि से प्रधान-मंत्री तथा आचार्य श्री को सुपरिचित रखना।

प्रधान मंत्री का कर्त्तव्य और अधिकार

१-आचार्य श्री या उपाचार्य श्री की आज्ञा और सूचनाओं का पालन करना और मंत्रियों से करवाना

२-मंत्रीमंडल के कार्य पर देखभाल रखना, उचित आज्ञा सूचनाएं एवं परामर्श मंत्रियों को देते रहना

३-सहमंत्रियों से परामर्श लेते रहना।

४-मंत्रीमंडल के कार्य से सुपरिचित रहना और मंडल की गतिविधि से आचार्य श्री जी को तथा उपाचार्यश्रीजी को सुपरिचित रखाना।

सहमंत्री का अधिकार और कर्त्तव्य

१-प्रधान मंत्री को हर कार्य मे सहयोग देंगे।

२-अपने विभाग को उत्तरदायित्वपूर्ण संभालना।

मंत्री का कर्त्तव्य और अधिकार

१–मंत्रियों के सुपुर्द अपने २ विभाग को सुचारु रूप से चलाना।

२–साधु-साध्वियो के साथ प्रेमपूर्ण रीति से आज्ञा पलवाना।

३–अपने सहकारी मंत्रियों के साथ स्नेहपूर्वक कार्य-संचालन करने में सहयोगी बनना।

४–अपने कार्य की गतिविधि से प्रधान मंत्रीजी को सुपरिचित रखाना।

५–आचार्यश्रीजी और प्रधान मंत्रीजी की आज्ञा और सूचनाओं का यथायोग्य पालन करना, कराना। विधान मे योग्य संशोधन करने की सत्ता आचार्य श्री को रहेगी। उसमे आचार्य श्री मंत्रीमंडल की सलाह लें।

प्रायश्चित्त और पृथक्करण

उत्तरगुण सम्बन्धी छोटे अपराधों का प्रायश्चित साधु-साध्वियों के साथ मे विचरने वाले बड़े साधु-साध्वी दे सकेंगे। उसकी सूचना प्रायश्चित्त मंत्री को दी जायगी।

बड़े (महाव्रत भंग) के अपराधों का प्रायश्चित मंत्री द्वारा होगा। जिसकी सूचना प्रधानमंत्री और आचार्यश्री को देना होगा। चतुर्थव्रतभग के प्रत्यक्ष अपराध का प्रायश्चित प्रधानमंत्री और आचार्य श्री की सलाह से होगा।

किसी मंत्री का अपराध हो तो प्रधान मंत्री द्वारा आचार्य श्री की सम्मति से प्रायश्चित्त होगा।

प्रधान मंत्री का अपराध हो तो आचार्य श्री द्वारा प्रायश्चित्त होगा।

आचार्य श्री को प्रायश्चित्त स्थान उपस्थित पर प्रधानमंत्री और सहमंत्रियों द्वारा प्रायश्चित्त होगा।

प्रायश्चित्त का निश्चय होने तक अपने साथ के साधु-साध्वी का आहार या वन्दना सम्बन्ध विच्छेद किया जा सकेगा। उसकी सूचना प्रायश्चित मंत्री को दी जानी चाहिये।

आचार्यश्री और प्रधान मंत्री की आज्ञा विना किसी साधु साध्वी को कोई पृथक नहीं कर सकेगा। (सर्वानुमति से पास ता० ६-५-५२)

नोट—प्र० नं० १६ मे प्रस्तावित १६ मंत्रियों में से पं० मुनि श्री घासीलालजी म०, पं० मुनि श्री समर्थमलजी म० और पं० मुनि श्री छगनलालजी म० को स्वीकृति न मिलने से मंत्री मडल १३ मुनिवरों का रहा।

सम्मेलन की पूर्णाहुति के बाद वै० शु० १५ स० २००६ को चतुर्विध सघ के अभूत पूर्व आनन्द और उत्साह पूर्वक जैन धर्म दिवाकर, आगमवारिधि पूज्य श्री आत्मारामजी म० सा० को आचार्य पद और परम प्रतापी उपाचार्य श्री गणेशीलालजी म० सा० को उपाचार्य पद प्रदान करने का महोत्सव किया गया। आचार्य श्री की चादर पंजाब के मंत्री प० मुनि श्री शुक्लचंद्रजी महाराज को सुपुर्द की गई।

संगठित श्रमण-संघ के अलौकिक आनंद के साथ सम्मिलित साधु-साध्वी चातुर्मास के लिये अपने अपने निर्धारित स्थान के प्रति विहार कर गये।

कॉन्फरन्स ने भी स्थान स्थान पर श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक संघों का निर्माण करने तथा असम्मिलित साधु-साध्वियों को श्रमण-संघ मे सम्मिलित करने के भरसक प्रयत्न प्रारम्भ कर दिये।

सादड़ी सम्मेलन मे ११ दिनों मे मुनिवरों ने यथाशक्य आदर्श कार्यवाही की। फिर भी कुछ बातें विचारणीय रह गई थीं। इस पर निर्णय करने और नव-निर्मित श्रमण-सघ को सुदृढ़ बनाने की भावना से चातुर्मास के बाद ही मंत्री मुनिवरों का और तिथि निर्णय तथा सचित्ताचित्त निर्णय समिति के मुनिवरों का सम्मेलन करने का निर्णय किया गया।

सोजत के श्री संघ ने अपने आंगन में यह सम्मेलन होने में अपना सद्भाग्य बनाया। अतः सोजत संघ का आमत्रण स्वीकार किया गया।

सादड़ी सम्मेलन में नहीं पधारे हुए पं० मुनि श्री समर्थमलजी महाराज ने कतिपय खुलासे चाहे थे अतः उन्हें रूबरू में बुलाये। कुछ दिन सोजत रोड़ प्रेमपूर्वक वार्तालाप होता रहा और सोजत मे मन्त्री मुनि सम्मेलन में शामिल होने का कहा गया।

स० २००६ माघ शु० २ की प्रारंभ तिथि निश्चित हुई। मुनिराज यथा समय पधार गये और निम्न प्रकार कार्यवाही हुई:—

श्री वर्धमान स्था० जैन श्रमण-सघ के

मंत्री मुनिवरों की तथा निर्णायक-समितियों की बैठक

[स्थान—सोजत (मारवाड़) सं० २००६ माघ शुक्ला २ ता० १७-१-५३ से ता० ३०-१-५३ तक]

निम्न मंत्री मुनिवरो की उपस्थिति थी:—

(१) प्रधान मत्री पण्डित रत्न श्री आनन्दऋषिजी महाराज (२) सहमंत्री-पण्डित मुनिश्री प्यारचंदजी म० (३) सहमंत्री-पं० मुनिश्री हस्तीमलजी म० (४) मत्रो मुनि श्री मिश्रीमलजी महाराज (५) मत्री मुनि श्री शुक्लचंद्रजी म० (६) मंत्री मुनि श्री प्रेमचंद्रजी महाराज (७) मत्री मुनि श्री पुष्करमुनिजी म० (८) मत्री मुनि श्री सहस्रमलजी म० (९) मंत्री मुनि श्री पन्नालालजी म० सा० के प्रतिनधि मुनि श्री लालचदजी महाराज (११) मंत्री मुनि श्री किशनलालजी म० सा० के प्रतिनिधि मुनि श्री सौभाग्यमलजी महाराज (११) मंत्री मुनि श्री पृथ्वीचंद्रजी म० सा० के प्रतिनिधि मुनि श्री सरेमलजी महाराज (१२) पण्डित मुनि श्री समरथमलजी महाराज (आमंत्रित) (१३) पण्डित मुनि श्री मदनलालजी महाराज (आमन्त्रित) (१४) कवि मुनि श्री अमरचंद्रजी महाराज (आमन्त्रित)।

मंत्री मुनि श्री मोतीलालजी महाराज सा०, पं० फूलचंदजी म० सा० और पं० छगनलालजी म० सा० के पत्र आये थे।

सचित्ताचित्त निर्णायक समिति ६ तथा तिथि निर्णय समिति ८ सभी मुनिसदस्य उपस्थित थे। उपाचार्य श्री गणेशीललजी म० सा० की अध्यक्षता और व्या० वा० पं० मुनि श्री मदनलालजी म० सा० की शान्तिरक्षकता में मत्री मंडल तथा दोनों निर्णायक समितियों का कार्य संयुक्त रूप से चला। समय-प्रातः काल ६ से १०॥ और दुपहर में १ से ३ तक कार्य चलता था। कभी २ घण्टाभर अधिक बैठक चलती थी। कुल ३३ प्रस्ताव पास हुए जिसमें से प्रकाशन योग्य २५ प्रस्ताव निम्न प्रकार प्रकाशित किये जाते हैं।

प्रस्ताव १—(पास हुए प्रकाशनीय प्रस्ताव)

(अ) जो प्रस्ताव पास होंगे वे शास्त्र को मुख्य रूप से लक्ष्य में रखकर सर्वानुमति से या बहुमति से अर्थात् जो प्रस्ताव ऐसे प्रसंग पर पहुंच जांय कि उसे बहुमत से पास करना आवश्यक हो जाता है तो वह बहुमत से पास किये जा सकते हैं। बहुमत से तात्पर्य ३/४ अर्थात् ७५ प्रतिशत से लिया जायगा। (सर्वानुमति से पास)। (पण्डित मुनि समर्थमलजी महाराज का समर्थन भी प्राप्त हुआ।)

(ब) भिन्न २ आचार्य भी शास्त्र में चले है परन्तु श्री बर्द्ध० स्था० जैन श्रमणसंघ में एक आचार्य रहे इस हद तक मेरा उससे विरोध नहीं है। शास्त्रानुसार एक आचार्य भी हो सकता है।

(इस प्रस्ताव पर भी पण्डित समर्थमलजी म० का समर्थन प्राप्त हुआ)।

प्रस्ताव २—सादड़ी सम्मेलन के प्रस्ताव नं० ८, ६, १०, १८, १६, २० जो मन्त्री मण्डल के हैं, उन पर उक्त टिप्पणी के साथ पण्डित समर्थमलजी म० का समर्थन प्राप्त हुआ। शास्त्रीय पदवियों की तरफ श्रमण-संघ की उपेक्षा बुद्धि नहीं है। भविष्य में उन पर विचार किया जायेगा और वर्तमान में भी चालू है।

प्रस्ताव ३-साधु-साध्वी बाहर गांव से दर्शनार्थ आये हुए गृहस्थियों से तीन दिन पहले आहार (भोजन) पानी नहीं ले सकते हैं। ग्रामानुग्राम विहार करते समय साथ मे रहने वाले या सामने आने वाले गृहस्थों का आहार पानी नहीं लेवें। (सर्वानुमति से पास)।

प्रस्ताव ४-(मन्त्री मंडल का कार्यक्रम इस प्रकार है)

प्रान्तवार प्रत्येक मन्त्रियों को दीक्षा, प्रायश्चित और साहित्य शिक्षण को छोड़कर अवशेष पांचों कार्य जैसे चातुर्मास, विहार, सेवा, आक्षेप निवारण और प्रचार कार्य सर्व सत्ता के रूप में सौंपे जाते हैं और मंत्रियों का संबंध भी प्रधानमंत्रीजी म० से रहेगा और प्रधानमंत्रीजी मं० आचार्य व उपाचार्य श्रीजीकी आज्ञा प्राप्त करेंगे। दीक्षा तथा प्रायश्चित का कार्य स्वतन्त्र रूप से प्रधानमंत्री के जिम्मे रहेगा। साहित्य शिक्षण संबंधी कार्य मुनिजी श्री सुशील कुमारजी को सौंपा जाता है वे चाहे तो अन्य साथी मुनिवरों का सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। वे प्रधानमत्रीजी को दिखावें और उनके द्वारा प्रामाणित हुए बिना प्रकाशित न हों।

प्रान्तों का नाम	मंत्री मुनिवरों के नाम
१. अलवर, भरतपुर, यू० पी०	पं० मंत्री श्री पृथ्वीचंदजी महाराज
२ पंजाब, जंगलदेश	" " " शुक्लचंदजी "
३ दिल्ली, बांगड़, खादर, हरियाणा	" " " प्रेमचंदजी "
४ बीकानेर, स्थली प्रान्त	" " " सहस्रमलजी "
५ मारवाड़, गौड़वाड़	" " " मिश्रीमलजी "
	स०मंत्री पं० हस्तीमलजी "
६ अजमेर, मेरवाड़ा, किशनगढ, जयपुर, टोंक, माधोपुर आदि	पं० मन्त्री श्री पन्नालालजी "
	" " " किशनलालजी "
७ मध्यप्रदेश, (सी० पी) महाराष्ट्र	स० मंत्री श्री प्यारचंदजी "
८ मध्यभारत, बंबई, ग्वालियर, कोटा आदि	पं० मंत्री श्री फूलचंदजी "
९ कर्नाटक, मद्रास, आन्ध्र, मैसूर	" " " मोतीलालजी "
१० मेवाड, पंचमहल	पुष्करमुनिजी "
११ गुजरात, काठियावाड, कच्छ	केन्द्रीय

नोट—उपरोक्त मंत्रियों को पांचों कार्य आगामी मन्त्री-मण्डल की बैठक तक सर्वसत्ता के रूप में सौंपा जाता है। (सर्वानुमति से पास)

प्रस्ताव ५-(पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए निम्न साधु एवं श्रावकों की एक कमेटी बनाई गई)

कविवर्य श्री अमरचंद्रजी महाराज, सह मन्त्री श्री हस्तीमलजी महाराज, पण्डित श्रीमलजी महाराज, पण्डित सुशीलकुमारजी महाराज। गृहस्थों में से—पण्डित शोभाचन्द्रजी भारिल्ल, डॉ इन्द्र एम० ए०, पण्डित पूर्णचन्द्रजी दक, श्री धीरजभाई और पण्डित बद्रीनारायणजी शुक्ल। (सर्वानुमति से पास)

प्रस्ताव ६-(जैन सिद्धान्त की जानकारी के बाद कोई संस्कृत आदि की उच्च परीक्षा देना चाहे तो मुनि धर्म की मर्यादा मे दी जा सकेगी। किन्तु आचार्य, उपाचार्य, प्रधान मन्त्रीजी की अनुमति अवश्य प्राप्त करनी होगी। आचार्य आदि योग्यतानुसार जिस परीक्षा के लिये अनुमति दें-उसी परीक्षा में वह बैठ सकेगा। सिद्धान्त की जानकारी का परीक्षण प्रधान मन्त्रीजी करेंगे। (सर्वानुमति से पास)

प्रस्ताव ७–(श्रमणसंघ में जो मंत्री मुनि सम्मिलित नहीं हुए उनके लिए निम्न प्रस्ताव पास हुआ)

अनुपस्थित मंत्रियों में श्रमणसंघ मे जो अभी तक प्रविष्ट नहीं हुए हैं और उल्टा विरुद्ध प्रचार कर रहे है यदि वे अपना विरोध पहले वापिस लेकर चातुर्मास के पहले श्रमण संघ के विधानानुसार श्रमण संघ में प्रविष्ट होना चाहें तो वे प्रविष्ट हो सकते है अन्यथा वे और उनके सहयोगी साधु साध्वी श्रमण संघ से अलग समझे जावेंगे।

प्रस्ताव ८–(ब) जो मत्री पद की स्वीकृति के साथ श्रमण संघ मे प्रविष्ट होने की स्वीकृति नहीं दे रहे हैं परन्तु विरुद्ध प्रचार भी कर रहे है; वे चातुर्मास के पहले श्रमण सघ के विधानानुसार श्रमण संघ मे प्रविष्ट होने की स्वीकृति दे दें अन्यथा वे और उसके सहयोगी साधु साध्वी श्रमण संघ से अलग समझे जावेंगे।

प्रस्ताव ९–तिथि पत्र निकालने के लिए ५ मुनियों की समिति तैयार की गई—पं० मंत्री मुनि श्री पन्नालालजी महाराज, पं० मुनि श्री किस्तूरचंदजी महाराज, पण्डित समर्थमलजी महाराजमरुधर केसरी मंत्री मुनि श्री मिश्रीलजी महाराज और सह मन्त्री श्री हस्तीमलजी महाराज।

तिथि पत्रिका के निर्माण के सम्बन्ध में सब अधिकार उक्त मुनिराजों की समिति को सौंपे जाते हैं यह पत्र हो सके जहां तक आश्विन शु० पूर्णिमा के पहले-पहले तैयार हो जाना चाहिये। यह तिथि पत्र श्री वर्द्ध० स्था० जैन चतुर्विध श्री संघ को मान्य होगा। (सर्वानुमति से पास)

प्रस्ताव १०—तिथि पर्व निश्चय एवं सचित्ताचित्त निश्चय का निर्णय अगले मंत्रीमंडल पर रखा जाता है। जब तक दोनों पक्ष वाले अपना-अपना मत निबन्ध के रूप में श्री प्रधानमंत्रीजी के पास भेजे। जब तक उक्त निर्णय न हो तब तक ध्वनि विस्तारक यंत्र मे न बोला जाय, उसी प्रकार केला भी न लिया जाय। तिथि पर्व के सम्बन्ध मे तब तक तिथि निर्णायक समिति अपना काम करे। (सर्वानुमति से पास)

प्रस्ताव ११—सादडी सम्मेलन मे जिन जिन सम्प्रदायों के प्रतिनिधि जितने साधु साध्वियों की तरफ से आये थे और विलीनीकरण करके श्री वर्द्धमान जैन श्रमण संघ मे सम्मिलित हुए है उन सब साधु साध्वियों को इस श्रमण संघ में सम्मिलित समझे जावें। जिन्होंने प्रतिज्ञा पत्र नही भरे हैं उनसे प्रतिज्ञा पत्र भरवाने का प्रयत्न किया जावे।

प्रस्ताव १२–सादडी साधु सम्मेलन के पश्चात् हमारे धर्म के निम्न सितारे देवलोकवासी हो गये है उनके वियोग से यह मंत्री मंडल हार्दिक दुःख प्रदर्शित करता है। उनकी आत्म शान्ति चाहता है और उनके संत परिवार तथा साध्वी परिवार के साथ संवेदना प्रकट करता है—"श्री बोथलालजी महाराज, ब्यावर, २ श्री शान्तिलालजी महाराज, बीकानेर ३ श्री पं० चौथमलजी महाराज, जोधपुर ४ श्री धनराज जी महाराज, जोधपुर ५ श्री मगनमलजी महाराज सम्मेलन के पूर्व। महासतियांजी—१ पतासांजी बगड़ी, २ केशरकवरजी नयाशहर, ३ चांदाजी लुधियाना, ४ गुलाबकंवरजी पाली सडक, ५ हेमकवरजी धासिया, ६ गुलाबकंवरजी पीपाड, ७ फूलकंवरजी पूना, ८ सुन्दरकवरजी मन्दसोर, ९ पानकंवरजी जोधपुर, १० खामाजी भोपालगढ़ आदि स्वर्गस्थ मुनिराज एवं महासतियांजी म०। (सर्वानुमति से पास)

प्र० १३ मे नवदीक्षितों के लिए शुभकामना प्रकट की गई। प्र० १४ में परीक्षा फल के लिए कविवर्य श्री अमरचंदजी म० की नियुक्ति। प्र० १५ मे दीक्षार्थियों को प्रधान मंत्री की आज्ञा प्राप्ति के लिए। प्र० १६ व्या० वा० पं० श्री मदनलालजी म० को सुचारूरूप से मत्री मंडल की व्यवस्था करने पर धन्यवाद दिया गया प्र० १७ गुमनाम पत्र के द्वारा कोई आक्षेप करेगा तो उस पर ध्यान न देने के विषय में। प्र० १८ व्या० वा० मदनलालजी म० तथा कविवर्य श्री अमरचंदजी म० का आभार माना गया। प्र० १९ मे दोनों समितियों के सदस्य मुनियों को दिया गया। प्र० २० दर्शक मुनियों को धन्यवाद दिया गया। प्र० २१ मे रिपोर्टर पं० मुनि श्री नेमीचंदजी म० तथा पं० मुनि श्री आईदानजी म० को धन्यवाद दिया गया। मंगल कामना के साथ मं० मं० की कार्यवाही पूर्ण की गई।

परिच्छेद—६

श्री स्थानकवासी जैनधर्म के उन्नायक मुनिराज

१—पंजाब के पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज

पूज्य श्री लवजी ऋषि जी महाराज के १०वे पट्टधर आचार्यरूप में पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज प्रसिद्ध हुए। आपकी जन्मभूमि अमृतसर थी। आपकी दीक्षा वि० स० १८६८ में हुई थी। अपने प्रचण्ड प्रभाव से पंजाब में आपने धर्म-प्रचार किया और वि० सं० १९१३ में अमृतसर में ही आपका स्वर्गवास हुआ। पंजाब सम्प्रदाय आपको ही अपना आद्य-आचार्य मानती है। पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज के मुनि रामबक्षजी आदि कितने ही मुख्य शिष्य थे जिनमें चार प्रधान थे .—

पूज्य काशीराम जी महाराज, पूज्य मोतीलाल जी महाराज, पूज्य मयाराम जी महाराज और पूज्य लालचन्द जी महाराज।

पूज्य मयाराम जी महाराज और लालचन्द जी महाराज ये दोनों मुनिराज उस समय के बड़े ही प्रभावशाली सन्त थे। मारवाड़ से लेकर अम्बाला तक पू० मयाराम जी महाराज के अपूर्व तेज का प्रसरित था।

श्री लालचन्द जी महाराज का अधिक वर्चस्व पश्चिमी पंजाब पर था। स्यालकोट में अन्तिम स्थिरवास करने के कारण आपका प्रचार वहीं के आसपास के क्षेत्रों में अधिक हुआ। आपके मुख्य चार शिष्य थे जिनमें तीसरे श्री गोकुलचन्द जी महाराज थे। गोकुलचन्द जी महाराज के शिष्य जगदीश मुनि और जगदीश मुनि के शिष्य विमल मुनि इस समय विचर रहे हैं। आप प्रभावशाली वक्ता और धर्म प्रचारक है। आपको जैन समाज की ओर से 'जैन भूषण' की उपाधि प्रदान की गई है। पंजाब, दिल्ली और काश्मीर-जम्मू के प्रदेशों में घूम-घूम करके जैन एवं जैनेतरों में अहिंसा धर्म का ध्वज फहरा रहे हैं। आप के व्याख्यानों मे दस-दस हजार की जनमेदिनी उमड़ पड़ती है। काश्मीर के प्रधान मंत्री बक्षी गुलाम मुहम्मद भी आपका व्याख्यान श्रवण करने के लिए पधारते हैं।

लालचन्द जी महाराज के प्रथम शिष्य लक्ष्मीचन्द जी महाराज थे, जिनके शिष्य रामस्वरूप जी महाराज हुए। आपके जीवन में एक विलक्षण घटना घटित हुई। दीक्षा के दो वर्ष बाद लक्ष्मीचन्द जी मूर्तिपूजक सम्प्रदाय में सम्मिलित हो गये और रामस्वरूप जी को भी अपनी ओर खींचने का प्रयत्न किया। किन्तु रामस्वरूप जी तो शुद्ध और सत्य धर्म मे दृढ़तारूप से आस्थावान् थे, अत. अपनी श्रद्धा से विचलित नहीं हुए। गुरु के चले जाने पर भी शिष्य ने अपनी शान नहीं छोड़ी। अन्त मे आपने नाभा में स्थिरवास किया। आपके अनेक शिष्य हुए जिनमे कविवर अमर मुनि का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आपका असामयिक अवसान हुआ जिससे देश तथा समाज ने एक अमूल्य रत्न गुमा दिया। आप समाज की एक दिव्य विभूति थे और संत-परम्परा की एक सुदृढ़ कड़ी के समान थे। आप अहिंसा के प्रचारक, शान्ति के प्रकाशक, आत्मा के उजालक और हृदय के धनी थे। आपने लगभग सात लाख लोगों को मांस-मदिरा का

प्रस्ताव ७-(श्रमणसंघ में जो मंत्री मुनि सम्मिलित नहीं हुए उनके लिए निम्न प्रस्ताव पास हुआ)

अनुपस्थित मंत्रियों में श्रमणसंघ में जो अभी तक प्रविष्ट नहीं हुए हैं और उल्टा विरुद्ध प्रचार कर रहे हैं, यदि वे अपना विरोध पहले वापिस लेकर चातुर्मास के पहले श्रमण संघ के विधानानुसार श्रमण संघ में प्रविष्ट होना चाहे तो वे प्रविष्ट हो सकते है अन्यथा वे और उनके सहयोगी साधु साध्वी श्रमण संघ से अलग समझे जावेंगे।

प्रस्ताव ८-(ब) जो मंत्री पद की स्वीकृति के साथ श्रमण संघ मे प्रविष्ट होने की स्वीकृति नहीं दे रहे हैं परन्तु विरुद्ध प्रचार भी कर रहे है; वे चातुर्मास के पहले श्रमण सघ के विधानानुसार श्रमण सघ मे प्रविष्ट होने की स्वीकृति दे दें अन्यथा वे और उसके सहयोगी साधु साध्वी श्रमण संघ से अलग समझे जावेंगे।

प्रस्ताव ९-तिथि पत्र निकालने के लिए ५ मुनियों की समिति तैयार की गई—पं० मंत्री मुनि श्री पन्नालालजी महाराज, पं० मुनि श्री किस्तूरचंदजी महाराज, पण्डित समर्थमलजी महाराजमरुधर केसरी मंत्री मुनि श्री मिश्रीलजी महाराज और सह मन्त्री श्री हस्तीमलजी महाराज।

तिथि पत्रिका के निर्माण के सम्बन्ध में सब अधिकार उक्त मुनिराजों की समिति को सौंपे जाते हैं। यह पत्र हो सके जहां तक आश्विन शु० पूर्णिमा के पहले-पहले तैयार हो जाना चाहिये। यह तिथि पत्र श्री वर्द्ध० स्था० जैन चतुर्विध श्री संघ को मान्य होगा। (सर्वानुमति से पास)

प्रस्ताव १०—तिथि पर्व निश्चय एवं सचित्ताचित्त निश्चय का निर्णय अगले मंत्रीमंडल पर रखा जाता है। जब तक दोनों पक्ष वाले अपना-अपना मत निवन्ध के रूप में श्री प्रधानमत्रीजी के पास भेजें। जब तक उक्त निर्णय न हो तब तक ध्वनि विस्तारक यंत्र मे न बोला जाय, उसी प्रकार केला भी न लिया जाय। तिथि पर्व के सम्बन्ध मे तब तक तिथि निर्णायक समिति अपना काम करे। (सर्वानुमति से पास)

प्रस्ताव ११—सादडी सम्मेलन में जिन जिन सम्प्रदायों के प्रतिनिधि जितने साधु साध्वियों की तरफ से आये थे और विलीनीकरण करके श्री वर्द्धमान जैन श्रमण संघ में सम्मिलित हुए है उन सब साधु साध्वियों को इस श्रमण संघ मे सम्मिलित समझे जावे। जिन्होंने प्रतिज्ञा पत्र नही भरे है उनसे प्रतिज्ञा पत्र भरवाने का प्रयत्न किया जावे।

प्रस्ताव १२-सादडी साधु सम्मेलन के पश्चात् हमारे धर्म के निम्न सितारे देवलोकवासी हो गये है उनके वियोग से यह मंत्री मंडल हार्दिक दुःख प्रदर्शित करता है। उनकी आत्म शान्ति चाहता है और उनके संत परिवार तथा साध्वी परिवार के साथ संवेदना प्रकट करता है—"श्री बोथलालजी महाराज, ब्यावर, २ श्री शान्तिलालजी महाराज, बीकानेर ३ श्री पं० चौथमलजी महाराज, जोधपुर ४ श्री धनराज जी महाराज, जोधपुर ५ श्री मगनमलजी महाराज सम्मेलन के पूर्व। महासतियांजी—१ पतासांजी बगड़ी, २ केशरकवरजी नयाशहर, ३ चांदाजी लुधियाना, ४ गुलाबकंवरजी पाली सडक, ५ हेमकंवरजी धासिया, ६ गुलाबकंवरजी पीपाड, ७ फूलकंवरजी पूना, ८ सुन्दरकवरजी मन्दसोर, ९ पानकंवरजी जोधपुर, १० खामाजी भोपालगढ़ आदि स्वर्गस्थ मुनिराज एवं महासतियांजी म०। (सर्वानुमति से पास)

प्र० १३ मे नवदीक्षितों के लिए शुभकामना प्रकट की गई। प्र० १४ में परीक्षा फल के लिए कविवर्य श्री अमरचंदजी म० की नियुक्ति। प्र० १५ मे दीक्षार्थियों को प्रधान मत्री की आज्ञा प्राप्ति के लिए। प्र० १६ व्या० वा० पं० श्री मदनलालजी म० को सुचारूरूप से मत्री मंडल की व्यवस्था करने पर धन्यवाद दिया गया प्र० १७ गुमनाम पत्र के द्वारा कोई आक्षेप करेगा तो उस पर ध्यान न देने के विषय में। प्र० १८ व्या० वा० मदनलालजी म० तथा कविवर्य श्री अमरचंदजी म० का आभार माना गया। प्र० १९ मे दोनों समितियों के सदस्य मुनियों को दिया गया। प्र० २० दर्शक मुनियों को धन्यवाद दिया गया। प्र० २१ मे रिपोर्टर पं० मुनि श्री नेमीचंदजी म० तथा पं० मुनि श्री आईदानजी म० को धन्यवाद दिया गया। मंगल कामना के साथ म० मं० की कार्यवाही पूर्ण की गई।

परिच्छेद—६

श्री स्थानकवासी जैनधर्म के उन्नायक मुनिराज

१—पंजाब के पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज

पूज्य श्री लवजी ऋषि जी महाराज के १०वे पट्टधर आचार्यरूप में पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज प्रसिद्ध हुए। आपकी जन्मभूमि अमृतसर थी। आपकी दीक्षा वि० स० १८९८ में हुई थी। अपने प्रचण्ड प्रभाव से पंजाब में आपने धर्म-प्रचार किया और वि० सं० १९१३ में अमृतसर मे ही आपका स्वर्गवास हुआ। पंजाब सम्प्रदाय आपको ही अपना आद्य-आचार्य मानती है। पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज के मुनि रामबक्षजी आदि कितने ही मुख्य शिष्य थे जिनमें चार प्रधान थे —

पूज्य काशीराम जी महाराज, पूज्य मोतीलाल जी महाराज, पूज्य मयाराम जी महाराज और पूज्य लालचन्द जी महाराज।

पूज्य मयाराम जी महाराज और लालचन्द जी महाराज ये दोनों मुनिराज उस समय के बड़े ही प्रभावशाली सन्त थे। मारवाड़ से लेकर अम्बाला तक पू० मयाराम जी महाराज के अपूर्व तेज का प्रसरित था।

श्री लालचन्द जी महाराज का अधिक वर्चस्व पश्चिमी पंजाब पर था। स्यालकोट मे अन्तिम स्थिरबास करने के कारण आपका प्रचार वहीं के आसपास के क्षेत्रों में अधिक हुआ। आपके मुख्य चार शिष्य थे जिनमें तीसरे श्री गोकुलचन्द जी महाराज थे। गोकुलचन्द जी महाराज के शिष्य जगदीश मुनि और जगदीश मुनि के शिष्य विमल मुनि इस समय विचर रहे हैं। आप प्रभावशाली वक्ता और धर्म प्रचारक हैं। आपको जैन समाज की ओर से 'जैन भूषण' की उपाधि प्रदान की गई है। पंजाब, दिल्ली और काश्मीर-जम्मू के प्रदेशों में घूम-घूम करके जैन एवं जैनेतरों में अहिंसा धर्म का ध्वज फहरा रहे हैं। आप के व्याख्यानों में दस-दस हजार की जनमेदिनी उमड़ पड़ती है। काश्मीर के प्रधान मंत्री बक्षी गुलाम मुहम्मद भी आपका व्याख्यान श्रवण करने के लिए पधारते हैं।

लालचन्द जी महाराज के प्रथम शिष्य लक्ष्मीचन्द जी महाराज थे, जिनके शिष्य रामस्वरूप जी महाराज हुए। आपके जीवन मे एक विलक्षण घटना घटित हुई। दीक्षा के दो वर्ष बाद लक्ष्मीचन्द जी मूर्तिपूजक सम्प्रदाय मे सम्मिलित हो गये और रामस्वरूप जी को भी अपनी ओर खींचने का प्रयत्न किया। किन्तु रामस्वरूप जी तो शुद्ध और सत्य धर्म में दृढ़तारूप से आस्थावान् थे, अत अपनी श्रद्धा से विचलित नहीं हुए। गुरु के चले जाने पर भी शिष्य ने अपनी शान नहीं छोड़ी। अन्त में आपने नाभा में स्थिरवास किया। आपके अनेक शिष्य हुए जिनमे कविवर अमर मुनि का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आपका असामयिक अवसान हुआ जिससे देश तथा समाज ने एक अमूल्य रत्न गुमा दिया। आप समाज की एक दिव्य विभूति थे और संत-परम्परा की एक सुदृढ़ कड़ी के समान थे। आप अहिंसा के प्रचारक, शान्ति के प्रकाशक, आत्मा के उजालक और हृदय के धनी थे। आपने लगभग सात लाख लोगों को मांस-मदिरा का

प्रस्ताव ७-(श्रमणसंघ में जो मंत्री मुनि सम्मिलित नहीं हुए उनके लिए निम्न प्रस्ताव पास हुआ)

अनुपस्थित मंत्रियों में श्रमणसंघ में जो अभी तक प्रविष्ट नहीं हुए हैं और उल्टा विरुद्ध प्रचार कर रहे हैं, यदि वे अपना विरोध पहले वापिस लेकर चातुर्मास के पहले श्रमण संघ के विधानानुसार श्रमण संघ में प्रविष्ट होना चाहे तो वे प्रविष्ट हो सकते हैं अन्यथा वे और उनके सहयोगी साधु साध्वी श्रमण संघ से अलग समझे जावेंगे।

प्रस्ताव ८-(ब) जो मंत्री पद की स्वीकृति के साथ श्रमण संघ मे प्रविष्ट होने की स्वीकृति नहीं दे रहे हैं परन्तु विरुद्ध प्रचार भी कर रहे है; वे चातुर्मास के पहले श्रमण सघ के विधानानुसार श्रमण संघ मे प्रविष्ट होने की स्वीकृति दे दें अन्यथा वे और उसके सहयोगी साधु साध्वी श्रमण संघ से अलग समझे जावेंगे।

प्रस्ताव ९-तिथि पत्र निकालने के लिए ५ मुनियों की समिति तैयार की गई—पं० मंत्री मुनि श्री पन्नालालजी महाराज, पं० मुनि श्री किस्तूरचंदजी महाराज, पण्डित समर्थमलजी महाराजमरुधर केसरी मत्री मुनि श्री मिश्रीलजी महाराज और सह मन्त्री श्री हस्तीमलजी महाराज।

तिथि पत्रिका के निर्माण के सम्बन्ध में सब अधिकार उक्त मुनिराजों की समिति को सौंपे जाते हैं। यह पत्र हो सके जहां तक आश्विन शु० पूर्णिमा के पहले-पहले तैयार हो जाना चाहिये। यह तिथि पत्र श्री वर्द्ध० स्था० जैन चतुर्विध श्री संघ को मान्य होगा। (सर्वानुमति से पास)

प्रस्ताव १०—तिथि पर्व निश्चय एवं सचित्ताचित्त निश्चय का निर्णय अगले मंत्रीमंडल पर रखा जाता है। जब तक दोनों पक्ष वाले अपना-अपना मत निवन्ध के रूप मे श्री प्रधानमत्रीजी के पास भेजें। जब तक उक्त निर्णय न हो तब तक ध्वनि विस्तारक यंत्र मे न वोला जाय, उसी प्रकार केला भी न लिया जाय। तिथि पर्व के सम्बन्ध मे तब तक तिथि निर्णायक समिति अपना काम करे। (सर्वानुमति से पास)

प्रस्ताव ११—सादडी सम्मेलन मे जिन जिन सम्प्रदायों के प्रतिनिधि जितने साधु साध्वियों की तरफ से आये थे और विलीनीकरण करके श्री वर्द्धमान जैन श्रमण संघ मे सम्मिलित हुए है उन सब साधु साध्वियों को इस श्रमण संघ मे सम्मिलित समझे जावे। जिन्होंने प्रतिज्ञा पत्र नही भरे है उनसे प्रतिज्ञा पत्र भरवाने का प्रयत्न किया जावे।

प्रस्ताव १२—सादडी साधु सम्मेलन के पश्चात् हमारे धर्म के निम्न सितारे देवलोकवासी हो गये हैं उनके वियोग से यह मंत्री मंडल हार्दिक दुःख प्रदर्शित करता है। उनकी आत्म शान्ति चाहता है और उनके संत परिवार तथा साध्वी परिवार के साथ संवेदना प्रकट करता है—"श्री बोथलालजी महाराज, ब्यावर, २ श्री शान्तिलालजी महाराज, बीकानेर ३ श्री पं० चौथमलजी महाराज, जोधपुर ४ श्री धनराज जी महाराज, जोधपुर ५ श्री मगनमलजी महाराज सम्मेलन के पूर्व। महासतियांजी—१ पतासांजी बगड़ी, २ केशरकवरजी नयाशहर, ३ चांदाजी लुधियाना, ४ गुलाबकंवरजी पाली सडक, ५ हेमकंवरजी धासिया, ६ गुलाबकंवरजी पीपाड, ७ फूलकवरजी पूना, ८ सुन्दरकवरजी मन्दसोर, ९ पानकंवरजी जोधपुर, १० खामाजी भोपालगढ़ आदि स्वर्गस्थ मुनिराज एवं महासतियांजी म०। (सर्वानुमति से पास)

प्र० १३ मे नवदीक्षितों के लिए शुभकामना प्रकट की गई। प्र० १४ में परीक्षा फल के लिए कविवर्य श्री अमरचंदजी म० की नियुक्ति। प्र० १५ मे दीक्षार्थियों को प्रधान मत्री की आज्ञा प्राप्ति के लिए। प्र० १६ व्या० वा० पं० श्री मदनलालजी म० को सुचारूरूप से मंत्री मंडल की व्यवस्था करने पर धन्यवाद दिया गया प्र० १७ गुम नाम पत्र के द्वारा कोई आक्षेप करेगा तो उस पर ध्यान न देने के विषय में। प्र० १८ व्या० वा० मदनलालजी म० तथा कविवर्य श्री अमरचंदजी म० का आभार माना गया। प्र० १९ मे दोनों समितियों के सदस्य मुनियों को दिया गया। प्र० २० दर्शक मुनियों को धन्यवाद दिया गया। प्र० २१ में रिपोर्टर पं० मुनि श्री नेमीचंदजी म० तथा पं० मुनि श्री आईदानजी म० को धन्यवाद दिया गया। मंगल कामना के साथ मं० म० की कार्यवाही पूर्ण की गई।

परिच्छेद—६

श्री स्थानकवासी जैनधर्म के उन्नायक मुनिराज

१—पंजाब के पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज

पूज्य श्री लवजी ऋषि जी महाराज के १०वे पट्टधर आचार्यरूप में पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज प्रसिद्ध हुए। आपकी जन्मभूमि अमृतसर थी। आपकी दीक्षा वि० स० १८९८ में हुई थी। अपने प्रचण्ड प्रभाव से पंजाब में आपने धर्म-प्रचार किया और वि० सं० १९१३ में अमृतसर में ही आपका स्वर्गवास हुआ। पंजाब सम्प्रदाय आपको ही अपना आद्य-आचार्य मानती है। पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज के मुनि रामबक्षजी आदि कितने ही मुख्य शिष्य थे जिनमें चार प्रधान थे —

पूज्य काशीराम जी महाराज, पूज्य मोतीलाल जी महाराज, पूज्य मयाराम जी महाराज और पूज्य लालचन्द जी महाराज।

पूज्य मयाराम जी महाराज और लालचन्द जी महाराज ये दोनों मुनिराज उस समय के बड़े ही प्रभावशाली सन्त थे। मारवाड़ से लेकर अम्बाला तक पू० मयाराम जी महाराज के अपूर्व तेज का प्रसरित था।

श्री लालचन्द जी महाराज का अधिक वर्चस्व पश्चिमी पंजाब पर था। स्यालकोट मे अन्तिम स्थिरवास करने के कारण आपका प्रचार वहीं के आसपास के क्षेत्रों में अधिक हुआ। आपके मुख्य चार शिष्य थे जिनमें तीसरे श्री गोकुलचन्द जी महाराज थे। गोकुलचन्द जी महाराज के शिष्य जगदीश मुनि और जगदीश मुनि के शिष्य विमल मुनि इस समय विचर रहे है। आप प्रभावशाली वक्ता और धर्म प्रचारक हैं। आपको जैन समाज की ओर से 'जैन भूषण' की उपाधि प्रदान की गई है। पंजाब, दिल्ली और काश्मीर-जम्मू के प्रदेशों में घूम-घूम करके जैन एव जैनेतरों में अहिंसा धर्म का ध्वज फहरा रहे हैं। आप के व्याख्यानों में दस-दस हजार की जनमेदिनी उमड़ पड़ती है। काश्मीर के प्रधान मंत्री बक्षी गुलाम मुहम्मद भी आपका व्याख्यान श्रवण करने के लिए पधारते हैं।

लालचन्द जी महाराज के प्रथम शिष्य लक्ष्मीचन्द जी महाराज थे, जिनके शिष्य रामस्वरूप जी महाराज हुए। आपके जीवन में एक विलक्षण घटना घटित हुई। दीक्षा के दो वर्ष बाद लक्ष्मीचन्द जी मूर्तिपूजक सम्प्रदाय मे सम्मिलित हो गये और रामस्वरूप जी को भी अपनी ओर खींचने का प्रयत्न किया। किन्तु रामस्वरूप जी तो शुद्ध और सत्य धर्म में दृढ़तारूप से आस्थावान् थे, अत. अपनी श्रद्धा से विचलित नहीं हुए। गुरु के चले जाने पर भी शिष्य ने अपनी शान नहीं छोड़ी। अन्त मे आपने नाभा में स्थिरवास किया। आपके अनेक शिष्य हुए जिनमे कविवर अमर मुनि का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आपका असामयिक अवसान हुआ जिससे देश तथा समाज ने एक अमूल्य रत्न गुमा दिया। आप समाज की एक दिव्य विभूति थे और संत-परम्परा की एक सुदृढ़ कड़ी के समान थे। आप अहिंसा के प्रचारक, शान्ति के प्रसारक, आत्मा के उजालक और हृदय के धनी थे। आपने लगभग सात लाख लोगों को मांस-मदिरा का

त्याग कराया था। खन्ना जैसे नगर को जैन-धर्म के रंग में रंग देने का श्रेय इसी शांतमना महात्मा का ही काम था। यदि कुछ और समय तक यह महात्मा जीवित रह पाता तो समाज और अधिक सुख की छाया में विश्रांति लेता।

मयाराम जी महाराज के बड़े-बड़े तपस्वी शिष्य हुए—उनमें श्री वृद्धिचन्द्र जी महाराज और उपाध्याय मुनि श्री प्रेमचन्द जी महाराज विशेष प्रसिद्ध हैं।

२—पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज

पूज्य श्री सोहनलालजी महाराजने वि० सं० १९३३ में पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज सा० से दीक्षा ग्रहण की। शास्त्रों का गहरा अध्ययन कर अत्यन्त कुशलतापूर्वक आपने आचार्यपद पाया। आप जैन आगमों के विशेषज्ञ थे, ज्योतिष शास्त्रों के विद्वान् थे और बड़े क्रियापात्र आचार्य हुए। आप की संगठन-शक्ति असाधारण थी। हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी में आप के नाम से श्री पार्श्वनाथ विद्यालय की स्थापना की गई है, जिसमें जैन धर्म के उच्च स्तर का शिक्षण दिया जाता है। संस्था की तरफ से "श्रमण" नाम का मासिक पत्र निकाला जाता है।

३—गणिवर्य श्री उदयचन्दजी महाराज

गणिवर्य श्री उदयचन्दजी महाराज का जन्म ब्राह्मण कुल मे हुआ था। संस्कारों के अनुसार उच्च शिक्षण प्राप्त कर और जैन-श्रमण बनकर आगमोंका गम्भीर अध्ययन और मनन किया। मूर्तिपूजा के सम्बन्ध में शास्त्रों के आधार पर अनेक प्रसिद्ध आचार्यो से चर्चा कर अपने सैद्धान्तिक पक्ष को सुदृढ बनाया। अजमेर सम्मेलन में आप शान्ति-रक्षक के रूप मे नियुक्त किये गए थे। पंजाब के समस्त समाज ने गणिवर्य के रूप में आपको स्वीकृत किया था। जैन एवं जैनेतरों पर आपका अद्भुत प्रभाव था। इस प्रकार ८५ वर्ष की पकी हुई अवस्था मे पण्डित-मरणपूर्वक दिल्ली में कालधर्म को प्राप्त हुए।

४—पूज्य श्री काशीरामजी महाराज

पूज्य श्री काशीरामजी म० सा० का जन्म पसरूर (स्यालकोट) में सं० १९६० में हुआ था। अठारह वर्ष की अवस्था में पूज्य श्री सोहनलाल जी महाराज के चरणों में आपने दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा के केवल नौ वर्ष पश्चात् ही आपके लिए भावी आचार्य होने की घोषणा कर दी गई थी। इस पर से यह जाना जा सकता है कि आपकी आचारशीलता तथा स्वाध्याय-परायणता कितनी तीव्र थी। आपकी आवाज खूब बुलन्द थी। अनेक गुणसम्पन्न होते हुए भी आप अत्यन्त विनम्र थे। आपने पंजाब, यू० पी०, राजस्थान, गुजरात और दक्षिण आदि सर्व प्रदेशों में विचरण किया। अत्यन्त भव्य समारोह के साथ होशियारपुर से आपको आचार्य-पद दिया गया। वीर-संघ की योजना में शतावधानी पं० मुनि श्री रत्नचन्द्र जी महाराज सा. को आपने खूब सहयोग दिया।

५—पूज्य श्री आत्मारामजी महाराज

पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज ने सं० १९२७ मे मुनि श्री गणपतराय जी म० सा० से दीक्षा ग्रहण की। आपने संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं का गहरा ज्ञान सम्पादन करके जैनागमों की हिन्दी टीका

लिखी है। "जैनागम तत्वार्थ समन्वय" आपकी मौलिक रचना है, जिसमें सुप्रसिद्ध तत्त्वार्थसूत्र की मूल आगमों के साथ संलग्न तुलना आपने की है। अति उच्च कोटि के विद्वान् होते हुए भी आप अत्यन्त सरल और सरस प्रकृति के स्वामी हैं। आप पंजाब सम्प्रदाय के वर्षों तक उपाध्याय पद पर रहे। पूज्य काशीराम जी म० सा० के पाट पर आचार्य पद पर रहे।

आप 'जैनागम रत्न' और 'जैन दिवाकर' की उपाधि से विभूषित हैं। आपका प्रत्येक क्षण स्वाध्याय और ज्ञानचर्चा में लगता है। इस समय लुधियाना में स्थिरवास कर रहे हैं। आपके अनेक गुणों से आकर्षित तथा प्रभावित होकर सादड़ी सम्मेलन ने वर्धमान श्रमण संघ का आचार्य-पद प्रदान किया। आप के अनेक शिष्यों में स्व० पं० मुनि खजानचन्दजी महाराज प्रथम शिष्य थे। पंजाब के स्थानकवासी समाज को शिक्षण और स्थानक की उपयोगिता की ओर आकर्षित करने वाले वे सर्वप्रथम महामना सन्त थे। आपके शिष्य तपस्वी लालचन्द जी महाराज कि जिनकी कठोर तपस्या और संघ-सेवा कभी भी भुलाई नहीं जा सकती।

आचार्यश्री के दूसरे शिष्य पं० हेमचन्द जी महाराज, फूलचन्द जी महाराज, ज्ञानमुनि जी महाराज, मनोहर मुनिजी महाराज आदि शास्त्र-पारंगत, विद्या-विदग्ध मुनिवर संतसमाज तथा जैन समाज के आशाकेन्द्र हैं।

६—पं० रत्न श्री प्रेमचन्द्रजी महाराज

स्थानकवासी जैन समाज में मुनि श्री प्रेमचन्द जी महाराज "पंजाब केशरी" के नाम से प्रसिद्ध है। आपका भरा हुआ और पूरे कद का शरीर और आप की सिंह-गर्जना असत्य और हिंसा के बादलों को छिन्न-भिन्न कर देती है। जड़ पूजा के आप प्रखर विरोधी हैं। जहाँ-जहाँ आप विचरण करते हैं वहाँ-वहाँ एक शूरवीर सैनिक के समान महावीर के धर्म का प्रचार करते हैं।

७—व्या० वाचस्पति श्री मदनलालजी महाराज

दूसरी तरफ श्री नाथूराम जी महाराज के शिष्य पं० मुनि श्री मदनलाल जी महाराज जो प्रसिद्ध वक्ता, शास्त्र के मर्मज्ञ और सादड़ी-सम्मेलन में शांति-रक्षक के रूप में रहे थे "व्याख्यान वाचस्पति" के नाम से समाज में सुपरिचित है। आपकी आती हुई परम्परा के परिवार मे मुनि श्री रामकिशन जी महाराज और मुनिश्री सुदर्शन जी महाराज हैं। दोनों ही संस्कृत, प्राकृत और अंग्रेजी के अच्छे विद्वान हैं और संयम तथा आत्मकल्याण की तरफ आप दोनों का विशेष लक्ष्य है। श्री रामकिशन जी महाराज से तो समाज बहुत बड़ी आशा रखता है। यह सब देन तो व्याख्यान-वाचस्पति श्री मदनलाल जी महाराज सा० की है। आपका तप, साधना, संयम, ज्ञानार्जन और सतत् जागृति का लक्ष्य सर्वथा प्रशंसनीय है।

८—पं० रत्न शुक्लचन्दजी महाराज

पं० रत्न शुक्लचन्द जी महाराज ब्राह्मणकुलोत्पन्न विद्वान मुनिराज हैं। पूज्य श्री काशीराम जी महाराज के श्रीचरणों में दीक्षा ग्रहण करके आपने शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। आप सुकवि और शान्तिप्रिय प्रवचनकार है। पहले आप पंजाब सम्प्रदाय के युवाचार्य थे और अब वर्धमान श्रमण संघ के मन्त्री हैं। आपकी शिष्य परम्परा मे महेन्द्र मुनि, राजेन्द्र मुनि और गणि श्री उदयचन्द जी महाराज की शिष्य-परम्परा मे रघुवरदयाल जी महाराज, उनके शिष्य अभयमुनि जी आदि सन्तों के हृदय में जिन शासन की निष्काम सेवा की भावना भरी है।

गेंदराम जी महाराज की शिष्य परम्परा में कस्तूरचंद जी महाराज तथा उनके शिष्य अमृत मुनि जी आज के जैन कवियों मे अग्रगण्य हैं। आप सिद्धहस्त वक्ता तथा लेखक हैं। समस्त समाज को आप से बड़ी-बड़ी आशाएँ हैं।

ऋषि सम्प्रदाय के मुनिवर्य

१—पूज्य श्री सोमजी ऋषिजी महाराज

आप अहमदाबाद कालुपुर के निवासी थे। बचपन में ही आपके धर्म के और वैराग्य के चिह्न दृष्टिगोचर होने लग गए थे। लोकांगच्छ के यतियों से कुछ शास्त्रों का ज्ञान आपने दीक्षा से पूर्व ही प्राप्त कर लिया था। पूज्य श्री लवजी ऋषिजी म० सा० का व्याख्यान श्रवणकर आपका वैराग्य और भी अधिक प्रबल हो गया और संसार से रुचि हटाकर २३ वर्ष की अवस्था में अहमदाबाद श्री संघ की सम्मति से संवत् १७१० में दीक्षा ग्रहण की। पूज्य श्री लवजी ऋषिजी म० सा० की सेवा में रहते हुए आपके अपनी कुशाग्र बुद्धि से शीघ्र ही शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त कर लिया। अपने गुरुदेव को आने वाले और विरोधियों द्वारा दिये जाने वाले अनेक उपसर्गों में प्राणों को संकट में डालकर भी गुरुदेव के साथ रहे थे। यतियों के द्वारा पूज्य श्री लवजी ऋषि जी महाराज के लिये बड़ी तेजी से षड्यन्त्र रचा जा रहा था। यहाँ तक कि उस षड्यन्त्र द्वारा पूज्य श्री की वे लोग जीवन-लीला समाप्त करने पर तुल गये। फलस्वरूप अपने घातक षड्यन्त्र में यति लोग सफल हुए और बुरहानपुर में पूज्य श्री को विषमिश्रित लड्डू वहर दिये। लड्डुओं का आहार कर लेने पर विष अपना प्रभाव दिखाने लगा। शिष्य सोमजी ने अपने गुरुदेव को आकस्मिक एवं अप्रत्याशित षड्यन्त्र का शिकार होते अपनी आँखों देखा किन्तु यह सब उपसर्ग उन्होंने हृदय को वज्र बनाकर सहन कर लिया। ऐसे असाधारण संकटों में अपनी भावनाओं को समतामय रखकर शाँत रहना यह असाधारण मानवीय गुण है।

आपने गुजरात की तरफ विहार कर दिया और ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए, धर्म का प्रचार करने लगे। उन दिनों पूज्य श्री धर्मसिंह जी महाराज का अहमदाबाद में पधारने के समाचार आपने सुने। कुछ शास्त्रीय बोलों के सम्बन्ध में आपका उनसे मतभेद था अत आप लम्बा और उग्र विहार कर पूज्य श्री धर्मसिहजी म० सा० से मिलने के लिए अहमदाबाद पधारे। दोनों मुनिवर एक ही साथ ठहरे। शास्त्रीय बोलों के सम्बन्ध में भी आपकी पूज्य श्री धर्मसिंह जी म० सा० से चर्चा हुई किन्तु इस चर्चा से आपको तुष्टि नहीं हुई। आयुष्य के सम्बन्ध में और प्रत्याख्यान आठ कोटि से या छ कोटि के सम्बन्ध में चर्चा हुई थी। आपने तथा आपके समीपस्थ शिष्यों ने पूज्य श्री धर्मसिंहजी म० को बहुत समझाया किन्तु वे नहीं समझे और उन्होंने अपनी ग्रहण की हुई मान्यता का परित्याग नहीं किया।

आपके संयम, आपकी विद्वत्ता तथा आपके प्रतिभासम्पन्न गुणों से प्रभावित होकर कई लोंकागच्छीय यतियों ने आपसे दीक्षा ग्रहण की। अपने नाम के पीछे लगने वाले 'ऋपि' शब्द को आपने सार्थक कर दिया और यही कारण है कि आपने अस्खलित रूप से जीवनपर्यन्त बेले-बेले की तपस्या की। कठिन से कठिनतर और घोर से घोरतर शीत-गर्मी के परीपह सहन करते हुए २७ वर्ष तक संयमाराधन का समाधियुक्त पंडितमरण से कालधर्म प्राप्त किया। अपनी अंतिम अवस्था मे आप अपने पीछे २४ शिष्यों का समुदाय छोड़कर स्वर्ग सिधारे। धन्य है इस ऋपि को।

२—पूज्य श्री कान जी ऋषिजी महाराज

आपकी जन्मभूमि सूरत-बन्दर थी। बचपन में आपके हृदय में वैराग्य के अंकुर जम चुके थे। दीक्षा लेने की परम अभिलाषा होते हुए भी काल न पकने के कारण आप दीक्षा नहीं ले सके। किन्तु कनहान का चातुर्मास पूर्ण कर जब पूज्य श्री सोमजी ऋषिजी महाराज सूरत पधारे तब आपने भगवती दीक्षा ग्रहण कर ली। अपने गुरुदेव पूज्य सोमजी ऋषिजी म० सा० की सेवा मे रहकर आपने शास्त्रीय ज्ञान प्रारम्भ किया और अपनी कुशाग्रबुद्धि से आप शीघ्र ही शास्त्र के परम ज्ञाता बन गये। परम्परा से सुना जाता है कि आपको लगभग ४०,००० श्लोक कण्ठस्थ थे। ऐसे थे आप असाधारण मेधावी।

आपने मालव-क्षेत्र मे विचरण कर धर्म का सर्वत्र प्रचार किया और विजय-वैजयन्ती फहराई। आपकी सेवा में श्री माणकचन्दजी ने 'एकल पात्री' मान्यता को छोड़कर शुद्ध और प्ररूपित संयम स्वीकार किया। पूज्य श्री सोमजी ऋषि म० सा० के बाद आपको पूज्य पदवी से अलंकृत किया गया। आप ही के नाम से ऋषि सम्प्रदाय की परम्परा प्रसिद्धि में आई। ऋषि सम्प्रदाय का गौरव और उसकी प्रतिष्ठा खूब बढ़ाई ।

ऐसे त्यागी-विरागी सन्तों से ही जन-मानस पवित्र और भक्ति की ओर अभिमुख होते हैं। आपका ज्ञान, तपश्चर्या की उत्कृष्टता, ज्ञान की गरिमा और संयम-सम्पन्नता चिरस्मरणीय ही नहीं किन्तु अविस्मरणीय है।

पूर्ण समाधियुक्त पंडितमरण से आपका स्वर्गवास हुआ। भले ही आप न रहे किन्तु आपकी परम्परा ही आपका गौरव है और यह गौरव कभी मिटने का नहीं क्योंकि महापुरुषों का व्यक्तित्व नाना-नाना रूपों में व्यक्ति-व्यक्ति में झलकता है और उसका अमृत जीवन बनकर छलकता है।

३—पूज्य श्री ताराऋषिजी महाराज

आपने पूज्य श्री कहान जी ऋषि जी महाराज सा० की सेवा मे दीक्षा ग्रहण की थी। आप प्रकृति के सरल, गम्भीर और शान्त प्रकृति के थे। अनेक प्रान्तों में विचरण कर धर्म-जागृति करते हुए अनेक मुमुक्षु जीवों का उद्धार किया। आप समाजोत्थान और संगठन के अत्यन्त प्रेमी थे।

अपनी धीरता और सहनशीलता के उदात्त गुणों से आपका व्यक्तित्व निखर जाता था। आपके व्याख्यान और आपकी चर्चायें लोगों को प्रभावित और आह्लादित करती थी। अपने जीवन मे एक विजयी योद्धा के समान आप जहाँ भी पधारे-सर्वत्र धर्म की उद्घोषणा की।

महापुरुषों के जीवन-चक्र को कालचक्र भी नहीं बदल सकता। उनका जीवन-चक्र नित्य निरंतर अपनी अबाध गति से चलता रहता है। महाकाल भी अपनी विकरालता को छोड़कर इन महापुरुषों के सामने सुकाल बन जाता है। भयंकरता सुन्दरता में परिवर्तित हो जाती है।

पूज्य श्री तारा ऋषि जी म० सा० का जीवन प्रेरणा का, कर्मण्यता का, आदर्श संयम का और आदर्श साधुता का रहा है। ऐसे त्यागी साधुओं को हम जितना भी साधुवाद दे, थोड़ा है किन्तु भक्ति के सिवाय हम क्या और कैसा अर्घ्य इनके चरणों में अर्पण कर सकते हैं?

४—कविकुल-भूषण पूज्यपाद तिलोकऋषिजी महाराज

आपका जन्म संवत् १६०४ मे रतलाम नगर में हुआ था। ऋषि सम्प्रदाय के पूज्य श्री एवंता

ऋषि जी म० सा० से संवत् १६१४ में आपने अपने भाई, अपनी माता तथा अपनी बहन इन चारों के साथ दीक्षा ग्रहण की। धार्मिकता और विरक्ति अनुरक्ति और भक्ति केवल आपमें ही नहीं आपके समूचे परिवार में थे। घर के चार लोगों का एक साथ संयम के मार्ग पर निकल जाना—क्या यह इस युग की चमत्कारिक घटना नहीं है! गुरु की सेवा में रहकर आठ वर्ष में आपने शास्त्रों का गहन ज्ञान प्राप्त कर लिया। अपने गुरुदेव के स्वर्गवास हो जाने के पश्चात् आपने दक्षिण की तरफ विहार किया और उस तरफ धर्म का प्रदीप प्रकटाया। मालवा, मेवाड़, मारवाड़ आदि विस्तीर्ण क्षेत्रों को पावन करते हुए संवत् १६४० में आप स्वर्ग सिधारे।

अपनी अद्भुत कवित्व-शक्ति और प्रखर पांडित्य के कारण आपकी यश सुरभि सर्वत्र प्रसरित हो गई। आप द्वारा रचित विविध साहित्य को लेकर समस्त समाज चिरकाल तक आपका ऋणी रहेगा। ऐसा कहा जाता है कि आपने अपने जीवन में ७०,००० कवित्त और कविताएँ रचकर साहित्य का भण्डार सुसमृद्ध किया। आप द्वारा रचित साहित्य जो अप्रकाशित है, श्रमण संघ के प्रधान मन्त्री पं० मुनि श्री आनन्द ऋषि जी म० सा० के पास सुरक्षित है।

हाथ से लिखने में आप इतने कुशल थे कि एक ही सूत्र के पन्ने मे सम्पूर्ण दशवैकालिक सूत्र और डेढ़ इँच जितने स्थान में सम्पूर्ण अनुपूर्वी लिखकर दर्शकों को विस्मय-विमुग्ध करते थे। आपको १७ शास्त्र कण्ठस्थ थे। आप ऐसे उत्कृष्ट ध्यानी थे कि कायोत्सर्ग में ही उत्तराध्ययन सूत्र का स्वाध्याय कर लेते थे। सरस्वती के इस महान् उपासक और भगवान् महावीर के सिद्धान्तों के इस महान् आराधक का केवल ३६ वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हो गया।

नाशवान भौतिक शरीर नष्ट हो सकता है किन्तु यश-शरीर नष्ट नहीं होता। युग-युगों तक महापुरुषों के जीवन-पुष्पों की सुयश-सुरभि इस विश्व-उद्यान मे विकीर्ण होती रहती है।

स्व० पूज्य श्री तिलोक ऋषि जी महाराज सा० का साहित्य, विस्मय-विमुग्ध कर देने वाला संयम और अपने जीवन-सिद्धान्तों का गम्भीर निदर्शन युग-युग तक न मिटने वाली कहानी है। सुनी हुई होकर भी नवीन और नवीन होकर भी प्रेरक।

५—पंडित मुनि श्री रत्नऋषिजी महाराज

आपका जन्म अहमदनगर के समीप मानकदौंड़ी में हुआ था। सवत् १६३६ मे कविवर्य पूज्य श्री तिलोक ऋषिजी म० सा० अपने पिता के साथ आपने १२ वर्ष की अवस्था में दीक्षा ग्रहण की। अपने गुरुदेव की छत्र-छाया आप पर केवल चार वर्ष तक ही रही। तत्पश्चात् सम्प्रदाय के अन्य विद्वान मुनिवरों द्वारा आपने शास्त्रीय-ज्ञान सम्पादित किया।

शिक्षा-प्रचार की तरफ आपका लक्ष्य सदा बना रहता था। पाथर्डी में आप ही के सदुपदेश से "श्री तिलोक जैन पाठशाला" की स्थापना हुई थी। आप ही से प्रतिबोध पाकर श्री नवलमल जी खिवरामजी पारख ने २०,००० की एक मुश्त रकम निकाली जिसके द्वारा बड़े-बड़े मुनिराजों का शिक्षण-कार्य सरल बन सका।

आप श्री के पाँच शिष्य हुए जिनमे श्री वर्द्धमान श्रमणसंघ के प्रधान मंत्री पंडित रत्न मुनि श्री आनन्द ऋषिजी म० सा० भी हैं। स्थानकवासी समाज को सुयोग्य शिष्य देकर आपने समाज पर महान

उपकार किया है। पं० मुनि श्री रत्न ऋषिजी महाराज समाज के अनुपम रत्न थे और उनके सुयोग्य शिष्य आनन्द ऋषिजी म० नेतृत्व, सफल संचालन और संयम के सौरभ से दिग-दिगन्त में आनन्द की धारा बहा रहे हैं। अपने शिष्य के रूप में गुरु का गौरव गरिमा और महिमाशाली बना रहेगा। यह निर्विवाद और असदिग्ध है।

६—ज्योतिर्विद् पं० मुनि श्री दौलतऋषिजी महाराज

आपका जन्म संवत् १६२० में जावरा मालवा में हुआ था। शास्त्रवेत्ता पूज्य लालजी ऋषिजी महाराज के पास भोपाल में संवत् १६४६ में उत्कृष्ट भाव से दीक्षा ग्रहण की। आपने गुरु की सेवा में रहकर शास्त्र का अगाध ज्ञान प्राप्त किया। 'श्री चन्द्र प्रज्ञप्ति' और 'सूर्य प्रज्ञप्ति' सूत्र तथा अन्य ज्योतिष शास्त्र एवं ग्रन्थों का आपको अपरिमित ज्ञान था। ज्योतिष शास्त्र के आप प्रकांड पंडित थे। आपका प्रवचन सुनकर जनता मंत्र-मुग्ध हो जाती थी। उदयपुर के तत्कालीन महाराणा साहब ने आपके ज्योतिष-चमत्कार देखकर आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा की थी।

जोधपुर के आवास में सिंहपोल में सर्वप्रथम ठहरने का श्रेय आपको ही था। पंजाबकेशरी पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज के साथ कई माह तक पत्र-व्यवहार द्वारा शास्त्रार्थ चलता रहा। आपकी विद्वत्ता और ज्ञान-गाम्भीर्य को देखकर पूज्य श्री बहुत ही प्रमुदित हुए और पंजाब पधारने के लिये विनती की। वृद्धावस्था के कारण आप पंजाब नहीं पधार सके।

वर्तमान में आत्मार्थी मोहन ऋषिजी महाराज और विनय ऋषि जी महाराज आप ही के सुयोग्य शिष्य हैं, जिनके द्वारा अनेक शिक्षण-संस्थाएँ संस्थापित कराई जाकर जैन-समाज शिक्षा के क्षेत्र में अग्रसर होने का गौरव प्राप्त करने में समर्थ बन सका है।

७—कविवर्य पं० मुनि श्री अमीऋषिजी महाराज

मालव प्रान्त के दलोट नामक ग्राम में संवत् १६३० में आपका जन्म हुआ था। केवल १३ वर्ष की अवस्था मे पं० रत्न श्री सुखा ऋषि जी महाराज के पास संवत् १६४३ में भागवती दीक्षा ग्रहण की। अपनी प्रबल बुद्धि और धारणाशक्ति के आधार पर अल्पकाल में ही शास्त्रों का गहन ज्ञान आपने प्राप्त कर लिया था। प्रचलित मत-मतान्तरों के आप विज्ञाता और इतिहास के विषय में अनुसन्धानकर्त्ता थे। शास्त्रीय चर्चाओं में आपको बहुत ही आनन्द मिलता था। वागड़ प्रान्त में विरोधी लोगों से आप शास्त्रार्थ करने पधारे तब आहार-पानी का संयोग न मिलने के कारण आठ दिन तक छाछ के आधार पर रहना पड़ा। कवित्व-शक्ति का विकास आप मे अद्भुत था। आप द्वारा की जाने वाली समस्यापूर्तियाँ तलस्पर्शी होती थीं। कवित्व-शक्ति के साथ-साथ आपकी स्मरण-शक्ति भी आश्चर्यजनक थी। आपको १३ शास्त्र कण्ठस्थ थे। अपने हाथों से शास्त्र लिखने का आपको बड़ा ही शौक था।

संयम के ४५ वर्ष व्यतीत कर संवत् १६८८ में शुजालपुर (मालवा) मे आपका ५८ वर्ष की अवस्था मे स्वर्गवास हुआ। प्रौढ़ साहित्यकार, उद्भट और आशुकवि, संयम में प्रकृष्ट भावनाशील, धर्म और शासन के अभ्युत्थान के लिए सदा ही तत्पर, कविश्रेष्ठ अमी ऋषि जी महाराज की काव्यसुधा का पान कर समाज का मानस मुखरित होकर चिरकाल तक अपने को कृतकृत्य मानकर अपना जीवन धन्य करेगा।

आप द्वारा रचित और लिखित अप्रकाशित साहित्य प्रधान मंत्री पं० रत्न मुनि श्री आनन्द ऋषि जी महाराज के पास सुरक्षित है—जो यथासमय प्रकट होगा। किन्तु जो भी साहित्य लोगों की निगाहों मे आया है वह आपकी विकसित काव्य-स्फूर्ति को बतलाने में समर्थ है। समाज का अहोभाग्य है कि उसे संयम-प्रेमी और काव्य-प्रेमी मुनि मिले जिन्होंने अपने संयम और काव्य से आध्यात्मिक जगत् का नेतृत्व कर लाखों लोगों को मंगलकारी और कल्याणकारी मार्ग पर लगाया।

८—शास्त्रोद्धारक पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी महाराज

आप मेड़ता मारवाड़ के निवासी श्री केवलचन्द्र जी कांसटिया के सुपुत्र थे। सम्वत् १९३४ में आपका जन्म हुआ। दस वर्ष की अवस्था में संयम का मार्ग स्वीकार कर और पं० मुनि श्री रत्न ऋषि जी महाराज की सेवा में रह कर अपने शास्त्रीय ज्ञान उपार्जन किया। आपने गुजरात, खभात-दक्षिण प्रान्त, बम्बई, कर्णाटक, पंजाब और राजस्थान में विचरण कर कई नवीन क्षेत्र खोलकर धर्म-जागृति का संचार किया। सम्वत् १९८९ में इन्दौर में ऋषि सम्प्रदाय के चतुर्विध श्रीसंघ की तरफ से आपको पूज्य पदवी प्रदान की गई।

हैदराबाद और कर्णाटक प्रान्त में विचरण करते हुए आगमोद्धार का महान् कार्य आपने लगातार तीन वर्ष के अत्यन्त कठोर परिश्रम से किया। इस कार्य में एकासन करते हुए दिन में ७-७ घण्टों तक आपको लिखने का कार्य करना पड़ा था। श्रुतसेवा की यह महान् आराधना कर समाज पर आपने महान् उपकार किया है। स्व० दानवीर सेठ श्री सुखदेवसहाय ज्वालाप्रसाद जी ने आगम-प्रचार के हेतु पूज्य श्री द्वारा हिन्दी अनुवादित ३२ आगमों की पेटियाँ अमूल्य भेट दी गईं। इस महानतम कार्य के अतिरिक्त 'जैन तत्त्व प्रकाश' 'परमार्थ मार्ग दर्शक' 'मुक्ति सोपान' आदि महान् ग्रन्थों की रचना कर जैन एवं धार्मिक साहित्य की अभिवृद्धि की थी। कुल १०१ पुस्तकों का आपने सम्पादन किया है। स्था० जैन समाज में अपने ही साहित्य प्रकाशन का प्रारम्भ करवाया।

शिक्षा-प्रचार की तरफ आपका पूरा ध्यान था और यही कारण है आपके सदुपदेश से बम्बई में श्रीरत्न चिन्तामणि पाठशाला और अमोल जैन पाठशाला, कड़ा आदि की स्थापना की।

संघ और समाज-संगठन के आप अनन्य प्रेमी थे और यही कारण है कि अजमेर के साधु सम्मेलन के समय आपने महत्वपूर्ण योग देकर सम्मेलन की कार्यवाही को सफल बनाने के लिए अग्रिम भाग लिया।

जैन समाज में सर्वप्रथम आगमोद्धारक के रूप में आपकी सुयश-सुवास युग-युग तक समाज को और वर्द्धमान भगवान् महावीर के शासन को सुवासित और मुखरित करती रहेगी। स्व० पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी महराज 'यथा नाम तथा गुण' थे। नाम के साथ आपका काम भी अमोलक था। आपके कार्य का हम क्या मोल करे। सर्वसाधारण मे शास्त्रीय ज्ञान सीखने की रुचि जागृत करने वाले कुशल प्रणेता आप ही थे। इस महान उपकारी की सेवाएँ देखते हुए आपको जितना भी याद किया जाय उतना ही थोड़ा है।

९—तपस्वीराज पूज्य श्री देवजी ऋषिजी महाराज

आपका जन्म संवत् १९२९ मे पुनड़ी (कच्छ) में हुआ था। अपनी सरलता सज्जनता, और विशाल पैमाने पर फैले हुए व्यापार के कारण आप अपने प्रान्त तथा बाहर सर्वत्र लोकप्रिय एव प्रसिद्ध

थे। सवत् १६४६ में बाल ब्रह्मचारी पं० मुनि श्री सुखा ऋषि जी और कविवर अमी ऋषि जी म० सा० के बम्बई चातुर्मास मे मुनिवरो के सदुपदेश से आपको वैराग्य प्राप्त हुआ जिसके फलस्वरूप सूरत मे आपने भगवती दीक्षा अंगीकार की। अपने गुरुदेव की अनन्य भक्ति-भाव से सेवा करते हुए आपने आगमों का ज्ञान सम्पादन किया।

आप अत्यन्त विनयवान, तपोनिष्ठ एवं भद्रिक प्रकृति के थे। एक समय अपने गुरुदेवका स्वास्थ्य बिगडने और विहार करनेमे असमर्थ होने के कारण अपने गुरुदेव को अपनी पीठ पर उठाकर २६ कोस दूर भोपाल पधारे। इसे कहते है उत्कृष्ट गुरुभक्ति जो आज भी मुनि समाज और मानव-समाज के लिए एक अनुपम उदाहरण बनकर हमारे जीवन को सफल बनाने मे समर्थ है।

मध्यप्रान्त के भुसावल शहर में आपको पूज्य पदवी प्रदान की गई। अन्त मे शारीरिक अस्वस्थता के कारण नागपुर में आप स्थिरवास विराजे। श्रीमान सेठ सरदारमल जी सा० पुंगलिया ने तन-मन-धन से आपकी सेवा का अच्छा लाभ उठाया था। संवत् १६६६ में पूर्ण समाधि के साथ समतायुक्त भाव से आप ने कालधर्म प्राप्त किया।

कठोर तप करते हुए भी आपके दैनिक कार्यक्रम मे किसी प्रकार का अन्तर नही आता था। कठोर-से कठोर तप मे भी व्याख्यान देना और प्रतिदिन एक घन्टा खडे रह कर ध्यान करना आदि सभी कार्य नियमित करते थे।

अपनी आदर्श सेवा-परायणता, गुरुभक्ति और तप-त्याग से आप कभी भी भूले नहीं जा सकते। फूल की सुगन्धि क्षणिक होती है किन्तु गुणों की सुगन्धि चिर-स्थायी और चिर-नवीन होती है। इस नाशवान पार्थिव शरीर से और क्या लाभ उठाया जा सकता है कि इसे हम सयम का और मुक्ति-मार्ग का साधन बना ले। पूज्य श्री देवजी ऋषि जी महाराज ने यही किया जो और लोग कम कर पाते हैं। कहने के लिये भले ही हम आपको स्वर्गवासी कह दे किन्तु वास्तविक वास तो आपका भक्तों के हृदय मे है। इसलिए कौन इन्हें स्वर्गवासी कह सकता है।

१०—प्रधान मन्त्री पं० रत्न मुनि श्री आनन्द ऋषिजी महाराज

आपका जन्म चिचोडी सिराल (अहमदनगर) मे संवत १६५५ मे हुआ था। उत्कृष्ट वैराग्य-रग मे रगकर पं० मुनि श्री रत्नऋषि जी म० सा० की सेवा मे संवत १६७० मे आपने दीक्षा ग्रहण की। अपने गुरुदेव की सेवा मे रहकर आपने जैनागमों का अभ्यास किया। थोडे ही दिनों मे आप अच्छे विद्वान हो गये। आपने संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, मराठी और गुजराती भाषा पर अच्छा अधिकार प्राप्त किया है। आपकी आवाज पहाडी और गायन-कला युक्त होने से आपश्री के प्रवचन श्रोताओं को मन्त्र-मुग्ध बना देते हैं।

आपने ३५ वर्ष तक महाराष्ट्र और दक्षिण प्रान्त मे विचर कर धर्म-देशना और धर्म-जागृति की धूम मचा दी। प्रतापगढ, पूना मे महासतियो का सम्मेलन कर आपने संगठन की नींव डाली। संवत् १६६६ में युवाचार्य पदवी से और संवत १६६७ मे आपको पूज्य पदवी से अलंकृत किया गया। किन्तु आपके हृदय मे तो संगठन के क्षेत्र को और अधिक विस्तीर्ण बनाना था। ब्यावर मे ६ सम्प्रदाय के सन्तो ने एकत्रित होकर संवत २००६ से आपको प्रधानाचार्य बनाया। संगठन का क्षेत्र और अधिक विशाल बना जिसके फलस्वरूप संवत २००६ मे २२ सम्प्रदायों के सन्त एकत्रित हुए। सभी ने अपनी पूज्य पदवी का त्याग किया

और श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन-श्रमण संघ के एक और अखण्ड शासन में एकत्रित हुए। इस महान् श्रमणसंघ का नेतृत्व और संचालन करने के लिए आपको प्रधान मन्त्री बनाया गया, जिसका आप बड़ी ही योग्यता-दक्षता के साथ निर्वाह कर रहे हैं।

शिक्षा-प्रचार की तरफ आपका लक्ष्य सविशेष रहा है। आपके सदुपदेश से अनेक संस्थाएँ स्थापित हुई जिनमें मारवाड़ में राणावास, दक्षिण में पाथर्डी की संस्थाएँ और महाराष्ट्र में बोदवड़ की संस्था मुख्य है। आप ही के सत्प्रयत्नों और सदुपदेश से पाथर्डी का 'धार्मिक शिक्षण परीक्षा बोर्ड' समाज में धार्मिक शिक्षा का प्रचार और प्रसार कर रहा है। यह धार्मिक परीक्षा-बोर्ड आपकी समाज को अपूर्व देन है।

संयमसुलभ सद्गुण, सरल, शान्त और उदात्त आपका हृदय, गुरु-गम्भीर आपका वक्तृत्व, नेतृत्व और संचालन की अद्भुत क्षमता, समय-सूचकता की दूरदर्शिता आदि असाधारण मानवीय गुण आपमें समुद्भूत हुए हैं।

अपने नाम के अनुरूप ही अपने कार्यों से आप समाज में आनन्द की मन्दाकिनी प्रवाहित कर रहे है। यह मन्दाकिनी का प्रवाह जिस क्षेत्र को और जिस तट को स्पर्श कर लेता है, वह क्षेत्र और तट स्वनाम धन्य हो जाता है। महापुरुषों के पुण्य-प्रसाद की यही तो महिमा होती है। वे स्वयं तो महिमावान होते हैं और औरों को भी महिमावान बना डालते हैं।

११—आत्मार्थी पं० मुनिश्री मोहन ऋषिजी महाराज

आप कलोल—गुजरात के निवासी हैं। आपका जन्म संवत् १९५२ में हुआ था। संवत् १९७५ में ज्योतिर्विद् पं० मुनि श्री दौलत ऋषि जी म० की सेवा में आप दीक्षित हुए। आपका संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी अंग्रेजी का यथेष्ट शिक्षण हुआ है। आपने शिक्षण और साहित्य-प्रचार के लिये खूब प्रयत्न किया और कर रहे हैं। आपका प्रवचन बड़ा ही प्रभावशाली, ओजस्वी, गंभीर और सारपूर्ण होता है। आपके सत्प्रेरणा और सदुपदेश से प्रेरित होकर १३ व्यक्तियों ने विभिन्न सम्प्रदायों में दीक्षा ग्रहण की। गुजरात-काठियावाड़, मालवा-मेवाड़-मारवाड़, बम्बई और मध्यप्रान्त में विचरण कर धर्मदेशना के द्वारा धर्म-जागृति फैलाई है। आपके सदुपदेश से श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर, जैन पाठशाला सेवाज, खीचन, बलून्दा, बगड़ी, पालनपुर में आदि अनेक संस्थाएँ स्थापित होकर समाज को शिक्षा से नवचेतना देकर अनुप्राणित किया है। आपने कई ग्रन्थों की रचना की है जो आत्म-जागृति कार्यालय, ब्यावर द्वारा प्रकाशित हुए हैं।

अजमेर साधु सम्मेलन के समय आपने अग्रसर होकर भाग लिया। इस समय आप शारीरिक अस्वस्थता के कारण अहमदनगर में विराज रहे हैं।

१२—पं० मुनिश्री कल्याणऋषिजी महाराज

आपका जन्म संवत् १९६६ में बरखेड़ी ग्राम (अहमदनगर) में हुआ। स्व० पूज्य श्री अमोलक ऋषि जी महाराज सा० की सेवा में आपने संवत् १९८१ में दीक्षा ग्रहण की। पूज्य श्री की सेवा में रहकर आपने शास्त्रीय ज्ञान और संस्कृत-प्राकृत आदि विभिन्न भाषाओं का अच्छा अभ्यास कर लिया। आप व्याख्यानी संत हैं। आपके सदुपदेश से स्वर्गीय पूज्य श्री के स्मरणार्थ धूलिया में "श्रीअमोल जैन ज्ञानालय" की स्थापना हुई है। इस संस्था के द्वारा पूज्य श्री द्वारा रचित साहित्य के पुनरुद्धार का कार्य व्यवस्थित

चल रहा है। संस्था के स्थायी कोष से प्रकाशन का कार्य व्यवस्थित होता है। वर्तमान में खानदेश-नासिक जिले में विचर कर आप जैनधर्म व साहित्य का प्रचार कर रहे हैं। आप स्वयं भी पंडित, साहित्यकार और व्याख्याता हैं।

स्व० कविवर, पू० मुनि श्री अमीऋषिजी महाराज द्वारा रचित प्रकाशित और अप्रकाशित साहित्य जो विभिन्न संत-सतियों के पास अभी भी सुरक्षित है —

१—स्थानक-निर्णय
२—मुख-वस्त्रिका निर्णय
३—मुख-वस्त्रिका चर्चा
४—श्री महावीर प्रभु के २६ भव
५—श्री प्रद्युम्न चरित्र
६—श्री पार्श्वनाथ चरित्र
७—श्री सीता चरित्र
८—सम्यक्त्व महिमा
९—सम्यक्त्व निर्णय
१०—श्री भावनासार
११—श्री प्रश्नोत्तर माला
१२—समाज स्थिति दिग्दर्शन
१३—कषाय कुटुम्ब छह ढालिया
१४—श्री जिन सुन्दरी चरित्र
१५—श्रीमती सीता चरित्र
१६—श्री अभयकुमारजी की नवरंगी लावणी
१७—श्री भारत-बाहुबली चौढालिया
१८—श्री अयन्तामुनि कुमार छह ढालिया
१९—श्री विविध बावनी
२०—शिक्षा-बावनी
२१—सुबोध-शतक
२२—मुनिराजों की ८५ उपमाएँ
२३—अंबड़ सन्यासी चौढालिया
२४—सत्यघोष चरित्र
२५—श्री कीर्तिध्वजराज चौढालिया
२६—श्री अरण्यक चरित्र
२७—श्री मेघराजा का चरित्र
२८—श्री धारदेव चरित्र

कविकुल भूषण स्व० पं० मुनि श्री तिलोक ऋषिजी महाराज सा० द्वारा रचित अप्रकाशित साहित्य जो प्रधानमंत्री पं० मुनि श्री आनन्द ऋषिजी महाराज सा० के पास सुरक्षित है —

१—श्री श्रेणिक चरित्र ढाल
२—श्री चन्द्र केवली चरित्र
३—श्री समरादित्य केवली चरित्र
४—श्री सीता चरित्र
५—श्री हंस केशव चरित्र
६—श्री धर्मबुद्धि पापबुद्धि चरित्र
७—अर्जुनमाली चरित्र
८—श्री धन्नाशालिभद्र चरित्र
९—श्री भृगु-पुरोहित चरित्र
१०—श्री हरिवंश काव्य
११—पचवाणी काव्य
१२—श्री तिलोक बावनी प्रथम
१३—श्री तिलोक बावनी द्वितीय
१४—श्री तिलोक बावनी तृतीय
१५—श्री गजसुकुमार चरित्र
१६—श्री अमरकुमार चरित्र
१७—श्री महावीर स्वामी चरित्र (चौरंगम में)
१८—श्री नन्दन मणिहार चरित्र
१९—श्री सुदर्शन सेठ चरित्र
२०—श्री नन्दीसेन मुनि चरित्र
२१—श्री चन्दनबाला सती चरित्र
२२—श्री धर्मजय चरित्र
२३—श्री पांच सुमति तीन गुप्ति का अष्ट ढालिया
२४—श्री महावीर स्वामी चरित्र

पूज्य श्री हरजी ऋषिजी महाराज सा० की सम्प्रदाय

[सं० १७८९ मे क्रियोद्धार]

साधुमार्गी परम्परा में आचार-भेद की तारतम्यता पर अनेक आचार्यो की सम्प्रदाये बनीं। श्रद्धा और प्रतिपादन मे किसी प्रकार का अन्तर न होते हुए भी स्पर्शना में न्यूनाधिकता के कारण विभाजन हुए। इसी कारण से भिन्न-भिन्न आचार्यो के भिन्न-भिन्न समूह शुद्ध आचार पालन करने वाले व्यक्ति की सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध हुए।

पवित्र व्यवहार की प्रतिस्पर्धा और मंगल-भावना की दृढ़ता के आधार पर चली हुई भिन्नताओं ने श्रमणों के आचार-विचार मे प्रगति लाई किन्तु काल-दोष के कारण अनुयायियों में अहभाव और विपमता के बीजारोपण होने से उसमें से साम्प्रदायिक कट्टरता का आविर्भाव हुआ। इसके परिणाम-स्वरूप एक-दूसरे को नीचा दिखाने की मनोवृत्ति के कारण पारस्परिक व्यवहार विकृत होते गये और यही कारण है कि सम्प्रदायवाद का पारस्परिक विरोध का तूफान सब तरफ उठा हुआ है। यदि ऐसा नहीं होता तो ये सम्प्रदाये धर्म को सुरक्षित रखने के लिये एक प्रधान आश्रय रूप थीं।

जिस प्रकार जलाशय के बिना जल की प्राप्ति नहीं हो सकती उसी प्रकार सम्प्रदाय के बिना धर्म के व्यवहार जीवन में उतरे हुए नहीं देखे जा सकते। पॉचवे सुधारक मुनिराज श्री हरजी ऋपिजी की परम्परा में कोटा सम्प्रदाय सुप्रसिद्ध था। इस सम्प्रदाय में २६ पंडित रत्न थे और और एक साध्वी। कुल मिलाकर यह २७ साधु-साध्वी का परिवार था।

१—पूज्य श्री हुकमीचन्दजी महाराज

पूज्य श्री हुकमीचन्द जी महाराज इन विद्वान् मुनियों में से एक आचारनिष्ठ विद्वान मुनि थे। आपका जन्म शेखावटी के टोडा नामक ग्राम में हुआ था। आपने संवत् १८०६ मे कोटा सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध विद्वान् मुनि श्री लालचन्द्रजी महाराज के पास दीक्षा ग्रहण की। आपमे इस प्रकार की भावना जाग्रत हुई कि शास्त्रानुकूल प्रवृत्ति मे हमें विशेप प्रगति करनी चाहिये। इस उद्देश्य को सिद्ध करने के लिए गुरु की आज्ञा लेकर आप कुछ साधुओं के साथ अलग रूप से विचरने लगे।

आप निरंतर तपश्चर्या करते थे। लगभग २१ वर्ष तक आपने छठ-छठ के पारणे किये थे। घोर-से-घोर शीतकाल में भी आपने एक चादर का सेवन किया। सब प्रकार की मिठाई और तली हुई चीजों का आपने त्याग कर दिया था। केवल १३ द्रव्य की ही आपने छूट रखी थी, शेष सब प्रकार के स्वादिष्ट आहार का आपने त्याग कर दिया था। प्रतिदिन दो हजार नमोत्थुणं द्वारा प्रभु को वन्दना करते थे। सूत्रों की प्रतिलिपियॉ वना-वनाकर श्रमण-मुनिराजों को दान करते रहते थे। ज्ञान-ध्यान के अतिरिक्त अन्य प्रवृत्तियों मे आप तनिक भी रस नहीं लेते थे। आपके हाथ की लिखी हुई लगभग १६ सूत्रों की प्रतियॉ आज भी मुनिराजों के पास विद्यमान है। संवत् १६१८ मे मध्यभारत के जावद ग्राम मे पडित मरणपूर्वक आपका स्वर्गवास हुआ।

इतने महान् क्रियापात्र, तपस्वी और विद्वान् साधु होते हुए भी आपके मन मे आचार्य-पद की

लेशमात्र भी लालसा न थी। इस कारण से ही साधुमार्गी परम्परा में शुद्ध आचार पालने वाली एक सम्प्रदाय आपके नाम से चल पड़ी।

२—पूज्य श्री शिवलालजी महाराज

पूज्य श्री हुकमीचन्द जी महाराज के स्वर्गवास के पश्चात् आपके स्थान पर पूज्य श्री शिवलाल जी महाराज आचार्य पद पर आसीन हुए। अपने तेईस वर्ष तक निरंतर एकातर उपवास किया। शास्त्र-स्वाध्याय ही एकमात्र आपका व्यसन था। धर्म के मर्म का परमार्थ प्रतिपादन करने मे तत्कालीन सन्त-समाज मे आपका प्रमुख स्थान था। वयोवृद्ध होने के कारण आप केवल मालवा, मेवाड और मारवाड के क्षेत्रों में ही विहार कर सके फिर भी आपकी सम्प्रदाय में साधु-समुदाय का खूब विकास हुआ। सोलह वर्ष तक आचार्य-पद पर रहकर धर्म-प्रवर्तन कर सं० १८६३ मे आपने स्वर्ग विहार किया। जावद के समीप धामणिया (मालवा) में आपका जन्म हुआ था।

३—पूज्य श्री उदय सागरजी महाराज

मारवाड़ के मुख्य नगर जोधपुर मे पूज्य श्री उदयसागरजी महाराज का जन्म हुआ था। बाल्यावस्था में विवाह होते हुए भी आपके हृदय मे पूर्वजन्म-सचित तीव्र वैराग्य जाग्रत हुआ। माता-पिता की आज्ञा नहीं मिलने के कारण आप स्वयं ही संयमी जीवन व्यतीत करने लगे। वि० सं० १८६७ में आपने भागवती दीक्षा अंगीकार की। अत्यल्प समय मे आपने सभी शास्त्रों का स्वाध्याय कर लिया। आपकी प्रवचन-प्रतिभा अतिशय प्रभावशाली थी। आपका वचनातिशय और वक्तृत्व कला का श्रवण श्रोताओं के हृदयो को पुलकित कर देता था। जो कोई साधु-साध्वी, श्रावक या श्राविका आपका एक बार ही प्रवचन श्रवण कर लेता था, वह उसी बात को दूसरों को सुनाने के लिए तैयार हो जाता था। आपने पजाब की तरफ भी विहार किया था और अनेक जैन-अजैनों को पवित्र उपदेशामृत पान कराकर सद्धर्म मे स्थित किया था। श्रोतागण आपकी वाणी को मंत्र-मुग्ध होकर सुनते थे। आप जाति-सम्पन्न, कुल-सम्पन्न, रूप सम्पन्न, शरीर-सम्पन्न, वचन-सम्पन्न और वाचना-सम्पन्न प्रभावशाली आचार्य थे। पैर में असातावेदनीय कर्म के उदय से व्याधि होने के कारण अंतिम १७ वर्ष आपको रतलाम मे बिताने पड़े। आपके आचार्यत्व-काल मे साधु और श्रावक-संघ की अप्रतिम वृद्धि हुई। अन्त मे मुनि श्री चौथमलजी महाराज को आचार्य-पद पर स्थापित कर सं० १९५४ में रतलाम मे आपका स्वर्गवास हुआ।

४ -पूज्य श्री चौथमल जी महाराज

पूज्य श्री चौथमल जी महाराज का जन्म पाली (मारवाड़) मे हुआ था। आप शिथिलाचार के कट्टर विरोधी थे। आपका प्रभाव खूब पडता था। पूज्य उदयसागर जी महाराज भी अपने शिष्यों को सावधान रखने के लिये कहते थे कि "देखो, चौथमल जी की दृष्टि तुम नहीं जानते। तुम्हारे आचार में जरा सी भी ढील हुई तो वे तुम्हारी खबर लेंगे।" एक समय पूज्य श्री चौथमल जी महाराज लकड़ी के सहारे खड़े रहकर प्रतिक्रमण कर रहे थे। यह देखकर सुप्रसिद्ध श्रावक श्री अमरचन्दजी पीतलिया ने आपको विनम्र निवेदन किया कि "महाराज! आपका शरीर वेदनाग्रस्त है अत सुखासमान बैठकर ही आप

प्रतिक्रमण कीजिये।" तब दृढ़ निश्चय और अडिगतापूर्वक आपने उत्तर दिया कि "श्रावक जी! यदि आज मैं बैठकर प्रभु की इस पवित्र आज्ञा का पालन करूँगा तो भविष्य में मेरे साधु और श्रावक सोते-सोते प्रतिक्रमण करेंगे।"

आचार-विचार में रज-कण मात्र भी प्रमाद मनुष्य की आत्मा को और उसके साथियों को डुबा देता है। उपरोक्त एक छोटे उदाहरण से पूज्य श्री की आचारनिष्ठा का परिचय मिलता है। तीन वर्ष तक नवकार मन्त्र के तीसरे पद-आचार्य-पद का निर्वाह कर नेत्रशक्ति की क्षीणता के कारण सं० १९५७ में आप देवलोकवासी हुए।

५—प्रतापी पूज्य श्री श्रीलालजी महाराज

पूज्य श्रीलाल जी महाराज का जन्म राजस्थान के टोंक ग्राम में हुआ था। बचपन में ही आप में परम वैराग्य के संस्कार प्रस्फुटित हो गये थे किन्तु पूर्वजन्म के संस्कारों के कारण आपको विवाह-बंधन में बंधना पड़ा। किन्तु विवाह के बाद थोड़े ही समय में नव परिणीता सुन्दर स्त्री का परित्याग करके आपने दीक्षा ग्रहण की। अनेक प्रकार के बाह्याभ्यंतर लक्षणों से पूज्य श्री उदयसागर जी महाराज के श्रीमुख से सहसा वचन निकल पड़े कि "इस मुनि के द्वारा संघ की असाधारण वृद्धि होगी।" वस्तुत ऐसा ही बना। आचार्य पद पर आते ही दूज के चांद की तरह सम्प्रदाय की कीर्ति दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी। आपकी गभीरता और आचार-विचार की दृढ़ता के कारण श्री संघ में आपका प्रभावशाली अनुशासन था। श्रीसंघ के आचार्य होते हुए भी सब कार्य आप अपने हाथों से ही करते थे। आपका हृदय स्फटिक के समान निर्मल था। इस कारण भविष्य में बनने वाली घटनाओं की प्रतीति आपको पहले से ही हो जाती थी। इकावन वर्ष की अवस्था में जयतारण नगर में आप स्वर्गवास को प्राप्त हुए।

६—जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज

पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज का जन्म थांदला शहर में हुआ था। अल्पावस्था में ही माता-पिता के स्वर्गवासी हो जाने के कारण मामा के यहाँ आपका पालन-पोषण हुआ। सोलह वर्ष की कुमार अवस्था में आपने दीक्षा ग्रहण की। आप बाल ब्रह्मचारी थे। थोड़े ही समय में शास्त्रों का अध्ययन करके जैन के शास्त्रों के हार्द को आपने समझ लिया। परमत का पर्याप्त ज्ञान भी आपने किया था। तुलनात्मक दृष्टि से समभावपूर्वक शास्त्रों की इस प्रकार तर्कपूर्ण व्याख्या करते थे कि अध्यात्मतत्त्व का सहज ही साक्षात्कार हो जाता था। आपकी साहित्य सेवा अनुपम है। पूज्य श्रीलाल जी के बाद आप इस सम्प्रदाय के आचार्य हुए। सूत्रकृताग की हिन्दी टीका लिखकर आपने अन्य मतों की आलोचना की है। लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, पडित मदनमोहन मालवीय और कवि श्री नानालाल जी जैसे राष्ट्र के सम्माननीय व्यक्तियों ने आपके प्रवचनों का लाभ उठाया था। जिस प्रकार राजकीय क्षेत्र में पंडित जवाहरलाल नेहरू लोकप्रिय हैं उसी प्रकार पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज भी धार्मिक क्षेत्र मे लोकप्रिय थे। वे राजनीतिक जगत् के जवाहर हैं तो ये धार्मिक जगत् के जवाहर थे। आपके प्रवचनों से केवल नेता और विद्वान ही आकर्पित न होते थे वरन सामान्य और ग्राम्य जनता भी आपके प्रवचनों की ओर खूब आकर्पित होती थी।

मारवाड़ के थली प्रदेशस्थित तेरापंथ सम्प्रदाय और उसके अनुयायियों के वीच मे अनेक परिषह सहन कर वहाँ पधारे और अपनी पवित्र वाणी का स्रोत वहाया। भ्रम वढ़ाने वाले तेरापथी का 'भ्रम विध्वसन' का उत्तर आगमानुसार—"सद्धर्म मंडन" के द्वारा दिया। अनुकम्पा का उच्छेद करने वाली अनुकम्पा ढालों का उत्तर इसी प्रकार की मारवाड़ी भाषा–लोकभाषा मे ढाले रचकर दिया और इस प्रकार अज्ञानी ग्राम्य जनता को भगवान् महावीर के दयादान विषयक यथार्थ सिद्धांतो का दिग्दर्शन कराया। आप ही के अनुशासन और शिक्षण का प्रभाव है कि सादड़ी सम्मेलन में पूज्य श्री गणेशीलाल जी महाराज को उपाचार्य का पद प्रदान किया गया। आपके शिष्यो मे मुनि श्री घासीलाल जी तथा सिरेमल जी महाराज आदि विद्वान् साधु विराजमान है। लगभग २३ वर्ष तक आचार्यपद को वहन कर स० २००० में आप स्वर्ग सिधारे।

७—सिद्धान्त-सागर पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज

मालवा-प्रदेश सन्निकट अतीत-काल मे जैन मुनियों की दृष्टि से अत्यन्त उर्वर प्रदेश कहा जा सकता है। इस प्रदेश ने साधुमार्गीय सम्प्रदाय को अनेक ऐसे उत्कृष्ट, विद्वान, प्रभावक और सयमपरायण मुनिरत्न दिये है, जिन्होंने अपने आदर्श चरित से मुनियों के इतिहास को जाज्वल्यमान बनाया है। पूज्य श्री मन्नालाल जी महाराज को जन्म देने का सौभाग्य भी इसी प्रदेश को प्राप्त हुआ। आपकी जन्म-भूमि रतलाम थी। आप श्री अमरचन्द जी नागौरी के पुत्र तथा माता नन्दी बाई के आत्मज थे। वि० स० १९२५ मे आपका जन्म हुआ और तेरह वर्ष की अल्प आयु में ही आप संसार से विरक्त हो गए। पूज्य श्रीउदयसागर जी महाराज की सेवा में रहे हुए सरलस्वभावी मुनि श्रीरत्नचन्द्र जी महाराज के सुशिष्य थे। करीव २५ गुरुभ्राताओं और गणधरों के समान ग्यारह शिष्यरत्नों से आप ऐसे शोभायमान होते, जैसे ताराओं मे चन्द्रमा !

सं० १९७३ में आप आश्चर्य-पद पर प्रतिष्ठित हुए। विशेषता तो यह थी कि आप जम्मू (काश्मीर) मे विराजमान थे और पूज्य पदवी का प्रदान व्यावर में हुआ !

पृज्य श्री वत्तीस आगमों के तलस्पर्शी ज्ञाता थे। कोई भी विषय पूछिए, किस आगम मे, किस अध्ययन और किस उद्देशक मे है, पूज्य श्री चटपट वतला देते थे। वास्तव मे आपका आगमज्ञान असाधारण था। इसी कारण आप 'शास्त्रों के समुद्र' के महत्त्वपूर्ण उपनाम से विख्यात हो गए थे।

सन्तों मे जो विशिष्ट गुण होने चाहिएँ, सभी आप मे विद्यमान थे। शिशु के समान सरलता और स्वच्छता, युवकोचित उत्साह और सयम-विपयक पराक्रम: वृद्धों के अनुरूप क्षमा, सन्तोष और गम्भीरता आपमे आदि से अन्त तक रही। हृदय नवनीत के सदृश कोमल ! चौथे आरे के सन्तों के चरित की झाँकी आप मे मिलती थी।

आपने मालवा. मेवाड़, मारवाड़, और पंजाव आदि प्रान्तों मे विचरण करके जनता को पुनीत पथ का प्रदर्शन किया। आप प्राय अपने प्रवचनों मे शास्त्रीय-चर्चा ही करते थे। उपदेश की भाषा इतनी सरल होती थी कि आवालवृद्ध सभी सरलता से समझ लेते थे। करीव ५२ वर्ष संयम का पालन करके स० १९९० में. व्यावर मे आपका स्वर्ग-विहार हो गया।

८—वादी-मानमर्दक मुनि श्री नन्दलालजी महाराज

पारिवारिक वातावरण का व्यक्ति के जीवन पर कितना गहरा प्रभाव पड़ता है और माता-पिता का कार्यकलाप किस प्रकार अज्ञात रूप मे बालक के जीवन-निर्माण का कारण होता है, यह बात मुनि श्री नन्दलाल जी महाराज की जीवनी पर दृष्टिपात करते ही स्पष्ट रूप में समझ मे आ जाती है।

मुनि श्री नन्दलाल जी महाराज का मातृपक्ष और पितृपक्ष धर्म के पक्के रंग मे रँगा था। अतएव शास्त्रीय भाषा मे आपको 'जाइसंपन्ने' और 'कुलसंपन्ने' कहना सर्वथा उचित है।

आपकी जन्मभूमि कंजाड़ी (मध्यभारत-भूतपूर्व होल्कर स्टेट) थी। भाद्रपद शुक्ला ६ वि० सं० १६१२ में, अर्थात् अब से ठीक एक शताब्दी पूर्व आप इस धरा-धाम पर अवतीर्ण हुए। आपकी उम्र दो वर्ष की थी, तभी आप के पिता श्रीरत्नचन्द्र जी ने और मामा श्रीदेवीलाल जी ने सं० १६१४ मे दीक्षा ग्रहण कर ली। तदनन्तर वि० सं० १६२० में आपके दोनो ज्येष्ठ बन्धुओं-श्री जवाहरलाल जी, श्री हीरालाल जी-ने, आपकी परम धर्मिष्ठा माता राजकुँवरबाई ने तथा आपने भागवती दीक्षा अंगीकार करके विश्व के समक्ष एक अनूठा आदर्श उपस्थित किया। कैसा स्पृहणीय और स्फूर्तिप्रद रहा होगा वह दृश्य!

आगे चलकर तीनों भाइयो की इस मुनित्रयी ने स्थानकवासी सम्प्रदाय की तथा भगवान् महावीर के शासन की महान् सेवा एवं प्रभावना की।

यद्यपि इस त्रिपुटी मे नन्दलाल जी महाराज सबसे छोटे थे, मगर प्रभाव में वह सबसे बढ़े-चढ़े थे। उन्होने निरन्तर उद्योग करके आगमों सम्बन्धी प्रखर पाण्डित्य प्राप्त किया था। वे सहज प्रतिभा के प्रकृष्ट पुंज थे। वाद-विवाद और चर्चा-वार्त्ता मे अपना सानी नहीं रखते थे। अनेको बार उन्हें अन्य सम्प्रदायी जैन साधुओं एवं जैनेतर विद्वानों से शास्त्रार्थ करने का प्रसंग आया और हर बार वे गौरव के साथ विजयी हुए। वास्तव मे वे जन्मत विजेता थे। अपनी बालक्रीड़ाओं में भी उन्हें कभी पराजय का मुख नहीं देखना पड़ा। आपका प्रधान विहार-क्षेत्र यद्यपि मालवा, मेवाड़ और मारवाड़ रहा; मगर आपके संयुक्त प्रान्त, देहली प्रान्त एवं पंजाब मे भी विचरण किया था। वहाँ भी आपने अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा का सिक्का जमाया। आप अपने समय मे 'वादी-मानमर्दक' के विरुद के धारक थे। निरहकार, दयालु और गुणज्ञ थे। दीर्घकाल तक ज्ञान और चारित्र की आराधना करके आप अन्त में रतलाम मे स्थिरवास करते हुए स्वर्गगामी हुए।

९—विद्या-वाचस्पति मुनि श्री देवीलालजी महाराज

टोंक रियासत के केरी नामक छोटे से ग्राम मे जन्म लेकर भी जिसने अपने तेजोमय जीवन की स्वर्णिम रश्मियाँ भारत के एक छोर से दूसरे छोर तक प्रसरित कीं, जिसने अपना बहुमूल्य जीवन स्व-पर के उद्धार में लगाया, जिसने अकिंचनता, अनगारता और भिक्षुकता अंगीकार करके भी अपनी महनीय आध्यात्मिक सम्पत्ति से राजाओं-महाराजाओं को भी प्रभावित करके अपने पावन पाद-पद्मों मे प्रणत किया, वह तपोधन, ज्ञानधन मुनि श्री देवीलाल जी म० आज भी हमारी श्रद्धा-भक्ति के पात्र है।

मुनि श्री देवीलालजी के पिता बोरदिया-वंशी श्री माणकचन्दजी थे और माता श्रीमती शृंगार बाई थीं। तीनो पति, पत्नी और पुत्र ने साथ-साथ दीक्षा ली। दीक्षा के समय आपकी उम्र केवल ग्यारह वर्ष की थी। दीक्षित होनेके पश्चात श्री माणकचन्द जी म० तपस्या-प्रधानी बने और उन्होने घोर तपस्वी

की पदवी प्राप्त की। देवीलाल जी म० ने अपने उठते हुए जीवन को ज्ञानाभ्यास में लगा दिया। थोड़े ही दिनों में आप व्याकरण के तथा शास्त्रों के प्रकाण्ड पण्डित बन गये। आप सन्तों में 'विद्या-वाचस्पति' कहलाते थे।

आपकी वक्तृत्वशक्ति अत्यन्त चमत्कारपूर्ण थी। विद्वत्ता प्रत्येक वाक्य में झलकती थी। हजारों के जनसमूह में आपका व्याख्यान होता था तो आप सिंह के समान दहाड़ते थे। राजा-महाराजा, राज्याधिकारी आदि आपकी कल्याणी वाणी सुनने के लिये उत्कण्ठित रहते थे। स्वर में मधुरता थी। जिस विषय को छेड़ते, उस पर बड़ी ही सुन्दर, सार-गर्भित, सांगोपाग और प्रभावजनक विवेचन करते थे।

आपने अपने प्रभाव से अनेक स्थानों के पारस्परिक वैमनस्य-धड़ेबाजी को मिटाकर एकता स्थापित की। झगड़े मिटाये। हजारों को मांस-मदिरा का त्यागी बनाया। पशुबलि बन्द की। तत्त्वचर्चा करके आर्यसमाज के श्री प्रभुदयाल सरीखे नेता को कट्टर जैनी बनाया।

आप अपने सम्प्रदाय के एक प्रमुख स्तम्भ रहे। सम्प्रदाय को सुचारु रूप से संचालित करने और उसमें ज्ञान-क्रिया का विकास करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे। भू० पू० आचार्य पं० र० मुनि श्रीशेषमल जी म०, जो तेरापंथी सम्प्रदाय में दीक्षित हुए थे, आपसे वाद-विवाद करके अन्त में आपके शिष्य बन गये। करीब ५१ वर्ष संयम पालकर आप कोटा में स्वर्गवासी हुए।

१०—विरलाविभूति पूज्य श्री खूबचन्दजी महाराज

पूज्य श्री खूबचन्द्र जी महाराज का जन्मस्थान निम्बाहेड़ा (टोंक) है। विक्रम संवत १९३० में आपका जन्म हुआ। उठते हुए यौवन में आपने विषयों को विष के समान समझकर सं० १९५२ में आपने साधु-दीक्षा अंगीकार कर ली। पिता का नाम टेकचन्द जी, माता श्रीमती गेंदीबाई और पतिव्रता पत्नी का नाम साकरबाई था।

आपका घराना धन-जन से सम्पन्न था। प्रभूत वैभव था। स्नेहशील परिवार था। पत्नी पतिपरायणा, आज्ञाकारिणी, सुन्दरी और सुसंस्कारवती थी। परन्तु इनमें से कोई भी वस्तु आपको गार्हस्थ्य की ओर आकर्षित न कर सकी। आप अत्यन्त साहसी और दृढ़निश्चयी महापुरुष थे। गौतम बुद्ध की भाँति आप पत्नी, परिवार और सम्पत्ति को त्यागने का निश्चय कर चुके तो लाख समझाने और अनुनय-विनय करने पर भी न डिगे। मुनि त्रिपुटी के एक रत्न श्री नन्दलाल जी म० से नीमच में आपने दीक्षा ली।

बचपन में ही आपकी उच्च श्रेणी की शिक्षा हुई थी। दीक्षित होने पर आपने संस्कृत, प्राकृत और आगमों का गहन अध्ययन किया। आगमों के पारदर्शी वेत्ता बने। आप अध्ययनशील सन्त थे। दर्शनार्थियों से बात-चीत करते तो भी शास्त्रीय बात ही करते। संयम में एकनिष्ठा, प्रीति एवं एकाग्रता रखने वाले आप इस युग के आदर्श सन्त थे। अत्यन्त सौजन्य की मूर्ति, सरलता की प्रतिमा और भद्रता के भण्डार। सौम्य मुखमण्डल पर अपूर्व वीतरागता एवं अनुपम प्रशम भाव सदैव लहराता रहता था।

आपकी विद्वत्ता, शान्ति, एवं संयमपरायणता आदि विशिष्ट गुण देखकर पूज्य श्री मन्नालाल जी म० के पट्टपर चतुर्विध संघ ने आपको संवत् १९९० में आचार्य पद पर आरूढ किया।

पूज्य श्री राजस्थानी भाषा के उच्च कोटि के कवि थे। आपकी कविताओं का एक संग्रह सन्मति-ज्ञानपीठ, आगरा से 'खूब कवितावली' नाम से प्रकाशित हुआ है। आपकी पद रचना अत्यन्त सरस

"क्या आप महादेव को नहीं मानते ?" पूज्य श्री रामचन्द जी ने उत्तर दिया कि "हे राजन्! जिसने राग-द्वेष क्रोध-मानमाया-लोभ का संहार किया है उसे हम 'महादेव' कहते हैं। हम अपना समस्त जीवन ऐसे महादेव की आराधना में ही व्यतीत करते हैं। गंगा जी का सम्मान हम माता से भी अधिक करते हैं। अपमान तो वे करते हैं जो उसमें मल-मूत्र का विसर्जन करते हैं और हाथ-पॉव धोकर अपना मैल उसी में मिलाते हैं और उसे अपवित्र बनाते हैं।

इस प्रकार का युक्ति-युक्त उत्तर सुन कर श्री सिन्धिया सरकार अत्यन्त प्रसन्न हुए। विद्वेषी लोग अन्दर-ही-अन्दर जल कर खाक हो गए। इस प्रकार आपने अपनी प्रतिभाशाली बुद्धि-वैभव से एक सम्माननीय आचार्यरूप में प्रतिष्ठा प्राप्त की।

२—पूज्य श्री माधव मुनिजी महाराज

"सो साधु एक माधु" की उक्ति से प्रसिद्ध कविराज श्री माधव मुनि एक अति प्रभावशाली आचार्य हुए है। वाद-विवाद मे आप लोक-विश्रुत थे। कोई भी प्रतिपक्षी अपना वितण्डावाद छोड़ नत-मस्तक हुए विना नहीं जाता था। प्रवचन-कला में भी आप निष्णात थे। आप की कविताऍ अत्यन्त भावनामय और विद्वत्तापूर्ण होती थीं।

३—पूज्य श्री ताराचन्दजी महाराज

पूज्य श्री ताराचन्द जी महाराज ने वि० सं० १६४६ मे दीक्षा अंगीकार की। आप बड़े ही स्वा-ध्याय-प्रेमी और सरल प्रकृति के साधु थे। आत्मिक शक्ति आपमे ऐसी महान् थी कि ७६ वर्ष की अवस्था में भी आप उग्र विहार करते थे। मैसूर और हैदराबाद की तरफ विचरकर आपने खूब उपकार किया।

४—पं० मुनि श्री किशनलालजी महाराज

पं० मुनि श्री किशनलाल जी महाराज पूज्य श्री ताराचन्द्र जी के शिष्य हैं। आपका शास्त्रीय ज्ञान सुविशाल है। कविता के आप रसिक हैं। वस्तु तत्त्व को सरल और सुबोध बताकर समझाने मे आप प्रवीण हैं। आपकी प्रवचनशैली बड़ी ही मधुर है। जन्म से आप ब्राह्मण है किन्तु जैनधर्म के संस्कार आपमें सहज ही स्फुरायमान हुए हैं। आप श्रमण-संघ के मन्त्री हैं।

५—प्र. वक्ता श्री पं० मुनिश्री सौभाग्यमलजी महाराज

पं० मुनि श्री सौभाग्यमलजी महाराज ने पं० मुनि श्री किशनलालजी महाराज सा० के पास दीक्षा ग्रहण की। शास्त्रों का अत्यन्त गहन अभ्यास आपने किया है। वक्तृत्व कला मे आप निपुण हैं और संगठन के हिमायती हैं। अनेक शिक्षण संस्थाओं का आप के द्वारा सूत्र संचालन होता है। आप के द्वारा साहित्य की खूब सेवा हुई है। विपक्षी विद्वानों के साथ सात्त्विक युद्ध करके आपने विजय सम्पादन किया है। 'आचारांग' का प्र० श्रु० स्कंध का आपने सुन्दर ढंग से सम्पादन किया है। आप के व्याख्यानों के संग्रह भी प्रकट होते हैं।

६—शतावधानी प० केवल मुनिजी महाराज

प० मुनि श्री केवलचन्द जी महाराज प्र० वक्ता सौभाग्यमल जी महाराज के शिष्य थे। संस्कृत-प्राकृत आदि भाषाओं का आपने खूब अभ्यास किया था। सम्वत् २०११ मे रेल के स्लीपर पार करते हुए चक्कर आ जाने पर वहीं गिर पड़े-उसी समय रेल आजाने के कारण रेल-दुर्घटना के शिकार हो गए। यह घटना उज्जैन की है। स्था० जैन समाज ने एक विद्वान्-रत्न गुमा दिया।

पूज्य श्री ज्ञानचन्द्रजी महाराज के मुनिराज

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज की सम्प्रदाय के अनेक विभाग हुए और उसमे से अलग-अलग सम्प्रदाये फूट निकलीं। उनके ६६वे शिष्यों मे से धन्नाजी अत्यन्त प्रभावशाली शिष्य थे। आपसे भूधर जी स्वामी दीक्षित हुए। भूधर जी के चार शिष्यो में से कुशला जी प्रभावशाली हुए। आप से मुनि श्री रामचन्द्र जी ने दीक्षा ग्रहण की। रामचन्द्र जी महाराज के मुनि श्री चिमनीराम जी शिष्य हुए। आपसे मुनि श्री नरोत्तम जी महाराज ने पंच महाव्रत धारण किये। मुनि श्री नरोत्तम जी महाराज के आठ शिष्य हुए। उनमे से मुनि श्री गंगाराम जी महाराज के शिष्य तपस्वी मुनि श्री जीवन जी महाराज हुए और जीवन जी महाराज के मुनि श्री ज्ञानचन्द्र जी महाराज हुए।

उपरोक्त परम्परा में मुनि श्री गोविंदराम जी महाराज, मुनि श्री मदनलाल जी महाराज, चुन्नीलाल जी महाराज, खीमचन्द महाराज जी आदि अनेक सन्त हुए।

वर्तमान में पंडित मुनि श्री पूर्णमल जी महाराज, आत्मार्थी मुनि श्री इन्द्रमल जी महाराज, तपस्वी मुनि श्री श्रेयमल जी महाराज सा. तथा पं० मुनि श्री समर्थमल जी महाराज सा० इस सम्प्रदाय में क्रियाशील संत हैं। प० मुनि श्री समर्थमल जी महाराज ने शास्त्रों का गहरा अध्ययन किया है। आप एक प्रख्यात परम्परावादी मुनिराज हैं।

पूज्य श्री रत्नचन्द जी महाराज की सम्प्रदाय

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के ६६ वे शिष्यों मे से श्री धन्ना जी महाराज अग्रगण्य विद्वान थे। आपका परिवार दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया। आचार्य कुशल जी, पूज्य धन्नाजी महाराज के शिष्य पूज्य भूधर जी महाराज के पास दीक्षित हुए। उनके शिष्य गुमानचन्द जी महाराज हुए जो अत्यधिक प्रभावशाली आचार्य थे। आपके बारह शिष्य खूब विद्वान थे। इन सब में पूज्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज अग्रगण्य थे, जिनके नाम से इस सम्प्रदाय का नाम हुआ।

१—पूज्य श्री रत्नचंद्रजी महाराज

राजस्थान के कुड़गांव मे आपका जन्म हुआ था। आपके पिता का नाम श्री लालचन्द जी और माता का नाम हीरादेवी था। आप नागौर के श्री गंगाराम जी के यहां दत्तक के रूप में गये थे। वि० सं०

१८४८ में पूज्य श्री गुमानचन्द जी महाराज के पास उत्कृष्ट वैराग्यभाव से दीक्षा ग्रहण की। आपने आगमों का गम्भीर रूप से अध्ययन, मनन और चिन्तन किया था। तत्कालीन संत-मुनिराजों में आपकी खूब प्रतिष्ठा थी। स्थविर मुनिराज श्री दुर्गादास जी महाराज की प्रबल इच्छा के कारण समस्त की संघ ने मिलकर आपको आचार्य-पद पर प्रतिष्ठित किया। आपने हजारों जैनेतरों को जैनधर्म की दीक्षा प्रदान की। संवत् १८८२ में आपका स्वर्गविहार हुआ।

२—पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी महाराज

पूज्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज के चौथे पाट पर पूज्य की शोभाचन्द्र जी महाराज विराजमान हुए। आपका जन्म वि० सं० १९१४ मे जोधपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री भगवानदास जी और माता का नाम श्री पार्वती देवी था। आपने पूज्य श्री कजौड़ीमल जी महाराज सा० से १३ वर्ष की बाल्यावस्था में संयम ग्रहण किया। आपकी नम्रता, गंभीरता, गुरुसेवा, सहिष्णुता और मिलनसार प्रकृति से प्रभावित होकर सं० १९७२ में श्री संघ ने मिलकर आपको आचार्य-पद दिया। अनेक भव्य प्राणियों का उद्धार करते हुए सं० १९८३ में आप समाधि-मरण पूर्वक काल-धर्म को प्राप्त हुए।

३—सहमंत्री पं० रत्न श्री हस्तीमलजी महाराज

पं० रत्न हस्तीमल जी महाराज का जन्म सं० १९६७ में हुआ। केवल १० वर्ष की अवस्था में ही पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज से आपने दीक्षा ग्रहण की। आप संस्कृत-प्राकृत आदि भाषाओं के गहन अभ्यासी हैं। अत्यंत सूक्ष्म दृष्टि से आपने शास्त्रों का अध्ययन किया है। छोटी सी उम्र मे आपकी गभीरता और चरित्रशीलता आदि गुणों से आकर्षित होकर सं० १९८७ में केवल २० वर्ष की अवस्था में ही आपको आचार्य-पद से अलंकृत किया। सादड़ी सम्मेलन में आपका महत्त्वपूर्ण भाग था। आपकी प्रवचन-शैली अत्यन्त हृदयस्पर्शी है। 'नंदी सूत्र' के प्रति आपकी अगाध भक्ति है। आपने इस सूत्र का विस्तारपूर्वक हिन्दी अनुवाद भी किया है। आगम प्रकाशन कार्य के संशोधन में आपने बड़ा योगदान दिया है। आप प्रभावशाली वक्ता, साहित्यकार और चारित्रशील आध्यात्मिक मुनि हैं। सादड़ी सम्मेलन मे आप साहित्य मंत्री एवं सहमंत्री चुने गये है। आपके ज्ञान और चारित्र से स्थानकवासी जैन समाज को बहुत बड़ी आशाएँ हैं। सत्य ही आप एक ऐसे संत है जिस पर स्थानकवासी जैन समाज को गौरव हो सकता है। सतत स्वाध्याय और अध्ययनशीलता में आप रत रहते हैं।

पूज्य श्री जयमल जी महाराज की सम्प्रदाय

१—पूज्य श्री जयमलजी महाराज

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के दूसरे शिष्य धन्ना जी महाराज हुए। इनके शिष्य भूदर जी महाराज के पास मे पूज्य श्री जयमल जी महाराज ने दीक्षा ग्रहण की। आप लांबिया के निवासी थे। आपके पिता का नाम श्री मोहनदासजी समदड़िया थे और आपकी माता का नाम महिमा देवी था। विवाह

के छः मास पश्चात् व्यापार के लिए आपका मेड़ता आना हुआ। वहाँ पर आपने आचार्य श्री भूदर जी महाराज का व्याख्यान श्रवण किया। इससे आपको वैराग्य हो गया और संयम ग्रहण करने का दृढ़ निश्चय कर लिया। यह समाचार मिलते ही आपके माता-पिता अपनी बहू को लेकर मेड़ता पधारे। इन लोगों ने आपको खूब समझाया किन्तु जिसकी आसक्ति नष्ट हो गई हो वह त्याग-मार्ग में शिथिलता किस प्रकार बतला सकता है? संवत् १७८७ में आपने पंच महाव्रत धारण किये। इस समय आपकी अवस्था बाईस वर्ष की थी। आपकी कुलवती भार्या लक्ष्मीबाई ने भी पति के पथ का अनुसरण किया और साथ-ही-साथ दीक्षा ग्रहण की। आपने शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। राजस्थानी सरल भाषा में वैराग्य भाव के उत्कृष्ट पद्य और गीत आपने लिखे हैं, जिन्हें आज भी लोग याद कर और बोल कर अपनी धार्मिक भावना को बलवती बनाते हैं। 'मोटी साधु वंदना' जिसका पाठ स्वाध्याय के रूप में हो रहा है—यह आपकी ही महामूल्यवान् रचना है। लगभग सोलह वर्ष तक आपने एकान्तर उपवास किया और पचास वर्ष तक सोये नहीं। यहाँ तक कि दिन में भी कभी ऊँघे नहीं। आपने अंतिम स्थविर जीवन नागौर में बिताया। स्वर्ग-वास के एक माह पहले चार आहार का परित्याग कर संलेखना व्रत ग्रहण किया। संवत् १८५३ की वैशाख सुद १४ की पुण्य-तिथि को आपने नश्वर देह का त्याग कर स्वर्ग-गमन किया। आपके त्याग और वैराग्यमय आचरण की अमिट छाप समस्त स्थानकवासी समाज में अखण्ड रूप से सुरक्षित है।

आपकी सम्प्रदाय में पूज्य श्री जोरावरमल जी महाराज दस वर्ष की अवस्था में दीक्षित हुए और संवत् १९८६ में आपका स्वर्गवास हुआ। आप महान् विद्वान् और कुरीतियों के विरोधी थे। पंडित चौथमल जी बड़े विद्वान् एवं क्रियापात्र हुए। जोधपुर में संवत् २००८ में लम्बे दिन के संथारापूर्वक 'पंडितमरण' हुआ। वर्तमान में इस सम्प्रदाय में स्थविर मुनि श्री हजारीमल जी महाराज, वक्ता बख्तावर-मल जी महाराज, पंडित मुनि श्री मिश्रीमल जी महाराज, पंडित चांदमल जी महाराज, पंडित जीतमल जी महाराज, प० लालचन्द जी महाराज आदि मारवाड़ में विचरते हैं।

पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की सम्प्रदाय

१—पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज

पूज्य श्री रघुनाथजी म. सा का जन्म सं. १७६६ माघ शु. ५ सोजत, निवासी श्री नथमलजी बलावत (बाफणा) के यहाँ हुआ। सं. १७८७ जेठ कृ० २ पूज्य भूधरजी के पास दिक्षा ली। ९ गुरु भाई में पूज्यश्री महातपस्वी और यशस्वी हुए। चार विगय के त्यागी और ५-५- उपवास करते-करते छमासी तप बढ़ाया था। ६० वर्ष दीक्षा पालकर १८४६ माघ शु. ११ पाली में स्वर्गवासी हुए। तेरापंथ प्रवर्तक श्रीभीखणजी आप ही के शिष्य थे। मान्यताभेद से सं १८१६ में बगडी में पृथक् किये। पूज्यश्री की शिष्यपरंपरा में मंत्री मुनिश्री पं मिश्रीमलजी म सा. और मुनि रूपचंदजी म विचर रहे हैं।

२—मुनि श्री श्रीमिलालजी महाराज

मुनि श्री मिश्रीलालजी महाराज उत्साही और क्रियापात्र मुनिराज हैं। आप 'मरुधर केसरी' के नाम से सुप्रसिद्ध हैं। आपने श्रीमान् लोंकाशाह के जीवन पर "धर्मवीर लोंकाशाह" नाम की एक सुन्दर पुस्तक लिखी है। सादड़ी के साधु-सम्मेलन में आपने महत्त्वपूर्ण भाग लिया था। सोजत, भीनासर,

१८४८ में पूज्य श्री गुमानचन्द जी महाराज के पास उत्कृष्ट वैराग्यभाव से दीक्षा ग्रहण की। आपने आगमों का गम्भीर रूप से अध्ययन, मनन और चिन्तन किया था। तत्कालीन संत-मुनिराजों में आपकी खूब प्रतिष्ठा थी। स्थविर मुनिराज श्री दुर्गादास जी महाराज की प्रबल इच्छा के कारण समस्त की संघ ने मिलकर आपको आचार्य-पद पर प्रतिष्ठित किया। आपने हजारों जैनेतरों को जैनधर्म की दीक्षा प्रदान की। संवत् १८८२ में आपका स्वर्गविहार हुआ।

२—पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी महाराज

पूज्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज के चौथे पाट पर पूज्य की शोभाचन्द्र जी महाराज विराजमान हुए। आपका जन्म वि० सं० १९१४ से जोधपुर मे हुआ था। आपके पिता का नाम श्री भगवानदास जी और माता का नाम श्री पार्वती देवी था। आपने पूज्य श्री कजौड़ीमल जी महाराज सा० से १३ वर्ष की बाल्यावस्था में संयम ग्रहण किया। आपकी नम्रता, गंभीरता, गुरुसेवा, सहिष्णुता और मिलनसार प्रकृति से प्रभावित होकर सं० १९७२ में श्री संघ ने मिलकर आपको आचार्य-पद दिया। अनेक भव्य प्राणियों का उद्धार करते हुए सं० १९८३ में आप समाधि-मरण पूर्वक काल-धर्म को प्राप्त हुए।

३—सहमंत्री पं० रत्न श्री हस्तीमलजी महाराज

पं० रत्न हस्तीमल जी महाराज का जन्म सं० १९६७ में हुआ। केवल १० वर्ष की अवस्था में ही पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज से आपने दीक्षा ग्रहण की। आप संस्कृत-प्राकृत आदि भाषाओं के गहन अभ्यासी हैं। अत्यंत सूक्ष्म दृष्टि से आपने शास्त्रों का अध्ययन किया है। छोटी सी उम्र मे आपकी गंभीरता और चरित्रशीलता आदि गुणों से आकर्षित होकर सं० १९८७ में केवल २० वर्ष की अवस्था मे ही आपको आचार्य-पद से अलंकृत किया। सादड़ी सम्मेलन में आपका महत्त्वपूर्ण भाग था। आपकी प्रवचन-शैली अत्यन्त हृदयस्पर्शी है। 'नंदी सूत्र' के प्रति आपकी अगाध भक्ति है। आपने इस सूत्र का विस्तारपूर्वक हिन्दी अनुवाद भी किया है। आगम प्रकाशन कार्य के संशोधन में आपने बड़ा योगदान दिया है। आप प्रभावशाली वक्ता, साहित्यकार और चारित्रशील आध्यात्मिक मुनि हैं। सादड़ी सम्मेलन मे आप साहित्य मंत्री एवं सहमंत्री चुने गये है। आपके ज्ञान और चारित्र से स्थानकवासी जैन समाज को बहुत बड़ी आशाएँ हैं। सत्य ही आप एक ऐसे संत है जिस पर स्थानकवासी जैन समाज को गौरव हो सकता है। सतत स्वाध्याय और अध्ययनशीलता में आप रत रहते हैं।

पूज्य श्री जयमल जी महाराज की सम्प्रदाय

१—पूज्य श्री जयमलजी महाराज

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के दूसरे शिष्य धन्ना जी महाराज हुए। इनके शिष्य भूदर जी महाराज के पास मे पूज्य श्री जयमल जी महाराज ने दीक्षा ग्रहण की। आप लांबिया के निवासी थे। आपके पिता का नाम श्री मोहनदासजी समदड़िया थे और आपकी माता का नाम महिमा देवी था। विवाह

के छ मास पश्चात् व्यापार के लिए आपका मेड़ता आना हुआ। वहाँ पर आपने आचार्य श्री भूदर जी महाराज का व्याख्यान श्रवण किया। इससे आपको वैराग्य हो गया और संयम ग्रहण करने का दृढ़ निश्चय कर लिया। यह समाचार मिलते ही आपके माता-पिता अपनी वहू को लेकर मेड़ता पधारे। इन लोगों ने आपको खूब समझाया किन्तु जिसकी आसक्ति नष्ट हो गई हो वह त्याग-मार्ग मे शिथिलता किस प्रकार वतला सकता है? संवत् १७८७ में आपने पंच महाव्रत धारण किये। इस समय आपकी अवस्था बाईस वर्ष की थी। आपकी कुलवती भार्या लक्ष्मीबाई ने भी पति के पथ का अनुसरण किया और साथ-ही-साथ दीक्षा ग्रहण की। आपने शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। राजस्थानी सरल भाषा मे वैराग्य भाव के उत्कृष्ट पद्य और गीत आपने लिखे हैं, जिन्हें आज भी लोग याद कर और बोल कर अपनी धार्मिक भावना को वलवती बनाते हैं। 'मोटी साधु वंदना' जिसका पाठ स्वाध्याय के रूप में हो रहा है—यह आपकी ही महामूल्यवान् रचना है। लगभग सोलह वर्ष तक आपने एकान्तर उपवास किया और पचास वर्ष तक सोये नहीं। यहाँ तक कि दिन मे भी कभी ऊँघे नहीं। आपने अंतिम स्थविर जीवन नागौर में विताया। स्वर्गवास के एक माह पहले चार आहार का परित्याग कर संलेखना व्रत ग्रहण किया। संवत् १८५३ की वैशाख सुद १४ की पुण्य-तिथि को आपने नश्वर देह का त्याग कर स्वर्ग-गमन किया। आपके त्याग और वैराग्यमय आचरण की अमिट छाप समस्त स्थानकवासी समाज मे अखण्ड रूप से सुरक्षित है।

आपकी सम्प्रदाय में पूज्य श्री जोरावरमल जी महाराज दस वर्ष की अवस्था में दीक्षित हुए और सवत् १९८६ में आपका स्वर्गवास हुआ। आप महान् विद्वान् और कुरीतियों के विरोधी थे। पंडित चौथमल जी बड़े विद्वान् एवं क्रियापात्र हुए। जोधपुर मे संवत् २००८ में लम्बे दिन के सथारापूर्वक 'पंडितमरण' हुआ। वर्तमान में इस सम्प्रदाय में स्थविर मुनि श्री हजारीमल जी महाराज, वक्ता बख्तावरमल जी महाराज, पंडित मुनि श्री मिश्रीमल जी महाराज, पडित चांदमल जी महाराज, पंडित जीतमल जी महाराज, पं० लालचन्द जी महाराज आदि मारवाड़ मे विचरते है।

पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की सम्प्रदाय

१—पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज

पूज्य श्री रघुनाथजी म. सा. का जन्म सं. १७६६ माघ शु. ५ सोजत, निवासी श्री नथमलजी वलावत (बाफणा) के यहाँ हुआ। सं. १७८७ जेठ कृ० २ पूज्य भूधरजी के पास दिक्षा ली। ६ गुरु भाई में पूज्यश्री महातपस्वी और यशस्वी हुए। चार विगय के त्यागी और ५-५- उपवास करते-करते छमासी तप बढ़ाया था। ६० वर्ष दीक्षा पालकर १८४६ माघ शु. ११ पाली में स्वर्गवासी हुए। तेरापंथ प्रवर्तक श्रीभीषणजी आप ही के शिष्य थे। मान्यताभद से सं. १८१६ में बगड़ी में पृथक् किये। पूज्यश्री की शिष्यपरंपरा में मंत्री मुनिश्री प. मिश्रीमलजी म. सा. और मुनि श्रीरूपचदजी म. विचर रहे है।

२—मुनि श्री श्रीमिलालजी महाराज

मुनि श्री मिश्रीलालजी महाराज उत्साही और क्रियापात्र मुनिराज है। आप 'मरुधर केशरी' के नाम से सुप्रसिद्ध है। आपने श्रीमान् लोंकाशाह के जीवन पर "धर्मवीर लोंकाशाह" नाम की एक सुन्दर पुस्तक लिखी है। सादड़ी के साधु-सम्मेलन में आपने महत्त्वपूर्ण भाग लिया था। सोजत, सोरीयारी,

सादड़ी आदि कई स्थान के छात्रालय और विद्यालय आपके उपदेशों का फल है। आप विद्वान, व्याख्याता, चर्चावादी, लेखक और कवि भी है। प्रेरणा-शक्ति अच्छी है। श्रमण-संघ के आप मंत्री भी है। उग्रविहारी और संयमप्रेमी है।

पूज्य श्री चौथमलजी महाराज की सम्प्रदाय

पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज की परम्परा में पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज से आठवे पाट पर पूज्य श्री चौथमल जी महाराज आचार्य-पद से सुशोभित हुए। आप पूज्य श्री भैरूलाल जी महाराज के शिष्य और विद्वान वक्ता थे। इस सम्प्रदाय में स्थविर मुनि श्री शार्दूलसिह जी महाराज है। आपके शिष्य पं० रूपचन्द जी महाराज संस्कृत प्राकृत भापाओं के अच्छे पंडित हैं। वक्ता और लेखक भी है।

१—मरुधर आचार्य श्री अमरसिंहजी महाराज

जैन सस्कृति में आचार्य का विशेष महत्व रहा है, तीर्थंकरों के अभाव में आचार्य ही चतुर्विध संघ का नेतृत्व करता है, "दीवसमा आयरिया" आचार्य को दीपक की उपमा दी है।

श्रद्धेय पूज्य श्री अमरसिंह जी म० ऐसे ही एक महान् आचार्य थे, जिन्होंने भारत की राजधानी दिल्ली में जन्म लिया और वहीं शिक्षा-दीक्षा पाई।

पूज्य श्री लालचन्द्रजी म० की वाग्धारा को श्रवण कर सम्वत् १७४१ मे, भरी जवानी मे, स्त्री का परित्याग कर, भोग-विलास को, धन-वैभव और ऐश्वर्य को ठोकर मार दीक्षा अंगीकार की। सं० १७६१ मे आप आचार्य वने, सैकड़ों श्रमण और श्रमणियों के नेतृत्व की वागडोर सभाली। सम्वत् १७५७ में दिल्ली में वर्षावास व्यतीत किया, वहादुर शाह वादशाह उपदेश से प्रभावित हुआ।

जोधपुर के दीवान खिवसिहजी भण्डारी के प्रेमभरे आग्रह को टाल न सके तथा अलवर, जयपुर, अजमेर होते हुए मरुधर के प्राङ्गण मे प्रवेश किया।

सोजत में जिन्द को प्रतिवोध देकर मस्जिद का जैनस्थानक वनाया, जो कि आज भी काया-कल्प कर उस अतीत का स्मरण करा रहा है।

जव पूज्य श्री पाली में पधारे तो वहाँ जोधपुर, वीकानेर, मेड़ता और नागौर के प्रतिष्ठित और विद्वान् चार श्रीपूज्यों ने मिलकर शास्त्रार्थ का चेलेज दिया तो पूज्य श्री ने सहर्ष स्वीकार कर उन्हें शास्त्रार्थ में पराजित कर अपने गम्भीर-पाण्डित्य का परिचय दिया।

मरुधर-धरा की राजधानी-जोधपुर मे जव पूज्य श्री पधारे तो दीवान ने अत्यन्त सत्कार के साथ राज तलेटी महल मे विराजने के लिये प्रार्थना की, तो पूज्यश्री वहीं डट गये, राजकार्यवशात् दीवानजी वाहर चले गये, तत्पश्चात् यतियों ने मिलकर जोधपुर नरेश अजीतसिंहजी से प्रार्थना की कि दीवानजी के गुरु आपको नमस्कार नहीं करते। नरेश ने सहज मस्ती मे कहा—परिव्राटों के चरण-कमलो मे हमारे शिर झुकते है, उन्हें झुकने की आवश्यकता ही क्या है?

हम इस अनुचित कार्य को देख नहीं सकते, आज्ञा होने पर द्वितीय अनुकूल स्थान वतला दिया जाय, हकारात्मक उत्तर को प्राप्त कर पूज्य श्री को आसोप ठाकुर साहव की हवेली मे ठहरा दिया गया,

जहाँ कि मानव जाने में भय का अनुभव करता था, आचार्य श्री को अनेक उपसर्ग देने के बाद देव पराजित हुआ, भौतिकता पर आध्यात्मिकता की विजय हुई, स्थानकवासी जैन धर्म के प्रचार का बीज वपन हुआ, आज मरुधरा की शुष्क भूमि में स्थानकवासी जैन समाज का बगीचा लहलहा रहा है। उसका सर्व प्रथम श्रेय पूज्य श्री को है। उस महान् आचार्य के चरणों मे शतश सहस्रश वन्दन। आपके बाद पूज्य श्री तुलसीदासजी म० और पूज्य श्री सुजानमलजी महाराज क्रमश हुए।

२—'विश्व-विभूति' श्री जीतमलजी महाराज

भारतीय संस्कृति के मननशील मनीषी आचार्य श्री जीतमल जी म० जिनका जन्म संवत् १८२६ में रामपुरा में हुआ, पिता देवसेन जी और माता का नाम सुभद्रा था। अध्यात्मवाद के उत्प्रेरक आचार्य श्री सुजानमल जी के उपदेश से प्रभावित होकर सं० १८३४ में माता के साथ संयम के कठिन मार्ग पर अपने मुस्तैदी कदम बढ़ाये। आचार्य श्री के चरणों में बैठकर न्याय, व्याकरण, उर्दू-फारसी, गुजराती, मागधी और अपभ्रंश साहित्य का गम्भीर अध्ययन किया।

आप दोनों हाथों और दोनों पैरों से एक साथ लिखते थे, चारों कलमें एक साथ एक-दूसरे से आगे बढ़ने का प्रयत्न करती थीं। १३ लाख श्लोकों की प्रतिलिपियाँ करना इसका ज्वलंत उदाहरण है। जैन-जैनेतर के भेद-भाव के बिना, किसी भी उपयोगी ग्रन्थ को देखते तो उसकी प्रतिलिपि कर देते थे, यही कारण है कि आपने ३२ वक्त,-बत्तीस आगमों की-ज्योतिप, वैद्यक, सामुद्रिक-गणित, नीति, ऐतिहासिक, सुभापित, शिक्षाप्रद औपदेशिक आदि विपयों के ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ कीं।

चित्रकला के प्रति आपका स्वाभाविक आकर्पण था। जैन श्रमण होने के नाते धार्मिक, औपदेशिक, कथा-प्रसङ्गों को लेकर तथा जैन भौगोलिक नक्शे और कल्पना के आधार पर ऐसे चित्र चित्रित किये है जिन्हें देख मन-मयूर नाच उठता है। उनके जीवनका एक प्रसङ्ग है कि स० १८७१ मे जोधपुर के परम मेधावी सम्राट् मानसिहजी के यह प्रश्न पूछने पर कि "जल की बूँद मे असख्य जीव किस प्रकार रह सकते हैं ?" उत्तर में आचार्य श्री ने एक चने की दाल जितने स्वल्प स्थान मे एक सौ आठ हस्ति अङ्कित किये जिन्हें सम्राट् ने सूक्ष्मदर्शक शीशा की सहायता से देखा। प्रसन्नता प्रकट करते हुए जैन-मुनियों के प्रशंसा रूप निम्न कवित्त रचा—

> काहू की न आश राखे, काहू से न दीन भाखे,
> करत प्रणाम ताको, राजा राण जेवड़ा।
> सीधी सी आरोगे रोटी, बैठा बात करे मोटी,
> ओढ़ने को देखो जांके, धोला सा पछेवड़ा॥
> खमा खमा करे लोक, कदियन राखे शोक,
> बाजे न मृदंग चंग, जग माहि जे वड़ा।
> कहे राजा मानसिंह, दिल मे विचार देखो,
> दु खी तो सकल जन, सुखी जैन सेवड़ा॥

आप उस समय के प्रसिद्ध कवि थे, आपने राजस्थानी भापा मे सर्वजनोपयोगी अनेक ग्रन्थों का निर्माण किया। उदाहरणार्थ दो-चार ग्रन्थों का उदाहरण ही पर्याप्त होगा। 'चन्द्रकला' नामक ग्रन्थ जो चार खण्डों मे विभक्त है, एक सौ ग्यारह ढ़ाल में हैं। और सूरप्रिय सप्त ढ़ाल में है।

आपने दया-दान के सम्बन्ध मे भी श्री० श्वे० तेरापंथी आचार्य जीतमलजी से पाली और रोइट में शास्त्रार्थ कर उन्हें पराजित किया था।

७८ वर्ष तक संयम्-साधना करने के बाद, १ महीने का संथारा कर सम्वत् १६१२ में ज्येष्ठ शुक्ला दशमी के दिन जोधपुर में उस विश्व-विभूति का स्वर्गवास हुआ।

जीवन-व्यापिनी संयम-साधना की परीक्षा में पूर्ण रूप से सफल हुए। अन्धेरी सड़ी गली गलियों में ठोकरें खाते हुए व्यक्ति के लिए उनका दिव्य-जीवन प्रकाशपुञ्ज के समान है, वह मूक स्वर मे समय मात्र का भी प्रमाद मत करो का वज्र आघोष कर रहा है।

आपका स्वर्गवास सं० १८६२ में हुआ। आप के बाद प्रभावशाली पूज्य श्री ज्ञानमल जी म० और पूज्य श्री पूनमचन्द जी म० पाट पर आये।

३—पूज्य श्री आत्मार्थी श्री जेठमलजी महाराज

पूज्य श्री पूनमचन्द जी महाराज के बाद आप के शिष्य श्री जेठमल जी महाराज आचार्य हुए। आपका जन्म सादड़ी, मेवाड़ में संवत् १६१४ में हुआ था। आप के पिता का नाम हाथी जी और माता का नाम लिछमा जी था। संवत् १६३१ में आपने दीक्षा ग्रहण की थी। आप महान् तपस्वी, आत्मार्थी तथा ऊँचे ध्यानी थे। 'सिद्ध मुनि' के रूप मे उस समय आपकी सर्वत्र प्रतिष्ठा थी। सम्वत् १६७४ मे इस तेजस्वी दीपक का विलोप हो गया।

४—तपोमूर्ति श्री जसराजजी महाराज

जीवन को ऊपर उठाने के लिए निवृत्ति और प्रवृत्ति रूप दो पंखों की आवश्यकता है। जैसे एक पंख टूट जाने पर पक्षी अनन्त आकाश में संचरण-विचरण नहीं कर सकता, वह ऊँची उड़ान नहीं भर सकता वैसे ही साधक भी। एकान्त निवृत्ति अकर्मण्यता की प्रतीक है, तो एकान्त प्रवृत्ति भी चित्त की चपलता की प्रतीक है। एतदर्थ ही आर्यावर्त के महामानव की हृदय-तंत्री झंकृत हुई थी—

"एगओ विरई कुज्जा, एगओ य पवत्तणं।
असजमे नियत्ति च सजये य पवत्तणं !!" उत्तरा० ३१-२.

एक से निवृत्त होकर दूसरे में प्रवृत्ति कर, हिंसा, असत्त संकल्प, दुराचरण से निवृत्त होकर अहिंसा संयम में प्रवृत्ति कर। अशुभ से निवृत्त होकर शुभ में प्रवृत्ति करना ही सम्यक् चारित्र है। सन्त-जीवन की यही एक महान विशेपता है कि वे अशुभ से निवृत्त होकर शुभ मे प्रवृत्ति करते हैं।

श्रद्धेय मुनि श्री जसराज जी म० ऐसे ही सन्त थे। उन्होंने इठलाती हुई तरुणाई में परिणीता सुन्दरी का परित्याग कर त्याग और वैराग्य से, रामपहचानजी म० के चरण-कमलों में जैन-दीक्षा धारण की, और उन्हीं के चरणों में बैठ कर जैन आगमों का गहन अध्ययन किया।

अतीत के उन महान् श्रमणों के तपोमय जीवन को पढ़ते ही आपका तपस्या के प्रति जो स्वाभाविक अनुराग था, वह प्रस्फुटित हो गया और आपने तपस्या के कंटकाकीर्ण महामार्ग की ओर अपने मुस्तैदी कदम बढ़ाये।

सवा सोलह वर्ष तक संयम-साधना और आत्म-आराधना करते हुए जो आपने तपस्या की उसका

वर्णन आपके एक शिष्य ने भक्ति-भाव से उत्प्रेरित होकर पद्य में अङ्कित किया है। जिसे पढ़ते ही रोमांच के साथ ही तपोमूर्त्ति धन्ना अनगार का स्मरण हो आता है।

वे नीरस और अल्पतम आहार करते थे, सरस आहार का उन्होंने त्याग कर दिया था। विशेष आश्चर्य तो यह है कि उन्होंने सवा सोलह वर्ष में केवल ५ वर्ष ही आहार ग्रहण किया था। उन्होंने अट्ठाई तक जो तप किया था उसका निम्न वर्णन है —

६२	६०	५२	५१	४५	४२	४१	३०	२४	२१	२०	१६	१५	१२	१०	९	८
१	२	१	१	५	२	१	१७	४	२	२	१	६	२	८	१५	१५

आपका सं० १९५० में ७१ दिन के दीर्घ संथारे के बाद जोधपुर में स्वर्गवास हुआ। धन्य है उस तपोमूर्त्ति को। [आप पूज्य श्री अमरसिंहजी म० के प्रशिष्य थे।]

५—पूज्य श्री ताराचन्दजी महाराज

पूज्य श्री जेठमल जी महाराज के बाद आपके पाट पर पूज्य श्री नैनमल जी महाराज तथा पूज्य श्री दयालुचन्द जी महाराज हुए और आपके पाट पर पूज्य श्री ताराचन्द जी महाराज विराजमान हैं।

पूज्य श्री ताराचन्द जी महाराज का जन्म मेवाड़ के बंबोरा ग्राम में हुआ था। आपका पूर्व नाम हजारीमल जी था किन्तु दीक्षा लेने के बाद आपका नाम ताराचन्द जी रखा गया। आप अत्यन्त वृद्ध हैं फिर भी धर्मपालन का उत्साह रंचमात्र भी नहीं घटा है। अपितु धार्मिक दृढ़ता उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है।

६—पं० मुनि श्री पुष्कर जी महाराज

पं० मुनि श्री पुष्कर मुनि जी ब्राह्मण जाति के शृंगार हैं। संवत् १९८१ में आपका दीक्षा-संस्कार सम्पन्न हुआ। संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं का आपने मननीय अध्ययन किया है। 'सूरि-काव्य' और 'आचार्य सम्राट्' आपकी उल्लेखनीय रचनाये है। आप अतिकुशल वक्ता भी हैं। आप श्रमण-संघ के साहित्य मत्री हैं।

इस सम्प्रदाय में महासतियों का अभ्यास भी प्रशसनीय और अनुकरणीय है। प्रवर्त्तिनी महासति मोहनकुंवर जी की सुशिष्या महासति श्री पुष्पवती जी और कुसुमवती जी ने उच्च शिक्षण प्राप्त किया है। महासति जी श्री शीलकुंवर जी भी संस्कृत-प्राकृत आदि भाषाओं की परम विदुषी है।

पूज्य श्री नानकराम जी महाराज की सम्प्रदाय

पूज्य श्री जीवराम जी महाराज के शिष्य पूज्य लालचन्द जी, उनके बाद पूज्य श्री दीपचन्दजी महाराज और उनके बाद पूज्य श्री नानकराम जी महाराज हुए।

आपकी विद्वत्ता और आचारपरायणता उल्लेखनीय थी। इस सम्प्रदाय में आपका विशिष्ट स्थान था।

१—प्रवर्तक पं० मुनि श्री पन्नालाल जी महाराज

आपके बाद अनुक्रम से मुनि श्री वीरभान जी, लक्ष्मणदास जी, मगनमल जी, गजमल जी और धूलमल जी महाराज हुए। वर्तमान में इस समय पं० मुनि श्री पन्नालाल जी महाराज हैं। आप एक प्रतिभाशाली संत हैं। आप की व्याख्यान-शैली प्रभावोत्पादक है। ज्योतिष-शास्त्र के आप विज्ञाता हैं। आपने अनेक अशिक्षित क्षेत्रों में विचरण कर स्वाध्याय का प्रचार किया है। आप विद्याप्रेमी और सुधारक विचारों के स्थविर सन्त हैं। संगठन के बड़े प्रेमी हैं।

राजस्थान के प्रख्यात मुनिराजों में से आप भी एक प्रख्यात मुनिराज हैं। आप अजमेर-जयपुर प्रान्त के प्रधान मन्त्री और तिथिनिर्णायक मुनि समाज के मुख्य मुनि हैं।

इस सम्प्रदाय की दूसरी शाखा में अनुक्रम से मुनि श्री सुखलालजी, हरखचन्दजी, दयालचन्दजी, लक्ष्मीचन्द्रजी हुए और पं० मुनि श्री हगामीलालजी महाराज हैं।

पूज्य श्री स्वामीदास जी महाराज की सम्प्रदाय

पूज्य श्री जीवराज जी महाराज के शिष्य लालचन्द जी के पाट पर श्री दीपचन्द जी महाराज और आपके बाद पूज्य श्री स्वामीदास जी महाराज आचार्य पद पर विभूषित हुए।

आपके बाद अनुक्रम से पूज्य मुनि श्री उग्रसेन जी, घासीराम जी, कनीराम जी, ऋपिनाथ जी और रगलाल जो पाट पर आये। आपके बाद वर्तमान में स्वामो श्रो फत्तेहचन्द जो महाराज, स्वामी छगनलाल जी महाराज और स्वामी श्री कन्हैयालाल जी महाराज आदि विद्वान् साधु-मुनिराज हैं। प० मुनि श्री छगनलाल जी अच्छे क्रियापात्र और प्रभाविक मुनि हैं। अजमेर सम्मेलन मे आपको 'मरुधर मन्त्री' नियुक्त किया था। मुनि श्री कन्हैयालाल जी महाराज ने सस्कृत और प्राकृत-भाषाओं का गूढ ज्ञान सम्पादन किया है। मूल सूत्तारिण जैसे आगम आपने सम्पादित किया है। कॉन्फरेस के आगम सम्पादन-कार्य में प्रतियों का संशोधन-कार्य आपने बड़ी दिलचस्पी से किया। अभी भी आप आगमों में से विविध चुनाव करते ही रहते हैं।

पूज्य श्री शीतलदास जी महाराज की सम्प्रदाय

पूज्य श्री शीतलदास जी महाराज ने सं० १७६३ में पूज्य श्री लालचन्द जी महाराज के पास आगरा मे दीक्षा ग्रहण की थी। आप रेणी ग्राम निवासी अग्रवालवंशीय महेशजी के सुपुत्र थे। आपका जन्म सं० १७४७ में हुआ था। आपकी लेखन-शैली अत्यधिक प्रसिद्ध थी। तत्कालीन मुनियों में साहित्य-शिक्षण-क्षेत्र में आप अजोड़ थे। जोधपुर, बीकानेर, सांभर, आगरा और दिल्ली आदि अनेक नगरों मे विचरण कर आपने धर्म प्रचार की धूम मचा दी। आपने कुल मिलाकर ७४ वर्ष संयम का पालन किया।

वि० सं० १८३६ पोस सुदी १२ को चारों आहार का प्रत्याख्यान करके संलेखना व्रत धारण कर राजपुर नामक ग्राम में आप समाधि-मरण को प्राप्त हुए।

पूज्य श्री शीतलादास जी महाराज के पाट पर अनुक्रम से पूज्य श्री देवीचन्द जी, हीराचन्द जी लक्ष्मीचन्द जी, भैंरूदास जी, उदेचन्द जी, पन्नालाल जी, नेमीचन्द जी और वेणीचन्द जी महाराज हुए।

१—तपस्वी श्री वेणीचन्दजी महाराज

तपस्वी श्री वेणीचन्द जी महाराज का जन्म सं० १६६८ मे हुआ था। 'पटणा' निवासी श्री चन्द्र-भान जी आपके पिता और कुँवराबाई आपकी माता थी। वैराग्य की भावना आपके हृदय में तरंगित हुई जिसके परिणामस्वरूप आषाढ़ सुदी ५ सं० १६२० को पूज्य श्री पन्नालाल जी के पास दीक्षा ग्रहण कर ली। आपकी तपस्या निरंतर चलती रहती थी। अनेक प्रकार के कठिन अभिग्रह आप धारण करते रहते थे। एक अभिग्रह तो इतना कठिन था कि जिसके फलित न होने के कारण आपको पच्चीस वर्ष चार मास और पन्द्रह दिन तक केवल छाछ पर ही रहना पड़ा। संवत् १६६५ को एक दिन का सन्थारा कर शाहपुरे में आप कालधर्म को प्राप्त हुए। आपके सम्बन्ध में ऐसी किम्वदन्ती है कि आपका चोलापट्टा अग्नि से नहीं सुलगा।

आप अत्यन्त निर्भय थे। कठिन साहसी आदमी भी विचलित हो जाय, ऐसे स्थानों में आप विहार करते थे। भय किस चिड़िया का नाम है-तपस्वी महाराज जानते तक न थे। भय आपके शब्दकोष में भी नहीं था।

२—तपस्वी श्री कजौड़ीमलजी महाराज

तपस्वी कजौड़ीमल जी महाराज का जन्म माघ सुदी १५ स० १६३६ को वेगु शहर में हुआ था। आपके पिता का नाम घासीराम जी और माता का शृंगारबाई था। आप बाल ब्रह्मचारी थे। अपने संयमी जीवन में आपने अनेक प्रकार का कठिन तपाराधन किया।

मुनि श्री छोगालालजी महाराज

मुनि श्री छोगालाल जी महाराज नौ वर्ष के बाल्यवय में स० १६५८ को दीक्षा ग्रहण की और शास्त्रों का गहरा अध्ययन किया। आप प्रभावशाली प्रवचनकार थे।

जीव-हिंसा के विरोध मे आपने प्रवल आन्दोलन उठाया और अनेक राजा-महाराजाओं को प्रतिवोध देकर उन्हें हिसा के दुष्कर्म से छुड़ाया। इस समुदाय मे अनेक महासतियाँ विदुपी और प्रभाव-शाली हुई।

पूज्य श्री एकलिंगदासजी महाराज की परम्परा

१—पूज्य श्री एकलिंगदासजी महाराज

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के ग्यारहवे पाट पर पूज्य श्री एकलिगदास जी महाराज आचार्य-पद पर विराजमान हुए। आप मेवाड़ में परम त्यागी और तपस्वी मुनिराज थे। आपके पिता का नाम

शिवलाल जी था जो संगेसरा के निवासी थे। संवत् १६१७ में आपका जन्म हुआ। तीस वर्ष की युवावस्था में पूज्य श्री नरसीदास महाराज से आकोला में आपने दीक्षा ग्रहण की और संवत् १६६७ मे उंटाला ग्राम में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके ६ अग्रगण्य विद्वान् शिष्य थे जिनमे श्री मोतीलाल जी महाराज अग्रगण्य हैं।

२—पूज्य श्री मोतीलालजी महाराज

पूज्य श्री मोतीलाल जी महाराज सं० १६६२ मे आचार्य-पद पर आरूढ़ हुए। आपका जन्म सं० १६६० में उंटाला में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री धूलचन्दजी था। केवल सतरह वर्ष की अवस्था में आपने दीक्षा ग्रहण की। आप सरल स्वभावी और सुन्दर वक्ता हैं। सादड़ी साधु सम्मेलन में आपने भी आचार्य पद त्याग कर श्रमण संघ के संगठन में योगदान दिया वहाँ पर आप मंत्री नियुक्त हुए हैं। आपके गुरुभाई श्रीमांगीलाल जी महाराज का जन्म' राजा जी का करेड़ा में हुआ था। ग्यारह वर्ष की अवस्था मे ही आपने दीक्षा ग्रहण की थी। आप निष्ठाशाली चारित्रवान् मुनिराज हैं।

पूज्य श्री मनोहरदास जी महाराज के मुनिराज

१—पूज्य श्री मनोहरदास जी महाराज

पूज्य श्री मनोहरदास जी महाराज का जन्म ओसवाल जाति में नागौर नगर मे हुआ था। आप सर्वप्रथम लोंकागच्छ के यति श्री सगदारंजी के पास मे दीक्षित हुए थे। तत्पश्चात् क्रियोद्धारक पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के प्रधान शिष्य बने। आप प्रतिभाशाली विद्वान् और तपस्वी मुनिराज थे। आपकी प्रवचन-पद्धति अत्यन्त प्रभावोत्पादक होने के कारण सैंकड़ों भव्य प्राणियो का आपने उद्धार किया। आपका शिष्य-परिवार 'यमुना-पार के सन्त' कहलाता है। आपके शिष्य भागचन्द जी महाराज ने भी संयुक्त प्रान्त के अनेक क्षेत्र पवित्र किये हैं। परिपहों को सहन करके जैनधर्म की आगमानुसारी चारित्र-शीलता को दृढ़ किया।

पूज्य श्री खेमचन्दजी महाराज

पूज्य श्री खेमचन्द जी महाराज एक अमर शहीद मुनिराज माने जाते हैं। विधर्मियों की कट्टरता का शिकार बनकर आपने अपने प्राणों की किंचित् भी परवाह न कर हँसते हुए अपने प्राणों को अर्पण कर दिया।

पूज्य श्री रत्नचन्द जी महाराज

पूज्य श्री रत्नचन्द जी महाराज वि० सं० १८६२ मे नवकार मन्त्र के पाँचवें पद पर प्रतिष्ठित हुए। शास्त्रों के आप प्रकाण्ड पंडित थे। मुनिराजों ने आपको 'गुरुदेव' की उपाधि प्रदान की थी। जैन और जैनेतर सब कोई आपको इसी नाम से पुकारते थे। अनेक शास्त्रार्थों मे आप विजयी हुए थे।

आपके नाम से संयुक्त प्रान्त में अनेक शिक्षण-संस्थाओं का संचालन होता है, जहाँ से समाजोपयोगी कार्य सम्पन्न होते हैं। आप एक अच्छे कवि और सिद्धहस्त लेखक थे। 'गुरु स्थान चर्चा' आपकी विलक्षण लेखन-शैली का उत्तम नमूना है। मूर्तिपूजक सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध आचार्य श्री विजयानन्द सूरि जी जब स्थानकवासी सम्प्रदाय में आत्माराम जी महाराज के नाम से कहलाते थे तब उन्होंने आप ही के चरणों में बैठ कर शास्त्राभ्यास किया था। आपने सं० १६४१ में पूज्य मंगलसेन जी महाराज से दीक्षा ग्रहण की और सं० १६८८ में श्री संघ ने आपको आचार्यपद दिया। आपको आगमों का गहरा ज्ञान था। आपके करकमलों द्वारा अनेक आगमग्रन्थ सुवाच्य अक्षरों में लिपिवद्ध हुए थे। सं० १६६२ में आपका स्वर्गवास हुआ।

पूज्य श्री मोतीलाल जी महाराज

अजमेर के बृहत्साधु सम्मेलन से पूर्व सब स्था० जैन सम्प्रदायों का संगठन करने के प्रयत्न के समय महेन्द्रगढ़ में आपको आचार्यपद प्रदान किया गया। आप वड़े विद्वान् थे। शान्त-सौम्य प्रकृति के स्थविर तपस्वीर सन्त थे। पं० पृथ्वीचंद्र जी महाराज आप ही के शिष्य हैं।

पूज्य श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज

पूज्य श्री पृथ्वीचंद्र जी महाराज ने सं० १६५६ में पूज्य श्री मोतीराम जी महाराज के पास में पंच महाव्रत धारण किये। आपका स्वभाव अत्यन्त शांत और सरल है। वि० सं० १६८३ में नारनौल में आपको आचार्य-पद दिया गया। आपकी क्रियाशीलता और विद्वत्ता की संयुक्त प्रान्त के संतों मे अच्छी प्रतिष्ठा है। आपने सादड़ी साधु सम्मेलन में श्रमण सगठन के लिए आचार्य-पद का त्याग किया और सम्मेलन द्वारा आप मंत्री निर्वाचित हुए हैं।

कविवर पं० मुनि श्री अमरचन्द जी महाराज

कविवर मुनि श्री अमरचन्द जी महाराज पूज्य श्री पृथ्वीचन्द जी महाराज के विद्वान् शिष्य हैं। आगमों और शास्त्रों का आपने गहन अध्ययन किया है। आपकी प्रवचन शैली युग के अनुरूप सरल और साहित्यिक है। आपने गद्य-पद्य ग्रन्थों की रचना करके साहित्य के क्षेत्र में काफी प्रकाश फैलाया है। आगरा के "सन्मति ज्ञानपीठ" प्रकाशन संस्था ने आपके साहित्य को कलात्मक रीति से प्रकाशित किया है। आपके विचार उदार और असाम्प्रदायिक हैं। आपकी विचारधारा समाज और राष्ट्र के लिये अभिनन्दनीय हैं। सादड़ी सम्मेलन में आप एक अग्रगण्य मुनिराज के रूप में उपस्थित थे। इस समय स्थानकवासी जैन समाज के मुनिराजों में आपका गौरवपूर्ण स्थान है।

पूज्य श्री जीवराज जी महाराज का सम्प्रदाय

१—आचार्य धनजी स्वामी

प्रात स्मरणीय पूज्य श्री जीवराज जी महाराज का जीवन वृत्तान्त हम पिछले अध्यायों में पढ़ चुके हैं इनके स्थान पर श्री धनजी स्वामी को आचार्य पद दिया गया।

बीकानेर की महारानी ने महाराज सा० को अपने राज्य में पधारने के लिये विनति की साधु-उचित भाषा में आपने फरमाया " क्षेत्र फरसने का अवसर होगा तो उधर विचरने के भाव हैं।"

कई मास के पश्चात् आप अपने दस शिष्य के परिवार सहित बीकानेर पधारे। नगर-प्रवेश के समय आपके विरोधियों ने आपका मार्ग रोका। किन्तु मुनि श्री शान्ति और क्षमता की मूर्ति थे। आपने श्मशान भूमि में रही हुई स्मारक छत्री (स्तूप) में किसी से आज्ञा लेकर निवास किया और एकान्त में ध्यान मग्न हो गये। आपके अन्य शिष्य भी शास्त्राभ्यास में तल्लीन हो गये। चन्द्र विहार उपवास करते-करते आठ दिन बीत गये किन्तु आपकी और आपके शिष्यों की दृढ़ता में कोई अन्तर नहीं आया। आप सब दृढ परिणामी थे। एक-एक करके नौ दिन बीत गये। महारानी की एक दासी उस तरफ से निकली। उसने मुनिराज को देखा, वंदना की और महल में जाकर महारानी को यह सब हाल कह सुनाया। महारानी ने अत्यन्त सम्मान और समारोहपूर्वक अपने गुरुदेव को नगर में प्रवेश कराया और अपने अपराधों की क्षमायाचना की। इस प्रकार महारानी ने मुनि श्री के उपदेशामृत का प्रजा को पान कराया। मुनि श्री के पधारने से अनेक लोगों को सम्यक् दर्शन की प्राप्ति हुई और असंख्य प्राणियों को अभयदान दिया।

२—आचार्य विष्णु और आचार्य मनजी स्वामी

आचार्य धनजी स्वामी के पाट पर आचार्य विष्णु और आचार्य मनजी स्वामी क्रमश. आये। आप दोनों के समय में शासन की सुन्दर प्रभावना हुई। दोनों आचार्य अपने-अपने समय में धर्म-प्रचार के केन्द्र-बिन्दु माने जाते थे। तत्कालीन साधुमार्गी समाज में आप दोनों की आचारनिष्ठा के प्रति अत्यधिक प्रतिष्ठा थी।

३—आचार्य नाथुराम जी स्वामी

आचार्य श्री नाथूराम जी महाराज सा० का जन्म जयपुर राज्य के खडेलवाल दिगम्बर जैन-परिवार में हुआ था। आपकी ऐसी मान्यता थी कि सच्चा दिगम्बरत्व तो कषाय-रूपी वस्त्रों को उतारने से ही होता है और शुक्ल-ध्यान में रमण करने से ही सच्चा श्वेताम्बरत्व प्राप्त होता है। यदि ऐसा नहीं है तो नामों का कोई महत्त्व नहीं। हमको तो आगमों की आराधना करनी चाहिए। यही कारण है कि आपकी शिष्य-मंडली अत्यधिक स्वाध्याय-परायण थी। आपके बीस शिष्यों ने बत्तीसों शास्त्रों को कंठस्थ कर लिया था। इतना ही नहीं किन्तु एकान्त ध्यान और कायोत्सर्ग की तपश्चर्या में रत रहने वाले अनेक साधु आपके शिष्य-समुदाय मे थे।

स्वमत तथा परमत के आप प्रकाण्ड पंडित थे। आपके साथ वाद-विवाद करने वाले पण्डित को अन्त में जैन-धर्म स्वीकार करना ही पड़ता था। आचार्य कृष्ण जैसे विद्वान् ने आपके द्वारा ही दीक्षा ग्रहण की थी, जो पंजाव में रामचन्द्र के नाम से विख्यात थे। आपके समय से ही इस समुदाय में दो विभाग हो गये। जिसका वर्णन आगे किया जायगा।

४—आचार्य श्री लक्ष्मीचन्द्र जी महाराज

आचार्य श्री लक्ष्मीचन्द्र जी महाराज ने आगमों का तलस्पर्शी अभ्यास किया और इनका मंथन कर राजस्थानी मे अनेक पद्य-गीतों की रचना की। आपके गीत सामान्य जनता की जवान पर गूंजने लगे।

५—आचार्य श्री छत्रमल जी म०

आचार्य श्री छत्रमल जी महाराज दर्शनशास्त्र के महान् विज्ञाता थे। आपने स्याद्वाद और नय-प्रमाणों के रहस्य सरल पद्यों में रचे और सामान्य बुद्धिवालों को भी अनेकान्त सिद्धान्त का बोध कराया।

६—आचार्य श्री राजाराम जी म०

आचार्य श्री राजाराम जी महाराज वाद-विवाद करने वाले विद्वानो के हृदयांधकार को दूर करने में समर्थ सिद्ध थे। मिथ्यादर्शन के आप कट्टर दुश्मन थे। आपके अनुशासन में आत्मनिष्ठा दृढ़वती हुई।

७—आचार्य श्री उत्तमचन्द जी म०

आचार्य श्री उत्तमचन्द्र जी महाराज महान् तपस्वी थे। आपके गुरुभ्राता श्री राजचन्द्र षट्-शास्त्रों के पारगत थे। आप दोनों ने मिलकर शासन की अत्यधिक प्रभावना की। श्री रत्नचन्द्रजी महाराज भी आपके वड़े गुरु भाई थे।

८—आचार्य श्री भग्गुमल जी महाराज

आचार्य श्री भग्गुमल जी महाराज का जन्म चन्द्रजी का गुड़ा नामक ग्राम में हुआ था। आप पल्लीवाल थे। छोटी-सी वय में आपने दीक्षा ग्रहण की। आपकी माता और बहन ने भी दीक्षा ग्रहण की थी। आचार्य महाराज अंग्रेजी, फारसी और अरबी भाषा के भी विद्वान् थे। आपके अक्षर इतने सुन्दर थे कि वांचन में प्रमाद करने वाले साधु को इस ओर वार-बार आकर्षित करते। गणित, ज्योतिष और योगशास्त्र आदि अनेक विषयों के बहुश्रुत विद्वान् होने के कारण अलवर-नरेश महाराजा मंगलसिंह जी ने आपको 'राज्य पंडित' की उपाधि से विभूषित किया था।

एक समय श्राद्ध के विषय मे विवाद हुआ। पंडितों ने कहा, "जिस प्रकार मनीऑर्डर से भेजे जाने वाले रुपये यथास्थान पहुँच जाते हैं उसी प्रकार श्राद्ध का अन्न भी पितरों को मिल जाता है।"

तब आचार्यश्री ने भरी सभा में प्रश्न किया कि " जिस प्रकार आपके पास मनीऑर्डर की रसीद आती है, उसी प्रकार पितरों के यहाँ से आई हुई क्या आपके पास कोई रसीद है?"

इस उत्तर से महाराज मंगलसिंह अत्यन्त प्रसन्न हुए। महाराजा ने मुनि श्री को वन्दना की और आपके चरणों मे कुछ भेट चढ़ाई। किन्तु जैन साधु तो अपरिग्रही होते है—उनके इस प्रकार की भेट किस काम की ? उन्होंने इसे अस्वीकार की और राजा को अनुरोध किया कि इस प्रकार के राज-दरबार में जैन-मुनि को नहीं बुलाना चाहिये।

आपकी काव्य-शैली प्रासाद गुण संयुक्त थी। 'शान्तिप्रकाश' जैसे गूढ़ ग्रन्थों का निर्माण आपकी उत्कृष्ट विद्वता का ज्वलन्त उदाहरण है।

९—तपस्वी श्री पन्नालाल जी महाराज

तपस्वी श्री पन्नालाल जी महाराज आचार्य श्री भग्गुलाल जी महाराज के शिष्य थे। आप महा-तपस्वी महात्मा थे। संवत् १९५२ के जेठ सुद ३ को आपकी समाधि-मरण की तिथि मानी जाती है।

आपके जीवनकाल में अनेक चामत्कारिक घटनाएँ देखी गई थीं। ऐसा कहा जाता है कि आपकी दृष्टिमा
से रोगों का नाश हो जाता था।

१०—श्री रामलाल जी महाराज

श्री रामलाल जी महाराज का जन्म संवत् १८७० व्यावर में हुआ था। बीस वर्ष की युवावस्थ
में आपने मुनि श्री उत्तमचन्द जी महाराज से दीक्षा ग्रहण की थी। आप अत्यन्त उग्र विहारी थे। अप
जीवन में नौ बार आपने मारवाड़ का विहार किया। भारत के अनेक प्रान्तों को आपने अपने उपदेशामृ
का पान कराया। सं० १९५० में जीवन के १० दिन और एक प्रहर जब शेष रहा था—तब सम्पू
आहार का त्याग करके समाधि-मरण से स्वर्गगामी हुए।

११—मुनि श्री फकीरचन्द जी महाराज

मुनि श्री फकीरचन्द जी महाराज का जन्म सं० १९१६ की जेठ सुदी १५ की रात्रि को साढ़े बारह
बजे सूरत में हुआ था। सर्वाङ्गसुन्दर कन्या के साथ आपका पाणिग्रहण हुआ किन्तु सं० १९४६ मे ३० वर्ष
की भर-जवानी में श्री रामलाल जी महाराज से आपने आर्हती दीक्षा ग्रहण की और शीघ्र ही शास्त्रों का
का स्वाध्याय और लेखन-कार्य प्रारम्भ किया। आप अति उग्र विहारी थे। सन् १९३६ में आपने बंगाल,
कलकत्ता तक पहुँचकर भरिया मे चातुर्मास किया।

स्वर्ग-गमन से तीन दिन पूर्व आपने संथारा ग्रहण किया और जेठ सुदी १५ सं० १९९६ को पाटोदी
नगर मे कालधर्म को प्राप्त हुए।

१२—पं० मुनिश्री फूलचन्दजी महाराज

पं० मुनि श्री फूलचन्द जी महाराज का जन्म बीकानेर राज्यान्तर्गत 'भाड़लासोभा' नामक ग्राम
में चैत सुदी १० संवत् १९५२ को हुआ था। आप राठौड़ वंशीय क्षत्रिय ठाकुर विपिनसिंह के सुपुत्र हैं।
संवत् १९६८ में श्री फकीरचन्द जी महाराज के चरणों में दीक्षा ग्रहण की।

श्री पुप्फ भिक्खु के नाम से प्रसिद्ध आपने करांची आदि क्षेत्रों में विचरण कर अनेक मांसा-
हारियों को पाप से निवृत्त करने का महान् कार्य किया।

पूज्य श्री जीवनराम जी महाराज की सम्प्रदाय

१—पूज्य श्री जीवनराम जी महाराज

पूज्य श्री लालचन्द जी महाराज के शिष्य पूज्य श्री गंगाराम जी हुए और आपके पश्चात् पूज्य
श्री जीवनराम जी महाराज हुए। आप अत्यधिक प्रभाविक महात्मा थे। समस्त पंजाब पर आपका वर्चस्व
था। श्री आत्माराम जी महाराज जो पीछे से मूर्तिपूजक सम्प्रदाय मे सम्मिलित हुए और आचाय विजया-
नन्द सूरि के नाम से प्रसिद्ध हुए—आप ही के शिष्य थे। पूज्य श्री जीवनराम जी महाराज का त्याग और

संयम अद्भुत था। आत्म साक्षात्कार के लिए आप जीवन की साधना करते थे। आपने गिरा, फिरोजपुर, भटिंडा और वीकानेर तक प्रबल विहार किया।

२—पूज्य श्री श्रीचन्द जी महाराज

पूज्य श्री जीवनराम जी महाराज के पश्चात् पूज्य श्री श्रीचन्द जी महाराज हुए। आपने उत्कृष्ट वैराग्य के साथ दीक्षा ग्रहण की। आप ज्योतिष के समर्थ और शास्त्र पारगामी विद्वान् थे।

३—परम तपस्वी श्री पन्नालाल जी महाराज

पूज्य श्री श्रीचन्द जी महाराज के वाद आपके पाट पर अनुक्रम से पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज और श्री माणिकचन्द जी महाराज हुए। पूज्य श्री माणकचन्दजी महाराज के बाद वर्तमान में पूज्य श्री पन्नालालजी महाराज आते हैं। आप तप की साकार ज्वलन्त मूर्ति और सयम की विरल विभूति हैं। श्री चन्दन मुनि जी आप ही के शिष्य हैं।

४—कवि श्री चन्दन मुनि जी महाराज

श्री चन्दन मुनि जी कवि, लेखक, कथाकार, संयमी और मृदुभाषी हैं। आपने लगभग २५–३० पुस्तकें लिखी हैं जो सब पद्य में हैं। आपकी कविताओं मे भाव-भाषा ओज, प्रासाद और लाक्षणिक अभिव्यंजना तथा भावोद्रेक गुण अन्वित हैं। आज की नवीन पीढ़ी के लिए आप एक आशास्पद संत हैं।

पूज्य श्री रायचन्द्र जी महाराज की सम्प्रदाय

पूज्य श्री जीवराज जी महाराज के चौथे पाट पर श्री नाथूराम जी महाराज आचार्य-पद पर आये। आपके बाद आपकी सम्प्रदाय दो विभागों में विभाजित हो गई। पूज्य श्री रामचन्द्र जी महाराज नाथूराम जी महाराज के प्रख्यात शिष्य थे। सं० १८४२ के आसोज सुद १० विजयादशमी को पूज्य श्री रतिराम जी महाराज ने आप के पास दीक्षा ग्रहण की। पूज्य श्री रायचन्द्र जी महाराज समर्थ योगी थे।

१—कवि श्री नन्दलाल जी महाराज

पूज्य श्री रतिराम जी महाराज के शिष्य कविराज श्री नन्दलाल जी महाराज साधुमार्गी समाज में एक बहुश्रुत विद्वान थे। आपका जन्म काश्मीरी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। दीक्षा लेने के थोड़े समय के बाद आप शास्त्रों के पारगामी विद्वान् हो गये। आपने 'लब्धिप्रकाश', गौतम पृच्छा' रामायण' 'अगड़वस' आदि अनेक ग्रन्थों की रचना की है। इसके सिवाय 'ज्ञानप्रकाश', 'रुक्मिणी रास', आदि अनेक ग्रन्थों का भी आपके द्वारा निर्माण हुआ। आपकी कविताएँ संगीतमय, भावपूर्ण और हृदयस्पर्शी होती थीं। संवत् १९०७ मे होशियारपुर मे आपका स्वर्गवास हुआ। पूज्य श्रीनन्दलाल जी महाराज के तीन शिष्य हुए। मुनि श्री किशनचन्द्र जी महाराज ज्योतिष-शास्त्र के पण्डित थे; रूपचन्द जी महाराज वचनसिद्ध तपस्वी मुनिराज थे और मुनिश्री किशनचन्दजी महाराज की परम्परा मे अनुक्रम से मुनिश्री विहारीलालजी,

महेशचन्द्र जी, वृषभान जी तथा मुनि श्री सादीराम जी के नाम उल्लेखनीय हैं।

तीसरे मुनि श्री जौकीराम जी महाराज के पास जगराव-निवासी अग्रवालवंशीय मुनि श्री चैतराम जी दीक्षित हुए। आप के शिष्य मुनि श्री घासीलाल जी महाराज ने इन तीन भव्यात्माओं को महाव्रतधारी बनाया—मुनि श्री जीवनराम जी महाराज मुनि श्री गोविन्दराम जी महाराज और मुनि श्री कुन्दनलाल जी महाराज।

२—पूज्य श्री रूपचन्द जी महाराज

पूज्य श्री रूपचन्द जी महाराज बालब्रह्मचारी, वचनसिद्ध, अलौकिक तपस्वी और महाप्रभावक सन्त थे। मोह से विरक्त रहने के लिये आपने किसी को भी अपना शिष्य न बनाया। आपका जन्म सम्वत् १८६८ में लुधियाना में हुआ था। जीवन पर्यन्त रोटी, पानी इसके अलावा एक और कोई वस्तु इन तीन के अतिरिक्त किसी द्रव्य का आपने सेवन नहीं किया।

घी, दूध आदि सभी पौष्टिक पदार्थों के उपयोग पर अंकुश धर दिया था। दिन में एक बार आहार करना और उसमें भी केवल दो रोटी ग्रहण करना। छब्बीस वर्ष की तरुण अवस्था में आपने संसार का त्याग कर सं० १८६४ में फागण सुद ११ को दीक्षा ग्रहण की।

आपके चमत्कार की अनेक घटनाएँ पंजाब में प्रचलित हैं। इस ग्रन्थ का लेखक भी आपकी आत्मज्योति, त्याग ज्योति और ज्ञान ज्योति से प्रभावित है।

आपका यह नियम था कि जो सवारी करके आता था, उसे आप दर्शन नहीं देते थे। दिन भर में केवल दो बार ही पानी पीते थे। सतलुज नदी के उस पार न जाने की आपको प्रतिज्ञा थी। जेठवद ११ संवत् १९३७ को इस तेजस्वी सूर्य का अस्त होना पाया गया।

३—मुनि श्री गोविन्दराम जी महाराज

मुनि श्री गोविन्दराम जी महाराज का जन्म सं० १९१९ में देहरादून में हुआ था। माह सुद ११ सं० १९३९ शनिवार को मुनि श्री घासीलाल जा म० से भटीन्डा में दीक्षा ग्रहण की। शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। ज्योतिष शास्त्र के आप बड़े विद्वान थे। तपस्वी और वचनसिद्ध पुरुष थे। साम्प्रदायिक प्रतिष्ठा आपके समय अत्यधिक विकसित हुई। सं० २००८ में अहमदाबाद के भेडी के उपाश्रम मे आपका समाधि-मरण हुआ।

मुनि श्री छोटालाल जी महाराज

पंजाब-रोहतक जिले के बुलन्दपुर गॉव के पंडित तेजराम जी की सहधर्मिणी केसरदेवी की कूख से संवत् १९६० मे मुनि श्री छोटेलाल जी का जन्म हुआ। सिरपुर (मेरठ) इनका निवासस्थान था। सोलह वर्ष की स्वल्प अवस्था मे पण्डित मुनि श्री गोविन्दराम जी महाराज के पास मे आपने दीक्षा धारण की। सोलह वर्ष की क्रीड़ाप्रिय अवस्था मे असार ससार के मोह को त्याग कर ज्ञान-दर्शन-चारित्र्य की साधना का कठोर सयमपूर्ण मार्ग अपनाने का सद्भाग्य किसी विरले को ही मिलता है।

ब्रह्मचर्य और संयम की साधना, ज्ञानप्राप्ति और तपश्चर्या की उत्कट अभिलाषा ने आपमें एक अभिनव बल और शक्ति का संचार किया। यह बल शारीरिक नहीं किन्तु आध्यात्मिक था। ज्यों-ज्यों यह

बल बढ़ता गया-त्यों-त्यों माया का जाल छिन्न होता गया। तपश्चर्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई। तप की साधना के कारण आपका शरीर कांचन वर्ण को प्राप्त हो गया। ज्ञान, तप और शरीर का तेज दर्शनार्थियों पर अनेक प्रभाव डालता है। आपने शास्त्रों का समुचित अध्ययन, मनन-चिन्तन किया है। श्रमण-धर्म मे आप सदा कर्त्तव्यपरायण रहते हैं। आपका स्वभाव स्पष्टवादिता के साथ-साथ कोमल और सरल है। श्री सुशील मुनि जी, श्री सौभाग्य मुनि जी और श्री शान्तिप्रिय जी इस प्रकार आपके तीन शिष्य हैं।

पं० मुनि श्री सुशीलकुमार जी महाराज

आपने ब्राह्मण जाति में जन्म लिया था। बचपन से ही वैराग्य भाव होने से मुनि श्री छोटेलाल जी म० सा० के पास दीक्षित हुए। संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी आदि का अच्छा अभ्यास करके 'आचार्य' 'भास्कर' आदि अनेक उपाधियाँ प्राप्त की। श्रमण संघ के आप होनहार परमोत्साही युवक सन्त हैं। अहिंसा संघ के तथा सर्वधर्म सम्मेलन के आप प्रणेता है। अहिंसा के अग्रदूत है। पंजाब, बम्बई और राजस्थान में विचर रहे हैं।

गुजरात के मुनिराज

१—पूज्य श्री धर्मसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय

(दरियापुरी सम्प्रदाय)

पूज्य श्री धर्मसिंह जी महाराज के पाट पर उनके शिष्य श्री सोमजी ऋषि हुए। इनके बाद अनुक्रम से मेघजी ऋषि, द्वारकादास जी, मोरारजी, नाथाजी, जयचन्दजी तथा मोरार जी ऋषि हुए।

मोरारजी ऋषि के शिष्य सुन्दरजी के तीन शिष्य हुए—नाथा ऋषि, जीवन ऋषि और प्रागजी ऋषि। ये तीनों संत प्रभाविक थे। सुन्दरजी ऋषि मोरारजी ऋषि के जीवन-काल मे ही गुजर जाने के कारण आपके पाट पर नाथाजी ऋषि आये। नाथाजी ऋषि के चार शिष्य थे—शंकरजी, नानकचन्दजी, भगवान जी।

नाथाजी ऋषि के पाट पर उनके गुरु-भाई जीवन ऋषिजी आये और इनके पाट पर प्रागजी ऋषि आये।

२—श्री प्रागजी ऋषि

आप वीरमगाँव के भावसार रणछोड़दास के पुत्र थे। श्री सुन्दरजी महाराज के उपदेश से प्रतिबोध पाकर इन्होने बारह व्रत अंगीकार कर लिये। अनेक वर्षो तक श्रावक के व्रत पालने के पश्चात् दीक्षा ग्रहण करने के लिये आप तैयार हो गये, किन्तु माता-पिता ने आपको आज्ञा नहीं दी। इस कारण आपने भिक्षाचरी करना आरम्भ किया। दो मास तक इस प्रकार करने पर माता-पिता ने आप को आज्ञा दे दी और सं० १८३० में वीरमगाँव में धूम-धाम के साथ दीक्षा ग्रहण की। आप सूत्र सिद्धान्तों के अभ्यासी और प्रतापी साधु थे।

आपके पन्द्रह शिष्य थे। अहमदाबाद के समीपवर्ती विसलपुर के श्रावकों द्वारा विनति करने के कारण आप विसलपुर पधारे। आपने प्रांतीज, बीजापुर, ईडर, खरोलु आदि क्षेत्र खोलकर वहाँ धर्म का प्रचार किया। पैरों में दर्द होने के कारण पिछले पच्चीस वर्ष तक विसलपुर में स्थिरवास किया।

आप के समय में अहमदाबाद में साधु-मार्गी संत बहुत कम पधारते थे क्योंकि वहाँ चैत्य-वासियों का जोर अधिक होने के कारण उनकी तरफ से उपद्रव खड़े किये जाते थे। इस स्थिति को सुधारने के लिए प्रागजी ऋषि अहमदाबाद पधारे और श्री गुलाबचन्द हीराचन्द के मकान में उतरे।

आपके उपदेश से अहमदाबाद मे शाह गिरधर शंकर, पानाचन्द झवेरचन्द, रामचन्द्र झवेर-चन्द, खीमचन्द झवेरचन्द आदि श्रावकों को शुद्ध साधु-मार्गी जैन-धर्म की श्रद्धा प्राप्त हुई। आपके इस प्रकार के धर्म-प्रचार को देखकर मंदिर-मार्गी श्रावकों को साधुमार्गियों से ईर्ष्या होने लगी और पारस्परिक झगड़े प्रारंभ हो गये। अन्त में ये झगड़े कोर्ट तक पहुँचे। साधुमार्गियों की तरफ से पूज्य श्री .रूपचन्द्र जी महाराज के शिष्य श्री जेठमल जी आदि साधु तथा विपक्षियों की तरफ से वीर विजय आदि मुनि और शास्त्री कोर्ट में पहुँचे। अत. इस झगड़े का निपटारा साधु-मार्गियों के पक्ष में हुआ। इस घटना को स्मृतिरूप बनाये रखने के लिये श्री जेठमल जी महाराज ने 'समकित' नाम का शास्त्रीय चर्चा-ग्रन्थ लिखा।

इसके विरोध में श्री उत्तम विजय जी ने "ढुंढक मत खण्डन रास' नामका १७ पंक्तियों का एक रास लिखा जिसमे साधुमार्गियों को पेट भरकर गालियाँ दीं। इस रास में लिखा है कि—

"जेठा ऋषि आया रे। कागज वांच कर।
देखो पुस्तक लाया रे। गाड़ी एक लाद कर॥"

विरोधी पंथ के लोग जब इस प्रकार लिखते हैं, तब यह स्पष्ट हो जाता है कि उस जमाने में जब मुद्रण-कला का इतना विकास नहीं हुआ था फिर भी इतने सारे ग्रन्थों को अदालत में प्रस्तुत करने वाले मुनि श्री जेठमलजी का वांचन कितना विशाल होगा। वस्तुतः आप शास्त्रों के गहन अभ्यासी और कुशल विद्वान् थे। सं० १८६० में मुनि श्री प्रागजी ऋषि जी महाराज विसलपुर में कालधर्म को प्राप्त हुए। प्रागजी ऋषि के बाद श्री शंकर ऋषि जी, श्री खुशाल जी, श्री हर्षसिंह जी और श्री मोरारजी ऋषि हुए।

श्री झवेर ऋषि जी महाराज

श्री मोरार जी ऋषि के बाद आपके पाट पर श्री झवेर ऋषि जी महाराज हुए। आप वीरम-गाँव के दशाश्रीमाली वणिक कल्याण भाई के पुत्र थे। आपने संवत् १६५ में अपने भाई के साथ श्री प्राग ऋषि के साथ दीक्षा ग्रहण की। पूज्य पदवी प्राप्त करने के पश्चात् आपने यावन् जीवन छठ-छठ के पारण किये। संवत् १६२३ में इस महान् तपस्वी ने स्वर्ग विहार किया।

४—श्री पुंजा जी स्वामी

श्री झवेर ऋषि जी महाराज के पाट पर श्री पुंजा जी स्वामी विराजमान हुए। आप कड़ी के भावसार थे। आपने शास्त्रों का सांगोपांग अध्ययन किया था। उदारचेता आप इतने थे कि अन्य सम्प्र-दायानुयायी मुनियों को भी आप पढ़ाते थे। संवत् १६१५ को आपने वढ़वाण शहर में कालधर्म प्राप्त

किया। आपके वाद आपके पाट पर छोटे भगवान जी महाराज हुए जिनका देहावसान सं० १९१९ में हुआ। आपके वाद १९वे पाट पर पूज्य श्री मलूकचन्द जी महाराज आये। आपने अपने चार कुटुम्वी-जनों के साथ दीक्षा ग्रहण की। संवत् १९२९ में आपका देहावसान हो गया।

५—पूज्य श्री हीराचन्दजी महाराज

श्री मलूकचन्द जी महाराज के पाट पर पूज्य श्री हीराचन्द जी स्वामी आसीन हुए। आप अहमदाबाद के समीपवर्ती पालड़ी ग्राम के आंजना कणबी थे। आपके पिता जी का नाम हीमाजी था। आपने केवल तेरह वर्ष की अवस्था मे श्री झवेर ऋषि के पास से सं० १९११ में दीक्षित हुए। आप बड़े विद्वान् थे। आपके तेरह शिष्य थे। सं० १९३९ में विसलपुर ग्राम में आपने कालधर्म प्राप्त किया।

६—श्री रघुनाथजी महाराज

पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज वीरमगॉव के भावसार डायाभाई के पुत्र थे। आपका जन्म सं० १९०४ में हुआ था। सं० १९२० में पूज्य श्री मलूकचन्द जी महाराज से कलोल में दीक्षा ग्रहण की। पूज्य श्री हीराचन्द जी म० सा० के कालधर्म पाने के पश्चात् आपको आचार्य-पद दिया गया। आप युगद्रष्टा थे। समय को वदलते देखकर द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के अनुरूप धार्मिक उन्नति के लिए विधान तैयार करने के लिए सं० १९६५ में साधु-सम्मेलन भरा कर और अनेक सुधार करके सं० १९७२ मे काल-धर्म को प्राप्त हुए।

आपके वाद आपके पाट पर पूज्य श्री हाथी जी महाराज पधारे।

७—पूज्य श्री हाथीजी महाराज

पूज्य श्री हाथी जी महाराज चरोतर के पाटीदार थे। आप शास्त्र के अभ्यासी, लेखक तथा कवि थे। आप प्रकृति से भद्रिक, शान्त और सरल स्वभावी महात्मा थे। आपके समय में ही महासति जी श्री दिवालीबाई तथा महासति जी श्री रुक्मिणीवाई ने छीपा पोल के उपाश्रय में सथारा किया था। पूज्य श्री हाथी जी महाराज ने अहमदावाद के सरसपुर स्थान पर कालधर्म प्राप्त किया। आपके वाद श्री उत्तम-चन्द जी महाराज पूज्य पदवी पर आये। आप आजीवन ब्रह्मचारी थे।

८—पूज्य श्री ईश्वरलालजी महाराज

पूज्य श्री उत्तमचन्द जी महाराज के वाद पूज्य श्री ईश्वरलाल जी महाराज को पूज्य पदवी दी गई। आप चरोतर के पाटीदार है। शास्त्रो के गहन अभ्यासी और तार्किक वुद्धि वाले है। इस समय ८८ वर्ष की अवस्था में भी आपकी तेजस्वी वुद्धि और अपराजित तर्क सुने जा सकते है। अत्यन्त वृद्धावस्था और गले के दर्द के कारण अहमदावाद के शाहपुर के उपाश्रय मे आप अनेक वर्षो से स्थिरवास कर रहे है।

९—श्री हर्षचन्द्रजी महाराज

इस सम्प्रदाय में मुनि श्री हर्षचन्द्र जी महाराज एक समर्थ विद्वान् हो गये हैं। संवत् १९३८ मे वढ़वाण के समीपवर्ती राजपुर ग्राम में आपका जन्म हुआ था। चौदह वर्ष की वाल्यावस्था में सं० १९५२ मे पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज के पास आपकी दीक्षा हुई थी। आप संस्कृत, प्राकृत, अर्धमागधी, अंगरेजी, उर्दू, फारसी तथा हिन्दी भापा के विज्ञाता थे। कवि होने के साथ-साथ आप सफल लेखक भी थे। आपने १३ पुस्तकें और अनेक कविताएँ लिखीं। आपकी अंतिम पुस्तक "सम्यक् साहित्य" प्रत्येक स्थानकवासी के लिए मननीय पुस्तक है। अजमेर के साधु-सम्मेलन में आप उपस्थित हुए थे और साधु-समाचारी निश्चित करने में आपने महत्त्वपूर्ण भाग लिया था। सं० २००८ मे वीरमगॉव मे आपने काल-धर्म प्राप्त किया।

१०—मुनि श्री भाईचन्दजी महाराज

मुनि श्री भाईचन्द जी महाराज इस सम्प्रदाय में एक उज्ज्वल सितारे हैं। यद्यपि आप ७५ वर्ष की अवस्था में पहुँच गये हैं किन्तु आप लगते हैं ४५ वर्ष के ही। आपका शरीर अत्यत्त सौष्ठववान् और कान्तिमान् है। आपमें विद्वत्ता है, साधुता है और वक्तृत्व शक्ति है। आपमे यह विशिष्टता है कि आज तक किसी ने आपको क्रोध करते नहीं देखा। सरल होते हुए बुद्धिमान, वृद्ध होते हुए भी युवक और निर-हंकारी होते हुए भी प्रतिभाशाली ऐसे आप अत्यन्त भाग्यशाली मुनिराज हैं कि जिनके लिए प्रथम दर्शन में ही दर्शक के हृदय में सम्मान पैदा हो जाता है।

आपके नवीन शिष्य श्री शान्तिलाल जी महाराज शास्त्रों के अभ्यासी हैं। आपकी व्याख्यान-शैली रोचक और मधुर है। इसके अलावा इस सम्प्रदाय में महासति श्री वसुमतिवाई, तारावाई आदि विदुषी महासतियाँ हैं। महासति श्री ऊजमवाई और दिवालीवाई की विद्वत्ता सर्वविदित है।

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज की सम्प्रदायानुयायी
विशिष्ट मुनियों का संक्षिप्त परिचय

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के ९९वे शिष्यों मे से वाईस विद्वान् मुनिराजों ने वाईस सम्प्रदायों का निर्माण किया। उनमे से २१ तो राजस्थान, पंजाव आदि प्रान्तों में फैले। उनके प्रथम शिष्य मूलचन्द जी महाराज हुए। आपके सात शिष्य वहुत ही प्रभावशाली विद्वान हुए। इनमें से प्रत्येक ने अपना अलग-अलग सगठन वनाया जिसमें से विशाल संघ स्थापित करने वाले श्री अजरामर जी स्वामी थे।

१—पूज्य श्री अजरामरजी महाराज

पृज्य श्री अजरामर जी स्वामी ने कानजी स्वामी से दीक्षा ग्रहण की। आप जामनगर के पास मे पड़ाणा ग्राम मे सं० १८०९ मे जन्मे थे। केवल दस वर्ष की अवस्था मे ही अपनी माता के साथ आपने दीक्षा ग्रहण की। पूज्य गुलावचन्द जी यति के पास १० वर्ष तक सूरत मे रहकर आपने संस्कृत, प्राकृत

भाषा और आगमों का अभ्यास किया। आपकी स्मरण-शक्ति बड़ी ही तीव्र थी। पूज्य श्री दौलतराम जी म. सा. के भी पास रहकर आपने शास्त्रों का परमार्थ जाना। सत्ताईस वर्ष की अवस्था में प्रकांड पंडित के रूप में आपकी कीर्ति सर्वत्र व्याप्त हो गई। वि० सं० १८४५ मे आचार्य-पद पर विराजमान होकर चारित्र्य की निर्भयता के प्रभाव से आपने समस्त विघ्न-बाधाओं का निवारण कर शिथिल तथा विपरीत विचार-धाराओं का सामना किया। आपके प्रचार का प्रभाव स्थायी था। उस समय सेठ नानजी डुंगरशी को ज्ञान द्वारा आपने खूब सहायता की जिससे धर्म-प्रचार में पूरी सफलता मिली।

आपके बाद अनुक्रम से देवराज जी स्वामी, भाणजी स्वामी, करमशी स्वामी और अविचल जी स्वामी हुए। श्री अविचल जी स्वामी के दो शिष्य हुए--हरचन्द जी स्वामी और हीमचन्द जी स्वामी। इन दोनों का परिवार अलग-अलग रूप से फैला।

१—लींबड़ी मोटी सम्प्रदाय

हरचन्द जी स्वामी के बाद देवजी स्वामी, गोविन्द जी स्वामी, कानजी स्वामी, नत्थु जी स्वामी, दीपचन्दजी स्वामी और लाधा जी स्वामी हुए।

१—पूज्य श्री लाधाजी स्वामी

पूज्य श्री लाधा जी स्वामी कच्छ-गुंदाला ग्राम के निवासी श्री मालसीभाई के सुपुत्र थे। आपने सं० १९०३ मे वांकानेर में दीक्षा ग्रहण की और सं० १९६३ में आपको आचार्य-पद पर बिठाया गया। तत्कालीन विद्वान् संतों में आप प्रख्यात विद्वान् संत थे। जैन-शास्त्रों का अध्ययन करके "प्रकरण संग्रह" नामक ग्रन्थ की आपने रचना की। यह ग्रन्थ सर्वत्र उपयोगी सिद्ध हुआ है। प्रसिद्ध ज्योतिष शास्त्रवेत्ता श्री सदानन्दी छोटेलाल जी महाराज आप ही के शिष्य है। श्री लाधाजी स्वामी के पश्चात् मेघराज जी स्वामी और इनके बाद पूज्य देवचन्द जी स्वामी हुए।

२—पूज्य देवचन्दजी स्वामी

पूज्य देवचन्द जी स्वामी का जन्म वि० सं० १९०२ में कच्छ के समाड़िया ग्राम मे हुआ था। ग्यारह वर्ष की अवस्था में ही आपने दीक्षा ग्रहण की थी। आपके पिता श्री रंग जी स्वामी ने भी आप ही के साथ पंच महाव्रत धारण किये। आपने निष्पक्ष भाव से शास्त्रो का बहुमुखी स्वाध्याय किया। अनेकान्त का मर्म समभाव के रूप में हृदयंगम किया। कविवर नानचन्द जी महाराज आप ही के शिष्य है। वि० सं० १९७७ में आप स्वर्गवासी हुए।

३—पूज्य श्री गुलाबचन्दजी महाराज

पूज्य श्री देवचन्द जी स्वामी के पश्चात् श्री लवजी स्वामी और उनके बाद पूज्य श्री गुलाबचन्द जी महाराज हुए। आपने अपने भाई वीरजी स्वामी के साथ कच्छ के अंजार नगर में दीक्षा ग्रहण की

थी। वि० सं० १६२१ में भोरारा ग्राम में आपका जन्म हुआ था। सं० १६८८ में आप आचार्य-पद पर विभूषित किये गए। पं० रत्न शतावधानी रत्नचन्द जी महाराज आप ही के शिष्य थे। आपने मूल सूत्रों का गम्भीर अध्ययन किया था और संस्कृत-प्राकृत भाषाओं के आप धुरन्धर विद्वान् थे।

४—पूज्य नागजी स्वामी

पूज्य नागजी स्वामी मे प्रवल व्यवस्था-शक्ति थी। विद्वत्ता, गाम्भीर्य और आचार-विचार की दृढ़ता आप में प्रचुरमात्रा मे विद्यमान थी। आचार्य-पद पर नही होते हुए भी सम्प्रदाय का समस्त सचालन आपके ही द्वारा होता था। लीबड़ी ही में आपने नौ वर्ष की अवस्था मे दीक्षा ग्रहण की और यहीं पर ही आपने कालधर्म को प्राप्त किया। आपके स्वर्गवास के पश्चात् एक यूरोपियन महिला तथा लीवड़ी के ठाकुर सा० की जो शोकजनक अवस्था हुई उस पर से आपकी भावनाशीलता और धर्मानुराग का परिचय प्राप्त होता है। आपने अनेक जैनेतरों को जैन बनाया और रजवाड़ों को अपने धर्मोपदेश से प्रभावित कर जैन-धर्मप्रेमी बनाया।

५—शतावधानी पं० रत्नचंदजी महाराज

शतावधानी पं० रत्नचन्द्र जी महाराज ने अपनी पत्नी के अवसान के बाद दूसरी कन्या के साथ किये गए सम्बन्ध को छोड़कर दीक्षा ग्रहण की। सं० १६३६ में भोरारा (कच्छ) में आपका जन्म हुआ था। आप स्वभाव से अत्यन्त शान्त और हृदय से स्फटिक के समान निर्मल थे। अपने गुरुदेव श्री गुलावचन्द जी महाराज की नेश्राय में रहकर गहन अध्ययन किया। सस्कृत भाषा में अस्खलित रूप से धाराप्रवाही प्रवचन करते थे। अनेक गद्य-पद्यात्मक काव्य आपके द्वारा रचे गये है। अर्धमागधी कोप तैयार कर आपने आगमों के अध्ययन का मार्ग सरल और सुगम बना दिया हे। साहित्य-सशोधन करने वाले विद्वानों के लिए आप द्वारा निर्मित यह कार्य अत्यधिक सहायकरूप है।

'जैन सिद्धान्त कौमुदी' नाम का सुवोध प्राकृत व्याकरण भी आपने तैयार किया है। 'कर्त्तव्य-कौमुदी' और 'भावना शतक' 'सृष्टिवाद और ईश्वर' जैसे ग्रन्थों की भी आपने रचना की है। न्यायशास्त्र के भी आप प्रखर पंडित थे। अवधान-शक्ति के प्रयोग के कारण आप शतावधानी कहलाये। समाज सुधार और संगठन के कार्य में आपको खूव रस था। अजमेर के साधु-सम्मेलन में शान्ति-स्थापकों मे आपका अग्रगण्य स्थान था। जयपुर में आपको 'भारत रत्न' की उपाधि प्रदान की गई थी। साधु-मुनिराजो के संगठन के लिए आप सदा प्रयत्नशील रहते थे। घाटकोपर मे आपने "वीर संघ" की योजना का निर्माण किया था।

वि० सं० १६४० में आपको शारीरिक व्याधि उत्पन्न हुई। उसकी शल्य-चिकित्सा की गई किन्तु आयुष्य पूर्ण हो जाने के कारण आपका घाटकोपर मे स्वर्गवास हो गया।

आचार्य-पद पर नहीं होते हुए भी आप एक सम्माननीय सन्त गिने जाते थे। आपकी प्रवचन-शैली अत्यन्त सुवोध और लोकप्रिय थी। आपके देहावसान से समाज ने एक धुरन्धर विद्वान् और महान संगठन-प्रिय भारत-रत्न गुमाया हे। आपके स्मारक-रूप मे घाटकोपर में कन्या हाई स्कूल, सुरेन्द्रनगर में ज्ञान-मन्दिर, और वनारस मे लायब्रेरी वनाकर श्रावकों ने आपके प्रति भक्ति-भाव प्रकट किया है।

६—कविवर्य श्री नानचंदजी महाराज

कविवर्य की नानचन्द जी महाराज का जन्म वि० सं० १६३४ में सौराष्ट्र के सायला ग्राम में हुआ था। वैवाहिक सम्बन्ध का परित्याग करके आपने दीक्षा ग्रहण की। आप प्रसिद्ध संगीतज्ञ और भावनाशील विद्वान् कवि है। आपके सदुपदेश से अनेक शिक्षण-सस्थाओ की स्थापना हुई है। पुस्तकालय की स्थापना करने की प्रेरणा देने वाले ज्ञान-प्रचारक के रूप मे आप प्रसिद्ध हैं। अजमेर साधु-सम्मेलन के सूत्रधारों मे आपका अग्रगण्य स्थान था। आपकी विचारधारा अत्यन्त निष्पक्ष और स्वतन्त्र है। "मानवता का मीठा जगत्" आपकी लोकप्रिय कृति है। सौराष्ट्र मे दया-दान विरोधी प्रवृत्तियों को अटकाने में आपको पर्याप्त सफलता मिली है। संतबाल जी जैसे प्रिय शिष्य को शिष्य के रूप में रद्द करने की सार्वजनिक घोषणा करने मे आपने आनाकानी नही की। यह आपकी सिद्धान्तप्रियता का स्पष्ट उदाहरण है। आप सौराष्ट्र वीर श्रमण संघ के मुख्य प्रवर्तक मुनि है।

७—श्री मुनि श्री छोटेलालजी महाराज

मुनि की छोटालाल जी महाराज पूज्य श्री लाधा जी स्वामी के प्रधान शिष्य हैं। अपने गुरुदेव के नाम से आपने लींवड़ी मे एक पुस्तकालय स्थापित कराया है। लेखक और ज्योतिष-वेत्ता के रूप में आप प्रसिद्ध हैं। आपने 'विद्यासागर' के नाम से एक धार्मिक उपन्यास भी लिखा है। आप द्वारा अनुवादित राजप्रश्नीय सूत्र का गुजराती अनुवाद बहुत ही सुन्दर बन पड़ा हे।

८—श्री जेठमलजी स्वामी

स्वामी श्री जेठमल जी महाराज क्षत्रिय कुलोत्पन्न संत हैं। सं० १६५८ में पूज्य लवजी स्वामी के पास से आपने दीक्षा ग्रहण की। आपने कुव्यसनो के विरुद्ध आन्दोलन चलाया था। अंग्रेजी का अभ्यास थोड़ा होते हुए भी अंग्रेजी मे अस्खलित धारावाहिक प्रवचनों के द्वारा अनेक प्रोफेसरो को प्रतिवोधित कर संस्कार प्रदान किये है। गॉव-गॉव विचरण करके महावीर जयन्ती की सार्वजनिक छुट्टी के लिये प्रचार करते है, मद्य-मांस का त्याग कराते हैं और जैनेतर लोगों में भी आध्यात्मिक भावना और अहिंसा का प्रखर प्रचार करते है।

लींबड़ी छोटी (संघवी) सम्प्रदाय

वि० सं० १६१५ में लींबड़ी सम्प्रदाय के दो विभाग हुए। मोटी (वड़ी) सम्प्रदाय के विशिष्ट मुनिवरों का परिचय पहले दिया जा चुका हे।

पूज्य श्री हीमचन्द जी महाराज

पूज्य श्री हीमचन्द जी महाराज के समय से लींवड़ी (छोटी) संघवी सम्प्रदाय प्रारम्भ हुई। पूज्य श्री देवराज जी स्वामी के शिष्य मुनि श्री अविचलदास जी के पास में पूज्य श्री हीमचन्द जी महाराज

ने दीक्षा प्राप्त की। आप वढ़वाण के अन्तर्गत टीम्बा निवासी वीसा श्रीमाली जाति में जन्मे थे। वि० सं० १८७५ में आपने दीक्षा प्राप्त की थी। सं० १९११ में धोलेरा में आपने चातुर्मास किया था-तभी से लींबड़ी सम्प्रदाय दो विभागों में विभाजित हो गई। सं० १९२९ में आप का स्वर्गवास हुआ। आपके पाट पर पूज्य श्री गोपाल जी स्वामी आचार्य हुए।

पूज्य गोपालजी स्वामी

वि० सं० १८८५ में ब्रह्मक्षत्रीय वंश में जेतपुर में आप का जन्म हुआ था। आपके पिता का नाम श्री मूलचन्द जी था। मात्र दस वर्ष की अवस्था में ही आपने दीक्षा ग्रहण कर सूत्रों का गहन अध्ययन प्रारम्भ किया। आगमों के अध्ययन में आप विलक्षण प्रतिभाशाली थे। दूर-दूर के साधु-साध्वी शास्त्राभ्यास के लिए आपके पास आते थे। वि० सं० १९४० मे आप का स्वर्गवास हुआ। लींवड़ी की छोटी सम्प्रदाय श्री गोपाल जी स्वामी' की सम्प्रदाय के नाम से भी प्रसिद्ध है।

पूज्य मोहनलालजी महाराज

पूज्य श्री मोहनलालजी महाराज का जन्म धोलेरा मे हुआ। आप के पिताजी का नाम श्री गांगजी कोठारी था। अपनी बहिन मूलीबाई के साथ सं० १९३८ मे दीक्षा ग्रहण की। आपकी लेखन-शैली सरल और प्रवल शक्तिवान् थी। आप द्वारा लिखित "प्रश्नोत्तर मोहनमाला" एक सुप्रसिद्ध चर्चा ग्रन्थ है।

पूज्य श्री मणिलालजी महाराज

पूज्य श्री मणिलाल जी महाराज ने वि० स० १९४७ में धोलेरा में दीक्षा ग्रहण की थी। आप शास्त्रों के गहन अभ्यासी थे। ज्योतिप विद्या में भी आप निष्णात थे। "प्रभु महावीर पट्टावली" नामका ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखकर आपने समाज की उल्लेखनीय सेवा की है। "मेरी विशुद्ध भावना" और शास्त्रीय विपयों पर प्रश्नोत्तर के रूप में भी आपने पुस्तके लिखी है। अजमेर के साधु-सम्मेलन में आप एक अग्रगण्य शान्तिरक्षक थे।

ज्ञान के साथ क्रिया का होना—यह विरल पुरुषों मे ही देखा गया है। पूज्य श्री मणीलाल जी महाराज में इन दोनों का समन्वय था। अन्तिम दिनो में तो आप केवल दूध, छाछ, पापड़, गांठियाँ, रोटी, भाखरी और पानी इतने ही द्रव्यों मे से कुछ का उपयोग करते थे। इन में भी प्रतिदिन केवल तीन द्रव्यों का ही उपयोग करते थे और वह भी सीमित मर्यादा मे। इस प्रकार इस ज्ञानवान् और क्रियावान् महापुरुप का सं०१९८९ में स्वर्गवास हुआ।

आप के शिष्य मुनि श्री केशवलाल जी और तपस्वी श्री उत्तमचन्द्र जी महाराज इस सम्प्रदाय में मुख्य हैं।

पूज्य मुनि श्री केशवलालजी महाराज

पूज्य श्री केशवलाल जी महाराज कच्छ-देशलपुर कंठी वाली के निवासी हैं। आप जेतसी

करमचन्द के सुपुत्र हैं। सं० १९८९ में कच्छ आठ-कोटि छोटी पत्त के पूज्य श्री शामजी स्वामी के पास मे देशलपुर मे दीक्षा ग्रहण की। स० १९८४ में आप इस सम्प्रदाय से अलग होकर पूज्य श्री मणीलाल जी के महाराज पास आगये। आपने शास्त्रों का खूब अध्ययन किया है। आपके द्वारा धर्म का प्रचार प्रचुर मात्रा में किया जा रहा है। आप श्री सौराष्ट्र वीर श्रमण संघ के प्रवर्त्तक मुनि हैं।

गोंडल सम्प्रदाय

पूज्य श्री डुंगरशी स्वामी

पूज्य श्री डुंगरशी स्वामी गोंडल सम्प्रदाय के आद्य संत हैं। पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के शिष्य पं० प्रचाण जी महाराज के पास में आपने दीक्षा अंगीकार की। आपका जन्म सौराष्ट्र के मेदरडा नामक गाँव में हुआ था। आपके पिता का नाम कमलशी भाई था। आपने पच्चीस वर्ष की अवस्था मे दीक्षा ग्रहण की और सं० १८४५ में आचार्य-पद पर आरूढ़ हुए। शास्त्र-स्वाध्याय में निरंतर जागृत रहते थे—यहाँ तक कि कभी-कभी निद्रा का भी परित्याग कर देते थे। सुप्रसिद्ध राज्यमान्य सेठ सौभाग्यचन्द जी आप ही के शिष्य थे। सं० १८७७ में गोंडल में आप का स्वर्गवास हुआ। आपकी चारित्र-शीलता और सम्प्रदाय-परायणता आगमानुसारी बुद्धिमूलक थी।

तपस्वी श्री गणेशजी स्वामी

तपस्वी श्री गणेशजी स्वामी का जन्म राजकोट के पास खेरड़ी नामक ग्राम में हुआ था। आप एकान्तर उपवास करते थे। अभिग्रहपूर्वक तपश्चर्या भी आप अनेक वार करते थे। वि० सं०१८६६ मे ६० दिन के सन्थारे में आप का स्वर्गवास हुआ।

पूज्य श्री बड़े नेणशी स्वामी का परिवार

पूज्य खोड़ाजी स्वामी

वड़े नेणशी स्वामी के ६ शिष्यों के परिवार में पूज्य खोड़ा जी स्वामी अत्यधिक प्रभावशाली सन्त थे। पूज्य मूलजी स्वामी के शिष्य पूज्य धोलाजी स्वामी के पास मे १९०८ मे आपने दीक्षा ग्रहण की। आप का शास्त्रीय ज्ञान विशाल था और प्रवचन की शैली आकर्षक थी। आप प्रसादगुण-सम्पन्न सुकवि और गायक थे। 'श्री खोड़ाजी काव्यमाला' के नाम से आपके स्तवन और स्वाध्याय गीतों का संग्रह प्रकाशित हो चुका है। गुजराती साहित्य मे भक्त कवि अखा का जैसा स्थान है वैसा ही गुजराती जैन साहित्य मे पूज्य खोड़ा जी का स्थान है। स्व० वाड़ीलाल मोतीलाल शाह ने 'जैन कवि अखा' के नाम से आपको विरुद दिया है।

पूज्य जसाजी महाराज

पूज्य जसाजी महाराज राजस्थान में जन्मे थे फिर भी गुजरात तथा सौराष्ट्र मे प्रसिद्ध सन्त के रूप मे आप प्रसिद्ध हुए। आप शास्त्र के पारंगत और क्रियावान् थे। वि० सं० १९०७ मे आपने दीक्षा ग्रहण की और ९० वर्ष तक संयम पाल कर स्वर्ग सिधारे। पूज्य जसा जी के गुरुभाई हीराचन्द जी स्वामी के शिष्य पूज्य देवजी स्वामी हुए। आपके पास मे पूज्य कविवर्य आम्बा जी स्वामी दीक्षित हुए। आपने "महावीर के बाद के महापुरुष" नाम की पुस्तक लिखने में बहुत परिश्रम उठाया था। पूज्य आम्बा जी स्वामी के शिष्य भीमजी स्वामी हुए। आपसे छोटे नेणशी स्वामी ने दीक्षा ग्रहण की। आपके शिष्य पूज्य देवजी स्वामी हुए। आपके शिष्यो मे पूज्य जयचन्दजी स्वामी विद्वान् थे और पूज्य माणकचन्द जी स्वामी तपस्वी। ये दोनों सगे भाई थे

पूज्य श्री जयचन्दजी स्वामी

आप का जन्म सं० १९०६ मे हुआ था। आप जेतपुर के निवासी दशाश्रीमाली प्रेमजी भाई के सुपुत्र थे। आपने २२ वर्ष की अवस्था में मेंदरड़ा ग्राम में दीक्षा ग्रहण की और वि० सं० १९८७ में आप का स्वर्गवास हुआ।

आप के प्रवचन अत्यन्त लोकप्रिय थे। प्रकृति से गम्भीर, विनीत और प्रशान्त होने के कारण श्री सघ पर आपका प्रभाव था। आपने एक साथ ३५ उपवास किये थे। आप सतत तपश्चर्या मे निरत रहे थे। अत. आपका तेज दिन-प्रतिदिन वढ़ता जाता था। अनेक शिक्षण संस्थाओं के जन्मदाता मुनि श्री प्राणलाल जी महाराज जैसे समाजसेवी मुनिराज आप ही के सुशिष्य हैं। आप के शिष्यों में मुनि श्री जयन्तिलाल जी आज मुनिराजो में प्रकांड विद्वान् गिने जाते है। आपने काशी मे रहकर न्याय-दर्शन का गहन अध्ययन किया है। आपके पिताजी ने भी दीक्षा ली है। आपकी दो बहिने भी दीक्षित हैं। इस सम्प्रदाय की अन्य महासतियाँ भी अत्यन्त विदुषी है।

६—तपस्वी मुनि श्री माणकचन्दजी महाराज

तपस्वी मुनि की माणकचन्द जी महाराज वय में जयचन्द जी महाराज से वड़े थे किन्तु दीक्षा मे छोटे थे। आपका आगम ज्ञान सुविशाल था। ज्यो-ज्यो स्वमत तथा परमत का आप अभ्यास करते जाते थे त्यों-त्यो आपकी जिज्ञासा वढ़ती जाती थी। आप अत्यन्त नम्र और उत्कट तपस्वी थे। आपने अनेक शिक्षण-संस्थाओं का संचालन किया है। योगासनो मे भी आप प्रवीण थे। सौराष्ट्र के मुनियों मे आप अग्रगण्य माने जाते थे।

७—पूज्य पुरुषोत्तमजी महाराज

पूज्य पुरुपोत्तम जी महाराज का जन्म वलदाणा नामक ग्राम मे हुआ था। आप कणवी कुटुम्ब के थे। पूज्य जादव जी महाराज से आपने मांगरोल मे दीक्षा ग्रहण की थी। इस समय आप गोंडल सम्प्रदाय मे वयोवृद्ध. ज्ञानवृद्ध और तपोवृद्ध आचार्य है। आपकी क्रिया-परायणता भी आदर्श है। श्री सौराष्ट्रवीर श्रमण-संघ के आप प्रवर्तक हैं।

सायला सम्प्रदाय

पूज्य नागजी स्वामी का परिवार

वि० सं० १८७२ में पूज्य बाल जी स्वामी के शिष्य पूज्य नाग जी स्वामी ने इस सम्प्रदाय की स्थापना की है। आप छठ-छठ के पारणा करते थे और पारणे में आयम्बिल करते थे। आपने अनेक अभिग्रह भी धारण किये थे। चर्चावादी पूज्य भीम जी स्वामी और शास्त्रों के अभ्यासी श्री मूल जी स्वामी आप ही के शिष्य थे। ज्योतिष-शास्त्रज्ञ पूज्य मेघराज जी महाराज और लोकप्रिय प्रवचनकार पूज्य सघ जी महाराज भी आप ही के परिवार में हुए हैं। तपस्वी मगनलाल जी महाराज, कान जी मुनि आदि लगभग चार मुनि इस समय इस सम्प्रदाय में है।

बोटाद-सम्प्रदाय

१—पूज्य जसराज जी महाराज

पूज्य धर्मदास जी महाराज के पांचवे पाट पर पूज्य जसराज जी महाराज आचार्य हुए। आपने वि० सं० १८६७ में पूज्य वशराम जी महाराज के पास मे १३ वर्ष की अवस्था मे मोरवी मे दीक्षा ग्रहण की। आपकी तेजस्विता समाज मे विख्यात है। आगमों के गम्भीर ज्ञानी होने के कारण तत्कालीन मुनि-जगत् में आपका अत्यधिक सुयश था। धांगध्रा से आप बोटाद में स्थिरवास करने के लिए पधारे। तब से इस सम्प्रदाय का नाम बोटाद सम्प्रदाय पड़ा। वि० संवत् १९२९ में आपका स्वर्गवास हुआ।

२—पूज्य अमरशी जी महाराज

पूज्य अमरशी जी महाराज क्षत्रियवंशी थे और वि० सं० १९८९ में आपका जन्म हुआ था। छोटी उम्र में ही माता-पिता का अवसान होने से 'लाठी' के दरबार श्री लाखा जी द्वारा आपका पालन-पोषण हुआ था। संवत् १९०१ मे पूज्य जसराज जी महाराज के पास मे उत्कृष्ट भाव से दीक्षा ग्रहण की। संस्कृत-प्राकृत-ज्योतिष आदि विषयों का आपने विशिष्ट ज्ञान प्राप्त किया। वर्तमान आचार्य माणकचन्द जी महाराज आप ही के शिष्य हैं।

३—पूज्य हीराचन्द जी महाराज

पूज्य हीराचन्द जी महाराज का जन्म खेड़ा (मारवाड़) मे हुआ था। वि० सं० १९२५ मे दामनगर मे जसराम जी स्वामी के शिष्य श्री रणछोड़दास जी महाराज के पास मे आपने दीक्षा ली। आपकी व्याख्यान-शैली बड़ी ही रोचक थी। आप क्रियाशील और स्वाध्याय-प्रेमी थे। सं० १९७४ मे वढ़वाण शहर मे आपका स्वर्गवास हुआ।

४—पूज्य मूलचन्द जी स्वामी

पूज्य मूलचन्द जी स्वामी का जन्म नागनेश ग्राम मे वि० सं० १९२० मे हुआ था। आपकी स्मरण-शक्ति अत्यधिक तीव्र थी। वि० सं० १९४८ में पूज्य हीराचन्द जी महाराज से आपने दीक्षा ग्रहण

की अत्यन्त भक्तिभाव पूर्वक सूत्र-सिद्धान्तों का अभ्यास किया। चर्चा में विना आगम प्रमाण के बोलना आपको कतई पसन्द नहीं था।

५—पूज्य माणक चन्द जी महाराज

पूज्य माणकचन्द जी महाराज का जन्म बोटाद के पास में तुरखा ग्राम में हुआ था। वि० सं० १६४३ में पूज्य अमरशी महाराज के पास में आपने दीक्षा ग्रहण की। संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं का आपने गहरा अध्ययन किया। अपने चरित्र बल से आपने बहुत सारे परिषह सहन किये। बोटाद सम्प्रदाय में आप अत्यन्त प्रतिष्ठावान संत थे। आपके सुशिष्य न्यालचन्द जी शुद्धचित्त वाले शान्त मुनिराज थे। मृत्यु को आप पहले ही से देख चुके थे। जिस दिन आपने ऐसा कहा कि "आज शरीर छोड़ना है" उसी दिन ही आप स्वर्गवासी हुए।

६—पूज्य शिवलाल जी महाराज

पूज्य शिवलाल जी महाराज भावसार जाति में उत्पन्न हुए थे। वैवाहिक सम्बन्ध छोड़ कर सं० १६७४ में आपने पूज्य माणकचन्द जी महाराज के पास दीक्षा ग्रहण की। 'पंच परमेष्ठी का प्रभाव" नामक एक पुस्तक तथा कुछ अन्य पुस्तकें भी आप ने लिखी हैं। आप की प्रवचन शैली चित्ताकर्षक एव हृदयग्राही है। बोटाद के मुनिवरों में आप अत्यन्त क्रियापात्र मुनिराज हैं। आप भी श्री सौराष्ट्र वीर श्रमणसं के प्रवर्तक हैं।

कच्छ आठ कोटि पक्ष

कच्छ में स्थानकवासी धर्म का प्रारम्भ

लगभग वि० सं० १६०८ में एकल पात्रिया श्रावक हुए। जामनगर में इन लोगों का जोर विशेष-रूप से था। जामनगर और कच्छ मांडिवी के श्रावकों में पारस्परिक सुन्दर सम्बन्ध था। व्यावसायिक कार्यों के लिये भी ये एक-दूसरे के यहाँ आया जाया करते थे। इस कारण एकल पात्रियासाधु भी कच्छ में आये। ये कच्छ के वड़े ग्रामों में चौमासे करते और छोटे-मोटे ग्रामों में भी दूसरे समय में घूम-घूम कर धर्म का प्रचार करते थे। ये श्रावकों को आठ कोटि के त्याग से सामायिक-पौषध कराते थे।

संवत् १७७२ में पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के शिष्य मूलचन्द जी स्वामी और उनके शिष्य इन्द्र जी स्वामी ठा० दो प्रथम वार कच्छ मे पधारे।

१—पूज्य श्री सोमचन्द जी महाराज

पूज्य श्री इन्द्र जी महाराज ने धर्मसिंह जी मुनि के टब्बों तथा शास्त्रों का अच्छी तरह से अभ्यास किया था अत आठ कोटि के उपदेश की प्ररूपणा की। आपके पास मे सं० १७८६ में पूज्य श्री सोमचन्द

जी स्वामी ने दीक्षा ग्रहण की पूज्य श्री सोमचन्द जी म० सा० के पास में कच्छ के महाराव श्री लखपत जी के कामदार श्री थोमण जी पारख तथा बलदीया ग्राम के निवासी कृष्ण जी तथा उनकी माता मृगा वाई ने सं० १८१६ में भुज में दीक्षा ग्रहण की। सं० १८३१ में देवकरण जी ने दीक्षा ग्रहण की। सं०१८४२ में पूज्य डाया जी स्वामी ने दीक्षा ग्रहण की। आपके समय से श्री कृष्ण जी स्वामी का संघाड़ा—आठ कोटि के नाम से प्रसिद्धि में आया।

२—पूज्य कृष्ण जी महाराज

संवत् १८४४ में लींवड़ी सम्प्रदाय के पूज्य अजरामर जी स्वामी कच्छ मे पधारे। उस समय कच्छी सम्प्रदाय के पूज्य श्री कृष्ण जी महाराज ने आपके सामने २१ बोल उपस्थित किये —

१—मकान के मेड़े (भवन का वनाया हुआ छोटा सा ऊपरी हिस्सा) पर उतरना नहीं।

२—गृहस्थ की स्त्री को पढ़ाना नहीं।

३—गृहस्थ के घर पर कपड़ों की गठड़ी रखनी नहीं।

४—गोचरी लेते समय गोचरी वहराने वाले के द्वारा त्रस-स्थावर जीवों का यदि घात हो जाय तो गोचरी लेना नहीं।

५—संसारी खुले मुँह बोले तो उससे बोलना नहीं।

६—नारियल के गोले लेना नहीं।

७—दाड़िम के दाने लेना नहीं।

८—बादाम की कुली लेना नहीं।

९—पवड़ी के पूरे गोले लेना नहीं।

१०—गन्ने की गंडेरी (टुकड़े) लेना नहीं।

११—पक्के खरबूजे का रायता जो बीज सहित हो—लेना नहीं।

१२—प्याज, लहसुन या मूला का धुंगारा हुआ कच्चा शाक लेना नहीं।

१३—खरीद कर कोई पुस्तक दे तो लेना नहीं।

१४—खरीद कर कोई लड़का दे तो दीक्षा देना नहीं।

१५—प्याज और गाजर का शाक वहरना नहीं।

१६—माले पर से कोई वस्तु लाकर के दे तो बहरना नहीं।

१७—भोंयरे में से निकाल कर कोई वस्तु दे तो वहरना नहीं।

१८—न दिख सके ऐसे घोर अन्धेरे में से कोई वस्तु लाकर दे तो लेना नहीं।

१९—वहराई जाने वाली भोजन-सामग्री पर यदि चींटी चढ़ी हुई हो तो लेना नहीं।

२०—मिष्टान्न आदि कालातिक्रम के बाद लेना नहीं।

२१—मण्डी पाहुड़िए, वलि पाहुड़िए, संकीए, सहस्सागारे के दोष युक्त आहार लेना नहीं।

ऊपरोक्त २१ बोल पूज्य अजरामर जी स्वामी को मजूर न होने के कारण आहार-पानी का व्यवहार इनसे वन्द हुआ। यहाँ से ही छः कोटि और आठ कोटि इस प्रकार दो पक्ष हुए।

स० १८५५ मे लींवडी से अजरामर जी स्वामी के शिष्य देवराज जी महाराज कच्छ मे आये।

आपने सं० १८५६ मे कच्छ माण्डवी में चातुर्मास किया। उस समय प्रथम श्रावण वद पक्ष में एक संध्या को शा० हंसराज सामीदास की पत्नी राम बाई को छः कोटि से सामयिक कराई। इसके बाद सं० १८५७ में मुन्द्रा में तथा सं० १८५८ मे अन्जार में चातुर्मास किया। इस प्रकार छः कोटि की श्रद्धा यहाँ प्रारम्भ हुई।

पूज्य डाया जी स्वामी के दो शिष्य हुए। सं० १८४५ में जसराज जी स्वामी तथा १८४६ मे देव जी स्वामी ने दीक्षा ग्रहण की। ये दोनों शिष्य अपने-अपने अलग ही शिष्य बनाते थे। इस प्रकार क्रियाओं में भी धीरे-धीरे भिन्नता होने लगी। सं० १८७२ में जसराज जी महाराज ने ३२ बोल निश्चित किए जो इस प्रकार हैं :—

१—बिना कारण के पात्र लेकर गाँव में जाना नहीं।

२—विना कारण गृहस्थ के यहाँ रुकना नहीं।

३—वेचे जाते हुए सूत्र नहीं लेना और पैसा दिलाकर सूत्र नहीं लिखाना।

४—खरीद कर कोई कपड़ा दे तो लेना नहीं।

५—वरसी तप के पारणे के समय किसी के यहाँ जाना पड़े तब यदि कपड़ा बहराया जाय तो लेना नहीं।

६—मिठाई, गुड़, या शक्कर आदि खरीद कर कोई दे तो नहीं लेना।

७—किंवाड़, टांड या पेटी बनवाना नहीं।

८—कन्दमूल का शाक या अचार बहरना नहीं।

९—संसारी को पूँजनी, मुँहपत्ति या डोरा देना नहीं।

१०—संसारी का—आश्रव का कोई काम करना नहीं।

११—आहार करते हुए माण्डलिया रखना तथा पात्रे चिकने हों तो आटे से साफ करना—धोना और उस धोवन को पी जाना।

१२ अंतेवासी का आहार रखना नहीं।

१३—पत्र लिखना या लिखाना नहीं।

१४—द्राक्ष, किसमिस, नारियल के गोले और बादाम की गुली नही लेना।

१५—पुट्ठे के लिये मशरु (रेशमी वस्त्र) या छींट नहीं लेना।

१६—बाग-बगीचे आदि देखने के लिये जाना नहीं।

१७—प्रतिक्रमण करते हुए बीच मे बातें नहीं करना।

१८—प्रतिलेखन करते हुए बीच में बातें नहीं करना।

१९—रात्रि के समय मे स्त्रियों का उपाश्रय में आना नहीं।

२०—अचित्त पानी में सचित्त पानी की शंका हो तो लेना नहीं।

२१—चौमासे की आलोचना छः मास मे करना।

२२—पूर्ण-रूप से स्वस्थ होने पर स्थानक में थंडिल बैठना नहीं।

२३—मर्यादित पात्रों या मिट्टी के वर्तनों से अधिक रखना नहीं।

२४—यन्त्र, मन्त्र अथवा औषधि रखना नहीं।

२५—छोटे ग्रामों में पूछे विना आहार—पानी लेना नहीं।
२६—संसारी की जगह मे जहाँ स्त्रियाँ हों—वहाँ रात्रि में रहना नही।
२७—संसारी खुले मुँह बोले तो उनसे बोलना नहीं।
२८—छत पर खड़े हो कर रात्रि में बातें करना नहीं।
२९—संसारी घर से वार-बार नहीं जाँचना।
३०—दर्शनार्थियों के यहाँ से आहार-पानी लेना नहीं।
३१—श्राविकाओं की बारह व्रत ग्रहण करने की पुस्तिका पाट पर बैठ कर (सब के सामने) पढना नहीं।
३२—चातुर्मास तथा शेखा काल पूरा होने पर शक्ति होते हुए निष्कारण रुकना नहीं।

इन बत्तीस बोलों के साथ श्री देवजी स्वामी सम्मत नहीं हुए। इस कारण कच्छ-आठ-कोटि मे दो पक्ष हो गये। श्री देव जी स्वामी का संघाड़ा "आठ कोटि नानी पक्ष" के नाम से और श्री जसराज जी स्वामी का संघाड़ा "आठ कोटि नानी पक्ष" के नामों से प्रसिद्ध हुआ।

आठ कोटि मोटी पक्ष

१—पूज्य करमशी जी महाराज

पूज्य कृष्ण जी महाराज के दसवें पाट पर पूज्य करमशी जी महाराज हुए। आपका जन्म सं० १८८६ में कच्छ वांकी में सेठ हंसराज जी के यहाँ हुआ था। पूज्य पानाचन्द जी महाराज के पास सं० १९०४ मे गुजरात के सिधपुर ग्राम मे आपकी दीक्षा हुई थी। सं० १९५९ में आप आचार्य-पद पर प्रतिष्ठित हुए। आप कर्त्तव्यपरायण और उग्र विहारी मुनिराज थे। ज्ञान-चर्चा के प्रति आपकी अत्यधिक रुचि थी। शान्ति और सहिष्णुता आपके विशिष्ट गुण थे। वि० सं० १९६९ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके बाद पूज्य श्री वृजपाल जी, पूज्य कान जी स्वामी और पूज्य कृष्ण जी स्वामी आचार्य हुए।

२—पूज्य श्री नागजी स्वामी

आप कच्छ-भोजाय के निवासी श्री लालजी जेवत के पुत्र थे। सं० १९४७ मे केवल ११ वर्ष की अवस्था में पूज्य करमशी जी महाराज के पास दीक्षा ग्रहण की। सं० १९८५ मे आपको आचार्य-पद दिया गया। आप उत्तम विद्वान् और सरस कवि थे। गुजराती भाषा मे आपने अनेक रास बनाये है।

३—पूज्य श्री देवचन्द जी महाराज

पूज्य श्री देवचन्द जी महाराज इस सम्प्रदाय में उपाध्याय थे। वि० सं० १९४० में आपका जन्म हुआ था। आपके पिता का नाम सेठ साकरचन्द भाई था। वि० सं० १९५७ में आपने दीक्षा ग्रहण की। न्याय, व्याकरण और साहित्य के आप प्रखर विद्वान् थे। 'ठाणांग-सूत्र' पर भाषान्तर भी आपने लिखा है। न्याय के पारिभाषिक शब्दों को सरल रीति से समझाने वाला आपने एक ग्रन्थ लिखा है। संवत् २००० मे पोरबन्दर मे आपका स्वर्गवास हुआ।

४—पं० मुनि रत्नचन्द जी महाराज

संवत् १९७५ में पूज्य नागजी स्वामी के पास में पं० मुनि श्री रत्नचन्द जी महाराज ने दीक्षा ग्रहण की। आपके पिता का नाम कानजी भाई था। पं० रत्नचन्द जी म० कच्छी के रूप मे आप प्रख्यात हैं। आपने संस्कृत, प्राकृत का गहन अध्ययन किया है। तीन चरित्र-ग्रन्थों की रचना आपके द्वारा संस्कृत भाषा में हुई है।

कच्छ आठ कोटि नानी पत्त

पूज्य डाया जी महाराज के दो शिष्यों ने अलग-अलग संघाड़े चलाये थे। उनमें से पूज्य देव जी स्वामी के 'आठ कोटि नानी पत्त' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। पूज्य जसराज जी स्वामी के पश्चात् पूज्य वरसा जी स्वामी और पूज्य नथु जी स्वामी पाट पर आये।

१—पूज्य हंसराज जी स्वामी

आपने संवत् १९०३ में पूज्य नथु जी स्वामी के पास दीक्षा ग्रहण की। आपने कच्छ में से विहार करके रेगिस्तान पार करके गोंडल जाकर श्री पुंजा जी स्वामी के पास में शास्त्राभ्यास किया। सं० १९१६ में आप फिर से कच्छ लौटे और शुद्ध वीतराग धर्म की प्ररूपणा की। आपने अनेक उपसर्ग और परिषद् समभाव से सहन किये थे। सं० १९३५ में कच्छ के वड़ाला ग्राम मे आपने कालधर्म प्राप्त किया।

२—पूज्य श्री व्रजपालजी स्वामी

पूज्य श्री हंसराज जी स्वामी के पाट पर पूज्य श्री व्रिजपाल जी स्वामी हुए। आपनें बाल-ब्रह्मचारी के रूप में सं० १९११ में दीक्षा ग्रहण की और सं० १९३५ में आपको पूज्य पदवी प्रदान की गई। आप महान् वैराग्यवान् थे। संवत् १९५७ मे आपका स्वर्गवास हुआ।

३—पूज्य श्री डुंगरशी स्वामी

पूज्य श्री व्रजपाल जी स्वामी के पाट पर आपके गुरुभाई डुंगरशी स्वामी आये। आप भी बाल ब्रह्मचारी थे और अत्यधिक वैराग्यवान थे। आपने सं० १९३२ में कच्छ वड़ाला ग्राम मे दीक्षा ग्रहण की। आपका सं० १९६९ में स्वर्गवास हुआ।

४—पूज्य श्री शामजी स्वामी

पूज्य श्री डुंगरशी स्वामी के पाट पर पूज्य श्री शाम जी स्वामी आचार्य पदारूढ़ हुए। आपने ६७ वर्ष तक सयम पाल कर सं० २०१० मे कच्छ-साड़ाऊ में कालधर्म प्राप्त किया।

५—पूज्य श्री लालजी स्वामी

पूज्य श्री शामजी स्वामी के पाट पर पूज्य श्री लाल जी स्वामी आचार्य-पद पर आये। आपने

सं० १६७२ में दीक्षा ग्रहण की। वर्तमान में इस सम्प्रदाय में १६ साधु-मुनिराज और २६ महासतियाँ हैं। इन सब पर पूज्य श्री लाल जी स्वामी का शासन है। इस सम्प्रदाय का एक ऐसा नियम है कि गुरु की उपस्थिति में कोई भी मुनि अपने अलग शिष्य नहीं बना सकते। इस कारण सम्प्रदाय में नवीन शाखाएँ फूटने की संभावना कम रहती है। और साम्प्रदायिक-एकता दृष्टिगोचर होती है।

खम्भात-सम्प्रदाय

पूज्य श्री तिलोक ऋषि जी महाराज के सुशिष्य मंगल ऋषि जी महाराज गुजरात में विचारे। खम्भात में आपके अनेक शिष्य हुए—इस कारण इस सम्प्रदाय का नाम 'खम्भात सम्प्रदाय' पड़ा।

श्री मंगल ऋषि जी महाराज के बाद अनुक्रम से पूज्य श्री रणछोड़ जी महाराज, पूज्य श्री नाथा जी, वेचरदास जी और बड़े माणकचन्द जी महाराज पाट पर आये। इनके बाद पूज्य श्री हरखचन्द जी महाराज के समय में यह सम्प्रदाय सुदृढ़ हुई। आपके बाद पूज्य श्री भाण जी ऋषि जी महाराज पाट पर आये।

१—पूज्य श्री गिरधरलाल जी महाराज

पूज्य श्री भाण जी ऋषि जी महाराज के बाद पूज्य श्री गिरधरलाल जी महाराज आपके पाट पर आये। आप संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं के विज्ञाता और समर्थ विद्वान् थे। आप एक महान् कवि भी थे। आपकी कविता अत्यन्त सौष्ठवयुक्त और पिंगलबद्ध थी। आपने बम्बई में भी चातुर्मास किया था। अन्य दर्शन शास्त्रों के भी आप विज्ञाता थे। योग और ज्योतिष-शास्त्र के भी आप प्रखर अभ्यासी थे। आपमें गहरा ज्ञान और अगाध बुद्धि थी। मस्तक में अकस्मात् चोट लग जाने के कारण आपने कालधर्म प्राप्त किया।

२—पूज्य श्री छगनलालजी महाराज

पूज्य श्री गिरधरलाल जी महाराज के बाद पूज्य श्री छगनलाल जी महाराज आचार्य हुए। आपने २२ वर्ष की अवस्था में सं० १६४५ मे दीक्षा ग्रहण की। आप निर्भय वक्ता, शुद्ध हृदयवान्, सत पुरुष थे। आपकी पहाड़ी आवाज थी—बुलन्द और जोशीली। तत्कालीन धर्मप्रचारक आचार्यो मे आपकी अत्यन्त प्रतिष्ठा थी। अजमेर साधु-सम्मेलन मे आप पधारे थे।

३—पूज्य श्री गुलाबचन्दजी महाराज

पूज्य श्री गुलाबचन्द जी महाराज अत्यन्त सरल हृदय के थे। आप उग्र तपस्वी थे। अपने शरीर के प्रति रंचमात्र भी आपमें ममत्व भाव नहीं था। आपको सारण गाँठ की पीड़ा थी, जिसका ऑपरेशन कराने के लिए श्रावक अनेक बार आपसे विनती करते थे किन्तु शरीर के प्रति निर्ममत्व के कारण आप अस्वीकार करते थे। संवत् २०११ मे इस सम्प्रदाय के इन अन्तिम आचार्य और तपस्वी मुनिराज का अहमदाबाद मे स्वर्गवास हुआ। इस सम्प्रदाय मे अब केवल दो मुनि हैं, शेष सभी साध्वियाँ हैं।

इस सम्प्रदाय की साध्वियों में महासति जी श्री शारदाबाई अत्यन्त विदुषी हैं जो अहमदाबाद के समीपवर्ती साणन्द ग्राम की है। बहुत छोटी उम्र में दीक्षा अंगीकार करके आपने गहरा अध्ययन किया है। अपनी आकर्षक और सुन्दर व्याख्यान-शैली से आप धर्मप्रचार में लगी हुई है।

हमारा साध्वी संघ

जैन धर्म की व्यवस्था का भार चतुर्विध संघ पर है। श्रमण भगवान् महावीर ने चतुर्विध संघ के चार स्थम्भों को—साधु-साध्वी, और श्रावक-श्राविकाओं—को समानाधिकार दिये हैं।

साधु समाज का इतिहास ही केवल जैन धर्म का इतिहास नहीं है किन्तु चतुर्विध संघों का सम्मिलित इतिहास ही जैन समाज का सम्पूर्ण इतिहास हो सकता है। किन्तु समाज की रूढ़ प्रणालिकानुसार आज तक साध्वी समाज की अपेक्षा साधु समाज का ही नामोल्लेख विशेष मिलता है। इसका कारण पुरुष प्रधानता की भावना होना जाना जा सकता है।

चाहे जो कुछ हो-धर्म और बलिदान का जहाँ सम्बन्ध है वहाँ तक जैनधर्म के सत्य उत्सर्ग का ज्वलन्त और साकार रूप साध्वी समाज है। दु ख के जितने पहाड़ और विपत्तियों के बादल साध्वी-वर्ग पर टूटे हैं, आँधियों और तूफानों का जितना सामना साध्वी समाज को करना पड़ा है, उतना साधु-वर्ग को नहीं। साध्वी समाज द्वारा दिए गये महामूल्यवान बलिदानों की अमर कहानी केवल जैन साध्वी समाज के लिए ही नहीं किन्तु समस्त संसार के लिए दिव्य ज्योति के समान है। भगवान महावीर के कष्ट और चन्दन बाला के संकटों को कौन भूल सकता है ?

जैन धर्म ने स्त्री जाति को तीर्थंकर पद में भी समावेश किया है—यह उसकी एक अप्रतिम विशेषता है। फिर भी यह सत्य है कि साध्वी समाज की परम्परा का अखण्डित इतिहास नहीं मिलता। जो-कुछ भी इतिहास मिलता है वह बिखरे हुए रत्न-कणों के समान है।

महासती जी श्री पार्वती जी महाराज

महासती श्री पार्वती जी (पंजाब) का नाम वर्तमान में सुप्रसिद्ध है। आप का जन्म आगरा जिले में संवत् १९१६ में हुआ था। सवत् १९२४ में केवल आठ वर्ष की अवस्था में आपने दीक्षा ग्रहण की थी। संवत् १९२८ में आप पंजाब के श्री अमरसिंह जी महाराज की सम्प्रदाय मे सम्मिलित हुई आप बड़ी क्रिया पात्र थीं। पंजाब के साध्वी संघ पर तो आप का प्रभुत्त्व था ही; परन्तु श्रमण संघ भी आपकी आवाज का आदर करता था। आपने अनेक प्रान्तों में विचरण कर के धर्मध्वजा फहराई थी। आपका प्रचण्ड देह और व्याख्यान 'छटा बड़ी प्रभावोत्पादक थी, आप अत्यन्त विदुषी साध्वी थीं। आपने संस्कृत प्राकृत आदि भाषाओं का बड़ा ही सरस ज्ञान प्राप्त किया था। आपने 'ज्ञान दीपिका', 'सम्यक्त्व सूर्योदय', सम्यक् चन्द्रोदय 'आदि महान ग्रन्थों की रचना की है। आप के ग्रन्थों मे अद्भुत' तर्क और सचोट दलीलें भरी हुई हैं। आपके विरोधी आपकी दलीलों का बुद्धिपूर्वक उत्तर देने में असमर्थ होने के कारण क्षुद्रता पर उतर जाते। संवत् १९६७ में जालन्धर में आप का स्वर्गवास हुआ।

महासती श्री उज्ज्वलकुमारीजी

आपका जन्म बरवाला (सौराष्ट्र) में हुआ है। माँ-बेटी ने श्री विदुषी महासती श्री राजकुवँर के

पास दीक्षा ली थी। आधुनिक समयानुसार प्रखर प्रवचनकर्ता के रूप में महासति जी श्री उज्ज्वल कुमारी जी का नाम जैन और अजैन समाज मे सर्वत्र प्रसिद्ध है महात्मा गाधी और अन्य राष्ट्रीय नेताओं ने भी आप का सान्निध्य प्राप्त किया है। आप संस्कृत, प्राकृत, गुजराती, हिन्दी व मराठी भाषा के अतिरिक्त इग्लिश भाषा पर भी अधिकार रखती है। आपके कई व्याख्यान प्रकाशित हो गये हैं।

महासती जी श्री सुमति कुंवरजी

स्थानक वासी जैन-धर्म के जानकार महासति जी श्री सुमति कुंवर जी को भली भांति जानते है। श्रमण संघ के समान श्रमणी संघ की आवश्यकता पर आप समाज का ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। आप उग्र विहारिणी, परम विदुषी और मधुर व्याख्यात्री है। अपनी दीक्षा—गुरु रम्भा कुॅवर जी महासती जी के साथ दक्षिण, मध्यभारत, राजस्थान, थली प्रदेश और पंजाब में विचर कर आप बहुत ही धर्म प्रचार कर रही है।

महासती जी श्री वसुमती बाई

दरियापुरी सम्प्रदाय की महासति जी श्री वसुमति बाई के व्याख्यान बड़े ही तर्कपूर्ण युक्तियो से परिपूर्ण और जोरदार भाषा से भरे हुए होते हैं। आपका जन्म पालनपुर में हुआ और छोटी उम्र में दीक्षा लेकर गहन ज्ञान सम्पादन किया।

प्रवर्तिनी जी श्री देवकुँवर बाई

कच्छ आठ कोटि छोटी पक्ष में वर्तमान में प्रवर्तिनी पद पर महासति जी श्री देवकुॅवर बाई विराजमान हैं। कच्छ के वड़ाला ग्राम में सं०१९७५ में आपकी दीक्षा हुई थी। प्रवर्तिनी जी श्री पांची बाई के कालधर्म के पश्चात् स० १९९६ मे उनके पाट पर आप विराजमान हुईं।

महासती जी श्री लीलावती बाई

लींबड़ी सघ की सम्प्रदाय मे सुप्रसिद्ध महासती जी श्री बा० ब्र० लीलावती बाई क्रियाशील और प्रभावक व्याख्यात्री हैं।

इनके सिवाय अनेक महासतियाॅ अनेक सम्प्रदायो में हैं। उनमे से अनेक विद्वान् और अभ्यासी है। आवश्यक सामग्री मिलने के अभाव में और अधिक महासतियो का सविस्तर वर्णन नहीं दिया जा सका।

महासति श्री रंगुजी (राजस्थान), महासति श्री टीबुजी (मालवा), नन्द कुॅवर जी (मारवाड़) श्री रतन कुॅवर जी (मालवा), और श्री सारसकुॅवर जी (खंभात), आदि महासतियों ने समस्त भारत मे जैनधर्म का प्रचार और प्रसार करने में अग्रणी भाग लिया है।

महासती जी श्री राजीमति जी, चन्दा जी, मोहन देवी जी, श्री पन्ना देवी जी, श्री मथुरा देवी जी आदि महासतियों ने भगवान महावीर स्वामी का संदेश पंजाब में पहुॅचाया। इनके इस महान कार्य को कौन भूल सकता है। गुजरात मे श्री ताराबाई, श्री शारदा बाई आदि सौराष्ट्र मे श्री प्रभावती बाई, श्री

लीलावती जी आदि महासतियों ने आर्हत् धर्म का प्रचार किया है।

महासती वर्ग का प्रचार, उत्सर्ग, त्याग, तपश्चर्या और संयम साधुवर्ग से किसी भी प्रकार से कम नही है।

महासती वर्ग का भावी उज्ज्वल प्रतिभासित हो रहा है। साध्वी समाज यदि शिक्षण की तरफ विशेष लक्ष्य दे तो साध्वियाँ जैनधर्म का महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पादन कर सकेगी और संघ की उन्नति में दायित्वपूर्ण अपना सहयोग प्रदान कर सकेंगी।

पूज्य श्री लवजी ऋषिजी की परंपरा की महासतियाँ

क्रियोद्धारक परम पुरुष पूज्य श्री लव जी ऋषि जी म० के तृतीय पाट पर पूज्य श्री कहान जी ऋषि जी म० के पाट पर विराजित पूज्य श्री तारा ऋषि जी म० ने संवत् १८१० में पचेवर ग्राम में ४ सम्प्रदाय का संगठन किया। उस समय सती शिरोमणि श्री राधाजी म० उपस्थित थे। महासतीजी ने संगठन कार्य में विशेष सहयोग दिया था। उनकी अनेक शिष्याओं में श्री किसन जी म० आपकी शिष्या श्री जोता जी म० इनके शिष्य परिवार में श्री मोता जी म० मुख्य थीं। आपकी अनेक शिष्याओं में दीपकवत् प्रकाश करने वाली शिष्या श्री कुशल कुँवर जी म० पदवीधर थीं, उन्हीं की सेवा २७ शिष्या हुइ थीं। उनमें से शान्त मूर्ति श्री दया जी, सरदारा जी तथा महासती जी श्री लिछमा जी म० का परिवार वृद्धिगत हुआ। महासती जी दया कुँवर जी महाराज की भी अनेक शिष्याएँ हुईं, उनमें श्री गुमाना जी म०, श्री झमकु जी म०, श्री गंगा जी म०, श्री हीरा जी म० आदि शिष्या और परिवार आगे बढ़ता गया। श्री गुमानकुँवर जी से तपस्विनी श्री सिरेकुँवर जी और उनकी शिष्या पंडिता प्र० श्री रतन कुँवर जी म० जो कि वर्तमान में अनेक क्षेत्रों में विचर कर जैनधर्म के गौरव को बढ़ा रही हैं। उनकी शिष्याओं में प्रखर व्याख्याती पंडिता वल्लभ कुँवर जी म० भी जैन धर्म का खूब प्रचार कर रही है। श्री हीरा जी म० के परिवार में श्री भूरा जी म०, शान्त मूर्ति श्री राम कुँवर जी म०, तपस्विनी श्री नन्दू जी म० आदि हुईं। उनमें अनेक सतियाँ विदुषी हुईं। श्री भूरा जी म० की शिष्या पंडिता प्रवर्तिनी जी श्री राज कुँवर जी म० प्रखरव्याख्यानी, मधुर स्वर, अनेक शास्त्र कण्ठस्थ, संस्कृत, उर्दू, फारसी, अरबी, हिन्दी, मराठी गुजराती भाषा से विशेष अवगत थे। आप के द्वारा मुंबापुरी पधारने का अवसर सर्वप्रथम हुआ। जिससे अन्य सतियाँ बम्बई क्षेत्र मे पधारती हैं। आपको अनेक शिष्याओं में पंडिता सुव्याख्यानी श्री उज्ज्वल कुँवर जी म० वर्तमान में जैन समाज में उज्ज्वल कीर्ति को बढ़ा रही हैं। आपने संस्कृत प्राकृत का उच्च शिक्षण लिया है. साथ-साथ अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू, गुजराती आदि भाषाओं के ऊपर अच्छा अधिकार है। तपस्विनी श्री नन्दूजी म० शान्त और उग्र तपस्विनी थीं। आप की शिष्याओं में मधुरव्याख्यानी पंडिता प्र० श्री सायर कुँवर जी म० जो कि वर्तमान में मद्रास, बैंगलोर आदि प्रान्तों में विचर कर धर्म का तथा शिक्षण का प्रचार कर रही है। आपके सदुपदेश से अनेक पारमार्थिक संस्थाएँ निर्माण हुई हैं। शान्त मूर्ति श्री राम कुँवर जी म० आप की २३ शिष्याएँ हुईं, उनके प्रमुख्य श्री सुन्दर जी म० प्रधान थीं। पं० प्रवर्तिनी जी श्री शान्ति कुँवर जी म० प्रखर व्याख्यानी विदुषी सती थी। इन्होंने दक्षिण प्रान्त खान देश आदि प्रान्तों मे विचरकर जैनधर्म की अच्छी जागृति की है। उन्हीं के परिवार मे शान्त सरल विदुषी और प्रखर व्याख्यानी सती जी श्री सुमति कुँवर जी म० अनेक प्रान्तों मे उग्र विहार करके भव्य

जीवों को अपने वचनामृत का पान करा रही हैं। आपके वचनों में ऐसी आकर्षण शक्ति है कि जैनों के अतिरिक्त अन्य समाज भी आपके वचनामृतका पिपासु रहता है। स्थली के प्रान्त रतन गढ में जो तेरह पंथी समाज का गढ़ है, ऐसे क्षेत्रों में आपने अन्य भाई अग्रवाल, ब्राह्मण आदि समाज की विनती से थली प्रदेश क्षेत्रों में चातुर्मास किया। अनेक परपहों को सहन कर स्था-जैनधर्म का गौरव बढ़ाया है। आपके सदुपदेश में वम्वई चातुर्मास में आयम्बिल खाता ७०,१७५ हजार का स्थायी फंड हो कर वर्तमान में सुव्यवस्थित चल रहा है। अनेक स्थानों पर कन्याओं के लिए धार्मिक कन्या पाठशाला स्थापित हुई हैं।

श्री महाभाग्यवान् श्री लछीमा जी म० प्रभावशालिनी सती जी थीं। आपके उपदेशामृत से सद्‌बोध पाकर अनेक भव्य आत्माओं ने जीवन सफल बनाया। उनमें मुख्य श्री सोना जी म०, श्री हमीरा जी, श्री लाडु जी, तपस्विनी रुखमा जी आदि महासतियाँ जी हुईं। श्री सोना जी म० की सुशिष्या तपस्विनी श्री कासा जी म० हुईं। इन सतियों के परिवार में अनेक सतियाँ हुई है। प्रवर्तिनी श्री करतूरा जी म०, प्र० श्री हगामकुँवर जी म० और श्री जड़ावकुँवर जी म०। इन महासतियों ने मालवा, बागड़, बरार, मध्यप्रदेश आदि प्रान्तों में विचरकर शुद्ध जैन धर्म की खूब प्रभावना की है। वर्तमान में प्र० श्री हगाम कुँवर जी म० और उनका शिष्या-परिवार श्री सुन्दर कुँवर जी म० आदि मालवा प्रान्त में विचर रही हैं।

श्री जड़ावकुँवर जी म० का परिवार व्याख्यानी श्री अमृतकुँवर जी म० तथा श्री वरजु जी म० आदि सतियाँ हुईं। उनकी शिष्या का परिवार वर्तमान में अहमदनगर, पूना तथा बरार, मेवाड़ मालवा प्रान्तों में विचर रहा है।

पं० महासती जी श्री सिरेकुँवर जी म० अपने वचनों द्वारा धर्मप्रचार कर रही हैं। महासती श्री इन्द्रकुँवर जी और श्री दौलतकुवँर जी म० की शिष्या श्री गुमान कुँवर जी तथा श्री हुलासकुँवर म० ठा० २ महासती जी श्री सिरेकुँवर जी म० की सेवा में विचर रही हैं। श्री हमीरा जी म० की शिष्या श्री प्रवर्तिनी जी रंभा जी महाराज आदि हुई हैं। उनमे प्रवर्तिनी जी म० बहुत भद्र परिणामी सरल प्रकृति की थीं। कई वर्ष तक स्थविरवास पूना में विराजती थीं। अन्तिम ४५ दिनों का संथारा ग्रहण कर आप पूना में ही स्वर्गवासी हुईं। आपकी करीब २२ शिष्याएँ हुईं। उनमें शान्त और सरल मूर्ति श्री पानकुँवर जी म०, पंडिता सुव्याख्यानी श्री चन्दकुँवर जी म०, सेवाभावी श्री राजकुँवर जी म०, श्री सूरजकुँवर जी म०; श्री आनन्दकुँवर जी म० आदि अच्छी विदुषी सतियाँ हुईं।

पडिता श्री चन्द्रकुँवर जी म० की सुशिष्या पं० प्रवर्तिनी जी श्री इन्द्रकुँवर जी म० जो कि वर्तमान में पूना व अहमदनगर जिले में विचर के धर्म जागृति कर रही हैं। सुव्याख्यानी श्री आनन्दकुँवर जी म० मद्रास वैंगलोर प्रान्त में विचर कर धर्म की प्रभावना कर रही हैं आपकी सेवा में ५ शिष्या हुई हैं। उनमें पंडिता श्री सज्जनकुँवर जी म० ने पाथर्डी में श्री अमोल जैन सिद्धान्तशाला में शिक्षण लेकर अच्छी योग्यता प्राप्त कर अनेक प्रान्तों में विचर कर जैन-धर्म का प्रचार कर रही हैं।

इस प्रकार ऋषि सम्प्रदायी महासतियों ने अनेक देश-देशान्तर में विचर के और धर्म की सेवा करके गौरव बढ़ाया है।

स्था० जैन समाज के उन्नायक श्रावक

श्री अ० भा० श्वे० स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रन्स के अध्यक्ष

श्री केवलचन्द त्रिभुवनदास, अहमदाबाद
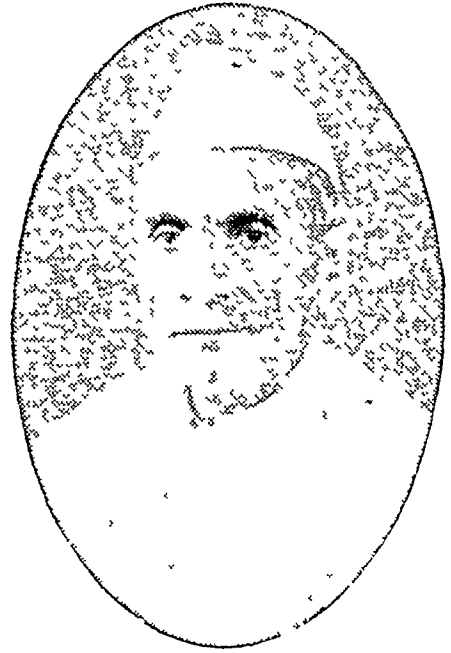
श्री मेघजी भाई थोभरण, वम्बई

श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया, अहमद नगर

श्री वीरचन्दभाई मेघजी भाई थोभरण, वम्बई

श्री विनयचन्द भाई जौहरी, जयपुर

श्री बालमुकुन्द जी मूथा, सतारा

श्री भैरोदान जी सेठिया, बीकानेर

श्री चम्पालाल जी बाठिया, भीनासर
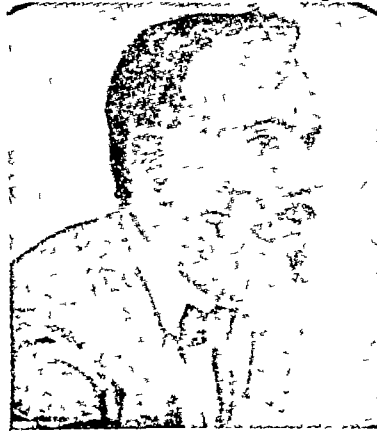
श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह
अहमदाबाद

श्री हेमचन्द रामजी भाई मेहता, भावनगर

श्री अ० भा० श्वे० स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रन्स के स्वागताध्यक्ष

श्री अम्बावीदासभाई डोसानी मोरवी

लाल ज्वालाप्रसादजी जौहरी

लाला राजवहादुर सुखदेवसाय जी जौहरी

सेठ अमरचन्द जी पितलिया

श्री अ० भा० श्वे० स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेन्स के स्वागताध्यक्ष
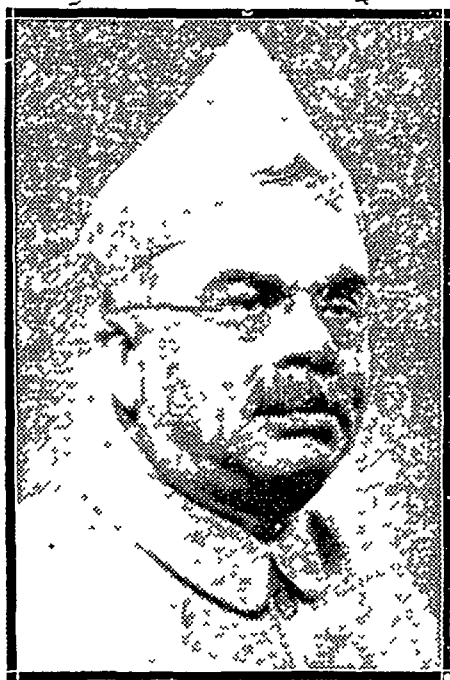
सेठ धनजी भाई देवशी भाई

श्री दानमल जी बलदौटा सादड़ी, मारवाड

जयचंदलाल जी रामपुरिया, बीकानेर

श्री मोहनमल जी चोरडिया, मद्रास

परिच्छेद—७

स्था० जैन समाज के उन्नायक श्रावक

कॉन्फरन्स छठवें अधिवेशन के अध्यक्ष

मलकापुर अधिवेशन के प्रमुख

श्री मेघजी भाई थोभरण, जे० पी०

आपका जन्म सं० १६१६ भाद्रपद कृष्णा १३ को भुज में हुआ। आप जाति से बीसा ओसवाल थे। १५ वर्ष की उम्र में ही आप व्यापारार्थ बम्बई आये और स० १६३५ में आपने वहाँ मैसर्स मिल कम्पनी के साथ भागीदार वन कर रुई की दलाली का काम आरम्भ किया। यह कम्पनी यूरोपियन कम्पनी थी। आपकी कार्यकुशलता से यूरोपियन लोग वडे प्रसन्न हुए। स० १६३५ से १६८१ तक आपका यह व्यवसाय खूब जोर-शोर से चलता रहा। लाखो रुपए आपने कमाये।

वचपन से ही आपका धर्म-प्रेम अनुपम था। साम्प्रदायिक ममत्व आपको पसन्द न था। वम्बई में जवसे स्था० साधुओ का पदार्पण होने लगा तब से ही आप धार्मिक कार्यो मे विशेष रस लेने लगे। आप लगभग १५ वर्ष तक श्रीदाम जी लक्ष्मीचन्द जैन धर्म स्थानक, चीचपोकली के प्रमुख रहे। वम्बई शहर में स्थानक का अभाव आपको खटका करता था। उसकी कमी को दूर करने के लिए आपने स्वय १० हजार रु० दिये और यो ढाई लाख रुपयो का चन्दा कर एक वगला चॉदावाडी में खरीदा।

आपकी दानप्रियता प्रशसनीय थी। पूज्य श्री जवाहरलाल जी म० का चातुर्मास जब घाटकोपर में हुआ तो वहाँ सार्वजनिक जीवदया फड स्थापित किया गया था, उसमें आपने २१०० रु० प्रदान किये थे।

मैसूर स्टेट में प्रतिवर्ष शारदा देवी के यहाँ करीब ७ हजार जानवरो की वलि हुआ करती थी, जिसको आपने सदैव के लिए बन्द कराया। इस उपलक्ष्य में मैसूर राज्य ने आपके नाम से एक अस्पताल वनाया जिसमें ७५०० रु० आपने और ७५०० रु० सेठ शान्तिदास आसकरण ने—जो आपके मामा के वेटे भाई होते है, दिये।

माडवी-कच्छ में जव अकाल था तव आपने सस्ते भाव से अनाज दिया। रुपया दिया, वस्त्र दिये। इन सव दान के अलावा आपने विभिन्न कार्यो के लिए दो लाख, पैसठ हजार रुपये का दान दिया। इन सव दान की ऐसी सुव्यवस्था कर रखी है कि उनसे गवर्नमेंट प्रोमेसरी नोट, म्युनिस्पैलिटी लोन आदि ले रखी है, जिनके व्याज से सम्वन्धित प्रवृत्तियाँ आज भी चल रही है।

आपने अपने नाम से एक स्वजाति जैन सहायक फंड स्थापित किया है जिसमें १,४३,५०० रु० दिये। इसका प्रतिवर्ष ६३०० रु० व्याज आता है।

२६००० रु० में श्री मेघजी थोभरण जैन सस्कृत पाठशाला, कच्छपाडा में स्थापित की, जिसमें मुनिराजो को व वैरागियो को शिक्षा दी जाती है। इसके साथ एक लायब्रेरी भी है।

१५००० जीवदया में, १८००० गायो को घास डालने के लिए, १४००० कुत्तो को रोटी डालने के लिए, १४००० पक्षियो को चुगा डालने के लिए, ३५०० कीड़ियो को आटा डालने के लिए, २२०० सदाव्रत देने के लिए, इस तरह २,६५,००० रु० प्रदान किये। जिसका व्याज १११२५ रु० आता है जो प्रतिवर्ष व्यय कर दिया जाता है।

कान्फरन्स के छठवें अधिवेशन मलकापुर के आपअध्यक्ष चुने गए। यहाँ से कांफ्रन्स में जागृति आ गई। ऑफिस बम्बई में लाया गया। श्री सूरजमल लल्लूभाई जौहरी तथा सेठ वेलजीभाई लखमसी को मन्त्री बनाया।

आपने बम्बई के भव्य सघ की अध्यक्षता को आजीवन बडी कुशलता के साथ सँभाला था। आपका स्वर्गवास बम्बई में हुआ। आपके सुपुत्र श्री वीरचन्द भाई ने भी संघ का और कनफरन्स का कार्यभार निभाया।

कान्फ्रन्स के सातवे अधिवेशन के प्रमुख

दानवीर सेठ भैरोंदानजी सेठिया, बीकानेर

श्री सेठियाजी का जन्म सवत् १६२३ आश्विन शुक्ला अष्टमी को बीकानेर स्टेट के कस्तुरिया' नामक गाँव में हुआ था। आपके पिताजी का नाम धर्मचन्द्रजी था। आप चार भाई थे जिनमें से दो बड़े—श्री प्रतापमलजी और अगरचन्दजी तथा एक श्री हजारीमलजी आपसे छोटे थे। अभी इनमें से आप ही मौजूद हैं।

श्री सेठिया जी ने शिक्षा सामान्य ही प्राप्त की। लेकिन आपने अनुभव से ज्ञान बहुत प्राप्त किया। आपको हिन्दी, अंगरेजी, गुजराती और मारवाडी भाषाओ का अच्छा ज्ञान है। व्यवसाय का क्षेत्र प्रारम्भ में बम्बई और फिर स्वतंत्र रूप से कलकत्ता रहा। जहाँ आपने अपना रंग का कारोबार किया जिसमें आपने काफी प्रतिष्ठा तथा लक्ष्मी का भी उपार्जन किया। इससे पूर्व आप बम्बई मे ५०० रु० सालाना पर काम करते थे, जहाँ आपने ६ वर्ष तक कार्य किया।

कलकत्ता में आपने 'दी सेठिया कलर एड केमीकल वर्क्स लिमिटेड' की स्थपना की एव उसको बडी योग्यता से चलाया। इस कारखाने मे आपके बडे भाई श्री अगरचन्दजी भी बाद में भागीदार बन गये थे। इस कारखाने की आपने भारत के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध नगरो—कानपुर, दिल्ली, अमृतसर, अहमदाबाद, बम्बई, मद्रास, कराची आदि स्थानो में शाखाएँ खोली। जापान के प्रसिद्ध नगर ओसाका में भी आपकी शाखा थी।

स० १६७२ में आप भयंकर बीमारी से ग्रस्त हो गये। कई उपचार किये, पर आराम न हुआ। अन्त में हौमियोपैथिक दवा से आपको आराम हुआ। तब से आपने अपना कारोबार समेटना शुरू किया और धार्मिक जीवन में अपना अधिक समय व्यतीत करने लगे। तभी से होमियोपैथिक दवाइयो के प्रति आपकी श्रद्धा जमी और उन्हीं दवाइयो का उपयोग करने कराने लगे। आज भी आप सैंकडो व्यक्तियो को मुफ्त में यह दवा देते हैं।

स० १६७० में आपने सर्वप्रथम बीकानेर में एक स्कूल खोला। यहीं से आपका धार्मिक-जीवन आरम्भ होता है। स० १६७८ में आपके बडे भाई अगरचन्दजी बीमार हुए। उन्होने आपको कलकत्ता से बुलाया और स्कूल के कार्य में वे भी सहयोगी बने। कन्या पाठशाला और लायब्रेरी को वृहदाकार देने का भी तय किया। सं० १६७८ चैत्र कृष्ण ११ को श्री अगरचन्दजी का स्वर्गवास हो गया। चार मास बाद आपके पुत्र उदयचन्द जो कलकत्ता में बीमार थे उनका भी स्वर्गवास होगया। अगरचन्दजी के कोई सन्तान न होने से आपने अपने बडे लडके श्री जेठमलजी को गोद दे दिया। श्री जेठमलजी बडे विनीत और मिलनसार प्रकृति के सज्जन हैं। सेठिया जैन पारमार्थिक सस्थाओ का कार्य अभी आप ही सँभाल रहे है। श्री सेठिया जी के चार लडके हैं—पानमलजी, लहरचन्दजी, जुगराजजी और ज्ञानमलजी। स० १६७८ में आपने चारो पुत्रो को सम्पत्ति का विभाजन कर अलग-अलग व्यवसाय में लगा दिया। सेठिया जैन पारमार्थिक संस्थाओ के लिये जो ध्रौव्य सम्पत्ति आपने तथा आपके बडे भाई श्री अगरचन्दजी ने व श्री जेठमलजी ने निकाले है, वह ४०५००० चार लाख पॉच हजार रु० है। लायब्रेरी में जो पुस्तकें व शास्त्र आदि है वे इस सम्पत्ति के अतिरिक्त है।

श्री सेठियाजी का जीवन कर्मनिष्ठ जीवन रहा है वे आज भी ६० वर्ष की उम्र में नियमित कार्य करते हैं।

और शास्त्र श्रवण करते रहते है। आप म्युनिसिपल कमिश्नर, म्युनिसिपेलिटी के वाइस प्रेसिडेन्ट, आनरेरी मजिस्ट्रेट आदि कोई सरकारी पदो पर कार्य करते रहते हैं। आप स्था०-जैन कोन्फ्रेन्स के ७ वें अधिवेशन के जो कि बम्बई में हुआ था, सभापति निर्वाचित हुए थे। बीकानेर में वुलन प्रेस भी आपने सचालित किया। इससे बीकानेर राज्य में ऊन या व्यवसाय की बहुत उन्नति हुई।

श्री सेठिया जी का मृदुल, मजुल स्वभाव, उनकी शात गम्भीर मुद्रा, उनका उदार व्यवहार आकर्षण की ऐसी वस्तुएँ हैं जो सामने वाले को प्रभावित कर लेती है। आप अभी निवृत्ति-जीवन व्यतीत कर रहे हैं, और अपना समय शास्त्र-स्वाध्याय में ही लगा रहे हैं। स्था० जैन समाज पर सेठिया जी के अनेकविध उपकार है, उन सबका वर्णन यहाँ नहीं किया जा सकता। बीकानेर सघ के धर्मध्यान और सन्त सतियो के ठहरने के लिये आपने अपनी एक विशाल कोटडी भी दी हुई है जिसकी व्यवस्था व खर्च पारमार्थ ट्रस्ट द्वारा ही होता है। जिसकी रजिस्ट्री भी कराई हुई है।

पारमार्थिक संस्थाओ और स्थानक का परिचय सस्थाओ के परिचय में दिया गया है, जिससे पाठकगण विशेष रूप से जान सकेंगे।

कॉन्फरन्स के आठवें अधिवेशन के प्रमुख

श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह (अहमदाबाद)

श्री वाडीलालभाई का जन्म स० अहमदाबाद में हुआ था। आपके पिता श्री मोतीलाल भाई को साहित्य का बहुत शौक था। वे 'जैन-समाचार' नामक एक मासिक पत्र भी निकालते थे। श्री वाडीलाल भाई ने इस पत्र द्वारा बीस वर्ष की वय में ही अपने विचार जनता के सामने रखना आरम्भ कर दिया था। प्रारम्भ में उन्होने जैन-कथाओ को अपने ढग से लिखना शुरू किया था जो इतनी रसप्रद होती थी कि पाठक उनके पढने के लिये उत्सुक रहा करते थे। उनकी भाषा-शैली हृदयस्पर्शी और चित्ताकर्षक थी।

आपके पिता के अवसान के बाद आपने उनकी साहित्य प्रवृत्तियाँ सँभाल ली और उन्हे पूर्ण योग्यता से सचालित करते रहे।

आपकी पहली पुस्तक 'मधु मक्षिका' बीस वर्ष की उम्र में लिखी गई थी। इसके बाद 'हितशिक्षा' राजर्षि नमीराज', ससार में सुख कहाँ है' ? 'कबीर के पद', सम्यक्त्व नो दरवाजो', 'श्री दशवैकालिक सूत्र रहस्य' महावीर कहेता हता', 'पर्युपासना', 'मृत्यु के मुख में', 'जैन दीक्षा ,'मस्तविलास','पोलिटिकल गीता' ग्रन्थ प्रकाशित हुए थे जिनमें कई पुस्तको की तो २५ हजार प्रतियाँ तक बिकी थी। जैन हितेच्छु, नामक मासिक पत्र आप लगातार ३० वर्ष तक निकालते रहे थे। यह पत्र प्राय सारा आप स्वय लिखते थे। इसमें ऐतिहासिक सामग्री के साथ-साथ जैन तत्वज्ञान का प्रधान निरूपण हुआ करता था। इस पत्र के अन्तिम दस वर्षो में इसके ५ हजार ग्राहक बन गये थे जिनमें हिन्दू, मुसलमान, पारसी आदि कौम के भी ग्राहक थे।

आप सिद्धहस्त निडर लेखक तथा वक्ता थे। एक लेख पर आपको सी० वी० गलियारा का एक हजार का इनाम भी प्राप्त हुआ था। आपका सारा साहित्य गुजराती भाषा में लिखा हुआ है। गुजराती भाषा के वे एक अजोड साहित्यकार थे।

'जैन समाचार' पत्र को मासिक के बजाय साप्ताहिक शुरू करके आपने समाज में नूतन रक्त-संचार किया। जैन समाचार में प्रकाशित समाचार पर आप पर विरोधी-पक्ष की तरफ से केस किया गया था, जिसमें आपको दो मास

करना आप जैसे सुयोग्य प्रमुख का ही काम था। यही कारण था कि यह अधिवेशन पिछले सभी अधिवेशनो से महत्व-पूर्ण रहा।

आपने अपनी ६३ वर्ष की जन्म-गाँठ पर ६३ हजार रु० का दान देकर एक ट्रस्ट कायम किया है।

आपके प्रमुख पद पर रहते हुए कांफ्रेंस ने भी कई उल्लेखनीय कार्य किये। संघ-एक्य योजना की शुरुआत और उसे सफलता के साथ आपने ही पूरी की।

कॉन्फरन्स के १२वें अधिवेशन के प्रमुख

सेठ चम्पालालजी वांठिया, भीनासर

सेठ श्री चम्पालाल जी बांठिया के नाम से समाज परिचित है। आप भीनासर (बीकानेर) के निवासी है। आपके पिताजी का नाम श्री हमीरमल जी बांठिया था। प्रकृति से विनोदशील, सुस्पष्टवक्ता, मिलनसार, निरभिमानी और उदार है। आपका उत्साह भी अपूर्व है। जिस किसी कार्य में जुटते है अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ जुट पडते है। समाज-सेवा का उत्साह भी प्रशसनीय है। रूढ़ियो की गुलामी आपने कभी पसन्द नहीं की और जब भी अवसर आया सदैव उन्हे ठुकराया।

शिक्षा के प्रति आपका गाढ़ अनुराग है। आप जैनेन्द्र गुरुकुल, पंचकूला, जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ और जैन गुरुकुल, व्यावर के वार्षिक उत्सवो की अध्यक्षता कर चुके है। भीनासर में स्थापित श्री जवाहर विद्यापीठ के मन्त्री तथा संचालक आप ही है। भीनासर में आपने अपने पिताजी के नाम पर श्री हमीरमल बालिका विद्यालय की स्थापना की जिसे आप अपने व्यय से चला रहे हैं। इसके सिवाय समाज की अन्य संस्थाओ को भी आपकी तरफ से समय-समय पर सहयोग मिलता रहता है।

व्यापारिक दृष्टिकोण भी आपका उल्लेखनीय है। जिस व्यापार से देश की कमी दूर कर उसको लाभ पहुँचाया जा सके वही व्यापार आप करना ठीक समझते है। कलकत्ता, दिल्ली, बम्बई और बीकानेर में आपके बडे-बडे [illegible] चल रहे है।

श्री बाठिया जी का साहित्य-प्रेम भी प्रशसनीय है। विद्वानो का आदर-सम्मान भी आप बहुत करते है। आपने स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी म० के व्याख्यान 'जवाहर किरणावली' के रूप से कई भाग में प्रकाशित किये है। अतः जैन समाज में यह साहित्य अनूठा है।

आप बीकानेर की लेजिस्लेटिव असेम्वली के एम० एल० ए० भी रह चुके है। एसेम्बली के मेम्बर रहते हुए आपने [illegible] दीक्षा प्रतिबन्ध बिल उपस्थित किया था, जिसके कारण रूढिवादियो में खलबली मच गई थी।

उदारता आपको अपने पिताजी से विरासत में मिली थी। आपके पिताजी ने लाखो रु० का गुप्त और प्रकट दान [illegible] था। आपने भी अपने जीवन में अनेक वार बड़ी-बड़ी रकमें दान की है और करते रहते है। एक प्रसग पर [illegible] ३५ हजार रु० का दान दिया।

आप कॉन्फ्रेंस के बारहवें अधिवेशन के जो कि सादड़ी (मारवाड़) में हुआ था, प्रमुख निर्वाचित किये गए थे। [illegible] प्रमुखपद पर कार्य कर रहे हैं। आपकी धर्मपत्नी श्री ताराबेन भी स्त्री-सुधार की प्रवृत्तियो में [illegible] लेती रहती है।

कान्फ्रेंस के प्रमुखपद पर रहकर आपने कई सामाजिक व धार्मिक प्रश्नो का दीर्घदृष्टिपूर्ण समाधान किया। जगह-जगह भ्रमण भी किया और अपनी सेवाएँ समाज को समर्पित की। कांफ्रेंस के इतिहास में आपका नाम श्रमशील प्रमुखो में रहेगा, जिन्होंने समाज के लिए काफी श्रम उठाया। अभी आप सर्विस से मुक्त है और बम्बई में अपना स्वतन्त्र व्यापार करते है।

१०वें अधिवेशन घाटकोपर के प्रमुख

श्री वीरचन्दभाई मेघजीभाई थोभण

श्री वीरचन्द भाई का जन्म कच्छ में हुआ था। आप सुप्रसिद्ध दानवीर सेठ मेघजी भाई के सुपुत्र थे। आपका प्रारम्भिक शिक्षण भी कच्छ मे ही हुआ। बम्बई आकर आप छोटी उम्र में ही व्यापार-क्षेत्र मे कूद पडे और अपने पिताश्री का सारा धन्धा सँभालने लगे। आपने अपनी कुशलता से व्यापार में अच्छा नाम कमाया।

आप गुप्त दान देना अधिक पसन्द करते थे। कई छात्रो को आप छात्रवृत्ति दिया करते थे। आपके पास से कोई भी निराश होकर नही जाता था। आपने बम्बई सघ को एक मुश्त ५१ हजार रुपये का दान दिया जिससे बम्बई सघ ने अपने कादावाडी स्थानक का नाम सेठ मेघजी थोभण जैन धर्म स्थानक, रखकर आपका सम्मान किया।

माडवी पाजरापोल को आपने २५ हजार का उदार दान दिया।

आपकी धर्मपत्नी श्री लक्ष्मीबेन और सुपुत्र श्री मणिभाई भी सामाजिक प्रवृत्तियो में अच्छा रस लेते हैं।

आप कान्फ्रेंस के घाटकोपर अधिवेशन के प्रमुख हुए और बडी कुशलता से अधिवेशन को सफल बनाया। १ वर्ष के बाद आपने प्रमुखपद छोड दिया जिससे ऑफिस-प्रमुख के रूप में श्रीमान् कुन्दनमलजी फिरौदिया को चुनना पडा। आपके बडे पुत्र श्री मणिलाल भाई है जो आपका कारोबार और सेवा-क्षेत्र को सँभाल रहे हैं जो कान्फ्रेस के आज भी ट्रस्टी हैं।

कॉन्फरन्स के ११वें अधिवेशन के प्रमुख

श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया, अहमदनगर

श्री फिरोदिया का जन्म अहमदनगर में हुआ। आपके पिताजी का नाम श्री शोभाचन्दजी था। आप सन् १६०७ में पूना की फर्ग्युसन कालिज से ग्रेजुएट हुए थे। कालेज के दिनो से ही आप लोकमान्य तिलक के अनुयायी थे और कट्टर राष्ट्रवादी थे। आगे चलकर आपने एल-एल० बी० परीक्षा पास की और वहीं अपने शहर में वकालत आरम्भ कर दी। अपने इस धन्धे में भी उन्होंने प्रामाणिकता से काम किया और काफी यश तथा धन कमाया। आप कांग्रेस के मूक सेवक है। अहमदनगर जिले में आपका सम्मान प्रथम पंक्ति के राष्ट्र-सेवक के रूप में है। सन् १६३६ में आप अपने प्रान्त की तरफ से एम० एल० ए० बनाये गए थे। इतना ही नहीं आप बम्बई धारा-सभा के स्पीकर भी निर्वाचित किये गए। इस पद पर आपने कई वर्षो तक जिस योग्यता से कार्य किया उसकी प्रशंसा हरएक पार्टी के नेताओ ने की है। स्पीकर का कार्य बहुत टेढ़ा होता है, लेकिन आपने उसे बडी योग्यता से सँभाला। अहमदनगर की सुप्रसिद्ध आयुर्वेद रसशाला, लि० के आप प्रमुख हैं। अहमदनगर की म्युनिस्पैलिटी के वर्षों तक आप प्रमुख रहे है। कान्फ्रेंस के आप वर्षो तक प्रमुख रहे है। मद्रास के ग्यारहवें अधिवेशन के प्रमुख भी आप ही निर्वाचित किये गए थे। यह अधिवेशन कान्फ्रेंस का अद्भुत अधिवेशन था जिसमें कई एक जटिल प्रश्नो उपस्थित हुए थे, जिनका निराकरण

की सादी कैद भी हुई थी। लेकिन आपने इस केस के लिये कोई वकील या बैरिस्टर नही किया था। जब आपको वकील करने के लिये कहा गया तो आपने उत्तर दिया कि किसी की सहायता से जीतना तो हारने से भी खराब है। जो मदद देना चाहे वे असहायो को और गायो को दें।

इन्होने अपने पत्रो के लिए कभी किसी से मदद न ली। अपने व्यय से ही आप अपनी सब प्रवृत्तियां चलाते रहे।

आप कोन्फ्रेन्स के बीकानेर अधिवेशन के प्रमुख निर्वाचित हुए थे और कोन्फ्रेन्स के इतिहास में भी क्राति की शुरुआत की थी। स्था० जैन समाज में जैन ट्रेनिग कालेज की स्थापना मे आपका भी महत्वपूर्ण भाग रहा था। साम्प्रदायिक भेद-भाव दूर करने के लिये भी आपने सक्रिय प्रयत्य किये। तीनो सम्प्रदायो के छात्र एक ही बोर्डिग में रह कर उच्चाभ्यास कर सके इसके लिये उन्होने बम्बई और अहमदाबाद में एक संयुक्त जैन छात्रालय की स्थापना की थी। बम्बई का सयुक्त विद्यार्थीगृह आज भी प्रिन्सेसस्ट्रीट पीरभाई बिल्डिग में और शीव में निजी भवन में चल रहा है। श्री वाडीभाई को समाज से काफी लोहा लेना पडा था। सामाजिक व धार्मिक रीति-रिवाजो पर भी उन्होने कलम चलाई थी जिससे समाज के हर क्षेत्र में तूफान-सा खडा हो गया था। इतना विलक्षण और तत्वज्ञ होते हुए भी समाज ने उन्हें कुछ समय ठीक रूप से नही पहचाना। उन्हे जो सम्मान मिलना चाहिये था, वह उन्हे न मिल सका। वे आजीवन अपने विचारो पर दृढ बने रहे और अपना मिशन पूरा करने रहे। ता० २१-११-३१ को आपका स्वर्गवास हो गया। आपका सम्पूर्ण साहित्य समाज के सामने प्रकाशित रूप में आ सका होता तो उससे समाज को वहुत लाभ पहुँचता।

कॉन्फरन्स के नवम अधिवेशन अजमेर के प्रमुख

श्री हेमचन्दभाई रामजीभाई मेहता (भावनगर)

दुनिया मे प्राय यह देखा जाता है कि जो व्यक्ति आगे जाकर बडा आदमी बनता है, प्रतिभाशाली व्यक्ति होता है, वह बचपन में अपने-आप ही अपनी प्रगति करता है। प्रतिकूल परिस्थिति में भी उसे अपने अनुकूल वातावरण बनाने मे रस आता है। इतना वह धैर्यशाली और विश्वासी होता है।

अपनी समाज में जो व्यक्ति अपने आत्म-बल से आगे वढे हैं उनमें से एक हेमचन्द भाई भी हैं। श्री हेमचन्द भाई का जन्म काठियावाड मे मोरवी में हुआ। आपके पिता श्री रामजी भाई मध्यस्थ स्थिति के गृहस्थ थे। आर्थिक स्थिति साधारण होने पर भी उन्होने अपने पुत्र को उच्च शिक्षा प्रदान कराई। उस समय और आज भी कई लोग यह कहते हैं कि अग्रेजी पढ़े-लिखे व्यक्ति धर्म-कर्म में विश्वास नही रखते है। उनकी यह वात श्री हेमचन्द भाई के जीवन से असत्य सिद्ध होती है। आप काठियावाड के ख्यातिप्राप्त इन्जीनियरो मे से एक हैं।

आप श्री दुर्लभजी भाई त्रिभुवन जौहरी के बाल-साथी है। दोनो ने स्था० समाज में अपनी सेवा देकर अपना नाम सदा के लिए अमर कर दिया।

आप भावनगर स्टेट की रेल्वे के इन्जीनियर और मैनेजर रह चके हैं। आपकी कार्य-कुशलता की प्रशसा सर पटणी, वायसराय, कच्छ के राव, भोपाल के नवाव और मोरवी के ठाकुर साहव ने भी की है। आप जब इंजीनियर के पद पर थे तब आप लोकप्रिय और राजमान्य व्यक्तियो में से थे।

प्रारम्भ में आपने १५० रु० मासिक पर ग्वालियर में सर्विस की थी, पर धीरे-धीरे उन्नति करते हुए आप भावनगर स्टेट के प्रमुख इन्जीनियर पद पर आरूढ हुए और १५०० रु० मासिक वेतन पाने लगे।

अजमेर साधु सम्मेलन के अवसर पर हुए कान्फ्रेंस के ऐतिहासिक अधिवेशन के आप अध्यक्ष मनोनीत हुए।

कान्फ्रेंस के प्रमुखपद पर रहकर आपने कई सामाजिक व धार्मिक प्रश्नो का दीर्घदृष्टिपूर्ण समाधान किया। जगह-जगह भ्रमण भी किया और अपनी सेवाएँ समाज को समर्पित कीं। कांफ्रेस के इतिहास में आपका नाम श्रमशील प्रमुखो में रहेगा, जिन्होने समाज के लिए काफी श्रम उठाया। अभी आप सर्विस से मुक्त है और बम्बई मे अपना स्वतन्त्र व्यापार करते है।

१०वें अधिवेशन घाटकोपर के प्रमुख

श्री वीरचन्दभाई मेघजीभाई थोभरण

श्री वीरचन्द भाई का जन्म कच्छ में हुआ था। आप सुप्रसिद्ध दानवीर सेठ मेघजी भाई के सुपुत्र थे। आपका प्रारम्भिक शिक्षण भी कच्छ मे ही हुआ। बम्बई आकर आप छोटी उम्र मे ही व्यापार-क्षेत्र में कूद पडे और अपने पिताश्री का सारा धन्धा सँभालने लगे। आपने अपनी कुशलता से व्यापार में अच्छा नाम कमाया।

आप गुप्त दान देना अधिक पसन्द करते थे। कई छात्रो को आप छात्रवृत्ति दिया करते थे। आपके पास से कोई भी निराश होकर नही जाता था। आपने बम्बई सघ को एक मुश्त ५१ हजार रुपये का दान दिया जिससे बम्बई सघ ने अपने कादावाडी स्थानक का नाम सेठ मेघजी थोभरण जैन धर्म स्थानक, रखकर आपका सम्मान किया।

माडवी पाजरापोल को आपने २५ हजार का उदार दान दिया।

आपकी धर्मपत्नी श्री लक्ष्मीबेन और सुपुत्र श्री मणिभाई भी सामाजिक प्रवृत्तियो में अच्छा रस लेते हैं।

आप कान्फ्रेंस के घाटकोपर अधिवेशन के प्रमुख हुए और बडी कुशलता से अधिवेशन को सफल बनाया। १ वर्ष के बाद आपने प्रमुखपद छोड दिया जिससे ऑफिस-प्रमुख के रूप में श्रीमान् कुन्दनमलजी फिरौदिया को चुनना पडा। आपके बडे पुत्र श्री मणिलाल भाई है जो आपका कारोबार और सेवा-क्षेत्र को सँभाल रहे हैं जो कान्फ्रेंस के आज भी ट्रस्टी हैं।

कॉन्फरन्स के ११वें अधिवेशन के प्रमुख

श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया, अहमदनगर

श्री फिरोदिया का जन्म अहमदनगर में हुआ। आपके पिताजी का नाम श्री शोभाचन्दजी था। आप सन् १६०७ में पूना की फर्ग्युसन कालिज से ग्रेजुएट हुए थे। कालेज के दिनो से ही आप लोकमान्य तिलक के अनुयायी थे और कट्टर राष्ट्रवादी थे। आगे चलकर आपने एल-एल० बी० परीक्षा पास की और वहीं अपने शहर में वकालत प्रारम्भ कर दी। अपने इस धन्धे में भी उन्होने प्रामाणिकता से काम किया और काफी यश तथा धन कमाया। आप काग्रेस के मूक सेवक है। अहमदनगर जिले में आपका सम्मान प्रथम पक्ति के राष्ट्र-सेवक के रूप में है। सन् १९३६ में आप अपने प्रान्त की तरफ से एम० एल० ए० बनाये गए थे। इतना ही नहीं आप बम्बई धारा-सभा के स्पीकर भी निर्वाचित किये गए। इस पद पर आपने कई वर्षो तक जिस योग्यता से कार्य किया उसकी प्रशसा हरएक पार्टी के नेताओ ने की है। स्पीकर का कार्य बहुत टेढ़ा होता है, लेकिन आपने उसे बडी योग्यता से सँभाला। अहमदनगर की सुप्रसिद्ध आयुर्वेद रसशाला, लि० के आप प्रमुख है। अहमदनगर की म्युनिस्पैलिटी के वर्षो तक आप प्रमुख रहे है। कान्फ्रेंस के आप वर्षो तक प्रमुख रहे है। मद्रास के ग्यारहवें अधिवेशन के प्रमुख भी आप ही निर्वाचित किये गए थे। यह अधिवेशन कांफ्रेंस का अद्भुत अधिवेशन था जिसमें कई एक जटिल प्रश्नो उपस्थित हुए थे, जिनका निराकरण

करना आप जैसे सुयोग्य प्रमुख का ही काम था। यही कारण था कि यह अधिवेशन पिछले सभी अधिवेशनो से महत्व-पूर्ण रहा।

आपने अपनी ६३ वर्ष की जन्म-गाँठ पर ६३ हजार रु० का दान देकर एक ट्रस्ट कायम किया है।

आपके प्रमुख पद पर रहते हुए कान्फ्रेंस ने भी कई उल्लेखनीय कार्य किये। संघ-एक्य योजना की शुरुआत और उसे सफलता के साथ आपने ही पूरी की।

कॉन्फरन्स के १२वें अधिवेशन के प्रमुख

सेठ चम्पालालजी बांठिया, भीनासर

सेठ श्री चम्पालाल जी बाठिया के नाम से समाज परिचित है। आप भीनासर (बीकानेर) के निवासी है। आपके पिताजी का नाम श्री हमीरमल जी बाठिया था। प्रकृति से विनोदशील, सुस्पष्टवक्ता, मिलनसार, निरभिमानी और उदार है। आपका उत्साह भी अपूर्व है। जिस किसी कार्य में जुटते हैं अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ जुट पडते है। समाज-सेवा का उत्साह भी प्रशसनीय है। रूढ़ियो की गुलामी आपने कभी पसन्द नहीं की और जब भी अवसर आया सदैव उन्हे ठुकराया।

शिक्षा के प्रति आपका गाढ अनुराग है। आप जैनेन्द्र गुरुकुल, पंचकूला, जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ और जैन गुरुकुल, ब्यावर के वार्षिक उत्सवो की अध्यक्षता कर चुके है। भीनासर में स्थापित श्री जवाहर विद्यापीठ के मन्त्री तथा संचालक आप ही है। भीनासर में आपने अपने पिताजी के नाम पर श्री हमीरमल बालिका विद्यालय की स्थापना की जिसे आप अपने व्यय से चला रहे है। इसके सिवाय समाज की अन्य संस्थाओ को भी आपकी तरफ से समय-समय पर सहयोग मिलता रहता है।

व्यापारिक दृष्टिकोण भी आपका उल्लेखनीय है। जिस व्यापार से देश की कमी दूर कर उसको लाभ पहुँचाया जा सके वही व्यापार आप करना ठीक समझते है। कलकत्ता, दिल्ली, बम्बई और बीकानेर में आपके बडे-बडे फार्म चल रहे हैं।

श्री बाठिया जी का साहित्य-प्रेम भी प्रशंसनीय है। विद्वानो का आदर-सम्मान भी आप बहुत करते है। आपने स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी म० के व्याख्यान 'जवाहर किरणावली' के रूप में कई भाग में प्रकाशित किये है। स्था० जैन समाज में यह साहित्य अनूठा है।

आप बीकानेर की लेजिस्लेटिव असेम्बली के एम० एल० ए० भी रह चुके है। एसेम्बली के मेम्बर रहते हुए आपने बाल दीक्षा प्रतिबन्ध बिल उपस्थित किया था, जिसके कारण रूढिवादियो में खलबली मच गई थी।

उदारता आपको अपने पिताजी से विरासत में मिली थी। आपके पिताजी ने लाखो रु० का गुप्त और प्रकट दान दिया था। आपने भी अपने जीवन में अनेक बार बड़ी-बड़ी रकमें दान की है और करते रहते है। एक प्रसग पर आपने एक मुश्त ७५ हजार रु० का दान दिया।

आप कान्फ्रेंस के बारहवें अधिवेशन के जो कि सादडी (मारवाड़) में हुआ था, प्रमुख निर्वाचित किये गए थे। तब से आप कांफ्रेंस के प्रमुखपद पर कार्य कर रहे हैं। आपकी धर्मपत्नी श्री ताराबेन भी स्त्री-सुधार की प्रवृत्तियो में बड़े उत्साह से भाग लेती रहती हैं।

१३वें अधिवेशन, भीनासर के अध्यक्ष

श्री विनयचन्द्रभाई दुर्लभजी भाई जौहरी, जयपुर

धर्मवीर स्व० दुर्लभजी भाई के पाँच पुत्रो में से—श्री विनयचन्द्र भाई, श्री गिरधरलाल भाई, श्री ईश्वरलाल भाई, श्री शान्तिलालभाई और श्री खेलशकर भाई—आप सबसे बडे पुत्र है। आपका जन्म सन् १६०० में हुआ। मैट्रिक तक शिक्षा ग्रहण कर आपने व्यावसायिक कार्य सँभाल लिया। आप प्रतिदिन १२ घण्टे तक काम करने वाले और बारीकी से जाँच करने वाले है। आप अब तक १०-१२ बार व्यापारिक कार्यो को लेकर अमेरिका और योरुप घूमकर आये है। आपने अपने हाथो से लाखो रुपये कमाये तथा खर्च किये है और समय-समय पर हजारो का दान किया है। आज इस समय भी आपकी कार्यशक्ति और प्रतिभा अद्भुत है।

स्व० धर्मवीर श्री दुर्लभजी भाई ने व्यवसाय तथा इतर समस्त कार्यो का दायित्व आपको देकर स्थानकवासी जैन समाज को अपना जीवन सेवा के लिए समर्पित कर दिया था। सन् १६४२ से श्री विनयचन्द्रभाई तथा श्री खेलशंकर भाई ने 'आर० वी० दुर्लभजी' के नाम से जवाहरात का व्यापार विकसित किया। अपनी व्यवस्था, कार्य-कुशलता, सच्चाई, प्रामाणिकता और कार्य-शक्ति से आज जयपुर में अपना सर्वप्रथम स्थान बना लिया है।

अपने पिताश्री के स्वर्गवास के पश्चात् सार्वजनिक जीवन का भार भी आपको वहन करना पड़ा। श्री जैन गुरुकुल शिक्षण सघ, ब्यावर के प्रमुख और ट्रस्टी बने, कान्फ्रेस की प्राय. प्रत्येक जनरल कमेटी और अधिवेशनो में आप उपस्थित रहे और प्रमुख कार्यकर्ता के रूप में काम किया। जयपुर के श्री सुबोध जैन हाईस्कूल को आपने कालिज बनवाया। जयपुर के रोटरी क्लब और चेम्बर ऑफ कामर्स के आप अध्यक्ष है।

इसके साथ ही जयपुर की गुजराती समाज के प्रमुख बनने के पश्चात् गुजराती स्कूल के लिए ५,००० गज जमीन की व्यवस्था कराई तथा भारत के गृहमन्त्र सरदार वल्लभभाई पटेल के हाथो से शिलान्यास कराकर उसके लिए मकान बनवा दिया तथा हजारो का फड भी एकत्रित कर दिया।

आप व्यापारिक जगत् में प्रतिष्ठित व्यापारी और सामाजिक क्षेत्र मे प्रमुखतम कार्यकर्ता है। राजकीय क्षेत्र में आपकी सर्वत्र पहुँच है। धर्म के प्रेमी, उदार दानी और सन्त-मुनियो के भक्त श्री विनयचन्द्रभाई सत्यतः स्थानकवासी समाज के गौरव है। आपकी सादगी, सरलता, परोपकारी उदारवृत्ति और गुप्त सहायता आपके अप्रतिम गुण हैं। आपके एक पुत्र तथा दो कन्यायें हैं।

श्री अखिल भारतीय श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेंस के भवन की प्रगतिशील योजना का मगल-मुहूर्त श्री विनयचन्द्र भाई और श्री खेलाशकरभाई ने ५१,०००) भर कर किया। यह है आपका उदार दिल और समाज की प्रगति के लिए ज्वलत दृष्टात।

समाज के बालको को आप ऊँची शिक्षा में जाते हुए देखना चाहते हैं। यही कारण है कि समाज के कॉलेज का शिक्षण लेने वाले छात्रो को कान्फ्रेंस के मार्फत आप अपनी तरफ से प्रतिवर्ष ३,०००) की छात्रवृत्तियाँ देते है। श्री नरेन्द्र बालमदिर की जयपुर में स्थापना कर बच्चो के लिए शिक्षण की व्यवस्था की है।

लक्ष्मी-सम्पन्न होकर भी आप विचार-सम्पन्न हैं और यही कारण है कि आप द्वारा अर्जित लक्ष्मी का समाजहित में अधिकाधिक उपयोग हो रहा है। शासनदेव आपके जीवन को और आप के परिवार को और अधिक सुसमृद्ध बनावे ताकि आपकी समृद्धि से समाज एव देश और और अधिक समृद्ध और लाभान्वित हो।

कॉन्फरन्स अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष

कॉन्फरन्स के दूसरे अधिवेशन, रतलाम के स्वागताध्यक्ष

श्री अमरचन्दजी सा० पितलिया, रतलाम

आपका जन्म सं० १९०० में हुआ। आपके पिताजी का नाम सेठ वरदीचन्दजी था जो 'ताल वाले' के नाम से प्रसिद्ध थे। तत्कालीन प्रचलित शिक्षा प्राप्त करके आपने व्यवसाय का कार्य सँभाल लिया। विचक्षणतापूर्वक व्यवसाय करते हुए आपने सम्पत्ति के साथ-साथ प्रतिष्ठा भी अर्जित की। जाति-समाज मे तथा सुदूर तक आपका वडा सम्मान था। रतलाम-नरेश ने प्रसन्न होकर आपको सेठ की पदवी दी एवं दरवार में वैठक प्रदान की थी। इसके अतिरिक्त दरवार की तरफ से हाथी-घोड़े तथा पालकी प्रदान कर आपके प्रति राज्य की तरफ से सम्मान प्रकट किया। ऐसा सम्मान रियासतो में बहुत कम व्यक्तियो को मिलता है। आपका धार्मिक ज्ञान बहुत विशाल था। वाहर गाँव से धार्मिक-सैद्धान्तिक प्रश्न आपके पास आया करते थे। इनके उत्तर प्रश्नकर्ताओ को इस खूबी से मिलते कि वे संतुष्ट ही नहीं किन्तु आपकी इस अलौकिक प्रतिभा से आश्चर्य-चकित हो जाते थे। आपकी उत्पादिका बुद्धि वड़ी ही तीव्र थी। सुप्रसिद्ध आचार्यों की सेवा करने एव उनसे ज्ञान-चर्चा करने में आपको बड़ा ही आनन्द मिलता था।

आपने रतलाम में धार्मिक पाठशाला एवं दयापौषध सभा की स्थापना की—जो अव तक चल रही है। आप जव मोरवी कान्फ्रेस मे पधारे तव राजकोट के प्रसिद्ध राय वहादुर सा० आपके अनुभवो को देखकर दग रह गये और आपको 'गुरुजी' के रूप में सम्वोधित करने लगे। आपकी मालवा-मेवाड़ के सुप्रसिद्ध श्रावको में गणना होती थी। जीवन के पिछले भाग मे मकान-दुकान का काम अपने पुत्र के हाथो में देकर अपना अमूल्य समय धर्मध्यान तथा ज्ञान-चर्चा में लगाते और अपने कुटम्वियो को हित-शिक्षा देते थे। सं० १९७१ में आपका स्वर्गवास हुआ, किन्तु आज भी आपकी कीर्ति लोगो के हृदयो पर अकित है।

श्री वरदभाणजी सा० पितलिया, रतलाम

आपका जन्म सं० १९३७ में हुआ। आप श्रीमान् सेठ अमरचन्दजी सा० के सुपुत्र थे। आप वडे ही कार्य-कुशल सेवाभावी एवं परिश्रमी थे। आपने कई सस्थाओ के अध्यक्ष एवं मत्री रहकर उनका सुयोग्यतापूर्वक सफल सचालन किया। आप ही के भगीरथ प्रयत्नो के फलस्वरूप कान्फ्रेस का द्वितीय अधिवेशन रतलाम में हुआ और यशस्वी वना। यो आप मितव्ययी थे किन्तु सं० १९६३ एव १९७१ का पूज्य श्री श्रीलालजी म० सा० का चातुर्मास, पूज्य श्री जवाहरलालजी म० सा० की युवाचार्य पदवी और सं० १९७६ एव १९९२ के चातुर्मास में आपने दिल खोलकर खर्च किया। राज्य में भी आपकी वहुत अधिक प्रतिष्ठा थी। रतलाम नरेश आपको समय समय पर बुलाते और कई वातो में आपसे सलाह लिया करते थे।

यो आपका घराना सदा से ही लब्धप्रतिष्ठ रहा है। आपने अपने समयोचित एव सुयोजित कार्यों से अपनी परम्परा को और अधिक उज्ज्वल वनाया। आपका धार्मिक ज्ञान एवं क्रिया की रुचि अत्यन्त प्रशसनीय थी। जैन ट्रेनिंग कालेज के मानद् मत्री और जैन हितेच्छु श्रावक मडल के आप अध्यक्ष थे। धार्मिक भावनाओ तथा धार्मिक प्रवृत्तियो के आप चुस्त आराधक थे। ससार के आवश्यक कार्यो को छोडकर समय-समय पर धार्मिक क्रियाएँ आप वरावर करते रहते थे। आपको १०० थोकडे और कई वोलो का ज्ञान कंठस्थ था। जैन सिद्धान्तो के चिन्तन, मनन तथा वाचन में आप लगे रहते थे।

पिछली आयु में अनेक प्रकार की आपत्ति-विपत्ति आने पर भी आपने अपनी धीरता की वृत्ति का त्याग नही किया। झूठ से आपको घृणा थी। इस प्रकार इस धर्म-परायण, व्यवसाय-कुशल, सुश्रावक एवं आराधक का स० १९९९ में स्वर्गवास हुआ।

पाँचवें अधिवेशन, सिकन्द्राबाद के स्वागताध्यक्ष

राजा बहादुर सुखदेव सहायजी, जौहरी हैदराबाद का परिचय

पटियाला राज्य में महेन्द्रगढ नामक एक नगर है। जहाँ सेठ नेतराम जी जैन अग्रवाल नामक सद्गृहस्थ रहते थे। आप स्थानकवासी पूज्य श्री मनोहरदासजी म० की सम्प्रदाय के अग्रगण्य सुश्रावक थे। सवत् १८८८ पौषकृष्णा ९ को आपके एक पुत्ररत्न हुआ, जिसका नाम रामनारायणजी रखा गया। रामनारायणजी योग्य वय मे व्यापारार्थ हैदराबाद (दक्षिण) गये और वहाँ अपनी चतुरता से लाखो रुपयो का उपार्जन किया। हैदराबाद के धनीमानी व्यापारियो में आप अग्रगण्य माने जाते थे। आपको निजाम सरकार ने अपना मुख्य जौहरी नियुक्त किया। आपके कोई सन्तान न थी अत. आपने सुखदेवसहायजी को दत्तक ग्रहण किया। श्री सुखदेवसहायजी का जन्म सवत् १९२० पौषकृष्णा १५ को हुआ था। आप भी अपने पिता की तरह बड़े उदार हृदय वाले थे। निजाम सरकार के यहाँ आपने पिताजी से भी अधिक आदर प्राप्त किया। स० १९७० में निजाम सरकार ने आपको राजा बहादुर की उपाधि से समलकृत किया। आप बडे ही दयालु एव शान्त प्रकृति के सज्जन थे। कितने ही भाइयो की दयनीय दशा को देखकर आपने हजारो रुपयो का ऋण माफ कर दिया था।

इन्ही दानवीर सेठ सुखदेवसहायजी के घर श्रावण कृष्णा १ सवत् १९५० को एक पुत्ररत्न उत्पन्न हुआ जिसका नाम ज्वालाप्रसादजी रखा। जब आपको लेकर सेठ सुखदेवसहायजी निजाम सरकार के दरबार में गये तो नवाब साहिब ने प्रसन्न होकर जेब-खर्च के लिये १०० रु० मासिक राज्य कोष से देने का फरमान जारी किया था।

स० १९६३ में ऋषि-सम्प्रदाय के तपस्वी मुनि श्री केवल ऋषिजी तथा अमोलक ऋषिजी म० यहाँ (हैदराबाद) पधारे। सेठ सुखदेवसहायजी ने मुनि श्री की सेवा मे अच्छी दिलचस्पी ली। आपने कई पुस्तकें अपनी तरफ से प्रकाशित कराई और अमूल्य वितरण की। इस समय हैदराबाद में तीन दीक्षाएँ हुई, जिसका सारा व्यय भी आपने ही उठाया।

सवत् १९७० मे आपने ही स्था० जैन कान्फ्रेंस का पाँचवा अधिवेशन सिकन्दराबाद में कराया था, जिसका समस्त खर्च सेठ सुखदेवसहायजी ने दिया। उस समय आपने ७ हजार रुपये जीवदयाफड में प्रदान किये थे। साथ ही धार्मिक साहित्य प्रकाशन के लिये ५००० की लागत का एक प्रेस भी कान्फ्रेस को दिया था, जो सुखदेवसहाय जैन प्रिंटिंग प्रेस के नाम से अजमेर में और बाद में इन्दौर भी चलता रहा था।

पूज्य अमोलक ऋषिजी म० की प्रेरणा से आपने शास्त्रोद्धार का भी महान् कार्य किया। लेकिन आप अपने जीवन में इस कार्य को पूर्ण हुआ नही देख सके। सवत् १९७४ में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके बाद सारा भार ज्वालाप्रसादजी पर आ पडा, जिसे आपने बखूबी निभाया। अपने स्व० पिताजी का प्रारम्भ किया हुआ शास्त्रोद्धार का कार्य चालू रखा और पूज्य अमोलक ऋषिजी द्वारा हिन्दी अनुवाद किये हुए आचाराग आदि ३२ सूत्र 'लाला जैन शास्त्र-भडार' के नाम से स्थान-स्थान पर अमूल्य वितरण किये, फलस्वरूप आज गाँव-गाँव में शास्त्रभडार है। शास्त्रोद्धार के कार्य में ४२००० रु० व्यय हुए थे।

सेठ ज्वालाप्रसादजी भी अपने पिताश्री की तरह बड़े उदार-हृदयी सज्जन थे। कितने ही असहाय गरीब मनुष्यो का आपकी तरफ से पालन-पोषण होता था।

जिनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला के विशाल भवन की नीव संवत् १९८५ माघ शुक्ला १३ के दिन आपही के कर-कमलो से डाली गई। उस समय आपने गुरुकुल के स्थायी फंड में १,१०० रुपये प्रदान किये थे। बाद में ७ हजार रुपयो की लागत से अपने पूज्य पिताजी के स्मृति में 'साहित्य भवन और सामाजिक भवन' का दो मजिला भव्य भवन बनाकर गुरुकुल को भेंट किया था। इसके बाद गुरुकुल को ६०० रु० की जमीन और खरीद कर दी और वहाँ अध्यापको के लिए मकान बनवाने के लिये २,५०० रु० का दान दिया था। गुरुकुल का यह स्थान आपको इतना अधिक पसंद आया कि आपने यहाँ ११०० रु० में जमीन खरीदकर अपने लिये एक कोठी बनवाई। आपकी इन आदर्श सेवाओ से प्रसन्न होकर जैनेन्द्र गुरुकुल, पंचकूला के चतुर्थ वार्षिकोत्सव पर उपस्थित जैन समाज ने आपको 'जैन समाज भूषण' की उपाधि से विभूषित किया था।

सं० १९८८ में फाल्गुन कृष्णा ५ को महेन्द्रगढ में पूज्य श्री मनोहरदासजी म० की सम्प्रदाय के शान्तस्वभावी वयो० मुनि श्री मोतीलालजी म० को श्रीसंघ की ओर से आचार्य पदवी दी गई थी। इस महोत्सव का सारा खर्च आपने ही उठाया था।

सं० १९९९ ज्येष्ठ सुदी १२ को इन्दौर में ऋषि सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध शास्त्रोद्धारक पं० मुनि श्री अमोलक ऋषिजी म० को श्री संघ की तरफ से जो पूज्य पदवी दी गई थी उसमें भी आपका उल्लेखनीय भाग रहा। ऋषि श्रावक समिति की स्थापना के समय आप उसके संरक्षक और प्रमुख निर्वाचित हुए। इसी समय जैन गुरुकुल, व्यावर के निजी भवन के लिये अपील की जाने पर आपने गुरुकुल को २५०१ रु० की सहायता प्रदान की। आप कान्फ्रेंस के नववें अधिवेशन के जो कि अजमेर मे साधु सम्मेलन के साथ सम्पन्न हुआ था, स्वागताध्यक्ष निर्वाचित हुए थे।

आप उदारता के पूरे धनी थे। आपकी तरफ से तीन लाख रुपये से अधिक का दान हुआ। आप अगर धन-राशि के स्वामी होते हुए भी अतीव नम्र, विनयी एवं शान्त प्रकृति के हैं। आपके दो पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं। बडे पुत्र का नाम माणिकचन्द और छोटे का नाम महावीरप्रसाद है। आप भी अपने पिता की तरह ही धर्म प्रेमी और उदार स्वभाव वाले हैं।

आपका व्यवसाय हैदराबाद (दक्षिण) में बैंकर्स का और कलकत्ता (लिलुआ में आर० बी० एस० जैन रब्बर मिल्स के नाम से चल रहा है।) आपका स्वर्गवास दिल्ली में हुआ। आपकी धर्म पत्नी जी बहुत धर्मनिष्ठा और उदार हैं। आपके बड़े पुत्र माणिकचन्दजी का स्वर्गवास हो गया है और वर्तमान मे राजा महावीर प्रसादजी कलकत्ता में रहकर सब कारोबार सँभाल रहे हैं।

श्री श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स के ९वें अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष

सेठ ज्वालाप्रसादजी जौहरी

आप राजा बहादुर दानवीर सेठ सुखदेवसहाय जी के सुपुत्र थे। आपका जन्म श्रावण कृष्ण १ सं० १९५० में हुआ था। आपके पिताजी ने शास्त्रोद्धार का कार्य प्रारम्भ किया था, लेकिन दुर्भाग्य से वे अपने सामने उसे पूरा हुआ न देख सके। उस कार्य को आपने पूरा किया। बत्तीस सूत्रो को पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी म० कृत हिन्दी अनुवाद सहित छपाकर आपने स्थान-स्थान पर अमूल्य वितरण किया। इस शास्त्रोद्धार के कार्यों में आपने ४२००० रु० खर्च किये।

आपका हृदय बड़ा कोमल और उदार था। दीन-असहायो का दुख आप देख नहीं सकते थे। प्रतिवर्ष सर्दी में आप गरीबो को कम्बल बाँटा करते थे। आपकी जन्मभूमि महेन्द्रगढ में आपने दानशाला (सदाव्रत) भी खोल रखी थी।

जैनेन्द्र गुरुकुल, पचकूला आपके सहयोग से ही फूला-फला। आपने उसके लिये जमीन दी और मकान भी वनवा दिये। वाद में भी समय-समय पर सहयोग देते रहे। सामाजिक सेवाओ के उपलक्ष में आपको समाज ने 'समाज भूषण' की पदवी प्रदान की थी।

कान्फ्रेंस के अजमेर अधिवेशन के आप स्वागताध्यक्ष थे। आपने अपने जीवन में लगभग ४ लाख रुपयो का दान किया।

आपने आर० बी० एस० रवर मिल्स की भी स्थापना की जिसमें रवर का सामान, टायर आदि वनते हैं और इस मिल में लगभग ६०० आदमी काम करते हैं। अन्तिम समय में आपने १० हजार का दान दिया था। सन् ३६ में आपका स्वर्गवास महेन्द्रगढ में ही हुआ।

बीकानेर अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष

श्री मिलापचन्दजी वैद, झाँसी

आपका जन्म स० १८५३ के वैशाख मास में हुआ। आप झाँसी के प्रतिष्ठित सेठ श्रीमान् गुलाबचन्दजी वैद मेहता के इकलौते पुत्र हैं। लगभग ६० वर्षो से आप झाँसी में रह रहे हैं। इससे पूर्व आपके पूर्वज बीकानेर में रहते थे। बीकानेर राज्य-शासन से आप के वैद परिवार का घनिष्ठ सम्पर्क रहा है। बीकानेर की ओसवाल समाज में वैद परिवार को जो राजसी मान-सन्मान प्राप्त हुआ है। वह दूसरो को नही मिला। आपके वंशज—लालसिहजी, अमरोजी, ठाकुरसिहजी, मूलचन्दजी, अमीचन्दजी, हरिसिंहजी, जसवन्तसिहजी और छोगमल जी विशेष उल्लेखनीय हैं, इनमें से कई तो बीकानेर राज्य के दीवान रहे हैं और बीकानेर राज्य की उन्नति में उनका विशेष हाथ रहा है।

आपके पिता श्री गुलाबचन्दजी वैद बीकानेर से झाँसी में गोद आये थे। तव से आप वही वस गये हैं।

आप झाँसी के प्रथम श्रेणी के जमीदारो में से हैं। युद्ध के समय में आपने सरकार की वडी मदद की थी। आप झाँसी के म्युनिसिपल कमिश्नर भी रहे। आनरेरी मजिस्ट्रेट के सम्मानित पद पर भी रहे।

स्था० जैन कान्फ्रेंस के आठवें अधिवेशन के जो कि बीकानेर में हुआ था, उसके आप स्वागताध्यक्ष निर्वाचित हुए थे।

घाटकोपर अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष

सेठ धनजीभाई देवसी, घाटकोपर

श्री धनजी भाई का जन्म सन् १८८६ में कच्छ-मुंद्रा में हुआ। आप वीसा ओसवाल थे। आपकी शिक्षा वम्बई में हुई थी और वही आपने हाईस्कूल तक अभ्यास किया। सन् १९०६ में आप रगून गये और वहाँ चावल का व्यापार किया। उसमें आपने अपनी योग्यता से अच्छी सफलता प्राप्त की।

रगून से आप वापिस वम्वई आये और अनाज, रुई, शेमर, सोना, चाँदी आदि वाजारो में वडे पैमाने पर व्यापार आरम्भ किया। कुछ ही अर्से में आप वम्वई में 'जव्वर शाह सौदागर' के रूप में प्रसिद्ध हो गये। सींगदाणा (मूगफली) वाजार के तो आप 'राजा' कहे जाते थे। व्यापारी-मडल के आप प्रमुख थे। शक्ति सिल्क मिल तथा ऐस्ट्रेला वेटरीज लिमिटेड के आप डायरेक्टर थे। स्था० जैन संघ के आप प्रमुख तथा ट्रस्टी थे।

श्री धनजी भाई सामाजिक व धार्मिक कार्यो में भी वडी उदारता से भाग लेते थे। घाटकोपर राष्ट्रीयशाला को उन्होने ५१,००० रुपये प्रदान किये थे। स्थानक जैन पौषधशाला के लिए १५ हजार की कीमत की जमीन,

श्रावकाश्रम के लिए १६ हजार रु० नकद तथा ४ हजार रु० की जमीन दान मे दी थी। कान्फ्रेस के घाटकोपर अधिवेशन के आप स्वागत-प्रमुख थे। पूना वोर्डिंग फंड में आपने ५ हजार रु० प्रदान किये थे। कई छात्रो को आप छात्रवृत्तियां भी देते रहते थे।

आप स्वभाव से वडे शान्त और मिलनसार थे। रहन-सहन सादा था। तारीख १७-२-४४ को ५८ वर्ष की उम्र मे आप अपने पीछे एक धर्मपत्नी ६ पुत्र व दो लडकियाँ छोडकर स्वर्गवासी हुए।

कॉन्फरन्स अधिवेशन, मद्रास के स्वागताध्यक्ष

सेठ मोहनमलजी चौरडिया, मद्रास

श्रीमान् सेठ मोहनमलजी चौरडिया का जन्म नोखा (मारवाड़) में सं० १९५९ भाद्रपद वदी ८ को हुआ था। आपके पिताजी का नाम श्री सिरेमल जी चौरडिया था। आप श्री सोहनमलजी चौरडिया, मद्रास, के गोद गये श्री अगरचन्द मानमल मद्रास की प्रसिद्ध फर्म है जिसके आप मालिक है। आपके दादा श्री अगरचन्द जी सवत् १८४७ में पैदल चलकर मारवाड़ से मद्रास आये थे। आपसे पूर्व तीन पीढ़ी में इस फर्म का मालिक दत्तक पुत्र ही हुआ। आपके आने पर इस फर्म की उन्नति भी हुई और प्रतिष्ठा में भी वृद्धि हुई। आपके ५ पुत्र और २ पुत्रियाँ अभी वर्तमान है। आपका स्वभाव बड़ा सरल है। मृदुता, सज्जनता और मिलनसारिता आपके मुख्य गुण है। एक सम्पन्न परिवार में रहते हुए भी आप वडे सीधे-सादे और सरल व्यक्तित्व वाले है। आपने अपने हाथो से लाखो रुपये कमाये और लाखो का दान दिया है। सन् १९४० में जब मारवाड़ में दुष्काल था, तब आपने अपनी तरफ से २० हजार रुपये खर्च कर लोगो को बिना मौत मरने से बचाया था और उन्हे खाने को अनाज दिया था। आपकी इस दानवृत्ति से खुश होकर उस समय महाराजा जोधपुर ने आपको पालकी और सरपाव भेंट स्वरूप प्रदान किये थे। आपकी तरफ से विक्रम स० १९४८ से कुचेरा में दानशाला चल रही है। सामाजिक कुरीतियो को दूर करने के आप बडे हिमायती रहे हैं। आपने सेठ श्री सोहनमल जी का मौसर न कर २० हजार रुपये का दान दिया और कुचेरा में एक डिस्पेंसरी की स्थापना की।

सन् १९४४ में आपने अगरचन्द मानमल बैंक की शुरूआत की, जो आज मद्रास में एक प्रतिष्ठित बैंक मानी जाती है। आपने स्थानीय बोर्डिंग स्कूल, हाईस्कूल, कालेज आदि सामाजिक प्रवृत्तियो में लगभग ५ लाख रुपये का दान दिया है। सन् १९४७ में आपने अगरचन्द मानमल चॅरिटी ट्रस्ट के नाम से ५० हजार का एक ट्रस्ट भी किया है।

मद्रास सघ के आप सघपति है। संतो की सेवा आप तहदिल से करते है। धर्म के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा है। कान्फ्रेंस के ११वे अधिवेशन के आप स्वागत-प्रमुख बने थे। मद्रास प्रान्त में आपके सात-आठ गाँव जमीदारी के हैं। मद्रास ओसवाल समाज में 'बड़ी दुकान' के नाम से आपकी फर्म प्रसिद्ध है। कई धार्मिक तथा सामाजिक सस्थाओं के आप सहायदाता है।

श्री दानमलजी बलदोटा, सादड़ी

आप सादड़ी (मारवाड) के निवासी और पूना के प्रसिद्ध व्यवसायी हैं। सादड़ी अधिवेशन के आपही स्वागताध्यक्ष थे। आपके दोनो भाई—श्रीफूटरमलजी बलदोटा और श्री हस्तीमलजी बलदोटा व्यवसाय में सम्मिलित रूप से पूना की तीनो दुकानें सभाल रहे हैं। आप तीनो भाइयो की तरफ से साधु-सम्मेलन और अधिवेशन के लिये १५, १११) का आदर्श दान दिया गया था। इसके अतिरिक्त आपके बडे भाई श्रीमान् नथमलजी राजमलजी बलदोटा ने श्री लोकाशाह जैन गुरुकुल सादड़ी को ३१ हजार रुपये प्रदान किये थे।

श्री दानमलजी सा० और आपका बलदोटा-परिवार समाज के लिये एक आदर्श परिवार है जो कमाना भी जानता है और लक्ष्मी का वास्तविक उपयोग करना भी जानता है। समाज अपने इस उत्साही परिवार के प्रति हर्ष एव गौरव प्रकट करता है।

श्री जयचन्दलालजी रामपुरिया, स्वागताध्यक्ष

बीकानेर के प्रसिद्ध रामपुरिया परिवार के श्रीमान् सेठ जयचन्दलालजी रामपुरिया राष्ट्र उत्थान के कार्य में सक्रिय रुचि रखने वाले नवयुवक हैं। अपने बहुविस्तृत कल-कारखानो और वाणिज्य-व्यवसाय का कार्यभार सम्भालते हुए भी आप जनहितकारी विभिन्न कार्यो में समय और धन लगाते हैं। हाल ही में आपने अपने पिता और पितामह की पावन स्मृति में बड़ी धनराशि निकालकर आधुनिक प्रणाली का शिक्षालय गगाशहर—बीकानेर में चालू किया है।

औद्योगिक और व्यापारिक क्षेत्र में श्री जयचन्दलालजी कलकत्ता के सुप्रसिद्ध फर्म हजारीमल हीरालाल के साझीदार हैं। इसके अतिरिक्त आप रामपुरिया काटन मिल लि०, बीकानेर जिप्सम्स लि०, रामपुरिया ब्रादर्स लि०, रामपुरिया प्रोपरटीज लि० आदि के सक्रिय डायरेक्टर हैं।

स्व० धर्मवीर श्री दुर्लभजी भाई का जीवन-परिचय

सौराष्ट्र प्रान्तान्तर्गत (मोरवी) में अपका शुभ जन्म १९३३ की चैत्र वदी त्रयोदशी (गुजराती) को श्रीमान् त्रिभुवनदास भाई झवेरी के सुप्रतिष्ठित कुटुम्ब मे धर्मपरायण श्रीमती साकली बाई की कुक्षि से हुआ। अमूल्य रत्नो के परीक्षक धर्मनिष्ठ माता-पिता ने दुर्लभरत्न 'दुर्लभ' को प्राप्त कर जीवन को धन्य माना।

धर्म प्रभावक परिवार के धार्मिक सस्कार बाल्यावस्था में ही आपके जीवन में झलकने लगे थे। धार्मिक-शिक्षण के साथ-साथ गुजराती तथा अग्रेजी का शिक्षाक्रम बराबर चलता रहा। छ वर्ष की लघुवय से ही आप में अतिथि सत्कार, असहायो के प्रति सहानुभूति, गुरुभक्ति, धर्मश्रद्धा तथा सहपाठियो के प्रति स्नेहभाव एव विनोद-प्रियता आदि-आदि सद्गुणो का विकास होने लगा। आप में वक्तृत्व-शक्ति, लेखन कला, नयी बात सुनने, सीखने तथा उस पर मनन करने की हार्दिक वृत्ति जागृत हो चुकी थी।

उस समय की प्रचलित रूढि के अनुसार आपका भी अल्पायु में ही श्रीमती सतोकबाई के साथ शुभ लग्न कर दिया गया। विवाह के पश्चात् अध्ययन-क्रम छूट गया। अब आपको अपने खानदानी व्यवसाय में लगा दिया गया। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि तथा प्रतिभा से सन् १९११ में जयपुर में 'मोणसी अमोलख' के नाम से फर्म की स्थापना की और अपनी विचक्षणता एव दीर्घदर्शिता के फलस्वरूप अर्थलाभ की अभिवृद्धि के साथ प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि भी प्राप्त कर ली। सद्निष्ठा और प्रामाणिकता ही आपके व्यापारिक जीवन का लक्ष्य रहा। लघुभ्राता श्री मगनलाल भाई के कलकत्ता में प्लेग की बीमारी से अवसान हो जाने से आपके हृदय पर बडा आघात पहुँचा और इससे सुपुत्र धर्म भावना जागृत हो उठी। कौटुम्बिक बन्धनो से शीघ्र छुटकारा पाने के लिये आपने अपने लघु भ्राता श्री छगनलाल भाई से पृथक होकर सवत १९७८ में जयपुर में 'दुर्लभजी त्रिभुवन झवेरी' नाम से नई फर्म की स्थापना कर ली। किन्तु भ्रातृ-स्नेह पूर्ण रूप से कायम रहा। ज्यो-ज्यो व्यापार का विस्तार बढता गया त्यो-त्यो लक्ष्मी भी आपके चरणो की चेरी बनती गई।

आपके पाँच सुपुत्र हुए जिनके क्रमश विनयचन्द भाई, गिरधरलाल भाई, ईश्वरलाल भाई, शान्तिलाल भाई तथा खेलशकर भाई नाम हैं। पाँचो ही भाई अपने व्यापार-कुशल पिता के समान ही जवाहिरात परीक्षण में निष्णात हैं। विदेशो के साथ सबन्ध स्थापित करने के लिये श्री विनयचन्द भाई, शान्तिलाल भाई तथा खेलशंकर भाई को रंगून

तथा पेरिस आदि देशो में भेजा। आपने ५० वर्ष की आयु में लगभग संपूर्ण व्यापार सुपुत्रो को सौंपकर निवृत्तिमय जीवन व्यतीत करने का निश्चय कर लिया। अब आपने अपने जीवन का लक्ष्य धर्म तथा समाज की तन, मन एव धन से सेवा करने का बना लिया।

सर्वप्रथम समाज मे नव-चेतना का सचार करने के हेतु आपने कान्फ्रेंस की आवश्यकता तथा उपयोगिता से अवगत कराने के लिये गुजरात, काठियावाड, कच्छ, मारवाड, मेवाड़, मलावा, यू० पी०, पजाव, खानदेश तथा दक्षिण प्रान्तो का सहयोगियो के साथ प्रवास करके स्था० जैनो को जागृत किया। सेठ श्री अंवावीदास भाई को आ० भा० श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेस के प्रथम अधिवेशन सम्बन्धी खर्च के लिये तैयार करके सं० १९६१ में रा० सा० सेठ चॉदमलजी अजमेर की अध्यक्षता में मोरवी-अधिवेशन सफलतापूर्वक संपन्न करवाया। तदनन्तर आपने उसी लगन तथा उत्साह से समाजोन्नति की प्रत्येक प्रवृत्ति में सक्रिय सहयोग दिया। बाद में रतलाम, अजमेर, जालन्धर, सिकन्दरावाद, मल्कापुर, वम्बई और बीकानेर कांफ्रेंस-अधिवेशनो की सफलता का श्रेय भी आप श्री को मिला। नवम अधिवेशन तथा वृहत्साधु-सम्मेलन अजमेर, भी आपके ही भगीरथ प्रयत्नो का सुफल था। आपने भारत के कोने-कोने में प्रवास करके समाज में धर्मक्राति फैला दी और अजमेर-साधु सम्मेलन को सफल वनाकर सगठन का बीजारोपण कर दिया।

आपने व्यापारिक, धार्मिक तथा सामाजिक उन्नति के साथ-साथ विद्या-प्रचार क्षेत्र में भी अपने जीवन का अमूल्य समय दिया। सन् १९११ में रतलाम में कॉफ्रेंस की तरफ से अन्यान्य विषयो का शिक्षण देने के साथ-साथ छात्रो को धर्मनिष्ठ, समाज सेवक और जैन धर्म के प्रखर प्रचारक युवक तैयार करने के लिये जैन ट्रेनिग कॉलेज की स्थापना की। आपका इस कॉलेज के प्रति अनन्य प्रेम था। किन्तु कुछ समय बाद यह सस्था वन्द हो गई। मल्कापुर में अधिवेशन में कौलेज की पुन. आवश्यकता महसूस हुई और बीकानेर में पुन. ट्रेनिग कालेज सेठ श्री अगरचन्द जी भैरोदान जी सेठिया की सरक्षणता में खोला गया जिसने पूर्ण विकास किया। बाद में आपने सतत प्रयत्न द्वारा इसे जयपुर लाकर सक्रिय रस लिया और श्री धीरजलाल भाई के० तुरखिया के हाथ मे इसकी वागडोर सौंपी। इस कौलेज ने नेतृत्व में पूर्ण विकास किया और समाज को अनमोल रत्न प्रदान किये। कुछ वर्षों के पश्चात् तव व्यावर में आप के सफल प्रयत्नो से जैन गुरुकुल की स्थापना हुई तो कॉलेज भी इसी के अन्तर्गत मिला दिया गया। आपका इस गुरुकुल के प्रति अनन्य प्रेम था। समय-समय पर पधारकर सार-सँभाल करते रहते थे। इस गुरुकुल की भी स्था० समाज मे काफी ख्याति फैली। श्रीमान् धीरजलाल भाई के० तुरखिया ने इसका सफल सचालन किया। आप श्री ने प्रत्येक सामाजिक प्रवृत्ति में इन्हे अपना संगी-साथी निर्वाचित कर लिया था। आपने गुरुकुल में तन, मन, धन से सहायता दी।

इन सवके अतिरिक्त श्री दुर्लभजी भाई ने सिद्धान्तशाला काशी, विद्यापीठ बनारस में जैन चेयर, श्री हसराज जिनागम फण्ड, आदि-आदि ज्ञान खातो में मुक्त हस्त से हजारो की उदारता दर्शायी और उसी उदारता की परम्परा आपके सुपुत्रो में भी वरावर चली आ रही है।

आप समाज के सामने एक ग्रन्थकार के रूप में भी आए। आप के द्वारा लिखित पूज्य श्री श्रीलालजी म० का जीवन-चरित्र, श्री वृहत्साधु सम्मेलन का इतिहास, 'सुभद्रा' 'मधु विन्दु' तथा 'आडत के अनुभव' आदि-आदि पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

इस प्रकार शांत, दात, धीर गम्भीर, राष्ट्र धर्म तथा समाज के सच्चे सेवक ने स्था० समाज में सघ-ऐक्य की भावना भरकर जागरण सहित ता· ३०-३-३९ तदनुसार चैत्र शुक्ला दशमी (साधु-सम्मेलन जयन्ती दिवस) के दिन ही पण्डित मरण प्राप्त किया और अपने सुयश की सुवास प्रसरित कर जैनाकाश के दिग्-दिगन्त में फैला गए।

कॉन्फरन्सके जनरल सेक्रेटरी

राय वहादुर सेठ छगनमलजी रीयांवाले, अजमेर,

रायवहादुर सेठ छगनमलजी का जन्म सवत् १६४३ में भाद्रपद मास मे हुआ था। आपने छोटी उम्र मे ही वडा यश प्राप्त कर लिया था २२ वर्ष की उम्र में आपने अपनी तरफ से अजमेर में काफ्रेंस का तीसरा अधिवेशन कराया था और उसके प्रधान मत्री पद का भार ग्रहण किया था। आपने लगभग १० वर्ष तक मत्री पद पर रहते हुए काफ्रेंस की सेवा की थी।

धर्म के प्रति आपका प्रेम उल्लेखनीय था। आपके पिता श्री सेठ चाँदमल जी की तरह आपको भी जीव-दया की तरफ वड़ी अभिरुचि थी। गरीबो को अन्न और वस्त्र आपकी ओर से मिला करता था।

पच्चीस वर्ष की उम्र में आप म्युनिसिपल कमिश्नर और आनरेरी मजिस्ट्रेट हो गये थे। गवर्नमेंट ट्रेजरर रह कर आपने जो सेवा वजाई थी उसके उपलक्ष में आपको राय वहादुर का खिताव प्रदान किया गया था।

आपकी समाज-सेवा की लगन वडी प्रशसनीय थी। हर एक कार्य में आप वडे उत्साह से भाग लेते थे। हुनरोद्योग शाला का भी आपने कई वर्षो तक सचालन किया था।

दुर्भाग्य से आप वहुत कम उम्र में ही स्वर्गवासी हो गये, अन्यथा आपसे समाज की सुन्दर सेवा होने की सभावना थी। ता० ३६ मार्च सन् १६१७ (स० १६७३) को आपका टाईफाईड से स्वर्गवास हो गया।

आपके सात वच्चे हुए थे, पर दुर्भाग्य से वे सव जीवित न रहे और एक के वाद एक गुजरते रहे।

काफ्रेंस ओफिस के स्थायित्य में आपका मुख्य हाथ रहा था। आपके स्वर्गवास के वाद आपके लघुभ्राता श्री मगनमलजी सा० ने काफ्रेस का मत्रीपद जीवन भर (८ वर्ष) सँभाला।

श्रीमान् सेठ मगनमलजी रीयांवाले, अजमेर,

स्थानकवासी धर्म को मानने वाले समस्त घरानो में रीयावाले सेठ का घराना सव तरह से समृद्ध और उन्नत माना जाता रहा है। यह घराना वहुत समय से असीम धन-वैभव और दानप्रियता से केवल मारवाड में ही नहीं, परन्तु सारे भारतवर्ष में प्रसिद्धि प्राप्त है।

एक वार मारवाड के महाराजा मानसिहजी से किसी अग्रेज ने पूछा था कि 'तुम्हारे राज्य में कुल कितने घर हैं? तव उन्होने कहा कि केवल ढाई घर। एक तो रीया के सेठो का है, दूसरा विलाडे के दीवान का और आधे में सारी मारवाड है।' कहते हैं एक वार जोधपुर नरेश को रुपये की आवश्यकता हुई। रियासत का खजाना खाली हो गया था अत महाराज रीया के सेठ के पास गये और अपना अभिप्राय वतलाया। उस समय सेठ ने अपने भडार से इतने छकडे रुपये से भर दिये कि जोधपुर से रीया तक उनकी एक कतार-सी वध गई।

इस अपरिमित धनराशि को देखकर तत्कालीन नरेश ने उनको परम्परागत 'सेठ' की पदवी से सम्मानित किया। इस धनकुवेर घराने में रेखाजी, सेठ जीवनदासजी, सेठ हजारीमलजी, सेठ रामदासजी, सेठ हमीरमलजी, और उनके पीछे राय सेठ चांदमलजी हुए। इसी प्रसिद्ध धन कुवेर घराने में सवत् १६८६ में सेठ मगनमलजी का भी जन्म हुआ। आप राय सेठ चांदमलजी के तीसरे सुपुत्र थे। राय सेठ चांदमलजी की सरकार में और समाज में वडी भारी

प्रतिष्ठा थी। वे बड़े ही परोपकारी और धर्मात्मा सज्जन थे।

सेठ मगनमलजी भी अपने पिता की तरह ही उदार और धर्मात्मा थे। इतने अधिक धनाढ्य होने पर भी आपका जीवन बडा सादा और धार्मिक था। आपको 'नवकार मंत्र' में गहरी श्रद्धा थी। घटो तक आप इस महामंत्र का जाप करते रहते थे। भक्तामर और कल्याण मन्दिर आपके प्रिय स्तोत्र थे। सदाचार आपके जीवन की मुख्य विशेषता थी। इतने बड़े धनी व्यक्ति में यह गुण कदाचित् ही दृष्टिगोचर होता है।

आपका स्वभाव वडा मधुर था। आप सदैव हसमुख रहते थे। वाणी की मधुरता से ही आप बडे-बड काम वना लेते थे। अजमेर के हिन्दू-मुसलमानो के झगडो को कई बार अपने शब्द-चातुर्य से ही मिटा दिया था।

समाज-सेवा की लगन आपकी उल्लेखनीय थी। लगभग ८ वर्ष तक आप कान्फ्रेस के जनरल सेक्रेटरी के पद पर रहे। दुर्भाग्य से आप अधिक लम्बा आयुष्य न भोग सके, लेकिन अपने ३६ वर्षो के जीवन में ही आपने ऐसे ऐसे कार्य कर दिखलाये कि आप सबके प्रिय हो गये थे। लाखो रुपयो का आपने सत्कार्यो मे दान किया। अहिंसा के प्रचार में ही आप दान किया करते थे। यह आपके जीवन की विशेष खूवी थी।

बुन्देलखड में कई स्थानो पर हिसा होती थी, जिसे आपने स्वयं परिश्रम कर वन्द कराया। अहिंसा का प्रचार करने के लिये आप एक 'अहिसा प्रचारक' नामक साप्ताहिक पत्र भी निकालते थे। पुष्कर और बंगलौर में गौशाला स्थापित कराई, जिसका तमाम खर्च आप स्वयं देते थे। मैसूर स्टेट मे गोवध वन्द कराने मे आपने मुख्य भाग लिया। मिर्जापुर में कुत्तो को गंगाजी में डुवो-डुबोकर मारा जाता था, उनकी रक्षा के लिये वहाँ आपने कुत्ताशाला स्थापित की। इस तरह आपने अहिसा के प्रचार मे खूव प्रयत्न किया था।

सामाजिक जीवन भी आपका आदर्श था। आप कई छात्रो को स्कॉलरशिप दिया करते थे। विधवाओ की हालत देखकर आपको वहुत दुख होता था। कई विधवा वहनो को आप मासिक सहायता देते रहते थे।

तारीख ७-११-१९२५ को आपका स्वर्गवास हुआ। यह शोक समाचार जहाँ भी पहुँचा सभी ने हार्दिक शोक प्रकट किया।

यद्यपि सेठ जी का नश्वर देह विद्यमान नही है, पर उनके सत्कार्य अब भी विद्यमान है और वे जव तक रहेगे तव तक आपकी उदार कीर्ति इस संसार में कायम रहेगी।

कॉन्फरन्स ऑफिस, बम्बई के जनरल सेक्रेटरी

शेठ अमृतलाल रायचन्द जवेरी, वम्वई

श्री अमृतलालभाई जवेरी का जन्म सन् १८७९ में पालनपुर मे हुआ था। आपने प्रारम्भ में २० रु० मासिक की नौकरी की, पर वाद में आपको नौकरी करना ठीक न प्रतीत हुआ और आप २० वर्ष की उम्र में वम्वई आ गये।

वम्वई आकर आप जवाहरात की दलाली करने लगे। इस व्यवसाय में आप सफल होते गये और एक दिन इस श्रेणी तक पहुँचे कि आप वम्वई के जवेरी वाजार में प्रसिद्ध हो गये।

आप का जीवन धार्मिक संस्कारो से ओत प्रोत था। समाज की सेवा करने की भावना आप की पुरातन थी। घाटकोपर जीव दयाखाता के संचालन में आपका प्रमुख भाग था। आप इस संस्था के उप प्रमुख थे। पूना वार्डिंग के लिये आपने १० हजार रु० का उदार दान दिया था। हितेच्छु श्रावक मडल, रतलाम और वम्वई के श्री रत्न चिन्तामणि मित्र मडल के आप जन्म से ही पोषक थे। स्था०

जैन कान्फ्रेंस के आप वर्षो तक ट्रस्टी तथा रेसिडेन्ट जनरल सेक्रेटरी रहे हैं।

इस तरह आप कई संस्थाओ को पूर्ण सहयोग देते रहते थे। आप के कोई सन्तान न थी। अपने भाइयो के पुत्र-पुत्रियो को ही आपने अपनी सन्तान समझी और उनका पालन-पोषण किया। आप की धर्मपत्नी श्री केशरबेन से भी समाज सुपरिचित हैं। समय-समय पर आप भी सामाजिक कार्य में सक्रिय भाग लेती रहती है। आप श्री अमृतलाल भाई का स्वर्गवास ता० १३-१२-४१ को हृदय गति बन्द हो जाने से पालनपुर में हुआ था। पालनपुर का 'तालेबाग' श्रीमती केशरबहिन न शिक्षण प्रचारार्थ दान कर दिया।

समाज भूषण श्री नथमल जी चौरड़िया, नीमच

श्री चौरडिया जी का जन्म सवत् १९३२ भाद्रकृष्णा ८ (जन्माष्टमी) को हुआ था। आप के अग्रज डीडवाने से १२५ वर्ष पूर्व नीमच-छावनी में आकर बस गये थे। आप के पिता जी का देहावसान आपकी छोटी उम्र में ही हो गया था। आप बचपन से ही परिश्रमी, अध्यवसायी एव कुशाग्र बुद्धि थे।

आप ने व्यापार में अच्छी प्रगति की। व्यापार के लिए आप ने बम्बई का क्षेत्र पसन्द किया और वहाँ मेसर्स माधोसिह मिश्रीलाल के नाम से व्यापार करना आरम्भ किया। आप की व्यापार कुशलता को देखकर मेवाड के करोडपति सेठ मेघजी गिरधरलाल ने आप को अपना भागीदार बना लिया और ऊँचे पैमाने पर व्यापार करना शुरू किया। फलत लाखो रूपया आपने पैदा किये।

बम्बई में आप ने मारवाडी चेम्बर ऑफ कामर्स की स्थापना की और वर्षो तक उसके अवैतनिक मत्री तरीके आपने कार्य किया। व्यापारिक विषयो पर आप की सम्मति महत्वपूर्ण समझी जाती थी।

आप शिक्षा के पूरे हिमायती थे आप की ओर से असहाय विद्यार्थियो को समय-समय पर छात्रवृत्तियाँ प्राप्त होती रहती थी।

स्त्री-शिक्षा के आप बड़े पक्षपाती थे। राजपूताने में एक जैन कन्या गुरुकुल की स्थापना के लिये आपने ७५ हजार रु० का उदार दान दिया था। इस गुरुकुल का उद्घाटन ता० २०-४-३६ को होने वाला था, परन्तु आपकी यह इच्छा पूर्ण न हो सकी। आपका देहावसान ता २९-३-३६ को ही हो गया। गुरुकुल की शुरूआत न हो सकी। परन्तु उन रुपयो का ट्रस्ट बना हुआ है और प्रतिवर्ष उसमें से कुछ रुपया छात्रवृत्ति के रूप में छात्राओ को दिया जाता है।

आप समाज सेवा के लिये हर समय तैयार रहते थे। कोन्फरन्स की स्थापना से लगाकर अन्त समय तक आप उसके स्वयसेवक दल के मन्त्री पद को आप सुशोभित करते रहे और प्रत्येक अधिवेशन में भाग लेते रहे। आपके इस सेवा भाव को लक्ष्य मे रख कर अजमेर के नवें अधिवेशन के समय आपको 'समाज भूषण' की पदवी से विभूषित किया गया।

सामाजिक सुधार के आप कट्टर हिमायती थे। परदा प्रथा को आप ठीक नहीं समझते थे। आप की पुत्री तथा ज्येष्ठ पुत्र वधू ने पर्दा-प्रथा का त्याग कर दिया था। फिजूल खर्ची और मृतक भोज के भी आप विरोधी थे।

आपकी राष्ट्रीय सेवायें भी उल्लेखनीय थीं। राजपूताना मालवा प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के आप प्रधान रहे। सत्याग्रह आन्दोलन में आप एक वर्ष तक सरकार के मेहमान भी रहे। हरिजन-स्थान के लिये आपकी ओर से

एक हरिजन पाठशाला भी चलती थी। जो आज सरकार द्वारा सचालित होती है।

जैन समाज का सुप्रसिद्ध जैन गुरुकुल छोटी-सादडी के आप ट्रस्टी तथा मन्त्री रहे। इस तरह आप की सेवायें वहुमुखी थी। सन् '३६ में टाईफाईड से आपका स्वर्गवास हो गया।

श्री सेठ अचलसिहजी जैन, आगरा M P

उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध कांग्रेस नेता सेठ अचलसिहजी ऐसे देश भक्तो मे से है, जिन्होने अपनी मातृभूमि की सेवा करना अपने जीवन का एक विशेष अग बना लिया है। आपका जन्म वैशाख सुदी ६ स० १९५२ में आगरा में हुआ। आप प्रसिद्ध बैंकर और जमीदार श्री सेठ पीतममलजी के सुपुत्र हैं। आपकी माता भी अत्यन्त धर्म परायण नारी थी। बचपन में ही माता-पिता के स्वर्गवासी हो जाने के कारण आपके सौतेले भ्राता श्री सेठ जसवन्तरायजी द्वारा वडे लाड- प्यार से आपका पालन-पोषण हुआ। वलवन्त राजपूत कालेज आगरा में शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् आपने कृषि विद्यालय, इलाहावाद में अध्ययन के लिये प्रवेश किया किन्तु आपका ध्यान किताबो में न लग कर देश-सेवा की ओर आर्काषित हुआ। आपने सन् १९१८ मे अध्ययन छोडकर निर्णयात्मक रूप से अपने को राजनैतिक और सामाजिक कार्यो में लगा दिया।

अब आप व्यावसायिक क्षेत्र में रहते हुए राजनैतिक क्षेत्र मे आये। रौलेट एक्ट के विरुद्ध सारे देश में क्रान्ति फैली हुई थी। आप भी उस क्रान्ति में सम्मलित हुए। सन् १९१८ से १९३० तक आगरा ट्रेड एसोसिएशन के आप मंत्री और फिर १९३१ से १९३८ तक इसी सस्था के अध्यक्ष रहे। सन् १९२१ १९३० तक आप आगरा नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष और १९३३ से १९५६ तक लगातार जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कमेटी की तरफ से प्रारम्भ किये गये। आन्दोलनो में आपने प्रमुखता से भाग लिया, जिसके फल वरूप आपको अनेक वार जेल कष्ट का सामना करना पड़ा। "भारत छोडो" आन्दोलन मे आपको सत्ताईस माह की जेल-यात्रा करनी पडी।

सेठ सा० का विधान सभा में भी प्रशंसनीय जीवन रहा है। आप सन् १९२३ में उत्तर-प्रदेश विधान सभा के सदस्य हुए। सन् १९५३ में आगरा मे किये गये कांग्रेस के अधिवेशन में आप स्वागताध्यक्ष थे। सन् १९५२ में लोक-सभा में आगरा पश्चिम-क्षेत्र से सदस्य चुने गये। अपने विरोधी उम्मीदवार श्री एस० के० पालीवाल को जो यू० पी० सरकार के भूतपूर्व मंत्री रह चुके है, ५६,००० वोटो से पराजित किया।

आपने सन् १९३६ मे १,००,०००) रु० का अचल ट्रस्ट का निर्माण किया। इस ट्रस्ट से एक विशाल भवन वनाया गया जिसमे एक पुस्तकालय और वाचनालय चालू किया गया। आपने एक दूसरा ट्रस्ट २,५०,०००) रुपये की लागत का अपनी स्व० पत्नी श्रीमती भगवतीदेवी जैन के नाम से वनाया। आपन इन दोनो ट्रस्टो के नाम लगभग ५ लाख रुपये की सम्पति दान करदी है। राजनैतिक जीवन के साथ-साथ आप धार्मिक और सामाजिक क्षेत्रो में भी पूर्णरूप से दिलचस्पी लेते रहे है। समाज सुधारक के रूप में आगरा के विभिन्न समाजो में मुख्यत ओसवाल और वैश्य समाज में शादियां, दहेज आदि कार्यो में फिजूल खर्ची वन्द कराई। सन् १९२१ में आपने जैन सगठन सभा का निर्माण किया जिसके द्वारा महावीर भगवान की जयन्ती सम्मिलितरूप से मनाई जाती है। सन् १९५२ में आपने दिल्ली में अखिल भारतीय महावीर जयन्ती कमेटी की स्थापना की जिसके द्वारा महावीर जयन्ती के दिन छुट्टी कराने का प्रयास जारी है। आप द्वारा आयोजित गत महावीर जयन्ती समारोह में प्रधान मन्त्री प० जवाहरलाल नेहरू,

उपराष्ट्र पति राधाकृष्ण, गृहमन्त्री गोविन्दवल्लभ पंत, अन्य मन्त्रियो तथा लोक सभा के सदस्यो ने भाग लिया। सात अप्रैल को राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद भी पधारे थे। दोनो उत्सवो का वर्णन रेडियो द्वारा प्रसारित किया गया था।

इस प्रकार सेठ सा० का जीवन क्या राष्ट्रीय क्षेत्रो मे और क्या सामाजिक क्षेत्रो में वरदान रूप सिद्ध हुआ है। आपकी सुयश-सुवास सर्वा गीण क्षेत्र में प्रसर रही है। निस्सन्देह सेठ सा० समाज के गौरव हैं।

डॉ० दौलतसिहजी सा० कोठारी M. Sc, Ph. D., दिल्ली

आप उदयपुर--राजस्थान निवासी श्री सेठ फतहलालजी सा० कोठारी के सुपुत्र है। आपका जन्म स० १९६३ में हुआ था। आपका प्राथमिक शिक्षण उदयपुर और इन्दौर में हुआ। यहाँ का शिक्षण पूर्ण कर आप इलाहावाद की यूनिवर्सिटी में प्रविष्ठ हुए। सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक स्वर्गीय मेघनाथजी शाहा के आप विद्यार्थी रहे है और आप ही के अध्यापन मे आपने M. Sc किया। तत्पश्चात् सरकारी छात्रवृत्ति प्राप्त करके केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में प्रसिद्धतम वैज्ञानिको के सरक्षण में रिसर्च किया। भारत में लौटने के पश्चात् आपने अनेक यूनिवर्सिटियो में प्रोफेसर, रीडर वनकर वड़ी ही योग्यता और दक्षता से कार्य किया।

इस समय आप भारत सरकार के रक्षा विभाग मे वडी ही योग्यता से कार्य कर रहे है। आपकी योग्यता और कार्यकुशलता को अनगिनती वैज्ञानिको ने मुक्त-कण्ठ से सराहना की है।

श्री कोठारी जी साहव ने भौतिक विज्ञान पर आश्चर्यकारक अनुसन्धान करके और कई निवन्ध लिखकर ससार के भौतिक शास्त्र के वैज्ञानिको को चकित कर डाला है। सन् १९४८ की आयोजित अखिल भारतीय वैज्ञानिक कांग्रेस के आप स्वागताध्यक्ष के सम्माननीय पद पर थे। सन् १९५४ मे स्वर्गीय मेघनाथ शाहा के साथ भारत सरकार के प्रतिनिधि वनकर वैज्ञानिको की कान्फ्रेंस में सम्मिलित होने के लिए आप रूस पधारे थे। १ फरवरी सन् '५६ में भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में कॉमनवेल्थ डिफेंस साइस कान्फ्रेस में सम्मिलित होने के लिए कनाडा की राजधानी ओटावा पधारे।

आप भारत सरकार के प्रमुख और प्रतिष्ठित वैज्ञानिक है। सन् १९५३ में दिल्ली यूनिवर्सिटी के दीक्षान्त समारोह के विशाल कक्ष में पंजाव-मन्त्री प० मुनिश्री शुक्लचन्द्रजी म० सा० का प्रवचन कराकर जैनतरो को जैनधर्म की जानकारी दिलाई।

इतने ऊँचे पद पर आसीन होकर भी आपका धर्म और समाज के उत्थान की भावना प्रशसनीय और आदर्श है। इस समय आप अ० भा० श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेंस के उपाध्यक्ष है।

श्री कोठारीजी सा० जैसे वैज्ञानिक को पाकर समस्त स्थानकवासी समाज गौरवान्वित है। जिन सपूतो से देश और समाज का मानवर्धन हो--ऐसे सपूतो के लिए किसे गौरव नहीं होगा ?

आपके तीन भाई है—श्री मदनसिहजी राजस्थान सरकार के सेक्रेटरी है। श्री दुर्लभसिहजी महाराणा कालेज में प्रोफेसर है और श्री प्रतापसिहजी पेपर मिल, शिरपुर (हैदराबाद) के मैनेजर हैं।

इस प्रकार यह कोठारी परिवार भारत की शान है। अपनी वुद्धिमत्ता से इस परिवार ने अपने प्रान्त को, अपने समाज को तथा देश को गौरवान्वित किया है। ऐसे भाग्यशाली परिवार के प्रति किसे हर्षयुक्त ईर्ष्या नहीं होगी ?

स्वर्गीय श्री किशनलाल जी सा० कांकरिया, कलकत्ता
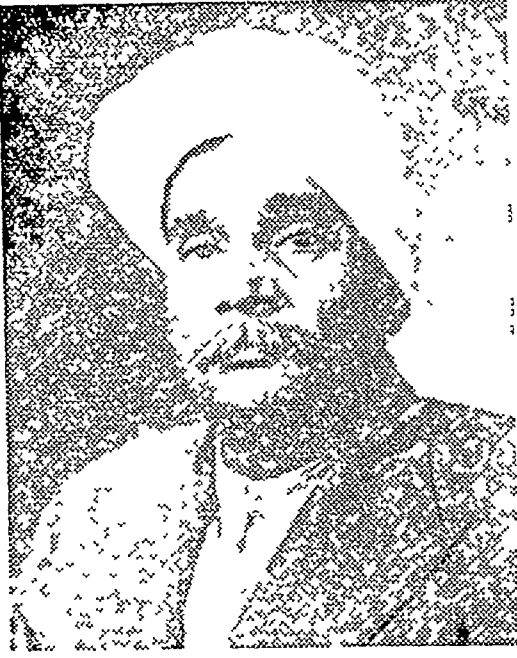
आपका जन्म नागौर परगने के अन्तर्गत "गोगलाव" नामक ग्राम के एक प्रतिष्ठित स्थानकवासी जैन-घराने में स० १९५१ में हुआ था। आप के पिताजी का नाम श्री हजारीमल जी काकरिया था। श्री हजारीमल जी सा० बड़े ही सहृदयी और परोपकारी व्यक्ति थे। आपकी माता भी अत्यन्त धार्मिक और उदार प्रकृति की महिला थी। माता-पिता के उज्ज्वल चरित्र की स्पष्ट छाप आप पर भी पडी। आप अपने काकाजी श्री मुल्तानमल जी कांकरिया की गोद चले गये। व्यापार करने के विचार से आप कलकत्ता पधारे और श्री छत्तूमल जी मुल्तानमल प्रतिष्ठित फर्मों मे गिना जाने लगा। पूर्वी पाकिस्तान के पाट-व्यापारी आपको कुशल व्यापारी के रूप में सम्मान की दृष्टि से देखते थे।

कलकत्ता स्थित कितनी ही धार्मिक और परोपकारिणी सस्थाओ को विना भेद-भाव के आप मुक्त हस्त सहायता प्रदान करते थे। आप धार्मिक वृत्ति के पुरुष थे। सामयिक और उपवास आपके जीवन के अभिन्न अंग थे।

सामाजिक कार्यों में भी आप की वडी दिलचस्पी थी। कलकत्ता स्थित श्री श्वे० स्था० जैन सभा के आप कई वर्षो तक सभापति रहे। सभा द्वारा संचालित विद्यालय को हाईस्कूल के रूप में देखना चाहते थे और इसके लिये आजन्म प्रयत्नशील रहे।

व्यापारिक कामो से आप पूर्वी पाकिस्तान वरावर आया-जाया करते थे किन्तु २० जुलाई सन् १९५२ को गायवाधा से नारायण गंज जाते समय चलती ट्रेन में आततायियो द्वारा आप की निर्मम हत्या कर दी गई।

इस प्रकार समाज का एक आशावान दीपक ५८ वर्ष की अवस्था में ही अकस्मात् बुझ गया।

आपकी विधवा धर्म-पत्नी भी वडी ही उदार तथा धर्म-परायण हैं। आप के ज्येष्ठ पुत्र श्री पारस मल जी और भतीजे श्री दीपचन्द जी कांकरिया भी वडे ही होनहार, धर्म प्रेमी एवं समाज सेवी हैं। सामाजिक प्रवृत्तियो मे भाग लेकर समाज में नव चेतना लाने का आप की तरफ से प्रयास होता रहता है।

श्री सेठ आनन्दराजजी सुराणा, M L A

आप दिल्ली राज्य की प्रथम विधान सभा के निर्वाचित प्रसिद्ध काग्रेसी कार्यकर्ता श्री सुराणाजी एक सफल व्यापारी हैं। आप इडो योरोपा ट्रेडिंग कम्पनी के मेनेजिंग डायरेक्टर हैं।

आप जोधपुर के निवासी हैं। आपका जन्म संवत् १९४८ को हुआ था। प्रारंभ से ही आप राष्ट्रीय दृष्टिकोण के एव संगठन-प्रेमी हैं। जोधपुर राज्य की सामन्तशाही के खिलाफ आपने सघर्ष में भाग लिया। वर्षो तक आप इस संघर्ष में जूझते रहे। देशी रियासतो में राष्ट्रप्रेमियो पर कैसा दमन और अत्याचार उस समय किया जाता था यह सर्वविदित है। राज्य सरकार को उलटने के लिये षड्यन्त्र करने के अभियोग में आपको पाँच साल की सख्त कैद की सजा हुई और आपको तथा आपके साथी श्री जयनारायण व्यास और श्री भँवरलालजी अग्रवाल को नागौर के किले में नजरवन्द रखा।

सन् १९४२ के भारत छोडो आन्दोलन में आपने श्रीमती अरुणा आसफअली, श्री जुगलकिशोर खन्ना तथा डा० केसकर को अपने यहाँ आश्रय दिया और राष्ट्रीय काग्रेस का सघर्ष चालू रखा। सरकार को आप पर शक होने लगा अत आपको भी ६ साल तक भूमिगत होकर रहना पडा।

स्टेट पीपल कान्फ्रेस का दफ्तर भी दिल्ली में आपके पास रहा है। इसी कान्फ्रेंस के द्वारा देशी रियासतो में आजादी की लडाई चलाई जाती थी। प० जवाहरलाल नेहरू जी अत्यन्त व्यस्त रहने के कारण किसी के यहाँ नही आते-जाते किंतु आपके यहाँ श्री पडितजी ने तीन घटे व्यतीत किये। सत्य ही सुराणा जी एक भाग्यशाली व्यक्ति है।

हिन्दुस्तान पाकिस्तान के बँटवारे के समय शरणार्थियो की पुनर्वास समस्या सुलझाने में आपने अद्भुत कार्यक्षमता तथा दानशूरता का परिचय दिया। कान्फ्रेस द्वारा सग्रहीत फड में से लगभग ५०,००० रु० आपके ही हाथो से शरणार्थियो को बाँटा गया। आपने अपनी तरफ से भी लगभग १५ ००० रु० की सिलाई की मशीने और ला दीं शरणार्थियो को वितरण कर उनकी उजडी हुई दुनिया को फिर से बसाने में आपका वडा हाथ रहा है। धार्मिक, सामाजिक, और राजनीतिक सस्थाओ को आपकी तरफ से अबतक १,५०,००० का दान हो चुका है।

आप इस समय अ० भा० श्वे० स्थानकवासी जैन कान्फ्रेस के प्रधान मत्री है। समाज सेवा की आप में उत्कट भावना है। किसी को दीन-दुखी देखकर आपका हृदय द्रवित हो जाता है। आपके द्वार पर आया हुआ किसी भी प्रकार का प्रार्थी खाली हाथ नही लौटता।

निर्भीकता, तेजस्विता और स्पष्टवादिता एव उदारता के कारण आपने जिस कार्य में हाथ डाला उसमें सफलता प्राप्त की। जोधपुर में १२ रु० में आपने नौकरी की थी। किन्तु मनुष्य को पुरुषार्थ और महत्वाकाक्षा क्या नहीं बना देती यह हम श्री सुराणा जी के जीवन से सीख सकते है। इस वृद्धावस्था में भी आपका समाज-प्रेम, नित्य क्रिया कर्म, और आतिथ्य सत्कार प्रशसनीय ही नही किन्तु अनुकरणीय है।

श्री लाला उत्तमचन्द जी जैन, दिल्ली

आप के पूर्वज मेरठ जिले के निरपुरा ग्राम के रहने वाले थे। आपके दादा श्री ला० लक्खूमल जी सा० अत्यन्त ही धर्म परायण तथा दानवीर थे। आप ने कई स्थानो पर स्थानक-भवन, धर्मशालाए बनाकर अपनी सम्पत्ति को जन-कल्याण के लिये लगाई। श्री उत्तमचन्द जी के पिता जी श्री रामनाथजी ने दिल्ली में आकर अपना व्यवसाय प्रारम्भ किया और यहाँ के एक प्रसिद्ध व्यवसायी बन गये। आपके सुपुत्र श्री उत्तमचन्द जी जैन का व्यवस्थित शिक्षण हुआ, जिसके फलस्वरूप बी० ए० पास कर लेने पर आपने सम्मान सहित 'लॉ' की उपाधि प्राप्त की। कुछ समय तक वकालत करने के पश्चात् आपने व्यावसायिक क्षेत्र में पदार्पण किया। व्यापार मे व्यस्त रहते हुए भी आप सामाजिक, शैक्षणिक तथा इतर संस्थाओ में सक्रिय भाग लेते है। इस
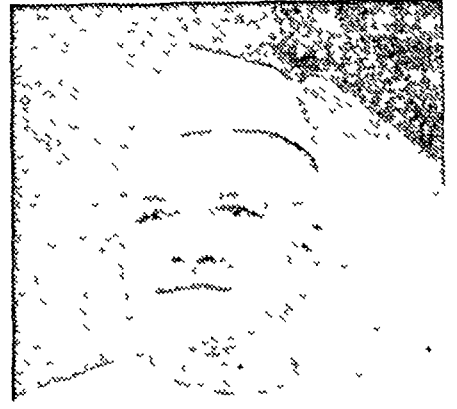
समय आप नया बाजार, दिल्ली के सरपच है। बाजार की कठिन और जटिल समस्याओ को आप वडी ही बुद्धिमत्ता तथा न्यायपरायणता से हल करते हैं। आप ने दिल्ली की श्री महावीर जैन हायस्कूल का डाँवाडोल स्थिति में जिस कुशलता मे सचालन किया वह अत्यन्त सराहनीय है। आपके प्रयत्नो से यह संस्था प्रतिदिन प्रगति कर रही है। गरीब बालक बालिकाओ को शिक्षण देने और दिलाने की आपकी सदा प्रेरणा रही हैं।

आप अखिल भारतीय स्था० जैन कान्फ्रेंस के मानद् मन्त्री है तथा दिल्ली की कई अन्य धार्मिक संस्थाओ के पदाधिकारी हैं। आप ने अपने ग्राम निरपुरा मे एक धर्मशाला और एक स्थानक का निर्माण कराया है।

श्री लाला गिरधारी लाल जी जैन M. A, P V.E S class 1, दिल्ली

आप जिन्द निवासी लाला नैन सुखराय जी जैन के सुपुत्र है, जो आज दिल्ली स्टेट और पेप्सु राज्य के शिक्षा-विभाग में उच्चाधिकारी के सम्माननीय पद पर हैं। आप धुरन्धर शिक्षण-शास्त्री हैं। जिन्द स्टेट के आप M. L A. रह चुके है और इस सरकार की तरफ से आपको "सरदार ग्रामी" की पदवी भी प्राप्त कर चुके हैं। सरकारी विभागो में काम करते हुए सम्मान और सुयश प्राप्त कर अपने को समाज सेवा में भी लगाया है।

स्वर्गीय शतावधानी पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज के दिल्ली, पचकूला, आगरा और पटियाला आदि नगरो में धूम-धाम से अवधान कराकर जैनधर्म, जैन समाज और जैन मुनिराजो का गौरव वढाया है।

इतने उच्च शिक्षण-शास्त्री होते हुए भी धर्म पर आप पूर्णरूप से दृढ़ श्रद्धावान हैं। अनेक मुनिराजो के सान्निध्य में आकर धार्मिक सिद्धान्तो की आप ने अच्छी जानकारी प्राप्त कर ली है। इस समय दिल्ली के वर्द्धमान स्था जैन समाज के आप अध्यक्ष हैं।

हमें विश्वास है कि आप की बहुमूल्य सेवाओ से समाज और अधिक लाभान्वित हो कर गौरवान्वित होगा। सुलझे सुए विचार, गम्भीर चिन्तन, समाज-प्रेम, धर्म पर अनन्य श्रद्धा और आकर्षक भव्य आप के इन गुणो के प्रति प्रेम एव सद्भावना प्रकट होती है।

वावू अजितप्रसाद जी जैन M.A L-L B, दिल्ली

आप वडौत जिला मेरठ निवासी लाला मामचन्दराय जैन के सुपुत्र है। आपके परिवार ने स्थानकवासी जैन समाज की वहुत सेवा की हे। आपके परिवार के प्रयत्नो से ही वडौत में जैन पाठशाला, जैन धर्मशाला व जैन स्थानक भवन का निर्माण हुआ।

आप अपनी समाज के सेवाभावी कार्यकर्ता है। आप इस समय अ० भा० श्वे० स्था० जैन कार्फ्रेस के मन्त्री हैं और उत्तरीय रेलवे में 'अकाउट ऑफिसर' है। आपकी समाज-सेवा की भावना और धर्मप्रियता सराहनीय है।

श्री धीरजभाई केशवलालभाई तुरखिया

स्था० जैन जगत् के कोने-कोने में चतुर्विध श्री सघ का शायद ही ऐसा सभ्य होगा जिसने 'धीरजभाई' यह कर्ण-प्रिय मधुर शब्द न सुना हो।

धीरजभाई के नाम की इतनी प्रसिद्धि केवल उनके कार्यकलापो से है। व्यक्तिगत रूप से जैन समाज इनसे कम परिचित है। क्योकि इन्होने अपने-आपको कार्यसिद्धि के यश का भागी बनाने का कभी मौका नहीं दिया। निस्वार्थ समाज-सेवा ही उनके जीवन का परम लक्ष्य रहा।

सादगी एव सयम की साक्षात् मूर्ति श्री धीरजभाई की वेष-भूषा है इकलगी छोटी धोती पर सफेद खादी का कुर्ता और टोपी, पैरो मे जूते या चप्पल। सीधे-सादे, धीर-गम्भीर मुद्रा, नाटा कद, कार्य-भार की चिन्ता-रेखाओ से अंकित ललाट, हँसमुख, मिष्टभाषी और कार्य मे व्यस्त रहने वाले है श्री धीरजभाई !

आज से ३५ वर्ष पूर्व आप वम्वई शहर के एक नागरिक थे। समाज में अन्धकार व्याप्त था और सामाजिक कार्यकर्ताओ का नितान्त अभाव था। उस समय 'जैन जागृति' द्वारा आपने जन समाज मे प्राण-वायु फूकने का अकथ परिश्रम किया और 'श्री चिन्तामणि मित्र मण्डल' के सचालक का पद स्वीकार कर जैन नवयुवको में जैनत्व के सस्कार सिचन का उत्तरदायित्व अपने कन्धो पर उठाया।

इसी समय वम्वई के रेशम बाजार के व्यापारी मित्रो ने जापान की ओर व्यवसाय के लिए जाने का उन्हे आग्रह किया और दूसरी ओर श्री स्व० सूरजमल लल्लूभाई झवेरी एवं स्व० श्री दुर्लभजी भाई झवेरी ने जैन ट्रेनिंग कॉलिज की बागडोर सँभालने का अत्याग्रह किया। किन्तु आर्थिक प्रलोभन की अग्नि-परीक्षा में खरे उतरे और शासन-सेवा के लिए निष्काम और अनासक्त भाव से आपने अपने व्यवसाय को भी त्याग दिया। आपकी २५ वर्षीय सेवाओ का रौप्य महोत्सव मनाने का सद्भाग्य समाज को व्यावर गुरुकुल के १७वें वार्षिकोत्सव के शुभ प्रसंगपर प्राप्त हुआ।

जैन ट्रेनिंग कॉलेज का आपने जिस योग्यता से संचालन किया उसका ज्वलन्त उदाहरण है। वहाँ से निकले हुए उत्साही नवयुवक, जो आज वर्तमान में विभिन्न संस्थाओ में व समाज में जागृति का कार्य कर अपना नाम रोशन कर रहे हैं।

श्री जैन ट्रेनिंग कॉलेज की सफलता देखकर कतिपय विद्या-प्रेमी मुनिराजो एवं सद्गृहस्थो की अन्तरात्मा से प्रेरणा हुई कि जैन गुरुकुल सरीखी संस्था सस्थापित हो। सद्विचार कार्यरूप में परिणत हुए और उसके सुयोग्य सचालक के रूप में आपश्री को कार्यभार सौंपा गया। समाज के सच्चे सेवक ने जैन ट्रेनिंग कालेज का कार्यभार सिर पर होने के वावजूद भी गुरुकुल का उत्तरदायित्व सहर्ष स्वीकार किया और थोडे ही समयान्तर में आपने अपनी अनवरत तपश्चर्या, अथक उद्योग एव अतिशय सहनशीलता के परिणाम स्वरूप गुरुकुल के लिए निभाव फड, स्थायी फड, निजी मकान तथा सभी साधन-सामग्रियाँ जुटा ली।

आपकी दीर्घकालीन तपस्या तथा कर्तव्य-पालनता केवल एक ही उदाहरण मे प्रगट हो जाती है कि जब एक वार आपके पिताश्री की अस्वस्थता का बुलाने का तार आया और आपने प्रत्युत्तर में यही जवाव दिया कि 'मेरे पर सस्था के वालको की सेवा का और उन पर मातृ-पितृ-वात्सल्य का भार है अत मैं उक्त फर्ज को छोडकर आने में असमर्थ हूँ।' ऐसे उदाहरण समाज में कम ही देखने को मिलते हैं।

जैन गुरुकुल व्यावर का यथोचित ढग से सचालन करते हुए आपके द्वारा मारवाड़ की अनेक छोटी-बडी शिक्षण-सस्थाओ को सत्प्रेरणा एव सक्रिय सहयोग मिलता रहा।
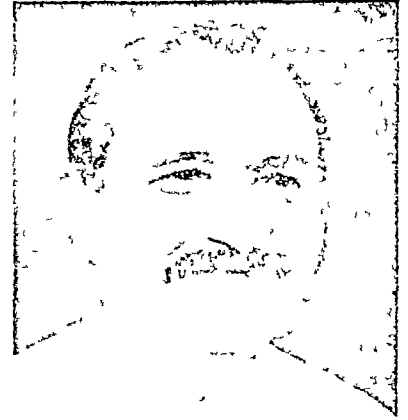
श्री बृहत् जैन थोक संग्रह तथा तत्त्वार्थ-सूत्र का आपने सम्पादन किया है।

सन् १६३२ में अजमेर बृहत् साधू सम्मेलन व उसकी भूमिका के समान अनेक प्रान्तीय सम्मेलनो में आपकी सेवाएँ अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है। काफ्रेंस के पंचम अधिवेशन से लेकर आज तक के अधिवेशनो एव उसकी जनरल कमेटी की प्रत्येक बैठको में आपकी उपस्थिति अनिवार्य रही है और काफ्रेंस की अनेक विध-प्रवृत्तियो को आप श्री ने साकार रूप प्रदान किया।

मारवाड को अपनी साकार सेवा का केन्द्र बना देने पर भी काठियावाड़, पंजाब एवं खानदेश की शिक्षा एव धर्मज्ञान प्रचार और साधु-संगठन के प्रत्येक आन्दोलन से आप कभी भी अलिप्त नही रहे। आपने सामाजिक एव धार्मिक सेवाएँ करते हुए अपने ऊपर टीकाओ एवं निन्दाओ की बौछारे बडे ही धैर्यभाव से सहन की। सेवा करते ही जाना किन्तु कर्तव्य नहीं छोड़ना ही आपका चरम लक्ष्य रहा।

वर्तमान में आपने संघ ऐक्य योजना के मन्त्री पद को सँभालकर उसे मूर्तस्वरूप दिया। धार्मिक शिक्षण समिति का मन्त्री पद सँभालकर कार्य को वेग दिया। आप इस समय कांफ्रन्स ऑफिस के मान्य मन्त्री तथा 'जैन-प्रकाश' के ऑ० सम्पादक भी है।

इस प्रकार आपकी अथक और सतत् नि.स्वार्थ सेवा तथा कर्तव्यनिष्ठता के लिए स्था० समाज सदैव आभारी है और भविष्य में भी आपकी सेवाओ के लिए बडी-बडी आशाएँ रखता है।

मध्य भारत के प्रमुख कार्यकर्ता

स्व० श्री सेठ कन्हैयालालजी सा० भण्डारी, इन्दौर

आप मूल निवासी रामपुरा के थे। आपने वहाँ की समाज के लाभार्थ एवं अपने पिता श्री की अमर यादगार में "श्री नन्दलालजी भण्डारी छात्रावास" एव यहाँ के चिकित्सालय में एक भवन नेत्र-चिकित्सा के लिए भी बनवाया है। आप रामपुरा पाठशाला के ट्रस्टी व आदि अध्यक्ष थे। श्री चतुर्थ वृद्धाश्रम, चित्तौड़ के भी आप अध्यक्ष थे। आप भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति एवं मिल्स-मालिक थे। देशी औषधियो के विशेषज्ञ एव जैन-समाज के सच्चे रत्न थे। आज उनके स्थान पर उन्ही के लघुभ्राता श्री सुगनमलजी सा० भण्डारी समस्त कार्यो की पूर्ति तथा गौरव को बडी योग्यतापूर्वक बढा रहे हैं। समाज को भविष्य मे आप से भी बडी-बडी आशाएँ हैं।

श्री सरदारमलजी भण्डारी, इन्दौर

आप इन्दौर के सुप्रसिद्ध 'सरदार प्रिंटिंग प्रेस' के मालिक हे। आपको स्थानकवासी धर्म का गहरा अध्ययन है और यह कहा जाता है कि इस रूप से कार्य करने वालो में आपकी तुलना का अन्य व्यक्ति नही है। आप कई वर्षो से स्थानीय स्थानकवासी समाज की धार्मिक प्रवृत्तियो में मुख्य रूप से सक्रिय भाग लेते रहे हैं।

श्री मन्नालालजी ठाकुरिया, इन्दौर

आपका जन्म स० १९६१ भाद्रपद शुक्ला ६ को इन्दौर में हुआ था। बचपन से ही आपको सिनेमा देखने का बहुत शौक था अतः आगे चलकर यही आपका व्यवसाय भी हो गया। इन्दौर के सिनेमा व्यवसायियो में आप अग्रणी है। इन्दौर तथा नागपुर आदि में आपके कई सिनेमा है। सन् १९४१ मे आपने फिल्म-व्यवसाय मे भी प्रवेश किया। इस व्यवसाय में आपकी लाखो की सम्पत्ति लगी हुई है। इन्दौर-नरेश की आप पर असीम कृपा रही है। वर्षों तक आप आनरेरी मजिस्ट्रेट रहे है। आपने लाखो रुपये उपार्जन किये और शुभ काम में व्यय किये। विद्या-दान की ओर आपका विशेष लक्ष्य रहता है। सन् १९४३ मे आपने ओसवाल समाज के उत्थान के लिए स्वअर्जित कमाई में से १,०१,१११ रु० दान कर उसका ट्रस्ट रजिस्टर्ड करवाया। इसके व्याज में से प्रतिवर्ष समाज के गरीव तथा होनहार विद्यार्थियो को छात्रवृत्ति विधवाओ को सहायता दी जाती है। आप इन्दौर की प्रसिद्ध फर्म देवीचन्द पन्नालाल के मालिक सेठ सरदारमलजी के द्वितीय पुत्र है। आप अपना कारोवार धन्नालाल मन्नालाल के नाम से करते है।

आप जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ और जैन गुरुकुल व्यावर के अध्यक्ष भी वन चुके है।

श्री भॅवरलालजी सा० धाकड़, इन्दौर

आप श्रीमान् भी रामपुरा निवासी है। वर्तमान में आप श्री 'नन्दलालजी भण्डारी मिल्स', इन्दौर के कोषाध्यक्ष पद पर है। जैन समाज की मूक सेवा कर रहे है। आप श्रद्धेय साधुवर्ग व गरीव स्वधर्मियों की सेवा श्रद्धापूर्वक करते है। इन्दौर में सचालित आयविल खाता व धार्मिक-क्षेत्र में आप आगेवान है। रामपुरा पाठशाला के मुख्य सहायक एवं मृदु प्रकृति के सुश्रावक है। आपका धर्म-प्रेम और उदारता भी प्रशंसनीय है।

श्री वक्तावरमलजी सांड, इन्दौर

आप श्री का जन्म ग्राम धोलेरिया (पाली) मारवाड़ मे सवत् १९६२ के बैसाख शुक्ला तृतीया को हुआ था। आपके पिता श्री का नाम जेठमलजी है। आपके तीन सुपुत्र जिनके क्रमश श्री घेवरचन्दजी, श्री माणकचन्दजी और श्री धर्मचन्दजी नाम है।

आपका व्यवसाय उन्नति के शिखर पर है। आपकी वर्तमान में दो फर्म्स कपडे की श्री जेठमल वक्तावरमल और वक्तावरमल घेवरचन्द के नाम से चल रही है। दोनो फर्मो पर प्रतिवर्ष लाखो का व्यापार होता हे। आप स्था० समाज में प्रमुख व्यक्ति है, धार्मिक एव सामाजिक कार्यो में अदम्य उत्साह रखते है। वर्तमान में आप सेवा-सदन आयविल खाते के प्रेसिडेण्ट है। आप संस्थाओ को उदारतापूर्वक दान देते रहते है। जलगॉव गुरुकुल का सचालन भी आपकी उदारता का उदाहरण है। आप पूर्ण सादगीमय जीवन व्यतीत करते है। धार्मिक-कार्यो में अग्रेसर होने से स्थानकवासी समाज आपकी सराहना करती हे। स्थानीय सार्वजनिक गौशाला के भी आप कई वर्ष मन्त्री रह चुके है। आपके तीनो पुत्र भी धार्मिक व्यक्ति है। व्यापार-कार्य में दक्ष होने से फर्म्स का वड़ा ही सुन्दर सचालन करते है।

भारत के सुविख्यात लोकप्रिय चिकित्सक डॉ० श्री नन्दलालजी वोर्डिया

उदयपुर निवासी श्रीमान् लक्ष्मीलालजी वोर्डिया के द्वितीय सुपुत्र श्री नन्दलालजी वोर्डिया का शुभ जन्म ११ जनवरी, सन् १९१० को हुआ था।

'महाराणा कॉलेज' उदयपुर मे आपने मेट्रिक की परीक्षा सन् १९२६ में उत्तीर्ण की। पिता श्री के इन्दौर वस जाने के कारण 'मेडिकल कॉलेज' इन्दौर से सन् १९३० में एल०, सी० पी० एस० की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् १९३६ में एम० वी० वी० एस० तथा १९४१ में एम० डी० की उपाधियां प्राप्त कीं।

इस प्रकार एक कुशाग्र-कुशल-चिकित्सक की विविध

योग्यताओ से विभूषित होकर आपने होलकर राज्य में शासकीय सेवाएँ स्वीकार की। पदोन्नत होते हुए वे आज कई वर्षो से क्षय-चिकित्सा विभाग के प्रमुख के रूप मे कार्य कर रहे है। देश में बढे हुए इस रोग को नष्ट करने मे आप सिद्धहस्त हो चुके हैं। फुपफुस की रोग युक्त अस्थि के स्थान पर कृत्रिम अस्थि आरोपित करने में भी आप विलक्षणत. दक्ष हैं। सन् १९४७ मे आपने अमेरिका की यात्रा की और वहाँ से आप एफ० सी० सी० पी० की उपाधि प्राप्त कर भारत लौटे।

आर्त एव पीडितजन के साथ आपकी सहानुभूति एव निस्वार्थ करुणा ने आपको सभी का प्रिय बना दिया है। आप न्युट्रशन रिसर्च इंस्टीट्यूट के 'फेलो' भी रह चुके है। विश्व-स्वास्थ्य संघ ने आपको जिनेवा मे सात मास तक विश्व-स्वास्थ्य की समस्याओ के सम्बन्ध मे परामर्शदाता के पद पर प्रतिष्ठित रखा। आप 'भारतीय टी० बी० असोसिएशन' के सदस्य तथा 'क्षयपीडित सहायक सघ' के प्रधानमन्त्री है।

चिकित्सा-विज्ञान में और अधिक निपुणता सम्पादित कर आप अभी-अभी ही अपनी दूसरी अमेरिका-यात्रा सम्पन्न कर स्वदेश लौटे हे।

'आध्यात्मिक विकास-सघ' का भी मयोजन स्वय डॉ० सा० ने मुनि श्री सुशीलकुमारजी शास्त्री की सत् प्रेरणा से किया था। वास्तव मे डॉ० सा० स्था० समाज के गौरवान्वित श्रावक हैं।

स्व. श्री छोटेलाल जी पोखरना, इन्दौर (म भा)

आप का शुभ जन्म रामपुरा (म भारत) में हुआ था। आपने इन्दौर आकर मेट्रिक से आगे अध्ययन करना प्रारम्भ किया। आपका विद्वान् सन्त महात्माओ से अच्छा परिचय था। सामाजिक व धार्मिक कार्य करने की जिज्ञासा होने से कठिन से-कठिन कार्य हाथ मे ले लेते और सफलता भी आप की चेरी बन जाती थी। आप के इन कार्यो को सफल बनाने में स्व० रा० ब० सेठ कन्हैयालाल जी भण्डारी तथा उनके लघुभ्राता सेठ सुगनमल जी भण्डारी का शुभाशीर्वाद रहता था।

आप एक उत्साही एवं कर्मठ कार्यकर्ता थे। किन्तु असाध्य रोग से पीड़ित रहने के कारण आप का अल्पायु मे ही देहावसान हो गया।

श्री सागरमल जी चेलावत, इन्दौर

आप अ० भा० स्थानकवासी जैन कॉफ्रेंस की मध्य-भारत, मेवाड प्रान्तीय शाखा की कार्यकारिणी के सदस्य हैं। आप जोधपुर से निकलने वाले साप्ताहिक 'तरुण-जैन' के सम्पादक मण्डल में भी हैं। इन्दौर नगर के स्थानकवासी समाज की प्रत्येक सामाजिक व धार्मिक कार्य मे मुख्य रूप से सदैव सक्रिय भाग लेनेवाले एक क्रान्तिकारी नवयुवक हैं। आप निम्नलिखित संस्थाओ के मुख्य सक्रिय सहयोगी भी हैं—

१—आध्यात्मिक विकास सघ, इन्दौर।
२—श्री महावीर जैन सिद्धान्तशाला-संयोजक।
३—महिला कला-मन्दिर इन्दौर।

श्री मानकमल नाहर "विद्यार्थी" पत्रकार, इन्दौर

आप स्थानकवासी जैन-जगत् के तरुण कार्यकर्ता, लेखक तथा पत्रकार है। आप श्रीमान् मिश्रीलाल जी नाहर के होनहार सुपुत्र हैं, जो अत्यन्त मेधावी तथा कुशाग्र बुद्धि होने के कारण सदैव अपनी कक्षा में सर्वप्रथम आते रहे जिसके फलस्वरूप आपको मेरिट स्कॉलर शिप' आपको प्राप्त हुई। अनेक सामाजिक सस्थाओ के विशेपकर युवक सघो के आप मन्त्री-पद पर सम्मानित

ढग से कार्य करके अपनी तरुणाई प्रकटाई है। आप 'तरुण जैन' के सहायक सम्पादक है। आपके विचार अत्यन्त सुलझे हुए तथा राष्ट्रीयता से ओतप्रोत रहते है। इन्दौर तथा मध्य-भारत के सामाजिक कार्यकर्ताओ मे अनवरत परिश्रम एवं लगन के कारण आपने अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। भविष्य में बनने वाले तथा विकसित होने वाले आप के उत्साही जीवन की हम पूर्णत सफलता चाहते है।

राय० सा० जमनालालजी रामलालजी, इन्दौर

श्री जमनालालजी

श्री रामलालजी

आप दोनो भाई धर्मनिष्ठ कीमती सेठ पन्नालाल जी कीमती रामपुरा निवासी के सुपुत्र है। आपका कारोबार दक्षिण हैदराबाद में जवाहारात का रहा। निजाम सरकार के आप विश्वासपात्र जौहरी थे। आप दोनो भाई बडे धर्मनिष्ठ और उदार है। आपकी तरफ से स्वर्गीय पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी म० सा० का 'जैन तत्त्व प्रकाश' जैसा बडा ग्रन्थ और अन्य विविध जैन साहित्य प्रकाशित कराकर अमूल्य वितरित होता रहा है। आपकी धार्मिक क्रियाओ में अच्छी रुचि है। ब्रह्मचर्य चौविहार आदि खध रखते है। आप श्रद्धालु मुनिभक्त है और धर्म-कार्य में उदार दिल से हजारो का खर्च करते है।
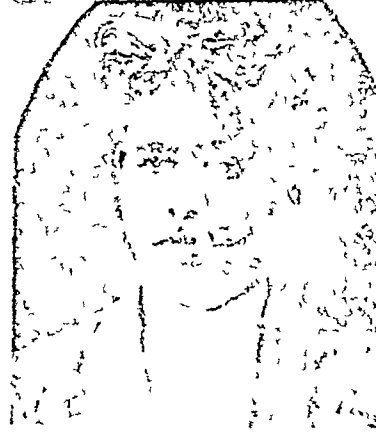
स्व० पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी म० सा० के आचार्य पदमहोत्सव का पूरा खर्च आप ही ने किया था। आपने एक लाख रुपये से "कीमती ट्रस्ट" बनाया है। जैनेन्द्र गुरुकुल, पचकूला में आपने अपनी तरफ से "कीमती बोर्डिंग हाऊस" बना दिया है। जैन गुरुकुल, व्यावर के वार्षिक सभापति होकर रु० १०,००० की बीमा पोलिसी—भेंट की है। इन्दौर में आपकी तरफ से कन्याशाला चलती है और गरीबो को अन्न-वस्त्र और औषधी वितीर्ण की जाती है। रामपुरा में "श्री पन्नालालजी कीमती औषधालय" आपने बनवा दिया है और सरकारी औषधालय में "जमनालाल रामलाल कीमती वोर्ड" बना दिया है। इस प्रकार आपकी उदारता, धर्मनिष्ठा, साहित्य और शिक्षा प्रेम की धारा समाज को प्रभावित करती रहती है। स्थानकवासी समाज और कान्फ्रेंस के आप अग्रगण्य है।

मध्य भारत के प्रमुख कार्यकर्ता

श्री चम्पालालजी, धार

श्री केशरीलालजी जैन M .A. LL.B, धार
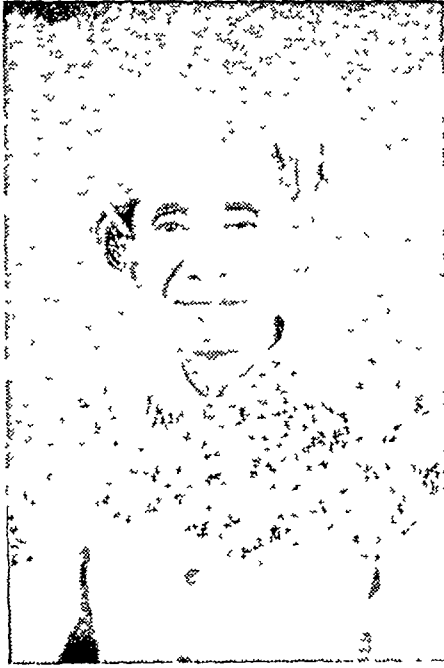
श्री सिमरथमलजी मालवी, रतलाम
स्वागताध्यक्ष—मेवाड प्रान्तीय श्रावक सम्मेलन, रतलाम

वोहतलालजी भंडारी
मत्री—श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ रामपुर
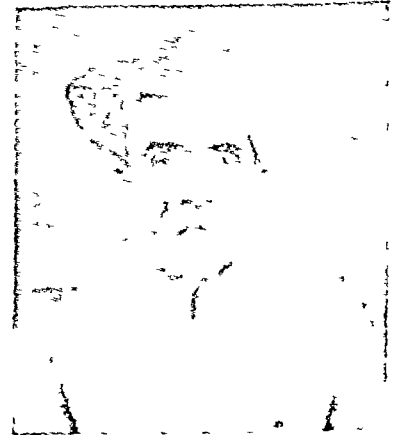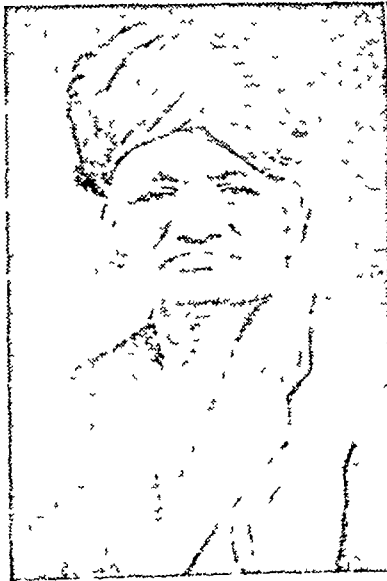
सेठ वर्धमानजी पितलिया, रतलाम

श्रीमान् पितलिया जी का जन्म १९३७ में हुआ था। आपके पिता श्री अमरचन्दजी का जीवन वडा आदर्श-जीवन था। उनके वे सब गुण आपके जीवन में भी आ गये थे। आप बहुत छोटी अवस्था से ही समाज के परिचय में आ गये थे। काफ्रेंस के प्रथम मोरवी अधिवेशन के समय आपने युवक-नेता के रूप मे अग्रगण्य भाग लिया था। धर्मवीर दुर्लभजी भाई को शुरूआत से ही समाज-सेवा के प्रत्येक कार्य में आपका सहयोग रहता था। काफ्रेंस के द्वितीय अधिवेशन रतलाम के बाद तो वे काफ्रेंस के इतने प्रगाढ सम्पर्क में रहे कि वर्षो तक काफ्रेंस की तमाम प्रवृत्तियो का सचालन आपके द्वारा ही होता रहा था। रतलाम में ट्रेंनिग कालेज की स्थापना और वर्षो तक उसको अपनी देख-रेख में चलाना यह उनका एक महत्वपूर्ण कार्य था। जब तक काफ्रेंस ओफिस रतलाम में रही तब तक वे उसके जनरल सेक्रेटरी थे। आप श्रीमान् होते हुए भी समाज-सेवा के लिये हर समय तत्पर रहते थे। काफ्रेंस ओफिस का दफ्तर रतलाम से जब सतारा चला गया, तब रतलाम में पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० की सम्प्रदाय के हितेच्छु श्रावक मंडल की स्थापना की गई थी। इस मंडल के आप प्रमुख थे। मंडल की स्थापना से लेकर अन्तिम समय तक आपने मडल की तथा उसके द्वारा सम्प्रदाय, समाज और धर्म की अपूर्व सेवा की थी। सामाजिक व धार्मिक उलझनो को सुलझाने में आप बडे प्रवीण थे। श्री दुर्लभजी भाई को जब भी किसी प्रश्न का हल न मिलता तो वे झट आपके पास आ जाते थे और दोनो मिलकर उसका हल खोज लेते थे।

स्व० पूज्य श्री श्रीलाल जी म० तथा पूज्य श्री जवाहरलालजी० म० के प्रति आपकी अचल भक्ति थी। आप पू० जवाहरलालजी म० की सम्प्रदाय के अग्रगण्य श्रावक ही न थे मुख्य सचालक भी थे। आप अपने वचन के बडे पाबन्द तथा समय को समझने वाले थे।

सं० १९९८ द्वितीय जेष्ठ वदी १३ को शाम को आप प्रतिक्रमण कर रहे थे कि अचानक छाती में दर्द होना शुरू हुआ और प्रतिक्रमण पूरा होते-होते ही आप अपने इस नश्वर शरीर को छोडकर स्वर्गवासी हो गये।

श्री इन्दरमलजी सा० कावडिया, रतलाम

यद्यपि आप भौतिक शरीर से इस समय विद्यमान नहीं है। किन्तु आपका यशःशरीर कायम है। स० १९५६ में आपकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया। उस समय आपकी आयु लगभग बत्तीस वर्ष की थी। आर्थिक स्थिति भी आपकी अच्छी थी। लोगो ने फिर से विवाह करने के लिये आप पर दबाव डाला किन्तु फिर से विवाह न करने की बात पर आप दृढ बने रहे और शीलव्रत धारण कर लिया। आपकी सर्राफे की दुकान थी, वह भी धीरे-धीरे समेट ली और धर्मध्यान तथा जनाराधना में ही अपना जीवन-यापन करने लगे। आपने कई मतो को ज्ञान का बोध दिया और कितने ही लोगो की भगवती दीक्षा में सहायक बनकर अपनी सम्पत्ति का सदुपयोग करते थे। कितने ही गरीब स्वधर्मी भाइयों का भरण-पोषण कर स्वधर्मी वात्सल्य का प्रगाढ परिचय देते थे। आपकी सन्तान में केवल एक ही कन्या थी। पाठशाला में प्रतिदिन पधार कर बालक-बालिकाओ को नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा देते और संस्कार डालते थे। आपसे संस्कार पाये हुए अभी भी अनेक नागरिक है जिन का जीवन नैतिक एवं धार्मिक दृष्टि से बड़ा ही सुन्दर है।

सं० १९७६ में संथारा-संलेखनायुक्त पडित मरण पाकर आप स्वर्गवासी हुए।

छोगमलजी उम्मेदमलजी छाजेड़, रतलाम

ये दोनो भाई रतलाम के निवासी थे। दोनो में प्रेम ऐसा था कि आप लोग इन्हे कृष्ण और बलभद्र के नाम से कहा करते थे। शरीर के वर्ण से भी एक श्याम और दूसरे गौर वर्ण थे। दोनो भाइयो के कई वर्षो से चारो खद के त्याग थे। एक साल में १५१ छकाया करते थे और ५१ द्रव्यके उपरान्त यावत् जीवन के त्याग थे।

छोटे भाई छोगमलजी का सन् १९७३ में स्वर्गवास हुआ। बड़े भाई उम्मेदमलजी का स० १९७९ में कार्तिक सुदी ९ को स्वर्गवास हुआ। आपने अन्त समय में पूज्य माधव मुनिजी से सथारा ग्रहण किया था।

श्री नाथूलालजी सा० सेठिया, रतलाम

आप एक होनहार और उत्तम व्यवित है। आपका जन्म सं० १९६१ में हुआ था। आपके पिताजी श्री हीरा-

लालजी सा० भी सज्जन पुरुष एव उत्साही थे तथा आपकी धर्म-भावना अत्यन्त प्रशसनीय थी। आप प्रतिवर्ष अपने परिवार को लेकर मुनि-महात्माओ के दर्शनार्थ पधारते थे। अपने पिताजी के धार्मिक संस्कार पुत्र में भी उत-रना स्वाभाविक है। अपनी अल्पवय में ही आपने व्यवसाय सँभाला और उसे बढाना प्रारम्भ कर दिया। सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्रो में आपने बहुत अधिक लोकप्रियता प्राप्त की है। आप बड़े ही मिलनसार, हँसमुख एवं प्रतिभासम्पन्न है। आपने स्थानीय संघ के कार्यो में तन-मन-धन से सहयोग दिया और दे रहे है। आपकी धार्मिक भावना भी बहुत अच्छी है। प्रतिदिन सामायिक व्रत में आप दृढ हैं। सन्त-मुनिराजो की सेवा-भक्ति में आप सदा अग्रसर रहते है। आप रतलाम श्री सघ के अध्यक्ष है। इस कार्य का बडी योग्यतापूर्वक आप संचालन कर रहे है।

श्री वालचन्दजी सा० श्रीश्रीमाल, रतलाम

आप रतलाम के निवासी, धर्म-प्रेमी, नित्यनियम में चुस्त, शास्त्रो के चिन्तन-मनन तथा पठन-पाठन में उत्सुक

दृढ श्रद्धावान् श्रावक हैं। स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज सा० के आप अनन्य भक्त हैं। वर्षों तक श्री हितेच्छु श्रावक मण्डल का काम बडी योग्यता एव दक्षता के साथ सँभाला था। मण्डल के तथा धार्मिक परीक्षा बोर्ड के आप मानद् मन्त्री रहे। इस मण्डल से आप द्वारा प्रकाशित, सम्पादित एव लिखित साहित्य अपना अग्रिम स्थान रखता है। संवत् १९६५ में कॉन्फ्रेन्स ऑफिस में दो वर्ष तक रहकर अपनी सेवाएँ आपने अर्पित की थी। अजमेर सम्मेलन के समय Treasurer के रूप मे काम सँभाला था। कॉन्फ्रेन्स के तत्कालीन सभापति श्री हेमचन्दभाई के हाथो से कॉन्फ्रेन्स की तरफ से आपको स्वर्ण-पदक प्रदान किया था। मण्डल ने आपको सन्मान-थैली दी थी वह आपने मण्डल को भेंट कर दी।

आप इस समय ६७ वर्ष के है। धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा सराहनीय है। आदर्श श्रावक है।

श्री धूलचन्दजी भंडारी, रतलाम

श्री भडारी का जन्म सन् १८७५ में हुआ था। आप एक निर्धन कुटुम्ब में उत्पन्न हुए थे, परन्तु अपने पुरुषार्थ से आपने सवालाख रुपये की सम्पत्ति पैदा की थी। आपने अपने जीवन में ८५,००० हजार रुपये से अधिक का दान किया। श्री धर्मदास जैन मित्र मंडल के तो आप सर्वेसर्वा थे। मंडल की स्थापना तथा प्रगति में आपका प्रमुख हाथ था। उनकी हरएक प्रवृत्ति में आप सक्रिय भाग लेते थे।

धार्मिक लगन आपकी प्रशंसनीय थी। आपकी तर्कशक्ति भी उल्लेखनीय थी। थोकड़ो तथा सूत्रो का आपको अच्छा ज्ञान था। अन्त में आप ता० ३१-३-१९४० को ६५ वर्ष की उम्र में स्वर्गवासी हुए।

श्री मोतीलालजी सा० श्री श्रीमाल, रतलाम

आपका जन्म सं० १९४९ में हुआ था। आपके पिता श्री रिखवदासजी श्रीश्रीमाल वहुत ही धर्मात्मा और ज्ञानी थे। यद्यपि आपका व्यावहारिक शिक्षण नगण्य ही हुआ तथापि आप प्रकृति के सौम्य, शान्त और कोमल हैं। धर्म पर आपकी प्रगाढ श्रद्धा है। वाल्यावस्था में ही आपने जमींकन्द का त्याग कर दिया। रतलाम में जैन ट्रेनिंग कॉलेज जव प्रारम्भ हुआ तव आपके भ्राता श्री वालचन्दजी सा० ने आपको इस कॉलेज में प्रविष्ट करा दिया। एकाग्रता से शिक्षण प्राप्त कर आपने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो त्रैवार्षिक महोत्सव में श्री रतलाम नरेश के कर-कमलो से स्वर्ण-पदक प्रा त किया। उक्त कॉलेज में कुछ समय तक सुपरिन्टेण्डेण्ट का भी कुशलता से काम किया। शिक्षा में अभिरुचि होने के कारण आपने अभ्यास जारी रखा और क्रमश वढते हुए वी० ए० पास कर लिया। कई वर्षों तक श्री धार्मिक परीक्षा वोर्ड, रतलाम के मन्त्रीपद पर आपने कार्य करके समाज में धार्मिक शिक्षण के महान् कार्य में हाथ वँटाया।

श्री सेठ हीरालालजी सा० नांदेचा, खाचरौद

आप श्रीमान् सेठ स्वरूपचन्दजी सा० के पौत्र तथा श्री प्रतापचन्दजी सा० के सुपुत्र हैं। आपका मूल निवास धार

जिले में मुलथान गाँव है परन्तु आपकी अल्पायु में ही दादाजी एवं पिताजी का स्वर्गवास होने से खाचरौद स्थित अपनी दुकान को सँभालने के लिए आपकी माताजी आपको लेकर खाचरौद आई और तभी से आप यहाँ रहने लगे। आपकी शिक्षा आदि की देखरेख श्री इन्दरमलजी सा० कोठारी

के सरक्षण में हुई। आपकी वुद्धि वडी तीक्ष्ण थी अतः स्वल्प समय में ही शिक्षा ग्रहण कर अपना फैला हुआ कारोवार सँभाल लिया। आप वड़े ही मिलनसार, वुद्धिमान् तथा हँसमुख सज्जन हैं। श्री जैन हितेच्छु श्रावक मण्डल के आप अध्यक्ष के रूप में कई वर्ष तक सेवा देते रहे। इसके अतिरिक्त कॉन्फ्रेन्स की मध्यभारत शाखा के आप वर्तमान में अध्यक्ष हैं।

समाज मे शिक्षा-प्रचार के कार्य में आप वडी दिलचस्पी के साथ भाग लेते हैं और शिक्षा संस्थाओ तथा छात्रो को समय-समय पर प्रोत्साहन देते रहते हैं। खाचरौद में चलने वाले श्री जैन हितेच्छु मण्डल विद्यालय को उसके प्रारम्भ से लेकर अव तक प्रतिमाह २००) आप देते रहे। अव जव कि यह विद्यालय वन्द हो गया है उसको दी जाने वाली रकम में से प्रतिवर्ष लगभग १०००) निर्धन छात्रो को देकर ज्ञानदान में सक्रिय हाथ वँटाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के सुख-दुख के प्रसगो पर उपस्थित होकर उसके सुख-दुख में हाथ वँटाते हैं।

इस प्रकार क्या सामाजिक और क्या सार्वजनिक क्षेत्रो में आपकी लोकप्रियता "दिन-दूनी रात चौगुनी" वढ रही है।

श्री चाँदमलजी सा० पितलिया, जावरा

आप श्रीमान् सेठ अमरचन्द जी सा० के लघुभ्राता सेठ वच्छराज जी के सुपुत्र थे। स० १९४३ में आप का जन्म हुआ था। आप के पिता जी का अल्प आयु में ही देहावसान हो जाने के कारण आपकी शिक्षा आदि का प्रवन्ध सेठ अमरचन्द जी सा० को ही करना पडा। आप वडे ही उत्साही-सेवाभावी सज्जन थे। कॉफ्रेंस का दूसरा अधिवेशन रतलाभ में हुआ था तव आप ने वडी सफलता के के साथ खजांची का काम किया। इसके अतिरिक्त कॉफ्रेंस की मालव प्रान्तीय शाखा के कई वर्ष तक सेक्रेटरी के रूप में समाज के लिए अपनी सेवाएँ समर्पित कीं। जावरा संघ के आप अग्रगण्य नेता थे तथा प्रत्येक शुभ कार्य में आपका सहयोग रहता था। प्रत्येक व्यक्ति के प्रति आपका व्यवहार सराहनीय रहता था। सं० १९९५ में स्वर्गीय पूज्य श्री श्रीलालजी म० सा० चातुर्मास कराकर जावरा संघ को यशस्वी वनाया था। इस प्रकार सामाजिक तथा धार्मिक

क्षेत्रो को अपने सुकृत्यो से प्रभावित करते हुए मालवा की इस महान् विभूति का सं० १९८३ में स्वर्गवास हो गया।

फूल नही रहा किन्तु उसकी सुवास अब तक विद्यमान है।

श्री सुजानमलजी मेहता, जावरा

आप जवरा के निवासी श्रीमान् सौभागमल जी सा० मेहता के सुपुत्र है। आप को हिन्दी, उर्दू, अग्रेजी और गुजराती का अच्छा ज्ञान है। आप कपड़े के व्यापारी एव कमीशन एजेन्ट है।

श्री सुजानमलजी मेहता
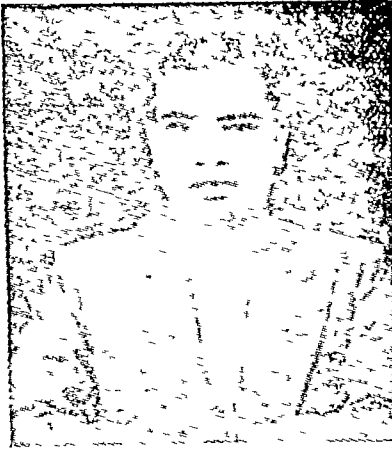
सामाजिक और धार्मिक प्रवृत्तियो और गति-विधियो के आप प्रमुख आधार है। आप वर्तमान में श्री वर्द्धमान जैन युवक मण्डल के अध्यक्ष, अखिल भारतीय श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेंस एव सघ ऐक्य सचालक समिति की मध्यभारत एव मेवाड प्रान्तीय शाखा के मानद् मन्त्री व स्थानीय श्रावक सघ के मन्त्री है। नगरपालिका के आप सम्मानित निर्वाचित सदस्य है। इनके अतिरिक्त अनेक सामाजिक, धार्मिक तथा स्थानीय संस्थाओ और समितियो के अध्यक्ष, मन्त्री तथा सदस्य है।

इनके अतिरिक्त, जावरा क्लॉथ मर्चेट्स असोसिएशन के मन्त्री, नगर काग्रेस के कोषाध्यक्ष व अन्य कई सस्थाओ के पदाधिकारी व प्रमुख कार्यकर्ता रहे हैं।

श्री सौभाग्यमलजी मेहता

आपने कई वार कॉन्फ्रेंस द्वारा आयोजित डेपुटेशनो में सम्मिलित हो कर समाज-सेवा में पूर्णरूप से तन-मन-धन से सक्रिय सहयोग दिया है और दे रहे है।

पिछले तीन वर्षो से कान्फ्रेन्स की प्रान्तीय शाखा के मानद् मन्त्री के रूप में अथक परिश्रम किया है। अभी-अभी मध्यभारत एवं मेवाड़प्रान्तीय श्रावक सम्मेलन आयोजित कर आगामी भीनासर के अधिवेशन की पृष्ठभूमिका तैयार कर महान् कार्य किया है।

समाज को आप से बडी-बड़ी आशायें है, जिसका पूर्वाभास हमें अभी से होने लगा है।

श्री चम्पालाल जी सा० कोचेटा, जावरा

आज के इस दूषित वातावरण में धर्मानुराग और सच्ची समता का जीवन देखना हो तो श्री चम्पालाल जी सा० को देख ले। निर्धन परिवार में जन्म लेकर आपने आशातीत सफलता के साथ व्यापार मे प्रगति की। अर्थ-सचय ही आपके जीवन का उद्देश्य नही है। अब तो आपने जीवन का समस्त भाग धर्माराधन में लगा दिया है। आप प्रतिदिन पॉच सामायिक और प्रतिक्रमण करते है। गर्म पानी का सेवन करते है और एक ही समय भोजन करते है। भोजन-पदार्थो में भी जीवन के लिए अनिवार्य वस्तुओ के अतिरिक्त सभी वस्तुओ का त्याग कर दिया है। इस प्रकार आपका जीवन पूर्णरूप से सयत-नियमित एव मर्यादित है। आप अनेक सस्थाओ के संरक्षक एवं समाज के अग्रगण्य व्यक्ति हैं। श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावकसघ, जावरा के आप मनोनीत अध्यक्ष हैं।

आप के सुयोग्य पुत्रो में श्री सौभाग्यमल जी कोचेटा, श्री राजमलजी कोचेटा B A L-L B एव श्री हस्तीमल जी कोचेटा तीनो ही सामाजिक कार्यो में प्रमुखता से भाग लेते हैं। श्री सौभाग्यमल जी सा० तो समाज के सुयोग्य लेखक और वक्ता हैं।

श्री केशरीचन्दजी भण्डारी, इन्दौर

आप देवास के निवासी थे और बाद में इन्दौर रहने लग गये थे। स्थानकवासी जैन समाज के कर्मवीर और उत्साही कार्यकर्ताओं मे से आप एक थे। कॉन्फरन्स के प्रत्येक अधिवेशन में आप सम्मिलित होते थे। आप बड़े अनुभवी, सरल स्वभावी, धर्मात्मा और विद्वान थे। आप को प्राचीन बातो की खोज का बडा शौक था। आप ने अग्रेजी में एक Notes on the Sthanakwası Jain पुस्तक भी लिखी थी। देवास समाचार' नामक पत्र का आप ने सम्पादन भी किया था। अर्धमागधी शब्द सग्रह का कार्य आप ने ही सर्व प्रथम आरम्भ किया था। बाद में इस कार्य के महत्व को कान्फरन्स ने समझा और उसे शतावधानी प० मुनि श्री रत्नचन्द जी म० के सम्पादकत्व में सम्पन्न कराया।

अर्धमागधी कोष के निर्माण तथा प्रकाशन में आपका विशिष्ट हाथ रहा है।

अन्त समय में आप को लकवा हो गया था। कई उपचार कराये गये, पर ठीक न हुआ और आपका स्वास्थ्य गिरता ही चला गया। स० १९८१ श्रावण सुदी ५ को आप स्वर्गवासी हुए। आप के बाद अर्धमागधी कोष का प्रकाशनकार्य पूर्ण किया था।

श्री भीमसिंहजी सा० चौधरी, देवास

आप श्रावक सघ के अध्यक्ष है। आप वकील हैं और राजघराने में आपका बडा सम्मान है। केवल जैन समाज मे ही नहीं अन्य सभी सामाजिक सस्थाओ में आप किसी-न किसी रूप में भाग लेते है। आप उत्साही एवं मिलनसार कार्यकर्ता हैं।

श्री मोतीलालजी सा० सुराना, देवास

आज श्रावक सघ के मन्त्री, नगर कॉंग्रेस के अध्यक्ष मण्डी कमेटी के अध्यक्ष, जिला सहकारी बैंक के डायरेक्टर तथा अनेक जिला और नगर की सस्थाओ के प्रमुख पदाधिकारी है। रामपुरा, इन्दौर तथा अमृतसर की कई सस्थाओ में भी आप अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान कर चुके हैं। नि.स्वार्थ सेवा ही मानो आपके जीवन का लक्ष है। राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक सस्थाओ में आपका सदैव एक विशिष्ट स्थान रहा है।

श्री चादमलजी धनराजजी जैन, देवास

सेठ लक्ष्मीचन्द जी केशरीमलजी फर्म के ये उभय बन्धु धार्मिक कार्यो में सदैव आर्थिक सहयोग प्रदान करते है। आप दोनो ही स्थानीय कई सस्थाओ के सम्माननीय पदाधिकारी हैं।

सेठ रतनलालजी मुन्नालालजी, देवास

वृद्धावस्था होने पर भी सदैव लगन के साथ धार्मिक कार्यों में उत्साहपूर्वक तन-मन-धन से सहयोग देते हैं। आपके सुपुत्र माणकलाल जी भी उत्साही कार्यकर्ता है।

श्री किसनसिहजी, लक्ष्मणसिहजी, दौलतसिहजी, देवास

तीनो बन्धु सामाजिक कार्यो में अदम्य उत्साह के साथ भाग लेते हैं। सुधारक तथा शास्त्रो के ज्ञाता हैं तथा राज्य में भी आप लोगो का सम्मान है।

श्री शिवसिहजी सराफ, देवास

आपका जीवन धर्म-नियमो के अनुसार बडा ही नियमित है। आडम्बररहित सदैव धार्मिक कार्यो मे आप ठोस मदद देते है।

सेठ राजमल जी हीरालालजी, देवास

आप धार्मिक कार्यों में अदम्य उत्साह से भाग लेते है तथा तन-मन-धन से सहयोग देते हैं।

श्री नन्नूमलजी, देवास

उत्साही एवं मिलनसार सामाजिक कार्यकर्ता हैं। सदैव धार्मिक कार्यो मे हर प्रकार से सहयोग देते है।

श्री विजयकुमारजी जैन, देवास

अठारह वर्षीय प्रतिभाशाली यह छात्र सदैव धार्मिक तथा सामाजिय प्रवृत्तियो मे उत्साह के साथ सहयोग देते हैं। साहित्यिक तथा उत्कृष्ट चित्रकार है।

श्री केशरीमल जी, शिवसिह जी, रतनलाल जी, रणबहादुरसिह जी, राजमल जी, चैनसिह जी आदि सज्जन भी सदैव उत्साह के साथ धार्मिक प्रवृत्तियो मे सहयोग देते है।

श्री पारसचन्दजी सा० मुथा, उज्जैन

आपका जन्म सन् १६२१ मे हुआ। आप प्रसिद्ध समाज-सेवी तथा श्रीमन्त छोटमल जी मुथा के सुपुत्र हैं। अपन पिता के समान ही धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों म आपका भी प्रमुख हाथ रहता है। आप एक कमठ नवयुवक कार्यकर्ता है किन्तु कभी भी आगे आने का प्रयत्न कही करते। अवन्तिका में आयोजित अखिल भारतीय सर्व धर्म-सम्मेलन की सफलता में आपका योगदान महत्त्वपूर्ण रहा। समाज को और अधिक सेवाएँ आपसे प्राप्त होने की आशा है।

श्रीमान् सेठ छोटेमलजी सा० मुथा, उज्जैन

आपका जन्म संवत् १६४५ फागुन सुदी २ को हुआ था। वाल्यावस्था से ही अध्ययन की ओर आपकी अत्यन्त रुचि थी। चौदह वर्ष की अवस्था में ही इंग्लिश सीखने के लिए एक पुस्तिका आपने प्रकाशित कराई थी, जिसका प्रचार उन दिनो में अत्यधिक हुआ था। किशोरावस्था में ही आपके पिता एव बडे भाइयो का स्वर्गवास हो गया था। उस समय आपकी उम्र केवल १५ वर्ष की थी। आपने अपनी कुशाग्रबुद्धि से व्यापार कर प्रसिद्धि प्राप्त की थी। कान्फ्रेन्स के मोरवी और रतलाम के अधिवेशनो में आपका काफी सहयोग रहा था। धर्मध्यान की ओर आपका विशेष लक्ष था। गत चार वर्षों मे अस्वस्थ रहते हुए भी मुनिराजो की बड़ी भक्ति-भाव से सेवा करते थे। आपका स्वर्गवास संवत् २०१२ असौज वदी ६ को हुआ।

श्री मानमलजी मुथा, रतलाम

आप सेठ श्री उदयचन्द जी मुथा के सुपुत्र हैं। समाज एव धर्म के प्रति आप अत्यन्त कर्त्तव्यनिष्ठ है। सर्व धर्म सम्मेलन उज्जैन में आपका सहयोग उल्लेखनीय रहा है।

❖ ❖ ❖

श्री लक्ष्मीचन्दजी सा० रांका, शुजालपुर (म० भा०)

आप स्थानकवासी समाज के अग्रणी श्रावक हैं। आपका समाज के दानवीरो में प्रमुख नाम है। आपने अपना निजी भवन कन्या पाठशाला को दे दिया है जिसकी लागत करीब २० हजार रु० है। आपका खानदान बडा ही यशस्वी है। लेन-देन का व्यापार होता हे। आप सुप्रसिद्ध व्यापारियो में से हैं।

❖ ❖ ❖

श्री सौभाग्यमलजी जैन राजस्व-मन्त्री, मध्यभारत

श्री सौभाग्यमल जी जैन का जन्म मालवा प्रदेश के ऐतिहासिक नगर शुजालपुर के एक सम्पन्न परिवार में हुआ। बाल्यावस्था में आपका लालन-पालन बडे लाड-चाव से होने पर भी सामाजिक कार्यों की ओर आपकी अभिरुचि उसी समय से स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगी थी। सर्वप्रथम सवत् १९२७ में आप श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेन्स के अधिवेशन बीकानेर में सम्मिलित हुए। उनके पश्चात् सन् १९३३ में जैन कॉन्फ्रेन्स के अजमेर अधिवेशन में फिर १९४९ में मद्रास अधिवेशन में सम्मिलित हुए, जैन-समाज सम्बन्धित कार्यों मे अवसर आने पर आपकी सेवायें सदैव समर्पित रही—धार्मिक प्रश्नो पर आप उदार विचार के है। सन् १९३० से आप राष्ट्रीय प्रवृत्तियो और कार्यक्रमो में सक्रिय भाग लेने लगे। आपने वकालत परीक्षा पास की और सन् १९३१ से शुजालपुर में ही वकालत शुरू कर दी। आपकी गणना जिले के सफल वकीलो में की जाती रही है।

सामाजिक प्रवृत्तियो की ओर रुचि आपकी विशेषतया है। अनेक सामाजिक संस्थाएँ आपके मार्ग-दर्शन में चल रही है। आप काग्रेस की मुकामी और जिला कमेटियो के अध्यक्ष तो रहे ही, मध्यभारत प्रादेशिक समिति की कार्यकारिणी के भी सदस्य रहे और मध्यभारत-निर्माण के बाद मध्यभारत प्रान्तीय काग्रेस कार्यकारिणी के सदस्य भी रहे हैं।

विधान सभाओ के सम्बन्ध में आपका दीर्घकालीन अनुभव है। सन् १९४५ में आप ग्वालियर राज्य धारा-सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। धारा-सभा-दल की ओर से आप डिप्टी लीडर चुने गये। बाद को राज-सभा तथा प्रजा सभाके एक हाउस हो जाने के कारण आप प्रजा सभा के सदस्य रहे। मध्यभारत निर्माण के समय भी जो धारा-सभा बनी, उसके भी आप पुन सदस्य चुने गये। इस प्रकार सन् १९४५ से आप लगातार धारा-सभा के सदस्य रहे है, जिससे ग्वालियर राज्य और बाद में मध्य-भारत की विधान-सभा में आपकी सेवाओ से शासन के कार्य की प्रगति मे बडी सहायता मिली है। आप अपने राजनीतिक जीवन में गुटबन्दी और पारस्परिक वैमनस्य-पूर्ण कार्यो से सर्वथा अलग रहे और बहुत-कुछ इसी कारण से आप सन् १९५१ तक मन्त्रीपद के निमन्त्रण को अस्वीकार करते रहे।

मध्यभारत-निर्माण के पश्चात् मध्यभारत धारा-सभा का निर्माण हो जाने पर आप उसमें धारा-सभा के प्रथम कार्यवाहक अध्यक्ष रहे। मार्च, १९५२ में मध्यभारत नवनिर्मित विधान-सभा के उपाध्यक्ष पद पर आप निर्वाचित हुए थे और इसके बाद आपने मन्त्री-मण्डल में सम्मिलित हो जाने से त्यागपत्र दे दिया।

श्री सौभाग्यम लजी जैन सफल वकील, कर्मठ कार्यकर्ता और प्रसिद्ध साहित्य-प्रेमी है। आप जितने अधिक मौन और सादगीप्रिय है उतने ही अधिक कर्मण्य है। इसी कारण आप स्वतन्त्र भारत के प्रथम चनावो मे काग्रेस के आदेश पर अपने निवास-स्थान शुजालपुर से चुनाव में खडे न होकर आगरा से लडे हुए और वहाँ के साथी कार्यकर्ताओ के सहयोग से रामराज्य परिषद्, जनसघ और समाजवादी उम्मीदवारो को हराकर आप विजयी हुए। मध्यभारत के राजनीतिक क्षेत्र में आप अधिक मौन, सजीदगी और सादगीप्रिय है तथा अपनी कर्मण्यता के लिए प्रसिद्ध है। आप उच्च कोटि के साहित्य-प्रेमी है। हिन्दी तथा अग्रेजी के साथ-साथ आप उर्दू और फारसी भाषाओ के भी ज्ञाता है। आपकी अध्ययनशीलता तथा साहित्यानुरागी होने का पता पुस्तको के उस विशाल संग्रह से चलता है, जिसमें साहित्य और अन्य विषयों के उत्तमोत्तम ग्रन्थ सग्रहीत है। आप साहित्यकारो को निरंतर प्रोत्साहित करते रहते है, आपका जीवन जितना अधिक सादगीपूर्ण है, स्वभाव उतना ही अधिक सरल है, जिसने आपको जन-जीवन में लोकप्रिय बना दिया है।

से भारी बहुमत और सबसे अधिक वोट्स प्राप्त करने वाले सदस्य है। विधान सभा के चीफ विप (मुख्य सचेतक) है। आप भोपाल मध्यभारत राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के उपाध्यक्ष है। आपके यहाँ कृषि, लेन-देन थोकफरोश आदि हजारो का व्यापार चल रहा है। सामाजिक क्षेत्र में और धार्मिक क्षेत्र में भी आप अग्रणी है। तन,मन, एवं धन से पूर्ण सहयोग देते है। सब कुछ होते हुए भी आपका जीवन सादगीमय है।

श्री प्यारचन्दजी सा० रांका, सैलाना

आपका जन्मस्थान जावरा (मालवा) है किन्तु सैलाना वाले सेठ ओकारलालजी के यहाँ आप गोद आए है। आपका धर्म-प्रेम [illegible] है। स्थानकवासी जैन-संघ, सैलाने के [illegible] आप अग्रभाग आप अग्रग[illegible] लेते रहते [illegible]

ओर का रेलवे आदि का खर्चा देकर ले गए थे। अनेक धर्म-संस्थाओ को आपकी ओर से सहायता मिली है और मिलती रहती है। आपकी ओर से धार्मिक साहित्य भी [illegible] स्वरूप प्रकाशित होता रहता है।

'श्रमणोपासक जैन पुस्तकालय' आप ही की उदारता का फल है। पुस्तकालय वाला भवन आपके स्व० पूज्य पिता श्री द्वारा धर्मध्यानार्थ संघ को दिया हुआ है।

सैलाना में बाहर से आने वाले धर्म-बन्धुओ का आतिथ्य कम-से-कम एक बार तो आपके यहाँ होता ही है। यह सब होते हुए भी आप में निरभिमानता तथा विनयशीलता इतनी है कि जो अन्यत्र बहुत कम मिलेगी।

श्री रतनलालजी सा० डोसी, सैलाना (मध्य भारत)

आप समाज के प्रसिद्ध तत्वज्ञ चर्चावादी, साहित्य प्रणेता एव निष्ठावान चिन्तन-मननशील सेवाभावी दृढ़ आस्थावान कार्यकर्ता है। धार्मिक-क्षेत्र में—विशेषतया सन्त मुनिराजो में—आई हुई अथवा आती हुई शिथिलताओं के प्रति आपका मानस अत्यन्त क्षुब्ध है। आप कट्टर सिद्धान्त के अनुसार चलने वाले सिद्धान्तवादी है, जिसमें काल-मर्यादा का हस्तक्षेप भी अवांच्छनीय है। नवीन-सुधारो के नाम पर जो विकार धार्मिक-क्षेत्र में अकुरित हो रहे है—उनके उन्मूलन के लिए आपकी लोह-लेखनी सदैव तैयार रहती है।

आप 'सम्यक् दर्शन' पत्र का संचालन तथा सम्पादन कर रहे है। कहना न होगा कि इस पत्र ने समाज में अपना अनेरा स्थान बना लिया है। आपकी मान्यता है कि निर्ग्रन्थ धर्म में और इसके सिद्धान्तो में हम छद्मस्थ किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं कर सकते। समाज के धार्मिक क्षेत्रो में पनपने वाली शिथिलताओ के लिए आप 'ला[illegible] बत्ती' है।

प्रसिद्ध चर्चावादी होने के नाते चर्चा में आपको ब[illegible] आनन्द आता है। लोकाशाहमत समर्थन जैनागम [illegible] मूर्ति-पूजा, सोनगढी सिद्धान्त पर एक दृष्टि आप द्वारा लिखित ऐसे ग्रन्थ है जो किसी खास चर्चा से सम्बन्धित है। आप द्वारा लिखित तथा सम्पादित धार्मिक साहित्य अ[illegible] प्रकाशन-सस्थाओ द्वारा प्रकाशित हुआ है।

श्री डोसीजी समाज तथा धार्मिक जगत् के एक [illegible]

आत्मविश्वास आप में ऐसा गजब का था कि एक बार आपने अपने एक भयकर गाठ का उपचार भाप द्वारा कर लिया, जिसके लिए डाक्टर शल्य-चिकित्सा अनिवार्य वतलाते थे। भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेने के लिए आपने श्री ब्रिजलालजी बियाणी को अपनी इच्छा प्रकट की थी किन्तु आपकी अवस्था को देखकर श्री वियाणीजी ने मना कर दिया।

अपने अन्तिम समय में आपने औषधी ग्रहण नही की अपितु संथारा कर अपना प्राणोत्सर्ग किया। आजके देहावसान पर आपके सुपुत्रो ने हजारो रुपये सुकृत कार्य के लिये निकाले।

निस्सन्देह आप एक आदर्श नारी थी, जिसके जीवन के कण-कण से हमें वहुत कुछ सीखने को मिलता है।

श्री देवेन्द्रकुमारजी जैन, शाजापुर

आप श्रीमान् गेंदमल जी पोरवाड के पुत्र तथा श्री वर्धमानजी सराफ के पौत्र हैं। आपने अल्पआयु में ही M.com LL B तथा साहित्यरत्न की उपाधियाँ प्राप्त कर ली हैं। आप श्रम-विधान तथा रशियन भाषा के भी विशेषज्ञ हैं। इस समय आप मध्य भारत के वित्तमत्री माननीय श्री सौभाग्यमलजी जैन के पूर्व-अभिभाषण-कार्यालय, शाजापुर को सुचारुरूप से चला रहे हैं। इसके साथ ही आय-कर विक्रय-कर तथा श्रम-विधान सम्बन्धी गुत्थियो को सरलता से सुलझा रहे हैं। इतने सुरक्षित होते हुए भी आप अपने धर्म के पूर्ण आस्थावान तथा विशेषज्ञ हैं।

श्री राजमलजी, पोरवाल पीपल (म० भा)

आप श्री सेठ पदमसिंहजी, के सुपुत्र हैं। आप स्थानकवासी समाज में अग्रगण्य श्रावको में से है। आपकी मातेश्वरी आनन्दबाई का जीवन धर्मध्यान, तप-जप व दानादि में ही व्यतीत हुआ है। आपके सुपुत्र श्री प्रकाशचन्द्र जी भी आप ही की तरह धर्मप्रेमी हैं। आप वडे ही योग्य तथा विद्वान् हैं। आप समाज सेवा में अच्छा रस लेते हैं और म्युनिसिपेलिटी-न्याय पचायत में और समाज मे मत्री पद संभाले हुए हैं। आपका जीवन सादगी व सयम में व्यतीत होता है। आप लोकप्रिय सेवक हैं। आप क्लोथ-मर्चेंट हैं और लेन-देन का भी व्यापार करते हैं।

श्री आष्टा निवासी श्री फूलचन्दजी सा० वनवट

आप स्थानकवासी समाज के प्रमुख कार्यकर्ता हैं। आप समाज में वडे गौरवशाली, सुदृढ धर्मी, समाज भूषण एव अदम्य उत्साही व्यक्ति हैं। आपके स्व० पिता श्री का नाम श्री प्रतापमलजी वनवट था। शहर में आपकी काफी ख्याति फैली हुई है। राज्यकीय कार्यो मे आज भी और पहले भी प्रभावशाली स्थान रहा है। आपने चन्दनमल जी कोचर-फलौदी (मारवाड) निवासी, स्नानक जैन गुरुकुल व्यावर को दत्तक पुत्र के रूप में लिया है। आप भी पूर्ण प्रभाव-शाली नवयुवक हैं।

श्री चन्दनमलजी वनवट, आष्टा (भोपाल)

आपका जन्म स्थान खीचन फलौदी (मारवाड) है। आपका शैक्षणिक स्थल श्री जैन गुरुकुल, व्यावर करीव सात वर्ष रहा है। वाल्यावस्था से ही आपकी प्रतिभा गुरुकुल परिवार मे चमकने लगी थी। आकी वक्तृत्वशक्ति, कवित्व शक्ति, लेखनकला, संगीत कला और मिलनसारिता आदि-आदि चेतनाएँ गुरुकुल समाज में चारचाँद लगाये हुई थीं। कौन जानता था कि कोई साधारण स्थिति से वढकर एक ऐश्वर्य-सम्पन्न घर का मालिक वन जायेगा। किन्तु "पूत के लक्षण पालने में ही नजर आने लगते हैं।" अत यही कहावत आपको भली प्रकार चरितार्थ करती है।

किस्मत ने जोर मारा। पुण्य का तकाजा था अत आष्टा निवासी श्री सेठ फूलचन्दजी सा० वनवट व्यावर आकर और सब प्रकार तसल्ली करके आष्टा ले आए। गोद सम्वन्धी सारी रस्में अदा की गई। वहाँ भी जाकर आपने अपनी सुवास विखेरनी शुरू कर दी। जिस सेवक के अन्त करण में जाति, समाज और देश सेवा की लग्न लहरें मारती रहती हैं वह कभी और कहीं भी शान्त होकर नहीं बैठ सकता। यहाँ के कारोवार को योग्यता पूर्वक संभालते हुए आपने देश के कार्यों में भी हाथ बँटाना प्रारम्भ कर दिया और अल्पकाल में ही आप प्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं की गणना में आगये। आज आप भोपाल तथा मध्यभारत की कांग्रेस कार्यसमिति के सदस्य हैं। जिला भोपाल कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य तथा उपसभापति भी रह चुके हैं। भोपाल विधान सभा के आप सदस्य हैं और आष्टा तहसील

श्री केसरीमलजी मगनमलजी रांका, शुजालपुर, स० भा०

आप स्थानकवासी समाज में प्रमुख कार्यकर्ता है। आपके सुपुत्र का नाम श्री बसन्तीलालजी है। आप भी अपने पिता श्री की तरह ही सुयोग्य एव विद्वान् है। मंडी में आपके क्लोथ मर्चेन्ट और आढत का कार्य अच्छा चल रहा है। प्रतिवर्ष हजारो का व्यापार होता है। आप एक उच्चकोटि के दानी भी है। आपके घर से कोई खाली हाथ नहीं जाता। आपका पूर्ण सादगीमय जीवन है। समाज की सेवा में आप तन, मन, और धन से हाथ बँटाते है और अपना अहोभाग्य समझते है। समाज को आप जैसे कर्मठ दानियो से भविष्य मे पूर्ण आशाएँ है।

श्री किशनलालजी सा० चौधरी, पोरवाल

आपका शुभ जन्म स० १९५५ की कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी को शुजालपुर में हुआ था। आपके पिता जी श्री का शुभ नाम गिरनारसिंह जी है। आप स्था० समाज के प्रमुख व्यक्तियो में से है। आपके चार सुपुत्र है जिनके क्रमश। नाम श्री मोतीलालजी, श्री हुक्मीचन्दजी, श्री राजेन्द्रकुमारजी, और श्री शान्तिकुमारजी है। चारो ही सुपुत्र धर्मशील एव उत्साही कार्यकर्ता है। आपके पूर्वज स्व० श्री मन्सुखलालजी ने एक मकान बनवाकर स्थानक के लिए स्थानीय श्री सघ को भेंट कर दिया था जिसकी लागत आज अनुमानतः ८०००) रु० समझी जाती है। अब वह श्री व० स्था० जैन श्रावक सघ के अधिकार में है। आपके पूर्वजो से ही सस्थाओ को उदारतापूर्वक दान देने की प्रणाली चली आ रही है। आपने जनता की सेवा खूब तन-मन से की। जिसके उपलक्ष्य में आपको ग्वालियर सरकार की ओर से एक पौशाक और सनद सर्टिफिकेट दिया गया। आपकी सादगी एवं उदारता लोकप्रिय है। आप मधुरभाषी भी है। समाज के हर कार्य में दक्ष है। वर्तमान में आप कोषाध्यक्ष हैं।

श्री मनसुखलालजी भँवरलालजी पोरवाल गुजराती

आपका शुभ जन्म १९७३ में शुजालपुर ग्राम नलखेड़ा में हुआ था। आपके पिता श्री का नाम श्री पदमसिहजी था। आप स्थानीय स्थानकवासी समाज में प्रमुख व्यक्ति है। आपने एक पुत्र गोद लिया जिनका शुभ नाम संतोषीलालजी है। श्री सन्तोषीलालजी के भी दो पुत्र है जिनके क्रमश. शान्तिलालजी व पोखरमलजी नाम है। आपने अभी अभी सामाजिक कार्यो में धर्मशाला के लिए एक मुश्त ३५०००) रु० देने की भावना अभिव्यक्त की है। आप धनीमानी एवं धार्मिक विचारो के सद्गृहस्थ है। प्रत्येक धर्मकार्य मे दिलचस्पी से काम करते हैं। समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति है। प्रकृति से आप भद्रिक, सन्तोषी, सज्जन और मिलनसार है। हर एक सस्था को खुले दिल से दान देते है।

स्वर्गीया श्री सुन्दरबाई, शुजालपुर

आपका जन्म स० १९२९ में सीतामऊ ग्राम में हुआ था। आप का विवाह शुजालपुर निवासी श्री ओकार लालजी चौधरी के साथ हुआ था। आप में सेवा व त्याग की उच्च कोटि की भावना थी। आपने अपने जीवन में अमीरी और गरीबी के दिन भी देखे थे। गरीबी भी ऐसी कि २-३ पैसो का १५ सेर अनाज पीसती, कपडो की सिलाई करतीं और इस प्रकार ३-४ आने आजीविका के लिए उपार्जन करतीं। विपत्ति के इन कठिन दिनो में भी आप घबराई नहीं। आपका पुरा जीवन एक संघर्ष का जीवन है, दृढ चट्टान के समान आपने अपने जीवन-काल में कठोर-से-कठोर आघात सहे थे।

आप प्रतिदिन निराश्रितो एवं दीन-दुखियो को भोजन कराये विना आप भोजन नहीं करती थीं। रसनेन्द्रिय को वश में करने के लिए दूध में शक्कर के बदले नमक-मिर्च डालकर ग्रहण करती थी।

आप में दयालुता की भावना कैसी थी—यह इस उदाहरण से जाना जा सकता है। एक वार आप तागे में वैठकर कहीं जा रही थीं। रास्ते में तागे वाले ने घोडे को

आत्मविश्वास आप में ऐसा गजब का था कि एक बार आपने अपने एक भयंकर गाठ का उपचार भाप द्वारा कर लिया, जिसके लिए डाक्टर शल्य-चिकित्सा अनिवार्य वतलाते थे। भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेने के लिए आपने श्री ब्रिजलालजी बियाणी को अपनी इच्छा प्रकट की थी किन्तु आपकी अवस्था को देखकर श्री बियाणीजी ने मना कर दिया।

अपने अन्तिम समय में आपने औषधी ग्रहण नही की अपितु सथारा कर अपना प्राणोत्सर्ग किया। आपके देहावसान पर आपके सुपुत्रो ने हजारो रुपये सुकृत कार्य के लिये निकाले।

निस्सन्देह आप एक आदर्श नारी थी, जिसके जीवन के कण-कण से हमे बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

श्री देवेन्द्रकुमारजी जैन, शाजापुर

आप श्रीमान् गेंदमल जी पोरवाड के पुत्र तथा श्री वर्धमानजी सराफ के पौत्र हैं। आपने अल्पआयु में ही M com LL B तथा साहित्यरत्न की उपाधियाँ प्राप्त कर ली हैं। आप श्रम-विधान तथा रशियन भाषा के भी विशेषज्ञ हैं। इस समय आप मध्य भारत के वित्तमंत्री माननीय श्री सौभाग्यमलजी जैन के पूर्व-अभिभाषण-कार्यालय, शाजापुर को सुचारुरूप से चला रहे हैं। इसके साथ ही आय-कर विक्रय-कर तथा श्रम-विधान सम्बन्धी गुत्थियो को सरलता से सुलझा रहे है। इतने सुरक्षित होते हुए भी आप अपने धर्म के पूर्ण आस्थावान तथा विशेषज्ञ हैं।

श्री राजमलजी, पोरवाल पीपल (म० भा)

आप श्री सेठ पदमसिंहजी, के सुपुत्र हैं। आप स्थानकवासी समाज में अग्रगण्य श्रावको में से हैं। आपकी मातेश्वरी आनन्दबाई का जीवन धर्मध्यान, तप-जप व दानादि में ही व्यतीत हुआ है। आपके सुपुत्र श्री प्रकाशचन्द्र जी भी आप ही की तरह धर्मप्रेमी हैं। आप वडे ही योग्य तथा विद्वान् हैं। आप समाज सेवा में अच्छा रस लेते हैं और म्युनिसिपेलिटी-न्याय पचायत में और समाज में मत्री पद सँभाले हुए हैं। आपका जीवन सादगी व संयम में व्यतीत होता है। आप लोकप्रिय सेवक हैं। आप क्लोथ-मर्चेंट हैं और लेन-देन का भी व्यापार करते हैं।

श्री आष्टा निवासी श्री फूलचन्दजी सा० वनवट

आप स्थानकवासी समाज के प्रमुख कार्यकर्ता हैं। आप समाज में वडे गौरवशाली, सुदृढ धर्मी, समाज भूषण एवं अदम्य उत्साही व्यक्ति हैं। आपके स्व० पिता श्री का नाम श्री प्रतापमलजी वनवट था। शहर में आपकी काफी ख्याति फैली हुई है। राज्यकीय कार्यों में आज भी और पहले भी प्रभावशाली स्थान रहा है। आपने चन्दनमल जी कोचर-फलौदी (मारवाड) निवासी, स्नानक जैन गुरुकुल व्यावर को दत्तक पुत्र के रूप में लिया है। आप भी पूर्ण प्रभावशाली नवयुवक हैं।

श्री चन्दनमलजी वनवट, आष्टा (भोपाल)

आपका जन्म स्थान खीचन फलौदी (मारवाड) है। आपका शैक्षणिक स्थल श्री जैन गुरुकुल, व्यावर करीब सात वर्ष रहा है। बाल्यावस्था से ही आपकी प्रतिभा गुरुकुल परिवार मे चमकने लगी थी। आपकी वक्तृत्वशक्ति, कवित्व शक्ति, लेखनकला, सगीत कला और मिलनसारिता आदि-आदि चेतनाएँ गुरुकुल समाज में चारचाँद लगाये हुई थीं। कौन जानता था कि कोई साधारण स्थिति से वढकर एक ऐश्वर्य-सम्पन्न घर का मालिक वन जायेगा। किन्तु "पूत के लक्षण पालने में ही नजर आने लगते हैं।" अत यही कहावत आपको भली प्रकार चरितार्थ करती है।

किस्मत ने जोर मारा। पुण्य का तकाजा था अत: आष्टा निवासी श्री सेठ फूलचन्दजी सा० वनवट व्यावर आकर और सव प्रकार तसल्ली करके आष्टा ले आए। गोद सम्बन्धी सारी रस्में अदा की गईं। वहाँ भी जाकर आपने अपनी सुवास विखेरनी शुरू कर दी। जिस सेवक के अन्त करण में जाति, समाज और देश सेवा की लग्न लहरें मारती रहती है वह कभी और कहीं भी शान्त होकर नहीं बैठ सकता। यहाँ के कारोवार को योग्यता पूर्वक सभालते हुए आपने देश के कार्यों में भी हाथ वँटाना प्रारम्भ कर दिया और अल्पकाल में ही आप प्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं की गणना में आगये। आज आप भोपाल तथा मध्यभारत की कांग्रेस कार्यसमिति के सदस्य हैं। जिला भोपाल कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य तथा उपसभापति भी रह चुके हैं। भोपाल विधान सभा के आप सदस्य हैं और आष्टा तहसील

से भारी बहुमत और सबसे अधिक वोट्स प्राप्त करने वाले सदस्य हैं। विधान सभा के चीफ विप (मुख्य सचेतक) हैं। आप भोपाल मध्यभारत राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के उपाध्यक्ष हैं। आपके यहाँ कृषि, लेन-देन थोकफरोश आदि हजारो का व्यापार चल रहा है। सामाजिक क्षेत्र में और धार्मिक क्षेत्र में भी आप अग्रणी हैं। तन,मन, एवं धन से पूर्ण सहयोग देते है। सब कुछ होते हुए भी आपका जीवन सादगीमय है।

श्री प्यारचन्दजी सा० रांका, सैलाना

आपका जन्मस्थान जावरा (मालवा) है किन्तु सैलाना वाले सेठ ओकारलालजी के यहाँ आप गोद आए है। आपका धर्म-प्रेम अनुकरणीय है। स्थानकवासी जैन-सघ, सैलाने के आप अग्रगण्य है। प्रत्येक धार्मिक-कार्य में आप अग्रभाग लेते रहते है। अजमेर मुनि-सम्मेलन में आपने स्थानीय और आसपास के १५० से भी अधिक भाई-बहनो को एक ओर का रेलवे आदि का खर्चा देकर ले गए थे। अनेक धर्म-संस्थाओ को आपकी ओर से सहायता मिली है और मिलती रहती है। आपकी ओर से धार्मिक साहित्य भी भेंट स्वरूप प्रकाशित होता रहता है।

'श्रमणोपासक जैन पुस्तकालय' आप ही की उदारता का फल है। पुस्तकालय वाला भवन आपके स्व० पूज्य पिता श्री द्वारा धर्मध्यानार्थ सघ को दिया हुआ है।

सैलाना में बाहर से आने वाले धर्म-बन्धुओ का आतिथ्य कम-से-कम एक बार तो आपके यहाँ होता ही है। यह सब होते हुए भी आप में निरभिमानता तथा विनयशीलता इतनी है कि जो अन्यत्र बहुत कम मिलेगी।

श्री रतनलालजी सा० डोसी, सैलाना (मध्य भारत)

आप समाज के प्रसिद्ध तत्त्वज्ञ चर्चावादी, साहित्य प्रणेता एवं निष्ठावान चिन्तन-मननशील सेवाभावी दृढ आस्थावान कार्यकर्ता है। धार्मिक-क्षेत्र में—विशेषतया सन्त मुनिराजो में—आई हुई अथवा आती हुई शिथिलताओ के प्रति आपका मानस अत्यन्त क्षुब्ध है। आप कट्टर सिद्धान्तो के अनुसार चलने वाले सिद्धान्तवादी है, जिसमें काल-मर्यादा का हस्तक्षेप भी अवाच्छनीय है। नवीन-सुधारो के नाम पर जो विकार धार्मिक-क्षेत्र में अकुरित हो रहे हैं—उनके उन्मूलन के लिए आपकी लोह-लेखनी सदैव तैयार रहती है।

आप 'सम्यक् दर्शन' पत्र का सचालन तथा सम्पादन कर रहे है। कहना न होगा कि इस पत्र ने समाज में अपना अनेरा स्थान बना लिया है। आपकी मान्यता है कि निर्ग्रन्थ धर्म में और इसके सिद्धान्तो में हम छद्मस्थ किसी भी प्रकार का परिवर्तन नही कर सकते। समाज के धार्मिक-क्षेत्रो में पनपने वाली शिथिलताओ के लिए आप 'लाल बत्ती' है।

प्रसिद्ध चर्चावादी होने के नाते चर्चा में आपको बहुत आनन्द आता है। लोकाशाहमत समर्थन जैनागम विरुद्ध मूर्ति-पूजा, सोनगढी सिद्धान्त पर एक दृष्टि आप द्वारा लिखित ऐसे ग्रन्थ है जो किसी खास चर्चा से सम्बन्धित है। आप द्वारा लिखित तथा सम्पादित धार्मिक साहित्य अनेक प्रकाशन-संस्थाओ द्वारा प्रकाशित हुआ है।

श्री डोसीजी समाज तथा धार्मिक जगत् के एक सुदृढ

स्तम्भ है—बल्कि प्रकाशस्तम्भ हैं। शास्त्रीय चर्चाओं की आपको विशेष आनन्द आता है। आपने अपना जीवन धार्मिक विचारो के स्थिर करने एव प्रसार करने में लगा दिया है। पूर्ण रूप से आस्थावान समाज के धार्मिक-क्षेत्र में यह ज्योतिर्मय नक्षत्र अपनी ज्योति-किरणो से धार्मिक-क्षेत्र को आलोकित करे—यही शासन देव से प्रार्थना है।

श्रीयुत मोतीलालजी मांडोत, सैलाना

आप श्री सैलाना-निवासी है। समाज में आप एक आदर्श श्रावक की गणना में है। आपकी अवस्था वर्तमान में ५१ वर्ष की है। आपने कई वर्षो से ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर लिया है। नित्य प्रति कम-से-कम तीन विगय का तो त्याग करते ही है। आप अन्य तपस्या के साथ-साथ हमेशा एकासन करते है। अष्टमी चतुर्दशी को प्राय पौषध करते है और रात्रि-शयन स्थानक में ही होता है। रात्रि में दो बजे बाद धर्म जागरण में व्यस्त हो जाते है। आप परम वैराग्यावस्था का अनुभव कर रहे है। आपके पिता श्री भी मौजूद हैं। आपकी श्रीमतीजी ने एक पुत्र तथा चार पुत्रियो को जन्म दिया है। इस प्रकार धर्म-साधना में रत एव त्यागमय जीवन से सैलाना का स्था० समाज गौरवान्वित है। सरकारी नौकरी को छोडकर आपने अपना भविष्य परमोज्ज्वल बनाने का बीडा उठाया है।

स्व० आदर्श श्रावक श्री केशरीचन्द जी सुराना, रामपुरा

आप उन आदर्श श्रावको में से थे जो साधु न होते हुए साधुओ के समान कहे जा सकते है। आपका जन्म स० १६२० में रामपुरा में हुआ था। आप के पिता श्री का नाम जवरचन्दजी था जो उस समय अनाज के प्रसिद्ध व्यापारी थे। श्री केशरीचन्द जी सा० जब बारह वर्ष के थे तब उन्हे तोल करने के लिये जुवार के कोठे पर भेजा गया। जुवार पुरानी थी अत. उसमे जानवर पड गये थे और तोल करते समय जानवरो का मरना स्वाभाविक था। बिजली की तरह दया की भावना आपके हृदय में प्रवाहित हुई और कोठे से हटकर सीधे स्थानक में जाकर बैठ गये। इस प्रकार माता-पिता भाई-बहन आदि १०० कुटुम्बी जनो को छोडकर विरक्त हो गये। स्थानक में आने के बाद श्रावकजी ने खुले मुँह बोलना, कच्चा पानी पीना, हरी वनस्पति खाना आदि कई त्याग कर दिये। दिन में कभी सोते नही थे और दीवार के सहारे बैठते न थे। आहार रात्रि के ६ घण्टे के अतिरिक्त आपका सब समय धर्मध्यान में लगता था। बत्तीसो शास्त्रो का कई बार आपने पारायण कर लिया था। वर्षभर में सब मिलाकर पांच माह भोजन करते थे।

आप बडे ही साहसी थे। जिस स्थानक में आपने अपना जीवन बिताया वह इतना विशाल था कि उसमें दो-तीन साधु अथवा दो-तीन श्रावको के रहने में रात के समय डर लग सकता है। कई माह तक आप अकेले उस स्थान में रात के समय रहे थे। आप के इस अपूर्व साहस को देखकर जनता आश्चर्य-चकित रह जाती थी। इस प्रकार त्यागमय धर्ममय और संयममय जीवन यापन करते हुए इस आदर्श श्रावक का स० १९९० में कुछ दिनो की बीमारी के कारण देहावसान हुआ किन्तु अपनी बीमारी के दिनो में आपने कभी भी कसूर अथवा टीस न भरी। यह थी आप की अपूर्व सहनशीलता।

आप सदैव मुँह पर मुँहपत्ती रखते थे। न कभी वाहन पर बैठे और न कभी जूते पहने। आप को ३०० थोकडे कण्ठस्थ याद थे।

आपके जीवन की विशेष महत्त्व की बात एक यह भी है कि साधु-साध्वी जी रामपुरा में चातुर्मास प्राय. इसलिए करते थे कि यहाँ पर वे श्रावकजी से शास्त्र-सम्बन्धी अपनी शकाओ का निराकरण करा सकें।

धर्मध्यान की पृच्छा के अतिरिक्त आप किसी से कुछ भी बोलते तक न थे। सत्य ही ऐसे आदर्श और विरक्त श्रावक ही जिनशास्त्र के गौरव को बढाने वाले होते हैं।

श्री राजमलजी कडावत, रामपुरा

आप सच्चे श्रावक तथा गरीबो के प्रति दया एवं प्रेम के घर थे। आपने एक मुश्त ५१,०००) का दान देकर "श्री वर्द्धमान जैन हितकारी ट्रस्ट" की स्थापना की जिसके वर्तमान सभापति इन्दौर वाले श्री सुगनमलजी सा० भण्डारी है। नाम की तथा यश की आपको तनिक भी लालसा

नही थी और यही कारण है ट्रस्ट में न तो आपने अपना नाम रखा और न उसके सदस्य ही रहे।

श्री विट्ठलजी केदारजी चौधरी, रामपुरा

आपका जन्म सं० १९४४ में हुआ था। छोटी उम्र में ही आप व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त कर अपने पिताजी के कार्य में मदद करने लगे। धार्मिक प्रवृत्ति तथा आचार-विचार की तरफ आपका झुकाव बचपन से ही था। आपके सुपुत्र श्री लक्ष्मीचन्द्रजी अपने पिता के समान ही धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में उत्साहपूर्वक भाग लेते है। अपने यहाँ के स्वाध्याय-मण्डल-संयोजन का कार्य आप ही सँभाल रहे है। सवत् १९६७ में स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज तथा श्री देवीलालजी महाराज के पास से आपने श्रावक के १२ व्रत धारण किये और तभी से नियमित रूप से पाँच सामायिक का व्रत निभाते चले आ रहे है। संवत् १९८६ में स्व० पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज सा० के चातुर्मास में दर्शनार्थी बन्धुओ के स्वागत-सत्कार का अपूर्व लाभ आपने ही लिया था। स्थानीय पाठशाला की स्थापना में १५,०००) का दान देकर उसके लिए ट्रस्ट बना दिया। सत्य ही सेठ सा० का जीवन और व्यवहार आदर्श एवं अनुकरणीय रहा है।

श्री नन्दलालजी भण्डारी छात्रावास, रामपुरा

यह छात्रालय स्वर्गीय सेठ नन्दलालजी भण्डारी की स्मृति में 'श्री सेठ कन्हैयालालजी सुगनलालजी भण्डारी ने अपनी जन्मभूमि में शिक्षा का प्रचार करने के लिए सन् १९३३ से चालू कर रखा है। इसका सारा खर्च आप ही उठा रहे है। इस समय इस छात्रालय से २० विद्यार्थी लाभ उठा रहे है। इसके अतिरिक्त श्री भण्डारीजी सा० ने यहाँ के अस्पताल में Eye Operation Room बनाकर जनता की सेवा की है।

श्री केशरीमलजी सुराणा, रामपुरा

यहाँ के आप प्रसिद्ध श्रावक थे। आप अनेक शास्त्रो और थोकडो के जानकार थे। कई सन्तो को एव कई श्रावको को शास्त्रो की वांचना देने वाले थे और ससार से उदासीन वृत्ति वाले थे। आपने अन्तिम समय में स्थानक में ही रहने लगे थे।

श्री भंवरलालजी धाकड़, रामपुरा

आप चतुर्विध संघ की निष्काम भाव से मूक सेवा करने वाले सरल व उदार व्यक्ति हैं। भण्डारी मिल, इन्दौर के कोषाध्यक्ष हैं। आप प्रत्येक सामाजिक प्रवृत्तियो में उत्साह पूर्वक भाग लेते हैं।
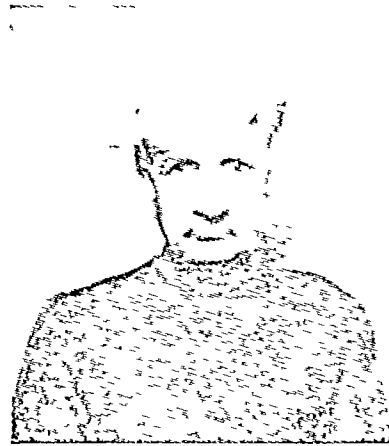
श्री रूपचन्दजी सा० धाकड़, रामपुरा
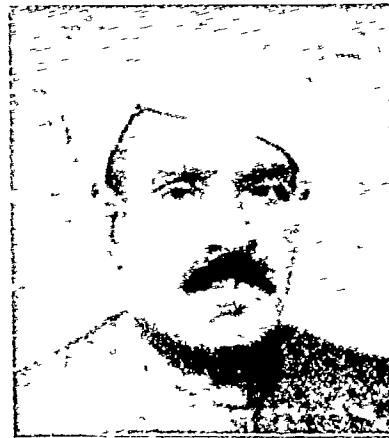
आप जैन सिद्धान्त के ज्ञाता व धार्मिक, सामाजिक कार्यों में आगे रहने वाले व्यक्ति है। आपको रामपुरा में 'महात्माजी' के नाम से पुकारते हैं। साधु मुनिराजो की अत्यन्त भाव-भक्तिपूर्वक आप सेवा करते हैं।

श्री पन्नालालजी तेजमलजी मारू, रामपुरा

आप यहाँ के प्रसिद्ध श्रावक हो गए है। गायन-कला में आप अत्यन्त निपुण थे। समय-समय पर गायनो से समाज का गौरव बढाते थे।

श्री रिखबचन्दजी अगरिया, रामपुरा

यहाँ के प्रमुख कार्यकर्ताओ में से आप उदार व दान-शील वाले व्यक्ति है। यहाँ की कन्या पाठशाला को आपने दो वर्ष तक सारा खर्चा दिया। अभी उज्जैन मे सर्व धर्म-सम्मेलन के अवसर पर ५०१) प्रदान किये थे।

श्री बापूलालजी भण्डारी, रामपुरा

आप यहाँ के प्रसिद्ध श्रावक है। कई वर्षों से लगातार प्रति रविवार को उपवास करते आ रहे है। ट्रस्ट बनाकर एक अच्छी रकम निकालने की आपने हार्दिक अभिलाषा प्रकट की है।

श्री छगनलालजी नाहटा, रामपुरा

आप यहाँ के नगर सेठ थे। गरीबो के प्रति आप अत्यन्त दयालु और भावुक थे। आपके सुपुत्र श्री मानसिंहजी समाज-सेवा में भाग लेने वाले और नगरपालिका के अध्यक्ष है। आपके एक Cotton factory चल रही है। आप मन्दसौर जिले के कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता और राष्ट्रीय विचारो के गाधीवाद के अनन्य भक्त है।

श्री रतनलालजी सुराना, रामपुरा

आप स्थानीय श्रावक सघ के अध्यक्ष है। आपके पिता श्री चादमलजी सा० अपने समय के अग्रगण्य श्रावक थे। साधु-सन्तो के भक्त और सामाजिक ट्रस्टो के ट्रस्टी है।

श्री रामलालजी पोखरणा, M. L. A. रामपुरा

आप यद्यपि क्रियाकाण्ड को नही मानते किन्तु शुद्ध जैनत्व के प्रेमी है। गाधीवाद को समझकर अपने जीवन में उसे क्रियान्वित कर रहे है। मध्यभारत विधान सभा के आप माननीय सदस्य है। मन्दसौर जिला कांग्रेस कमेटी के प्रधानमन्त्री और स्थानीय नगरपालिका के आप सदस्य भी है। प्रत्येक राष्ट्रीय और सामाजिक प्रवृत्तियो में आपका सहयोग बना रहता है।

श्री तेजमलजी सा० धाकड़, रामपुरा

धाकड़-परिवार के आप अग्रगण्य श्रावक है। स्थानीय पाठशाला और छात्रालय के आप मन्त्री है। साधु-मुनिराजो को दवा-औषधि से प्राय लाभ पहुँचाते रहते है। आपके परिवार की धार्मिक भावना सराहनीय है।

सेठ मोतीलाल जी पन्नालाल जी पोरवाड

आप श्री पन्नालाल जी के सुपुत्र थे। सन् १६०० से १६२१ तक आपसे ही धार की ऐतिहासिक जीवदया का कार्य सुचारु रूप से होता रहा। आपके घर से कई सत-सतियो का दीक्षोत्सव समारोह हुआ। आपका स्वर्गवास सन् १६२१ में हुआ।

सेठ चम्पालाल जी पूनमचन्द जी पोरवाड़
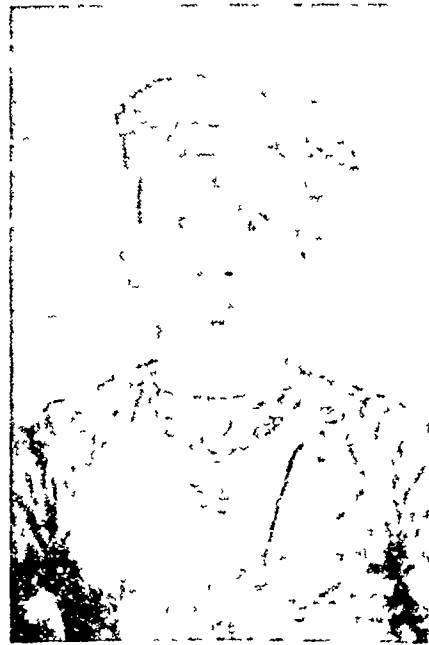
आप श्री पूनमचन्द जी के सुपुत्र थे। आप सवत् १६४८ से १६८३ तक समाज के कार्यों में प्रमुख भाग लेते रहे। आपका जीवन धर्ममय था। तीनो काल स्थानक में आकर स्वाध्याय-ध्यान आदि करना आपके जीवन का दैनिक क्रम था। दया (छ काय) पालने व पलाने में आपकी विशेष रुचि थी। भजन व दृष्टान्त के लिये आप प्रसिद्ध थे। आपका स्वर्गवास सवत् १६८३ में हुआ।

सेठ वल्लभदास जी जगन्नाथ जी जैन

आपका जन्म नीमा जाति मे सेठ जगन्नाथ के यहाँ हुआ था। आप जैन धर्म के पक्के उपासक थे तथा जीव-दया के बडे प्रेमी थे। आप घर पर कुत्ते-बिल्ली आदि पशु वैरभाव को भूलकर एक साथ रहते थे। चातुर्मास की विनति करने में आपका प्रमुख भाग रहता था। प्रतिवर्ष १५०-२०० रु. काया पलाते थे।

सेठ मोतीलाल जी मनावरी

समाज के आप प्रमुख कार्यकर्ता थे। अतिथि-सत्कार के लिए आप सुविख्यात थे। आपका स्वर्गवास स० १९९० को हुआ।

सेठ चम्पालालजी रतीचन्दजी वजाज

आप जीव-दया मे अत्यन्त रुचि रखते थे। अपंग-घायल एवं बीमार पशुओ की सेवा विना किसी घृणा भावना के करते थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९९६ में हुआ।

सेठ भेरूलालजी बूलचन्दजी पोरवाड़

आप समाज के प्रमुख कार्यकर्ता थे। समाज के प्रत्येक कार्य में आप आगे रहते थे। चातुर्मास कराने व अतिथि-सत्कार में प्रमुख भाग लेते थे। आप बड़े सरल-हृदय व नम्र स्वभाव वाले थे। आपका स्वर्गवास सं० २००० के लगभग हुआ।

सेठ कपूरचन्द जी (उस्ताद)

आप सेठ मथुरालाल जी पोरवाड के सुपुत्र थे। समाज में आपका अच्छा व्यक्तित्व था। आप बड़े ही तार्किक और हाजिर-जवाबी होने के कारण प्रसिद्ध थे। आपका स्वर्गवास सं० २००६ में हुआ।

सेठ भेरूलाल जी लुहार

आप जाति के लुहार होते हुए भी जैन धर्म के सच्चे उपासक थे। स्थानक में जाकर धर्म-क्रिया करते शक्कर खाने का आपने जीवन-पर्यन्त त्याग किया थ साधु-संतो की सेवा मन लगाकर करते थे। आज भी अने संत-सतियाँ आपकी सेवाओ की याद करती है।

श्री चांदमल जी जैन B A L-L B

आप श्री मदनलालजी जैन के सुपुत्र थे। बचपन में माताजी का देहावसान हो जाने के कारण आपका पालन पोषण शिक्षण आपके मामा श्री बोदरलालजी चम्पालालज के यहाँ हुआ। आपने छोटी-सी उम्र में B A. L L I पास कर और प्रेक्टिस करने ४-५ वर्ष में ही प्रसिद्ध वकील की श्रेणी मे गिने जाने लगे। धार्मिक ज्ञान का भी आपव अच्छा अध्ययन था। धर्म के प्रति आपकी दृढ श्रद्धा थी अपनी भाषण-शैली द्वारा राजनैतिक-क्षेत्र में भी आप अ लोकप्रिय बन गए थे। सन् १९५४ में अचानक आपव स्वर्गवास हो गया जिससे समाज को बहुत क्षति हुई।

भ ... लजी ...

आप धार ... शिरोमणि ... ज्ञाता है

होकर त्यागमय है और जीवन का अधिकांश भाग धर्मध्यान में ही व्यतीत होता है।

श्री माणकलालजी वकील B Sc L-L B

आप धार स्थानकवासी समाज में गत १० वर्षों से प्रमुख कार्यकर्ता रहे हैं तथा वर्तमान में संघ के अध्यक्ष हैं। बड़े-बड़े सन्तों एवं विद्वानों से धार्मिक सिद्धान्तों का अध्ययन किया। प्रथम श्रेणी के एडवोकेट होते हुए भी धर्म में इतने दृढ़ हैं कि प्रतिदिन सामायिक आदि धार्मिक क्रियाएँ करते हैं। आप बड़े ही स्पष्ट वक्ता हैं। राजनैतिक-क्षेत्र में भी आप अत्यन्त लोकप्रिय हैं। समाज के प्रमुख पत्र और समाज-सुधार के महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

श्री रतनलालजी बांटे

आप समाज के कार्यों में विशेष दिलचस्पी लेते हैं। दान तथा अतिथि-सेवा करने में सदा अग्रसर रहते हैं। आपके घर से कई दीक्षाएँ बड़े ही समारोह के साथ हुई।

श्री कन्हैयालालजी वकील

समाज के आप प्रमुख कार्यकर्ता हैं। धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक-क्षेत्रों में बड़ी ही दिलचस्पी से भाग लेते हैं। आजकल आप मनावर में रहकर वकालत करते हैं।

श्री बाबूलालजी जैन

सामाजिक सेवाओं में आप बचपन से ही भाग लेते आ रहे हैं। आप स्थानीय महावीर मित्र-मण्डल के मन्त्री सन् १९३४ से सन् १९५३ तक रह चुके हैं। अभी वर्तमान में सन् १९५४ से स्थानीय संघ के मन्त्री हैं। स्थानीय महावीर जैन पाठशाला को उन्नत बनाने में आपका प्रमुख भाग रहा है। सामाजिक तथा व्यापारिक संस्थाओं में अनेकविध-कार्य करते हुए भी धार्मिक क्रियाएँ सम्पन्न करने में कभी नहीं चूकते।

श्री थोंदरलालजी जैन

आप करीब ४० वर्षों से भी अधिक समय से धार में कुत्तों को रोटी डालने के कार्य में लगे हुए हैं। सम्पत्तिवान गृहस्थ होते हुए भी कुत्तों के लिये घर-घर आटा मांगने जाने में संकोच नहीं करते। अपनी ६२ वर्ष की अवस्था में कन्धे पर झोली लिये हुए और गली-गली घूमते हुए कुत्तों को रोटी डालते हैं।

श्री सागरमलजी जैन

आपका जीवन धार्मिक प्रवृत्तियो से ओतप्रोत है। आप दृढ श्रद्धावान् है तथा सदैव धर्म-प्रचार मे योग देते है। सामाजिक कार्यो मे विशेष रुचि से भाग लेते है। आप महावीर जैन पाठशाला के कोषाध्यक्ष है।

श्री कस्तूरचन्दजी जैन
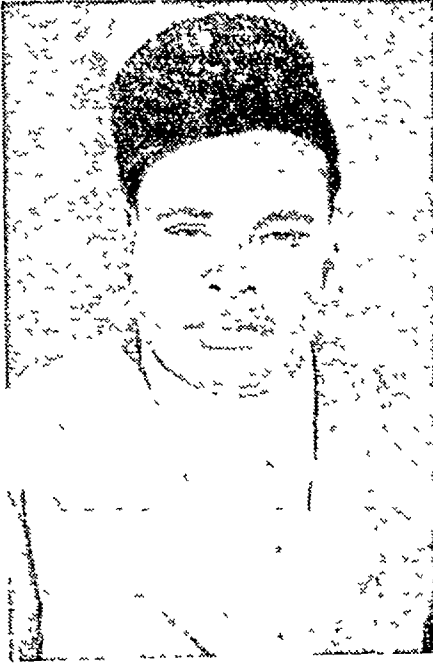
आप जीवदया के पक्के भक्त हैं। देवी-देवताओं के आगे वलिदान होने वाले प्राणियों की रक्षा करने के लिये प्राणों की भी परवाह नहीं करते। आप निर्भीक, निडर, व उत्साही कार्यकर्ता हैं।

श्री प्रतापसिहजी

आप उत्साही कार्यकर्ता हैं और समाज के कार्यों में सदा अग्रणी रहते हैं। नित्य-नियमानुसार धार्मिक क्रियाएँ सम्पन्न करते हैं। आप महावीर जैन पाठशाला के ट्रस्ट मडल के कोषाध्यक्ष हैं।

श्री मिश्रीलालजी जैन

आप एक उत्साही व सेवाभावी कार्यकर्ता है। महावीर जैन पाठशाला के प्रारम्भ काल से लेकर आजतक संस्था की सेवा अथक परिश्रम व जी-जान से कर रहे हैं। आप अपना अधिकांश समय सस्था तथा समाज की सेवा के

मिश्रीलालजी जैन

कार्य में लगाते हैं। आप दृढ श्रद्धावान् हैं। अनेक प्रमुख सन्त- मुनिराजो तथा विख्यात् श्रावकों ने आपके सेवाकार्य की प्रशंसा की है। आपके नि स्वार्थ सेवाभाव तथा अथक परिश्रम से ही संस्था ने उन्नति की है।

इनके अतिरिक्त श्री मनसुखलालजी जैन, श्री छगन मलजी वकील, श्री धूलचन्दजी ओसवाल, श्री छगनमल जी वजाज तथा श्री जीतमलजी मास्टर आदि वडे ही उत्साही एवं सेवाभावी कार्यकर्ता हैं। सामाजिक एव धार्मिक कार्यों मे आप लोग उत्साहित होकर भाग लेते हैं।

श्री जोरावरमलजी प्यारेलालजी शाहजी, थान्दला

आप स्था० समाज के सम्माननीय एव प्रतिष्ठित व्यक्ति है। श्री जोरावरमलजी का शुभ जन्म मिति वैशाख वदी ३ स० १६४६ को हुआ था। आपके पिता श्री का शुभ नाम मोतीलालजी था। आपका खानदान प्रशंसापात्र रहा। वर्तमान में आपके दो सुपुत्र हैं श्री श्रेयलालजी तथा श्री गेंदालालजी। आपके पूर्वजों ने एक मकान धर्म स्थानक के रूप में दे दिया है। वर्तमान में आपने अपनी

पत्नी केशरबाई की पुण्य स्मृति मे एक भवन श्री औषध भवन के पीछे की जमीन मे, धार्मिक शिक्षण के लिए ट्रस्ट बनाकर तैयार करने की प्रतिज्ञा की है। आप एक समय जीव-दया धर्म के लिए प्राणों तक की बाजी लगाने को तैयार हो गए किन्तु धर्म पर दृढ रहे। यही है आपकी धर्म-परायणता एवं दृढता का आदर्श नमूना। आप सदैव प्रतिज्ञा में बंधे हुए जीवन मे रहते है। आपका कपडे तथा गल्ले और लेन-देन का व्यापार प्रतिवर्ष हजारो का होता है। प्राचीन राजाओं की ओर से प्रतिष्ठा-स्वरूप आपके मकान पर सोने के कलश लगे हुए हैं।

श्री रिखवचन्द्रजी घोडावत, थाडला

श्री रिखबचन्द्रजी घोडावत का शुभ जन्म मिगसर सुदी ५ स० १९५७ में हुआ था। आपके पूज्य पिताश्री का नाम श्री दौलाजी है। श्री रिखवचन्द्रजी के चार पुत्र है। जिनके क्रमश श्री रमेशचन्द्रजी, श्री चन्द्रकान्तिजी श्री कनकमलजी तथा श्री उम्मेशजी नाम है। श्री उम्मेशजी ने भगवती दीक्षा ग्रहण कर ली है। प्रारम्भ से ही आपका खानदान धार्मिक कार्यों में मुक्तहस्त से दान देता आया है।

श्री रमेचन्द्रजी भी अपने पिता श्री की तरह ही धर्म प्रेमी हैं। वर्तमान में आप राजनैतिक क्षेत्र मे अग्रणी हैं। आप कपडे के थोक व्यापारी हैं और नक्द लेन-देन प्रतिवर्ष लाखो रुपयो का करते हैं। आप श्री भी दानवीर सज्जन है। प्रान्त में आप गौरवशाली व्यक्ति है।

श्री लहरमलजी गेदमलजी भण्डारी, कंजर्डा

आप कजर्डा के निवासी है। आप की अवस्था ४० वर्ष की हे। आप व्यवसाय करते हुए भी समाज सुधार तथा धार्मिक प्रवृत्तियो मे प्रमुख भाग लेते रहते है। आप मिलनसार व्यक्ति है।

श्री मोहनलालजी पूनमचन्दजी तगवा, कजर्डा

आपका भी निवास-स्थान कजर्डा है। आप व्यापार एवं दलाली करते है। वर्तमान में आप जैन पाठशाला में अध्यापक का कार्य कर रहे है जिसे श्रावक मण्डल सचालन कर रहा है।

श्री चाँदमलजी नाथूलालजी भण्डारी, कंजर्डा

आप रामपुरा के निवासी है। उम्र आप की ३८ वर्ष की है। माध्यमिक पाठशाला कजर्डा के प्रधान पाठक ४ वर्ष से है। आप इण्टरसीटी, विज्ञान रत्न तथा साहित्य रत्न (प्रथम खण्ड) उत्तीर्ण है।

श्री चाँदमल जी गब्बालाल जी पीपाड़ा, कंजर्डा

आप कजार्डा निवासी है। आप की आयु २७ वर्ष की है, आप तरुण व्यापारी एव समाज के कार्यो में अत्यन्त अभिरुचि रखते है।

श्री रामचन्दजी नाथूलालजी भण्डारी

आप भी कजर्डा के रहने वाले ३७ वर्षीय कुशल व्यापारी है। हिसाव के कार्य में दक्ष है।

श्री झमकमलजी नन्नालालजी पटवा

आप कजर्डा निवासी है और शिल्पकला का कार्य करते है। आप की उम्र २८ वर्ष की है। व्यवस्था-कार्य में कुशल है।

श्री सुजानमलजी भेरूँलालजी भण्डारी

आप एक कुशल नवयुवक व्यवसायी है। उम्र आप की ३० वर्ष की है। आप नि सकोच हो व्यवस्था कार्य में जुट जाते हैं।

श्री लक्ष्मीलालजी केशरीमलजी नलवाया

आप कजर्डा निवासी ४० वर्षीय कुशल व्यापारी है। सामाजिक कार्यो में आपका पूर्ण सहयोग रहता है।

श्री कन्हैयालालजी गेदमलजी पटवा

आप ३३ वर्षीय कजर्डा निवासी एजेन्सी का कार्य करते है। स्थानीय प्रारम्भिक काग्रेस के अध्यक्ष है।

श्री सुन्दरलालजी केसरीमलजी भण्डारी

आप की अवस्था ३२ वर्ष की है। आप वर्तमान में कपडे के व्यापारी है। इससे पूर्व आप सघ के मन्त्री थे।

श्री पन्नालालजी किशनलालजी भण्डारी

आप एक २५ वर्षीय उत्साही नवयुवक है। समाज हित के कामों में आप विशेष दिलचस्पी रखते है। आप व्यापार करते है।

राजस्थान के प्रमुख कार्यकर्ता

स्वर्गीय सेठ श्री चांदमलजी सा० सुराणा, जोधपुर

जोधपुर राज्य मे तथा राजघराने मे प्रतिष्ठा सम्पन्न श्री चांदमलजी सुराणा को जोधपुर में कौन नहीं जानता ? राज्य में रहने वाली जनता की भलाई के लिए आपने जीवन-भर अपने को सकट तथा कष्ट मे डालकर भी जनता की विचारधारा का प्रतिनिधित्व किया। आपका जन्म सवत् १९२० की भादवा सुद १५ को और स्वर्गवास सवत् १९९९ की आषाढ़ वद ५ को हुआ। वह समय था जब जोधपुर के सर प्रतापसिहजी ने बन्दरों को मरवाने की आज्ञा निकाली। इसके खिलाफ राज्य-भर में तीव्र आन्दोलन हुआ। इस आन्दोलन के सूत्रधार आप ही थे। आखिर यह राजाज्ञा रद् की गई। सन् १९४६ मे जोधपुर राज्य के अर्थमन्त्री श्यामबिहारीलाल ने राज्य मे जोधपुरी तोल के बदले बंगाली तोल करना चाहा। राज्य की जनता इसे सहन न कर सकी। इस आन्दोलन को आपने अपने हाथो मे लिया। इस आन्दोलन ने इतना जोर पकडा कि अर्थमन्त्री को चौबीस घण्टे के भीतर ही जोधपुर छोडकर जाना पडा। इस प्रकार के कई आन्दोलनो का आपने नेतृत्व कर अपनी निर्भीकता का परिचय दिया। आप अपनी बात के पक्के थे। जिस बात को आप धार लेते—उसे पूरा करके छोडते थे—भले ही उसमे सैकडो का खर्च हो या हजारों का। अपनी टेक के सन्मुख धन को आप तुच्छ समझते थे।

वह समय था जब पालनपुर, नसीराबाद डीसा की फौजी छावनियो को मांस पहुँचाने के लिए मारवाड से मादी जानवरो की निकासी प्रारम्भ हो गई। आपको यह कब सहन होने वाला था। हजारो आदमियो को अपने साथ में लेकर तत्कालीन जोधपुर-नरेश के बगले पर तीन दिन तक धरना दिया। इन हजारो आदमियों को खिलाने-पिलाने का इन्तज़ाम आपकी तरफ से था। आखिर दरबार को मादा जानवरो की निकासी की आज्ञा रद्द करनी पडी। जिस काम को आपका आशीर्वाद प्राप्त हो जाता—उसमे मानो जान आ जाती थी। इस प्रकार के आन्दोलनों मे आपको कई माह तक राज्य से निर्वासित होकर रहना पडा था—किन्तु आपने कभी भी न्यायोचित माग के सन्मुख झुकना मंजूर नही किया।

दिल-दिमाग की तेजस्विता, निर्भीकता और उग्रता के साथ-साथ धार्मिकता और श्रद्धा भी आप मे महान् थी और ऐसा होना इसलिए भी उचित था कि आप ससार पक्ष में पूज्य उदयसागरजी महाराज के भानजे थे। आपके घराने की धार्मिकता का क्या कहना ?—आपकी बहन सरदार कवरजी ने दीक्षा धारण कर संयम और तप-त्याग का अपूर्व एवं आदर्श उदाहरण उपस्थित किया था। केवल २७ वर्ष की अवस्था मे ही आपने शीलव्रत और चौविहार के प्रत्याख्यान कर लिए थे। बीस साल तक एकान्तर भोजन किया था और जीवन की अन्तिम घडियो में समस्त जीवराशि को खमाकर सथारा कर पण्डित मरण को प्राप्त हुए थे।

दयालुता और पर दुख कातरता आप में इतनी थी कि गुप्तरूप से कितने ही धर्म-पुत्र बनाकर उनका पालन-पोषण करते थे। अपने कार्य-कलापो से राज्य

के इतिहास में आपका नाम सदैव स्वर्णाक्षरों से अंकित रहेगा।

आपकी लोकप्रियता का इस बात से पता चलता है कि हरिजन से लेकर उच्च कौम—३६ ही कौम के अनगिनती लोग आपकी अर्थी के साथ थे।

अपने पीछे अपने गुणों की पैतृक वसीयत अपने बड़े पुत्र श्री आनन्दराजजी सुराणा में छोड़ गए हैं जो अपने पिता के समान ही तेजस्वी, निर्भीक, स्पष्टवक्ता और उदार-दिल हैं। निर्धन और असहाय को देखकर आपका दिल भी पसीज उठता है। योग्य पिता के योग्य पुत्र पर आज समस्त समाज और राष्ट्र को गौरव हो सकता है।

श्री बच्छराजजी सुराणा श्री आनन्दराजजी सुराणा के लघु बन्धु हैं। आप भी समाजसेवी और धार्मिक वृत्ति वाले हैं।

श्री कानमलजी सा० नाहटा, जोधपुर

आपका जन्म जोधपुर में सं० १९६१ में हुआ था। आपके पिताजी का नाम जवानमलजी तथा माता का नाम सरदार कुँवरजी है। आपका खानदानी व्यवसाय राज्य में कारोबार और Banking का रहा है। आपके दादाजी श्री थानमलजी सा० जोधपुर राज्य के कस्टम ऑफिसर थे और प्रजा के सच्चे सलाहकार थे।

संवत् १९७४ से ७६ तक के भीषणतम अकाल के युग में आपके घर के १८ व्यक्तियों की मृत्यु हो जाने से आप और आपके भाई पूनमचन्दजी ही बचे। कई वर्ष तक आप नौकरी करते रहे। किन्तु काल का चक्र जैसे उल्टा चलता है तो कभी-न कभी सुल्टा भी चलता है। सुख और दुख तथा दुख और सुख का अभिन्न जोड़ा है। भाग्य-चक्र ने पलटा खाया। अब तक जो कुछ भी प्रतिकूल था अब अनुकूल होने लगा। सन् १९३६ में आपने बम्बई में कानमल एण्ड सन्स के नाम से सिल्क का व्यवसाय प्रारम्भ किया। सन १९४० में मुलुन्द में ज्योति सिल्क मिल्स प्रारम्भ की और इसके साथ ही जवाहरात का व्यवसाय भी प्रारम्भ किया। बम्बई में कालका देवी तथा ऑपेरा हाउस में तथा मसूरी आदि स्थानों में आपकी दुकानें थीं। अत्यन्त सुसंस्कारी और धर्मपरायणा सौ० विलम कुँवरी का ता० २१-३-५९ को संथारा और समाधिमरणपूर्वक स्वर्गवास हुआ।

आपके द्वारा निर्मित भव्य नाहटा भवन जोधपुर की एक शानदार और भव्य इमारत है।

व्यवसाय में आप खूब बढ़े किन्तु जीवन की वास्तविकता से भी आप अनभिज्ञ नहीं थे। बुरे दिन भी आपने देखे थे और अब अच्छे दिन भी। किन्तु धन-वैभव ने आपको अन्धा नहीं बनाया। आपकी रुचि धर्म-प्रेम की ओर क्रमश बढ़ती गई। साधु-सम्मेलन सादड़ी से आपने धार्मिक कार्यों में रस लेना प्रारम्भ किया। स्व० पं० मुनि श्री चौथमलजी म० सा० के जोधपुर में संथारा-काल में आपने ब्रह्मचर्य धारण कर लिया। अब तो जोधपुर की धार्मिक प्रवृत्तियों के आप केन्द्र ही बन गए। श्रावक संघ के निर्माण और निर्वाचन के समय आप जोधपुर श्रावक संघ के उपप्रमुख निर्वाचित किये गए। संघ का सारा कार्य आप ही करते हैं।

आपकी अभिरुचि स्वाध्याय की ओर बढ़ी और आपने भक्तामर, तत्त्वार्थसूत्र, पुच्छिसुणं, नमिपवज्जा आदि कण्ठस्थ कर लिए। कई थोकड़े भी आपको कण्ठस्थ हैं।

आप इस समय ओसवाल श्री संघ सभा के चीफ ट्रस्टी, स्था० जैन श्रावक संघ के चीफ ट्रस्टी तथा अध्यक्ष बीकानेर बैंक के लोकल बोर्ड के डायरेक्टर हैं। इसके अतिरिक्त व्यापारी और सरकारी क्षेत्र में आप अत्यन्त प्रतिष्ठावान हैं।

श्री अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फ्रेन्स की व्यवस्थापिका कमेटी के आप वर्षों से मेम्बर हैं। साधु-मुनिराजों की सेवा-भक्ति अत्यन्त भक्तिभावपूर्वक करते हैं। संस्थाओं को समय समय पर आपकी तरफ से दान मिलता रहता है।

इस प्रकार श्री नाहटाजी जोधपुर के ही नहीं किन्तु समस्त राजस्थान के एक आशावान और प्राणवान व्यक्ति हैं जिनसे समाज और धर्म के विस्तीर्ण क्षेत्र मे और अधिक आगे बढ़कर तथा अधिक सेवाएँ प्रदान करने की स्वाभाविक रूप से सहज कामना की जा सकती है।

श्रीमान् रिखबराजजी कर्णावट, एडवोकेट, जोधपुर

श्री कर्णावट जी का शुभ जन्म भोपालगढ़ ग्राम जिला जोधपुर मे सन् १९१९ मे हुआ। आपने स्थानीय श्री जैन रत्न विद्यालय मे प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त कर व्यापार व बीमा एजेन्सी का कार्य प्रारम्भ किया। साथ ही प्राइवेट अध्ययन जारी रखते हुए मिडिल व मेट्रिक की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। प्रारम्भिक जीवन से ही आप में सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक कार्यों मे भाग लेने की अभिरुचि रही। आप वहाँ की कन्या पाठशाला, हरिजन स्कूल, श्री जैन रत्न विद्यालय तथा लोक-परिषद् शाखा आदि के भी मानद् मन्त्री रहे। तदनन्तर सन् १९३८ मे जोधपुर मे सरदार हाई स्कूल मे अध्यापक नियुक्त हुए और अध्यापन करते हुए प्राइवेट मे इन्टर, बी० ए० व नागपुर विश्व विद्यालय से एल० एल० बी० की डिग्री की हासिल की। बाद मे आपने जोधपुर मे वकालात करना प्रारम्भ किया। वकालत करते हुए सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक कार्यों में भी सक्रिय भाग लेते रहे। आप श्री महावीर जयन्ती प्रचारणी सभा के मन्त्री रहे और महावीर जयन्ती सार्वजनिक छुट्टी कराने मे भी सक्रिय भाग लिया। स्थानीय महावीर कन्या पाठशाला के भी आप ऑनरेरी सुपरिटेन्डेन्ट रहे। राजस्थान प्रांतीय कांग्रेस के तथा सरकार द्वारा स्थापित किसान बोर्ड के भी सदस्य रहे। बार एसासियेशन के प्रथम मन्त्री और बाद मे उपाध्यक्ष पद पर आसीन हुए। इस प्रकार कर्णावट जी का भोपालगढ व जोधपुर मे सामाजिक, धार्मिक तथा राजनैतिक कार्यकर्ताओ मे विशेष स्थान है।

वर्तमान में कर्णावटजी सरदार हाईस्कूल, सरदार लोअर प्राइमरी स्कूल, ओसवाल बोर्डिङ्ग हाऊस, ओसवाल स्कॉलरशिप कमिटि, स्था० जैन श्रावक संघ, तथा रा० प्रान्तीय स्था० श्रावक संघ के मानद् मन्त्री हैं। समाज के प्रत्येक शुभ काम मे आप समय निकालकर कुछ न-कुछ सहयोग देते ही रहते हैं। आशा है कि समाज को भविष्य में भी आप जैसे उत्साही नवयुवक कार्यकर्ता का सहयोग प्रदान होता रहेगा।

श्री दौलतरूपचन्दजी भंडारी, जोधपुर

आप जोधपुर निवासी श्री सुपात्रचन्दजी भंडारी के सुपुत्र हैं। आपके पिताजी बडे ही धर्मनिष्ठ और धर्मपरायण थे। श्री दौलतरूपचन्द जी राजस्थान के सुप्रसिद्ध भजनीक है। आपकी व्याख्यान-शैली और कवित्व ओज से श्रावकगण प्रभावित हैं। जन्म से ही सगीत के प्रति आपका अनुराग रहा है। जनमत पर आपकी बडी धाक है।

अनेक प्रकार से व्यावसायिक क्षेत्रों में कुशलतापूर्वक कार्य करने के पश्चात् आप इस समय ओरियटल के एजेंट हैं। आप दो भाई हैं किशनरूप-चन्दजी और राजरूपचन्दजी। दोनों सरकारी क्षेत्र में सम्मानित पद पर कार्य कर रहे हैं।

श्री विजयमलजी कुम्भट, जोधपुर

जोधपुर के सुप्रसिद्ध श्री चन्दनमल जी सा० कुम्भट के घराने मे श्री गणेशमलजी सा० कुम्भट के आप सुपुत्र है। आपके पिताश्री राजकीय पद से रिटायर्ड हो जाने के बाद धार्मिक रंग मे अनुरक्त श्रावक हैं। श्री विजयमल जी धर्मनिष्ठ श्रद्धालु श्रावक हैं। धर्मानुराग आपको बपोती के रूप मे मिला है। स्थानीय सामाजिक क्षेत्र मे आप कर्मठ और मिलनसार-मृदुभाषी कार्यकर्ता हैं, जो बोलते कम और करते अधिक हैं। सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र मे अपना सहयोग प्रदान करने के लिये आप सदैव तैयार रहते हैं।

श्री अमोलकचन्दजी लोढा, बगड़ी

श्री लोढाजी उन सज्जनों में से थे जो बिना किसी मान की इच्छा के सहयोग प्रदान करते रहते हैं। श्री जैन गुरुकुल-ब्यावर तथा आत्म-जागृति कार्यालय की स्थापना में आपका प्रमुख हाथ था। बगटी का जैन मिडिल स्कूल भी आपके ही प्रयत्नों का फल है।

आप स्वभाव से सरल, व्यवहार कुशल, सेवा-भावी और धर्मशील सज्जन थे। वे समय-समय पर राजनीतिक कार्यों में भी भाग लिया करते थे। दुर्भाग्य से ४० वर्ष की अल्प वय मे ही उनका स्वर्गवास हो गया, अन्यथा उनके द्वारा कई समाजोपयोगी कार्य होने की आशा थी।

श्री मिलापचन्दजी कावड़िया, सादडी

आप सादडी (मारवाड) के उत्साही एव कर्मठ समाजसेवी कार्यकर्ता है। लोकाशाह जैन गुरुकुल भवन निर्माण का प्रश्न जब अत्यन्त जटिल, पेचिदा और विवादास्पद बन गया था तब इस कार्य को आपने अपने हाथ में लिया और एक लम्बे अर्से तक कठोर परिश्रम कर भवन-निर्माण का कार्य सम्पन्न कराया। गुरुकुल का वर्तमान विशाल और सुन्दर भवन आपके परिश्रम और लगन की साकार मूर्ति है। इतना ही नहीं भवन-निर्माण कार्य में आपने अभी अपनी तरफ से २५००) भी प्रदान किये। यद्यपि आपकी स्थिति इतनी अधिक प्रदान करने की नहीं थी।
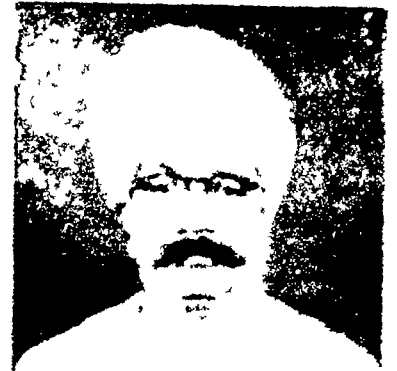
दीन-दुखियो के प्रति आप अत्यन्त दयावान् एवं कुरूढियो के आप एकदम विरोधी है। सादडी-सम्मेलन के समय आपकी सघ-सेवा और कार्य तत्परता, आदर्श और अनुकरणीय थी।

श्री अनोपचन्दजी अमीचन्दजी पुनमिया (सांड) (सादड़ी मारवाड़)

मारवाड के गोडवाड प्रान्त मे आपको कौन नही जानता ? आप अपने प्रान्त में 'शेर' कहे जाते हैं। वस्तुत आपमे सिहोचित गुण विद्यमान हैं। आपको देखकर अन्यमत के लोग एकदम शान्त एव तर्कहीन हो जाते है—ऐसा है आपका व्यक्तित्व। आपके ही अथक परिश्रम से इस प्रान्त में श्री लोंकाशाह के सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिए आपकी जन्मभूमि 'सादडी' मे श्री लोंकाशाह जैन गुरुकुल की स्थापना हुई।

यद्यपि आपका शिक्षण प्राइमरी तक हुआ किन्तु अपनी कुशाग्र बुद्धि के बल से अदालतो मे बडे-बडे वकीलों से टक्कर लेते है। अपनी इस प्रखर बुद्धि से आपने अच्छी धनराशि एकत्रित की, जिसको आप समाज व देश की सेवा में समय-समय पर लगाते रहते हैं।

मरुधर केशरी प० मुनि श्री मिश्रीमलजी म० सा० के सदुपदेश से तथा बलदौटा बन्धुओं के सहयोग से आप द्वारा स्थापित श्री लोंकाशाह जैन गुरुकुल, सादडी मे आपकी ही प्रेरणा एव उत्कट उत्साह से स० २००६ के अक्षय तृतीया के दिन श्री अखिल भारतवर्षीय साधु-सम्मेलन व कॉन्फ्रेन्स का १२वाँ अधिवेशन हुआ। सम्मेलन की सफलता, साधु-मुनिराजों की भक्ति तथा सम्मेलन मे सम्मिलित हुए हजारो की सख्या मे स्वधर्मी भाइयों की सेवा एव सुव्यवस्था का श्रेय आपको तथा बलदौटा बन्धुओं को है. सादडी सम्मेलन के समय की सुव्यवस्था एवं सञ्चालन प्रणाली की सराहना आज प्रत्येक स्थानकवासी जैन कर रहा है।

अभी आप वर्तमान में स्थानीय श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ के मन्त्री, श्री लोंकाशाह जैन गुरुकुल के उपसभापति, श्री वर्द्धमान स्था० जैन महिला-मण्डल के संयोजक तथा अखिल भारतवर्षीय स्थानक जैन कॉन्फ्रेन्स की जनरल कमेटी के सदस्य हैं।

आपके सेवाभावी संस्कारो की छाप आपके समूचे परिवार पर भी पडी हैं। यही कारण हैं कि आपके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री हस्तीमलजी सा० पुनमिया जैन गुरुकुल, सादडी के मन्त्री पद पर लगातार ६ वर्षों से बडे उत्साह एवं परिश्रम के साथ कार्य करते हुए बडी योग्यता के साथ गुरुकुल का सचालन कर रहे हैं। आपके कनिष्ठ पुत्र श्री मोहनलालजी भी पाली परगने-की किसान मजदूर पार्टी के मन्त्री हैं और आज की राजनीतिक हलचलों मे प्रमुख रूप से भाग ले रहे है।

सेठ सा० की ६४ वर्ष की उम्र है फिर भी नवयुवको जैसे अदम्य उत्साह से काम करते हैं। आपके समान आपकी धर्मपत्नी भी सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में मुक्त हस्त व उदार हृदय से हाथ बँटाती है। निस्सन्देह सादडी के इस सेवाभावी परिवार से समाज को बडी-बडी आशाएँ हैं। हमारा काम ही हमारे नाम को अमर बनाता है और इस दृष्टि से सेठ सा० के जाति-धर्म-समाज-सेवा के कार्य कदापि नहीं भुलाए जा सकते।

श्री केवलचन्द जी सा० चोपड़ा, सोजत

श्री चोपडाजी सोजत शहर के चोपडा खानदान के एक उदार-दिल वाले युवक है। आपके पिता श्री गोपालमल जी चोपडा बम्बई में भागीदारी में व्यापार करते थे। अत आप भी प्रारम्भ से ही बम्बई में रहने लगे और अपने पिताश्री के स्थान पर आप स्वयं भागीदार बन गये। इस समय आप बम्बई के गण्यमान व्यापारियो में से हैं। पिछले बीस वर्षो से आप खादी के प्रेमी रहे है। आपकी उदारता का परिचय तो इससे सहज ही मिल सकता है कि आपके पास जाने वाला कोई भी खाली हाथ नही लौटता।
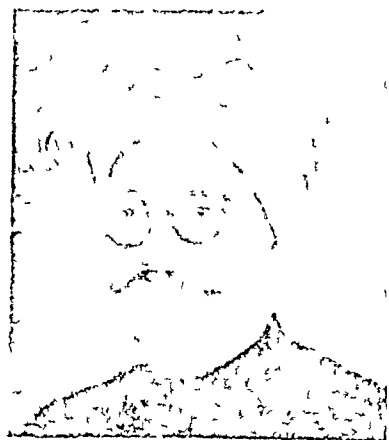
आप सोजत के "जैन गौतम गुरुकुल" के प्राण हैं। एक मुश्त २५,०००) रु० की धनराशि प्रदान कर संस्था की नीव डाली, जो आज भी उसके व्याज में सुचारुरूप से चल रही है। सोजत में गौशाला और जैन धर्म-शाला बनवाने में हजारो रुपया दिया। सार्वजनिक कार्यो में आपका हाथ सदैव खुला रहता है। लौंकाशाह गुरुकुल को आपने ५०००) की सहायता प्रदान की। इसके अतिरिक्त सोजत में एक स्थानक भी बनवाया। आप आज भी गुप्तरूप से कई भाई-बहिनो को आर्थिक सहायता देते रहते हैं। कबूतरो पर आपका विशेष प्रेम है। प्रतिदिन ८--१० रुपयो का अनाज डलवाते रहते हैं। आप एक होनहार, समाज-सेवी और धर्म-प्रेमी व्यक्ति हैं, जिनमे सेवा की भावना कूट-कूट कर भरी है।

श्री विजयलालजी गोलेछा, खींचन

आप खींचन (मारवाड) के निवासी हैं। आपका हृदय बडा उदार और दया-भाव से परिपूर्ण है। मरुभूमि में जल का बडा कष्ट है। पानी की प्राप्ति के लिये मीलो दूर जाना पडता है। आपने इस असह्य कष्ट को मिटाने के लिये यहाँ स० १९८६ में अपने स्व० पिता जी के नाम पर एक विशाल तालाब खुदवाना आरम्भ किया, जो प्रतिवर्ष थोडा-थोडा खुदवाया जाता है और इससे यहाँ का कष्ट बहुत कम हो गया है।

दीन-अनाथो के प्रति आपकी बडी हमदर्दी रहती है। पहले यहाँ रुणीजा रामदेव जी का मेला भरा करता था, जिस मौके पर सैंकडो अपाहिज व गरीब लोग आया करते थे। इन सब को आपकी ओर से भोजन कराया जाता था। बाद में रुणीजा तक रेल्वे लाईन हो जाने से यात्रियो का फलौदी उतरना बन्द हो गया फलत यह अन्न-दान भी बन्द कर दिया गया।

आपकी आयुर्वेद चिकित्सा के प्रति अत्यधिक रुचि है। आप अपने क्षेत्र में कुशल आयुर्वेद चिकित्सक माने जाते थे। दूर-दूर से आपके पास बीमार आते थे, जिनकी सारी व्यवस्था खान-पान निवास आदि की आप अपनी तरफ से करते हैं और उनकी योग्य चिकित्सा कर आरोग्य प्रदान करके विदा करते रहे। आपने कई असाध्य बीमारों को जीवन-दान दिया है।

शिक्षा-प्रचार में भी आपका बडा हाथ रहा है। आपकी तरफ से स्थानीय श्री महावीर जैन विद्यालय को आधा खर्चा दिया जाता है। ब्यावर जैन गुरुकुल के १२ वें उत्सव के आप सभापति भी बने थे। समाज की अन्य संस्थाओं को भी आप समय २ पर सहायता प्रदान करते रहते थे।

स्त्री-शिक्षा के प्रति भी आपका बडा लक्ष्य रहा। आपने अपने यहाँ जैन कन्या पाठशाला की स्थापना भी की थी, परन्तु तीन वर्ष बाद योग्य अध्यापिका के अभाव में वह बन्द कर देनी पडी।

आपकी उदारता गाँव या समाज तक ही सीमित नहीं है। आपने उम्मेद हॉस्पिटल, जोधपुर को टी० बी० वार्ड के लिये ५००००) हजार का आदर्श दान भी दिया।
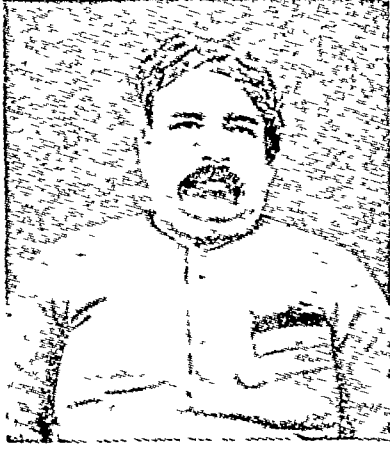
श्रीमान स्व० नौरतनमलजी भांडावत, जोधपुर
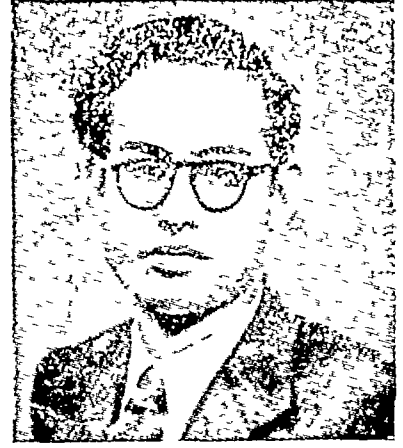
श्री लक्ष्मीमलजी सिंधवी, मिनर्वा भवन, जोधपुर
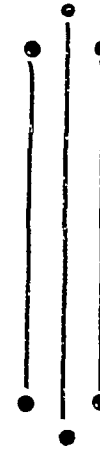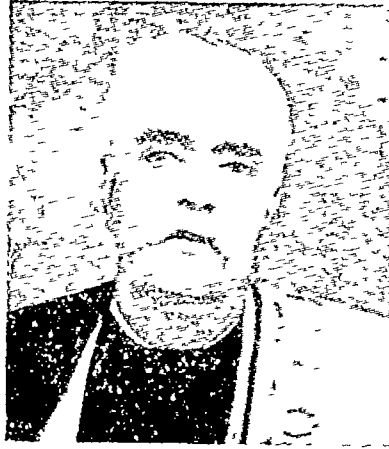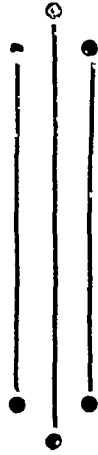
श्री केशरीमलजी चौरड़िया, जयपुर
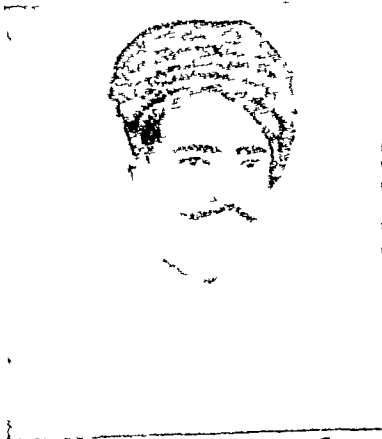
श्री मगनमलजी कोचेटा भँवाल, (मारवाड़)
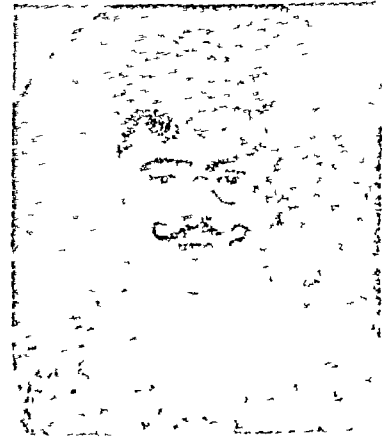
श्री मलजी सेठिया, बीकानेर

श्री बलवन्तसिंहजी कोठारी, उदयपुर

आपका जन्म सन् १८६२ में हुआ था। आप मेवाड़ राज्य के दीवान थे। आपका शिक्षण तो बहुत कम था, परन्तु अनुभवज्ञान विशाल था। महाराणा फतहसिंहजी के कार्यकाल में आपने १६ वर्ष तक प्रधान मन्त्री (दीवान) के पद पर रह कर राज्य की महान् सेवा की थी।

आप ओसवाल होते हुए भी आकृति की भव्यता से क्षत्रिय जैसे प्रतीत होते था। आपके पूर्वज क्षत्रिय थे। परन्तु पीछे जैन धर्म अंगीकार करने से आपकी गणना ओसवालों में हुई। आप कोठारी केशरीसिंहजी के गोद में गये थे।

आपकी कार्यदक्षता तथा बुद्धिमत्ता से महाराणा सा० बड़े प्रभावित थे। सन् १९०३ व १९१२ में जब देहली में दरबार हुआ था तब आपको महाराणा ने सरदारों के साथ वहाँ भेजा था।

आपकी धर्म में अटल श्रद्धा थी। घाटकोपर जीव दया खाता, बम्बई, शिक्षण सस्था, उदयपुर, हितेच्छु-श्रावक मंडल रतलाम आदि को आपने सहायता प्रदान की थी। जीव दया के प्रति आपकी बड़ी रुचि थी। मेवाड़ में पहले गौ का निकास होता था, वह आपके प्रयत्नों से बन्द करा दिया।

आपके पुत्र का नाम गिरधारीसिंहजी है आपने अपने जीवन में चार पीढ़ियों देखी हैं। ऐसा सद्भाग्य विरले व्यक्ति को ही प्राप्त होता है।

आपके पौत्ररत्न का जन्म होने पर आपने महाराणा सा० का भी अपने घर आतिथ्य किया था। महाराणा सा० ने कंठी सिरोपाव व पैरों में सोना प्रदान कर इन्हें सम्मानित किया था। पूज्य जवाहरलालजी म० के प्रति आपकी असीम भक्ति थी। आपका अवसान ७६ वर्ष की उम्र में ता० ९-१-३८ को हुआ।

हिम्मतसिंहजी सरूपरिया, जयपुर

आर० ए० एस०, एम० ए०, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०
हिन्दी साहित्य रत्न, जैन सिद्धान्ताचार्य। प्रथम खंड।

आपका जन्म उदयपुर की पवित्र भूमि में हुआ। यह मेवाड़ देश के अनमोल रत्न श्री दयालशाह के वंशज है। श्री दयालशाह हिन्दुआ सूर्य महाराणा श्री राजसिंह जी जिन्होंने हिन्दू धर्म व आर्य संस्कृति का रक्षण करने के लिए दिल्लीपति शाह औरंगजेब से लोहा लिया उनके मन्त्री व सेनानायक थे। इनकी धवल कीर्ति का स्मारक अभी श्री आदेश्वरनाथ का विशाल मन्दिर राजसमन्द की पाल पर स्थिति नवचौकियों के ऊपर पहाड़ी पर विद्यमान है।

आपने राजपूताना हाईस्कूल अजमेर से प्रथम श्रेणी में परीक्षा पास कर फर्ग्युसन कॉलेज पूना से इन्टर साइन्स, विलसन कॉलेज बम्बई से बी० एससी०, (प्रकृतिशास्त्र व गणित) आगरा कॉलेज व इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से एम ए० (इतिहास) एल-एल० बी० प्रथम श्रेणी में पास किया। मेवाड़ के हाईकोर्ट में जुडीशियल शिक्षण लेकर दो-तीन मास महाराणा कॉलेज उदयपुर में हिन्दी के प्रोफेसर रहे। वहाँ से स्थानान्तर नाथद्वारा में सिटी मजिस्ट्रेट व मुनसिफ के पद पर ड़ वर्ष तक काम कर फिर डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, माल हाकिम व असिस्टेन्ट मैनेजर के पद पर चौदह वर्ष तक काम किया। आपकी निष्पक्ष न्याय प्रणाली, सुव्यवहार, सच्चरित्रता की समय-समय पर उच्चाधिकारियों ने प्रशंसा की है और जनता के हृदय पर आपकी गहरी छाप है। आपके अपने [illegible] काल में नाथद्वारा के समस्त गाँवों में देवी-देवताओं के नाम पर होने वाले बलिदान की व गाँवों की सीमा में

जीवहिंसा होने व मदिरा माँस लाने की सख्त रोक थी। कृषकगण पर चढ़ी हुई सहस्रो रुपयों की पुरानी बाकियात मेवाड सरकार से प्रेरणा कर छूट कराई।

स्वधर्मी बन्धु, दुःखी और रोगग्रस्त पीडितो की सहायता मे आप विशेष भाग लेते हैं और जैन धर्म के ज्ञान प्रचार व कार्यप्रणाली में आपकी मुख्य लगन है। फलस्वरूप स्थानीय जैन सेवा समिति नाथद्वारा आप ही ने स्थापित करवाई है। स्वयं आप अपने स्वधर्मी बन्धुओ के साथ परीक्षा में बैठे और जैन सिद्धान्त शास्त्रीय परीक्षा रतलाम बोर्ड से पास कर स्वर्णपदक प्राप्त किया। आपके लगाए हुए पौधे अभी भी प्रफुल्लित हो रहे हैं और प्रत्येक दिन बालक-बालिकाएँ जैन धर्म का अभ्यास कर वार्षिक परीक्षा मे सम्मिलित होते हैं।

शरणार्थियों की आपने पूर्ण रूप से सेवा की। आप मेवाड सरकार की ओर से इस कार्य में निःशुल्क सेवा के लिए मन्त्री पद पर नियुक्त किये गए।

जागीर पुनर्ग्रहण के कारण नाथद्वारा के जुडीशियल व माली अधिकार लुप्त होने से स्थानीय सेवा से मुक्त होकर राजस्थान रेलवे मे आप एकाउन्टेन्ट के पद पर रहे। वहाँ से कमिश्नरी उदयपुर डिवीजन मे स्थानान्तर होकर सन् १९५० मे वृहत् राजस्थान बनने पर आप आर० ए० एस० श्रेणी मे लिये गए। रेन्ट कन्ट्रोलर एस० डी० ओ० फलासिया, एस० डी० ओ० कपास, सुपरिन्टेन्डेन्ट कोर्ट ऑफ वार्डज, सहायक कलेक्टर तथा फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट वाली के पदो पर सुशोभित होकर हाल मे असिस्टेन्ट कमिश्नर देवस्थान विभाग राजस्थान उदयपुर के पद पर आरूढ है। स्वर्गीय महाराणा श्री भोपालसिंहजी साहब बहादुर ने आपकी बैठक व पैर मे सोना पहिनने की इजाजत बख्शी है।

स० २००९ मे उपाचार्य श्री के चातुर्मास के अवसर पर समस्त स्थानकवासी जैन समाज उदयपुर की तरफ से स्वागतकारिणी समिति के सभापति मनोनीत किये गए व श्रावक सघ के सर्वानुमत प्रथम सभापति चुने गए। इसी वर्ष ओसवाल (बडे साजन) समाज की नई कमेटी का चुनाव हुआ उसमे आप सर्वानुमति से मन्त्री पद पर चुने गए। इस कमेटी मे आपने समाज के उत्थान व असहाय-सहायता आदि के लिए भरसक प्रयत्न किया और कमेटी की प्रगति मे जो कार्य किया वह सराहनीय है।

अभी श्री जैन स्थानकवासी सेवा समिति उदयपुर ने जो आप ही की प्रेरणा से कायम की गई थी उसमे ज्ञान सम्पादन, प्रौढ शिक्षण, आयम्बिल शाला, स्वाध्यायशाला, दया, तपस्या, असहाय सहायता आदि मे पूर्णरूप से सहयोग देकर प्रवृत्ति आगे बढ़ा रहे हैं।

हिन्दी साहित्यरत्न की परीक्षा पास कर सिद्धान्ताचार्य का प्रथम खड पास किया है। आगे अभ्यास चालू है।

आप आठ भाषा हिन्दी, सस्कृत, उर्दू, फारसी, अग्रेजी, गुजराती, अर्द्धमागधी, व प्राकृत के उच्च ज्ञाता हैं।

जैन धर्म के विशेषज्ञ व प्रभावशाली भाषणदाता हैं। आप जैसे विद्वान् एव चरित्रनिष्ठ पुरुष से समाज को गौरव है।

श्री अमरसिंहजी मेहता, उदयपुर

आपका शुभ जन्म उदयपुर (राजस्थान) में ता० ८ मई सन् १९३१ को हुआ था। आपका प्रसिद्ध खानदान 'चील मेहता' नाम से महाराणा हमीर से चला आ रहा है। आपके पूज्य पिताश्री का नाम श्री बलवन्तसिंह जी मेहता है, जो कि भारतीय संविधान परिषद के सदस्य, लोक सभा सदस्य, अन्तर्कालीन संसद के सदस्य एव राजस्थान के उद्योग तथा वाणिज्य मन्त्री रह चुके है।

आपने राजपूताना विश्व विद्यालय से बी० कॉम० की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की। देहली स्कूल ऑफ इकॉनामिक्स से योजना कमीशन से सिफारिशत आर्थिक प्रशासन कोर्स उत्तीर्ण की है। अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन की 'विशारद' परीक्षा उत्तीर्ण की है। वर्तमान में एम० कॉम (फाइनल) का अध्ययन कर रहे है। महाराणा भूपाल कॉलेज में सन् १९५१ का प्रथम सम्मान्य ज्ञान पारितोषिक प्राप्त किया है।

श्री रतनलालजी मेहता, उदयपुर

आप उदयपुर के निवासी श्री एकलिंगदास जी के सुपुत्र है। आप अत्यन्त सेवा-भावी, कर्मनिष्ठ एव धार्मिक आस्था के व्यक्ति है। बचपन मे ही धार्मिक सस्कारो से सस्कारित होने के कारण आपका जीवन अत्यन्त सरल है। सरकारी नौकरी छोडकर इस वृद्धावस्था में भी आप तन-मन से समाज की सेवा कर रहे है। मेवाड के आदिवासियो को जीवन-धरातल से ऊँचा उठाने में आप सतत् प्रयत्नशील है। पंतालीस वर्ष की अवस्था में ही आपने सपत्नीक ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर लिया था। बडी योग्यता और दक्षतापूर्वक उदयपुर में जैन शिक्षण-सस्था, कन्या पाठशाला और ब्रह्मचर्याश्रम का सफल सचालन कर रहे है। इन सस्थाओ के लिए आपने भारत के भिन्न-भिन्न भागो में घूम-घूमकर लगभग सवा लाख रु० का चन्दा एकत्रित किया।
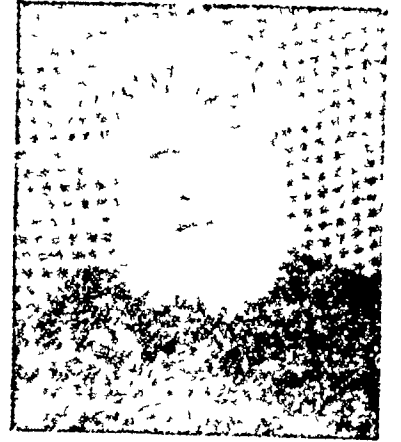
अब आप वर्द्धमान सेवाश्रम के द्वारा आदिवासियो के बीच शिक्षा तथा सस्कारो का प्रचार कर रहे है। अपनी ७९ वर्ष की आयु में भी पौषधोपवास आदि क्रियाएँ नियमित और व्यवस्थित रूप से करते आ रहे हैं।

धार्मिक थोकडे, शास्त्र आदि का आपको सुन्दर ज्ञान है। आपकी अद्भुत लगन और कार्यशक्ति को देखकर आपके प्रति सहज ही प्रेम एव आदर प्रकट होना स्वाभाविक है।

श्री मनोहरलाल जी पोखरना, चित्तौड़गढ़
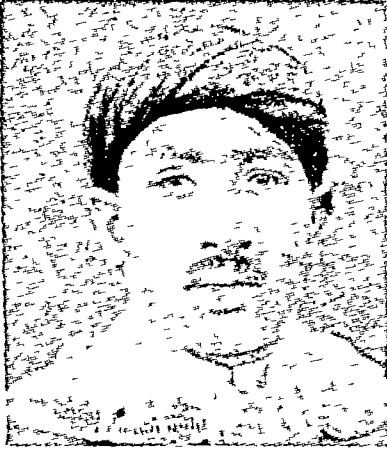
आप श्री मनोहरलाल जी पोखरना के सुपुत्र और चित्तौडगढ के निवासी है। चित्तौड नगर के ओसवाल समाज के आप एक उत्साही और समाज-सेवी कार्यकर्ता है। नगरपालिका चितौड के आप माननीय सदस्य है। नगर के धार्मिक एव सार्वजनिक कार्यक्रमो में आप अपना सक्रिय सहयोग देते रहते है। श्री श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स के विगत दस वर्षो से आप सहायक 'सदस्य है। प्रत्येक धार्मिक कार्य को सम्पन्न कराने में आप विशेष रुचि रखते है। साधु-मुनिराजो की सेवा आपका परम लक्ष्य है। आपके गम्भीर स्वभाव और कार्य-तत्परता से जैन समाज आपसे अत्यन्त ही आशावान है।

● ● ●

श्री अर्जुनलाल जी डांगी, भीलवाडा

आप श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक-संघ, भीलवाडा के अध्यक्ष है। आपने अपने पिताश्री की स्मृति में ५०,०००) रु० की लागत से "मोती-भवन" बनाया है, जिसमें स्थानीय मिडिल स्कूल, संघ की तरफ से सचालित किया जा रहा है।

● ● ●

सेठ वहादुरमलजी वांठिया, भीनासर

श्री वाठियाजी का जन्म सं० १९४६ मिति आषाढ सुद ३ को हुआ था। आप कलकत्ता की सुप्रसिद्ध फर्म प्रेमराज हजारीमल के मालिक थे। छातो के आप वडे व्यापारियो में से थे।

आप वडा संयमी जीवन जीने वालो में से थे। ३९ वर्ष की उम्र में आपकी धर्मपत्नी का देहान्त हो जाने पर भी आपने दूसरी शादी नही की थी।

आपकी तरफ से दीक्षार्थियो को भण्डोपकरण, शास्त्रादि मुफ्त दिये जाते थे। स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी म० के आप अनन्य भक्त थे। पूज्य श्री का जहाँ चातुर्मास होता था वहाँ प्राय. आप जाते ही थे।

सं० १९८४ में पूज्य श्री का चातुर्मास भीनासर में हुआ था। इस समय पूज्यश्री के व्याख्यानो से प्रेरित हो आपने श्री श्वे० साधुमार्गी जैन हितकारिणी सस्था, वीकानेर को १९१११) रु० का दान दिया था। स्थानीय गौशाला तथा स्टेट मिडिल स्कूल की इमारतें भी आपकी तरफ से ही प्रदान की हुई है। आपकी तरफ से स्था० जैन श्वे० औषधालय भी भीनसर में चल रहा है। इस औषधालय को भवन-निर्माणार्थ आपने अपने कनिष्ठ पुत्र स्व० श्री वशीलालजी के नाम से ५००१) रु० प्रदान किया था। २८००१) रु० आपने अपने नाम से दिया और इस औषधालय को स्थायी रूप प्रदान कर दिया। जनवरी सन् १९४५ को ५६ वर्ष की उम्र में आपका देहावसान हुआ।

सेठ श्री गोविन्दरामजी भंसाली, बीकानेर
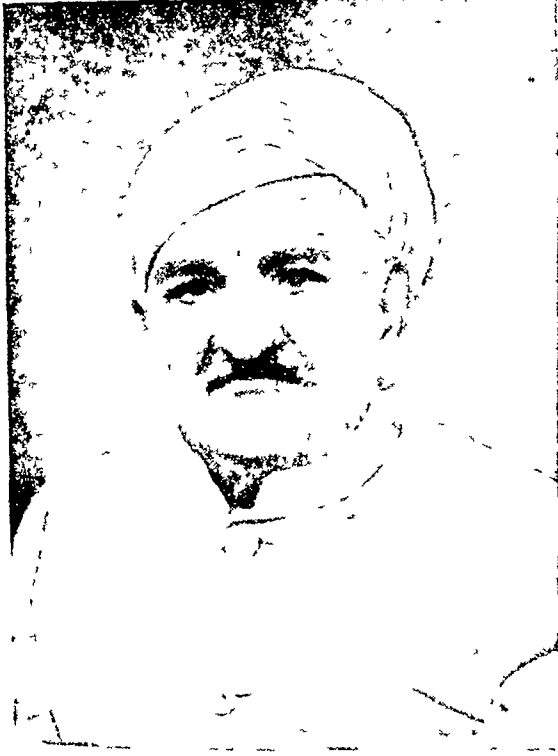
आपका जन्म सवत् १९३५ मे राणीसर नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिताजी का नाम सेठ श्री देवीचन्दजी था। अनेक कठिनाइयो का सामना करते हुए आप आगे बढे और जीवन के हर पहलू में आपने सफलता प्राप्त की।

आठ वर्ष की अवस्था में ही आपको कलकत्ता आना पडा और एक फर्म में नौकरी की। आपने साहस करके स्वतन्त्र व्यवसाय में हाथ डाला और 'प्रतापमल गोविन्दराम' फर्म के नाम से दुकान स्थापित की। आपका इस समय दवाइयो का विशाल पैमाने पर व्यवसाय चल रहा है। बीकानेर में भी रग और पेटेन्ट दवाइयो की एक बडी दुकान है, जिसकी देख-रेख आपके सुपुत्र भीखमचन्दजी करते हैं।

आप बीकानेर के नामाकित प्रतिष्ठित सज्जनो में से हैं। आजकल आप व्यावसायिक कार्यो मे निवृत्त होकर धर्म-ध्यान आदि में सलग्न है। आपकी ओर से चलने वाली "श्री गोविन्दराम भंसाली पारमार्थिक सस्था" की तरफ से कलकत्ता में एक पचास हजार रुपये का भवन निकाला हुआ है जिसके व्याज की आमदनी से 'श्री गोविन्द पुस्तकालय' तथा 'श्री जीवन कन्या पाठशाला' का सचालन होता है। डूंगरगढ में आपकी फर्म द्वारा धर्मशाला और उसके पास एक कुआ बनाया गया है।

आपके सुयोग्य पुत्र श्री भीकमचन्दजी सा० भी समाज-प्रेमी हैं। सन्त-मुनिराजो की सेवा-भक्ति में आप उदार-दिल मे धनखर्च करते हैं।

श्री नथमलजी बांठिया परिवार, भीनासर निवासी का संक्षिप्त परिचय

श्री नथमलजी बाठिया का जन्म भीनासर में स० १९७२ के सावन सुदी ११ को हुआ था। आप तीन भाई हैं। सबसे बडे भाई श्री मगनमलजी तथा उनसे छोटे श्री गोरधनदासजी हैं। आपकी वर्तमान में तीन दुकानें चल रही हैं। प्रथम 'मेनरूप फतेचन्द' के नाम से कलकत्ता मे, द्वितीय 'गोवर्धनदास बाठिया' के नाम से छापरमुख (आसाम) में और तीसरी बिराच (लिगरीमुख) में हैं। उक्त दुकानो पर जूट, चाय, किराना, मनिहारी आदि का व्यापार होता है। आपकी फर्म करीब ५० वर्ष से है। श्री मगनमलजी सा० कुशल व्यापारी हैं।

आपके पिताश्री धर्म-कार्य में सदैव तत्पर रहते थे और यथाशक्ति दान भी देते रहते थे। तदनुरूप आज तीनो भाई (पार्टनर) भी धर्म-कार्य तथा समाज-कार्य में पूर्ण उदारतापूर्वक सहयोग देते रहते हैं। आपने श्री सज्जनाचार्य पू० श्री जवाहरलालजी म० सा० की सेवा भी तन-मन और धन से खूब की।
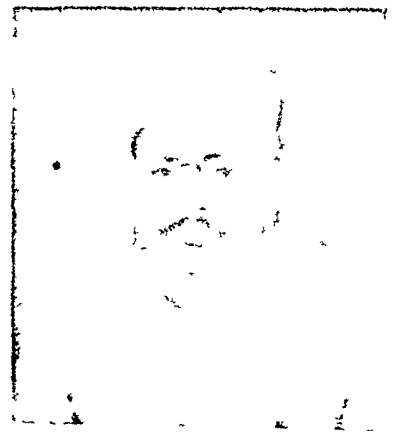
श्री मांगीलालजी सेठिया भीनासर निवासी का परिचय

आपका शुभ जन्म भीनास र में सेठिया परिवार में हुआ था। आपके पूज्य पिताश्री का शुभ नाम हीरालालजी है। आप गत ५ सास से छापर मुख (आसाम) में पाट का व्यापार कर रहे हैं। आप भी धर्म-प्रेमी सज्जन है।

● ● ●

श्री चांदमलजी, संचेती, अलवर

आप स्वर्गीय श्री चन्दनमलजी चौधरी के सुपुत्र है। कपड़े के प्रतिष्ठित व्यापारी हैं। 'बृजलाल रामवख्श' नाम से आप फैंसी कपड़े का व्यापार कर रहे हैं। सामाजिक कार्यो में आपका सहयोग प्रशंसनीय है। आपके जीवन में एक विशेषता यह रही है कि आप जिस कार्य को हाथ मे लेते हैं उसे नियमित रूप से पूरा करके छोडते है।

महाराजा अलवर के शासन काल में आप ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भी रह चुके हैं। स्थानीय भव्य-भवन 'श्री महावीर भवन' के निर्माण में आपका सहयोग प्रशंसनीय रहा है। सामाजिक एवं धार्मिक कार्यो में आपका प्रमुख सहयोग रहता है। श्री वर्द्ध० स्था० जैन श्रावक सघ की कार्यकारिणी के आप माननीय संरक्षक सदस्य है।

श्री चांदमलजी पालावत, अलवर

आप स्व० श्री स्वरूपचन्दजी पालावत के सुपुत्र है। आपका जन्म फाल्गुन कृष्णा अष्टमी स० १९४८ में अलवर में हुआ था। बजपन से ही आपकी अभिरुचि अध्ययन एवं तत्त्वचिन्तन में रही है। स० १९७० में आपने आदरणीय महासतीजी श्री पार्वती म० लिखित 'सभ्यक्तव सूर्योदय'; 'सत्यार्थ चन्द्रोदय' और 'ज्ञानदीपिका' आदि ग्रन्थो का अध्ययन स्वनामधन्य पं० मुनि श्री माधव मुनिजी के चरणो में रहकर किया और फलस्वरूप अपने परम्परागत मूर्तिपूजा के विचारो को छोडकर आप चेतन गुण पूजा की ओर पूर्णरूप से प्रवृत्त हो गए।

संवत् १९७३ में वर्तमान सह मन्त्री प० रत्न श्री हस्तीमलजी म० के दादा-गुरु पूज्य श्री विनयचन्दजी म० ने आपकी प्रगल्भवुद्धि को देखकर आपको कर्मग्रन्थ सग्रहणी और क्षेत्र समासादि के स्वाध्याय करने को प्रेरित किया। तभी से कर्मवाद

का आपका अध्ययन गहन से गहनतर होता रहा। कर्म सिद्धान्त के सूक्ष्म विवेचन की आपकी क्षमता की प्रशसा वर्तमान आचार्य श्री एवं उपाचार्य श्री ने भी मुक्तकण्ठ से की है।

आप स्थानीय श्री व० स्था० श्रावक सघ के संरक्षक सदस्य हैं। स्थानीय श्री 'महावीर-भवन' में आपने भी श्री चादमलजी पालावत के साथ-साथ प्रशसनीय सहयोग दिया है। रात्रिकालीन स्वाध्याय मण्डल के सचालन का भार भी आप पर ही है। जिस प्रकार व्यापारिक-क्षेत्र में आपने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है उसी प्रकार धार्मिक तत्त्व-चर्चा में भी आपने अपनी बुद्धि की प्रखरता प्रमाणित की है।

श्री खुशहालचन्दजी संचेती, अलवर

आप स्व० श्री केशरीचन्दजी के सुपुत्र हैं। कपड़े के प्रतिष्ठित व्यापारी हैं। 'कस्तूरचन्द ज्ञानचन्द' और 'खुशालचन्द अभयकुमार' के नाम से आपकी दो व्यापारिक फर्में हैं जिन पर कपडे का थोक व्यापार होता है। सुप्रसिद्ध बिली क्लॉथ के आप डिस्ट्रीब्यूटर हैं।

धार्मिक तत्त्वचिन्तन में आप श्री चादमलजी पालावत के निकट सहयोगी हैं और उनके साथ-साथ आप भी कर्म-ग्रन्थ का स्वाध्याय करते हैं। स्वनामधन्य चारित्र चूडामणि महातपस्वी श्री सुन्दरलालजी म० जब गृहस्थावस्था में थे तब उनकी ही सद्प्रेरणा से आपका झुकाव शास्त्रीय तत्त्व चिन्तन की ओर हो गया था। तभी से आप निरन्तर इस मार्ग पर आरूढ हैं।

आपका थोकडों का ज्ञान महत्त्वपूर्ण है। सामाजिक कार्यों में आपकी प्रशसनीय अभिरुचि है। आप श्री वर्द्ध० स्था० श्रावक सघ के कोषाध्यक्ष हैं।

श्री पद्मचन्दजी पालावत, अलवर

आप स्व० श्री किरणमलजी पालावत के सुपुत्र हैं। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपने श्री राजर्षि कॉलेज से मेट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् आप व्यापारिक कार्यक्षेत्र में उतर पडे। 'छोटेलाल पालावत' के नाम से आप कपडा, पगडी व सूत का थोक व्यापार करते हैं। अभी कुछ वर्ष पूर्व से आपने जयपुर में भी इसी नाम से कार्यारम्भ किया है।

जिस प्रकार आप व्यापारिक कार्यक्षेत्र में अग्रणी हैं, उसी प्रकार सामाजिक कार्यों में भी प्रमुख भाग लेते हैं। महाराजा अलवर के शासन काल में आप नगरपालिका के उपाध्यक्ष एवं राज्य की ओर से ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रह चुके हैं।

श्री जैन युवक सघ की कार्यवाहियो में आपने प्रमुख भाग लिया है। संघ के एक अविस्मरणीय वार्षिक अधिवेशन में आपने शारीरिक व्यायाम के आश्चर्यजनक खेल दिखाकर जनता को विस्मयान्वित कर दिया था। लोहे के मोटे सरिए को गले एव आंख के कोमल भागों पर रखकर मोडना एवं सीने पर मनो वजन के पत्थर रखवाकर तुडवाना आदि कार्य आपके आसानी से कर दिखाए थे।

इस समय आप श्री वस्त्र-व्यापार समिति, पगडी असोसिएशन और श्री वर्द्ध० स्था० श्रावक संघ के माननीय अध्यक्ष हैं। और दी यूनाइटेड कॉमर्शियल बैंक की अलवर शाखा के अध्यक्ष हैं।
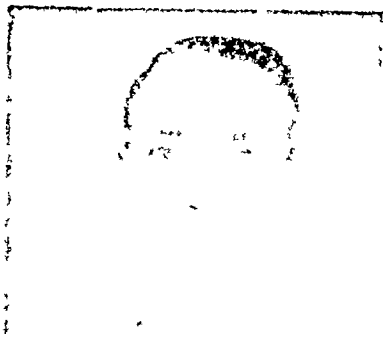
छुट्टनलालजी लोढ़ा, अलवर

आप स्व० श्री दानमलजी लोढा के सुपुत्र हैं। आपका जन्म वि० स० १९६० की आश्विन शुक्ला ६ को हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा के बाद, परम्परागत सरकारी खजाञ्ची पद पर आपने कार्य किया। इस समय आप गवर्नमेन्ट कन्ट्राक्टर है।

व्यापारिक कार्य के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी अभिरुचि अच्छी है। प्रत्येक सामाजिक कार्य में आप तन, मन, धन से जुट जाते है और पूर्ण कर डालते हैं। पजाब-सम्प्रदाय के यशस्वी स्व० पूज्य श्री रामबख्शजी म० का सासारिक सम्बन्ध आपके कुटुम्ब के साथ है।

आपकी सामाजिक प्रवृत्तियो को लक्ष्य में रखते हुए आपको श्री वर्द्ध० स्था० श्रावक संघ का उपाध्यक्ष चुना गया है।

श्री रतनलालजी संचेती, अलवर

आप अलवर जिला स्थित ग्राम बहादुरपुर निवासी श्री बुधमलजी के सुपुत्र है। आपका शुभ जन्म मिती कार्तिक कृष्णा १३ संवत् १९७५ को हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा के बाद आप व्यापारिक क्षेत्र में काम करने लगे। अलवर में 'रतनलाल-ताराचन्द' के नाम से तथा इन्दौर में 'उमरावसिह सुआ-लाल' और 'रतनलाल मगलचन्द' के नाम से तीन फर्मे कपड़े का व्यापार कर रही हैं।

सामाजिक कार्यो में आपकी विशेष रुचि रहती है। स्थानीय कांग्रेस के आप कर्मठ सदस्य हैं।

सवत् २००७ में जब तेरह पंथ सम्प्रदाय के आदर्श श्री तुलसी अपनी शिष्य-मण्डली सहित यहाँ पधारे तो आपकी धर्मपत्नी तेरह पथ विचारधारा से सम्बन्धित होने से वे आपके ही मकान पर सदल-बल पधारे। उस समय आपने साहसपूर्वक उन्हे अपने सिद्धान्तो की चुनौती दी। आचार्य श्री ने अपने स्थान पर मिलने की स्वीकृति दी। तब आप अपने समाज के अन्य उत्साही एव विद्वज्जनो को साथ लेकर वहाँ उपस्थित हुए। सौभाग्य से सरदार शहर के निवासी श्री मोतीलालजी बरडिया भी यही उपस्थित थे। अन्ततोगत्वा तुलसी गणी को निरुत्तर होकर यहाँ से विहार करना पडा।

पजाब से विहार कर जब पूज्य श्री खूबचन्दजी म० अलवर पधारे तब आपको म० श्री के परिचय में आने का सौभाग्य मिला और इन्दौर में श्रद्धेय पं० मुनि श्री सहस्रमलजी म० की पुनीत सेवा में जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। तभी से निरन्तर आपकी धर्म एव दर्शन के प्रति रुचि प्रगति पथ पर है। आपकी सामाजिक एव धार्मिक चेतना तथा उत्साह को देखकर ही श्री वर्द्ध० स्था० श्रावक सघ ने आपको अपना मन्त्री चुना है।

श्री पद्मचन्दजी संचेती, अलवर

आप स्व० श्री खैरातीमलजी संचेती के सुपुत्र हैं। आपने प्रारम्भिक शिक्षा यहाँ ग्रहण की और आगे अध्ययन कलकत्ता में किया। सन् १९४० में आपको अध्ययन छोडकर अलवर आना पडा। तभी से आपने व्यापारिक क्षेत्र में प्रवेश किन्तु साहित्य से आपका सपर्क निरतर चलता रहा। स्थानीय 'श्री जैन युवक संघ' से सहयोग रहा। सघ के छठे वार्षिक अधिवेशन में वाद-विवाद प्रतियोगीताएँ जैन युवक सघ की ओर से आपने तथा अभयकुमार जी ने भाग लिया था। फलत' सब सस्थाओ से विजय प्राप्त की और कप जीता।

सामाजिक कार्यो में आपकी सेवाएँ सर्वतोमुखी हैं। सामाजिक चेतना एवं उन्नति के प्रत्येक कार्य में आपका सहयोग प्रशसनीय हे। आपकी सेवाओ एव कार्यदक्षता को दृष्टिगत रखते हुए आपको श्री वर्द्ध० स्था० श्रावक संघ का सहमन्त्री चुना गया है।

श्री नानकचन्द जी पालावत, अलवर

आप स्व० श्री कुन्दनमल जी पालावत के सुपुत्र हैं। कपडा, पगडी व सूत के प्रतिष्ठित व्यापारी है। धार्मिक तत्त्व चिन्तन एव सामाजिक उन्नति के कार्यो में आपकी अत्यधिक अभिरुचि है। विद्यार्थियो की स्कूली शिक्षण की रुचि के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा की तरफ अभिरुचि पैदा कराने में भी आप सतत प्रयत्नशील रहते हैं।

पंजाब केशरी श्री मज्जैनाचार्य स्व० श्री काशीरामजी म० के सदुपदेश से 'श्री ओसवाल जैन कन्या पाठशाला' की स्थापना हुई और आप पाठशाला के जन्मकाल से ही उसकी उन्नति में सतत प्रयत्नशील रहे हैं। आज आपके प्रयत्नो से शैक्षणिक पाठ्यक्रम के साथ-साथ धार्मिक शिक्षण और सिलाई, कढाई आदि का शिक्षण भी दिया जाता है।
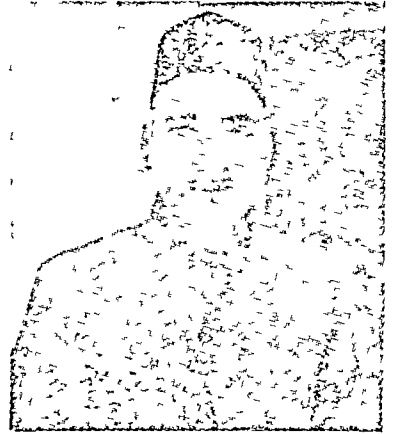
आपके द्वारा वाल एव युवक वर्ग को धार्मिक सस्कारो से अपने जीवन को सुसस्कृत बनाने की प्रेरणा भी समय २ पर मिलती रहती हे आप श्री वर्द्ध० स्था० श्रावक सघ की कार्यकारिणी समिति के माननीय सदस्य हैं।

श्री कुञ्जलालजी सा० तालेड़ा, अलवर

आप स्यालकोट निवासी स्व० फग्गूशाह जी के सुपुत्र हैं। स्यालकोट में आप प्रतिष्ठित व्यापारी थे। वहाँ आपका सर्राफे का मुख्य व्यापार था। भारतीय स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय जो हृदयद्रावक काण्ड पाकिस्तान में हुआ और लाखो घरो को उजड़कर खानाबदोश होकर भागना पडा उस समय आपको भी अपनी चल-अचल सम्पत्ति छोडकर भागना पडा। किन्तु इतनी मुसीबतो का सामना करने के बावजूद भी आप हताश और निराश नहीं हुए। और सकुटुम्ब अलवर पधार गए। यहाँ आपने 'स्यालकोटियाँ दी हट्टी' के नाम से कपड़े का व्यापार आरम्भ कर दिया है। इसके अतिरिक्त दिल्ली में अपने अन्य सहयोगियो के साथ "दिल्ली एल्यूमीनियम कार्पोरेशन के नाम से एल्यूमोनियम के बर्तनो की फैक्ट्री चालू की है।

छुट्टनलालजी लोढ़ा, अलवर

आप स्व० श्री दानमलजी लोढा के सुपुत्र हैं। आपका जन्म वि० सं० १९६० की आश्विन शुक्ला ९ को हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा के बाद, परम्परागत सरकारी खजान्ची पद पर आपने कार्य किया। इस समय आप गवर्नमेन्ट कन्ट्राक्टर हैं।

व्यापारिक कार्य के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी अभिरुचि अच्छी है। प्रत्येक सामाजिक कार्य में आप तन, मन, धन से जुट जाते हैं और पूर्ण कर डालते हैं। पंजाब-सम्प्रदाय के यशस्वी स्व० पूज्य श्री रामबक्शजी म० का सांसारिक सम्बन्ध आपके कुटुम्ब के साथ है।

आपकी सामाजिक प्रवृत्तियो को लक्ष्य में रखते हुए आपको श्री वर्द्ध० स्था० श्रावक संघ का उपाध्यक्ष चुना गया है।

श्री रतनलालजी संचेती, अलवर

आप अलवर जिला स्थित ग्राम बहादुरपुर निवासी श्री बुधमलजी के सुपुत्र है। आपका शुभ जन्म मिती कार्तिक कृष्णा १३ सवत् १९७५ को हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा के बाद आप व्यापारिक क्षेत्र में काम करने लगे। अलवर में 'रतनलाल, ताराचन्द' के नाम से तथा इन्दौर में 'उमरावसिंह मुन्ना-लाल' और 'रतनलाल मंगलचन्द' के नाम से तीन फर्मे कपड़े का व्यापार कर रही है।

सामाजिक कार्यों में आपकी विशेष रुचि रहती है। स्थानीय कांग्रेस के आप कर्मठ सदस्य हैं।

सवत् २००७ में जब तेरह पंथ सम्प्रदाय के आचार्य श्री तुलसी अपनी शिष्य-मण्डली सहित यहाँ पधारे तो आपकी धर्मपत्नी तेरह पथ विचारधारा से सम्बन्धित होने से वे आपके ही मकान पर सदल-बल पधारे। उस समय आपने साहसपूर्वक उन्हे अपने सिद्धान्तो की चुनौती दी। आचार्य श्री ने अपने स्थान पर मिलने की स्वीकृति दी। तब आप अपने समाज के अन्य उत्साही एव विद्वज्जनो को साथ लेकर वहाँ उपस्थित हुए। सौभाग्य से सरदार शहर के निवासी श्री मोतीलालजी बरडिया भी यही उपस्थित थे। अन्ततोगत्वा तुलसी गणी को निरुत्तर होकर यहाँ से विहार करना पडा।

पंजाब से विहार कर जब पूज्य श्री खूबचन्दजी म० अलवर पधारे तब आपको म० श्री के परिचय में आने का सौभाग्य मिला और इन्दौर में श्रद्धेय प० मुनि श्री सहस्रमलजी म० की पुनीत सेवा में जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। तभी से निरन्तर आपकी धर्म एव दर्शन के प्रति रुचि प्रगति पथ पर है। आपकी सामाजिक एव धार्मिक चेतना तथा उत्साह को देखकर ही श्री वर्द्ध० स्था० श्रावक सघ ने आपको अपना मन्त्री चुना है।

श्री पद्मचन्दजी सचेती, अलवर

आप स्व० श्री खैरातीमलजी सचेती के सुपुत्र है। आपने प्रारम्भिक शिक्षा यहाँ ग्रहण की और आगे अध्ययन कलकत्ता में किया। सन् १९४० में आपको अध्ययन छोडकर अलवर आना पडा। तभी से आपने व्यापारिक क्षेत्र में प्रवेश किन्तु साहित्य से आपका सपर्क निरतर चलता रहा। स्थानीय 'श्री जैन युवक संघ' से सहयोग रहा। सघ के छठे वार्षिक अधिवेशन में वाद-विवाद प्रतियोगीताएँ जैन युवक सघ की ओर से आपने तथा अभयकुमार जी ने भाग लिया था। फलत. सव सस्थाओ से विजय प्राप्त की और कप जीता।

सामाजिक कार्यो में आपकी सेवाएँ सर्वतोमुखी है। सामाजिक चेतना एव उन्नति के प्रत्येक कार्य में आपका सहयोग प्रशसनीय है। आपकी सेवाओ एव कार्यदक्षता को दृष्टिगत रखते हुए आपको श्री वर्द्ध० स्था० श्रावक सघ का सहमन्त्री चुना गया है।

श्री नानकचन्द जी पालावत, अलवर

आप स्व० श्री कुन्दनमल जी पालावत के सुपुत्र है। कपडा, पगडी व सूत के प्रतिष्ठित व्यापारी है। धार्मिक तत्त्व चिन्तन एव सामाजिक उन्नति के कार्यो से आपकी अत्यधिक अभिरुचि है। विद्यार्थियो की स्कूली शिक्षण की रुचि के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा की तरफ अभिरुचि पैदा कराने में भी आप सतत प्रयत्नशील रहते हैं।

पजाव केशरी श्री मज्जैनाचार्य स्व० श्री काशीरामजी म० के सदुपदेश से 'श्री ओसवाल जैन कन्या पाठशाला' की स्थापना हुई और आप पाठशाला के जन्मकाल से ही उसकी उन्नति में सतत प्रयत्नशील रहे है। आज आपके प्रयत्नो से शैक्षणिक पाठ्यक्रम के साथ-साथ धार्मिक शिक्षण और सिलाई, कढाई आदि का शिक्षण भी दिया जाता है।

आपके द्वारा वाल एव युवक वर्ग को धार्मिक सस्कारो से अपने जीवन को सुसस्कृत वनाने की प्रेरणा भी समय २ पर मिलती रहती है आप श्री वर्द्ध० स्था० श्रावक सघ की कार्यकारिणी समिति के माननीय सदस्य हैं।

श्री कुञ्जलालजी सा० तालेड़ा, अलवर

आप स्यालकोट निवासी स्व० फग्गूशाह जी के सुपुत्र है। स्यालकोट में आप प्रतिष्ठित व्यापारी थे। वहाँ आपका सर्राफे का मुख्य व्यापार था। भारतीय स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय जो हृदयद्रावक काण्ड पाकिस्तान में हुआ और लाखो घरो को उजडकर खानावदोश होकर भागना पडा उस लमय आपको भी अपनी चल-अचल सम्पत्ति छोड़कर भागना पडा। किन्तु इतनी मुसीवतो का सामना करने के वावजूद भी आप हताश और निराश नही हुए। और सकुटुम्व अलवर पधार गए। यहाँ आपने 'स्यालकोटियो दी हट्टी' के नाम से कपडे का व्यापार आरम्भ कर दिया है। इसके अतिरिक्त दिल्ली में अपने अन्य सहयोगियो के साथ "दिल्ली एल्यूमोनियम कारपोरेशन के नाम से एल्यूमोलियम के वर्तनो की फैक्ट्री चालू की है।

भारत के मध्यप्रदेश स्थित कटनी नगर में स्यालकोट के उत्साही एवं व्यापार-कुशल व्यक्तियो ने "दा नेशनल रबर वर्क्स" के नाम से फैक्टरी प्रारम्भ की है। अत्यल्प समय में ही इस फैक्टरी ने भारत के रबर-उद्योग में महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण कर लिया है। आप वर्तमान में इस कम्पनी के डायरेक्टर है।

सामाजिक उन्नति के कार्यो में आप सदैव अग्रणी रहते हैं। श्री वर्द्ध स्था० जैन श्रावक संघ की कार्यकारिणी के आप माननीय सदस्य है।

श्री अभयकुमारजी वोहरा, अलवर

आप स्वनाम धन्य तपस्वी श्री नानकचन्दजी म० के सासारिक सुपुत्र है। आपकी अल्पायु में ही आपके पिता श्री ने भगवती दीक्षा अगीकार कर ली थी। अतः आपको रा० सा० श्री जमुनालालजी रामलालजी कीमती इन्दौर वालो के संरक्षण में रखा गया। प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् आपने जैनेन्द्र गुरुकुल, पंचकूला में सन् १९३४ तक विद्याध्ययन किया। धार्मिक अध्ययन के साथ-साथ आपने हिन्दी में प्रभाकर की परीक्षा पास की है।

आपके काका सा० श्री प्यारेलालजी आपको यहाँ ले आए और अपना दत्तक पुत्र स्वीकार कर लिया। तभी से आप यहाँ व्यापार कर रहे हैं। सामाजिक कार्यों मे आपका प्रशंसनीय सहयोग रहता है। वर्तमान में आप स्थानीथ श्री जैन युवक सघ के कोषाध्वक्ष एव श्री वर्द्ध० स्था० जैन श्रावक सघ की कार्यकारिणी समिति के माननीय सदस्य है।

श्री ताराचन्दजी पारिख, अलवर

आप दिल्ली निवासी स्व० श्री वालचन्दजी पारिख के सुपुत्र हैं। आपके पूज्य पिता श्री का स्वर्गवास ३२ वर्ष की अल्पायु में ही हो गया था। अत. आपके नाना सा० श्री गणेशीलालजी पालावत आपकी माताजी को वच्चो सहित अवलर ले आए।

सन् १९३९ तक आपने विद्याध्ययन किया। इसी बीच सौभाग्यवश आपका स्थानींय जनाने शफाखाने की प्रिंसिपल मेडीकल ऑफीसर डा० एस० शिवाकामू से परिचय हो गया, जिनके आशीर्वाद से आपने शीघ्र ही अच्छी उन्नति की। इस समय आप गवर्नमेन्ट कन्ट्रेक्टर है और श्री सवाई महाराजा सा० अलवर के पैलेस कन्ट्रेक्टर का कार्य भी करते है।

सामाजिक कार्यो में आप रुचिपूर्वक भाग लेते है। स्था० श्री जैन युवक संघ की समस्त कार्यवाहियों में आपका प्रशसनीय योग रहा है। संघ की ओर से चालू किये गए वाचनालय एवं पुस्तकालय की उन्नति का मुख्य श्रेय आपको ही है। पुस्तकालयाध्यक्ष वनने के वाद आपने पुस्तको की संख्या द्विगुणित से भी अधिक पहुँचा दी हे और पुस्तकालय को भी नवीन ढग से सुसज्जित कर दिया है। श्रद्धेय कविवर्य श्री अमरचन्दजी म० के परिचय में हिज हाइनेस श्री सवाई अलवरेन्द्र देव को लाने में भी आपने महत्वपूर्ण भाग लिया था। वर्तमान में आप श्री वर्ध० स्था० श्रावक संघ की कार्यकारिणी समिति के माननीय सदस्य हैं।

श्री अभयकुमारजी संचेती, अलवर

आप श्री खुशहालचन्दजी संचेती के सुपुत्र है। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपने श्री राजर्षि कॉलेज से मेट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् आपने व्यापारिक क्षेत्र में प्रवेश किया।

सामाजिक कार्यो में भी आप सदैव सहयोग देते आए है। स्थानीय श्री जैन युवक सघ की मानसिक एव शारीरिक उन्नति के लिए चालू की गई प्रवृत्तियो में आपने महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया है। श्री ओसवाल जैन कन्या-पाठशाला के कार्यो में भी आप सोत्साह भाग लेते रहते है। आप एक अच्छे वक्ता तथा विचारक है

श्री मंगलचन्दजी संचेती, अलवर

आप स्व० श्री खैरातीमलजी सचेती के सुपुत्र है आप पगडी व सूत के प्रतिष्ठित व्यापारी है। प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् आपने व्यापारिक क्षेत्र में प्रवेश किया। किन्तु सामाजिक कार्यक्रम भी साथ-साथ चलता रहा। श्री जैन युवक सघ के प्रादुर्भाव से ही आप उसकी कार्यवाही में प्रमुख भाग लेते रहे है। आपने 'मगलचन्द पन्नालाल' के नाम से फर्म स्थापित की। वर्तमान में सामाजिक कार्यो में विशेष रुचि लेने के फलस्वरूप आपको श्री जैन युवक-सघ का अध्यक्ष चुना गया है।

स्व० श्री सुगनचन्दजी नाहर, अजमेर

आपका जन्म सं० १९२९ के मार्गशीर्ष वदी १३ को अजमेर में हुआ था।

आपने इन्टर की शिक्षा प्राप्त करके रेलवे की नौकरी की और S T I A रहकर अपनी पूर्ण सेवाओं द्वारा फलतापूर्वक अवधि समाप्त करके अवकास ग्रहण किया।

अप्पने समाज के कार्यो में भी पूरी दिलचस्पी ली, और कई सस्थाओ के स्तर को ऊँचा उठाया। आप श्री ोसवाल जैन हाई स्कूल के प्रेसिडेण्ट, श्री ओसवाल औषधालय के वाइस प्रेसिडेंन्ट, श्री जैन लायब्रेरी के मन्त्री श्री नानक न छात्रालय गुलाबपुरा के प्रेसिडेन्ट एव श्री नानक सम्प्रदाय के प्रमुख श्रावक थे। आप साधु-सम्मेलन में स्वागत समिति मन्त्री थे।

आप अपने विचारो के दृढ एवं अनुभवी योग्य मार्ग प्रदर्शक थे। आपने समय-समय पर यहाँ के युवको को रणा देकर आगे बढाया। ८० वर्ष की अवस्था में भी आप व्याख्यान आदि में पैदल ही आने का अभ्यास रखते थे। ापने अपने जीवन में धार्मिक, सामाजिक एव आर्थिक सभी प्रकार की उन्नति की और अजमेर में नाहर परिवार के ोरव को बढाया। आप जैसे धर्म रत्न की पूर्ति होना मुश्किल है।

श्री सरदारमलजी लोढ़ा, अजमेर

आपका जन्म सं० १९७२ में सुप्रसिद्ध सेठ गाडमलजी लोढ़ा के यहाँ हुआ।

अजमेर प्रान्त के प्रमुख लोढावंश के श्रीसन्त सेठ सरदादमलजी लोढा वर्तमान में अजमेर श्रावक संघ के

सघपति है, आप जिस उत्साह एवं विचारधारा से इस समय संघ का कार्यभार सँभाल रहे हैं, वह अत्यन्त सराहनीय है।

श्रीमन्त घराने में जन्म पाकर भी आप शान-शौकत एवं अभिमान से परे है, नम्रता तो आप में कुदरती गुण है। आपने अजमेर मे श्रावक संघ बनाने एवं उसके बाद भी उलझी हुई गुत्थियो को सुलझाने में जिस चतुराई से काम लिया, वह भुलाया नही जा सकता !

आप पू० श्री नानकरामजी म० की सम्प्रदाय के अगुआ श्रावको में से थे, किन्तु सादडी-सम्मेलन के बाद आपने प्रेम और संगठन की भावनाओ को अपनाया तथा अजमेर में श्रावक संघ की स्थापना के लिए सबसे पहले कदम उठाया।

आप अपने पुराने साथियों एवं गत सम्प्रदाय के मुनिवर्ग को भी संघ में सम्मिलित होने के लिए सदैव प्रेरणा देते रहे हैं। आशा है, अब शीघ्र ही आप इस कमी को भी पूर्ण करने में सफल होगे। समाज को आप से पूर्ण आशाएँ है।

श्री कल्याणमलजी वैद, अजमेर

आपका जन्म सं० १९६३ श्रावण वदी ३ को अजमेर में श्री केशरीमलजी बैद के यहाँ हुआ।

जैन कॉन्फरन्स के हर वार्षिक अधिवेशन में आप अवश्य भाग लेते है। श्री बैदजी अजमेर साधु सम्मेलन के कर्मठ कार्यकर्त्ता रहे और समाज-सेवा के हर कार्य में अपना सहयोग देते रहे हैं।

आप स्पष्ट वक्ता एव निडर कार्यकर्त्ता है। आपका अजमेर समाज पर काफी प्रभाव है और आज भी मतदान के अवसर सबसे ज्यादा वोट आप ही को मिलते है।

श्री बैदजी यहाँ के प्रमुख कार्यकर्त्ता है। धार्मिक लगन, सन्त-सेवा एव साहित्य के पूरे प्रेमी है, आपके विचारो से युवको को काफी बल मिलता है।

आप कॉन्फरन्स के हर अधिवेशन पर जाकर अपने विचारो को स्पष्ट रूप से रखने में कभी नही हिचकते एवं हर वर्ष अपने सुझाव और प्रस्ताव अवश्य देते रहे हैं।

आशा है, समाज-सेवा में आपका सक्रिय सहयोग इसी प्रकार निरन्तर बढता रहेगा।

श्री गणेशमलजी वोहरा, अजमेर

आपका जन्म अजमेर में सेठ भेरुलालजी वोहरा के यहाँ सं० १९६२ भाद्रपद सुदी ४ को हुआ था आपका कारोबार श्री गणेशमल सरदारमल वोहरा के नाम से अजमेर में है।

१९८९ में कॉन्फ्रेन्स की दिल्ली जनरल सभा मे होने वाले साधु-सम्मेलन के लिए अजमेर का आमन्त्रण लेकर कुछ नवयुवक गए थे तव श्री दुर्लभजी भाई का एक प्रश्न कि—"तुम सम्मेलन के खर्चे की पूर्ति कहाँ से करोगे," का यह उत्तर कि "जब तक मै और मेरे बच्चे जीवित हैं सम्मेलन की पूर्ति कर सकूँगा, करूँगा, इसके बाद का भार आप पर होगा" श्री गणेशमलजी वोहरा के इन शब्दो ने जनरल सभा को अजमेर सम्मेलन की स्वीकृति के लिए मजबूर कर दिया था, और आज इन्ही के उक्त साहस ने अजमेर को अजर अमरपुरी का महान् गौरव दिया जो कि स्था० जैन इतिहास में सदैव चिर-स्मरणीय रहेगा।

श्री वोहराजी उन कर्मठ कार्यकर्त्ताओ में से है जो कि जैसा कहते है वही कर दिखाते है। आपने अभी सवत् २०१२ में अपनी २० वर्ष की पूरी लगन के फलस्वरूप स्थानकवासियो के लिए एक स्वतन्त्र धर्म स्थान के हेतु एक विशाल नोहरे की स्थापना कर दी और अब एक विशाल भवन के निर्माण में प्रयत्नशील हैं।

आप वर्तमान में, श्री श्वे० स्था० जैन सघ के सभापति एवं श्री व० स्था० जैन श्रावक सघ में स्वेच्छा से किसी पद पर नही रहते हुए भी, सव कुछ है ।

आप केवल अजमेर ही नहीं, समस्त स्था० जैन समाज के उज्ज्वल सितारो में से है, एव वाहर की जनता पर भी आपका काफी प्रभाव है । श्री वोहरा जी अजमेर के प्राण और युवकों के हृदय-सम्राट् है ।

शासनदेव आपको चिरायु, स्वास्थ्य एव वल दें कि जिससे आप समाज के अधूरे कार्यों को पूर्ण करने में शीघ्र सफल हो, यही कामना ।

श्री उमरावमल जी ढड्ढा, अजमेर

आपका जन्म सेठ कल्याणमलजी ढड्ढा के यहाँ ता० १५-१२-१० को वीकानेर में हुआ । आपने वी० ए०, एल-एल० वी० तक अध्ययन किया है ।

प्रभुता पाकर उदार, वैभव पाकर सरल, अमीरी में रहकर भी अपने साथियो के साथ जी तोडकर कार्य करने वाले श्री सेठ उमरावमल जी ढड्ढा उन महान् रत्नो में से है जिन्होने समाज में फैले अन्धकार को चीर कर प्रकाश दिया, गिरे हुओ को उठाया और युवको को एक नया जोश और नई प्रेरणा दी ।

श्री ढड्ढाजी सवत् २००३ से समाज के क्षेत्र में आए, स्था० जैन सघ के मन्त्रीत्व का भार संभाला और तब से अब अपनी सेवाएँ पूर्ण रूप से दे रहे है ।

आप अब तक कई सस्थाओ के पदाधिकारी रहे है, वर्तमान में श्री व० स्था० जैन श्रावक संघ के प्रधान मन्त्री, श्री ओसवाल जैन हाई स्कूल के प्रेसिडेन्ट, श्री श्वे० स्था० जैन के मन्त्री एव अजमेर के भावी भाग्य विधाता है ।

समाज का यह चमकता हुआ चाँद युग-युग तक अपने निर्मल प्रकाश द्वारा फूट-कलह के अन्धकार को चीरता हुआ, निरन्तर आगे वढता रहे, आपकी धर्म निष्ठा एव उदारता सोने में सुहागा वनकर फैले, यही मगल भावना ।

श्री जवरीलालजी चौधरी, अजमेर

आपका जन्म भिणाय (अजमेर) में स० १६५६ आषाढ वदी १२ को सेठ श्री किशनलालजी चौधरी के यहाँ हुआ ।

भिणाय ग्राम से धनोपार्जन के लिए निकले हुए आज अजमेर के लखपति श्रीमत सेठ जेवरीलाल जी चौधरी उन कार्यकर्त्ताओ में से है जिनके कि हृदय में समाजोन्नति के लिए सदैव उथल-पुथल मची रहती है । २५ वर्ष से शुद्ध खादी के वस्त्रो में सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाले ये अमीर, अपने गरीब भाइयो के लिए कई योजनाऐं सोचते है और उसके लिए प्रयत्न भी करते है ।

आपका समाज के कार्यो में सदैव ही सक्रिय सहयोग रहा है, तन, मन, धन से आपने अपने साथियो का कन्धे से कन्धा मिलाकर साथ दिया है ।

सदैव हँसते हुए चहरे में, सेवा के लिए तत्पर कार्य करनें में, जोश एव चेतना भरने में आप कुशल है, धार्मिक विचारो में सलग्न एव सन्तो की सेवा में सदैव आगे रहते है ।

साधु सम्मेलन में आपका प्रमुख भाग रहा है, वर्तमान में आप श्री श्वे० स्था० जैन सघ के खजानची एव व० स्था० जैन श्रावक सघ के अगुआ कार्यकर्त्ताओ में से है । समाज को आपसे वहुत आशाएँ है ।

श्रीमान् भेरौंलालजी सा० हींगड़, अजमेर

आप समाज के छिपे हुए रत्नो मे से है । समाज एवं धर्म की निस्पृह भाव से सेवा करना ही आपके जीवन का लक्ष्य रहा है । आप श्री ओसवाल औषधालय के कई वर्षो से ऑ० सेक्रेट्री पद पर कुशलता पूर्वक कार्य कर रहे है । आप मिलनसार, प्रकृति के उदार हृदया है । समाज को आप से वड़ी २ आशाएँ है । आपके एक सुपुत्र तथा दो सुपुत्रियाँ है ।

श्री मनोहरसिंहजी चण्डालिया, अजमेर

आपका जन्म स०१९६९ पोष सुदी १२ को सेठ मन्नालालजी के यहाँ हुआ। आपका कारोबार सर्राफी (सोना चादी) का है।

श्री मनोहरसिंहजी चण्डालिया का परिचय आपको इसीसे मिल सकेगा कि आप अजमेर श्रावक सघ की धार्मिक सेवा समिति के कनवीनर है। धार्मिक लगन तो आपमें इतनी है कि आज १२ वर्ष से अजमेर में आपने एक आयंबिल प्रतिदिन करने की योजना बना रखी है जिसमें आपको हर समय अपना योग देकर उसकी पूर्ति करनी पडती है, सन्तो की सेवा सुश्रूषा के लिए आपका परिश्रम सराहनीय है।

आपका जीवन सादा एव १२ वर्ष से शुद्ध खादीमय है, विचारो के पक्के और आचार-पालक है।

वर्तमान मे श्रावक संघ के खजानची एवं धार्मिक समिति के संयोजक भी है। आप इस समय समाज के कार्यो में पूर्ण रूप से भाग लेकर अपने साथियो का साहस बढा रहे हैं, आशा है इसी प्रकार आपका सहयोग समाज के बाकी कार्यो को पूरा करने मे सहायक सिद्ध होगा!
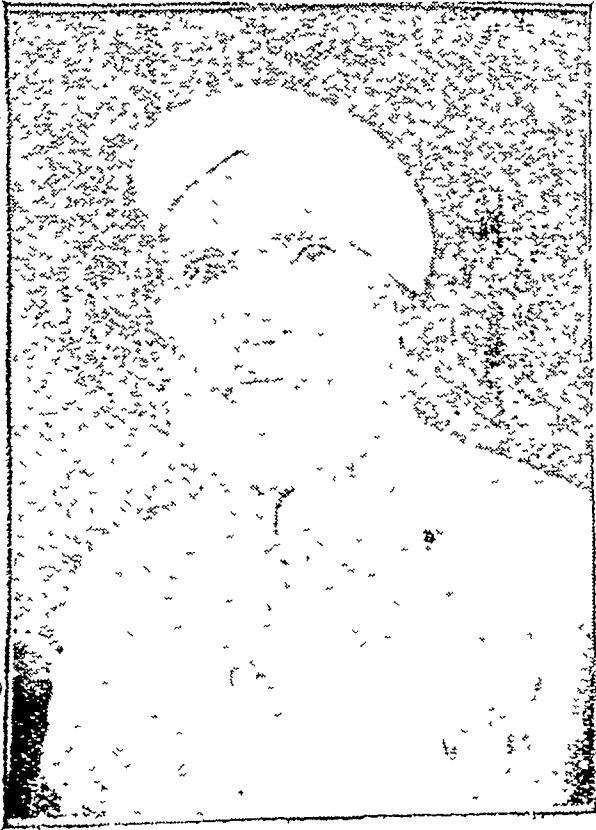
श्री सरदारमलजी छाजेड़, शाहपुरा

आप शाहपुरा के निवासी है। कई वर्ष तक आप शाहपुरा मे न्यायाधीश का कार्य करते रहे। राज्य में आप अत्यन्त प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति हैं। मरुधर श्रावक सम्मेलन, बगडी के आप अध्यक्ष थे। अजमेर साधु-सम्मेलन के उपमन्त्री के रूप में आपने खूब काम किया था। स्व० श्री दुर्लभ जी भाई के बाद आप ही श्री जैन गुरुकुल ब्यावर के कुलपति १०-१२ वर्ष तक रहे।

अनेक वर्षो तक कॉन्फरन्स को और समाज को आपकी तरफ से अलभ्य सेवाएँ मिलती रही है। आजकल आप एक प्रकार से 'रिटायर्ड लाइफ' ही व्यतीत कर रहे है।

राय बहादुर सेठ कुन्दनमलजी कोठारी, ब्यावर

आपका जन्म स० १९२७ में निमाज में हुआ था। ब्यावर में आपने व्यवसाय में अत्यधिक उन्नति की। आप का मुख्य व्यवसाय ऊन का था। इसमें आपने अच्छा पैसा कमाया। ब्यावर में आपने महा लक्ष्मी मिलस की स्थापना की, जिसमें आप का आधा हिस्सा है। मिल में चर्बी का उपयोग होना आपको बडा खटकता रहता था। अत' आपने एक केमिकल ऑइल का आविष्कार करवाया और चर्बी की जगह इसी का उपयोग करवाने लगे। आपने ब्यावर के

अन्य मिल्स वालो से भी चर्बी के बजाय इस तेल को काम मे लेने का आग्रह किया। फलतः आज व्यावर के सभी मिल वाले इसी तेल का उपयोग करते हैं।

जैसे आप व्यापारी समाज में अग्रगण्य थे वैसे ही आप राज्य मे भी प्रतिष्ठित थे। सन् १९२० मे आपको राय साहब और बाद में राय बहादुर का खिताब मिला था। आप ओनरेरी मजिस्ट्रेट भी रहे। आपने अपने जीवन काल में लाखो रुपए का दान समाज को दिया और कई संस्थाओ की स्थापना की। आपका जीवन बडा सादा था। आप समाज में प्रचलित कुरूढियो के कट्टर विरोधी थे। आपने १,२२,८००) रुपये के व्याज को परमार्थ में लगाने का निश्चय किया था। आपके स्वर्गवास के समय आपके सुपुत्र श्री लालचंदजी ने दो लाख रुपयो का आदर्श दान दिया।

आपका स्वर्गवास व्यावर में हुआ। आपके सुपुत्र सेठ लालचंदजी सब व्यवसाय को वडी योग्यता पूर्वक सम्हाल रहे हैं।

शीघ्र लिपि के आविष्कारक श्री एल० पी० जैन व्यावर

विचारशील मस्तक और चौडी ललाट वाले सात भाषाओ में शार्ट हैंड के प्रसिद्ध आविष्कारक श्री एल० पी० जैन का पूरा नाम है श्री लादूराम पूनमचन्द खिवसरा, जो व्यावर में 'मास्टर साहब' के नाम से प्रसिद्ध हो चुके हैं। आपमें धर्म के प्रति अविचल श्रद्धा थी। अपना अधिकाश समय धार्मिक शिक्षा, शास्त्र-स्वाध्याय और चिन्तन-मनन मे व्यतीत करते थे। पहली पत्नि के स्वर्गवास हो-जाने के पश्चात् २५ वर्ष की अवस्था में आपका दूसरा विवाह हुआ किन्तु ससार के प्रति उत्कृष्ट उदासीन्ता के कारण पूज्य श्री श्रीलालजी महाराज से दोनो दम्पति ने ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार कर लिया।

उस समय समाज में शिक्षा की अत्यधिक कमी थी और धार्मिक शिक्षण तो था ही नही। सन् १९२१ मे आपने जैन पाठशाला की स्थापना की जो आगे जाकर "जैन वीराश्रम" कहलाया। बाहर से पैसा मागे बिना नि स्वार्थ और निस्पृह वृत्ति से संस्था का सफल सचालन किया। भाग्यवशात् आपने नई सकेत लिपि का आविष्कार भी किया है। सन् १९३१ में अपने प्रयत्न में आप सफल होगये। कुछ विधार्थियो को अपने इस लिपि का अध्ययन कराया और तैयार किया। आपके शॉर्टहैंड की यह विशेषता है कि वह किसी भी भाषा के लिए काम में ली जा सकती है। क्योंकि वह अक्षर पद्धति पर बनी है। आपके सिखाये हुए कई व्यक्ति आज भी राजस्थान अजमेर तथा मध्यभारत मे रिपोर्टर का काम कर रहे हैं और ३००-४००) रु० तक का माहवारी वेतन पारहे हैं। इस कार्य के उपलक्ष्य मे श्री मिश्रीलालजी पारसमलजी जैन बेंगलोर वालो की तरफ से ११०००) रुपये की थैली भेंट की गई थी।

आज आप नहीं है। किन्तु आपका नाम और काम अभी भी है। जीवन चुराया जासकता है किन्तु जीवन की सुगंध नही चुराई जासकती।

श्री घेवरचन्दजी बांठिया "वीरपुत्र"

आपका शिक्षण श्रीमान् पूनमचन्दजी खिवसरा के पास श्री जैन वीराश्रम मे हुआ। सस्कृत, प्राकृत और न्याय की सर्वोच्च परीक्षाएँ देकर आपने समाज में अपना अग्रिमस्थान बना लिया। श्री खिवसराजी द्वारा आविष्कृत सकेत लिपि का अभ्यास कर उसमें अच्छी Speed गति प्राप्त की। इस समय आप बीकानेर में श्री अगरचन्दजी भैरोदानजी सेठिया के पास रहकर अनेक विद्वानो के साथ लेखन कार्य में सलग्न है। आपको शास्त्रो का बोध भी बहुत अच्छा है। बीकानेर पधारने वाले सत-सतियो के शिक्षण का काम आप ही करते हैं। आपका अधिकांश-समय साहित्य-लेखन साहित्य अवलोकन तथा अध्ययन-अध्यापन में ही व्यतीत होता है। इस समय आप सेठिया सस्था के साहित्य-निर्माण सशोधन-प्रकाशन विभाग में प्रमुखरूप से कार्य कर रहे है।

श्री शंकरलालजी जैन M.A L L B साहित्यरत्न
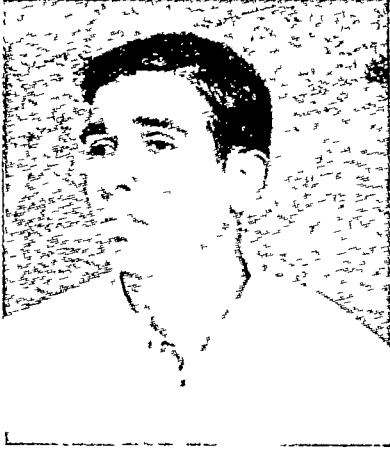
आप राजस्थान में वरार नामक ग्राम के है। कुशाग्र बुद्धि होने के कारण आप कक्षा मे सदा ही प्रथम रहा करते थे। आपका हृदय बडा ही भावुक तथा दीन-दुखियो के प्रति करुणार्द्र है। आपने "महावीर शिक्षण-सघ" 'शारदा मन्दिर' तथा जैन युवक-सघ आदि से संस्थाएँ स्थापित की। कई समाचार-पत्रो के आप सम्पादक रहे है। क्रान्तिकारी और समाजसुधार विचारधारा वाले आप एक मनीषी हैं जिन्हे अपने जीवन में विरोधी विचारो के विरुद्ध अनवरत संघर्ष करना पडा आप अपने निश्चय के बडे ही दृढ हैं। आपकी सामाजिक सेवाएं बडी सराहनीय है।

आपने देवगढ मदारिया में श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना की है। इस आश्रम की स्थापना में आपको अनेक कष्टो का सामना करना पडा यहां तक कि इस आश्रम की स्थापना के उद्देश्य की पूर्ति में आपने वर्षो तक, घी, दही, दूध शक्कर का त्याग कर दिया। बडी योग्यता से इस आश्रम का आप सफल संचालन कर रहे हैं।

श्री देवेन्द्रकुमार जी जैन सिद्धान्तशास्त्री, न्याय काव्य-विशारद H T C H S S

आप वल्लभनगर (उदयपुर-राजस्थान) निवासी हैं। श्री गोदावत जैन गुरुकुल छोटी सादडी के आप स्नातक है। इसी गुरुकुल से आपने साहित्य रत्न और जैन सिद्धान्त शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की। इस समय आप श्री तिलोकरत्न जैन विद्यालय पाथर्डी में अध्यापन का कार्य करा रहे हैं।

आप हिन्दी, संस्कृत एव जैन साहित्य के उच्चकोटि के विद्वान एव शिक्षण-शास्त्री हे। आप कुशल अध्यापक वक्ता एवं लेखक है। सामयिक सामाजिक पत्रो में समय-समय पर आपके लेख प्रकाशित होते रहते है। आपके द्वारा "वाल पचरत्न" और 'महिलादर्शन' वालोपयोगी छोटे-छोटे प्रकाशन भी कराये गये हैं। आप एक विचारवान कर्मठ कार्यकर्ता है।

श्री मांगीलालजी मेहता, वड़ी सादड़ी

श्री गोदावत जैन गुरुकुल, छोटी सादडी के सुयोग्य स्नातक जिन्होने उच्च शिक्षा प्राप्त कर स्थानकवासी जैन संस्थाओ में ही अपना जीवन बिताया। धार्मिक प्रवृत्तियो में आपकी वडी दिलचस्पी रहती है। आपका परिवार सुशिक्षित है जो समाज के लिए गौरव की वात है। आपके निम्न सुपुत्र और सुपुत्रियाँ हे —

१. श्री शांतिचन्द्रजी मेहता M A LL B सम्पादक 'ललकार'
२. श्री जैनेन्द्रकुमारजी मेहता (इंजीनियरिंग कॉलेज, जोधपुर)
३. श्री दयावती देवी (वाल मनोविज्ञान व शिक्षण की डिप्लोमैटिस्ट)
४. श्री भगवती देवी (इन्टरमीडिएट)

यह सुशिक्षित घराना हम सव के लिए अनुकरणीय आदर्श है। साधारण घराना भी समय के अनुरूप चलने से कितना आगे वढ मकता है इसके लिए यह उत्कृष्ट उदाहरण है।

श्री शांतिचन्द्रजी मेहता, बड़ी सादड़ी

आप प्रतिभा सपन्न कवि, सुलेखक, सम्पादक, वकील एवं होनहार कार्यकर्ता हैं। केवल २५ वर्ष की अल्पायु में ही आपने प्रथम श्रेणी में M A LL B उत्तीर्ण कर लिया। विभिन्न प्रकार की दस भाषाओ के आप जानकार प्रसिद्ध पत्रिका 'जिन वाणी' और 'ज्योति' का आप सम्पादन किया और अब जोधपुर तथा चित्तौडगढ—दोनो स्थानो से 'ललकार' साप्ताहिक निकाल रहे हैं।

आपका निजी कहानी सग्रह "चट्टान से टक्कर" प्रकाशित हो गया है। आपकी यह रचना साहित्यिक जगत में काफी समादृत हुई है। 'आयकर' नामक ८०० पृष्ठीय ग्रन्थ की भी आपने रचना की है जो अभी अप्रकाशित है।

इस प्रकार ये तरुण युवक सामाजिक राजनीतिक और साहित्यिक जगत मे प्रगतिशील गति कर रहा है। समाज के होनहार कार्यकर्ताओ में से आप एक हैं।

श्री रत्नकुमारजी जैन 'रत्नेश', बड़ी सादड़ी

आप बडी सादडी के निवासी हैं। श्री मूलचन्दजी आपके पिता का नाम है। श्री गोदावत जैन गुरुकुल, छोटी सादड़ी में अभ्यास कर श्री सेठिया जैन विद्यालय, बीकानेर मे उच्चाभ्यास किया। समाज के मुख्य-मुख्य सम्प्रदायो के आचार्यो के सान्निध्य में रहकर आपने लेखन-कार्य किया है। कितनी ही पुस्तको के लेखक तथा सम्पादक हैं।

जैन प्रकाश का ९ वर्ष तक सम्पादन कर आप इस समय जैन बोर्डिंग, अमरावती में गृहपति (सुपरिन्टेन्डेन्ट) हैं। समाज में नवीन विचारधारा के आप अनुयायी हैं। श्री रत्नेशजी द्वारा समाज को भविष्य में और अधिक उपयोगी साहित्य प्राप्त होगा ऐसा हमें विश्वास है।

पडित सूरजचन्द्रजी डागी 'सत्यप्रेमी'

आप मेवाड में बडी सादडी के निवासी और श्री गोदावत जैन गुरुकुल छोटी सादडी के सुयोग्य स्नातक हैं। आप सर्व-धर्म-समन्वयवाद दृष्टिकोण के हैं। सभी धर्मो का आपने समन्वय की दृष्टि से तुलनात्मक गहरा अध्ययन किया है। वचपन से ही आपमें कविता के प्रति अभिरुचि जागृत हो गई थी—अभिरुचि बढती गई, जिसके फलस्वरूप आज आप समाज के श्रेष्ठ कवि, गायक साहित्य-प्रणेता हैं। आपने चौवीस तीर्थंकरो की स्तुति, गज सुकुमाल खडे काव्य, मथन महाशास्त्र आदि अनेक काव्य ग्रन्थो की रचना की है। आपकी रचनाएँ अत्यन्त गम्भीर, महत्वपूर्ण और सरस होती हैं। श्री भारत जैन महामण्डल, वम्बई शाखा के आप व्यवस्थापक हैं। सयुक्त जैन महाविद्यालय, वम्बई के आप गृहपति है जहाँ छात्रो को आप धार्मिक शिक्षा प्रदान करते हैं।

श्री अम्बालालजी नागोरी वड़ी सादडी

आप वडी सादडी के निवासी श्री रतनलालजी नागोरी के सुपुत्र हैं। श्री जैन गुरुकुल छोटी सादडी में कुछ वर्ष तक अध्ययन कर श्री जैन गुरुकुल व्यावर में मेट्रिक तथा न्यायतीर्थ की परीक्षा दी। इस समय आप B A. होकर M. A. कर लेने की तैयारी में हैं। धार्मिक सस्कार जो आपको अपने शिक्षण के साथ मिले अव वे इनके विद्यार्थियो को मिल रहे हैं। श्री नागौरी जी जाज्वल्यमान जोश लिये हुए अपने जीवन पथ पर बढते चले जा रहे हैं।

श्री 'उद्‌य' जैन, कानौड़
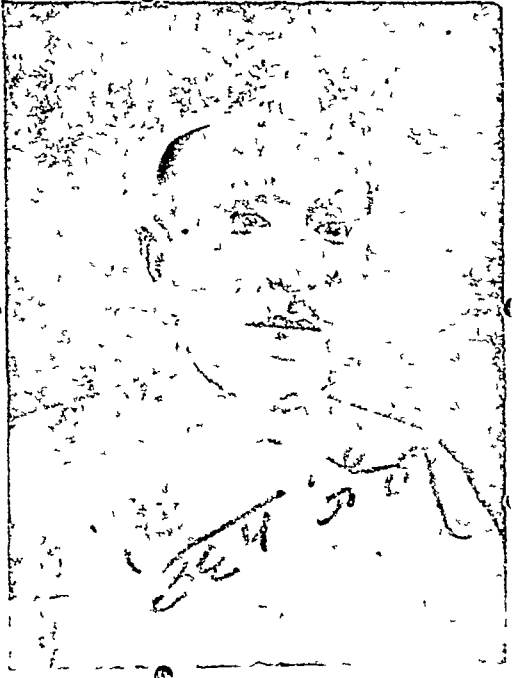
श्री उदयलालजी डूंगरवाल कानौडनिवासी श्री प्रतापमल जी डूगरवाल के सुपुत्र है। अपने ही ग्राम में प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् जैन गुरुकुल, छोटी सादडी में आपका उच्च अभ्यास हुआ। जैन सिद्धान्तशास्त्री, हिन्दी विशारद और न्याय मध्यमा की उच्च परीक्षाएँ आपने पास की। अनेक सामाजिक कार्यों में भाग लेते हुए कई सस्थाओ में आपने काम किया और अपने ही ग्राम नें सन् १९४० में जैन शिक्षण-संघ की स्थापना की जो मेवाड की एक शानदार संस्था है। आप वडे ही स्पष्टवक्ता और अपनी धुन के पक्के है। जैन शिक्षण सघ, कानौड आपकी ही शक्ति और प्रेरणा से अनुप्राणित हो रहा है।

• • •

साहित्यरत्न पं० महेशचन्द्रजी जैन, न्याय काव्य तीर्थ, कानौड़

आप कानोड़ के निवासी श्री चौथमल जी के सुपुत्र और नन्दावत गोत्रीय है। श्री गौदावत जैन गुरुकुल, छोटी सादडी में आपका उच्च अध्ययन सम्पन्न हुआ। श्री जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला मे १०॥ वर्ष तक आपने अध्यापन कराया और वहाँ से 'जैनेन्द्र' नाम की मासिक पत्रिक भी निकाली। श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, भीनासर मे गृहपति पद पर काम किया। अव इस समय आप श्री जवाहर विद्यापीठ हाईस्कूल, कानौड में हिन्दी व धर्माध्यापक का काम कर रहे हैं।

आप स्वभाव के वडे ही शात, उदार तथा मनमौजी प्रकृति के हैं। आप समाज के नामाकित सफल अध्यापको में से एक है।

श्री पुखराजजी ललवानी

आप यहाँ के श्रावक संघ के वहुत पुराने कर्मठ कार्यकर्ता है। यहाँ के सघ को सगठित करने व समाज में प्रेम, उत्साह व धार्मिक दृढ़ विचारो का संचार करने मे आपका लम्वे समय से हाथ रहा है। नवयुवको को तन, मन, धन से यथा योग्य सहयोग व प्रोत्साहन देते रहते है। सामाजिक उत्थान में आपकी वहुत दिलचस्पी रहती है तथा समाज में आपका वहुत अधिक प्रभाव है। इस समय आपकी अवस्था ४६ वर्ष की हे। आप इस नगर के प्रमुख प्रतिष्ठित व धनाढ्य पुरुष हैं। आप यहाँ के पेट्रोल व कूड ऑइल के मुख्य विक्रेता है। आपका लेन-देन भी वहुत पैमाने पर चलता है।

श्री मोहनलालजी भण्डारी

आप यहाँ के प्रतिष्ठित व्यवसायी, धनाढ्य, होशियार व उत्साही युवक है। आप इस मसय ३४ वर्ष के हैं। समाज को उन्नतिशील बनाने में आप सहयोग देते रहते हैं। सामाजिक तथा व्यापारिक क्षेत्र में आपका काफी प्रभाव है।

श्री मोहनलालजी कटारिया

आप यहाँ के श्रावक संघ के मन्त्री है। आप बहुत ही होनहार, उत्साही व समाज प्रेमी नवयुवक है। आपकी अवस्था ३१ वर्ष की है। मेट्रिक तक आपने शिक्षा प्राप्त की तथा नये विचारो के प्रगतिशील युवक है।

श्री विजयमोहनजो जैन

आप 'वीरदल मण्डल' के मन्त्री हैं। वर्षो से आप समाज सेवा मे जुटे हुए हैं। यो आप मिडिल तक शिक्षा प्राप्त है किन्तु आपकी योग्यता काफी बढी-चढी है। लौंकाशाह पत्र का सपादन व संचालन काफी लम्बे अर्से तक कर चुके है। आपके हस्ताक्षर अति सुन्दर हैं। जनता द्वारा आपकी कविताएँ बहुत पसद की जाती हैं। वर्षो से आप अपना निजी प्रेस सफलता पूर्वक चला रहे हैं।

श्री नगराजजी गोठी

आप श्रावक संघ के भूतपूर्व अध्यक्ष रह चुके हैं। आप काफी प्रौढ होते हुए भी नये विचारो के विचारशील व धर्म प्रेमी सज्जन हैं। धार्मिक क्रियाओ तथा थोकडो में आपको बहुत दिलचस्पी है। आप यहाँ के प्रतिष्ठित कपडे के व्यापारी हे। व्यापारिक तथा सामाजिक क्षेत्रो में आपका काफी प्रभाव है।

श्री गेहरालालजी पगारिया

आप यहाँ के नवयुवक मण्डल के अध्यक्ष है सादगी व शान्तिमय विचार आपके प्रमुख गुण हैं। नई विचारधारा के आप पक्षपाती हैं। स्थानीय कांग्रेस कमेटी के आप सक्रिय सदस्य हैं। नगर में आपका काफी मान व प्रतिष्ठा है।

श्री मोतीलालजी जैन, गुलाबपुरा (राजस्थान)

आप २८ वर्षीय नवयुवक गुलाबपुरा निवासी हैं। आपके ६० वर्षीय पिता श्री भूरालालजी बुरड है। ननिहाल गुलाबपुरा के प्रसिद्ध रुई कपास के व्यापारी कजौड़ीमलजी रतनलालजी मेडतवाल के यहाँ हैं।

आपने पजाब यूनिवर्सिटी से 'प्रभाकर' सा० रत्न, कलकत्ता से व्याकरण तीर्थ, सा० स० प्रयाग से राजनीति तथा बनारस यूनिवर्सिटी से मैट्रिक की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं।

आप विभिन्न सस्थाओ की सेवा करते हुए वर्तमान मे श्री वर्द्धमान जैन महिला विद्यालय, सिकन्दरावाद में तीन वर्ष से प्रधानाध्यापक का कार्य कर रहे है। वेतन सहित आपकी आय रु० २५०) मासिक है।

आपके तीन भाई तथा दो बहनें हें। दोनो भाई तथा बहनें राजस्थान में विवाहित हैं। आर्थिक स्थिति सामान्य हे। आप सुन्दर, सुडौल तथा स्वस्थ शरीर के उत्साही तथा क्रान्तिकारी विचारो के नवयुवक हैं।

श्री कन्हैयालालजी भटेवड़ा, जालिया (अजमेर)

आप सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रो मे कार्य करने वाले अजमेर राज्य के एक प्रसिद्ध कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज सा० से आपने खादी धारण करने की प्रतिज्ञा ली थी जिसे आजतक दृढता के साथ निभाये हुए हैं। काप मसूदा क्षेत्र से कांग्रेस के उम्मीदवार के रूप में चुनाव के लिए खड़े हुए थे। अनेक सामाजिक

सस्थाओ को आप द्वारा सहायता प्राप्त हुई है। आपने आसपास के क्षेत्र में आप अत्यन्त लोकप्रिय, समाज सुधारक, शिक्षाप्रेमी एव प्रेरणा शील उद्यमी तथा लगनशील कार्यकर्त्ता है।

श्री नेमीचन्दजी जैन, राताकोट

आप श्री हरकचन्दजी के सुपुत्र है। सामाजिक और धार्मिक प्रवृत्तियो में आपकी बडी दिलचस्पी रहती है। आप बडे ही उत्साही तथा श्रद्धावान है सन्त-मुनिराजो की भक्ति में आप सदा तत्पर रहते है। समाज की उन्नति और धर्म-प्रचार की भावनाएँ आपकी निस्सन्देह स्तुत्य है। अपने सामाजिक और धार्मिक कार्यों के कारण आसपास के गॉवो में आपका नाम प्रसिद्ध है।

कुँ० श्री घेवरचन्दजी जैन, राताकोट

कुं० श्री घेवरचन्दजी जैन के पिताश्री का शुभ नाम श्री मिलापचन्दजी जैन है। आप राताकोट विजय नगर निवासी है। आपका शुभ जन्म मिती मार्गशीर्ष शुक्ला चतुर्दशी स० १९९० को हुआ था। आप धार्मिक कार्यों मे पूर्ण रस लेते है। राताकोट स्वाध्याय सघ के आप पॉच साल से सदस्य है।

श्री शार्दूलसिहजी सा०, सरवाड़

आप अत्यन्त धर्म-परायण, तपस्वी तथा नित्य नियम के पक्के है। आपका कथन है कि "धर्म के प्रताप से ही मेरी हालत सुधरी है, इससे पहले मेरी स्थिति शोचनीय थी।" शास्त्र-वांचन तथा शास्त्र-पठन का आपको शौक है। साधु-साध्वियो के अभाव में अपने गॉव में धार्मिक उपाश्रयो आदि के आप ही अवलम्बन हैं। दीन-दुखियो तथा अन्धे-अपाहिजो को साता उपजाने की ओर आपका विशेष लक्ष्य रहता है। प्रतिमाह एक उपवास और चौदस को १०-११वां पौषधव्रत धारण करने का आपका नियम है। सन् १८८० में पॉच साल तक आपने 'ज्ञान पचमी' तप किया। आपके तीन पुत्र है जिनका अपना स्वतन्त्र व्यापार है। ऐसी धर्मनिष्ठ आत्मा सत्य ही अभिनन्दनीय एवं अनुकरणीय है। आप कान्फ्रेस के आजीवन सदस्य है। कान्फ्रेंस की भवन निर्माण योजना में आपने १००१) देना स्वीकार किया।

की छगनलालजी सा० रांका, कोटा

आप आडत के व्यापारी है। सन्त मुनिराजो की भक्ति एवं स्वधर्मी वात्सल्य आपके विशेष गुण है। श्री जैन दिवाकरजी महाराज सा० के चातुर्मास में आपने ८०,०००) खर्च किये थे। आपके ३ सुपुत्र हैं जो बडे ही होनहार हैं।

की नाथूसिंहजी सा० वेदमुथा, कोटा

आपके परिवार मे भूतपूर्व सेठ मोहनलालजी सा० बडे ही दानवीर तथा उदार वृत्ति वाले थे। कोटा मे आपने १५,०००) की लागत का स्थानक भवन निर्माण कराया था। समाज के कार्यो में आपकी बडी दिलचस्पी रहती है। आपका पूरा परिवार सामाजिक एवं धार्मिक भावना वाला है।

श्री ताराचन्द्रभाई बारां

आप सौराष्ट्र के शहर राजकोट के निवासी है। आपने सौराष्ट्र स्था० जेन धार्मिक शिक्षण सघ के मन्त्रीपद पर रहकर संस्था की दो वर्ष पर्यन्त सेवा की। आप सम्प्रदायवादित्य से परे है। आपका अधिक समय बारा में व्यतीत हुआ है।

श्री सेठ हस्तीमलजी श्रीश्रीमाल जसोल

आपके उदार विचारो से प्रेरित होकर स्था० दि० समाज अपने पर्यूषण के दस दिनो में आपको व्याख्यान देने के लिए आमन्त्रित करता है। वर्तमान में आपकी आयु ५० वर्ष से अधिक है फिर भी आप समाज सेवा के लिए सदैव तैयार रहते है। आपके धार्मिक जीवन पर आपके पिताश्री त्रिभुवनदास भाई के धार्मिक जीवन की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। आप यहाँ के जैन समाज में अत्यन्त वयोवृद्ध बारह व्रतधारी श्रावक है।

आप जसोल के प्रमुख कार्यकर्ता है। आपके पिता श्री नेनमलजी तेरापथी थे। आपका खीचन वाले पं० मुनिश्री सिरेमलजी म० सा० के साथ सम्पर्क होने से आप प्रभावित हुए और सत्य मान्यता अगीकार की। यहाँ स्थानकवासियों के ७ घर है और तेरापथियों के १५०। फिर भी अपनी धर्म-भावना पर अत्यन्त दृढ श्रद्धावान है। अत्यन्त उदार वृत्ति होने के कारण विविध सामाजिक और धार्मिक कार्यो मे आपकी तरफ से समय-समय पर दान हुआ करता है।

श्री मिश्रीमलजी समदड़ी वालों का परिचय

आपका निवास स्थान समदड़ी (मारवाड) है। आप एक धार्मिक पुरुष है। समाज के प्रत्येक उन्नति के कार्य में सहयोग देते रहते है।
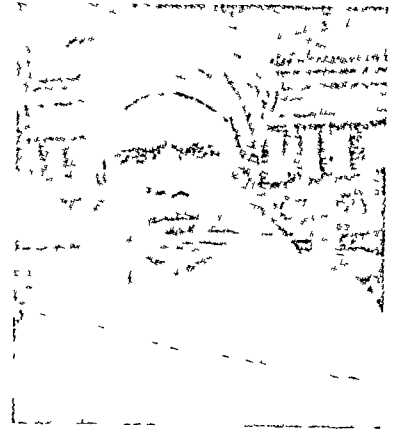
श्रीमान् मगराजजी तेलीड़ा, वानियावाडी

आप अभी-अभी अ० भा० स्था० कान्फ्रेंस के आजीवन सदस्य बने है। आप धार्मिक एव सामाजिक कार्यो मे पूर्ण सहयोग देते रहते है। धर्म भावना आपकी प्रशंसनीय है।

दक्षिण भारत के प्रमुख कार्यकर्ता

सेठ राजमलजी ललवाणी, जामनेर
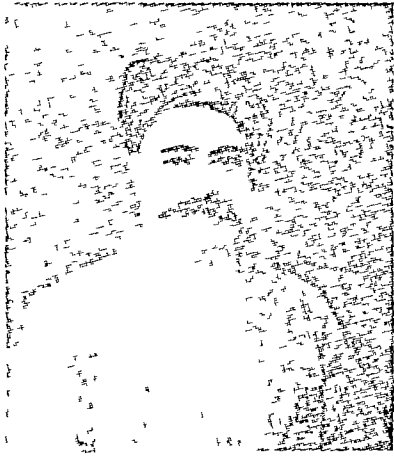
सेठ राजमलजी ललवाणी का जन्म सन् १८६५ में जोधपुर स्टेट के 'ओव' गॉव मे हुआ था। आपके पिता खानदेश के आमलनेर तालुके के छोटे से गॉव जामनेर में आकर बस गये थे। अतः आपका बचपन भी इसी गाँव में व्यतीत हुआ था। घर की स्थिति सामान्य थी। अत परिस्थितिवश आपमें सहानुभूति, प्रेमभावना और सहनशीलता के गुणो का विकास हो चुका था। १२ वर्ष की उम्र में वे एक धनाढ्य सेठ लखीचन्दजी रामचन्दजी की विधवा पत्नी द्वारा गोद लिये गए। अर्थाभाव मिट गया, पर जो गुण उनके हृदय में घर कर चुके थे। वे बढते ही रहे।

१८ वर्ष की उम्र मे ही वे सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र में प्रविष्ट हो गये। गाँधी जी के कट्टर अनुयायी रहे। काग्रेस के भी मैम्बर हैं। और वर्षों से शुद्ध खादी ही पहनते है। महाराष्ट्र और खानदेश के आप प्रमुख राष्ट्रीय कार्यकर्ताओ में से एक हैं।

सामाजिक सेवा भी आपकी विशाल है। कई धार्मिक तथा सामाजिक सस्थाओ, विद्यालयो के आप सस्थापक, संचालक व सहयोगी है। समय-समय पर आप उदार भाव से दान भी देते रहे हैं। आपने अब तक लगभग दो लाख रुपयो का दान किया होगा। जलगॉव की सार्वजनिक हॉस्पिटल में आपने ११,०००) रु० प्रदान किये। सरकार को कई बार लड़ाई के समय में कर्ज दिया है। इसके उपलक्ष्य में सरकार ने जलगॉव के एनीकोक्स हॉल में आपकी प्रस्तर मूर्ति स्थापित की है।

खानदेश के आप एक कुशल व्यापारी के रूप मे भी प्रसिद्ध हैं। आप लक्ष्मीनारायण स्पिनिंग वीविंग मिल्स लिमि० चालीस गॉव के सस्थापक और डायरेक्टर हैं। जलगॉव की भागीरथी रामप्रसाद मिल्स के भी डायरेक्टर हैं।

आप सर्वधर्म समभाव के हिमायती और कट्टर समाज सुधारक है। जातिगत रूढ़ियो के आप कट्टर विरोधी हैं। समाज सेवा के लिये आप सदैव तत्पर रहते हैं। कॉन्फरन्स के आजीवन मैम्बर हैं।

आपके सहयोग से आज कई संस्थाएँ, विद्यालय, स्कूल तथा पाठशालाएँ चल रही हैं। आपकी प्रकृति मिलनसार व विनोद प्रधान है। आप देश समाज व जाति के कर्मवीर योद्धा हैं, जो आज भी अपनी सेवा प्रदान करते जा रहे हैं।

श्री सागरमलजी लूंकड, जलगॉव

श्री लूंकडजी का जन्म सन् १८८२ में हुआ था। आप जलगॉव के लब्ध प्रतिष्ठित एव धर्मानुरागी सज्जन थे। आप व्यापार में बडे कुशल थे। आपकी कई स्थानो पर अपने फर्म की शाखाएँ चल रही हैं। आप में उदारता का गुण भी विशेष था। २० हजार की लागत का एक भव्य-भवन धार्मिक और सामाजिक कार्य लिये के अर्पण कर आपने जलगॉव की एक बडी भारी कमी की पूर्ति की। आयुर्वेद से आपको वड़ा प्रेम था। आयुर्वेद औषधालय की स्थापना के लिये आपने २५ हजार का उदार दान घोषित किया था। स्थानीय श्री ओसवाल जैन बोर्डिंग हाऊस के शुरु से लगभग १७ वर्ष तक मन्त्री रहे और उसको सफलता के साथ संचालित करते रहे। इन्दौर में भी आपने शान्ति जैन स्थापित की थी जहाँ आपकी ओर से छात्र-छात्राओ को धार्मिक शिक्षा दी जाती है। स्थानीय पाजरा पोल के पाठशाला विकास में भी आपका अनुपम भाग था। जलगॉव में भी आपकी 'सागरमल नथमल' के नाम से फर्म हे, जो यहाँ की प्रतिष्ठित फर्म मानी जानी है। ता० २१-१-४३ को आपका ६१ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हुआ।

श्री नथमलजी सा० लुंकड, जलगाँव

आप मेसर्स सागरमल नथमल लुंकड प्रख्यात फर्म के सचालक और पार्टनर है। अपने चार भाइयो में सबसे बडे हैं। आपकी उम्र इस समय ३८ वर्ष की है। आपके स्व० पिताश्री सागरमलजी सा० जैन समाज के जाज्वल्यमान रत्न थे। श्री नथमलजी सा० ने अपने पिताश्री के गुणो को पूर्णरूप से अपनाया है। आप कर्मठ कार्यकर्ता, खद्दरधारी एव राष्ट्रीय विचारो के उत्साही नवयुवक है। कितनी ही धार्मिक, शैक्षणिक और सामाजिक सस्थाओ के आप मुख्य पदाधिकारी और कई व्यापारिक सस्थाओ के चेयरमेन मेम्बर और सेक्रेटरी हैं। इतना गुरुतर कार्य और सुयश लिये हुए भी आपकी नम्रता तथा निरभिमानता अनुकरणीय एव अभिनन्दनीय है।

आपके लघुभ्राताओ का सहयोग भी आपके व्यवसाय मे पूर्णरूप से प्राप्त हो रहा है। चारो बन्धुओ में स्पृहणीय भ्रातृभाव है। आप स्थानीय पांजरापोल सस्था और श्री कानजी शिवजी ओसवाल जैन बोर्डिंग के कई वर्षो से जनरल सेक्रेटरी है। आप अ० भा० श्वे० स्था० कान्फरेन्स के सादडी अधिवेशन में जनरल सेक्रेटरी चुने गये थे।

आपकी फर्म की तरफ से शहर मे 'सागर भवन' नामकी २५,०००) रु० की लागत का भवन धार्मिक एव सामाजिक कार्यो के लिए अपने स्व० पिताजी के स्मरणार्थ समाज को अर्पित कर दी है। इसके अतिरिक्त सागर आयुर्वेदिक औषधालय सागर हाईस्कूल, सागर पार्क, सागर-व्यायामशाला आदि कई संस्थाएँ अपनी तरफ से चला रहे हैं।

आपका मुख्य व्यवसाय कपडे का है। इसके अलावा आप सिनेमा फिल्म डिस्ट्रीब्यूटर्स भी हैं। बम्बई, इन्दौर, बुरहानपुर, भुसावल आदि अनेक स्थानो पर आपके फर्म की शाखाएँ हैं।

अनेक क्षेत्रो में अनेक विध सेवाओ के कारण आपने जन-साधारण से प्रेम और सम्मान प्राप्त किया है। अपनी नम्रता एव उत्साह से आप खानदेश के युवको के हृदय सम्राट् बने हुए हैं।

श्री पूनमचन्दजी सा० नाहटा, भुसावल
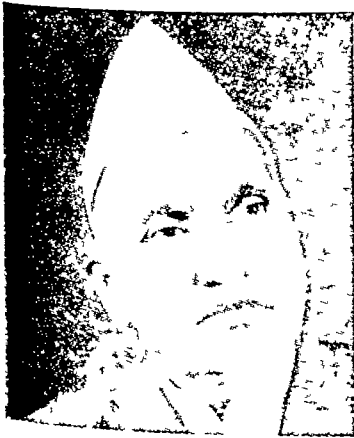
महाराष्ट्र के इस वृद्ध किन्तु तेजस्वी कार्यकर्ता को कौन नहीं जानता ? अपने प्रान्त में जन-जीवन एव समाज को जीवित एव जागृत करने में जो गौरवमय आपने बटाया है उसने आपके नाम को सुयश से सुवासित कर दिया है। आपके पिताश्री का नाम ओंकारदासजी और आपका जन्म-स्थान वामणदि है। यद्यपि आपका शिक्षण मराठी की चौथी कक्षा तक ही हुआ है किन्तु अपनी अलौकिक प्रतिभा एव व्यवहार-कुशलता से समाज में सम्माननीय स्थान बना लिया है। आपही के निरपेक्ष नेतृत्व में श्री खानदेश ओसवाल शिक्षण सस्था, भुसावल अपने प्रान्त के निर्धन विद्यार्थियो को योग्य पोषण देती हुई अग्रसर हो रही है। आपका सादगीमय जीवन, व्यसनो से अलिप्त तथा सरल स्वभाव किसी भी व्यक्ति को प्रभावित कर लेता है। लक्ष्मी से सम्पन्न होने पर भी अपने जीवन के दैनिकचर्याओ में आप पूर्णत स्वावलम्बी है।

समाज-सुधारक के रूप में कुरीतियो के बन्धन तोड़ने में आपने हमेशा आगे बढकर काम किया है। आपकी सभी पुत्रियो के विचार आपकी सुधारक विचारधारा के प्रतीक है। भारत के राष्ट्रीय संग्राम में आपने जेल-यात्राएँ भी

की है। भुसावल- नगरपालिका के २१ वर्ष तक आप सभासद रहे है। राष्ट्रीय सामाजिक संस्थाओ में आपके अनुशासन एवं दृढता की बडी भारी छाप रही है तथा इनके कार्यो मे उलझे रहने के कारण घरेलू व्यवसाय में आपका बहुत कम समय लगता है। आपका प्रतिक्रमण सुनने लायक होता है। इस समय आप महाराष्ट्र श्रमण संघ के कार्याध्यक्ष है।

हमें विश्वास है कि आपके प्रेरणास्पद नेतृत्व से समाज और अधिक लाभान्वित होकर गौरवान्वित होगा।

श्री फकीरचन्दजी जैन श्रीश्रीमाल, भुसावल

खानदेश जिले के प्रतिष्ठित रूई के व्यापारी राजमलजी नन्दलालजी कम्पनी के भागीदार श्रीमान् सेठ नन्दलालजी Cosson King of Khandesh मेहता के सुपुत्र श्री फकीरचन्द जी जैन खानदेश के एक प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय सामाजिक एवं राजनीतिक स्फूर्तिमान कार्यकर्ता हैं।

जैन समाज के चारो प्रमुख सम्प्रदायो मे एकता प्रस्थापित करने वाली संस्था "श्री भारत जैन महा मण्डल" के आप लगातार चार वर्षो से मन्त्री है। महा मण्डल के दौरे मे आपकी उपस्थिति रहती है। खानदेश ओसवाल शिक्षण सस्था" जहाँ से प्रतिवर्ष ११०००) रु० की छात्रवृत्तियाँ दी जाती है—इसके महामन्त्री है। स्थानीय अनेक राष्ट्रीय संस्थाओ के आप पदाधिकारी है। अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त रोटरीक्लब, भुसावल के डायरेक्टर और तालुका तरुण कांग्रेस के सयोजक और श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, भुसावल के आप मन्त्री हैं। आपकी धर्मपत्नि सौ० पारसरानी का भी सामाजिक कार्यो में बड़ा सहयोग रहता है। महिला-जगत मे आपका प्रभावशाली स्थान है। आपके ज्येष्ठ पुत्र श्री सतीशचन्द्रजी मेधावी एव होनहार छात्र हैं जिनसे अभी से काव्य की प्रतिभा फूट निकली है।

श्री सुगनचन्दजी चुन्नीलालजी लुनावत

आप धामण गाँव के प्रसिद्ध व्यवसायी, कार्यकर्ता तथा समाज प्रेमी है। आपका जन्म अत्रज ग्राम में माघ सुदी ९ स० १९६६ मे हुआ। स्वभाव के मिलनसार और गहरी सूझ-बूझ होने के कारण आपने प्रारम्भिक अवस्था से देश समाज तथा अपने आसपास के बाबत चिन्तन करने के साथ तत्सबधी लोकोपयोगी कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। यही कारण है कि आपका बरार के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, व्यापारिक तथा विभिन्न क्षेत्रो में अक्षुण्ण प्रभाव रहा है। आप अनेक शिक्षण संस्थाओ के संचालक मन्त्री तथा सदस्य हैं। अनेक राजनीतिक सस्थाओ तथा सगठनो के कर्मठ कार्यकर्ता एव सदस्य हैं।

आपने अपने पूज्य दादाजी की स्मृति में नगदी एव जमीन मिलाकर ३०,०००) रु० की सहायता देकर मध्य प्रदेश ओसवाल शिक्षण संस्था नागपुर में स्थापित की, जिसे आज बीस वर्ष हो गये है। इस सस्था द्वारा प्रान्त के तथा बाहर के ओसवाल विद्यार्थियो को छात्रवृत्तियाँ मिलती हैं। जैन शिक्षण समिति अमरावती के आप सेक्रेटरी है। आपही के प्रयत्नो के फलस्वरूप लगभग १,००,०००) की लागत का बाहर के छात्रो के रहने के लिए छात्रालय का भवन अभी-अभी बनकर तैयार हुआ है।

कृषि एव गौपालन में आपकी वडी दिलचस्पी है। स्थानीय गौ-रक्षण-संस्था के आप ट्रस्टी तथा गौ-सेवा सघ विदर्भ-शाखा के आप मन्त्री है। व्यवसायिक क्षेत्रो में भी आपने बुद्धि-कुशलता का विलक्षण परिचय दिया है। "दी बैंक ऑफ नागपुर" तथा "दी भारत पिक्चर्स लिमिटेड, आकोला" के आप डायरेक्टर हैं।

महावीर जयन्ती की सार्वजनिक छुट्टी प्रथमत मध्यप्रान्त में ही हुई। इस भगीरथ पुण्य-कार्य में आपका वहुत वडा सहयोग रहा है।

आपकी प्रथम पत्नी का देहान्त सन् १९३५ में हुआ था, जिसकी स्मृति मे स्थानीय अस्पताल मे "भ्रमर देवी" प्रसूतिकागृह नाम का मेटरनिटी वार्ड का निर्माण करा कर आपने दान वीरता एव सामयिकता का परिचय दिया है।

आप कॉन्फरन्स में निष्ठा रखने वाले कई वर्षो से जनरल कमेटी के सदस्य हैं। इस प्रकार आपका समस्त जीवन अनेक क्षेत्रो को अनुप्रमाणित करता हुआ आगे वढ रहा है। श्री लूनावतजी जैसे सामाजिक तथा राजनैतिक कार्यकर्ताओ पर समाज को गौरव होना चाहिए। बरार प्रान्त तथा स्थानकवासी समाज को आपसे बडी-वड़ी आशाएँ हैं। समाज के ऐसे ही उज्ज्वल सितारे समाज को प्रकाशित करते है।

श्री भीकमचन्दजी सा० पारख, नासिक

आप श्री राचचन्दजी के सुपुत्र हैं और मूल निवासी तिवरी (मारवाड) के है। नौ वर्ष की अवस्था में ही आपके पिताश्री का देहावसान हो जाने के कारण आपका अधिक शिक्षण नही हो सका। अपनी माताजी की देख-रेख में मराठी की ५वीं कक्षा तक आपका विधिवत् अध्ययन हो सका। आये हुए आकस्मिक सकट का आपने दृढतापूर्वक सामना किया। नासिक में आपने कपड़े का व्यवसाय प्रारम्भ किया और उसमे आपको आशातीत सफलता प्राप्त हुई। स्वर्गीय पूज्य श्री श्रीलालजी महाराज सा० की आपको गुरुआम्नाय थी। आपके ही प्रयत्नो से सन् १९१५ में पूज्य श्री प्रेमराजजी म० सा० का नासिक क्षेत्र में चातुर्मास हुआ था। आप अत्यन्त धार्मिक मनोवृत्ति के, दृढ आस्थावान और भावुक श्रावक हैं। भक्तामर आदि स्तोत्र, प्रतिक्रमण, कई थोकड़े आपको कण्ठस्थ याद हैं। १९२७ से आपका काफ्रन्स से घनिष्ठ सम्पर्क है और प्रत्येक अधिवेशन में आपकी उपस्थिति रहती है। श्रावक के बारह व्रतो का यथाशक्ति पालन करते हुए अनासक्त एवं निष्काम वैराग्यमय जीवन-यापन करते हैं। जैन धर्म के तत्त्वो के आप गहन अभ्यासी हैं। सामाजिक और सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र में अग्रसर रहने के कारण आप अत्यन्त लोकप्रिय है।

आप ही के प्रयत्नो से सन् १९३३ में नासिक में नासिक जिला ओसवाल सभा का सफल अधिवेशन हुआ। पूज्य महात्मा गाधी के और उनकी गाधीवादी विचारधारा के आप अनन्य भक्त एवं प्रेमी थे। महात्मा गाधी से आपका सम्पर्क वना रहता था। यथाशक्ति धार्मिक और सामाजिक कार्यो में आपकी तरफ से दान हुआ करता है। इस प्रकार श्री भीकमचन्दजी सा० योगनिष्ठ श्रावक है जो एक माह में ६ दिन का मौन रखते हैं, दिन में अमुक घण्टे तक ही बोलते हैं और प्रतिदिन स्वाध्याय, चिन्तन-मनन आपके जीवन का विभिन्न अग है।

समृद्ध परिवार, समृद्ध व्यापार और समृद्ध धार्मिक, सामाजिक और सार्वजनिक जीवन ने आपको निराकुल बना कर पूर्ण सुखी बना दिया है। आप आदर्श और अनुकरणीय श्रावक है, जिनके जीवन से वहुत कुछ सीखा जा सकता है।

श्री राजमलजी चौरड़िया, चालीसगाँव

आपका जन्म सं० १९६० पूर्व खानदेश में वाघली ग्राम में हुआ था। आपके पिताश्री का नाम रतनचन्दजी था। आप धार्मिक सस्कारो से, धार्मिक ज्ञान से सम्पन्न व्यवहार एव व्यापार कुशल चालीसगाँव के अग्रगण्य कार्यकर्ता हैं। अपनी शिक्षा को अपने तक सीमित न रखकर उसे "बहुजनहिताय" बनाने का आपने प्रयत्न किया है। यही कारण है कि सामाजिक, प्रादेशिक, धार्मिक, राजनीतिक एव शैक्षणिक कार्यो एव तत्सम्बन्धी क्षेत्रो में आपने सक्रिय सहयोग ही नहीं अपितु इन कार्य-क्षत्रो के आप एक अग से ही बन गए हैं। कान्फ्रेंस के आप सदा से मेम्बर, सन्त-मुनिराजो के अनन्य भक्त, अनेक शिक्षा-सस्थाओ के विभिन्न पदाधिकारी, कुशल एव प्रभावशाली व्याख्यानदाता तथा एक चैतन्य स्फूर्तिमय कर्मठ कार्यकर्ता हैं। आपके अगरचन्द्र और नरेन्द्रकुमार इस प्रकार दो पुत्र हैं।

हमें विश्वास है कि आपसे तथा आपके परिवार से समाज-धर्म की अधिकाधिक सेवा बन सकेगी।

श्री सेठ वछराजजी कन्हैयालालजी सुराणा वागलकोट-निवासी का परिचय

मारवाड़ में पीही निवासी सेठ श्री वछराजजी सुराणा ने स० १९७० में अपनी फर्म की स्थापना वागलकोट में की। धार्मिक तथा सामाजिक क्षेत्र में भी आपका कार्य सराहनीय रहा है। आप सात साल तक ऑनरेरी मजिस्ट्रेट तथा ८ वर्ष तक म्यूनिसिपल कौंसलर रहे हैं।

आपके पुत्र श्री कन्हैयालालजी का शुभ जन्म स० १९७० में हुआ था। आप एक उत्साही नवयुवक हैं। आपने व्यवसाय-क्षेत्र में अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली है। १४ साल से आप म्युनिसिपल कौंसिलर हैं और सन् १९५१-५४ में नगरपालिका के नगराध्यक्ष थे। आपने अपनी स्वर्गीय माता 'तीजाबाई वछराज सुराणा' के नाम से सन् १९४३ में वागलकोट में 'मेटरनिटी होम' बनवाकर नगरपालिका के सुपुर्द कर दिया। इसके अतिरिक्त अपने स्व० पिताश्री की पुण्य स्मृति में एक मकान जैन स्थानक के लिए खरीदकर स्थानीय पंचो को सुपुर्द कर दिया।

आपने काफी सस्थाओ, स्कूलो तथा कॉलेजो को दान दिया है। आप वर्तमान में व० स्था० श्रावक सघ के अध्यक्ष हैं। जैन समाज तथा व्यापारिक समाज में आपने अच्छी ख्याति प्राप्त की है। आपकी एक फर्म वागलकोट में 'वछराज कन्हैयालाल' के नाम से रेशमी वस्त्र, रुई और कमीशन एजेन्ट का कार्य कर रही है। इसी प्रकार वागलकोट और वीजापुर में 'कन्हैयालाल केशरीमल सुराणा' के नाम से अनाज व कमीशन का व्यापार होता है। आपकी दूकानों की अच्छी प्रतिष्ठा है।

श्री रतनचन्दजी चौरड़िया, वाघली

आपका जन्म स० १६३१ मृत्यु स० १६६५ में हुई। आप वाघली के तेजस्वी, धर्मपरायण, श्रद्धालु और भावुक सुश्रावक थे। महाराष्ट्र प्रान्त मे स्थानकवासी जैन धर्म की आपने जागृति कराई। कांफ्रेंस के आप प्रान्तीय सेक्रेटरी थे। आपकी व्याख्यान-शैली इतनी मधुर एव आकर्षक थी कि हमारे आचार्य और मुनिराज भी आपका व्याख्यान सुनना चाहते थे। सुबोध व्याख्यान माला नाम से आपके व्याख्यानो का सग्रह दो भागो में प्रकाशित हुआ है। आज तक जितने भी कांफ्रेंस के अधिवेशन हुए अर्थात् रतलाम, हैदराबाद मलकापुर, वम्बई और अजमेर में आप उपस्थित थे और अपने व्यक्तित्व तथा ज्ञान के चमत्कार से अनेक जटिल एव उलझन-भरे प्रश्नो को आपने सुलझाया। ओसवाल समाज के आप प्रसिद्ध एव लोकप्रिय कर्मठ कार्यकर्ता थे। नासिक जिला ओसवाल सम्मेलन के प्रथम अध्यक्ष के रूप में आपने समाज मे नवीन चेतना और जागृति कराई।

स्थानकवासी समाज आपके कार्यो से सदैव ऋणी रहेगा।

श्री अमोलकचन्दजी मुणोत, जवलपुर

खादी की धोती पर कुरता तथा सदरी संयुक्त धवल पोशाक से वेष्टित ठिगना कद, हँसमुख किन्तु कठोर, भरे हुए चेहरे पर खडी कटी हुई मूँछें, चमकती हुई दूरदर्शी आँखें, सीधा-सादा सरल व्यक्तित्व ही श्री अमोलकचन्दजी का परिचय है। रहन-सहन का मकान भी सादगी भरे गादी-तकियो शोभित है। आपका जन्म ललितपुर के एक प्रसिद्ध जैन परिवार में सन् १६३१ मे हुआ था। २३ वर्ष की अल्पायु में ही आपने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से आयुर्वेद रत्न, हाईस्कूल परीक्षा, वैद्य विशारद, विद्या विशारद, रामायण विशारद आदि-आदि परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर ली। तत्पश्चात् जवलपुर में आयुर्वेद की प्रेक्टिस करने लगे। थोडे ही समय में अपनी विचक्षणता से स्थानीय प्रमुख आयुर्वेदिक चिकित्सको में आपकी गणना होने लगी। एक धर्मार्थ दवाखाना भी आपकी सरक्षणता में प्रगति पथ पर अग्रसर है। आप कई सार्वजनिक सस्थाओ के उपाध्यक्ष, प्रधान मंत्री, उपमंत्री तथा कार्यकारिणी के सदस्य हैं। आप केवल २५ वर्ष की अल्पायु के होते हुए भी वर्तमान समय में लगभग ६ सस्थाओ के प्रमुख पदो पर हैं। स्थानीय वर्धमान स्थानकवासी श्रावक सघ के मत्री भी हैं। इस प्रकार के होनहार उत्साही कर्मठ, एव समाज-सेवी नवयुवक से स्थानकवासी समाज को वडी आशाएँ हैं।

श्री लक्ष्मीचन्दजी स० धाड़ीवाल, रायपुर

श्रद्धालुता और धार्मिकता के साथ-साथ व्यवहार तथा व्यापार-कुशलता का अद्भुत मेल देखना हो तो श्री लक्ष्मीचन्दजी सा० धाड़ीवाल को आप देख लीजिये। आप मूल निवासी मारवाड़ में वगड़ी सज्जनपुर के हैं। आपके पिताजी का नाम श्री मुलतानचन्दजी सा० है। आप रायपुर (म० प्रा०) के प्रमुखतम व्यापारी है। रायपुर में

"मुलतानचन्द लक्ष्मीचन्द धाडीवाल" और "लक्ष्मीचन्द धाडीवाल एण्ड कम्पनी" इस प्रकार आपकी दो प्रसिद्ध फर्में हैं।

स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज सा० के आप अनन्य भक्तो में से हैं। आपने पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज सा० तथा वर्तमान उपाचार्य श्री गणेशीलालजी महाराज सा० का बगडी में चातुर्मास कराया था, जिसमें आपने ६०,०००) देकर इस चातुर्मास को अभूतपूर्व एवं अविस्मरणीय बनाया था। लगभग ३० वर्ष से बगडी में आप 'श्री महावीर मिडिल स्कूल' चला रहे हैं। इस स्कूल का भवन निर्माण भी आपने कराया था। अभी-अभी रायपुर में लगभग ५०,०००) पचास हजार की लागत से "श्री धाडीवाल ज्ञान-भवन" (स्थानक) निर्माण कराया है। स्थानीय "लेपरसी हॉस्पिटल" (कोडीखाना) का निर्माण आपही ने १५,००० देकर आरम्भ कराया था। घाटकोपर सार्वजनिक जीव-दया खाते में गौ-रक्षा के लिए आप समय-समय पर सैकडो रुपये दान करते आए हैं। आप रायपुर वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ के अध्यक्ष हैं।

आपके सुपुत्र श्री महावीरचन्द्रजी सा० भी उत्साही तथा धर्मपरायण तरुण युवक है, जिनका सामाजिक गतिविधियो मे प्रमुखतम भाग रहता है।

श्रीमान् सेठ लक्ष्मीचन्दजी सा० सचमुच ही समाज के गौरव है। धार्मिक कार्यो को सदा ही आपके द्वारा बल प्राप्त होता रहा है। प्रतिष्ठित व्यक्तियो से ही समाज प्रतिष्ठित होता है। इस दिशा में श्रीमान् लक्ष्मीचन्दजी सा० हमारे लिए एक अनुकरणीय आदर्श हैं।

दानवीर स्व० सेठ श्री सरदारमलजी पुंगलिया, नागपुर

आपका जन्म सवत् १९४४ में हुआ था। सोलह वर्ष की अल्पावस्था में ही व्यावसायिक क्षेत्र में आपने पदार्पण किया और उत्तरोत्तर प्रगति की। धर्म के प्रति आपकी अथाह श्रद्धा थी। जिस प्रकार आप धन कमाना जानते थे, उसी प्रकार उसका सदुपयोग करना भी जानते थे। देश के विभिन्न भागो में चलने वाली विभिन्न संस्थाओ को आपकी तरफ से उदारतापूर्वक दान किया गया। दान देने की इस उदारता के कारण आपको "दानवीर" की उपाधि से सम्बोधित किया जाता था। स्थानीय श्री सघ के आप आधार स्तम्भ थे। आपकी प्रेरणा और उत्साह से यहाँ के स्थानक-भवन का निर्माण हुआ। आपकी ही भक्ति-भावना से सन्त-मुनिराजो के चातुर्मास हुआ करते थे।

आपका स्वर्गवास संवत् २००१ चैत्र वदी २ को हुआ। आपकी पुण्य स्मृति में नागपुर श्री सघ ने आपके शुभ नाम से श्री श्वेत० स्थानकवासी जैन-शाला की स्थापना की है। निस्सन्देह स्व० पुगलिया जी समाज के उज्ज्वल सितारे थे और सैकडो दीन-दुखियो के आश्रयदाता थे।

आपके बाद आपकी दानवीरता की उज्ज्वल कीर्ति को और धार्मिकता की सुरभि को आपकी विधवा पत्नी अक्षुण्ण बनाये हुए हैं यह और भी गौरव का विषय है।

● ● ●

स्व० श्री पोपटलाल विक्रमशी शाह, नागपुर

आपका जन्म सौराष्ट्र के सायला गाँव में हुआ था। बाल्यावस्था से ही व्यवसाय के लिए नागपुर आ गये थे। नागपुर श्री संघ की तरफ से होने वाली प्रत्येक प्रवृत्ति में आप अग्रगण्य रहा करते थे। आपका स्वर्गवास ता० ७-७-४६ को हुआ। उस समय आपकी पत्नी ने व्याख्यान का हॉल बनाने के लिए ११,००१) रु० श्री संघ को अर्पण कर आपके नाम को चिरस्थायी बना दिया

● ● ●

स्व० श्री जेठालालजी व्रजपाल कामदार, नागपुर

आपका जन्ज सन् १८६२ में कंडोरणा गाँव में हुआ था। जेतपुर में अंग्रेजी माध्यमिक शिक्षण प्राप्त करके नागपुर में व्यवसाय के लिए आगमन हुआ। आपकी धर्म के प्रति वात्सल्य-भावना, समाज के प्रति प्रेम, अनुकरणीय एव आदर्श था। प्रत्येक आवश्यक कार्य में श्री संघ को आपकी नेक सलाह प्राप्त हुआ करती थी। तन मन धन से श्री सघ की सेवा करने में आप तत्पर रहते थे। सन् '५३ में कोल्हापुर में आपका स्वर्गवास हुआ।

श्री नागसी हीरजी शाह, नागपुर

आपका जन्म संवत् १६४६ में लाखापुर (कच्छ) में हुआ था। वहाँ पर प्राथमिक ज्ञान प्राप्त करके सवत् १६६२ में नागपुर पधारे और संवत् १६७६ से संवत् १६८५ तक श्रीसंघ के मन्त्रीपद पर रहे। आपकी सेवाएँ श्रीसंघ को अभी तक प्राप्त हैं।

● ● ●

श्री मूलजी भाई नागरदास भायाणी, नागपुर

आपका जन्म सं० १६५३ में सौराष्ट्र के लाठी नामक ग्राम में हुआ था। सवत् १६८० में आप नागपुर आये। आपकी ही प्रेरणा से दानवीर सेठ सरदारमलजी पुगलिया ने कई स्थानो पर दान दिया। आप सेठ साहब के प्राईवेट मन्त्री थे। इस समय आप श्रीसंघ के उपाध्यक्ष हैं।

"मुलतानचन्द लक्ष्मीचन्द धाडीवाल" और "लक्ष्मीचन्द धाडीवाल एण्ड कम्पनी" इस प्रकार आपकी दो प्रसिद्ध फर्में है।

स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज सा० के आप अनन्य भक्तो में से है। आपने पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज सा० तथा वर्तमान उपाचार्य श्री गणेशीलालजी महाराज सा० का बगडी में चातुर्मास कराया था, जिसमें आपने ६०,०००) देकर इस चातुर्मास को अभूतपूर्व एव अविस्मरणीय बनाया था। लगभग ३० वर्ष से बगडी में आप 'श्री महावीर मिडिल स्कूल' चला रहे है। इस स्कूल का भवन निर्माण भी आपने कराया था। अभी-अभी रायपुर में लगभग ५०,०००) पचास हजार की लागत से "श्री धाडीवाल ज्ञान-भवन" (स्थानक) निर्माण कराया है। स्थानीय "लेपरसी हॉस्पिटल" (कोडीखाना) का निर्माण आपही ने १५,००० देकर आरम्भ कराया था। घाटकोपर सार्वजनिक जीव-दया खाते में गौ-रक्षा के लिए आप समय-समय पर सेकड़ो रुपये दान करते आए है। आप रायपुर वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ के अध्यक्ष है।

आपके सुपुत्र श्री महावीरचन्द्रजी सा० भी उत्साही तथा धर्मपरायण तरुण युवक है, जिनका सामाजिक गतिविधियो में प्रमुखतम भाग रहता है।

श्रीमान् सेठ लक्ष्मीचन्दजी सा० सचमुच ही समाज के गौरव है। धार्मिक कार्यो को सदा ही आपके द्वारा बल प्राप्त होता रहा है। प्रतिष्ठित व्यक्तियो से ही समाज प्रतिष्ठित होता है। इस दिशा मे श्रीमान् लक्ष्मीचन्दजी सा० हमारे लिए एक अनुकरणीय आदर्श है।

दानवीर स्व० सेठ श्री सरदारमलजी पुंगलिया, नागपुर

आपका जन्म संवत् १९४४ में हुआ था। सोलह वर्ष की अल्पावस्था में ही व्यावसायिक क्षेत्र में आपने पदार्पण किया और उत्तरोत्तर प्रगति की। धर्म के प्रति आपकी अथाह श्रद्धा थी। जिस प्रकार आप धन कमाना जानते थे, उसी प्रकार उसका सदुपयोग करना भी जानते थे। देश के विभिन्न भागो में चलने वाली विभिन्न संस्थाओ को आपकी तरफ से उदारतापूर्वक दान किया गया। दान देने की इस उदारता के कारण आपको "दानवीर" की उपाधि से सम्बोधित किया जाता था। स्थानीय श्री सघ के आप आधार स्तम्भ थे। आपकी प्रेरणा और उत्साह से यहाँ के स्थानक-भवन का निर्माण हुआ। आपकी ही भक्ति-भावना से सन्त-मुनिराजो के चातुर्मास हुआ करते थे।

आपका स्वर्गवास संवत् २००१ चैत्र वदी २ को हुआ। आपकी पुण्य स्मृति में नागपुर श्री संघ ने आपके शुभ नाम से श्री श्वेत० स्थानकवासी जैन-शाला की स्थापना की है। निस्सन्देह स्व० पु गलिया जी समाज के उज्ज्वल सितारे थे और सैकडो दीन-दुखियो के आश्रयदाता थे।

आपके बाद आपकी दानवीरता की उज्ज्वल कीर्ति को और धार्मिकता की सुरभि को आपकी विधवा पत्नी अक्षुण्ण बनाये हुए हैं यह और भी गौरव का विषय है।

● ● ○

स्व० श्री पोपटलाल विक्रमशी शाह, नागपुर

आपका जन्म सौराष्ट्र के सायला गाँव में हुआ था। बाल्यावस्था से ही व्यवसाय के लिए नागपुर आ गये थे। नागपुर श्री संघ की तरफ से होने वाली प्रत्येक प्रवृत्ति में आप अग्रगण्य रहा करते थे। आपका स्वर्गवास ता० ७-७-४६ को हुआ। उस समय आपकी पत्नी ने व्याख्यान का हॉल बनाने के लिए ११,००१) रु० श्री संघ को अर्पण कर आपके नाम को चिरस्थायी बना दिया

● ● ○

स्व० श्री जेठालालजी व्रजपाल कामदार, नागपुर

आपका जन्ज सन् १८६२ में कडोरणा गाँव में हुआ था। जेतपुर में अंग्रेजी माध्यमिक शिक्षण प्राप्त करके नागपुर में व्यवसाय के लिए आगमन हुआ। आपकी धर्म के प्रति वात्सल्य-भावना, समाज के प्रति प्रेम, अनुकरणीय एव आदर्श था। प्रत्येक आवश्यक कार्य में श्री सघ को आपकी नेक सलाह प्राप्त हुआ करती थी। तन मन धन से श्री सघ की सेवा करने में आप तत्पर रहते थे। सन् '५३ में कोल्हापुर में आपका स्वर्गवास हुआ।

श्री नागसी हीरजी शाह, नागपुर

आपका जन्म संवत् १६४६ में लाखापुर (कच्छ) में हुआ था। वहाँ पर प्राथमिक ज्ञान प्राप्त करके सवत् १६६२ में नागपुर पधारे और संवत् १६७६ से संवत् १६८५ तक श्रीसघ के मन्त्रीपद पर रहे। आपकी सेवाएँ श्रीसघ को अभी तक प्राप्त हैं।

● ● ●

श्री मूलजी भाई नागरदास भायाणी, नागपुर

आपका जन्म स० १६५३ में सौराष्ट्र के लाठी नामक ग्राम में हुआ था। सवत् १६८० में आप नागपुर आये। आपकी ही प्रेरणा से दानवीर सेठ सरदारमलजी पुगलिया ने कई स्थानो पर दान दिया। आप सेठ साहब के प्राईवेट मन्त्री थे। इस समय आप श्रीसंघ के उपाध्यक्ष हैं।

सेवाभावी कार्यकर्ता स्व० श्री मुलजी देवजी शाह

आपका जन्म साडात (कच्छ) गॉव में हुआ था। बाल्यावस्था मे नागपुर आये। यहाँ शिक्षा प्राप्त की। आपकी तेजस्वी बुद्धि से व्यापार व्यवसाय में विशेष वृद्धि हुई। व्यापार में प्रवृत्त होते हुए भी, सामाजिक क्षेत्रो में भी आपको अग्र स्थान प्राप्त था। सन् १९३२ से नागपुर स्थानकवासी संघ के मन्त्रीपद पर थे और अन्तिम श्वास तक मन्त्रीपद पर रहे। आपके कार्य-काल में श्री संघ के दो भवनो का निर्माण हुआ। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक प्रवृत्तियो में वृद्धि हुई।

श्रीसंघ के अतिरिक्त नागपुर की व्यापारिक संस्थाएँ, गुजराती स्कूल, गौरक्षण, इत्यादि सस्थाओ के अग्रगामी थे।

आपका स्वर्गवास दिनांक १६-४-१९५२ को नागपुर मे हुआ। आपकी यादगार कायम रखने के लिए नागपुर श्रीसंघ ने 'शाह मुलजी देवजी वाचनालय' की स्थापना की है।

● ● ●
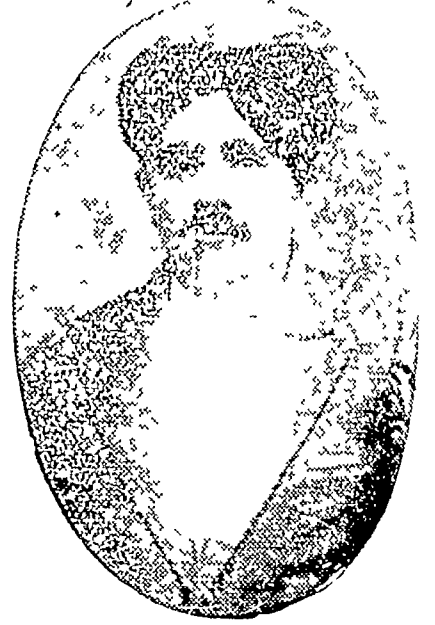
श्री भीखमचन्दजी फूसराजजी संखलेचा, नागपुर

आपका जन्म सवत् १९८० मे 'अलाय' राजस्थान में हुआ था। आप स्व० सेठ श्री सरदारमलजी नवलचन्दजी पुगलिया की दुकान सँभाल रहे है। इस समय श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ के ३-४ वर्ष से अध्यक्ष पद पर हैं।

● ● ●

श्री हंसराज देवजी शाह, नागपुर

आप श्री मूलजीभाई देवजी के छोटे भाई है। माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर व्यवसाय का कार्य करने लग गये। इस समय आप अपने वडे भाई स्व० श्री मूलजीभाई के स्थान पर व्यापारी सस्थाओ में और श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ के मन्त्री है। प्रमुख कार्यकर्ता के रूप में आप श्री सघ की सेवा कर रहे है।

श्री सम्पतराजजी धाड़ीवाल, रायपुर

आपके कन्धो पर ही स्थानीय संघ का मन्त्रीत्व का भार है। निरन्तर चार वर्षो से आप इस पद पर विराजमान हैं। आपकी उदारता, सुशिक्षा, धर्मप्रियता एवं श्रद्धा अनुपम और अनुकरणीय है। सघ और शासन की सेवा करने में आपको वड़ी प्रसन्नता होती है। अदम्य उत्साह से इन कार्यो के लिए आप रात-दिन एक करते पाये गए है।

देशभक्त त्यागमूर्ति श्री पूनमचन्दजी रांका, नागपुर

आपके पिताजी का नाम शम्भुरामजी था। अपने समय मे नागपुर मे आपकी वडी भारी फर्म थी। किन्तु उस समय महात्मा गाधी के असहयोग आन्दोलन ने इस व्यवसायी को गाधीवादी, देशभक्त और कर्मठ कार्यकर्ता वना दिया। नागपुर जिले के आन्दोलन के आप सूत्रधार हो गए—नेतृत्व की वागडोर आपके हाथो में आ गई। कांग्रेस के आन्दोलनो में और उसके रचनात्मक कार्यक्रमो में आपने अपनी समस्त सम्पत्ति अर्पण कर दी और देश के लिए फकीर हो गए। अनेक वर्षों तक आपको जेल-यातना सहन करनी पडी।

'सन् १९२३ मे मलकापुर में श्री मेघजी भाई थोभण के सभापतित्व मे अधिवेशन हुआ। उस समय आप नागपुर के ३ प्रतिनिधियो में से एक प्रतिनिधि होकर गए थे। आपको सब्जेक्ट कमेटी में लिया गया। आपने अधिवेशन मे तीन प्रस्ताव इस विषय के रखे—(१) महात्मा गाधी के आन्दोलनो के प्रति सहानुभूति, (२) पोशाक में शुद्ध खादी अपनाई जाय, (३) धर्मस्थानो मे छुआछूत का भेद मिटाया जाय। प्रथम के दोनो प्रस्ताव तो जैसे-तैसे स्वीकृत हो गए किन्तु तीसरा प्रस्ताव स्वीकृत नही हुआ। आपकी लाचारी पर प्रेसिडेन्ट श्री मेघजी भाई भी वडे दुखी थे। उस समय स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज सा० का चातुर्मास जलगॉव में था। कॉन्फ्रेंस का डेपुटेशन पूज्यश्री के दर्शनार्थ गया तव अधिवेशन में पारित प्रस्ताव भी वताए गए। पूज्यश्री ने आपके गिरे हुए प्रस्ताव के प्रति पूर्णरूप से नैतिक समर्थन प्रदान किया और फरमाया कि—"धर्म-स्थानो मे मनुष्य-मात्र को धर्म-श्रवण करने का अधिकार है।" श्री मेघजी भाई ने तव आप से क्षमा याचना की।

आप इस समय कांग्रेस के विधायक कार्यक्रमो में लगे रहते है आप सर्वोदयवादी है। और विशुद्ध रूप से राष्ट्रीय दृष्टिकोण के असाम्प्रदायिक विचारधाराओ के है, यद्यपि धार्मिक और सामाजिक-क्षेत्र आपका अव नही रहा किन्तु निश्चित ही श्री रांकाजी समाज के लिए गौरव है कि समाज ने अपनी एक महान् विभूति राष्ट्र को अर्पण की।

श्री गेन्दमलजी देशलहरा, गुण्डरदेही (द्रुग) म० प्रदेश

आपका जन्म संवत् १९५९ के आषाढ शुक्ला नवमी को हुआ था। आपके पिताश्री का शुभ नाम श्री हसराजजी था। अध्ययन काल से ही आपके हृदय में राष्ट्रीय भावनाएँ जागृत थी। अत व्यावसायिक जीवन के साथ-साथ राष्ट्रीय कार्यों में भी पूर्ण मनोयोग से हिस्सा लेने लगे। सन् १९३० के राष्ट्रीय आन्दोलन मे आपको कठोर कारावास तथा ५०) रु० जुर्माने की यातनाएँ सहनी पडी। आप लेखन, वक्तृत्व शक्ति एव रचनात्मक कार्यो में पूर्णशक्ति रखते है। ग्रामोद्योग-प्रचार, मादक पदार्थ निषेध व बलिदान प्रथा आदि वन्द करवाने में आप सर्वदा अग्रणी रहते है। अ० भा० श्वे० सम्मेलन के डेपूटेशन मे सम्मिलित होकर आपने सी० पी०, वरार, खानदेश आदि स्थानो का दौरा किया। रामगढ कांग्रेस की आपने पैदल यात्रा की। आप खादी भण्डार एव स्वदेशी वस्त्रो के व्यवसायी है। श्री देव-आनन्द शिक्षण-सघ राजनान्द गॉव के प्रचार कार्य में आपने सक्रिय भाग लिया। आपके सुपुत्र श्री पुखराजजी और सुपुत्रियॉ श्री मदनवाई, तारावाई व इच्छावाई है। समाज को आपसे वडी-वडी आशाएँ है।

श्री अगरचन्दजी सा० वेद, रायपुर

आप स्थानीय श्रीसंघ के उपाध्यक्ष हैं। सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में आपका उत्साह तथा दान गौरव पूर्ण एवं प्रशसनीय है। आपकी ही प्रेरणा से यहाँ जैन स्कूल की स्थापना हुई। सामाजिक कार्यों में तन-मन-धन से सहयोग औरो के लिए अनुकरणीय है।

श्री गणेशीलालजी चतर, सीवनी (म० प्रा०)

आपका जन्मस्थान मेवाड़ राज्यान्तर्गत ताल नामक एक छोटे से ग्राम का है। आप होशगाबाद में स्वर्गीय सेठ नेमीचन्दजी के यहाँ दत्तक गए। सीवनी में स्थानकवासी जैन केवल आप ही है, पर आपकी धर्मप्रियता ने मन्दिर-मार्गियो को भी इतना प्रभावित किया कि सीवनी के सभी मन्दिरमार्गी भाई स्थानकवासी के रूप में परिवर्तित हो गए आप कांग्रेस के अनन्य भक्त हैं। लगातार २२ वर्षो से शुद्ध खादी धारण करते चले आ रहे हैं। आपकी चार गाँव की जमीदारी होते हुए भी जमीदारी के उन्मूलन सत्याग्रह में आपका प्रमुख हाथ था। धर्म-कार्यों में मुक्त हस्त से दान तथा जैन-सिद्धान्तो का कठोरतम पालन आपकी विशेषता है। आपकी सन्तान में एक पुत्र तमा पुत्रियाँ हैं। जिले का बच्चा-बच्चा आपके नाम से परिचित है।

श्री अगरचन्दजी गुलेच्छा, राजनांदगॉव

आप एक उदारमना, शिक्षा-प्रेमी एवं अनन्य धर्मश्रद्धालु व्यक्ति थे। दीन-दुखियो के प्रति आपका हृदय सदा ही सदय बना रहता था। समाजहित कार्यों के लिए आप सदैव मुक्तहस्त होकर दान करते थे। आप एक ऐसे लक्ष्मीपति थे, जिन्होंने साधारण व्यवसाय प्रारम्भ कर अपनें पुण्य बल एवं बुद्धिबल से समय का लाभ उठाया और एक प्रतिष्ठित तथा यशस्वी लक्ष्मीपति बन गए। धन कमाना आसान है किन्तु कमाये गए धन को समाज एवं लोकोपकारी कार्यों में लगाना कहीं अधिक कठिन है। छत्तीसगढ़ इलाके में जहाँ जैन समाज की बहुत बडी संख्या है, किन्तु समाज की एक भी सस्था न थी। इस अभाव को दूर करने के लिए वह एक मुश्त २१,०००) दान कर राजनादगॉव में श्री देव आनन्द जैन शिक्षण संघ की स्थापना की। आपके बड़े सुपुत्र श्री भंवरीलालजी गुलेच्छा भी अपने पिता के समान ही धार्मिक और सामाजिक कार्यो में दिलचस्पी लेने वाले नवयुवक हैं। अपनें पिता के समान आपसे भी समाज को बडी-आशाएँ हैं—जो सहज स्वाभाविक है।

स्व० सेठ श्री चन्दनमलजी मूथा, सतारा

श्री सेठ चन्दनमलजी मूथा का जन्म स० १७८६ आषाढ वदी ६ को हुआ। बचपन से ही आप ... भाई श्री बालमुकुन्दजी मूथा के साथ व्यापार में साथ रहे और काफी धन और कीर्ति सम्पादन की। आप बम्बई और शोलापुर में भी स्थापित की। जिस तरह आपने धन उपार्जन किया उसी तरह आपने मुक्त सदुपयोग भी किया।

जैन समाज की धार्मिक या सामाजिक संस्था फिर भले ही वह हिन्दुस्तान के किसी भी भ ... ओर से गुप्त मदद मिलती ही रहती थी। कॉन्फ्रेन्स के बम्बई अधिवेशन के समय आपने पूना बोर्डिग कॉन्फ्रेन्स को ५ हजार रु०, घाटकोपर जीवदया खाता को ३ हजार रु० और सस्कृत शिक्षण की ५ हजार रु० की उदार भेंट आपकी दानप्रियता के थोडे से उदाहरण मात्र हैं।

आपको आयुर्वेदिक उपचार के प्रति बडा सन्मान था। आपने अपने जीवन में आयुर्वेदिक औषधि के सिवाय अन्य कोई दवा नही ली थी। आयुर्वेदिक पद्धति पर अनहद श्रद्धा तथा प्रेम से प्रेरित होकर आपने सतारा के आर्यांग्ल वैद्यक विद्यालय को बडी रकम प्रदान की थी। ७१ वर्ष की उम्र में जब आपकी वर्षगाठ मनाई गई थी तब आपने सतारा के मारवाडी समाज को उनके उत्कर्ष के लिए पाँच हजार रुपये प्रदान किये थे।

जीवन की अन्तिम घडियो मे आपने ५० हजार रुपये धार्मिक कार्य के लिए अलग निकाले और १० हजार रुपये विभिन्न सस्थाओ को भेंटस्वरूप प्रदान किये।

अन्तिम समय में आपने सथारा भी कर लिया था। आपकी धार्मिक श्रद्धा, सत्यप्रियता और उदारवृत्ति प्रशसनीय तथा अनुकरणीय थी।

श्रीमान् स्व० उत्तमचन्दजी मुथा, पाथर्डी

मुथाजी एक गम्भीर स्वभावी, मुत्सद्दी कार्यकर्त्ता के रूप मे प्रख्यात थे। आपका जीवन बडा उज्ज्वल था। जैन-अजैन सभी जनसमुदाय आपको अपना नेता मानते थे। अहमदनगर जिले के कार्यकर्त्ताओ में आपका विशिष्ट स्थान था। पाथर्डी की सभी सस्थाओ को आपकी दीर्घदर्शिता एव निष्पक्ष वृत्तिका सदैव बहुमूल्य लाभ प्राप्त होता रहा। श्री तिलोकरत्न जैन विद्यालय की स्थापना के समय से ही आप ऑनरेरी सेक्रेटरी के पद पर अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक तन-मन-धन से जो सेवा करके एक आदर्श उपस्थित कर दिया वह कुछ ही-सस्था सचालको मे पाया जाता है। पाथर्डी सस्थाओ के लिए श्रीमान् गुगले, और मुथाजी कृष्ण और अर्जुन के समान सहयोगी रहे। आपके सत्प्रयास से अन्य भी कई व्यावहारिक सस्थाएँ स्थापित होकर विकास को प्राप्त हुई। स्थानीय श्री तिलोक रत्न स्था० जैन धार्मिक परीक्षा-वोर्ड एव श्री वर्द्धमान स्था० जैन धर्म शिक्षण प्रचारक सभा के आप महामन्त्री थे।
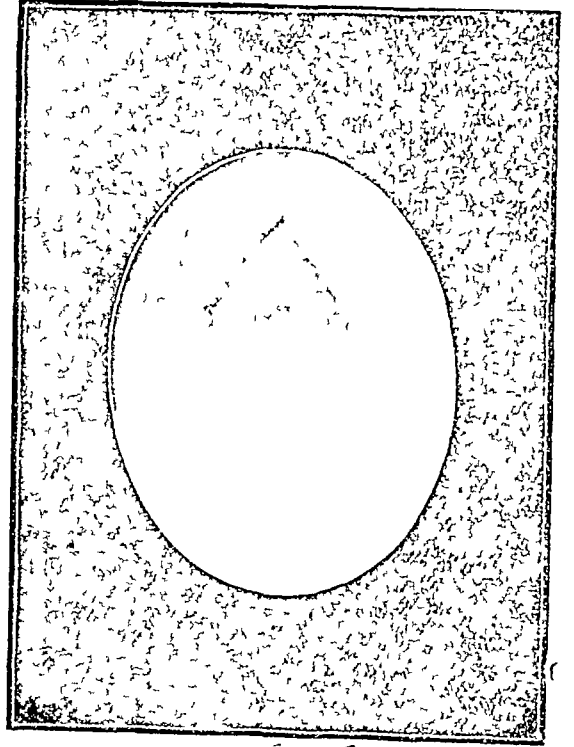
श्रीमान् रतनचन्दजी वॉठिया, पनवेल

आप सुप्रसिद्ध व्यवहारी एव कुशल-कार्यकर्ता के रूप में प्रसिद्ध है। वहुत-सी धार्मिक एवं व्यावहारिक संस्थाओ के आप अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, चेयरमैन, डाइरेक्टर आदि महत्त्वपूर्ण पदो के सफल सचालक है। पाथर्डी परीक्षा-वोर्ड के वर्तमान अध्यक्षपद को आपही सुशोभित कर रहे है। आपका स्वभाव अतीव सरल एवं हृदय उदार है। आपके आश्रय से कई संस्थाएँ चल रही है।

● ● ●

श्रीमान् स्व० सेठ श्री मोतीलालजी गुगले पाथर्डी, (अहमदनगर)

आप पाथर्डी ओसवाल समाज के अग्रगण्य प्रामाणिक सद्गृहस्थ थे। श्री तिलोकरत्न जैन विद्यालय छात्रालय, एव ट्रस्ट मण्डल के अध्यक्ष पद को अलंकृत करते हुए जीवन-पर्यन्त आपने सस्थाओ की बहुमूल्य सेवा की। विद्यालय को १५०००) पन्द्रह हजार रुपये का अनुदान आपने समय-समय पर दिया था। वर्तमान विद्यालय भवन के निर्माण में भी आधा हिस्सा आपका ही है। विशाल विद्यालय भवन निर्माण-कार्य प्रारम्भ करने के लिये २५०००) रु० का दान आपने अन्तिम समय में घोषित किया और तत्काल ही वह रकम ट्रस्टियो के सुपुर्द कर दी गई। परीक्षा बोर्ड, सिद्धान्तशाला आदि संस्थाओ को भी आपका सहयोग प्राप्त हुआ है। बाहरी सस्थाओ को भी आप यथाशक्ति सहायता दिया करते थे।

● ● ● ●

श्रीमान् माणकचन्दजी मुथा, अहमदनगर

शास्त्र विशारद स्व० श्रीमान् किसनदास जी मुथा के आप ज्येष्ठ पुत्र है। अहमदनगर ओसवाल समाज में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। अपने स्व० पिता की धार्मिक सेवावृत्ति को आपने भी हृदय से अपनाई है। पाथर्डी हाईस्कूल एव सिद्धान्तशाला के आप अध्यक्ष है। परीक्षा बोर्ड और वर्द्धमान सभा के उपाध्यक्ष तथा सस्थाओ के ट्रस्टी तथा अन्य सम्मानित सदस्य है। अहमदनगर की कई व्यावहारिक एवं धार्मिक संस्थाओ के आप पदाधिकारी है। श्री जैन सिद्धान्तशाला, अहमदनगर व पोड़ नदी की स्थापना आपने ही की है।

श्रीयुत सुगनचन्दजी भण्डारी, इन्दौर
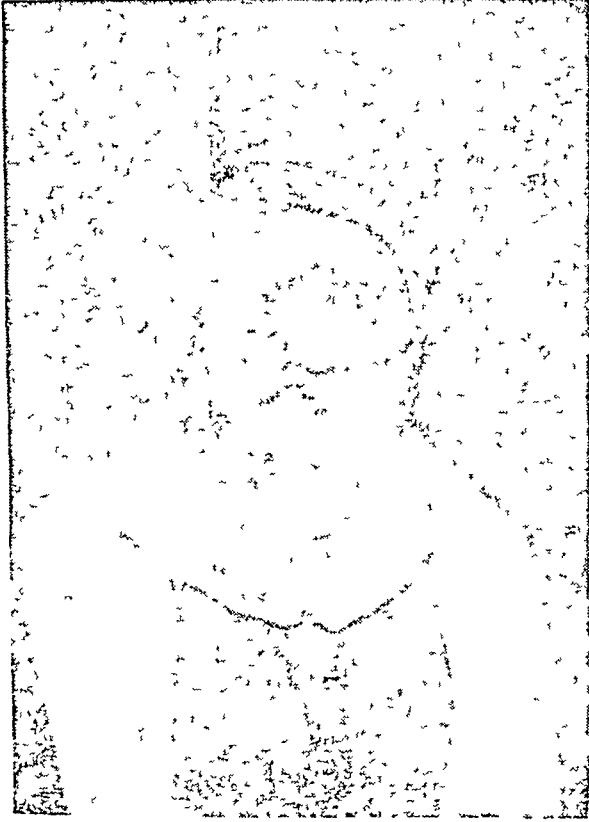
श्रीमान् स्वर्गीय श्री नानचन्दजी भगवानदासजी दूगड़, घोड़नदी

आप सरल स्वभाव के उदार सद्गृहस्थ थे। पाथर्डी बोर्ड की स्थापना आपकी मुख्य कृति है और भी बहुत-सी धार्मिक एव व्यावहारिक सस्थाओ में आपने सहायता दी है। आपने घोडनदी क्षेत्र का मोह नही रखते हुए पाथर्डी में आकर बोर्ड को स्थापित करना आपकी निष्पक्षवृत्ति का द्योतक है। आपने जीवन पर्यन्त बोर्ड के अध्यक्ष पद का सचालन किया था। घोडनदी में भी आपने एक मकान धर्मध्यानार्थ सघ को प्रदान कर दिया है। संत सतियो की सेवा एवं व्याख्यान-श्रवण आदि पवित्र कार्यो में आप विशेष लीन रहते थे।

● ● ● ●
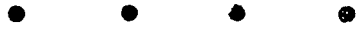
श्रीमान् चन्दनमलजी गांधी, पाथर्डी

देशभक्त श्रीयुत गाँधीजी अहमदनगर जिले के एक निष्ठावान् कार्यकर्त्ता हे। सामाजिक, व्यापारिक, धार्मिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रो में आपकी प्रतिभा विकसित हुई है। भारत माँ की निष्ठासपन्न सन्तान के रूप में जनता आपको पहचानती है, इसलिये आपको देशभक्त की पदवी है, आप सक्रिय गाधी-वादी हैं। श्रीयुत उत्तमचन्दजी मुथा ने अपना उत्तरदायित्व आपको सौंपते हुए बहुत ही समाधान व्यवत किया था। आपने भी मुथाजी को जो आश्वासन दिया था उसका हृदय से पालन करते हुए मुथाजी की अपूर्ण कृति को पूर्ण करने में अपने सर्वस्व की वाजी लगाकर विद्यालय की इस थोड़े समय में जो उन्नति कर दिखाई है वह सर्वथा गौरवास्पद है। विद्यालय के मानद् महामन्त्री के महत्त्वपूर्ण पद का संचालन करते हुए परीक्षा वोर्ड आदि संस्थाओ की व्यवस्था में भी आप हाथ वँटाते रहते हैं।

श्रीमान चुन्नीलालजी गुगले, पाथर्डी

आप स्व० श्रीमान् श्रेष्ठिवर्य मोतीलालजी गुगले, पाथर्डी के सुपुत्र है। अपने पिताश्री के पश्चात् श्री तिलोकरत्न जैन विद्यालय, छात्रालय, धार्मिक परीक्षा बोर्ड आदि जैन एव जैनेतर हिन्द वस्तिगृह आदि सस्थाओ को आप अच्छा सहयोग दे रहे है। सेल परचेज एव औद्योगिक सोसायटी के कई वर्ष तक आप चेयरमेन रह चुके है। आप लोकप्रिय गाधीवादी है। आपका स्वभाव मिलनसार है।

● ● ● ●

श्रीमान् सुवालालजी छाजेड़-वालमटाकली

अपने पिताश्री के पश्चात् आप श्री तिलोकरत्न जैन ज्ञान प्रचारक मण्डल के ट्रस्टी होकर वर्त्तमान मे श्री तिलोकरत्न जैन विद्यालय के मन्त्री पद पर काम कर रहे है। आप जैन समाज की उन्नति के लिए अर्हनिश चिन्तित रहते है। अपने वकीली व्यवसाय के कारण समयाभाव रहते हुए भी यहाँ की जैन सस्थाओ को पर्याप्त मात्रा में सहयोग देते रहते हैं।

श्रीमान् चुनीलालजी कोटेचा-नान्दूर, जिला वीड़
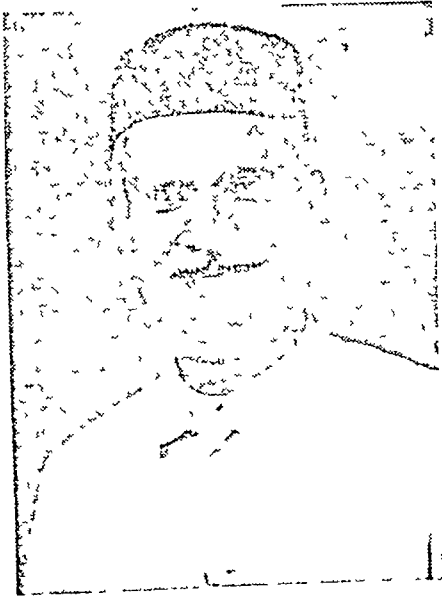
आप श्री तिलोकरत्न जैन विद्यालय के स्थापना-काल से ट्रस्ट मण्डल के सदस्य हैं। विद्यालय की आर्थिक स्थिति दृढ करने में आपका पूर्ण सहयोग रहा है। आपको शिक्षण विषयक सस्थाओ से काफी प्रेम है। एव उनके लिये अर्हनिश तत्पर रहते है।

● ● ● ●

लाला अर्जुनसिंहजी जैन जींद
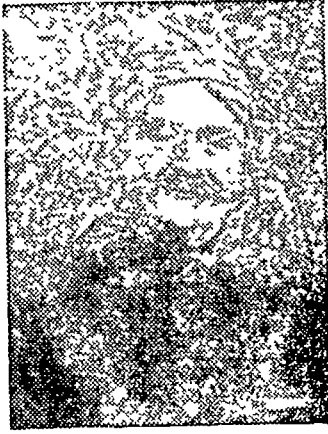
स्व० दी० ब० मोतीलालजी मूथा, सतारा

आप प्रारम्भ से ही कॉन्फरन्स के स्तम्भ रहे है। कॉन्फरन्स के जनरल सेक्रेटरी रहे है। आपने कॉन्फरन्स तथा स्था० जैन समाज की आजन्म सेवा की है।

स्व० श्री किशनदासजी मूथा, अहमदनगर

आप दक्षिण भारत में शास्त्रो के मर्मज्ञ थे। आप बडे ही धर्मनिष्ठ और साधु-साध्वियो के मार्गदर्शक थे।

श्री जवाहरलालजी रामावत, हैदराबाद

आप राजा-बहादुर सुख० ज्वालाप्रसादजी की हैदराबाद फर्म के संचालक है। बडे ही धर्मनिष्ठ और श्रद्धालु श्रावक है।

श्री पूनमचन्दजी गाधी, हैदराबाद

आप उदार दिल के प्रभावशाली श्रावक है। समाज और सामाजिक सस्थाओ के प्रति आप बड़े उदार है।

स्व० श्री पन्नालालजी बब, भुसावल

आप धर्मप्रेमी, समाज के अग्रगण्य उदारदिल के श्रावक है। साधु-साध्वियो के प्रति अनन्य श्रद्धा है।

श्रीमान् नथमलजी रॉका, जामठी

जामठी निवासी —श्रीसम्पन्न नथमलजी राका अति सरल स्वभावी, उदार प्रकृति के सद्गृहस्थ हैं। स्थानीय जनता पर आपका अच्छा प्रभाव है। बोदवड़ में हाईस्कूल भवन का निर्माण आपके विद्या-प्रेम एव समाज-सेवा का प्रतीक है। श्री वर्द्धमान जैन धर्म शिक्षण प्रचारक सभा, पाथर्डी की स्थापना-काल से ही आप इसके अध्यक्ष है।
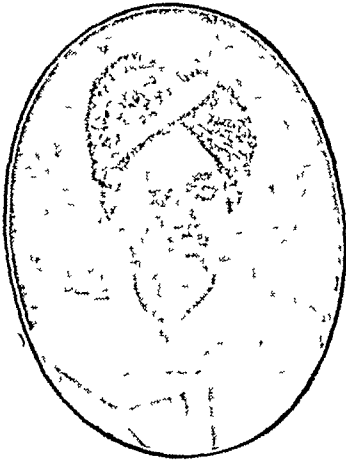
श्रीमान् हीरालालजी किशनलालजी गांधी

आप एक कुशल व्यवसायी एवं समाज-प्रेमी व्यक्ति है। आप पारमार्थिक सस्थाओ की स्थापना-काल से आज तक ऑनरेरी सेवा कर रहे हैं। धर्म के प्रति आपकी पर्याप्त अभिरुचि है। आपका स्वभाव सरल एव रहन-सहन सादा है। आप जैसे नि.स्वार्थ एव तत्परता से काम करने वाले व्यक्ति समाज में विरले ही देखने को मिलेंगे।

श्री जवाहरलालजी मुणोत, अमरावती

आपका जन्मस्थान मारवाड में पीपाड का है किन्तु इस समय आपका व्यापार अमरावती-मध्यप्रदेश में फैला हुआ है। आपका शिक्षण हाईस्कूल तक हुआ है। बचपन से ही व्यापारिक उत्थान के साथ--साथ धार्मिक एव सामाजिक विकास के लिए आपका मानस मननशील रहा है। मारवाडी समाज की रूढिपरस्त परम्पराओ से आप अविरत सघर्ष करते आ रहे हैं। सौभाग्य से आपकी धर्मपत्नी का भी सभी सामाजिक उत्थान-कार्यो में योगदान बना रहता है। आपने पर्दा आदि कुप्रथाओ को तिलाजली देकर समाज मे एक नया अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया है।

सामाजिक उत्थान के कार्यो में आपका सदा ही प्रमुखतम भाग रहा है। कॉन्फ्रेन्स के कई वर्षो से आप सतत कार्यकर्त्ता रहे हैं। इसके साथ-साथ राजस्थान में सम्प्रदायो के आपसी मनमुटाव को मिटाने व जैन समाज में प्रेम भाव व भाईचारे के लिए आपका प्रयत्न अथक व सफल रहा है। कॉन्फ्रेन्स की कार्यकारिणी के कई वर्षों से सदस्य व मानद् मन्त्री हैं। आप अपने ओजस्वी व प्रभावशाली भाषणो के कारण सारे समाज में अत्यन्त लोकप्रिय हैं।

आप अमरावती के सुप्रसिद्ध जैन बोर्डिंग के संचालकों में से एक हैं।

अपने आसपास व दूर-दूर तक की विविध धार्मिक-सामाजिक प्रवृत्तियो के प्रणेता व प्रेरक है । अपने जन्मस्थान 'पीपाड़' शहर में अपनी माता के नाम पर एक अस्पताल बनवा रहे है जो आपकी तरफ से राजस्थान सरकार को भेंट किया जायगा ।

व्यावसायिक क्षेत्र में भी आशातीत सफलता के साथ प्रगति की है । फिल्म-व्यापार जगत् के 'सी० पी० सी० आई' (मध्यक्षेत्र) सर्किट के अत्यन्त प्रमुख और 'दी कल्याण पिक्चर्स लि० (अमरावती व इन्दौर), के स्थापना काल से मैनेजिग एजेन्टस् है । इस प्रकार सिनेमा-क्षेत्र के सगठनो के आदरप्राप्त सयोजक व निर्देशक रह कर अपनी व्यावसायिक प्रतिभा को और अधिक मुखरित कर रहे है ।

समाज का यह ज्योतिर्मय नक्षत्र अपने दिव्य तेज से समाज को प्रकाशमान एव छविमान कर रहा है । आशा और उमगो से भरे हुए इस तेजस्वी युवक से समाज को बडी-बडी आशाएँ होना स्वाभाविक ही है ।

आपकी अध्यक्षता में जैन युवक-परिषद् स्थायित्व को प्राप्त कर युवक सगठित समाज को युगानुरूप प्रगतिशील बनाने में सहायक सिद्ध होगा ।

मद्रास के प्रमुख कार्यकर्ता

श्री ताराचन्दजी गेलड़ा, मद्रास

श्री गेलडाजी का जन्म स० १६४० में मद्रास मे ही हुआ । आप मारवाड में कुचेरा के निवासी है । आपके पिताजी का नाम श्री पूनमचन्दजी था । आपके तीन छोटे भाई भी है, जिनमें से श्री इन्द्रचन्द्रजी गेलडा का अभी-अभी स्वर्गवास हो गया है । आपके दादा श्री अमरचन्दजी सर्व प्रथम १२५ वर्ष पूर्व पैदल चलकर यहाँ आये थे । प्रारम्भ में आपने नौकरी की और फिर धीरे-धीरे फरमकुण्डा (उपनगर) मे रेजिमेटल बेकर्स का कामकाज शुरू किया । जिसमें आपने अच्छी सफलता प्राप्त की । आपके पिताजी का स्वर्गवास हो जाने के बाद आप सब भाई अलग-अलग हो गए और आपने पूनमचन्द ताराचन्द के नाम से अपनी स्वतन्त्र फर्म खोली और लाखो की सम्पत्ति पैदा की । आपका विवाह डेह निवासी श्री हसराजजी खीवसरा, जो कि १२ व्रतधारी प्रसिद्ध श्रावक थे की सुपुत्री श्री रामसुखी बाई से हुआ । आपके तीन पुत्र है, जिन्हे आपने अपने स्वतन्त्र व्यवसाओ में लगा दिये है । श्री भागचन्दजी गेलडा आपके बड़े पुत्र हैं जो समाज-सेवा के कार्यो में काफी उत्साह तथा लगन से भाग लेते हैं । श्री नेमीचन्दजी और खुशालचन्दजी भी विनीत और धर्मकुशल है जो अपना व्यवसाय सफलता से चला रहे है । श्री ताराचन्दजी गेलडा उदार-हृदय के साहसी सज्जन हैं । जिस कार्य को वे हाथ में ले लेते हैं उसे पूरा करके ही चैन लेते है । कॉन्फ्रेन्स के ११वें अधिवेशन के आप स्वागतमन्त्री थे । यह अधिवेशन जिस ढंग से मद्रास में सम्पन्न हुआ, वैसा पहले कोई अधिवेशन नहीं हुआ । इसका अधिकांश श्रेय आपको ही है । शुभ कार्यो में आप उदारतापूर्वक दान देते है । सर्वप्रथम आपने १० हजार रुपयो का एक ट्रस्ट कायम किया था जिसका व्याज १३ वर्ष तक आप शुभ कार्य में लगाते रहे । जब मद्रास में जैन बोर्डिग की नींव पड़ी तब आपने यह रुपया बोर्डिग को दे दिया था । सैदापैठ में आपने अपनी तरफ से महावीर पौषधशाला भवन बनाकर समाज को भेंट किया । शिक्षा के प्रति आपकी अत्यधिक रुचि है । मद्रास में

चलने वाली जैन एज्युकेशनल सोसाइटी की स्थापना में आपका विशेष भाग रहा है। आज इस सोसाइटी के तत्त्वावधान में, बोर्डिग, हाईस्कूल, कॉलेज तथा प्रायमरी स्कूल आदि चल रहे हैं। वर्षों तक आप इस सोसाइटी के मन्त्री रहे हैं। और इसका संचालन करते रहे हैं। गत १८ वर्ष से आप गृहभार से मुक्त हो त्यागी जीवन व्यतीत कर रहे है। आप सपत्नीक खादी के वस्त्र ही पहनते है। अब तो आपने रेल आदि की सवारी का भी त्याग कर दिया है। ११ वर्ष पूर्व आपने ताराचन्द गेलडा ट्रस्ट के नाम से १ लाख रु० का ट्रस्ट किया था जिसमें से २० हजार रु० आपने अपने पिताजी की पुण्य स्मृति मे कुचेरा (मारवाड) मे मिडिल स्कूल कराने के लिए जोधपुर गवर्नमेंट को दिये हैं। ट्रस्ट में से ५० हजार रु० का ब्याज आप प्रति वर्ष कुचेरा बोर्डिंग को सहायतार्थ प्रदान कर रहे हैं। ३१ हजार रु० का ब्याज अभी आप प्रायमरी स्कूल मद्रास को दे रहे हैं। ५ हजार रु० आपने महिला विद्यालय, मद्रास को प्रदान किये हैं।

आप स्पष्ट वक्ता तथा नेक दिल सज्जन हैं। स्वभाव से कठोर प्रतीत होने पर भी हृदय से बहुत उदार और योग्य व्यक्ति की कीमत करने वाले है। आप इस वृद्ध उम्र में भी समाज सुधार कार्यों में दिनरात सलग्न रहते हैं। सुपुत्र कुँ० भागचन्दजी आदि पर परिवार का बोझ रखकर उत्तरावस्था में निवृत्त होकर आप आदर्श श्रावक जीवन बिता रहे हैं।

सेठ वृद्धिचन्दजी मरलेचा, मद्रास

आपका जन्म सं० १९३७ मे सोजत (मारवाड) के पास गुण्डागरी नामक ग्राम में हुआ था। आप अपने पिता श्री नवलमलजी मरलेचा के तृतीय पुत्र थे। जब आप १० वर्ष के थे तभी आपके पिता का स्वर्गवास हो गया था। जो-कुछ उनकी सम्पत्ति थी वह आपके बडे भाई ने व्यापार मे समाप्त कर दी। १५ वर्ष की वय में आप मद्रास पहुंचे। मद्रास पहुँचकर आपने फरमकुण्डा में १॥) रु० मासिक पर नौकरी की। रसोई बनाने का काम भी किया। स० १९५६ में आपको एक पेढी ने ३००) रु० साल पर नियुक्त किया। उधर मारवाड मे अकाल पड जाने से आपने अब तक की सचित पूँजी अपनी माँ के पास मारवाड भेज दी। स० १९५८ में आपके बडे भाई रूपचन्दजी भी अपना विवाह कर मद्रास आये। उस समय आपके पास ३९) रु० शेष रहे थे। दोनो ने मिलकर सैदापैठ में साहूकारी की दुकान की। लेकिन धन्धा ठीक न चलने से आपने रामपुरम में अपनी अलग दुकान कर ली। भाग्य से वहाँ आपको अच्छी आमदनी होने लगी अत आपके बडे भाई रूपचन्दजी भी वही आ गए। स० १९६५ में आपका विवाह हुआ। दस वर्षों तक आप दोनो भाई सम्मिलित व्यवसाय करते रहे, बाद में जब अलग-अलग हुए तो आपके हिस्से में ८५ हजार रुपये नकद और ५ हजार का जेवर आया। इसके बाद आपने अपना स्वतन्त्र व्यवसाय शुरू किया जिसमें आपने काफी द्रव्य उपार्जन किया। फलत आपकी गणना मद्रास के अग्रगण्य लक्षाधिपतियो में होने लगी।

मद्रास में जब छात्रालय शुरू करने का प्रश्न आया तो आपने इसके लिए सर्वप्रथम ५० हजार रुपये का दान दिया। आपकी धर्मपत्नी ने कोडम्बाकम् रेलवे स्टेशन के पास २८ ग्राउण्ड जमीन छात्रालय को दान में दी। इस प्रकार आप दोनो ही बडे उदार थे। समाज-सुधार की प्रवृत्तियो में आप समय-समय पर भाग लेते रहते थे। कई सस्थाओ को दान देकर वे अपने धन का सदुपयोग किया करते थे।

आपके सुपुत्र श्री लालचन्दजी मरलेचा भी आपकी तरह उदार है। मद्रास सघ में, शिक्षण सस्थाओ के तथा मारवाड की शिक्षण संस्थाओ में अच्छा सहयोग दे रहे हैं।

श्री सेठ छगनमलजी सा० मूथा, बैंगलोर

सेठ श्री छगनमलजी सा० समाज के एक रत्न हैं। आपकी सरलता, उदारता, धार्मिकता, शिक्षा तथा साहित्य-प्रेम एवं परोपकार-वृत्ति समाज के लक्ष्मी पुत्रो के लिए अनुकरणीय है।

आपका जन्मस्थान मरुभूमि मारवाड में मारवाड जकशन है। आपके पिताश्री का नाम श्री सरदारमलजी था। श्री छगनलालजी सा० बलून्दा निवासी श्री सेठ शम्भूमलजी के यहाँ गोद चले गए, तब से आप अधिकतर बलून्दा तथा बैंगलोर रहने लगे।

आपने लाखो रुपया अपने हाथो से कमाया और लाखो रुपया अपने हाथो से दान दिया। अनेक दीक्षाएँ तथा अनेक चातुर्मास आपने अपने पास से कराये और अपनी उत्कृष्ट मुनि-भक्ति तथा धर्म-प्रेम का परिचय दिया। दक्षिण प्रान्त में अहिंसा धर्म का प्रचार करने में और जीवो को हिंसा से बचाकर अभय दान देने में आपने अभूतपूर्व परिचय दिया है।

आपकी ओर से बैंगलोर, खारची जैतारण, बलून्दा आदि स्थानो पर शिक्षण-सस्थाएँ चलती है, जिनमें सैकडो छात्र नि शुल्क शिक्षण प्राप्त करते है। स्थानकवासी सार्वजनिक शिक्षण-सस्थाओ में शायद ही कोई ऐसी सस्था होगी जिसमें आपकी सहायता नही पहुँची हो। आप अनेक जैन-सस्थाओ के जन्मदाता, सदस्य और ट्रस्टी है। शिक्षा के अतिरिक्त अन्य बातो में भी आप काफी खर्च करते है। आपकी उदारता सर्वतोमुखी है। आपके पास आया हुआ प्रत्येक मनुष्य प्रसन्न तथा सन्तुष्ट होकर ही लौटता है।

आपकी तरफ से खारची, बलून्दा तथा मेडता में तीन औषधालय भी चलते है। तीनो औषधालयो में लगभग ५-६ सौ रुपया मासिक का खर्च है। हजारो बीमार लाभ उठाते हैं। इस तरह प्रतिवर्ष लगभग ५० हजार रुपया शुभ कार्यों में खर्च कर देते है।

आप स्वभाव के सीधे-सादे, अत्यन्त मिलनसार तथा हसमुख है। आये हुए व्यक्ति का हृदय से स्वागत करना तथा उन्हे आदर देना आपका स्वभाविक गुण है। छोटे से छोटे आदमी के साथ भी आप प्रेम से मिलते है, बातें करते है तथा दु.ख दर्द की बातें सुनकर उचित सहयोग देते है।

बैंगलोर प्रान्त में सबसे बडी फर्म आपकी है फिर भी इतने सरल है कि लोग देखकर आश्चर्य करने लगते है। थोडा सा पैसा हो जाने पर आपे से बाहर हो जाने वाले व्यक्तियो के लिये सेठ छगनमलजी आदर्श है। आप अपने किये हुए का कभी प्रचार नही चाहते। अनेक खर्च तो आपके ऐसे होते है कि देने और लेने वाले के सिवाय किसी को मालूम तक नही होता।

निस्सदेह सेठ सा० का जीवन लक्ष्मीपतियो के लिये एक दृष्टान्त स्वरूप है। धन सग्रह की वस्तु नही किन्तु लोक-कल्याण के लिये लगाने की चीज है, इसे सेठ सा० ने खूब समझा है केवल समझा ही नही अपने जीवन में चरितार्थ कर दिखाया है। इस अर्थ में सेठ सा० सच्चे लक्ष्मी पति है।

समाज को आपसे बड़ी-बडी आशाए है और ऐसा होना स्वाभाविक भी है।

श्री मिश्रीमलजी कातरेला, बैंगलौर
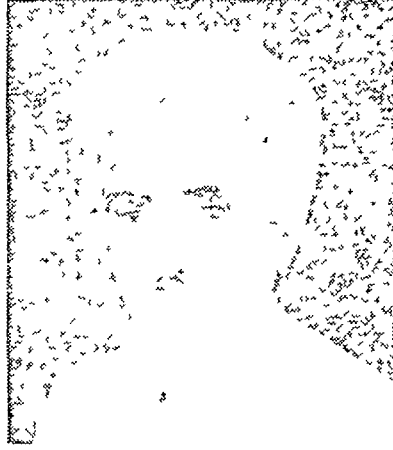
शाह माणिकचन्दजी जडावमलजी बोनाला, बागलकोट
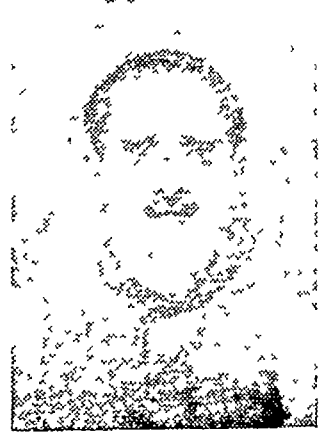
श्री मेघराजजी मेहता, मद्रास

श्री जसवन्तमलजी इन्जीनियर, मद्रास

श्री चुन्नीलालजी जैन, बैंगलौर

स्व० श्री इन्द्रचन्द्रजी गेलड़ा, मद्रास

श्री बनेचन्दजी भटेवड़ा, वेल्लोर (मद्रास)

आप मारवाड़ मे पीपलिया गाव के निवासी है। आपके पूर्वज करीब ६० वर्षो से वेल्लोर (मद्रास) में व्यापार के निमित्त आ गए थे। तभी से आप यही व्यापार कर रहे है। आपके यहाँ सोने-चादी का व्यापार होता है जिसमें आप कुशल है। सामाजिक कार्यों में भी आप सहयोग देते रहते है। स्थानीय प्रार्थना-भवन जो दो साल बाद बनकर तैयार हुआ है उसमें भी आपका परिश्रम मुख्य रहा है। यहाँ की गौरक्षा का कार्य आप २ साल से सुचारुरूपेण चला रहे है और गाँव वालो की मदद से गौशाला में एक ढालिया भी बनवा लिया है। आप एक धार्मिक प्रवृत्तिवाले सुश्रावक है। दक्षिण मे विचरण करने वाले तपस्वी मुनि श्री गणेशीलालजी म० के दर्शन कर आपको तपस्या में अभिरुचि पैदा हो गई। वर्तमान में आपके ३ पुत्र और ३ पुत्रियाँ है।

श्री कँवरलालजी चौरड़िया कुनूर (मद्रास)

आप वर्तमान में एस० एस० जैन सोसायटी के सभापति है। आप स्थानीय स्था० समाज के प्रतिष्ठित और प्रमुख श्रावक है। आप प्रकृति से अत्यन्त उदार एव मिलनसार है। प्रत्येक सामाजिक कार्य में यथोचित सहयोग देते है। आप व्यवसाय-कुशल और प्रामाणिक सज्जन है। इन्ही गुणो के कारण आज आप हजारो की सम्पत्ति के मालिक है। यहाँ आपकी 'अलसीदास कँवरलाल' के नाम से फर्म है।

श्री रतनलालजी सा० चौरड़िया' कुनूर (मद्रास)

आप स्थानकवासी समाज में सुप्रसिद्ध व्यक्ति है। स्थानीय एस० एस० जैन सोसायटी के आप मन्त्री है। समाजहित और सार्वजनिक हितार्थ आप प्रतिवर्ष लाखो रुपये खर्च करते रहते है। स्थानीय 'एनीमल वैल फेयर सोसायटी के आप प्रेसीडेंट है और सैकडो रुपए खर्च करते रहते है। समाज की विभिन्न सस्थाओ को भी समय-समय पर सैकडो रुपयो का उदारतापूर्ण दान करते रहते है। जैसी लक्ष्मी आप से प्रसन्न है वैसे ही दिल की उदारता भी है। दोनो में एक प्रकार से होड़-सी मची रहती है।

आपका कुटुम्ब फलौदी-खीचन (मारवाड) के प्रसिद्ध धनिको में गिना जाता है। कुनूर में आपकी पी० रतनलाल एण्ड सन्स' के नाम से फर्म चल रही है। आप चाय के बडे अनुभवी व्यापारियो में से एक है। इतनी धन-सम्पत्ति के मालिक होने पर भी आपका सादगीमय जीवन प्रशंसनीय है। आप अत्यन्त सरल भावुक तथा मिलनसार प्रकृति के हैं। आपके सुपुत्र श्री मनोहरलालजी तथा सम्पतलालजी भी अपने पिताश्री का आदर्श समक्ष रखते हुए बडे ही सेवाभावी, धर्मानुरागी और सरलहृदयी है। आप भी एक "जेम्स नीलगिरी टी कॉरपोरेशन" के नाम से अलग फर्म चला रहे है जिसकी एक ब्रॉच कोइम्बटूर में भी है। समाज को आप जैसे उदार एवं धर्मानुरागी व्यक्तियो की परमावाश्यकता है जिससे समाज का भला हो सके।

श्री पूनमचन्दजी गांधी, पत्थरगट्टी (हैदराबाद)

आपका जन्म सं० १८४२ में अलवर रियासत में बहरोड़ में हुआ था। आपके पिताजी श्री करोडीमलजी बडे ही धार्मिक, दानवीर एवं श्रद्धालु थे। ये ही सस्कार इनके पुत्र पर पडे और यही कारण है कि श्री पूनमचन्दजी ने एक स्थानक, एक धर्मशाला और एक कुएँ का निर्माण कराया। हैदराबाद स्टेशन पर भी आपने एक धर्मशाला बनवाई

जिसमे एक अस्पताल भी चालू किया गया है जिससे रोगियो को निःशुल्क औषधि मिलती है और दो साल पहले इसी धर्मशाला की तीसरी मंजिल पर एक बड़ा स्थानक व लेक्चर-हॉल बनवाया है। अलवर में डॉ० मथुराप्रसाद के हाथो से आपने ४५० लोगो की नेत्र चिकित्सा कराई। आप ही के प्रयत्नो से हैदराबाद में जैन बोर्डिंग खोला गया है। श्री वर्धमान स्था जैन श्रावक संघ, हैदराबाद के आप अध्यक्ष है। श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर के वार्षिक महोत्सव के आप सभापति बने थे। इस प्रकार अपनी दानवीरता से समाज, धर्म एव राष्ट्र की दिल खोलकर आपने धन से सेवा की है। आप सच्चे लक्ष्मीपति है जो लक्ष्मी को बढ़ाना तथा उसे काम में लगाना जानते हैं। समाज के श्रीमन्त आपके आदर्श का अनुकरण कर अपने धन से अपना गौरव बढ़ावें-इसी में धन की और मानव-जीवन की सार्थकता है।

श्री हस्तीमलजी देवड़ा, औरंगाबाद

श्री देवड़ाजी की जन्मभूमि तो मारवाड है परन्तु उनके पूर्वज २-३ पूर्वज पहले व्यापारार्थ हैदराबाद रियासत में आये और औरंगाबाद में बस गये। औरंगाबाद में देवडा परिवार के १०-१५ घर है। श्री हस्तीमलजी का जीवन सीधा-सादा और वर्तमान तड़क-भडक से बिलकुल परे है। वे सामान्य स्थिति के व्यक्ति हैं। श्रीमानो की श्रेणी में उन की गिनती नही की जा सकती है, फिर भी उनकी उदारता प्रशंसनीय है। धार्मिक पाठ्यपुस्तको के प्रकाशन के लिये उन्होने ५ हजार रुपये कॉन्फरन्स को प्रदान किये। अपनी पुत्री के लग्न-प्रसंग पर विविध सस्थाओं को ३ हजार रुपया दान दिया। 'जैनप्रकाश' के महावीर जयंती विशेषाक के लिये ५०१) रु० प्रदान किये। आप विशेष पढे-लिखे भी नहीं है। परन्तु आपके हृदय में समाजोत्थान के विचार पैदा होते रहते है और समय-समय पर आप उन्हे अपनी भाषा में लिखते भी रहते हैं। साहित्य की दृष्टि से वे शून्य है, पर भावना की दृष्टि से वे प्रगतिशील है। बीच में राजनीतिक वातावरण से वे जोधपुर आ गये थे, पर अब वापिस औरंगाबाद चले गये है। औरंगाबाद में आप कपडे का व्यापार करते है।

● ● ●

समाज के कार्यकर्ता

पं० रायावध त्रिपाठी गोरखपुर

श्री तिलोकचन्दजी बरडिया बोदवड़

कन्हैयालालजी कोटेचा बोदवड

समाज सेवा खांडे की धार है

मोरवी अधिवेशन के अध्यक्ष राय सेठ श्री चाँदमल जी के साथ प्रमुख कार्यकर्त्ता

अजमेर ओफिस समय के कार्यकर्त्ता

मंत्री स्वा० सभापती मंत्री उपमंत्री
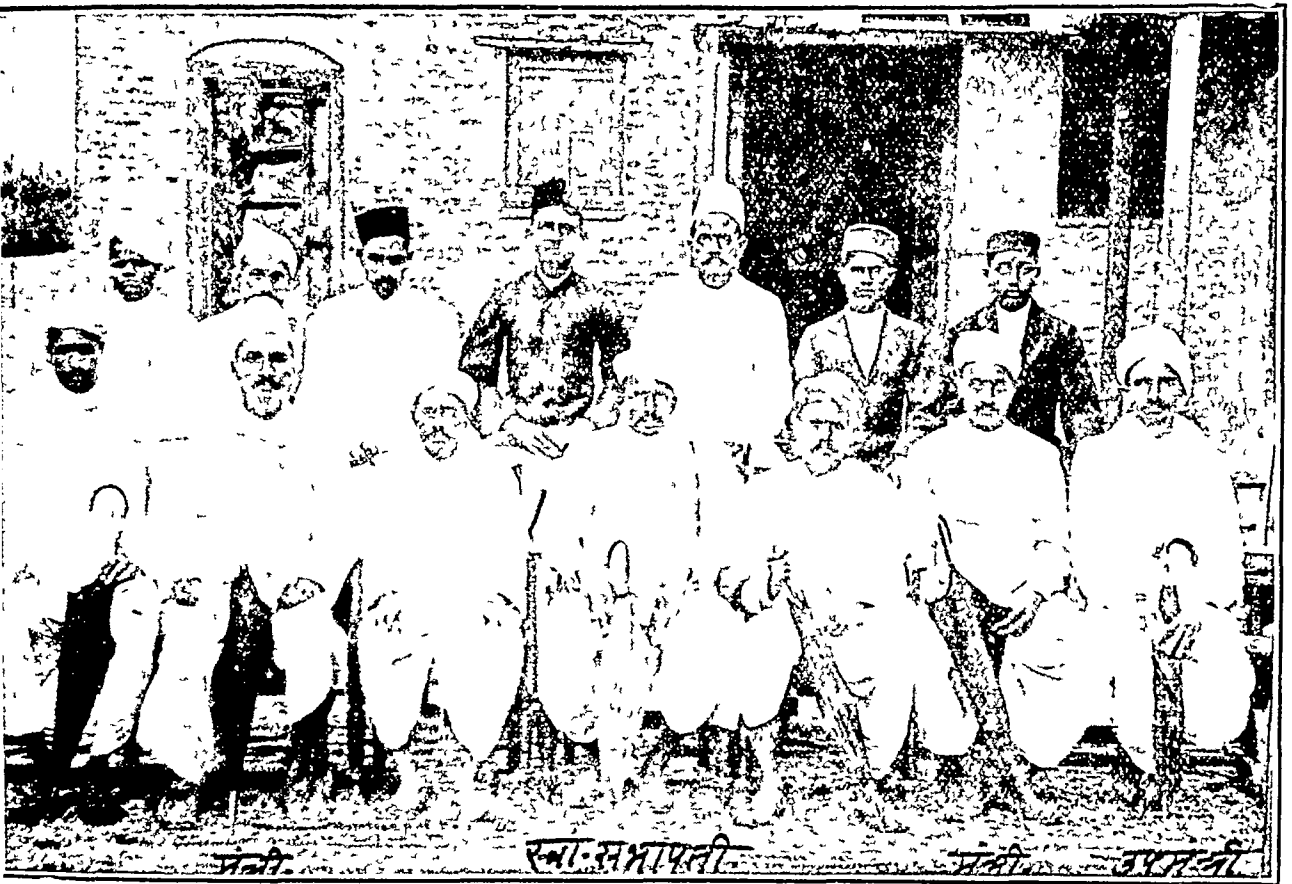
मलकापुर अधिवेशन की स्वागत समिति

अजमेर अधिवेशन के समय अध्यक्ष श्री० हेमचद भाई महेता का पंडाल-प्रवेश का एक दृश्य
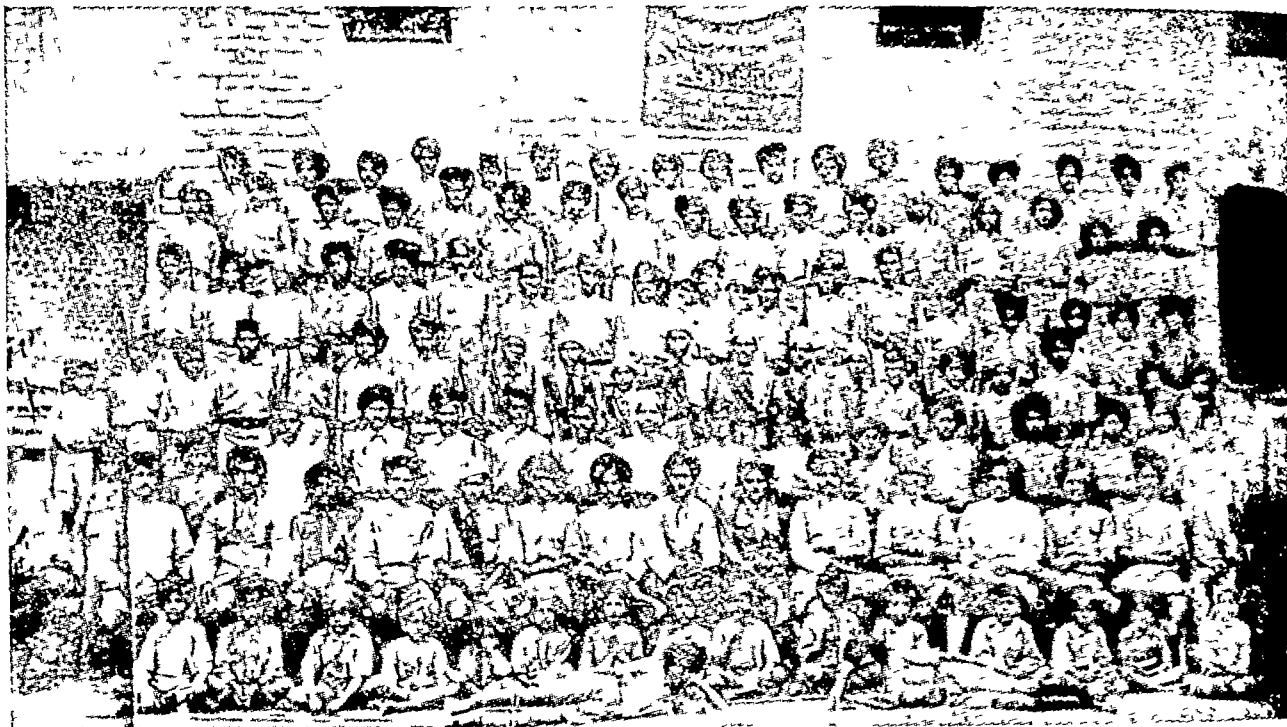
श्री साधु सम्मेलन समिति तथा स्वयंसेवक दल, अजमेर

घाटकोपर अधिवेशन के सभापति सेठ वीरचंद भाई का स्वागत

श्री अ. भा. श्वे. स्था. जैन कॉन्फरन्स
दशम अधिवेशन घाटकोपर

घाटकोपर अधिवेशन के अध्यक्ष सेठ वीरचद भाई के पडाल-प्रवेश का एक दृश्य

घाटकोपर अधिवेशन के मंच का एक दृश्य
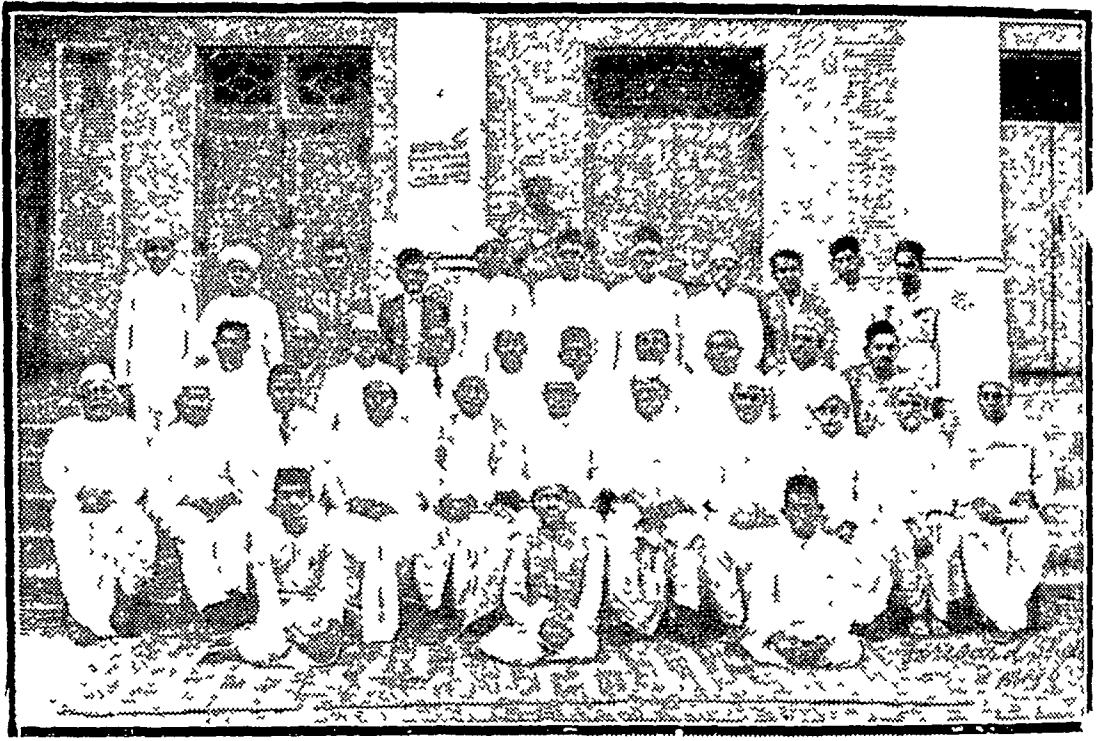
घाटकोपर अधिवेशन की स्वागत-समिति

मद्रास अधिवेशन के प्रमुख फिरोदियाजी तथा युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री खेताणी जी को बोरी-बन्दर से दी जाने वाली विदाई का एक दृश्य

मद्रास अधिवेशन की स्वागत-समिति के प्रमुख कार्यक

❀ ✻ सादड़ी अधिवेशन के भव्य दो दृश्य ✻ ❀
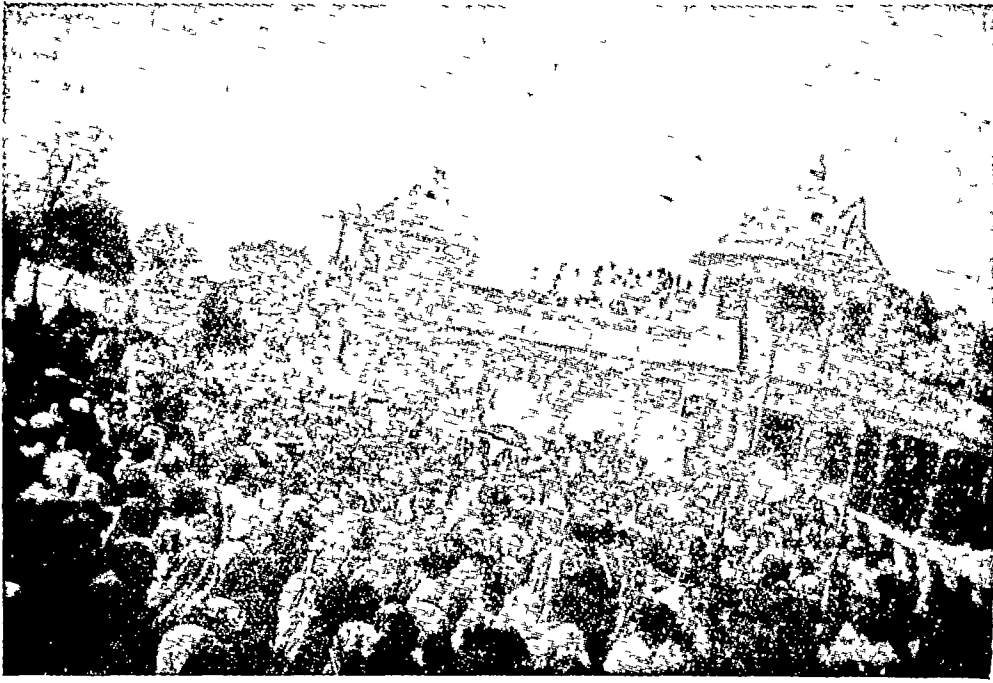
सादड़ी अधिवेशन के जुलूस का एक दृश्य

सादडी अधिवेशन के प्रमुख सेठ चंपालालजी बांठिया के जुलूस का एक दृश्य
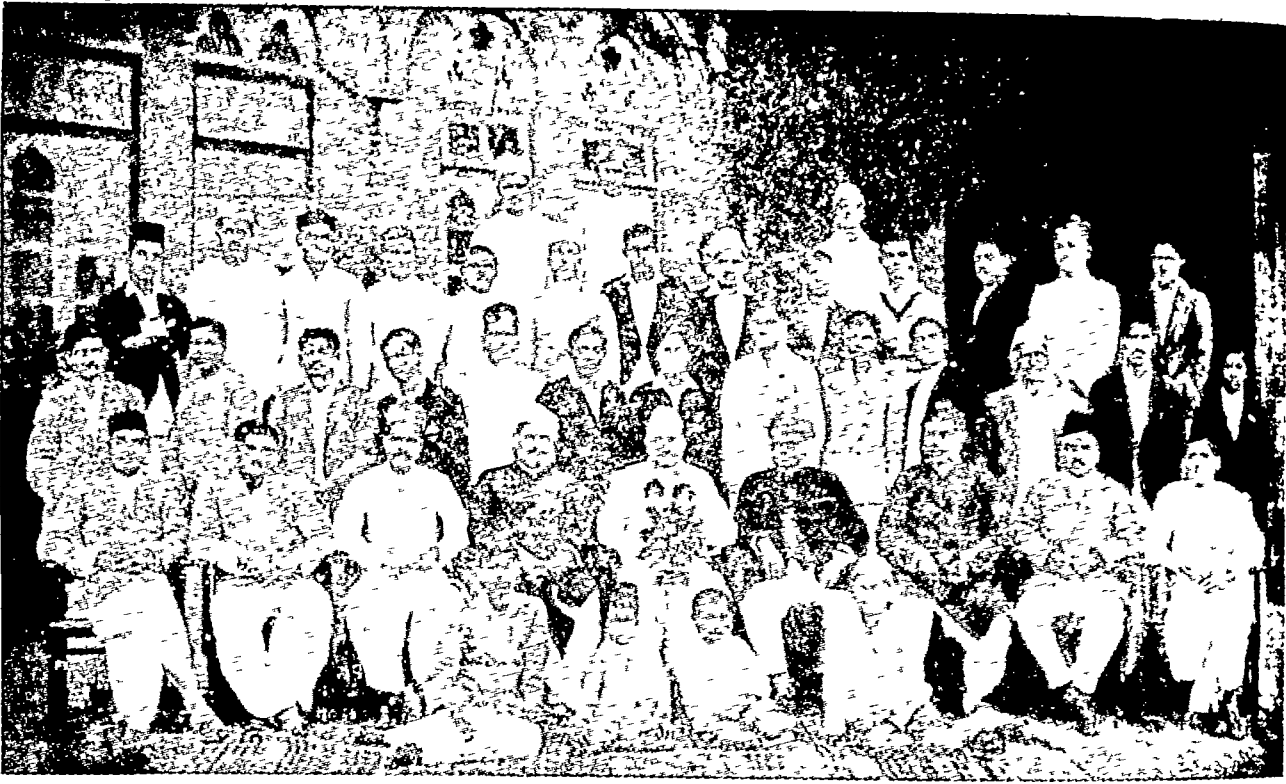
श्री श्वे० स्था० जैन कॉन्फ्रन्स द्वारा स्थापित तथा श्री एज्युकेशन सोसायटी द्वारा संचालित
श्री स्था० जैन बोर्डिङ्ग पूना, (दक्षिण)
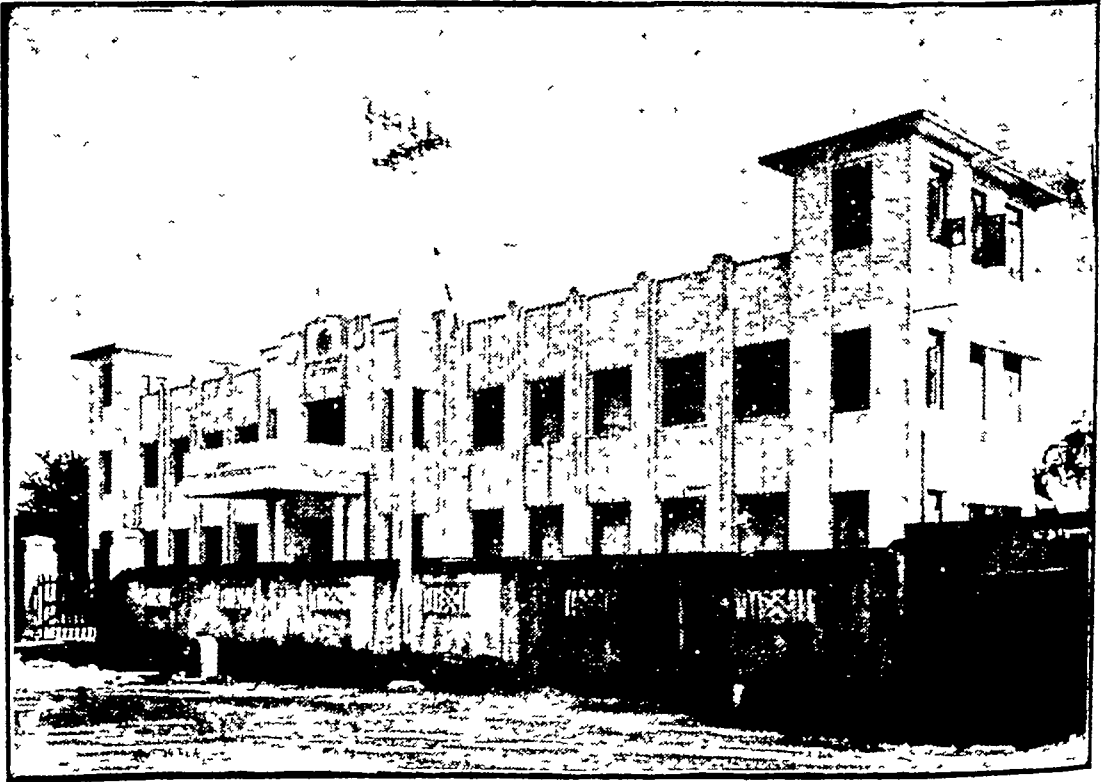
श्री श्वे० स्था० जैन बोर्डिङ्ग हाऊस मद्रास जिसके प्रांगण मे अधिवेशन हुआ था।

लाला रतनलालजी पारख, देहली

आपका जन्म स० १९४८ मे जोधपुर मे हुआ था। स० १९५६ में आप लाला पूरनचन्दजी जौहरी बी० ए० के यहाँ दत्तक लाये गए। आपने भी योग्य उम्र होनेपर जौहरी का व्यवसाय प्रारम्भ किया। आप स्वभाव के बडे नम्र और मिलनसार प्रकृति के हैं। धर्म ध्यान, धर्मक्रिया और तपस्या की बडी रुचि रखते हैं। हर-एक धार्मिक अवसर का आप लाभ लेते हैं। असाम्प्रदायिक मानस के और श्रद्धालु मुनिभक्त श्रावक है। व्यवसाय और व्यवहार मे भी बडे प्रामाणिक हैं। दिल के भी बडे उदार हैं। स्था० जैन समाज की कई सस्थाओ में आपके दान का प्रवाह पहुँचा होगा। गरीवो के प्रति और जीवदया मे आपका हृदय सदा द्रवित रहता है और यथाशक्ति सहायता करते रहते हैं। आपके ४ पुत्र और बहुत बडा परिवार है। सबमे आपके ही धार्मिक सुसस्कार और धर्मप्रेम ओत-प्रोत हैं।

डॉ० श्री ताराचन्दजी पारख, देहली

आप श्री रतनलालजी जौहरी के सुपुत्र हैं। आपका जन्म स० १९८० में हुआ। तीव्र बुद्धि और गरीवो के प्रति प्रेम बचपन से ही हैं। पढाई के लिए आपको घर से जो खर्च मिलता था, उसमें बचत करके आप गरीबो की दवाई आदि से सेवा करते थे। आप एक सेवाभावी एम० बी० बी० एस० (डॉक्टर) हैं। आपने अपना घर का ही अस्पताल शुरू किया। गरीवो को आप मुफ्त दवा देते हैं और उपचार भी करने हैं। साधु-साध्वियो की सेवाभक्ति और उपचार हार्दिक भाव से करते हैं। छोटी अवस्था मे भी आपने जीवन की सौरभ फैलाई है।

◇ ◇

श्री गुलाबचन्दजी जैन, दिल्ली

आप दिल्ली के प्रसिद्ध पुराने कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। आप उग्र विचारो के समाज-सुधारक नेता हैं। अपने विचारो से आपने अपने साथियो और आसपास के लोगो को काफी प्रभावित किया है। आप ऑल इण्डिया महावीर जयन्ती कमेटी के मन्त्री हैं। यह कमेटी भगवान् महावीर स्वामी के जन्म-दिन पर केन्द्र की तरफ से सार्वजनिक छुट्टी कराने की कोशिश कर रही है।

श्री गुलाबचन्दजी जैन स्थानकवासी जैन कान्फरेंस के भूतपूर्व मन्त्री भी रह चुके हैं।

◇ ◇

लाला फूलचन्दजी नौरतनचन्दजी चौरडिया, दिल्ली

श्री नौरतनचन्दजी सा० दिल्ली की ओसवाल समाज के एक रत्न है। आपके यहाँ परम्परा से पगडी का व्यापार चलता आया है। लाला नेमचन्द फूलचन्द के नाम से आपकी एक दुकान उज्जैन मे भी है। इस समय आप एस० एस० जैन महावीर भवन (वारहदरी) ट्रस्ट (रजि०) दिल्ली के खजाची है। जैन कन्या पाठशाला के उपप्रधान, श्री जैन तरुण समाज के प्रधान और श्री महावीर जैन औषधालय की कार्यकारिणी के सदस्य है। आपके नेतृत्व मे उपरोक्त सस्थाएँ उत्तरोत्तर प्रगति कर रही है। आप बडे ही मिलनसार एव गुणी व्यक्ति है।

श्री लाला कुंजलालजी ओसवाल, दिल्ली सदर

आपका जन्म सवत् १९०१ में अमृतसर के प्रतिष्ठित व्यापारी घराने में हुआ है। स्व० पूज्य श्री सोहनलाल जी महाराज तथा स्व० पूज्य श्री काशीरामजी म० सा० के आप अनन्य भक्त रहे है। आपका जीवन प्रारम्भ से ही क्रियाशील रहा है और यही कारण है कि अपनी वाल्यावस्था मे आपने जैन कुमार-सभा की स्थापना की। वर्षों तक अमृतसर की जैन कन्या शाला का आपने योग्यतापूर्वक सफल सचालन किया। व्यावसायिक जगत् मे भी आपने प्रसिद्धि प्राप्त की है। सूत के गोलों का बडे पैमाने पर आपका व्यापार है।
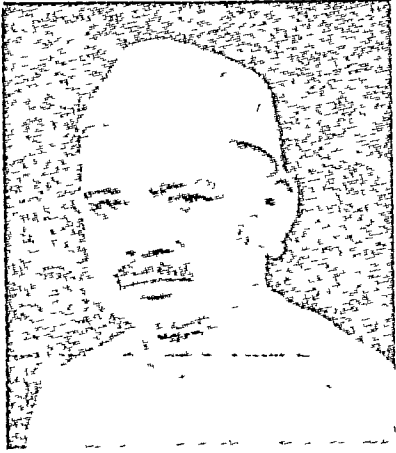
भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के आप कर्मठ कार्यकर्ता है। आपका सादा रहन-सहन, आपके सरल और सुधरे हुए विचारो का प्रतिनिधित्व करते है। सन्त-मुनिराजो की सेवा-भक्ति तथा ज्ञान-दर्शन-चारित्र का आराधन आपके जीवन के अभिन्न अग है। अपने सुयोग्य पुत्रो को पारिवारिक तथा व्यावसायिक कार्य-भार सौंपकर समाज सेवा मे अब आप लगे हुए है।

दिल्ली की प्राय सभी जैन सस्थाओ के माननीय सदस्य, अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष, सचालक अथवा सस्थापक कुछ-न-कुछ अवश्य रहे है। इस प्रकार अपनी सामाजिक गतिविधियो से तथा सेवा-भावना से अपने जीवन को सुवासित तथा मुखरित कर रहे है। इससे वढकर आप का और क्या गौरव हो सकता है कि आपके नाम से तथा आपके काम से दिल्ली का जैन समाज तथा स्थानीय जैन संस्थाएँ गौरवान्वित होकर समाज के लिए आशीर्वादरूप, सिद्ध हो रही है।

लाला रामनारायणजी जैन, दिल्ली B. A. (Hon.) Ll. B

आप सुप्रसिद्ध धर्मनिष्ठ जैन समाज के अग्रगण्य लाला स्नेहीरामजी के सुपुत्र है। आपके पिता श्री श्रीवर्द्धमान स्था० जैन सघ सदर वाजार के उपाध्यक्ष है और आप जनरल सेक्रेट्री है। आपने वी० ए०, एल-एल० वी० तक शिक्षा प्राप्त की है। छोटी उम्र में भी आप अनेक सस्थाओ से सम्वन्धित है और मन्त्री या कार्यकारिणी के सदस्य रूप में सेवा दे रहे है। अपनी कॉन्फरन्स की कार्यकारिणी के आप सदस्य रह चुके है। आपकी चावलो की वडी और प्रतिष्ठित दूकान नया वाजार, दिल्ली में 'सनेहिराम रामनारायण जैन' के नाम से चलती है।

आप उदारदिल से गरीवो की सहायता करते है। धर्मकार्यो में खर्च करते है। धर्म-स्थानको में सहायता

करते हैं। आप धर्मप्रेमी शिक्षित और सस्कारी जैन युवक हैं। जैन समाज को आपसे बहुत आशाएँ रखना चाहिए।

लाला विलायतीरामजी जैन, नई दिल्ली

लाला गेदामलजी जैन के यहाँ नालागढ (पजाब) मे आपका जन्म स० १९५० के चैत्र २३ को हुआ था। थोडा व्यावहारिक शिक्षण लेकर आप आपके दादा लाला हीरालालजीने प्रारम्भ की हुई जनरल मर्चन्ट की सीमला दूकान पर काम करने लगे।

आपकी प्राभाविकता और कर्त्तव्यपरायणता से आपकी दूकान खूब प्रतिष्ठित हुई और फलने लगी। आपने सन् १९३५ मे कॅनोट सर्कल, दिल्ली में भी जनरल मर्चन्ट का कारोबार शुरू कर दिया। आपके भाई की दूकाने 'गेदामल हेमराज' के नाम से सन् १९४७ से नई दिल्ली, शिमला, कालका और चण्डीगढ मे चल रही है—

आप बडे विनम्र और श्रद्धालु श्रावक है। सामयिक और व्याख्यान-श्रवण आप रोजाना करते है। तपस्याएँ भी करते रहते है। नई दिल्ली मे साधु-साध्वियो को ठहराने का विश्वास स्थान आपका मकान ही है।

आप धर्मप्रेमी है। इतना ही नही दानी भी है। नालागढ में सघ के रु० १० हजार में अपनी तरफ से शेप २२ हजार रु० लगाकर धर्मस्थानक बनवा दिया। चिराग दिल्ली मे धर्मस्थानक बनाने में २०००) देकर पूरा सहयोग दिया। कॉन्फरन्स की मैनेजिंग कमेटी के आप सदस्य है। भवन-निर्माण की योजना में आप ने रु० ५०००) दिये है। इस प्रकार प्रकट और अप्रकट दान करते ही रहते है।

श्री विलायतीरामजी जैन, नई दिल्ली B. A.

आप नई दिल्ली के उत्साही कार्यकर्ता है। गत पाँच साल से "कोपरेटिव स्टोर्स मिनस्ट्री ऑफ फायनेन्स, गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया" के मैनेजर और कोषाध्यक्ष है। नई दिल्ली की जैन सभा और उसके नवयुवक सघ के, भारत सेवक समाज, श्री जैन सघ, पजाब और सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली आदि अनेक सस्थाओ के आप सदस्य है। जैनेन्द्रगुरुकुल, पचकूला की कार्य-कारिणी समिति के आप पाँच साल तक सदस्य रह चुके है।

काम करने मे आपको आनन्द आता है और यही कारण है कि दिल्ली मे होने वाले सभी सामाजिक कार्यो में आपकी उप-स्थिति अनिवार्य-सी होती है। दिल्ली के जैन समाज को आपके होनहार जीवन से बडी-बडी आशाएँ है।

श्री उल्फतरायजी जैन, नई दिल्ली

आप जिन्द निवासी श्री अर्जुनलालजी के सुपुत्र है। आपकी नई दिल्ली में बेयर्ड रोड पर बाईस साल से कपडे की दुकान है। आपकी फर्म का नाम "अर्जुनलाल उल्फतराय जैन" है, जो दिल्ली की प्रसिद्ध फर्मो में से एक है।
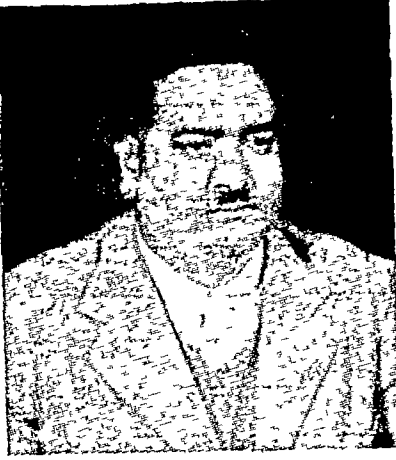
प्रारम्भ से ही आपका जीवन विभिन्न प्रवृत्तियो में लगा हुआ रहा है। सेवा करने में आपको आनन्द आता है। यही कारण है कि इस समय गोल मार्केट वेयर्ड रोड की पचायत के सरपच हैं। कई वर्ष तक नई दिल्ली की जैन सभा के आप कोषाध्यक्ष रहे हैं। पूज्य श्री काशीराम जी म० सा० की स्मृति-ग्रन्थ माला के आप उपाध्यक्ष रहे हैं। देहली क्लोथ रिटेलर एशोसिएशन के आप उपाध्यक्ष है।

आप सामाजिक कार्यकर्ता है। समाज सेवा का कुछ भी काम क्यो न हो—उसे अपने जिम्मे लेने और यथाशक्य पूरा करने में आप सदा तत्पर रहते है। मृदु-भाषण, मृदु-व्यवहार और सरलता आपके विशिष्ट गुण है। समाज-सेवा के क्षेत्र में हम आपको और अधिक आगे वढा हुआ देखना चाहते है।

लाला गुगनमलजी चौधरी, दिल्ली

आप लाला गगारामजी चौधरी के सुपुत्र हैं। आपका जन्म स० १९४५ भादवा वदी ५ को घसो (नरवाना-पेप्सु) में हुआ। आप अग्रवाल जैन हैं। स० १९५५ मे १० वर्ष की अवस्था मे आप दिल्ली पधारे और ननिहाल मे रहे। सन् १९६२ मे आपने कपडे का व्यवसाय प्रारम्भ किया जो आपके परिश्रम और प्रामाणिकता के कारण उत्तरोत्तर वढता गया। इस समय आप एसोसिएशन के मैनेजिंग सदस्य तथा प्रमुख व्यापारियो मे से है।

आप विद्याप्रेमी और सामाजिक कार्यकर्ता है। महावीर जैन हायस्कूल, स्थानीय श्रावक सघ और कॉन्फरन्स की मैनेजिंग कमेटी के सदस्य है। आप बडे उदार दिल के है। धर्म कार्यो मे तथा सामाजिक कार्यो मे हजारो रुपये खर्चते रहे हैं। हरेक चन्दे मे आप खुद देते है और साथ चलकर दूसरो से भी दिलाते है। धर्म क्रियाओ में अच्छी रुचि रखते हैं। आपने अपना जीवन श्रावक-मर्यादा के अनुसार वना रखा है। साधु-साध्वियो के प्रति आपकी श्रद्धा और भक्ति प्रशसनीय एव अनुकरणीय है।

डॉ० कैलाशचन्द्र जैन, M B B. S दिल्ली

आपका जन्म नवम्बर १९२३ मे हुआ था। सामाजिक, साहित्यिक और स्पॉर्टस् का आपको प्रारम्भ से ही प्रेम है। आपका शिक्षण लाहौर में हुआ। १९४२ की मुवमेन्ट में आप प्रमुख विद्यार्थी थे। मेमो हॉस्पीटल और इर्वीन हॉस्पीटल में आपने विशिष्ट सेवाएँ दी है। श्री रामकृष्ण मिशन फ्री टी० वी० क्लीनीक के अफसर और भाकरा डेम डिरेक्टरोरेट (नई दिल्ली) आप रह चुके है।

डॉक्टर साहब अच्छे सोशियल वर्कर है और प्रसिद्ध डॉक्टर है। आप श्री सनातन धर्म युवक मण्डल, धर्म मन्दिर, कला मन्दिर आदि सस्थाओ के कार्यकर्ता है। दिल्ली मेडिकल असोशिएसन की मैनेजिंग कमेटी में आप दो वार चुने गए है। आप दिल्ली म्युनिसिपल कमिश्नर काग्रेस टिकिट से चुने गए है और चाफ व्हीप है। आप कभी-कभी आल इण्डिया रेडियो से स्वास्थ्य विषय मे बोलते रहते हैं। कई सस्थाओ को आपकी सेवाएँ मिल रही है।

जम्मू, पंजाब तथा यू० पी० के प्रमुख कार्यकर्ता

मेजर जनरल रा० ब० दीवान बिशनदास जी C S I C.I E जम्मू (काश्मीर)

लाला बिशनदास जी का सन् १८६५ के जनवरी मास मे स्यालकोट में जन्म हुआ था। आप जाति से ओसलवाल दूगड थे। आप बचपन से ही बडी कुशाग्र बुद्धि वाले थे। प्रारम्भिक शिक्षा आपकी स्यालकोट के हाई स्कूल में ही हुई। आगे आपने लाहौर कालेज में प्रविष्ट हो शिक्षा प्राप्त की। पढने के साथ-साथ आपको घुडसवारी, और अन्य खेलो का भी बहुत शौक था।

सन् १८८६ मे जब आपने कालेज की डिग्री प्राप्त कर ली तब आपको जम्मू काश्मीर नरेश सर रामसिंह जी महाराज ने अपने यहाँ बुला लिया और राजकीय उच्च विभाग में स्थान दे दिया। आप वहाँ ६ वर्ष तक काम करते रहे। बाद में आपकी योग्यता से प्रसन्न हो महाराजा साहिब ने आपको 'चीफ एडवाइजर-मुख्य सलाहकार' के पद पर नियुक्त किया और दीवान का बहुमान सूचक पद प्रदान किया। तीन वर्ष बाद मेजर जनरल बना दिये गए और पैदल सेनापति की स्वर्ण-खचित तलवार आपको भेट की गई।

सन् १८९९ ई० मे महाराजा रामसिंह जी के स्वर्गवास हो जाने पर अमरसिंह जी राजगद्दी पर बैठे। आपने गद्दी पर आते ही दीवान बिशनदास जी को कमान्डर-इन-चीफ के नीचे सेक्रेटरी नियत कर दिए। बाद में आप इसी विभाग में लेफ्टिनेन्ट कर्नल बना दिए गये। सन् १९१४ में आप होम डिपार्टमेंट के प्रधानमन्त्री बनाए गये। १९१९ मे आप रेवेन्यू विभाग के प्रधान मन्त्री बनाए गये। इसके दो वर्ष बाद आप जम्मू और काश्मीर स्टेट के प्रधानमन्त्री बना दिए गये जिस पर आपने बडी योग्यता से पेंशन मिलने तक काम किया।

भारत सरकार द्वारा भी आपको राय बहादुर C I E और C.S I की पदवियाँ प्रदान की गई थी।

स्थानकवासी जैन समाज में ही नही, किन्तु समस्त जैन समाज में आपने जो सन्मान प्राप्त किया, वैसा सन्मान और किसी को नही मिला।

इतने विद्वान्, श्रीमान् और राज्य प्रतिष्ठित होने पर भी आपकी समाज सेवा व सरलता उल्लेखनीय थी। आप में अहभाव तो था ही नही। अजमेर साधु सम्मेलन के समय आपने बडी लगन से वहाँ कार्य किया था। समय-समय पर आप कोन्फरन्स के अधिवेशनो में उपस्थित होते थे और सक्रिय भाग लेते थे।

लाला रत्नचन्द्रजी जैन, अमृतसर

लाला रत्नचन्द्र जी का जन्म स. १९४५ में अमृतसर में हुआ था। आपके पिताजी का नाम जगन्नाथ जी और माता का नाम जीवन देवी था। आपकी शिक्षा साधारण ही हुई। आपके पिताजी असली मूंगे का व्यापार करते थे। आपका अनुभव विशाल था। सामाजिक सेवाओ का मौका अपने हाथ से जाने नही देते थे। रतलाम अधिवेशन के

वाद आप प्रत्येक अधिवेशन मे भाग लेते रहे। साधु सम्मेलन की आयोजना के लिए जो डेपुटेशन सब स्थानो पर घूमा था, उसके आप भी एक सदस्य थे। श्वे० स्था० जैन सभा पजाव के आप अन्त तक प्रधान रहे। एकता और सगठन में आपका दृढ विश्वास था। स्व० आचार्य श्री सोहनलाल जी की आप पर पूर्ण कृपा थी। सं० १९९५ में शतावधानी प० मुनि रत्नचन्द्र जी का अमृतसर में चातुर्मास हुआ था जिसका मुख्य श्रेय आपको ही था। उसी चातुर्मास में स्व० पूज्य श्री सोहनलाल जी के स्मारक रूप में श्री सोहनलाल जैन धर्म प्रचारक समिति का जन्म हुआ जिसकी ओर से वनारस मे श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम का प्रादुर्भाव हुआ, जहाँ जैन दर्शन, आगम और इतिहास का उच्चाध्ययन किया जाता है। पार्श्वनाथ विद्याश्रम के मकान के लिए आपने ९२०० रु० का दान दिया था। श्री शतावधानी रत्नचन्द्र पुस्तकालय के लिए आपने १५०० रु० प्रदान किए। समिति के आरम्भ मे आपके परिवार ने ५४०० रु० का दान दिया था इससे पूर्व अनाथालय के लिए आपने २५०० रु० प्रदान किए थे। जैने गुरुकुल पचकूला आदि आपकी सहायता के पात्र रहे हैं।

जैन दर्शन के प्रसार की आपकी हार्दिक इच्छा थी। आप इसका फैलाव सारे विश्व मे देखना चाहते थे। आपको हृदय रोग की बीमारी हो गई थी। अचानक आपको इस रोग का दौरा हुआ और १६ फरवरी १९४२ को प्रात आठ बजे आप इस असार ससार से विदा हो गए।

श्री हरजसराय जैन बी० ए० अमृतसर

आप अमृतसर निवासी श्री लाला जगन्नाथ जी के सुपुत्र हैं। आप पजाव जैन समाज की प्रवृत्तियो के केन्द्र और वहाँ के प्रमुखतम प्रतिष्ठित कार्यकर्ता हैं। अमृतसर की श्री रामाश्रम हाई स्कूल के आप सस्थापक और लगातार ३३ वर्ष से मन्त्री हैं। इस विद्यालय मे सह-शिक्षा-पद्धति से शिक्षा दी जाती है। इस महाविद्यालय का वार्षिक खर्च ६२,४००) का है। सन् १९३५ में सस्थापित "श्री सोहनलाल जैन धर्म प्रचारक समिति" के आप प्रारम्भ से ही मन्त्री हैं। आप अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स की व्यवस्थापिका समिति के सदस्य और श्वे० स्था० जैन सभा पजाव के प्रधान हैं। आपकी फर्मो के नाम उत्तमचन्द जगन्नाथ लाला और रतनचन्द हरजसराय है। दिल्ली, कलकत्ता और वम्वई आपके व्यवसाय के केन्द्र हैं।

श्री हरजसराय जी एस० एस० जैन सभा, पजाव के वर्षो से प्रमुख हैं। पनी कॉन्फरन्स के दिल्ली ऑफिस के मानद मन्त्री रह चुके हैं। घाटकोपर अधिवेशन के समय जैन युवक परिषद् के मनोनीत सभापति थे। वड़े सुधारक और अग्रगामी विचारो के होने पर भी शिस्त पालन में चुस्त धर्म श्रद्धालु है। वडे उदारदिल के हैं। सक्षिप्तमें आप पंजाव के गौरव हैं।

वावू परमानन्दजी जैन, कसूर (पजाव)

आपका जन्म चैत सुदी १ सं० १८३० को कसूर नगर में हुआ। कसूर एक ऐतिहासिक स्थान है। लोग कहते

है कि यह नगर रामचन्द्र जी के लघु पुत्र कुश द्वारा वसाया गया था। आप के दो भाई और थे। बडे का नाम गौरी-शंकर जी और छोटे का नाम चुन्नीलाल जी था। दोनो ही आपस मे चल वसे थे। आप वचपन से ही कुशाग्र बुद्धि वाले थे। सन् १८९७ मे आपने बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। सन् १९०२ मे आपने वकालत की परीक्षा पास की और सन् १९०८ मे आप लाहौर के चीफ कोर्ट के प्लीडर नियुक्त किये गए। लाहौर चीफ कोर्ट के सन् १९१९ में हाईकोर्ट वन जाने पर आप भी हाईकोर्ट के वकील बन गये।

आपकी धार्मिक और सामाजिक सेवा भी उल्लेखनीय है। लाहौर मे आपने वेजीटेरियन सोसाइटी की स्थापना कराई थी। सन् १९०६ मे पजाब प्रान्तीय स्था० जैन कोन्फरन्स की स्थापना हुई। सभा की स्थापना और प्रगति मे आपका वहुत वडा हाथ रहा था।

सन् १९१४ में जव जर्मन प्रोफेसर हर्मन जैकोबी बम्बई आये थे, तब आचारांग सूत्र के अनुवाद मे उन्होने जो भूले की थी उन पर विचार करने के लिए पजाब प्रान्तीय सभा की तरफ से ७ विद्वानो का एक डेपुटेशन भेजा गया था। उस डेपुटेशन के सभापति श्री परमानन्द जी ही थे। आपने अपनी विद्वतापूर्ण दलीलो से प्रो० हर्मन जैकोबी को सन्तुष्ट कर उन्हे अपनी भूल सुधारने के लिए वाध्य किया था।

पजाव प्रान्तीय सभा ने लाहौर में 'अमर जैन होस्टल' की स्थापना की थी। आपने इस छात्रालय को हजारो रुपयो की सहायता दी और अच्छा-सा फण्ड भी एकत्रित कराया। लाहौर में इस छात्रालय की अपनी भव्य इमारत भी थी।

आप विद्यार्थियो को जैन साहित्य के अध्ययनार्थ छात्रवृत्तियाँ भी दिया करते थे। आप स्था० जैन समाज की तरफ से वनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के फैलो भी (Fellow) रहे है।

आप बिलकुल सरल स्वभाव के सादा जीवन व्यतीत करने वालो मे से थे। बनावटी दिखावे से आपको घृणा सी थी। जातीय भेदभावो को भी आप मानने वाले नही थे।

श्रीमान् लाला गूजरमलजी का संक्षिप्त परिचय

स्वर्गीय ला० गूजरमल जी, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ लुधियाना के एक प्रतिष्ठित एव सम्माननीय श्रावक थे। आप स्वभाव से मृदु, शान्त और गम्भीर थे। आपमें स्पष्टवादिता का विशेष गुण था। सघ-सेवा के कार्यों में आप असाधारण अभिरुचि रखते थे। आजीवन आप समाज-सेवा के कामो में सलग्न रहे। कई बार आप स्थानीय श्रावक-सघ के प्रधान भी बने, परन्तु अधिकतर और अधिक समय तक आप मन्त्री-पद पर ही नियुक्त रहे, इसीलिये यहाँ और वाहिर के दूर-दूर के नगरो मे मन्त्री गूजरमल के नाम से आप विशेष रूप से प्रसिद्ध है। दूर-दूर तक आपकी प्रख्याति का एक कारण यह भी है कि स्थानीय श्रावक-सघ की ओर से डाक सम्वन्धी पत्र-व्यवहारादि सभी कार्य प्राय आपके द्वारा ही होते रहे है, और आजकल भी गूजरमल प्यारेलाल अथवा गूजरमल वलवन्तराय के नाम से ही हो रहे है। लाला प्यारेलाल जी ला० वलवन्तराय जी, ला० पन्नालाल जी और ला० निक्काराम जी ये चारो आपके सुयोग्य पुत्र है, जो यथाशक्ति आपके ही पदचिह्नो पर चल रहे है।

अव आगे कुछ अन्य स्थानीय कार्यकर्ताओ और पदाधिकारियो का सक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है—

श्री पन्नालाल जी मालिक फर्म (जिनेन्द्रा होज़यरी मिल्स)

आप एस० एस० जैन विरादरी (रजिस्टर्ड) लुधियाना के प्रधान है। आप जैन समाज के सब कार्यों में वड़े प्रेम और उत्साह से भाग लेते है। जैन समाज की उन्नति के लिये आपके हृदय में सच्ची तड़प है।

श्री प्यारेलाल जी जैन (मन्त्री) मालिक फर्म (श्री गूजरमल प्यारेलाल जैन लुधियाना)

आप एस० एस० जैन बिरादरी के मन्त्री है। अपने पूज्य पिता ला० गूजरमल जी की तरह समाज सेवा के कामो में खास दिलचस्पी रखते है। स्थानीय ऐस० ऐस० जैन बिरादरी (श्री वर्धमान स्थानक-वासी जैन श्रावक सघ) के डाक सम्बन्धी पत्र-व्यवहारादि कार्य प्राय आपके द्वारा ही सम्पन्न होते है।

श्री सोहनलाल जी जैन मालिक फर्म (श्री मिड्डीमल बाबूलाल जैन रईस लुधियाना)

आप बिरादरी मे प्रतिष्ठित-सम्मानित श्रावक हैं। समाज-सेवा के सब कार्यो में आप पूर्ण सहयोग देते हैं। आपका स्वभाव बहुत शान्त है। सहनशीलता, गम्भीरता और शिष्टता आपके विशेष गुण हैं। उलझी हुई समस्याओं को सुलझाने मे आपका विशेष रूप से परामर्श लिया जाता है।

श्री पन्नालाल जैन मालिक फर्म (जैन निटिंग वर्क्स)

आप जैन गर्ल्स हाई स्कूल लुधियाना के प्रधान हैं। स्कूल के सब प्रकार के कार्य आप बडे प्रेम और उत्साह से करते हैं तथा श्रावक-सघ के अन्य कार्यों मे भी आप यथाशक्ति सहयोग देते रहते हैं।

लाला प्यारेलाल जी सराफ

आप स्थानीय श्रावक-सघ के उप-प्रधान हैं। प्रत्येक धार्मिक कार्य में आप हर्ष और उत्साह से भाग लेते हैं। आप में पैतृक धर्म सस्कार है। जैन धर्म के आप महान् अनुरागी है।

लाला कस्तूरीलाल जी जैन

आप स्थानीय श्रावक-सघ के कोषाध्यक्ष हैं। धर्म में दृढ आस्था रखने वाले हैं और उदार-चेता भी हैं।

लाला रत्नचन्द्र जी जैन जोड़्याँ वाले

स्थानीय श्रावक-सघ के आप उपमन्त्री हैं। उत्साही नवयुवक हैं। इनमे समाज-सेवा की बहुत लग्न है।

लाला शम्भुनाथ जी जैन जोडयाँ वाले

आपकी प्रतिभा बहुत विलक्षण है। सघ के प्रत्येक कार्य में आपका परामर्श लिया जाता है।

श्री रामलालजी जैन

आप स्थानीय नगरपालिका (म्यूनिसिपैलिटी) के सदस्य हैं। उत्साही नवयुवक हैं। अपने कर्तव्य का सुचारु रूप से पालन करते हैं। इनका स्थानीय जैन धर्मशाला के प्रबन्ध में विशेष रूप से भाग है।

श्री कृष्णकान्त जी जैन वकील

बहुत वर्षो तक आप ऐस० ऐस० जैन सभा पजाब के मन्त्री-पद पर नियुक्त रहे। आजकल आप जैन गर्ल्स हाई स्कूल लुधियाना के मैनेजर हैं। आप प्रतिमा-सम्पन्न और स्वतन्त्र विचार रखने वाले हैं। अपने कर्तव्य-पालन का आप खूब ध्यान रखते हैं।

श्री मीठूमल जी जैन

आप नगर के प्रसिद्ध व्यक्ति है, दानवीर हैं। धार्मिक कार्यो के लिये यथासमय दान देते रहते हैं।

श्री चमनलाल जी जैन

धार्मिक कार्यो में उत्साह रखने वाले युवक हैं। आजकल आप जैन गर्ल्स हाई स्कूल कमेटी के कोषाध्यक्ष हैं।

श्री प्रेमचन्द जी जैन

आप लाला सलेखचन्द जी के सुपुत्र हैं। अपने पूज्य-पिता के समान ही धार्मिक कार्यों में यथाशक्ति भाग लेते रहते हैं।

श्री तेलूराम जी (टी० आर० जी) जैन

आप स्थानीय श्रावक-सघ के अत्यधिक उत्साही नवयुवक कार्यकर्ता हैं। समय-समय पर उदारता से दान भी करते रहते हैं। सगीत कला मे भी आप अच्छी कुशलता रखते हैं।

लाला हंसराजजी और लाला सोहनलालजी तथा ला० मुनिलालजी लोहिया

आप दोनो सगे भाई हैं। स्वर्गीय ला० नगीनचन्द जी के आप सुपुत्र हैं। ला० नगीनचन्द जी और आपके लघुभ्राता स्वर्गीय ला० कुन्दनलाल जी यहाँ के प्रसिद्ध दानवीर श्रावक थे। ला० मुनिलाल जी ला० कुन्दनलाल जी के सुपुत्र हैं। श्री हसराजजी, श्री सोहनलालजी और श्री मुनीलालजी भी अपने पूज्य पिताओ के पदचिन्हो पर चलते हुए दानादि धर्म-कार्यों में महत्त्वपूर्ण भाग लेते रहते हैं।

ला० अमरजीत जी जैन वकील

आप ला० हुक्मचन्द जी के सुपुत्र हैं, और स्थानीय श्रावक सघ की कार्यकारिणी-कमेटी के सम्मानित सदस्य हैं। सघीय कार्यो मे आप उत्साहपूर्वक भाग लेते रहते हैं।

ला० किशोरीलालजी जैन

आप अत्यधिक दृढधर्मी श्रावक हैं धार्मिक भवनो के निर्माण में विशेष रुचि रखते हैं। जैन धमशाला लुधियाना के निर्माण में आपने विशेष रूप से भाग लिया था।

लाला नौहरियामलजी जैन

ला० जी उदारमना दानवीर हैं। अभी-अभी आप ने जैन मॉडल हाईस्कूल की भावी बिल्डिग के लिए २७०० वर्ग गज भूमि का उल्लेखनीय दान दिया है। इस भूमि का वर्तमान मूल्य चालीस हजार रुपये के लगभग है। बहुत वर्ष पहले आपने एक विशाल बिल्डिग बनाई थी, जिस पर आपके लगभग पन्द्रह बीस हजार रुपये खर्च आए थे। इस का धार्मिक कार्यो मे ही सदुपयोग हो एतदर्थ आपने एक ट्रस्ट बनाया हुआ है। इस बिल्डिग का नाम जैनशाला है। प्राय: महासतियो—आर्यिकाओ के चातुर्मास इसी बिल्डिग मे होते हैं।

बाबू रामस्वरूपजी जैन

स्वर्गीय बाबू रामस्वरूप जी जैन यहाँ के प्रसिद्ध श्रावक थे। पुरानी कोतवाली नामक बहुत प्रसिद्ध और बहुत विशाल बिल्डिग के मालिक आप ही थे। पुरानी कोतवालीमे साठ सत्तर साल तक मुनि महाराजो और महासतियो के प्राय निरन्तर चातुर्मास होते रहे हैं। इस प्रकार आपके पूर्वजो और आपने अति दीर्घ-काल तक शय्या (बसति-मकान) का दान दिया था।

प्रोफेसर रत्नचन्द्रजी जैन

आप स्थानीय गवर्नमेंट कालेज में इक्नामिक्स के बहुत प्रसिद्ध प्रोफेसर हैं। जैन मॉडल हाई स्कूल के निर्माण में आप का बहुत बडा हाथ है। आप इसे समुन्नत बनाने के लिये भरसक प्रयत्न करते रहते हैं।

श्री रत्नचन्द्रजी जैन एम० ए०

आप शिक्षण-सस्थाओ के कार्यों मे विशेष अभिरुचि रखते है, और यथा-शक्ति समाज सेवा के कामो में भाग लेते रहते हैं।

ला० हरबंसलालजी सूतवाले

आप बहुत वर्षों तक स्थानीय श्रावक सघ के प्रधान पद पर नियुक्त रह चुके हैं। समाज-सेवा के कार्यों को पूरी दिलचस्पी से करने वाले प्रसिद्ध श्रावक हैं।

श्री वेदप्रकाशजी जैन

आप भूतपूर्व प्रधान ला० हरबसलालजी के लघुभ्राता है। आजकल आप जैन मॉडल हाई स्कूल के मैनेजर है। अपने कर्तव्य का अच्छी तरह से पालन कर रहे है। उत्साही नवयुवक है।

ला० मेलारामजी सूत वाले

आप बहुत वर्षो तक जैन गर्ल्स हाई स्कूल के मैनेजर रह चुके हैं। अपने कर्तव्य को बहुत अच्छी तरह से निभाते रहे हैं।

ला० बनारसीदासजी और ला० मेलारामजी

आप दोनो सगे भाई है। समाज-सेवा के प्राय सभी कार्यो मे उत्साहपूर्वक भाग लेते रहते हैं।

ला० सीतारामजी और ला० ओमप्रकाशजी

आप दोनो सगे भाई हैं। आपके पूज्य पिता स्वर्गीय ला० सन्तलाल जी और पितामह ला० मल्लीमल जी यहा के प्रमुख श्रावक थे। ला० सीताराम जी और ला० ओम्प्रकाश जी सघ के मुख्य कार्यो में यथाशक्य भाग लेते रहते है।

ला० ईश्वरदासजी

यहाँ के प्रसिद्ध स्वर्गीय श्रावक ला० फूलामल जी के आप सुपुत्र है। सघ-सेवा के कार्यो मे आप उत्साह के साथ भाग लेते रहते हैं।

वहिन देवकी देवी जी जैन (प्रिसिपल जैन गर्ल्स हाई स्कूल, लुधियाना) का संक्षिप्त परिचय

वहिन देवकी देवी जी लुधियाना के सुप्रसिद्ध भक्त प्रेमचन्द जी की सुपुत्री है। आप में भक्ति और सेवा के अद्भुत सस्कार है जोकि आपको अपने पूज्य पिता से प्राप्त हुए है। आपका चरित्र उच्च-कोटि का है। आपने लगभग अठारह वर्ष की आयु में स्वेच्छा से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत अङ्गीकार किया था। आप बाल-ब्रह्मचारिणी हैं। आपके मुखमण्डल पर ब्रह्मचर्य का महान् तेज है। ब्रह्मचर्य के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। आप केवल खादी के वस्त्र पहनती हैं। आप किसी प्रकार का कोई भी आभूषण नही पहनती। विद्या, नम्रता, शिष्टता' पवित्रता और सेवा आदि सद्गुण ही आप के आभूषण है।

सन् १९२३ में जैन गर्ल्स स्कूल के साथ एक अध्यापिका के रूप में आपका सम्पर्क स्थापित हुआ था सन् १९२९ में आप स्कूल की मुख्याध्यापिका बनाई गई। सन् १९४६ तक आप बहुत ही अच्छे ढग से अध्यापन कार्य करती रही। सन् १९४७ में आपकी जैन गर्ल्स हाईस्कूल लुधियाना की प्रिंसिपल के पद पर नियुक्ति हुई। तब से आज तक आप इस पद को बड़ी ही योग्यता और उत्तमता से निभा रही है। आप यथावकाश पौषध, व्रत, बेला, तेला आदि रूप तपस्या भी करती रहती है, और प्रतिदिन सामायिकादि का अनुष्ठान भी किया करती है। आपने आज, तक विद्या

क्षेत्र तथा अन्य धार्मिक क्षेत्रो मे हजारो रुपयो का दान दिया है और अपनी सारी अचल सम्पत्ति स्थानीय-स्थानकवासी जैन श्रावक-सघ को शिक्षार्थ दान कर दी है। सम्माननीय बहिनजी चिरजीवी हो यही हमारी हार्दिक कामना है।

निवेदक—मन्त्री जैन गर्ल्स हाई स्कूल कमेटी, लुधियाना।

जैन माडल (Model) हाई स्कूल लुधियाना का संक्षिप्त परिचय

इस स्कूल का प्राइमरी विभाग १५ वर्षो से चल रहा है, परन्तु हाई-विभाग इसी वर्ष चालू हुआ है। इस समय दोनो विभागो मे १५ अध्यापक और लगभग ५०० विद्यार्थी हे। ला० नौहरियामल जी जैन ने अपने बाग में २७०० गज भूमि इस स्कूल की बिल्डिग के लिये दान दी है। वहाँ बिल्डिग बनाने की योजना विचाराधीन है। आशा है कि जैन गर्ल्स हाई स्कूल की तरह जैन माडल हाई स्कूल (Jain Model High School) भी दिन-दिन उन्नति के पथ पर आगे ही आगे बढता रहेगा।

जैन गर्ल्स हाई स्कूल और जैन माडल हाई स्कूल ये दोनो शिक्षण-सस्थाएँ ऐस० ऐस० जैन बिरादरी रजिस्टर्ड (श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक-सघ) की ओर से सुचारु रूप से चलाई जा रही हे। इन दोनो शिक्षण सस्थाओ की बिल्डिगे, जैन-धर्मशाला और जैन स्थानक की बिल्डिगे तथा अन्य कई बिल्डिगे स्थानीय श्रावक-सघ के अधिकार मे हे, और इन सबका यथायोग्य प्रवन्ध भी स्थानीय श्रावक-सघ की ओर से ही किया जाता है।

श्री किशोरीलालजी जैन B. A. (Hon) LL. B. एडवोकेट, फरीदकोट

आपका जन्म सन् १६०३ में हुआ। बचपन में ही विद्योपार्जन के प्रति आपकी तीव्र रुचि थी। सन् १६२५ में अपने B A (Hons.) और १६२७ में LL B. की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपका विद्याध्ययनकाल बडा ही शानदार रहा। कक्षा के सुयोग्य एव होनहार छात्रो में आप सर्वप्रथम थे। धार्मिक तथा सामाजिक प्रेम बचपन से ही आपमें प्रतीत होने लगता था। तत्कालीन 'आफताव जैन" पत्र के आप वर्षों तक यशस्वी सम्पादक रह चुके हैं। सन् १६२६ से ३० तक रिसाला "जितेन्द्र" का प्रबन्ध करते रहे। जैनेन्द्र गुरुकुल, पचकूला के प्रिंसीपल तथा अधिष्ठाता पद पर आप वर्षों तक काम कर चुके हैं। साइमन कमीशन से मिलने वाले 'जैन डेप्युटेशन' के आप भी सदस्य थे। इस समय आप भटींडा जिले के सुयोग्य वकीलो में से हैं। स्थानीय वार एसोसिएशन के आप सभापति भी रह चुके है। स्थानीय नगरपालिका के सन् ४८ से सन् ५२ तक अध्यक्ष रह चुके हे। आप उर्दू के सुयोग्य कवि और लेखक हे। आपके विचार धार्मिक किन्तु प्रगतिशील हे। आप स्थानीय जैन सभा के प्रधान हे। आपके ही भगीरथ प्रयासो से जैन कन्या पाठशाला हाईस्कूल के रूप में परिणित हुई। आपके ही मार्गदर्शन एव नेतृत्व से जैन सभा हर प्रकार से प्रगति कर रही है।

स्व० बावू जयचन्द्रजी जैन, जालंधर (पंजाब)

आपका नाम पजाव जैन समाज के बच्चे-बच्चे की ज़बान पर है। आप जैन समाज के प्रमुख एवं प्रतिष्ठित सज्जन थे। आपकी इग्लिश बहुत ही ऊँची थी। आप दानवीर स्व० श्री कृपारामजी के सुपुत्र थे। आप जैन बिरादरी

गुजरावाला (पाकिस्तान) के गण्यमान व्यक्ति थे। आपकी स्वाभाविक सरलता तथा दयाशीलता उल्लेखनीय है। प्रत्येक समाज सेवा के कार्य मे आप सहयोग देते रहते थे। आपकी उदारता आपके उच्च गौरव का प्रथम स्तम्भ है। समाज की एकता और शान्ति का आपको हर समय ध्यान रहता था। आपकी उच्च कोटि की शिक्षा के कारण समाज को बडा लाभ हुआ। आप मत-मतान्तर के झगडो से सदैव दूर रहते थे। आप एक महान् व्यापारी भी थे। अमन पसन्द से आपका नाम पजाव की हरएक बिरादरी मे अमर हो गया है।

इसके अतिरिक्त आपकी अनन्य गुरुभक्ति भी अनन्य थी। इसीलिए प्रत्येक स्था० जैन साधु आपके नाम से भली भाँति परिचित है। वर्तमान आचार्य श्री आत्मारामजी म० के आप परम श्रद्धालुओ में से थे। प्रतिदिन सामायिक सवर स्वाध्याय एव धर्मध्यान आदि करना आपका नित्य कर्म था। सैद्धान्तिक बोलचाल तथा उत्तराध्ययन एव कल्प सूत्र आदि के भी आप भलीभाँति जानकार थे। इस प्रकार से आप एक कट्टर जैन सस्कारो वाले श्रावक थे। आज भी आपकी उच्चशिक्षा का प्रभाव आपके परिवार मे पाया जाता है। आप एक उच्च कोटि के हस्तलेखक भी थे। हस्तलिखित कुछ रचनाएँ आज भी प्राप्य हैं। आपने अपनी आयु के करीब २० वर्ष रावलपिण्डी में विताये थे। वहाँ भी समाज की काफी सेवा की। धर्म एव समाज सेवा करते हुए आपका ता० २२-११-१९४९ को ७४ वर्ष की उम्र में पडित मरण हुआ। मृत्यु के अन्तिम समय तक आपके मुँह पर नमस्कार मन्त्र का उच्चारण था। ऐसे महान् समाज सेवी की देवलोकयात्रा से समाज को भारी क्षति पहुँची है

लेफ्टिनेण्ट श्री अभयकुमारजी जैन, सिरसा

श्रीमान् अभयकुमार जी जैन का जन्म ३१ मई सन् १९३४ को आपका जन्म स्थान सिरसा (पजाव) है। आप के पूज्य पिताश्री का नाम श्री देशराम जी जैन है।

आपने नेशनल डिफेन्स एकाडमी मे ट्रेनिंग पाकर दिसम्बर सन् १९५४ में भारतीय सेना में परमानेण्ट रेग्यूलर कमीशन प्राप्त किया है। आप सुयोग्य एव उत्साही कार्यकर्ता हैं। आपका पूरा पता है—मारफत लाला गगाराम जी प्रभुदयाल जी, रोड़ी बाजार, सिरसा (पजाव)।

स्व० प्रोफेसर के० एम० लिग्गा बी० ए० एल-एल० बी० स्यालकोट

आप अत्यन्त उत्साही धर्मप्रिय सज्जन थे। उज्जैन मे आने के पश्चात् यहाँ के धार्मिक क्षेत्र मे काफी लगन के साथ कार्य किया। आपने जैन शान्ति सघ छात्रालय को अपनी अवैतनिक सेवाएँ प्रदान कर सुचारु रूप से चलाया तथा इस प्रकार अत्यन्त व्यस्त रहते हुए भी आपने धर्म के प्रति अपने प्रेम का पूर्ण परिचय दिया। कुछ समय के लिए इन्दौर चले जाने के कारण आपके समान सुयोग्य प्रधान कार्यकर्ता सुपरिन्टेन्डेन्ट सस्था को प्राप्त नही हो सका, अत तभी से छात्रालय वन्द रहा। आपका स्वर्गवास २० जून १९५३ में हुआ। आपके निधन से समाज ने अपना सेवाभावी कार्यकर्ता खो देने की क्षति उठाई है।

हकीम बेनोप्रसादजी जैन, रामामण्डो (पजाब)
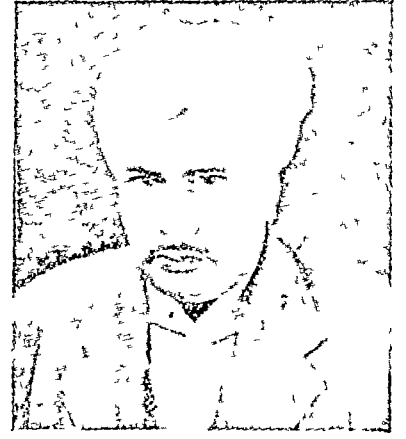
आप मुंशीराम कौक के पुत्र हैं। आपकी उम्र ५० वर्ष की है। पिछले ३० वर्षो से वैद्यक का काम कर रहे हैं। साधु-मुनिराज एव स्वधर्मी भाइयो का उपचार बडे तन-मन से करते हैं। आप बडे दानी सज्जन हैं। जो भी रोगी आप से औषधि लेने आता है उसमे शराब मास का त्याग कराते हैं।

स्व० मुनि श्री खजानचन्द्र जी महाराज के पाँव की पीडा की शल्य-चिकित्सा बडी भावशक्ति से की थी।

श्री नत्थूराम जी जैन कोचर, रामामंडी

आपका जन्म भाद्रव वदी अमावस सवत् १९८१ में रामामण्डी मे हुआ। आपके पिताजी का नाम श्री दौलतराम जी हैं। आपका व्यवसाय दलाली है। श्री नत्थूराम जी बडे ही समाजप्रेमी व्यक्ति है, धार्मिक कार्यों मे आप सदा अग्रसर रहते हैं। व्रत प्रत्याख्यान, सामायिक प्रतिक्रमण आदि धार्मिक क्रिया-कलाप मे आप बडे ही आस्थावान सुश्रावक हैं। भविष्य में आपके द्वारा समाज तथा धर्म की ओर भी अधिक सेवा होगी ऐसा हमे पूर्ण विश्वास है।

श्री बनारसदासजी तातेड, पक्काकलां

आपका पेप्सु राज्य के पक्काकला ग्राम मे जन्म हुआ। आपके पिताजी का नाम श्री खजानचन्द जी हैं, जो अपने समय के एक कुशल व्यापारी थे। श्री बनारसीदासजी ने अपने माध्यमिक शिक्षा के पश्चात् व्यावसायिक कार्यों मे भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। यद्यपि आपका शिक्षा अधिक नही हुई, किन्तु फिर भी आप सुलझे हुए विचारो के धर्मप्रेमी नवयुवक सज्जन हैं। सन्त-मुनिराजो के सान्निध्य मे धर्मकार्यो एव सामाजिक गतिविधियो में आपकी बडी दिलचस्पी रहती है। इस समय रामामडी मे बडी दक्षता के साथ अपनी फर्म का सचालन कर रहे हैं। समाज को आपसे बडी-बडी आशाएँ हैं।

श्री श्वे० स्थानकवासी जैन सभा, कलकत्ता

आज से लगभग २८ वर्ष पहले सन् १९२७ ई० मे स्व० श्रीमान् मगनलाल जी कोठारी के सभापतित्व में श्री फूसराज जी बच्छावत, स्व० श्री नथमल जी दस्साणी, स्व० श्री नेमीचन्द जी सा० बच्छावत आदि प्रमुख सज्जनो के सामूहिक प्रयास से पाचागली में स्थित मकान में इस सस्था की स्थापना हुई। तब से लेकर अब तक इस सस्था ने विभिन्न प्रकार की प्रवृत्तियो मे भाग लिया और अच्छी उन्नति की।

इस सभा के सरक्षण में एक विद्यालय भी खोला गया। स्वर्गीय श्रीमान् किशनलाल जी काकरिया के सभापतित्व में इस सस्था को नवीन रूप दिया गया और सभा का वर्तमान भवन १८६, क्रास स्ट्रीट में ८५,०००) रु० में खरीदा गया और इसी मे उक्त विद्यालय चलाया गया। वर्तमान में श्री सोहनलाल जी सा० बाठिया इस सभा के सभापति हैं। आप ही की प्रेरणा से सभा-भवन के लिए नई जमीन लगभग १,५०,०००) रु० में खरीदने का निश्चय कर लिया है।

इस सस्था के भूतपूर्व मन्त्री श्री फूसराज जी बच्छावत लगभग २८ वर्ष से इस सस्था की सेवा कर रहे है। इस समय आपके सुपुत्र श्री सूरजमल जी बच्छावत सभा के मन्त्री हैं। आप भी अपने पिताश्री के समान सभा की

श्री सेठ फूसराजजी बच्छावत, कलकत्ता

सेवा मे पूर्ण प्रयत्नशील है ।

सभा द्वारा जो विद्यालय सचालित है उसमे विभिन्न प्रान्तो के १७५ छात्र विद्याभ्यास करते हैं । विद्यालय में आठ अध्यापक हैं । जैन धर्म की पढाई के लिए भी विशेष व्यवस्था है । शीघ्र ही विद्यालय हाइस्कूल बना दिया जायगा।

स्थानक-भवन

यहाँ के गुजराती स्थानकवासी बन्धुओ के विशेष प्रयास से स्थानक का भव्य भवन बनाया गया है । इसके निर्माण मे लगभग ४,००,०००) रु० खर्च हुए हैं । इस स्थानक के बन जाने से कलकत्ता मे पधारने वाले मुनिवरो के लिए विशेष सुविधा हो गई है । सवत् २००९ मे श्री जगजीवन जी महाराज व जयन्तिलाल जी महाराज का चातुर्मास हुआ । इस चातुर्मास में गुजराती, मारवाडी और पजाबी बन्धु आपस में एक-दूसरे से परिचित हुए । सवत् २००२ और २०१२ मे प० मुनि श्री प्रतापमल जी महाराज आदि सात सन्तो का चातुर्मास हुआ । इन महात्माओ के चातुर्मास में कलकत्ता-स्थित स्थानकवासी समाज में बहुत उन्नति हुई। मारवाडी, गुजराती व खासकर पजाबी भाइयो को सगठित करने का श्रेय इन्हीं मुनिवरो को है । अब इस समय इन तीनो समाजो मे पारस्परिक प्रेम-सम्पर्क स्थापित हो गया है । इन तीनो मे सम्मिलित रूप से प्रीति भोज भी हुआ, जिसका बहुत ही सुन्दर प्रबन्ध किया गया था । इस प्रकार कलकत्ता धार्मिक क्षेत्र में भी बहुत बढा-चढा है । गुजराती बन्धुओ का एक भोजनालय है जिसमें केवल १८) रु० मासिक में २०० व्यक्ति भोजन करते हैं ।

इसके अतिरिक्त पंजाबी बन्धुओ की भी एक सभा है जिसका नाम श्री महावीर जैन सभा है ।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, मद्रास

यहाँ का सघ बडा ही समृद्धशाली, व्यवस्थित और प्रत्येक दिशा मे प्रगतिशील है। श्री मोहनमल जी चौरडिया और श्री ताराचन्द जी सा० गैलडा के द्वारा दिये गये दानो से मद्रास का श्री सघ प्रगतिगामी बन गया है। मद्रास सघ द्वारा स्थापित 'जैन एज्युकेशन सोसायटी' के तत्त्वावधान मे निम्नलिखित विशाल पैमाने पर कार्य हो रहे हैं—

(१) स्थानकवासी जैन बोर्डिग।
(२) जैन हाईस्कूल।
(३) जैन कॉलेज।
(४) जैन मीडिल स्कूल।
(५) श्री ताराचन्द जैन विद्यालय।
(६) श्री जैन कन्या विद्यालय।

इनके अलावा धार्मिक क्रियाओ के लिये विशाल और सुविधाप्रद स्थानक है। साधु-साध्वियो का यहाँ तक पहुँचना कठिन होता है। महासतिजी श्री सायरकु वरजी द्वारा इस तरफ क्षेत्र में धर्मप्रचार तथा शिक्षा-प्रचार अच्छा हुआ और अभी भी हो रहा है।

यहाँ मारवाडी समाज की सख्या अधिक है। जो इस प्रान्त तथा नगर के प्रमुख व्यापारी हैं। गुजराती समाज कम होते हुए भी दोनो मे घनिष्ट प्रेम है। सभी सामाजिक और धार्मिक कार्य दोनो के सहयोग से होता है।

अपने व्यवसाय मे लगी रहने पर भी अपनी जाग्रत तथा समयानुकूल प्रवृत्तियो के कारण यहाँ का स्थानवासी जैन समाज वैभवसम्पन्न होने के साथ प्रतिष्ठा-सम्पन्न भी है।

श्री एस० एस० जैन सोसायटी कुनूर (मद्रास) का सक्षिप्त परिचय

कुनूर का स्थानीय स्था० समाज धर्मकार्य मे बहुत पीछे रहा है क्योकि यहाँ पर साधु-साध्वियो का आगमन नही हो सकता है। अत नवयुवको में धर्म के प्रति अरुचि के भाव दिन प्रतिदिन बढते जा रहे थे। किन्तु सन् १९५४ ई० से यहाँ एस० एस० जैन सोसायटी की स्थापना हो गई इससे प्रात काल स्थानक मे प्रार्थना और सामयिक होने लगी। इसी सोसायटी की सहायता से यहाँ एस० एस० जैन स्कूल और पुस्तकालय भी चलाता है। स्थानकवासियो के यहाँ केवल १५ घर हैं। अब समाज मे जागृति अच्छी है।

श्री स्थानकवासी जैन श्री सघ, अहमदनगर जिले का सक्षिप्त वर्णन

बम्बई राज्य के महाराष्ट्र विभाग का अहमदनगर एक जिला है। रेल के धौड मनमाड लाइन पर अहमदनगर स्टेशन है। आबहवा की दृष्टि से यह स्थान अनुकूल और प्रशस्त है।

मुनिराजो द्वारा पावन की हुई भूमि

स्थानकवासी साधु-साध्वियो का आवागमन इस तरफ ८० वर्ष पूर्व हुआ। अहमदनगर में प्रथम चातुर्मास भू० पू० कोटा सम्प्रदाय के श्री छगनमल जी म० सा० का हुआ। उसी समय ही ऋषि-सम्प्रदाय के पूज्य श्री तिलोक ऋषिजी म० सा० इधर पधारे थे और उनका प्रथम चातुर्मास अहमदनगर के समीप घोडनदी मे हुआ था। वहाँ का चातुर्मास पूर्ण कर श्री तिलोक ऋषिजी महाराज सा० ने दूसरा चातुर्मास अहमदनगर में किया और बहुत समय तक जिले के अलग-अलग भाग में घूमकर स्थानकवासी लोगो की श्रद्धा दृढ बनाने का बडा श्रेय प्राप्त किया। इनका परिणाम यह हुआ कि जिले भर में अनेक अनुकूल क्षेत्र निर्माण हो गये। इस समय तो अहमदनगर दक्षिण का बडा क्षेत्र माना

जाता है। बडे-बडे मुनिराज जो भी दक्षिण में पधारे उनके द्वारा अहमदनगर पावन हुआ है। स्व० पूज्य श्री जवाहरलाल जी म० सा० जैन दिवाकर चौथमल जी म० सा०, पूज्य श्री काशीराम जी म० सा०, पूज्य श्री अमोलख ऋपिजी म० सा०, पूज्य श्री प्रसन्नचन्द जी म० सा० तथा वर्तमान मे सहमन्त्री प० मुनि श्री हस्तीमल जी म० सा० और श्री परपोत्तम जी म० सा० आदि सन्तो ने यह भूमि पावन की है। प्रधान मन्त्री प० रत्न श्री आनन्द ऋपिजी म० सा०, प० मुनि श्री सिरेमल जी म० सा० इनका तो जन्म ही इस जिले का है। उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी म० सा० और प० मुनि श्री घासीलाल जी म० सा० का शिक्षा प्रवन्ध भी अहमदनगर में हुआ था। महासतियो मे श्री हीराजी, भूराजी, रामकुँवर जी, रभा कुँवर जी, नन्दकुँवर जी आदि अनेक महासतियो ने यहाँ चातुर्मास किये हे। वर्तमान में अस्वस्थता के कारण आत्मार्थी श्री मोहन ऋपिजी महाराज तथा विनयऋपि जी म० सा० यहाँ विराजमान हैं। विदुषी महासति जी श्री उज्ज्वलकुमारी जी म० सा० के भी यहाँ पर अनेक चातुर्मास हुए हैं और अभी आँखो की बीमारी के कारण यहाँ पर विराजमान हैं। जिले भर मे अनेक क्षेत्र साधु-साध्वियो के लिए अनुकूल है।

शास्त्रवेत्ता और कार्यकर्ता

अहमदनगर के श्रावकगण भी धर्मप्रेमी हैं। श्री किसनदास जी सा० मुथा तथा श्री हरगूमल जी सा० कोठारी वडे ही शास्त्रज्ञ श्रावक थे। अभी श्री धोडीराम जी मुथा शास्त्रवेत्ता हैं। श्री चन्दनमल जी पितलिया यहाँ के वडे सेवाभावी श्रावक थे। इनके अलावा श्री मगनमल जी गाधी, श्री पृथ्वीराज जी चौरडिया, श्री मन्नालाल जी डोसी, माणकचन्द जी मुथा वकील आदि अनेक श्रावक हो गये है जो धर्मप्रेमी और धर्मचुस्त थे।

वर्तमान मे श्री कुन्दनमल जी फिरोदिया वकील, श्री माणकचन्द जी मुथा, श्री किसनदास जी मुथा, श्री पूनमचन्द जी भण्डारी, सुखलाल जी लोढा, डाक्टर भीकमचन्द जी बोरा आदि अनेक श्रावक धर्म की सेवा करते हैं समाज के प्रमुख कार्यकर्ता हे।

धार्मिक परीक्षा-वोर्ड और संस्थाएँ

पूज्य मुनिवरो के उपदेश से जिले में कई स्कूले खुली। पाथर्डी मे श्री तिलोक जैन हायस्कूल नाम की सस्था अच्छा कार्य कर रही है। यहाँ पर श्री आनन्द ऋपिजी महाराज सा० के सदुपदेश से सस्थापित धार्मिक परीक्षा बोर्ड और जैन सिद्धान्तशाला-पुस्तक-प्रकाशन विभाग है तथा अहमदनगर घोड़नदी में भी श्री जैन सिद्धान्तशाला की व्यवस्था है। अहमदनगर शहर मे जैन वोर्डिंग लगभग ३२ वर्ष से चलता है—जिसमें माध्यमिक से कोलेज तक के विद्यार्थी लाभ लेते हे। इस वोर्डिङ्ग मे धार्मिक पढाई की भी व्यवस्था हे। अहमदनगर जिले मे पाथर्डी-कडा नाम का ग्राम है। वहाँ पर भी एक जैन स्कूल है, जिसमें गरीव विद्यार्थियो के शिक्षण की व्यवस्था है। शीघ्र ही इस स्कूल को हायस्कूल वना दिया जायगा।

वात्सल्य फण्ड

स्व० पूज्य श्री काशीराम जी म० सा० के सदुपदेश से यहाँ पर वात्सल्य फड नाम की सस्था स्थापित हुई। पिछले १५ साल से समाज के अपग, अनाथ और असहाय भाइयो की सहायता की जाती है। इस फण्ड में से अब तक लगभग ५०,००० इस कार्य में खर्च हुआ है।

मण्डल और धर्मशालाएँ

यहाँ महावीर मडल नाम की एक सस्था है, जो समस्त जैन समाज का सगठन करने और पारस्परिक भाई चारा वढाने का कार्य कर रही है। इस सस्था के स्वयसेवक मडल ने अजमेर के साधु-सम्मेलन के समय अच्छी सेवा की। इसके अतिरिक्त जीव दया मडल सस्था है जिसके द्वारा जीवो की रक्षा का कार्य होता है। यहाँ पर दो धर्म-

शालाएँ है जो श्री सतोकचन्द जी गुदेचा, सदावाई चगेडिया, श्री हेमराज जी फिरोदिया के परिवार के लोगो द्वारा निर्माण कराई गई। एक सेवा समिति है जिसके द्वारा गरीव और बीमारो की सेवा की जाती है।

स्थानक

यहाँ पर रम्भाबाई पितलिया के द्वारा प्रदत्त एक स्थानक है। इसी के निकटस्थ जमीन को श्री मोहनलालजी वेद की इस्टेट मे से उनके ट्रस्टियो ने ५०००) मे खरीदी जिसके कारण बडा भव्य स्थानक बना है। शास्त्रवेत्ता श्री किसनदास जी मुथा ने इस स्थानक की मरम्मत के लिए ३०००) प्रदान किये। इसके अलावा सीताबाई और श्री गेनजी द्वारा दिये गए दो स्थानक है। सघ के द्वारा विनिर्मित एक स्थानक घास गली मे है। श्री भीकूबाई कोठारी के द्वारा दिया गया स्थानक के लिए एक मकान है।

लगभग पन्द्रह वर्ष से पहले यहाँ जैन कान्फरस की जनरल कमेटी की बैठक हुई थी।

लगभग २० वर्ष तक यहाँ जैन स्कूल चला परन्तु अब वह बन्द हो गया है और उसके फण्ड में से धार्मिक शिक्षण की व्यवस्था होती है।

छात्रालय

श्री चन्दनमल जी पितलिया के सुपुत्र श्री मोतीलाल जी भुँवरलाल जी ने जैन छात्रालय के लिए दो एकड जमीन लगभग १५,०००) के लागत की दी है। छात्रालय के भवन निर्माण कार्य के लिये सघ के द्वारा ५०,०००) एकत्रित किया गया है। इस छात्रालय मे ५० छात्र रह सकेगे।

श्रावक-संघ

सादडी सम्मेलन के बाद यहाँ पर श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ की स्थापना हुई। श्री कुन्दनमल जी फिरोदिया उसके अध्यक्ष और श्री माणकचन्द जी मुथा व श्री सुखलाल जी लोढा मन्त्री हैं।

सहअस्तित्व और सहवास

अहमदनगर के स्थानकवासी, मदिरमार्गी और दिगम्बर समाज मे प्रेमपूर्वक सम्बन्ध है। श्री महावीर जयती के समान कार्यक्रम सभी के सहयोग से एकत्रित होकर मनाये जाते है।

यहा तेरापथी का घर नही है। मन्दिरमार्गी के लगभग १०६, दिगम्बर ५० तथा स्थानकवासी समाज के ५०० घर होगे जिसमे मारवाडी, गुजराती, कच्छी सभी शामिल है।

जैन धर्म की उन्नति के लिए जो-जो प्रयत्न किये जाते हैं उसमें स्थानीय सघ यथाशक्य सहयोग देता है। जैन सघ में १०-१२ वकील, डाक्टर है तथा अनेक ग्रेज्युएट है। यहाँ शिक्षा का प्रचार अच्छा है। यहाँ सुलझी हुई नवीन विचारधारा के लोग है। सम्प्रदायवाद यहाँ कभी भी नही था और अब भी नही है।

श्री वर्धमान श्रावक सघ घोडनदी का प्रगतिपत्र और सक्षिप्त इतिहास

पूना और अहमदनगर के बीच मे बसा हुआ घोडनदी ग्राम जैन संघ की दृष्टि से अपना विशेष महत्व रखता है। यहाँ जैन समाज के १००-१२५ घर हैं, जिनमे कुछ व्यापारी हैं, कुछ नौकरी करते हैं और कुछ साधारण व्यवसाय से अपना जीवन-निर्वाह करते हैं। साधारण परिस्थिति वालो की संख्या अधिक है।

धर्मस्थानकों की दृष्टि से घोडनदी का महाराष्ट्र में गौरवपूर्ण स्थान है। स्थानक से सम्बन्धित यहाँ छः मकान है। मुनिराजो के ठहरने-आत्मचिन्तन-आत्मसाधना करने की दृष्टि से घोडनदी के स्थानको की व्यवस्था सर्वांग-

पूर्ण है। इसके अलावा यहाँ मन्दिर-उपाश्रय आदि भी हैं। खर्च की दृष्टि से स्थानीय संघ के मकानात स्वावलंबी हैं। यहाँ एक गौशाला, जैन पाठशाला, जीवदयामण्डल, सार्वजनिक वाचनालय, हाईस्कूल, हैल्थयुनिट और औषधालय आदि सार्वजनिक तथा सरकारी सेवारत संस्थाये हैं जो अपने-अपने क्षेत्र में विशुद्ध रूप में सेवाकार्य करती हैं।

महाराष्ट्र प्रान्त में मुनिराजो का सर्वप्रथम चातुर्मास करने-कराने का गौरव भी घोडनदी को ही प्राप्त है। वि० संवत् १९३६ मे महाराष्ट्र में मुनिराजो का सर्वप्रथम चातुर्मास हुआ जो घोडनदी में ही हुआ। यह चातुर्मास महान् प्रतापी कविवर पूज्य श्री तिलोक ऋषिजी म० सा० ने किया था। इसके अलावा मुनिराजों मे संस्कृत शिक्षण की प्रणाली का बीजारोपण भी घोडनदी में ही हुआ। महान् प्रतापी पूज्य श्री जवाहरलाल जी म० सा० ने अपने शिष्य और वर्तमान उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी म० सा० और प० मुनि श्री घासीलाल जी म० सा० के संस्कृत शिक्षण लेने की यहीं से व्यवस्था करके मुनिराजों में संस्कृत-शिक्षण की प्रणाली का शुभारम्भ किया।

यहाँ मुनिराजों के अनेक चातुर्मास हुए हैं और होते रहते हैं। आजतक जो चातुर्मास हुए हैं उनमें निम्नोक्त चातुर्मास विशेष महत्त्वशाली हैं। पूज्य श्री तिलोक ऋषिजी म० सा० पूज्य श्री जवाहरलालजी म० सा० मुनि श्री प्रसन्नचन्द्रजी म० सा०, पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी म० सा०, मुनि श्री मोहन ऋषिजी म० सा०, पूज्य श्री आणद ऋषिजी म० सा०, मुनि श्री प्रेमराज जी, गणेशलाल जी म० सा०, और महासति जी श्री उज्ज्वलकंवर जी म० सा० आदि-आदि संतों-सतियों के चातुर्मास धर्म-प्रभावना की दृष्टि से खूब ही गौरवशाली रहे। धर्मभावना की वृद्धि के कारण आजतक यहाँ अनेक दीक्षाएँ भी हुई हैं। जिनमें प्रमुखत श्रीमान् विरदीचन्द जी दूगड के घराने से श्री विरदीचन्द जी की माताजी, उनकी बहन और दो कन्याये इस प्रकार चार दीक्षाएँ एक ही घर से हुई। वर्धमान श्रमणसंघ के वर्तमान प्रधान मंत्री श्री आणंद ऋषिजी म० सा० के गुरुदेव पूज्य श्री रत्न ऋषिजी म० सा० के दीक्षा महोत्सव का गौरव भी घोडनदी को ही प्राप्त है। पूज्य श्री के साथ ही श्री स्वरूपचन्द जी और महासति जी श्री चम्पाकंवर जी तथा महाभाग्यवान् महासति जी श्री रामकँवरजी म० सा० अर्थात् पिता-पुत्र, माता-पुत्री की एक ही साथ दीक्षायें हुई। ये दीक्षायें वि० सं० १९३६ के आषाढ शुक्ला ९ को हुई।

घोडनदी में श्री वर्धमान श्रमण संघीय श्रावकसंघ बना हुआ है, जिसके अध्यक्ष दानवीर श्रीमान् सेठ हस्तीमल जी दूगड है। आप महासति जी श्री सुमतिकँवरजी के संसारपक्षीय पिताजी हैं। श्रीमान् दूगड जी स्थानीय अनेक संस्थाओं के प्राण हैं। शरीर से दुर्बल, अशक्त और बुढापे से दबे होने पर भी स्थानीय संस्थाओं की सर्वांगीण प्रगति के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं।

श्रीमान् डाक्टर साहेब, श्री चुनिलाल जी नाहर शास्त्रों के सूक्ष्म रहस्यो के एक अच्छे ज्ञाता हैं।

घोडनदी श्री संघ की एकता-संगठन अपने एक विशेष आदर्श को रक्खे हुए हैं। क्या सामाजिक और क्या धार्मिक सभी कार्य बडे प्रेम से हिलमिलकर एकमत से होते हैं। आगत मुनिराजो के स्वागत-सत्कार करने की और धर्मलाभ प्राप्त करने की हमेशा भावना रहती है। यही स्थानीय श्री सघ की विशेषता है।

नासिक जिला जैन समाज का परिचय

नासिक ज़िला १२ तहसीलो में बँटा हुआ है। इस ज़िलों में स्था० जैनियों की संख्या लगभग छ: हजार हैं। हर तहसील में स्थानक हैं। और चातुर्मास भी हुआ करते हैं। निम्न-स्थानो पर मुख्यत: चातुर्मास होते रहते हैं :—

नासिक—यहाँ २०० घर स्थानकवासियों के हैं। समाज के मुख्य कार्यकर्ता हैं श्री चाँदमलजी वरमेचा, श्री हंसराज जी सेठिया, श्री भीकमचन्द जी पारख और घेवरचन्दजी पारख आदि हैं।

इगतपुरी—यहाँ समाज के ६० घर हैं। और अग्रणी श्री लादूराम जी बोथरा आदि हैं।

घोटी—यहाँ समाज के ८० घर हैं। और मुख्य कार्यकर्ता श्री कचरदास जी आदि हैं।

लासलगाँव—यहाँ स्था० के १०० घर हैं। जहाँ श्री खुशालचन्द जी वरमेचा आदि मुख्य कार्यकर्ता हैं।

पिपलागाँव—यहाँ समाज के ७६ घर हैं। और अग्रणी है श्री भीकमचन्द जी सेनी श्री भीकमचन्द जी लालचन्द जी आदि।

मनमाड—यहाँ समाज के १०० घर हैं। यहाँ की समाज का संचालन करते हैं श्री गुलाबचन्दजी भण्डारी व माणकलाल जी ललवानी आदि।

मालेगाँव—यहाँ स्था० समाज के १०० घर हैं और अग्रणी श्री किशनलाल जी फतहलाल जी मालू व मोतीलाल जी लोढ़ा आदि हैं।

येवला—यहाँ समाज के २५ घर हैं। मुख्य व्यक्ति श्री जुगराज जी श्रीश्रीमाल और हरकचन्द्र जी मण्डलेचा आदि हैं।

निफाड—यहाँ स्था० समाज के ३० घर है। और कार्यकर्ता है श्री सुखराज जी विनायकिया।

चालीस वर्ष पूर्व इस ज़िले में स्था० समाज के घर बहुत कम थे और धर्म स्थान भी नहीं था। उस समय श्री चाँदमल जी वरमेचा, श्री भीमचन्द जी पारख, श्री हीरालाल जी साखला आदि के अथक परिश्रम से श्री १००८ श्री प्रेमराज जी म० का चातुर्मास हुआ। धार्मिक कार्यों के मुहूर्तस्वरूप म० सा० के उपदेश से श्रीमती सुन्दराबाई ने अपना मकान दे दिया। स्थानक छोटा होने से श्रीमती तोलाबाई व अन्य धर्म बन्धुओं ने बाद मे विशाल स्थानक निर्मित कराया। धीरे-धीरे काफी तरक्की होती रही। सन् १६३३ मे रा० ब० स्व० श्री कन्हैयालाल जी भण्डारी इन्दौर निवासी की अध्यक्षता में श्री ओसवाल सम्मेलन हुआ। तब श्री ओसवाल जैन बोडिंग की स्थापना हुई। धर्मस्थान में स्थानीय संघ ने जैन पाठशाला स्थापित की। दोनों सस्थाएँ धार्मिक परीक्षा पाथर्डी बोर्ड की देती हैं। बाद में लासलगाँव में श्री महावीर जैन विद्यालय की स्थापना हुई। चाँदवड मे श्री नेमीनाथ जैन गुरुकुल की स्थापना हुई। नासिक शहर में श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ की स्थापना हुई जिसके पदाधिकारी श्री चांदमल जी वरमेचा, अध्यक्ष मोहनलाल जी चोपडा, उपाध्यक्ष, घेवरचन्द जी साखला सूरजमल जी वरमेचा मन्त्री हैं।

श्री महावीर जैन वाचनालय, नासिक

इस वाचनालय और पुस्तकालय के संस्थापक महाराष्ट्र मन्त्री पं० मुनि श्री किशनलाल जी म० सा० तथा प्र० वक्ता पं० मुनि श्री सौभाग्यमल जी म० सा० हैं। यह वाचनालय नासिक के रविवार पेठ में विशाल एवं दर्शनीय भवन में है। इस भवन में बडे-बडे चातुर्मास हो चुके हैं। यह स्थान मुनिराजों के ठहरने के लिए बहुत ही साताकारी है। इस वाचनालय के साथ संलग्न विशाल पुस्तकालय में धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, मराठी और गुजराती आदि भाषा और विषयों की हजारों पुस्तकें हैं। हजारों की सख्या में लोग वाचनालय और पुस्तकालय का लाभ लेते हैं। इस समय इसकी व्यवस्था श्री धनसुखलाल जी विनायकिया कर रहे हैं। श्री भँवरलाल जी सांखला तथा श्री देवीचन्द जी सुराना उत्साही युवक हैं जो उत्साहपूर्वक अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

इसके अतिरिक्त यहाँ एक जैन युवक-मण्डल है जिसके श्री दीपचन्द जी बेदमुथा वकील-अध्यक्ष और भँवरलाल जी सांखला सेक्रेटरी हैं। यहाँ एक जैन पाठशाला भी है जिसमें पाथर्डी के धार्मिक परीक्षा बोर्ड के पाठ्य-क्रमानुसार बालकों को धार्मिक शिक्षा दी जाती है।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, नागपुर का परिचय

कई वर्ष पूर्व किसी अज्ञात व्यक्ति ने एक छोटा-सा मकान स्थानक के लिए अर्पण किया था। किन्तु
मकान उस समय के समस्त श्वेताम्बर बन्धुओं के अन्तर्गत था। सन् १२२ मे श्री न्यायविजय जी महाराज की प्रेर
से स्थानकवासी बन्धुओं के संरक्षण मे आया।

धर्म ध्यान की बढती हुई प्रवृत्ति से पास का मकान खरीदा गया।

प्रथम के पुराने मकान का जीर्णोद्धार करने के हेतु सन् १९३६ में नया मकान बनाया गया।

वर्तमान समय में नागपुर श्रीसंघ की बढती हुई जनसंख्या फिलहाल १०० घर हैं। सदर में भी २०
हैं। जहाँ धर्म स्थानक भी बना हुआ है।

वर्तमान प्रवृत्तियाँ

श्रीसंघ की वर्तमान प्रवृत्तियो मे—

(१) श्री दानवीर सेठ सरदारमलजी पुगलियॉ श्वेताम्बर स्थानकवासी जैनशाला चलती है जिस
स्थापना सम्त् २००० मे नागपुर के अग्रसर श्री सरदारमलजी के स्मारकरूप स्थापन की गई है। जिसकी प्रेर
पं० रत्न श्री आनन्द ऋषिजी महाराज ने की थी। वर्तमान समय १०० विद्यार्थी धार्मिक शिक्षा ग्रहण करते हैं।

(२) शाह मुलजी देवजी वाचनालय—

जिसकी स्थापना सन् १९५२ मे हुई। नागपुर श्रीसंघ के सेवाभावी मन्त्री श्री मुलजी भाई के स्मरण
उनकी ३० वर्षों की सेवा की स्मृति मे की गई है। यह वाचनालय आम जनसमुदाय के लिए खुला है।

(३) श्री स्थानकवासी शिष्यवृत्ति कोष—

स्थानकवासी विद्यार्थियों को शिक्षा की पुस्तके अथवा फीस के रूप मे सहायतार्थ यह कोष स्थापित कि
गया है। आज इस कोष में करीब ५०००) पांच हजार रुपये है।

(४) श्रीसंघ की बढ़ती हुई प्रवृत्तियों को देखकर विशाल व्याख्यान हॉल बनाने जे लिए अभी श्रीसंघ को
इम्प्रुवमेन्ट ट्रस्ट का एक प्लोट प्राप्त हुआ है। जिस पर विशाल भवन बनाने के लिए करीब रुपया पचास हजार प्राप्त
हो चुके हैं।

इस तरह नागपुर श्रीसंघ अपनी प्रवृत्तियों मे सुदृढ आगे कदम बढाता जा रहा है।

श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, रायपुर

यहाँ के श्रावक संघ की स्थापना १३ जुलाई सन् १९५२ मे हुई। संघ का कार्य सम्यक् प्रकार से होता
रहे, इसके लिए निम्नांकित कार्यकारिणी के पदाधिकारियों का निर्वाचन किया गया—

श्री लक्ष्मीचन्द जी सा. धाडीवाल—अध्यक्ष, श्री अगरचन्द जी सा० वेद—उपाध्यक्ष, टीकमचन्द जी सा०
डागा—उपाध्यक्ष, सम्पतराजजी सा० धाडीवाल—मन्त्री, भूरचन्द जी सा० देशलहरा और मोहनलाल जी सा०
टांटिया—सहमन्त्री, भीखमचन्द जी सा० वेद—कोषाध्यक्ष।

इनके अतिरिक्त अन्य आठ व्यक्ति कार्यकारिणी के सदस्य हैं। सघ की तरफ से चार गतिविधियाँ
गतिमान हैं—

(१) श्री श्वे० स्था० जैन पाठशाला (२) श्री जैन जवाहर ज्ञान प्रचारक मण्डल (३) जीवदया खाता
(४) ज्ञान खाता।

श्री श्वे० स्था० जैन पाठशाला

इस संस्था में धार्मिक शिक्षण दिया जाता है। इस वर्ष ४७ छात्र-छात्राएँ पाथर्डी बोर्ड की सिद्धान्त-विशारद तक की परीक्षाओं मे सम्मिलित हुए। स्कूल की प्रगति शानदार है। इस पाठशाला को निम्नांकित सज्जनो से इस प्रकार सहायता मिलती है :—

श्रीमान् अगरचन्दजी सा० वेद ६००) श्री उत्तमचन्दजी सा० धाडीवाल ३६०) श्री अगरचन्दजी चम्पालालजी सुराणा ३००) श्री अमोलकचन्दजी केवलचन्दजी वेद ३००) श्री अमरचन्दजी जेठमलजी वेद २००)।

इस स्कूल का संचालनकार्य श्री सम्पतराजजी धाडीवाल के अथक परिश्रम द्वारा होता है। श्री सुगनचन्द जी सा० धाडीवाल, श्री महावीरचन्द जैन और श्री जेठमलजी वेद पाठशाला के कार्यों में और शिक्षण मे विशेष दिलचस्पी लेते हैं।

श्री जैन जवाहर ज्ञान-प्रचारक मण्डल

स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी म० सा० का सत्साहित्य संग्रहीत है। इसके अतिरिक्त जैन सस्कृति को चिरस्थायी बनाने वाला अन्य साहित्य भी प्रचुर मात्रा में है। 'श्रमण-वाणी' जो अभी फिलहाल प्रकाशित हुई है मण्डल की तरफ से आधे मूल्य ॥|) मे वितरित की जा रही है। इस मण्डल के अध्यक्ष श्री सम्पतराजजी सा० धाडीवाल और मन्त्री श्री महावीरचन्द जी जैन है।

जीव दया खाते में प्रतिवर्ष ३००) ७००) की रकम इकट्ठी हो जाती है जो जीव दया के लिए बाहर भेजी जाती है।

ज्ञान खाते मे एकत्रित होने वाली रकम का पुस्तक-प्रकाशन और शास्त्रादि सुन्दरतम साहित्य मँगाने में उपयोग होता है।

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, रायचूर का परिचय

यहाँ सघ की दो इमारते हैं जिनमे से एक भवन का निर्माण स० १९७२-७३ मे श्री कल्याणमलजी सुथा की देखरेख मे हुआ। सवत् १९७८ मे स्व० पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी महाराज सा० का इधर पदार्पण हुआ और तब मे साधु-मुनिराजो का इधर पधारना प्रारम्भ हुआ। संवत् १९९८ मे पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज सा० के चातुर्मास में 'जैन रत्न पाठशाला' की स्थापना हुई। संवत् २००३ में कल्याणऋषिजी महाराज के चातुर्मास मे श्रीमती गोपीबाई ने अपना निजी मकान तथा दुकान स्थानक के काम में लाने के लिये सघ को अर्पण की। इन सबको मिलाकर संघ के द्वारा ४०,०००) के सग्रहीत धन से विशाल भवन बनाया गया जिसके ऊपर और नीचे एक-एक प्रागण हैं जिसमे दो हजार आदमी एक साथ व्याख्यान का लाभ ले सकते हैं।

इसके पास ही "श्री वर्द्धमान जैन हिन्दी पाठशाला" का भवन है। श्री बस्तीमलजी पारसमलजी सा० सुथा ने पाँच वर्ष तक इस संस्था का खर्च अपने पास से प्रदान कर विद्यादान का आदर्श परिचय दिया है। इस सस्था के स्थायी फण्ड के लिए संघ ने ३०,०००)रु० एकत्रित कर लिये है। इस फण्ड को और भी आगे बढाया जा रहा है।

इस समय स्थानकवासियों के यहाँ ८० घर हैं। धार्मिक प्रेम अच्छा है। नित्य प्रात.काल प्रार्थना होती है। लगभग प्रत्येक गृहस्थ सामयिक करने के लिए स्थानक में आता है।

इसके अतिरिक्त यहाँ "श्री वर्द्धमान पुस्तकालय" भी है, जिसमें काफी पुस्तकों का सग्रह है।
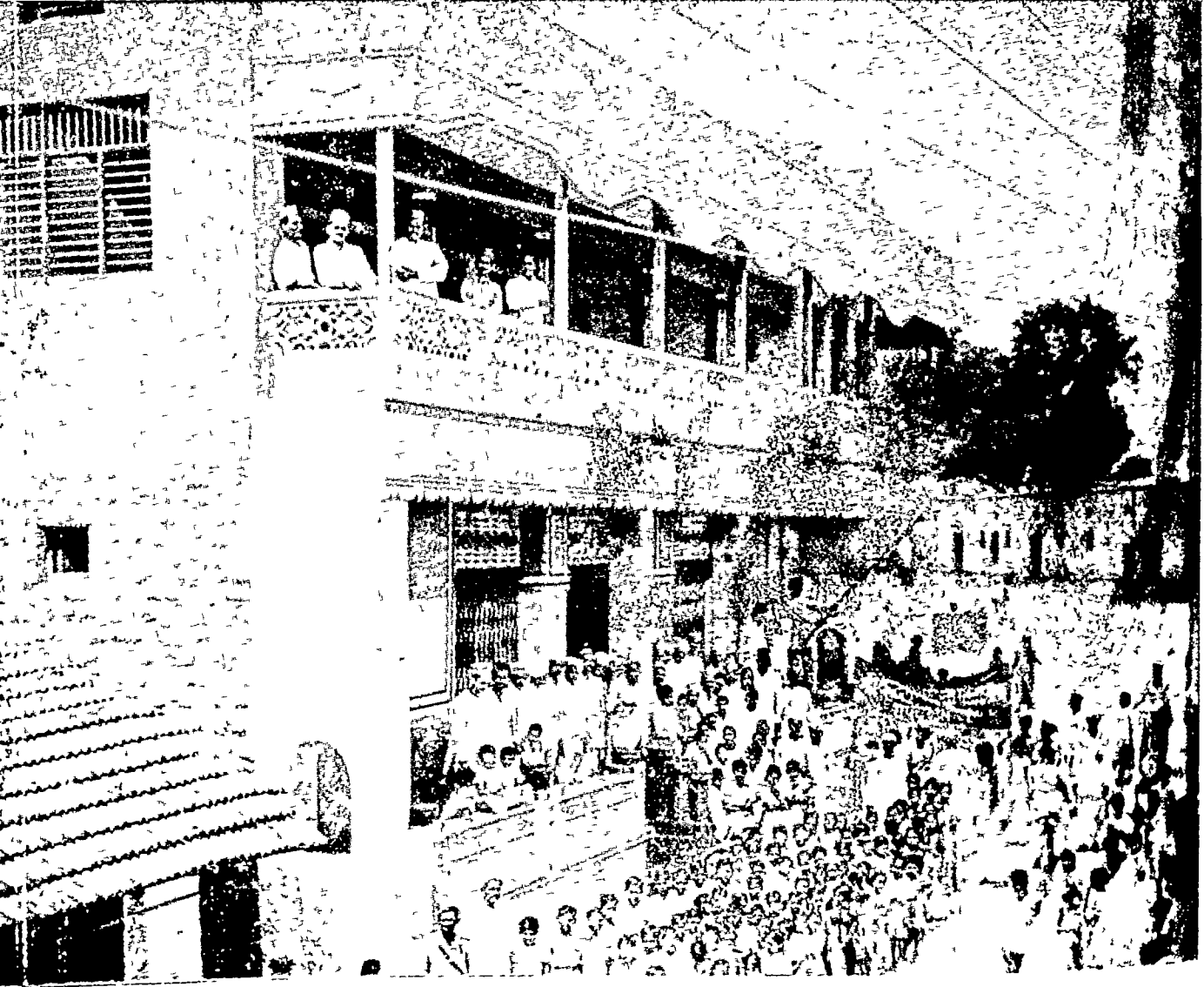
श्री वधमान हिन्दी पाठशाला रायचूर (दक्षिण)
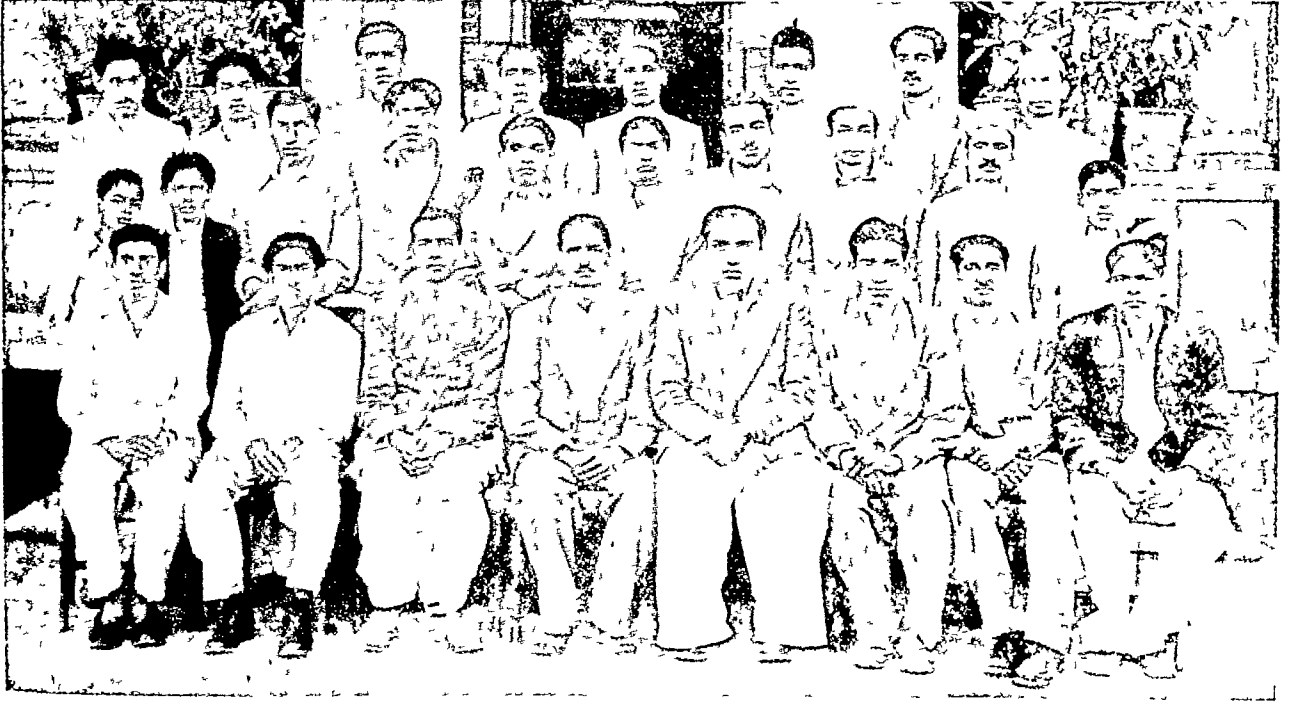
श्री स्था० जैन युवक-सघ, उज्जैन (मध्य भारत)
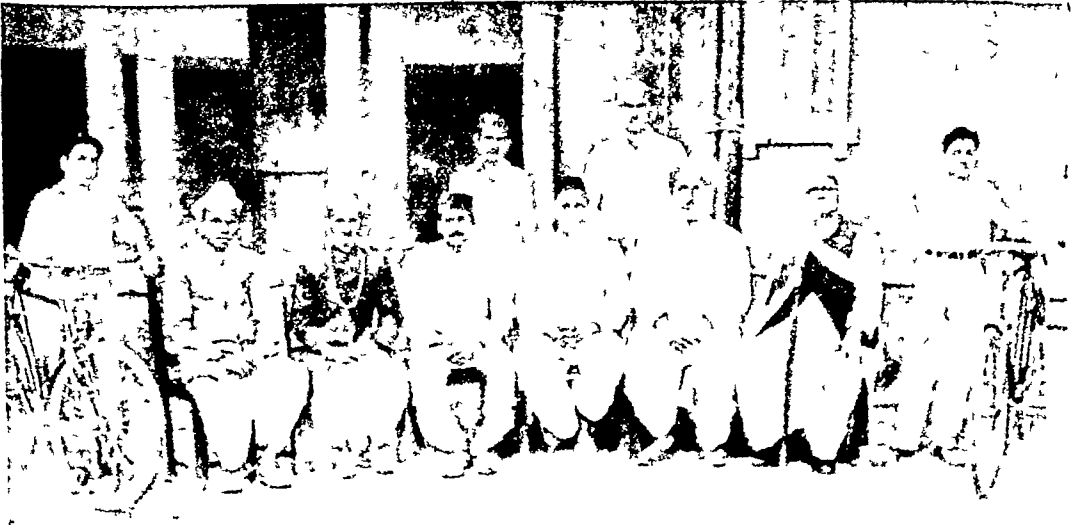
श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक, संघ, नमक मण्डी, उज्जैन (मध्य भारत)

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, इगतपुरी

यह कस्बा बम्बई तथा नासिक के बीच मे आगरा रोड पर बसा हुआ है। बीस हज़ार की जनसख्या है। जिसमे बम्बई तथा नासिक की तरफ विचरने वाले सन्त, सतियाँ अनायास ही पधार जाते हैं। यह क्षेत्र रूपैंठ मे बसा हुआ है। हायर पैठ में यहॉ के सेवाभावी एवं उदार सेठ श्री घेवरचन्दजी कुंदनलालजी छाजेड ने अपने अथक परिश्रम एव त्याग से धर्मस्थानक बना दिया है। जलवायु की दृष्टि से भी प्रथम साधु लोग यहाँ ठहरते हैं। अपर पैंठ मे नवयुवक सेठ श्री पन्नालालजी लखमीचन्दजी टांटिया ने अपनी ज़मीन मे निजी खर्च से करीब तीस हजार की लागत का एक नवीन सुन्दर धर्म स्थानक बनवाकर संघ के सुपुर्द कर दिया है। लोअर पैंठ में भी सघ की अच्छी प्रोपर्टी है। यहाँ पर सवत् १६६७ से मुनि श्री वर्द्धमान ऋषिजी तथा पं० मुनि श्री सौभाग्यमलजी किशनलालजी म० सा० के उपदेश से सचालित धार्मिक पाठशाला चल रही है। प० दयाशकरजी करीब ४० बालक बालिकाओं को धार्मिक-शिक्षण दे रहे हैं। सादडी सम्मेलन के पश्चात् ही यहाँ भी श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ की स्थापना हो गई। सभी स्थानको पर श्रावक सघ के बोर्ड लगा दिये गए हैं। श्रावक संघ के पदाधिकारी श्री लादूरामजी मनोरलालजी बोथरा—अध्यक्ष, श्री पन्नालालजी लखमीचन्दजी टाटिया—उपाध्यक्ष, घेवरचन्दजी चो कुदनलालजी छाजेड—मन्त्री, चो भोजराजजी ताराचन्दजी संचेती—उपमन्त्री और श्री पन्नालालजी लखमीचन्दजी लूणावत—कोषाध्यक्ष है।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, बालाघाट (म० प्र०)

यहाँ धर्म प्रेमी श्री चुन्नीलालजी बागरेचा के सत् प्रयत्न से धर्म स्थानक और श्री वर्द्धमान श्रावक-सघ की स्थापना हुई। यहाँ स्थानकवासियो के ४०-४५ घर है। श्री खुशालचन्दजी जैन भी उत्साही व्यक्ति हैं। आप दोनों का प्रत्येक धर्म कार्य में अच्छा सहयोग रहता है।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, रतलाम

रतलाम स्था० जैनो का बडा केन्द्र है। पहिले तीन सघ थे, परन्तु अब एक ही हो गया है। सघ के अनेक स्थान और जायदादो का एकीकरण कर दिया है।

समस्त भारत मे यहाँ का संघ विख्यात है। समाज के प्रमुखतम मुनिराजो के पधारने, स्थिरवास करने और चातुर्मास करने के कारण यहॉ का सघ धार्मिक कार्यो मे सदा ही जागृत रहा है। संघ की तरफ से निम्नांकित प्रवृत्तियॉ विद्यमान हैं :—

जैन-पाठशाला—इसमे लगभग २५० लडके पढते है। धार्मिक-शिक्षण के साथ-साथ व्यावहारिक शिक्षण भी दिया जाता है। बच्चो के धार्मिक सस्कारो पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

जैन कन्या पाठशाला—इसमे लगभग ३०० लडकियाँ शिक्षा प्राप्त करती है। पहली से लेकर आठवीं कक्षा तक शिक्षा को समुचित व्यवस्था है। पाठशाला शनै शनै प्रगति पथ पर अग्रसर हो रही है।

आयम्बिल खाता—इसकी स्थापना पं० मुनि श्री शेषमलजी म० सा० के चातुर्मास मे हुई थी। सघ की तरफ से व्यवस्थित रूप से आयम्बिल खाता चल रहा है। प्रतिदिन आयम्बिल किया जाता है और तपस्या की सुगन्ध से जीवन सुगन्धित किया जाता है।

पुस्तकालय—संघ की तरफ से विशाल पुस्तकालय एव वाचनालय का सचालन किया जा रहा है। प्रतिदिन नियमित रूप से सैकडों पाठक इनमे ज्ञानार्जन करते हैं। नागरिको के लिए यह पुस्तकालय तथा वाचनालय अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

पौषधशाला—संघ के कई स्थानक-भवन है। एक नव निर्मित पौषधशाला है, जिसके निर्माण मे ६०००८) रु० लगे हैं। जहाँ नित्य व्याख्यान और धर्मध्यान होता रहता है।

इसके अतिरिक्त समस्त सम्प्रदायो की पुरानी मिल्कियत अब संघ की सम्पत्ति है। श्रावक संघ का संगठन हो जाने से स्थानीय संघ एक विशाल दायरे मे आ गया है।

इसके अतिरिक्त अजारक्षण संस्था से अमरिए बकरो का रक्षण होता है। एक अन्न क्षेत्र है, जो सार्वजनिक सस्था है किन्तु इसकी कार्यकारिणी के अधिकांश सज्जन स्थानकवासी जैन हैं।

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, जावरा (मध्य-भारत)

मध्यभारत में यहाँ का श्रावक सघ अपना अग्रगण्य स्थान रखता है। स्थानकवासी समाज के यहाँ २११ घर हैं जिनकी जन संख्या १००७ है। भारत मे सर्व प्रथम यही पर ही श्रावक संघ का निर्माण हुआ था। ऐतिहासिक नगर होने के साथ-साथ यहाँ का जैन समाज भी ऐतिहासिक महत्त्व रखता है।

यहाँ छोटे-मोटे ८ स्थानक हैं, जो सभी अच्छी स्थिति में विद्यमान है। संघ की देख-रेख मे निम्नलिखित प्रवृत्तियाँ चल रही हैं:—

श्री वर्द्ध० स्था० जैन आयम्बिल खाता

स्वर्गीय सूरजबाई पगारिया की पुण्य-स्मृति मे यह खाता चल रहा है। इसके संचालन के लिए एक समिति बनाई गई है—श्री चम्पालालजी पगारिया अध्यक्ष, श्री गेंदालालजी नाहर-उपाध्यक्ष, श्री सुजानमलजी मेहता मन्त्री, श्री सौभाग्यमलजी कोचेटा संयुक्तमन्त्री, श्री राजमलजी पगारिया कोषाध्यक्ष।

श्री वर्द्ध० स्था० जैन कन्या पाठशाला

यह कन्या पाठशाला भी स्व० सूरजबाई पगारिया की पुण्य स्मृति में चलाई जा रही है। इस पाठशाला में छात्राएं धार्मिक शिक्षण का लाभ लेती हैं। इस पाठशाला के निम्न पाँच ट्रस्टी संस्था को सँभाल रहे हैं —

श्री गेंदालालजी नाहर, श्री समीरमलजी डफरिया श्री सुजानमलजी मेहता, श्री सौभाग्यमलजी कोचेटा, श्री राजमलजी पगारिया।

श्री वर्धमान स्था० जैन नवयुवक मण्डल

स्थानीय जैन नवयुवकों का एक मण्डल भी व्यवस्थित रूप से बना हुआ है। सामाजिक तथा विभिन्न कार्यक्रमों में यह मण्डल अच्छा भाग लेता है। नवयुवक मण्डल के पदाधिकारी इस प्रकार हैं :—

श्री सुजानमल जी मेहता अध्यक्ष, श्री अभयकुमारजी मास्टर-उपाध्यक्ष, श्री समरथमलजी कांठेड मन्त्री, श्री मंगतलालजी उपमन्त्री श्री छगनलालजी काठेड कोषाध्यक्ष।

इन विभिन्न गतिविधियो के अलावा छ काया (प्राणि-दया) व्यवस्था-कमेटी, और महावीर जैन संयुक्त विद्यालय हैं। यहाँ के संघ के पदाधिकारी इस प्रकार है :—

श्री चम्पालालजी कोचेटा, अध्यक्ष, श्री सुजानमलजी मेहता, मन्त्री और श्री उम्मेदमलजी मेहता, कोषाध्यक्ष।

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, इन्दौर

इन्दौर में स्थानकवासी जैन समाज के अनुमानतः २०० घर होने पर भी आपस में संगठन का ऐक्य भाव

है यह अनुकरणीय है।

जब सादडी में कॉन्फरन्स के श्रावक संघ बनाने की प्रेरणा की तब से ही यहाँ श्रावक संघ कायम हुआ है और उसके अध्यक्ष जैनरत्न श्री सुगनमलजी भण्डारी व प्रधानमन्त्री श्री राजमलजी लोरवा के अतिरिक्त २३ महानुभाव चुने गये है। समय-समय पर श्रावक सघ की मीटिंग होकर उसका कार्य सुचारु रूप से चल रहा है।

यहाँ पर संघ के खास कर तीन स्थानक है जिनमे (१) मोरसली गली मे, (२) पीपली बाजार में व (३) इमली बजार में (जिसका नाम महावीर भवन) है। इसी महावीर भवन का निर्माण सम्वत् २००१ मे हुआ था और वह अभी विशाल भवन के रूप मे तैयार हो चुका है व उसके आगे का कार्य चालू है।

भवन निर्माण कार्यमें जैन रत्न श्री सुगनमलजी भण्डारी व सेठ मांगीलालजी मूथा पूर्ण सहयोग दे रहे हैं।

संघ के तत्त्वावधान में निम्नलिखित संस्थाएँ यहाँ पर चालू हैं ·

आयंबिल खाता—जो श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन सेवा-सदन के नाम से गत आठ वर्ष पं० मु० श्री प्रतापमलजी महाराज की प्रेरणा से चालू हुआ। शुरू में ही उसके संरक्षक श्रीमती केसरबाई भटेवरा व पन्नालालजी भटेवरा हैं। इस संस्था की कार्यकारिणी के अध्यक्ष श्री वक्तावरमलजी सांड व केशियर श्री भंवरलाल धाकड हैं। इन्ही की कोशिश से सस्था का कार्य सुचारु रूप से चालू है। सालाना १४-१५ हज़ार भाई व बहि (आयम्बिल, एकासन आदि) इस संस्था से लाभ लेते है। समाज की ओर से धान्य व नगदी के रूप में भेट प्रा होती है। इस वक्त सस्था के पास लगभग ८०००)रु० का फण्ड, वर्तन व धान्य आदि सिल्लक मे हैं। काम सन्तो जनक है। सदन का कार्य श्री वक्तावरमलजी साड के भवन में चालू है।

श्वेताम्बर जैन लायब्रेरी—३६ वर्ष पहिले स्व० श्री केसरीचन्दजी भण्डारी ने यह संस्था स्थापि की थी। तब से बराबर लायब्रेरी की प्रगति हो रही है। धार्मिक, व्यावहारिक सब प्रकार का साहित्य इसमें मौजूद दैनिक साप्ताहिक-पत्र आदि मगवाए जाते है। यह संस्था मित्र-मण्डल की देख-रेख मे चलती है। इसके प्रेसिडेन्ट भवरसिहजी भण्डारी हैं। यह संस्था मौरसली गली के स्थानक के नीचे के हिस्से में है। उसका कार्य सुचारु रूप चालू है। मध्य भारत गवर्नमेन्ट से ४००) रु० सालाना ग्रान्ट भी मिलती है।

श्री महावीर जैन सिद्धान्त शाला—स्व० श्री छोटेलालजी पोखरना के प्रयत्न से १५ साल से य कायम हुई। इसमे धार्मिक व व्यावहारिक ज्ञान दिया जाता है। इस वक्त संस्था के अध्यक्ष श्री वक्तावरमलजी सां हैं। इस वक्त बालक-बालिकाएँ मिलकर ८०-८५ की संख्या में लाभ उठा रहे हैं।

महिला कला-भवन—श्रीमती सौ० हीराबाई बोरुंदिया व श्रीमती फूल कँवर बाई चौरडिया की प्रेरण से गत वर्ष २६ जनवरी १९५५ से इसका कार्य प्रारम्भ हुआ। इससे समाज की बहिनों को सिलाई, कसीदा आ कार्य सिखलाया जाता है। इसका कार्य बहुत ही सुचारु रूप से चालू है। इसमें प्रतिदिन २५-३० बहिनें लाभ उठात हैं। समाज की ओर से इस संस्था को पूर्ण सहयोग है तथा मध्य भारत गवर्नमेन्ट की ओर से ग्रान्ट मजूर की गई है फिलहाल इस संस्था का कार्य श्री वक्तावरमलजी सांड के भवन मे चालू है।

उपरोक्त सभी संस्थाओ के हिसाब हर साल ऑडिट होकर तथा उन्हे छपवाकर समाज के सम्मुख प्र पर्यूषण-पर्व मे पढकर कन्फर्म करवाये जाते हैं।

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, उज्जैन

उज्जैन-अवंतिका का इतिहास सदा ही उज्ज्वल और महान् रहा है। यहाँ के स्थानकवासी जैन समाज ने सामाजिक सगठन के आधार पर समाजोत्थान के उद्देश्य से कई महान् प्रयास किए हैं। यहाँ श्रावक सघ का निर्माण

किया जा चुका है। स्थानीय सघ को श्री हजारीलालजी भटेवरा, श्री कंचनलालजी भटेवरा, श्री वाबूलालजी चौरडिया, श्री नाथूलालजी श्री श्रीमाल और श्री छोटेमलजी मुथा का सहयोग प्रशंसनीय रहा है। तथाकथित महानुभावो के सहयोग से 'महावीर भवन' का निर्माण कराया गया जिसमे ६०,०००) लग गया हैं इसके अतिरिक्त २०,०००) और भी लगने की सम्भावना है। इस भवन मे ३००० स्रोता वैठकर प्रवचन का लाभ उठा सकते है। इसी भवन मे आधुनिकतम ढंग के सुव्यवस्थित पुस्तकालय तथा वाचनालय की व्यवस्था की जा रही है।

वर्तमान समय मे श्री सघ के अन्तर्गत स्थायी सम्पत्ति निम्न प्रकार है:—

(१) स्थानक फ्रीगंज (२) स्थानक दौलतगंज (३) शान्तिरक्षक सघ भागसीपुरा (४) आयुर्वेद औषधालय भागसीपुरा (५) रतन पाठशाला नमक मंडी (६) महासतियाँजी का स्थानक नमक मडी और पटनी बाजार स्थित दुकाने।

इस समय संघ के प्रमुख कार्यकर्ताओ के नाम इस प्रकार हैं :—

श्री गोकुलचन्दजी, श्री दीपचन्दजी जिन्दानी, श्री नाथूलालजी, श्री बाबूलालजी, चौरडिया, सी हजारीलाल जी भटेवरा श्री गेदालालजी।

गत वर्ष का अखिल भारतीय सर्वधर्म-सम्मेलन जो यहाँ के सघ द्वारा आयोजित किया गया था उज्जयिनी के परम्परागत गौरव के अनुकूल ही था।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन नवयुवक सघ, उज्जैन

इस सस्था का निर्माण गत वर्ष प्र० व० कवि मुनि श्री केवल मुनिजी म० सा० के सदुपदेश एवं प्रेरणा से हुआ था। आज इस सस्था को कार्य करते हुए एक वर्ष से ऊपर समय हो गया है। इस सस्था का वार्षिक अधिवेशन सर्व धर्म-सम्मेलन के प्रसग पर सम्पन्न किया गया था। संस्था स्थापित हुए यद्यपि अभी बहुत कम समय हुआ हैं किंतु इस अल्प अवधि मे सस्था ने जो कुछ कार्य उज्जैन के धार्मिक क्षेत्र में किया उस पर सस्था को गर्व है। इस वर्ष प्र० व० पंडित मुनि श्री सौभाग्यमलजी महाराज एव मुनि श्री सुशीलकुमारजी महाराज का सम्पर्क सस्था को प्राप्त हुआ जिससे सस्था के सदस्यों को नया जोश एव नया उत्साह प्राप्त हुआ। इस सघ की तरफ से ४ सितम्बर को "जैन धर्म शिक्षण शिविर" प्रारम्भ किया था, जिसका उद्‌घाटन भोपाल के मुख्य मन्त्री डॉ० शंकरदयालजी शर्मा के कर कमलों से सम्पन्न हुआ था। इस शिविर मे भारत के विभिन्न भागों से ६०० विद्यार्थियों ने भाग लेकर लाभ उठाया था।

सर्व धर्म-सम्मेलन के अवसर पर आगन्तुक अतिथियों का इस सघ ने सुन्दर आतिथ्य कर अपनी सेवा-भावना का परिचय दिया। संघ के लगभग ५० नियमित सदस्य हैं। मासिक चन्दा दो आने प्रति माह है। प्रत्येक रविवार को महावीर भवन में सभा आयोजित की जाती है, जिसमें धार्मिक, सामाजिक और साहित्यिक विषयों पर अपने विचार व्यक्त करते हैं।

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, धार

धार—यह अति प्राचीन ऐतिहासिक, इतिहास प्रसिद्ध श्री सम्राट् भोज की राजधानी रह चुकी है।

ऐतिहासिकता—यहाँ करीब ३०० वर्ष पुराना स्थानक है। इसी स्थानक में समाज के प्रसिद्ध मुनि पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज ने अपने शिष्य की कायरता (कि जिसने सथारा लेकर तोड़ने की इच्छा की थी) से जैन धर्म को कलंकित होने से बचाने के लिए पूर्ण स्वस्थ होते हुए भी सथारा लेकर जैन शासन के गौरव को बढाया तथा जिस पाट पर पूज्य महाराज सा० ने सथारा किया था, वह पाट आज भी रखा हुआ है। इसके अतिरिक्त पूज्य श्री ताराचन्दजी महाराज का स्वर्गवास भी यहीं हुआ था।

धर्म-स्थानक—यहाँ समाज के तीन स्थानक भवन हैं, जिनमे एक भवन कलात्मक सुन्दर कलशों से सुशोभित हैं। इसके अतिरिक्त दो मकान जीवदया के हैं।

श्रावक संघ—समाज को संगठित बनाये रखने के लिए कान्फ्रन्स की योजनानुसार सन् १९५४ में श्रावक संघ का निर्माण हो चुका है। समाज की उन्नति हेतु श्रावक संघ के अन्तर्गत कई प्रवृत्तियाँ चालू हैं, जो निम्न प्रकार हैं :

जीवदया प्रबन्ध—यहाँ करीब ४०० वर्ष पूर्व बादशाही ज़माने से एक ऐसा नियम चला आ रहा है कि यहाँ की गली जो 'वनियावाडी' के नाम से है, जिसमे जैन स्थानक व समाज के घर है—इसमे कोई भी पशु यदि वध के लिए ले जाता हुआ पाया जाता है तो उस पशु पर समाज का अधिकार हो जाता है और वह पशु 'अमर' बना दिया जाता है। प्रतिवर्ष पर्यूषण मे अगता पलाया जाता है।

महावीर मित्र-मण्डल—इस मण्डल की स्थापना सन् १९२७ मे हुई थी। इसके अन्तर्गत एक वाचनालय चल रहा है। अजमेर मुनि सम्मेलन के समय इस मण्डल की ओर से एक स्वयंसेवक दल अजमेर मुनि-सम्मेलन के समय पर सेवाकार्य के लिए गया था।

साप्ताहिक सामूहिक प्रार्थना—लगभग १५ वर्ष पूर्व पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज के सदुपदेश यहाँ सामूहिक प्रार्थना प्रारम्भ की गई थी, जो कि प्रति रविवार को निर्बाधरूप से होती जा रही है।

श्री महावीर जैन पाठशाला—इस संस्था की स्थापना स्वर्गीय जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज के सदुपदेश से सन् १९४५ मे हुई थी। प्रारम्भ मे केवल १५ छात्र शिक्षा पाते थे किन्तु अब ६ कक्षाओं में १० विद्यार्थी विद्याध्ययन करते हैं। व्यावहारिक शिक्षा के साथ पाथर्डी बोर्ड की धार्मिक शिक्षा भी होती है। प्रतिवर्ष अनेक समाजोपयोगी और शिक्षोपयोगी कार्यक्रम को लेकर संस्था वार्षिकोत्सव करती है। संस्था की ओर से भगवान महावीर स्वामी आदि महापुरुषों की जयन्तियाँ धूमधाम से मनाई जाती हैं। संस्था में सामायिक-प्रतिक्रमण, व्रत-प्रत्याख्यान आदि आवश्यक धार्मिक क्रियाओं पर विशेषतया ध्यान दिया जा रहा है। संस्था की आर्थिक व्यवस्था का सचालन तथा संरक्षण ट्रस्ट-मण्डल करता है। संस्था के संचालक इस प्रयत्न मे है कि इसे मिडिल स्कूल बना दिया जाय और एक छात्रावास कायम किया जाय। श्री केशरीमलजी जैन M. A. L. L. B. की अध्यक्षता तथा श्री बाबूलालजी जैन के मन्त्रीत्व में संस्था प्रगति कर रही है। मध्यभारत की इस प्रगतिशील संस्था की हम और अधिक प्रगति चाहते हैं।

श्री न्यादरमल जी जैन रईस, बिनौली (मेरठ)

आप बिनोली के निवासी लाला सौसिहरायजी के सुपुत्र थे और अपने चाचा तुलसीरायजी के यहाँ गोद चले गये। आप कपडे के व्यापारी और जमीदार थे। अपने परिश्रम द्वारा उपार्जित धन को अनेक प्रकार के धार्मिक कार्यों में लगाकर धन का सदुपयोग किया। बचपन से ही आपको धर्म के प्रति प्रगाढ प्रेम था। आपने सोनीपत, सराय लुहारा और अपने ग्राम मे इस प्रकार तीन स्थानक बनवाये। सयम और सादगी से जीवन-यापन करना यह आपका गुण था। जीवन भर आप खादी धारण करते रहे। दूर-दूर तक साधु-मुनिराजो के दर्शन करने के लिये जाते रहते थे। सन् १९४० में दो दिन के सथारे के साथ पडित मरण से आप स्वर्गवासी हुए।

श्री पलटूमलजी जैन, कांधला

आप मुजफ्फरपुर (यू० पी०) जिले के कांधलाके निवासी है। आपके पूर्वज राव केशरीमलजी मुगल साम्राज्य के समय मन्त्री थे। आप के बाबा लाला घमडीलालजी स्थानकवासी समाज के स्तम्भ तथा यू० पी० प्रान्त के अग्रगण्य नेता थे जिन्होने अपने समय में ४० स्थानक बनवाये थे।

श्री पलटूमलजी सा० को बचपन से ही धार्मिक कार्यों मे अत्यन्त दिलचस्पी है। आप १६ वर्ष की अवस्था में ही कॉन्फरन्स की पजाब शाखा के सयुक्त मत्री नियुक्त कर दिए गये। अ० भा० श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेस की कार्यकारिणी के आप सदस्य रह चुके हैं। यू० पी० स्थानक जैन कॉन्फ्रेन्स के आरम्भ से आप ज० सेक्रेट्री हैं। आप अनेक सामाजिक, शैक्षणिक तथा स्थानीय सस्थाओ के विभिन्न पदाधिकारी हैं। आपकी धर्मपत्नी भी समाज की एक आदर्श-महिला हैं। आपके एक वडा कुटुम्ब है जो अत्यन्त ही सुरक्षित एव सुसस्कृत है।

इस समय आपकी उम्र ४७ वर्ष की है। अत्यन्त सुशिक्षित होते हुए भी आप धर्मपरायण हैं। आपको रात्रि-भोजन का त्याग है। उर्दू, हिन्दी, अग्रेजी, फारसी, प्राकृत आदि अनेक भाषाओ का आपको यथेष्ट ज्ञान है और जैन तथा अजैन ग्रन्थो का आपने काफी अध्ययन किया है। आप निर्भीक विचारधारा के कुशल वक्ता हैं। आपके सुपुत्र श्री आदीश्वरप्रसादजी जैन एम० ए० एल-एल० बी० कानपुर मे वेलफेयर लेबर ऑफिसर हैं। दूसरे पुत्र श्री अजितप्रसाद जी जैन B. SC लखनऊ मे एम० बी० बी० एस० कर रहे हैं। श्री जगप्रसादजी जैन बी० कॉम एक होनहार और तेजस्वी युवक हैं।

श्री रतनलालजी नाहर, बरेली

स्वभाव और वाणी में सरल तथा मधुर, श्रीमत किन्तु गृहस्थ सत, पुरातन किन्तु नवीन, सतत् शिक्षा और सुधार की आग दिल मे जलाये हुए, अप्रकट किन्तु ठोस कार्य करते हुए, सामाजिक और राष्ट्रीय शालाओ, गुरुकुलो और विद्यालयो मे प्राण फूकते हुए श्रीमान् रतनलाल जी सा० नाहर को हम जब कभी देख सकेंगे।

समाज की ऐसी कौनसी सस्था है जिसकी रिपोर्ट मे आज तक आपका नाम न पहुँचा हो। समाज का ऐसा कौनसा समझदार व्यक्ति है जो आपसे परिचित न हो ? जिसको आपका परिचय हुआ—बस वही आपसे प्रभावित हुआ।

पर्यूषण पर्व पर वेले-चौले की कठिन तपस्याएँ करते आप देखे गये हैं। शिक्षण-सस्थाओ से तन-मन धन से सक्रिय सहायता करते पाए गये हैं। आपकी सरलता, विद्यानुरागिता एव जीवन की पवित्रता और आदर्श अनुकरणीय है।

कानपुर के प्रमुख कार्यकर्ता

श्रीमान् ला० फूलचन्दजी जैन

कानपुर में श्री स्था० जैन समाज के कार्यो की ओर ध्यान आकर्षित करने का श्रेय आपही को है। आपने गत २० वर्ष पहले स्व० जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज का यहाँ आग्रहपूर्ण विनति द्वारा चातुर्मास कराया था। उस चातुर्मास में बाहर से आये हुए दर्शनार्थियो को आज भी यहाँ की सेवा व सत्कार की याद भली भाँति है। काग्रेस कार्य में आपने तन-मन-धन से सेवा की। आपके कार्यो से प्रसन्न होकर विश्ववद्य महात्मा गाधी ने 'यगइडिया' में आप की सराहना की है। इसी सिलसिले में सन् १९३० में एक वर्ष का सपरिश्रम कारावास भी काटा। आपकी ही प्रेरणा से आपके सुपुत्र स्व० मनोहरलालजी जैन ने अपनी माता की स्मृति में "श्री माता रुक्मणी भवन" निर्माण के लिए लगभग ५०,०००) रु० की जमीन समाज को ट्रस्ट बनाकर दी। आप स्था० समाज की आज भी तन-मन-धन मे सेवा करते रहते हैं। श्री जैन दिवाकर स्मारक समिति के आप उप-प्रधान हैं।

श्री जगजीवनलाल शिवलाल

आप स्थानीय जैन स्था० समाज में गुजराती भाइयो में सबसे अधिक उत्साही तथा पुराने कार्यकर्ता हैं। गत बीस वर्षो से आप यहाँ के समाज का कार्य चलाते रहे हैं। आप अत्यत ही धर्मप्रिय व्यक्ति हैं। इधर तीन वर्षो से आपके नेत्रो में खराबी हो जाने के कारण सामाजिक कार्यो मे अधिक भाग नहीं ले सके हैं। पर आज भी समाज आपके

सहयोग देकर संघ भक्ति का सुन्दर परिचय दिया है। भवन-निर्माण का कार्य अभी भी जारी है।

यहाँ एक जैन पाठशाला भी चल रही है। तीस बालक-बालिकाएं इसमें शिक्षा लेती हैं। धार्मिक परीक्षा बोर्ड, पाथर्डी के पाठ्यक्रम का धार्मिक शिक्षण देने की व्यवस्था है। स्थानीय श्रावक संघ ही पाठशाला का व्यय वहन करता है।

यहाँ व्यवस्थितरूप से वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ का निर्माण हो चुका है। यहाँ के प्रमुख कार्यकर्ता निम्न प्रकार हैं:—

श्रीमान् सेठ जोधराजजी, श्री फूलचन्दजी, श्री दीपचन्दजी, श्री केशरजी, रतनलालजी, श्री मांगीलालजी।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, झाबुआ (मालवा)

यहाँ एक पुस्तकालय है जिसका नाम है "श्री वर्धमान स्था० जैन पुस्तकालय" दो। स्थानक भी बने हुए हैं। श्रीमती सुन्दर बाई ने १,१००) रु० में एक मकान खरीद कर श्राविकाओं के धर्मध्यान-हेतु दिया है।

यहाँ के निम्नलिखित कार्यकर्ता हैं जो सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों मे प्रमुखता से भाग लेते हैं:—

श्री सूरजमलजी, घासीरामजी कटकानी, श्री वेणीचन्दजी, नन्दाजी रूनवाल, श्री राजमलजी, सौभागमल जी मेहता, श्री रतनलालजी नेमचन्दजी रूनवाल, श्रीमती सुन्दरबाई, नेमचन्दजी, श्री माणकचन्दजी जबरचन्दजी रूनवाल।

श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, कुशलगढ (मालवा)

यहाँ एक पुराना पौषधशाला भवन और श्राविकाओं के धार्मिक कार्यों के लिये एक भवन है, जो चम्पालाल जी गादिया के द्वारा खरीद कर दिया गया है। पुराने पौषधशाला भवन को साताकारी बनाने के लिये २,०००) रु० का चन्दा एकत्रित कर लिया गया है।

यहाँ व्यवस्थित रूप से श्रावक संघ का निर्माण हो चुका है। श्रावक संघ के पदाधिकारी इस प्रकार हैं— श्री चम्पालालजी, देवचन्दजी गादिया अध्यक्ष, श्री नानालालजी, हीराचन्दजी खाबिया, उपाध्यक्ष, श्री प्यारेलालजी खेंगारजी वोरा, मन्त्री, श्री भैरूंलालजी लुणाजी तलेसरा-उपमंत्री, श्री भैरूंलालजी कंवरजी कोषाध्यक्ष।

इनके अलावा श्री नवलजी उमेदमलजी, श्री चांदमलजी जडावचन्दजी, श्री केशरीमलजी थावरचन्दजी आदि सज्जन भी उत्साही तथा धर्म प्रेमी हैं।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, आलोट

यहाँ सम्वत् १९७२ में स्थानकवासी समाज के केवल तीन ही घर थे, किन्तु अब काफी घर बढ़ गये हैं। संघ की तरफ से एक मकान खरीदा गया और उसे ६०००) रु० लगाकर सुधारा गया। इसमें श्री वर्धमान जैन पाठशाला आज नौं वर्ष से चल रही है। संघ के सामाजिक व धार्मिक कार्यों मे श्री केशरीमलजी पगारिया का तन मन-धन से सब तरह का सहयोग रहा है। यहाँ पर व्यवस्थित रूप से संघ बन चुका है। श्री रतनलालजी पगारिया अध्यक्ष और श्री बसन्तीलालजी भण्डारी मन्त्री हैं।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, बिलाड़ा (मारवाड़)

राजस्थान प्रान्त के अन्तर्गत जोधपुर डिविज़न में बिलाड़ा प्राचीन नगर है। चालीस-पचास साल पूर्व

यहाँ जैनो के लगभग ४०० घर थे किन्तु शनैः-शनैः यह सख्या घटती गई और आज केवल ११० घरो की संख्या रह गई है जिनमें स्थानकवासी जैनों के ६० घर हैं।

सवत् १६६७ में मरुधर केशरी मन्त्री मुनि श्री मिश्रीमलजी महाराज सा० का चातुर्मास होने के वाद से यहाँ का स्थानकवासी संघ एक सूत्र मे सगठित हुआ। तव से संघ दिन प्रतिदिन उन्नति करता आ रहा है और आपसी प्रेम, सगठन व धर्मप्रवृत्ति बढ़ रही है। यहाँ पर पहिले के दो स्थानक हैं किन्तु वे अपर्याप्त होने से अभी-अभी एक भव्य स्थानक का निर्माण किया जा रहा है। विलाडानगर मे यह भवन अपनी सान का एक ही होगा और इसमे ३५,०००) रु० खर्च होंगे। दो-तीन माह मे बन कर सम्पूर्ण हो जायगा।

मरुधर केशरी की प्रेरणा से यहाँ संवत् १६६७ मे एक नवयुवक मण्डल "वीर दल मण्डल" की स्थापना हुई थी, जिसने सभी क्षेत्रों में आशातीत उन्नति की है। संघ की तरफ से एक पुस्तकालय भी नियमित रूप से चल रहा है।

सघ का चुनाव बालिग मताधिकार के आधार पर हर तीसरे साल होता है। वर्तमान श्रावक सघ के पदाधिकारी श्री पुखराजजी ललवानी, अध्यक्ष, श्री मोहनलाल जी भडारी, उपाध्यक्ष श्री मोहनलालजी कटारिया, मन्त्री श्री चम्पालालजी जागडा, उपमन्त्री और श्री गेहरालालजी पगारिया कोषाध्यक्ष और अन्य ५ सदस्य है।

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, जालिया (अजमेर)

स्थानीय सघ के तत्वाधान मे गत पॉच वर्षो से स्वाध्याय सघ चल रहा है, जो प्रान्त-मन्त्री पण्डित मुनि श्री पन्नालालजी म० सा० के सदुपदेश से स्थापित हुआ था। संघ की तरफ से पुस्तकालय भी चलाया जा रहा है। स्थानीय संघ के मुख्य कार्यकर्ता श्री गजराजजी कोठारी हैं जो सघ के मन्त्री है। धार्मिक कार्यों में निम्नांकित सज्जन वडी दिलचस्पी से भाग लेते हैं :—श्री मोतीलाल जी श्री श्रीमाल, श्री शिवदानसिहजी कोठारी, श्री गुलाबचन्दजी लोढ़ा।

यहाँ स्थानकवासियो के ३० घर हैं और धार्मिक कार्यों के लिये तीन स्थानक हैं। धर्मप्रेम व सामाजिक सगठन खूब अच्छा बना हुआ है।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, कानपुर

गत पचास वर्षों से श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी संघ की एक सर्वस्वीकृत संस्था यहाँ चल रही है। यह रजिस्टर्ड है। इन वर्षो मे जो भी कार्य स्था० जैन समाज के हुए हैं—उनको पूर्ण करने का श्रेय इसी सस्था को है। सघ के पास एक विशाल स्थानक भवन है, जो किराये पर उठा हुआ है।

इसके अतिरिक्त सघ के पास एक और विशाल भवन जिसका नाम "श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी माता रुकमणी भवन" इस भवन का ट्रस्ट बनाया हुआ है।

सघ की तरफ से श्री वर्धमान पुस्तकालय' भी चलाया जा रहा है। इस पुस्तकालय के माध्यम से समाज के नवयुवको मे धार्मिक जागृति का यथेष्ट प्रचार किया जा रहा है।

संघ की कार्यकारिणी समिति की रचना इस प्रकार की गई है :—

श्रीमान् छंगामलजी जैन, अध्यक्ष, श्री० किशनलालजी जैन तथा श्री० जगजीवन शिवलाल भाई, उपसभापति हैं। श्री० पवन कुमार जी जैन प्रधान मन्त्री हैं। वच्चू भाई और श्री० रोशनलालजी जैन, मंत्री है तथा श्री नरोतम भाई कोषाध्यक्ष हैं।

श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, वडी सादडी

यहाँ निम्नांकित प्रमुख कार्यकर्ता है, जिनका सामाजिक और धार्मिक कार्यों मे प्रमुख भाग रहता है :—

श्री वस्तीमलजी मेहता, श्री सेंसमलजी मेहता, श्री बांतलालजी पित्तलिया, श्री भूरालालजी माह, श्री विरदीचन्दजी गांग, श्री उदेलालजी मेहता, श्री माधवलालजी नागोरी, श्री कजौडीमलजी नागोरी, श्री फूलचन्दजी जालोरी।

उपरोक्त सभी व्यक्ति अटूट श्रद्धा के साथ समाज की सेवा करते है।

कन्या पाठशाला

यहाँ एक कन्या पाठशाला भी चल रही है। इसमे दो अध्यापिकाये हैं। लगभग १०० कन्याए शि प्राप्त करती है। आपसी चन्दे से खर्च की पूर्ति की जाती है। मासिक खर्च १००) रु० है।

श्री वर्द्ध० श्वे० स्था० जैन श्रावक सघ, देशनोक

यहाँ एक मात्र स्थानकवासी संस्था है जिसका नाम 'श्री जैन जवाहर-मडल देशनोक' है। यहाँ श्रावक स की स्थापना हो चुकी है। निम्न मुख्य-मुख्य कार्यकर्ता है :—

श्री० नेमचन्दजी गुलगुलिया, सभापति, श्री० अबीरचन्दजी भूरा, उपसभापति, श्री० लून जी हीरावत, मन्त्री, श्री० हुलासमलजी सुराना, उपमन्त्री और श्री रामलालजी भूरा कोषाध्यक्ष हैं।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, बारा (कोटा)

यहाँ स्थानकवासी भाइयो के २०-२५ घर हैं। एक धर्मस्थानक भी है जिस पर 'श्री वर्धमान स्था० जै श्रावक संघ' का बोर्ड लगा हुआ है। वैधानिक चुनाव होता है। अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष एवं मन्त्रीगण अपना अपना कार्य सुव्यवस्थित रीति से करते है।

यहाँ साधु-साध्वी जी का पधारना बहुत कम होता है। कॉन्फरन्स प्रचारक भी कभी नहीं आते है। फि भी स्था० जैन पत्र मगाकर समाज की प्रगति से अवगत होते रहते है। यहाँ का संघ अन्यत्र आर्थिक सहायता भे देता रहता है। एक वाचनालय तथा धार्मिक शिक्षण का भी प्रवन्ध है।

यहाँ सौराष्ट्र से आए हुए ५-७ कुटुम्ब स्थायी रूप से बस गए हैं। संघ के प्रत्येक कार्य मे इनका अच्छ सहयोग प्राप्त है।

प्र० वक्ता, जैनदिवाकर श्री० चौथमलजी म०, व० प० मुनि श्री केवलचन्दजी म० सा० यहाँ शेष काल मे पधारे थे। उनके सार्वजनिक व्याख्यानो से जैन-अजैन जनता ने अच्छा लाभ उठाया।

श्री ताराचन्द भाई, श्री मणिलाल भाई आदि-आदि यहाँ के सघ के प्रमुख कार्यकर्ता हैं।

श्री श्वे० स्था० जैन सभा, पंजाब

एस० एम० जैन सभा, पंजाब का जन्म १६११ में गणी श्री उदयचन्द्रजी महाराज की प्रेरणा से हुआ था, कुछ साधुओं के सम्बन्ध मे वे लोकमत (Public opinion) की योजना करना चाहते थे। सभा के एकत्रित होते-हात मूल कारण मिट गया तो निमन्त्रण देने वालों ने अपने प्रयास को विफल जाने देने से रोकना और अवसर को प्रयोग में लाना बुद्धिमत्ता समझी। स्व० बाबू परमानन्दजी वकील, कसूर, स्व० रायसाहिब टेकचन्दजी और उनके नियमान

अवशिष्ट साथी लाला गन्डामलजी ने सोचा कि लोकमत तैयार करना ही तो सभा का परम अभिप्राय था। उन्होंने आमन्त्रित सज्जनों के सामने सामाजिक, धार्मिक आदि प्रश्नो के बारे मे विचारने और निर्णय करने का प्रोग्राम उपस्थित किया, इस प्रकार इस सस्था और उसके उपयोग की नींव उन महानुभावों ने रखी। प्रत्येक वर्ष वे इस संस्था का सदेश लेकर पंजाब, पेप्सु आदि, जो सभा के कार्यक्षेत्र थे—के किसी न-किसी भाग में जाते रहे।

सभा जब तक उत्साह से कार्य मे लगी रही, इसने जैन-जनता का बहुत अच्छा पथ-प्रदर्शन किया। इसके कार्य और कार्यकर्ताओं के चुनाव मे कोई साम्प्रदायिक भाव काम नही करता रहा। इसने अपने उत्सवो के प्रधानो के चुनाव में श्वेताम्बर और दिगम्बर सभी प्रकार के सज्जनो के गुणो और योग्यता का उपयोग किया। अपनी प्रवृत्तियो में सर्वप्रकार के जैनो के अतिरिक्त जैनेतर विद्यार्थियो को भी उन्ही शर्तों पर अग्रसर किया। इसी कारण से इसकी सस्था 'श्री अमर जैन होस्टल' पजाब यूनिवर्सिटी से मान्य थी और यूनिवर्सिटी से उसको ग्रांट भी मिलती थी।

सन् १९२३ मे सभा ने प्रस्ताव पास किया था कि कोई जैन यदि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि से शादी कर लेगा तो सभा उसको बुरा नहीं समझेगी। विधवा विवाह की स्वीकृति सभा ने १९२८ मे दे दी थी। १९३० मे मृतक के सम्बन्ध में शोक मनाने को चोथे तक सीमित कर दिया था। सम्बन्धियों (लडके-लडकी वालो) के परस्पर व्यवहार को सभा ने सरल किया और लेन-देन के भार से पडे सकोच को दूर किया। परस्पर स्नेह और उदारता, सहयोग का रास्ता खोला। ओसवालो मे दस्से-बीसे के दरम्यान भेदभाव के रिवाज को दूर किया। रिश्ता-नाता सरल किया। नाच और आतिशबाजी बन्द की और बडी-बडी बारातो को ६० रेलवे टिकट तक सीमित किया। दहेज की सीमा ५००) तक बाँध दो। चार-गोत्र की वर्जना को शादी विवाह के लिये हटाया क्योंकि विवाहादि रिश्ते-सम्बन्ध की सीमा अति सकीर्ण होती जाती थी। मंगनी आदि के लिए केवल पत्र-व्यवहार की प्रथा पर्याप्त नियत की, सम्बन्धियों के मेल-मिलाप पर, विशेषतः प्रथम बार के मिलाप पर, जो भारी खर्च और लेन-देन का रिवाज था, उसको रोका। दर्शनार्थ या उत्सव पर आये हुए रिश्तेदारो को भेट देने-दिलाने से मना किया। मिठाई बाँटने और दूध-मलाई की पैंचोदगियों को बिल्कुल सरल और कम खर्चीली बनाया; बारातो के ठहरने-ठहराने के काल को भी सीमित किया। समय पाकर सभा के यह सब प्रयास सफलता पाकर समाज के हित का कारण बने।

सभा ने अपने उत्साहपूर्ण जीवन-काल मे जैन विद्यार्थियो की आर्थिक सहायता छात्रवृत्ति आदि देकर की। इस समय भी ऐसे अनेक सज्जन विद्यमान है जिन्हे इस प्रकार की हितकर सहायता से बडा लाभ पहुचा हुआ हैं। गो सब ने इस क्रम के जारी रखने मे उचित दृष्टि जाहिर नही की है और सभा की सहायता को लौटाकर वृत्ति फण्ड को जीवित रखने का कारण नही बने हैं। उस समय की आवश्यकताओं के अनुसार सभा इस यत्न मे भी सफल हुई कि लाहौर सेन्ट्रल ट्रेनिग कॉलेज मे (तब यही इस प्रकार की सस्था थी) B T. में एक, S. A V और J A V में दो-दो जैन विद्यार्थी इसकी सिफारिश पर प्रतिवर्ष लिए जा सके। जब वर्तमान आचार्य श्री और डॉ० वुलनर जो उन दिनों Oriental College के प्रिन्सिपल और यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार थे, १९१९ मे दोनों का मिलन हुआ तो पंजाब जैन सभा के प्रयास से M A सस्कृत में जैन दर्शन (Jain Philosophy) का alternative paper नियत हो गया। जैन अभ्यासियों के हितार्थ १९१६ में लाहौर में श्री अमर जैन होस्टल का जन्म हुआ १९३० मे कुछ सज्जनो की आर्थिक सहायता और प्रभाव से इसका अपना भवन बनना शुरू हो गया। इस भवन को आधारशिला पजाब यूनिवर्सिटी के Vice Chancellor ने रखी। इसी होस्टल का ५,३८,०००) रुपये का क्लेम (claim) पुनर्वास विभाग से इन्हीं दिनों मजूर हुआ है।

सभा ने अपने उस जीवन-काल मे साधु समाज से सम्बन्धित कई प्रश्नों में भी सम्मति देने में सकोच

नहीं किया। स्व० आचार्य श्री सोहनलालजी म० का सहयोग सभा को सदैव प्राप्त रहा। जब सभा ने इसका ध्यान दीक्षादि महोत्सवों के असीम खर्च और अपव्यय की ओर आकर्षित किया तो उन्होंने सम्मति प्रकट की तथा जीवन पर्यन्त वे इसको कार्यान्वित करते रहे। सभा के विचारों को आचार्य श्री आदर से देखते रहे और आवश्यकता के समय उनसे सलाह परामर्श भी लेते रहे।

जब समस्या उपस्थित हुई तो १६४१ मे सभा ने पूर्व परम्परा के अनुसार समाज के विशेष हित के लिए और दोष को दूर हटाने के लिए साधुवर्ग के प्रश्न मे हस्तक्षेप करने मे संकोच नहीं किया। सभा के आन्दोलन करने पर कई साधुओं के सम्बन्ध मे साधु श्रावक-संयुक्त जॉच कमेटी बनी। जैन इतिहास में सम्भवत. यह प्रथम सफल प्रयास था।

बँटवारे के बाद पंजाब की राजधानी चण्डीगढ बनी है। एक विशाल सुन्दर नगर बसाया जा रहा है। स्वभावतः राजकालके सर्व विभागो का केन्द्र वहीं होगा। यूनिवर्सिटी भी वहीं होगी। हाईकोर्ट भी वहीं होगा। इस प्रकार राजकीय और सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन वहाँ केन्द्रित हो जाएगा। अनेक प्रकार की शिक्षा के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के कॉलेज आदि का विकास सरकार वहीं करेगी। इसलिए विद्यार्थियों को वहाॅ जाने और रहने की विशेष जरूरत होगी। बल्कि यूँ कहना चाहिए कि पजाबवासियो का सम्बन्ध और वास्ता चण्डीगढ़, उसके कार्यालयों, न्यायालयो और शिक्षालयो से अवश्य होगा।

इसलिए पंजाब की राजधानी चण्डीगढ मे जैनों की ओर से वहाँ के सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन में पर्याप्त भाग लेने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि वहाँ पर जैन विद्यार्थियों के लिए उनकी विशेष जरूरतों के अनुसार सुविधाओं से परिपूर्ण होस्टल बनाया जाए। जहाँ कम से-कम १०० विद्यार्थी रह सके। वहाँ पर जैनाभ्यास के लिए लायब्रेरी और रीडिंग रूम भी हो। व्याख्यान हॉल भी हो। उपाश्रय (स्थानक) भी हो जिससे साधु-साध्वी अपने भ्रमण में वहाॅ भी उपदेशामृत का प्रसार कर सकें। समय आने पर स्कूल, कालेज आदि संस्थाएँ भी हो और इन सब के लिए ज़मीन कभी से ले लेनी चाहिए।

हर्ष की बात है कि पंजाब सभा ने वह जमीन ले ली है। जमीन उस खंड में है जहाँ विद्या सम्बन्धी उस नगर की प्रवृत्तियाँ होंगी। प्रायः २४००० वर्ग जमीन सभा को सस्ते दामो पर मिली है। पंजाब सभा के प्रमुख लाला हरजसरायजी जैन, अमृतसर, ज० से० लाला छज्जूरामजी जैन, पटियाला तथा खजाँची श्री प्यारेलालजी जैन, पटियाला हैं।

श्री एस० एस० जैन सभा अमृतसर

श्री सोहनलाल जैन कन्या पाठशाला

यह अमृतसर की जैन बिरादरी द्वारा संचालित है। इसमे आरम्भ से लेकर कुल ६ श्रेणियाँ है। १,४००) रु० खर्च कर दो मकानो को मिलाकर एक नया भवन बना दिया गया है। इस शाला को और अधिक विकसित करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

श्री अमरसिंह जीवदया-भण्डार

यह संस्था लगभग ४० वर्ष से कार्य कर रही है। इस संस्था के द्वारा रोगी पक्षियों की चिकित्सा और रक्षा की जाति है। पक्षियों के लिए यह संस्था बडा ही सुन्दर कार्य कर रही है।

स्थानक

यहाँ पर दो पुराने स्थानक हैं। एक का नाम है धन्न पूजा का स्थानक और दूसरे का नाम है "मानेशाह का स्थानक।" प्रथम में स्व० आचार्य शिरोमणि श्री सोहनलालजी महाराज ने बहुत काल व्यतीत किया और दूसरे में कन्या पाठशाला है।

जैन परमार्थ फण्ड सोसायटी

इस सोसायटी की तरफ से जलयांवाला बाग के पास ही मे १,००,०००) रु० की लागत का विशाल और ऊंचा भवन बनवाया गया है। साधु-साध्वी प्राय अब इसी भवन में ही ठहरते हैं। एक ओर जलयांवाला बाग होने से भवन बहुत ही हवादार और सुखकर है। यह भवन अब स्थानक के रूप मे काम में लाया जाता है। संचालकगण अब इसमें पुस्तकालय खोलना चाहते है। अमृतसर मे पुस्तको का पुराना भण्डार है।

श्री सोहनलाल जैन धर्म प्रचारक समिति

इस समिति का प्रमुख कार्यालय यही है। इस समिति की प्रवृत्तियाँ और उनकी योजना का स्थान बनारस हिन्दू-यूनिवर्सिटी है। स्व० शतावधानी प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज की कल्पना साहित्य-प्रेम से इसका उदय हुआ। स्व० पूज्य श्री काशीरामजी महाराज शतावधानीजी के सहायक थे। इस समिति के उद्देश्य इस प्रकार हैं:—

(१) शान्त, आचार और दर्शन के सम्बन्ध मे जैन विचारों का प्रसार करना।

(२) जैन शास्त्रो और साहित्य के प्रामाणिक संस्करण प्रकाशन करना और उसे देशी तथा विदेशी भाषाओ में सब के ज्ञानार्थ प्रसारित करना।

(३) जैन मत के दर्शन, इतिहास और संस्कृति मे और उसके सम्बन्धित विषयों मे संशोधन-कार्य की व्यवस्था करना और उसे प्रकाशित करना।

(४) उपरोक्त उद्देश्यो की पूर्ति के लिये शाखाएँ, संस्थाएँ और छात्र वृत्तियाँ आदि स्थापित करना, और उनको कायम रखना।

(५) ऊपरोक्त कामों के लिये हॉस्टल, लायब्रेरी, कॉलेज, संस्थाएँ और व्याख्यान स्थान आदि के लिये और समिति के अन्य उद्देश्यो के विकास तथा उन्नति के लिये भूमि या अन्य सम्पत्ति उपार्जन करना।

इस सम्बन्ध मे यह स्पष्ट कर देना आवश्यक होगा कि इस समिति की व्यवस्था से तीन स्कालर बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी से सशोधन-कार्य के फलस्वरूप पी० एच० डी० होगए है। उनकी पुस्तकोंके विषय इस प्रकार हैं:—

(१) "जैन ज्ञानवाद"—डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री एम० ए० पी-एच० डी०।

(२) "उत्तरी भारत का राजनीतिक इतिहास सन् ६५० ई० से १३०० तक"

जैन साहित्य के आधार से डॉ० गुलाबचन्द्र चौधरी एम० ए० पी-एच० डी०।

(३) जैन दर्शन के कर्म सिद्धान्त की मनोवैज्ञानिक व्याख्या—डॉ० मोहनलाल मेहता एम० ए० पी-एच० डी०

इनके अतिरिक्त "ज्ञान सापेक्ष है" इस विषय पर पुस्तक लिखी जा रही है। यह समिति अपने ध्येय की पूर्ति के सम्बन्ध में पिछले २,५०० वर्ष से जैनों द्वारा लिखित हर प्रकार के साहित्य का जो किसी भी भाषा में है, "जैन साहित्य का इतिहास" तैयार करा रही है। इसकी तैयारी और प्रकाशन पर हजारों रुपये लगेंगे

इस समिति ने निम्न संस्थाएँ, योजनाएँ, और अन्य प्रवृत्तियाँ बनारस में आज तक स्थापित की हैं:—

(१) श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम (२) श्री शतावधानी रत्नचन्द्र लायब्रेरी—जिसका ग्रन्थ-संचय संशोधन-कार्य के

लिये और जैन साहित्य निर्माण के लिये अपूर्व है। (३) 'श्रमण' मासिक-पत्रिका (४) जैन साहित्य निर्माण-योजना (५) व्याख्यान-माला (६) स्कॉलरशिप एण्ड फैलो शिप्स।

श्री सोहनलालजी दूगड कलकत्ता वालों के २५,०००) रु० के दान से ३,७८ एकड जमीन लेने की व्यवस्था की गई है। इससे पूर्व लाला रतनचन्दजी अमृतसर निवासी और उनके भाइयों आदि की सहायता से जैना श्रम और उसकी जमीन सन् १९४५ मे वनारस मे उपार्जन की थी।

प्रज्ञाचक्षु प० सुखलालजी और श्री दलसुख भाई मालवणिया जो हिन्दू-युनिवर्सिटी मे जैन धर्माध्यापक हैं, इसके मार्गदर्शक है। इस समिति का कार्यवाहक-मण्डल इस प्रकार है:—

श्री लाला त्रिभुवननाथ, अध्यक्ष, श्री हरजसरायजी जैन मन्त्री, लाला मुन्नीलालजी खजाची। इसके सहाय-कर्त्ता पजाब भर मे फैले हुए हैं। श्री कृष्णचन्द्रजी जैन दर्शनाचार्य 'श्रमण' पत्रिका के सम्पादक हैं।

श्री एस० एस० जैन सभा, नाभा (पेप्सु)

पंजाब के स्थानकवासी मुनिराजो के लिये यह पुराना क्षेत्र है। स्थानकवासियो के यहाँ पहले काफी घर थे किन्तु समय की परिवर्तनशील परिस्थितियो को लेकर अब केवल १५-२० घर ही है। जिसमे ओसवाल और अग्रवाल दोनो शामिल है। लगभग २२ वर्ष से रुग्णावस्था के कारण पं० मुनि श्री रामस्वरूपजी महाराज यहाँ विराजमान हैं। आपके सदुपदेश से प्रभावित होकर स्थानीय जैन समाज "रामस्वरूप जैन पब्लिक हाई स्कूल" दस वर्ष से चला रही है।

इतनी छोटी समाज होते हुए भी जैन सभा के पास समाज के कार्यो के लिए चार भवन हैं, एक स्थानक है। इन भवनो मे समाज की तरफ से विभिन्न गति-विधियाँ गतिमान हो रही है।

यहाँ की जैन सोसायटी रजिस्टर्ड है। सोसायटी के श्री दीवान मोहनलालजी प्रधान, श्री ज्ञानचन्दजी ओसवाल, उपप्रधान, श्री विद्याप्रकाशजी ओसवाल, मन्त्री हैं।

स्थानीय जैन हाई स्कूल के लिये नवीन भवन का निर्माण-कार्य चालू है।

श्री श्वे० स्था० जैन सभा, फरीदकोट (रजिस्टर्ड)

फरीदकोट मेनलाइन (फिरोजपुर-भटिंडा-देहली) पर एक सुन्दर और रमणिक नगर है। सन् १९४८ से पहले यह फरीदकोट रियासत की राजधानी थी। यह स्थानकवासियो का प्रसिद्ध क्षेत्र हैं। यहाँ स्थानकवासियो के लगभग १२५ घर है जो ३० वर्ष से भी अधिक समय से जैन सभा के रूप मे ठीक ढंग से सगठित है। यहाँ की जैन सभा यहाँ के समाज को धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक क्षेत्रो में ऊँचा उठा रही है। लगभग ३० वर्ष से यहाँ जैन कन्या पाठशाला चल रही हैं जो अब (Girls High School) बन चुका है और पेप्सु सरकार से मान्य है। यहाँ दस साल तक जैन कन्या महा विद्यालय भी चलता रहा, जिसमे रत्न, भूषण और प्रभाकर की परीक्षाएँ पास कराई जाती थीं, किन्तु छात्राओं के अभाव के कारण यह विद्यालय बन्द करना पडा और इसका भवन युनिवर्सिटी की परीक्षाओ का कन्याओं के लिए केन्द्र है।

जैन सभा का मन्त्री मण्डल इस प्रकार है:—

श्री किशोरीलालजी जैन वी० ए० एल-एल० वी०, प्रधान, श्री कस्तूरीलालजी, उपप्रधान, श्री अमर-नाथजी तातेड, विद्यामन्त्री, श्री दीवानचन्दजी वोथरा, अर्थमन्त्री, श्री वृजलालजी वोथरा, महामन्त्री, श्री वावूरामजी पशौरिया, स्थानक मन्त्री, श्री रामलालजी पशौरिया, रीतिरिवाज मन्त्री।
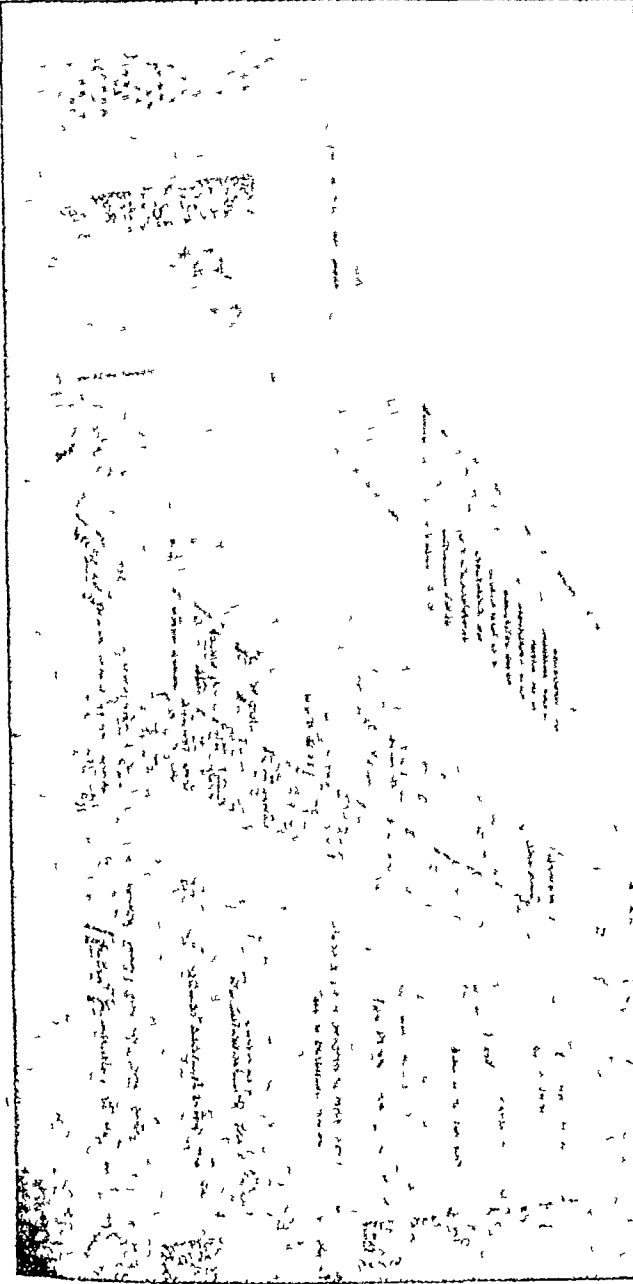
एस० एस० जैन सभा फरीदकोट

श्री किशोरीलालजी जैन सभा के प्रधान और यहाँ के प्रसिद्ध कार्यकर्ता हैं। श्री मुंशीरामजी जैन बी० ए० बी० टी०, जो गवर्नमेंट हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक हैं, प्रोफेसर हंसराजजी जैन, एम०ए०, श्री रिखबदासजी जैन बी० ए० बी० टी०, श्री विद्यारतन बी०ए० एम०ए०बी०, श्री दीवान चन्दजी जैन, बी० ए० बी० टी० सभा की विभूति हैं। श्री रोशनलालजी बी० ए० बी० टी० विशेष शिक्षा के लिए लन्दन हो आये हैं। श्रीमती कमला जैन बी० ए० बी० टी० महिला जाति की गौरव हैं। श्री किशोरीलालजी रक व श्री ज्ञानचन्दजी सर्राफ सभा के स्तम्भ हैं।

यहाँ महावीर जयन्ती उत्सव निरन्तर ३० वर्षों से धूमधाम से मनाया जाता है, जो कि फरीदकोट के प्रसिद्ध मेलों में गिना जाता है। महावीर जयन्ती और संवत्सरी की हमेशा सार्वजनिक छुट्टी होती आई है। संवत्सरी के दिन सरकारी आज्ञा से कसाई खाने, मीट मार्किट और बूचड़खाने बन्द रहते हैं।

जैन सभा की सम्पत्ति इस प्रकार है :—

(१) विशाल स्थानक (बरकतराम जैन हॉल के नाम से), (२) महावीर जैन भवन, (३) जैन गेस्ट हाउस, (४) स्कूल की दो बिल्डिंगें (५) चार दुकानें और एक जगह तथा (६) भूमि २१ एकड़

उपरोक्त सम्पत्ति के दाताओं के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं —स्वर्गीय बरकत रामजी बोथरा, स्वर्गीय बसतीमलजी बोथरा, स्वर्गीय मुंशीरामजी राका, स्वर्गीय देवीचन्दजी बोथरा, स्वर्गीय श्रीमती बाई वीरो बोथरा, स्वर्गीय श्रीमती चन्दोबाई बोथरा आदि।

जैन सभा, फरीदकोट सरकारी तथा गैर-सरकारी क्षेत्रों में प्रसिद्धि के साथ-साथ प्रतिष्ठा लिये हुए हैं।

श्री एस० एस० जैन सभा मालेर कोटला (पेप्सू)

उक्त सभा का चुनाव प्रतिवर्ष होता है। बिरादरी में सम्प अच्छा है। यहाँ चार सन्त १४-१५ साल से ठाणापति हैं। दो सौ घरों की आबादी है। निम्न पदाधिकारी हैं :—
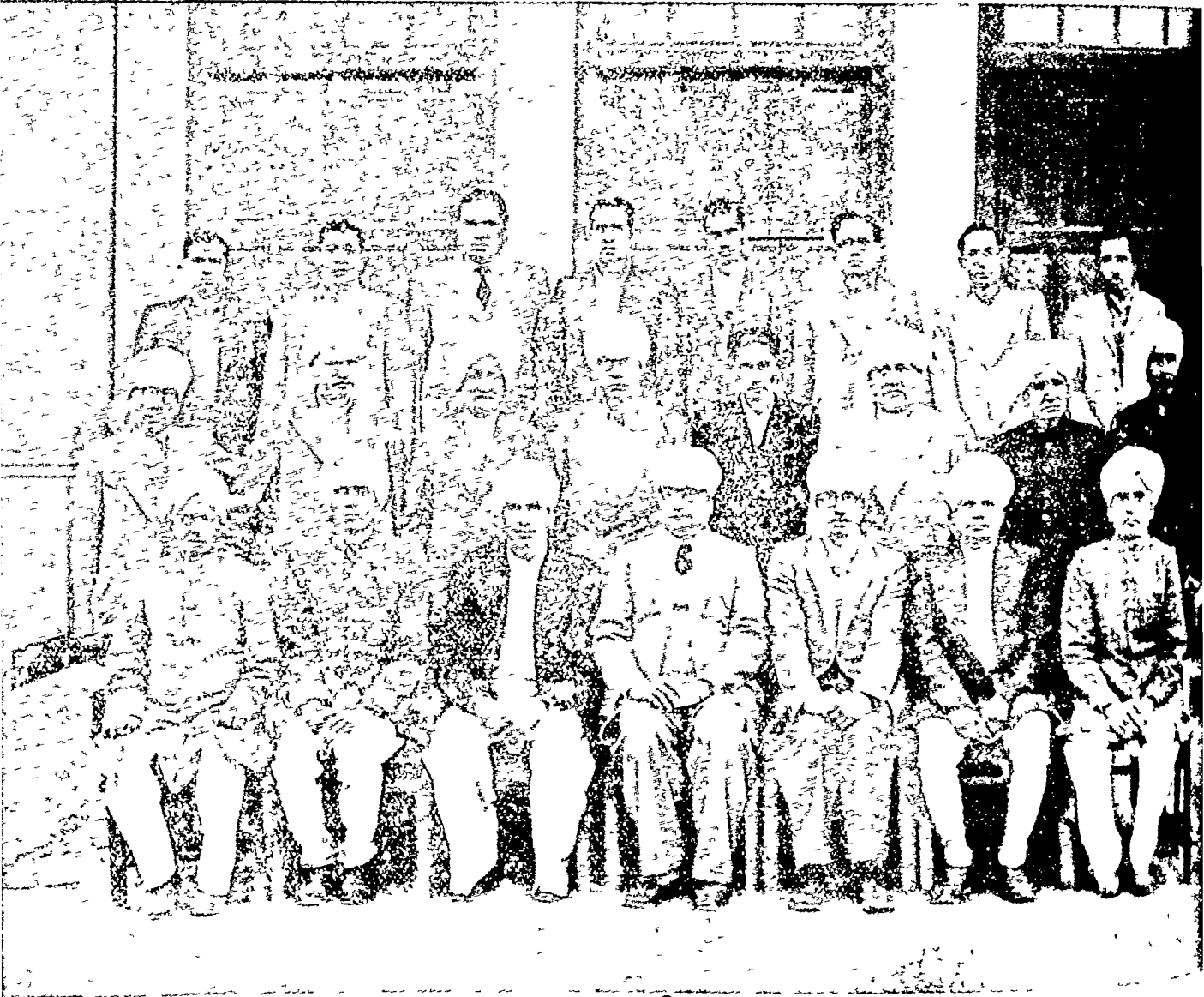
जैन सभा बिल्डिंग-फरीदकोट
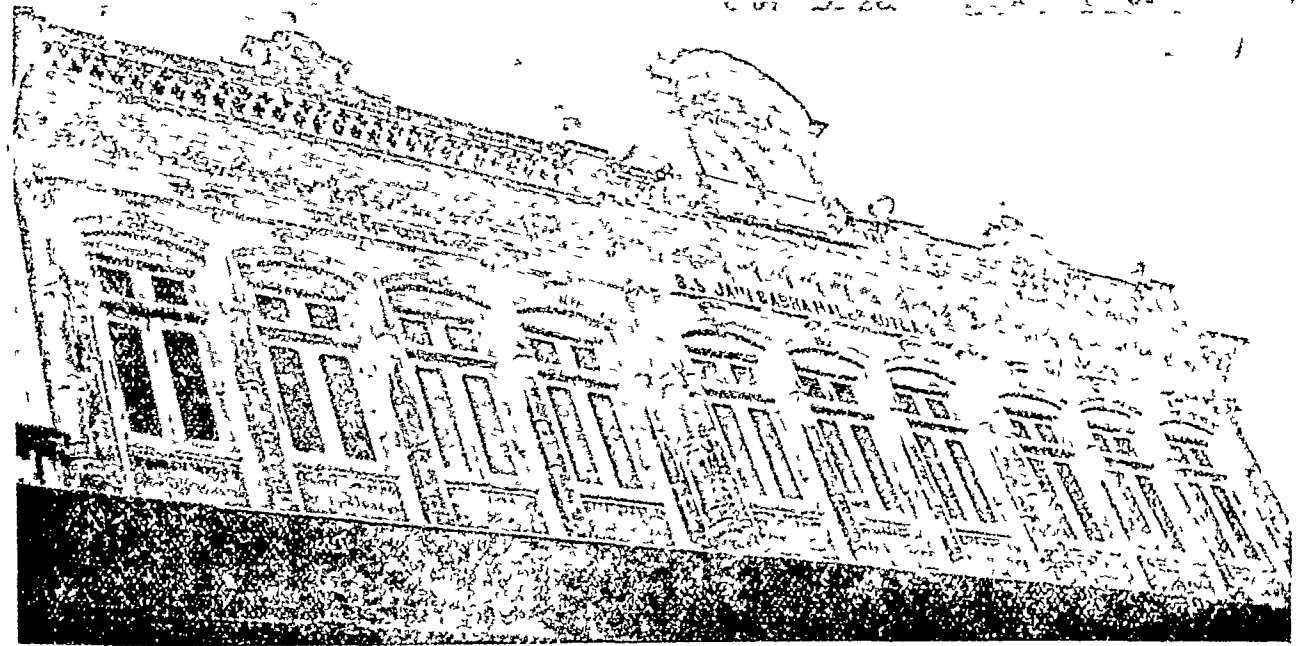
एस० एस० जैन भवन मालेरकोटला
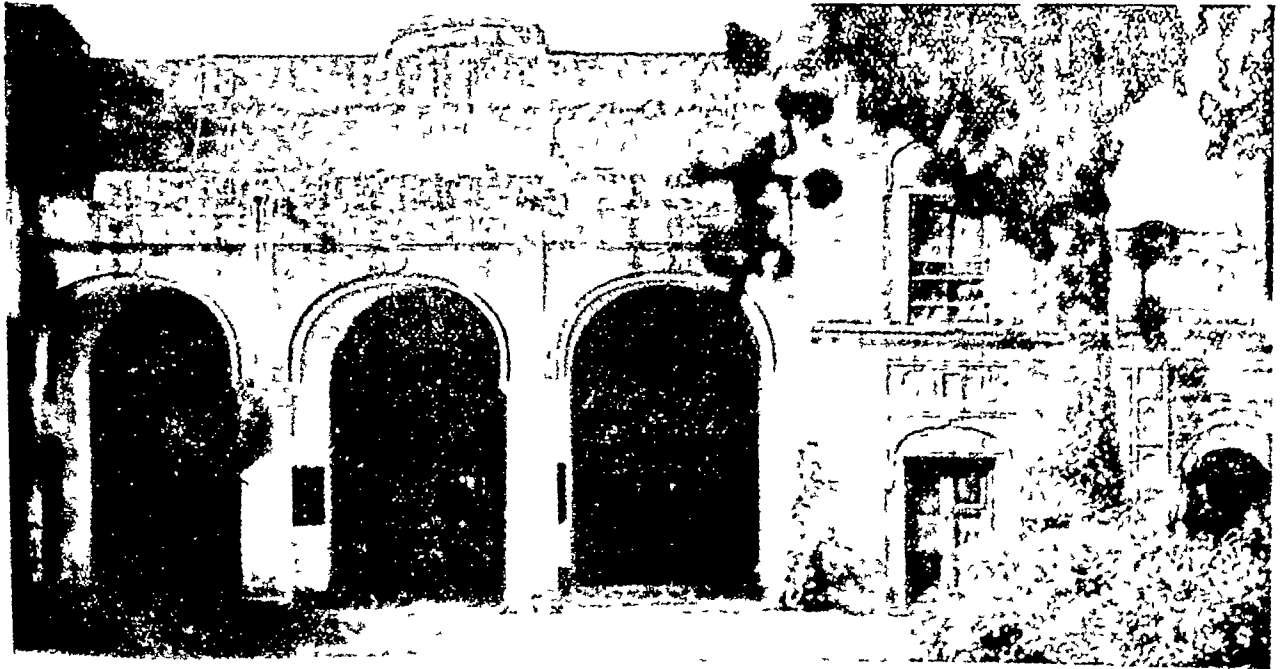
एस० एस० जैन गर्ल्स हाई स्कूल मालेरकोटला

लाला अतरचन्दजी जैन प्रधान, ला० टेकचन्दजी जैन उपप्रधान, ला० देवदयालजी जैन मन्त्री, लाला खेमचन्दजी जैन, बी० ए० एल० एल० बी० उपमन्त्री लाला गौहरियामलजी जैन बज़ाज खजान्चीजी, ला० हरीचन्द ओसवाल जैन, ऑडीटर ।

श्री एस० एस० जैन गर्ल्स हाई स्कूल चल रहा है । जिसकी व्यवस्था ला० टेकचन्दजी जैन, प्रधान, लाला रतनचन्दजी जैन भालेरी, उपप्रधान, और ला० जसवन्तराजजी जैन मन्त्री करते हैं ।

जैन जनरल स्टोर का कार्य बा० बनारसीदासजी मित्रा, मैनेजर, बा० देवराजजी जैन, ऑडीटर, ला० पवनकुमारजी ओसवाल जैन खजान्ची और मिस० सुशीला जैन एम० ए० बी० टी० प्रिंसिपल करते हैं ।

एस० एस० जैन युवक सभा–का कार्य ला० रतन चन्दजी जैन भालेरी, प्रधान, ला० ज्ञानचन्दजी जैन बज़ाज, उप प्रधान, बा० प्रेमचन्दजी जैन भालेरी, मन्त्री, मि० ओमप्रकाश जी जैन, उप मन्त्री और ला० दयाराम जो खुनामी खजान्ची और स्टोर कीपर मिलकर करते हैं ।

एस० एस० जैन गर्ल्स हाई स्कूल, मालेरकोटला

श्री स्थानकवासी जैन सभा, मेरठ

यह एक नवनिर्मित सभा है । इस संगठित संगठन के निर्माण मे पश्चिमी पजाब की वि भिन्न बिरादरियों का मिलन हुआ है । इससे पहले कि जैन बिरादरी, मेरठ का परिचय दे—उसमे सम्मिलित बिरादरियो का संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक हो जाता है जिनको कि देश विभाजन के कारण पाकिस्तान से हिन्दुस्तान आना पडा था । जो-जो बिरादरियाँ मेरठ में आकर एकत्रित हुईं उनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है :—

१. रावलपिण्डी की जैन-बिरादरी—पचास वर्ष पूर्व ही इस बिरादरी का स गठन हुआ था। यह बिरादरी बडी ही सुसंगठित, प्रभावशाली, धर्मज्ञ और साधु-मुनिराजो की अनन्य भक्त तथा सेवा करने का आदर्श उपस्थित करने वाली हुई है । यहां के लोगो की आजीविका का मुख्य साधन जमींदारी, सर्राफी, साहूकारी और कपडे आदि का था । सन् १९१२ में मुनि श्री धनीरामजी महाराज की प्रेरणा से "श्री सुमति जैन मित्र मण्डल की स्थापना हुई । इस मण्डल के प्रयत्न से जैन कन्या पाठशाला की स्थापना हुई । श्री दीवानचन्दजी तथा श्री मुन्नी लालजी के प्रयत्नों से इस मंडल के पास ४०,०००) रु० एकत्रित हो गए जिनसे अनेक गतिविधियाँ–जैन औषधालय, महावीर जैन लायब्रेरी आदि स्थापित हुईं । श्री जैन सुमति ट्रेक्टमाला प्रारम्भ की गई, जिनसे मांस निषेध आदि

का प्रचार किया गया। स्व० पूज्य श्री खजानचन्दजी महाराज के सदुपदेश से श्री महावीर जैन माडर्न हाई स्कूल स्थापित किया गया। इस हाई स्कूल के लिए लाखों का फण्ड एकत्रित हो गया था। यह हाई स्कूल कॉलेज का रूप धारण करने ही वाला था कि देश का विभाजन हो गया।

इस प्रकार रावलपिण्डी की जैन बिरादरी ने समाज और धर्म की उन्नति के लिए अनेक प्रयत्न किये। श्री पिंडीदासजी जैन बी० ए०, श्री रामचन्द्रजी, श्री धर्मपालजी, श्री शादीलालजी आदि अनेक योग्य कार्यकर्ताओं का इस बिरादरी को नेतृत्व मिला। अब इस बिरादरी का दो तिहाई भाग श्री जैन बिरादरी, मेरठ में सम्मिलित होकर वहाँ की बिरादरी को उन्नतशील बनाने मे सहयोग दे रहा है।

स्यालकोट की जैन बिरादरी—यह बिरादरी पंजाब की सबसे बड़ी बिरादरी थी जो अत्यन्त सुसगठित, प्रभावशाली, धर्मज्ञ तथा व्यापार में अतिकुशल थी। साधु-सतो की सेवा-सुश्रूषा तथा धार्मिक कार्यों में बिरादरी ने प्रशंसनीय कार्य किए। श्री जैन कन्या पाठशाला और औषधालय वहाँ की उन्नत सस्थाएँ थी। देश विभाजन के कारण यह बिरादरी भारत के अनेक नगरो मे अवस्थित हो गई। अनुमानत ४० घर मेरठ शहर मे आकर बसे हैं। इन बिरादरियों के अलावा अन्य नगरों की जैन बिरादरियाँ मेरठ मे आकर बस गई हैं, जिससे मेरठ की जैन-बिरादरी का विराट् स्वरूप बन गया हैं।

जैन बिरादरी, मेरठ—यहाँ की जैन बिरादरी ने "जैन नगर" निर्माण करने में अपनी पूरी शक्ति लगा दी है। यह जैन नगर मेरठ शहर स्टेशन के निकट तथा शहर व सद्र के समीप रमणीय स्थान पर श्री जैन पुरुषार्थी कोओपरेटिव हाउसिग सोसाइटी के परिश्रम से बसाया जा रहा है। अनुमानत· २५० घर इस नगर मे बसेगे। इस जैन नगर मे विशाल श्री जैन उपाश्रय का कुछ भाग बन चुका है। श्री जैन महिला उपाश्रय, श्री जैन औषधालय, पुस्तकालय तथा स्कूल आदि संस्थाओं के प्रारम्भ करने की योजनाएँ विचारणीय हैं।

इस सभा की कार्यकारिणी में १३ सदस्य है। श्री मुन्नालालजी अध्यक्ष, श्री चिरजीलालजी मन्त्री, और श्री अतरचन्दजी कोषाध्यक्ष हैं।

यह सभा मेरठ में जैन समाज में संगठन, प्रेम तथा उन्नति लाने के लिए प्रयत्नशील है। प्रतिवर्ष महावीर जयन्ती, पर्यूषण पर्व तथा संवत्सरी पर्व के अतिरिक्त अन्य छोटे-मोटे उत्सवों को सोत्साह मनाकर समाज में संगठन तथा सामाजिक और धार्मिक उन्नति करने में संलग्न हैं।

रामा मण्डी (पंजाब-पेप्सु)

यहाँ पर अर्से से एस० एस जैन सभा क़ायम है। जिसके अधिकारी अध्यक्ष, लाला रौनकलालजी जैन, उपाध्यक्ष, लाला करमचन्दजी जैन, मन्त्री, लाला बनारसीदासजी तातेड जैन, उपमन्त्री लाला रूढ़चन्द्रजी जैन और खजान्ची—लाला कुन्दनलालजी जैन हैं।

इन सज्जनों ने तन-मन-धन से जैन समाल की बहुत अधिक सेवाएँ की है और आप लोगों के ही प्रयत्नों से इस समय रामामण्डी मे समाज की तीन इमारते हैं।

(१) इमारत—सन् १६३० मे खरीद कर सन् १६३३ में बनाई।

(२) इमारत—सन् १६४७ में खरीदकर सन् १६४६ में बनवाई।

(३) इमारत—सन् १६५५ में खरीद की।

श्री श्वे० स्था० जैन संघ, बामनौली

यहाँ के सघ के प्रमुख कार्यकर्ता श्री हरदेवसहायजी श्री रामस्वरूपजी, मैनेजर श्री जैन पाठशाला, श्री

सुजानसिहजी, श्री त्रिलोकचन्दजी और श्री उगरसेनजी हैं।

यहाँ एक जैन पाठशाला प्राइमरी शिक्षण की है जो गवर्नमेन्ट से रिकग्नाइज्ड है। इसके मेनेजर श्री रामस्वरूपजी जैन हैं। आप हिकमत का कार्य करते हैं। और साधु-साध्वियों की सेवा हार्दिक भाव से करते हैं।

श्री श्वे० स्था० जैन संस्थाएँ एलम (मुजफ्फ़र नगर)

स्थानीय स्था० समाज की सतत प्रेरणा से संचालित निम्न सस्थाएँ सुचारु रूपेण कार्य कर रही हैं—

जैन स्थानक—तीन मंजिला है। व्याख्यान के लिए दो हॉल हैं। भव्य भवन है।

श्री ऋषिराज जैन पुस्तकालय—के संस्थापक हैं श्री १००८ श्री श्यामलालजी महाराज। आपने य कई चातुर्मास कर समाज मे अच्छी जागृति की। पुस्तकालय के पूर्वाध्यक्ष श्री मूलचन्दजी जैन थे। पुस्तकालय करीब १५०० पुस्तके हैं। वर्तमान में इसका संचालन नवयुको के हाथ में है। इसके मुख्य कार्यकर्ता श्री मोखमदा जी, इन्द्रसेनजी आदि हैं। स्वाध्याय नियमित रूप से होता है।

श्रावक संघ—श्री स्था० श्रावक संघ की भी स्थापना प्रचारक श्री माधोसिहजी की प्रेरणा से हो गई है आपके प्रभावोत्पादक भाषण का जैन उज्जैन जनता पर अच्छा असर पडा। श्री चतरसेनजी अध्यक्ष श्री मोखमदि जी उपाध्यक्ष, श्री जौहरीमल जी मन्त्री, श्री पूर्णमलजी उप-मन्त्री और श्री ज्योतिप्रसादजी कोषाध्यक्ष सेवा क रहे हैं।

श्री जैन नवयुवक मण्डल, लायब्रेरी—कान्धला निवासी श्री श्रीमालजी तथा श्री महेन्द्रकुमारजी अथक परिश्रम से प्रथम कान्धला मे मण्डल कायम हुआ। बाद में इसकी शाखाएँ पडासौली और एलम में काय की गई। इसी मण्डल की देख-रेख मे एक लायब्रेरी भी एलम में १५ जून सन् १६५१ मे कायम की गई जिस अध्यक्ष श्री मोखमदासजी तथा मन्त्री श्री इन्द्रसेनजी नियुक्त हुए। आप दोनों के सुप्रबन्ध से कई पाठक नित्य प्र लाभ लेते है। श्री गरीबदासजी अपना अधिकांश समय इसकी सेवा मे देते हैं।

जैनपाठशाला—इस पाठशाला की स्थापना १ जुलाई सन् १६४४ मे हुई थी। इसमे जैन शिक्षा विशे रूप से दी जाती है। लगभग ८० छात्र विद्याभ्यास कर रहे है। पहले इसका सुप्रबन्ध न होने से नवयुवक मण्डल इसका प्रबन्ध अपने हाथ मे लिया। सन् १६५३ मे इसकी प्रबन्ध कार्यकारिणी सभा बनाई गई जिसके श्री चतरसेन अध्यक्ष, श्री जोहरीमलजी, उपाध्यक्ष, श्री मोखमदासजी, मन्त्री, इन्द्रसेनजी, उपमन्त्री और श्री ज्योतिप्रसाद कोषाध्यक्ष है।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, नाथद्वारा

मेवाड में यह नगर तीर्थ स्थान के रूप मे समस्त भारत में प्रसिद्ध है। स्थानीय श्रावकसंघ व्यवस्थित और सुयोजित है। स्थानीय श्रावक सघ के श्री छगनलालजी मुन्शी अध्यक्ष, श्री चौथमलजी उपाध्यक्ष और श्री कन्हैय लालजी सुराणा मन्त्री हैं। स घ में प्रेम का सम्बन्ध अच्छा है।

धार्मिक कार्यों के लिये संघ के पास एक पक्का स्थानक है। इसी स्थानक भवन मे सभी प्रकार की धार्मि प्रवृत्तियाँ सम्पन्न की जाती हैं।

स्थानीय समाज में नव चेतना लाने के लिये यहाँ एक "जैन सेवा समिति" नाम की स स्था है जिस देखरेख में लडकों तथा लडकियों के लिये अलग-अलग पाठशालाएँ चलती हैं। इसी समिति की देखरेख में 'मोदेर में एक "महावीर जैन पाठशाला" चलती है जो आज लगातार दस वर्ष से चल रही है। यह पाठशाला पाथ बोर्ड की उच्चतम परीक्षाओं के लिए केन्द्र भी है।

यहाँ स्थानीय संघ की तरफ से वाचनालय तथा पुस्तकालय भी चलाया जाता है। स्थानीय संघ की तरफ से "विधवा सहायक-फंड" भी एकत्रित किया गया है जिसके द्वारा आस-पास की विधवा बहिनों की सहायता की जाती है। "श्री जैन रत्न दया फण्ड" द्वारा समय-समय पर दया-दान के लिये लोगों को प्रोत्साहित किया जाता है। इसके मुख्य संचालक वकील श्री मन्नालालजी सिसोदिया है।

स्थानीय मुख्य कार्यकर्ता श्री चौथमलजी सुराणा द्वारा समयोचित दान होता रहता है। यहाँ स्थानकवासी जैन समाज के ७० घर है।

स्थानकवासी जैन समाज के विद्वान्

किसी भी समाज के विद्वान् और साहित्यकार उस समाज के गौरव होते हैं क्योंकि इन्ही विद्वानो के द्वारा समाज का बौद्धिक विकास गतिमान होता है। बौद्धिक विचार धारा समाज के सर्वांगीण क्षेत्र को खींच-खींच कर सुन्दर तम बनाने का प्रयत्न करती है। हमारे समाज मे साधु-साध्वियों की अन्य समाजों की अपेक्षा कुछ अधिकता होने से विद्वानों की इतनी कमी खटकती नहीं है किन्तु जिस गति से समाज को प्रगति करनी चाहिये थी उस गति से समाज प्रगति इसलिए नहीं कर पाया कि हमारे समाज में विद्वानो की कमी है। हमारी समाज मे जो कुछ भी इने-गिने विद्वान् हैं वे या तो कॉन्फ्रेन्स की तरफ से स्थापित किए गये जैन ट्रेनिंग कॉलेज के हैं अथवा श्री गोदावत जैनाश्रम, छोटी सादडी, श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर, श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम बनारस, सेठिया जैन विद्यालय, बीकानेर, जैनेन्द्र गुरुकुल, पचकूला, श्री वीराश्रय, ब्यावर आदि के हैं। इनमें से बहुत सारे विद्वान् ऐसे भी है जो समाज के उदार श्रीमानों द्वारा दी गई छात्रवृत्ति से तैयार हुए है। इन सब विद्वानो के नाम हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे है जो समाज की विभिन्न संस्थाओं में कार्य करते हुए पत्र-सम्पादन करते हुए, राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में, सामाजिक क्षेत्रो में अथवा व्यावसायिक कार्य करते हुए समाज मे बौद्धिक चेतना जागृत कर रहे हैं:—

डॉ० दौलतसिंहजी कोठारी एम० ए० पी० एच डी०, डॉ० अमृतलाल सवचन्द गोपाणी एम० ए० पी० एच डी०, डॉ० इन्द्रचन्द्रजी शास्त्री एम० ए० पी० एच डी०, डॉ० मोहनलाल मेहता एम० ए० पी० एच डी०, डॉ० अमोलकचन्दजी सुरपुरिया, एम० ए० पी० एच डी० पूना, श्री कृष्णकान्तजी, एडवोकेट, श्री रतनचंदजी जैन लुधियाना, प० श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री आचार्य।

प० दलसुख भाई मालवणिया 'न्यायतीर्थ', प० हर्षचन्द्रजी, पं० कपूरचन्दजी डोसी, पं० खुशालचन्द जगजीवन करगथला, एन० के० गांधी, प० शांतिलालजी व० सेठ, पं० प्रेमचन्दजी लोढ़ा, प० दाऊलालजी वैद्य प० जोधराजजी सुराणा, पं० नन्दलालजी सुरपुरिया, वकील सज्जनसिंहजी चौधरी, पं० केशरीमलजी जैन, प० चिम्मनसिंहजी लोढ़ा, पं० पूर्णचन्द्रजी दक, प० रोशनलालजी चपलोत बी० ए० एल० एल० बी०, प० श्यामलालजी, प० बालचन्दजी मेहता एम० ए० बी० टी० (जयपुर) श्री जालमसिंहजी मेडतवाल, एडवोकेट ब्यावर श्री मोतीलालजी श्रीमाल, श्री मणीलाल शिवलालजी शेठ, श्री प० त्रिलोकचन्दजी जैन, वकील बद्रीलालजी पोरवाल, श्री गोटीलालजी सेठियां, श्री रतनलालजी नलवाया, प० घेवरचन्दजी बाठिया, प० जसवंतराजजी, पं० लालचन्दजी मुणोत, प० चांदमलजी जैन।

प० महेन्द्रकुमारजी जैन, प० रतनलालजी संघवी, पं० रोशनलालजी जैन पं० कन्हैयालालजी दक श्री नानालालजी मट्टा, श्री केशरीकिशोरजी, श्री हीरालालजी टांटरिया, श्री समरथमलजी गोम्बरू, श्री रमेशचन्द्रजी राका।

श्री लालचन्दजी कोठारी, पं० लक्ष्मीलालजी चौधरी, पं० बसन्तीलालजी नलवाया, पं० धर्मपालजी मेहता, पं० चन्दनमलजी कोचर (बनवट) श्री अमृतलाल झवेरचन्द्र मेहता, पं० मुनीन्द्र कुमारजी भंडारी, पं० अम्बालालजी नागौरी, श्री भोजराजजी बाफणा, श्री मणीन्द्रकुमारजी, श्री चंद्रकांतजी, श्री बसन्तीलालजी लोढ़ा, प० हर्षचन्द्रजी बडोला, पं० समर्थसिंहजी भडकत्या श्री चंपालालजी कर्णावट, एम० ए० श्री रिखबराजजी कर्णावट, एडवोकेट, श्री शान्तिचंद्रजी मेहता। पं० शोभाचन्द्रजी भारिल्ल स्था० जैन धर्म के साहित्य क्षेत्र में बड़ा योगदान दे रहे हैं। पं० बद्रीनारायणजी शुक्ल और पं० चन्द्रभूषणजी त्रिपाठी ब्राह्मण कुल में जन्म लेने पर भी परीक्षा बोर्ड पाथर्डी मे बहुत सेवा दे रहे हैं।

भारतव्यापी जैन संस्थाऍ

१. श्री त्रिलोकजैन पाठशाला पाथर्डी।
२. ,, अमोल रत्न जैन सिद्धान्तशाला पाथर्डी
३. ,, रत्न जैन कन्या-पाठशाला पाथर्डी
४. ,, शान्तिनाथ जैन पाठशाला कोपरगांव
५. ,, अमोल जैन पाठशाला कडा
६. ,, जैन सिद्धान्तशाला अहमदनगर
७. ,, जैन कन्या पाठशाला अहमदनगर
८. ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला दावडी
९. ,, महावीर जैन पाठशाला बोरी
१०. ,, अमोल जैन बोर्डिंग धूलिया
११. ,, ओसवाल जैन बोर्डिंग धूलिया
१२. ,, आदर्श जैन विद्यालय बेलापुर
१३. ,, शांतिनाथ जैन पाठशाला कान्हूर
१४. ,, महावीर जैन पाठशाला सोनई
१५ ,, नेमीनाथ जैन ब्रह्मचर्याश्रम चाँदवड
१६. ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला सिकन्द्राबाद
१७. ,, महावीर स्था० विद्यालय जालना
१८. ,, कानजी शिवाजी ओसवाल, जैन बोर्डिंग हाउस जलगांव
१९. ,, जैन धार्मिक पाठशाला खरवण्डी
२०. ,, नारायण, तुलसीदास संस्कृत पाठशाला पंचवटी
२१. ,, महावीर जैन विद्यालय औरंगाबाद
२२. ,, पद्माबाई जैन पाठशाला भुसावल
२३. ,, रत्न जैन पाठशाला बोदड
२४. ,, वर्द्धमान जैन पाठशाला वरणगाँव
२५. श्री महावीर जैन पाठशाला लासलगांव
२६. ,, महावीर जैन पाठशाला जामखेड
२७. ,, जैन ओसवाल बोर्डिंग नासिक
२८ ,, जैनपाठशाला रविवारपेठ नासिक
२९. ,, आनन्द स्था० जैन पाठशाला येवला
३०. ,, रत्नानन्द जैन विद्यालय राहू
३१. ,, वर्द्धमान जैन पाठशाला इगतपुरी
३२. ,, स्था० जैन पाठशाला मालेगांव
३३. ,, महावीर जैन पाठशाला लातूर
३४. ,, महावीर जैन पाठशाला जुन्नर
३५. ,, महावीर जैन पाठशाला घोटी
३६. ,, महावीर जैन पाठशाला फत्तेपुर
३७. ,, शान्तिनाथ जैन पाठशाला घोडनदी
३८. ,, अमोल जैन सिद्धान्त शाला घोडनदी
३९. ,, फत्तेचन्द जैन विद्यालय चिचवड
४० ,, ज्ञानोदय जैन पाठशाला जामनेर
४१. ,, महावीर जैन पाठशाला लोनावला

कर्नाटक

१. ,, हस्तीमल जैन पाठशाला शोरापुर
२. ,, जैन रत्न पाठशाला रायपुर
३. ,, महावीर जैन स्कूल सिन्धनूर
४. ,, महावीर जैन विद्यालय कोप्पल
५. ,, पार्श्वनाथ हिन्दी जैन पाठशासा हुबली

सी० पी०

१. ,, रत्नानन्द जैन पाठशाला रालेगांव

२. श्री महावीर जैन पाठशाला कारंजा
३. ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला बडनेरा
४. ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला अमरावती
५. ,, देवआनंद जैन विद्याभवन राजनांदगांव
६. ,, वर्द्धमान जैन पाठशाला बुलढाणा
७. ,, जैन कन्या पाठशाला द्रुग

मध्यभारत

१ ,, धर्मदास पूनमचन्द जैन पाठशाला रतलाम
२. ,, महावीर जैन पाठशाला महिदपुर
३. ,, मेहता सार्वजनिक जैन बाल-पाठशाला खाचरौद
४. ,, ऋषि जैन पाठशाला नागदा
५. ,, महावीर पाठशाला डग
६. ,, जैन विद्यामन्दिर आष्टा
७. ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला पंचपहाड
८. ,, धर्मदास जैन रत्न स्था० पा० उज्जैन
६. ,, श्वे० स्था०जैन पाठशाला पेटलावर
१०. ,, कृष्ण ब्रह्मचर्याश्रम बरौली
११. ,, अमोल जैन पाठशाला मगरदा
१२. ,, महावीर जैन पाठशाला रावटी
१३. ,, धर्मदास जैन विद्यालय थान्दला
१४. ,, वर्द्धमान जैन विद्याभवन मन्दसौर
१५. ,, महावीर जैन श्रमण वि० मन्दसौर
१६. ,, चेनराम जैन विद्याभवन मन्दसौर
१७. ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला गंगाधर
१८. ,, महावीर स्था० जैन पाठशाला धार स्टेट
१६. ,, लू कड जैन शान्ति कन्या पाठशाला इन्दौर
२० ,, विट्ठलजी चौधरी जैन पाठशाला रामपुरा
२१ ,, वर्द्धमान जैन पाठशाला पपिलोदा
२२. ,, श्वे० स्था० जैन ज्ञा० व० पन्नालाल मेहता पाठशाला करजू
२३ ,, जैन पाठशाला पैंभी
२४ ,, आत्मानन्द वर्द्ध० स्था० जैन पाठशाला शाजापुर
२५. श्री जैन पाठशाला, नगरी
२६. ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला, रायपुर
२७. श्री महावीर जैन पाठशाला, सिगोली
२८ ,, वर्द्धमान जैन पाठशाला, नारायणगढ

राजस्थान

१. ,, विजय जैन पाठशाला, सनवाड
२. ,, शान्ति जैन पाठशाला, पाली
३. ,, जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़
४. ,, महावीर जैन विद्यालय, खीचन
५. ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला, नोरवामण्डी
६. ,, जैठ श्वे० स्था० जैन पाठशाला, डेह
७. ,, श्रमणोपासक जैन धार्मिक रात्रि पाठशाला, अजमेर
८. ,, नानक जैन छात्रालय, गुलाबपुरा
६. ,, महावीर जैन पाठशाला, राणावास
१० ,, जवाहिर विद्यापीठ, कानौड
११. ,, ,, जैन कन्या पाठशाला, कानौड
१२. ,, वर्द्ध० जैन पाठशाला, कुँवारिया
१३. ,, श्वे० स्था० जैन शिक्षण संघ (संस्था), उदयपुर
१४. ,, शम्भूमल गंगाराम जैन पाठशाला, जैतारण
१५. ,, जैन गुरुकुल शिक्षण संघ, ब्यावर
१६. ,, मुथा जैन विद्यालय, बलून्दा
१७. ,, जैन पाठशाला, जऊ्रू
१८ ,, महावीर मिडिल स्कूल, बगडी
१६. ,, सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था, बीकानेर
२० ,, श्वे० स्था० जैन शिक्षण संघ, केकड़ी
२१ ,, लौंकाशाह जैन गुरुकुल, सादडी
२२. ,, मुथा जैन पाठशाला, बडी सादडी
२३ ,, वर्द्ध० जैन पाठशाला, कोठारिया
२४ ,, महावीर जैन पाठशाला, बम्बोरा
२५. ,, ल० क० स० इ० जैन कन्या पाठशाला, बीकानेर
२६. ,, जैन कॉलेज, बीकानेर
२७. ,, महावीर जैन हिन्दी स्कूल, देवगढ़
२८ ,, जवाहर विद्यापीठ, भीनासर
२६. ,, गोदावत जैन गुरुकुल, छोटी सादडी
३०. ,, महावीर जैन विद्यालय, डूंगला
३१. ,, सुबोध जैन हाई स्कूल, जयपुर

३२. श्री वर्द्धमान जैन पाठशाला, मोलेला
३३. ,, फलौदी पार्श्वनाथ महाविद्यालय
३४. ,, श्वे० जैन पाठशाला, भीलवाडा
३५ ,, महावीर जैन पाठशाला, नाथद्वारा
३६. ,, जैन कन्या पाठशाला, कोटा
३७. ,, वर्द्ध० जैन पाठशाला, कोटा
३८. ,, महावीर जैन पाठशाला, चिकारडा
३९. ,, वर्द्धमान जैन कन्या पाठशाला, जोधपुर
४० ,, वीर जैन विद्यालय, अलीगढ
४१ ,, जैन बोर्डिंग, कुचेरा
४२. ,, गुलाबकँवर ओसवाल कन्या पाठशाला, अजमेर
४३. ,, वर्द्धमान स्था० जैन पाठशाला, राजगढ
४४. ,, दिवाकर जैन बोर्डिंग, किला चितौडगढ
४५ ,, जिनेन्द्र ज्ञानमन्दिर, सिरियारी
४६ ,, शान्ति जैन पाठशाला, अलाय
४७ ,, जैन सभा पाठशाला, बून्दी
४८. ,, वर्द्धमान जैन पाठशाला, रामगंज मण्डी
४९ ,, कुन्दन जैन सिद्धान्तशाला, ब्यावर
५०. ,, महावीर जैन मण्डल, आवर
५१. ,, जैन जवाहिर मण्डल, देशनोक
५२ ,, महावीर ब्रह्मचर्याश्रम, देवगढ़-मदारिया
५३ ,, महिला समिति, उदयपुर
५४. ,, जैन कन्या पाठशाला, बडी सादडी
५५. ,, जीवन जैन कन्या पाठशाला, बीकानेर
५६ ,, वर्द्धमान स्था० जैन पाठशाला, नसीराबाद
५७. ,, फूलाबाई जैन श्रमणोपासक पाठशाला, अजमेर
५८ ,, जैन कन्या पाठशाला, वल्लभनगर
५९. ,, वर्द्ध० स्था० जैन धार्मिक शिक्षण संघ, गंगापुर
६०. ,, स्था० जैन पाठशाला, कंजाडी
६१. ,, विजय जैन पाठशाला, सरवाड
६२. ,, जैन इन्द्र पाठशाला, कपासन

गुजरात-काठियावाड़

१. श्री महावीर जैन यु०, खम्भात
२. ,, धर्मदास जैन वि०, लीवडी
३ ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला, कलोल
४ ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला, रामनगर
५ ,, स्थानकवासी जैन वि०, जेतपुर
६. ,, स्थानकवासी जैन पाठशाला, अहमदाबाद
७. ,, श्वे० स्था० जैन पा० साबरमती
८. ,, श्वे० स्था० जैन पा०, प्रांतिज
९. ,, स्थानकवासी जैन पाठशाला, बोटाद

पंजाब

१. ,, जैन कन्या पाठशाला, लुधियाना
२ ,, पू० काशीराम जैन कन्या वि०, अमृतसर
३. ,, पू० काशीराम जैन गर्ल्स हाई स्कूल, अम्बाला सिटी

पेप्सु

१. ,, जैन कन्या म०, फरीदकोट
२. ,, जीतराम जैन कन्या वि०, रोहतक

उत्तर प्रदेश

१. ,, राजधारी त्रिपाठी स० वि०, खैराँटी
२ ,, पार्श्वनाथ वि० का० हि० वि०, बनारस

मद्रास

१ ,, जैन महिला विद्यालय साहूकार पैंठ, मद्रास
२. ,, एम० एस० जैन बोर्डिंग होम, मद्रास
३ ,, ताराचन्द गेलडा जैन बोर्डिंग, मद्रास
४. ,, श्री जैन स्कूल, कुन्नुर

नोट :—जिन-जिन संस्थाओं का विशेष वर्णन मिल सका है, उन्हें अगले पृष्ठों पर देखिए।

श्री गोदावत जैन गुरुकुल (हाई स्कूल) छोटी सादड़ी (राजस्थान)

मेवाड प्रदेश मे चलने वाले इस गुरुकुल की स्थापना स्वर्गीय दानवीर सेठ नाथूलालजी सा० गोदावत ने १,२५,०००) एक मुश्त निकालकर की। सेठ सा० द्वारा प्रदत्त इस धन राशि का एक ट्रस्ट बनाया गया। सर्व प्रथम एक आश्रम और एक प्रायमरी स्कूल के रूप मे इस सस्था की सवत् १९७६ मे स्थापना हुई। कालान्तर मे तथाकथित आश्रम और स्कूल ही विशाल गुरुकुल के रूप मे परिणित हो गए। इस सस्था को विशाल रूप देने में स्वर्गीय सेठ सा० के पौत्र सेठ छगनलालजी सा० तथा सेठ रिखबदासजी सा० का प्रमुख हाथ रहा है। आज यही गुरुकुल मेवाड भर के सामाजिक व राष्ट्रीय प्रवृत्तियो का केन्द्र स्थान बन गया है। यहाँ विद्यार्थियो को स्थानीन पाठ्यक्रम के अलावा धर्म, न्याय, सस्कृत, हिन्दी, अग्रेजी आदि विपयो को उच्च पढाई कराई जाती है और उनकी परीक्षाएँ दिलाई जाती हैं। जैन समाज की अधिकाश सस्थाओ मे व्यवस्थापक, शिक्षक, गृहपति आदि उत्तरदायी स्थानो पर इसी सस्था के स्नातक पाये जायेंगे। आज भी यह सस्था एक हाई स्कूल के रूप मे चलती हुई धार्मिक शिक्षण प्रदान करके विद्यार्थियो के जीवन में उत्तम नागरिकता के सस्कारो का सिंचन करती हुई अदम्य उत्साह एव स्फूर्ति के साथ समाज सेवा कर रही है। गुरुकुल में शिक्षणकार्य के लिए अपने-अपने विपय के विद्वान व परिश्रमी अध्यापक हैं। गुरुकुल की सम्पूर्ण प्रवृत्तियाँ तीन भागो में बँटी हुई है—विद्यालय, छात्रालय और जैन सिद्धान्तशाला। छात्रालय मे इस समय ६५ छात्र और विद्यालय मे १६० छात्र है।

आर्थिक दृष्टि से इस सस्था का इस बडे पैमाने पर स्वतन्त्रतापूर्वक सचालन करने का श्रेय सस्था के मैनेजिग ट्रस्टी श्री भूपराजजी सा० नलवाया बी० ए० व मान्य मन्त्री चादमलजी सा० नाहर को है।

इस सस्था के पास अपना निजी भवन है। भवन अति भव्य व शहर से कुछ दूर उत्तम स्थान पर अवस्थित है। जहाँ बगीचा, जलाशय, क्रीडागण आदि सभी की स्वतन्त्र व उत्तम व्यवस्था है। सस्था में एक उच्च कोटि का पुस्तकालय भी है, जिसमें भिन्न-भिन्न विपयो व भाषाओ की लगभग ७००० पुस्तके हैं।

इस प्रकार यह सस्था ३६ साल से समाज की सेवा करती चली आ रही है।

श्री जैन गुरुकुल शिक्षण संघ, ब्यावर

स्था० जैन समाज मे गुरुकुल प्रणाली की कल्पना भी नही थी उस वक्त आत्मार्थी मोहनऋपिजी और श्री चैतन्यजी के उददेश और प्रेरणा द्वारा स० १९८४ के विजयादशमी (आसोज शु० १०) को श्री जैन गुरुकुल का प्रारम्भ बगडी-सज्जनपुर मे हुआ। सेठ मिश्रीलालजी वेद, फलोदी, श्री अमोलकचन्दजी लोढा, बगडी, श्री शकरलालजी गोलेछा आदि अच्छे प्रेरक थे। धर्मवीर दुर्लभजी भाई जौहरी आदि पोपक थे। श्री आणदराजजी सुराणा महामन्त्री और श्री धीरजलाल के० तुरखिया इसके अधिष्ठाता थे। ज्ञान पचमी को इसे ब्यावर मे लाया गया।

स्था० जैन समाज मे तथा प्रान्त मे राष्ट्रीय चेतना जगाना, समाज में शिक्षण सस्थाओ का प्रचार और सुव्यवस्थता, धार्मिक शिक्षण का प्रचार, हुन्नर-उद्योग के विविध प्रयोग, वार्षिकोत्सव और परिषदो द्वारा जागृति लाने के लिए इस गुरुकुल ने अनेक प्रयत्न किये। ९ वर्ष बाद गुरुकुल के लिए स्वतन्त्र भवन-निर्माण हुआ। उपरोक्त नाम से रजिस्ट्रेशन हुआ और विद्यार्थियो के लिए गुरुकुल, साधु-साध्वियो के लिए सिद्धान्तशाला, साहित्य प्रकाशन के लिए आत्मजागृति कार्यालय, उद्योगशाला आदि विविध प्रवृत्तियां २५ वर्ष तक उत्तरोत्तर वृद्धिगत होती रही। सघ सेवा में भी सस्था ने सहयोग दिया। सघ-ऐक्य योजना और श्राविकाश्रम की योजनाएँ गुरुकुल की पवित्र भूमि में वार्षिकोत्सव के अवसर पर ही बनी और मूर्तस्वरूप लिया।

भारत स्वतन्त्र होने पर स्वतन्त्र राष्ट्रीय शिक्षण की आवश्यकता का वातावरण कम हो चला। जिससे उक्त
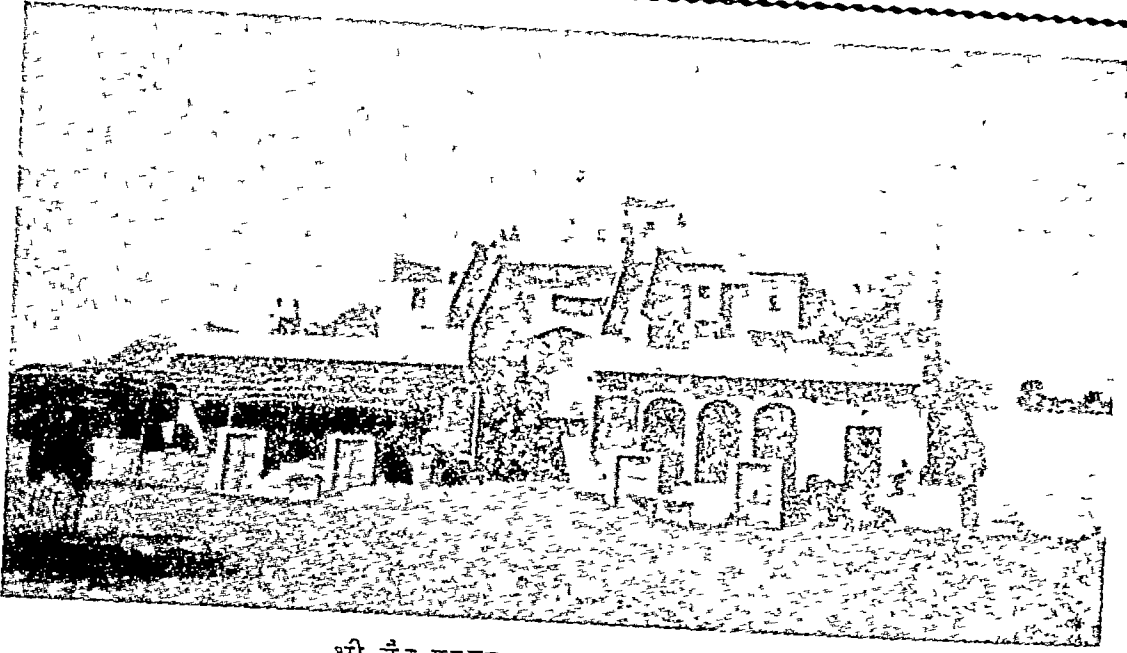
श्री जैन गुरुकुल-भवन (पुराना), ब्यावर

श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर के अध्यापक और विद्यार्थीगण

सघ के अग्रणियो ने भी सस्कृति विभाग और हाई स्कूल विभाग किये। धीरे-धीरे सस्कृति विभाग मे छात्र नही आने लगे तो सिर्फ हाई स्कूल विभाग ही रहा। प्रायमरी स्कूल भी प्रारम्भ को और इस रूप मे कार्य चल रहा है।

ब्यावर गुरुकुल ने सैकडो नवयुवको को तैयार किये जो आज समाज में विद्वान्, लेखक, सचालक, व्यायाम पटु, हुनर ज्ञान, धार्मिक शिक्षण-सस्कृति द्वारा कार्य कर रहे है। जीवन यापन के साथ समाज को योगदान दे रहे हैं।

श्री जैनेन्द्र गुरुकुल, पंचकूला (अम्बाला)

यह गुरुकुल स्वामी घनीरामजी तथा प० कृष्णचन्द्राचार्यजी के अनवरत प्रयत्नो से जैन समाज भूषण स्व० सेठ ज्वालाप्रसादजी के करकमलो द्वारा फरवरी स० १९२७ मे स्थापित किया गया। इसे समाज सेवा करते हुए २५ वर्ष हो चुके है। यहाँ धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ प्रायमरी से लगाकर हाई स्कूल तक की व्यावहारिक शिक्षा दी जाती है। साइस और ड्राइग विषयो के लिए यहाँ मुख्य व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त छात्रो के जीवन को स्वावलम्बी बनाने के लिए टेलरिंग, कारपेन्टरी, वीविंग और टीनस्मिथी आदि अनेक हुनर उद्योगो व कला-कौशलो का व्यापक रूप मे समुचित प्रबन्ध है। यहाँ की बनी हुई दस्तकारी की चीजे ऑर्डर देने पर बाहर भी लागत मूल्य मे भेजी जाती है।

इस समय गुरुकुल मे एक हजार विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे है, जिनमें से लगभग ८०० छात्रो के खाने-पीने आदि की सारी व्यवस्था गुरुकुल के बोर्डिंग हाउस मे ही है। ये सभी छात्र वे हैं, जिन्हे पजाब गवर्नमेंट ने यहाँ की सुव्यवस्थाओ से आकर्षित होकर भेजने का इरादा किया था और जो भारत-विभाजन के बाद सन् १९४८ से यहाँ आने शुरु हो गए। यहाँ की कार्यकारिणी समिति ने भी इस कार्य को भगवान महावीर के पवित्र सन्देश और अहिंसा धर्म के अनुरूप समझकर सहर्ष अपने हाथो में लिया एव अपने उद्देश्यो के अनुसार आज तक बराबर निभाती आ रही है।

यहाँ की वर्तमान मैनेजिंग कमेटी के २३ सदस्य है जिमके अध्यक्ष—सेठ तेलूरामजी जैन जालन्धर और मन्त्री श्री ओमप्रकाशजी जैन है। आप लोगो के सतत् परिश्रम से ही आज यह सस्था जैन समाज के लिए आकर्षक और गौरवपूर्ण बनी हुई है। युनिवर्सिटी की परीक्षाओ का परिणाम भी यहाँ का प्रति वर्ष ९४ प्रतिशत रहता है। इससे ही इसकी शिक्षा-व्यवस्था का अनुमान लगाया जा सकता है। यहाँ के छात्रो की खेल के विषय में अभिरुचि, परेड करने का सुन्दर तरीका और व्यायाम के अद्भुत प्रकार वास्तव मे वर्णनीय है। गृहपतियो, योग्य अध्यापको व वार्डनरो की देखरेख में छात्रालय के छात्र रहते हैं। गुरुकुल का अपना अग्रेजी दवाखाना है, जिसमें सब प्रकार के रोगो का उपचार किया जाता है।

इस समय सस्था में करीब ३५ अध्यापक एव कार्यकर्ता है, जो कि सब ट्रेन्ड, अनुभवी और डिप्लोमा प्राप्त हैं। विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि इस गुरुकुल की सारी व्यवस्था जैन समाज द्वारा चुनी हुई कार्यकारिणी के ही हाथो में है। गवर्नमेंट का कोई भी हस्तक्षेप नही है। इस समय वर्णी समारचन्दजी बी० ए० बी० टी० यहाँ के योग्य व अनुभवी प्रिन्सिपल है, जो अपनी कार्यकुशलता और अपनी अद्भुत अनुभव शक्ति द्वारा सस्था का सचालन—कर रहे है।

श्री लौंकाशाह जैन गुरुकुल, सादडी (मारवाड)

यह सस्था सम्वत् २००० के माघ शुक्ला १० सन् १९४४ में मरुधर केसरी पडित रत्न मन्त्री मुनि श्री मिश्रीमलजी म० सा० के सदुपदेश से तथा पंजाबी पं० मुनि श्री तिलोकचन्दजी म० सा० के चातुर्मास में श्री धर्मपालजी मेहता,

अजमेर वालो के अध्यापकत्व में स्थापित हुई। इस सस्था के आद्य-सस्थापको मे श्री अनोपचन्दजी पुनमिया, श्री निहालचन्दजी पुनमिया तथा श्री हस्तीमलजी मेहता आदि सज्जन प्रमुख हे। दानवीर वलदोटा बन्धुओ ने ५१०००) रु० श्री मोहनमलजी चौरडिया ने ११,१११, रु० तथा श्री केवलचन्द्रजी चौपडा ने ५०००) रु० देकर इस सस्था को सुदृढ बनाया है। सस्था का १,५०,००० रु० की लागत का आकर्षक नवीन और सुन्दर भवन है। इसी गुरुकुल भवन में और इसी के प्रागण मे बृहत् साधु सम्मेलन और कान्फरस का अधिवेशन हुआ था जहाँ एक ओर अखण्ड श्रमण सघ और श्रावक सघ का निर्माण हुआ।

इस समय गुरुकुल मे ५० छात्र, ३ अध्यापक गण, ६ भृत्यु-वर्ग और एक कन्या पाठशाला की अध्यापिका हैं।

छात्रो के लिये सभी प्रकार के व्यायाम और खेल-कूद का सर्वोत्तम प्रवन्ध है। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के उद्योग—जैसे सिलाई, कताई, बुनाई, चित्रकला, कृपि, टाइपिंग का भी शिक्षण दिया जाता है। धार्मिक परीक्षा बोर्ड पाथर्डी की विशारद एव प्रभाकर तक की परीक्षाओ में छात्र प्रविष्ट होते हैं। विभिन्न प्रकार की पुस्तको एव समाचार पत्रो से यहाँ का पुस्तकालय तथा वाचनालय सुसमृद्ध है। प्रत्येक रविवार को छात्रो की सभा होती हे जिसमें वक्तृत्व कला का अभ्यास कराया जाता है।

गुरुकुल से ही सम्बन्धित "श्री जैन हितेच्छु कन्या-शाला" है। जिसमे वालिकाओ को व्यावहारिक एव धार्मिक शिक्षण दिया जाता है। गुरुकुल का सचालन कार्यकारिणी समिति द्वारा होता है। इस कार्यकारिणी का चुनाव मत प्रणाली से होता है। इस समय प्रतिष्ठित ३२ सज्जनो की कार्यकारिणी समिति विनिर्मित है।

अपने क्षेत्र मे सादडी का यह गुरुकुल विद्या प्रचार के साथ धार्मिक शिक्षा का प्रसार वडे ही सुन्दर ढग से कर रहा है।

श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, भीनासर (बीकानेर)

जैन-जगत् के परम प्रसिद्ध आचार्य पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज का यह स्मारक श्री जवाहर विद्यापीठ सम्वत् २००१ मे सस्थापित हुआ था। इसको कार्य करते हुए करीब १२ वर्ष होने आये हैं। उस महान् मनस्वी का यह स्मारक अविचल रूप से एकनिष्ठ साधक की तरह उन्ही के चरणचिन्हो का अनुकरण इन वर्षो मे करता चला आया है। उस तप पूत युगद्रष्टा के शुभाशीर्वाद के फलस्वरूप यह विद्यापीठ अपनी सौरभ से समस्त जैन-जगत को सुवासित कर रहा है।

विद्यापीठ आज अपने-आपको विशेप रूप से गौरवान्वित अनुभव कर रहा है कि उसने परम पुनीत प्रागण मे अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन क्रान्फ्रेन्स का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव एव १३ वा अधिवेशन सम्पन्न होने जा रहा है। साथ ही श्रमण-सघ का सम्मेलन भी यही सम्पादित होने जा जा रहा है, उस महा महिम आचार्य के स्मारक स्थल पर ही उनके सपने साकार होने जा रहे हैं। हमारे अधिक सौभाग्य और सुयोग का अवसर क्या प्राप्त हो सकता है, यह तो सोने मे सुगन्ध है। हम क्राति के किस मार्ग से चलकर अपने लक्ष्य का निर्धारण कर रहे हैं, उसमें सफलता अवश्यभावी मानी है।

सस्था मे छः विभाग हैं।

१ प्रकाशन विभाग, २ पुस्तकालय, ३ जैन विद्यार्थी निवासुयोग, ४ धार्मिक शिक्षण सदन, ५ उच्च शिक्षण सदन, ६ उपदेशक विभाग।

प्रकाशन व विभाग का कार्य जवाहर साहित्य समिति के कर-कमलो से सुचारु रूप से चल रहा है। इस समिति ने स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज के व्याख्यानो को किरणावलियो के रूप में पुस्तकाकार प्रकाशित करवाया

है। अब तक ३१ किरणावलियाँ प्रकाशित हो चुका है।

पुस्तकालय आधुनिक साधनो मे सुशोभित सुन्दर कलापूर्ण भवन है। पुस्तकालय मे ३५०० जिल्दो में विविध विपयो की लगभग ६००० पुस्तके सग्रहीत हैं। साथ ही वाचनालय भी है। वाचनालय मे कुल २० समाचार-पत्र-दैनिक, सप्ताहिक, पाक्षिक एव मासिक आते हैं। भारत भर की समस्त स्थानकवासी सस्थाओ मे पुस्तकालय अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

इस वर्ष छात्रा-वास मे छठी कक्षा से लेकर एम० ए० फाइनल अर्थात् सोलहवी कक्षा तक के १५ छात्र

जैन जवाहर विद्यापीठ, भीनासर

है। स्वय यहाँ के गृहपति भूपराज जैन भी एम० ए० फाइनल के छात्र हैं। ये यहाँ के स्नातक है और अब गृहपति का कार्यभार सभाले हुए है।

विद्यालय की परीक्षाओ के अलावा छात्र पाथर्डी बोर्ड की धार्मिक परीक्षाओ में प्रविष्ट होते हैं। इस वर्ष विभिन्न धार्मिक परीक्षाओ मे १२ छात्र प्रविष्ट हुए हैं।

इसके अतिरिक्त प्रतिवर्ष कुछ छात्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की हिन्दी-परीक्षाओं में सम्मिलित होते है।

सस्था की ओर से साधु-साध्वियो के अध्ययन कराने का प्रवन्ध है।

गत वर्षो में अनेक छात्र इस सस्था से अपना अध्ययन समाप्त कर निकले है। ये हमारे समाज की विभिन्न संस्थाओ एवँ प्रवृत्तियो का सचालन सफलतापूर्वक कर रहे है।

श्री जैन रत्न विधालय, भोपालगढ

आज से सत्ताईस साल पूर्व जब कि यहाँ आसपास शिक्षा-प्राप्ति के किसी भी साधन के अभाव कारण अज्ञान तथा अशिक्षा का अन्धकार छाया हुआ था—ऐसे कठिन समय मे स्थानीय नवयुवको के जोश एव नि से १५ जनवरी सन् १९२९ मे इस विद्यालय की पुनीत स्थापना हुई। शनै-शनै. इस विद्यालय की सुवास समीपव ग्रामो मे फैल गई जिसके कारण बाहरी छात्र भी विद्यालय मे विद्याध्ययन करने के लिए आकर्षित हुए—जिसके फ स्वरूप "श्री जैनरत्न छात्रालय" की स्थापना करनी पडी। विद्यालय ने अपनी लक्ष्यपूर्ति में गतिशील रहते हुए समा की सस्थाओ मे अच्छा स्थान प्राप्त किया है।
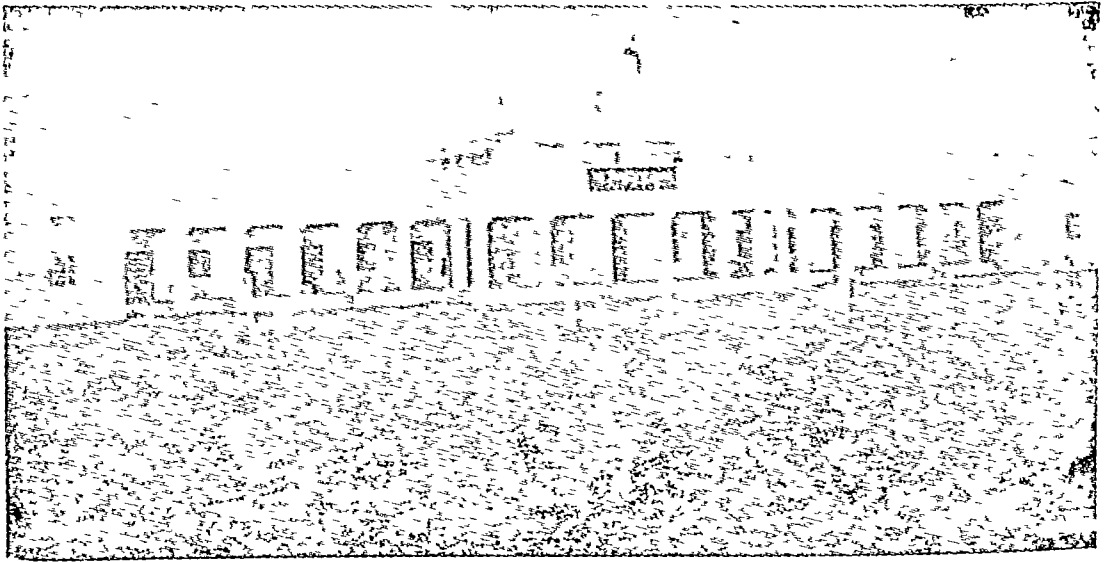
श्री रत्न जैन विद्यालय-भवन भोपालगढ (मारवाड)

सस्था का अपना निजी विशाल भवन भी है। सस्था के प्राण दानवीर सेठ श्री राजमलजी सा० ललवानी विद्यालय के तत्कालीन अध्यक्ष श्री विजयराजजी सा० काकरिया ने भवन-निर्माण के लिए एक वडी रकम देकर तथ बाहर प्रवास में घूम-घूमकर ६५,०००) की धन-राशि एकत्रित की और भवन निर्माण कराया।

इस विद्यालय में अग्रेजी में मेट्रिक, हिन्दी मे विशारद, महाजनी में मुनीमी तथा धर्म मे धर्म प्रभाकर क उच्च परीक्षाएँ दिलाकर समाज के सुशिक्षित एव होशियार नागरिक तैयार किये जाते हैं।

इस सस्था की तरफ से सुप्रसिद्ध मासिक धार्मिक पत्रिका 'जिनवाणी' का प्रकाशन कर अन्य सस्थाओ के सम्मुख एक आदर्श उपस्थित किया था।

इस सस्था के तत्वावधान में ही 'श्री जैन रत्न कन्या पाठशाला' भी अच्छा कार्य कर रही है, जिसमे वर्तमान में ३० कन्याएँ शिक्षा का लाभ ले रही हैं।

छात्रो को पार्लियामेंटरी सिस्टम (ससदीय पद्धति) का ज्ञान देने के लिए छात्र-मण्डल की भी यहाँ प्रवृत्ति

विद्यमान है। छात्रो के शारीरिक विकास के लिए खेल एव व्यायाम की यहाँ समुचित व्यवस्था है। छात्रालय के छात्रो के वर्तमान सेवाभावी गृहपति एक कुशल वैद्य हैं। उन्ही की देख-रेख मे विद्यालय का अपना निजी औषधालय भी है जिससे सर्वसाधारण जनता भी लाभ उठाती है।

विद्यार्थियो के बौद्धिक विकास के लिए एक विशाल पुस्तकालय भी है जिसमे लगभग ३००० से भी अधिक पुस्तके हैं। ससार की विविध हलचलो को जानने के लिये एक वाचनालय भी है जिसमे हर प्रकार के मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक तथा दैनिक (परचा) पत्र आते हैं।

छात्रो की लेखन-शैली को विकसित करने के लिए छात्रो को ही तरफ से हस्तलिखित मासिक 'विकास' प्रकाशित किया जाता है। वक्तृत्व कला के विकास के लिए साप्ताहिक श्रेणी-सभाएँ की जाती हैं जिनमे अन्त्याक्षरी, वादविवाद, निबन्ध, कहानी आदि प्रतियोगिताओ के सुन्दर कार्यक्रम रहते हैं।

सस्था के अधिकारियो तथा छात्रो का धार्मिक-क्षेत्र मे विशेष लक्ष्य रहे—इस ओर विशेष ध्यान रहता है। नियमित सामायिक, अष्टमी-चतुर्दशी को प्रतिक्रमण एव धार्मिक पर्वो पर ये आयोजन किये जाते हैं।

विद्यालय में औद्योगिक शिक्षण के लिए सिलाई का काम सिखानेकी उत्तम व्यवस्था है। अल्प व्यय में अधिक शिक्षा, महाजनी सवाल, बहीखाता और पुस्तक-रखना और धार्मिक शिक्षण—इस सस्था की विशिष्ट विशेषताएँ हैं।

इस प्रकार विगत २६ सालो से राजस्थान की यह प्रगतिशील सस्था ज्ञान का प्रचार कर मरुधर के सूखे अचल को ज्ञान-प्रवाह से सींच-सींचकर हरा-भरा बनाने का पूर्ण प्रयत्न कर रही है—जो इस विद्यालय के लिए गौरव और हर्ष का विषय है।

विद्यालय के सभी विभागो का सचालन करने के लिए २२ सदस्यो की सचालन-समिति है जिसके श्री जालमचन्द्रजी सा० बाफणा—अध्यक्ष, श्री शकुनचन्द जी सा० ओसवाल—मन्त्री, श्री मदनचन्द्रजी सा० मेहता—प्रधान मन्त्री, श्री सुगनचन्द्रजी सा० काकरिया—कोषाध्यक्ष हैं।

श्री जैन शिक्षण सघ, कानोड (राजस्थान)

सन् १६४० में तीन छात्रो से प्रारम्भ हुई, 'विजय जैन पाठशाला' आज शिक्षण-सघ के विराट् रूप में परिवर्तित हो गई है। इस सघ के सचालक श्री 'उदय' जैन हैं। इस शिक्षण-सघ के द्वारा अनेक गतिविधियाँ गतिमान की जा रही हैं। श्री जवाहर विद्यापीठ हाई स्कूल, प्राइमरी स्कूल, श्री जैन जवाहर गुरुकुल (छात्रालय), श्री जैन जवाहर वाचनालय, रात्रि हिन्दी विद्यापीठ, श्री विजय जैन विद्यालय और जैन कन्या पाठशाला आदि सघ की प्रवृत्तियाँ हैं। विद्यापीठ हाई स्कूल में १८ अध्यापक हैं। सदाचारी, निर्व्यसनी और सेवाभावी अध्यापको की सहायता से यह विद्यापीठ अपना गौरव बढा रहा है। ग्रामीण वातावरण से दूर जैन शिक्षण-सघ की भव्य इमारत में और ग्राम के दो नोहरो में ये सस्थाएँ चल रही हैं।

हिन्दी विद्यापीठ द्वारा हिन्दी का प्रचार किया जाता है जिसके लिए प्रथमा और मध्यमा का विद्यार्थियो को अभ्यास कराया जाता है। इन परीक्षाओ का यह सघ केन्द्र भी है।

श्री विजय जैन पाठशाला में धार्मिक शिक्षण पर विशेष जोर दिया जाता है और प्रतिवर्ष १२५ छात्र धार्मिक परीक्षाओ में सम्मिलित होते हैं। लगभग १५० प्रतिदिन सामायिक होती हैं।

गुरुकुल (छात्रालय) मे बाहर के २५ ३० छात्रो के रहने की समुचित व्यवस्था है। अनुभवी गृहपति की देख-रेख में छात्रालय का सचालन किया जाता है।

जैन शिक्षण सघ के अन्तर्गत चलने वाली सस्थाओ के लिए ३०,०००) रु० का भवन बन चुका है। एक पक्का कुआँ और सात बीघा जमीन सघ की अचल सम्पत्ति है। इन सस्थाओं का सचालन-खर्च वार्षिक ३५,०००) का है।

समाज के अति पिछडे क्षेत्र की यह सस्था विगत १५ वर्षो से बिना स्थायी फड के कार्य कर रही है। इस

समय ४०० से भी अधिक छात्र इस सस्था से लाभ ले रहे हैं। इस सस्था की सभी प्रवृत्तियो के सचालन में प्रधान हाथ श्री 'उदय' जैन का है।

श्री वर्धमान स्था० जैन छात्रालय, राणावास (राजस्थान)

काठा प्रान्त मे स्थानकवासी समाज की अब तक एक भी सस्था नही थी, जिसका अभाव समाज के समस्त शिक्षाप्रेमियो के हृदय मे खटकता था। प्रधानाचार्य श्री प० रत्नमुनि श्री आनन्द ऋषिजी महाराज सा० की प्रेरणा से और श्री चम्पालालजी सा० गुगलिया के प्रयत्न से इस सस्था की स्थापना हुई। सस्था की स्थापना के लिए आसपास के गाँवो से २१,०००) रु० का चन्दा एकत्रित हुआ। छात्रालय मे इस समय कुल २४ विद्यार्थी हैं। भोजन फीस १३) रु० रखी गई है। जिसमें एक पाव दूध के अतिरिक्त स्वास्थ्यप्रद और रुचिप्रद भोजन की उत्तम व्यवस्था है। छात्रालय का भवन स्टेशन के पास ही बना हुआ है। यहाँ का मुक्त और स्वच्छ वातावरण मस्तिष्क और जीवन को स्फूर्ति प्रदान करता है।

सस्था के पदाधिकारियो मे श्री लालचन्दजी मुणोत—अध्यक्ष, श्री चम्पालालजी गुगलिया—मन्त्री, श्री फूलचन्दजी कटारिया—कोषाध्यक्ष हैं। इनके अतिरिक्त ३१ सदस्यो की कार्यकारिणी समिति बनी हुई है। एक वर्ष की अत्यल्प अवधि मे सस्था ने आशातीत उन्नति की है।

निरसन्देह राणावास का यह छात्रालय अपने समीपवर्ती इलाके का सुन्दर बालोद्यान है जिसकी सुरभि-सुवास से यह इलाका कालान्तर मे सुवासित हो उठेगा।

श्री देव आनन्द जैन शिक्षण संघ, राजनांदगाँव

इस सस्था का सस्थापन दानवीर स्व० श्री अगरचन्दजी गुलेछा के कर-कमलो से हुआ था। यहाँ मेट्रिक तक शिक्षण का प्रबन्ध है। शिक्षण के लिहाज से यहाँ के विद्यार्थी सतोषप्रद परिणाम लाते हैं। सस्था का निजी विद्या भवन है। जिसमे १२५ विद्यार्थियो के निवास का समुचित प्रबन्ध है। वर्तमान में विद्यार्थियो की सख्या १०० से अधिक हो गई है। किन्तु उचित भोजनालय के अभाव के कारण विशेष विद्यार्थी नही रह सकते। आज सस्था के पास कुल ९६ एकड जमीन है। इसका सस्था को कुछ हद तक स्वावलम्बी बनाने में काफी उपयोग हो सकेगा।

इस सस्था की निजी गौशाला भी है। इसमे चार जोडी बैल और तीस-बत्तीस छोटी-बडी गाएँ तथा चार पाँच भैंसे भी हैं। विद्यार्थियो को शुद्ध दूध मिल सके इसी उद्देश्य से यह खोली गई है।

छात्रो का जीवन विशुद्ध एव सयमी बने यही सस्था का एकमात्र लक्ष्य है। अलिप्तता, नियमितता, अनुशासन, स्वावलबन तथा धर्मशीलता ये इस जीवन के लक्ष्य की पूर्ति की अखण्ड धाराएँ हैं। ज्ञान, दर्शन, चरित्र की सुसगत सीढियाँ निर्माण करने का इस सस्था में भरसक प्रयत्न हो रहा है।

गत चार वर्षो में कई नेताओ तथा समाज-सेवको ने सस्था मे पधारने की कृपा की और अपने शुभाशीर्वाद प्रदान किए।

छात्रालय में गृहपति का कार्य श्री मुनीद्रकुमारजी सभालते थे। आपका विद्यार्थियो की सर्वतोमुखी जागृति में परम लक्ष्य था आप एक विचारशील, उत्साही एव कर्मठ व्यक्ति हैं। छात्रालय की प्रगति मे आपका पूरा हाथ रहा और सदैव सस्था को उन्नत शिखर पर पहुँचाने की हार्दिक इच्छा रखते हैं।

पाथर्डी की संस्थाएँ

महाराष्ट्र और कर्णाटक प्रान्त के छोटे-मोटे ग्रामो और नगरो मे जैन समाज बहुतायत से फैला हुआ है। सौभाग्य-वश स्व० पूज्य श्री रत्नऋषिजी म० सा० तथा प्रधान मन्त्री प० मुनि श्री आनन्दऋषिजी म० सा० का सन् १६२३ में इस तरफ पधारना हुआ। शिक्षा की कमी को देखकर महाराज सा० के शिक्षाप्रद ओजस्वी व्याख्यान हुए जिसके फलस्वरूप पाथर्डी मे स्व० पूज्य श्री तिलोकऋषिजी म० सा० की पुण्य-पावन स्मृति मे "श्री तिलोक जैन ज्ञान प्रसारक मण्डल" की स्थापना हुई। इसी मण्डल के तत्त्वावधान में श्री तिलोक जैन विद्यालय और छात्रा-लय स्थापित किये गए। यह विद्यालय आजकल हाई स्कूल बन गया है, जिसका वार्षिक खर्च २५,०००) है। विद्यालय मे पुस्तकालय, वाचनालय, वक्तृत्व-विकास के लिए विवाद मण्डल, वस्तु भण्डार आदि की समुचित व्यवस्था है।

छात्रालय मे छात्र जीवन-विकास के साथ धार्मिक शिक्षा प्राप्त करते है और जीवन-निर्माण की कला सीखते है। उपरोक्त विद्यालय और छात्रालय के मन्त्री श्रीमान चन्दनमलजी सा० गाधी है।

श्री जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, पाथर्डी (अहमद नगर)

प० बदरीनारायण शुक्ल, पाथर्डी (अहमद नगर)

श्री तिलोकरत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, पाथर्डी

जैन धर्म और जैन संस्कृति के प्रचार और प्रसार की भावना और ध्येय-सिद्धि को लेकर प्रधानमन्त्री प० रत्न मुनि श्री आनन्दऋषिजी म० सा० के सदुपदेश से इस बोर्ड की स्थापना हुई। बोर्ड की परीक्षाओ में जैन-अजैन सभी तरह के परीक्षार्थी सम्मिलित होते है। बोर्ड के उद्देश्यो की पूर्ति के लिए परीक्षण, निरीक्षण, पुस्तक के प्रकाशन, छात्रवृत्तियाँ, सम्बन्धित और निर्वाचित संस्थाओ को सहायताएँ, पदक-पारि-तोषिक, प्रतियोगिता-पुरस्कार आदि विभिन्न योजनाएँ क्रियान्वित की गई। प्रत्येक योजना स्थायी और स्वतन्त्र अस्तित्व रख सके ऐसी व्यवस्था की गई है।

बोर्ड स्थापन के वर्ष में कुल पाच केन्द्रो से ११६ विद्यार्थी परीक्षाओ में सम्मि-लित हुए थे किन्तु बोर्ड की लोकप्रियता की वृद्धि के साथ उसका कार्यक्षेत्र भी बढता

गया । इस वर्ष ९१ केन्द्रो से ३७०१ परीक्षार्थी विभिन्न परीक्षाओ मे सम्मिलित हुए है ।
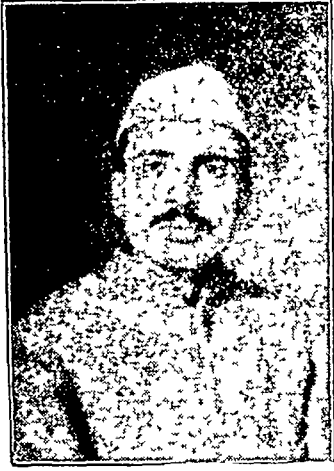
चन्द्रमणिभूषण त्रिपाठी
पाथर्डी

इस परीक्षा-बोर्ड की कार्य-प्रणाली एव प्रगति पर समाधान व्यक्त करते हुए कॉन्फरन्स ने पहले वार्षिक 'एड' देकर इसे सम्मानित किया । तत्पश्चात् सन् १९५४ में अपनी मान्यता प्रदान कर इसे कॉन्फरस ने मान्य परीक्षा-बोर्ड घोषित किया है ।

श्री अमोल जैन सिद्धान्तशाला, पाथर्डी

इस सस्था की स्थापना सवत् १९२३ मे प्रधानमन्त्री प० रत्न आनन्दऋषिजी म० सा० के सदुपदेश से हुई । इसके द्वारा सन्त-सतियो के शिक्षण की समुचित व्यवस्था की जाती है ।

श्री रत्न जैन पुस्तकालय, पाथर्डी

इस विशाल पुस्तकालय मे प्राय सभी भारतीय दर्शनो व भाषाओ का साहित्य सग्रहीत है । इस समय इस पुस्तकालय मे ७००० से भी अधिक पुस्तको का सग्रह विद्यमान है ।

इसके अतिरिक्त "श्री देवप्रेम स्था० जैन धार्मिक उपकरण भण्डार" से ओघे, पात्रे, पूँजनी, बैठके, मालाएँ आदि धार्मिक उपकरणो की सुलभता प्राप्त होती है ।

इसके अलावा स्थानीय छात्राओ को बोर्ड के पाठ्यक्रमानुसार धार्मिक शिक्षा देने के लिए कन्या पाठशाला भी स्थापित है । इस कन्याशाला को श्राविकाश्रम के रूप मे परिणत करने की योजना विचाराधीन है ।
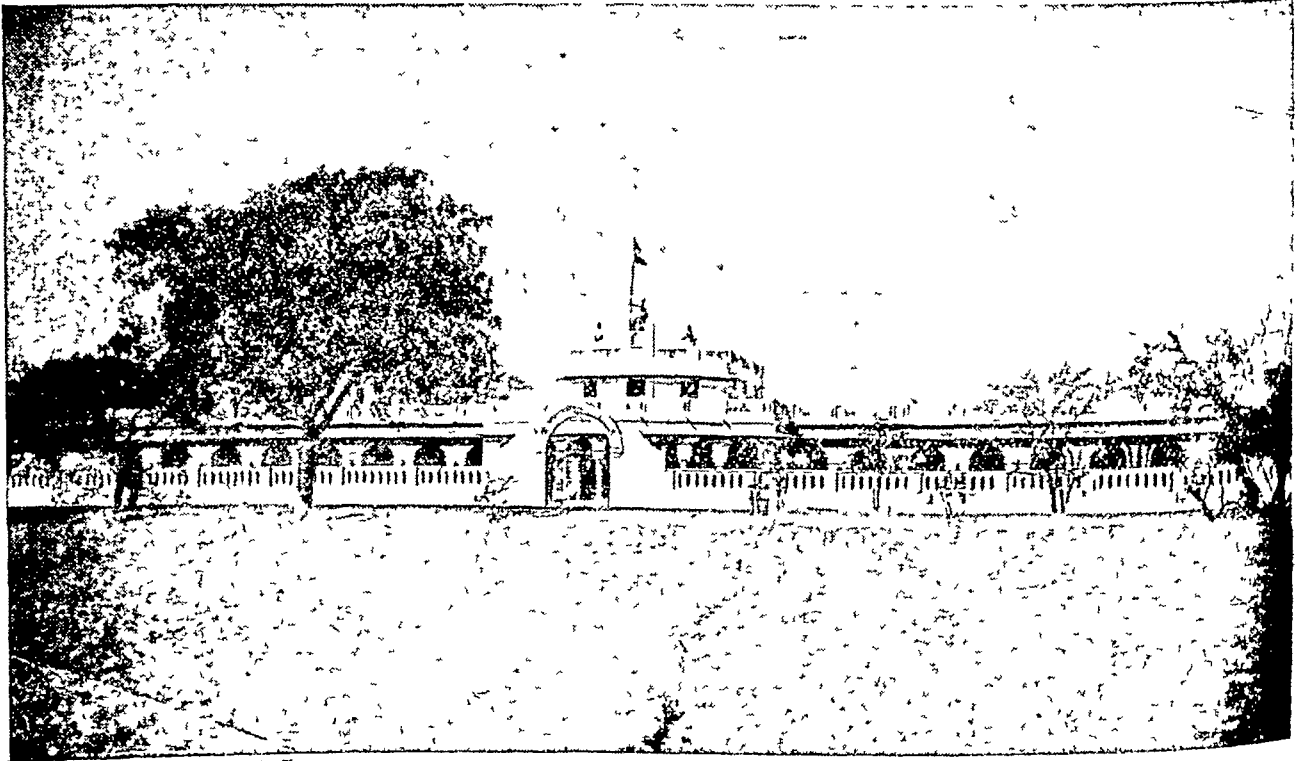
श्री जैन गुरुकुल विद्यामन्दिर भवन, ब्यावर (राज्य)

श्रीमान् चम्पालालजी जैन, ऑफ स्यालकोट, हाल मुकाम दिल्ली

आपका शुभ जन्म स्यालकोट (पजाव) मे हुआ था। पाकिस्तान वन जाने के पश्चात् आप दिल्ली पधार गए। यहाँ सदर वाजार में व्यापार कर रहे है।

वर्तमान में आप श्री व० स्था० जैन श्रावक सघ, दिल्ली के वाइस प्रेसिडेन्ट और वेस्टर्न पजाव जैन रिहेवीटेशन असोसिएशन दिल्ली के प्रचार-मन्त्री हैं। दिल्ली में आने के वाद ही आपने वीर नगर जैन कॉलोनी गुड की मण्डी, दिल्ली में जो वन रही है, उसकी स्थापना में प्रारम्भ से ही सक्रिय सहयोग दिया हे।

यह आपकी अन्तर्भावना है कि पाकिस्तान से जो जेन भाई आए हैं, उनके लिए मकानो की व्यवस्था जल्दी-से-जल्दी हो जाए। असोसिशन ने इस कार्य में करीव ४ लाख रुपया खर्च करके जमीन खरीद कर ली है। (इस असोसिएशन के प्रधान श्री कुञ्जलालजी शीतल स्यालकोट वाले है, इनके नेतृत्व में तथा प्रचार मन्त्रीजी श्री चम्पालालजी के अथक परिश्रम से यह कार्य सफलतापूर्वक हो रहा है। आप वडे ही मिलनसार और समाज के हर कार्य को लग्न से करते हैं। कॉन्फरन्स के प्रति आपकी वड़ी सद्भावना है।

श्री रामानन्दजी जैन, खिवाई (जि० मेरठ)

आपका जन्म खिवाई मे श्री शर्मेसिहजी जैन के यहाँ अगस्त सन् १६११ में हुआ। आपका प्रारम्भिक शिक्षण जैन स्कूल, वडोत मे हुआ। वहाँ से सन् १६३२ में हाईस्कूल की परीक्षा पास करके इटर कॉमर्स यू० पी० वोर्ड से सन् १६३१ में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। सन १६३३ में B Com भी प्रथम श्रेणी में किया। तदनुसार एल० एल० वी० भी प्रथम श्रेणी में पास किया। सन् ३४ में इन्कमटॅक्स सर्विस में आए और १६५० में असिस्टेन्ट कमिश्नर हुए। आपका अधिक समय कानपुर में व्यतीत हुआ। और सन् १६५३ से अव तक दिल्ली में हैं।

आप समाज के एक उत्साही तथा सुयोग्य कार्यकर्ता हैं।

ला० जसवन्तसिहजी जैन सब्जीमण्डी, दिल्ली

आप वडे ही धर्म प्रेमी तथा समाज-सुधारक है। अनेक सस्थाओ के आप संचालक हैं। स्था० कॉन्फरन्स की कार्यकारिणी कमेटी के आप सदस्य हैं। समाज को आप से वडी २ आशाएँ हैं।

लाला मट्टारामजी जैन

स्व० शेठ शामजी भाई वीराणी, राजकोट

स्था० जैन समाजना दानवीर श्रीमन्तोमां राजकोटना सेठ शामजी भाई वीराणीनुं अग्रस्थान छे तेओ परम श्रद्धालु मुनिभक्त अने क्रियारुचि वाला श्रावक हता। गृहस्थाश्रममां मोटा परिवार वाला होवा छता अनासक्त वृत्तिथी जीवन गालता हता। अनेक प्रकारना नियमो अने मर्यादामय जीवन हतुं। स्वभावे विनम्र, दयालु अने उदार दिलना हता। राजकोटनां 'वीराणी बापा' ने नामे सुप्रसिद्ध हता। लाखो रुपयानु दान अनेक प्रकारे विविध सस्थाओ ने तथा ज्ञाति भाईओ ने गुप्त दान करवामा तेओ सदा तत्पर रहेना। पुण्य योगे वीराणीजी ना सुपुत्रो श्रीमान् रामजी भाई, दुर्लभजी भाई अने, छगनलाल भाई, मणिलाल भाई, बधा सुशील, सुसंस्कारी, धर्मप्रेमी उदार अने मातृ-पितृ भक्त छे।

वीराणी भाईओनी उदार सखावतो सौराष्ट्रमा प्रसिद्ध छे। एमनी सखावतो ने लीधेज राजकोटमा अने अन्यत्र भव्य उपाश्रयो, हाईस्कूलो, दवाखानाओ ऊभा थया छे। साहित्य प्रकाशन चाले छे। सैकड़ो साधर्मीओने सहायता आपे छे अने अनेक विद्यार्थिओने उत्तेजन आपे छे। आरीते सौराष्ट्रमा वीराणी भाइयोनी यशगाथा ए पुण्यवान पुरुष श्री वीराणी बापानो पुण्य प्रताप छे।

श्री जगजीवनदास शीवलाल देशाई, कलकत्ता

सायला (सौराष्ट्र) ना वतनी छे। तेओए विद्याभ्यास कलकत्तामां कर्यो हतो। आप बले आगल वधीने श्री जगजीवन भाई आजे कोलसाना मोटा व्यापारी छे। आर्थिक प्रगति साधवा साथे धर्मप्रेम अने समाज सेवामा पण एमनो आगेवानी भर्यो भाग होय छे। कलकत्ताना गुजराती स्थानकवासी जैन सघना १५ वर्ष थी मानद् मत्री छे। एमना मंत्रीत्वमां श्री संघे खूबज प्रगतिसाधी छे। धर्मप्रेम तथा सेवाभाव एमधा विशेषता छे।

श्री धर्मपालजी मेहता, अजमेर

आप मूल निवासी भोपाल के हैं किन्तु आजकल अजमेर में ही रह रहे हैं। समाज की सुप्रसिद्ध सस्था श्री जैन गुरुकुल, व्यावर में अभ्यास करके विभिन्न विद्यालयो में कार्य करते हुए शिक्षा प्रचार में अच्छा योग दान दे रहे हैं। हिन्दी की शॉर्टहैण्ड का आपको अच्छा अभ्यास है। आपने स्व० जैन दिवाकरजी म० कविवर्य श्री अमरचन्दजी म०, उपाचार्य श्री गणेशीलालजी म० आदि कई वडे-वड़े मुनिराजो के व्याख्यानो की चातुर्मास में रिपोर्ट लेकर जैन साहित्य की अभिवृद्धि में सहयोग प्रदान किया है। आपके द्वारा लिखे गए व्याख्यानो से करीब २० पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं। 'महावीर की अमर-कहानियां' आपकी प्रसिद्ध रचना है। 'सन्तवाणी' मासिक पत्रिका का सचालन और सम्पादन भी कर रहे हैं। आप एक कुशल गायक, कवि तथा लेखक हैं। कॉन्फरस के स्वर्ण-जयंती-ग्रन्थ के लेखन प्रूफ-संशोधन और सम्पादन कार्य में आपने अथक परिश्रम किया है। आप सरल स्वभावी तथा सादगी प्रिय धार्मिक व्यक्ति हैं। समाज को आप से बड़ी वडी आशाए हैं।

श्री मुनीन्द्र कुमारजी जैन

आपका जीवन प्रारम्भ से ही उतार-चढ़ाव की एक लम्बी कहानी है। जैन गुरुकुल, व्यावर में अभ्यास करने के पश्चात् आपने दामनगर (काठियावाड़) में रहकर शास्त्राभ्यास किया। श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ और मध्यप्रदेश की सस्था श्री जैन गुरुकुल राजनादगांव में आठ वर्ष तक गृहपति का कार्य कर सस्था को आगे वढाने में आपका काफी हाथ रहा है। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के विभाजन के समय अपने प्राणो को सकट में डालकर भी पाकिस्तान से वायुयानो द्वारा जैन भाइयो को लाने में आपने अपूर्व साहस का परिचय दिया। आप एक अच्छे लेखक, कवि, गायक और गीतकार हैं। कॉन्फरस के स्वर्णजयंती ग्रन्थ के लेखन और सम्पादन में आपका वडा हाथ रहा है।

कॉन्फरन्स-स्वर्ण-जयंती-ग्रन्थ के लेखन-
सम्पादन-प्रूफ-सशोधन में
सक्रिय सहयोगी

श्री धर्मपालजी मेहता, अजमेर

श्री मुनीन्द्रकुमारजी जैन

श्री प्राणजीवन भाई नारणजी भाई
पारख, राजकोट
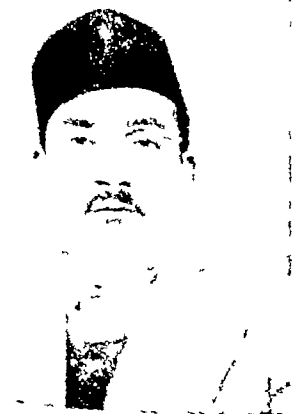
लाला टेकचन्दजी
मालिक फर्म—गेदामलजी हेमराजजी
नई दिल्ली व शिमला

श्री खेलशंकर भाई दुर्लभजी भाई
जौहरी जयपुर

राय बहादुर श्री मोहनलाल पोपटलाल, राजकोट

जगजीवनदास शिवलाल
सायला निवासी, कलकत्ता

से० केशवजी भाई सवचन्द भा
कलकत्ता
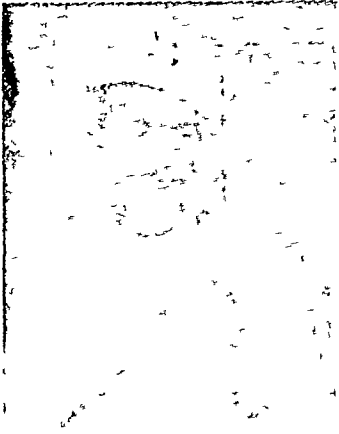
ज० सेक्रेटरी स्व० लाला गोकुल चन्दजी नाहर, दिल्ली

कॉन्फ्रन्स के पुराने और दीर्घ-कालीन नेता व सेवक, दिल्ली के अग्रणी जिन्होने 'महावीर भवन', महावीर हाईस्कूल आदि बनाकर दिल्ली का गौरव बढाया है।

श्री रतनलालजी कोटेचा बोदवड
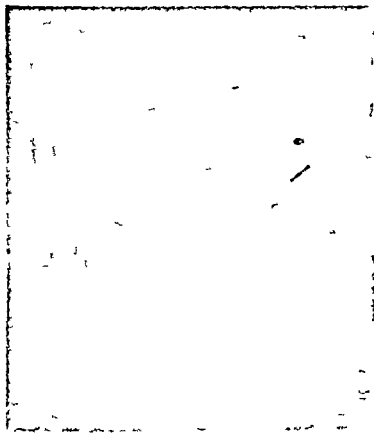
स्व० सेठ चांदमलजी नाहर बरेली

आप धर्म-श्रद्धालु, मुनिभक्त और उत्साही दयावान श्रावक थे। आपने समय-समय पर समाज एव राष्ट्र की सेवा में सक्रिय सहयोग दिया है। बरेली (भोपाल) के जमींदार व श्रीमान् भी थे।

लाला अमरनाथ जी जैन कसूर

लाला नौतारामजी, दिल्ली

आप श्री जैनेन्द्र गुरकुल, पचकूला के भूतपूर्व अधिष्ठाता रह चुके हैं। वर्तमान में निवृत्त धर्ममय जीवन बिता रहे हैं।

मोतीलालजी नाहर बोदवड़

स्व० रा० सा० टेकचन्दजी जंडियाला गुरु
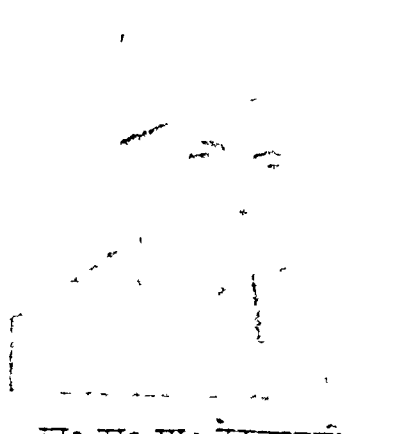
आप पंजाब के सुधारक और अग्रणी कार्यकर्ता थे। आपने अजमेर साधु सम्मेलन के समय अमूल्य सेवाएँ दी थीं।
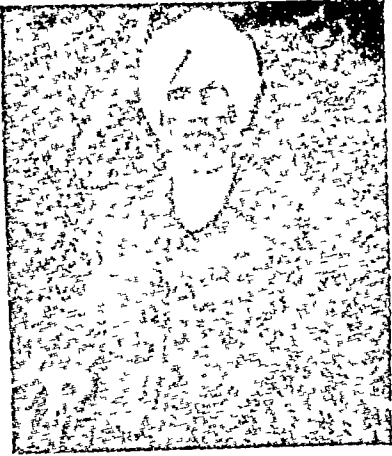
ला० रूपेशाह नत्थुशाह
स्यालकोट
पंजाब के धर्म प्रधान अग्रणी
श्रावक

लाला त्रिभुवननाथजी,
कपूरथला
पजाब के प्रतिष्ठित और अग्रणी सुधारक श्रीमान् है। आपने अजमेर सम्मेलन के समय बहुत सेवाएँ की थी।

लाला मस्तरामजी जैन
वकील M. A. अमृतसर
पंजाब के सुधारक, उत्साही
अग्रणी कार्यकर्ता

लाला जगन्नाथजी जैन
खार (बम्बई)
पंजाब के सुधारक एव अग्रणी कार्यकर्ता कॉन्फरन्स की यथावसर सेवा करते रहते है।

श्रीरतनलालजी सुराणा बोदवड़

स्व० श्री शामजी वेलजी
विराणी राजकोट

श्री जैन बोर्डिंग हाउस, जलगाँव
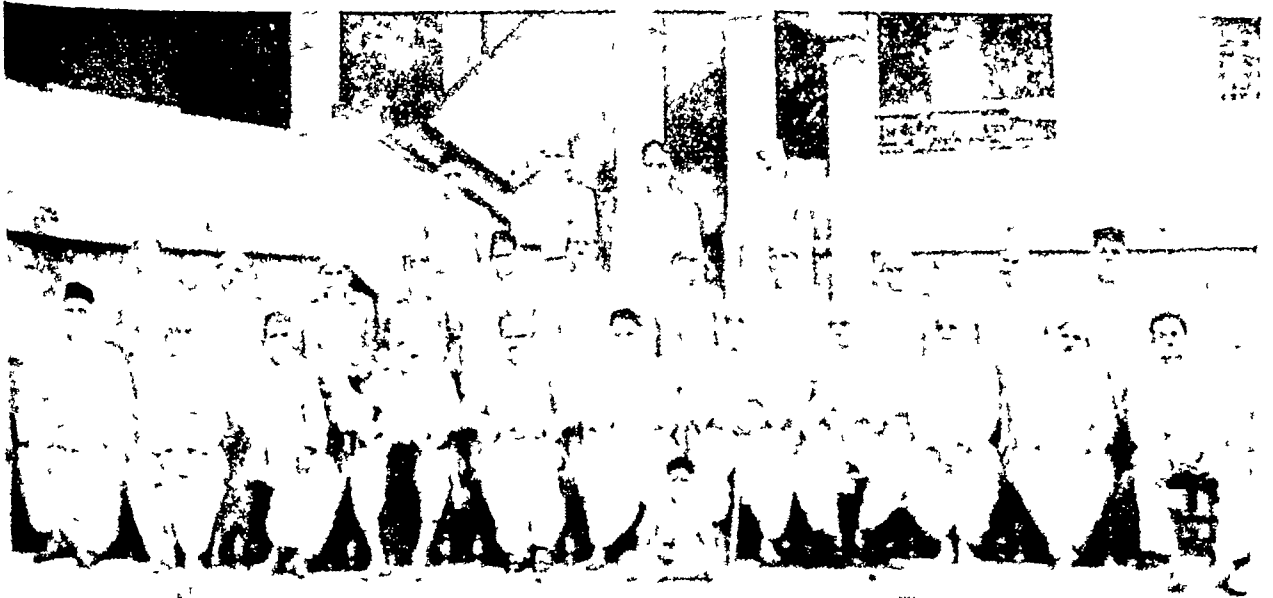
जैन बोर्डिंग हाउस जलगाँव के कार्यकर्ता

जैन विद्यालय, जालना बॅंगला नं० १

जैन विद्यालय, जालना बॅंगला नं० २

श्री जैन स्थानक जालना
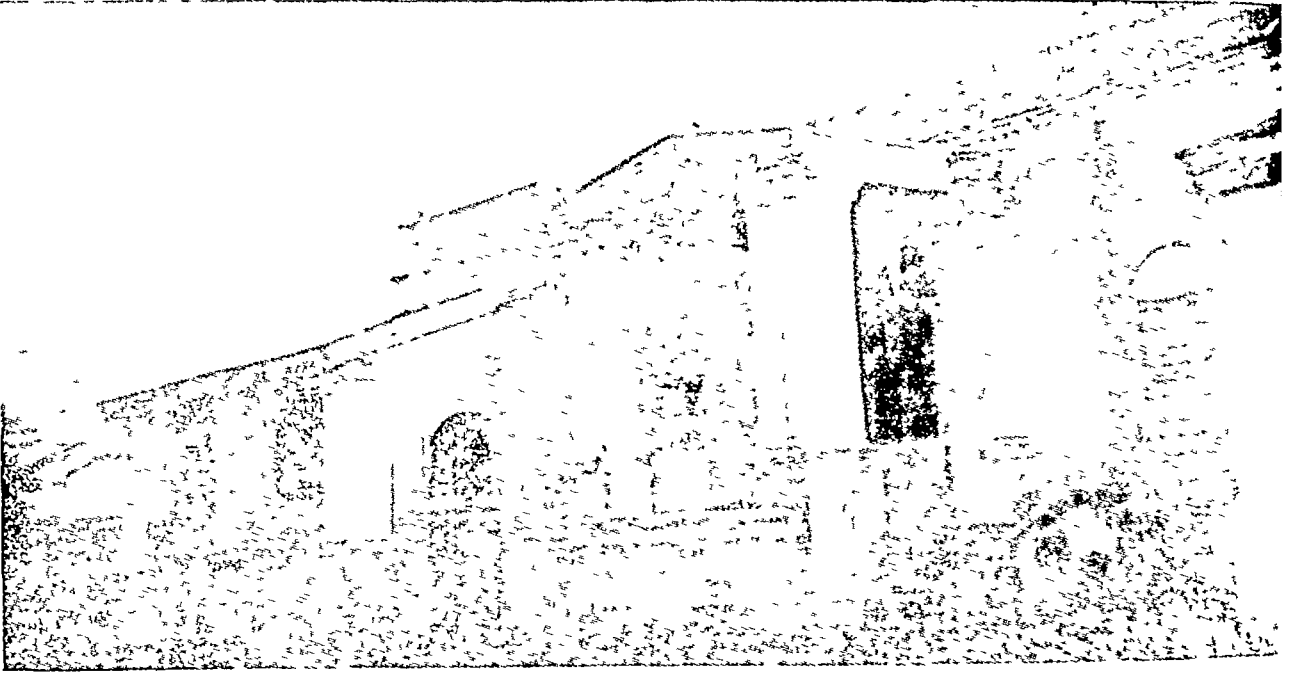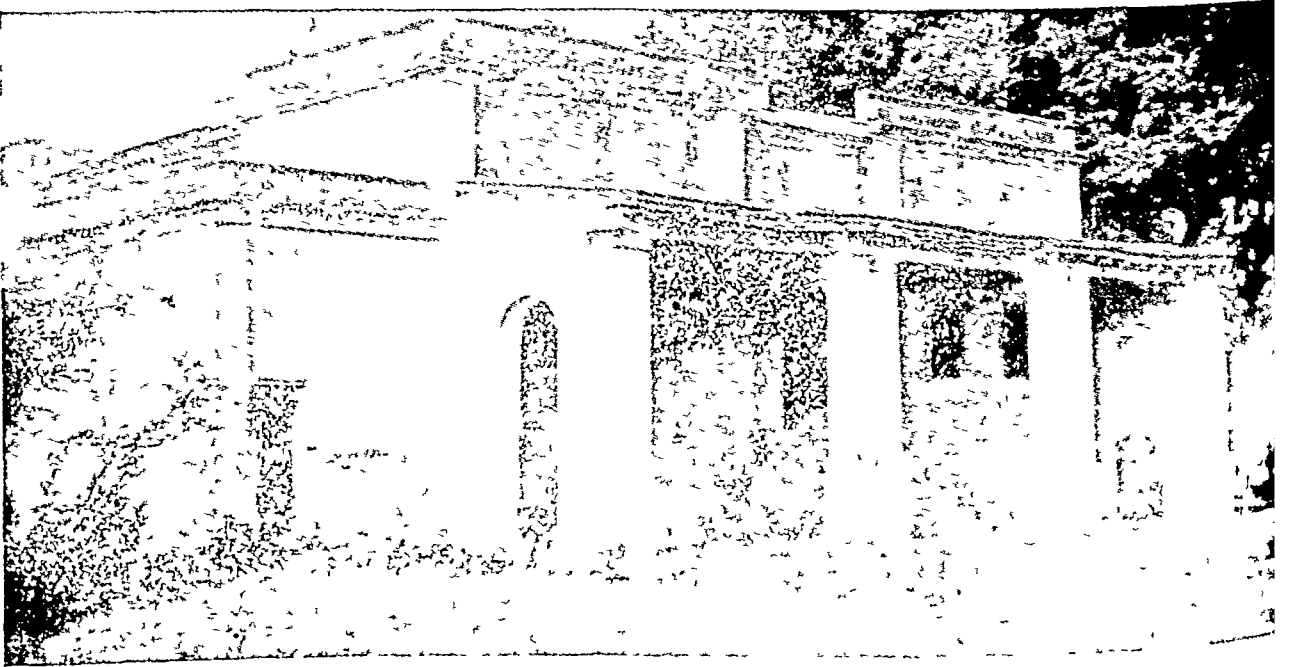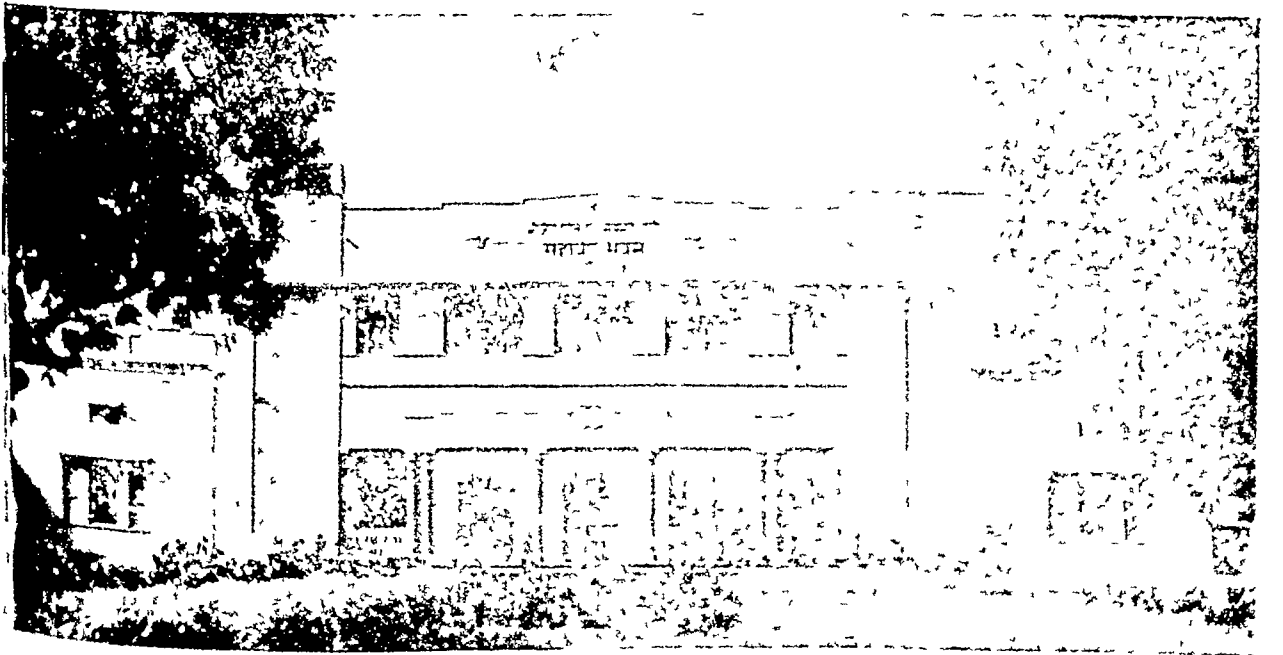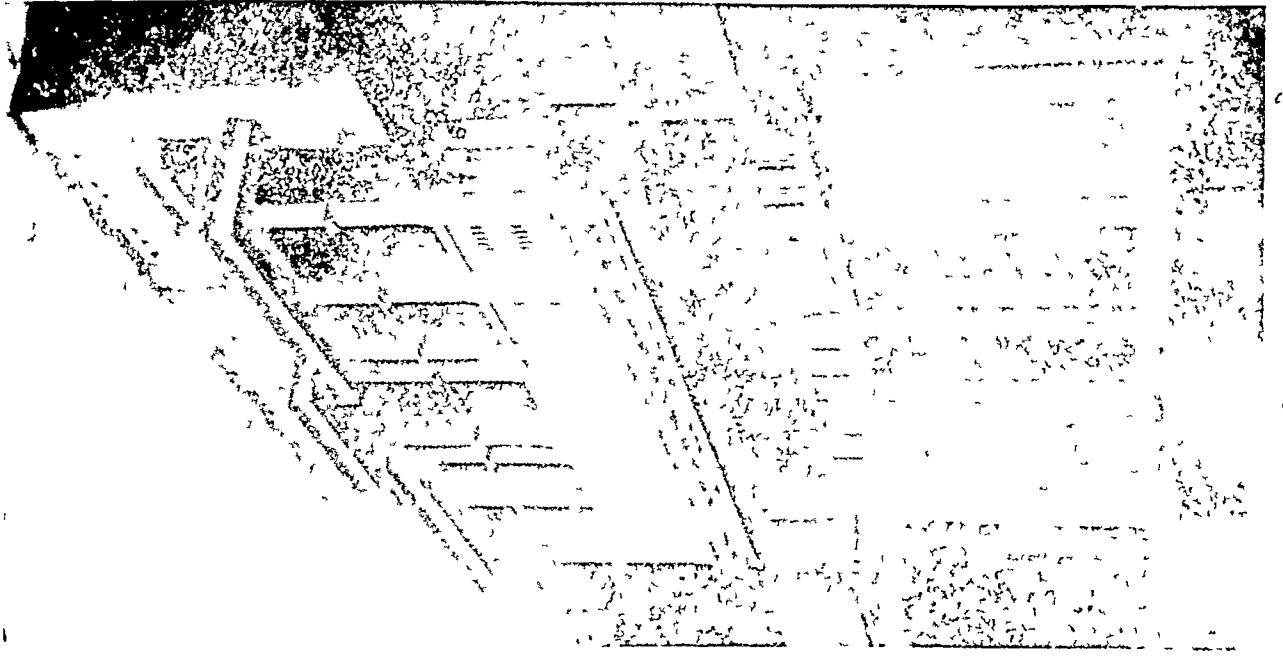
श्री महावीर भवन अलवर (राजस्थान)

श्री ज्ञानसागर पाठशाला किशनगढ़

इस पाठशाला की स्थापना स० १९८३ में पं० मुनिश्री सागरमलजी म० सा० के यहाँ ५९ दिन के संथारे के पश्चात् स्वर्ग सिधार जाने पर उनकी पवित्र स्मृति में हुई थी। यह सस्था २९ वर्ष से जैन-अजैन तथा हरिजनो के विद्यार्थियो को बिना किसी भेदभाव के शिक्षण दे रही है। छ: कक्षाओ में करीब २०० विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। धार्मिक शिक्षण अनिवार्य है। आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। स्था० समाज का ध्यान इस ओर आकर्षित किया जाता है।

जैन रत्न पुस्

उपरोक्त पुस्तकालय जोधपुर सिंह पोल के पास
…स हजार रुपया लगाकर इसका निजी भवन बनाया गया है
…सात हजार से अधिक मुद्रित पुस्तके हैं, जिनका मूल्य आधा
…जी मोदी जज हाई कोर्ट, जोधपुर व मंत्री श्री सम्पतचन्दजी
…के श्रावको द्वारा यह पुस्तकालय स्थापित किया गया था।

आश्रम् भवन के एक भाग का दृश्य

श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम देवगढ़ मदारिया (राज)

उक्त सस्था की स्थापना सन् १६५० में हुई। लगभग ढाई वर्ष तक सस्था का कार्य किराये के मकान मे ही चलता रहा। तदनन्तर देवगढ मदारिया के बाहर प्रकृति की सुन्दर गोद में इसका एक सुरम्य भवन बनाया गया। आश्रम की स्थापना में श्री शकर जैन तथा उनके युवक साथियो का प्रमुख हाथ रहा है।

श्री चतुर्थ जैन वृद्धाश्रम चित्तौडगढ़ (राजस्थान)

इस सस्था की स्थापना स० २००१ में प्र० वक्ता० जैन दिवाकर स्व० प० मुनिश्री चौथमलजी म० सा० के सदुपदेश से रा० भूषण, रा० ब० स्व० श्री कन्हैयालालजी भण्डारी इन्दौर निवासी की अध्यक्षता में हुई थी। इसमें स्था० समाज के असहाय, निराश्रित, अपग एव धर्मध्यानी वृद्ध बन्धुओ को आश्रय मिलता है। उनके खाने, वस्त्र, दवादि की सम्पूर्ण व्यवस्था यहीं से की जाती है। आत्मचिन्तन, स्वाध्याय, ज्ञान, ध्यनादि की व्यवस्था भी यही से की जाती है। यहाँ रहकर वृद्ध पुरुष आत्मचिन्तन, धर्मध्यान में लीन रहते हैं। उनके स्वाध्याय के लिए एक विशाल 'पूज्य श्री खूबचन्द जैन ग्रन्थालय' भी है जिसमें करीब २ हजार ग्रन्थ एव पुस्तके हैं।

वृद्धो के निवास के लिए चित्तौड किले पर एक तिमजिला भव्य भवन भी है। जिसकी लागत ६५ हजार रुपये हैं। अभीतक करीब २०० वृद्ध पुरुष इसमे आश्रय ले चुके हैं। हमेशा औसतन उपस्थिति २५ वृद्धो की रहती है। स्व० श्री जैन दिवाकरजी की पुण्य स्मृति में सवत् २००८ में साधु-सम्मेलन सादडी (मारवाड) के सुअवसर पर बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज ने अक्षय तृतीया को एक 'श्री जैन दिवाकर बोर्डिंग' के सचालन करने की स्वीकृति दी और तभी से दोनो प्रकार की प्रवृत्तियाँ चल रही है। इस वर्ष आश्रम में ५० छात्र हैं जिन्हे धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ व्यावहारिक शिक्षण भी दिया जाता है।

श्री खानदेश ओसवाल शिक्षण-सस्था, भुसावल

इस संस्था का उद्देश्य ओसवाल जैन समाज की किसी भी सम्प्रदाय के निर्धन और होनहार बालक-बालिकाओं को प्राथमिक तथा उच्च शिक्षण देने मे सहायक होना है। श्री पूनमचन्दजी नाहटा भुसावल वालो की सलाह मानकर सन् १६२२ में श्री राजमलजी ललवानी ने एक मुश्त २०,०००) रु० प्रदान किए। प्रतिवर्ष बजट के अनुसार छात्रवृत्तियाँ मजूर करना तथा अधिक व्याज उपार्जन करने की नीति के कारण सस्था को अब तक नाम मात्र भी घाटा सहना नहीं पडा। सस्था के पास इस समय एक लाख रुपया स्थायी फण्ड में जमा है।

इस संस्था के प्रमुख पदाधिकारी इस प्रकार हैं:—श्री पूनमचन्दजी नाहटा, भुसावल—सभापति, श्री रतनचन्दजी कोटेचा, बोदवड—उपसभापति, श्री फकीरचन्दजी मेहता, भुसावल—महामन्त्री तथा श्री मोतीलालजी बव, भुसावल—मन्त्री।

मध्यप्रदेश व बरार ओसवाल शिक्षण-समिति, नागपुर

ओसवाल विद्यार्थियो को शिक्षण में आगे बढाने के लिए छात्रवृत्तियाँ और लोन रूप से सहायता प्रतिवर्ष दी जाती है। इसकी कार्यकारिणी २१ सज्जनो की बनाई जाती है। उसमें आये हुए आवेदन पत्रो पर निर्णय होता है। सन् १९५५-५६ के सभापति श्री सुगनचन्दजी लूणावत, धामणगाँव तथा मन्त्री—श्री जेठमलजी कोठारी कामठी व श्री० केशरीचन्दजी धाडीवाल, नागपुर हैं।

श्री वर्द्धमान सेवाश्रम शान्ति भवन, उदयपुर

यह सेवाश्रम वर्षों से समाज की सेवा करता आ रहा है। ज्ञान का प्रचार, अनाथ, अपाहिज और निर्धन व्यक्तियो की सहायता करना आश्रम का मुख्य ध्येय रहा है। इस आश्रम के प्रयत्न से आदिवासियो के लिए 'श्री वर्द्धमान आदिवासी आश्रम' कोटडा (छावनी) में खोला गया है। आदिवासियो के जीवन सुधारने और आदर्श बनाने के लिए इस सस्था से सस्ता और उपयोगी प्रकाशन भी होता है। यहाँ से छोटी-मोटी कुल ७२ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

इस सेवाश्रम के संचालक समाज के पुराने, तपे हुए एव अनुभवी कार्यकर्ता श्री रतनलालजी मेहता हैं।

श्री श्वे० स्था० महावीर जैन पाठशाला, धार

यह संस्था धार (मध्यभारत) में प्रसिद्ध सस्थाओ में से है। यहाँ बालक-बालिकाओ में ठोस धार्मिक संस्कार डाले जाते हैं। कई आगन्तुक निरीक्षको ने इसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है।

श्री कानजी शिवजी ओसवाल जैन बोर्डिंग, जलगाँव

इस संस्था का बीजारोपण दि० १२-१२-२५ को प्रातस्मरणीय विद्यावारिधि परम पूज्य स्व० मुनि श्री जवाहरलालजी म० के सदुपदेश से हुआ था। साथ ही प्र० वक्ता जैन दिवाकर स्व० पं० मुनिश्री चौथमलजी म० के शुभागमन पर उनके स्नेह-सिचन से सिंचित होकर यह नन्हा-सा पौधा फूल उठा। इसकी प्रगतिशीलता से आकर्षित होकर समाज के गण्य मान्य दानवीरो ने आर्थिक सहायता प्रदान की। एक ओर सम्माननीय स्व० सेठ श्री सागरमलजी सा० लूकड सदृश इस संस्था के जनरल सेक्रेटरी पद पर सुशोभित होकर कई वर्षों तक कार्य करते रहे और दूसरी ओर श्री कानजी शिवजी एण्ड कं० बम्बई वालो ने १५००१) रु० देकर सस्था के भाग्याकाश को और भी आलोकित कर दिया। परिणामस्वरूप संस्था का भव्य भवन भी बन गया। संस्था निरन्तर प्रगतिशील पथ पर बढ रही है।

श्री सेठ सागरमलजी लूकड़ चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित विभिन्न संस्थाएँ

१—श्री सागर जैन हाई स्कूल, २—श्री सागर धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय
३—श्री सागर-भवन ४—श्री सागर पार्क ५—श्री सागर व्यायामशाला

वर्त[illegible] सस्थाओ का संचालन सुचारु रूपेण श्रीमान् स्व० श्री सागरमलजी सा० के ज्येष्ठ पुत्र श्री [illegible] अन्य तीनो भाइयो (श्री पुखराजजी, श्री मोहनलालजी तथा श्री चन्दनमलजी) के [illegible] दक्षता तथा दूरदर्शिता से कर रहे हैं। आप एक उत्साही, होनहार तथा [illegible] ही सामाजिक, धार्मिक तथा व्यापारिक सस्थाओ का सचालन वर्ड[illegible]

[illegible] केन्द्र है। यहां पर लॉ, साइन्स, कॉमर्स, आर्ट, ए[illegible] छात्र शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते हैं,

जिनमें से कई छात्र जैन भी होते है। अत जैन विद्यार्थियो की सुविधा के लिए अमरावती के कुछ उदार सज्जन सन् १९४५ से एक वोर्डिग चला रहे थे। किंतु मकान की व्यवस्था ठीक न होने से लोगो का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और श्री जैन शिक्षण समिति की स्थापना हुई। उसी समय स्व० सेठ श्री केसरीमलजी गुगलियाने अमरावती में माल टेकडी रोड पर स्थित अपने बगले के मैदान की जमीन जो २६५०० रकवे फीट है—वोर्डिग भवन के लिए दे दी। और ट्रस्टडीड भी लिख दिया। वर्तमान में जो ८५ हजार की लागत का जैन वोर्डिग का भव्य भवन है उसके सस्थापक श्रीमान् गुगलियाजी ही है। ९ सज्जन इसके ट्रस्टी है जिन्होने परिश्रम पूर्वक धन एकत्रित किया है :— (१) श्री राजमलजी ललवानी, (२) श्री सुगनचन्दजी लूणावत (३) श्री केसरीमलजी गूगलिया (४) श्री ऋषमदासजी राका (५) श्री जवाहरलालजी मुणोत (६) श्री रघुनाथमलजी कोचर (७) श्री मिश्रीमलजी सामरा (८) श्री पीरचन्दजी छाजेड आदि-आदि। वर्तमान में वोर्डिग के व्यवस्थापक व गृहपति का कार्य रत्नकुमारजी कर रहे है।

स्थानकवासी जैन समाज के समाचार-पत्र

किसी भी राष्ट्र, समाज अथवा जाति के समाचार-पत्र उन्हे उठाने वाले अथवा गिराने वाले होते है। समाचारपत्रो का दायित्व महान् हैं। हमारी समाज में सामाजिक अथवा साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएं पढने की दिलचस्पी बहुत कम है। हम चाहते है कि अपनी समाज में सामाजिक पत्रो का विकास हो, उनका क्षेत्र महान् हो और वे सच्चे रूप में समाज का प्रतिनिधित्व करने वाले हो। हम अपनी समाज में अगुलियो पर गिनने लायक ही समाचारपत्र पाते है—इनमें मासिक है, पाक्षिक है, साप्ताहिक है।

१. जैन प्रकाश—अ० भा० श्री श्वे० स्था० जैन कॉन्फरस का यह मुखपत्र है। यह साप्ताहिक पत्र है और हिन्दी तथा गुजराती भाषा में १३९० चादनी चौक दिल्ली से प्रकट होता है।

सम्पादक—श्री धीरजलाल के० तुरखिया, श्री खीमचन्द भाई म० वोरा और प० शातिलाल व० शेठ है।

२. स्थानकवासी जैन :—पाक्षिक-गुजराती भाषा मे पचभाई की पोल, अहमदावाद मे प्रकट होता है।

सम्पादक—श्री जीवनलाल छगनलाल सघवी।

३. रत्न ज्योत—शतावधानी प०श्री रत्नचन्दजी जैन ज्ञानमदिर का मुखपत्र, पाक्षिक गुजराती भाषा में सुरेन्द्रनगर (सौराष्ट्र) से प्रकट होता है। सपादक—"सजय" है।

४. तरुण जैन—साप्ताहिक, हिन्दी भाषा में, महावीर प्रेस, जोधपुर मे प्रकट होता है।

सम्पादक—बाबू पदमसिह जैन है।

५. जैन जागृति—पाक्षिक, गुजराती भाषा में राणपुर (सौराष्ट्र-झालावाड़) मे प्रकट होता है।

सम्पादक—श्री महासुखलाल जे० देसाई तथा श्री वचुभाई पी० दोशी है।

६. जिन वाणी—श्री सम्यक्-ज्ञान प्रचारक-मडल की तरफ से मासिक हिन्दी भाषा में चौडा वाजार, लालभवन, जयपुर से प्रकट होता है —

सम्पादक—श्री चपालालजी कर्नावट B A LL B, श्री शशिकान्त झा शास्त्री है।

७ जैन सिद्धान्त—जैन सिद्धान्त सभा का मुख पत्र, मासिक, गुजराती भाषा में शान्ति सदन, लैमिगटन रोड, बम्बई से प्रकट होता है।

सम्पादक—श्री नगीनदास गि० शेठ है।

८. सम्यग्दर्शन—मासिक हिन्दी भाषा मे सेलाना (म० भा०) से प्रकट होता है। सम्पादक श्री रतनलाल जी डोसी है।

९. श्रमण—श्री जैन सास्कृतिक-मडल का मुख-पत्र, मासिक हिन्दी भाषा में पार्श्वनाथ, जैनाश्रम हिन्दू यूनिवर्सिटी, बनारस से प्रकट होता है। सम्पादक—पं० श्री कृष्णचन्द्रजी शास्त्री है।

१० संत वाणी—मासिक पत्रिका हिदी भाषा में अजमेर से प्रगट होती है। इसमें विद्वद् मुनिराजो तथा त्यागी सन्तो के ही लेख प्रकाशित होते है। सचालक—प० श्री धर्मपालजी मेहता है।

प्रकाशन-संस्थाएँ

१ सेठिया जैन ग्रन्थमाला, बीकानेर
२ आत्म-जागृति-कार्यालय (श्री जैन गुरुकुल) व्यावर
३. जवाहर साहित्य माला, भीनासर
४ जैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति, रतलाम
५ अमोल जैन ज्ञानालय, धुलिया (पू० अमोलकऋषिजी म० के प्रकाशन)
६ स्थानकवासी जैन प्रकाशन, अहमदावाद
७. शता रत्नचन्द्रजी महाराज के प्रकाशन, सुरेन्द्र नगर
८ लीवडी सम्प्रदाय के प० नानचन्द्रजी म० छोटालालजी म० के प्रकाशन
९. कच्छ के प्रकाशन—नागजी स्वामी, रतनचन्दजी स्वामी इत्यादि के
१०. लीवडी छोटे सिंघाडे के प्रकाशन पू० मोहनलालजी, मणीलालजी म० आदि के
११ प० मुनि श्री हस्तीमलजी म० सा० के प्रकाशन
१२ पूज्यश्री आत्मारामजी महाराज के प्रकाशन
१३ डॉ० जीवराज घेला भाई के प्रकाशन
१४ बालाभाई छगनलाल ठि० कीकाभ, अहमदाबाद
१५ दरियापुरी प० मुनिश्री हर्षचन्द्रजी म० आदि के प्रकाशन
१६ बोटाद सम्प्रदाय के मुनियो के प्रकाशन
१७ गोंडल सिघाड़े के मुनियो का प्रकाशन
१८. वरवाला सिंघाड़े के मुनिवरो का प्रकाशन
१९ श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह के प्रकाशन
२०. जैन कल्चरल सोसाइटी, वनारस के प्रकाशन
२१. सन्मति ज्ञानपीठ, लोहामण्डी, आगरा के प्रकाशन
२२ जैन गुरुकुल प्रेस, व्यावर के प्रकाशन
२३ श्री महावीर प्रि० प्रेस, व्यावर के प्रकाशन
२४. श्री श्वे० स्था० जैन कॉन्फरस के प्रकाशन
२५. प० शुक्लचन्दजी म० के प्रकाशन
२६. मरुधर पं० मुनि मिश्रीमलजी म० और पं० कन्हैयालालजी म० के प्रकाशन

२७. महासति पार्वतीजी म० सा० के प्रकाशन
२८. जैन सिद्धान्त सभा, वम्बई के प्रकाशन
२९ श्री रतनलालजी डोशी, सैलाना के प्रकाशन
३० जिनवाणी और सम्यक्-ज्ञान, प्रचारक समिति के प्रकाशन
३१. श्री मोतीलालजी राका, ब्यावर के प्रकाशन
३२ श्री वीराणी ट्रस्ट, राजकोट के प्रकाशन
३३. श्री ज्ञानोदय सोसाइटी, राजकोट के प्रकाशन
३४. श्री शास्त्रोद्धार प्रकाशन समिति के प्रकाशन
३५ प० मुनिश्री पुप्फभिक्खु के प्रकाशन
३६. श्री हितेच्छु श्रावक मण्डल, रतलाम के प्रकाशन

स्था० जैन समाज में मुख्यत. उक्त सस्थाओ द्वारा प्रकाशन और साहित्य प्रचार का कार्य हो रहा है। अन्य प्रकाशन भी होते रहते हैं। अनेक विद्वान् मुनिवरो का अप्रकट साहित्य भी मुनिवरो-महासतियाँजी और श्रावको के पास पडा है।

प्रकाशन की सूचियाँ जो मिल सकी है, वे उपरिलिखित है।

स्वर्ण-जयन्ती के अग्रिम ग्राहक वनने वालों की शुभ नामावली

१५) श्री कन्हैयालालजी भटेवडा, विजयनगर (राज०)
१५) ,, मनोहरलालजी पोखरना, चित्तौडगढ
१५) ,, रिखवचन्दजी सन्तोषचन्दजी, रामपुरा
१५) ,, खीमचन्दभाई मूलजी भाई, बुलसर
१५) ,, मोहनलाल पानाचन्द खोखानी, वरवाला
१५) ,, श्वे० स्था० जैन सघ, वोरवाड
१५) ,, श्वे० स्था० जैन संघ, वेरावल
१५) , त्रिकमजी लाधाभाई, जूनारदेव (इटारसी)
१५) , सेठ धारसीभाई झवेरचन्दभाई, अहमदावाद
१५) ,, सेठ लखमीचन्द झवेरचन्द, अहमदावाद
१५) ,, केशवचन्द हरीचन्दभाई मोदी ३ प्रतियो के लिये, अहमदावाद
१५) ,, हीरालाल भाई लालचन्द भाई, अहमदावाद
१५) ,, श्वे० स्था० जैन सघ, मणीलार
१५) ,, जयदेवमलजी माणकचन्दजी, वागलकोट
१५) ,, हिम्मतलाल कस्तूरचन्द, वम्बई
१५) ,, चुन्नीलाल कल्याणजी कामदार, वम्बई
१५) ,, बापालाल रामचन्दभाई गांधी, घाटकोपर
१५) श्री ठाकरशीभाई जसराजभाई वीरा, वम्बई
१५) ला० मुसद्दीलाल ज्योतीप्रसादजी जैन, वम्बई
१५) सेठ लालचन्दजी चुन्नीलालजी, वम्बई
१५) मी० एम० जैन, वम्बई
१५) श्री श्वे० स्था० वर्धमान जैनसघ, भीम
१५) ,, रतनचन्दजी शेषमलजी, कन्दरा
१५) ,, नन्दलाल पोपटलाल, घाटकोपर
१५) ,, रमणीकलाल जेठालाल पारख, घाटकोपर
१५) ,, मगनलाल पी० डोशी, वम्बई
१५) ,, चुन्नीलालजी सौभाग्यचन्दजी, वम्बई
१५) मणीलाल भाई शाह,वम्बई
१५) विठ्ठलदास पीताम्बरदास' वम्बई
१५) श्री श्वे० स्था० जैन श्रावक संघ, फोट
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, वम्बई
१५) ,, गिरधरलाल हीराचन्द, वम्बई
१५) ,, सेठ लखमशी [illegible], वम्बई
१५) ,, डॉ० वाडीलाल डी० [illegible], वम्बई
१५) मेसर्स हेमचन्द एण्ड कम्पनी, वम्बई

१५) सेठ अमोलकभाई अमीचन्द, बम्बई
१५) श्री मुफतलाल ठाकरशी शाह, बम्बई
१५) ,, हिम्मतलाल जादवजी भाई कोठारी, मलाड़
१५) ,, जया बहन, जामनगर
१५) ,, सेठ बल्लभजी खेताशीभाई, जामनगर
१५) ,, कालूभाई नवलभाई, जामनगर
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, ताल (राज०)
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, विजयनगर
१५) शाह भाईलाल मोहनलाल, बम्बई
१५) श्री भीखालाल मोतीचन्द सिंघवी, बम्बई
१५) ,, रायचन्दभाई जगजीवनदास पारिख, बम्बई
१५) सेठ शातिलाल हेमचन्द सिंघवी, बम्बई
१५) श्री केवलचन्दजी चौपड़ा, बम्बई
१५) मेसर्स शान्तिलाल रूपचन्द, बम्बई
१५) सेठ नागरदास नानजी भाई, बम्बई
१५) श्री रामजी भाई केशवजी भाई शाह, बम्बई
१५) श्री नाथालाल मानकचन्द पारिख, माटुंगा
१५) ,, रामजी भाई इन्दरजी भाई, माटुंगा
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन सघ, माटुंगा
१५) ,, केशवलाल मूलचन्द भाई, माटुंगा
१५) ,, सेठ लालदास भाई जमनादास भाई, बम्बई
१५) ,, सेठ वारीलाल अमरसी भाई, बम्बई
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन सघ, बम्बई
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन संघ, विले पारले (बम्बई)
१५) ,, गिरजाशंकर उमाशंकर मेहता, दादर
१५) ,, गिरधर दामोदर दफ्तरी, बम्बई
१५) ,, पोपटलाल पानाचन्द, बम्बई
१५) ,, वीरचन्द मेघजी भाई, बम्बई
१५) ,, मणीलाल वीरचन्द, बम्बई
१५) ,, अमृतलाल रायचन्द जौहरी, बम्बई
१५) ,, जमनादास हरकचन्द, बम्बई
१५) ,, मणीलाल केशवजी भाई, वाड़िया
१५) ,, रामजी भाई हसराज भाई कमाणी, बम्बई
१५) ,, छोटालाल केशवजी भाई, बम्बई
१५) ,, जयचन्द भाई जमनादास भाई, बम्बई
१५) ,, प्राणलाल छगनलाल गोड़ा, बम्बई
१५) श्री मनसुखलाल विक्रमशीशाह, बम्बई
१५) ,, कीरशी भाई हीरजी भाई, बम्बई
१५) ,, लीलाचन्द प्रेमचन्द भाई, बम्बई
१५) ,, छोटालाल जगजीवनदास भाई, बम्बई
१५) ,, कामजी भाई लक्ष्मीचन्द, बम्बई
१५) ,, हरकचन्द त्रिभुवनदास, बम्बई
१५) ,, जयचन्द हंसराज, बम्बई
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, बम्बई, २१
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, राती (मारवाड)
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, निम्बोल
१५) ,, बागमलजी जड़ावचन्दजी जैन, उमरकोट
१५) ,, स्थानकवासी जैन सघ, बिलरवा
१५) ,, वर्धमान श्रावक सघ, जोगीनगरा
१५) ,, वनिता बहन, जामवंथली (सौराष्ट्र)
१५) ,, प्रीतमलाल पुरसोत्तम सेठ, जामनगर
१५) ,, वीसा श्रीमाली स्था० जैन संघ, जाम खम्भालिया (सौराष्ट्र)
१५) ,, सिंघवी विशनजी नारायणजी, जाम खम्भालिया
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, फूलिया (अजमेर)
१५) ,, टी० जी० शाह, बम्बई ३
१५) ,, रमणीकलाल दलीचन्द भाई, बम्बई
१५) ,, सेठ मनसुखलाल अमीचन्द, बम्बई
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, अन्धेरी (बम्बई)
१५) ,, हिम्मतलाल मगनलाल तुरखिया, बम्बई
१५) ,, जयचन्द भाई जसराज भाई वोरा, बम्बई
१५) ,, मागीलाल सेठिया, भीनासर
१५) ,, पोपटलाल कालीदास, राजकोट
१५) ,, उधवजी तलशी भाई डोसी, ध्रोल (सौराष्ट्र)
१५) ,, गांधी हीराचन्द नत्थूभाई, ध्रोल
१५) ,, महेता ऊधवजी भाई नारायणजी भाई, राजकोट
१५) ,, जेठाचन्द पानाचन्द पटेल, पड़धरी
१५) ,, मनसुखलाल भाईचन्द भाई, बम्बई
१५) ,, गोकुलदास शिवलाल अजमेरा, बम्बई
१५) ,, हरजीवनदास त्रिभुवनदास, बम्बई
१५) ,, खीचन्दभाई सुखलाल भाई, दादर
१५) ,, रसिकलाल प्रभाशंकर, बम्बई

१५) श्री अर्जुनलालजी भीमराजजी डागी, भीलवाडा
१५) „ सेठ नागरदास त्रिभुवनदास, बम्बई
१५) „ हरजीभाई उमरशीभाई, बम्बई
१५) „ मणीलाल भाई शामजी भाई विराणी, बम्बई
१५) „ हकीम बेनीप्रसादजी जैन, रामामण्डी
१५) „ रत्न जैन पुस्तकालय, वोदवड
३०) „ वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, वोदवड
१५) „ फोजराजजी चुन्नीलालजी बागरेचा, बालाघाट
१५) „ वर्धमान स्था० जैन सघ, निम्बाहेडा
१५) „ स्था० जैन सघ, लींबडी (सौराष्ट्र)
१५) „ स्था० बडा उपाश्रय जैन सघ, लीबडी
१५) „ सेठ जवानमलजी चादमलजी दुगड, जैतारण
१५) „ वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, इगतपुरी
१५) „ कन्हैयालालजी साहूकार, आरकोनाम
६०) „ वर्धमान स्था० जैन सघ, नागपुर
१५) „ रूपचन्दजी चौधरी, रामपुरा
१५) „ जैन जवाहर मडल, देशनोक
१५) „ वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, बिलाडा
१५) „ मत्रीजी श्री जैन गुरुकुल, राजनोदगांव
१५) „ शिवचदजी अमोलकचदजी कोटेचा, शिवपुरी
१५) „ वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, शिवपुरी
१५) „ जौहरी केसरीमलजी घीसूलालजी, जयपुर
१५) „ हजारीलालजी रामकल्याणजी जैन, सवाई माधोपुर
१५) „ मागीरामजी छगनलालजी, कोटा
१५) „ नार्थूसिहजी वछराजजी, कोटा
१५) „ वर्धमान स्था० जैन संघ, रायचूर
१५) „ सम्पतराजजी सिंघवी, वकाती
१५) „ चादमलजी सा० जैन, वकाती
१५) „ गुलाबचन्दजी पूनमचन्दजी सा० जैन, रायपुर
१५) „ रमेशचन्द दयाचन्दभाई जैन, रामगज मडी
१५) „ कन्हैयालालजी वोहरा, भिवानीगज मडी
१५) „ सम्पतराजजी धारीवाल, रायपुर

१५) श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, गगाधर
१५) „ वर्धमान स्था० जैन सघ, आलोट
१५) „ मेसर्स मोतीरामजी केवलरामजी, महीदपुर
१५) , वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, नागदामडी
१५) „ वर्धमान स्था० जैन सघ, उन्हेल (उज्जैन)
१५) „ वर्धमान स्था० जैन सघ, उग (झालावाड)
१५) „ वर्धमान स्था० जैन सघ, नलखेडा
१५) „ दलीचन्दजी ओंकारचन्दजी राका, सैलाना
१५) श्री वर्धमान स्था० जैन सघ, वारा (राजस्थान)
१५) „ पारख ब्रदर्स नासिक सिटी
१५) „ शभुलाल कल्याणजी भाई, माटुंगा
१५) „ मलूकचद झवेरचद मेहता, बम्बई
१५) „ चिमनलाल अमरचद सिघवी, दादर
१५) „ उम्मेदचद काशीरामभाई, बम्बई
१५) „ खुशालदासभाई खगारभाई, बम्बई
१५) „ चिमनलाल पोपटलाल शाह, बम्बई
१५) „ जगजीवनलाल सुखलाल अजमेरी, बम्बई
१५) „ हरीलालभाई जयचदभाई डोशी, घाटकोपर
१५) „ शादीलालजी जैन, बम्बई
१५) , नथमलजी बाठिया, बीकानेर
१५) „ प्रतापमलजी फूलचन्दजी बनवट, आष्टा (भोपाल)
१५) „ चादमलजी मिश्रीलालजी, भोपाल
१५) „ वर्धमान स्था० जैन सघ, बडोद
१५) „ विलायतीरामजी जैन, नई दिल्ली
१५) „ घासीलालजी पाचूलालजी, उज्जैन
१५) „ वर्धमान स्था० जैन संघ, उज्जैन
१५) „ सुगनचन्दजी चुन्नीलालजी नुनावत, धामणगाव
१५) „ वर्धमान स्था० जैन संघ, फूलनगर
१५) „ जोरावरमलजी प्यारेलालजी, थादला
१५) „ रिखबचन्दजी दौलाजी घोटावत, थादला
१५) „ जेठमलजी बख्तावरमलजी साड, इन्दौर
१५) „ मोहनलालजी भूरा, मोरियाबाटी (आसाम)

श्री भैरोदान जी सेठिया की अध्यक्षता में बम्बई (माधव बाग) के अधिवेशन का एक दृश्य

कान्फरेन्स की जनरल कमिटी की भावनगर मे एक बैठक श्री मेहता जी मध्य मे बैठे है।
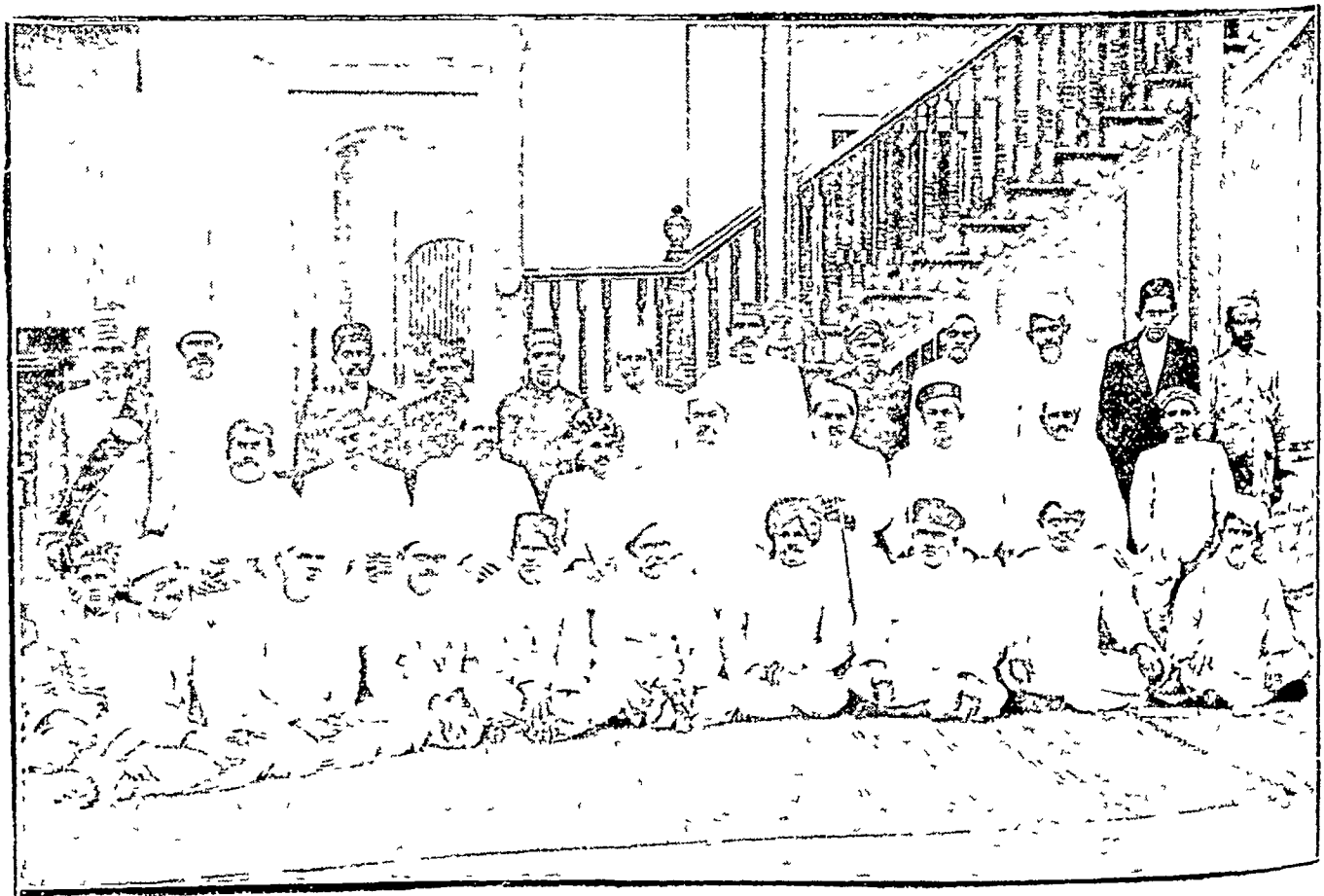
कान्फरेन्सकी जनरल कमिटी की एक बैठक
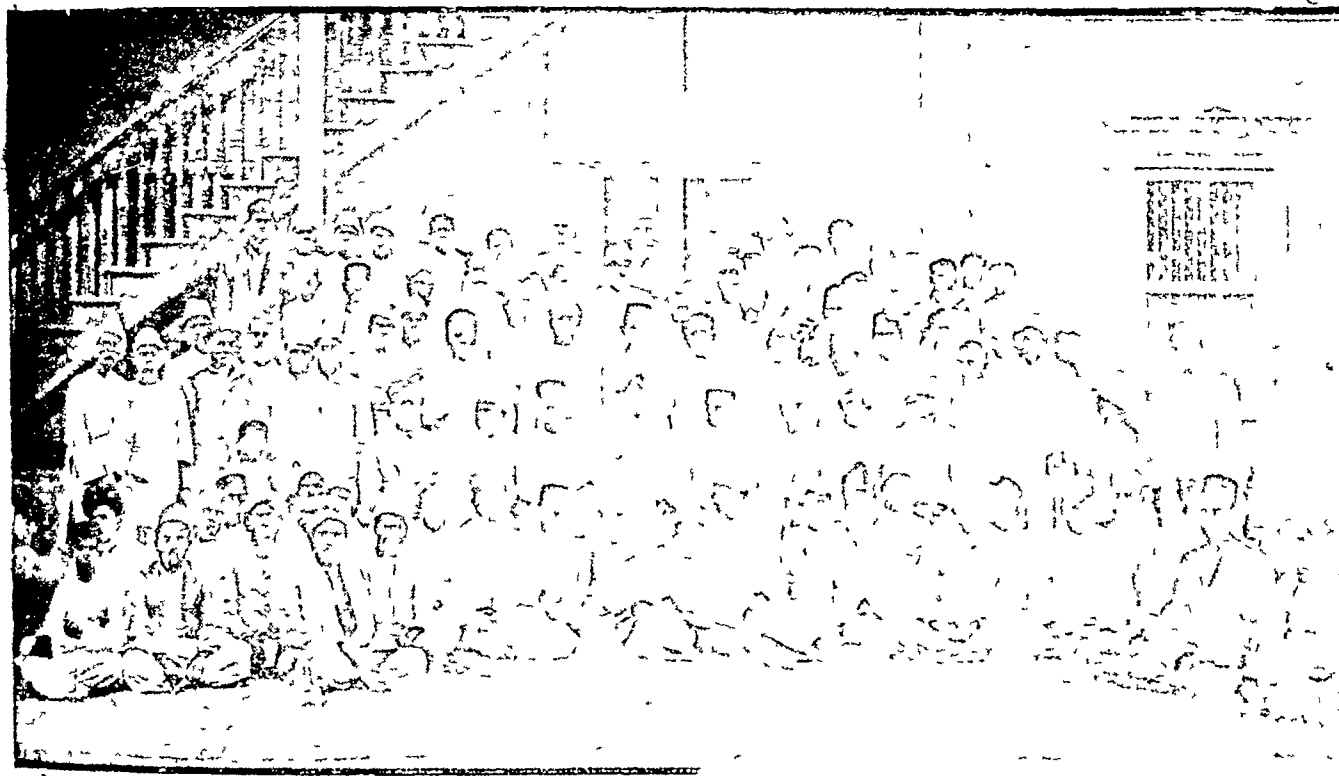
वंबई मे हुई कान्फरन्स की जनरल कमिटी की एक बैठक

श्री हेमचन्द्र भाई मेहता के नेतृत्व में कॉन्फरन्स का एक शिष्ट मण्डल

अधिवेशन के समय महिला-परिषद् का एक दृश्य

स्नातक, जैपुर (राजस्थान)

सौराष्ट्र धर्म शिक्षण समिति की राजकोट मे एक बैठक

श्री रत्न चिन्तामणि मित्र-मंडल घाटकोपर द्वारा संचालित कन्याशाला व श्राविकाशाला

जैन बोर्डिङ्ग पूना के छात्रो के साथ कान्फरन्स के अधिकारी गण
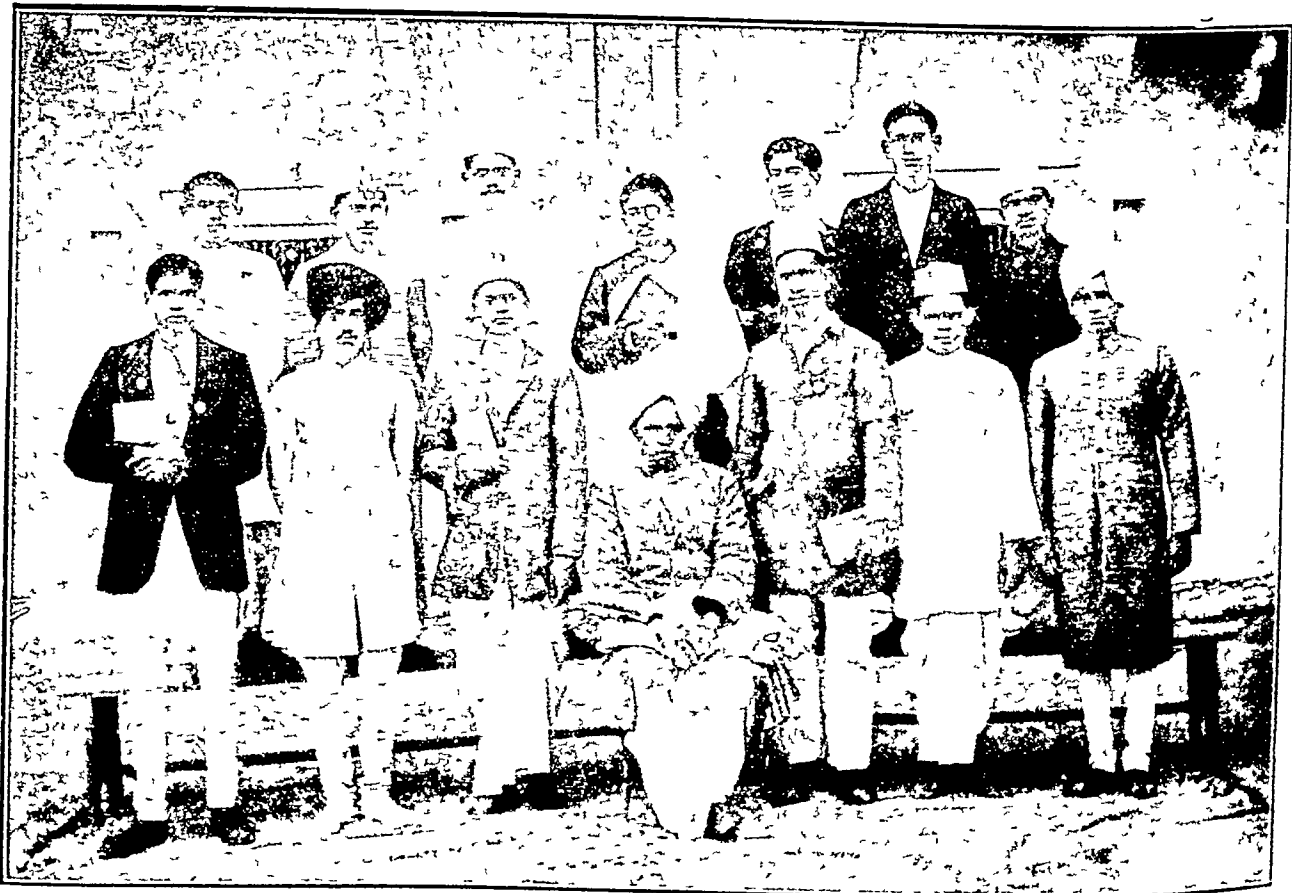
श्री दुर्लभजी भाई के साथ जैपुर मे श्री जैन ट्रेनिंग कालेज के छात्र

सौराष्ट्र धर्म शिक्षण समिति की राजकोट मे एक बैठक

श्री रत्न चिन्तामणि मित्र-मंडल घाटकोपर द्वारा संचालित कन्याशाला व श्राविकाशाला
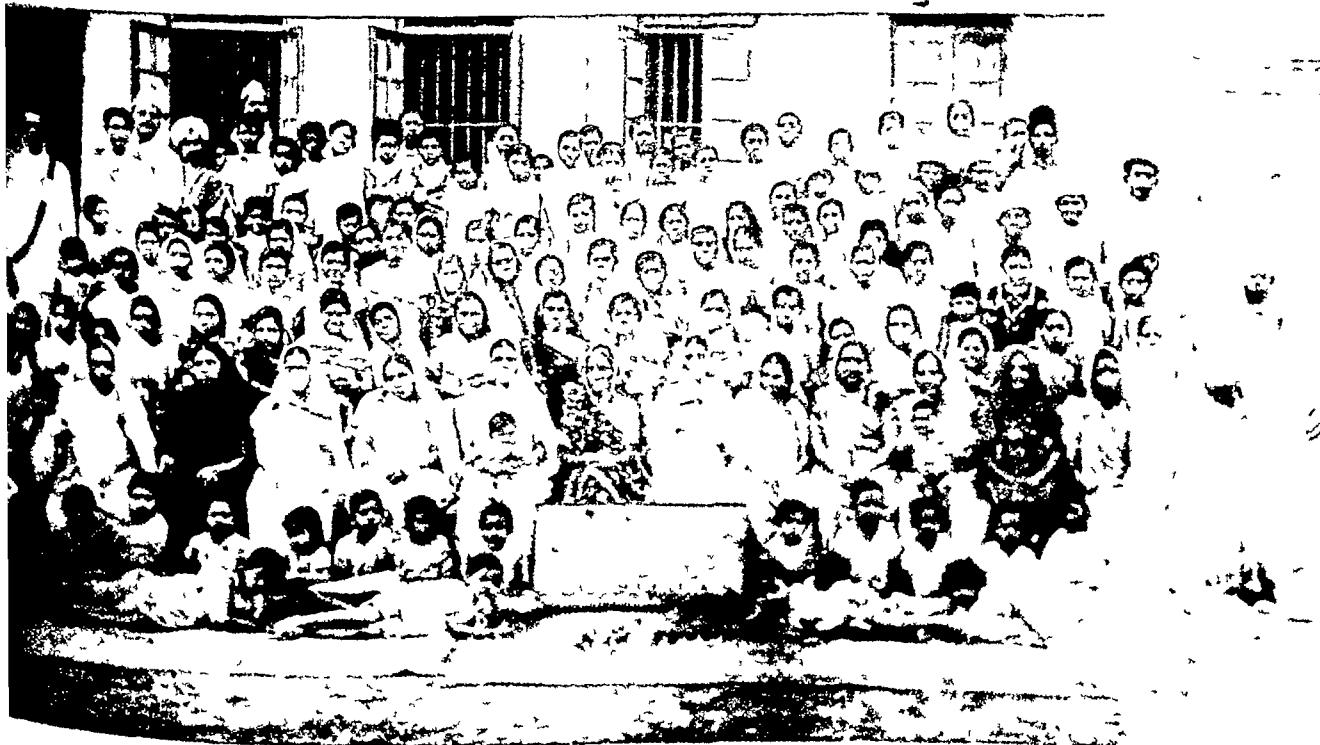
अधिवेशन के समय महिला-परिषद् का एक दृश्य
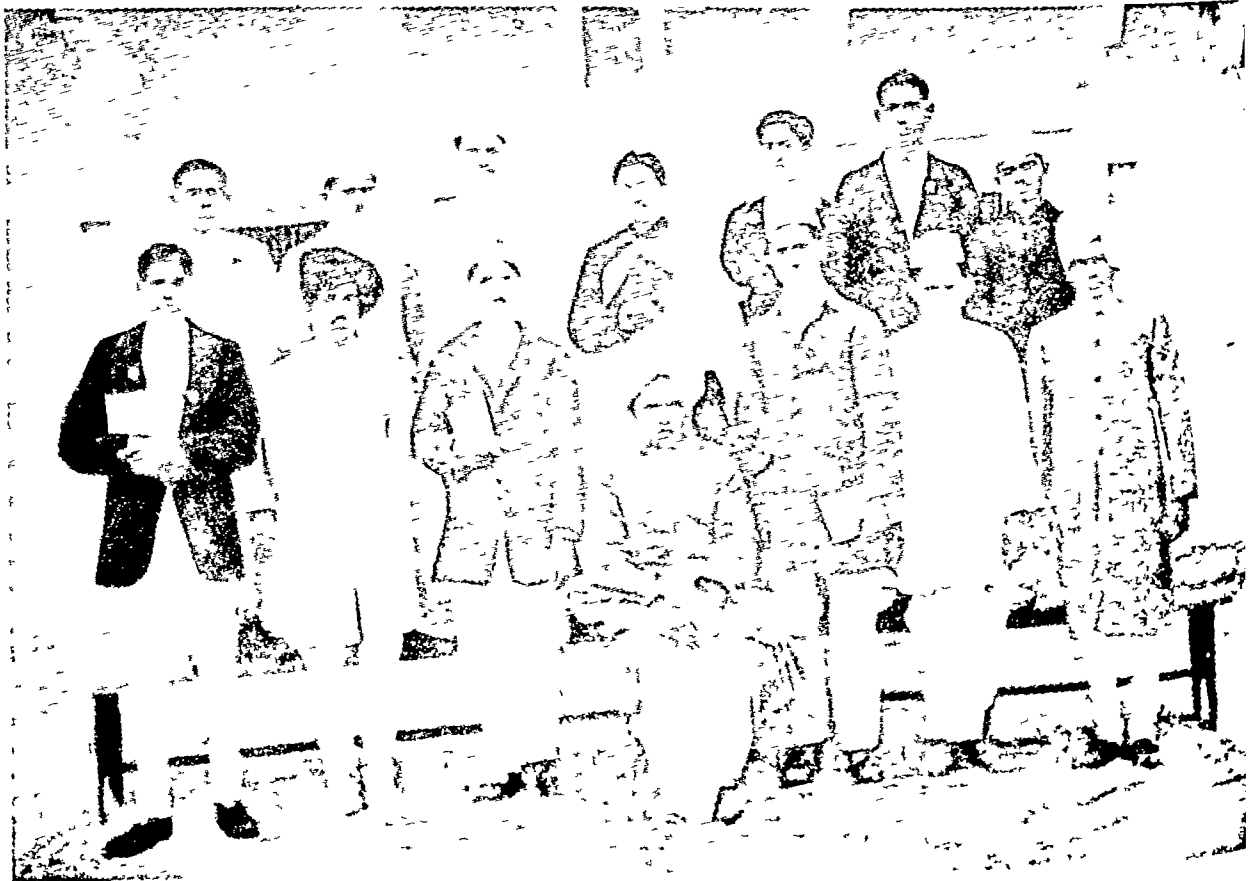
श्री जैन ट्रे निंग कालेज के स्नातक, जैपुर (राजस्थान)

શ્રી અખિલ ભારતવર્ષીય શ્વે. સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સ

સુવર્ણ-જયન્તી ગ્રંથ

ગુજરાતી વિભાગ

આમુખ

શ્રી અખિલ ભારતવર્ષીય શ્વેતામ્બર સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સના પચાસવર્ષીય સ્વર્ણ-જયન્તી અધિવેશનના શુભ પ્રસંગે કોન્ફરન્સના સંક્ષિપ્ત ઇતિહાસ-ગ્રન્થને પ્રકાશિત કરતા અમોને ઘણો જ હર્ષ થાય છે. આ ઇતિહાસના પ્રકાશનનો પણ એક નાનકડો ઇતિહાસ છે આજથી લગભગ ૭ મહિના પહેલાં કોન્ફરન્સના ઇતિહાસને પ્રકાશિત કરવાનો વિચાર ઉત્પન્ન થયો અને ત્યારે જ તે વિચારને મૂર્તરૂપ આપવાનો નિર્ણય પણ કરવામા આવ્યો. કોઇ પણ ઇતિહાસના આલેખનને માટે હોવી જોઇતી લેખન-સામગ્રી, વ્યવસ્થિત સંપાદિત કરવાની સમય-મર્યાદા તથા જૈન સંઘોની સહાનુભૂતિ હોવી નિતાન્ત આવશ્યક છે, પરંતુ સમયાભાવ તથા કાર્યાધિક્યને કારણે આ સ્વર્ણ-જયન્તી-ગ્રન્થને જોઇએ તેવો સમૃદ્ધ અને જ્ઞાનસભર-માહિતીપૂર્ણ બનાવી શકયા નથી, એ માટે અમને ખેદ થાય છે, છતા પણ અમે આ ગ્રન્થને વિશેષ ઉપયોગી બનાવવા માટે યથાશકય પ્રયત્ન અવશ્ય કર્યો છે અમે જાણીએ છીએ કે આ સ્વર્ણ જયન્તી-ગ્રન્થને ચિરસ્મરણીય બનાવવા માટે તેની અન્તર્ગત અનેક વિષયોનો સમાવેશ કરવો અત્યાવશ્યક હતો, પરંતુ અમને યથાસમય શ્રાવક-સંઘો, શ્રીમંતો, વિદ્વાનો, સંસ્થાઓના પરિચય વગેરે ન મળવાને કારણે અમે બધાનો યથાસ્થાને સમાવેશ કરી શકયા નથી, એ માટે અમે ક્ષમાર્થી છીએ. અમને વિશ્વાસ છે કે આ નાનકડો સ્થા. સમાજનો ઐતિહાસિક ગ્રન્થ સ્થાનકવાસી જૈન સમાજનો સર્વાંગસુંદર ભાવિ માહિતી ગ્રન્થ તૈયાર કરવામા ઉપયોગી સિદ્ધ થશે.

આ ગ્રન્થ નીચે જણાવેલ પરિચ્છેદોમા વિભકત કરવામા આવેલ છે.—

(૧) જૈન સંસ્કૃતિ, ધર્મ, તત્ત્વજ્ઞાન આદિનો સંક્ષિપ્ત પરિચય
(૨) સ્થા. જૈન ધર્મનો સંક્ષિપ્ત ઇતિહાસ.
(૩) સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સનો સંક્ષિપ્ત ઇતિહાસ.
(૪) સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સની વિશિષ્ટ પ્રવૃત્તિઓ.
(૫) સ્થા. જૈન સાધુ-સમ્મેલનનો સંક્ષિપ્ત ઇતિહાસ.
(૬) સ્થા. જૈન ધર્મના ઉન્નાયક મુનિરાજો.
(૭) સ્થા. જૈન ધર્મના શ્રાવકો
(૮) સ્થા. જૈન સંસ્થાઓ તથા સંઘો.

સંક્ષેપમાં આ સ્વર્ણ-જયન્તી-ગ્રન્થમા સ્થાનકવાસી જૈન સમાજના ચતુર્વિધ સંઘનો સંક્ષિપ્ત પરિચય આપવાનો યથાશકય પ્રયત્ન કરવામા આવ્યો છે.

આ ગ્રન્થમા સારાસારનો હંસબુદ્ધિથી વિવેક કરવાની તથા સારવસ્તુને ગ્રહણ કરી, તેમા રહેલી ત્રુટિઓ, કે સ્ખલનો માટે યોગ્ય સૂચનો મોકલવાની વિનમ્ર પ્રાર્થના છે. જેથી ભવિષ્યમા તેનો સદુપયોગ કરી શકાય.

જે જે ધર્મપ્રેમી બંધુઓએ આ ગ્રન્થનું ગૌરવ વધારવામા પોતાના નામ અભિનન્દન-પત્રિકા, છપાવી તથા લેખન, સંશોધન તથા પ્રકાશન આદિ કાર્યોમા સક્રિય સહકાર આપ્યો તે સૌનો આભાર માનવાની આ તક લઇએ છીએ.

ચાંદની ચોક,
દિલ્હી. તા. ૨૯-૩-૫૬

નિવેદક :—
શ્રી માણેકલાલ ગિરધરલાલ શેઠ
ધીરજલાલ કે. તુરખિયા

જૈન ધર્મનો સંક્ષિપ્ત ઇતિહાસ

અનુક્રમણિકા

જૈન ધર્મનો સંક્ષિપ્ત ઇતિહાસ

૧. આદિ યુગ

આદિ યુગનો પ્રારભ પ્રાચીનત્તમ છે. તે જેટલો પ્રાચીન છે તેટલો જ અજ્ઞાત પણ છે. માનવ–સભ્યતાનો અરુણોદય થયો તે દિવસને આદિકાળનો પ્રથમ દિવસ માની લઇએ તો તે અનુચિત નથી

આ યુગનુ નામ ભગવાન આદિનાથના નામ ઉપરથી આદિ યુગ રાખવામા આવ્યુ છે.

ભગવાન આદિનાથ, આર્ય સસ્કૃતિના સૃષ્ટા, વર્તમાન અવસર્પિણી કાળમા જૈન–ધર્મના પ્રથમ સસ્થાપક, પરમ દાર્શનિક અને માનવ સભ્યતાના જન્મદાતા તરીકે પ્રસિદ્ધ છે.

વર્તમાન ઇતિહાસ ભગવાન ઋષભદેવ (આદિનાથ)ના વિષયમાં મૌન છે. કારણ કે ઇતિહાસકારની દૃષ્ટિ ૨૪૦૦૦ વર્ષથી પહેલાંના સમયમા પહોચી શકવા અસમર્થ છે.

આથી ઋષભદેવના વિષયમા જાણવા માટે આપણે જૈન શાસ્ત્રો, વેદ, પુરાણ અને સ્મૃતિગ્રથોનો આશ્રય લેવો પડે છે.

ભગવાન ઋષભદેવના સબધમા વૈદિક સાહિત્યમાથી ઘણા ઉલ્લેખ પ્રાપ્ત થાય છે. શ્રીમદ્ ભાગવતના પાચમા અને બારમા સ્કધમાં તેમના વિષે વિસ્તૃત ઉલ્લેખ છે. આ પ્રસગમા ભગવાન ઋષભદેવને મોક્ષ ધર્મના આદ્ય પ્રવર્તક માનવામા આવ્યા છે.

ભગવાન ઋષભદેવના સમયને જૈન ધર્મમા 'યુગલિયા-કાળ' કહેવામા આવ્યો છે. પુરાણોમા પણ એમજ કહેવામા આવ્યુ છે વેદમા યમ-યમીના સવાદથી પણ જૈન ધર્માનુકુળ વર્ણનની સત્યતા સાબિત થાય છે

તે યુગના માનવીઓ પ્રાકૃતિક જીવન જીવતા અને તેમનુ મન પ્રકૃતિજન્ય દૃશ્યો અને સમૃદ્ધિઓમા જ રાચતુ. તે વખતના મનુષ્યો સરળ–સ્વભાવી હતા અને તેમની વ્યવસ્થા ઘણીજ સરળ હતી. તેમનો નિર્વાહ પ્રકૃતિએ પેદા કરેલા કલ્પવૃક્ષો વડે થતો એક જ માબાપથી જોડલે રૂપે જન્મતા પુત્ર–પુત્રીઓ દપતી બનતા અને જીવન વહન કરતાં

ધીમે ધીમે કલ્પવૃક્ષો અલ્પ ફળદાયી બનવા લાગ્યાં [illegible] યુગલિયાઓમાં કલહ અને અનતોષ ફેલાવા માડ્યો. [illegible] ભગવાન ઋષભદેવનો જન્મ થયો. તેમણે [illegible] કલ્પવૃક્ષના આધારે ન બેસી રહેતાં, [illegible]
[illegible]

આદિ જીવનનિર્વાહના સાધનો અને જીવનને ઉપયોગી ચીજો બનાવવાનુ શીખવ્યુ મતલબ કે યુગલિયા–યુગનુ નિવારણ કર્યું.

એક જ માબાપના સતાનો વચ્ચે જે દાપત્યજીવન જીવાતુ તેનુ પણ નિવારણ કરી ભગવાન ઋષભદેવે લગ્નપ્રથા દાખલ કરી. તેમની સાથે જોડલે જન્મેલી સુમગલા નામની સહોદરા તો તેમના દામ્પત્યજીવનની ભાગીદાર હતી જ, પરતુ વ્યવસ્થિત લગ્નપ્રથાને જન્મ આપવા અને તેને વ્યાપકરૂપ આપી વસુધૈવ કુટુમ્બકમની ભાવનાને વિકસાવવા, એક સુનદા નામની કન્યા સાથે તેમણે વિધિપુરઃસર લગ્ન કર્યાં. આ કન્યા પોતાના જન્મ સાથીના અવસાનને લીધે હતોત્સાહ અને અનાથ બની ગઇ હતી. આ કાળમા, આ ક્ષેત્રમા વિધિસરના લગ્ન પ્રથમ આ જ હતાં.

આ બન્ને સ્ત્રીઓથી તેમને ભરત અને બાહુબલિ આદિ સો પુત્રો અને બ્રાહ્મી અને સુદરી નામની બે કન્યાઓની પ્રાપ્તિ થઇ

વર્તમાન સસ્કૃતિના આદ્ય પુરુષને પ્રાપ્ત થએલ આ પરમ સૌભાગ્યને લીધે આજે પણ 'શત પુત્રવાન્ ભવ'નો આશીર્વાદ આપવામા આવે છે.

ભગવાન ઋષભદેવનુ જન્મસ્થાન અયોધ્યા નગરી હતુ. જેનુ બીજુ નામ વિનીતા પણ હતુ. તેમનો જન્મ ત્રીજા આરાના અત ભાગે ચૈત્ર વદી અષ્ટમીના રોજ મધ્ય રાત્રિએ, ઉત્તરાષાઢા નક્ષત્રમા નાભિકુલકરની રાણી મરુદેવાની કુક્ષિએ થયો હતો

ભગવાન ઋષભદેવના રાજ્ય-અમલનો સમય નિર્માણ કાળ કહી શકાય. કારણ કે તેમના જ્યેષ્ઠ પુત્ર ભરત યૌવનાવસ્થામા પ્રવેશ રાજ્યાધિકારી બનવાના માર્ગે અગ્રેસર બની રહ્યા હતા અને રાજ્ય નીતિમાં નિપુણ હતા. બાહુબલિની શારીરિક શક્તિના તે સમયના લોકોમા સ્પર્ધાનો વિષય બની ચૂકી હતી

ભગવાન ઋષભદેવની [illegible] બ્રાહ્મી–લિપિનો [illegible] અને સુદરીએ ગણિત વિદ્યાનુ પ્રચલન કર્યું હતુ.

[illegible]
[illegible]
[illegible]

સસાર પ્રત્યે વૈરાગ્યભાવ પ્રગટ થાય એ સ્વભાવિક છે. તેમણે પોતાનુ રાજ્ય પોતાના પુત્રોને વહેચી આપ્યુ અને સસારનો ત્યાગ કરી ચાર હજાર પુરુષો સાથે સયમ અગીકાર કર્યો.

એક હજાર વર્ષ સુધી આત્મસાધના અને તપશ્ચર્યા કરતાં એક સ્થળેથી બીજે સ્થળે અને જનપદ વિહાર કરતા છેવટે પુરિમતાળ નગરમાં તેઓને કેવળજ્ઞાન પ્રાપ્ત થયુ. કેવળજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ બાદ તેમણે ચતુર્વિધ સઘરૂપી તીર્થની સ્થાપના કરી. આ કારણે આ અવસર્પિણી કાળમાં તેઓ આદિ તીર્થંકર કહેવાયા, વૈદિકશાસ્ત્રો મુજબ તે પ્રથમ 'જિન' બન્યા અને ઉપનિષદો મુજબ તેઓ બ્રહ્મા તથા ભગવાન પદના અધિકારી તથા પરમપદ પ્રાપ્ત કરનાર સિદ્ધ, બુદ્ધ અને અજર-અમર પરમાત્મા થયા

છદ્મસ્થાવસ્થા અને કેવળજ્ઞાનીપણે મળી કુલ એક લાખ પૂર્વ જેટલા દીર્ઘ સમય પર્યંત સયમ પાળી અષ્ટાપદગિરિ ઉપર પદ્માસને સ્થિત થઇ અભિજીત નક્ષત્રમા તેઓ પરિનિર્વાણને પામ્યા.

૨. ભરત અને બાહુબલિ

ભગવાન ઋષભદેવના આ બને પુત્રોના નામ જૈન ગ્રથોમાં ઘણા સુવિખ્યાત છે.

ભરતના નામ ઉપરથી આ ક્ષેત્રનુ નામ 'ભરત' યા ભારત પડયુ છે. ભરત આ અવસર્પિણી કાળના સર્વપ્રથમ ચક્રવર્તી રાજા હતા. તેમની સત્તા સ્વીકારવા તેમના ભાઇ બાહુબલિ તૈયાર નહોતા. બાહુબલિ પોતાના બળ ઉપર મુસ્તાક હતા આને પરિણામે બને વચ્ચે યુદ્ધ થયુ. આ યુદ્ધ જૈન શાસ્ત્રોમા સૌથી પ્રાચીન યુદ્ધ-ઘટના ગણાય છે.

આ સમયે જો કે સેનાઓનુ નિર્માણ થઇ ચૂકયુ હતુ, તો પણ માનવજાતિનો નિરર્થક વિનાશ કરવાનુ તે વખતે મનુષ્યો યોગ્ય સમજતા ન હતા.

આથી પાંચ પ્રકારનાં યુદ્ધ નક્કી થયાં હતાં જેવાં કે ૧ દૃષ્ટિયુદ્ધ ૨ નાદયુદ્ધ ૩. ભૂમિયુદ્ધ ૪. ચક્રયુદ્ધ અને ૫. મુષ્ટિયુદ્ધ.

દૃષ્ટિયુદ્ધમા જે પહેલાં આંખ બધ કરે તે હારી જાય.

નાદ-યુદ્ધમા જેનો અવાજ નિર્બળ હોય તે હારી જાય, અથવા જેનો અવાજ મોટો અને વધુ વખત ટકે તે જીતે.

વિશ્વના લોકો વૈજ્ઞાનિક શોધખોળોનો આશ્રય લઇ અગણિત માનવસંહાર યુદ્ધમાં કરે છે, તેને બદલે આવા નિર્દોષ યુદ્ધ થાય તો માનવજાતનુ શ્રેય થાય! ભૂમિયુદ્ધ, ચક્રયુદ્ધ અને મુષ્ટિયુદ્ધ જેવા હિસક યુદ્ધો તે કાળે પણ જો કે હતાં ખરાં, પણ તેનો આશ્રય છેક છેલ્લે અને ન છૂટકે જ લેવામા આવતો.

ચોથા યુદ્ધમા ભરતે ચક્ર છોડયુ, પરતુ ભાઇઓમાં તેની અસર થાય નહિ એટલે તે પાછુ ફર્યું.

છેલ્લા યુદ્ધમાં બાહુબળીએ ભરતને મારવા માટે મુઠ્ઠી ઉગામી, પરંતુ તુરત તેને વિવેક જાગ્રત થયો અને ઇદ્રે સમજાવ્યા એટલે તેમણે મુઠ્ઠી ઉપર જ રોકી લીધી. જો એ મુષ્ટિનો પ્રહાર થયો હોત તો ભરત કયા લુપ્ત થઇ જાત તેનો પત્તો પણ લાગત નહિ, એવુ બાહુબળીનું અમાપ બળ હતુ, એમ કહેવાય છે

બાહુબળી માટે ઘા કરવા માટે ઉપાડેલો હાથ એમને એમ પાછો ફરે એ પણ અસહ્ય હતુ. તેથી તેમણે સામાનો કે પોતાનો ઘાત કરવા કરતા તે મુષ્ટિનો ઉપયોગ અભિમાનનો ઘાત કરવામા કર્યો. તેમણે તે હાથે કેશ લુચન કર્યું અને સાધુવ્રતી બન્યા.

આમ આ ક્ષેત્રના સર્વપ્રથમ સમ્રાટ્ બનવાનુ સૌભાગ્ય ભરતને મળ્યુ.

ભરતને અગેનુ વિસ્તૃત વર્ણન જૈન જનતાના ગ્રથોમા મળી આવે છે.

૩. ઋષભદેવ પછીના બાવીસ તીર્થંકરો

ભગવાન ઋષભદેવ પછીના બાવીસ તીર્થંકરોનો ઇતિહાસ બનવાજોગ છે કે ઘણો મહત્ત્વપૂર્ણ હોય, પરતુ તે સબધમા વિસ્તૃત હકીકતો મળી શકતી નથી એટલે તેમના નામો અને સામાન્ય હકીકત જ અત્રે આપવામા આવે છે.

	નામ	પિતા	માતા	સ્થાન
૨	અજીતનાથ	જિતશત્રુ	વિજયાદેવી	અયોધ્યા
૩.	સભવનાથ	જિતાર્થરાજા	સૈન્યાદેવી	શ્રાવસ્તી
૪	અભિનદન	સવરરાજા	સિદ્ધાર્થરાણી	વિનિતા
૫	સુમતિનાથ	મેઘરથરાજા	સુમગલા	કુશલપુરી
૬	પદ્મપ્રભુ	ધરરાજ	સુસિમા	કૌશામ્બી
૭	સુપાર્શ્વનાથ	પ્રતિષ્ઠેન	પૃથ્વી	કાશી
૮.	ચદ્રપ્રભુ	મહાસેન	લક્ષ્મા	ચદ્રપુરી
૯	સુવિધિનાથ	સુગ્રીવ	રામાદેવી	કાકદી
૧૦	શીતલનાથ	દઢરથ	નદારાણી	ભદ્દીલપુર

	નામ	પિતા	માતા	સ્થાન
૧૧.	શ્રેયાંસનાથ	વિષ્ણુસેન	વિષ્ણુદેવી	સીંહપુર
૧૨	વાસુપૂજ્ય	વસુપૂજ્ય	જયાદેવી	ચંપાપુરી
૧૩	વિમળનાથ	કર્તાવરમ	શ્યામા	કંપિલપુર
૧૪	અનંતનાથ	સિંહસેન	સુયશા	અયોધ્યા
૧૫	ધર્મનાથ	ભાનુરાજા	સુવ્રતા	રત્નપુર
૧૬	શાંતિનાથ	વિશ્વસેન	અચિરા	હસ્તિનાપુર
૧૭	કુંથુનાથ	સૂરરાજા	શ્રીદેવી	,
૧૮	અરનાથ	સુદર્શનરાજા	શ્રીદેવી	,
૧૯	મલ્લિનાથ	કુંભરાજા	પ્રભાદેવી	મિથિલાનગરી
૨૦	મુનિસુવ્રત	મિત્રરાજા	પ્રભાવતી	રાજગૃહી
૨૧	નમિનાથ	વિજયસેન	વપ્રા	મિથિલા-મથુરા
૨૨.	નેમનાથ (અરિષ્ટનેમી)	સમુદ્રસેન	શિવાદેવી	દ્વારિકા
૨૩	પાર્શ્વનાથ	અશ્વસેન	વામાદેવી	બનારસ

આ બાવીસ તીર્થંકરો પૈકી ૧૬ મા શાંતિનાથ, ૧૭ મા કુંથુનાથ અને ૧૮ મા અરનાથ—આ ત્રણ તીર્થંકરો તેમનાં રાજ્યકાળ દરમ્યાન ચક્રવર્તી હતા.

૧૯ મા મલ્લિનાથ સ્ત્રી રૂપે હતા. જૈન ધર્મમા સ્ત્રીઓ પણ તીર્થંકર થઇ શકે છે, એ સત્યનુ આ સર્વશ્રેષ્ટ પ્રમાણ છે. જગતના કોઇપણ ધર્મમા સ્ત્રીને ધર્મ સંસ્થાપક તરીકેનુ મહત્ત્વ અપાયુ નથી આ એક જૈન ધર્મની ખાસ વિશિષ્ટતા છે

૨૦ મા મુનિસુવ્રત તીર્થંકરના સમયમા શ્રીરામ અને સીતા થયા હતા.

બાવીસમા અરિષ્ટનેમી (નેમનાથ)ના વખતમાં નવમા વાસુદેવ શ્રીકૃષ્ણ થયા હતા

અરિષ્ટનેમી લગ્ન કરવા જતા હતા ત્યારે રસ્તામા ભોજનને માટે લાવવામાં આવેલા પશુઓનો કરુણ ચિત્કાર સાંભળી, પશુઓને બચાવવા, લગ્નના માંડવેથી પાછા ફર્યા અને પરમકલ્યાણકારી સંયમધર્મ અંગીકાર કર્યો.

તેમની અને કૃષ્ણ વાસુદેવ વચ્ચેની વાતચીતના પ્રસંગો જૈનાગમોમાં ઘણા મળી આવે છે.

ત્રેવીસમા તીર્થંકર પાર્શ્વનાથે પણ સમ્યક્જ્ઞાન અને જીવદયા કેટલી આવશ્યક છે તે બતાવ્યુ. તેમનો અને કમઠ તાપસનો પ્રસંગ જૈન ધર્મગ્રંથોમા સુપ્રસિદ્ધ છે.

૪. ભગવાન મહાવીર

ભગવાન પાર્શ્વનાથ પછી ૨૫૦ વર્ષે ઇસ્વીસન [illegible] વર્ષ પૂર્વે ક્ષત્રિયકુંડમા ચરમ તીર્થંકર ભગવાન મહાવીરનો જન્મ ચૈત્ર શુક્લા ત્રયોદશીના દિવસે, ક્ષત્રિયકુંડ નગરના રાજા સિદ્ધાર્થની રાણી ત્રિશલાદેવીની કુક્ષિએ થયો હતો. તેમનુ જન્મનુ નામ વર્દ્ધમાન હતુ.

બાલસુલભ ક્રિડાઓ કરતા કરતાં તેઓ યુવાવસ્થાને પામ્યા તેમના લગ્ન યશોદા નામની એક રાજકન્યા સાથે કરવામાં આવ્યા હતાં. લગ્નના ફળરૂપે પ્રિયદર્શના નામની એક કન્યાની તેમને પ્રાપ્તિ થઇ હતી.

તેમના માતપિતા દેવલોક પામ્યા પછી તેઓ દીક્ષા લેવા તૈયાર થયા પરંતુ તેમના મોટા ભાઇ નંદીવર્ધને થોડોક વખત રોકાઇ જવાનુ કહ્યુ. પિતાની ગેરહાજરીમા મોટા ભાઇની આજ્ઞાનુ પાલન નાના ભાઇએ કરવુ જોઇએ, એ આદર્શને મૂર્તિમંત બનાવવા શ્રી વર્દ્ધમાન બે વરસ સુધી રોકાઇ ગયા, અને તે સમય દરમ્યાન સચિત્તજળ ત્યાગ આદિ તપશ્ચર્યા આદરી, સંયમ માટેની પ્રાથમિક તૈયારીઓ કરતા રહ્યા. છેવટે. એક વર્ષ સુધી વાર્ષિક દાન દઇ તેઓએ દીક્ષા અંગીકાર કરી

દીક્ષા લીધા બાદ સાડાબાર વર્ષ અને એક પક્ષ સુધી મહાવીરે ઘોર તપશ્ચર્યાઓ કરી, તેને પરિણામે ચાર ઘનઘાતી કર્મોનો ક્ષય થઇ, જૃંભિયા નગરીની બહાર, ઋજુવાલિકા નદીને ઉત્તર તીરે સામાયિક ગાથાપતિ કૃષ્ણીના ખેતરમા, ચોવિહારો છઠ્ઠ કરી, શાલવૃક્ષ નજીક દિવસના પાછલા પહોરે, ગોદોહન (ઉકડા) આસને બેઠા હતા ત્યારે ધર્મધ્યાનમા પ્રવર્તતાં થકા વૈશાખ સુદી દશમીને દિવસે મહાપ્રકાશમય કેવળજ્ઞાન અને કેવળ દર્શન પ્રગટ થયુ

કેવળજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ પછી ધર્મ દેશના દેતા પ્રભુ ૩૦ વર્ષ સુધી ગ્રામાનુગ્રામ વિચરતા રહ્યા.

હુંડાવસર્પિણી કાળના પ્રભાવે ભગવાન મહાવીરની પ્રથમ દેશના ખાલી ગઇ, કારણ તે દેશના વખતે કેવળ દેવતા જ હાજર હતા, મનુષ્યો ન હતા, પણ બીજી દેશના વખતે તેમણે વેદ-વેદાંતના પારગામી એવા બ્રાહ્મણ પંડિતોને શિષ્ય બનાવ્યા. તેમા ઇન્દ્રભૂતિ (ગૌતમ) પ્રથમ હતા.

ભગવાન મહાવીરના સમયમાં સમાજનુ અધઃપતન થયેલું હતુ, તે સમયે મનુષ્ય જાતિની એકતાને બદલે [illegible] ભાવનાનુ અને જાતિવાદનું નાટક [illegible] કરવામાં આવતુ હતુ. [illegible] અને [illegible] ધર્મ અને [illegible] [illegible] [illegible] આવતા હતા.

	નામ	પિતા	માતા	સ્થાન
૧૧	શ્રેયાંસનાથ	વિષ્ણુસેન	વિષ્ણુદેવી	સીંહપુર
૧૨	વાસુપૂજ્ય	વસુપૂજ	જયાદેવી	ચંપાપુરી
૧૩	વિમળનાથ	કૃતવર્મ	શ્યામા	કંપિલપુર
૧૪.	અનંતનાથ	સિંહસેન	સુયશા	અયોધ્યા
૧૫	ધર્મનાથ	ભાનુરાજા	સુવ્રતા	રતનપુર
૧૬	શાંતિનાથ	વિશ્વસેન	અચિરા	હસ્તિનાપુર
૧૭	કુંથુનાથ	સૂરરાજા	શ્રીદેવી	,,
૧૮	અરનાથ	સુદર્શનરાજા	શ્રીદેવી	,,
૧૯	મલ્લિનાથ	કુંભરાજા	પ્રભાદેવી	મિથિલાનગરી
૨૦	મુનિસુવ્રત	મિત્રરાજા	પ્રદ્માવતી	રાજગૃહી
૨૧.	નમિનાથ	વિજયસેન	વપ્રા	મિથિલા-મથુરા
૨૨	નેમનાથ (અરિષ્ટનેમી)	સમુદ્રસેન	શિવાદેવી	દ્વારિકા
૨૩	પાર્શ્વનાથ	અશ્વસેન	વામાદેવી	બનારસ

આ બાવીસ તીર્થંકરો પૈકી ૧૬ મા શાંતિનાથ, ૧૭ મા કુંથુનાથ અને ૧૮ મા અરનાથ–આ ત્રણ તીર્થંકરો તેમનાં રાજ્યકાળ દરમ્યાન ચક્રવર્તી હતા.

૧૯ મા મલ્લિનાથ સ્ત્રી રૂપે હતા. જૈન ધર્મમા સ્ત્રીઓ પણ તીર્થંકર થઇ શકે છે, એ સત્યનુ આ નક્કર પ્રમાણ છે. જગતના કોઇપણ ધર્મમા સ્ત્રીને ધર્મ સંસ્થાપક તરીકેનુ મહત્ત્વ અપાયુ નથી આ એક જૈન ધર્મની ખાસ વિશિષ્ટતા છે

૨૦ મા મુનિસુવ્રત તીર્થંકરના સમયમા શ્રીરામ અને સીતા થયા હતા.

બાવીસમા અરિષ્ટનેમી (નેમનાથ)ના વખતમા નવમા વાસુદેવ શ્રીકૃષ્ણ થયા હતા

અરિષ્ટનેમી લગ્ન કરવા જતા હતા ત્યારે રસ્તામા ભોજનને માટે લાવવામા આવેલા પશુઓનો કરુણ પોકાર સાંભળી, પશુઓને બચાવવા, લગ્નના માંડવેથી પાછા ફર્યા અને પરમકલ્યાણકારી સંયમધર્મ અંગીકાર કર્યો.

તેમની અને કૃષ્ણ વાસુદેવ વચ્ચેની વાતચીતના પ્રસંગો જૈનાગમોમા ઘણા મળી આવે છે.

ત્રેવીસમા તીર્થંકર પાર્શ્વનાથે પશુ સંરક્ષણ અને દયા કેટલી આવશ્યક છે તે બતાવ્યુ તેમનો અને કમઠ તાપસનો પ્રસંગ જૈન ધર્મગ્રંથોમા સુપ્રસિદ્ધ છે

૪. ભગવાન મહાવીર

ભગવાન પાર્શ્વનાથ પછી ૨૫૦ વર્ષે આજથી ૨૫[illegible] વર્ષ પૂર્વે ચોવીસમા પરમ તીર્થંકર ભગવાન મહાવીરનો જન્મ ચૈત્ર શુક્લા ત્રયોદશીના દિવસે, ક્ષત્રિયકુંડ નગરના રાજા સિદ્ધાર્થની રાણી ત્રિશલાદેવીની કુક્ષિએ થયો હતો. તેમનુ જન્મનુ નામ વર્દ્ધમાન હતુ.

બાલસુલભ ક્રિડાઓ કરતા કરતાં તેઓ યુવાવસ્થાને પામ્યા તેમના લગ્ન યશોદા નામની એક રાજકન્યા સાથે કરવામાં આવ્યા હતા. લગ્નના ફળરૂપે પ્રિયદર્શના નામની એક કન્યાની તેમને પ્રાપ્તિ થઇ હતી.

તેમના માતપિતા દેવલોક પામ્યા પછી તેઓ દીક્ષા લેવા તયાર થયા પરંતુ તેમના મોટા ભાઇ નંદીવર્ધને થોડોક વખત રોકાઇ જવાનુ કહ્યુ. પિતાની ગેરહાજરીમાં મોટા ભાઇની આજ્ઞાનુ પાલન નાના ભાઇએ કરવુ જોઇએ, એ આદર્શને મૂર્તિમન બનાવવા શ્રી વર્દ્ધમાન બે વરસ સુધી રોકાઇ ગયા, અને તે સમય દરમ્યાન સચિત્તજળ ત્યાગ આદિ તપશ્ચર્યા આદરી, સંયમ માટેની પ્રાથમિક તૈયારીઓ કરતા રહ્યા. છેવટે, એક વર્ષ સુધી વાર્ષિક દાન દઇ તેઓએ દીક્ષા અંગીકાર કરી.

દીક્ષા લીધા બાદ સાડાબાર વર્ષ અને એક પક્ષ સુધી મહાવીરે ઘોર તપશ્ચર્યાઓ કરી, તેને પરિણામે ચાર ઘનઘાતી કર્મોનો ક્ષય થયો, જૃંભિયા નગરીની બહાર, ઋજુવાલિકા નદીને ઉત્તર તીરે સામાયિક ગાથાપતિ કૃષ્ણીના ખેતરમા, ચૌવિહારો છઠ્ઠ કરી, શાલવૃક્ષ નજીક દિવસના પાછલા પહોરે, ગોદોહન (ઉકડા) આસને બેઠા હતા ત્યારે ધર્મધ્યાનમા પ્રવર્તતા વૈશાખ સુદી દશમીને દિવસે મહાપ્રકાશમય કેવળજ્ઞાન અને કેવળ દર્શન પ્રગટ થયુ

કેવળજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ પછી ધર્મ દેશના દેતા પ્રભુ ૩૦ વર્ષ સુધી ગ્રામાનુગ્રામ વિચરતા રહ્યા.

હુંડાઅવસર્પિણી કાળના પ્રભાવે ભગવાન મહાવીરની પ્રથમ દેશના ખાલી ગઇ, કારણ તે દેશના વખતે કેવળ દેવતા જ હાજર હતા, મનુષ્યો ન હતા, પણ બીજી દેશના વખતે તેમણે વેદ-વેદાંતના પારગામી એવા બ્રાહ્મણ પંડિતોને શિષ્ય બનાવ્યા. તેમાં ઇન્દ્રભૂતિ (ગૌતમ) પ્રથમ હતા.

ભગવાન મહાવીરના સમયમાં સમાજનુ અધઃપતન થયેલુ હતુ. તે સમયે મનુષ્ય જાતિની એકતાને બદલે [illegible] આગમાં [illegible] જાતિવાદનું [illegible] દેશમાં [illegible] હતુ. [illegible] ધર્મ અને [illegible] કાર્યના [illegible] હતા.

સંસાર પ્રત્યે વૈરાગ્યભાવ પ્રગટ થાય એ સ્વભાવિક છે. તેમણે પોતાનુ રાજ્ય પોતાના પુત્રોને વહેંચી આપ્યુ અને સંસારનો ત્યાગ કરી ચાર હજાર પુરુષો સાથે સંયમ અંગીકાર કર્યો.

એક હજાર વર્ષ સુધી આત્મસાધના અને તપશ્ચર્યા કરતા એક સ્થળેથી બીજે સ્થળે અને જનપદ વિહાર કરતા છેવટે પુરિમતાળ નગરમા તેઓને કેવળજ્ઞાન પ્રાપ્ત થયુ. કેવળજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ બાદ તેમણે ચતુર્વિધ સંઘરૂપી તીર્થની સ્થાપના કરી. આ કારણે આ સવસર્પિણી કાળમા તેઓ આદિ તીર્થંકર કહેવાયા, વૈદિકશાસ્ત્રો મુજબ તે પ્રથમ 'જિન' બન્યા અને ઉપનિષદો મુજબ તેઓ બ્રહ્મા તથા ભગવાન પદના અધિકારી તથા પરમપદ પ્રાપ્ત કરનાર સિદ્ધ, બુદ્ધ અને અજર-અમર પરમાત્મા થયા

છદ્મસ્થાવસ્થા અને કેવળજ્ઞાનીપણે મળી કુલ એક લાખ પૂર્વ જેટલા દીર્ઘ સમય પર્યંત સંયમ પાળી અષ્ટાપદગિરિ ઉપર પદ્માસને સ્થિત થઇ અભિજીત નક્ષત્રમા તેઓ પરિનિર્વાણને પામ્યા.

૨. ભરત અને બાહુબલિ

ભગવાન ઋષભદેવના આ બંને પુત્રોના નામ જૈન ગ્રંથોમાં ઘણા સુવિખ્યાત છે.

ભરતના નામ ઉપરથી આ ક્ષેત્રનુ નામ 'ભરત' યા ભારત પડયુ છે. ભરત આ અવસર્પિણી કાળના સર્વપ્રથમ ચક્રવર્તી રાજા હતા. તેમની સત્તા સ્વીકારવા તેમના ભાઇ બાહુબલિ તૈયાર નહોતા. બાહુબલિ પોતાના બળ ઉપર મુસ્તાક હતા આને પરિણામે બંને વચ્ચે યુદ્ધ થયું. આ યુદ્ધ જૈન શાસ્ત્રોમા સૌથી પ્રાચીન યુદ્ધ-ઘટના ગણાય છે.

આ સમયે જો કે સેનાઓનુ નિર્માણ થઇ ચૂકયુ હતું, તો પણ માનવજાતિનો નિરર્થક વિનાશ કરવાનુ તે વખતે મનુષ્યો યોગ્ય સમજતા ન હતા.

આથી પાંચ પ્રકારનાં યુદ્ધ નક્કી થયાં હતાં. જેવાં કે ૧ દૃષ્ટિયુદ્ધ ૨ નાદયુદ્ધ ૩. ભૂમિષ્ટયુદ્ધ ૪. ચક્રયુદ્ધ અને ૫. મુષ્ટિયુદ્ધ.

દૃષ્ટિયુદ્ધમા જે પહેલાં આંખ બંધ કરે તે હારી જાય.

નાદ-યુદ્ધમા જેનો અવાજ નિર્બળ હોય તે હારી જાય, અથવા જેનો અવાજ મોટો અને વધુ વખત ટકે તે જીતે.

વિશ્વના લોકો વૈજ્ઞાનિક શોધખોળોનો આશ્રય લઇ અગણિત માનવસંહાર યુદ્ધમાં કરે છે, તેને બદલે આવા નિર્દોષ યુદ્ધ થાય તો માનવજાતનું શ્રેય થાય! ભૂમિષ્ઠ-યુદ્ધ, ચક્રયુદ્ધ અને મુષ્ટિયુદ્ધ જેવા હિંસક યુદ્ધો તે કાળે પણ જો કે હતાં ખરાં, પણ તેનો આશ્રય છેક છેલ્લે અને ન છૂટકે જ લેવામા આવતો.

ચોથા યુદ્ધમાં ભરતે ચક્ર છોડયુ; પરંતુ ભાઇઓમાં તેની અસર થાય નહિ એટલે તે પાછું ફર્યું.

છેલ્લા યુદ્ધમા બાહુબળીએ ભરતને મારવા માટે મુઠ્ઠી ઉગામી, પરંતુ તુરત તેને વિવેક જાગ્રત થયો અને ઇંદ્રે સમજાવ્યા એટલે તેમણે મુઠ્ઠી ઉપર જ રોકી લીધી. જો એ મુષ્ટિનો પ્રહાર થયો હોત તો ભરત કયા લુપ્ત થઇ જાત તેનો પત્તો પણ લાગત નહિ, એવુ બાહુબળીનુ અમાપ બળ હતુ, એમ કહેવાય છે.

બાહુબળી માટે ઘા કરવા માટે ઉપાડેલો હાથ એમને એમ પાછો કરે એ પણ અસહ્ય હતુ તેથી તેમણે સામાનો કે પોતાનો ઘાત કરવા કરતા તે મુષ્ટિનો ઉપયોગ અભિમાનનો ઘાત કરવામા કર્યો. તેમણે તે હાથે કેશ લુંચન કર્યું અને સાધુવ્રતી બન્યા.

આમ આ ક્ષેત્રના સર્વપ્રથમ સમ્રાટ્ બનવાનુ સૌભાગ્ય ભરતને મળ્યુ.

ભરતને અંગેનુ વિસ્તૃત વર્ણન જૈન જનતાના ગ્રંથોમા મળી આવે છે.

૩. ઋષભદેવ પછીના બાવીસ તીર્થંકરો

ભગવાન ઋષભદેવ પછીના બાવીસ તીર્થંકરોનો ઇતિહાસ બનવાજોગ છે કે ઘણો મહત્ત્વપૂર્ણ હોય, પરંતુ તે સંબંધમા વિસ્તૃત હકીકતો મળી શકતી નથી એટલે તેમના નામો અને સામાન્ય હકીકત જ અત્રે આપવામા આવે છે.

	નામ	પિતા	માતા	સ્થાન
૨	અજીતનાથ	જિતશત્રુ	વિન્યાદેવી	અયોધ્યા
૩	સંભવનાથ	જિતાર્થરાજા	સૈન્યાદેવી	શ્રાવસ્તી
૪	અભિનંદન	સંવરરાજા	સિદ્ધાર્થરાણી	વિનિતા
૫	સુમતિનાથ	મેઘરથરાજા	સુમંગલા	કુંગલપુરી
૬	પદ્મપ્રભુ	ધરરાજા	સુનિયા	કૌશામ્બી
૭	સુપાર્શ્વનાથ	પ્રતિષ્ઠેન	પૃથ્વી	કાશી
૮	ચંદ્રપ્રભુ	મહાસેન	લક્ષ્મા	ચંદ્રપુરી
૯	સુવિધિનાથ	સુગ્રીવ	રામાદેવી	કાકંદી
૧૦	શીતલનાથ	દૃઢરથ	નંદારાણી	ભદ્દીલપુર

	નામ	પિતા	માતા	સ્થાન
૧૧	શ્રેયાસનાથ	વિષ્ણુસેન	વિષ્ણુદેવી	સીંગપુર
૧૨	વાસુપૂજ્ય	વસુપૂજ	જયાદેવી	ચપાપુરી
૧૩	વિમળનાથ	કર્તાવરમ	શ્યામા	કપિલપુર
૧૪.	અનતનાથ	સિહસેન	સુયશા	અયોધ્યા
૧૫	ધર્મનાથ	ભાનુરાજા	સુવ્રતા	રતનપુર
૧૬	શાતિનાથ	વિશ્વસેન	અચિરા	હસ્તિનાપુર
૧૭	કુથુનાથ	સૂરરાજા	શ્રીદેવી	,,
૧૮	અરનાથ	સુદર્શનરાજા	શ્રીદેવી	,,
૧૯	મલ્લિનાથ	કુભરાજા	પ્રભાદેવી	મિથિલાનગરી
૨૦	મુનિસુવ્રત	મિત્રરાજા	પ્રદ્માવતી	રાજગૃહી
૨૧	નમિનાથ	વિજયસેન	વપ્રા	મિથિલા-મથુરા
૨૨	નેમનાથ (અરિષ્ટનેમી)	સમુદ્રસેન	શિવાદેવી	દ્વારિકા
૨૩.	પાર્શ્વનાથ	અશ્વસેન	વામાદેવી	બનારસ

આ બાવીસ તીર્થંકરો પૈકી ૧૬ મા શાંતિનાથ, ૧૭ મા કુથુનાથ અને ૧૮ મા અરનાથ–આ ત્રણ તીર્થંકરો તેમનાં રાજ્યકાળ દરમ્યાન ચક્રવતી હતા.

૧૯ મા મલ્લિનાથ સ્ત્રી રૂપે હતા. જૈન ધર્મમા સ્ત્રીઓ પણ તીર્થંકર થઇ શકે છે, એ સત્યનુ આ સર્વશ્રેષ્ઠ પ્રમાણ છે. જગતના કોઇપણ ધર્મમા સ્ત્રીને ધર્મ સસ્થાપક તરીકેનુ મહત્ત્વ અપાયુ નથી આ એક જૈન ધર્મની ખાસ વિશિષ્ટતા છે

૨૦ મા મુનિસુવ્રત તીર્થંકરના સમયમા શ્રીરામ અને સીતા થયા હતા.

બાવીસમા અરિષ્ટનેમી (નેમનાથ)ના વખતમા નવમા વાસુદેવ શ્રીકૃષ્ણ થયા હતા

અરિષ્ટનેમી લગ્ન કરવા જતા હતા ત્યારે રસ્તામા ભોજનને માટે લાવવામાં આવેલા પશુઓનો કરુણ ચિત્કાર સાભળી, પશુઓને બચાવવા, લગ્નના માંડવેથી પાછા ફર્યા અને પરમકલ્યાણકારી સયમધર્મ અગીકાર કર્યો.

તેમની અને કૃષ્ણ વાસુદેવ વચ્ચેની વાતચીતના પ્રસગો જૈનાગમોમાં ઘણા મળી આવે છે.

ત્રેવીસમા તીર્થંકર પાર્શ્વનાથે પશુ સરક્ષણ અને જીવદયા કેટલી આવશ્યક છે તે બતાવ્યુ. તેમનો અને કમઠ તાપસનો પ્રસગ જૈન ધર્મગ્રથોમા સુપ્રસિદ્ધ છે.

૪. ભગવાન મહાવીર

ભગવાન પાર્શ્વનાથ પછી ૨૫૦ વર્ષે આજથી ૨૫૦૩ વર્ષ પૂર્વે ચોવીસમા પરમ તીર્થંકર ભગવાન મહાવીરનો જન્મ ચૈત્ર શુક્લા ત્રયોદશીના દિવસે, ક્ષત્રિયકુડ નગરના રાજા સિદ્ધાર્થની રાણી ત્રિશલાદેવીની કુક્ષિએ થયો હતો. તેમનુ જન્મનુ નામ વર્દ્ધમાન હતુ.

બાલસુલભ ક્રિડાઓ કરતા કરતાં તેઓ યુવાવસ્થાને પામ્યા તેમના લગ્ન યશોદા નામની એક રાજકન્યા સાથે કરવામાં આવ્યાં હતા. લગ્નના ફળરૂપે પ્રિયદર્શના નામની એક કન્યાની તેમને પ્રાપ્તિ થઇ હતી.

તેમના માતપિતા દેવલોક પામ્યા પછી તેઓ દીક્ષા લેવા તૈયાર થયા પરતુ તેમના મોટા ભાઇ નદીવર્ધને થોડોક વખત રોકાઇ જવાનુ કહ્યુ. પિતાની ગેરહાજરીમા મોટા ભાઇની આજ્ઞાનુ પાલન નાના ભાઇએ કરવુ જોઇએ, એ આદર્શને મૂર્તિમત બનાવવા શ્રી વર્દ્ધમાન બે વરસ સુધી રોકાઇ ગયા, અને તે સમય દરમ્યાન સચિત્તજળ ત્યાગ આદિ તપશ્ચર્યા આદરી, સયમ માટેની પ્રાથમિક તૈયારીઓ કરતા રહ્યા. છેવટે, એક વર્ષ સુધી વાર્ષિક દાન દઇ તેઓએ દીક્ષા અગીકાર કરી.

દીક્ષા લીધા બાદ સાડાબાર વર્ષ અને એક પક્ષ સુધી મહાવીરે ઘોર તપશ્ચર્યાઓ કરી, તેને પરિણામે ચાર ઘનઘાતી કર્મોનો ક્ષય થઇ, જૃભિયા નગરીની બહાર, ઋજુવાલિકા નદીને ઉત્તર તીરે સામાધિક ગાથાપતિ કૃષ્ણીના ખેતરમાં, ચૌવિહારો છઠ્ઠ કરી, શાલવૃક્ષ નજીક દિવસના પાછલા પહોરે, ગોદોહન (ઉકડા) આસને બેઠા હતા ત્યારે ધર્મધ્યાનમા પ્રવર્તતાં થકાં વૈશાખ સુદી દશમીને દિવસે મહાપ્રકાશમય કેવળજ્ઞાન અને કેવળ દર્શન પ્રગટ થયુ.

કેવળજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ પછી ધર્મ દેશના દેતા પ્રભુ ૩૦ વર્ષ સુધી ગ્રામાનુગ્રામ વિચરતા રહ્યા.

હુડાવસર્પિણી કાળના પ્રભાવે ભગવાન મહાવીરની પ્રથમ દેશના ખાલી ગઇ, કારણ તે દેશના વખતે કેવળ દેવતા જ હાજર હતા, મનુષ્યો ન હતા, પણ બીજી દેશના વખતે તેમણે વેદ–વેદાંતના પારગામી એવા બ્રાહ્મણ પડિતોને શિષ્ય બનાવ્યા. તેમાં ઇન્દ્રભૂતિ (ગૌતમ) પ્રથમ હતા.

ભગવાન મહાવીરના સમયમા સમાજનુ અધઃપતન થયેલુ હતુ, તે સમયે મનુષ્ય જાતિની એકતાને બદલે ઊચનીચની ભાવનાનુ ભૂત જાતિવાદનાં નામે ઊભુ કરવામાં આવ્યુ હતુ. સ્ત્રીઓ અને શૂદ્રોને ધર્મ અને પુણ્ય કાર્યના લાભથી વચિત રાખવામાં આવતા હતા.

ધર્મના સુખો એ મૃત્યુ પછીની અવસ્થાની વાત ગણાતી. સ્વર્ગની ચાવી યજ્ઞો અને યજ્ઞની ચાવી તેના અધિકારી બ્રાહ્મણોનાં યજ્ઞોપવિતને જ બાંધેલી હતી. યજ્ઞોમાં પશુઓની હિંસા અને સોમરસનાં પાન થતાં. કોઇક વળી નરમેધ યજ્ઞો પણ કરતા અને આ વૈદિક હિંસા, હિંસા ન ગણાતા સ્વર્ગાધિકાર આપનારી મનાતી.

આ બધા ધર્મને નામે ચાલતા વાસ્તવિક ધર્મથી વિરુદ્ધના ક્રિયાકાંડો સામે ભગવાન મહાવીરે વિપ્લવ જગાવ્યો ધર્મની માન્યતાઓનાં મૂલ્યાંકનો બદલવા એક અજબ ક્રાંતિ શરૂ કરી

"ધર્મનું મૂળ અહિંસા, સંયમ અને તપ છે. માનવ માત્ર માનવતાના સંબંધે એકસરખા છે સ્ત્રી હોય કે પુરુષ હોય, ગમે તે હોય તેને ધર્મારાધાનના સમાન અધિકાર છે." આ તેમના ઉપદેશનો મુખ્ય સાર હતો.

બીજી દેશના વખતે ઇંદ્રભૂતિ આદિ મુખ્ય અગીઆર પંડિતો અને તેમની સાથે ૪૪૦૦ બ્રાહ્મણો કે જેઓ ભગવાન મહાવીર સાથે વાદવિવાદ કરી તેમને પરાજિત કરવા આવ્યા હતા, તેમણે ભગવાનનો ઉપદેશ સાંભળ્યો અને તેની યથાર્થતા સમજાતાં તેઓ તેમના શિષ્ય બની ગયા. આ અગીઆર પંડિતો જૈન શાસ્ત્રોમાં અગીઆર 'ગણધરો' તરીકે પ્રસિદ્ધ છે. તેમના નામો નીચે પ્રમાણે છે

૧. ઇંદ્રભૂતિ ૨. અગ્નિભૂતિ ૩. વાયુભૂતિ ૪ વ્યક્ત ૫. સુધર્મા ૬. મંડિત ૭. મૌર્યપુત્ર ૮ અકંપિત ૯. અચલભ્રાતા ૧૦. મેતાર્ય અને ૧૧ પ્રભાસ.

પ્રભુની વાણીના ઉપદેશક તત્ત્વોને સૂત્રોરૂપે ગૂંથી દ્વાદશાંગને વ્યવસ્થિત રીતે જાળવી રાખવાનું કાર્ય આ ગણધરોએ કર્યું છે

જૈનાગમોમાં મહાવીર અને ગૌતમ તથા પંચમ ગણધર સુધર્મા અને જંબુસ્વામી વચ્ચેના વાર્તાલાપના પ્રસંગો ખૂબ મળી આવે છે.

ભગવાન મહાવીરના ત્રીસ વર્ષના ધર્મોપદેશ દરમ્યાન તેમના ચતુર્વિધ સંઘમાં ૧૪૦૦૦ સાધુ શિષ્યો અને ૩૬૦૦૦ સાધ્વી શિષ્યાઓ થયાં. તેમજ લાખોની સંખ્યામાં જૈન ધર્મ અંગીકાર કરનાર શ્રાવકો અને શ્રાવિકાઓ મળ્યાં હતાં

સાધુઓમા જેમ ઇન્દ્રભૂતિ ગૌતમ હતા તેમ સાધ્વીઓમા મહાસતી ચંદનબાળા અગ્રપદે હતાં.

છદ્મસ્થાવસ્થા અને કેવળપર્યાયનાં મળી બેતાળીસ વર્ષના દીક્ષાપર્યાય દરમ્યાન તેમણે એક અસ્થિગ્રામ, એક વાણિજ્યગ્રામ, પાંચ ચંપા નગરીમાં, પાંચ પૃષ્ઠચંપામા ચૌદ રાજગૃહીમા, એક નાલંદાપાડામા, છ મિથિલામાં બે ભદ્રિકા નગરીમા, એક આલંભિયામા, એક સાર્વથીમા, એક લાઢદેશ (અનાર્ય દેશ)મા અને ત્રણ વિશાળા નગરીમા એમ એકતાળીસ ચાતુર્માસ કર્યા અને બેતાળીસમા ચાતુર્માસ માટે તેઓ પાવાપુરીમાં પધાર્યા.

પાવાપુરી કે જેનું બીજું નામ અપાપાપુરી હતું ત્યાંનું ચાતુર્માસ ભગવાન મહાવીરનું ચરમ ચાતુર્માસ હતું આ ચાતુર્માસ તેમણે પાવાપુરીના રાજા હસ્તિપાળની વિનંતિથી તેની શાળામાં વિતાવ્યું ભગવાનનો મોક્ષ–સમય નિકટમાં હતો. આથી તેઓ પોતાની પુણ્યમયી, સર્વ જગતના જીવોને હિતકારી વેગવંત વાગ્ધારા અવિરતપણે વહાવતા રહ્યા કે જેથી ભવ્ય જીવોને યથાર્થ માર્ગની પ્રાપ્તિ થઇ શકે.

આયુષ્ય કર્મનો ક્ષય નજીકમાં જાણી પ્રભુએ આસો વદ ચતુર્દશીના રોજ સંથારો કર્યો પોતાના શિષ્ય ગૌતમ સ્વામીને નજીકના ગામે દેવશર્મા નામના એક બ્રાહ્મણને બોધ આપવા મોકલ્યા ચતુર્દશી અને અમાવાસ્યાના બે દિવસના સોળ પ્રહર સુધી પ્રભુએ સતત ઉપદેશ આપ્યો જીવનના ઉત્તર ભાગમા આપેલ આ ઉપદેશ 'ઉત્તરાધ્યયન' સૂત્રમા સંગ્રહીત છે. આમ ઉપદેશ દેતાં દેતા આજથી ૨૪૮૧ વર્ષ ઉપર, જ્યારે ચોથા આરાના ત્રણ વરસ અને સાડાઆઠ મહિના બાકી હતા ત્યારે આસો વદી અમાવાસ્યા (દિવાળી)ની રાત્રે ભગવાન મહાવીર નિર્વાણ પામ્યા.

ગૌતમસ્વામી જે દેવશર્માને પ્રતિબોધવા ગયા હતા, તેઓ પાછા ફર્યા અને તેમણે ભગવાન મહાવીરના નિર્વાણના સમાચાર જાણ્યા ત્યારે ઘણા જ આર્દ્ર બની ગયા, કારણ ભગવાન પ્રત્યે તેમના દિલમાં અત્યંત સ્નેહ હતો, પરંતુ મહાપુરૂષોમાં પ્રવેશેલી નિર્બળતા ક્ષણિક જ હોય છે ગૌતમસ્વામીને પણ તુરત સત્યનો પ્રકાશ મળ્યો. તેમણે જાણી લીધું કે પ્રભુ ઉપરનો પ્રશસ્ત સ્નેહ પણ કેવળ જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવામા વિઘ્નરૂપ છે. તેમની વિચારશ્રેણીએ રૂપ બદલ્યું–ખરેખર હું મોહમા પડ્યો છું. પ્રભુ તો વીતરાગ હતા દરેક આત્મા એકલો હોય છે, હું એકલો છું, મારૂં કોઇ નથી, હું કોઇનો નથી."

એ પ્રમાણે એકત્વ ભાવના ચિંતવવા લાગ્યા. ક્ષપક શ્રેણીમાં આરૂઢ થયેલા ગૌતમ સ્વામીએ તત્ક્ષણ ઘનઘાતી કર્મોનો નાશ કરી દીધો અને તેમને પ્રભુ નિર્વાણ પધાર્યા તે જ રાત્રિએ અર્થાત આસો વદી અમાવાસ્યાની પાછલી રાત્રે લોકાલોક–પ્રકાશક કેવળ જ્ઞાન અને કેવળદર્શન પ્રાપ્ત થયાં.

૫. બુદ્ધ અને મહાવીર

ભગવાન મહાવીર અને બુદ્ધ બન્ને સમકાલીન હતા. બુદ્ધ, શાકયગોત્રીય, કપિલવસ્તુના રાજા શુદ્ધોદનના પુત્ર હતા. તેમણે પણ સંસારની નિઃસારતાનો ભાસ થતા સંસારનો ત્યાગ કર્યો, અને તપશ્ચર્યા આદરી, બોધિસત્વ બન્યા. તે પણ પોતાને 'આર્હત' મનાવતા. (ભગવાન મહાવીરનો વધારેમા વધારે સામનો બુદ્ધે કર્યો.)

મહાવીર અને બુદ્ધની તુલના નીચે મુજબ થઇ શકે

	મહાવીર	બુદ્ધ
પિતા	સિદ્ધાર્થ	શુદ્ધોદન
માતા	ત્રિશલા	મહામાયા
સ્થળ	ક્ષત્રિયકુંડ ગ્રામ	કપીલવસ્તુ
જન્મ	ઇ સ. પૂર્વે ૫૯૮	ઇ.સ. પૂર્વે ૫૬૫ યા ૫૭૫
સ્રીનુ નામ	યશોદા	યશોધરા
સંતાન	પ્રિયદર્શના (પુત્રી)	રાહુલ (પુત્ર)
આદિ તપ	૧૨।। વર્ષ	૬ વર્ષ
નિર્વાણ	વિ. સ. ની પૂર્વે ૪૭૦ વર્ષ	વિ. સ પૂર્વે ૪૮૫
આયુષ્ય	૭૨ વર્ષ	૮૦ વર્ષ
વ્રતો	પંચ મહાવ્રત	પંચશીલ
સિદ્ધાંત	અનેકાન્તવાદ	ક્ષણિકવાદ
મુખ્ય શિષ્ય	ગૌતમ	આનંદ

ભ મહાવીર અને બુદ્ધમા જેમ વિભિન્નતા છે તેમ સમાનતા પણ છે.

અહિંસા, સત્ય, અસ્તેય. બ્રહ્મચર્ય, અપરિગ્રહ તથા તૃષ્ણાનિવૃત્તિ આદિમાં, મહાવીરની માફક બુદ્ધની દૃષ્ટિ પણ ઘણી ઉંચી હતી. બ્રાહ્મણ સંસ્કૃતિની સામે આ બન્ને શ્રમણ–સંસ્કૃતિનાં ઝળકતાં નક્ષત્રો હતા.

જીવન શોધન, અહિંસા પાલન અને શ્રમણો માટેના જરૂરી નિયમોમાં પણ બન્ને મહાપુરૂષોના વિધાનોમા ઘણું સામ્ય છે.

સંસાર ત્યાગ પછી બુધ્ધે પણ કઠોર તપશ્ચર્યાઓ કરી હતી, પરંતુ પાછળથી તેમને તેના તરફ ઘૃણા થઇ અને 'મધ્યમ પ્રતિપદા'નો માર્ગ સ્થાપ્યો.

૬. ભ. મહાવીરની શિષ્ય પરંપરા

ભગવાન મહાવીરના નિર્વાણ બાદ ગૌતમ સ્વામીને કેવળ જ્ઞાન થયુ, તે આપણે જોઇ ગયા. તેઓ બાર વર્ષ સુધી કેવળજ્ઞાનીપણે વિચર્યા અને ધર્મપ્રચાર તથા સંઘ વ્યવસ્થા આદિનુ નિર્વહન કર્યું.

૧. **સુધર્મા સ્વામી :** ગૌતમસ્વામી કેવળજ્ઞાની થવાને લીધે આચાર્ય પદવિભૂષિત, ભગવાન મહાવીરના પ્રથમ પટ્ટધર થવાનુ અદ્વિતીય ગૌરવ શ્રી સુધર્મા સ્વામીને મળ્યુ. તેમણે બાર વર્ષ સુધી સંઘની બાહ્ય અને આંતરિક બંને પ્રકારે રક્ષા, પોષણ અને સંવર્ધન કર્યું. ૯૨ વર્ષની ઉમરે તેમને કેવળજ્ઞાન થયુ, ત્યારે સંઘ–વ્યવસ્થાનો ભાર તેમના શિષ્ય જંબુસ્વામીને સોપ્યો ત્યાર બાદ આઠ વર્ષ સુધી તેઓ કેવળીપણે વિચર્યા અને ૧૦૦ વર્ષનુ આયુષ્ય પૂર્ણ કરી નિર્વાણ પામ્યા

૨. **જંબૂસ્વામી** સુધર્મા સ્વામીને કેવળજ્ઞાન થયા પછી જંબુસ્વામી પાટે આવ્યા.

જંબુસ્વામી એક વણિક શેઠના પુત્ર હતા અખૂટ સંપત્તિ, હોવા છતાં તેમને વૈરાગ્ય ઉત્પન્ન થવાથી લગ્નના બીજે જ દિવસે, આઠ સ્રીઓનો ત્યાગ કરી દીક્ષા લીધી. તેમની સાથે તેમને વરેલી આઠે સ્રીઓ, તે સ્રીઓના માતાપિતા, પોતાના માતાપિતા અને તેમને ત્યા ચોરી કરવા આવેલ પ્રભવાદિ ૫૦૦ ચોરો એમ કુલ ૫૨૭ વિરક્ત આત્માઓએ ભાગવતી દીક્ષા અંગીકાર કરી જીવન સફળ કર્યું.

શ્રી સુધર્માસ્વામીના નિર્વાણ બાદ શ્રી જંબૂસ્વામીને કેવળજ્ઞાન થયુ. તેઓ ૪૪ વર્ષ સુધી કેવળજ્ઞાનીપણે વિચરી મોક્ષે સિધાવ્યા.

જૈન પરંપરામા આ અવસર્પિણી–કાળમા કેવળજ્ઞાનનો સ્રોત ભગવાન શ્રી ઋષભદેવથી શરૂ થાય છે, તેના અંતિમ કેવળી ભગવાન જંબૂસ્વામી હતા તેમના નિર્વાણ સાથે દશ વિશેષતાઓનો લોપ થયો :–

૧ પરમ અવધિજ્ઞાન, ૨. મનઃ પર્યવજ્ઞાન, ૩. પુલાક લબ્ધિ, ૪. આહારિક શરીર, ૫. ક્ષાયિક સમ્યક્ત્વ, ૬. કેવળજ્ઞાન, ૭. જિન કલ્પી સાધુ. ૮. પરિહાર

વિશુદ્ધ ચારિત્ય, ૯ સૂક્ષ્મ સપરાય ચારિત્ય અને ૧૦ યથાખ્યાત ચારિત્ય.

આમ, ભગવાન મહાવીરના નિર્વાણુ પછી ૬૪ વર્ષ કેવળજ્ઞાન રહ્યુ.

૩ **પ્રભવ સ્વામી:** જબૂસ્વામીને કેવળજ્ઞાન થયા પછી પ્રભવસ્વામી આચાર્યપદે બિરાજમાન થયા.

તેઓ જયપુરના રાજા જયસેનના કુમાર હતા. પ્રજાને કષ્ટ આપવાને કારણે તેમને દેશવટો મળ્યો. આથી તેઓ ભીમસેન નામના એક ચોરના સાથી બન્યા. ભીમસેનનાં મરણ પછી ૫૦૦ ચોરોના સરદાર થયા.

જબૂસ્વામી લગ્ન કરી ઘેર પાછા ફર્યા ત્યારે તેમને ૯૯ કરોડનો કરિયાવર મળેલો. આ વાત સાંભળી પ્રભવ પોતાના સાથીઓને લઇ ત્યા ચોરી કરવા ગયો. તેની એક વિશેષતા હતી કે તે જ્યા ચોરી કરવા જાય ત્યાં ઘરના માણસોને મત્રબળે નિદ્રાધીન બનાવી દેતો આમ સેવકો અને ચોકીદારોને નિદ્રાધીન બનાવી, તેણે ધનના પોટલા બાધ્યાં અને ચાલવા માંડયુ. પણ તેના પગ ઉપડતા નહોતા. તે વિચારમા પડયો કે આમ કેમ બન્યુ? આવો કોણ પ્રભાવશાળી છે કે જેના પ્રભાવથી મારૂ મત્ર-બળ નિષ્ફળ થયુ?

આ બાજુ જબૂસ્વામી મહાસયમી અને બાળબ્રહ્મચારી હતા. લગ્નની પ્રથમ રાત્રિએ આઠ સ્ત્રીઓની વિનવણીઓ અને સમજાવટ છતા વ્રત ભગ કરવાનો વિચાર સુદ્ધા તેમને આવતો નહોતો. પ્રભવ તેમના ઓરડાની નજીક આવ્યો અને અદર ચાલતો વાર્તાલાપ સાભળ્યો. જંબૂસ્વામીની વાણી અને ચારિત્ર્યથી તે પ્રભાવિત થયો અને પ્રાતઃકાળે તેણે પણ પોતાના સાથીઓ સહિત જંબૂસ્વામી સાથે સયમ અગીકાર કર્યો. આ વખતે પ્રભવજીની ઉમર ૩૦ વર્ષની હતી. વીસ વર્ષ સુધી તેમણે જ્ઞાન–સાધના આદિ કરી ૫૦ વર્ષની ઉમરે તેઓ સમસ્ત જૈન સઘના આચાર્ય બન્યા.

૪. **શય્યંભવ આચાર્ય** પ્રભવસ્વામી પછી શય્યંભવ આચાર્ય થયો.

તેઓ રાજગૃહીના બ્રાહ્મણ કુળમા ઉત્પન્ન થયા હતા અને વેદ–વેદાગના નિષ્ણાત હતા એક સમયે તેમને પ્રભવસ્વામીનો ભેટો થયો. પ્રભવસ્વામીએ તેમને દ્રવ્ય અને ભાવયજ્ઞનાં વિલક્ષણ સ્વરૂપની સમજ પાડી. તેઓ સમજ્યા અને સાધુ બન્યા

શય્યભવ સ્વામીને 'મનક' નામે એક પુત્ર હતો. તેણે પણ દીક્ષા લીધી હતી આચાર્યવર્યે જ્યારે જ્ઞાનથી જાણ્યુ કે તેનો અતકાળ સમીપમા છે, ત્યારે અલ્પ સમયમા જિનવાણીના રહસ્યોનુ જ્ઞાન કરાવવા શાસ્ત્રોનુ મથન કરી તેના નવનીત રૂપે 'દશ વૈકાલિક સૂત્ર'ની રચના કરી.

૫. **યશોભદ્ર** વીર નિર્વાણ સ. ૯૮માં યશોભદ્ર આચાર્ય પદ પર પ્રતિષ્ઠિત થાયા.

વીર નિર્વાણ ૧૦૮મા સભૂતિવિજયે દીક્ષા લીધી.

૬. **યશોભદ્ર અને સંભૂતિવિજય** બન્ને સઘના આચાર્યો હતા. તેઓએ બહુ જ કુશળતાપૂર્વક સઘની વ્યવસ્થા જાળવી

૭. ભદ્રબાહુ યુગ

ભદ્રબાહુ સ્વામીની દીક્ષા વીર નિ સ ૧૩૯ પછી આચાર્ય યશોભદ્ર પાસે થઇ હતી અને સ્થૂળિભદ્રની દીક્ષા વીર નિ સ. ૧૪૬ અગર ૧૫૦ મા થઇ હતી. ભદ્રબાહુ સ્વામી ૪૫ વર્ષ ગૃહસ્થાવાસમા રહ્યા. સત્તર વર્ષ ગુરૂની સેવાસુશ્રુષા કરી ચૌદ પૂર્વની વિદ્યા સપાદન કરી. ચૌદ વરસ સુધી તે સઘના એકમાત્ર આચાર્ય રહ્યા. વીર નિ. ૧૭૦ મા ૬૬ વર્ષની ઉમરે તેઓ કાળધર્મ પામ્યા.

ભદ્રબાહુ સ્વામીના સમયની મોટામાં મોટી ઘટના દુકાળ પડવાની બની. એક વખત કાર્તિક શુક્લ પૂર્ણિમાના રોજ મહારાજા ચદ્રગુપ્તે પૌષધ કર્યો હતો, ત્યારે રાત્રિના છેલ્લા ભાગમાં તેમણે સોળ સ્વપ્નો દેખ્યા, તેમા એક સ્વપ્નમાં બાર ફેણવાળો નાગ જોવામા આવ્યો. આનુ ફળ જણાવતા ભદ્રબાહુ સ્વામીએ બાર વર્ષનો ભયકર દુકાળ પડશે એવી આગાહી કરી.

દુષ્કાળની ભય કરતા ફેલાતા તેનણે મહારાજા ચદ્રગુપ્તને દીક્ષા આપી અને દક્ષિણમા કર્ણાટક તરફ વિહાર કરી ગયા.

શ્રુત કેવળી ભદ્રબાહુ સ્વામીના જવા પછી સઘને ખૂબ ક્ષોભ થયો. દુષ્કાળનુ ભયાનક તાંડવ પણ વધવા લાગ્યુ. શ્રાવકો ભદ્રબાહુ સ્વામીને યાદ કરવા લાગ્યા.

ભદ્રબાહુ સ્વામીના જવા પછી સઘની સત્તાનો દોર **સ્થૂળિભદ્ર**ના હાથમા આવ્યો, પરતુ તેઓ શાસ્ત્રો અને પૂર્વોના પૂર્ણ જ્ઞાતા નહોતા. આથી શ્રાવક સંઘ ભદ્રબાહુ સ્વામીને પાછા પધારવા વિનતી કરવા દક્ષિણમા ગયો. આ વખતે ભદ્રબાહુ સ્વામી 'મહાપ્રાણ' નામના મૌન વ્રતમાં હતા. છતા તેમણે શ્રાવક સઘ સાથે વિચાર વિનિમય કરી

પોતે પાછા કરી શકે તેમ નથી એમ જણાવ્યુ ત્યારે શ્રાવક સંઘે ભદ્રબાહુ સ્વામીને, ૧૪ પૂર્વનુ જ્ઞાન, દ્રવ્ય-ક્ષેત્રાનુસાર સ્થૂળિભદ્રજીને આપવા સમજાવ્યા.

શ્રી સંઘે પાછા મગધમા આવી સ્થૂળિભદ્રજીને સર્વ વૃત્તાત જણાવ્યો. સ્થૂળિભદ્રજી અને બીજા કેટલાક સાધુઓ વિહાર કરી, ભદ્રબાહુસ્વામી પાસે આવ્યા. વિદ્યાની પ્રાપ્તિમા રહેલ કઠિનતાઓને લીધે બીજા સાધુઓ તો અભ્યાસમા આગળ ન વધી શકયા, પરતુ સ્થૂળિભદ્ર સારી પ્રગતિ કરી એક વખત રૂપપરાવર્તિની વિદ્યાનો નિર્ણય કરવા તેમણે સિંહનુ સ્વરૂપ ધારણ કર્યું, તેથી નજીકમાં રહેલા સાધુઓ ભય પામ્યા, એટલે તુરત જ તેમણે પોતાનુ વાસ્તવિક સ્વરૂપ ધારણ કર્યું.

આ સમાચાર ભદ્રબાહુ સ્વામીને મળતા તેમને ઘણો ઉદ્વેગ થયો અને અત્યાર સુધી ભણાવેલ દસ પૂર્વો ઉપરાંતની વિદ્યા શીખવવાનો તેમણે ઇન્કાર કર્યો. આમ ચૌદ પૂર્વમાથી ચાર પૂર્વ વિચ્છેદ ગયા.

સ્થૂળિભદ્રજી ત્યાંથી પાછા ફર્યા અને સમસ્ત સંઘનો ભાર તેમના ઉપર મૂકવામા આવ્યો

૮. શ્રી સ્થુળિભદ્રજી

સ્થૂળિભદ્ર, નવમા નદરાજાના, નાગર બ્રાહ્મણ મહા મત્રી શકડાલના જ્યેષ્ઠ પુત્ર હતા. વી. ની. સ. ૧૫૬માં તેમણે દીક્ષા લીધી હતી.

સસારાવસ્થામા સમસ્ત કુટુબને છોડી, બાર વર્ષ સુધી તેઓ કોશા નામની વેશ્યાને ઘેર રહ્યા હતા. તેમના પિતાના મૃત્યુ પછી રાજાએ તેમને મંત્રી પદ સ્વીકારવા બોલાવ્યા, પરતુ પિતાના મૃત્યુથી તેમની વૈરાગ્યભાવના જાગૃત થઇ હોઇ રાજખટપટ તેમને અકારી થઇ પડી. તેઓ દરબાર છોડી ચાલી નીકળ્યા. રસ્તામા તેમને સભૂતિ વિજય આચાર્યનો ભેટો થયો આચાર્યના ચરણોમા તેમને શાતિ પ્રાપ્ત થઇ અને દીક્ષિત થયા

દીક્ષા લીધા પછી તેમણે ગુરૂની આજ્ઞા લઇ કોશા વેશ્યાના ઘરમા ચાતુર્માસ કર્યું. જરા પણ ચલાયમાન ન થતા વૈરાગ્યમાં તેઓ તલ્લીન રહ્યા

ભદ્રબાહુ સ્વામીના અતેવાસી વિશાખાચાર્ય, ભદ્રબાહુ સ્વામીના કાળધર્મ પામ્યા બાદ મગધ પાછા આવ્યા. તેમણે જોયુ કે, સ્થૂળિભદ્રજીના સાધુઓ વનો અને ઉદ્યાનોને બદલે હવે શહેરોમાં રહે છે. તેથી તેમને ઘણું ખરાબ લાગ્યુ. સ્થૂળિભદ્રજી સાથે આ સબંધમાં તેમને ચર્ચા થઇ, પરતુ બનેની વચ્ચેનુ અતર ઘટયુ નહિ.

આથી બન્નેના સાધુઓ અલગ વિચરવા લાગ્યા.

અહીથી જૈન સઘમાં બે શાખાઓ જુદી પડી છતાં અલગ સપ્રદાયો બન્યા નહોતા.

સ્થૂળિભદ્રજી પાસે વીર નિ. સ. ૧૭૯માં આર્ય મહાગિરિએ દીક્ષા લીધી.

સ્થૂળિભદ્રજી, સઘ વ્યવસ્થા, ધર્મપ્રચાર તથા આત્મ-સિદ્ધિની આરાધના કરતા વીર નિ. સ. ૨૧૫માં કાળધર્મ પામ્યા.

૯. શ્રી સ્થૂળિભદ્રજીથી લોંકાશાહ સુધીના સમયનું વિહંગાવલોકન

શ્રી સ્થૂળિભદ્રજી પછી આર્ય મહાગિરિ અને આર્ય સુહસ્તિ સ્વામીના નામો આચાર્ય તરીકે આવે છે.

ભદ્રબાહુસ્વામી અને સ્થૂળિભદ્રજીના સમયમાં સચેલત્વ અને અચેલત્વના પ્રશ્ન ઉપર શરૂ થયેલ મતભેદ સમય જતાં ઉગ્ર બનતો ગયો અને તેમાથી જૈન ધર્મમા બે સપ્રદાયો ખડા થયા. સચેલત્વને અપનાવનાર શ્વેતાબર કહેવાયા અને અચેલત્વને માનનાર દિગબર કહેવાયા.

આર્ય મહાગિરિ, આર્ય સુહસ્તિ, આર્ય સુપ્રતિબદ્ધ, ઉમાસ્વામીજી, આચાર્ય ગુણસુદરજી, કાલિકાચાર્યનો સમય વિક્રમની પૂર્વેનો છે. વીર નિર્વાણ પછી ૪૭૦ વર્ષે વિક્રમ સવત શરૂ થયો. ત્યાર પછી શ્રી વિમલસૂરિ, આર્યદિન્ન અથવા સ્કદિલાચાર્ય અને પાદલિપ્ત સૂરિ થયા. આ સમય દરમ્યાન ભગવાન મહાવીરે અપનાવેલ લોકભાષા અર્ધમાગધીમાથી ધીમે ધીમે જૈનાચાર્યો પડિતોની ભાષા સસ્કૃત તરફ વળ્યા. મૂળ આગમોને આધારે સસ્કૃતમાં મહાન ગ્રથોની રચના થવા માંડી.

આ પછી આચાર્ય વૃદ્ધવાદિ તથા કલ્યાણ મદિર સ્તોત્રના રચયિતા શ્રી સિદ્ધસેન દિવાકર અને બીજા ભદ્રબાહુ સ્વામીનો સમય આવ્યો.

વીર સ. ૯૮૦: વિ સ. ૫૧૦માં દેવર્દ્ધિ ગણિ ક્ષમા શ્રમણે શ્રુત-રક્ષાર્થે વલ્લભીપુરમા સાધુઓની એક પરિષદ મેળવી, જેમા જે આગમ સાહિત્ય આજ સુધી કંઠસ્થ જ રહેવાને કારણે વિલુપ્ત થતું જતું હતુ, તેને લિપિબદ્ધ કર્યું.

ત્યાર પછી શ્રી ભક્તામર સ્તોત્રના રચયિતા શ્રી. માનતુંગાચાર્ય, જિનભદ્ર ગણિ, હરિભદ્રસૂરિ આદિ આચાર્યો થયા. તે બાદ નવાંગી ટીકાકાર શ્રી અભયદેવ સૂરિ, જિનદત્ત સૂરિ અને ગુજરાતમા જૈન ધર્મની જય પતાકા ફરકાવનાર હેમચંદ્રાચાર્ય વિગેરે મહાનુભાવો થયા. તેમના સબંધમાં ઘણુ સાહિત્ય મળી આવે છે.

દરેક જગાએ બને છે તેમ ધીમે ધીમે જૈન શ્રમણ સંઘમાં પણ શિથિલતા પ્રવર્તવા લાગી. ક્રિયાકાંડો અને સમાચારીના સંબંધમાં મતભેદો ઉપસ્થિત થવાને લીધે પૃથક્ પૃથક્ સંઘો અને ગચ્છો અસ્તિત્વમા આવવા લાગ્યા એમ થતા જૈન સંઘમાં જે એકતા અને અવિચ્છિન્નતા હતી તેને બદલે ચોરાસી જેટલા ગચ્છો થઇ ગયા.

વારંવાર પડતા દુષ્કાળોને પરિણામે શ્રમણ-સાધુઓ માટે શુદ્ધ ચારિત્ર્યનો નિર્વાહ કરવાનું મુશ્કેલ બનતુ ગયું. તેમાંથી ચૈત્યવાદનો પ્રારંભ થયો અને સહજ સુલભ સાધન-પ્રાપ્તિની ઇચ્છાથી તેને ઉત્તરોત્તર વિકાસ થવા લાગ્યો.

ચારિત્ર્યના કઠિન માર્ગ ઉપર ચાલવામાં રહેલી મુશ્કેલીઓને કારણે સાધુવર્ગ પીછેહઠ કરવા લાગ્યો અને લગભગ અર્ધસંસારી જેવી હાલતમા આવી ગયો.

પંદરમી અને સોળમી સદીમાં જૈન સંઘમા એકતા કે સંગઠન જેવુ બીલકુલ રહ્યુ નહિ. યતિવર્ગ પોતાની જ મહત્તા સ્થાપવા પ્રયત્ન કરી રહ્યો હતો. વૈદું, ઔષધિ, મંત્ર, યંત્ર તથા તંત્રવિદ્યા દ્વારા લોકસંગ્રહની જ પાછળ આ વર્ગ પડયો હતો.

આ વખતે જૈન સંઘમા એક એવા મહાપુરુષની આવશ્યકતા હતી કે જે સંઘમા એકતા સ્થાપી શકે, સાંપ્રદાયિકતાને બદલે સંગઠનનુ સમર્થન કરે, ધાર્મિક જ્ઞાનનો ફેલાવો કરે અને ક્રિયોદ્ધાર માટે સક્રિય કાર્ય કરે

૧૦ ધર્મક્રાંતિનો ઉદયકાળ

યુરોપ અને એશિયા બન્ને ખંડોમા વિક્રમની પંદરમી અને સોળમી શતાબ્દીનો સમય ઘણો મહત્ત્વનો છે.

એક તો રાજનૈતિક પરિવર્તન, અરાજકતા અને સુવર્ણ યુગ.

બીજુ ધાર્મિક ઉથલપાથલ, અસહિષ્ણુતા અને શાંતિ.

આ બે સદીઓમાં ધર્મક્રાંતિનો જુવાળ અને ક્રિયાકાંડો પરત્વે ઉદાસીનતા, સંતોની પવિત્ર પરંપરા, સુધારકોનો સમુદાય, સર્વધર્મ સમભાવની ભાવના, અહિંસાની પ્રતિષ્ઠા અને ગુણોનુ પૂજન-અર્ચન આ કાળનો પ્રભાવ હતો.

ચૌદમી સદીના અંતથી માંડીને પંદરમી સદીની શરૂઆત સુધી સારાયે જગતમાં અરાજકતા અને ધાર્મિક અસહિષ્ણુતા ફેલાઇ ગઇ હતી.

યુરોપમા ધર્મના નામપર કેટલાય અત્યાચારો થયા. રોમન કેથોલિક અને પ્રોટેસ્ટન્ટોએ ઇશ્વરના નામ પર એક બીજા પ્રત્યે ભયંકર ઘૃણા અને વિદ્વેષના ઝેર ફેલાવ્યા.

યુરોપમાં જર્મનીના માર્ટીન લ્યુથરે અને ફ્રાંસમાં જોન ઓફ આર્કે પોતાના બલિદાનો આપી ચેતનાનો સંચાર કર્યો.

આ સંક્રાંતિ-કાળમાં ભારતમા પણ અનેક પરિવર્તનો થયા અને બીજા ધર્મોની સાથે સાથે જૈન ધર્મમા પણ પરિવર્તન આવ્યુ.

ધાર્મિક અવ્યવસ્થા અને પરિવર્તનના આ કાળમા સુધારાવાદી અને શાંતિચાહકોની શક્તિઓ પણ પોતાનુ કામ બરાબર કરતી રહી અને અંતે તેમનો વિજય થયો ધાર્મિક અશાંતિનો અંધકાર દૂર થયો અને ભારતમાં બાદશાહ અકબરે, ઇંગ્લાંડમા રાણી એલીઝાબેથે અને બીજા ઘણાઓએ સુવર્ણયુગમા સામાજિક સ્વસ્થતા અને સુરક્ષાનાં કાર્યો કર્યા

ભારતમા આનો સર્વથી વધુ પ્રભાવ જાતિવાદની સંકુચિતતાની વિરુદ્ધમા પડયો. પહેલીજવાર એક મોગલ બાદશાહ અકબર-'દેવાનામ્ પ્રિય' કહેવાયો તેની રાજસભા સર્વધર્મોના સમન્વયાત્મક સંમેલન જેવી બની ગઇ.

વીર પુરુષોએ રાજસભામા રાજપુરુષોને પ્રભાવિત કરી ધર્મ અને સમાજની સુરક્ષાના પ્રયત્નો આદર્યા ત્યારે સંતો, મહંતો, સાધુઓ, સન્યાસીઓ, ઓલિયા, પીરો અને ફકીરો પણ પોતાનો ફાળો નોંધાવતા ગયા.

"અલ્લાહ એક છે," "ઇશ્વર એક છે" અને તેનુ સ્થાન પ્રેમમાં જ છે-ના નાદ ગર્જી રહ્યા.

વાસ્તવમાં ધર્મ અને રાજકારણના એકીકરણનુ જે માન આજે ગાંધીજીને આપવામા આવે છે, તેનુ ખરૂ બીજ તો કબીર, નાનક અને સુફી સંતોના સમયમા જ નંખાયેલુ હતુ.

જેટલુ મહત્ત્વ ક્રાંતિની વિપુલતાનુ છે, તેટલુ મહત્ત્વ તેના પ્રણેતાઓનુ પણ છે આ દૃષ્ટિએ ક્રાંતિના અગ્ર-

ગણ્ય નાયકોમા વીર લોકાશાહ ફક્ત ધાર્મિક જ નહિ, પરતુ, સામાજિક અને રાજનૈતિક ક્ષેત્રમાં પણ મહત્વ ધરાવે છે.

૧૧. ધર્મપ્રાણ લોંકાશાહ

સ્થાનકવાસી સમાજ વીરવર્ય લોકાશાહના પુણ્ય પ્રયત્નોનુ પવિત્ર પારણામરૂપ પુષ્પ છે. જૈન સમાજની રૂઢિવાદિતા અને જડતાનો નાશ કરવા માટે તેમણે પોતાના પ્રાણપ્રદીપને પ્રજ્વલિત કર્યો અને જડપૂજાને સ્થાને ગુણ-પૂજાની પ્રતિષ્ઠા કરી, જડતા માત્ર સ્વરૂપને જાણતી હતી જ્યારે, ગુણે સ્વરૂપને છોડી, આકાર અને પ્રકારને ત્યાગી, ઉપયોગિતા અને કલ્યાણકારતાને બળ આપી માનવ માત્રને મહત્વ આપ્યુ.

શક્રેન્દ્રે જ્યારે ભગવાન મહાવીરને પૂછ્યુ હતુ કે 'ભગવન! આપના જન્મ નક્ષત્ર પર મહાભસ્મ નામનો ગ્રહ બેઠો છે તેનુ ફળ શુ?

ત્યારે ભગવાને કહ્યુ હતુ કે હે ઇંદ્ર! આ ભસ્મ-ગ્રહને લીધે બે હજાર વર્ષો સુધી સાચા સાધુસાધ્વીઓની પૂજા મંદ થશે. બરાબર બે હજાર વર્ષ પછી આ ગ્રહ ઉતરશે ત્યારે ફરીથી જૈન ધર્મમા નવચેતના જાગૃત થશે અને યોગ્ય પુરુષો અને સતોનો યથોચિત સત્કાર થશે.'

ભગવાન મહાવીરની આ ભવિષ્યવાણી અક્ષરે અક્ષર ખરી પડી વીર નિર્વાણ બાદ ૪૭૦ વર્ષે વિક્રમ સવત શરૂ થયો અને વિક્રમના ૧૫૩૧મા વર્ષમા એટલે (૪૭૦+૧૫૩૧=૨૦૦૧) બરાબર વીર સ. ૨૦૦૧ના વર્ષમા વીર લોંકાશાહે ધર્મના મૂળ તત્વોને પ્રકાશિત કર્યા અને ગુણ પૂજક-ધર્મ વિસ્તાર પામવા લાગ્યો.

ધર્મપ્રાણ લોકાશાહના જન્મ સ્થળ, સમય અને માતપિતાના નામ વિગેરે વિષયોમાં જુદા જુદા અભિપ્રાયો મળે છે, પરતુ વિદ્વાન સશોધકોના આધારભૂત નિર્ણય અનુસાર શ્રી લોકાશાહ, અનહદ્દવાડામા ચૌધરી ગોત્રના, ઓસવાલ ગૃહસ્થ, શેઠ હેમાભાઇની પવિત્ર, પતિપરાયણ-ભાર્યા ગંગાબાઇની કુક્ષિએ વિ સવત ૧૪૭૨ના કારતક શુદ ૧૫ને શુક્રવાર તા. ૧૮મી ઓકટોબર સને ૧૪૧૫ના રોજ જન્મ્યા હતા.

લોકાશાહનુ મન તો પ્રથમથી જ વૈરાગ્યમય હતુ. પરતુ માતાપિતાના આગ્રહને વશ થઇ તેમણે સ. ૧૪૮૭ માં સિરોહીના સુપ્રસિદ્ધ શાહ ઓધવજીની વિચક્ષણ વિદુષી પુત્રી સુદર્શના સાથે લગ્ન કર્યા હતા

લગ્નના ત્રણ વર્ષ બાદ તેમને પૂર્ણચદ્ર નામના પુત્ર-રત્નની પ્રાપ્તિ થઇ.

તેમની ત્રેવીસ વરસની ઉમરે તેમની માતાનુ અને ચોવીસમે વર્ષે પિતાનુ અવસાન થયું.

શિરોહી અને ચદ્રાવતિના રાજ્યો વચ્ચે યુદ્ધજનક સ્થિતિને લીધે અરાજકતા અને વ્યાપારિક દુર્વ્યવસ્થાને કારણે તેઓ અમદાવાદ આવ્યા અને અમદાવાદમા ઝવેરાતનો ધધો શરૂ કર્યો. થોડા જ વખતમા તેમની પ્રામાણિકતા અને કુનેહને લીધે તેઓએ ઝવેરાતના ધધામા નામના મેળવી.

તે વખતના અમદાવાદના બાદશાહ મહમદશાહ ઉપર પણ તેમના બુદ્ધિચાતુર્યનો ઘણો પ્રભાવ પડયો અને તેમણે લોકાશાહને પોતાના ખજાનચી બનાવ્યા.

એક વખત મહમદશાહના પુત્ર કુતુબશાહને પોતાના પિતા સાથે મતભેદ થવાથી પુત્રે પિતાને ઝેર આપી મારી નાખ્યો. મસારની આવી વિચિત્રતા અનુભવવાથી લોંકા-શાહનું વૈરાગ્યપ્રિય હૃદય હાલી ઉઠ્યુ અને તેમણે સસારથી વિરક્ત થવા રાજ્યની નોકરીનો ત્યાગ કર્યો.

તેઓ મૂળથી જ તત્વશોધક તો હતા. તેમણે એક લેખક મડળ સ્થાપ્યુ અને ખૂબ લહિયાઓ રાખી પ્રાચીન શાસ્ત્રો અને ગ્રથોની નકલો કરાવતા, અને અન્ય ધાર્મિક કાર્યોમાં પોતાનુ જીવન વિતાવતા.

એક વખત જ્ઞાનસુદરજી નામના એક યતિ તેમને ત્યા ગોચરીએ આવ્યા. તેમણે લોકાશાહના સુદર અક્ષરો જોઇ પોતાની પાસેના શાસ્ત્રોની નકલો કરી આપવા કહ્યુ લોંકાશાહે શ્રુતસેવાનુ આ કાર્ય સહર્ષ સ્વીકારી લીધુ

જેમ જેમ તેઓ શાસ્ત્રોની નકલો કરતા ગયા, તેમ તેમ તેમને શાસ્ત્રોની ગહન વાતો અને ભગવાનની પ્રરૂપણાનુ હાર્દ સમજાતા ગયાં. તેમની આખો ઉઘડી ગઇ. સઘ અને સમાજમાં પ્રવર્તતી શિથિલતા અને આગમ-અનુકૂળ વર્તનનો અભાવ તેમને દૃષ્ટિગોચર થવા માંડ્યો, જ્યારે તેઓ ચૈત્યવાસીઓના શિથિલાચાર અને અપરિગ્રહી નિર્ગ્રંથોના અસિધારાવત્ પ્રખર સંયમવ્રતનો તુલનાત્મક વિચાર કરતા ત્યારે તેમણે મનમાં ક્ષોભ થતો.

મદિરો મઠો અને પ્રતિમાગૃહોને આગમની કસોટીએ કસી જોતાં, મોક્ષોપાયમાં ક્યાંય પણ પ્રતિમાની પ્રતિષ્ઠાનું વિધાન મળતું નહોતું. તેમને શાસ્ત્રનુ વિશુદ્ધ જ્ઞાન

પ્રાપ્ત થવાથી, પોતાના સમાજની અંધ–પરંપરા પ્રત્યે ગ્લાનિ ઉત્પન્ન થઇ શુદ્ધ જૈનાગમો પ્રત્યે તેમને અડગ શ્રદ્ધા પ્રગટી. તેમણે દૃઢપણે ઘોષિત કર્યું કે શાસ્ત્રમાં બતાવેલ નિર્ગ્રંથ ધર્મ આજના સુખશીલ અને સંપ્રદાય-વાદને પોષણ આપનારાઓના કલુષિત હાથોમાં જઇ લાઞ્છન-વાળો અને વિકૃત થઇ ગયો છે. મોક્ષની સિદ્ધિ માટે મૂર્તિઓ કે મંદિરોની જડ ઉપાસના આવશ્યક નથી, પરંતુ તપ, ત્યાગ, સંયમ અને સાધના દ્વારા આત્મ-શુદ્ધિની આવશ્યકતા છે.

આમ પોતાનો દૃઢ નિશ્ચય થવાથી તેમણે શુદ્ધ શાસ્ત્રીય ઉપદેશ દેવો શરૂ કર્યો પ્રભુ મહાવીરના ઉપ-દેશોનું હાર્દ સમજી તેના સાચા પ્રતિનિધિ બની જ્ઞાન દિવાકર ધર્મપ્રાણ લોંકાશાહ પોતાની સમસ્ત શકિતનો ઉપયોગ કરીને મિથ્યાત્વ અને આડંબરના અંધકારની વિરૂદ્ધ સિંહગર્જના કરતા ઉભા થયા. ઘણા ટૂંકા સમયમાં તેમને અદ્ભૂત સફળતા સાંપડી. લાખો લોકો તેમના અનુયાયીઓ બન્યા. આથી સત્તાના કામી વર્ગે એવા સમાચારો વહેવડાવવા માંડયા કે અમદાવાદમાં લોંકાશાહ નામનો એક લહિયો શાસનનો વિદ્રોહ કરી રહ્યો છે. તેમની સામે ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણાનો અને ધર્મભ્રષ્ટતાનો આક્ષેપ કરવામાં આવ્યો.

આ બધી વાતો અણહિલપુર પાટણવાળા શ્રાવક લખમશીભાઇએ સાંભળી. ભાઇ લખમશી તે વખતે સમાજમાં પ્રતિષ્ઠિત, સત્તાશાળી અને સાધનસંપન્ન શ્રાવક હતા. લોંકાશાહને સુધારવાના ઇરાદાથી તેઓ અમદાવાદ આવ્યા તેમણે લોંકાશાહ સાથે પુષ્કળ વાર્તાલાપ કર્યો અને તેમને પણ સમજાયું કે લોંકાશાહની વાત યથાર્થ છે અને તેમનો ઉપદેશ શાસ્ત્રાધારે છે.

૧૨. મૂર્તિપૂજા વિષે લોંકાશાહ

મૂર્તિપૂજા સંબંધમાં શ્રી લખમશીના પ્રશ્નોના જવાબ આપતા લોંકાશાહે સમજાવ્યું કે–

જૈનાગમોમાં કયાંય પણ મૂર્તિપૂજાનું વિધાન નથી. ગ્રંથો અને ટીકાઓ કરતા આગમો પર અમે વધુ વિશ્વાસ ધરાવીએ છીએ અને જે ટીકા કે ટિપ્પણી શાસ્ત્રના મૂળભૂત હેતુને સાનુકૂળ હોય તેટલી જ ટીકા કે ટિપ્પણીને માન્ય કરી શકાય. કોઇ પણ મૂળ આગમમાં મોક્ષની પ્રાપ્તિને માટે પ્રતિમાની પ્રતિષ્ઠા તથા પ્રતિમાનો ઉલ્લેખ નથી. તેમ દાન, શીલ, તપ અને ભાવના અગર જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર અને તપ એ ધાર્મિક અનુષ્ઠાનોમાં મૂર્તિ-પૂજા અંતર્નિહિત થઇ શકતી નથી.

શાસ્ત્રોમાં પાંચ મહાવ્રત, શ્રાવકના બાર વ્રત, બાર પ્રકારની ભાવના તથા સાધુની દૈનિક ચર્યા–સર્વનું સવિ-સ્તૃત વર્ણન છે; પરંતુ પ્રતિમા પૂજનનું મૂળ આગમોમાં કોઇ પણ જગાએ વર્ણન આવતું નથી.

જ્ઞાતા સૂત્ર તથા રાયપસેણીય સૂત્રમાં અન્ય ચૈત્યોના વંદનનું વર્ણન આવે છે, પણ કોઇ જૈન સાધુ કે જૈન શ્રાવકે મોક્ષની સાધના માટે નિત્ય કર્મની માફક તીર્થંકર પ્રતિમાનું પૂજન કર્યું હોય એવું એક પણ જગાએ લખેલું નથી.

લખમશી તો લોંકાશાહને સમજાવવા આવ્યા હતા, પણ તે પોતે જ સમજી ગયા લોંકાશાહની નીડરતા અને સત્યપ્રિયતા તેમને હૈયે વસી ગઇ અને તેઓ તેનાથી ઘણા પ્રભાવિત થયા અને તેમના શિષ્ય બની ગયા.

લખમશી લોંકાશાહના શિષ્ય થયા એ વાતને આખાય યતિ અને સાધુવર્ગે એક ભયંકર ઘટના માની અને ગભરાઇ ગયા. ધીમે ધીમે લોંકાશાહનો પ્રભાવ ચોમેર વધવા લાગ્યો.

એક વખત, અરહટ્ટવાડા, શિરોહી, પાટણ તથા સુરત એમ ચાર શહેરોના સંઘો યાત્રાએ નીકળેલા તે અમદાવાદ આવ્યા. તે વખતે વર્ષાનું જોર હોવાથી તેમને ત્યાં રોકાઇ જવું પડયું. આથી ચારે સંઘના સંઘવીઓ નાગજી, દલીચંદ, મોતીચંદ અને શંભુજીને લોંકાશાહ સાથે વિચાર વિનિમય કરવાનો અવસર પ્રાપ્ત થયો.

લોંકાશાહનો ઉપદેશ, તેમનું જીવન, વીતરાગ–પરમા-ત્માઓ પ્રત્યેની સાચી ભકિત અને આગમિક પરંપરાની તેમના ઉપર ખૂબ ઊંડી અસર થઇ. ચારે સંઘો ઉપર આ અસર એટલી સચોટ પડી કે તેમાંથી પિસ્તાળીસ શ્રાવકો લોંકાશાહની પ્રરૂપણા અનુસાર સાધુ બનવા તૈયાર થઇ ગયા.

આ વખતે જ્ઞાનજી મુનિ હૈદ્રાબાદ તરફ વિહાર કરી રહ્યા હતા. તેમને લોંકાશાહે બોલાવ્યા અને સં. ૧૫૨૭ના વૈશાખ સુદ ૩ના રોજ ૪૫ જણાને દીક્ષા આપી.

આ ૪૫ જણાએ પોતાના માર્ગદર્શક ઉપદેશક પ્રત્યે શ્રદ્ધા દર્શાવવા, પોતાના સંઘનું નામ 'લોંકાગચ્છ' રાખ્યું અને પોતાના નિયમો વગેરેનો કાર્યક્રમ લોંકાશાહના ઉપદેશ પ્રમાણે બનાવ્યો.

૧૩. લોંકાશાહનો ધર્મપ્રચાર અને સ્વર્ગવાસ

આગળ જોઇ ગયા તેમ લોંકાશાહની આગમિક માન્યતાને ખૂબ ટેકો મળવા માડયો. અત્યાર સુધી તેઓ પોતાની પાસે આવનારાઓને જ સમજાવતા અને ઉપદેશ આપતા, પરતુ જ્યારે તેમને લાગ્યુ કે ક્રિયોદ્ધારને માટે જાહેર રીતે ઉપદેશ કરવાનું અને પોતાના વિચારો જનતા સમક્ષ રજૂ કરવાનું જરૂરી છે, ત્યારે તેમણે સ. ૧૫૨૯ના વૈશાખ સુદ ૩, તા. ૧૧-૪-૧૪૭૨ના રોજથી જાહેર રીતે ઉપદેશ દેવા માંડયો.

તેમના અનુયાયીઓની સખ્યા દિવસે દિવસે વધવા લાગી. મૂળથી જ તેઓ વૈરાગ્યપ્રિય તો હતા જ પરતુ અત્યારસુધી એક યા બીજા કારણે દીક્ષા લઇ શકયા નહોતા. ક્રિયોદ્ધારને માટે પોતે પ્રત્યક્ષ ચારિત્ર્યનુ પાલન કરી બતાવવું એ ઉપદેશક માટે જરૂરી છે. આથી તેમણે સ. ૧૫૩૬ના માગશર સુદી ૫ના રોજ જ્ઞાનજી મુનિના શિષ્ય, સોહનજી પાસે દીક્ષા અગીકાર કરી.

ટૂકા સમયમા જ તેમના ૪૦૦ શિષ્યો બની ગયા અને લાખો શ્રાવકો તેમના પ્રત્યે શ્રદ્ધા ધરાવતા થયા.

તેમણે અમદાવાદથી માંડીને છેક દિલ્હી સુધી ધર્મનો જયઘોષ ગજાવ્યો અને આગમ-માન્ય સયમધર્મનુ યથાર્થ પાલન કર્યું અને ઉપદેશ કર્યો.

પ્રત્યેક ક્રાંતિકારની કદર કોઇ દિવસ તેના જીવન દરમ્યાન થતી નથી સામાન્ય માનવીઓ તેના જીવનકાળ દરમ્યાન તેને ગાડોઘેલો માને છે. જો તે શક્તિશાળી હોય તો લોકો તેની પ્રત્યે ઇર્ષાથી ઉભરાતા ઝેરની દૃષ્ટિએ જુએ છે અને તેને દુશ્મન માને છે.

લોંકાશાહના સંબધમા પણ આમ જ બન્યુ. તેઓ દિલ્હીથી પાછા ફરતા હતા ત્યારે અલ્વર આવી પહોંચ્યા. તેમને અટ્ઠમ (ત્રણ દિવસના ઉપવાસ)નુ પારણુ હતું.

સમાજના દુર્ભાગ્યે, તેમના શિથિલાચારી અને ઇર્ષ્યાળુ વિરોધીઓ કે જેઓ તેમનો પ્રતાપ સહન કરી શકતા નહોતા, તેઓએ એક ષડ્યત્ર રચ્યું. ત્રણ ત્રણ દિવસના ઉપવાસીને પારણાને દિવસે કોઇ દુષ્ટબુદ્ધિ, અભાગીએ વિષયુક્ત આહાર વહોરાવી દીધો. મુનિશ્રીએ તે આહાર વાપર્યો

ઔદારિક શરીર અને તે પણ વન ઘટાની ગયેલું. તેના પર એકદમ વિષની પ્રતિક્રિયા થવા માડી. વિચક્ષણ પુરુષ તુરત સમજી ગયા કે અંત સમીપમાં છે, પણ મહામાનવીઓને મૃત્યુ ગભરાવી શકતુ નથી. તેઓ શાંતિથી સૂઇ ગયા અને ચોરાસી લાખ જીવયોનિને ખમાવી શુભ ધ્યાનમાં લીન બની સ ૧૫૪૬ના ચૈત્ર સુદ ૧૧ તા. ૧૩મી માર્ચ ૧૪૮૯ના રોજ નશ્વર દેહનો ત્યાગ કરી સ્વર્ગે સિધાવ્યા.

૧૪. લોંકાશાહનો વારસો અને સ્થાનકવાસી સંપ્રદાય

લોકાશાહના વારસાને સભાળનારાઓનુ એક વિશાળ દળ તો તેમની હયાતી દરમ્યાન જ ઉત્પન્ન થયુ હતુ, પરતુ તેને કોઇ વિશેષ નામ આપ્યાનો ઉલ્લેખ પ્રાપ્ત થતો નથી.

લોંકાશાહના ઉપદેશથી જે પિસ્તાળીસ શ્રીમતોએ દીક્ષા લીધી હતી. તેમણે પોતાના ધર્મોપદેશક પ્રત્યે કૃતજ્ઞતા પ્રગટ કરવા પોતાના ગચ્છનુ નામ 'લોંકાગચ્છ' રાખ્યુ; પરતુ તેઓએ યતિધર્મના માધ્યમને જ સ્વીકારી તેનુ નવસસ્કરણ કર્યું હતુ. તેઓ દયા ધર્મને સર્વોત્કૃષ્ટ માનતા અને સાધુઓને નિમિત્તે ઉપાશ્રયો સુદ્ધાં બનાવવાનો, આરભ-સમારભનો નિષેધ કરતા. કેટલાકના માનવા મુજબ લોકાશાહની પરમ સત્યશોધક ઢુઢક-વૃત્તિને કારણે તેમને ઢુઢિયા કહેવામા આવતા અને તેમના નામે બનેલ ગચ્છને ઢુઢિયા સપ્રદાય તરીકે ઓળખવામાં આવતો. કેટલાક ઢુઢિયા શબ્દને તિરસ્કાર સૂચક વિશેષણ પણ માને છે.

શિથિલાચારી ચૈત્યવાસીઓને ધર્મપ્રાણ લોકાશાહના વિશુદ્ધ શાસ્ત્ર-સમત નિગ્રથ ધર્મનાં સ્પષ્ટીકરણથી પ્રદ્વેષ પ્રગટયો અને તેમના ઉપદેશોના શુદ્ધ સનાતન ધર્મનું પાલન કરનારા સંઘને પ્રદ્વેષવશ 'ઢુઢિયા' કહેવા લાગ્યા, પરતુ શુદ્ધ સનાતન ધર્મનુ આચરણ કરનાર સહિષ્ણુ શ્રાવકોએ સમભાવથી એવુ વિચાર્યું કે વાસ્તવમા ઢુંઢિયા શબ્દ લઘુતા નિર્દેશક (Humiliating) નથી ધર્મની ક્રિયાઓના આડબર પૂર્ણ આવરણોને ભેદીને તેમાંથી અહિંસામય સત્ય ધર્મનું શોધન (ઢુંઢન) કરનારાઓને અપાયેલું 'ઢુઢિયા'નું બિરુદ ગૌરવ લેવા જેવુ છે.

આ સબધમા સ્વ શ્રી. વાડીલાલ મોતીલાલ શાહે પણ સમભાવ દર્શાવી પોતાની ઐતિહાસિક નોંધમા લખ્યું છે કે-મૂળે તો એ શબ્દનુ રહસ્ય આ છે:

"ઢૂંઢત ઢૂંઢત ઢૂંઢ લિયા સબ, વેદ-પુરાન કુરાન મે જોઇ,
"જૈસો મહીમેં માખણ ઢૂંઢત, ઐસો દયામેં લિયા હૈ જોઇ,
"ઢૂંઢત હૈ તબ તો ચીજ પાવત, બીન ઢૂંઢે નહીં પાવત કોઇ.
"ઐસો દયામેં ધર્મ ઢૂંઢો, 'ઢુંઢિયા' બીન ધર્મ ન હોઇ"

લોંકાશાહની પછી એકસો વર્ષમા જ લોંકાગચ્છના ત્રણ વિભાગ પડી ગયા અને તેઓ ગાદીધારી યતિરૂપે ફરીથી રહેવા લાગ્યા. (૧) ગુજરાતી લોંકાગચ્છ, (૨) નાગોરી લોંકાગચ્છ અને (૩) ઉત્તરાર્દ્ધ લોંકાગચ્છ.

લોંકાગચ્છની દશમી પાટ પર વજાંગજી યતિ થયા. તેમની ગાદી સુરતમા હતી. તેમનુ ચારિત્ર્યબળ ક્ષીણ થઇ ગયુ હતુ. તેમનામાં શૈથિલ્ય અને પરિગ્રહ ઘર કરી ગયા હતાં. આથી તેમના સમયમાં જુદા જુદા સ્થાનોમા ક્રિયોદ્ધારક સતો પેદા થયા.

સોળમી સદીના ઉત્તરાર્દ્ધમાં અને સત્તરમી સદીમાં પાચ મહાપુરુષો આગળ આવ્યા. તેમણે લોંકાશાહની અમરક્રાતિને પુનર્જીવન અર્પ્યું આ પાંચ મહાપુરુષોના નામો આ પ્રમાણે છે –

(૧) પૂજ્ય શ્રી જીવરાજજી મહારાજ, (૨) પૂજ્ય શ્રી ધર્મસિહજી મહારાજ, (૩) પૂજ્ય શ્રી લવજી ઋષિજી મહારાજ, (૪) પૂજ્ય શ્રી ધર્મદાસજી મહારાજ અને (૫) પૂજ્ય શ્રી હરજીઋષિજી મહારાજ (હજુ આમનો ઇતિહાસ ઉપલબ્ધ નથી)

૧૫. પૂજ્ય શ્રી જીવરાજજી મહારાજ

શ્રી જીવરાજજી મહારાજનો જન્મ સુરત શહેરમા સં. ૧૫૮૧ ના શ્રાવણ સુદ ૧૪ની મધ્યરાત્રિએ શ્રી વીરજીભાઇની ધર્મપરાયણ અને પતિપરાયણા ભાર્યા કેસરબેનની કુક્ષિએ થયો હતો.

જે ઘરમાં તેમનો જન્મ થયો તે ઘર બીજી બધી રીતે સપન્ન હતુ, પરતુ એક માત્ર કુળદીપક પુત્રની જ ખોટ હતી. આ ખોટ પણ બાળક જીવરાજના જન્મથી પૂરાઇ ગઇ આથી આ બાળકનો જન્મ ઘણા હર્ષથી વધાવી લેવામાં આવ્યો. તેમની બાલ્યાવસ્થા ઘણાં જ લાલનપાલન અને સ્નેહભર્યા વાતાવરણમા પસાર થઇ હતી. તેમનુ શરીર ઘણુ સુદર અને વાણી મધુર હતી.

બાલ્યાવસ્થામાથી કિશોરાવસ્થામા આવતા તેમને નિશાળે બેસાડવામા આવ્યા તેમનામાં રહેલી વિલક્ષણ બુદ્ધિ અને અજબ સ્મરણ–શકિતને લીધે ઘણા જ થોડા સમયમા તેમણે સંપૂર્ણ શિક્ષણ પ્રાપ્ત કરી લીધુ.

વિદ્યાભ્યાસ પૂર્ણ થતાં તેમના પિતાએ એક સુદર કન્યા સાથે તેમનાં લગ્ન કરી આપ્યા.

જીવરાજજીને યતિઓના સપર્કને લીધે બચપણથી જ ધાર્મિક જ્ઞાન મળતુ રહ્યુ હતુ. તેઓ મૂળથી જ વૈરાગ્ય પ્રિય હતા. વિવાહ, વિલાસ, લલના અને લાવણ્ય, રૂપ અને રાસ, રગ અને ગધ, બધા મળીને પણ તેમના આકર્ષણનુ કેન્દ્ર બની શકયા નહી. તેમની વૈરાગ્યવૃત્તિ અને જળકમળવત્ નિર્લેપ વ્યવહારે, તેમને સસારમા વધુ વખત રહેવા ન દીધા. તેમનામા રહેલી વૈરાગ્યની ભાવના ઉછળવા માંડી. બુદ્ધિની પ્રૌઢતા તેમને જ્ઞાનના સાક્ષાત્કાર માટે પડકારી રહી હતી. છેવટે સસાર–ત્યાગની પ્રબળ ઉત્કઠા જાગી અને આ હેતુની પૂર્તિ માટે તેમણે માતપિતાની પાસે દીક્ષાની આજ્ઞા માગી. માતપિતાએ તેમને ઘણુ સમજાવ્યા, પરતુ તેમના જ્ઞાનના આગ્રહ આગળ સંસારનો આગ્રહ ટકી શકયો નહિ. આમ સ. ૧૬૦૧મા તેમણે પૂજ્ય શ્રી જગાજી યતિ પાસે દીક્ષા અગીકાર કરી.

દીક્ષા લીધા પછી તેમણે આગમોના અભ્યાસનો પ્રારભ કર્યો જેમ જેમ અભ્યાસ વધતો ગયો તેમ તેમ આગમ પ્રણિત સાધુચર્યા અને યતિજીવન, બન્ને વચ્ચેનુ અતર તેમને દૃષ્ટિગોચર થવા લાગ્યુ. 'આગમ પ્રણિત આપ્ત પ્રતિપાદિત માર્ગથી જ આત્માનુ કલ્યાણ સભવી શકે" એવી શ્રદ્ધા તેમને થઇ.

જ્યારે યતિમાર્ગમાં આગમિક અનુકરણ અને અપરિગ્રહી જીવનની તેજસ્વિતા એ બન્નેનો અભાવ તેમને જણાયો, ત્યારે યતિમાર્ગ પ્રત્યે તેમને અસતોષ થવા લાગ્યો. તેમના મનમાં એક જ વાત ઘુટાતી હતી કે–

"सुत्तस्स मग्गेण चरिज्ज भिक्खू।"

તેમણે પોતાના અતર્દ્વદની વાત ગુરુદેવને કરી, પણ એક ક્રાતિકારીમાં જોઇતી તેજસ્વિતા ગુરુમા નહોતી, તેમણે શિષ્યને સમજાવ્યુ: "હે શિષ્ય! આજના ભયકર જમાનામા સાધુચર્યાયુક્ત કઠોર જીવનનુ પાલન શકય નથી. શાસ્ત્રનો માર્ગ આદર્શ માર્ગ છે, પરતુ તે વ્યવહાર્ય નથી"

આ સમજાવટથી જીવરાજજીનુ અતર્દ્વદ્વ શાત ન થયુ. તેઓ અશાંત અને ઉગ્ર બનતા ગયા. ગુરુદેવને આગમિક સયમી જીવન પાળવાનો આગ્રહ કરતા ગયા. એક વખત તેમણે ગુરુની સામે શ્રી ભગવતી સૂત્રના વીસમા શતકનો પાઠ ધર્યો. તેમાં લખ્યુ છે કે, ભગવાન મહાવીરનુ શાસન લગાતાર એકવીસ હજાર વર્ષ સુધી અતૂટ ચાલશે."

ત્યારે ગુરુએ કહ્યું કે–"હું તો જે માર્ગે ચાલું છું તેજ માર્ગે ચાલી શકીશ, પરંતુ તારી ઇચ્છા હોય તો તું આગમાનુસાર સંયમ માર્ગનું વહન કર."

છેલ્લાં સાત સાત વર્ષથી ચાલી રહેલા વૈચારિક દ્વન્દ્વનો આજે આમ અંત આવ્યો.

સં. ૧૬૦૮માં તેમણે પાંચ સાધુઓ સાથે પંચમહાવ્રતયુકત આર્હત દીક્ષા ગ્રહણ કરી

સાધુ ધર્મની દીક્ષા લીધા પછી શાસ્ત્રાજ્ઞાનુસાર વેશનો તેમણે સ્વીકાર કર્યો. આજે સ્થાનકવાસી સમાજના સાધુઓનો જે વેશ છે તેનું પ્રમાણિકરૂપે પુન પ્રચલન શ્રી. જીવરાજજી મહારાજથી થયું

ભદ્રબાહુ સ્વામીના યુગથી સ્થવિર કલ્પમા આવનાર સાધુઓએ વસ્ત્ર અને પાત્ર ગ્રહણ કર્યા હત. ધીમે ધીમે દુષ્કાળની ભીષણતાને કારણે દંડ આદિ પણ રાખવા લાગી ગયા હતા

શ્વેતાબર પરંપરામા સાધુઓના ચૌદ ઉપકરણો ગ્રહણ કરવામાં આવે છે, તેથી આગળ વધીને આકર્ણ પર્યંત દંડ, સ્થાપનાચાર્ય, સિદ્ધચક્ર વિગેરે કયારે બન્યા અને કેવી રીતે આવ્યા તે માટે તો એટલું જ કહી શકાય તેમ છે કે મુખવસ્ત્રિકા, રજોહરણ, ચાદર અને ચોલપટ્ટ આદિ વસ્ત્રો સિવાયની વસ્તુઓ તો પરિસ્થિતિવશ ઘુસી ગયેલી છે.

જીવરાજજી મહારાજે આ બધા ઉપકરણોમાથી વસ્ત્ર, પાત્ર, મુહપત્તી, રજોહરણ, રજસ્ત્રાણ, પ્રમાર્જિકા સિવાયના ઉપકરણોનો ત્યાગ કર્યો અથવા જરૂર પડે તેને ઐચ્છિક વસ્તુઓનું રૂપ આપ્યું. તેમા પણ દંડ, સ્થાપનાચાર્ય અને સિદ્ધચક્ર વિ ને તો અનાવશ્યક જણાવી સાધુજનોને નિર્લોભતાનો માર્ગ બતાવ્યો ઉપકરણોના સંબંધમા આ બધી પ્રથમ વ્યવસ્થા હતી

૧૬. સાધુમાર્ગીઓની ત્રણ માન્યતાઓ

૧. બત્રીસ આગમ ૨. મુહપત્તી ૩. ચૈત્ય પૂજાથી સર્વાંશે વિમુક્તિ.

૧. જીવરાજજી મહારાજે આગમોના વિષયમા લોંકાશાહની વાતનો સ્વીકાર કર્યો, પરંતુ આવશ્યક સૂત્રને પ્રામાણિક માની એકત્રીસ આગમનાં બત્રીસ આગમ માન્યા. લોંકાશાહની માફક જ તેમણે અન્ય ટીકાઓ અને ટિપ્પણીઓ કરતા મૂળ આગમોને જ શ્રદ્ધાપાત્ર માન્યાં આ પરંપરા આજ સુધી સ્થાનકવાસી સમાજે માન્ય રાખી છે. સ્થાનકવાસી સમાજ નીચે પ્રમાણે આગમોને પ્રમાણભૂત માને છે.

૧૧. અંગસૂત્રો ૧. આચારાંગ, ૨. સૂત્રકૃતાંગ, ૩. સ્થાનાંગ ૪. સમવાયાંગ, ૫. વ્યાખ્યા પ્રજ્ઞપ્તિ (ભગવતી) ૬. જ્ઞાતા ધર્મ કથાંગ, ૭. ઉપાસક દશાંગ, ૮. અંતકૃત દશાંગ, ૯. અનુત્તરોપ પાતિક દશાંગ, ૧૦. પ્રશ્ન વ્યાકરણ અને ૧૧. વિપાક સૂત્ર

૧૨. ઉપાંગ સૂત્રો ૧. ઉવવાઇ ૨. રાયપસેણી ૩. જીવાભિગમ, ૪. પન્નવણા, ૫. સૂર્યપ્રજ્ઞપ્તિ, ૬ જંબુદ્વિપ પ્રજ્ઞપ્તિ, ૭. ચંદ્ર પ્રજ્ઞપ્તિ, ૮. નિરયાવલિકા, ૯. કલ્પાવતંસિકા, ૧૦ પુષ્પિકા, ૧૧ પુષ્પ ચૂલિકા, ૧૨. વન્હિદશા

૪. મૂળ સૂત્રો: ૧ દશવૈકાલિક, ૨. ઉત્તરાધ્યયન, ૩. નંદી ૪. અનુયોગ દ્વાર.

૪. છેદ સૂત્રો: ૧. બૃહત્કલ્પ, ૨ વ્યવહાર, ૩. નિશીથ ૪. દશાશ્રુતસ્કંધ.

૧ આવશ્યક આ પ્રાચીન શાસ્ત્રોમા જૈન પરંપરાની દૃષ્ટિએ આચાર, વિજ્ઞાન, ઉપદેશ, દર્શન, ભૂગોળ, ખગોળ આદિનાં વર્ણનો છે. આચાર માટે આચારાંગ, દશવૈકાલિક આદિ ઉપદેશાત્મક ઉત્તરાધ્યયન વિ. દર્શનાત્મક સૂત્રકૃતાંગ, પ્રજ્ઞાપના, રાયપસેણી, નંદી, ઠાણાંગ, સમાવાયાંગ, અનુયોગદ્વાર વિ. ભૂગોળ ખગોળ માટે જંબુદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિ, ચંદ્રપ્રજ્ઞપ્તિ, સૂર્ય પ્રજ્ઞપ્તિ વિ. પ્રાયશ્ચિત વિશુદ્ધિ માટે છેદસૂત્રો અને આવશ્યક. જીવનચરિત્રોનો સમાવેશ ઉપાસક દશાંગ, અનુત્તરોવવાઇ વિ માં છે જ્ઞાતા ધર્મ કથાંગ, આખ્યાનાત્મક છે, વિપાક સૂત્ર કર્મવિષયક અને ભગવતી સંવાદાત્મક છે.

જૈન દર્શનના મૌલિક તત્ત્વોની પ્રરૂપણા આ સૂત્રોમા વિસ્તૃત રૂપે દેખાય છે. અનેકાંત દર્શન આદિના વિચાર, અંગ અને દૃષ્ટિ-બધા વિષયો જૈનાગમોમા સગ્રથિત છે.

૨. જૈન ધર્મની બધી શાખાઓમા સ્થાનકવાસી શાખાની બે ખાસ વિશેષતાઓ છે· ૧. સ્થાનકવાસીઓ મુહપત્તીને આવશ્યક અને ૨. મૂર્તિપૂજાને આગમ-વિરુદ્ધ હોવાથી અનાવશ્યક માને છે.

જૈન સાધુઓનું સર્વાધિક પ્રચલિત અને પરિચિત ચિહ્ન છે "મુહપત્તી". પરંતુ દુર્ભાગ્યવશાત્ જૈન મુનિઓના

જેટલાં પ્રતીક છે તેમાંથી એકના પણ સબધમાં બધો આખો સમાજ એકમત નથી.

મુહપત્તી અને રજોહરણ આ બન્ને જૈન મુનિઓની મહાન નિશાનીઓ છે. સાધુના મુખ પર મુહપત્તી અને બગલમાં રજોહરણ આ બન્નેની પાછળ જૈન ધર્મના આત્મા—અહિસા—ની મહાન ભાવના રહેલી છે. રજોહરણની ઉપયોગિતા માટે શ્વેતાબર અને દિગબર બન્ને સપ્રદાયો એક મત છે. દિગંબર સાધુઓ રજોહરણને બદલે મોરપીછીનો ઉપયોગ કરે છે આમા વસ્તુભિન્નતા છે પણ ઉદ્દેશભિન્નતા નથી.

મુહપત્તીની ઉપયોગિતા અને મહત્તા માટે વિવાદ છે. શ્વેતાંબર મુહપત્તીને આવશ્યક સાધન માને છે કે જેના વિના વાણી અને ભાષા નિર્વદ્ય હોઇ શકતી નથી. વાયુકાયના જીવોની રક્ષા થઇ શકતી નથી પરતુ દિગંબરો મુહપત્તીને અનાવશ્યક અને સમુર્છિમ જીવોની ઉત્પત્તિનુ કારણ માને છે.

શાસ્ત્રોનાં પ્રમાણોને સત્કારીએ તો દિગબર અને શ્વેતાબરનાં શાસ્ત્રોનો મેળ ખાતો નથી, પણ સૈદ્ધાતિક દૃષ્ટિથી જૈન સાધુના આદર્શના સબધમા, ભગવાન મહાવીરના અહિંસાના સિદ્ધાંતના આધારે આપણે વિચાર કરી શકીએ તેમ છીએ. શ્વેતાંબર શાસ્ત્રોમા મુહપત્તીનુ આવશ્યક વિધાન છે. સાધુનાં ચૌદ ઉપકરણોમા મુહપત્તીને મુખ્ય ઉપકરણ ગણવામાં આવેલ છે.

ભગવતી સૂત્રના ૧૬મા શતકના બીજા ઉદ્દેશામાં ભગવાને કહ્યુ છે કે—

"गोयमा। जाहेण सक्के देविंदे देवराया, सुहुम काय अणिज्जूहित्ताण भासं भासति, ताहेणं सक्के देविंदे देवराया सावज्जं भास भासई।"

અર્થાત્-હે ગૌતમ! શક્રદેવેન્દ્ર જ્યારે વસ્ત્રાદિકથી મુખ ઢાકયા સિવાય (ઉઘાડે મોંઢે) બોલે છે, ત્યારે તેની ભાષા સાવદ્ય હોય છે.

અભયદેવ સૂરિએ તેમની વ્યાખ્યામા મુખ ઢાંકવાનુ વિધાન કરેલુ છે. તેમણે લખ્યું છે કે-વસ્ત્રાદિકથી મુખ ઢાંકીને બોલવુ તેજ સૂક્ષ્મકાય જીવોનું રક્ષણકર્તા છે.

યોગશાસ્ત્રના તૃતીય પ્રકાશના સત્તાશીમા શ્લોકનુ વિવરણ કરતાં હેમચદ્રાચાર્ય લખે છે કે·

मुखवस्त्रमपि सम्पतिम जीव रक्षणादुष्ण मुख वात विराध्यमान बाह्य वायुकाय जीव रक्षणात् मुखे धूलि प्रवेश रक्षणाच्चोपयोगीति।

અર્થાત્:—મુખવસ્ત્ર સપાતિમ જીવોની રક્ષા કરે છે. મુખથી નીકળતા વાયુ દ્વારા વિરાધિત થતા બાહ્ય વાયુકાયના જીવોની રક્ષા કરે છે, તથા મુખમા ધૂળ જતી અટકાવે છે એટલે તે ઉપયોગી છે.

આમ શ્વેતાબર સપ્રદાયે મુહપત્તીનો સ્વીકાર કર્યો છે, પરતુ મૂર્તિપૂજક સમાજ હમેશા મુખ ઉપર મુહપત્તી બાધી રાખવાની વિરુદ્ધ છે અને તે હાથમાં મુહપત્તી રાખે છે. જ્યારે સ્થાનકવાસી હમેશાં મુખ પર મુહપત્તી બાધવી આવશ્યક માને છે બન્ને જણા પોતપોતાને અનુકૂળ પ્રમાણો રજૂ કરે છે.

પરતુ જૈન સિવાયના અન્ય ગ્રથોમાં જૈન સાધુઓના વર્ણનો આવે છે તે ઉપરથી મુહપત્તી મુખ ઉપર બાધી રાખવાનો રિવાજ પ્રાચીન હોવાનુ જાણી શકાય છે.

જેમ કે શિવ-પુરાણના એકવીસમા અધ્યાયના પદરમા શ્લોકમાં જૈન સાધુનુ વર્ણન આ પ્રમાણે છે

हस्ते पात्र दधानश्च तुण्डे वस्त्रस्य धारका·
मलिनान्येव वस्त्राणि, धारयन्तोऽल्प- भाषिणः

અર્થાત્:—જૈન સાધુ હાથમાં પાત્ર રાખે છે, મો ઉપર વસ્ત્ર ધારણ કરે છે, વસ્ત્રો મલિન હોય છે અને અલ્પ ભાષણ કરે છે

પુરાણો ગમે તેટલા અર્વાચીન હોય પણ મુહપત્તી મોઢે બાધવી કે હાથમાં રાખવી એ વિવાદ કરતા તો ઘણા પ્રાચીન છે. એટલે સ્થાનકવાસીઓની મોઢે મુહપત્તી બાંધવાની રીત પ્રાચીન છે.

હિત શિક્ષા રાસ, ઉપદેશ અધિકારમાં કહ્યુ છે કે·—

મુખ બાંધી તે મુહપત્તી, હેઠી પાટો ધાર,
અતિ હેઠી દાઢી થઇ, જોતર ગળે નિરધાર.
એક કાને ધ્વજ સમ કહી, ખભે પછેડી ઠામ;
કેડે ખોસી કોથળી, નાવી પુણ્યને કામ.

જૈનાગમોમા તથા જૈન સાહિત્યમા મુહપત્તીને વાચના, પૃચ્છના, પરાવર્તના તથા ધર્મકથાના સમયે આવશ્યક ઉપકરણ કહ્યું છે.

વસતિ પ્રમાર્જન, સ્થડિલ ગમન વ્યાખ્યાન પ્રસગ તથા મૃતક પ્રસંગમાં મુહપત્તીનુ આવશ્યક વિધાન કરવામાં આવ્યું છે.

પંન્યાસજી મહારાજ શ્રી રત્ન વિજયજીગણિએ "મુહપત્તી ચર્ચા-સાર" નામના એક પુસ્તકનો સગ્રહ કર્યો છે, જે આ વિષય ઉપર ખાસ પ્રકાશ રે કે છે.

માત્ર સ્થાનકવાસીઓથી જુદા પડવાની ખાતર જ મૂર્તિપૂજકો મોં ઉપર મુહપત્તી બાંધતા નથી, એમ શ્રી. વિજયાનંદસૂરિ (આત્મારામજી) મહારાજે સં. ૧૯૬૭ના કારતક વદિ ૦))ને બુધવારે સૂરતથી મુનિશ્રી આલમચંદજીને પત્ર લખ્યો છે તે ઉપરથી જાણી શકાય છે. સ્વ. શ્રી. વિજયવલ્લભસૂરિજી કે જે તે વખતે શ્રી વલ્લભવિજયજી હતા, તેમના હસ્તાક્ષરે લખાયેલ તે પત્રમા નીચે પ્રમાણે લખેલ છે

"मुहपत्ती विशे हमारा कहना इतनाहि है कि मुहपत्ती बंधनी अछछी है और घणे दिनोंमे परंपरा चली आई है, इनको लोपना अछछा नहि है। हम बंधनी अछछी जाणते है, परंतु हम ढुंढीए लोकमेसे मुहपत्ती तोडके नीकले है ईस वास्ते हम बंध नही सकते हैं। और जो कदी बंधनी ईच्छीए तो यहा बडी निंदा होती है।"

— જીવરાજજી મહારાજે પણ શાસ્ત્રોના પ્રમાણો અને ઉભય પક્ષના તર્કોનો વિચાર કરીને મુહપત્તીને મુખ ઉપર બાંધવાનું નક્કી કર્યું.

સાંપ્રદાયિકતા માનવીના માનસને ગુલામ બનાવી મૂકે છે. મુહપત્તીની ઉપયોગિતા સ્વીકારનારા પણ મુહપત્તીમાં વપરાતા દોરાના ઉપયોગ સામે વાંધો લે છે પરંતુ એક કાનથી બીજા કાન સુધી મુહપત્તી બાંધવામા કપડું વધારે વાપરવું પડે તેના કરતા માત્ર દોરાથી જ ચાલી શકતું હોય તો એટલો પરિગ્રહ ઓછો થાય. ધર્મ પરિગ્રહ વધારવામાં છે કે ઘટાડવામા ! આમ બધી દૃષ્ટિએ વિચારી જીવરાજજી મહારાજે દોરા સાથે મુહપત્તી બાંધવાનું સ્વીકાર્યું.

૩. મૂર્તિપૂજાના સંબંધમાં અગાઉ લોંકાશાહના વિચારો આપણે જોઈ ગયા છીએ, તેજ તેમણે માન્ય રાખ્યા અને મૂર્તિપૂજાને ધર્મ વિધિમાં અનાવશ્યક માની.

જીવરાજજી મહારાજ જ્યારે યતિ ધર્મમાંથી અલગ થયા ત્યારે તેમની સાથે બીજા પાંચ યતિઓ પણ નીકળ્યા અને તેમને સહકાર આપ્યો.

તેમનો શુદ્ધ સંયમ જોઈને લોકોનો તેમના પ્રત્યે ભાવ વધવા લાગ્યો આથી યતિવર્ગે તેમની સામે વિરોધ જગાવવા માંડ્યો, પરંતુ આ બધાથી જરા પણ ગભરાયા વિના અહિંસાના સજાગ પ્રહરી બનીને ઘૂમતા રહ્યા. માલવ પ્રદેશમાં ધર્મ–જાગૃતિ લાવવાનું માન પણ તેમના ફાળે જાય છે.

પ્રાંતે પ્રાંતમાં વિચરતા તેઓ આગ્રા આવ્યા ત્યાં તેમનું શરીર નિર્બળ બનવા લાગ્યું. અંત સમય નજીક સમજી, સંપૂર્ણ આહારનો પરિત્યાગ કરી તેઓ સમાધિપૂર્વક કાળધર્મ પામ્યા.

તેમના સમયમાં જ તેમના અનુયાયીઓની સંખ્યા ઘણી મોટી બની ગઈ હતી. તેમના દેહાંત પછી આચાર્ય ધનજી, વિષ્ણુજી, મનજી તથા નાથુરામજી થયા.

કોટા સંપ્રદાય, અમરસિંહજી મ. નો સંપ્રદાય, સ્વામીદાસજી મ. નો સંપ્રદાય, નાથુરામજી મ. નો સંપ્રદાય આદિ દસ અગિયાર સંપ્રદાય તેમને પોતાના મૂળ પુરુષ માને છે.

૧૭–ધર્મસિંહજી મુનિ

લોંકાશાહે જડવાદ અને આડંબરના વિરોધમાં મોરચો માંડ્યો હતો, તે પ્રમાણે ધર્મસિંહજી મહારાજે લોંકાગચ્છમા પેસી ગયેલી કુરીતિઓનો નાશ કરવા માટે ઉદ્‌ઘોષણા કરી.

લોંકાશાહની સેનાની આંતરિક સ્થિતિને સુદૃઢ કરનાર સ્થાનકવાસી સમાજના મૂળ પ્રણેતાઓમાંથી બીજા નંબરે તેઓ આવે છે.

શ્રી ધર્મસિંહજીનો જન્મ સૌરાષ્ટ્રના હાલાર પ્રાંતના જામનગરમા થયો હતો. દશા શ્રીમાળી જિનદાસ તેમના પિતા અને શિવાદેવી તેમની માતા હતા.

એક વખત લોંકાગચ્છી યતિ શ્રી દેવજીનું વ્યાખ્યાન સાંભળી તેમને સંસાર પ્રત્યે વૈરાગ્ય ઉત્પન્ન થયો અને દીક્ષા લેવાનો નિર્ણય કર્યો. પંદર વર્ષના કુમાર ધર્મસિંહે માતપિતાની આજ્ઞા માગી. માતપિતાએ ઘણા સમજાવ્યા, પણ પ્રબળ વૈરાગ્યભાવના આગળ તેમને નમતું આપવું પડ્યું. એટલું જ નહિ પણ તેમના ઉપદેશથી પ્રભાવિત થઈ તેમના પિતાએ પણ તેમની સાથે દીક્ષા લીધી.

ધર્મસિંહજી મુનિને અપૂર્વ બુદ્ધિ તથા વિલક્ષણ પ્રતિભાની ખરેખર કુદરતી બક્ષિસ હતી. તેમણે થોડા જ વખતમાં બત્રીસ આગમો, તર્ક, વ્યાકરણ સાહિત્ય તેમ જ દર્શનનું જ્ઞાન ઉપાર્જન કર્યું.

ધર્મસિંહજી મુનિ એક સાથે બન્ને હાથે લખી શકતા અને અવધાન કરી શકતા.

સામાન્ય રીતે વિદ્વાનોની સાથે ચારિત્રનો મેળ બહુ ઓછો હોય છે. ત્યારે ધર્મસિંહજીમાં વિદ્વત્તાની સાથે ચારિત્ર પણ ઘણા જ ઊંચા પ્રકારનું હતું.

તેમના હૃદયમા યતિઓના શિથિલાચારી જીવન પ્રત્યે અસતોષ જાગ્યો. તેમણે નમ્રતાપૂર્વક પૂજ્ય યતિશ્રી શિવજીની પાસે ખુલાસો કર્યો અને કહ્યુ .

"ગુરુદેવ! પાચમા આરાના બહાના નીચે શિથિલાચારનુ આજે જે પોષણ થઇ રહ્યુ છે, તે જોઇને આપના જેવા નરસિહ પણ જો વિશુદ્ધ મુનિ ધર્મનુ પાલન નહિ કરે તો પછી કોણ કરશે? આપ મુનિધર્મનુ પાલન કરવાની પ્રતિજ્ઞા કરો હુ પોતે આપની સાથે આગમાનુસાર સયમ પાલન કરીશ."

ગુરુએ ઘણા જ પ્રેમપૂર્વક શિષ્યની વાત સાંભળી અને થોડો વખત રાહ જોવા કહ્યુ

ધર્મસિહજીએ ગુરુની વાત સ્વીકારી અને શ્રુતધર્મની સેવા કરવા તેમણે સૂત્રો ઉપર ટબ્બા લખવાનો આરભ કર્યો. તેમણે સત્તાવીસ સૂત્રોના ટબ્બા લખ્યા. આ ટબ્બા એવી સરસ રીતે લખાયા છે કે આજ સુધી આ ટબ્બાઓને સ્થાનકવાસી સાધુઓ પ્રમાણિક માનતા આવ્યા છે. અને તેને લીધે જ ગુજરાતી ભાષા સ્થાનકવાસી સાધુઓને જાણવી પડે છે

આ પછી ફરીથી તેમણે ગુરુદેવને વિનતિ કરી કે–"હવે વિશુદ્ધ સયમના પાલનાર્થે નીકળી પડવાની મારી તીવ્ર ઇચ્છા છે. આપ જો નીકળો તો આપણે બન્ને જણા શુદ્ધ ચારિત્રને માર્ગે વળીએ."

ગુરુએ કહ્યુ "હે દેવાનુપ્રિય! તુ જોઇ શકે છે કે હુ તો આ ગાદી અને વૈભવને ત્યાગી શકુ તેમ નથી. છતા તારા કલ્યાણના માર્ગમા હુ આડે આવવા ઇચ્છતો નથી. તારી ઇચ્છા હોય તો તુ આગમાનુસાર ચારિત્ર્યનુ પાલન કર. પરંતુ અહીથી ગયા પછી તારી સામે વિરોધના વ ટોળ ઊભા થશે તેની સામે ટકી શકવાની તારામા શક્તિ છે કેમ? તે જાણવા માટે મારે તારી પરીક્ષા કરવી પડશે. માટે આજે રાતના દિલ્હી દરવાજા બહાર (અમદાવાદમા) દરિયાખાનનો ઘુમ્મટ છે, ત્યાં આજની રાત રહી, કાલે સવારે મારી પાસે આવજે.

ધર્મસિહજી ગુરુની આજ્ઞા શિરોધાર્ય કરી ત્યા ગયા. ત્યાના અધિકારી પાસે રાતવાસો કરવાની આજ્ઞા માગી. તે વખતે અમદાવાદ શહેરનો આટલો વિકાસ થયો નહોતો. રાતના કોઇથી શહેરની બહાર નીકળી શકાતુ નહિ. અને દરિયાખાનના ઘુમ્મટમા તો રાતના કોઇથી રહી શકાતુ નહોતુ, આથી ત્યાંના મુસલમાનોએ તેમને કહ્યુ:–

"મહારાજ! અહી કોઇ રાત્રે રહી શકતુ નથી. જે રાત્રે અદર જાય છે, તેનુ સવારે શબ જ હાથ લાગે છે. આપ નાહક મરવાનુ શું કરવા ઇચ્છો છો?

ધર્મસિહજીએ કહ્યુ: 'મને મારા ગુરુની આજ્ઞા છે કે રાતના અહી રહેવુ એટલે આપ મને આજ્ઞા આપો."

ત્યાંના લોકોએ વિચાર્યુ કે આ કોઇ અજબ માણસ છે! આટલી જીદ કરે છે તો ભલે મરતો. તેમણે કહ્યુ. 'મહારાજ! આપ રહો તેમાં અમને કાઇ વાધો નથી, પરતુ આપને કાઇ થાય તો તેનો દોષ અમને ન દેતા."

ધર્મસિહજીએ કહ્યુ કે તેઓ કોઇપણ પ્રકારે કોઇને પણ દોષિત માનશે નહિ.

તેઓ ઘુમ્મટમા પહોચ્યા. સધ્યા સમય થતા તેઓ પોતાના ધ્યાન, કાર્યોત્સર્ગ અને શાસ્ત્ર સ્વાધ્યાયમા લાગી ગયા એક પ્રહર રાત્રિ વીતી ગઇ ત્યારે દરિયાખાન પીર પોતાની કબર ઉપર આવ્યો તેણે જોયુ કે એક સાધુ સ્વાધ્યાયમા બેઠેલ છે તેણે શાસ્ત્રોની વાણી સાભળી. આજ સુધી આવી વાણી તેણે કદી સાભળી નહોતી સાધુ તરફ નજર કરી તો તેઓ સ્વાધ્યાયમાં લીન હતા તેમણે તો પોતાની દૃષ્ટિ સુદ્ધા ફેરવી નહિ. યક્ષનુ હૃદય પલ્ટાઇ ગયુ જે આજ સુધી મળે તે માનવીનો સહાર કરતો તે આ સાધુની સેવા–સુશ્રૂસા કરવા લાગી ગયો ધર્મસિહજીએ તેને ઉપદેશ આપ્યો અને તેણે કોઇને પણ હેરાન ન કરવાની પ્રતિજ્ઞા લીધી.

જે લોકોએ આગલે દિવસે સાધુને અદર જતા જોયેલા તેઓ સવારમા તેમનુ શબ નિહાળવાની કુતૂહળતાથી પ્રેરાઇને બહાર ભેગા થયેલા. ત્યા તો સૂર્યોદય થતા ધીર, ગંભીર, પ્રતાપી ઓજસ્વી શ્રી ધર્મસિંહજી મુનિ બહાર પધાર્યા લોકો આશ્ચર્યચકિત થઇ ગયા.

શ્રી શિવજી ઋષિએ આ વાત સાભળી ઘણી જ પ્રસન્નતા અનુભવી અને ધર્મસિહજીને શાસ્ત્ર સમત શુદ્ધ સયમના માર્ગે વિચારવા આજ્ઞા આપી.

શ્રી ધર્મસિહજી ગુરુના આશિર્વાદ મેળવી તેમનાથી છુટા પડી અમદાવાદ પધાર્યા. તે વખતે અમદાવાદમા ચૈત્યવાસીઓનુ બળ ઘણુ અને યતિઓ તો અસખ્ય હતા એટલે સપૂર્ણ સયમીને યોગ્ય એવી જગા ક્યાથી મળે? આથી તેમણે દરિયાપુર દરવાજાની ઉપરની એ-વાળની કોટડીમાં રહી, દરવાજા ઉપરથી ઉપદેશ દેવા માંડ્યો.

આ ઉપરથી તેમનો સંપ્રદાય "દરિયાપુરી સંપ્રદાય" ના નામથી ઓળખાયો.

આ વાત વિ. સં. ૧૬૯૨ ની સાલની છે.

શ્રી ધર્મસિંહજીના ઉપદેશની અસર અમદાવાદ ઉપર ઘણી જ ઊંડી પડી છે તે વખતના અમદાવાદના બાદશાહના કારભારી દલપતરાય પણ તેમનાથી ઘણા પ્રભાવિત થયા હતા. ધીમે ધીમે તેમનો શિષ્ય પરિવાર અને અનુયાયી વર્ગ વધવા માડયો.

પૂજ્ય શ્રી ધર્મસિંહજી મહારાજનો અભ્યાસ ઘણો જ ઊંડો હતો પોતાના જીવન દરમિયાન જૈન સાહિત્યની અજોડ સેવાનુ મહાન્ કાર્ય તેમણે કર્યુ છે.

શ્રી. ધર્મસિંહજી મહારાજની માન્યતાઓમા બીજા સંપ્રદાયોથી થોડોક ફેર છે. તેમા મુખ્ય ભેદ (શ્રાવકોના પચ્ચક્ખાણમા) છ કોટિ અને આઠ કોટિનો છે. સાધુઓને તો ત્રણ કરણ અને ત્રણે યોગની, નવ કોટિએ પ્રત્યાખ્યાન હોય છે.

આ પૈકી બીજા સંપ્રદાયોના શ્રાવકો બે કરણ અને ત્રણ યોગથી, છ કોટિએ પ્રત્યાખ્યાન કરે છે. જ્યારે ધર્મસિંહજીની એ માન્યતા હતી કે શ્રાવક મનની અનુમોદના સિવાય બાકીની આઠ કોટિથી પ્રત્યાખ્યાન કરી શકે છે.

સમાચારીના વિષયમા પ્રાય દરેક સંપ્રદાયની પારસ્પરિક તુલનામા અંતર જણાય છે, તેમ દરિયાપુરી અને બીજા સંપ્રદાયો વચ્ચે પણ અંતર છે. આયુષ્ય તૂટવાની માન્યતામા પણ ફેર છે ધર્મસિંહજી મહારાજનુ પ્રચારક્ષેત્ર સમસ્ત ગુજરાત અને સૌરાષ્ટ્રના પ્રદેશોમાં હતુ.

પૂજ્ય શ્રી ધર્મસિંહજી સારણગાંઠના દર્દને લીધે દૂરના પ્રદેશોમા વિહાર કરી શક્યા નથી. વિ. સં. ૧૭૨૮ના આસો સુદિ ૪ને દિવસે ૪૩ વર્ષની ઉમ્મરે તેઓ કાળધર્મ પામ્યા

આજે તેમની ચોવીસમી પાટે પૂજ્ય શ્રી ઈશ્વરલાલજી મહારાજ આચાર્યપદે બિરાજમાન છે. તેઓ શાંત, દાંત, ધીર, ગંભીર અને શાસ્ત્રોના સમર્થ જાણકાર છે.

આ સંપ્રદાયની એક પ્રશસ્તાજનક વિશેષતા એ છે કે તેમાંથી ડાળાં પાંખડાંની માફક એકમાંથી અનેક સંપ્રદાયો નીકળ્યા નથી, આજ સુધી એક જ કડી ચાલતી આવી છે

૧૮–શ્રી લવજીઋષિ

શ્રી લવજીઋષિના પિતાશ્રીનું તેમની બાલ્યાવસ્થામાં અવસાન થયું હતું. આથી તેઓ પોતાની વિધવા માતા ફુલાંબાઇ સાથે તેમના નાના (માના પિતા) વીરજી વોરાને ત્યા રહેતા વીરજી વોરા દશાશ્રીમાળી વણિક હતા. તેમની ધાક ખંભાતના નવાબ સુધી વાગતી. તેમની પાસે લાખોની મિલકત હતી. આ સમયે સુરતમા લોંકાગચ્છની ગાદી ઉપર વજાંગજી યતિ હતા. વીરજી વોરા તેમની પાસે જતા આવતા. બાળક લવજી પણ પોતાની માતા સાથે ત્યા જતો આવતો અને ધર્મક્રિયાના પાઠો સાંભળતો અને મનમા તેનું ચિંતન કરતો

એક વખત વીરજી વોરા, પોતાની પુત્રી અને બાળક લવજી સાથે શ્રી વજાંગજીના દર્શનાર્થે ઉપાશ્રયમા ગયેલા ત્યારે વજાંગજીએ લવજીનો હાથ જોયો અને સામુદ્રિક શાસ્ત્રના આધારે અનુમાન કર્યું કે આ બાળક મોટો થતા મહાપુરુષ થશે.

વીરજી વોરાએ વજાંગજી યતિને આ બાળકને શાસ્ત્રાભ્યાસ કરાવવા કહ્યું. યતિજીએ કહ્યુ કે પહેલાં તો તેને સામાયિક પ્રતિક્રમણ શીખવવા જોઇએ

લવજીએ જવાબ આપ્યો કે "સામાયિક પ્રતિક્રમણ તો મને યાદ જ છે."

યતિજીએ તેમની પરીક્ષા લીધી અને જ્યારે તેમણે જોયુ કે સાત વર્ષના બાળકને સામાયિક પ્રતિક્રમણ આવડે છે, ત્યારે ઘણો હર્ષ થયો અને ભણાવવાનુ સ્વીકાર્યું.

શાસ્ત્રાભ્યાસ કરતા ભગવાન મહાવીરની વૈરાગ્યમયી વાણીથી તેઓ આત્મનિર્વેદના રસમા તરબોળ થવા લાગ્યા. પાર્થિવ વિષયો બહારથી મધુર પણ અંદરથી હળાહળ વિષ ભરેલા કિંપાક ફળ જેવા અને સંસાર ક્ષણભંગુર જણાયો.

તેમણે પોતાની મા તથા માતામહને પોતાની સંસારત્યાગ કરવાની ભાવના જણાવી. તેઓએ તેમને ઘણું સમજાવ્યુ, પણ લવજી પોતાના નિશ્ચયમા દૃઢ રહ્યા. આખરે તેમની જીત થઇ.

વિ સં. ૧૬૯૨ મા મોટા ભવ્ય સમારોહ સાથે તેમણે દીક્ષા ધારણ કરી. ધ્યાનપૂર્વક તેઓ શાસ્ત્રાભ્યાસમા મગ્ન થઇ ગયા. ગુરુદેવ વજાંગજીને પણ લવજીઋષિ પર પ્રગાઢ સ્નેહ હતો. તેઓ મન દઇને અભ્યાસ કરાવતા અને પોતાના મહામુલા અનુભવો સંભળાવતા.

લવજીઋષિને નિરંતર શ્રુતાભ્યાસથી સંયમ પ્રત્યે દૃઢ રુચિ ઉત્પન્ન થઇ. તેઓ સ્વચ્છન્દવાદ યતિવર્ગનુ

શિથિલાચારીપણુ અને સંગ્રહવૃત્તિ પ્રત્યે ગુરુદેવનુ લક્ષ્ય ખેચતા અને શુદ્ધ સયમપાલનની વિનતી કરતા.

ગુરુદેવ તેમની વાત કબૂલ કરતા. પરતુ શુદ્ધ સયમ-પાલન માટે પરપરાનુ પરિવર્તન કરવા અથવા યતિવર્ગથી અલગ થવા તેઓ તૈયાર ન હતા. ખૂબ વિચાર-વિમર્શ બાદ લવજીઋષિએ યતિવર્ગથી અલગ થઇ વિ. સ ૧૬૯૪માં શુદ્ધ દીક્ષા ધારણ કરી. એક જૂની પટ્ટાવલિ મુજબ તેમણે પોતાના બે ગુરુભાઇઓ ભાણુજી અને સુખાજી સાથે સ. ૧૭૦૫મા શુદ્ધ દીક્ષા ધારણ કર્યાનુ જાણવા મળે છે. આમ આ વિષયમા બે મત છે. લવજી ઋષિની મધુરવાણી અને તપના તેજને લીધે તેમનો પ્રચાર વધવા માંડયો. જીવરાજજી મહારાજ અને ધર્મ-સિહજીએ યતિસસ્થા સામે જેહાદ જગાવી હતી, ત્યા આ ત્રીજા લવજીઋષિ તેમા સામેલ થયા. આથી યતિવર્ગ, લવજીઋષિને પોતાના દુશ્મનરૂપે સમજવા લાગ્યો.

યતિવર્ગે રચેલ ષડ્યત્રને કારણે વીરજી વોરા પણ લવજીઋષિ પર ક્રોધે ભરાયા અને ખંભાતના નવાબ પર પત્ર લખી લવજીઋષિને કેદ કરાવ્યા. જેલના ચોકીદારોએ આ સાધુની ધર્મચર્યા અને જીવનની દિવ્યતા જોઇ બેગમ સાહેબને વાત કરી. બેગમસાહેબે નવાબને સમજાવ્યા અને સપૂર્ણ સન્માન સહિત તેમને છોડાવ્યા

આમ યતિવર્ગનુ ષડ્યત્ર નિષ્ફળ જવાથી તેઓએ એક યા બીજી રીતે તેમને દુખ દેવા માડયુ, પરતુ લવજીઋષિ તો મનમા પણ ક્રોધ લાવ્યા સિવાય પોતાના કાર્યમા મગ્ન રહેતા.

અમદાવાદમા એકવાર લવજીઋષિ બિરાજતા હતા ત્યારે યતિવર્ગે કાવતરૂ રચી તેમના ત્રણ શિષ્યોનો ઘાત કરાવ્યો. આ બાબતની ફરિયાદ લવજીઋષિના શ્રાવકોએ દિલ્હીના દરબારમા પહોચાડી. તેની તપાસ થતાં એક મદિરમાથી તેમનાં શબો દાટી દેવામા આવેલાં તે મળી આવ્યાં. આથી કાજીએ તે મદિર તોડી પાડવાનો હુકમ આપ્યો.

આથી લવજીઋષિના પચ્ચીસ શ્રાવકો કે જેઓ ધર્મના ઉપાસકો હતા તેમણે કાજીને વિનતિ કરી કે "ભલે આ લોકો માર્ગ ભૂલ્યા અને ગમે તેવુ ખરાબ કામ કર્યુ છતાં તેઓ અમારા ભાઇઓ જ છે અમે મૂર્તિપૂજાને નથી માનતા પણ તેઓ મૂર્તિપૂજા દ્વારા જિનેશ્વર દેવોનુ જ આરાધન કરે છે. જો મદિર તોડી પાડવામાં આવશે તો તેમને અપાર દુઃખ થશે તેમના દુઃખના નિમિત્ત બનવાનુ અમોને -વીતરાગના ઉપાસકોને- શોભે નહિ, માટે આપ દેરાસર તોડી પાડવાનો હુકમ રદ કરો."

કાજીએ હુકમ રદ કર્યો અને ભવિષ્યમાં સાધુમાર્ગીઓને આવા સકટો સહન ન કરવા પડે તેવો પ્રબધ કરી દિલ્હી પાછા ફર્યા.

આમ શ્રી લવજીઋષિના સમયમા યતિઓની સામે ઊભા રહેવુ એ કેટલુ કઠિન કાર્ય હતુ તે સ્પષ્ટ થાય છે.

છેવટે એક વખત વિહાર કરતાં કરતા, લવજીઋષિ બુરાનપુર પધાર્યા. ત્યાં તેમના પ્રતિસ્પર્ધીઓએ એક ભાવસાર બાઇ મારફત વિષમિશ્રિત મોદક વહોરાવ્યા. આહારપાણી બાદ વિષની પ્રતિક્રિયા થવા માડી. ચકોર લવજીઋષિ સમજી ગયા. તેમણે પોતાના શિષ્યોને ગુજરાત તરફ વિહાર કરવાની આજ્ઞા આપી. ખૂબ શાતિપૂર્વક સમાધિમરણે સ્વર્ગે સચર્યા.

દરિયાપુરી સપ્રદાયની પટ્ટાવલિમા એવો ઉલ્લેખ મળી આવે છે કે પૂજ્યશ્રી ધર્મસિંહજી અને લવજી ઋષિનુ અમદાવાદમા મિલન થયુ હતુ. પણ ૭ કોટિ અને આઠ કોટિ તથા આયુષ્ય તૂટવાની માન્યતા પર બનેના અભિપ્રાય એક ન થઇ શકયા.

પૂજ્ય શ્રી લવજીઋષિની પરપરા ખૂબ વિશાળ છે. આજ પણ સ્થાનકવાસી સમાજમા ખંભાત સઘાડો ગુજરાતમાં, ઋષિ સપ્રદાય માળવા તથા દક્ષિણમા અને પજાબમા પૂજ્ય અમરસિહજી મહારાજનો સપ્રદાય આદિ તેમના અનુપ્રણિત સપ્રદાયો મોટી સખ્યામાં છે,

૧૯-શ્રી ધર્મદાસજી મહારાજ

પૂજ્ય શ્રી ધર્મદાસજી મહારાજનો જન્મ અમદાવાદ પાસેના સરખેજ ગામમા, સઘપતિ જીવણલાલ કાળિદાસની ધર્મપત્ની હીરાબાઇની કુક્ષિએ સ ૧૭૦૧ના ચૈત્ર સુદિ ૧૧ને દિવસે થયો હતો. તેઓ જાતના ભાવસાર હતા સરખેજમા તે વખતે ભાવસારોનાં સાતસો ઘર હતા. આ બધા લોકાગચ્છી હતા

સરખેજમાં તે વખતે લોકાગચ્છના કેશવજી યતિના પક્ષના શ્રી પૂજ્ય તેજસિહજી બિરાજતા હતા તેમની પાસે ધર્મદાસજીએ ધાર્મિક જ્ઞાન શીઘ્ર પ્રાપ્ત કર્યુ.

એક વખત એકલપાત્રિયા પથના એક અગ્રેસર કલ્યાણજીભાઇ પોતાના પથના પ્રચારાર્થે સરખેજ આવ્યા

મળથી જ વૈરાગ્યમય ધર્મદાસજી પર તેમના ઉપદેશનો ઠીક ઠીક પ્રભાવ પડયો.

શાસ્ત્રોમા વર્ણવેલ શુદ્ધ સયમી જીવનના આચારો સાથે સરખાવતાં, યતિઓના શિથિલચારી જીવનથી તેઓને દુખ થતુ. આથી તેઓ યતિઓની પાસે દીક્ષા લેવા ઇચ્છતા નહિ કલ્યાણજીભાઇના ઉપદેશથી પ્રભાવિત થઇ માતપિતાની સમતિ પ્રાપ્ત કરી ધર્મદાસજી તેમના શિષ્ય બન્યા.

એક વર્ષ સુધી તેમના સપર્કમાં રહી શાસ્ત્રાભ્યાસ કર્યો. શાસ્ત્રોનો અભ્યાસ કરતા તેમની એકલપાત્રિયા પથની શ્રદ્ધા હટી ગઇ. તેમણે એ અજ્ઞાનમૂલક માન્યતાનો ત્યાગ કર્યો અને વિ. સં. ૧૭૧૬મા અમદાવાદમાં દિલ્હી દરવાજા બહાર આવેલી પાદશાહની વાડીમા શુદ્ધ દીક્ષા અગીકાર કરી.

એમ કહેવાય છે કે અમદાવાદમા એક વખત તેમની અને પૂજ્ય શ્રી ધર્મસિહજી મુનિ વચ્ચે વિચાર વિનિમય થયો હતો, પરતુ આઠ કોટિ અને આયુષ્ય તૂટવાની માન્યતા ઉપર બને સમત થઇ શકયા નહિ

આવી રીતે લવજીઋષિ સાથે પણ તેમને વાર્તાલાપ થયેલો પરંતુ તેમા પણ સાત મુદ્દાઓ ઉપર સમાધાન ન થઇ શકવાથી તેમણે સ્વતત્ર રીતે દીક્ષા લીધી. છતા ધર્મસિંહજી મુનિ અને ધર્મદાસજી મહારાજ વચ્ચે ખૂબ જ પ્રેમ હતો.

દીક્ષાને પ્રથમ દિવસે તેઓ શહેરમાં ગોચરી કરવા ગયા. અકસ્માત તે એવા ઘેર પહોચ્યા કે જ્યા સાધુ માર્ગીઓના દ્વેષીઓ વસતા હતા. તેમણે મુનિને આહારના સ્થાને રાખ વહોરાવી. પવનને લીધે રાખ પવનમા ઉડી ગઇ અને થોડીક પાત્રમાં રહી. ધર્મદાસજી આ રાખ લઇ શહેરમા બિરાજતા ધર્મસિહજી મુનિ પાસે આવ્યા અને ભિક્ષામા વિભૂતિ પ્રાપ્ત થયાની હકીકત કહી સભળાવી.

ધર્મસિહજી મુનિએ કહ્યુ:–"ધર્મદાસજી! આ રાખનુ ઉડવુ એમ સૂચવે છે કે તેની માફક આપની કીર્તિ ફેલાશે અને આપની પરપરા પણ ખૂબ જ વિકાસ પામશે જેવી રીતે રાખ વિનાનુ કોઇ ઘર હોતુ નથી, તેવી રીતે તમારા ભક્તો સિવાયનાં કોઇ ગામ કે પ્રાત રહેશે નહિ".

આ ઘટના વિ સં. ૧૭૨૧ની છે. તેમના ગુરુદેવનો સ્વર્ગવાસ તેમની દીક્ષા પછી એકવીસ દિવસે માગશર વદિ ૫ ના રોજ થયો હતો. આથી લોકોમા એવો ભ્રમ ફેલાયો કે ધર્મદાસજી સ્વયબોધી છે.

ધર્મદાસજી ઉપર સમસ્ત સપ્રદાયની જવાબદારી હતી અને તે તેમણે ઘણી જ કુશળતાપૂર્વક અદા કરી. ભારતના ઘણા પ્રાંતોમાં વિચરી તેમણે ધર્મનો પ્રચાર કર્યો

તેમના ગુણોથી આકર્ષાઇ તેમના અનુયાયી સઘે સ. ૧૭૨૧ મા માલવાના પાટનગર ઉજ્જૈનમા ભવ્ય સમારોહ વચ્ચે તેમને આચાર્ય પદવીથી વિભૂષિત કર્યા.

પૂ ધર્મદાસજી મહારાજે કચ્છ, કાઠિયાવાડ, વાગડ, ખાનદેશ, પજાબ, મેવાડ, માળવા, હાડૌતી, ઢુઢાર આદિ પ્રાંતોમાં પ્રચાર કર્યો. લગભગ અર્ધ ઉપરાંતના ભારતમાં નિર્ગ્રથ ધર્મનો પ્રચાર કરતા તેઓ ઘૂમી વળ્યા હતા.

ધર્મસિહજી મુનિ અને લવજીઋષિ સાથે તેમને અનુક્રમે એકવીસ અને સાત બોલના અતર હોવા છતા પણ પરસ્પર સ્નેહસબધ ગાઢ હતો. ધર્મસિહજી મહારાજ તો તેમને પોતાના શિષ્યો કરતાં પણ વધુ ચાહતા હતા.

ધર્મદાસજી મહારાજની શિષ્યપરપરા તે વખતના સવ મહાપુરુષો કરત અધિક છે. તેમને ૯૯ શિષ્યો હતા, જેમાના ૩૫ તો સસ્કૃત અને પ્રાકૃતના પડિતો હતા. આ પત્રીસ પડિતોની સાથે તો શિષ્યોની એકેક ટોળી બની ગઇ હતી.

આમ શિષ્યો અને પ્રશિષ્યોના મોટા પરિવારની વ્યવસ્થા તથા શિક્ષણનો પ્રબધ કરવો એ એક વ્યક્તિ માટે મુસ્કેલ હતું. આથી પૂજ્ય ધર્મદાસજી મહારાજે ધારાનગરીમા બધા શિષ્યો પ્રશિષ્યોને એકત્ર કરી સ. ૧૭૭૨ના ચૈત્ર સુદિ ૧૩ ના રોજ બાવીસ સપ્રદાયમાં વહેચી નાખ્યા.

સ્થાનકવાસી જૈન સમાજમા બાવીસ સપ્રદાયનુ નામ ખૂબ પ્રચલિત છે. તે બાવીસ ટોળાને નામે પણ ઓળખાય છે. કારણ કે એક જ ગુરુના પરિવારની બાવીસ અલગ અલગ ટોળીઓ છે. આ બાવીસ સપ્રદાયના નામો નીચે મુજબ છે.

(૧) પૂજ્યશ્રી ધર્મદાસજી મ.નો સંપ્રદાય, (૨) પૂજ્યશ્રી ધનાજી મ.નો સપ્રદાય, (૩) પૂજ્યશ્રી લાલચદજી મ. નો સપ્ર. (૪) પૂજ્યશ્રી મનાજી મ. નો સપ્ર. (૫) પૂજ્યશ્રી મોટા પૃથ્વીરાજજી મ નો સંપ્ર (૬) પૂજ્યશ્રી નાના પૃથ્વીરાજજી મ. નો સપ્ર. (૭) પૂજ્યશ્રી બાલચદજી મ.નો સંપ્ર. (૮) પૂજ્યશ્રી તારાચંદજી મ.નો સંપ્ર (૯) પૂજ્યશ્રી

પ્રેમચંદજી મ.નો સં. (૧૦) પૂજ્યશ્રી ખેતશીજી મ.નો સંપ્ર (૧૧) પૂજ્યશ્રી પદાર્થજી મ.નો સંપ્ર. (૧૨) પૂજ્યશ્રી લોકમલજી મ.નો સંપ્ર (૧૩) પૂજ્યશ્રી ભવાનીદાસજી મ.નો સંપ્ર. (૧૪) પૂજ્યશ્રી મલુકચંદજી મ.નો સંપ્ર (૧૫) પૂજ્યશ્રી પુરુષોત્તમજી મ.નો સંપ્ર. (૧૬) પૂજ્યશ્રી મુકુટરાયજી મ.નો સંપ્ર (૧૭) પૂજ્યશ્રી મનોહરદાસજી મ.નો સંપ્ર. (૧૮) પૂજ્યશ્રી રામચંદ્રજી મ.નો સંપ્ર (૧૯) પૂજ્યશ્રી ગુરુસહાયજી મ.નો સંપ્ર (૨૦) પૂજ્યશ્રી વાઘજી મ.નો સંપ્ર (૨૧) પૂજ્યશ્રી રામરતનજી મ.નો સંપ્ર. (૨૨) પૂજ્યશ્રી મૂળચંદજી મ.નો સંપ્રદાય.

પૂજ્યશ્રી ધર્મદાસજી મહારાજના સ્વર્ગવાસની ઘટના તેમના જીવનકાળથી પણ અધિક ઉજ્જ્વળ અને રોમાંચક છે. તેમના સાંભળવામાં આવ્યું કે ધારા નગરીમાં તેમના એક શિષ્ય મુનિએ સંથારો કર્યો છે, પરંતુ હવે તેના મનના ભાવો કાંઇક ઢીલા પડવાથી અનશનની પ્રતિજ્ઞા તોડવા ઇચ્છે છે. આ વાત સાંભળતા જ તેમણે સંદેશો મોકલ્યો કે, "હું ત્યાં આવું છું. મારા આવતા પહેલાં પ્રતિજ્ઞાભંગ ન કરો." મુનિએ તેમની આજ્ઞા માની લીધી.

પૂજ્યશ્રી ખૂબ ઝડપથી વિહાર કરી સાંજના ધારા-નગરીમાં પહોંચ્યા. ક્ષુધાતુર ઉદર અને તૃષાતુર માનસ-વાળા શિષ્ય-મુનિ અન્નજળ માગી રહ્યા હતા. પૂજ્યશ્રીએ તેમને પ્રતિજ્ઞાનું પાલન કરવા સમજાવ્યા. પરંતુ મુનિની સાહસશક્તિ તૂટી પડી હતી. તેમના પર ઉપદેશની અસર ન થઇ.

પૂજ્યશ્રીએ ઝટપટ પોતાનો બોજો ઉતારી નાખ્યો. સંપ્રદાયની જવાબદારી મૂળચંદજી મહારાજને સોંપી, સંઘને પોતાના મંતવ્યની જાણ કરી તુરત જ ધર્મની જ્યોતને ઝળહળતી રાખવા પોતે શિષ્યના સ્થાને સંથારો આદરી બેસી ગયા

શરીરનો ધર્મ તો વિલય થવાનો જ છે. ધીમે ધીમે શરીર કૃશ થતું ગયું અને એક દિવસ શાંત વાતાવરણમાં વર્ષાનાં ઝીણાં ઝીણા ફોરાં પડતા હતા એવા સમયે દેહત્યાગ કરી તેમનો આત્મા સ્વર્ગે સંચર્યો

સં. ૧૭૬૯ કે ૧૭૭૨માં, ધર્મની કીર્તિની રક્ષાને કાજે તેમણે આમ પોતાના દેહનું બલિદાન દીધું

ધન્ય હો, આવા મહાન આત્માને!!

૨૦ સ્થાનકવાસી સમાજનું પુનરુત્થાન

(ચાર ધર્મસુધારકોના જીવન વિષે આપણે જોઇ ગયા. પાંચમા ધર્મસુધારક શ્રી હરજીઋષિના સંબંધમાં ખાસ વિગતો હજી સુધી પ્રાપ્ત થઇ નથી જૈન પ્રકાશમાં અનેક વખત વિનંતિઓ કરવા છતાં તેમના અનુયાયીઓ કે શિષ્ય પરંપરામાંથી કોઇએ પોતાની પાસેની માહિતી મોકલી નથી.)

પૂજ્યશ્રી ધર્મસિંહજીનો સંપ્રદાય એક અને અવિચ્છિન્ન રહ્યો. તે સિવાય પૂજ્યશ્રી જીવરાજજી મહારાજ, લવજીઋષિ અને ધર્મદાસજી તથા હરજીઋષિની શિષ્ય પરંપરામાંથી ભાગલા પડીને ઘણા સંપ્રદાયો ઊભા થયા. થોડા થોડા વિચારભેદને પરિણામે એકબીજા વર્ગો ઐક્યની ભાવ-નાનું વિલોપન થતું ગયું. "નમો લોએ સવ્વ સાહૂણં"નો પાઠ ભણનાર શ્રાવકોના હૃદયમાં પણ આ મારા ગુરુ અને આ તમારા ગુરુની વૃત્તિ જાગી પડી. આમ સ્થાનક-વાસી સમાજ ઘણો વિસ્તૃત હોવા છતાં બિસ્માર હાલતમાં આવી પડયો।

સને ૧૮૯૪ માં દિગંબર ભાઇઓએ આંતરિક અને સાંપ્રદાયિક દળબંધીઓથી ઉપર ચઢીને એક દિગંબર કોન્ફરન્સની સ્થાપના કરી. સને ૧૯૦૨ માં મૂર્તિપૂજક ભાઇઓએ પણ શ્રી શ્વેતાંબર મૂર્તિપૂજક કોન્ફરન્સનું નિર્માણ કર્યું.

આપણા સમાજમાં ખંભાત સંપ્રદાયના ઉત્સાહી મુનિશ્રી છગનલાલજી મહારાજે સ્થાનકવાસી સમાજના સંગઠન પ્રત્યે ધ્યાન ખેંચ્યું અને જૈન સમાજના સુવિખ્યાત લેખક, નિડર વક્તા, જાણીતા ફિલસૂફ, અને સ્વતંત્ર વિચારક સ્વ. શ્રી. વાડીલાલ મોતીલાલ શાહને શ્રાવક સમાજના એકીકરણની પ્રેરણા આપી.

શ્રાવકો સામાજિક કાર્યોમાં તો એકરૂપ જ હતા પરંતુ ધર્મકાર્યમાં સંપ્રદાયોના નામે વહેંચાઇ ગયેલા હતા. સમયને સમજીને, કલહના પરિણામો નિહાળીને દરેકે એકીકરણની યોજનાને આવકારી અને સને ૧૯૦૬ માં "શ્રી અખિલ ભારતીય શ્વેતાંબર સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સ"ની સ્થાપના થઇ

કોન્ફરન્સનું પહેલું અધિવેશન મોરબીમાં સને ૧૯૦૬મા બીજું, સને ૧૯૦૮મા રતલામમા, ત્રીજું, સને ૧૯૦૯મા અજમેરમા, ચોથું, સને ૧૯૧૦મા જલંદર (પંજાબ)માં, પાંચમું, સને ૧૯૨૩મા સિકંદ્રાબાદમાં, છઠ્ઠું, સને ૧૯૨૪મા

મલકાપુરમા, સાતમુ, મુબઇમાં, આઠમુ, બિકાનેરમાં તથા નવમુ અજમેરમા સને ૧૯૩૩માં ભરાયુ હતુ.

અજમેરના નવમા અધિવેશનની સાથોસાથ સ્થાનકવાસી સમાજના સાધુઓનુ સમેલન પણ મળવાનુ નક્કી થયુ હતુ.

સમ્રાટ ખારવેલ, રાજા સપ્રતિ તથા મથુરા તેમ જ છેલ્લે વલ્લભીપુરના સાધુ સમેલન પછી ૧૪૭૯ વર્ષે વિવિધ સંપ્રદાયોના સાધુઓને એક સાથે, એક જ જગાએ નિહાળવાનો પ્રસગ સદ્ભાગ્યે સ્થાનકવાસી જૈન સમાજને સાપડયો

આ વખતે સ્થાનકવાસી સમાજમા ૩૦ સપ્રદાયો હતા. તેમાથી ૨૬ સંપ્રદાયના પ્રતિનિધિઓ આ સમેલનમા ઉપસ્થિત થયા. આ વખતે મુનિવરોની સખ્યા ૪૬૩ અને સાધ્વીઓની સખ્યા ૧૧૩૨ મળી કુલ ૧૫૯૫ની સખ્યા ગણાતી હતી.

આ સમેલનથી દૂરદૂરના સાધુઓનો પરસ્પર પરિચય થયો અને ઐક્યનાં બીજ રોપાયા.

ત્યાર પછી દસમુ અધિવેશન ઘાટકોપરમા અને અગિયારમુ મદ્રાસમાં મળ્યુ તે વખતે બારમુ અધિવેશન સાદડી (મારવાડ)મા ભરવાનો નિર્ણય લેવાયો.

સાદડી સમેલન, અજમેર સમેલનમાં રોપાયેલ બીજનુ વિકસિત ફળ પુરવાર થયુ.

સમેલનમા ભાગ લેનાર મુનિવરોએ વિચારવિમર્શ બાદ પોતપોતાના સર્વ સપ્રદાયોને એક બૃહદ્ સઘમા વિલીન કરવાનુ સ્વીકાર્યુ.

વૈશાખ સુદિ ૩ અક્ષય તૃતીયાના પરમ પવિત્ર દિને સમેલનનો પ્રારભ થયો અને વૈશાખ સુદિ ૯ ના દિવસે શ્રી વર્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન શ્રમણ સઘના નામ હેઠળ, સઘપ્રવેશપત્ર પર સહીઓ કરી, જૈન ધર્મ દિવાકર પૂજ્યશ્રી આત્મારામજી મહારાજને આચાર્ય તરીકે સ્વીકારી બાવીસ સપ્રદાયોનો એક મહાન એકત્રિત સઘ બન્યો.

વ્યવસ્થા માટે સમિતિઓ નીમવામા આવી. કેટલાય અગત્યના ઠરાવો પસાર થયા. કૉન્ફરન્સે મુનિ સમેલનના સઘળા જ પ્રસ્તાવોનુ ઉત્સાહપૂર્વક અનુમોદન કર્યુ અને સપૂર્ણ સહયોગ આપવાની પ્રતિજ્ઞા કરી મુનિ સમેલનના નિર્દેશાનુસાર શ્રાવક સઘને સુવ્યવસ્થિત બનાવવા તરફ પણ ધ્યાન આપવામા આવ્યુ. સાથે સાથે સાધુ સમેલનના ઠરાવોનો અમલ કરવા માટે એકાવન સભ્યોની એક સચાલક સમિતિની નિમણૂક કરવામા આવી.

૧૭મી ફેબ્રુઆરી ૧૯૫૩ના રોજ મત્રી મુનિયો તથા નિર્ણાયક સમિતિના મુનિવરોનુ સમેલન સોજતમા મળ્યુ. આ સમેલનમા, સાદડી સમેલન વખતે ચાતુર્માસ નજીક હોવાથી પૂરતો વિચારવિમર્શ થઇ શક્યો નહોતો તેથી જે કામો અધૂરા રહેલા તે ફરીથી વિચારવામાં આવ્યાં.

આ વખતે મુનિઓની એકતા, પારસ્પરિક સદ્ભાવ, તથા આત્મસાધના અને સમાજકલ્યાણની ભાવના સર્વ મુનિરાજોના હૃદયમા કામ કરી રહ્યા હતા.

આ સમેલનમાં સચિત્તાચિત્તનો પ્રશ્ન, ધ્વનિવર્ધક યત્રનો પ્રશ્ન વિગેરે પ્રશ્નો ઉપર ખૂબ વિચારવિનિમય થયો, પરતુ કોઇ નિર્ણય લઇ શકાયો નહિ. છેવટે, વિવાદાસ્પદ મુદ્દાઓ ઉપર સાથે મળીને વિચાર કરી શકાય તે માટે ઉપાચાર્ય શ્રી ગણેશીલાલજી મહારાજ, પ્રધાનમત્રી શ્રી આનદઋષિજી મહારાજ, સહમત્રી શ્રી હસ્તીમલજી મહારાજ, કવિરત્ન શ્રી અમરચદજી મહારાજ અને શતિરક્ષક વ્યાખ્યાન વાચસ્પતિ શ્રી મદનલાલજી મહારાજ આ પાચ સતોના એકત્રિત ચાતુર્માસનો નિર્ણય કરવામા આવ્યો. તે માટે જોધપુર સઘની વિનતિ માન્ય કરવામા આવી, વિવાદાસ્પદ વસ્તુઓનો ઉપયોગ આગામી સમેલન સુધી ન કરવાનો આદેશ આપવામા આવ્યો અને ખૂબ જ પ્રેમપૂર્વક સમેલનની સમાપ્તિ થઇ.

૨૧—આગામી સંમેલન સમક્ષના પ્રશ્નો

હવે પછી આ વર્ષે ભીનાસર (બિકાનેર) ખાતે ચૈત્ર માસમા કૉન્ફરન્સનુ અધિવેશન અને સાધુસમેલન મેળવવાનુ નક્કી થયુ છે. આ સમેલન સમક્ષ ખાસ કરીને નીચેના મુદ્દાઓનો નિર્ણય કરવાનુ કપરુ કામ છે.

૧. સચિત્તાચિત્તનો પ્રશ્ન, જેમા કેળાં તેમ જ બરફ વાપરવા અગેનો નિર્ણય
૨. ધ્વનિવર્ધક યત્રના ઉપયોગ સબધી નિર્ણય.
૩. તિથિ સબધી નિર્ણય.
૪. એક જ સંવત્સરી કરવા સબધી નિર્ણય.

આ પ્રશ્નો ઉપર બન્ને પ્રકારની વિચારધારાઓ પ્રવર્તે છે. એક પક્ષ બરફ અને કેળા વાપરવાની તરફેણમાં છે તો બીજો તેની વિરુદ્ધમાં છે.

ધ્વનિવર્ધક યત્રના ઉપયોગની તરફેણમા પ્રચારના

અને નવયુવાન સાધુઓ છે, જ્યારે મારવાડ, મેવાડના અને બીજા કેટલાક વૃદ્ધ સાધુઓ તેના ઉપયોગની વિરૂદ્ધ છે

તિથિપત્રક સબધમા ઘટતી તિથિઓ અને શાસ્ત્રાધાર પરત્વે મતભેદ છે.

આ બધા ય કરતાં સ. ૨૦૧૧ ના ચાતુર્માસ દરમ્યાન લૌકિક પચાગ મુજબ બે ભાદરવા આવતાં સવત્સરીનો પ્રશ્ન ખૂબ જ ચર્ચાયો છે. બૃહદ્ ગુજરાતના સાધુઓ અને મુબઇમા ઘાટકોપર સઘે પ્રથમ ભાદરવામા સંવત્સરી કરી હતી, જ્યારે શ્રમણ સઘમાં પ્રવેશેલા પ્રત્યેક સઘે શ્રમણ સઘના ઠરાવ પ્રમાણે બીજા ભાદરવામાં સંવત્સરી પર્વ મનાવ્યુ હતુ આ અગે સ્થાનકવાસી જૈન સમાજમા ઘણી ચર્ચાઓ ચાલી વર્તમાનપત્રોમા પણ ઘણુ લખાઇ ગયુ કદાચ બૃહદ્ ગુજરાતના મુનિવરો શ્રમણ સઘમા જોડાવાનો નિર્ણય કરતા પહેલાં આજ પ્રશ્ન આગળ ધરીને ખુલાસો માગશે.

છતા, એમ ચોક્કસ માની શકાય છે કે દરેક જણ ધ્યેયની ઉચ્ચતાને સમજી, શાસ્ત્રને અનુસરી, સમાજ અને ધર્મના હિતને લક્ષ્યમાં રાખી, દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ અને ભાવને અનુસરીને વર્તન કરશે. એમ થશે તો એ દિવસ દૂર નથી કે જ્યારે સ્થાનકવાસી જૈન માત્ર એક જ શ્રમણ સઘ અને બૃહદ્ શ્રાવક સઘમા એકત્રિત થઇ, 'ભગવાન મહાવીરની જય' બોલતા હોય.

પરિશિષ્ટ ૧

શ્રી લોંકાશાહથી પાંચ ધર્મ–સુધારકો સુધીની પરંપરા

૧. શ્રી લોકાશાહ, ૨. ભાણજી, ૩. ભિદાજી, ૪. નુનાજી, ૫ ભીમાજી, ૬. જગમાલજી, ૭. સરવોજી, ૮. શ્રી રૂપચંદજી, ૯. શ્રી. જીવાજી.

શ્રી જીવાજી મહારાજના ત્રણ શિષ્યો હતા.

૧. જગાજી મહારાજ, ૨ મોટાવરસિહજી, ૩. કુંવરજી ઋષિ.

(૧) જગાજી મહારાજના શિષ્ય જીવરાજજી થયા તેમણે વિ. સં. ૧૬૦૮માં ક્રિયોદ્ધાર કર્યો.

(૨) મોટાવરસિહજી પછી ૧. નાના વરસિહજી, ૨. યશવત ઋષિ, ૩. રૂપસિહજી, ૪. દામોદરજી, ૫ કર્મસિંહજી, ૬ કેશવજી, ૭. તેજસિહજી થયા.

અ કેશવજી પક્ષના યતિઓમાથી- વજાગજીની પાટે શ્રી લવજીઋષિ વિ. સ. ૧૬૯૨–૧૭૦૪માં મહાવીરની ૭૭મી પાટે આવ્યા.

ब કેશવજીના શિષ્ય તેજસિહજીના સમયમાં એકલ-પાત્રિયા શ્રાવક કલ્યાણજીના શિષ્ય ધર્મદાસજી થયા

क કેશવજી યતિની પરપરામા શ્રી હરજીઋષિ થયા. તેમણે સ. ૧૭૮૫મા ક્રિયોદ્ધાર કર્યો

(૩) કુવરજીઋષિ પછી ૧. શ્રી મલ્લજી, ૨. શ્રી રત્નસિહજી, ૩. કેશવજી, ૪. શિવજીઋષિ થયા.

અ. શિવજીઋષિના બે શિષ્યો થયા: ૧. સઘરાજજી તેમની પાટે ૨. સુખમલજી, ૩. ભાગ્યચદજી, ૪ ૫. માણેક્યચદજી, ૬. મૂલચદજી, ૭. વાલચદજી, જગતચદજી, ૮. રત્નચદજી, ૯. નૃપચદજી, (આ યતિપરંપરા ચાલી તેમની ગાદી બાલાપુરમાં છે)

ब. શિવજીઋષિના બીજા શિષ્ય ધર્મસિહજી મુનિ થયા. તેમણે સ. ૧૬૮૫મા શુદ્ધ સાધુધર્મ અગીકાર કરી દરિયાપુરી સપ્રદાય ચલાવ્યો.

પરિશિષ્ટ ૨

શ્રી જીવરાજજી મહારાજની પરંપરા

શ્રી જીવરાજજી મહારાજના બે શિષ્યો ૧. ધનજી, ૨. લાલચદજી થયા.

૧. આચાર્ય ધનજી પછી વિષ્ણુજી, મનજી ઋષિ અને નાથુરામજી થયા. નાથુરામજી મહારાજના બે શિષ્યો: (i) લક્ષ્મીચદજી, (ii) રાયચદજી.

(i) લક્ષ્મીચદજીના શિષ્ય છત્રમલજીના બે શિષ્યો રાજારામાચાર્ય અને ઉત્તમાચદાચાર્ય.

રાજારામાચાર્યની પાટે રામલાલજી અને ફકીરચદજી મહારાજ થયા તેમના શિષ્ય ફૂલચદજી મહારાજ વિદ્યમાન છે. ઉત્તમચદાચાર્યની પછી રત્નચદજી અને ભજ્જુલાલજી થયા. તેમના શિષ્ય મોતીલાલજી.

(ii) રાયચદજીના શિષ્ય રતિરામજીના શિષ્ય નદલાલજી મહારાજને ત્રણ શિષ્યો થયા

જોટીરામજી, કીશનચદજી અને રૂપચદજી

જોટીરામજી પછી ચેનરામજી અને ઘાસીલાલજી થયા ઘાસીલાલજીના ત્રણ શિષ્યો ગોવિદરામજી, જીવણરામજી અને કુદનલાલજી. તે પૈકિ ગોવિદરામજીના શિષ્ય છોટેલાલજી વિદ્યમાન છે

ફકીરચંદજી પછી અનુક્રમે બિહારીલાલજી, મહેશદાસજી, વૃષભાણજી અને સાહિરામજી આવે છે.

૨. પૂજ્યશ્રી લાલચંદજી મહારાજના ચાર શિષ્યો થયા. (૧) અમરસિંહજી, (૨) શીતલદાસજી, (૩) ગંગારામજી, (૪) દીપચંદજી.

(૧) અમરસિંહજી મહારાજનો પાટાનુક્રમ આ પ્રમાણે છે: ૨. તુલસીદાસજી, ૩. સુજાનમલજી, ૪ જિતમલજી, ૫. જ્ઞાનમલજી, ૬. પૂનમચંદજી, ૭. જ્યેષ્ટમલજી, ૮. નેનમલજી, ૯. દયાલુચંદજી, ૧૦. તારાચંદજી.

(૨) શીતલદાસજી મહારાજનો પાટાનુક્રમ. ૨ દેવીચંદજી, ૩. હીરાચંદજી, ૪. લક્ષ્મીચંદજી, ૫. ભેરૂદાસજી, ૬. ઉદેચંદજી, ૭. પન્નાલાલજી, ૮. નેમચંદજી, ૯ વેણીચંદજી, ૧૦. પ્રતાપચંદજી, ૧૧ ઝ્ઝોડીમલજી.

(૩) ગંગારામજી મહારાજનો પાટાનુક્રમ ૨. જીવણરામજી, ૩. શ્રીચંદજી, ૪. જવાહરલાલજી, ૫. માનકચંદજી, ૬. પન્નાલાલજી, ૭ ચંદનમુનિ.

(૪) દીપચંદજી મહારાજના બે શિષ્યો (I) સ્વામીદાસજી, (II) મલુકચંદજી.

(I) સ્વામીદાસજી મહારાજની પરંપરા આ પ્રમાણે: ૨. ઉગ્રસેનજી, ૩. ઘાસીરામજી, ૪ કનીરામજી, ૫. ઋષિરાયજી, ૬. રંગલાલજી, ૭. ફત્તેહચંદજી.

(II) મલુકચંદજી મહારાજના શિષ્ય નાનકરામજી થયા. તેમના બે શિષ્યો વીરભાણજી થયા.

વીરભાણજી પછી અનુક્રમે લક્ષ્મણદાસજી, મગનમલજી, ગજમલજી. ધુલમલજી અને પન્નાલાલજી આવે છે.

પછી શ્રી સુખલાલજી, હરખચંદજી, દયાળચંદજી, લક્ષ્મીચંદજી અને હગામીલાલજી અનુક્રમે થયા છે

<u>પરિશિષ્ટ ૩</u>

પૂજ્યશ્રી ધર્મસિંહજી મુનિની પરંપરા

પૂજ્યશ્રી ધર્મસિંહજી મુનિની પાટે (૨) શ્રી સોમજી ઋષિ, (૩) મેઘજી ઋષિ, (૪) દ્વારકાદાસજી, (૫) મોરારજી, (૬) નાથાજી, (૭) જયચંદજી, (૮) મોરારજી, (૯) નાથાજી, (૧૦) જીવણજી, (૧૧) પ્રાગજી ઋષિ, (૧૨) શંકર ઋષિ, (૧૩) શ્રી ખુશાલજી, (૧૪) શ્રી હર્ષસિંહજી, (૧૫) શ્રી મોરારજી, (૧૬) શ્રી ઝવેર ઋષિ, (૧૭) શ્રી પૂંજાજી (૧૮) શ્રી નાના ભગવાનજી, (૧૯) શ્રી મલુકચંદજી, (૨૦) શ્રી હીરાચંદજી, (૨૧) શ્રી રઘુનાથજી, (૨૨) શ્રી હાથીજી, (૨૩) શ્રી ઉત્તમચંદજી, (૨૪) પૂજ્યશ્રી ઇશ્વરલાલજી મહારાજ વિદ્યમાન છે.

આ સંપ્રદાય દરિયાપુરી આઠ કોટિ સંપ્રદાયના નામે ઓળખાય છે તેમા એક જ પાટાનુક્રમ ચાલ્યો આવે છે.

<u>પરિશિષ્ટ ૪</u>

પૂજ્યશ્રી લવજી ઋષિની પરંપરા

પૂજ્યશ્રી લવજી ઋષિ પછી તેમના શિષ્ય સોમજી ઋષિ પાટે આવ્યા. તેમના બે શિષ્યો. (૧) કાનજી ઋષિ; (૨) હરદાસજી ઋષિ થયા.

(૧) કાનજી ઋષિના શિષ્ય ત્રિલોક ઋષિના બે શિષ્યો થયા: ૧ કાલા ઋષિ, ૨. મંગળા ઋષિ.

૧ કાલા ઋષિ દક્ષિણમા વિચર્યા. તેમનો સંપ્રદાય ઋષિ સંપ્રદાય કહેવાય છે. તેમના પાટાનુક્રમમા ૨. બક્ષુ ઋષિ, ૩. ધન્ના ઋષિ, ૪ ખુબાજી ઋષિ, ૫ ચેના ઋષિ, ૬ અમોલખ ઋષિ, ૭. દેવજી ઋષિ, ૮. શ્રી આનંદ ઋષિજી, (જેઓ શ્રી વર્દ્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન શ્રમણ સંઘના પ્રધાનમંત્રી પદે બિરાજે છે)

૨. મંગળા ઋષિ ગુજરાતમાં ખંભાત તરફ વિચર્યા તેથી તેમનો સંપ્રદાય ખંભાત સંપ્રદાયના નામે પ્રસિદ્ધ છે. તેમનો પાટાનુક્રમ આ પ્રમાણે ચાલ્યો છે. ૨. રણછોડજી, ૩. નાથાજી, ૪ બેચરદાસજી, ૫ મોટા માણેકચંદજી, ૬. હરખચંદજી, ૭ ભાણજી, ૮. ગિરધરલાલજી ૯. છગનલાલજી, ૧૦ ગુલાબચંદજી, (આ સંપ્રદાયમાં હાલ બે સાધુ અને માત્ર સાધ્વીઓ છે.)

(૨) સોમજી ઋષિના બીજા શિષ્ય હરદાસજી ઋષિની પાટે ૨. વૃન્દાવનજી, ૩ ભવાનીદાસજી, ૪. મલુકચંદજી, ૫. મહાસિંહજી, ૬. ખુશાલસિંહજી. ૭ છજમલજી, ૮. રામલાલજી થયા. રામલાલજીના શિષ્ય અમરસિંહજી મહારાજનો પંજાબ સંપ્રદાય બન્યો. તેમા અનુક્રમે મોતીરામજી, સોહનલાલજી, કાશીરામજી અને પૂજ્યશ્રી આત્મારામજી મહારાજ (જેઓ અત્યારે શ્રી વર્દ્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન શ્રમણસંઘના પ્રધાનાચાર્ય પદે બિરાજે છે.)

શ્રી રામલાલજી મહારાજના બીજા શિષ્ય રામરતનજી મહારાજ માળવા પ્રાંતમાં વિચર્યા. તેમનો (માળવા સંપ્રદાય) રામરતનજી મહારાજનો સંપ્રદાય કહેવાય છે.

પરિશિષ્ટ ૫

પૂજ્યશ્રી ધર્મદાસજી મહારાજની પરંપરા

પૂજ્યશ્રી ધર્મદાસજી મહારાજના ૯૯ શિષ્યો હતા. તેમાંથી પહેલા શિષ્ય મૂળચંદજી મહારાજ કાઠિયાવાડમાં વિચર્યા. ૨. ધનાજી, ૩. નાના પૃથ્વીરાજજી, ૪. મનોહરદાસજી, ૫. રામચંદ્રજી. આ પાંચના સંપ્રદાયો નીચે મુજબ વિકાસ પામ્યા :

૧ મૂળચંદ મહારાજને સાત શિષ્યો થયા.

૧. પચાણજી, ૨. ગુલાબચંદજી, ૩. વણારશીજી, ૪. ઇચ્છાજી, ૫. વિઠ્ઠલજી, ૬. વનાજી, ૭. ઇંદ્રજી.

૧. પચાણજી મહારાજના બે શિષ્યો (I) ઇચ્છાજી મ. અને (II) રતનશી સ્વામી થયા.

(I) ઇચ્છાજી સ્વામીની પાટે ૨. હીરાજી સ્વામી, ૩ નાના કાનજી, મ ૪. અજરામરજી સ્વામી, ૫. દેવરાજજી, ૬. ભાણજી, ૭ કરમશી, ૮. અવિચલજી સ્વામી થયા. આ સંપ્રદાય લીંબડી સંપ્રદાયના નામે પ્રખ્યાત છે

અવિચળજી સ્વામીના શિષ્ય હરચંદજી સ્વામીનો સંપ્રદાય લીંબડી મોટો સંપ્રદાય બન્યો. તેનો પાટાનુક્રમ : ૧. હરચંદજી, ૨. દેવજી, ૩. ગોવિંદજી, ૪. કાનજી, ૫. નથુજી, ૬. દીપચંદજી, ૭. લાધાજી, ૮. મેઘરાજજી, ૯. દેવચંદજી, ૧૦. લવજી, ૧૧. ગુલાબચંદજી, ૨. ધનજી સ્વામી, અવિચળજી સ્વામીના બીજા શિષ્ય હીમચંદજીથી લીમડી નાનો સંપ્રદાય ચાલ્યો તેમા : ૧. હીમચંદજી, ૨. ગોપાલજી, ૩. મોહનલાલજી, ૪. મણીલાલજી અને ૫. કેશવલાલજી અનુક્રમે પાટે આવ્યા.

(II) પચાણજી મહારાજના બીજા શિષ્ય રતનશી સ્વામીનો પાટાનુક્રમ આ પ્રમાણે છે. ૧. રતનશી સ્વામી, (૨) ડુંગરશી સ્વામી, ૩. રવજી, ૪. મેઘરાજજી, ૫. ડાહ્યાજી, ૬. નેણશીજી, ૭. આંબાજી, ૮. નાના નેણશીજી, ૯. દેવજી સ્વામી–દેવજી સ્વામીના શિષ્ય, જેચંદજી સ્વામીના શિષ્ય પ્રાણલાલજી મ.

(अ) દેવજી સ્વામીના શિષ્ય જાદવજી સ્વામીના શિષ્ય પુરુષોતમજી મ. (ब) બન્ને વિદ્યમાન છે. આ સંપ્રદાય ગોંડલ સંપ્રદાયના નામે પ્રસિદ્ધ છે.

૨. ગુલાબચંદજી મહારાજની પરંપરા આ પ્રમાણે છે.

૧. ગુલાબચંદજી ૨ વાલજી ૩. નાગજી મ. મોટા ૪. મુલજી મ. ૫ દેવચંદજી મ. ૬ મેઘરાજજી મ. ૭. પૂ. સંઘજી મ. આ સંપ્રદાય સાયલા સંપ્રદાય કહેવાય છે.

૩. વણારશીજી મ.ના શિષ્ય જેસંગજી મ. થયા. આ સંપ્રદાય ચુડા સંપ્રદાય કહેવાયો આજે તેમાં કોઇ સાધુ નથી

૪. ઇચ્છાજી મહારાજના શિષ્ય રામજી મ થયા તેમનો સંપ્રદાય ઉદેપુર સંપ્રદાય કહેવાતો. તેમાં આજે કોઇ સાધુ નથી.

૫. વિઠ્ઠલજી મહારાજથી ધ્રાંગધ્રા સંપ્રદાય ચાલ્યો. તેમા અનુક્રમે ૧. વિઠ્ઠલજી ૨. ભૂખણજી ૩. વશરામજી થયા.

વશરામજીના શિષ્ય જસાજી મહારાજ બોટાદ તરફ આવ્યા અને તેમનો સંપ્રદાય, બોટાદ સંપ્રદાય કહેવાયો તેનો પાટાનુક્રમ આ પ્રમાણે છે જસાજી મ. અમરચંદજી મ; માણેકચંદજી મ;

૬ વનાજી મહારાજનો સંપ્રદાય એ બરવાળા સંપ્રદાય. તેમાં આ પ્રમાણે પાટોની પરંપરા ચાલી છે. ૧. વનાજી ૨. પુરુષોત્તમજી ૩. વણારશીજી ૪. કાનજી મ. ૫. રામરખજી ૬. ચુનીલાલજી ૭. ઉમેદચંદજી ૮ મોહનલાલજી.

૭. ઇંદ્રજી મહારાજ કચ્છમાં વિચર્યા તેમની પરંપરા આ પ્રમાણે ચાલી ૧. ઇંદ્રજી ૨. ભગવાનજી ૩. સોમચંદજી ૪. કરસનજી ૫. દેવકરણજી ૬. ડાહ્યાજી. ડાહ્યાજી મહારાજના બે શિષ્યો (i) દેવજી મ. અને (ii) જસરાજજી મ. ના જુદા સંપ્રદાયો ચાલ્યા.

(i) દેવજી મ. ની પરંપરા કચ્છ આઠકોટિ મોટી પક્ષ છે તેમાં અનુક્રમે ૧. દેવજી ૨. [illegible]જી ૩. કેશવજી ૪ કરમચંદજી ૫. દેવરાજજી ૬. મોણશીજી ૭. કરમશીજી ૮. વ્રજપાલજી ૯. કાનજી ૧૦. નાગજી ૧૧. કૃષ્ણજી મ. (આજે વિદ્યમાન છે.)

(ii) જસરાજજી મ. ની પરંપરા કચ્છ આઠકોટિ નાની પક્ષને નામે ઓળખાય છે. તેમા અનુક્રમે આ પ્રમાણે પાટો આવે છે. ૧. જસરાજજી, ૨. નથુજી, ૩. હંસરાજજી, ૪. વ્રજપાલજી, ૫. ડુંગરશીજી, ૬. શામજી, ૭. લાલજીસ્વામી (આજે વિદ્યમાન છે)

(૨) પૂજ્ય ધર્મદાસજી મહારાજના બીજા શિષ્ય ધનાજી મહારાજના શિષ્ય ભુદરજી મહારાજને ત્રણ શિષ્યો હતા ૧. જયમલજી, ૨. રઘુનાથજી, ૩. કુશલાજી.

૧. જયમલજી મહારાજની પાટ પરંપરામા. ૨. રામચંદ્રજી ૩. આસકરણજી ૪. સબળદાસજી અને ૫. હિરાચંદજી આવે છે આ સંપ્રદાય જયમલજી મહારાજના સંપ્રદાયને નામે ઓળખાય છે.

૨ રઘુનાથજી મહારાજના સમયમાં તેમના એક શિષ્ય ભીખણજી થયા. તેમણે ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા કરવાથી પૂજ્ય રઘુનાથજી મહારાજે સં. ૧૮૧૫ ના ચૈત્ર વદ ૯ને શુક્રવારના રોજ સંપ્રદાય બહાર મૂકયા. આથી ભીખણજીએ સં ૧૮૧૭ ના અસાડ સુદ ૧૫ ના રોજ તેર સાધુઓ અને તેર શ્રાવકોનો સહકાર લઇ દયા—દાન વિરોધી તેરાપંથની સ્થાપના કરી. એ સંપ્રદાય હજુ પણ ચાલે છે

રઘુનાથજી મહારાજની પાટે ૨. ટોડરમલજી ૩. દીપચંદજી અને ૪ ભેરૂદાસજી થયા ભેરૂદાસજીના બે શિષ્યો

(I) ખેતશીજી (II) ચોથમલજી બન્નેના જુદા જુદા સંપ્રદાયો ચાલ્યા,

(i) ખેતશીજીની પાટે અનુક્રમે ૨. ભીખણજી ૩. ફોજમલજી અને ૪, સંતોકચંદજી આવ્યા.

(ii) ચોથમલજીની પાટે ૨. સંતોકચંદજી ૩. રામકીશનજી ૪. ઉદેચંદજી ૫. શાર્દુલસિંહજી આવ્યા.

૩. કુશલાજી મહારાજના શિષ્ય (I) ગુમાનચંદજી અને (ii) રામચંદ્રજીના પણ જુદા જુદા સંપ્રદાયો ચાલ્યા.

(i) ગુમાનચંદજીના પાટાનુક્રમમા ૨. દુર્ગાદાસજી ૩. રત્નચંદ્રજી ૪. કજોડીમલજી ૫. વિનયચંદજી ૬. શોભાગચંદજી ૭ હસ્તિમલજી આવ્યા.

(ii) શ્રી રામચંદ્રજીની પાટે અનુક્રમે ૨. ચીમનીરામજી ૩. નરોત્તમજી ૪. નંગારામજી ૫ જીવણજી ૬. જ્ઞાનચંદ્રજી ૭. સમર્થમલજી. આ સંપ્રદાય સમર્થમલજી મહારાજનો સંપ્રદાય કહેવાય છે.

(૩) પૂજ્ય ધર્મદાસજી મહારાજના ત્રીજા શિષ્ય નાના પૃથ્વીરાજજીની પરંપરા આ પ્રમાણે છે. ૨. દુર્ગાદાસજી ૩. હરિદાસજી ૪. ગંગારામજી ૫. રામચંદજી ૬. નારાયણદાસજી ૭. પુરામલજી ૮. રોડીદાસજી ૯ નરસીદાસજી ૧૦ એકલિંગદાસજી ૧૧ મોતીલાલજી.

(૪) પૂજ્ય ધર્મદાસજી મહારાજના ૪થા શિષ્ય મનોહરદાસજીની પાટો આપ્રમાણે ચાલી છે: ૨ ભાગચંદજી ૩. શીલારામજી ૪. રામદયાળજી ૫. નુનકરણજી ૬. રામસુખદાસજી ૭. ખ્યાલીરામજી ૮. મંગળસેનજી ૯ મોતીરામજી ૧૦ પૃથ્વીચંદજી

(૫) પૂજ્ય ધર્મદાસજી મહારાજના પાચમા શિષ્ય રામચંદ્રજીના સંપ્રદાયની પટ્ટાવલિ આ પ્રમાણે છે ૨ માનકચંદજી ૩. જસરાજજી ૪. પૃથ્વીચંદજી ૫. મોટા અમરચંદજી ૬. નાના અમરચંદજી ૭. કેશવજી ૮ મોકમસિંહજી ૯. નંદલાલજી ૧૦ ચંપાલાલજી ૧૧ માધવમુનિ ૧૨. તારાચંદજી

મહારાષ્ટ્ર મંત્રી શ્રી કિશનલાલજી મહારાજ શ્રી નંદલાલજી મહારાજના શિષ્ય છે અને પં. વક્તા શ્રી સૌભાગ્યમલજી મહારાજ શ્રી કિશનલાલજી મ.ના શિષ્ય છે.

પૂજ્ય ધર્મદાસજી મહારાજે પોતાના મોટા શિષ્ય સમુદાયને વ્યવસ્થિત રાખવા માટે બધા શિષ્યો અને પ્રશિષ્યોને બોલાવી સં ૧૭૭૨ ના ચૈત્ર સુદ ૧૩ ના દિવસે બાવીસ સંપ્રદાયોમા વહેચી નાખ્યા તે બાવીસ સંપ્રદાયનાં નામ નીચે મુજબ છે.

૧	પૂજ્યશ્રી	ધર્મદાસજી	મહારાજનો	સંપ્ર.
૨	,,	ધનાજી	,,	,,
૩	,,	લાલચંદજી	,,	,,
૪	,,	મનાજી	,,	,,
૫	,,	મોટા પૃથ્વીરાજજી	,,	,,
૬	,,	નાના પૃથ્વીરાજજી	,,	,,
૭	,,	બાલચંદજી	,,	,,
૮	,,	તારાચંદજી	,,	,,
૯	,,	પ્રેમચંદજી	,,	,,
૧૦	,,	ખેતશીજી	,,	,,
૧૧	,,	પદાર્થજી	,,	,,

૧૨	પૂજ્યશ્રી	લોકમલજી	મહારાજનો	સંપ્ર.
૧૩	,,	ભવાનીદાસજી	,,	,,
૧૪	,,	મલુકચંદજી	,,	,,
૧૫	,,	પુરુષોત્તમજી	,,	,,
૧૬	,,	મુકુટરાયજી	,,	,,
૧૭	,,	મનોહરદાસજી	,,	,,
૧૮	,,	સમચંદ્રજી	,,	,,
૧૯	,,	ગુરૂસહાયજી	,,	,,
૨૦	,,	વાઘજી	,,	,,
૨૧	,,	રામરતનજી	,,	,,
૨૨	,,	મુળચંદજી	,,	,,

<u>પરિશિષ્ટ ૬</u>

પૂ. શ્રી. હરજી ઋષિની પરંપરા

કેશવજી પક્ષના યતિઓની પરંપરામાથી સં. ૧૭૮૫માં પાંચમા ધર્મસુધારક હરજી ઋષિ થયા. તેમની પાટે ૨. ગોદાજી ઋષિ અને ૩. ફરશુરામજી મહારાજ થયા.

ફરશુરામજી મહારાજના શિષ્યો (૧) લોકમલજી અને (૨) ખેતશીજીના જુદા જુદા સંપ્રદાયો ચાલ્યા.

૧. લોકમલજી મહારાજની પાટે ૨. મયારામજી અને ૩. દોલતરામજી થયા.

(૧) દોલતરામજીના શિષ્ય (i) ગોવિંદરામજી અને (ii) લાલચંદજી.

(i) ગોવિંદરામજીની પાટ પરંપરા આ પ્રમાણે છે. ૨. ફત્તેહચંદજી ૩. જ્ઞાનચંદ્રજી ૪. છગનલાલજી ૫ રોડમલજી ૬ પ્રેમરાજજી.

(ii) લાલચંદજીની પાટે ૨. શીવલાલજી ૩. ઉદેસાગરજી ૪. ચોથમલજી મહારાજ થયા.

શ્રી ચોથમલજી મહારાજ પછી આ સંપ્રદાયના બે ભાગ પડયા.

પહેલામાં પૂ. શ્રી લાલજી ૨. જવાહરલાલજી અને ૩. પૂ. શ્રી ગણેશીલાલજી (જે આજે શ્રી વર્દ્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન શ્રમણ સંઘના ઉપાચાર્ય છે.)

બીજામાં પૂ. શ્રી મન્નાલાલજી,–નંદલાલજી, ખૂમચંદજી અને સહસ્રમલજી મહારાજ અનુક્રમે પાટે આવ્યા શ્રમણ સંઘની એકતા માટે સર્વ પ્રથમ પૂજ્ય પદ્નિો ત્યાગ કરનાર પૂ. શ્રી સહસ્રમલજી મહારાજ છે.

(૨) ખેતશીજીનો પાટાનુક્રમ આ પ્રમાણે છે ૨. ખેમશીજી, ૩. ફત્તેહચંદજી, ૪. અનોપચંદજી, ૫. દેવજી મ. ૬. ચંપાલાલજી ૭. ચુનીલાલજી, ૮. કીશનલાલજી, ૯. બળદેવજી, ૧૦. હરખચંદજી, ૧૧ માંગીલાલજી.

પટ્ટાવલિ સમુચ્ચય

સ્થાનકવાસી ધર્મના સ્થંભ સમા પાંચ, ધર્મક્રાંતિના પ્રણેતાઓનો લોંકાશાહ સુધીનો સંબંધ અને એ પાંચેના શિષ્ય સમુદાયથી વિકસેલા સંપ્રદાયોની હકીકત આપણે આગળ જોઇ ગયા.

હવે ભગવાન મહાવીરથી લોંકાશાહ સુધીની પરંપરા જાણવી જરૂરી છે

ભગવાન મહાવીરની પાટે (૧) સુધર્મા સ્વામી વીર સં. ૧ (૨) જંબુસ્વામી વીર સં. ૧૨ (૩) પ્રભવ સ્વામી (૪) શય્યંભવ સ્વામી વી. સં. ૭૫ (૫) યશોભદ્રસ્વામી વી. સં. ૨૦ (૬) સંભૂતિ વિજય વી. સં. ૧૪૮ (૭) ભદ્રબાહુ સ્વામી વી. સં. ૧૫૬ (૮) સ્થુલિભદ્ર વી સં. ૧૭૦ (૯) આર્ય મહાગીરી વી. સં. ૨૧૫ (૧૦) આર્ય સુહસ્તિ અથવા બાહુલ સ્વામી વી. સં. ૨૪૫ (૧૧) સાઇણુ સ્વામી અથવા સુવન સ્વામી અથવા સુપ્રતિબદ્ધ સ્વામી વી. સં. ૨૯૧ (૧૨) ઇંદ્રદિન અથવા વીર સ્વામી વી. સં. ૩૩૯ (૧૩) સ્કંદિલાચાર્ય અથવા આર્યદિન સ્વામી વી. સં. ૪૨૧ (૧૪) વૈરસ્વામી અથવા જીતધર સ્વામી અથવા આર્ય સમુદ્ર સ્વામી વી. સં ૪૭૬મા (૧૫) વજ્રસેન અથવા આર્ય મંગુ સ્વામી વી. સં. ૫૮૪મા (૧૬) ભદ્રગુપ્ત અથવા આર્યરોહ અથવા નંદલા સ્વામી વી. સં. ૬૯૯ માં (૧૭) વયર સ્વામી અથવા ફાલ્ગુણી મિત્ર અથવા નાગહસ્ત સ્વામી (૧૮) આર્યરક્ષિત અથવા ધરણીધર અથવા રેવત સ્વામી (૧૯) નંદિલ સ્વામી અથવા શિવભૂતિ અથવા સિંહગણ સ્વામી (૨૦) આર્ય નાગહસ્તી અથવા આર્યભદ્ર અથવા થંડલાચાર્ય (૨૧) શ્રી રેવતી આચાર્ય અથવા હેમવંત સ્વામી અથવા આર્ય નક્ષત્ર સ્વામી (૨૨) શ્રી નાગજીન સ્વામી અથવા મિહાચાર્ય વી. સં. ૮૨૦ (૨૩) શ્રી ગોવિંદસ્વામી અથવા સ્કંદિલાચાર્ય અથવા નાગાચાર્ય (૨૪) શ્રી નાગજીતાચાર્ય અથવા ભૂતદિન સ્વામી (૨૫) શ્રી ગોવિંદાચાર્ય અથવા શ્રી લોહગણ સ્વામી (૨૬) શ્રી ભૂતદિનાચાર્ય અથવા દુપગણી (૨૭) શ્રી દેવર્દ્ધિ ગણી ક્ષમાશ્રમણ

આ સત્તાવીસ પાટોના નામોમાં જુદી જુદી પટ્ટાવ

લિઓમા લગભગ એકસરખા નામ આવે છે. માત્ર ક્રમ આઘોપાછો હોય છે. તે સિવાય સત્તાવીસમી પાટે શ્રી દેવર્દ્ધિ ગણી ક્ષમા શ્રમણનુ નામ બધામા મળે છે.

અઠાવીસમી પાટથી પંજાબની પટ્ટાવલિ મુજબ નીચે મુજબ પાટો ચાલી છે:

(૨૮) શ્રી વીરભદ્ર સ્વામી (૨૯) શ્રી શંકરભદ્ર સ્વામી (૩૦) શ્રી જસભદ્ર સ્વામી (૩૧) શ્રી વીરસેન સ્વામી (૩૨) શ્રી વીરગ્રામસેન સ્વામી (૩૩) શ્રી જિનસેન સ્વામી (૩૪) હરીસેન સ્વામી (૩૫) શ્રી જયસેન સ્વામી (૩૬) શ્રી જગમાલ સ્વામી (૩૭) શ્રી દેવર્ષિજી (૩૮) શ્રી ભીમ ઋષિજી (૩૯) શ્રી કર્મજી (૪૦) શ્રી રાજર્ષિજી (૪૧) દેવસેનજી (૪૨) શ્રી શંકરસેનજી (૪૩) શ્રી લક્ષ્મીલભજી (૪૪) શ્રી રામર્ષિજી (૪૫) શ્રી પદ્મસૂરિજી (૪૬) શ્રી હરિસેનજી (૪૭) શ્રી કુશળદત્તજી (૪૮) શ્રી જીવનઋષિજી (૪૯) શ્રી શ્રી જયસેનજી (૫૦) શ્રી વિજયઋષિજી (૫૧) શ્રી દેવર્ષિજી (૫૨) શ્રી સુરસેનજી (૫૩) શ્રી મહાસુરસેનજી (૫૪) શ્રી મહાસેનજી (૫૫) શ્રી જયરાજજી (૫૬) શ્રી ગજસેનજી (૫૭) શ્રી મિશ્રસેનજી (૫૮) શ્રી વિજયસિંહજી (૫૯) શ્રી શીવરાજઋષિ (૬૦) શ્રી લાલજીમલ (૬૧) શ્રી જ્ઞાનઋષિજી, જ્ઞાનઋષિજી પાસે લોકાશાહના ઉપદેશથી (૬૨) શ્રી ભાનુલુનાજી, ભીમજી, જગમાલજી તથા હરસેનજીએ દીક્ષા લીધી (૬૩) શ્રી રૂપજી મહારાજ (૬૪) શ્રી જીવરાજજી.

હરીયાપુરી સંપ્રદાયની પટ્ટાવલિ અનુસાર નીચે પ્રમાણે પાટ પરંપરા ચાલી છે:

(૨૮) શ્રી. આર્યઋષિજી (૨૯) ધર્માચાર્ય સ્વામી (૩૦) શિવભૂતિ આચાર્ય (૩૧) સોમાચાર્ય (૩૨) આર્યભદ્ર સ્વામી (૩૩) વિષ્ણુચંદ્ર સ્વામી (૩૪) ધર્મવર્ધનાચાર્ય (૩૫) ભૂરાચાર્ય (૩૬) સુદત્તાચાર્ય (૩૭) સુહસ્તિ આચાર્ય (૩૮) વરદત્તાચાર્ય (૩૯) સુબુદ્ધિઆચાર્ય (૪૦) શિવદત્તાચાર્ય (૪૧) વીરદત્તાચાર્ય (૪૨) જયદત્તાચાર્ય (૪૩) જયદેવાચાર્ય (૪૪) જયઘોષાચાર્ય (૪૫) વીરચક્રધરાચાર્ય (૪૬) સ્વાતિસેનાચાર્ય (૪૭) શ્રી વસનાચાર્ય (૪૮) શ્રી સુમતિ આચાર્ય (૪૯) શ્રી લોંકાશાહ જેમણે પોતાના ઉપદેશથી ૪૫ જણને દીક્ષા અપાવી અને પોતે સમતિવિજય પાસે ૧૫૦૯મા પાટણમાં દીક્ષા લીધી અને દીક્ષા પર્યાયમા તેમનુ લક્ષ્મી વિજય મુનિ એવું નામ હતુ.

આમ કોઇ પટ્ટાવલિ બીજી પટ્ટાવલિ સાથે મળતી નથી જો પ્રયત્ન કરી સંશોધન કરવામા આવે તો ચોક્કસ પરંપરા અને ક્રમ મળી શકે તેમ છે. વિદ્વાન મુનિરાજો આ સંબંધમાં કાર્ય કરી શકે તેમ છે. પરંતુ ખેદની સાથે કહેવુ પડે છે કે જૈન પ્રકાશમાં પોતાની પાસેની હકીકતો મોકલવા વિનંતી કરી ત્યારે માત્ર કચ્છની મોટી અને નાની સંપ્રદાય તથા હરિયાપુરી સંપ્રદાય સિવાય કોઇએ એ તરફ ધ્યાન જ આપ્યુ નથી અમારી પાસે જે કાંઇ હકીકતો આવી અને અમોએ જે કાંઇ પ્રયત્ન કરીને મેળવ્યુ તેના આધારે આ ઇતિહાસ લખ્યો છે. બનવાજોગ છે કે તેમાં કેટલીક ઉપયોગી હકીકતો રહી પણ જવા પામી હોય, કોઇ પણ સાધુ, સાધ્વી, શ્રાવક કે શ્રાવિકા ભલે તે ગમે તે સંપ્રદાયના હોય, જો કાંઇ નક્કર હકીકતો કે માહિતી મોકલી આપશે તો વિસ્તૃત ઇતિહાસ તૈયાર કરવામા તે અતી ઉપયોગી થઇ પડશે.

અગત્યની તવારિખ

વીર સં. ૨ માં જંબૂસ્વામી મોક્ષે ગયા ત્યારે દશ બોલ વિચ્છેદ ગયા.
,, ,, ૧૬૪મા ચંદ્રગુપ્ત રાજા થયો.
,, ,, ૧૭૦ની આસપાસ આર્ય સુહસ્તિના બાર શિષ્યોના ૩૩ ગચ્છ થયા.
,, ,, ૪૭૦મા વિક્રમ સંવત શરૂ થયો.
,, ,, ૬૦૫મા શાલિવાહનનો શક શરૂ થયો
,, ,, ૬૦૯મા દિગંબર અને શ્વેતાંબર એમ જૈન ધર્મીઓના બે ભાગ પડયા.
,, ,, ૬૨૦માં ચંદ્રગચ્છની ચાર શાખાઓ થઇ.
,, ,, ૬૭૦માં સાચોરમા વીરસ્વામીની પ્રતિમા સ્થપાઇ.
,, ,, ૮૮૨મા ચૈત્યવાસ શરૂ થયો.
,, ,, ૯૮૦માં શ્રી દેવર્દ્ધિગણી ક્ષમાશ્રમણે સૂત્રોને વલ્લભીપુરમા લિપિબદ્ધ કર્યા.

વીર સં. ૧૦૦૦માં કાલિકાચાર્યે પાંચમને બદલે ચોથની સંવત્સરી પ્રતિક્રમી

વીર સં. ૯૯૩ માં સર્વ પૂર્વો વિચ્છેદ ગયા

વિક્રમ સં. ૯૯૪ માં વડગચ્છ સ્થપાયા
,, ,, ૧૦૨૬ માં તક્ષશિલાના ગચ્છ સ્થપાયો.
,, ,, ૧૧૩૯ માં નવાંગી ટીકાકાર અભયદેવ સૂરિ થયા.

,, ,, ૧૧૮૪ માં અચળ ગચ્છ સ્થપાયો.

,, ,, ૧૨૨૯ મા હેમચદ્રાચાર્ય થયા.

,, ,, ૧૨૦૪ મા મૂર્તિપૂજક ખડતલ ગચ્છ સ્થપાયો.

,, ,, ૧૨૧૩ માં જગતચદ્રે મૂર્તિપૂજક તપ ગચ્છ સ્થાપ્યો.

,, ,, ૧૨૩૬ માં પુનમીયા મતની ઉત્પત્તિ થઇ.

,, ,, ૧૨૫૦ મા આગમીયા મત સ્થપાયો.

,, ,, ૧૫૩૧ મા ભસ્મગ્રહ ઉતર્યો ત્યારે શ્રી લોંકા શાહે શાસ્ત્રાનુસાર શુદ્ધ ધર્મનો પુનરૂદ્ધાર કર્યો અને સાધુઓમાં જે શિથિલતા આવી ગઇ હતી તે દૂર કરી.

,, ,, ૧૮૧૭ ના અસાડ શુદ ૧૫મે દયા–દાન વિરોધી તેરાપથ શરૂ થયો.

,, ,, ૧૯૬૧ માં મોરબી (સૌરાષ્ટ્ર)માં શ્રી અખિલ ભારત વર્ષીય શ્વેતાંબર સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સની સ્થાપના થઇ. (ઇ. સ. ૧૯૦૬).

,, ,, ૧૯૮૯ મા શ્રી. સ્થાનકવાસી સાધુ સમાજનુ પ્રથમ સાધુ સંમેલન અજમેરમા મળ્યુ તેની પ્રથમ બેઠક ચૈત્ર સુદ ૧૦ ને બુધવારે મળી.

,, ,, ૨૦૦૮ મા સ્થાનકવાસી સમાજના બાવીસ સપ્રદાયના મુનિવરોનુ સમેલન વૈશાખ સુદી ૩ ના દિવસે સાદડી મુકામે શરૂ થયુ. અને વૈશાખ સુદી ૯ને દિવસે શ્રી. વર્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન શ્રમણ સઘના નાન નીચે બાવીસ સપ્રદાયો એકત્રિત થયા અને જૈન ધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી. આત્મારામજી મહારાજશ્રીને આચાર્ય તરીકે સ્વીકાર્યા.

વિજ્ઞપ્તિ

જૈન ધર્મ પ્રત્યે સ્નેહ અને સદ્‌ભાવના ધરાવનાર પ્રત્યેક વાંચકોને વિજ્ઞપ્તિ છે કે આપની પાસે જૈન ધર્મના ઇતિહાસના આલેખનમાં મદદ રૂપ થાય તેવી જે કાંઇ સામગ્રી ઉપલબ્ધ હોય તે નીચેના સરનામે મોકલી આપવા કૃપા કરશોજી. જૈન ધર્મનો વિસ્તૃત ઇતિહાસ લખવાનુ કાર્ય ચાલુ છે.

અ. ભા. શ્વે. સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સ,
૧૩૯૦, ચાંદની ચોક,
દિલ્હી-૬.

શ્રી. અખિલ ભારતવર્ષીય શ્વેતાંબર સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સનો પચાસ વર્ષનો સંક્ષિપ્ત ઈતિહાસ

હિંદુસ્તાનમા જ્યારે રાજકીય અને સામાજિક સંસ્થાઓની સ્થાપના કરીને વિવિધ સંગઠ્ઠનો સ્થાપિત કરવામાં આવતા હતા, ત્યારે જૈન સમાજના મુખ્ય સંપ્રદાયોએ પણ પોતપોતાનુ સંગઠ્ઠન સ્થાપિત કર્યું. શ્વેતાંબર જૈનોએ મળી શ્વેતાંબર જૈન કોન્ફરન્સની સ્થાપના કરી અને દિગંબરોએ પોતાની દિગંબર જૈન મહાસભાની સ્થાપના કરી. ઈ સ ૧૯૦૦ની આસપાસ આ સંગઠ્ઠનોની શરૂઆત થઈ

સ્થાનકવાસી જૈન સમાજના અગ્રગણ્ય સજ્જનોએ પણ પોતાનું સંગઠ્ઠન કરવાનો નિર્ણય કર્યો અને સને ૧૯૦૬માં મોરબી (કાઠિયાવાડ) માં થોડા ભાઈઓએ મળીને અખિલ ભારતીય શ્વેતાંબર સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સની સ્થાપના કરી કોન્ફરન્સની સ્થાપનામા મોરબીના પ્રતિષ્ઠિત શેઠ શ્રી. અંબાવીદાસભાઈ ડોસાણીનો ખર્ચામા અને ધર્મવીર શ્રી દુર્લભજી ઝવેરી તથા શ્રી. મગનલાલ દફતરીનો કાર્યમા મુખ્ય ભાગ રહ્યો હતો.

પ્રથમ અધિવેશન

સ્થળ: (મોરબી)

તા. ૨૭-૨૮-૨૯ ફેબ્રુઆરી (૧૯૦૬)

શ્રી અંબાવીદાસભાઈ વગેરેની પ્રેરણાથી જ કોન્ફરન્સનુ પ્રથમ અધિવેશન સન ૧૯૦૬મા મોરબીમા ભરવામા આવ્યુ અધિવેશનનુ અધ્યક્ષપદ રાયશેઠ ચાંદમલજી અજમેરવાળાએ શોભાવ્યુ હતુ. સ્વાગતાધ્યક્ષ શ્રી. અમૃતલાલ વર્ધમાન શેઠ હતા.

મોરબીમા કોન્ફરન્સનુ આ સર્વ પ્રથમ અધિવેશન હોવા છતા પણ સમાજમા ઉત્સાહનું પૂર આવ્યુ અને જગ્યાએ જગ્યાએથી સમાજપ્રિય સજ્જનો લગભગ ૨૦૦૦ પ્રતિનિધિઓ અને ૩૫૦૦ પ્રેક્ષકો આવ્યા અને સક્રિય ભાગ લીધો. આ અધિવેશનના કુલ ચૌદ ઠરાવો પસાર કરવામા આવ્યા હતા, જેમાથી ખાસ ઉલ્લેખનીય ઠરાવો નીચે પ્રમાણે છે.

ઠરાવ નં. ૧: મોરબીના મહારાજા સાહેબ સર ... બહાદુર ... સી. આઈ. ઈ એ કોન્ફરન્સનુ પેટ્રનપદ સ્વીકાર્યું, તે માટે તેઓશ્રીનો આભાર માનવામા આવ્યો

આથી સ્પષ્ટ છે કે કોન્ફરન્સ પ્રત્યે મોરબી નરેશની પૂર્ણ સહાનુભુતિ હતી અને મોરબી રાજ્યમાં સ્થાનકવાસી જૈનોનું કેવુ પ્રભુત્વ હતુ.

આ અધિવેશનની બીજી વિશેષતા એ હતી કે આ અધિવેશનનુ સમસ્ત ખર્ચ મોરબી નિવાસી ધર્માનુરાગી શેઠ શ્રી અંબાવીદાસભાઈ ડોસાણીએ આપ્યુ હતુ, તેથી આ ઠરાવમા તેઓશ્રીનો પણ હાર્દિક આભાર માનવામાં આવ્યો હતો.

ઠરાવ નં. ૩ જે જે સ્થળોમાં જૈન શાળાઓ હોય તેને સુચારૂ રીતિથી ચલાવવાની, જ્યા ન હોય ત્યા સ્થાપિત કરવાની અને તે જૈન શાળાઓ માટે એક વ્યવસ્થિત પાઠયક્રમ (જૈન-પાઠાવલી) તૈયાર કરવાની તથા સાધુ-સાધ્વીઓ માટે સિધ્ધાંતશાળાની સુવિધા કરી આપવાની આવશ્યકતા આ કોન્ફરન્સ સ્વીકાર કરે છે.

ઠરાવ ન. ૪ આ ઠરાવથી હુન્નર ઉદ્યોગ તથા શિક્ષા ઉપર ભાર મૂકવાના આવ્યો હતો

ઠરાવ નં. ૫: આ મહત્વપૂર્ણ ઠરાવ એ હતો કે કોન્ફરન્સ વિવિધ સંપ્રદાયોના બંધુઓ સાથે પ્રેમપૂર્વક વ્યવહાર કરવાની ભારપૂર્વક વિનંતિ કરે છે.

ઠરાવ નં. ૯: સ્થાનકવાસી જૈન સમાજની ડિરેક્ટરી તૈયાર કરવાની આવશ્યકતા આ કોન્ફરન્સ સ્વીકાર કરે છે.

ઠરાવ નં. ૧૦: આ ઠરાવથી બાળલગ્ન, વૃદ્ધલગ્ન તથા કન્યા-વિક્રયનો નિષેધ કરવામા આવ્યો હતો. મૃત્યુ-ભોજનમા રૂપિયા ખર્ચ ન કરતા, તે રૂપિયા શિક્ષા-પ્રચારમાં ખર્ચ કરવાની ભલામણ કરવામાં આવી હતી.

ઠરાવ નં. ૧૨: આ ઠરાવ મુનિરાજો સબંધમાં હતો. તેમાં સરકારને પ્રાર્થના કરવામાં આવી હતી કે જૈન મુનિરાજોને ટેક્સ લીધા વિના પુલ ઉપરથી જવા દેવામાં આવે.

મોરબી અધિવેશન પછી કોન્ફરન્સ ઓફિસના સંચાલન માટે ... પ્રધાન ... બનેલી

મેનેજીંગ કમિટી

પ્રમુખ—રાયશેઠ ચાંદમલજી રિયાવાલા, અજમેર.

૧. નગરશેઠ અમૃતલાલ વર્ધમાન, મોરબી સભ્ય
૨. દેશાઇ વનેચંદભાઇ રાજપાલ ,,
૩. શેઠ અંબાવીદાસભાઇ ડોસાણી ,,
૪. પારેખ વનેચંદભાઇ પોપટભાઇ ,,
૫. દફતરી ગોકળદાસભાઇ વજપાલ ઓન. મેનેજર
૬. ,, વનેચંદભાઇ પોપટભાઇ એકાઉન્ટન્ટ
૭. મેતા સુખલાલભાઇ મોનજી ટ્રેઝરર
૮. લખમીચંદભાઇ માણેકચંદ ખોખાણી ઓન. સેક્રેટરી
૯. શેઠ ગીરધરલાલભાઇ સૌભાગ્યચંદ ઓ. જો. ,,
૧૦. મહેતા મનસુખલાલભાઇ જીવરાજ ,, ,,
૧૧. ઝવેરી દુર્લભજીભાઇ ત્રિભુવનદાસ ,, ,,

દ્વિતીય અધિવેશન

સ્થળ: (રતલામ)

મોરબી અધિવેશન પછી બે વર્ષે સને ૧૯૦૮ મા તા. ૨૭, ૨૮, ૨૯ માર્ચના દિવસોમા રતલામમા કૉન્ફરન્સનુ બીજુ અધિવેશન ભરાયુ આ અધિવેશનના અધ્યક્ષ અમદાવાદ-નિવાસી શેઠ કેવળદાસ ત્રિભુવનદાસ હતા.

આ અધિવેશનમાં રતલામ અને મોરબીના મહારાજા સાહેબ તથા શિવગઢના ઠાકોરસાહેબ પણ પધાર્યા હતા. પ્રારંભમાં કૉન્ફરન્સ પ્રત્યે રાજા-મહારાજાઓની પણ પૂર્ણ સહાનુભૂતિ હતી અને સ્થાનકવાસી જૈન સંઘોની પણ રાજ્યોમાં ખૂબ પ્રતિષ્ઠા હતી, તેથી રાજા મહારાજાઓ વખતોવખત ઉપસ્થિત થઇ કાર્યવાહીમાં સક્રિય ભાગ લેતા હતા, તે ઉપરોક્ત બંને અધિવેશનોની કાર્યવાહીથી સ્પષ્ટ છે. આ અધિવેશનમા રતલામના મહારાજાધિરાજ સજ્જનસિંહજી બહાદુરે કૉન્ફરન્સના પેટ્રન પદનો સ્વીકાર કર્યો, તેથી તેમનો આભાર માનવામાં આવ્યો હતો.

ઠરાવ નં. ૩ તથા ૪મા મોરબીનરેશ તથા શિવગઢના ઠાકોરસાહેબનો આભાર માનવામા આવ્યો હતો. કે જેઓ આ અધિવેશનમાં પધાર્યા હતા. બાકીના પ્રસ્તાવોમાં મુખ્ય મુખ્ય પ્રસ્તાવો આ પ્રમાણે હતા:

ગત અધિવેશનની પેઠે જૈનોના બધા ફિરકાઓમાં સુલેહ સંપ વધારવો, પરસ્પર નિંદાત્મક લેખ લખવા નહિ. પ્રચારમાં સહયોગ દેવો, ધાર્મિક શિક્ષણ, ધાર્મિક પાઠ્યક્રમ વગેરે માટે ઠરાવો પસાર કરવામા આવ્યા.

ઠરાવ નં. ૯: એમ ઠરાવવામાં આવ્યુ કે ગત વર્ષ કૉન્ફરન્સમા જે ફંડ થયુ હતુ અને દાતાઓએ પોતાની ઇચ્છાનુસાર જે જે ખાતાઓમા રકમો પ્રદાન કરી હતી તે ખાતાઓમા જ તે પૈસાનો વ્યય કરવો.

ઠરાવ નં. ૧૨: દરેક પ્રાંતના સ્થા જૈન ભાઇઓ પોતપોતાની આવશ્યકતાઓની પૂર્તિ માટે તથા કૉન્ફરન્સના ધ્યેયોનો પ્રચાર કરવા માટે પોતપોતાના પ્રાંતોમા પ્રાંતીય કૉન્ફરન્સ ભરવાનો પ્રયત્ન કરે.

ઠરાવ નં. ૧૩: આગામી એક વર્ષ માટે કૉન્ફરન્સનુ કેન્દ્રીય કાર્યાલય અજમેરમાં રાખવાનો નિર્ણય કરવામાં આવ્યો.

ઠરાવ નં. ૧૪: કૉન્ફરન્સના જનરલ સેક્રેટરીના સ્થાને નિમ્નોક્ત સજ્જનોની નિયુક્તિ કરવામા આવી

૧. રાયશેઠ ચાંદમલજી, અજમેર
૨. શેઠ કેવળદાસ ત્રિભુવનદાસ, અમદાવાદ
૩. શેઠ અમરચંદજી પિત્તલિયા, રતલામ
૪ શ્રી ગોકળદાસભાઇ રાજપાળ દફતરી, મોરબી
૫. લાલા ગોકળચંદજી જોહરી, દિલ્હી

ઠરાવ નં. ૧૫: દરેક ગામના સંઘો પોતાને ત્યાં દરેક ઘેરથી વાર્ષિક લવાજમ ચાર આના વસૂલ કરે અને તે રકમની વ્યવસ્થા કૉન્ફરન્સ આ પ્રમાણે કરે

¾ આના, ભાગ, ધાર્મિક જ્ઞાન
૧ ,, ,, સાધર્મી સહાય
¾ ,, ,, વ્યવહારિક જ્ઞાન
¾ ,, ,, જીવદયા
¾ ,, ,, કૉન્ફરન્સ નિભાવ

આ ઠરાવનો અમલ દરેક પ્રતિનિધિ તથા વીઝીટર પોતપોતાના સંઘમાં કરાવશે એવી કૉન્ફરન્સ પૂર્ણ આશા રાખે છે.

અન્ય ઠરાવો આભાર પ્રદર્શિત કરવાના હતા, જેમાં શ્રી. દુર્લભજી ત્રિભોવન ઝવેરીનો તેમણે કરેલી કૉન્ફરન્સની બે વર્ષ સુધી નિઃસ્વાર્થ સેવા માટે, શ્રી વાડીલાલ મોતીલાલ શાહનો, સામયિક પત્ર દ્વારા પ્રચાર કરવા માટે અને સ્વયંસેવકોની સેવા માટે આભાર માનવામા આવ્યો હતો.

આ અધિવેશનમાં કુલ ૨૦ ઠરાવ પાસ થયા હતા.

કોન્ફરંસ શરૂ થયા પછી પ્રારંભ થયેલી શુભ પ્રવૃત્તિઓ

૧ એક સંવત્સરી જૈનોમા કરાવવા માટે પ્રયત્ન.

૨. ઉપદેશકો મોકલી ધર્મપ્રચાર, કુરૂઢીઓ અને ફજુલ ખર્ચી છોડાવવા તથા કોન્ફરસના વિવિધ ખાતાઓ માટે ફંડ કર્યા.

૪. ડીરેક્ટરી જન-ગણના માટે પ્રયત્ન.

૫. મુંબઇ અમદાવાદ પરીક્ષા આપવા જનાર વિદ્યાર્થીઓ માટે ઉતારા તથા ભોજનની સગવડો કરાવી.

૬. ૧૦૦ જેટલા દેશી રાજ્યોને જીવદયા-પ્રાણીવધ બંધી માટે અપીલો મોકલીને ઠેકઠેકાણે હિંસા બંધ કરાવી.

૭. પૂલો ઓળગતા લેવાતા ટોલટેક્ષથી જૈન મુનિઓને બાકાત કરાવ્યા.

૮. જૈન મુનિઓની પણ જડતી લઇને કપડા પર જકાત લેવાની ચાલતી હાડમારીથી બાકાત કરાવ્યા.

૯. કચ્છ-માંડવી ખાતે શેઠ મેઘજીભાઇ થોભણ પાસેથી ૨૫ હજાર કોરી અપાવી 'સંસ્કૃત પાઠશાળા' ખોલાવી.

૧૦. લીંબડી સંપ્રદાયએ લીંબડીમા, દરિયાપુરીએ કલોલમા અને ખંભાતના સાધુઓએ ખંભાતમા સંમેલન કર્યા. સુધારા કરાવ્યા, એ વખતે લીંબડી સંપ્રદાયે શિથિલાચારીઓને સંઘાડાથી દૂર કર્યા અને કેટલાકને તદ્દન મુક્ત કર્યા.

૧૧. દરેક જૈન ફિરકાને વ્યવહારિક કેળવણી માટે મુબંઇમા બોર્ડિંગ (૧-૬-૦૯) અને ધાર્મિક કેળવણી માટે રતલામમાં જૈન ટ્રેનિંગ કોલેજ (૨૯-૮-૦૯) સ્થાપી.

૧૨. 'માગધી ભાષાની શિક્ષણમાળા' રચાવવા પ્રયત્નો કર્યા.

૧૩ સંઘાડા વાર સાધુ સાધ્વીઓની ગણના કરી.

૧૪ જૈન સાધુ-સાધ્વીઓને જાહેર વ્યાખ્યાનો કરતા બનાવ્યા.

૧૫ અમદાવાદમાં શા. નાથાલાલ મોતીલાલની સખાવતથી દશા શ્રામાળી શ્રાવિકાશાળા તથા જામનગરમાં વીસા શ્રીમાળી શ્રાવિકાશાળા ખોલાવી.

૧૬. પાલણપુર પીતાંબર હાથીભાઇ પારેખે રૂા. ૨૮ હજારની સખાવત, સ્થા. જૈન વિદ્યાર્થીઓને સ્કોલરશીપ આપવાની વ્યવસ્થા કરી

૧૭. ધાર્મિકજ્ઞાનના પ્રચારાર્થે ઠેકઠેકાણે જૈન પાઠશાળાઓ, કન્યાશાળાઓ, શ્રાવિકાશાળાઓ, પુસ્તકાલયો, મંડળો, સભાઓ, પુસ્તકાલયો, વાચનાલયો ખોલાવ્યાં. વ્યવહારિક શિક્ષાપ્રચાર, બોર્ડિંગો, ઉદ્યોગશાળા શરૂ કરાવી

૧૮. જૈનોમાં ઐક્ય વૃદ્ધિ માટે પ્રયત્નો કર્યા.

૧૯ સંપ્રદાયોને પોતાની મર્યાદાઓ બાંધવા અને એકલવિહાર અને આજ્ઞા બહાર રહેવાનો નિષેધ કર્યો તથા આચાર્ય નીમવા પ્રેરણા કરીને વ્યવસ્થિત કરવા પ્રયત્નો કર્યા.

૨૦. નિરાશ્રિત બહેનો, ભાઇઓ અને બાળકોને આશ્રય આપવાના પ્રયત્નો કર્યા.

૨૧. ભીલોને માસાહાર છોડાવ્યો. દશેરા અને નવરાત્રિમા રાજામહારાજાઓ દ્વારા થતી હિંસા ઓછી કરાવી તથા દેવસ્થાનોમા થતી પશુ-પક્ષી હિંસા રોકવા પ્રયત્નો કર્યા.

૨૨. મુનિરાજોને અન્યાન્ય પ્રાન્તોમાં વિચરવાની તથા જાહેર વ્યાખ્યાનો કરવાની સફળ પ્રેરણા કરી તેથી રાજામહારાજા, સરકારી અધિકારીઓ અને અજૈનો પણ આકર્ષાયા અને હિંસા, શિકાર, મદ્ય-માંસ-કુવ્યસન આદિનો ત્યાગ થવા લાગ્યો. જૈન ધર્મનો, નીતિ અને સદાચારનો પ્રચાર વધ્યો.

૨૩. જૈન તિથિ પત્ર-આઠમ પાખીની ટીપ તૈયાર કરાવી.

૨૪ જૈનના ત્રણે ફીરકાની સંયુક્ત કોન્ફરન્સ બોલાવવા પ્રયત્ન કર્યો. પરસ્પર વિરોધી લખાણો અને દિક્ષીત સાધુઓને ભગાડવા કે બદલાવવાની મંધ વિરોધી પ્રવૃત્તિઓ અટકાવવા પ્રયત્નો કર્યા.

૨૫. મહાવીર જયંતિ જાહેર રીતે મનાવવાની પ્રેરણા આપી.

પ્રારંભિક થોડા સમયમાં પ્રાંતિક કોન્ફરન્સો બોલાવી

૧ ઓટેશ્વર (લીંબડી) ઝાલાવાડ જિલ્લા શ્રામાળી સ્થા. જૈનોની પ્રથમ પ્રાં. કોન્ફરન્સ સં. ૧૯૬૨ ભાદ. શુ. ૯ મંગળવારે લીંબડી નરેશ શ્રી યશવંતસિંહજી કે. સી. આઇ.ના પ્રમુખપદે અને સંઘવી ભાઇશ્રી સ્થા (લીંબડી)ના ખર્ચે મળી અને ૬૬ તાલુકાના આગેવાનોએ ચાર દિવસ ચર્ચા કરી

૨. શ્રી. ગોધા (દક્ષીણ)-ઓસવાલ જૈન પ્રાં. કોન્ફરન્સ સતારાના શેઠ બાળમુકુંદજી હજારીમલજીની અધ્યક્ષતામા થઇ. આ વખતે સમાજસુધારા ઉપરાત શ્વેતાંબર મૂ. પૂ. અને સ્થાનકવાસીઓની સંયુક્ત કોન્ફરન્સ કરી એકતા સ્થાપવાનો ઠરાવ પણ થયેલો.

૩. વિશા શ્રીમાળી સ્થા. જૈન-ઝાલાવાડની વઢવાણમાં ત્રીજી બેઠક થઇ.

૪. ગોહિલવાડ દશા શ્રીમાળી પ્રા. કોન્ફરન્સ ઘોઘામાં થઇ.

૫. ગુજરાતના ગામોએ કલોલમાં પ્રાં. કોન્ફરન્સ કરી.

૬. પંજાબ પ્રાં. કોન્ફરન્સ જંડિયાલામા પ્રથમ અધિવેશન

૭. ,, ,, સિયાલકોટમા બીજું અધિવેશન

૮. ઝાલાવાડ દશાશ્રીમાળી સ્થા. જૈનોની લીંબડીમાં.

પ્રારંભમાં ઘણાં વર્ષો સુધી કોન્ફરસ ઓફીસે જનરલ સેક્રેટરીઓ અને પ્રાતિક સેક્રેટરીઓની દોરવણી નીચે કાર્ય સંચાલન કર્યું હતુ. તેમના નામો :

જનરલ સેક્રેટરીઓ

૧. શેઠ કેવળદાસ ત્રિભોવનદાસ, અમદાવાદ.
૨. ,, અમરચંદજી પિત્તલિયા, રતલામ,
૩. ,, લાલા સાદીરામજી ગોકુલચંદજી, દિલ્હી,
૪. શ્રીયુત ગોકલદાસ રાજપાલ, મોરબી.
૫. રાય શેઠ ચાંદમલજી રિયાવાલા, અજમેર.
૬. શેઠ બાલમુકુંદજી ચંદનમલજી મૂથા, સતારા.
૭. દિ. બ. ઉમેદમલજી લોઢા, અજમેર.
૮. દિ. બ. બિશનદાસજી જૈન, જમ્મુ (કાશ્મીર)

પ્રતિક સેક્રેટરીઓ

પંજાબ : લાલા નથુમલજી અમૃતસર
,, રેલારામજી જલંધર

માલવા : શ્રી ચાંદમલજી પિત્તલીયા, જાવરા
શ્રી. સુજાનમલજી બાંઠિયા, પિપલોદા
શ્રી. ફૂલચંદજી કોઠારી ભોપાલ

મેવાડ : શ્રી. કોઠારી બલવંતસિંહજી, ઉદેપુર
શ્રી. નથમલજી ચોરડિયા, નીમચ

મારવાડ : શેઠ સમીરમલજી બાલિયા, પાલી
નોરત્નમલજી ભાંડાવત, જોધપુર
શેઠ ગણેશમલજી માલુ, બિકાનેર

રજપૂતાના : શેઠ શાર્દુલસિંહજી મુણોત, અજમેર
શેઠ આણંદમલજી ચોધરી અજમેર
શેઠ રાજમલજી કોઠારી, જયપુર
શેઠ ગુલાબચંદજી કાકરિયા, નયા શહેર
શેઠ છોટેલાલજી ચુનીલાલજી જૌહરી, જયપુર
શેઠ ધીસુલાલજી ચોરડિયા જયપુર

ગ્વાલીઅર : શેઠ ચાંદમલજી નાહાર ભોપાલ
શેઠ સૌભાગમલજી મુથા ઇચ્છાવર

હાડોતી-ઢુંઢાડ : શેખાવટી-લાલા કપુરચંદજી આગ્રા
શ્રી. પુરૂષોત્તમ માવજી વકીલ, રાજકોટ.

કાઠિયાવાડ : શ્રી. વનેચંદ રાજપાળ દેશાઇ, મોરબી

બંગાલ : શેઠ અગરચંદજી ભૈરૂંદાનજી શેઠિયા, કલકત્તા
જોઇન્ટ સેક્રેટરી-ડો. ધારસીભાઇ ગુલાબચંદ સંઘાણી, કલકત્તા

બ્રહ્મદેશ : શેઠ પોપટલાલ ડાહ્યાભાઇ, રંગુન

અરબસ્તાન : શેઠ હીરાચંદ સુંદરજી, એડન

આફ્રિકા : શેઠ મોહનલાલ માણેકચંદ ખંડેરિયા પિટર્સબર્ગ

અધિવેશન ત્રીજું

સ્થળ : અજમેર

તા. ૧૦-૧૧-૧૨ માર્ચ ૧૯૦૯

પ્રારંભમા સમાજમાં સારો ઉત્સાહ હતો તેથી દરેક વર્ષે કે બે વર્ષે કોન્ફરન્સનું અધિવેશ નભરાતુ હતુ. ઉપસ્થિતિ પણ સારા પ્રમાણમા રહેતી હતી. કોન્ફરન્સનુ ત્રીજુ અધિવેશન સને ૧૯૦૯માં અજમેરમાં ભરવામા આવ્યું હતું, જેના પ્રમુખપદે અહમદનગરના શાસ્ત્રજ્ઞ શેઠ બાલમુકુન્દજી મૂથા હતા.

આ અધિવેશમાં મોરબીના મહારાજા સાહેબ સર વાઘજી બહાદુર અને લીંબડીના ઠાકોરસાહેબ શ્રી દોલતસિંહજી પધાર્યા હતા. તેથી તેમનો આભાર માનવામાં આવ્યો હતો. વડોદરા નરેશ સર સિયાજીરાવ ગાયકવાડ પધારી શકયા ન હતા, પરંતુ તેઓશ્રીએ અધિવેશનની સફળતા માટે પોતાની શુભ કામના મોકલી હતી, તેથી તેમનો પણ આભાર માનવામાં આવ્યો હતો.

આ અધિવેશનમાં શિક્ષા–પ્રચાર, બેકારી–નિવારણ વગેરે સબંધી કેટલાક ઠરાવો પસાર કરવામાં આવ્યા હતા, જેમાંના મુખ્ય ઠરાવો નીચે પ્રમાણે છે:

ધાર્મિક શિક્ષણ વધારવા વિષયમાં

ઠરાવ નં. ૬ : હિંદુસ્તાનમા કેટલી ય જગ્યાએ સઘો તરફથી જૈન પાઠશાળાઓ ચાલે છે, જેને માટે કોન્ફરન્સ પોતાનો સતોષ પ્રદર્શિત કરે છે. જ્યા આવી ધાર્મિક સસ્થાઓ ન હોય ત્યાંના અગ્રગણ્ય સજ્જનોને કોન્ફરન્સ વિનતિ કરે છે કે તેઓ પોતાને ત્યા આવી સસ્થાઓ ચાલુ કરે.

(બ) જૈન તત્વજ્ઞાન તથા સાહિત્યના પ્રચાર માટે અને પ્રાચીન ઇતિહાસના સશોધન માટે રતલામમાં જૈન ટ્રેનીગ કોલેજ ખોલવાનો ગત મેનેજીંગ કમિટીએ ઠરાવ કર્યો હતો અને તેને માટે ખર્ચના માસિક રૂ. ૧૦૦, મજૂર કરવામાં આવ્યા હતા, તેને બદલે હવે માસિક રૂ. ૨૫૦,ની મજૂરી આપવામા આવે છે. આ રકમ ધાર્મિક ફડમાથી આપવી.

(શી) આ કાર્ય માટે રતલામના શેઠશ્રી અમરચદજી પીતલિયા, દિલ્હીના લાલા ગોકુળચદજી નાહર તથા પિપ-લોદના શ્રી સુજાનમલજી બાંઠિયાને જનરલ સેક્રેટરી તરીકે નિયુકત કરવામાં આવે છે. તેઓ ઉચિત સમજે તે પ્રમાણે યોગ્ય સદસ્યોની સલાહકાર બોર્ડ તથા કાર્યકારિણી સમિતિની વરણી કરી શકશે.

(વ્યવહારિક શિક્ષણ વધારવા માટે)

ઠરાવ નં. ૭ : ઉચ્ચ કેળવણી માટે મુબઇમા એક બોર્ડિગ હાઉસ ખોલવાનો પ્રસ્તાવ મૂકીને તેને માટે માસિક રૂ. ૧૦૦)ની મદદ દેવાનો ઠરાવ પાછલી મેનેજીગ કમિટીએ પાસ કર્યો હતો. પરતુ એટલી નાની રકમથી ચાલવુ મુશ્કેલ હોવાથી રૂ. ૨૫૦) માસિક મદદ વ્યવહારિક ફડમાથી આપવાનુ સ્વીકારવામાં આવે છે

(ક) બોર્ડિંગ હાઉસમા રહેતા વિદ્યાર્થીઓએ ધાર્મિક શિક્ષણ અવશ્ય લેવું પડશે અધ્યાપકોનો પગાર ચાર આના ફંડમાંથી ૩/૪ આનાના વ્યવહારિક શિક્ષણ ફડમાંથી આપવાનુ પહેલાની મેનેજિંગ કમિટીમા પાસ કરવામા આવ્યું હતુ, પરતુ હવે પગાર ઉપરોક્ત વ્યવસ્થામાથી આપવાનુ નક્કી કરવામાં આવે છે.

(ખ) આ બોર્ડિંગના સેક્રેટરી તરીકે શ્રી [illegible]

રાજપાળ, મોરબી, વકીલ પુરશોત્તમ માવજી રાજકોટ, શેઠ જેસગભાઇ ઉજમસી અમદાવાદ, શેઠ મેઘજીભાઇ થોભણ મુબઇને નિયુક્ત કરવામા આવે છે. તેઓ જેટલા ઉપયુક્ત સમજે તેટલા સદસ્યોની સલાહકાર સમિતિ અને કાર્યવાહક સમિતિ બનાવી લે.

ઠરાવ નં. ૯ : ગયે વર્ષે જે કાર્યવાહક સમિતિ બનાવવામાં આવી હતી, તેને નીચેની વધુ સત્તા આપવામા આવે છે:

(અ) દરેક વર્ષે કોન્ફરન્સ ક્યાં અને કેવી રીતે ભરવી, તેની વ્યવસ્થા તથા પ્રમુખ ચૂટવાનો અધિકાર

જો કોઇ સઘ પોતાને ખર્ચે કોન્ફરન્સ ભરે, ત્યાં પ્રમુખની નિયુકિતનો અધિકાર ત્યાંની સ્વાગત સમિતિને રહેશે, પરતુ કોન્ફરન્સની જનરલ કમિટિની સ્વકૃતિ પ્રાપ્ત કરવી આવશ્યક રહેશે.

(બ) ચાર આના ફડની વ્યવસ્થા, ચોથી કોન્ફરન્સ ભરાય ત્યાં સુધી, કરવાની સત્તા આપવામા આવે છે.

(ક) કોન્ફરન્સનુ પ્રમુખ કાર્યાલય ક્યા રાખવુ અને તેની વ્યવસ્થા કેવી રીતે કરવી.

(વિરોધ મટાડવા માટે)

ઠરાવ નં. ૧૦ : કોન્ફરન્સ ફંડની વસૂલાતમા જો કોઇ વિરોધી પ્રયત્ન કરશે તો કોન્ફરન્સ તેને માટે યોગ્ય વિચાર કરશે.

ઠરાવ નં. ૧૧ : (શ્રમણ સઘોને સગઠિત કરવા સબંધમા) જે જે મુનિ મહારાજોના સપ્રદાયમાં આચાર્ય નથી તે તે સપ્રદાયોમાં આચાર્યની નિયુક્તિ કરી, એ વર્ષમાં ગચ્છની મર્યાદા બાંધી દેવી જોઇએ—આ પ્રમાણે સર્વે મુનિરાજોને પ્રાર્થના કરવામાં આવી.

ઠરાવ નં. ૧૨ : (સ્વધર્મી ભાઇઓનુ નૈતિક જીવન ઉચ્ચ બનાવવા માટે) પ્રત્યેક શહેર યા ગામના અગ્રેસરોને કોન્ફરન્સે એ સલાહ આપી કે પોતાને ત્યાં કોઇ સ્વધર્મી ભાઇઓ જો નૈતિક વ્યવહાર વિરૂદ્ધ કોઇ મોટા દોષ પ્રતીત થાય તો તેને યોગ્ય શિક્ષા આપવી, જેથી બીજા-ઓને પણ શિખામણ મળે

ઠરાવ નં. ૧૩ : ગત વર્ષે જે જનરલ સેક્રેટરીઓ નીમાયા છે તેમને જ ચોથા અધિવેશન સુધી ચાલુ રાખવા. શ્રીમાન્ બાલમુકુંદજી મૂથા (સતારા)ને પણ જનરલ સેક્રેટરી તરીકે ચૂંટવામાં આવે છે.

૨. શ્રી. ગોંધા (દક્ષીણ)-ઓસવાલ જૈન પ્રાં. કોન્ફરન્સ સતારાના શેઠ બાળમુકુંદજી હજારીમલજીની અધ્યક્ષતામા થઇ. આ વખતે સમાજસુધારા ઉપરાંત શ્વેતાંબર મૂ. પૂ. અને સ્થાનકવાસીઓની સંયુકત કોન્ફરન્સ કરી એકતા સ્થાપવાનો ઠરાવ પણ થયેલો.

૩. વિશા શ્રીમાળી સ્થા. જૈન-ઝાલાવાડની વઢવાણમાં ત્રીજી બેઠક થઇ.

૪. ગોહિલવાડ દશા શ્રીમાળી પ્રા. કોન્ફરન્સ ઘોઘામાં થઇ.

૫. ગુજરાતના ગામોએ કલોલમાં પ્રાં. કોન્ફરન્સ કરી.

૬. પંજાબ પ્રાં. કોન્ફરન્સ જંડિયાલામા પ્રથમ અધિવેશન

૭. ,, ,, સિયાલકોટમા બીજું અધિવેશન

૮. ઝાલાવાડ દશાશ્રીમાળી સ્થા. જૈનોની લીંબડીમા.

પ્રારંભમાં ઘણા વર્ષો સુધી કોન્ફરંસ ઓફીસે જનરલ સેક્રેટરીઓ અને પ્રાંતિક સેક્રેટરીઓની દોરવણી નીચે કાર્ય સંચાલન કર્યું હતુ. તેમના નામો :

જનરલ સેક્રેટરીઓ

૧. શેઠ કેવળદાસ ત્રિભોવનદાસ, અમદાવાદ.
૨. ,, અમરચંદજી પિત્તલિયા, રતલામ,
૩. ,, લાલા સાદીરામજી ગોકુલચંદજી, દિલ્હી,
૪. શ્રીયુત ગોકલદાસ રાજપાલ, મોરબી.
૫. રાય શેઠ ચાંદમલજી રિયાવાલા, અજમેર.
૬. શેઠ બાલમુકુંદજી ચંદનમલજી મૂથા, સતારા.
૭. દિ. બ. ઉમેદમલજી લોઢા, અજમેર.
૮. દિ. બ. બિશનદાસજી જૈન, જમ્મુ (કાશ્મીર)

પ્રતિક સેક્રેટરીઓ

પંજાબ	: લાલા નથુમલજી અમૃતસર ,, રેલારામજી જલંધર
માલવા	: શ્રી ચાંદમલજી પિત્તલીયા, જાવરા શ્રી. સુજાનમલજી બાંઠિયા, પિપલોદા શ્રી. ફૂલચંદજી કોઠારી ભોપાલ
મેવાડ	: શ્રી. કોઠારી બલવંતસિંહજી, ઉદેપુર શ્રી. નથમલજી ચોરડિયા, નીમચ
મારવાડ	: શેઠ સમીરમલજી બાલિયા, પાલી નોરત્નમલજી ભાંડાવત, જોધપુર શેઠ ગણેશમલજી માલુ, બિકાનેર
રજપૂતાના	: શેઠ શાર્દુલસિંહજી મુણોત, અજમેર શેઠ આણંદમલજી ચોધરી અજમેર શેઠ રાજમલજી કોઠારી, જયપુર શેઠ ગુલાબચંદજી કાંકરિયા, નયા શહેર શેઠ છોટેલાલજી ચુનીલાલજી જૌહરી, જયપુર શેઠ ધીસુલાલજી ચોરડિયા જયપુર
ગ્વાલીઅર	: શેઠ ચાંદમલજી નાહાર ભોપાલ શેઠ સૌભાગમલજી મુથા ઇચ્છાવર
હાડોતી-ઢુંઢાડ	: શેખાવટી-લાલા કપુરચંદજી આગ્રા શ્રી. પુરૂષોત્તમ માવજી વકીલ, રાજકોટ.
કાઠિયાવાડ	: શ્રી. વનેચંદ રાજપાળ દેશાઇ, મોરબી
બંગાલ	: શેઠ અગરચંદજી ભૈરૂદાનજી શેઠિયા, કલકત્તા જોઇન્ટ સેક્રેટરી-ડૉ. ધારસીભાઇ ગુલાબચંદ સંઘાણી, કલકત્તા
બ્રહ્મદેશ	: શેઠ પોપટલાલ ડાહ્યાભાઇ, રંગુન
અરબસ્તાન	: શેઠ હીરાચંદ સુંદરજી, એડન
આફ્રિકા	: શેઠ મોહનલાલ માણેકચંદ ખંડેરિયા પિટર્સબર્ગ.

અધિવેશન ત્રીજું

સ્થળ : અજમેર

તા. ૧૦-૧૧-૧૨ માર્ચ ૧૯૦૯

પ્રારંભમા સમાજમાં સારો ઉત્સાહ હતો તેથી દરેક વર્ષે કે બે વર્ષે કોન્ફરન્સનુ અધિવેશન ભરાતુ હતુ. ઉપસ્થિતિ પણ સારા પ્રમાણમા રહેતી હતી. કોન્ફરન્સનુ ત્રીજુ અધિવેશન સને ૧૯૦૯મા અજમેરમા ભરવામા આવ્યુ હતુ, જેના પ્રમુખપદે અહમદનગરના શાસ્ત્રજ્ઞ શેઠ બાલમુકુન્દજી મૂથા હતા.

આ અધિવેશમાં મોરબીના મહારાજા સાહેબ સર વાઘજી બહાદુર અને લીંબડીના ઠાકોરસાહેબ શ્રી દોલતસિંહજી પધાર્યા હતા. તેથી તેમનો આભાર માનવામાં આવ્યો હતો. વડોદરા નરેશ સર સિયાજીરાવ ગાયકવાડ પધારી શકયા ન હતા, પરંતુ તેઓશ્રીએ અધિવેશનની સફળતા માટે પોતાની શુભ કામના મોકલી હતી, તેથી તેમનો પણ આભાર માનવામાં આવ્યો હતો.

આ અધિવેશનમાં શિક્ષા–પ્રચાર, બેકારી–નિવારણ વગેરે સંબંધી કેટલાક ઠરાવો પસાર કરવામાં આવ્યા હતા, જેમાના મુખ્ય ઠરાવો નીચે પ્રમાણે છે·

ધાર્મિક શિક્ષણ વધારવા વિષયમાં

ઠરાવ નં. ૬· હિંદુસ્તાનમા કેટલી ય જગ્યાએ સઘો તરફથી જૈન પાઠશાળાઓ ચાલે છે, જેને માટે કોન્ફરન્સ પોતાનો સતોષ પ્રદર્શિત કરે છે. જયા આવી ધાર્મિક સસ્થાઓ ન હોય ત્યાના અગ્રગણ્ય સજ્જનોને કોન્ફરન્સ વિનતિ કરે છે કે તેઓ પોતાને ત્યા આવી સસ્થાઓ ચાલુ કરે.

(બ) જૈન તત્વજ્ઞાન તથા સાહિત્યના પ્રચાર માટે અને પ્રાચીન ઇતિહાસના સશોધન માટે રતલામમાં જૈન ટ્રેનીગ કોલેજ ખોલવાનો ગત મેનેજીંગ કમિટીએ ઠરાવ કર્યો હતો અને તેને માટે ખર્ચના માસિક રૂ. ૧૦૦, મજૂર કરવામાં આવ્યા હતા, તેને બદલે હવે માસિક રૂ. ૨૫૦, ની મજૂરી આપવામા આવે છે. આ રકમ ધાર્મિક ફડમાંથી આપવી.

(સી) આ કાર્ય માટે રતલામના શેઠશ્રી અમરચંદજી પીતલિયા, દિલ્હીના લાલા ગોકુળચદજી નાહર તથા પિપલોદના શ્રી સુજાનમલજી બાંઠિયાને જનરલ સેક્રેટરી તરીકે નિયુકત કરવામાં આવે છે. તેઓ ઉચિત સમજે તે પ્રમાણે યોગ્ય સદસ્યોની સલાહકાર બોર્ડ તથા કાર્યકારિણી સમિતિની વરણી કરી શકશે.

(વ્યવહારિક શિક્ષણ વધારવા માટે)

ઠરાવ નં. ૭: ઉચ્ચ કેળવણી માટે મુબઇમા એક બોર્ડીંગ હાઉસ ખોલવાનો પ્રસ્તાવ મૂકીને તેને માટે માસિક રૂ. ૧૦૦)ની મદદ દેવાનો ઠરાવ પાછલી મેનેજીગ કમિટીએ પાસ કર્યો હતો. પરતુ એટલી નાની રકમથી ચાલવુ મુશ્કેલ હોવાથી રૂ. ૨૫૦) માસિક મદદ વ્યવહારિક ફડમાથી આપવાનુ સ્વીકારવામાં આવે છે

(ક) બોર્ડિંગ હાઉસમા રહેતા વિદ્યાર્થીઓએ ધાર્મિક શિક્ષણ અવશ્ય લેવુ પડશે અધ્યાપકોનો પગાર ચાર આના ફડમાથી ૩/૪ આનાના વ્યવહારિક શિક્ષણ ફડમાથી આપવાનુ પહેલાંની મેનેજિંગ કમિટીમાં પાસ કરવામા આવ્યુ હતુ, પરતુ હવે પગાર ઉપરોક્ત સહાયતામાથી આપવાનુ નક્કી કરવામા આવે છે.

(ખ) આ બોર્ડીંગના સેક્રેટરી તરીકે શ્રી ગોકળદાસ રાજપાળ, મોરબી, વકીલ પુરશોત્તમ માવજી રાજકોટ, શેઠ જેસગભાઇ ઉજમસી અમદાવાદ, શેઠ મેઘજીભાઇ થોભણ મુબઇને નિયુક્ત કરવામાં આવે છે. તેઓ જેટલા ઉપયુક્ત સમજે તેટલા સદસ્યોની સલાહકાર સમિતિ અને કાર્યવાહક સમિતિ બનાવી લે.

ઠરાવ નં. ૯: ગયે વર્ષે જે કાર્યવાહક સમિતિ બનાવવામાં આવી હતી, તેને નીચેની વધુ સત્તા આપવામા આવે છે:

(અ) દરેક વર્ષે કોન્ફરન્સ કયાં અને કેવી રીતે ભરવી, તેની વ્યવસ્થા તથા પ્રમુખ ચૂટવાનો અધિકાર

જો કોઇ સઘ પોતાને ખર્ચે કોન્ફરન્સ ભરે, ત્યાં પ્રમુખની નિયુકિતનો અધિકાર ત્યાની સ્વાગત સમિતિને રહેશે, પરતુ કોન્ફરન્સની જનરલ કમિટિની સ્વકૃતિ પ્રાપ્ત કરવી આવશ્યક રહેશે.

(બ) ચાર આના ફડની વ્યવસ્થા, ચોથી કોન્ફરન્સ ભરાય ત્યાં સુધી, કરવાની સત્તા આપવામાં આવે છે.

(ક) કોન્ફરન્સનુ પ્રમુખ કાર્યાલય કયાં રાખવુ અને તેની વ્યવસ્થા કેવી રીતે કરવી.

(વિરોધ મટાડવા માટે)

ઠરાવ નં. ૧૦: કોન્ફરન્સ ફડની વસૂલાતમા જો કોઇ વિરોધી પ્રયત્ન કરશે તો કોન્ફરન્સ તેને માટે યોગ્ય વિચાર કરશે.

ઠરાવ નં. ૧૧: (શ્રમણ સઘોને સગઠિત કરવા સબધમાં) જે જે મુનિ મહારાજોના સપ્રદાયમાં આચાર્ય નથી તે તે સંપ્રદાયોમાં આચાર્યની નિયુક્તિ કરી, બે વર્ષમા ગચ્છની મર્યાદા બાંધી દેવી જોઇએ—આ પ્રમાણે સર્વે મુનિરાજોને પ્રાર્થના કરવામાં આવી.

ઠરાવ નં. ૧૨: (સ્વધર્મી ભાઇઓનુ નૈતિક જીવન ઉચ્ચ બનાવવા માટે) પ્રત્યેક શહેર યા ગામના અગ્રેસરોને કોન્ફરન્સે એ સલાહ આપી કે પોતાને ત્યા કોઇ સ્વધર્મી ભાઇઓ જો નૈતિક વ્યવહાર વિરૂદ્ધ કોઇ મોટા દોષ પ્રતીત થાય તો તેને યોગ્ય શિક્ષા આપવી, જેથી બીજાઓને પણ શિખામણ મળે

ઠરાવ નં. ૧૬: ગત વર્ષ જે જનરલ સેક્રેટરીઓ નીમાયા છે તેમને જ ચોથા અધિવેશન સુધી ચાલુ રાખવા. શ્રીમાન્ બાલમુકુદજી મૂથા (સતારા)ને પણ જનરલ સેક્રેટરી તરીકે ચૂંટવામાં આવે છે.

ઠરાવ નં. ૧૬: બી. બી. એન્ડ સી. આઇ. રેલ્વે, આર. એસ. રેલ્વે, નોર્થ વેસ્ટર્ન રેલ્વે, સાઉથ રોહિલખંડ રેલ્વે, સહરાદરા–સહરાનપુર રેલ્વે વગેરેએ કોન્ફરસમાં આવનાર સજ્જનોને કન્સેશન આપવાની સગવડઆપી તે માટે એમનો તથા 'મુંબઇ સમાચાર' 'સાંજ વર્તમાન' અને જૈન સમાચાર આદિ પત્રોએ પોતાના રીપોર્ટરો મોકલ્યા બદલ તમનો આભાર માનવામાં આવે છે.

ઠરાવ નં. ૧૮: આ અધિવેશનના કામમા અજમેરના સ્વયંસેવકોએ જે ઉત્સાહથી ભાગ લઇને સેવા કરી છે, તે બદલ તેમનો આભાર માન્યો તથા પ્રમુખ શ્રી બાલમુકુંદજી મૂથા તરફથી તેમને રજતપદક ભેટ કરવાનો નિશ્ચય જાહેર કરવામાં આવ્યો.

ઠરાવ નં. ૧૯. અજમેર અધિવેશનના કામને સફળતાપૂર્વક સંપૂર્ણ કરવામાં અજમેરના શ્રીસંઘનો અને ખાસ કરીને દિ. બ. ઉમેદભાઇ તથા રાય શેઠ શ્રી. ચાંદમલજીનો અંતઃકરણથી આભાર માને છે. રાય શેઠ ચાંદમલજીએ કોન્ફરન્સનો સંપૂર્ણ ખર્ચ તથા હેડ ઓફીસનો કારભાર પોતાની ઉપર લઇને જે મહાન સેવા કરી છે તેને માટે તેમને 'માનપત્ર' આપવાનું ઠરાવ્યું.

આ કોન્ફરંસની બેઠકમાં મુખ્ય ૨૨ ઠરાવો પાસ થયા.

અધિવેશન ચોથું

સ્થળ: જાલંધર (પંજાબ)

તા. ૨૭–૨૮–૨૯ માર્ચ

કોન્ફરન્સનું ચોથું અધિવેશન ઇ. સ ૧૯૧૦ માં દિ. બ. શેઠ શ્રી ઉમેદમલજી લોઢા, અજમેરની અધ્યક્ષતામાં જાલંધર (પંજાબ)મા થયું. આ વખતે કુલ ૨૭ ઠરાવો થયા, તેમાથી ખાસ ખાસ નીચે પ્રમાણે છે:

ઠરાવ નં. ૩: (સરકારોમાં જૈન તહેવારોની રજાઓ વિષે) મુંબઇ સરકારે કેટલાક જૈન તહેવારોની છુટ્ટી સ્વીકારી છે. તે બદલ આ કોન્ફરન્સ તેમનો હાર્દિક આભાર માને છે. તથા બીજી સરકારોને તથા ભારત સરકારને અનુરોધ કરે છે કે તેઓ પણ જૈન તહેવારોની રજા સ્વીકારવાની કૃપા કરે.

ઠરાવ ૬: (અધિવેશનોમાં ફીનિશ્ચિત કરવા વિષે) ભવિષ્યના કોન્ફરન્સના અધિવેશનોમા પ્રતિનિધિ ફી રૂા. ૪), દર્શકોની ફી રૂા. ૩) બાળકોની રૂા ૧ાા (૧૨ વર્ષથી નાના) અને સ્ત્રી પ્રેક્ષકોના રૂા. ૨) ઠરાવવામાં આવે છે.

ઠરાવ નં. ૭: (હિન્દી ભાષાની પ્રમુખતા વિષે) ભવિષ્યમા કોન્ફરન્સનું કામકાજ હિન્દી ભાષા અને હિન્દી લિપિમાં જ રાખવામાં આવે

ઠરાવ નં. ૧૦. (જીવદયાના વિષયમાં) કેટલાક પ્રસંગોમાં જીવિત જાનવરોનો ભોગ અપાય છે. તેવી જ રીતે પશુઓનાં માસ અને અવયવોથી બનેલી વસ્તુઓનો પ્રચાર વધવાથી ઘણી હિંસા થાય છે. તેને રોકવા માટે ઉપદેશકો દ્વારા, લેખકો દ્વારા તથા સાહિત્ય દ્વારા યોગ્ય પ્રચાર કરવાની આવશ્યકતા આ કોન્ફરન્સ સ્વીકારે છે.

(બ) નાનામોટાં જાનવરો માટે પાંજરાપોળો ખોલવાની આવશ્યકતા આ કોન્ફરન્સ સ્વીકારે છે અને જ્યાં એવી સંસ્થાઓ હોય ત્યાં તેમના કાર્યને વધારવાની સૂચના કરે છે.

(સ) જીવહિંસા બંધ કરનારા અને જીવદયાના કામમાં પ્રોત્સાહન દેનારા રાજા–મહારાજા તથા અહિંસાના પ્રચારકોને આ કોન્ફરન્સ ધન્યવાદ આપે છે.

ઠરાવ નં. ૧૨: (સ્વધર્મીઓને સહાયતા આપવા વિષે) આપણા સમાજના અશક્ત, નિરુદ્યમી અને ગરીબ જૈન બંધુઓ, વિધવાબહેનો અને નિરાશ્રિત બાળકોની દુઃખી અવસ્થા દૂર કરવા માટે તેમને ઔદ્યોગિક કાર્યોમાં લગાડવા તથા અન્ય પ્રકારે સહાયતા પહોંચાડવાની આવશ્યકતા આ કોન્ફરન્સ સ્વીકાર કરે છે અને શ્રીમંત ભાઇઓનું ધ્યાન તે તરફ કેન્દ્રિત કરવાનો આગ્રહ કરે છે.

ઠરાવ નં. ૧૩: (રાત્રીભોજન બંધ કરવા વિષે) આપણી સમાજમાં કેટલેક ઠેકાણે તો જાતીય રાત્રીભોજન બંધ જ છે; પરંતુ જ્યાં બંધ ન હોય ત્યાના શ્રી સંઘોને કોન્ફરન્સ અનુરોધ કરે છે કે તેઓ પણ પોતાને ત્યાં રાત્રીભોજન બંધ કરે.

ઠરાવ નં. ૧૪: (સાધુ–સાધ્વીઓને ટોલ ટેક્ષથી મુક્ત કરાવવા વિષે.)

પંજાબ પ્રાન્તમાં જ્યાં જ્યાં રેલ્વે–પુલ ઉપર ચાલવાનો ટોલ–ટેક્ષ લાગે છે ત્યાં જૈન સાધુ–સાધ્વી પાસેથી એવા ટેક્ષની માગણી કરવામાં ન આવે. આ સંબંધે જેમ અન્ય રેલ્વે કંપનીઓએ ટેક્ષ માફ કર્યા છે તેવી જ રીતે પંજાબની એન. ડબલ્યુ રેલ્વેને પણ અનુરોધ કરવા માટે એક ડેપ્યુટેશન મોકલવું. રેલ્વેના પુલ ઉપરથી પસાર થવાની મંજુરી માટે પંજાબ સરકારને દરખાસ્ત મોકલવામાં આવે.

ઠરાવ ન. ૧૬: કોન્ફરન્સનુ અધિવેશન ભવિષ્યમાં ડીસેમ્બર મહિનામા ભરવામાં આવે.

ઠરાવ ન. ૧૭: (કોન્ફરન્સના પ્રચાર વિષે) કોન્ફરન્સને સુદૃઢ બનાવવા માટે તથા તેના પ્રસ્તાવોનો અમલ કરાવવા માટે કોન્ફરન્સના આગેવાન સજ્જનોની એક કમિટી બનાવવામા આવે અને તે પ્રચાર માટે પ્રવાસ કરે. સુયોગ્ય ઉપદેશકો દ્વારા પણ પ્રચાર કરાવવામા આવે.

ઠરાવ નં. ૧૯: આ કોન્ફરન્સના પાચ અધિવેશન થાય ત્યાં સુધી નીચેના સજ્જનોને જનરલ સેક્રેટરીના પદ પર નીમવામા આવે છે.

૧. રાય શેઠ ચાદમલજી, અજમેર.
૨ દિ બ. શેઠ ઉમેદમલજી લોઢા, અજમેર.
૩. શેઠ બાલમુકુન્દજી મૂથા, સતારા.
૪. ,, અમરચદજી પિતલિયા, રતલામ દિલ્હી.
૫. ,, ગોકુલચદજી નાહર, દિલ્હી.
૬. શ્રી ગોકલદાસ રાજપાલ, મોરબી.
૭. દિ. બા. બિશનદાસજી જૈન, જમ્મુ (કાશ્મીર)

આ કોન્ફરન્સમાં પણ મોરબી–નરેશ સર વાઘજી બહાદુર, યુવાચાર્ય શ્રી લખધીરજીની સાથે પધાર્યા હતા. ચૂડાના ઠાકોરસાહેબ શ્રી જોરાવરસિહજી પણ પધાર્યા હતા. તેથી એ બન્નેનો આભાર માનવામાં આવ્યો.

કપુરથલાના મહારાજાસાહેબ તરફથી પણ કોન્ફરંસને સહાયતા મળી હતી. રેલ્વેકપનીઓએ અધિવેશનમા આવનાર સજ્જનોને કન્સેશન આપ્યુ હતુ. એટલા માટે તેમનો તથા પંજાબ સત્ર તેમ જ સ્વયસેવકોનો પણ આભાર માનવામા આવ્યો. સ્વયસેવકોને પ્રમુખ સાહેબ દિવાન બહાદુર શેઠ ઉમેદમલજી લોઢા તરફથી રજતપદક આપવાની ઘોષણા કરવામા આવી.

અધિવેશન પાંચમું

(સ્થળ: સિંકદરાબાદ)

કોન્ફરન્સનુ પાંચમુ અધિવેશન સન ૧૯૧૩ મા તા. ૧૨–૧૩–૧૪ એપ્રિલે સિકદરાબાદમાં.જલગાવનિવાસી શેઠ લક્ષ્મણદાસજી મુલતાનમલજીની અધ્યક્ષતામાં થયુ આ અધિવેશનમાં ઘણા મહત્ત્વપૂર્ણ ઠરાવો અને નિર્ણયો કરવામા આવ્યા. કુલ મળીને ૨૧ ઠરાવો પાસ થયા. જેમાના મુખ્ય ઠરાવો નીચે પ્રમાણે છે

ઠરાવ નં. ૪: (અ) (શાસ્ત્રોદ્ધારના વિષયમા) જૈન શાસ્ત્રોના સશોધન અને પ્રકાશન માટે આ કોન્ફરન્સ પ્રયત્ન કરશે. એ માટે નીચેના સજ્જનોની એક કમિટી નીમવામાં આવે છે:

૧. શ્રીમાન રાજા બહાદુર લાલા સુખદેવ સહાયજી જવાલાપ્રસાદજી, હૈદરાબાદ.
૨. શ્રી શાસ્ત્રજ્ઞ બાલમુકુન્દજી મૂથા, સતારા,
૩. શ્રી અમરચદજી પિતલિયા, રતલામ
૪. શ્રી કેશરીચદજી ભડારી, ઇન્દોર
૫. શ્રી દામોદરભાઇ જગજીવનભાઇ, દામનગર
૬. શ્રી પોપટલાલ કેવળચદ શાહ, રાજકોટ
૭. ડો. જીવરાજ ઘેલાભાઇ, અમદાવાદ,
૮. ડો. નાગરદાસ મુળજી ધ્રુવ, વઢવાણ કેમ્પ
૯. શ્રી હજારીમલજી બાઠિયા, ભીનાસર તથા
૧૦. શ્રી મુલતાનમલજી મેઘરાજજી, બ્યાવર,

નામ વધારવાની સત્તા કોન્ફરન્સ ઓફીસને આપવામા આવે છે.

(બ) ધાર્મિક તથા વ્યવહારિક શિક્ષણ વિષે રતલામ જૈન ટ્રેનિગ કોલેજ તથા મુબઇ બોર્ડિંગ હાઉસનો પાયો મજબુત બનાવવા માટે તેમના વિધાનમાં જરૂરી ફેરફાર કરવા માટે તથા ગ્રાન્ટ વધારવાની જરર હોય તો તેનો નિર્ણય કરવા માટે નીચેના સજ્જનોની એક 'સીલેકટ–કમિટી' બનાવવામા આવે છે:

૧. શ્રીમાન લક્ષ્મણદાસજી મુલતાનમલજી મુથા, જલગાંવ
૨. ,, બાલમુકુન્દજી ચદનમલજી મુથા, સતારા
૩. ,, કુવર છગનમલજી રિયાંવાલે, અજમેર
૪. ,, ગોકલદાસ રાજપાલ, મોરબી
૫. ,, કુદનમલજી ફિરોદિયા, અહમદનગર
૬. ,, ફતેચદજી કપુરચદજી લાલન
૭. ,, બરધભાનજી પિતલિયા, રતલામ
૮. ,, કેશરીચદજી ભંડારી, ઇદોર
૯ ,, વાડીલાલ મોતીલાલ શાહ, અમદાવાદ,
૧૦. ,, દુર્લભજી ત્રિભોવન ઝવેરી, મોરબી,
૧૧. ,, લક્ષ્મીચદજી ખોખાણી, મોરબી,
૧૨ ,, કિશનસિંહજી,
૧૩. ,, મિશ્રમલજી બોહરા,
૧૪ ,, ફુલચદજી કોઠારી, ભોપાલ,
૧૫, ,, વચ્છરાજજી, રૂપચદજી,
૧૬. ,, માણેકચદજી મુથા અહમદનગર તથા
૧૭. ,, ધારશીભાઇ ગુલાબચંદ સઘાણી, ગોંડળ,

ઠરાવ નં. ૫: જે પ્રાન્તોમાંથી ચાર આના ફંડ ૭૫ ટકા નિયમિત પ્રાપ્ત થશે તે પ્રાન્તોમાં જો બોર્ડિંગો ખોલાશે તો કોન્ફરન્સ ફંડમાંથી બોર્ડિંગ ખર્ચનો ૧/૩ ખર્ચ આપવામાં આવશે. એવી સ્થિતિમાં ત્યા ધાર્મિક શિક્ષણ અનિવાર્ય હોવુ જોઇએ.

ઠરાવ નં. ૬: વિદ્વાન્ મુનિશ્રી જવાહિરલાલજી મહારાજના સબંધમાં દક્ષિણમાં જે અસંતોષ ફેલાયો છે તેનુ નિરાકરણ કરવા માટે કોન્ફરન્સની સબજેક્ટ કમિટી નીમવામાં આવી.

૧. શ્રીમાન્ બાલમુકુન્દજી મૂથા, સતારા.
૨. ,, લક્ષ્મણદાસજી મૂથા, જલગાંવ.
૩. ,, ગોકલદાસ રાજપાલ, ઝવેરી મોરબી,
૪. ,, છગનમલજી રિયાંવાળા, અજમેર,
૫. ,, બરધભાનજી પિતલિયા, રતલામ.
૬. ,, વચ્છરાજજી રૂપચંદજી, પાચોરા.
૭. ,, કુંદનમલજી ફિરોદિયા, અહમદનગર.
૮ ,, ફુલચંદજી કોઠારી, ભોપાલ.
૯. ,, નથમલજી ચોરડિયા, નીમચ.
૧૦. ,, વીરચંદજી સૂરજમલજી.
૧૧. ,, શિવરાજજી સુરાણા, સિકંદરાબાદ.
૧૨. ,, લલ્લુભાઇ નારણદાસ પટેલ, ઇટોલા.

આ કમિટીએ તા. ૧૩મીએ નીચેનો પ્રસ્તાવ તૈયાર કર્યો છે. તેને આ કોન્ફરન્સ માન્ય રાખે છે:

'ઇંદોરના વિષયમાં પ્રારંભમાં જે લેખ કોલેજના સેક્રેટરી શ્રી કેશરીમલજી ભંડારી તથા કોલેજના પ્રિન્સિપાલ શ્રી પ્રીતમલાલ કચ્છીના પ્રગટ થયા છે તે વાંચવાથી, અન્ય પત્રોની તપાસ કરવાથી તથા હકીકત સાભળવાથી જણાય છે કે, વિદ્યાર્થીઓને ભગાડવાનો જે આરોપ મુનિશ્રી મોતીલાલજી મહારાજ તથા શ્રી જવાહિરલાલજી ઉપર લગાડવામાં આવ્યો છે તે સિદ્ધ થતો નથી. એટલા માટે કમિટી મુનિશ્રીને નિર્દોષ ઠરાવે છે.

ઠરાવ નં. ૭: (બાલાશ્રમ ખોલવા વિષે) દક્ષિણ પ્રાન્તમાં એક જૈન બાલાશ્રમ ખોલવામાં આવે. તેને કોન્ફરન્સ તરફથી માસિક સો રૂપિયાની સહાયતા આપવાનુ ઠરાવવામાં આવે છે. આ આશ્રમની વ્યવસ્થા કરવા અને સ્થળનો નિર્ણય કરવા માટે નીચેના સજ્જનોની એક કમિટી નીમવામાં આવે છે:

૧. શ્રી લક્ષ્મણદાસજી મુલતાનમલજી, જલગાંવ.
૨. શ્રી બાલમુકુન્દજી મૂથા, સતારા.
૩ શ્રી કુન્દનમલજી ફિરોદિયા, અહમદનગર.
૪. શ્રી સુખદેવસહાયજી જ્વાલાપ્રસાદજી ઝવેરી હૈદરાબાદ. તથા
૫. શ્રી વચ્છરાજજી રૂપચંદજી, પાચોરા.

ઠરાવ નં. ૯: (સમાજ–સુધાર વિષે) બાળલગ્ન, વૃદ્ધલગ્ન તથા કન્યા વિક્રય આદિ હાનિકારક રીવાજોને દૂર કરવાથી જ આપણા સમાજનુ હિત સાધી શકાશે એટલા માટે આ કોન્ફરન્સ આગ્રહપૂર્વક અનુરોધ કરે છે કે:

(ક) પુત્રની ઉમર ઓછામા ઓછી ૧૬ વર્ષ અને કન્યાની ઉમર ઓછામાં ઓછી ૧૧ વર્ષની થયા પહેલા વિવાહ કરવામાં ન આવે.

(ખ) વધારેમાં વધારે ૪૫ વર્ષની ઉમર પછી લગ્ન કરવાં નહિ.

(ગ) અનિવાર્ય કારણો સિવાય જ્ઞાતિની રજા લીધા વિના એક સ્ત્રીની હયાતીમાં બીજી વાર લગ્ન કરવુ નહિ.

(ઘ) કન્યાવિક્રયનો રીવાજ બંધ કરવા માટે દરેક સંઘના સદ્‌ગૃહસ્થોએ દૃઢ પ્રયત્ન જરૂર કરવો જોઇએ

(ઙ) આતશબાજી, વેશ્યાનૃત્ય, વિવાહ અને મૃત્યુ પ્રસંગોમાં નકામો ખર્ચ બંધ કરવો કે ઓછો કરવો જોઇએ.

ઠરાવ નં. ૧૦: (અ) રથાયી ગ્રાન્ટ સિવાય અન્ય સર્વ પ્રકારની ગ્રાન્ટોની વ્યવસ્થા માટે બધા જનરલ સેક્રેટરીઓની સલાહ લેવામાં આવે અને બહુમતિ પ્રમાણે ઓફિસ દ્વારા કાર્ય કરવામા આવે.

(બ) જાલંધર કોન્ફરન્સમા પ્રતિનિધિઓ, પ્રેક્ષક આદિની ફી માટે જે ઠરાવ કર્યો છે તેમા ન્યુનાધિક કરવાનો અધિકાર આમંત્રણ આપનાર સંઘને રહેશે નહિ.

(ક) કોન્ફરન્સનુ અધિવેશન દર વર્ષે કરવામાં આવે. જો કોઇ ગામ કે સંઘ તરફથી આમંત્રણ ન મળે તો કોન્ફરન્સના ખર્ચે કોઇ પણ અનુકુળ સ્થળે અધિવેશન કરવાનો નિર્ણય કરવો.

(ડ) કોન્ફરસમાં આવનારા પ્રતિનિધિઓ અને પ્રેક્ષકો આદિની વ્યવસ્થા તેમના પોતાના ખર્ચે કરવી.

(ઇ) આ કોન્ફરસ પ્રત્યેક ગામ અને શહેરના સ્વધર્મી ભાઇઓને આગ્રહપૂર્વક ભલામણ કરે છે કે

તેઓ પાવલી ફંડમા દરેક મદદ કરે. સહાયક મડળના સદસ્ય બનીને તથા ધર્માર્થ પેટીઓ મગાવીને શક્તિ અનુસાર કોન્ફરસને સહાયતા પહોંચાડે.

ઠરાવ નં. ૧૨: (સવત્સરી પર્વ એક સાથે ઉજવવા વિષે) સમસ્ત ભારતમા સ્થા જૈનો એક જ દિવસે સવત્સરી પર્વનુ આરાધન કરે એ આવશ્યક છે આ વિષે જુદા જુદા સપ્રદાયોના મુનિઓ અને શ્રાવકો સાથે પત્રવ્યવહાર દ્વારા યોગ્ય નિર્ણય કરી લેવાની સૂચના કોન્ફરંસ હેડ ઓફીસને કરવામા આવી.

ઠરાવ નં. ૧૩: (દીક્ષામાં દખલ ન કરવા જોધપુર સ્ટેટને નિવેદન) હાલમા જ જોધપુર સ્ટેટમાં એવો કાયદો લાગુ થયો છે કે-૨૧ વર્ષથી ઓછી ઉમરનાને સાધુ બનાવવા નહિ. અને મારવાડમા જેટલા સાધુઓ છે તેમનાં નામો સરકારી રજીસ્ટરમાં લખાવા જોઇએ. આ બન્ને બાબતો જૈન શાસ્ત્રોની આજ્ઞા વિરૂદ્ધ છે. અત આ કોન્ફરસ નમ્રતાપૂર્વક જોધપુર સ્ટેટને નિવેદન કરે છે કે-આ બાબત ધર્મ સબધી છે અને ધર્મના વિષયમા બ્રિટિશ સરકાર પણ દખલ કરતી નથી તો જોધપુર સ્ટેટે પણ કૃપા કરીને ઉક્ત કાનૂનથી સાધુઓને મુક્ત કરવા જોઇએ. આ ઠરાવ કોન્ફરન્સ ઓફીસ જોધપુર સ્ટેટને મોકલીને યોગ્ય આજ્ઞા મગાવે.

ઠરાવ નં. ૧૪: (યોગ્ય દીક્ષા વિષે) આ કોન્ફરન્સ હિંદુસ્થાનના સમસ્ત સ્થા. જૈન શ્રી. સઘોને સૂચના કરે છે કે જે વૈરાગીને દીક્ષા આપવી હોય તેની યોગ્યતા આદિની સપૂર્ણ તપાસ સ્થાનિક સઘે કરી લેવી જોઇએ. જે ગામમાં ૫૦ ઘર ન હોય તો બાજુના ગામના મેળવીને પણ ૫૦ સ્થા. જૈન ઘરોની લેખીત સમતિ મેળવ્યા પછી જ દીક્ષા અપાવવી જોઇએ.

ઠરાવ ન. ૧૫: જૈનોમા ભાઇચારો વધારવા વિષે આ કોન્ફરન્સ સ્વીકાર કરે છે કે જૈન ધર્મની ઉન્નતિ માટે ભિન્ન ભિન્ન સપ્રદાયો સાથે પરસ્પર ભ્રાતૃભાવ અને પ્રેમપૂર્ણ વ્યવહારની નિતાન્ત આવશ્યકતા છે. અત પ્રત્યેક ગામ અને શહેરના સઘોને સૂચના કરે છે કે તેઓ પોતાના ક્ષેત્રના કલેશો દૂર કરી શાંતિ અને પ્રેમ વધારવાનો પ્રયત્ન કરે. જૈનોના ત્રણે ફિરકામા ઐક્યની સ્થાપના માટે પ્રત્યેક સપ્રદાયના ૨૫-૨૫ ગૃહસ્થોનુ એક સમેલન થાય. જો પ્રસગ આવે તો આપણી તરફથી દ્રવ્ય અને શ્રમ નો પણ સહયોગ આપવો તેવી આ કોન્ફરન્સ ઇચ્છા પ્રગટ કરે છે.

ઠરાવ નં. ૧૬: (જીવદયા વિષે) (અ) નિરાધાર જાનવરોની રક્ષા કરવા માટે જ્યા જ્યાં પાજરાપોળો ન હોય ત્યા સ્થાપિત કરવા માટે આ કોન્ફરન્સ પ્રત્યેક સઘને ભલામણ કરે છે.

(બ) આ કોન્ફરન્સ જે જે વસ્તુઓની બનાવટમાં જીવહિસા થતી હોય તે તે વસ્તુઓનો ઉપયોગ ન કરવાની ભલામણ કરે છે.

(ક) અન્ય ધર્માવલમ્બીઓમા ભોજન નિમિત્તે અથવા દેવી દેવતાઓના નામ ઉપર જે હિસા થાય છે તેને પેમ્ફલેટો અને ઉપદેશકો દ્વારા બધ કરાવવવાનો પ્રયત્ન કરવામાં આવે.

ઠરાવ ન. ૧૭: આ કોન્ફરન્સતું છઠ્ઠુ અધિવેશન ન થાય ત્યા સુધી નીચેના સજ્જનોને જનરલ સેક્રેટરી તરીકે નિમવામા આવે છે

૧. શેઠ ચાદમલજી રિયાંવાળા, અજમેર.
૨. દિવાનબહાદુર ઉમેદમલજી લોઢા, અજમેર
૩. શ્રી બાલમુકુદજી મૂથા, સતારા.
૪. શ્રી અમરચદજી પિતલિયા, રતલામ.
૫. શ્રી ગોકુલચદજી નાહર, દિલ્હી
૬. શ્રી ગોકુલદાસ રાજપાલ મહેતા, મોરબી.
૭. દિ. બ. શ્રી બિશનદાસજી જૈન, જમ્મુ.
૮. શ્રી લછ્મનદાસજી મુલતાનમલજી, જલગાંવ.
૯. લાલા સુખદેવસહાયજી જવાલાપ્રસાદજી, હૈદરાબાદ.

આ કોન્ફરન્સમાં સેવા આપનારા સ્વયસેવકો ને, અને શ્રી નથમલજી ચોરડીઆને સભાપતિ શ્રી લછ્મનદાસજી મૂથા તરફથી ચાંદ અર્પણ કર્યા.

અધિવેશન છઠ્ઠું

સ્થળ: મલકાપુર (બિહાર)

કોન્ફરસનુ છઠ્ઠુ અધિવેશન ૧૨ વર્ષ પછી મલકાપુરમા સન ૧૯૨૫માં તા૦ ૭-૮-૯ જૂનના થયુ. પ્રમુખપદે શ્રીમાન શેઠ મેઘજીભાઇ થોભણ જે. પી. મુબઇવાળા હતા. સ્વાગતાધ્યક્ષ શ્રી મોતીલાલજી કોચેટા, મલકાપુર નિવાસી હતા અધિવેશનમાં કુલ ૨૭ ઠરાવો થયા હતા. તેમાથી મુખ્ય મુખ્ય નીચે આપ્યા છે:

૧ પજાબ, ૨ મારવાડ, ૩ મેવાડ, ૪ માલવા, ૫ સયુક્ત પ્રાત, ૬ મધ્ય ભારત, ૭ મધ્યપ્રદેશ, ૮ ઉત્તર ગુજરાત, ૯ દક્ષિણ ગુજરાત, ૧૦ હાલાર, ૧૧ ઝાલાવાડ,

૧૨ ગોહિલવાડ, ૧૩ સોરઠ, ૧૪ કચ્છ, ૧૫ દક્ષિણ ૧૬ ખાનદેશ, ૧૭ વરાડ, ૧૮ બંગાલ, ૧૯ નિઝામ હૈદ્રાબાદ, ૨૦ મદ્રાસ, ૨૧ મુબઇ, ૨૨ સિંધ અને ૨૩ કર્ણાટક.

ઉપરોક્ત પ્રાન્તો માટે નિમ્નોકત સજ્જનોને પ્રાંતિક મત્રી નીમવામા આવે છે.

૧. શ્રી. કુંદનમલજી ફીરોદિયા, અહમદનગર. દક્ષિણ પ્રાંત
૨. ,, મોતીલાલજી પિત્તલ્યા, ,, ,,
૪. ,, વીરચદ ચોધરી, ઇચ્છાવર સી. પી પ્રાંત
૪. ,, ગુંમાનમલજી સુરાણા, બરહાનપુર ,,
૫ ,, કેસરીમલજી ગુગલિયા, ધામણગાવ બરાડ પ્રાંત
૬. ,, મોહનમલજી હરખચદજી, આકોલા ,,
૭ , રાજમલજી લલવાની, જામનેર ખાનદેશ પ્રાંત
૮. ,, રતનચદજી દોલતરામજી, વાઘલી. ,,
૯. ,, મગનલાલ નાગરદાસ વકીલ, લીબડી, ઝાલાવાડ
૧૦. ,, દુર્લભજી કેશવજી ખેતાણી, મુબઇ. મુબઇ પ્રાંત
૧૧. ,, જગજીવન દયાલ, ઘાટકોપર. ,,
૧૨. ,, ઉમરશી કાનજીભાઇ, દેશલપુર, કચ્છ પ્રાંત
૧૩. ,, આનદરાજજી સુરાણા, જોધપુર. મારવાડ
૧૪. ,, વિજયમલજી કુભટ ,, ,,
૧૫. ,, સિરેમલજી લાલચદજી, ગુલેદગઢ. કર્ણાટક

પ્રાંતીય મત્રીઓને સત્તા આપવામાં આવે છે કે, તેઓ પોતાના ક્ષેત્રોમા એક કમિટી બનાવી લે અને પાવલી-ફડ, 'ધર્માર્થ પેટી'ની રકમ પોતપોતાના પ્રાંતોમા વસૂલ કરીને કોન્ફરસ ઓફીસને મોકલે, આ ફડની વ્યવસ્થા પૂર્વ નિર્ણયાનુસાર જુદા જુદા ફડોમાં કરવી.

ઠરાવ: નં. ૩. (મુંબઇમાં કોન્ફરન્સ ઓફીસ રાખવા માટે) કોન્ફરન્સ ઓફીસ આગામી બે વર્ષ માટે સ. ૧૯૮૨ના કારતક શુદ ૧ થી મુબઇમાં રાખવી, અને જૈનપ્રકાશ પત્ર પણ મુબઇથી જ પ્રગટ કરવુ. ઓફીસની વર્કિંગ કમિટીમા શેઠ મેઘજીભાઇ થોભણ જે પી પ્રેસીડેન્ટ અને શેઠ વેલજીભાઇ લખમશી તથા ઝવેરી સૂરજમલ લલ્લુભાઇને જોઇંટ સેક્રેટરી નીમવામાં આવે છે. આ ત્રણે સજ્જનોએ મુબઇ જેવા કેન્દ્રમાં ઓફીસને લઇ જવા જે સેવાભાવ બતાવ્યો છે તે બદલ આ કોન્ફરન્સ તેમને ધન્યવાદ આપે છે

પ્ર૦ મોતીલાલજી મૂથા, અનુ શ્રી બરદભાણજી પિત્તલ્યા તથા અનુ. શ્રી સરદારમલજી ભડારી.

ઠરાવ નં. ૪: (જૈન ટ્રેનિંગ કાલેજ ખોલવા વિષે) સમગ્ર આગાતી બધી દુનિયાનુ ધ્યાન અત્યારે 'અહિંસા'ની તરફ આકર્ષિત થયુ છે. એવા અવસરે એ જરૂરી છે કે અહિંસાનુ સર્વદેશીય સ્વરૂપ દર્શાવનારા જૈન તત્ત્વજ્ઞાનનું શિક્ષણ સુદર પદ્ધતિથી પ્રાપ્ત થઇ શકે, માટે 'જૈન ટ્રેનિંગ કોલેજ ખોલવાનો નિશ્ચય કરવામા આવે છે અને તેને માટે સ્થાન્ વગેરે વિષયમાં યોગ્ય નિર્ણય કરવાનો અધિકાર નીચેના સજ્જનોની સમિતિને આપવામાં આવે છે.

પ્રમુખ: શેઠ શ્રી. મેઘજીભાઇ થોભણભાઇ, મુબઇ. શેઠ વેલજીભાઇ લખમશી, શેઠશ્રી સૂરજમલ લલ્લુભાઇ ઝવેરી, શ્રી વાડીલાલ મોતીલાલ શાહ, શ્રી. દુર્લભજીભાઇ ત્રિભુવન ઝવેરી, શ્રી નથમલજી ચોરડિયા, શ્રી. વર્ધમાનજી પિત્તલિયા, શ્રી. મોતીલાલજી કોટેચા, શ્રી, ચીમનલાલ પોપટલાલ શાહ, શ્રી. કુંદનમલજી ફીરોદિયા અને શેઠ લછમણદાસજી મૂથા, જલગાવ.

ઠરાવ નં. ૫: (હાનિકારક રીવાજો ત્યાગવા વિષે) જૈન સમાજમાથી બાલવિવાહ, વૃદ્ધવિવાહ, કન્યાવિક્રય એક સ્ત્રી ઉપર બીજી વાર લગ્ન કરવા, મદ્યસેવન, વેશ્યાનૃત્ય કરાવવુ આદિ હાનિકારક રીવાજોને દૂર કરવાનો અને લગ્ન તથા મરણ પ્રસગના ફજુલ ખર્ચો ઓછા કરીને સન્માર્ગમાં ધન વ્યય કરવાનો પ્રત્યેક સંઘ પ્રયત્ન કરે

ઠરાવ નં. ૬: (જનરલ સેક્રેટરીની ચૂટણી)

નીચેના સજ્જનોને જનરલ સેક્રેટરી તરીકે નીમવામા આવે છે.

૧. શેઠ શ્રી મેઘજીભાઇ થોભણ જે. પી. મુબઇ.
૨. ,, લછમનદાસજી મુલતાનમલજી, જલગાવ
૩. ,, મગનમલજી રિયાવાળા, અજમેર.
૪. ,, શેઠ વર્ધમાનજી પિત્તલિઆ, રતલામ.
૫. ,, મોતીલાલજી મૂથા, સતારા
૬. ,, જ્વાલાપ્રસાદજી ઝવેરી, હૈદરાબાદ
૭. ,, ગોકલચદજી નાહર, દિલ્હી.
૮. ,, સૂરજમલ લલ્લુભાઇ ઝવેરી, મુબઇ
૯. ,, વેલજીભાઇ લખમશી નપ્પુ, મુંબઇ
૧૦. ,, કેશરીમલજી ગુગલિઆ, ધાણક
૧૧. ,, મોતીલાલજી કોટેચા, મલકાપુર

ઠરાવ નં. ૯: (જીવહિંસા બધ કરાવનારાઓને ધન્યવાદ) મહિયર રાજ્યમાં શારદાદેવી પર થતો પશુવધ સદાને માટે બધ કર્યો એ બદલ આ કોન્ફરન્સ મહિયર મહારાજાને અને દિવાન શ્રી. હીરાલાલભાઇ

અંજારીઆને અને શેઠ મેઘજીભાઇ થોભણને આ કોન્ફરન્સ ધન્યવાદ આપે છે.

ઠરાવ નં. ૧૦: (અનાથ બાળકો માટે) અનાથ બાળકોના ઉદ્ધાર માટે આગ્રામાં જૈન અનાથાલય ખોલ્યુ છે. તેના પ્રત્યે કોન્ફરન્સ સહાનુભુતિ પ્રકટ કરે છે.

ઠરાવ નં. ૧૧: શ્રીમાન્ દાનવીર શેઠ નાથૂલાલજી ગોદાવન, છોટીસાદડીવાળાએ સવા લાખ રૂપીઆ જેવી મોટી રકમ કાઢીને 'શેઠ નાથૂલાલજી ગોદાવન સ્થા જૈન ગુરૂકુળ અને પાઠશાળા' ખોલી છે અને શ્રીમાન્ શેઠ અગરચદજી ભૈરોંદાનજી શેઠિઆએ બિકાનેરમા શાસ્ત્રોદ્ધાર, કન્યાશાળા, પાઠશાળા, લાયબ્રેરી વગેરે સસ્થાઓ લગભગ બે લાખ રૂપીઆની ઉદારતાથી ખોલી છે તે બદલ આ કોન્ફરન્સ એ બને મહાશયોને ધન્યવાદ આપે છે.

ઠરાવ ન. ૧૩: (શ્રી સુખદેવ સહાય પ્રિ. પ્રેસ ઇદોરમા) કોન્ફરન્સના શ્રી સુખદેવ સહાય પ્રિ. પ્રેસને બધા સામાન સાથે શ્રી સરદારમલજી ભડારીની દેખરેખમા સ. ૧૯૮૨ ના કારતક શુદ ૧ પહેલા ઇદોર મોકલી આપવો અને અર્ધમાગધી કોષના ત્રણ ભાગ પૂરા થતાં સુધી ત્યાંજ રહે તેના ખર્ચ માટે રૂા ૪૫૦) માસિક સુધી શ્રી. સરદારમલજી ભડારીને આપવા કોષ પુરો થયા પછી પ્રેસ ઇંદોરમાં રાખવો કે બીજે સ્થળે મોકલવો ? તે ઓફીસની ઇચ્છા પર રહેશે. કોષની છપાઇનુ કામ વધુમા વધુ બે વર્ષમાં પુરૂ થવુ જોઇએ. પુસ્તકોની માલિકી કોન્ફરન્સની રહેશે. અજમેરથી ઇન્દોર પ્રેસ પહોંચાડવાનો તથા ફીટ કરવાનો જે ખર્ચ થશે તે કોન્ફરન્સ તરફથી આપવામાં આવશે. મત્રી તરીકે શ્રી. સરદારમલજી ભંડારીને નીમવામા આવે છે. પ્રેસની વર્કિંગ કમિટી ઇન્દોરમા બનાવી લેવાશે.

ઠરાવ નં. ૨૪: (ખાદી પ્રચાર વિષે) જૈન ધર્મના મૂળ આધાર ભૂત અહિસા ધર્મને ધ્યાનમા રાખીને આ કોન્ફરન્સ સર્વે સ્થાનકવાસી જૈન ભાઇઓ તથા બહેનોને અનુરોધ કરે છે કે, તેઓ શુદ્ધ ખાદીનો ઉપયોગ કરે.

અન્ય ઠરાવ શોક પ્રસ્તાવ અને ધન્યવાદાત્મક હતા. આ અધિવેશનમા જૈન ટ્રે. કોલેજ માટે અપીલ કરવામા આવી. કોલેજ માટે તથા પગાર ફડ માટે ૧૨ હજારનુ ફડ થયુ. મલકાપુર અધિવેશન ટીકીટોની આવકથી જ પૂર્ણ સફળ થયુ, એ આ અધિવેશનની વિશેષતા હતી. જનતા ખર્ચના ભયથી અધિવેશન કરાવતાં અચકાય છે, પરતુ આ અધિવેશને બતાવી દીધુ કે-ડેલીગેટ, વીઝીટર અને સ્વાગત સમિતિના સદસ્યોની ફીથી જ અધિવેશન જેવુ મોટુ કામ થઇ શકે છે અને આમત્રણ આપનારને યશ અને સફળતા મળી શકે છે.

અધિવેશન સાતમું

સ્થળ-મુંબઇ

કોન્ફરન્સનુ સાતમુ અધિવેશન તા૦ ૩૧-૧૨-૨૬ અને તા૦ ૧-૨ જાન્યુઆરી ૧૯૨૭ના ત્રણ દિવસોમા મુબઇ માધવબાગમા થયુ પ્રમુખ શેઠ ભેરૂદાનજી શેઠિયા, બિકાનેર નિવાસી હતા. આ અધિવેશનમા કુલ ૩૨ ઠરાવો પાસ થયા હતા. પાછળનાં બધા અધિવેશનો કરતા પ્રસ્તાવ સખ્યા વધુ હતી. મુખ્ય પ્રસ્તાવો નીચે મુજબ થયા :

ઠરાવ નં. ૧: (સ્વામી શ્રદ્ધાનદજીના ખૂન પ્રતિ દુઃખ પ્રકાશન) આપણા દેશના સુપ્રસિદ્ધ નેતા અને કર્મ-વીર સ્વામી શ્રદ્ધાનદજીનુ એક ધર્માન્ધ મુસલમાને ખૂન કર્યુ, તેને આ કોન્ફરસ મહાન રાષ્ટ્રીય હાનિ સમજીને અત્યત ખેદ તથા ખૂની પ્રત્યે તિરસ્કાર પ્રકટ કરે છે.

ઠરાવ નં. ૨: (પ્રાંતીય શાખાઓ વિષે) કોન્ફરસનુ પ્રચારકાર્ય યોગ્ય પદ્ધતિથી તથા વ્યવસ્થિત રૂપે ચલાવવા માટે પ્રત્યેક પ્રાંતમા એકેક ઓનરરી પ્રાતિક મત્રી નીમવામાં આવે છે

(બ) પ્રત્યેક પ્રાતિક મત્રીને તેમની સૂચનાનુસાર એક પગારદાર સહાયક રાખવાની રજા આપવામાં આવે છે. તેના ખર્ચ માટે ઓફીસ તરફથી અડધી સહાયતા અપાશે. આ સહાયતા રૂા. ૨૦) માસિકથી વધુ નહિ હોય બાકીના ખર્ચની વ્યવસ્થા પ્રાંતિક મત્રી કરે. તે પ્રાતમાથી એકત્રિત થયેલ રૂપિયા ફડમાથી નિયમાનુસાર જે રકમ કોન્ફરસ આપશે તેનો ઉપયોગ ઉપરોક્ત કાર્યમાં કરવાની સત્તા રહેશે.

(ક) જે સજ્જનોએ પ્રાતિકમત્રી થવા સ્વીકાર કર્યો છે અને જે ભવિષ્યમા સ્વીકાર કરશે તેમાથી કોન્ફરસ ઓફીસ પ્રાતિક મત્રીઓ નીમશે.

ઠરાવ નં. ૩: (વીર-સઘ સ્થાપવા વિષે) શ્રી. શ્વે. સ્થા જૈન સમાજના હિત માટે જીવન સમર્પણ કરનારા સજ્જનોનો એક 'વીર-સંઘ' સ્થાપવાની આવશ્યકતા આ કોન્ફરંસ સ્વીકારે છે. એને માટે આવશ્યક

નિયમોપનિયમ બનાવવા નીચેના સજ્જનોની એક કમિટિ બનાવવામાં આવે છે. આ કમિટી ત્રણ માસની અંદર પોતાનો રીપોર્ટ કાર્યકારિણી સમિતિને સોંપે ૧ શેઠ ભેરૂદાનજી શેઠિયા, ૨ શેઠ સૂરજમલ લલ્લુભાઇ, ૩ શેઠ વેલજીભાઇ લખમશી, ૪ શેઠ કુંદનમલજી ફીરોદિયા, ૫ શેઠ અમૃતલાલ દલપતભાઇ, રાણપુર, ૬ શેઠ રાજમલજી લલવાણી અને ૭ શ્રી ચિમનલાલ ચકુભાઇ શાહ મુંબઇ.

ઠરાવ નં. ૪: (સંવત્સરીની એકતા વિષે) સમસ્ત સ્થા જૈન સમાજમા સંવત્સરી–પર્વ એક જ દિવસે મનાવાય, એ જરૂરી છે. એટલા માટે નીચેના સજ્જનોની એક કમિટી નીમવામાં આવે છે. તેઓ પોતપોતાના સંપ્રદાયનો પક્ષ ન કરતા પૂર્ણ વિચારવિનિમય દ્વારા સંવત્સરી માટે એક દિવસ નિશ્ચિત કરે, તદનુસાર સમસ્ત સંઘ સંવત્સરી પાળે. તમામ મુનિ–મહારાજોને પણ પ્રાર્થના છે કે, તેઓ આ ઠરાવને અમલમાં લાવવા ઉપદેશ આપે એને પોતે પણ આનો કાર્યરૂપે અમલ કરે.

કમિટીના મેમ્બર્સ–૧. શ્રી. ચંદનમલજી મૂથા, સતારા ૨. શેઠ શ્રી. કિશનદાસજી મૂથા, અમહદનગર. ૩. શ્રી. તારાચંદજી વારીઆ, જામનગર. ૪. શ્રી. દેવીદાસજી લક્ષ્મીચંદજી થેવરિઆ, પોરબંદર.

ઠરાવ નં. ૬: (વિવિધ પ્રવૃત્તિઓની આવશ્યકતા વિષે) આપણા સમાજને સુસંગઠિત કરવા માટે પ્રત્યેક ગામ અને શહેરમાં મિત્રમંડળ, ભજનમંડળી, વ્યાપારશાળા અને સ્વયંસેવકમંડળની આવશ્યકતા આ કોન્ફરન્સ સ્વીકારે છે. અને દરેક ગામના આગેવાનોને આવાં મંડળો શીઘ્ર સ્થાપિત કરવાનો આગ્રહ કરે છે.

ઠરાવ નં. ૭: (જાતિબહિષ્કાર વિરોધી) કોઇ પણ સ્થાનના પંચ નાના દોષો માટે કોઇ વ્યક્તિ કે પરિવારનો જીવનભર માટે જાતિબહિષ્કાર ન કરે એવો આગ્રહ તેમને આ કોન્ફરન્સ કરે છે.

ઠરાવ નં. ૮ (શિક્ષણ પ્રચાર સંબંધ) આ કોન્ફરન્સ પ્રત્યેક પ્રકારના શિક્ષણ સાથે જરૂરી ધાર્મિક શિક્ષણ રખાવવા માટે એક 'સ્થા. જૈન શિક્ષા પ્રચાર વિભાગ'ની સ્થાપના કરે છે. ને નીચેના કાર્યો કરવાની સત્તા જનરલ કમિટીને આપે છે:

(૧) ગુરુકુળ જેવી સંસ્થા સ્થાપિત કરવાની આવશ્યકતા આ કોનફરંસ સ્વીકારે છે. અને જનરલ કમિટિને સૂચના કરે છે કે ફંડની અનુકુળતા થતા જ ગુરૂકુળ ખોલી દેવુ.

(૨) જ્યાં જ્યાં કોલેજ હોય ત્યા ઉચ્ચ શિક્ષણ લેનારા વિદ્યાર્થીઓ માટે છાત્રાલય ખોલવા અને સ્કોલરશીપો આપવાની વ્યવસ્થા કરવી.

(૩) ઉચ્ચ શિક્ષણ મેળવવા માટે વિદેશ જનારા વિદ્યાર્થીઓને લોન રૂપે પણ છાત્રવૃત્તિ આપવી અને કોલેજના છાત્રોને કળા–કૌશલ્ય, શિલ્પ અને વિજ્ઞાનનુ ઉચ્ચ શિક્ષણ મેળવવા માટે છાત્રવૃત્તિઓ આપવી.

(૪) પ્રૌઢ અધ્યાપકો તથા અધ્યાપિકાઓ તૈયાર કરવા (૫) સ્ત્રી–શિક્ષણને માટે સ્ત્રી-સમાજોની સ્થાપના કરવી. (૬) જૈન જ્ઞાન પ્રચારકમંડળ દ્વારા નિશ્ચિત કરેલી યોજનાને અમલમા લાવવી અને સાહિત્યનો પ્રચાર કરવો.

(૭) **હિન્દી** તથા **ગુજરાતી** બને વિભાગો માટે જુદી જુદી સેન્ટ્રલ લાયબ્રેરી સ્થાપવી તથા પબ્લિક લાયબ્રેરીઓમાં જૈન સાહિત્યનાં કબાટ રખાવવાં.

તત્પાશ્ચાત્ શેઠ મેઘજીભાઇ થોભણે કહ્યુ કે પૂનાના હવાપાણી સારાં છે, શિક્ષણના સાધનો પણ પુષ્કળ છે તથા ખર્ચ પણ ઓછો આવશે. અત પૂનામાં ઉચ્ચ શિક્ષણ લેનારા વિદ્યાર્થીઓને માટે એક બોર્ડિંગ ખોલવાની જરૂર છે. આ માટે નીચેના સજ્જનોની એક કમિટી બનાવવી તેના હાથમાં બોર્ડિંગ સંબંધી સંપૂર્ણ સત્તા રહેશે.

૧. શેઠ સૂરજમલ લલ્લુભાઇ ઝવેરી, ૨. શેઠ વેલજીભાઇ લખમશી, ૩ શેઠ વૃજલાલ ખીમચંદ શાહ ૪. શેઠ મોતીલાલજી મૂથા, ૫ શેઠ કુંદનમલજી ફીરોદીયા તથા ૬. શેઠ મેઘજીભાઇ થોભણ

આ ઠરાવને શ્રી સૂરજમલ લલ્લુભાઇ ઝવેરીએ તથા બીજાઓએ અનુમોદન આપ્યુ તેથી જયજીનેન્દ્ર ધ્વનિ સાથે બોર્ડિંગ માટે ફંડ શરૂ થયુ. અને એ જ વખતે સારૂં ફંડ થયું.

ઠરાવ નં. ૯: (સાદડીના સ્થા. જૈન ભાઇઓ વિષે) જૈન ધર્મના ત્રણે સંપ્રદાયોમાં ઐક્ય અને પ્રેમભાવ ઉત્પન્ન કરવાનો સમય આવી ગયો છે. તે માટે ત્રણે સંપ્રદાયોમાં પ્રયત્નો પણ શરૂ થયા છે. તે સ્થિતિમા ઘાણેરાવ–સાદડીના સ્થાનકવાસી જૈન ભાઇઓ પ્રત્યે ત્યાના મંદિર માર્ગી ભાઇઓની તરફથી જે અન્યાય થઇ રહેલ છે તે સર્વથા અયોગ્ય છે એમ સમજીને આ કોન્ફરન્સ શ્રી શ્વે મૂ.

પૂર્વક કોન્ફરસ અને તેમના કાર્યકર્તાઓને સૂચિત કરે છે કે તેઓ આ સબધે જલ્દી યોગ્ય વ્યવસ્થા કરીને સાદડીના સ્થાનકવાસી ભાઇઓ પર જે અન્યાય થઇ રહ્યો છે તેને દૂર કરાવે અને પરસ્પરમાં પ્રેમ વધારે.

આ કોન્ફરસ મારવાડ, મેવાડ, માલવા અને રાજપૂતાનાના સ્વધર્મી ભાઇઓને સૂચિત કરે છે કે તેઓ આપણા સાદડીનિવાસી સ્વધર્મી ભાઇઓ સાથે જાતિ નિયમાનુસાર બેટી વ્યવહાર શરૂ કરીને સહાયતા કરે. આ પ્રસ્તાવને સફળ બનાવવા માટે કોન્ફરસ ઓફીસ વ્યવસ્થા કરે

ઠરાવ ન. ૧૦: (શત્રુંજય તીર્થના ટેક્ષ વિરોધમાં સહાનુભૂતિ) સમસ્ત ભારતના સ્થા. જૈનોની આ પરિષદ શ્રી શત્રુંજય તીર્થ સબધી ઉપસ્થિત થયેલી પરિસ્થિતિ પર આંતરિક દુખ પ્રકટ કરે છે અને પાલીતાણાના મહારાજા તથા એજન્ટ ટુ ધી ગવર્નર જનરલના નિર્ણય વિરૂદ્ધ પોતાનો વિરોધ પ્રકટ કરે છે. આશા છે કે, બ્રિટિશ સરકાર આ વિષયમા શ્વે. જૈન બધુઓને અવશ્ય ન્યાય કરશે. મુખ્યત. પાલીતાણા નરેશની પાસે આ પરિષદ એવી આશા રાખે છે કે, શ્વે. જૈન બધુઓની ધાર્મિક ભાવના અને હક્કને માની લેવાની ઉદારતા પ્રકટ કરશે.

ઠરાવ નં. ૧૨: (મહિલા પરિષદ વિષે) કોન્ફરસના અધિવેશનની સાથે સાથે 'મહિલા પરિષદ'નું પણ અધિવેશન અવશ્ય થવુ જોઇએ. આ મહિલા પરિષદ કોન્ફરસની એક સસ્થા છે, અત. તેનો ઓફીસ ખર્ચ કોન્ફરસ આપે.

ઠરાવ નં. ૧૬: (જોધપુર નરેશને ધન્યવાદ) માદા પશુઓની નિકાસબધી અને સવત્સરીને દિવસે હિસાબધી માટે.)

મહારાજાધિરાજ જોધપુર નરેશે પોતાના રાજ્યમા માદા પશુઓના નિકાસ સદાને માટે બધ કરી દીધો છે અને જૈનોની પ્રાર્થના સ્વીકારી સવત્સરીના દિવસે જીવહિસા બધ કરાવી છે તથા સવત્સરીની છુટ્ટી રાખવાનો હુકમ ફરમાવ્યો છે એ બદલ આ પરિષદ ધન્યવાદ આપે છે. અને આશા રાખે છે કે તેઓ ભવિષ્યમાં પણ આવા પુન્ય કાર્યોમા યોગ આપતા રહેશે. આ ઠરાવની નકલ મહારાજા જોધપુર નરેશની સેવામા તાર દ્વારા મોકલવામાં આવે.

ઠરાવ નં. ૧૭: શ્રાવિકાશ્રમની આવશ્યકતા માટે આ કોન્ફરન્સ શ્રાવિકાશ્રમની આવશ્યકતા સ્વીકારે છે, અને મુબઇમાં શ્રાવિકાશ્રમ સ્થાપિત કરીને અથવા અન્ય ચાલુ સસ્થાઓ સાથે ચલાવવા માટે પ્રમુખ સાહેબે જે રૂા. ૧૦૦૦) આપ્યા છે. તેમાં સહાયતા દઇ ફડ વધારવા માટે અન્ય ભાઇઓ તથા બ્હેનોને આગ્રહપૂર્વક અનુરોધ કરે છે. તે સાથે જ બીજી સંસ્થાની સાથે સાથે ચલાવવામાં ધર્મ સબધી કોઇ બાધા ઉપસ્થિત ન થાય. તેનુ પુરૂ ધ્યાન રાખવાની સૂચના કરે છે.

મારવાડ માટે બીકાનેરમાં શેઠિયાજી દ્વારા સ્થાપિત શ્રાવિકા શ્રમનો લાભ લેવા માટે મારવાડી બહેનોનુ ધ્યાન ખેચવામાં આવે છે અને આ ઉદારતા બદલ શ્રી. શેઠિયાજીને હાર્દિક ધન્યવાદ આપવામાં આવે છે.

ઠરાવ ન. ૧૮: (ગોરક્ષા અને પશુરક્ષા વિષે) આ પરિષદ મુબઇ સરકારને પ્રાર્થના કરે છે કે ગૌવધ તથા દૂધ દેનારાં અને ખેતીને લાયક ઉપયોગી પશુઓનો વધ બધ કરવાનો પ્રબંધ કરે. મુબઇ કાઉન્સીલના બધા સદસ્યોને આગ્રહપૂર્વક નિવેદન કરે છે કે તેઓ આ ઠરાવને સફળ બનાવવા માટે યોગ્ય પ્રયાસ કરે.

ઠરાવ ન. ૧૯: (જૈન–ગણના વિષે) ભારતના સમસ્ત સ્થા. જૈનોની ડિરેક્ટરી કોન્ફરસના ખર્ચે પ્રતિ દશ વર્ષે તૈયાર કરવામા આવે. પ્રથમ ડિરેક્ટરી (જૈન ગણના) કોન્ફરસ તરફથી ચાલુ વર્ષમાં કરવામા આવે.)

ઠરાવ નં. ૨૦: (વેજીટેબલ ઘીના બહિષ્કાર વિષે) આ કોન્ફરસ ઠરાવ કરે છે કે વર્તમાનમા ભારત વર્ષમા વધુ પ્રમાણમા વેજીટેબલ ઘીના પ્રચારથી દેશના દુધારૂ અને ખેતીને ઉપયોગી પશુઓને હાનિ પહોચવાની સભાવના છે. આ વેજીટેબલ ઘીમા ચરબીનુ મિશ્રણ થાય છે અને સ્વાસ્થ્ય સુધારક તત્ત્વ તેમા બિલકુલ નહિ હોવાથી ધાર્મિક ક્ષતિની સાથે સ્વાસ્થ્યની પણ હાનિ થાય છે અત: આ પરિષદ પ્રસ્તાવ કરે છે કે અહિસા અને આરોગ્યને લક્ષ્યમાં રાખીને વેજીટેબલ ઘીનો સર્વથા બહિષ્કાર કરવામા આવે અને તેના પ્રચારમા કોઇ પ્રકારે ઉત્તેજન આપવુ નહિ.

ઠરાવ ન. ૨૧: (બર્માના બૌદ્ધોનો માસાહાર રોકવા વિષે.) બર્મા પ્રાંતમા રહેનારી બર્મી પ્રજા પોતાના બૌદ્ધસિદ્ધાત વિરૂદ્ધ માંસાહાર કરે છે. અત. આ કોન્ફરસ પ્રસ્તાવ કરે છે કે સારા ઉપદેશકોને મોકલીને બર્માંમાં માંસાહાર રોકવાનો પ્રબધ કરવો.

ઠરાવ નં. ૨૨: (ત્રણે જૈન ફિરકાઓની કૉન્ફરન્સ વિષે) સમાજની સાથે સંબંધ ધરાવનારા અનેક સામાન્ય પ્રશ્નો સમાજની સામે આવે છે એ પ્રશ્નોનું નિરાકરણ કરવા માટે તથા જૈનોના ત્રણે ફિરકામાં પરસ્પર સદ્‌ભાવ પેદા કરવા માટે આ પરિષદ ત્રણે સંપ્રદાયોની એક સંયુક્ત કૉન્ફરન્સની આવશ્યકતા સ્વીકારે છે અને આવી પ્રવૃત્તિ શરૂ કરવા માટે બધા જૈન ફિરકાઓના આગેવાનોની એક કમિટી બોલાવવા માટે કૉન્ફરન્સ ઓફિસને સત્તા આપે છે.

ઠરાવ નં. ૨૩: (સાધુ–સમેલનની આવશ્યકતા વિષે) ભારતના સમસ્ત સ્થા. જૈન સાધુ મુનિરાજોનું સમેલન યથા શીઘ્ર ભરવાની આવશ્યકતા આ કૉન્ફરસ સ્વીકારે છે. એ માટે યોગ્ય પ્રબંધ કરવાની સૂચના કૉન્ફરસ ઓફીસને કરવામા આવે છે.

ઠરાવ નં. ૨૪: (ચાર આનાને બદલે એક રૂપિયાના ફંડ માટે) કૉન્ફરસે જે પાવલી ફંડ કાયમ કર્યું છે, તેને બદલે હવેથી પ્રત્યેક સ્થા. જૈન ઘર પાસેથી રૂા. ૧) પ્રતિ વર્ષ લેવાનું ઠરાવવામાં આવે છે. પ્રતિનિધિ તે જ થઇ શકશે જેમણે વાર્ષિક રૂા. ૧) આપ્યો હશે.

ઠરાવ નં. ૨૮: (ગુરૂકુળ શરૂ કરવા વિષે.) બ્રહ્મચર્યાશ્રમ અથવા ગુરૂકુળની આપણા સમાજને ઘણી જ જરૂરત છે, એનાથી આપણે સાચા સેવકો પેદા કરી શકશુ. જો કૉન્ફરન્સ આવી સ્વતંત્ર સંસ્થા માટે આવશ્યક સહાયતા ન આપી શકે તો જૈન ટ્રે. કૉલેજની સાથે જ આ કામ ચલાવવું. કૉલેજને મળનારી ગ્રાન્ટ (સહાયતા)થી ત્રણ વર્ષ સુધી કામ ચલાવી શકાય એવી યોજના થઇ શકે છે. આ સંબંધે નિર્ણય કરવાની સત્તા નીચેના સદસ્યોની કમિટીને આપવામાં આવે છે. તેઓ યથા શીઘ્ર પોતાનો અભિપ્રાય પ્રકટ કરે.

૧ શેઠ ભૈરોદાનજી સેઠિયા બિકાનેર, ૨ શ્રી શેઠ બરદભાણજી પિત્તલ્યા રતલામ, ૩ શ્રી દુર્લભજીભાઇ ઝવેરી જયપુર, ૪ શ્રી આનંદરાજજી સુરાણા જોધપુર, ૫ શ્રી બાબુ હુકમીચંદજી સુરાણા ઉદેપુર, ૬ શ્રી પૂનમચંદજી ખીવસરા બ્યાવર, શ્રી મગનમલજી કોચેટા ભવાલ.

બાકીના ઠરાવો ધન્યવાદાત્મક હતા.

આ અધિવેશનની સાથે સ્થા. જૈન મહિલા પરિષદનું પણ આયોજન થયું હતું. જેમા શ્રી. આનંદકુંવરબાઇ પિત્તલિયા, (રતલામ) વગેરેનાં ભાષણો થયાં હતાં.

મહિલા સમાજને માટે કેટલાયે ઉપયોગી તથા પ્રગતિશીલ પ્રસ્તાવો પણ પાસ થયા હતા શિક્ષા પ્રચાર, ગૃહોદ્યોગ, પર્દા પ્રથા પરિત્યાગ તથા મૃત્યુ પછી શોક રાખવાની પ્રથા આદિને સમાપ્ત કરવાના આદિ પ્રસ્તાવો પાસ થયા હતા.

અધિવેશન આઠમું

સ્થાન–બિકાનેર (રાજસ્થાન), સમય. તા૦ ૬–૭–૮ ઓકટોબર ૧૯૨૭ કૉન્ફરંસનું આઠમું અધિવેશન સન ૧૯૨૭ માં તા૦ ૬–૭–૮ ઓકટોબરે શ્રી. મિલાપચંદજી બેદ (ઝાંસીવાળા)ના ખર્ચે બિકાનેરમાં થયું.

પ્રમુખ–જૈન તત્ત્વજ્ઞ, પ્રખર વિચારક શ્રીયુત વાડીલાલ મોતીલાલ શાહ હતા. સ્વાગતાધ્યક્ષ શ્રીમાન્ મિલાપચંદજી વૈદ, બિકાનેર હતા આ અધિવેશનમા લગભગ ૪૦૦૦ પ્રતિનિધિઓ અને પ્રેક્ષકોની હાજરી હતી. મહિલાઓ પણ પુષ્કળ સંખ્યામાં હતી

આ અધિવેશનની સફળતા માટે દેશના ગણ્યમાન નેતાએ મહાત્મા ગાંધીજી, લાલા લાજપતરાય, પં. અર્જુનલાલજી સેઠી, શ્રી ચંપતરાયજી જૈન બેરિસ્ટર, શ્રી એ. બી. લઠ્ઠે કોલાપુર દિવાન, શેઠ બિરલાજી, શ્રી અંબાલાલ સારાભાઇ, શ્રી. નાનાલાલ દલપતરામ કવિ, બ્રહ્મચારી શીતલ પ્રસાદજી વગેરેના તથા શ્રી શ્વે. મૂર્તિ. પૂ. કૉન્ફરન્સ વગેરે સંસ્થાઓના શુભ સંદેશા આવ્યા હતા.

આ અધિવેશનમાં કુલ ૨૮ ઠરાવો પાસ થયા હતા તેમાંથી મુખ્ય નીચે આપ્યા છે:

પ્રસ્તાવ ૧-(જૈનોની અખંડ એકતા માટે)

જૈન ધર્મની ઉજ્જવલતા અને જૈન સમાજની રક્ષા તથા પ્રગતિ માટે આ કૉન્ફરસ ઇચ્છે છે કે, ભિન્ન ભિન્ન જૈન સંપ્રદાયોના ત્યાગી તથા ગૃહસ્થ ઉપદેશકો, નેતાઓ તથા પત્રકારોમાં આજકાલ (વર્તમાનમા) ધાર્મિક પ્રેમના રૂપે જે ખોટા દેખાવો દેખાય છે તેને દૂર કરવા માટે પૂર્ણ સાવધાની રખાય, જૈન તત્ત્વજ્ઞાન, વ્યવહારિક શિક્ષણ, સમાજસુધાર અને સ્વદેશસેવાથી સંબદ્ધિત બધાં કાર્યો સર્વ સંપ્રદાયોના સંયુક્ત બળથી કરવાં. આ માટે કૉન્ફરસના મુંબઇ અધિવેશન વખતે પ્ર. નં. ૨૨ કર્યો હતો તેનો વહેલી તકે અમલ થાય એમ આ કૉન્ફરસ ઇચ્છે છે.

પ્રસ્તાવ નં. ૨: (સાર્વજનિક જીવદયા ખાતું, ઘાટકોપરની પ્રશંસા) દૂધારૂ ગાયો, ભેંસો તથા તેના

બચ્ચાંને કસાઇખાને જતા બચાવીને તેની જીવન રક્ષાનુ જે મહાન કાર્ય ઘાટકોપર સાર્વજનિક જીવદયા ખાતુ કરી રહેલ છે, તેની આ કોન્ફરન્સ પ્રસશા કરે છે અને બધા સભ્યોને તથા ટ્રસ્ટીઓને ભલામણ કરે છે કે તેઓ આ સસ્થાની તન, મન, ધનથી યોગ્ય મદદ કરે.

પ્રસ્તાવ ન. ૩: કોન્ફરસના વિધાનમા સશોધન કરવા માટે નિમ્નોક્ત સજ્જનોની એક કમિટી નીમવામાં આવે છે આ કમિટી વિધાનનો મુસદ્દો બનાવીને જનરલ કમિટીના સદસ્યોને પોસ્ટ દ્વારા મોકલી તેમનો અભિપ્રાય જાણે અને યોગ્ય પ્રતીત થયે તદનુસાર સુધારા કરી નવુ વિધાન છપાવીને પ્રગટ કરે.

૧ સભાપતિજી
૨. રેસીડેન્ટ જનરલ સેક્રેટરી
૩. મેઘજીભાઇ થોભણભાઇ મુબઇ
૪. સૂરજમલ લલ્લુભાઇ ઝવેરી ,,
૫. કુદનમલજી ફીરોદિયા, અહમદનગર
૬. નગીનદાસ અમુલખરાય, ઘાટકોપર
૭. અમૃતલાલ રાયચદ ઝવેરી, મુબઇ

પ્રસ્તાવન. ૯: (જૈન અધ્યાપકો બનાવવા સબધી) જૈનશાળાઓ તથા ધાર્મિક જ્ઞાન સાથે પ્રાથમિક શિક્ષણ આપતી આપણી જૈન સ્કૂલો માટે જૈન શિક્ષકોની કમી ન રહે એટલા માટે જ્યા જ્યા સરકારો તથા દેશી રાજ્યો તરફથી ટ્રેનીંગ કોલેજો ચાલતી હોય ત્યાના જૈન વિદ્વાનો (સ્કોલરો)ને જૈન ધર્મ સબધી શિક્ષણ આપવાની તથા તેમની ધાર્મિક પરીક્ષા લેવાની વ્યવસ્થા સાથે તેમને છાત્રવૃત્તિઓ આપવામાં આવે.

પસ્તાવ ન. ૧૦: (જૈન પ્રકાશની વ્યવસ્થા સબધી) આ કોન્ફરસ આગ્રહ કરે છે કે–ધર્મ, સઘ અને કોન્ફરસના હિત ખાતર જૈન પ્રકાશની વ્યવસ્થા સભાપતિ અત્યારથી પોતાના હસ્તક રાખે અને તેની હિદી તથા ગુજરાતી જુદી જુદી આવૃત્તિઓ કાઢે.

પ્રસ્તાવ ન. ૧૧: (જૈનોમાં રોટી–બેટી વ્યવહાર કરવા સબધી) ઉચ્ચ કોટીની જાતિઓમાથી જેઓ જાહેર રીતે જૈન ધર્મ સ્વીકાર કરે, તેમની સાથે રોટી તથા બેટીનો વ્યવહાર કરવો એ જૈનોનુ કર્તવ્ય છે. એવો આ કોન્ફરસ નિશ્ચય કરે છે

પ્રસ્તાવ નં. ૧૨: (બોર્ડિંગોને સહાયતા માટે) જેતપુર (કાઠિયાવાડ)મા સ્થા. જૈન વિદ્યાર્થીઓને માટે એક બોર્ડિંગ હાઉસ ખોલવામા આવે તો એને માટે પાંચ વર્ષ સુધી માસિક રૂ. ૭૫) ભાડાવાલુ પોતાનુ મકાન વગર ભાડે આપવા અને બીજી માસિક રૂ. ૨૫)ની આવક કરાવી દેવા બોર્ડિંગને ૫૦ ગાદલાં ભેટ દેવાનુ વચન જેતપુર નિવાસી ભાઇ જીવરાજ દેવચદ દલાલની તરફથી મલ્યુ. એ ઉપરથી આ કોન્ફરસ ઠરાવે છે કે, ઉપર પ્રમાણેની વ્યવસ્થાનુસાર સસ્થા શરૂ થાય ત્યારથી પાંચ વર્ષ સુધી સસ્થાને વ્યવહારિક શિક્ષણ ફંડમાથી માસિક રૂ. ૫૦)ની સહાયતા આપવામાં આવે. સસ્થામા ધાર્મિક શિક્ષણની ગોઠવણુ જરૂર કરવી પડશે.

એવી જ રીતે જયપુરમાં અને ઓસિયાં (મારવાડ)ની આસપાસ પણ બોર્ડિંગ ખોલવામા આવે તો કોન્ફરસની તરફથી માસિક ૫૦), ૫૦) રૂ. ની સહાયતા આપવાનુ ઠરાવ્યુ.

પ્રસ્તાવ ન. ૨૦: (નિરાશ્રિતો માટે)–૧ શ્રી. અમૃતલાલ રાયચદ ઝવેરી, ૨ શ્રી. જેઠાલાલ સઘવી, ૩ શ્રી. મોતીલાલ મૂથા તથા ૪ શ્રી જીવરાજ દેવચદ દલાલની એક કમિટી બનાવવામા આવે છે. આ કમિટી હિદના કોઇ પણ ભાગમાંથી અપગ જૈનો, વિધવાઓ અને અનાથ બાળકોને શોધી તેમની રક્ષા માટે સ્થપાયેલી સસ્થાઓમાં તેમને પહોચાડે અને અને શકય હોય તો તેને ધાર્મિક શિક્ષણની ગોઠવણ કરાવે. આ કામ માટે નિરાશ્રિત ફડમાથી રૂ. ૫૦૦ની રકમ શ્રી અમૃતલાલ રાયચદ ઝવેરીને સોપવાનુ ઠરાવવામાં આવે છે

પ્રસ્તાવ નં. ૨૫: (સાદડી પ્રકરણ સબંધી) (અ) મારવાડ, મેવાડ તથા માળવાના સ્થાનકવાસી જૈનભાઇઓને આ કોન્ફરસ આગ્રહપૂર્વક ભલામણ કરે છે કે ઘાણેરાવ સાદડીમાં સ્વધર્મી ભાઇઓને ધર્મ માટે જે મુશ્કેલીઓ પડે છે તે બાબત વિચાર કરીને તેમની સાથે પ્રેમપૂર્વક કન્યા વ્યવહાર ચાલુ કરે.

(બ) ગોડવાડ પ્રાન્તના શ્વે મૂર્તિપૂજક તથા સ્થા જૈનો વચ્ચે સેકડો વર્ષો થયાં લગ્નવ્યવહાર હતો તે કેટલાક ધાર્મિક ઝઘડાને નિમિત્તે સામાજિક ઐક્યમા જે વિઘ્ન નખાયું છે તેને દૂર કરવા માટે તથા સામાજીક વ્યવહારમાં વચ્ચે ન પડવાની મુનિ–મહારાજોને પ્રાર્થના કરવા માટે શ્વે. મૂ. પૂ. કોન્ફરંસ ઓફિસને સમસ્ત જૈન સમાજની હિત દૃષ્ટિથી આ કોન્ફરન્સ આગ્રહપૂર્વક ભલામણ કરે છે કે.

(क) आ प्रस्तावने क्रियान्वित करवा माटे आवश्यक कार्यवाही करवानी सत्ता सभापतिजीने आपवामा आवे छे

प्रस्ताव नं. २६: (सादगी धारण करनारी विधवा ब्हेनोने धन्यवाद).

श्रीमती केशरब्हेन (नथमलजी चोरडियानी सुपुत्री), श्रीमती आशीबाइ (श्री गणुपतदासजी पुगलियानी सुपुत्री), श्री. जीवाबाइ (श्री पन्नालालजी मिस्त्रीनी सुपुत्री), समीबाइ (श्री. चतुर्भुजजी वोरानी सुपुत्री): आदि विधवा ब्हेनोए दागीना तथा रगीन वस्त्रो पहेरवानो त्याग करीने शुद्ध खादी पहेरवानी प्रतिज्ञा लीधी छे ते माटे आ कोन्फरन्स तेमने धन्यवाद आपे छे अने एमनु अनुकरण करवानी बीजी विधवा ब्हेनोने भलामण करे छे.

अधिवेशन नवमुं

(स्थान. अजमेर समय–ता० २२–२३–२४–२५ एप्रिल १९३३) श्री अ. भा. श्वे. स्था जैन कोन्फरन्सनु नवमु अधिवेशन साडा पांच वर्ष बाद अजमेरमां ता० २२–२३–२४ एप्रिल ई. स. १९३३ मा सपन्न थयु तेना प्रमुख–श्रीयुत हेमचदभाइ रामजी भाइ म्हेता (भावनगर) हता. स्वागत प्रमुख–दानवीर रा. ब. शेठ ज्वालाप्रसादजी झवेरी हता. आ अधिवेशन विगत अधिवेशनोथी अधिक महत्त्वपूर्ण हतु. पहेलाना अधिवेशनोमा प्राय. बधा ठरावो मुख्यत भलामण रूपे थता, परतु आ अधिवेशनना प्रस्तावोमा स्पष्ट निर्देश अपाएल हता

एटलु मानवु पडशे के अजमेर अधिवेशने स्था. जैन समाजमां क्रान्तिनी चिनगारी प्रकट करी हती. श्री बृहत्साधु सम्मेलननी साथे साथे ज आ अधिवेशन होवाथी ४०-४५ हजारनी हाजरी आ वखते हती. अधिवेशन माटे खास 'लोंकाशाह नगर' वसाव्यु हतु. आ अधिवेशन अभूतपूर्व हतु.

आ अधिवेशनमां आभार प्रस्तावो सिवाय २५ प्रस्तावो पसार कर्या हता. तेमाथी मुख्य नीचे मुजब छे:

प्रस्ताव नं. २: (जेलनिवासी श्री. पूनमचदजी रांका प्रत्ये सहानुभूति) आ कोन्फरसने श्री. पूनमचंदजी राका (नागपुर) जेवा धार्मिक नेतानी अनुपस्थिति माटे खेद छे. तेमणे ता. ४ मार्चथी जेलमा लीधेल अनशनत माटे चिन्ता छे. तेमने खंडवानी गरम जेलमा मोकलेल छे तेथी आ कोन्फरस सरकारने प्रार्थना करे छे के तेमनी मागणीओ मजुर करे अथवा तेमने जेलथी जल्दी मुकत करे.

प्रस्ताव न. ३: (धार्मिक संस्थाओनी सगठित व्यवस्था संबधी) आ कोन्फरन्स प्रस्ताव करे छे के हिंदुस्तानमा स्था. जैनोनी ज्या ज्या धार्मिक अने व्यवहारिक सस्थाओ चाले छे अथवा जे नवी शरु थाय ते सस्थाओ तरफथी शिक्षणक्रम, पाठ्यपुस्तको, फड, बाळक–बाळिकाओनी सख्या आदि आवश्यक विवरण मंगावीने एकत्र करवामां आवे अने शिक्षण परिषदना प्रस्ताव पर ध्यान दइने हवे शुं कार्य करवा योग्य छे? ते उपर सलाहकार अने परीक्षकसमिति जेवा कार्य पुरा करवा माटे एक बोर्ड बनाववुं आ बोर्डमां दरेक प्रात तरफथी १–१. मेम्बर नीमवा अने सर्व शिक्षण सस्था मळीने पाच सभ्यो आ बोर्डमां मोकले.

प्रसातवन. ४: (वीर संघ सबधी) श्री श्वे. स्थानकवासी जैन समाजना हितार्थे स्वय पोतानु जीवन समर्पण करनारा सज्जनोनो वीर सघ अने त्यागी वर्ग (ब्रह्मचारी वर्ग) स्थापवानी आवश्यकतानो आ कोन्फरंस स्वीकार करे छे. आ माटे कया कयां साधनोनी आवश्यकता छे? ए साधनो कइ रीते एकत्र करवा, कया कया सेवकोनी केवी योग्यता होवी जोइए, संघनो कार्यक्रम अने तेना नियमोथी नियम बनाववा इत्यादि दरेक विषयनो निर्णय करवा माटे निम्नोक्त सज्जनोनी एक कमिटी नीमवामां आवे छे. उक्त बने वर्गो द्वारा जैन धर्मनो प्रचार पण करवामां आवशे. माटे आ सबधमां आजथी त्रण मासनी अदर आ कमिटी पोतानी योजना तैयार करीने जैन-प्रकाशमां प्रकट करे अने जनरल कमिटीमा रजु करे. आ सबधमा जे कइ सूचनाओ करवी होय ते कमिटीना मत्रीने आपवी सदस्योनां नाम:–

प्रमुखश्री अने कोन्फरंसना मत्री

श्री. चिमनलाल पोपटलाल शाह मुबइ
श्री. वेलजीभाइ लखमशी नथुभाइ ,,
श्री. जेठालालभाइ रामजी ,,
डॉ. वृजलाल ध. मेघाणी ,,
लाला जगन्नाथजी जैन ,, (खार)

શ્રી. મોતીલાલજી મૂથા, સતારા
શ્રી. અમૃતલાલ રાયચંદ ઝવેરી, મુબઇ
શ્રી. દુર્લભજીભાઇ ઝવેરી, જયપુર

આ કમિટીનુ કોરમ ચારનુ રહેશે મંત્રીપદે શ્રી. ચિમનલાલ ચકુભાઇ શાહ રહેશે.

પ્રસ્તાવ નં. ૫: (જૈન ફીરકાઓની એકતા સબધી જૈનોના તમામ ફીરકાઓમા પારસ્પરિક પ્રેમ વધવાથી જૈન ધર્મ પ્રગતિશીલ થઇને આગળ વધી શકે એમ આ કોન્ફરસ માને છે અને એટલા માટે પ્રસ્તાવ કરે છે કે જૈનોના અન્યાન્ય ફીરકાઓને તેમની કોન્ફરસ, પરિષદ કે સભાઓ દ્વારા પ્રેમ વધારવા તથા મતભેદો ભૂલીને ઐક્યસાધનાનાં જે જે કાર્યો સયુક્ત બળથી થઇ શકે તે બધા કાર્યો કરવાની વિનતિ કરે. (આ પ્રવૃત્તિ કોન્ફરસ ઓફિસ કરશે.)

પ્રસ્તાવ નં. ૬: (સાદડીના સ્થા. જૈનો સબધી) એકતાના આ યુગમાં ૧૮ વર્ષો થયાં સાદડી (ગોડવાડ)ના સ્થા. જૈન ભાઇઓનો શ્વે. મૂ. પૂ. જૈન ભાઇઓએ જે બહિષ્કાર કરી રાખ્યો છે તે વિષયમાં મુબઇ કોન્ફરસના પ્રસ્તાવાનુસાર શ્વે. મૂ. પૂ. જૈન કોન્ફરસને આ કોન્ફરસ તરફથી પત્રો લખાયેલા, પરંતુ તેમણે મૌન જ રાખ્યુ છે. એ વ્યવહાર પ્રત્યે આ કોન્ફરસ અત્યત અસતોષ પ્રકટ કરે છે અને શ્વે. મૂ. પૂ. જૈન કોન્ફરન્સને પુન વિનતિ કરે છે કે, તેઓ આ બહિષ્કારને દૂર કરવા માટે ભગીરથ પ્રયત્ન કરે અને એકતા સબધી એમણે કોન્ફરસમાં કરેલા પ્રસ્તાવોનો ખરો પરિચય આપે.

નોટ: આ કોન્ફરન્સ ખુશીથી નોંધ લે છે કે, શ્રીયુત ગુલાબચદજી ઢઢાની સૂચનાનુસાર સાદડીના બને પક્ષોનુ સમાધાન કરવા માટે બને પક્ષોના ચાર ચાર અને એક મધ્યસ્થ એમ નવ સજ્જનોની એક પચ કમિટી નીમીને જે નિર્ણય થાય તે બને પક્ષોએ માન્ય રાખવાનુ ઠરાવવામા આવે છે.

આપણી તરફથી ચાર નામ નીચે પ્રમાણે છે
૧ શ્રી. દુર્લભજી ઝવેરી.
૨. શ્રી. નથમલજી ચોરડિયા
૩. રા બ. શ્રી. મોતીલાલજી મૂથા
૪. શ્રી. કુંદનમલજી ફીરોદિયા
મધ્યસ્થ-૫. પ્યારેલાલજી, ઝાબુઆ દીવાન.

મૂ. પૂ. જૈનો તરફથી ચાર નામ શ્રી. ગુલાબચદજી ઢઢા દ્વારા કોન્ફરન્સ-ઓફિસ પાસેથી મંગાવી લેવા એટલે કાર્યારભ થઇ રહે.

પ્રસ્તાવ નં. ૭: (ખાદી અને સ્વદેશીપ્રેમ વધારવા સબધ) અહિસા ધર્મના કટ્ટર ઉપાસકોએ ચર્બીવાળાં અને રેશમી કપડાને ત્યાજ્ય સમજવા જોઇએ. ચર્બી વગરના સ્વદેશી તથા હાથના કાતેલા-વણેલા શુદ્ધ કપડાં વાપરવાથી સ્વદેશસેવાના ભાવ પણ પ્રકટે છે. એટલા માટે આ કોન્ફરન્સ સૌને શુદ્ધ કપડા અને સ્વદેશી ચીજો વાપરવાનો આગ્રહ કરે છે

પ્રસ્તાવ નં. ૮: (સાધુ સમેલનની કાર્યવાહીની સ્વીકૃતિ) સાધુ સમ્મેલન માટે દૂર દૂરના પ્રાન્તોમાથી અનેક કષ્ટો સહીને જે મુનિરાજો અજમેર પધાર્યા છે, તેમનો આ કોન્ફરસ ઉપકાર માને છે સાધુ સમેલનનુ કાર્ય અત્યત દુસાધ્ય અને કષ્ટમય હોવા છતા મુનિવરોએ ૧૫ દિવસમાં પરિશ્રમપૂર્વક પૂરુ કર્યુ છે. આ સમેલનમાં મુનિમહારાજોએ જે યોજના બનાવી છે, તે આ કોન્ફરન્સને મજૂર છે. પૂજ્યશ્રી જવાહરલાલજી મ. આ સમેલનમાં ૧૯૩ સાધુ-સાધ્વીઓ તરફથી આવે છે એવુ ફોર્મ ભરીને આવેલ છે, યોજનાઓ બનાવવામાં વખતોવખત સાથે રહીને સમતિ આપી રહેલ છે માટે એ યોજનાઓ એમને પણ બધનકારક છે.

એ યોજનાઓ સમસ્ત સ્થા. જૈન સાધુઓ માટે બનાવેલ છે, જે હાજર અને ગેરહાજર તમામ સાધુ-સાધ્વીઓ માટે બધનકારક છે, એમ આ કોન્ફરસ ઠરાવે છે.

પ્રસ્તાવ નં. ૧૦: (સાધુ સમેલનના નિયમો પળાવવા માટે શ્રાવક સમિતિ) સાધુ સમેલન તરફથી પ્રદત્ત આજ્ઞા અને ચતુર્વિધ શ્રી સઘને કરેલી પ્રાર્થનાને શિરોધાર્ય કરીને સાધુ સમેલનના નિયમોનુ યોગ્ય પાલન કરાવવા માટે આ કોન્ફરન્સને એક **સ્ટેન્ડિગ કમિટી** બનાવવાની આવશ્યક્તા જણાય છે. ઉક્ત કમિટીમા ૩૮ પ્રાતોના ૩૮ મેમ્બર ચૂટવા. તે ઉપરાત પ્રમુખ અને બન્ને મંત્રીઓ મળીને કુલ ૪૧ મેમ્બર રહે. તેઓ બીજા ૧૦ મેમ્બરોને કો-ઓપ્ટ કરે. ઉપરોક્ત ક્રમથી પ્રાંતવાર નામ નીચે પ્રમાણે ચૂંટાયા છે.

૧. રા. સા. લાલા ટેકચદજી જૈન, ઝડિયાલા.
૨. શ્રી. ચુનીલાલજી જૈન, ડેરા ઇસ્માઇલખાન.

૩. લાલા ગોકળચંદજી નાહર, દિલ્હી.
૪. શેઠ આણંદરાજજી સુરાણા, જોધપુર.
૫. શ્રી. ભૈરોંદાનજી શેઠિયા, બિકાનેર.
૬. શ્રી. અનોપચંદજી પૂનમિઆ, સાદડી.
૭. શ્રી. કેશુલાલજી તાકડિયા, ઉદયપુર.
૮. શ્રી. કન્હૈયાલાલજી ભંડારી, ઇન્દૌર.
૯. શ્રી. હીરાલાલજી નાંદેચા, ખાચરોદ.
૧૦. શ્રી. ચોથમલજી મૂથા, ઉજ્જૈન.
૧૧. શ્રી. કલ્યાણમલજી બેદ, અજમેર.
૧૨. શ્રી. સરદારમલજી છાજેડ, શાહપુરા.
૧૩. શ્રી. સુલ્તાનસિંહજી જૈન, બડૌન.
૧૪. શ્રી. ફૂલચંદજી જૈન, કાનપુર
૧૫. શ્રી. અચલસિંહજી જૈન, આગ્રા.
૧૬ (બુંદેલખંડ તરફથી નામ આવે તે.)
૧૭. શ્રી દીપચંદજી ગોઠી, બેતુલ.
૧૮. શ્રી સુગનચંદજી લુણાવત, ધામક.
૧૯. શ્રી. રતિલાલ હાકેમચંદ, કલોલ.
૨૦. શ્રી. વાડીલાલ ડાહ્યાભાઇ, અમદાવાદ.
૨૧. શ્રી. જેસિંગભાઇ હરખચંદ ,,
૨૨. ડૉ. પોપટલાલ ત્રિકમલાલ સંઘવી
૨૩. શ્રી. મોહનલાલ મોતીચંદ, ગઢડા,
૨૪. શ્રી. પુરુસોત્તમ ઝવેરચંદ, જૂનાગઢ.
૨૫ શ્રી ઊમરશી કાનજી, દેશલપુર.
૨૬. શ્રી. કુન્દનમલજી ફીરોદિયા, અહમદનગર.
૨૭ શ્રી દી બ. મોતીલાલજી મૂથા, સતારા.
૨૮. શ્રી. પૂનમચંદજી નાહટા, ભુસાવળ.

આ જનરલ સ્ટેન્ડિંગ કમિટીના મેમ્બર આગામી કૉન્ફરન્સ જ્યાં સુધી નવી કમિટી ન ચૂંટે ત્યાં સુધી કાયમ રહેશે. કોઇ પણ સાધુ–સાધ્વી શિથિલ બને અને શ્રાવકો તરફથી તેમને માટે યોગ્ય કાર્યવાહી કરવાની માગણી સાધુઓની કમિટીને કરી હોય તો ૩ માસમાં તે યોગ્ય કાર્યવાહી કરે. જો તે તદનુસાર ન કરે અને જરૂરી પગલા ન લે તો આ સ્ટેન્ડિંગ કમિટી તે સંબંધી વિચાર કરીને અંતિમ નિર્ણય કરે આ રીતનો આ કોન્ફરન્સ નિર્ણય કરે છે

પ્રસ્તાવ નં. ૧૧: (આગમ વિદ્યા પ્રચાર ફંડ સંબંધી.) આ સભા શ્રીયુત હંસરાજભાઇ લક્ષ્મીચંદની તરફથી આવેલ 'શ્રી હંસરાજ જિનાગમ વિદ્યા પ્રચારક ફંડ'ની યોજના વાચીને તદનુસાર તેમના રૂા. ૧૫,૦૦૦ની ભેટ સધન્યવાદ સ્વીકાર કરવાનું ઠરાવે છે. અને આ વિષે તેમની સાથે સમસ્ત પ્રબંધ કરવાનો અધિકાર જનરલ કમિટીને આપે છે તથા શ્રી હંસરાજભાઇને વિનંતિ કરવાનું ઠરાવે છે કે યથાસંભવ ગ્રન્થોનું પ્રકાશન હિંદી ભાષામાં હોવાથી વધુ ઉપયોગી થશે.

પ્રસ્તાવ નં. ૧૨: (કુપ્રથાઓને ત્યાગવા સંબંધી.) આપણા સમાજમાં ચાલતી નીચેની પ્રથાઓ ધર્મવિરુદ્ધ અને અનુચિત છે જેમ કે કન્યાવિક્રય, વરવિક્રય, વૃદ્ધ-વિવાહ, બાલવિવાહ, બહુવિવાહ, અનમેલ વિવાહ, મૃત્યુ-ભોજન, વેશ્યાનૃત્ય, આતશબાજી, હાથીદાંત–રેશમ આદિને માંગલિક સમજી ઉપયોગ કરવો. વિધવાઓને અનાદર દૃષ્ટિએ દેખવી, અશ્લીલ ગીતો (ફટાણા) ગાવા, હોળી ખેલવી, લૌકિક પર્વો મનાવવા, મિથ્યાત્વી દેવ–દેવીઓની માનતા આદિ બાબતો જલ્દી બંધ કરાય, એવી સાધુ સંમેલનની પણ સૂચના છે. અત. આ કોન્ફરંસ તમામ જૈન ભાઇઓને આગ્રહ કરે છે કે આ બધા કુરિવાજોને યથાશિઘ્ર છોડી દે–દૂર કરે.

પ્રસ્તાવ નં. ૧૩ (ધાર્મિક ઉત્સવોમા ખર્ચ ઘટાડવા બાબત.) ધર્મ નિમિત્તે થતા તપ મહોત્સવ, દીક્ષા મહોત્સવ, સંથારા મહોત્સવ, ચાતુર્માસમા દર્શનાર્થ આવાગમન, લોચ મહોત્સવ, મૃત્યુ મહોત્સવ આદિના આમંત્રણ આપવા, આડંબરભર્યા ઉત્સવ કરવા, અધિકાધિક ખર્ચ કરવો–આ બધું ધાર્મિક અને આર્થિક દૃષ્ટિએ લાભપ્રદ નથી. સાધુ સંમેલનનું પણ એવું જ મંતવ્ય છે અત. ઉપરોક્ત બાબતોના ખર્ચ ઘટાડવામા આવે.

પ્રસ્તાવ નં. ૧૪: (સિદ્ધાન્તશાળા સંબંધી.) વૈરાગીઓને ધાર્મિક શિક્ષણ આપવા માટે અનુકૂળ સ્થાને 'સિદ્ધાંતશાળા' ખોલવી આવશ્યક જણાય છે હાલ તુરત તો શેઠ હંસરાજભાઇના દાનનું કાર્ય પ્રારંભ થાય ત્યાં જ સિદ્ધાંત શાળાનું કાર્ય શરૂ કરવું દીક્ષિત મુનિરાજો પણ કલ્પાનુસાર સિદ્ધાંતશાળાનો લાભ લઇ શકશે. પાંચ વૈરાગી માસિક રૂા ૧૦) શ્રી જૈન ટ્રેનિંગ કોલેજ ફંડમાંથી આપવા. સિદ્ધાંતશાળાની વ્યવસ્થા, નિમયોપનિયમ નિશ્ચિત કરવા અને આચાર સંબંધી ક્રિયાઓમાં વિદ્વાન મુનિરાજોની સલાહ અનિવાર્ય ગણાશે.

પ્રસ્તાવ નં. ૧૬: (શ્રાવકજીવન સંબંધી) મુનિવર્ગના સુધારની જેટલી જરૂર છે, તેટલી જ શ્રાવક શ્રાવિકાઓના જીવનસુધાર અને ધાર્મિક ભાવનામા વૃદ્ધિ કરવાની પણ આવશ્યકતા છે. આ અંગે સાધુ

સમેલન તરફથી નીચેની સૂચનાઓ આવી છે તેનુ પાલન કરવાનો તમામ ભાઇઓ અને બ્હેનોને આ કોન્ફરસ આગ્રહ કરે છેઃ

(૧) બાળક-બાળિકાઓ પાચ વર્ષના થાય ત્યારથી ધાર્મિક શિક્ષણ આપવુ.

(૨) ૧૮ વર્ષ સુધી છોકરાને અને ૧૪ વર્ષ સુધી છોકરીને બ્રહ્મચારી રાખવા.

(૩) ૭ પર્વ તિથિઓને દિવસે લીલોત્રીનો ત્યાગ કરવો.

(૪) રાત્રિભોજનનો ત્યાગ કરવો.

(૫) કદમૂળ ખાવાનો ત્યાગ કરવો જમણવારમા કદમૂળનો ઉપયોગ ન કરવો.

(૬) પર્વના દિવસે ઉપવાસાદિ વ્રત કરવા, બ્રહ્મચર્ય પાળવુ અને સામાયિક પ્રતિક્રમણ જરૂર કરવુ.

(૭) અભક્ષ્ય પદાર્થોનુ સેવન ન કરવુ

(૮) દરરોજ શ્રાવક-શ્રાવિકાએ ઓછામા ઓછુ સામાયિક અને સ્વાધ્યાય તો જરૂર કરવુ જોઇએ.

(૯) વિધવાઓ પ્રત્યે આદરનો વ્યવહાર કરવો જોઇએ.

(૧૦) પ્રાતવાર ૪૬ સદસ્યોની જે કમિટી સાધુ સમેલનના નિયમો પળાવવાનુ ધ્યાન રાખે તેઓ જ શ્રાવકો વિગેના ઉપરોકત નિયમ-પાલનની દેખરેખ રાખે.

પ્રસ્તાવ ન. ૯: (દાનપ્રણાલિ દ્વારા કોન્ફરસની સહાયતા સબધી.) આપણા સમાજમા દાનની નિયમિત પ્રણાલિ શરૂ થાય અને સામાજિક સુધારાનુ કાર્ય કોન્ફરસ સારી રીતે કરી શકે એટલા માટે આ કોન્ફરસ સમસ્ત સ્થાનકવાસી જૈનોને આગ્રહ કરે છે કે-

(અ) પ્રત્યેક સ્થાનકવાસી જૈનને ઘરેથી રોજ ૧ પાઇ નિયમિત કાઢવામ આવે અને એ રીતે માસિક યા ૭ માસિક રકમ એકત્ર કરીને દરેક ગામનો સઘ કોન્ફરસને મોકલતો રહે.

(બ) હિદમા દરેક સ્થાનકવાસી જૈન પોતાને ત્યાંના લગ્ન પ્રસગે કોન્ફરસને ઓછામાં ઓછો રૂા. ૧) આપે.

(ક) લગ્ન, જમણવાર, ધાર્મિક ઉત્સવ (દીક્ષા, તપ, મૃત્યુ, લોચ આદિ)ના ખર્ચ ઘટાડી બચત રકમ પારમાર્થિક કાર્યોમાં ખર્ચવા માટે કોન્ફરન્સને મોકલી આપે.

દાતાની ઇચ્છાનુસાર કોન્ફરસ સદુપયોગ કરશે.

નોટ-અ, બ અનુસાર આવેલ સહાયતાનો ઉપયોગ પાવલી ફડની માફક જુદાં જુદાં પારમાર્થિક કામોમા થશે.

પ્રસ્તાવ ન. ૧૮: (હિન્દીમા કાર્યવાહી કરવા સબધી.) હિન્દી ભાષામાં વધુ લોકો સમજે છે અને રાષ્ટ્રીય ભાવના પ્રમાણે પણ હિન્દીનો પ્રયોગ કરવા યોગ્ય છે એટલે આ કોન્ફરસ નિશ્ચય કરે છે કે, કોન્ફરન્સની કાર્યવાહી બનતાં સુધી હિદીમા કરવામા આવે.

પ્રસ્તાવ ન ૧૯: (જીવદયા સબધી.) દુધાળાં પશુઓની કત્લ થવાથી દેશનુ પશુધન નષ્ટ થાય છે તથા ધર્મ, રાષ્ટ્ર અને સમાજને ધાર્મિક તથા આર્થિક દૃષ્ટિએ ભયકર હાનિ થાય છે. તેને રોકવામા જ સાચી જીવદયા છે. અતઃ આ સબધમાં થનારા જુદી જુદી સસ્થાના પ્રયાસો અધિક ઉપયોગી અને કાર્યસાધક થાય એવો પ્રબધ કરવા માટે આ પરિષદ નિમ્નોક્ત સજ્જનોની એક સમિતિ બનાવે છે અને બધા જૈનોને પોતાને ઘેર ગાય-ભેસ રાખવા (પાળવા)નો આગ્રહ કરે છેઃ

૧. શ્રી. શેઠ બરદભાણજી પિત્તલ્યા, રતલામ.
૨ ,, અમૃતલાલ રાયચદ ઝવેરી, મુંબઇ.
૩. ,, મોતીલાલજી મૂથા, સતારા.
૪. ,, ચિમનલાલ પોપટલાલ શાહ, મુંબઇ.
૫ ,, જગજીવન દયાળ, ઘાટકોપર

પ્રસ્તાવ ન. ૨૦: (એકલવિહારી સાધુ-સાધ્વીઓ સબધી) વર્તમાનકાળે એકલવિહાર અસહ્ય હોવાથી આ કોન્ફરસ એકલા વિચરનાર સાધુ-સાધ્વીઓને ચેતવણી આપે છે કે, તેઓ આવતા અષાઢ સુદ ૧૫ સુધીમા કોઇ ને કોઇ સપ્રદાયમા ભળી જાય જો તેઓ ન ભળે તો કોઇ પણ શ્રીસઘ એકલવિહારી સાધુનુ ચાતુર્માસ ન કરાવે. વૃદ્ધાવસ્થા, અસ્વસ્થતા, આદિ અનિવાર્ય કારણવિશેષથી એકલા રહી ગયા હોય તેની વાત જુદી છે. ચારિત્ર્યહીનોએ જૈન સાધુનો વેષ રાખવો એ જૈન સમાજને દગો દેવા જેવુ છે ચારિત્ર્યહીનોને સાધુ વેષ (ધાર્મિક ચિહ્ન) રાખવાનો કોઇ હક્ક નથી. અતઃ આવા કોઇપણ વેષધારીમાં દોષ દેખાય તો સાધુવેષ ઉતારવાનો પ્રયત્ન પણ શ્રી સઘ કરી શકશે, અને કોન્ફરસ યોગ્ય કાર્યવાહી કરશે. બીમારી,

વૃદ્ધાવસ્થા આદિ કારણે વિહાર કરવા અસમર્થ સાધુઓની સેવામાં સંપ્રદાયના સાધુઓને મોકલવા જોઇએ.

પ્રસ્તાવ ન. ૨૧: (સાહિત્ય નિરીક્ષણ સંબંધી.) આપણા સમાજમાં સાહિત્ય પ્રકાશનનું કાર્ય વધારવા જરૂર છે, પરંતુ જે સાહિત્ય હોય તે સમાજ અને ધર્મને ઉપયોગી હોવું જોઇએ. અતઃ આ કોન્ફરન્સ પ્રકાશન યોગ્ય સાહિત્યને સર્ટિફાઇડ (પ્રમાણિત કરવા માટે નીચેના સાધુઓ તથા શ્રાવકોની એક સમિતિ નીમે છે. હરપ્રકારનું સાહિત્ય ઓફિસ દ્વારા આ સમિતિને મોકલીને પ્રમાણિત કરાવ્યા બાદ પ્રકટ કરવામાં આવે.)

ઉપાધ્યાય શ્રી આત્મારામજી મહારાજ.
પં. મુનિશ્રી ઘાસીલાલજી ”
શ્રી ભૈરોંદાનજી સેઠિયા, બિકાનેર.
શ્રી. બરદભાણજી પિત્તલ્યા, રતલામ
લાલા હરજસરાયજી જૈન, અમૃતસર.
ઠાકુર લક્ષ્મણસિંહજી જૈન, દેવાસ.
ધીરજલાલ કે. તુરખીઆ, બ્યાવર.

પ્રસ્તાવ ન. ૨૨: (સમાજસેવકોનું સન્માન.) આ કોન્ફરન્સ શ્રી. દુર્લભજીભાઇ ઝવેરીની અનન્ય ધર્મ-સેવાની કદર કરતા 'જૈન ધર્મવીર'ની અને શ્રી. નથમલજી ચોરડિયાને 'જૈન સમાજભૂષણ'ની ઉપાધિ (પદવી) આપે છે.

પ્રસ્તાવ ન. ૨૩: (બિકાનેર સરકારને અનુરોધ.) શ્રીમજ્જૈનાચાર્ય પૂજ્યશ્રી જવાહિરલાલજી મ. દ્વારા રચિત 'સદ્ધર્મ મંડન' અને 'ચિત્રમય અનુકંપાવિચાર' નામક જે પુસ્તકો પ્રકટ થયા છે તે વિષે બિકાનેર સરકાર તરફથી બિકાનેરના સ્થા. જૈનોને એવી નોટીસ મળી છે કે—આ પુસ્તકો જપ્ત કેમ ન કરવા? આ નોટીસનો જવાબ બિકાનેરના સ્થા. જૈનો તરફથી બિકાનેર સરકારને અપાયો છે. આશા છે કે, બિકાનેર સરકાર તેની ઉપર ન્યાય દૃષ્ટિથી વિચાર કરશે. તદપિ આ કોન્ફરન્સ બિકાનેર સરકારને પ્રાર્થના કરે છે કે આ બન્ને પુસ્તકો ધાર્મિક વિચારોના પ્રચાર માટે તથા સ્થા. જૈન સમાજને પોતાના ધર્મમાર્ગ પર સ્થિર રાખવા નિમિત્તેજ પ્રકાશીત કરેલ છે, કોઇની ધાર્મિક ભાવના પર આઘાત પહોંચાડવા માટે નહિ. આશા છે કે બિકાનેર સરકાર આ પુસ્તકો પર હસ્તક્ષેપ નહિ કરવાની કૃપા કરશે.

નોટ: આ પ્રસ્તાવની નકલ બિકાનેર નરેશને મોકલવાની સત્તા પ્રમુખશ્રીને આપવામાં આવે છે.

બાકીના પ્રસ્તાવો આભારપ્રદર્શક હતા.

આ અધિવેશનમાં લીંબડી નરેશ સર દોલતસિંહજી પધાર્યા હતા એમનો પણ આભાર માન્યો હતો.

આ અધિવેશનની સાથે સાથે શ્રી સ્થા. જૈન નવયુવક પરિષદ, મહિલા પરિષદ અને શિક્ષણ પરિષદ પણ થઇ હતી, તેની કાર્યવાહી સંક્ષિપ્તમાં હવે પછી આપી છે

શ્રી શ્વે. સ્થા. જૈન યુવક પરિષદ, અજમેર

સ્થળ: અજમેર

સમય તા. ૨૪ એપ્રિલ, ૧૯૩૩

શ્રી શ્વે. સ્થા. જૈન નવયુવક પરિષદનું અધિવેશન તા. ૨૪–૪–૩૩ ને રોજ શેઠ અચલસિંહજી જૈન (આગરા) ની અધ્યક્ષતામાં સંપન્ન થયું હતું સ્વાગતાધ્યક્ષ શ્રી. સુગનચંદજી લુણાવત (ધામણગાંવ) હતા સભામાં પાસ થએલા પ્રસ્તાવોમાંથી ખાસ ખાસ નીચે આપ્યા છે

પ્રસ્તાવના ન. ૪: (અસ્પૃશ્યતા નિવારણ) આ પરિષદ્ જૈન સિદ્ધાંતાનુસાર અસ્પૃશ્યતાનો નિષેધ કરે છે. અને અનુરોધ કરે છે કે અન્ય જૈનેતર ભાઇઓની માફક જ અસ્પૃશ્ય (હરિજન) ભાઇઓ સાથે પણ વ્યવહાર કરવામાં આવે.

પ્રસ્તાવના ન. ૫: (અહિંસક વસ્તુઓ વાપરવા સંબંધી) આ પરિષદ્ ધાર્મિક તથા દેશહિતની દૃષ્ટિએ રેશમ, હિંસક વસ્ત્ર અને હાથીદાંતના ચૂડલા વગેરે વાપરવાનો નિષેધ કરે છે અને નવયુવકો તથા નવયુવતીઓને અનુરોધ કરે છે કે કેવળ સ્વદેશી વસ્તુઓનો જ વપરાશ કરે.

પ્રસ્તાવ ન. ૬: (કુપ્રથાઓ ત્યાગવા સંબંધી) આ પરિષદ્ અયોગ્ય લગ્ન, બાળવિવાહ, વૃદ્ધવિવાહ, કન્યા-વિક્રય વરવિક્રય, ફઝુલ ખર્ચા, મૃત્યુ ભોજન આદિ કુપ્રથાઓનો સર્વથા વિરોધ કરે છે, અને પર્દાપ્રથા જે અત્યંત હાનિકારક છે તેને યથાશક્ય હટાવવાનો પ્રયત્ન કરવાનું ઠરાવે છે.

અંતમાં એક પ્રસ્તાવ ખાસ કરીને નીચેના સજ્જનોની એક કાર્યકારિણી સમિતિ બનાવી.

૧. શેઠ શ્રી અચલસિંહજી જૈન, આગરા, પ્રમુખ.
૨. લાલા મસ્તરામજી જૈન અમૃતસર મંત્રી
૩. શ્રી રતનચંદજી જૈન ” ”

૪ ઠાકુર કિશનસિંહજી ચોધરી સદસ્ય
૫. „ સુગનસિંહજી „ „
૬. ડૉ. વૃજલાલ ધ. મેઘાણી મુબઇ „
૭. શ્રી. ડાયાલાલ મણીલાલ મ્હેતા, પાલણપુર.
૮. શ્રી. સુગનચંદજી લૂણાવત, ધામણગાવ.
૯. શ્રી શાંતિલાલ દુર્લભજી ઝવેરી, જયપુર.
૧૦. શેઠ શ્રી. રાજમલજી લલવાણી, જામનેર.
૧૧. શ્રી હરલાલજી બરલોટા, પૂના.
૧૨. શ્રી. દીપચંદજી ગોઠી, બેતુલ
૧૩. શ્રી. ચાંદમલજી પારૂ, મન્દસોર.
૧૪. શ્રી. છોટેલાલજી જૈન, દિલ્હી.
૧૫ શ્રી. મગનમલજી કોચેટા, અચરપ્પાકમ.
૧૬. શ્રી. આણંદરાજજી સુરાણા, જોધપુર.
૧૭ શ્રી. અમોલખચંદજી લોઢા, બગડો.

શ્રી શ્વે. સ્થા. જન મહિલા પરિષદ, અજમેર

સ્થાન–અજમેર,

સમય તા૦ ૨૫ એપ્રિલ, ૧૯૩૩

શ્રી શ્વે૦ સ્થા. જૈન મહિલા પરિષદનુ અધિવેશન તા૦ ૨૫ ૪–૩૩ ને રોજ થયુ હતુ. અધ્યક્ષતા શ્રીમતી ભગવતી દેવી (ધર્મપત્ની શેઠ અચલસિંહજી જૈન, આગરા) એ કરી હતી. સ્વાગત ભાષણ શ્રીમતી કેશરબ્હેન ચોરડિયા (સુપુત્રી શેઠ શ્રી. નથમલજી ચોરડિયા, નીમચ)એ વાંચ્યુ હતુ. મહિલા પરિષદમા પાસ થએલા પ્રસ્તાવમાથી મુખ્ય નીચે પ્રમાણે છે.

પ્રસ્તાવ ન. ૧: (શિક્ષા પ્રચાર) આ મહિલા પરિષદ સમસ્ત જૈન સમાજની મહિલાઓમા શિક્ષાની કમી ઉપર ખેદ પ્રગટ કરે છે. અને ભવિષ્યમા પુરૂષોની માફક જ વધુમા વધુ શિક્ષા (કેળવણી) મેળવવા માટે સર્વે બ્હેનોને અનુરોધ કરે છે

પ્રસ્તાવ નં. ૨: (પર્દા–ઘુઘટ પ્રથા દૂર કરવા સબધી) આ પરિષદ પર્દા (ઘુઘટ)ની પ્રથાને સ્ત્રી જાતિની ઉન્નતિમા બાધક અને ત્યાજ્ય સમજીને તેને ઘૃણાની નજરે જુએ છે અને બધી બ્હેનોને પર્દા પ્રથા છોડવાનો અનુરોધ કરે છે.

પ્રસ્તાવ ન. ૩: (સ્વદેશી વસ્ત્ર સબધી) આ પરિષદ બધી બ્હેનોને અપીલ કરે છે કે તેઓ પોતાના દેશ તથા ધર્મની રક્ષા ખાતર ખાદી અથવા સ્વદેશી વસ્ત્રોનો જ ઉપયોગ કરે.

પ્રસ્તાવ ન. ૪: (બાળવિવાહ અને વૃદ્ધવિવાહનો વિરોધ) આ પરિષદ બાળવિવાહ તથા વૃદ્ધવિવાહને સ્ત્રી જાતિના અધિકારોને હરણ કરનાર તથા અત્યાચાર રૂપ સમજે છે. અત: તેને સર્વથા બધ કરી દેવા ભારપૂર્વક અનુરોધ કરે છે

પ્રસ્તાવ ન. ૫: (રડવા કૂટવાના ત્યાગ સબધી) આ પરિષદ સ્ત્રી–સમાજમાં પ્રચલિત રોવાકૂટવાની પ્રથાને નિન્દનીય માને છે અને બ્હેનોને અનુરોધ કરે છે કે તેઓ આ અમાનુષી પ્રથાને બિલકુલ બંધ કરી દે.

પ્રસ્તાવ નં. ૬: (કુરૂઢીઓનો ત્યાગ) આ પરિષદ સર્વ નિરર્થક કુરૂઢીઓ જે સ્ત્રીસમાજમાં પ્રચલિત છે તેની નિંદા કરે છે. જેમકે–ફટાણા ગાવા, માટીના પૂતળા–શીતળા વગેરે, કબર, ભેરૂ, ભવાની વગેરેની પૂજા આદિ, તથા આવી માનતા અને વહેમો છોડવાનો અનુરોધ કરે છે.

પ્રસ્તાવ નં. ૭: (કન્યા ગુરૂકુળ સબંધી) આ પરિષદ શ્રી શેઠ નથમલજી ચોરડિયાને રૂા. ૭૦ હજારની ઉદાર સખાવત માટે ધન્યવાદ આપે છે અને આગ્રહ કરે છે કે વહેલાસર આ ધન વડે 'કન્યા ગુરૂકુળ'ની સ્થાપના અવિલંબ કરે.

શ્રી શ્વે. સ્થા. જૈન શિક્ષણ પરિષદ

અજમેર અધિવેશન વખતે લોંકાનગર વિશેષરૂપે શ્રી. શ્વે. સ્થા. જૈન શિક્ષણ પરિષદનુ પણ આયોજન કર્યું હતુ આ પરિષદ્‌ના અધ્યક્ષ શાંતિનિકેતનના પ્રો. શ્રી. જિન વિજયજી હતા. બનારસથી પ. સુખલાલજી પણ આવ્યા હતા. અધ્યક્ષનુ વિદ્વતાપૂર્ણ ભાષણ થયુ હતુ. પરિષદ્‌મા નીચે મુજબ મુખ્ય પ્રસ્તાવો પાસ થયા હતા.

પ્રસ્તાવ ન. ૧: (સ્થા. જૈન સંસ્થાઓનુ સંગઠન) આ પરિષદ્ એવુ મન્તવ્ય પ્રકટ કરે છે કે, સ્થા જૈન સમાજની ભિન્ન ભિન્ન પ્રાંતોમા ચાલતી અથવા ભવિષ્યમાં શરૂ થનારી બધી શિક્ષણ સસ્થાઓ (બાલાશ્રમ, બોર્ડિંગ, ગુરૂકુળ આદિ) ઓછામા ઓછા ખર્ચે અધિક કાર્યસાધક સિદ્ધ થાય એટલા માટે બધી શિક્ષણ સસ્થાઓ એક એવા તંત્ર (વ્યવસ્થા નીચે આવે કે જે તત્ર સર્વ સસ્થાઓનુ નિરીક્ષણ શકય સહયોગ અને તેમની સુગીબતો તથા ખામીઓને દૂર કરવાની જવાબદારી લે. આવા તત્ર પ્રત્યે શિક્ષણ સસ્થાઓ પણ જવાબદાર રહે

પ્રસ્તાવ ન. ૨ (ધાર્મિક પાઠયક્રમ સબંધી) આ પરિષદ્ નીચેની ત્રણ બાબતો માટે વિશેષ વ્યવસ્થાની આવશ્યકતા સમજે છે.

(અ) કેવળ ધાર્મિક પાઠશાળાઓમાં તથા અન્ય સસ્થાઓ માટે એવો ધાર્મિક પાઠયક્રમ હોવો જોઇએ કે તે જગતને ઉપયોગી સિદ્ધ થાય તથા સમયાનુકુળ પણ હોય.

(ब) ગુરૂકુળો તથા બ્રહ્મચર્યાશ્રમો માટે ધર્મિક તથા વ્યવહારિક શિક્ષણ અને વિશ્વસસ્થાઓ માટે ઉક્ત દૃષ્ટિએ પાઠયક્રમ બનાવવો જોઇએ.

(क) ઉપરોક્ત પ્રસ્તાવને અમલમાં લાવવા માટે ગ્રામ્યપુસ્તકો તથા આવશ્યક પાઠય પુસ્તકો નિશ્ચિત કરવા જોઇએ.

પ્રસ્તાવ ન ૩: (સાધુ-સાધ્વીઓના શિક્ષણ સબધી) આ શિક્ષણ પરિષદ વર્તમાન સ્થિતિમાં સાધુ-સાધ્વીઓ માટે વ્યવસ્થિત તથા કાર્યસાધક અભ્યાસની ખાસ આવશ્યકતા સમજે છે. જેથી શાસ્ત્રોક્ત તથા ઇતર જ્ઞાન રૂડી રીતે પ્રાપ્ત કરાય. એ ઉદ્દેશ્યની સિદ્ધિ માટે આ પરિષદના તત્ત્વાવધાનમાં એક કેન્દ્ર સસ્થા તથા અન્ય પ્રાંતવાર સસ્થાઓ સ્થપાય આ સસ્થાઓનુ મુખ્ય તત્ત્વ એવુ હોવુ જાઇએ કે સમસ્ત સાધુ સઘને અનુકુળ હોય અને અભ્યાસ કરવામાં બાધક સિદ્ધ ન થાય.

આ સસ્થામાં ભણનારા સાધુ-સાધ્વિઓને તેમની યોગ્યતા પ્રમાણે પ્રમાણ પત્રો આપવા અને વિવિધ શિક્ષણ દ્વારા તેમના જીવનને અધિક કાર્યસાધક અને વિશાળ બનાવવા.

પ્રસ્તાવ ન. ૪: (દીક્ષાર્થીઓની પરીક્ષા સબધી) આ પરિષદ્ની દૃઢ માન્યતા છે કે, સાધુપદ સુશોભિત કરવા સુશિક્ષિત બનાવવા માટે પ્રત્યેક સાધુ-સાધ્વી દીક્ષાર્થીની પરીક્ષા કરે. યોગ્ય શિક્ષણ આપ્યા પહેલા દીક્ષા દેવાથી તે ગુરૂપદની અવહેલના કરશે. અત સાધુત્વને માટે નિરીક્ષણ અને પરીક્ષણ કર્યા પછી જ દીક્ષા આપવી.

દશમું અધિવેશન

સ્થાન ઘાટકોપર

સમય તા. ૧૧-૧૨-૧૩ એપ્રિલ ૧૯૪૧

કોન્ફરન્સનુ દશમુ અધિવેશન આઠ વર્ષ પછી તા. ૧૧-૧૨-૧૩ એપ્રિલ સન ૧૯૪૧ના દિવસોમાં થયુ પ્રમુખ શ્રીમાન્ શેઠ વીરચદભાઇ મેઘજી થોભણ હતા. સ્વાગતાધ્યક્ષ શ્રી. ધનજીભાઇ દેવશીભાઇ (ઘાટકોપર) હતા. આ અધિવેશનમા કુલ ૨૮ પ્રસ્તાવો પાસ કરવામાં આવ્યા હતા. જેમાંના મુખ્ય પ્રસ્તાવો નીચે પ્રમાણે હતા

પ્રસ્તાવ ન. ૩: (રાષ્ટ્રીય મહાસભાની પ્રવૃત્તિઓમા સહયોગ આપવા વિષે) રાષ્ટ્રીય મહાસભાના રચનાત્મક કાર્યક્રમમા અને મુખ્યરૂપે નીચે જણાવેલ કાર્યોમાં શક્ય સહયોગ આપવા માટે આ કોન્ફરન્સ પ્રત્યેક ભાઇ-બહેનને સાગ્રહ અનુરોધ કરે છે.

ખાદી દ્વારા આર્થિક અસમાનતા દૂર થાય છે, સામાજિક સમાનતાની ભાવના પ્રગટ થાય છે અને ગરીબી અને ભૂખમરો ઓછો થાય છે. ખાદીના વ્યવહારથી ઓછામા ઓછી હિંસા થાય છે એટલા માટે પ્રત્યેક જૈન ધર્મીનુ આવશ્યક કર્તવ્ય છે કે તેઓ ખાદીનો જ ઉપયોગ કરે

ગ્રામોદ્યોગના ઉત્તેજનમા તથા સ્વદેશી વસ્તુઓના ઉપયોગમા રાષ્ટ્રની આર્થિક આબાદી હિંદના ગ્રામોનો ઉદ્ધાર તથા રાજકીય પરતત્રના દૂર કરવાનુ, સાધન છે. એટલા માટે પ્રત્યેક જૈન ભાઇ-બહેને સ્વદેશી વસ્તુઓનો જ ઉપયોગ કરવો જોઇએ.

જૈન ધર્મમાં અસ્પૃશ્યતાને જરા પણ સ્થાન નથી. જૈન ધર્મ પ્રત્યેક મનુષ્યની સામાજિક સમાનતામા માને છે એટલા માટે પ્રત્યેક જૈનનુ એ આવશ્યક કર્તવ્ય છે કે તે અસ્પૃશ્યતાનુ નિવારણ કરે અને હરિજનોદ્ધારના રાષ્ટ્રીય મહાસભાના કાર્યમા યોગ્ય સહકાર આપે.

પ્રસ્તાવ ન ૪: (ધાર્મિક શિક્ષણ સમિતિની સ્થાપના) આ કોન્ફરન્સ એમ માને છે કે, જૈનધર્મના સસ્કારોનુ સિંચન કરનાર ધાર્મિક શિક્ષણ આપણી પ્રગતિ માટે આવશ્યક છે. એટલા માટે ચાલુ શિક્ષણ જે નિર્જીવ અને સત્વહીન છે. તેમા પરિવર્તન આણી તેને હૃદયસ્પર્શી અને જીવન્ત શિક્ષણ બનાવવાની ખાસ આવશ્યકતા છે. આ માટે શિક્ષણક્રમ તથા પાઠયક્રમ તૈયાર કરવા માટે તથા સમસ્ત હિંદમા એકજ પ્રકારના ક્રમથી ધાર્મિક શિક્ષણ આપવામા આવે, તેની પરીક્ષા લેવામા આવે એવી ધાર્મિક-શિક્ષણની એક યોજના બનાવવા માટે નીચે જણાવેલ સજ્જનોની-અન્ય સદસ્યોને કો-ઓપ્ટ કરવાની સત્તા સાથે-એક ધાર્મિક શિક્ષણ સમિતિની સ્થાપના કરવામા આવે છે.

આ શિક્ષણ સમિતિની યોજનામાં જૈન દર્શનના ગભીર અધ્યયન કરનાર માટે પણ અભ્યાસક્રમનો પ્રબધ કરવામા આવશે.

૧. શ્રીમાન મોતીલાલજી મથા, પ્રમુખ, સતારા.
૨. ,, ખુશાલભાઇ ખેગારભાઇ, મુબઇ.
૩ ,, જેઠમલજી સેઠિયા, બીકાનેર.
૪. ,, ચીમનલાલ પોપટલાલ શાહ, મુબઇ
૫ ,, મોતીલાલજી શ્રી શ્રીમાલ, રતલામ
૬. , કુદનમલજી ફિરોદિયા, અહમદનગર.
૭. ,, લા હરજશરાયજી જૈન અમૃતસર.
૮ ,, કેશવલાલ અબાલાલ, ખભાત.
૯. ,, ચુનીલાલ નાગજી વોરા, રાજકોટ.
૧૦. ,, માણેચદજી કિશનદાસજી મૂથા. અહમદનગર.
૧૧. ,, ધીરજલાલ કે. તુરખિયા બ્યાવર.

પ્રસ્તાવ ન ૫ (મહાવીર જયતીની છુટ્ટી વિષે) શ્રી અ. ભા. શ્વે. સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સ, ભગવાન મહાવીરના જન્મદિવસની સાર્વજનિક છુટ્ટી માટે દરેક પ્રાતિય અને કેન્દ્રીય સરકારો પાસે પોતાની નમ્ર માગણી કરે છે ભારતના સમસ્ત જૈનોએ આ માટે સહયોગપૂર્વક યોગ્ય પ્રવૃત્તિ કરવી જોઇએ.

(ખ) જે જે દેશી રાજ્યોએ પોતપોતાનાં રાજ્યોમાં ભગવાન મહાવીરના જન્મદિવસની સાર્વજનિક છુટ્ટીનો સ્વીકાર કરેલ છે તેમનો આ કમિટી પૂર્ણ આભાર માને છે અને બાકીના રાજ્યોને અનુરોધ કરે છે કે તે પણ તે પ્રમાણે સાર્વજનિક છુટ્ટીની જાહેરાત કરે.

(ક) સમસ્ત જૈન ભાઇઓને આ શુભ દિવસે પોતાનો વ્યાપર વગેરે બધ રાખવાનો આ કમિટી અનુરોધ કરે છે.

પ્રસ્તાવ ન ૬: (કન્યા–શિક્ષણના વિષે) કન્યા–શિક્ષણની આવશ્યકતા વિષે આજે બે મત ન હોવા છતા આ દિશામા આપણી પ્રગતિ બહુ જ મદ અને અસતોષ જનક છે. એટલા માટે પોતાની કન્યાઓને યોગ્ય શિક્ષણ આપી સસ્કારી બનાવવી એ પ્રત્યેક માતા–પિતાનુ કર્તવ્ય છે.

પ્રસ્તાવ ન ૭: (સામાજિ–સુધાર વિષે) બાળલગ્ન, અસમાન વયના વિવાહો, કન્યાવિક્રય તથા બહુપત્નીત્વનાં અનિષ્ટો વિશે મતભેદ ન હોવા છતાં જ્યા ત્યા એવા બનાવો બની રહ્યા છે જે શોચનીય છે આવા પ્રસગો ઉપસ્થિત ન થાય એવો લોકમત જાગ્રત કરવો જોઇએ અને આવા અનિષ્ટ પ્રસગોમાં કોઇ પણ સ્થાનકવાસી સ્ત્રી–પુરુષે ભાગ લેવો ન જોઇએ.

આ કોન્ફરન્સ એવી ભલામણ કરે છે કે –

૧. વિવાહની ઉમર કન્યાની ઓછામા ઓછી ૧૬ વર્ષની હોવી જોઇએ અને વરની ૨૦ વર્ષની હોવી જોઇએ.

૨, વિવાહ સબધ સ્થાપિત કરવામા આજની પ્રચલિત, ભૌગોલિક અને જાતિવિષયક મર્યાદા આધુનિક સામાજિક પરિસ્થિતિની સાથે બીલ્કુલ અસગત અને પ્રગતિમા બાધક છે માટે આ મર્યાદાઓને દૂર કરવી જોઇએ.

૩. લગ્ન વરવધૂની સમતિપૂર્વક હોવાં જોઇએ જે જે ક્ષેત્રોમા સમ્મતિ લેવાનો પ્રતિબધ છે તે વહેલી તકે દૂર થવો જોઇએ.

પ્રસ્તાવ નં. ૮: (પૂના બોર્ડિંગના મકાનફડ વિષે) પૂના બોર્ડિંગ માટે મકાન બનાવવા માટે બોર્ડિંગ–સમિતિએ પૂનામા પ્લોટ (જમીન) ખરીદી લીધેલ છે. જ્યાં ૮૦ વિદ્યાર્થીઓ રહી શકે એવુ મકાન બાંધવાનો નિર્ણય કરવામા આવે છે. આ મકાન માટે તથા બોર્ડિંગમા અભ્યાસ કરનાર ગરીબ વિદ્યાર્થીઓને છાત્રવૃત્તિ આપવા માટે ફડ કરવાનો પ્રસ્તાવ કરવામા આવે છે અને પ્રત્યેક–ભાઇ–બહેન તેમાં પોતાનો શકય સહયોગ અવશ્ય આપે એવો કોન્ફરસ દરેકને અનુરોધ કરે છે. આ ફડ બોર્ડિંગ સમિતિ એકત્રિત કરે અને તે દ્વારા યથાશીઘ્ર મકાન બધાવે એવો નિશ્ચય કરવામા આવે છે

પ્રસ્તાવ નં. ૧૦: (મુનિ–સમિતિની બેઠક કરવા વિષે) સાધુ–સાધ્વી સઘની એકતા જ સ્થાનકવાસી સમાજના અભ્યુત્થાનનો એકમાત્ર ઉપાય છે આ માટે મુનિ–સમિતિના ચાર સભ્યોએ એક યોજનાની રૂપરેખા તૈયાર કરેલ છે. તેનો મૂળ સિદ્ધાંત ઉપયોગી છે. આ યોજના સાધુ–સમિતિ દ્વારા વિશેષ વિચારણીય છે એટલા માટે અજમેર સાધુ–સમેલનમા નિયોજિત મુનિ–સમિતિની એક બેઠક યોગ્ય સ્થાન અને સમયે બોલાવવાનો આ અધિવેશન પ્રસ્તાવ કરે છે. આ કાર્યને સપન્ન કરવા માટે નીચે જણાવેલ સજ્જનોની એક સમિતિ નિયુક્ત કરવામા આવે છે.–

૧ શ્રી ચુન્નીલાલ ભાઇચદ મહેતા, મુબઇ
૨ ,, માણેકલાલ અમુલખરાય મહેતા, ,,

૩ શ્રી જગજીવન દયાળજી મુંબઇ
૪ ,, ગિરધરલાલ દામોદર દફતરી ,,
૫. શ્રી જીવણલાલ છગનલાલ સઘવી, અમદાવાદ
૬. ,, દીપચદ ગોપાળજી, થાન–તથા મુબઇ
૭. ,, જમનાદાસ ઉદાણી, ઘાટકોપર
૮. ,, કાલુરામજી કોઠારી, બ્યાવર
૯. ,, પુનમચદજી કોઠારી, હૈદરાબાદ
૧૦ ,, દી. બ. મોતીલાલજી મૂથા, સનારા
૧૧. ,, રતનલાલજી નાહર, બરેલી
૧૨. ,, રા. સા. ટેકચદજી જૈન, જડિયાલા
૧૩. ,, લા. રતનચદજી હરજશરાયજી જૈન, અમૃતસર
૧૪. ,, દી બ. બિશનદાસજી, જમ્મૂ
૧૫. ,, થોડીરામજી મૂથા, પૂના
૧૬. ,, નવલમલજી ફિરોદિયા, નગર
૧૭. ,, કલ્યાણમલજી વેદ, અજમેર
૧૮. ,, પ્રેમરાજજી બહોરા, પીપલિયા
૧૯ ,, જીવાભાઇ ભણશાલી, પાલણપુર
૨૦, ,, માનમલજી ગોલેચ્છા, ખીચન
૨૧. ,, ચુનીલાલજી નાગજી વોરા, રાજકોટ
૨૨. ,, રા. સા. ઠાકરશીભાઇ મકનજી ઘીયા, રાજકોટ
૨૩. રા સા. મણિલાલ વનમાળીદાસ શાહ, રાજકોટ
૨૪. શ્રી સરદારમલજી છાજેડ, શાહપુરા–મત્રી
૨૫. ,, ધીરજલાલ કે. તુરખિયા, બ્યાવર ,,

ઉપર જણાવેલ સમિતિને આ કાર્ય માટે સપૂર્ણ પ્રબંધ કરવાની તથા ફડ કરવાની સત્તા પણ આપવામા આવે છે.

પ્રસ્તાવના નં. ૧૧: (સ્ત્રી–શિક્ષણ સહાયતા ફંડ વિષે) કન્યા તથા સ્ત્રી–શિક્ષણ તેમ જ વિધવા બહેનોની શિક્ષા માટે એક ફંડ એકઠું કરવાનો નિર્ણય કરવામા આવે છે.

આ ફડ કોન્ફરન્સની પાસે રહેશે પરંતુ તેની વ્યવસ્થા બહેનોની એક ઉપસમિતિ કરશે. આ માટે નીચે જણાવેલ બહેનોની એક સમિતિ કો–ઓપ્ટ કરવાની સત્તાની સાથે નીમવામા આવે છે :–

૧. શ્રીમતી નવલબેન હેમચદભાઇ રામજીભાઇ, મુબઇ
૨. ,, લક્ષ્મીબેન વીરચદભાઇ મેઘજીભાઇ ,,
૩. ,, ચચળબેન ટી. જી. શાહ ,,
૪. ,, કેશરબેન અમૃતલાલ રાયચદ ઝવેરી ,,
૫. ,, શિવકુવરબેન પુજાભાઇ ,,
૬. ,, ચંપાબેન ઉમેદચંદ ગુલાબચદ ,,

પ્રસ્તાવ નં. ૧૨: સંગઠન વધારવા વિષે આ અધિવેશન દૃઢતાપૂર્વક એમ માને છે કે, આપણામા જ્યા સુધી સંગઠન પેદા નહિ થાય ત્યાં સુધી સઘની ઉન્નતિ થવી બહુ જ મુશ્કેલ છે. એટલા માટે પ્રત્યેક સઘે પોતપોતાનું વિધાન તૈયાર કરી સગઠન કરવા માટે આ અધિવેશન આગ્રહ કરે છે.

પ્રસ્તાવ નં. ૧૩: (વીરસઘની નિયમાવલી તથા તેના સચાલન વિષે) વીરસંઘનો પ્રસ્તાવ અને તેનુ ફંડ મુબઇ અધિવેશનમા થએલ છે. નિયમાવલી પણ બનાવવામા આવેલ છે. પરતુ હજી સુધી કાર્યરૂપે વીરસઘ બનેલ નથી એટલા માટે આ કોન્ફરન્સ એવો નિર્ણય કરે છે કે, સ્થા. જૈન સમાજમા આજીવન અથવા ઉચિત સમય માટે સેવા આપનાર સ્થા જૈન સમાજના સાચા શ્રાવકો–પછી ભલે તેઓ ગૃહસ્થી હોઇ કે બ્રહ્મચારી–પણ તેમનો 'વીરસેવા સઘ' જલ્દી બનાવી લેવામા આવે. વીરસંઘના સદસ્યની યોગ્યતા અને આવશ્યકતાનુસાર જીવનનિર્વાહનો પ્રબંધ કરવા માટે વીરસઘના ફડનો ઉપયોગ કરવામા આવે.

વીરસંઘની નિયમાવલીમાં સશોધન કરવા માટે તેમ જ વીરસંઘની યોજનાને જલ્દી કાર્યરૂપમા પરિણત કરવા માટે નીચે જણાવેલ સજ્જનોની એક સમિતિ બનાવવામા આવે છે.–

૧. શ્રી બરત્તભાણજી પિતલિયા, રતલામ
૨. ,, સરદારમલજી છાજેડ, શાહપુરા
૩. ,, કુદનમલજી ફિરોદિયા, અહમદનગર
૪. ,, જગજીવન દયાળ, ઘાટકોપર

પ્રસ્તાવ નં. ૧૪: બનારસ ગવર્નમેન્ટ સસ્કૃત કોલેજમાં જૈન દર્શનશાસ્ત્રી તથા જૈન દર્શન આચાર્ય પરિક્ષાઓની યોજનાને આ કોન્ફરન્સ સતોષની દૃષ્ટિએ જુએ છે. પરતુ ઉપરોક્ત વિષયોનો અભ્યાસ કરવા-કરાવવા માટે હજી સુધી કોઇ પણ અધ્યાપકની નિયુક્તિ થએલ નથી. તે પ્રત્યે ખેદ પ્રગટ કરે છે. જૈન દર્શનનુ ભારતવર્ષ અને સસારની વિભિન્ન સસ્કૃતિઓમા એક આદરણીય સ્થાન છે. આ સબધમાં કેવળ પરીક્ષાઓની યોજના જ પર્યાપ્ત નથી એટલા માટે આ કોન્ફરન્સ યૂ. પી. સરકારને ભારપૂર્વક અનુરોધ કરે છે કે ઉપર્યુક્ત કોલેજમા જૈન દર્શનના અધ્યયન–અધ્યાપન માટે અધ્યાપકની નિયુક્તિ માટે બજેટમા ઉચિત ફડનો પ્રબધ કરે

આ પ્રસ્તાવની એક નકલ યૂ પી. પ્રાન્તના ગવર્નર શિક્ષણ મત્રી, Director of public instruction તથા કોલેજના પ્રિસિપાલ તથા રજિસ્ટ્રારને મોકલી આપવામા આવે.

પ્રસ્તાવ ન. ૧૫: (સિદ્ધાત શાળાઓ વિષે) વર્તમાનમાં સાધુ-સાધ્વીઓના અભ્યાસને માટે જુદે જુદે ઠેકાણે પગારદાર પડિતો રખાય છે. તેથી જુદા જુદા સઘોને ખૂબ ખર્ચ થાય છે. તેથી નાના ગામોમા આવા ચાતુર્માસ પણ થઇ શકતા નથી. અત આ કોન્ફરસ ભિન્ન ભિન્ન પ્રાંતોમાં સિદ્ધાત શાળાઓ ખોલવા માટે અલગ અલગ પ્રાતોના શ્રીસઘોને વિનતિ કરે છે. જ્યારે આ સસ્થાઓ શરૂ થાય ત્યારે તે પ્રાતમા વિચરનારા મુનિઓ પોતાના શિષ્યોને ભણવા માટે ત્યા મોકલે એવી પ્રાર્થના કરવામા આવે છે.

પ્રસ્તાવ ન. ૧૬: (સાંપ્રદાયિક મડળો માટે વિરોધ) આ કોન્ફરન્સ સ્થા. જૈન સમાજને અનુરોધ કરે છે કે સમાજનુ સગઠન વધારવા માટે અને સાંપ્રદાયિક ક્લેષ ન વધે એ માટે સાપ્રદાયિક મંડળોની સ્થાપના ન કરે.

પ્રસ્તાવ ન. ૧૭: (જૈન ગણના વિષે) ભારતમા સ્થા. જૈનોની સખ્યા તથા વાસ્તવિક પરિસ્થિતિનો અભ્યાસ કરવા માટે જનગણના કરવાની નિતાન્ત આવશ્યકતા છે. અત નિર્ણય કરવામા આવે છે કે આ કામને શરૂ કરી દેવુ. આ માટે કોન્ફરન્સ ઓફિસ દ્વારા તૈયાર કરેલા ફોર્મ તમામ સઘોને મોકલી આપવાં અને અમુક સમયની મર્યાદામાં ભરીને મોકલી દેવાનો અનુરોધ કરવો.

પ્રસ્તાવ ન. ૧૮: (સ્થા. જૈન ગૃહો બનાવવા વિષે) વ્યાપાર, ઉદ્યોગ કે નોકરી માટે દૂર દેશાવરોમા આપણા સ્વધર્મી ભાઇઓ નિર્ભયતા અને સરલતાપૂર્વક આવી જઇ શકે અને પરદેશમાં સ્વધમી ભાઇઓના સહવાસમા રહીને તેમના સહયોગથી વ્યાપાર ધધા દ્વારા પોતાના જીવનને સુખશાતિમય બનાવી શકે એ માટે હિંદમા મુબઇ, કલકત્તા, મદ્રાસ, કરાંચી, અમદાવાદ, દિલ્હી, લાહોર, કાનપુર આદિ મોટા મોટા વ્યાપાર કેન્દ્રોમાં તથા હિંદથી બહાર રગૂન, એડન, મોમ્બાસા, કોબે (જાપાન) આદિ કેન્દ્રોમા આપણા સ્વધર્મી ભાઇઓને ઉચિત રૂપે રહેવાની અને ખાવાપીવાની સગવડ મળે એવી વ્યવસ્થાવાળા શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન ગૃહો (S. S. Jain Homes) સર્વત્ર સ્થાપિત કરવાની આવશ્યકતા આ કોન્કરસ સ્વીકારે છે. આર્થિક પ્રશ્નોનુ નિવારણ કરવા અને આ યોજનાને અમલમા લાવવા માટે તે તે કેન્દ્રોના શ્રી સઘો અને શ્રીમન્ત સજ્જનોને ભલામણ કરે છે.

પ્રસ્તાવ નં. ૨૦: હિંદના સ્થા. જૈનોની વેપારી પેઢીઓ, દુકાનો અને કારખાનાઓના નામ તથા યુનિવર્સીટીમા પાસ થએલા ગ્રેજ્યુએટ ભાઇ બહેનો પોતાના નામો સાથ રૂા. ૧) કોન્ફરસ ઓફિસને મોકલી આપે તેમનાં નામો કોન્ફરસ તરફથી પુસ્તક રૂપે પ્રકટ કરવા.

પ્રસ્તાવ ન. ૨૨: (પાર્શ્વનાથ વિદ્યાશ્રમ, બનારસ વિષે) શ્રી. સોહનલાલ જૈન ધર્મપ્રચારક સમિતિ-અમૃતસર-જે જૈન દર્શન અને ઇતિહાસના ઉચ્ચાભ્યાસને માટે સ્થા. જૈન વિદ્યાર્થીઓને પ્રોત્સાહન આપે છે, જેનુ કાર્ય શ્રી પાર્શ્વનાથ વિદ્યાશ્રમ, બનારસ દ્વારા થઇ રહેલ છે તેને આ કોન્ફરન્સ પસદ કરે છે અને સ્થા. જૈન વિદ્યાર્થીઓ તથા શ્રીમતોનુ ધ્યાન તે તરફ આકર્ષિત કરે છે.

પ્રસ્તાવ ન. ૨૩: (જૈનોની એકતા વિષે) આ કોન્ફરન્સ જૈન સમાજની એકતા માટે આગ્રહપૂર્વક સમર્થન કરે છે અને જ્યારે પરસ્પરની એકતામા બાધક પ્રસંગ ઊભો થાય તો તેનો યોગ્ય ઉપાય કરીને એકતાની પુષ્ટી માટે પ્રયત્ન કરવા પ્રત્યેક સ્થા. જૈન ભાઇઓ તથા બહેનોને પ્રાર્થના કરે છે. જૈન ધર્મના ત્રણે ફિરકાની કતિપય માન્યતા ભેદને બાજુએ રાખીને પરસ્પરને સમાનરૂપે સ્પર્શતા અનેક પ્રશ્નોની ચર્ચા કરવા માટે તથા આંતરિક એકતા વધારવા માટે સમસ્ત જૈન સમાજની સયુક્ત પરિષદ્ ભરવાની આવશ્યકતા આ કોન્ફરન્સ સ્વીકારે છે. અને એવી કોઇ યોજના હશે તો તેમાં પૂર્ણ સહયોગ દેવાનુ જાહેર કરે છે.

પ્રસ્તાવ ન. ૨૫ (બેકારી નિવારણ વિષે) આપણા સમાજમા વ્યાપેલી બેકારી નિવારણ માટે આ કોન્ફરસ 'જૈન અનઇમ્પ્લોયમેન્ટ ઇન્ફર્મેશન બ્યુરો' (બેકારોની ખબર મેળવી કામે લગાડનારી સસ્થા) સ્થાપવાનો નિર્ણય કરે છે. તથા આપણા શ્રીમતો અને ઉદ્યોગપતિઓને વિનતિ કરે છે કે તેઓ બની શકે તેટલા જૈન ભાઇઓને કામે લગાડીને બેકારીને ઓછી કરે.

પ્રસ્તાવ ન. ૨૬. અખિલ ભારતના સ્થા. જૈન સઘોનુ પ્રતિનિધિત્વ કરનારી આ કોન્ફરસ શ્રી રાષ્ટ્ર-

ભાષા પ્રચાર સમિતિ-વર્ધાના સંચાલકોને વિનંતિ કરે છે કે સમિતિનાં પરીક્ષાઓનાં પાઠ્ય પુસ્તકોમાં જેમ અન્ય ધર્મોના વિશિષ્ટ પુરૂષોનાં ચરિત્ર-વર્ણન અપાય છે, એવી જ રીતે જૈન મહાપુરૂષોના જીવન-ચરિત્રો પણ આપવાની આવશ્યકતા સમજે, (બાકી પ્રસ્તાવો ધન્યવાદાત્મક હતા.)

ઘાટકોપરનું આ દશમું અધિવેશન, ફંડની દૃષ્ટિએ પણ સર્વોત્તમ રહ્યું. પૂના બોર્ડિંગને માટે ૪૫ હજાર રૂપિયાનું ફંડ થયું સ્ત્રી-શિક્ષણ અને વિધવા સહાય ફંડમાં પણ રૂા. ૧૦ હજાર થયા. બીજી વિશેષતા એ હતી કે કોન્ફરંસના જુના વિધાનમાં પરિવર્તન કરીને નવું લોકશાહી વિધાન બનાવ્યું. જેમાં સદસ્ય ફી રૂા. ૧) વાર્ષિક રાખીને હરેક ભાઇને સભાસદનો અધિકાર આપ્યો.

અ. ભા. શ્વે. સ્થા. જૈન યુવક પરિષદ્

સ્થા. જૈન યુવક પરિષદ્‌નું બીજું અધિવેશન તા. ૧૦-૪-૪૧ ઘાટકોપરમાં થયું. પ્રમુખસ્થાને પંજાબના સુપ્રસિદ્ધ લાલા હરજસરાયજી જૈન B A બિરાજ્યા હતા. ડૉ. વ્રજલાલ ધ. મેઘાણી સ્વગતાધ્યક્ષ હતા. પરિષદમાં કુલ ૧૮ ઠરાવ પાસ થયા હતા. તેમાંના મુખ્ય નીચે પ્રમાણે છે:-

(૪) વીરસંઘની યોજના, (૬) સર્વદેશીય શિક્ષા પ્રચારક ફંડની યોજના. (૭) આર્થિક અસમાનતા નિવારણ (૮) ઐચ્છિક બ્રહ્મચર્ય પાલન એટલે બલાત્ નહિ, (૯) જૈનોના ત્રણે ફિરકાનું એકીકરણ (૧૨) સ્ત્રી-શિક્ષા પ્રચાર (૧૪) જૈન બેંકની સ્થાપના, (૧૭) જૈન યુવક સંઘને સ્થાયી સંસ્થા બનાવવી, (૧૮) યુવક સંઘનું વિધાન બનાવવા વિષે.

લાલા હરજસરાય જૈનનું ભાષણ મનનીય હતું. સામયિક સમસ્યાઓ પર એમણે સારો પ્રકાશ પાડ્યો હતો.

સ્થા. જૈન મહિલા પરિષદ

ઘાટકોપર અધિવેશન વખતે મહિલા પરિષદ પણ થઇ હતી. તેની અધ્યક્ષતા શ્રીમતી નવલબેન હેમચંદભાઇ મહેતાએ કરી હતી. તેમનું ભાષણ પણ ઘણું સુંદર હતું. તેમાં સ્ત્રી-સમાજની ઉન્નતિના ઉપાયો બતાવ્યા હતા.

મહિલા પરિષદમાં શિક્ષણ પ્રચાર, સમાજ સુધાર, પ્રૌઢ શિક્ષણ આદિના ઘણા ઠરાવ થયા હતા.

અગ્યારમું અધિવેશન, સ્થાન-મદ્રાસ

ઘાટકોપર અધિવેશનથી આઠ વર્ષ બાદ કોન્ફરન્સનું ૧૧મું અધિવેશન તા૦ ૨૪-૨૫-૨૬ ડિસેમ્બર, ૧૯૪૯ના દિવસોએ મદ્રાસમાં થયું હતું. તેના અધ્યક્ષ મુંબઇ લેજીસ્લેટીવ એસેમ્બલી (ધારાસભા)ના સ્પીકર માનનીય શ્રી કુંદનમલજી ફીરોદિયા હતા. સ્વાગતાધ્યક્ષ શેઠ મોહનમલજી ચોરડિયા, મદ્રાસ હતા. અધિવેશનનું ઉદ્‌ઘાટન મદ્રાસ સરકારના મુખ્ય મંત્રી શ્રી કુમાર સ્વામી રાજાએ કર્યું હતું.

મદ્રાસ જેવા દૂર પ્રાંતમાં આ અધિવેશન હોવા છતાં પણ સમાજમાં સારી જાગૃતિની લહેર પ્રસરી ગઇ હતી. ૫ થી ૭ હજાર લગભગની હાજરી હતી અધિવેશનની વ્યવસ્થા સુંદર હતી. આવનારા મ્હેમાનોને હર પ્રકારે સારી સગવડ આપવામાં આવી હતી. ગત અધિવેશનોની અપેક્ષા આ અધિવેશન અલૌકિક હતું, લોકો આજ પણ એને યાદ કરે છે.

આ અધિવેશનમાં કુલ ૧૯ ઠરાવો થયા હતા. પ્રમુખશ્રી સુંદર રીતે કાર્ય સંચાલન કર્યું હતું. વિવાદાસ્પદ વિષયો ઊભા થયા તેનું નિરાકરણ પણ શાંતિથી થયું હતું. તેનું શ્રેય અધિવેશનના સુદક્ષ અને યોદ્ધા પ્રમુખશ્રીને જ હતું.

આ સંમેલનમાં નીચે મુજબ અગત્યના પ્રસ્તાવો પસાર કરવામાં આવ્યા હતા.

હિંદની સ્વતંત્રતા અંગે

પ્રસ્તાવ નં. ૧: સેંકડો વર્ષોની ગરીબી અને અજ્ઞાનપૂર્ણ ગુલામી બાદ, વિશ્વવ્યાપી પ્રચંડ બ્રિટીશ સલ્તનત પાસેથી અહિંસક માર્ગ દ્વારા ભારતને સ્વતંત્રતા પ્રાપ્ત થઇ તે સમસ્ત હિંદીઓ માટે મહાન ગૌરવ સ્વમાન અને આનંદનો વિષય છે; આઝાદી બાદ પ્રથમ વાર થતું કોન્ફરંસનું આ અધિવેશન ભારતને મળેલ આઝાદી માટે પોતાનો હાર્દિક આનંદ વ્યક્ત કરે છે અને મળેલ આઝાદીને ચિરસ્થાયી બનાવવા માટે રાષ્ટ્રને હાર્દિક સહકાર દેવાનો પ્રત્યેક ભારતીયને અનુરોધ કરે છે. હિન્દ જેવા મહાન ભવ્ય અને પ્રાચીન રાષ્ટ્રની આઝાદી, વિશ્વને માટે અતિ મહત્ત્વનો પ્રસંગ છે, આથી વર્તમાન વિશ્વના આંતરરાષ્ટ્રીય પ્રવાહમાં અનેક પરિવર્તન થવાનો સંભવ છે તથા સમસ્ત એશિયાઇ

પ્રજામા નૂતન જાગૃતિ પ્રગટ થશે. આ પ્રકારે હિન્દ આઝાદ થવાથી, સમસ્ત વિશ્વને વિશિષ્ટ અહિંસક પ્રકાશ અને માર્ગદર્શન મળશે અને વિશ્વની સમસ્ત ગુલામ પ્રજાનો મુક્તિમાર્ગ સરળ થશે

આગામી વસ્તીગણતરી અંગે

પ્રસ્તાવ નં. ૫: શ્રી શ્વે. સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સનું આ અધિવેશન કેન્દ્રિય સરકારને પ્રાર્થના કરે છે કે આગામી વસ્તી ગણતરીમા હિન્દુ, મુસ્લિમ, પારસી, શીખ, ખ્રિસ્તી જૈન ધર્મવાચક શબ્દ રાખવામાં આવે છે તેમ 'જૈન' પણ ધર્મવાચક શબ્દ હોવાથી, તે ધર્મના અનુયાયીઓની જનસખ્યાની માહિતી માટે, વસ્તી ગણત્રીમાં 'જૈન'નુ કોલમ રાખવામા આવે અને માહિતી પત્રક ભરનારને આ પ્રકારની ખાસ સુચના આપવામા આવે કે તેઓ જનતાને ખાસ પૂછીને પૃથક ધર્મવાચક જનગણના સિદ્ધાંત પર 'જૈન' હોય તેનુ નામ 'જૈન' કોલમમા ભરે, સાથે જૈન ભાઇઓને સૂચના આપવામાં આવે છે કે આગામી જનગણનામાં 'જૈન' કોલમમા જ તેઓ પોતાનુ નામ લખાવે.

આ પ્રસ્તાવની નકલ કેન્દ્રિય સરકારના ગૃહવિભાગને મોકલવાની સત્તા પ્રમુખશ્રીને આપવામા આવે છે

સંઘ-ઐક્ય યોજના

'આજ સુધી સઘ ઐક્ય યોજના અગે થયેલ કાર્યવાહીને બહાલી આપતો, જેઓએ સ્વકૃતિ આપેલ છે તેમને ધન્યવાદ અને હજી સુધી જેઓએ સ્વકૃતિ આપેલ નથી તેમને સ્વીકૃતિ મોકલી આપવાનો આગ્રહ અનુરોધ કરતો' ઠરાવ શ્રી ચીમનલાલ ચકુભાઇ શાહે રજુ કર્યો હતો અને આજના સગઠનના જમાનામાં સઘ-ઐક્ય યોજનાની અનિવાર્ય આવશ્યકતા દર્શાવી હતી આ યોજનાને શ્રી ખીમચંદ મગનલાલ વોરા, શ્રી ગીરધરલાલ દામોદર દફતરી, શ્રી જસવંત મલજી એન્જીનીયર, શ્રી. નટવરલાલ કપુરચંદ શાહ, શ્રી. સૂર્યભાનુ ડાગી, શ્રી. બાલચદજી, શ્રી. શ્રીમાળી, શ્રી માણેકચંદજી કલાણી, શ્રી. માણેકચદજી ગુલેચ્છા, શ્રી. દેવરાજજી સુરાણા, શ્રી. ઇન્દ્રચદજી શાસ્ત્રી, શ્રી મિશ્રીલાલજી કાતરેલા, શ્રી. વનેચદભાઇ દુર્લભજી ઝવેરી, શ્રી જવાહરલાલજી મુણોત, શ્રી. મોહનમલજી ચોરડીયા, વગેરે અખ્યાબધ ભાઇઓએ આ ઠરાવને હાર્દિક ટેકો આપ્યો હતો. એટલુ જ નહિ પરંતુ આ યોજનાને પાર પાડવા માટે શકય બધો સહકાર આપવાની તત્પરતા દર્શાવી હતી.

શ્રી ચદુલાલ અચરતલાલ શાહે કહ્યુ હતુ કે અમ રે ધર્મસિંહજી મ. નો સપ્રદાય આઠ કોટીનો છે અને છ કોટી-આઠ કોટી વચ્ચે અતર હોઇ, ૩૨ સપ્રદાયો સંગઠીત થયા બાદ, અમો ભળવા અગે વિચારીશુ. આના અનુસધાને, શ્રી ચીમનલાલ ચકુભાઇ શાહે કહ્યુ કે છ કોટી-આઠ કોટીનો પ્રશ્ન વિકટ છે એ ખરૂ, પરન્તુ જો આપણે એકતા સાધવી હશે તો બધાએ એક કોટીના થવુ પડશે. પ્રમુખ મહાશયે પણ સઘ-ઐક્ય યોજના અગે બોલતાં કહ્યું કે આ યોજનાને પાર પાડવા માટે આપણામા મક્કમતા જોઇએ અને આપણામાં જો મક્કમતા હશે તો આ યોજના સરળતાથી પાર પડી શકશે.

શ્રી ચીમનલાલ ચકુભાઇ શાહના પ્રસ્તાવમાં કોઇ વિરૂદ્ધમાં ન હોવાથી, નીચેનો ઠરાવ સર્વાનુમતે પસાર થયો હતો -

પ્રસ્તાવ નં. ૬: ધર્મ અને સમાજના ઉત્થાન માટે સગઠન અને ઉચ્ચ ચારિત્રની આવશ્યકતા છે, સ્થાનકવાસી જૈન ધર્મમા પણ વર્ષોથી સગઠનનો વિચાર ચાલી રહ્યો છે, અજમેરનુ સાધુ-સમેલન આ વિચારનુ ફળ હતુ, અજમેર અને ઘાટકોપરના અધિવેશનોમા પણ આ આદોલન હતું; સગઠનની અખડ વિચારધારાથી તા. ૨૨-૧૨-'૪૮ના રોજ બ્યાવરમાં મળેલ કોન્ફરન્સની જનરલ કમીટી થઇ ત્યારે સઘ ઐક્યનો પ્રસ્તાવ થયો. બ્યાવર શ્રી. સઘે, સઘ ઐક્યની ત્રિવર્ષીય પ્રતિજ્ઞા કરી અને જનરલ કમીટી બાદ તુરત જ માનનીય ફિરોદીયાજી સા.ના નેતૃત્વમા ડેપ્યુટેશન સંઘ-ઐક્યની સિદ્ધિ માટે નીકળ્યુ, સઘ-ઐક્યની યોજના બનાવવામા આવી-તેમા શરૂઆતમાં એકતાની ભૂમિકારૂપ સાત કલમો તાત્કાલિક અમલમાં લાવવાની અને સ્થાયી રૂપે એક આચાર્ય અને એક સમાચારીમાં સર્વે સ્થાનકવાસી જૈન સપ્રદાયોનો એક શ્રમણ સઘ બનાવવાની યોજના તૈયાર કરવામાં આવી. આ યોજનાનો આજનુ અધિવેશન હૃદયથી સ્વીકાર કરે છે અને તેની સિદ્ધિમા સ્થા. જૈન ધર્મનો ઉત્કર્ષ જુએ છે, આજ સુધી કોન્ફરન્સે આ બાબતમાં જે કાર્ય કરેલ છે તે પ્રતિ આ અધિવેશન સતોષ વ્યક્ત કરે છે.

જે સંપ્રદાયોના મુનિવરો અને શ્રી સંઘોએ આ યોજનાનો સ્વીકાર કરેલ છે તેમને આજનું અધિવેશન સાભાર ધન્યવાદ આપે છે; તેવીજ રીતે જેમણે અજમેર સાધુ-સંમેલનના પ્રસ્તાવોનું પાલન કર્યું છે તેમનો પણ આભાર માને છે, જેમના તરફથી હજુ સ્વીકૃતિ મલી નથી તેમને આ અધિવેશન સાગ્રહ અનુરોધ કરે છે કે તેઓ યથાશીઘ્ર સંઘ-ઐક્ય યોજનાનો સ્વીકાર કરે

સાધુ-સંમેલન નિયોજક સમિતિ

ત્યારબાદ સાધુ-સંમેલન ભરવાની આવશ્યકતા દર્શાવતો અને સાધુ-સંમેલન મેળવવા અંગે ઘટતી કાર્યવાહી કરવા માટે એક કમિટી નીમતો ઠરાવ શ્રી ધીરજલાલ કે. તુરખીયાએ રજુ કર્યો હતો. ઠરાવમાં કમીટીના જે નામો આપવામાં આવેલ છે તે ઉપરાત જે કોઇ ભાઇ પોતાની સેવા આપવા ઇચ્છતા હોય તેઓ કોન્ફરન્સને અગર મને લખી જણાવે એટલું, ઠરાવ રજુ કરીને શ્રી ધીરજભાઇ તુરખીયાએ ઉમેર્યું હતુ. શ્રી. દુર્લભજી ઝવેરીએ આ ઠરાવને ટેકો આપ્યો હતો.

શ્રી ચીમનસિંહજી લોઢાએ કહ્યું કે સાધુ-સંમેલન ભરતા પહેલાં, તેમાં વિચારવાની પ્રશ્નાવલી પ્રથમ તૈયાર થવી જોઇએ. શ્રી ભંવરલાલજી ઓહગાએ પણ સાધુ-સંમેલન ભરવાની આવશ્યકતા દર્શાવી હતી.

શ્રી ધીરજભાઇ કે. તુરખીયાના ઠરાવને શ્રી શાંતિલાલ દુર્લભજી ઝવેરી ઉપરાત શ્રી જવાહરલાલજી મુણોત અને શ્રી નવલચંદ અભેચંદ મહેતાએ ટેકો આપ્યો હતો.

પ્રસ્તુત ઠરાવ પર મત લેવાતા, એક મત વિરૂદ્ધમા હતો અને તેથી નીચે મુજબ ઠરાવ બહુમતે પસાર થયો હતો :-

પ્રસ્તાવ નં. ૯: આ અધિવેશન સંઘ-ઐક્ય યોજનાને સફળ બનાવવા માટે ભારતના બધા સંપ્રદાયોનું સાધુ-સંમેલન યોગ્ય સ્થાન અને યોગ્ય સમય પર બોલાવવાની આવશ્યકતા માને છે, સાધુ-સંમેલન બોલાવવા માટે તથા તેમાં સર્વ પ્રકારનો સહયોગ દેવા માટે નીચેના સભ્યોની એક સાધુ સંમેલન નિયોજક સમિતિ નિયુક્ત કરવામાં આવે છે,

બૃહત્ સાધુ-સંમેલન બે વર્ષ સુધીમા બોલાવવું જોઇએ અને તેની પૃષ્ટ ભૂમિકા તૈયાર કરવા માટે યથાશક્ય પ્રાંતીય સાધુ-સંમેલન કરવા જોઇએ, તેનું સંયોજન શ્રી ધીરજલાલ કે તુરખિયા કરશે.

ત્યારે બાદ સરકારી કાનૂનના વિષયમા અને અહિંસા અંગે નીચે મુજબ ઠરાવો સર્વાનુમતે મંજૂર થયા હતા.

પ્રસ્તાવ નં. ૧૦: ધાર્મિક શિક્ષણ સમિતિ દ્વારા જૈન વિદ્યાર્થી અને વિદ્યાર્થીનીઓ માટે પાઠ્ય પુસ્તકો જનરલ કમીટીની સુચનાનુસાર તૈયાર કરવામાં આવેલ છે-જે પૈકી બે પુસ્તકો હિંદીમા પ્રગટ થયેલ છે અને બીજા પાંચ પુસ્તકો પ્રગટ થનાર છે તે કાર્ય પ્રતિ આ અધિવેશન સંતોષ પ્રગટ કરે છે અને રતલામ તેમજ પાથર્ડી પરીક્ષા બોર્ડને તથા સર્વે સ્થા. જૈન શિક્ષણ સંસ્થાઓને આ પાઠ્યપુસ્તકોને પાઠ્યક્રમમા સ્થાન આપવાનો સાગ્રહ અનુરોધ કરે છે.

આક્રમક સરકારી કાનૂનો

પ્રસ્તાવ નં. ૧૨: અખીલ ભારતીય શ્વે સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સનું આ અધિવેશન ભારતની વર્તમાન પ્રજાતંત્રીય, કેન્દ્રિય અને પ્રાન્તીય તથા સંસ્થાનિક સરકારોને માનપૂર્વક સાગ્રહ અનુરોધ કરે છે કે જૈન ધર્મની માન્યતાઓ, સિદ્ધાંતો અને સંસ્કૃતિને બાધા પહોંચે અથવા જૈનોનાં દિલ દુભાય તેવા નવા નવા કાનૂનો બનાવવામા આવે નહિ, સરકારની શુભ ભાવના હોવા છતા અને દિલ દુભાવવાની ભાવના ન હોવા છતા પણ ધાર્મિક માન્યતાઓ અને સિદ્ધાંતોના પૂરા ન સમજવાને કારણે, ગત વર્ષોમા કેટલીક એવી બાબતો લોકો સમક્ષ આવેલ છે; જેમકે—

(અ) હિન્દુ શબ્દની વ્યાખ્યા સ્પષ્ટ ન કરતા હિન્દુ શબ્દમાં જૈનોનો સમાવેશ કરવો.

નોંધ:-હિન્દી પ્રજાના કોઇ વર્ગનો અમુક એક ધર્મના અનુયાયી તરીકે ઉલ્લેખ કરવામા આવે ત્યારે જૈનોનો સ્પષ્ટ અને સ્વતંત્ર ઉલ્લેખ કરવો જોઇએ

(બ) બેકાર ભિખારીઓમા અપરિગ્રહી અને આત્માર્થી સાધુ મુનિરાજોને પણ ગણી લેવા,

(ક) દીક્ષાર્થીના અભ્યાસની યોગ્યતાના વિષયોમા કાનુની પરાધીનતા લાદવી; વગેરે.

ધર્મ અને સંસ્કૃતિના સંરક્ષણ માટે જૈન ધર્મને સ્વતંત્ર રાખવો જરૂરી છે.

આ પ્રસ્તાવ કેન્દ્રીય, પ્રાંતીય અને સંસ્થાનિક સરકારોના પંત પ્રધાનોને મોકલવાની સત્તા પ્રમુખશ્રીને આપવામા આવે છે.

ગોરક્ષાની અને દુધાળા પ્રાણીઓની હિંસા પર પ્રતિબંધની આવશ્યકતા

પ્રસ્તાવ ન. ૧૩: અધિવેશન વર્તમાન ભારત સરકાર પ્રતિ શ્રદ્ધા અને આદરની દૃષ્ટિએ જુએ છે-કેમકે ભારત સરકાર મહાત્મા ગાંધીજીના સત્ય અને અહિંસાના સિદ્ધાન્તમા માને છે, તેથી આ અધિવેશન સરકારને સાગ્રહ અનુરોધ પ્રાર્થના કરે છે કે–

ભારતવર્ષમા ગોવધ અને દુધ આપનાર જનાવરોની કતલ કાનૂન દ્વારા રોકવામા આવે અને ખેતીવાડીની રક્ષા નિમિત્તે વાંદરા, સુવર, રોઝ, હરણુ, આદિ પશુઓની હત્યા કરવાનો કોઈ પ્રાંતીય સરકાર કાનૂન બનાવે છે તેમ કરવામા ન આવે, તેથી રાષ્ટ્રનુ હિત થશે અને અહિંસા અને ગોપ્રેમી ભારતવાસીઓના દિલને સંતોષ થશે તેમ જ ભારત સરકાર પ્રતિ શ્રદ્ધા વધશે.

આ પ્રસ્તાવની નકલ કેન્દ્રીય ધારાસભાના પ્રત પ્રધાનને મોકલવાની સત્તા પ્રમુખશ્રીને આપવામા આવે છે.

પ્રસ્તાવ ન. ૧૬: બ્યાવરમા ગત સામાન્ય સભામા શ્રાવિકાશ્રમ ફંડને આગળ વધારવા માટે જે પ્રસ્તાવ થયો હતો તેને મૂર્ત સ્વરૂપ આપવા માટે શ્રી ટી. જી. શાહ, શ્રીમતી લીલાબેન કામદાર અને શ્રીમતી ચંચળબેન શાહે જે પરિશ્રમ ઉઠાવેલ છે તે માટે આજનુ આ અધિવેશન તેમને હાર્દિક ધન્યવાદ આપે છે.

ઘાટકોપરમા આગ્રારોડ પર રૂા. ૮૫,૦૦૦માં જે મકાન ખરીદાયેલ છે તેને આ અધિવેશન બહાલી આપે છે.

આ મકાનમા જરૂરીઆત મુજબ આવશ્યક સુધારા કરાવીને, શ્રાવિકાશ્રમ શરૂ કરવા તથા તેની વ્યવસ્થા કરવા માટે અને આવશ્યક નિયમાદિ બનાવીને, શ્રાવિકાશ્રમનુ સંચાલન કરવા માટે એક સમિતિ નીમવાની સત્તા જનરલ કમીટીને આપવામા આવે છે

પ્રસ્તાવ ન. ૧૭: આ અધિવેશન કોન્ફરન્સની સમિતિ દ્વારા તૈયાર થયેલ અને જનરલ કમીટી દ્વારા સંશોધીત થયેલ વિધાનને મંજુર કરે છે.

પ્રસ્તાવ ન. ૧૮: દીક્ષા આપવા માટે આ આવશ્યક છે કે જેમને દીક્ષા આપવામા આવે તે તેને યોગ્ય હોય અને દીક્ષાના અર્થ તેમ જ મર્મને સમજી શકે, સાધુ જીવન અંગીકાર કરવાનો નિશ્ચય એટલો મહત્ત્વનો નિર્ણય છે કે બાલ અવસ્થા વિત્યા બાદ જ થવો જોઈએ. બાલદીક્ષાના કેટલાંક પ્રકારના અનિષ્ટ પરિણામો વર્તમાનમા જોવામા આવ્યાં છે, તેથી આ અધિવેશન આપણા પૂજ્ય મુનિવરો તેમ જ મહાસતીજીને સવિનય પ્રાર્થના કરે છે કે તે દેશ, કાળ અને સમયની ગતિ વિધિ ધ્યાનમાં રાખીને, રાજકીય કાનૂન થાય તે પહેલાં જ ૧૮ વર્ષથી ઓછી ઉમરના કોઈ પણ બાળકને દીક્ષા ન આપવાનો નિશ્ચય કરીને, દેશ સમક્ષ આદર્શ ઉપસ્થિત કરે.

તેમ છતાં કોઈ દીક્ષાર્થી થોડી નાની ઉમરનો હોય અને સર્વ દૃષ્ટિએ તેની યોગ્યતા માલુમ પડે તો કોન્ફરન્સના સભાપતિને અપવાદ રૂપે તેને દીક્ષા આપવા બાબતની સંમતિ આપવાનો અધિકાર આપવામાં આવે છે.

શ્રી અખિલ હિન્દ શ્વે. સ્થાનકવાસી જૈન યુવક સંઘના

ત્રીજા અધિવેશનમાં પસાર થયેલ ઠરાવો

[અ. ભા. સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સના અગ્યારમા અધિવેશન સાથે મદ્રાસ મુકામે શ્રી અખિલ હિન્દ શ્વે. સ્થાનકવાસી જૈન યુવક સંઘનુ ત્રીજુ અધિવેશન પણ યોજાયું હતું; તે સમયે થયેલ ઠરાવો અત્રે સંપૂર્ણપણે પ્રગટ કરવામાં આવેલ છે.]

શોક પ્રસ્તાવ

પ્રસ્તાવ ન. ૧: અહિંસાના પૂજારી વિશ્વવંદ્ય મહાત્મા ગાંધીજીના બલિદાનથી દુનિયાને એક મોટી ખોટ પડી છે, જે સત્ય અને અહિંસા માટે ગાંધીજી જીવ્યા તેને જૈન યુવકો આચાર અને વ્યવહારમાં ઉતારે એવી આશા આ પરિષદ રાખે છે.

રાષ્ટ્રીય સરકારને સહકાર આપવો

પ્રસ્તાવ ન. ૨: આ પરિષદની માન્યતા છે કે હિંદને સ્વતંત્રતા મળ્યા બાદ, તે સ્વતંત્રતાની રક્ષા માટે આપણી પ્રથમ રાષ્ટ્રીય સરકારને યોગ્ય કાર્યોમાં મદદ

કરવી એ એક ભારતીય નાગરિક તરીકે આપણા સાનુ કર્તવ્ય છે.

સંઘ-ઐક્ય યોજનામાં સહકાર આપવો

પ્રસ્તાવ નં. ૩: આ સંઘ નિશ્ચય કરે છે કે અખિલ ભારતીય શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી જૈન કૉન્ફરન્સ તરફથી સંપ્રદાયો નાબૂદ કરવાનો અને બૃહદ શ્રમણ સંઘ બનાવવાનો જે નિશ્ચય થયો છે અને તે દિશામાં કાર્ય પણ શરૂ કરવામાં આવેલ છે તે કાર્યને સંપૂર્ણ રીતે સફળ બનાવવા માટે હાર્દિક સહયોગ આપશે અને તે માટે જેટલો ત્યાગ આપવો પડશે તે આપવા તત્પર રહેશે.

યુવાનોએ ઉદ્યોગ અને ખેતીવાડી પ્રતિ પોતાનું લક્ષ કેન્દ્રિત કરવું

પ્રસ્તાવ નં. ૪: આ પરિષદ યુવકોને આગ્રહ કરે છે કે દિનપ્રતિદિન વધતી જતી બેકારી અને ભવિષ્યમાં આવનાર આર્થિક મંદીને લક્ષ્યમાં રાખીને, યુવકોએ હુન્નરઉદ્યોગ અને ખેતીવાડી પ્રતિ પોતાનુ લક્ષ્ય કેન્દ્રિત કરવુ જોઇએ અને ખાસ કરીને સામુદાયિક ખેતીનુ કાર્ય કરીને, પોતાની આજીવિકા સાથે દેશની અન્નની અછત પૂરી કરવામાં પોતાનો સહકાર આપવો જોઇએ

આગામી વસતિગણતરીમાં 'જૈન' લખાવવા કાળજી રાખવી

પ્રસ્તાવ નં. ૫: સને ૧૯૫૦-'૫૧માં ભારત સરકાર તરફથી દેશભરની વસતિગણતરી થનાર છે. જૈનોની સંખ્યા બરાબર માલૂમ પડે તે માટે આ પરિષદ યુવક મંડળો તથા જૈન ભાઇઓને પ્રાર્થના કરે છે કે તે જાતિઓ અને ધર્મના ખાનામાં 'જૈન' જ લખાવે. આ કાર્ય માટે યોગ્ય કાર્યકર્તાઓની એક પ્રચાર સમિતિ નિયુક્ત કરવાની પ્રમુખશ્રીને આ પરિષદ સત્તા આપે છે.

પ્રસ્તાવ નં. ૬: જૈનોના બધા સંપ્રદાયોમાં પરસ્પર પ્રેમ, ભાઇચારો અને સહયોગભાવનાની વૃદ્ધિ કરવા માટે પોતપોતાની સામ્પ્રદાયિક માન્યતાઓનું પાલન કરવાની, સાથે અન્ય કેટલાક ક્ષેત્રોમાં અને ખાસ કરીને સામાજિક, રાજનૈતિક અને આર્થિક ક્ષેત્રોમાં બધા સંપ્રદાયના યુવકો જૈન ધર્મ તેમ જ સમાજને સ્પર્શતા વિષયોમાં એક મત બનીને વિચારવિનિમય કરે અને એક મંચ પર એકત્રિત થાય તેવો પ્રયત્ન કરવાની આ પરિષદ યુવકોને પ્રાર્થના કરે છે.

ભારત જૈન મહામંડળ અને ભારતીય જૈન સ્વયંસેવક પરિષદ જેવી સંસ્થાઓ આ દિશામાં જે પ્રયત્ન કરી રહેલ છે તે પ્રતિ આ પરિષદ આદરની દૃષ્ટિથી જુએ છે અને તેમનાં કાર્યોની પ્રગતિ માટે પ્રયત્ન કરવાની જૈન યુવક પરિષદના કાર્યકર્તાઓને પ્રાર્થના કરે છે.

જ્ઞાતિભેદ નિવારણ

પ્રસ્તાવ નં. ૭: સમયના પ્રભાવને ઓળખીને, આ પરિષદ જૈન ધર્માવલમ્બીઓમાં પ્રચલિત જ્ઞાતિભેદનુ નિવારણ અતિ આવશ્યક માને છે. દશા-વીસા, પાચઅઢિયા, ઓસવાળ-પોરવાડ વગેરે જાતિભેદને કારણે પરસ્પરના સામાજિક સંબંધોમા કેટલીક મુશ્કેલીઓ આવે છે અને ક્ષેત્ર સંકુચિત હોવાને કારણે કેટલાક પ્રકારની અગવડતા પડે છે, આ દિશામાં આવશ્યક પગલા લેવા માટે, ભિન્ન ભિન્ન પ્રાંતોના યુવક કાર્યકર્તાઓની એક સમિતિ સ્થાપવામાં આવે છે-જે આ જ્ઞાતિઓમા પરસ્પર વિવાહ સંબંધો યોજીને, જાતિભેદ દૂર કરવા પ્રયત્ન કરે. આ કાર્યમા પરિષદ કૉન્ફરન્સના સહકારની આશા રાખે છે.

યુવક મંડળોનું સંગઠન અને એકીકરણ

પ્રસ્તાવ નં. ૮: આ પરિષદ નિશ્ચય કરે છે કે, જૈન ધર્મ અને સમાજના સંગઠન માટે, પ્રત્યેક ગામમા યુવક મંડળ હોવા જરૂરી છે, તે યુવક મંડળો આ યુવક સંઘ સાથે જોડાઇને, વર્તમાન બંધારણ અનુસાર પોતાનુ કાર્ય વેગપૂર્વક શરૂ કરી દે જ્યાં જ્યાં યુવક મંડળ ન હોય ત્યા ત્યાં તેની સ્થાપના થવી જોઇએ અને જ્યા જ્યા એ થી વધારે યુવક મંડળ હોય ત્યા તેઓ એક થઇ જાય અને યુવક સંઘ સાથે જોડાઇ જાય. આ સંગઠન અને એકીકરણની યોજનાને કાર્યરૂપમા પરિણીત કરવા માટે ઘટતુ કરવાની આ પરિષદ કાર્યવાહિણી સમિતિને અધિકાર આપે છે.

જૈન સંસ્કૃતિનો પ્રચાર કરવાની કૉન્ફરન્સને વિનંતિ

પ્રસ્તાવ નં. ૯: અખિલ ભારતીય શ્વે. સ્થાનકવાસી જૈન યુવક પરિષદનુ આ અધિવેશન નિશ્ચય કરે છે કે, આપણી કૉન્ફરન્સ પ્રાચીન તથા અર્વાચીન જૈન સાહિત્યનુ પર્યાલોચન કરે અને કેટલાક એવા પુસ્તકો ચૂંટે અને પ્રમાણિત કરે-જે પરથી જૈન સમાજ અને જૈન સંસ્કૃતિનો પરિચય કરી શકાય સાથે સાથે એ

પણ નિશ્ચય કરે કે કોન્ફરન્સ એનુ સાહિત્ય જુદી જુદી ભષાઓમા પ્રગટ કરે અને દેશ-વિદેશના વિશ્વ-વિદ્યાલયોમા મફત મોકલે-જે પરથી સમસ્ત વિશ્વ એશિયાના એક પ્રાચીન તેમ જ મહાન ધર્મ વિષે માહિતી મેળવે.

'જૈન પ્રકાશ' અને અન્ય પત્રોને વિનતિ

પ્રસ્તાવ નં. ૧૦ યુવકોના કાર્યને વેગ મળે અને યુવકોના આદર્શોનો પૂરતો પ્રચાર થઇ શકે તે માટે આ પરિષદ કોન્ફરન્સને વિનતિ કરે છે કે 'જૈન પ્રકાશ'મા યુવકોના લખાણને સ્થાન આપવામા આવે અને પરિષદની કાર્યવાહીએ નીમેલા એક સ્થાનિક તત્રી, એ લખાણનું આધિપત્ય કરે સાથોસાથ હિદભરમાંથી જુદી જુદી ભાષામા પ્રગટ થતા દરેક હિન્દી, ગુજરાતી, અગ્રેજી, મરાઠી સાપ્તાહિક, પાક્ષિક અને માસિક પત્રોને આ પરિષદ વિનતિ કરે છે કે યુવક સઘના ધ્યેયના પ્રચાર માટે પરિષદ તરફથી નિયમિત રીતે મોકલવામા આવતા લખાણોને યોગ્ય સ્થાન આપવામા આવે આ બાબતમા યોગ્ય કરવાની સત્તા કાર્યવાહક સમિતિને આપવામાં આવે છે.

આભાર-પ્રદર્શન

પ્રસ્તાવ નં. ૧૧: યુવક પરિષદના તૃતીય અધિવેશનમાં સહકાર આપવા માટે અને જોઇતી સર્વ અનુકૂળતા કરી આપવા માટે યુવક પરિષદ, નીચેની સસ્થાઓનો અને કાર્યકરોનો આભાર માને છે

યુવક પરિષદનુ સફળ સચાલન કરવા માટે અને યુવક પરિષદને સફળ બનાવવા સમયનો ભોગ આપી જે કિમતી ફાળો આપ્યો છે તે માટે પરિષદના પ્રમુખ શ્રી. દુર્લભજીભાઇ કેશવજી ખેતાણીનો આભાર માનીએ છીએ.

મદ્રાસ અધિવેશનમાં હાજરી આપવા ઇચ્છતાં કેટલાંક ભાઇબહેનોને કન્સેશન ટિકિટની સગવડતા કરી આપવા માટે, મુબઇના જે જે ગૃહસ્થોએ મદદ કરી છે તેમનો આભાર માનીએ છીએ.

અ ભા. શ્વે. સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સના પ્રમુખશ્રી, મત્રીમડળ, કાર્યવાહક સમિતિ અને અન્ય કાર્યવાહકો કે જેમની પ્રેરણાથી અને સહકારથી આ અધિવેશન મદ્રાસમાં ભરી શકાયુ,

મદ્રાસ શ્રી શ્વે. સ્થા. જૈન સઘ, સ્વાગત સમિતિ, મદ્રાસના નવયુવાન સાથીદારો, જેમની શીળી છાંયા નીચે આ અધિવેશન સફળ થયુ.

સ્થા. જૈન યુવક મડળ, મુંબઇ, સ્થા. જૈન યુવક મડળ સ્વયસેવક, ઝાલાવાડ સ્થા. જૈન સ્વયસેવક દળ.

જૈન પ્રકાશ, સ્થા. જૈન, રત્નજ્યોત, ઝલક, લોંકાશાહ, જિનવાણી તેમ જ અન્ય દૈનિક વર્તમાનપત્રો-જન્મભૂમિ, નૂતન ગુજરાત મુબઇ સમાચાર તેમ જ મદ્રાસના દૈનિક પત્રો-જેમણે અમારા પ્રચારકાર્યમાં મદદ કરી છે.

હિદભરના જૈન યુવાન ભાઇબહેનોનો કે જેમણે તન, મન, ધનથી સહકાર આપીને આ અધિવેશનને ચિરસ્થાયી બનાવેલ છે.

શ્રી અખિલ હિંદ સ્થાનકવાસી જૈન યુવક સઘ

મદ્રાસ મુકામે ચૂટાયેલ કાર્યવાહક સમિતિ

પ્રમુખ :—

૧. શ્રી દુર્લભજીભાઇ કેશવજી ખેતાણી, મુબઇ.

ઉપપ્રમુખ :—

૨. શ્રી નવનમલજી કુદનમલજી ફીરોદિયા, મુબઇ

મંત્રીઓ :—

૩. શ્રી જગજીવનદાસ સુખલાલ અજમેરા, મુબઇ,
૪. ,, હિમતલાલ હરિલાલ અંધાર, મુબઇ.
૫. ,, બચુભાઇ પોપટલાલ દોશી, મુબઇ.

કોષાધ્યક્ષ :—

૬. શ્રી નાગરદાસ ત્રિભુવનદાસ મુબઇ.

કાર્યવાહક સભ્યો :—

૭. શ્રી મણિલાલ વી ચદભાઇ શેઠ, મુંબઇ
૮. ,, ખીમચંદભાઇ મગનલાલ વોરા, ,,
૯. ,, ચુનીલાલ કલ્યાણજી કામદાર, ,,
૧૦ ,, કાન્તિલાલ લક્ષ્મીચદ વોરા, ,,
૧૧ ,, ચદુલાલ લક્ષ્મીચદ શાહ, ,,
૧૨ ,, નવલચદભાઇ અમેચદ મહેતા, ,,
૧૩. ,, વૃજલાલ મોહનલાલ ખધાર, ,,
૧૪. ,, નટવરલાલ કપુરચદ શાહ, ,,
૧૫. ,, શાદીલાલજી જૈન, ,,

પ્રાંતિક કાર્યવાહકો :—

૧૬. શ્રી જવાહરલાલજી મુણોત, અમરાવતી.
૧૭. ,, નથમલજી લુકડ, જલગામ.
૧૮. , શાતિલાલ દુર્લભજી ઝવેરી, જયપુર.

૧૯. ,, દલસુખભાઇ માલવણિયા, બનારસ
૨૦. ,, શાંતિલાલ વનમાળી શેઠ, બ્યાવર.
૨૧. ,, પી. સી. ચોરડિયા, પૂના.
૨૨ ,, રાજમલજી લલવાણી, જામનેર.
૨૩. ,, જીવણલાલ છગનલાલ સંઘવી, અમદાવાદ.
૨૪. ,, ભોગીલાલ ચુનીલાલ પટેલ, સુરેન્દ્રનગર.
૨૫. ,, નગીનભાઇ ત્રિભુવનદાસ ગાંધી, વઢવાણ શહેર.
૨૬. ,, જશવંતમલજી એન્જિનેયર, મદ્રાસ.
૨૭ ,, ભાગચંદજી ગેલડા, ,,
૨૮. ,, સુરેન્દ્રભાઇ જેશીંગભાઇ, ,,
૨૯. ,, પુખરાજજી બાફણા. મદ્રાસ
૩૦. ,, રજનિકાંત એન. મહેતા, ,,
૩૧ ,, સુજાનમલજી મહેતા, જાવરા.
૩૨. ,, બાબુલાલજી ઓથરા. રતલામ.

આ ઉપરાંત જે જે ગામોમાં યુવક કાર્યકર્તાઓ કાર્ય કરવા ઇચ્છતા હોય તેઓ પોતાનાં નામ વહેલી તકે જણાવે એ જ અભ્યર્થના.

પત્રવ્યવહારનું સ્થળ:—અખિલ હિન્દ સ્થાનકવાસી જૈન યુવક સંઘ, ટી. જી. શાહ બિલ્ડિંગ, પાયધુની, મુંબઇ, નં. ૩.

મહિલા પરિષદના અધિવેશનમાં પસાર થયેલ ઠરાવો

[કોન્ફરન્સના ૧૧ મા મદ્રાસ અધિવેશન સાથે મહિલા પરિષદનું પાંચમું અધિવેશન તા. ૨૪-૧૨-'૪૯ ના રોજ મળેલ ત્યારે પસાર થયેલ ઠરાવો આ નીચે આપ્યા છે.]

સ્વતંત્ર ભારતમાં મળતી પ્રથમ મહિલા પરિષદ

પ્રસ્તાવ નં. ૧: સેંકડો વર્ષોની ગુલામીના બંધન તોડીને પૂ. મહાત્માજીના નેતૃત્વમાં વિશ્વના આજ સુધીના ઇતિહાસમાં અજોડ એવા અહિંસક માર્ગ દ્વારા આપણા ભારતવર્ષે આઝાદી પ્રાપ્ત કરી છે આજની આ મહિલા પરિષદ આઝાદીના ખુશનુમા વાતાવરણમાં મળી રહેલ છે તે માટે આજની આ સભા હાર્દિક આનંદ પ્રગટ કરે છે અને રાષ્ટ્રની આઝાદી પ્રાપ્ત કરવામાં ભારતીય મહિલાઓએ જેવી રીતે નોંધપાત્ર હિસ્સો આપેલ છે તેવી રીતે આઝાદીને ચિરસ્થાયી બનાવવામાં તથા વિશ્વમાં ભારતનું નામ ઊંચું લાવવામાં જૈન મહિલાઓ પણ સર્વ બુદ્ધિ અને શક્તિઓથી સહયોગ આપે એમ આજની મહિલા પરિષદ સૂચવે છે.

શોક પ્રદર્શન

પ્રસ્તાવ નં. ૨: ભારતમાતા પૂ. કસ્તુરબા, સ્વતંત્રતાની લડતમાં સ્ત્રીવર્ગને પોતાની શક્તિનું ભાન કરાવનાર પૂ. મહાત્માજી અને અન્ય સુધરેલી પ્રજાઓમાં અસરકારી ગણાતી ભારતની મહિલાઓનું પરદેશમાં પણ પોતાના તેજસ્વી અને પ્રતિભાવંત વ્યક્તિત્વથી ગૌરવ વધારનાર તેમ જ સ્ત્રીજાતિમાં જાગૃતિના પૂર વહેવડાવનાર સમર્થ કવયિત્રી દેવી સરોજિની નાયડુના સ્વર્ગવાસની આ સભા સખેદ નોંધ લે છે અને તેમના તેજસ્વી આત્માની પ્રેરણા ભારતના નારીવર્ગને હંમેશા મળતી રહે એમ પ્રાર્થે છે.

ધન્યવાદ અને આભાર પ્રદર્શન

પ્રસ્તાવ નં. ૩: સમાજની બહેનોની ઉન્નતિ તથા સહાય માટે શ્રાવિકાશ્રમ ફંડમાં રૂ. એક લાખ એકત્ર ન થાય ત્યાં સુધી દૂધ ન પીવાની આકરી પ્રતિજ્ઞા લઇ, ૬૩ વર્ષની બુઝર્ગ વયે અથાગ શ્રમ વેઠી શ્રાવિકાશ્રમના મકાનની ખરીદી સુધીનું કાર્ય કરનાર શ્રી. ટી. જી. શાહને બહેનોની આ સભા ધન્યવાદ આપે છે તથા રૂ. ૧૧,૧૧૧) જેવી નાદર રકમ બહેનોના કાર્યમાં ઉદારભાવે અર્પણ કરનાર શ્રી. રામજીભાઇ હંસરાજ કામાણીનો આભાર માને છે

કેળવણી

પ્રસ્તાવ નં. ૪: યુગ પલટાયો છે, સ્ત્રીને માટે પુરુષ સમોવડી થવાના બધા યે સંયોગો ઊભા થયા છે, તેવે પ્રસંગે લગ્નની બજારમાં મૂલ્યાંકન વધે તે દૃષ્ટિએ નહીં, પરન્તુ આર્થિક સ્વાવલંબનની ખુમારી પ્રાપ્ત થાય અને મુશ્કેલીમાં સહાય થઇ શકાય તેટલું શિક્ષણ આ યુગની સ્ત્રીએ મેળવવું જોઇએ માતા-પિતાઓએ આપવું જોઇએ તેમ આજની આ પરિષદ માને છે.

પ્રસ્તાવ નં. ૫: મધ્યકાલીન યુગમાં મુસ્લિમોના રાજ્યકાળ દરમિયાન ચારિત્ર્યના રક્ષણ માટે મોં છુપાવી

સૌન્દર્યને સતાડવા માટે ઘૂમટાની પ્રથા દાખલ થયેલી, પરન્તુ આજે તેનુ કોઇ પ્રયોજન નથી. એટલુ જ નહી પરન્તુ એ પ્રથા સ્ત્રીના વિકાસને રુધનારી અને કુટુબની સગવડમા ઘણી જ મુશ્કેલીઓ ઊભી કરનારી હોઇ, તેનો સદતર ત્યાગ કરવા અને કરાવવા જોશભેર પ્રયત્ન કરવો જોઇએ.

મૃત્યુ પાછળની ક્રિયાઓ

પ્રસ્તાવ ન. ૬: કોઇનુ મૃત્યુ થતા તેની પાછળ રોવુ, કૂટવુ; પગટો ખાવી, રાજિયા ગાવા અને યુવાન યા યુવતીના અરેરાટીભર્યા મૃત્યુ પછી ઘીમાં ઝબોળેલી રોટલી,-દાળ-ભાત,-શાક વગેરે જમવા તથા વૃદ્ધની પાછળ જમણ કરવા એ ઘણો જ ખોટો રિવાજ છે. આ પ્રથા સદંતર બધ કરવી તથા પ્રત્યેક મરનારના આત્માની શાંતિ ખાતર તેના આપ્તજનોએ માગી દિવસના અમુક વખત નવકાર મત્રનો મૌન જાપ કરવો.

લગ્ન સબધો માટેની સંકુચિત મર્યાદાને વિસ્તૃત બનાવવી

પ્રસ્તાવ ન. ૭: લગ્ન એ પ્રત્યેક વ્યક્તિનો અગત પ્રશ્ન હોવા છતા સમાજજીવન સાથે તે એટલો બધો ઓતપ્રોત થઇ ગયો છે કે, આપણે તેમા સમયાનુસાર ફેરફાર કરવા જ જોઇએ. આપણે જૈન છીએ, ભગવાન મહાવીરના એટલે કે શ્રમણ સસ્કૃતિના ઉપાસક છીએ, તેથી એક જ પ્રકારના સસ્કારો ધરાવનાર વર્તુળ સુધી, એટલે કે સમગ્ર ભારતના જૈન સુધી લગ્નની મર્યાદા વિસ્તારાય તો આપણા પુત્ર-પુત્રીઓને માટે યોગ્ય વર કે કન્યા મેળવવાનુ સરળ થાય આ કાર્યમા આજે સમાજ કે રાજ્યનુ કોઇ બધન નડતુ નથી, માત્ર મનના બધનોને તોડનારૂ આદોલન જગાવવુ જોઇએ

વિધવાની કરૂણ હાલતના અસરકારક ઉપાયો

પ્રસ્તાવ ન. ૮: સમાજની એકેએક સમજદાર વ્યક્તિને વિધવના દારૂણ દુઃખ તરફ જરૂર કરૂણા આવતી હશે, પરતુ માત્ર લૂખી કરૂણાથી શુ થાય? તેના દુખના નિવારણનો માર્ગ શોધવો જોઇએ. તેના બે માર્ગ છે:

અ. વૈધવ્ય ફરજિયાત નહિ, પણ મરજિયાત હોવુ જોઇએ,

બ. સ્વેચ્છાએ વૈધવ્ય પાળવા ઇચ્છતી બહેનોમાથી જેમને કૌટુમ્બિક સહાય ન હોય તેમને સમાજે સહાય આપવી જોઇએ

વધતી જતી આત્મહત્યાઓનુ મૂળ શોધી તેને અટકાવવી

પ્રસ્તાવ નં. ૯ અ. સાસરે દુખ હોય છતા આબરૂને હાનિ પહોંચવાના કે લોકટીકાના ભયે પિયરમાં સઘરે નહી ત્યારે આવી બહેનો મરણનુ શરણ શોધે છે. આવી બહેનો માટે સમાજ તરફના નિર્ભય આશ્રય-સ્થાનની જરૂર છે.

બ. આવા મૃત્યે પ્રસગે સમાજે માત્ર અલ્પકાળ અરેરાટી કરી, બેસી ન રહેતાં, એ મૃત્યુમાં જે કારણભૂત હોય તેમને સખ્ત નસિયત આપવી તથા પતિના દુખે મરનારને ફરી કોઇએ પોતાની કન્યા ન આપવી.

સઘ-ઐક્યની યોજનામાં બહેનોએ પોતાનો ફાળો આપવા બાબત

પ્રસ્તાવ નં. ૧૦: સપ્રદાયના વાડાઓ ભૂસી સઘ-ઐક્યની યોજના માટે આપણી કોન્ફરન્સ તરફથી જે પ્રયત્નો ચાલી રહ્યા છે તેમા પુરૂષોની સાથે બહેનોએ પણ પોતાનો સહકાર આપવો અને એ યોજનાનો ભગ કરનારને સહકાર આપવો નહિ.

બહેનોએ શરીર સુદૃઢ બનાવવાં ઘટે

પ્રસ્તાવ નં. ૧૧: શરીરની શક્તિ પર જીવનની બધી પ્રગતિ યા ઉન્નતિનો આધાર છે, ખાસ કરીને સ્ત્રીએ તો માતા બનવાનુ હોઇ, તેના શરીરના બાંધાની અસર તેના સતાન પર થાય છે માટે સુકોમળતાના ખોટા ખ્યાલો છોડી દઇ, બહેનોના શરીર કસાયેલા અને મજબુત બને તે જાતના પ્રયત્નો દરેક ઘરમા થવા જોઇએ

દાનના પ્રવાહની ગતિ બદલવાની જરૂર

પ્રસ્તાવ ન. ૧૨: કોઇ પણ સમાજ યા રાષ્ટ્રની ઉન્નતિનો આધાર કેળવણી પર છે. સૌ જાણે છે કે આપણ સમાજનો સ્ત્રીવર્ગ કેળવણીની દિશામાં ખૂબ પછાત છે. જ્યા સુધી સ્ત્રીઓ નહી કેળવાય ત્યાં સુધી સમાજદેહનુ અર્ધુ અગ પાંગળુ રહેશે, માટે સમાજોન્નતિ ખાતર સમાજના ધનિકોએ પોતાનો ધનપ્રવાહ અને વિદ્વાનોએ પોતાની બુદ્ધિશક્તિ, સ્ત્રીઓ માટેના સરસ્વતી મદિરો ખોલવા અને તેને પોષવા પાછળ વહેવડાવવો જોઇએ.

સમાજમાં સ્ત્રીઓનો સમાન દરજ્જો

પ્રસ્તાવ ન. ૧૩: સ્વતત્રતા, સમાનતા અને ન્યાયની ઘોષણા કરતુ આઝાદ હિદનુ નવુ બધારણ

ઘડાઇ ગયુ છે અને તેમાં કાયદાની દષ્ટિએ તમામ પ્રજાજનોને સમાન લેખવામાં આવ્યા છે, તેથી જીવનના પ્રત્યેક વ્યવહારમા અને સામાજિક ક્ષેત્રોમાં એકેએક પ્રસગે પુરૂષે એ સ્ત્રીઓને સમાન સ્થાન આપવાની પ્રથા પાડવી જોઇએ અને બહેનોએ એ સ્થાનને શોભાવવાની તમન્ના સેવવી જોઇએ

આભાર–પ્રદર્શન

કાર્યવાહીને અતે મહિલા પરિષદના પ્રમુખ, સ્વાગત સમિતિના પ્રમુખ, કોન્ફરન્સ અધિવેશનના યોજકો અને ઉપસ્થિત બહેનોનો આભાર માનવામાં આવ્યો હતો.

અધિવેશન બારમુ

સ્થળ: સાદડી (મારવાડ)

તા. ૪, ૫, ૬ મે ૧૯૫૨

પ્રમુખ: શેઠ ચપાલાલજી બાઠિયા

સ્વા. પ્રમુખ: શ્રીમાન શેઠ દાનમલજી બલદોટા

શ્રી. અ ભા. શ્વે સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સના ઇતિહાસમા આ બારમુ અધિવેશન ઐતિહાસિક છે. આ અધિવેશનની સાથે બૃહદ સાધુ–સમેલન પણ મળેલુ જે વખતે જુદા જુદા સંપ્રદાયોનું વિલીનીકરણ કરી શ્રી વર્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન શ્રમણ સઘની સ્થાપના કરવામાં આવી.

આ અધિવેશનમાં મુખ્યત્વે નીચેના પ્રસ્તાવો પસાર થયા, જે નોંધપાત્ર છે.

પ્રસ્તાવ નં. ૩: (૧) ૧૯૪૦ ની સરકારી વસતી ગણતરી અનુસાર ભારતમા જૈનોની સખ્યા ૧૧ લાખની અદાજે, છે, પરતુ વસ્તુત તો ભારતમાં જૈનોની વસતી તેથી ઘણી વધારે હોવાની જૈનોની ત્રણે મુખ્ય સસ્થાઓની માન્યતા છે. જૈન સમાજ હમેશા રાષ્ટ્રવાદી રહ્યો છે, એટલું જ નહિ પરન્તુ આઝાદીની લડતમાં પણ હમેશા આગળ રહ્યો છે. આઝાદી મળ્યા બાદ પણ જૈનોએ કદી વિશિષ્ટાધિકારોની માગણી કરી નથી, એટલુ જ નહિ પરંતુ અલગ અધિકારોની લડત સામે પોતાનો વિરોધ પ્રદર્શિત કર્યો છે. જૈન સમાજ ભારત સરકાર સમક્ષ માત્ર એટલી જ માગણી કરે છે કે જે અહિસક શસ્ત્ર દ્વારા આઝાદી પ્રાપ્ત થઇ છે તે અહિસાના પ્રવર્તક ભગવાન મહાવીરના જન્મદિન ચૈત્ર-શુદ ૧૩નો દિવસ જાહેર તહેવાર તરીકે માન્ય કરવામાં આવે.

(૨) આ અધિવેશન જૈન સમાજને પણ સાગ્રહ અનુરોધ કરે છે કે તેઓ મહાવીર જયતિ દિને પોત પોતાના વેપાર આદિ કામકાજ બધ રાખે.

(૩) મુબઇ સરકાર, રાજસ્થાન સરકાર અને અન્ય જે જે પ્રાન્તિક સરકારોએ "મહાવીર જયતિ દિન" જાહેર તહેવાર તરીકે મજુર કરેલ છે તેમનો આ અધિવેશન આભાર માને છે.

કોન્ફરન્સ પ્રકાશિત ધાર્મિક પાઠ્યપુસ્તકો શાળાઓમાં દાખલ કરવા અંગે

ત્યાર બાદ કોન્ફરન્સ પ્રકાશિત ધાર્મિક પાઠ્યપુસ્તકોને જૈન શાળાઓ પાઠશાળાઓ અને વ્યવહારિક શાળાઓમા પોતપોતાના પાઠ્યક્રમમા દાખલ કરવાનો અનુરોધ કરતો પ્રસ્તાવ શ્રી. ચુનીભાઇ કામદારે રજૂ કર્યો હતો, જેનુ પ્રો. ઇન્દ્ર તેમ જ શ્રી રાજમલજી ચોરડીઆએ અનુમોદન કર્યું હતુ. આ પ્રસ્તાવ સર્વાનુમતે મજૂર થયો હતો.

પ્રસ્તાવ નં. ૪: સ્થાનકવાસી જૈન સમાજની ધાર્મિક તેમ જ વ્યવહારિક શિક્ષણ શાળાઓમા વિદ્યાર્થીઓને ધાર્મિક શિક્ષણ આપવા માટે-કોન્ફરન્સે વિદ્વદ સમિતિના સહકાર વડે અગ્રેજી ધોરણ એકથી મેટ્રિક સુધીના ધોરણ માટે જે પાઠ્યપુસ્તકો તૈયાર કર્યા છે, તેમાથી ચાર ભાગ ગુજરાતીમાં અને પાંચ ભાગ હિન્દીમાં પ્રગટ થઇ ગયેલ છે. આ કાર્ય પ્રતિ આ અધિવેશન સતોષ પ્રગટ કરે છે અને સમગ્ર હિન્દની પ્રત્યેક જૈન શાળાઓ, પાઠશાળાઓ અને વ્યવહારિક શાળાઓને તેમ જ શ્રી સઘના સચાલકોને અનુરોધ કરે છે કે તેઓ આ પાઠ્યપુસ્તકોને સર્વે શિક્ષણ શાળાઓમાં પાઠ્યક્રમ તરીકે મજૂર કરે.

પ્રસ્તાવ નં. ૬: પશુપક્ષીઓની નિકાસ અન્ય દેશોમા વેક્સિનેશન તેમ જ અન્ય પ્રયોગો માટે થઇ રહેલ છે તે તથા પ્રાન્તિક સરકારો દ્વારા સમય સમય પર વાદરાઓ આદિ મૂક પ્રાણીઓ મારવાના જે હુકમો કાઢવામાં આવે છે તે રાષ્ટ્રપિતા મહાત્મા ગાધીની માન્યતા, અહિસાના સિદ્ધાતો તથા રાષ્ટ્રીય સરકારની શાનની વિરુદ્ધ છે, તેથી કોન્ફરન્સનુ આ બારમું અધિવેશન ભારત સરકારને અનુરોધ કરે છે કે આ નિકાસ જલ્દીમા જલ્દી રોકવામાં આવે તેમ જ વાદરાઓ આદિ મારવાના હુકમો જે પ્રાંતમાં હજુ ચાલુ છે તે હુકમો ત્યાંની પ્રાન્તિક સરકારે

પાછા ખેચી લે. દેવદેવીઓ નિમિત્તે જે લાખો પશુઓનો વધ થાય છે તે વધ બધ કરવાનો પણ આ અધિવેશન રાષ્ટ્રીય સરકાર તેમ જ પ્રાંતિક સરકારોને અનુરોધ કરે છે.

પ્રસ્તાવ ન. ૭ ભારતની બિનસામ્પ્રદાયીક વર્તમાન રાજનીતિને લક્ષમાં લેતા, જૈન સમાજના સર્વ ફિરકાઓની એકતા આજે સમગ્ર જૈન સમાજના સામુદાયિક હિત માટે અત્યત આવશ્યક છે જૈન સમાજના સર્વ ફિરકાઓમાં મુખ્યત ક્રિયા ભેદ સિવાય કોઇ ખાસ મતભેદ નથી; આ દૃષ્ટિએ સામ્પ્રદાયિક મતભેદોને બાજુએ રાખીને, જૈન સમાજે સર્વગ્રાહી પ્રશ્નોમા સાથે રહીને કાર્ય કરવુ જોઇએ એમ આ અધિવેશન માને છે તેથી જ્યારે જ્યારે સમગ્ર જૈન સમાજને સ્પર્શતા પ્રશ્નો ઉપસ્થિત થાય ત્યારે ત્યારે જૈન સમાજના સર્વે ફિરકાઓને, હિદભરના શ્રી. સઘોનો સહકાર લઇને કાર્ય કરવાનો આ અધિવેશન અનુરોધ કરે છે.

સર્વ મુનિરાજોને પણ આ અધિવેશન વિનતિ કરે છે કે સર્વ સપ્રદાયોની એકતા વધે તેવા પ્રયત્નો તેઓ પણ કરે

પ્રસ્તાવ નં. ૧૦: (અ) કોન્ફરન્સ તરફથી શરૂ કરવામા આવેલ સઘ–ઐક્ય યોજના જે પાછલા ત્રણ વર્ષથી ચાલી રહેલ છે અને જેને સફળ બનાવવા માટે કોન્ફરન્સ અને સાધુ–સમેલન નિયોજક સમિતિએ સતત અવિશ્રાત પ્રયત્ન કર્યો છે અને મોટા ભાગના પૂ મુનિરાજોએ હાર્દિક સહકાર આપેલ છે, એટલુ જ નહિ પરન્તુ સખ્ત ગરમીમાં પોતાના સ્વાસ્થ્યની પરવા કર્યા વિના દૂર દૂરથી ઉગ્ર વિહાર કરીને બૃહદ્ સાધુ–સમેલન–સાદડીમાં પધારીને, સામ્પ્રદાયિક મતભેદો દૂર કરીને, પ્રેમપૂર્વક સગઠિત થઇને, સ્થાનકવાસી જૈન સમાજ અને ધર્મના ઉત્કર્ષ માટે એક આચાર્ય અને એક સમાચારીની સુદૃઢ અને સગીન યોજના બનાવીને, 'શ્રી વર્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન શ્રમણ સઘ'ની સ્થાપના કરી છે તે માટે સર્વ મુનિરાજો પ્રતિ આ અધિવેશન સપૂર્ણ શ્રદ્ધા અને આદર પ્રદર્શિત કરે છે અને બહુમાનની દૃષ્ટિએ જુએ છે. ભગવાન મહાવીરના શાસનમાં બૃહદ્ સાધુ–સમેલન એક અદ્વિતીય અને અભૂતપૂર્વ ઘટના છે– જે જૈન શાસનના ઇતિહાસમા સુવર્ણાક્ષરે ચિરસ્મરણીય સ્થાન પ્રાપ્ત કરશે.

(બ) શ્રી બૃહદ્ સાધુ સમેલન–સાદડીમા થયેલ કાર્યવાહીનુ આ અખિલ ભારતવર્ષીય શ્રી. શ્વે. સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સનુ બારમુ અધિવેશન હાર્દિક અનુમોદન કરે છે અને સમેલનના પ્રસ્તાવોના પાલનમા શ્રાવકોચિત સર્વાગી અને હાર્દિક સહકાર દૃઢતાપૂર્વક આપવાની પોતાની સર્વ પ્રકારની જવાબદારી સ્વીકારે છે, તે માટે હિન્દભરના સર્વ સ્થાનકવાસી જૈન સઘોને આ અધિવેશન અનુરોધ કરે છે કે સાધુ–સમેલનના પ્રત્યેક પ્રસ્તાવોનુ પૂર્ણ પાલન કરાવવા માટે સૌ પોતપોતાની જવાબદારીપૂર્વક સક્રિય કાર્ય કરે.

(ક) જે જે સમ્પ્રદાય અને મુનિરાજોના પ્રતિનિધિઓ સાદડી સાધુ–સમેલનમા એક યા બીજા કારણે પધારી શકેલ નથી તેઓને આ અધિવેશન સાગ્રહ અનુરોધ કરે છે કે તેઓ વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રમણ સઘમાં ૧ વર્ષમા સામેલ થઇ જાય, તેમા જ તેમનુ અને સ્થા. જૈન સમાજનુ ગૌરવ છે.

(ડ) આ અધિવેશન ભારપૂર્વક ઘોષણા કરે છે કે સમસ્ત હિદના વર્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન શ્રમણ સઘના સગઠનમા જે સાધુ–સાધ્વીજીઓ એક વર્ષમાં શામેલ નહિ થાય તેઓને માટે કોન્ફરન્સને ગભીર વિચાર કરવાનો રહેશે

સને ૧૯૩૩મા અજમેર સમેલનમા આરંભાયેલુ કાર્ય આજે સફળ થઇ રહેલ છે, તેથી આ અધિવેશન હાર્દિક સંતોષ પ્રગટ કરે છે.

મહિલા પરિષદ

છ ઠ્ઠું અધિવેશન-સાદડી

રાવબહાદુર શ્રી મોતીલાલજી મુથાની પ્રેરણાથી ને શ્રી લીલાવતીબેન કામદાર તથા શ્રી. કેસરબેન ઝવેરીના પ્રયત્નથી તા. ૯-૫-'૫૨ના રોજ સાદડી મુકામે "મહિલા સમેલન" ભરવામાં આવ્યુ હતુ. સમેલનનુ પ્રમુખસ્થાન શ્રીમતી તારાબેન બાંઠિયાએ સ્વીકાર્યું હતુ. મગલાચરણમા શ્રી કમળાબેને સંસ્કૃતમાં મહાવીરાષ્ટક ગાયુ હતુ. તે પછી બાળાઓએ રાષ્ટ્રગીત ગાયા બાદ સમેલનનુ કાર્ય શરૂ કરવામા આવ્યુ હતુ.

પ્રમુખશ્રીની ઓળખાણ આપતા શ્રી. લીલાવતીબેન, કામદારે કહ્યું હતુ કે, "આજના આપણા સમેલન માટે સુશિક્ષિત, પ્રાગતિક વિચારો ધરાવનાર, સ્ત્રીજાતિની ઉન્નતિમાં ઊંડો રસ લેનાર અને જનહિતના કાર્યોમા સક્રિય ભાગ લઇ સેવાર્થે ધન અને બુદ્ધિને વાપરનાર શ્રીમતી તારાબેન બાંઠિયા જેવાં પ્રમુખ આપણને મળ્યા છે; તે આપણા સમેલનનું સૌભાગ્ય ગણાય.

ત્યાર પછી અ. ભા. શ્વે. સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સ, સતારાવાળા રા. બ. શ્રી મોતીલાલજી મુથાનાં ધર્મપત્ની શ્રી સજ્જનબાઇ, શ્રી. સ્થા. જૈન યુવક મંડળ વગેરે તરફથી સમેલનને સફળતા ઇચ્છતા સદેશાઓ આવ્યા હતા તે વાંચી સભળાવવામાં આવ્યા હતા. એ પછી પ્રમુખસ્થાનેથી શ્રી. તારાબેને મનનીય પ્રવચન કર્યું હતું.

મુખ્ય વકતા તરીકે શ્રી લીલાવતીબેન કામદાર હતા. તેમણે સ્ત્રીજાતિની પ્રગતિ' વિષે જે પ્રેરક વિચારો રજૂ કર્યા હતા તેનો સારાંશ નીચે પ્રમાણે છે: "વર્તમાન ભારતમાં સ્ત્રીઓ સામાજિક, રાજકીય શિક્ષણવિષયક અને એવા જીવનને સ્પર્શતા એકએક ક્ષેત્રમાં કાર્ય કરી રહી છે; ભારતની સ્ત્રીશક્તિ આજે જાગી ઊઠી છે. જીવનનુ એક પણ ક્ષેત્ર આજે તેનાથી અણસ્પર્શ્યું રહ્યું નથી. આજે એક બાજુથી ભારતની મહિલા ગવર્નરપદે આવી આખા પ્રાંતનો વહીવટ તપાસી શકે છે, મધ્યસ્થ કે પ્રાંતીય સરકારોમાં પ્રધાનપદે આવી મહત્ત્વનાં ખાતાઓની જવાબદારી ઉપાડી શકે છે, લોકસભા કે ધારાસભાના સભ્યસ્થાનેથી પ્રજાજીવનને માટે ઉપયોગી કાયદા ઘડવામા મદદ કરી શકે છે; પરદેશના મોટાં રાજ્યોમાં એલચી તરીકેનો હોદ્દો સફળતાપૂર્વક સભાળી શકે છે, ત્યારે બીજી બાજુથી મારી અહી બેઠેલી બહેનોમાથી મોટા ભાગની બહેનોને એક ગામથી બીજે ગામ જવુ હોય તો પણ તેમને મૂકવા જનાર એક માણસ સાથે જોઇએ! એવી પગુ સ્થિતિ તેઓ ભોગવે છે. બહેનો! જરા વિચારો ખરાં કે આનું કારણ શુ? તમોને નથી લાગતુ કે શિક્ષણનો અભાવ એ જ આ સ્થિતિનુ મૂળ છે? શિક્ષણ એ જીવનવિકાસ માટે અનિવાર્ય વસ્તુ છે. શિક્ષણથી સ્વશકિત વિષેની શ્રદ્ધા પ્રગટે છે. સત્યાસત્યને સમજવાની વિવેકશકિત શિક્ષણથી જ આવે છે. સુષુપ્ત દશામા પડેલી સર્વ માનવીશકિતઓ શિક્ષણથી જ જાગૃત થાય છે. શિક્ષણથી ઉચ્ચ સસ્કારો ખીલે છે. માટે બહેનો જો તમે તમારી અને તમારા ભાવિ સતાનોની ઉન્નતિ ચાહતાં હો તો પ્રથમ પગથિયા તરીકે શિક્ષણને જીવનમાં સ્થાન આપજો. તમારામાંથી જેઓ તદ્દન અભણ હોય તેઓ ગમે તેટલી ઉમ્મરના હોય છતાં કુટુબીજનો કે પડોશીની મદદ લઇ અવશ્ય લખતા-વાંચતાં શીખે પ્રૌઢ શિક્ષણનો આજે સારો એવો પ્રચાર થઇ રહ્યો છે તેનો લાભ જરૂર લ્યો; અને અહી બેઠેલી દરેક બહેન મનમા

હજારોની સખ્યામાં 'મહિલા સમેલન'માં હાજર રહેલ બહેનોએ સર્વાનુમતે પસાર કરેલ ઠરાવ:

"આ મહિલા સમેલન સાધુ સમેલનની સફળતા માટે ઊંડો હર્ષ વ્યકત કરે છે અને મુનિ મહારાજો તથા સાધ્વીજીઓ ઉગ્ર વિહાર કરી અત્રે પધાર્યા છે તેમને ભાવભર્યા વદન કરે છે. સમગ્ર જૈન જગતમા જ નહિ, પરતુ ભારતના વિવિધ ધર્મગુરુઓ સમક્ષ સ્થા. જૈન સમાજના મુનિરાજોએ એકતાનો જે અપુર્વ દાખલો બેસાડયો છે તેને માટે સમસ્ત સ્થા. જૈન સમાજની બહેનો તેઓશ્રીને હાર્દિક ધન્યવાદ અર્પે છે અને તેમના ત્યાગની પ્રશંસા કરે છે.

નિર્ણય કરે કે, મારી પુત્રીને હુ જરૂર આ પ્રકારનુ શિક્ષણ આપીશ.

બ્હેનો! રૂઢિની ગુલામી હવે તમારે છોડવી જોઇએ. વર્ષો પહેલાં તે યુગની જરૂરિયાત પ્રમાણે જે રૂઢિઓ પડી હોય તેમાં સમય બદલાતા આવશ્યક પરિવર્તન કરવાની ખાસ જરૂર છે. દાખલા તરીકે ઘુમટા તાણ-વાનો રિવાજ. આ રિવાજે સ્ત્રીની પ્રગતિનાં દ્વાર રૂધી નાખ્યાં છે. ઘુમટાને કારણે બહારના જગત સાથેનો તેનો સબધ લગભગ તૂટી જાય છે ને તેથી તેનુ માનસ અત્યત સાંકડુ બની જાય છે. આપણે માત્ર જગત્ પર એક કુટુબ પૂરતુ જ કાર્ય કરી મરી જવા માટે જન્મ્યા નથી. કુટુબ તરફની આપણી જવાબદારી બરાબર અદા કરવી, પણ આપણા જીવનનુ ક્ષેત્ર માત્ર એટલુ જ ન રાખતાં વિશાળ બનાવવાની જરૂર છે સ્ત્રી પોતે એક સ્ત્રી છે એ ખ્યાલ છોડી દઇ પોતે એક વ્યકિત છે એમ સમજશે, ત્યારે જ તે ખરી પ્રગતિ સાધી શકશે. સ્ત્રી પણ પુરુષ જેટલી જ મનુષ્ય છે. તેને વિકાસની તક મળે તો તે પણ પુરુષના જેટલુ જ કાર્ય કરવાને શકિત-માન છે; તેના અનેક ઉદાહરણો વર્તમાન દુનિયામા આપણે પ્રત્યક્ષ જોઇએ છીએ.

જેના નામથી જૈન શાસન ચાલે છે તે ચરમ તીર્થંકર પ્રભુ મહાવીરે પણ સ્ત્રીને પુરુષસમોવડી ગણીને તીર્થસ્થાપ-નામા સાધુ સાથે સાધ્વીને અને શ્રાવક સાથે શ્રાવિકાને સ્થાન આપ્યુ છે. અન્ય ધર્મના નિયમ પ્રમાણે સ્ત્રીથી વેદોનુ અધ્યયન નહોતુ થઇ શકતુ, પણ જૈન ધર્મે તો તીર્થંકર જેવા મહદ્ પદમાંથી પણ સ્ત્રીને બાકાત રાખી નથી; એને માટે ૧૯ મા તીર્થંકર શ્રી મલ્લી-નાથનુ દૃષ્ટાંત મોજુદ છે. જાતિવ્યવસ્થા, વર્ણવ્યવસ્થા, વગેરે દરેક બાબતોમાં જૈનધર્મ પ્રથમથી જ ઉદાર છે. આપણી કોન્ફરન્સ સમગ્ર સ્થાનકવાસી જૈનોનુ પ્રતિનિ-ધિત્વ ધરાવે છે. છતાં તેમાં તેણે સ્ત્રીનુ સ્થાન ગૌણ રાખ્યુ છે. પૂ. ગાંધીજીએ અસહકાર યજ્ઞની શરૂઆત કરતાં જ બ્હેનોને હાકલ કરી સાથ આપવા કહ્યુ અને જગત આશ્ચર્યચકિત નજરે જોઇ રહ્યુ કે ભારતની બ્હેનોમાં શી શક્તિ છે અને તેમણે તે લડત વખતે કેટલુ કામ આપ્યુ હતુ! આજનુ આ મહિલા સમેલન કોન્ફરન્સના અગ્રણીઓને આ વસ્તુ તરફ લક્ષ દઇ સમાજોન્નતિના કાર્યોમા બ્હેનોને આગળ કરી તેમનો સાથ લેવાની ખાસ ભલામણ કરે છે."

એ પછી શ્રી. કમળાબેન બલદોટાએ "આપણા દેશની ૯૯ % સ્ત્રીની સ્થિતિ" એ વિષય પર હૃદયસ્પર્શી વક્તવ્ય કર્યું હતુ. શ્રી મદનકુવરબેન પારેખ, કુમારી વિમલબેન મુણોત, શ્રી. વસતબેન શાહ તથા મિસિસ શ્રીમલ્લે "આપણી પડદાપ્રથા અને તેનાથી થતા નુકસાનો" પર પોતપોતાના વિચારો જોરદાર રીતે રજૂ કરતાં કહ્યુ હતુ કે, પડદાથી સ્ત્રી કે પુરૂષ, દેશ કે સમાજ કોઇને કશો લાભ નથી, છતાં આજે આપણે તેને પકડીને બેઠા છીએ એ આપણી કેટલી નબળાઇ! વર્તમાનમાં પડદો તદન અનાવશ્યક છે. ઘૂમટાથી સ્ત્રીશકિતનું રૂધન થાય છે. ઘૂમટો તાણવાથી જ મર્યાદા સચવાય છે એ માન્યતા ખોટી છે, માટે દેશકાળને સમજી એ પ્રથાનો સત્વર ત્યાગ કરવો જોઇએ.

ત્યાર બાદ શ્રી સુશિલાબેન વોરાએ કહ્યુ કે, સાદ-ડીમાં પૂ. મુનિરાજોનું આ સમેલન એ જૈન સમાજમાં એક શુભ ચિહ્ન છે. બ્હેનો! આપણે પણ આપણા સમા-જની ઉન્નતિને માટે પ્રયત્ન કરવો જોઇએ. માત્ર ઘરમા બેસી રહી રસોઇ કરવાથી આપણી ફરજ પૂરી થતી નથી. ઘરની વ્યવસ્થા કરવાની જવાબદારી આપણે બરા-બર બજાવવી જોઇએ એમ હુ ચોક્કસપણે માનું છુ. જેમ પુરૂષોને શિરે કમાવાનો બોજ છે, તેમ સ્ત્રીઓને શિરે ગૃહવ્યવસ્થા અને બાળઉછેરનો બોજ છે. આ બોજ તેણે ઉઠાવવો જ જોઇએ પણ એટલાથી જ સતોષ માનીને બેસી રહેવુ એ બરાબર નથી. આપણે સમા-જની ઉન્નતિના દરેક કામમા પુરૂષની સાથે ઊભા રહેવુ જોઇશે. આજે સમાજમાં આપણુ સ્થાન નહિ જેવુ છે, તેનુ કારણ આપણે બાહ્ય જીવનની જવાબદારીથી અલગ રહીએ છીએ એ જ છે. જેટલી આપણી લાય-કાત વધશે તેટલુ આપણું સ્થાન આગળ આવશે, પણ બહારના જીવનમા કામ કરવા માટે આ ઘૂમટા પદ્ધતિ આપણને આપણા વિકાસમા ખૂબ વિઘ્નરૂપ થઇ પડે છે. માટે બ્હેનોને મારી એક જ વિનતિ છે કે તેમણે થોડીક હિમ્મત કેળવી પોતના કુટુબના માણસોને સમજાવી, તેમનો સહકાર લઇ ઘૂમટો દૂર કરવો જોઇએ. આ કામ સારૂ છે. બ્હેનોની ઉન્નતિમાં મદદરૂપ છે. તે કરવા માટે થોડા જૂનવાણી માનસવાળાની નિદા સહેવી પડશે, પરન્તુ તે સહન કરવાની શકિત કેળવીને પણ આપણે ઘૂમટો

સદંતર દૂર કરવો જોઇએ.

ઘૂમટાથી થતા નુકસાનનો તમો ખ્યાલ કરશો તો ઘડીભર આ પ્રથાને વળગી રહેશો નહિ. ઘૂમટાથી (૧) બહારની ખુલ્લી હવા નથી મળતી અને તંદુરસ્તી બગડે છે; (૨) બહારના જીવન સાથેનો સબંધ તૂટી જાય છે, (૩) પોતાના વિકાસ માટેની કોઇ તક રહેતી નથી, (૪) જનસેવા માટેનો દરવાજો બંધ થઇ જાય છે અને (૫) ઘૂમટો સ્ત્રીની પ્રગતિનો હરેક રીતે અવરોધક છે. માટે બહેનોને મારી ખાસ વિનંતિ છે—ખાસ આગ્રહ છે કે તેમણે સાદડીથી પોતાને ગામ જતાં પહેલા એટલો નિશ્ચય કરી લેવો જોઇએ કે આજથી અમારો ઘૂમટો બંધ છે. અમે મર્યાદામા માનીએ છીએ. મર્યાદા માત્ર મો છુપાવ્યે નથી જળવાતી. માટે બહેનો આ શબ્દો વ્યર્થ ન જાય તે સબંધે આપ જરૂર વિચારશો—યોગ્ય આચરશો. ઘૂમટાપ્રથા .... નષ્ટ હો.

દિલ્હીથી આવેલ શ્રી સીતારાબહેને "સ્ત્રીશિક્ષણ" ઉપર બોલતાં સ્ત્રીજાતિની ઉત્રતિના પ્રથમ સોપાન તરીકે એમણે શિક્ષણને ગણાવ્યું હતુ. એમણે કહ્યુ હતુ કે આંખોવાળો માનવી પણ અંધકારમા વસ્તુને જોઇ શકતો નથી તેમ શિક્ષણ વિના જીવન અને જગતને જોવાની દૃષ્ટિ સાંપડતી નથી. કન્યાઓને બને તેટલુ વધારે શિક્ષણ આપી, તેમના જીવનને સુખી કરવાનો અને રાષ્ટ્ર તથા સમાજને ઉપયોગી બનાવવાનો તેમણે ઉપસ્થિત રહેલી બહેનોને અનુરોધ કર્યો હતો.

શ્રી પારસદેવીએ કેટલાંક દૃષ્ટાંતો દ્વારા સ્ત્રીશકિતનો પરિચય આપી નારીની ઉન્નતિમાં જ સમાજ અને રાષ્ટ્રની ઉન્નતિ સમાયેલી છે એમ કહ્યુ હતુ.

શ્રી શાન્તાદેવીએ મહિલા જગતનો સર્વાંગી વિકાસ સાધવા માટે પ્રથમ પડદાનો ત્યાગ, ઊંચા પ્રકારનુ શિક્ષણ, ધાર્મિક સંસ્કારો દ્વારા સુસંસ્કારોની ખિલાવટ અને આ માટે બાલ્યકાળથી જ માતાપિતાએ રાખવી જોઇતી જવાબદારી ઉપર ભાર મૂકયો હતો.

શ્રી ભૂરીબેન ગોળવાળાએ કહ્યુ હતુ કે, સ્ત્રી તો માતા છે. માતા જેવી હશે તેવી તેની ભાવિ પ્રજા થશે આજની નાની દેખાતી બાળા આવતી કાલની માતા છે. માતા સમર્થ હશે તો બાળક તેજસ્વી અને પરાક્રમી થશે. તીર્થંકરો અને ચક્રવર્તીને પણ જન્મ આપનાર માતા જ હતી. માતાની કિંમત સૌથી મોંઘી છે. માટે સમાજની, દેશની કે વિશ્વની ઉન્નતિ જોઇતી હોય તો બાળાઓને શિક્ષિત અને સુસંસ્કારી બનાવવાની જરૂર છે.

શ્રી. સુરતીબહેને "સ્ત્રી કર્તવ્ય" પર બોલતા કહ્યુ હતુ કે, સ્ત્રીઓ જેટલી પોતાના કર્તવ્યમાં આગળ વધશે તેટલુ ઉચ્ચ સ્થાન પ્રાપ્ત કરશે. જવાબદારીનો ખ્યાલ એ માનવજીવનની સૌથી મહત્ત્વની વસ્તુ છે

શ્રી જ્ઞાનચંદજી ચોરડીઆએ સાધુસંમેલનની સફળતા બાબત હર્ષ વ્યકત કરી, સમાજની બહેનોને પણ પ્રગતિ સાધવા માટે આ પ્રસંગે એક અવાજે પોતાના વિચારો દર્શાવવાની અપીલ કરી હતી.

આ ઉપરાંત દયાવતીબેન, ઇન્દુબેન વગેરે બહેનો બોલ્યાં હતાં. સમય થોડો હતો. બોલનાર બહેનો ઘણા હતા, થોડી મિનિટ પણ પોતાના વિચારો રજૂ કરવાની તક આપવા માટે પ્રમુખશ્રી પર ચિઠ્ઠીઓ ઉપર ચિઠ્ઠીઓ આવતી હતી. એ ત્રણ બહેનો તરફથી તો આજે મહિલાસંમેલનની પૂર્ણાહુતિ ન કરતાં આવતી કાલને માટે સંમેલન ખુલ્લું રાખી, પોતાના વિચારો વ્યકત કરવા માગતી બહેનોને તક આપવાની માગણી કરવામાં આવી હતી, પરંતુ તા. ૭–૫–'૫૨ ને દિવસે ૧૧ાા વાગ્યે પૂજ્ય આચાર્યશ્રીને ચાદર ઓઢાડવાની મંગળવિધિ સમાપ્ત થતાં મોટા ભાગના લોકો પોતપોતાને સ્થાને જવાના હોઇ, બહેનોની એ માગણીનો સ્વીકાર થઇ શકયો નહોતો, તે માટે સંમેલનના યોજક બહેનોને દિલગીરી થઇ હતી.

આ સંમેલનમાં એટલુ તો ચોકકસ દેખાઇ આવતુ હતુ કે જાગૃતિનો જુવાળ સર્વત્ર પહોચી વળ્યો છે. ઘૂમટામાં મોં છુપાવતી બહેનો પણ સ્ટેઇજ પર જ્યારે સ્ત્રીજાતિની ઉન્નતિ માટેના પોતાના વિચારો જોશભેર પ્રકટ કરતી હતી, ત્યારે જરૂર એમ લાગતુ હતુ કે, મારવાડની ભૂમિમાં પણ સૈકાઓથી ઘર કરીને બેઠેલા એ ઘૂમટાને હવે અલ્પ સમયમાં જ વિદાય લેવી પડશે માત્ર તેર જ વર્ષની એક બાળાએ જે ભાવમય રીતે પોતાના વિચારો દર્શાવ્યા હતા તે જોઇ સભા મુગ્ધ બની હતી. ત્યાંની સ્ત્રીશક્તિ પણ જાગી ઊઠી છે. રૂઢિના કપરા બંધનો તેમના માર્ગની આડે આવે છે, છતાં જ્યા આત્મશક્તિનુ ભાન થયુ છે, ત્યાં માર્ગ ખુલ્લો થતાં કેટલો વખત?

ત્યાર બાદ સાધુ સંમેલનની કાર્યવાહીને આવકારતો પ્રસ્તાવ સર્વાનુમતે નીચે મુજબ પસાર થયો હતો:

"આ મહિલાસંમેલન સાધુ સંમેલનની સફળતા

માટે ઊંડો હર્ષ વ્યક્ત કરી, મુનિમહારાજો તથા સાધ્વીજીઓ ઉગ્ર વિહાર કરી અત્રે પધાર્યા છે તેમને ભાવભર્યા વંદન કરે છે સમગ્ર જૈન જગતમાં જ નહિ, પરંતુ ભારતના વિવિધ ધર્મગુરુઓ સમક્ષ સ્થા. જૈન સમાજના મુનિરાજોએ એકતાનો જે અપૂર્વ દાખલો બેસાડ્યો છે તેને માટે સમસ્ત સ્થા. જૈન સમાજની બહેનો તેઓશ્રીને હાર્દિક ધન્યવાદ અર્પે છે અને તેમના ત્યાગની પ્રશંસા કરે છે.”

આપણા સમાજમાં પતિના મૃત્યુ બાદ કાળી કાંચળી અને કાળી સાડી તેની વિધવાને પહેરાવવાની જે પ્રથા છે તેને બદલવાની જરૂર છે અને વિધવા તરફ સમાજે માનભર્યું વર્તન રાખી તેના ભરણપોષણમાં મદદ કરવાની, તેને શિક્ષણ આપવાની અને તેનાં બાલબચ્ચાં હોય તો તેને ઠેકાણે પાડવામા સહાય કરવી જોઈએ, એવી માગણી એક બહેન તરફથી આવી હતી.

અંતમાં શ્રી કેસરબેન ઝવેરીને હાથે પ્રમુખશ્રીને સોનેરી હાર અર્પણ કરવામાં આવ્યો હતો, ને આવડી જંગી સભાનું સુંદર અને વ્યવસ્થિત સંચાલન કરવા માટે શ્રી કેસરબેન ઝવેરીએ પ્રમુખશ્રીનો, મારવાડની ભૂમિનો બપોરના ત્રણ વાગ્યાનો ધીખતો તાપ વેઠીને ૩ હજારથી પણ વધારે સંખ્યામા હાજર રહી લાંબા સમય સુધી શાન્તિપૂર્વક જુદા જુદા વક્તા બહેનોને સાંભળવા માટે ઉપસ્થિત રહેલ બહેનોનો, સ્વયંસેવકોની મદદ આપવા માટે સાદડી મુકામની સ્વાગત સમિતિનો, પેન્ડાલ, લાઉડસ્પીકર વગેરેની સગવડ આપવા માટે અ. ભા. શ્વે સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સનો, સંમેલનની ફિલ્મ લેવાની જહેમત ઉઠાવવા માટે શ્રી કિશોરભાઈ તથા શ્રી સુરેન્દ્રભાઈનો આભાર માન્યો હતો.

એ પછી પ્રમુખશ્રી તારાબહેન બાહિયાએ કોન્ફરન્સ તરફથી ચાલતા ‘શ્રી કેળવણી અને વિધવા સહાયક ફંડ’મા રૂ. ૨,૫૦૦] જેટલી મોટી રકમની ઉદાર સખાવત જાહેર કરી હતી જે તાળીઓના ગડગડાટ સાથે વધાવી લેવામાં આવી હતી.

છેવટે વંદે માતરમ્ ગવાયા બાદ ‘જય મહાવીર, જય ભારત’ના મંગળ નાદ સાથે સંમેલનની સફળ પૂર્ણાહુતિ થઈ હતી.

શ્રી અખિલ હિંદ સ્થા. જૈન યુવક સંમેલન

આપણી કોન્ફરન્સના અધિવેશનોની સાથે જ યુવક પરિષદો તેમ જ સંમેલનો યોજાય છે, કોન્ફરન્સનુ બારમુ ઐતિહાસિક અધિવેશન સાદડી (મારવાડ) મુકામે યોજવાનુ નક્કી થયું, ત્યારે યુવક પરિષદ ભરવી કે ન ભરવી? તે જાતની વિચારણા ચાલુ હતી. સમય ઘણો જ ઓછો હતો, એટલે આ વખતે અધિવેશનની સાથે સમયની અનુકૂળતા હોય તો યુવક સંમેલન યોજવાનુ નક્કી કર્યું હતુ.

કોન્ફરન્સના અધિવેશનમાં લગભગ ૨૫ થી ૩૦ હજાર ભાઈબહેનોએ ભાગ લીધો હતો. તેમાં સેંકડો નવયુવાનો હતા. દેશના ખૂણેખૂણેથી, પ્રાંતેપ્રાંતેથી પ્રગતિશીલ વિચારના નવયુવાનોએ આ અધિવેશનમા હાજરી આપી હતી.

અધિવેશનની શરૂઆતના દિવસોમાં યુવક સંમેલન ભરવા અંગે વિચારવિનિમય શરૂ થયા. છેવટ તા. ૬ ઠ્ઠી મેને મંગળવારના રોજ બપોરના ‘દલ બાદલ’ના મંડપમા યુવક સંમેલન યોજવાની જાહેરાત થઈ.

સવારમાં હાજર રહેલા નવયુવાનોની સભા થઈ, પ્રસ્તાવો માટે, યુવક પરિષદના આયોજન માટે અને તેને કાયમી સ્વરૂપ આપવા માટેની યોજનાઓ રજૂ થઈ, છેવટ વધુ પડતા ઠરાવો ન કરવાનુ નક્કી થયુ. આજ સુધીમાં જે જે ઠરાવો થયા છે તેને અમલી સ્વરૂપ આપવાનુ વિચારાયુ

કોન્ફરન્સનું ઐતિહાસિક અધિવેશન જે મહત્ત્વના કામ માટે એકત્ર થયુ હતુ તે ‘શ્રી વર્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન શ્રમણ સંઘ’ની યોજનાને યુવક સંમેલને હાર્દિક ટેકો આપવાનુ નક્કી કર્યું.

બનારસ હિંદુ વિદ્યાપીઠના પ્રાધ્યાપક ઇંદ્રચંદ્રજી એમ. એ.ના પ્રમુખપદે યુવક સંમેલન યોજાયુ હતુ.

નીચેના યુવક કાર્યકરોએ આ સંમેલનમા ભાગ લીધો હતો : શ્રી જવાહરલાલજી મુણોત (અમરાવતી), શ્રી નથમલજી લુંકડ (જલગાંવ), શ્રી ફકીરચંદ મહેતા (ભુસાવળ), શ્રી હિંમતલાલ ખંધાર (મુંબઈ), શ્રી બચુભાઈ દોશી (મુંબઈ), શ્રી જીવણલાલ સંઘવી (અમદાવાદ,)

શ્રી શાંતચંદ્ર જૈન (જોધપુર), શ્રી ચાંદમલજી મહેતા (કિસનગઢ), શ્રી ચીમનલાલ લોઢા (બ્યાવર), શ્રી શાંતિલાલ શેઠ (બ્યાવર), શ્રી વિજય મોહન જૈન (જોધપુર) વગેરે યુવક કાર્યકરોની હાજરી હતી. આ યુવક કાર્યકરોએ સમેલન સમક્ષ પોતાના વિચારો રજૂ કર્યા હતા.

આ ઉપરાંત સવારની બેઠકમા કોન્ફરન્સના માનદ્-મત્રી શ્રી ખીમચદભાઇ વોરા, શ્રી ચુનીભાઇ કામદાર વગેરે હાજર હતા. શ્રી અચલસિહજી જૈન પણ હાજર હતા; તેઓએ યોગ્ય માર્ગદર્શન આપ્યુ હતું.

યુવક સમેલનથી યુવકોમાં ચેતના અને જાગૃતિ આવી છે. ગામેગામના નવયુવાનો સમેલનનો સદેશો ચોતરફ પ્રસરાવે.

સાદડી સમેલનના સમયનું
એક ભવ્ય દર્શન

માનવજીવન સર્જનની ઝંખના અને કલ્પના કરે છે. મહામાનવ કલ્પના સર્જનને સુદર અને તાદૃશ્ય મૂર્ત-સ્વરૂપ આપવાના પ્રયત્નમા સફળ બને છે. માનવીની મહત્તા, તેની ભાવનાની સર્વાંગસ્વરૂપ ગહનતા અને રમણીયતા કોઇ પણ લોકશ્રેયના કાર્યના કલિતપણામા દર્શન આપે છે, ત્યારે વિશ્વના સર્વ પ્રાણીઓમા માનવીની શ્રેષ્ઠતા પૂરવાર કરવાની એક નાનકડી તક પણ આપે છે. બુદ્ધિવાદના આ પ્રખર યુગમાં માનવજાતમાં એકલપેટાપણુ, સ્વાર્થાધપણુ અને સ્વયસત્યની ઉત્કટતા પ્રકટ થતી જાય છે, તેવે સમયે કોઇ પણ એક સમાજ પોતાની એકતાનુ દર દર્શન આપે તે ખરે જ પ્રસશનીય અને આવકારપાત્ર છે.

પ્રખર તાપ મરૂભૂમિનુ ઉજજડ સ્થાન, ધુળ–માટી ભર્યું ન્હાનકડુ ગામ–જ્યા શહેરની સગવડતા કે રોશનીનો અભાવ હોય તેવા સાદડી સમ્મેલનની સફળતા વિષે અનેક આશકા પ્રકટે તે સહજ છે. "આ સાદડી કોણે પસદ કર્યું ? સાદડી પસદ કરવામાં કાર્યકરોએ ભયંકર ભૂલ કરી છે; સાધુ–સમ્મેલન ભરવામા અત્યત ઉતાવળ કરવામાં આવી છે, આવા ભર ઉનાળામાં દૂર દૂરના પગપાળા પ્રવાસો કરાવી શુ તપસ્વી મુનિરાજોને તમારે મારી નાખવા છે?" ઇત્યાદિ ઉપાલભો વચ્ચે ભરાએલ મુનિ સમ્મેલનના સર્વ સયોગો તો ખરેખર જ બુદ્ધિને કરમાવી [illegible] કાર્યને ગંગળાવી નાખે તેવા જ હતા પરતુ એક

અનન્ય શ્રદ્ધા, વિપુલ આત્મશકિત અને કાર્ય સફળતાનુ નિશ્ચયબળ જાણે કે માનવ શરીરમાં એક પ્રચડ પરાક્રમ કરવાના મનોરથને પાર પાડતા હોય તેમ, સમ્મેલનની શુભ શરૂઆતમાં જ ચિન્હો જણાતા હતા.

જાણે કોઇ મુનિ વસિષ્ઠ કે વાલ્મિકીના યુગમાં જીવતા હોઇએ તેમ ગામ બહાર પ્રશાંત ગૌરવપૂર્ણ અટૂલી જગ્યામા જ્યારે પહેલુ મુનિસમ્મેલન ભરાયુ ત્યારે જીવનનો મહા-ધન્ય એ પ્રસગ જોવા માટે ખરેજ અદ્ભુત હતો. આવવાની ઇચ્છાવાળા, પોતાના વચનનુ પાલન કરનારા, દૃઢ મનોબળ અને વિશુદ્ધ કામનાવાળા પ્રતિનિધિ-રૂપ મુનિરાજો, ગુરૂકુળના મધ્યસ્થ મહા–ઓરડામા ગોળાકારે ગોઠવાયા, ત્યારે તો જેમને હાજર રહી આ ભવ્ય દૃશ્ય જોવાનુ સદ્ભાગ્ય સાંપડ્યુ તેવા અમારામાના થોડાઓને તો જીવનનો એક મહાન ભાગ્યવાન પ્રસગ જોવાની તક મળી હોય તેવો ઉલ્લાસ પૂર્ણ અનુભવ થયો.

ન્હાના અને મોટા, વિદ્વાન અને તપસ્વી, તેજસ્વી કપાળ અને ઉગ્ર મનોબળવાળા સેકડો મુનિરાજો એક સાથે, એકજ ભૂમિ પર, ન્હાના મોટાના ભેદભાવો ભૂલી, ભગવાન મહાવીરના મહાન સમોસરણમાં બેઠા હોય તેવો એ પ્રસગ હતો. સૌ મુનિરાજોના મુખ પર પ્રવાસના થાક પછી પણ ઉત્સાહ, ઉલ્લાસ અને હૃદય પ્રસન્નતાનાં સ્પષ્ટ ચિન્હો દૃષ્ટિગોચર થતાં હતાં. જે એકતા અને સમાનતા સાધવા માટે આ સમ્મેલન યોજાયુ હતુ તે જાણે કાર્ય શરૂ થતાં પહેલા જ આચાર જીવનમા ઉતાર્યું હોય તેવા સર્વ મુનિરાજોના કપાળો તેજપૂર્ણ દેખાતા હતા. વર્તમાન સમયમા મુનિરાજોએ ઘણુ શીખવા જેવુ છે, એમ સદા કહેનાર શ્રાવક કાર્યકરોને પણ મુનિરાજોની પ્રથમ દિવસની શિસ્ત તથા કાર્યરીતિથી આનદ થયો. તેઓને લાગ્યુ કે જૈનસમાજના ભાગ્યનો સિતારો હજુ આથમ્યો નથી–નહિ તો મુનિરાજોમા આવી અજોડ શિસ્ત, શાન્તિ અને સમતાના દર્શન થવાં દુર્લભ કહેવાય. 'એક આચાર્ય'ની સમાચારી શબ્દોથી નહિ પણ આદર્શ દૃષ્ટાત દ્વારા રચવા બેઠા હોય તેવો ભવ્ય અને ગૌરવપૂર્ણ એ પ્રસગ હતો. કોન્ફરન્સના પ્રમુખ અને મુબઈ ધારાસભાના અનુભવી સ્પીકર શ્રીમાન કુદનમલજી ફિરોદિઆ જેવા પીઢ અને પ્રશાન્ત કાર્યકરથી બોલાઇ જવાયુ કે 'અમારી ધારાસભાઓના કદી પણ દર્શન ન કરનારા આ મુનિરાજોની સભાનુ કાર્ય મોટા

વિદ્વાન, પંડિત અને વાચસ્પતિ ધારાસભ્યો પણ નથી ચલાવી શકતા, તેટલી શિસ્ત અને વ્યવસ્થાથી ચાલે છે." સ્થાનકવાસી જૈન મુનિરાજોના કાર્યને આ શું ઓછી અંજલિ હતી? જે સમાજના મુનિરાજો આવા વિચારશીલ અને શિસ્તબદ્ધ હોય તે સમાજની પ્રગતિ અને એકતા થાય તો તેમાં કશું જ વધુ પડતું નથી. ભગવાન મહાવીર સ્વામીની મંગળ કાર્યને સફળ કરવાની પ્રાર્થના જ્યારે હાજર રહેલા સર્વે મુનિરાજોએ ગાઇ, ત્યારે જે મહાન કાર્ય માટે મુનિરાજો લાંબા અને ઉગ્ર પ્રવાસ કરી આવેલ હતા તેની સફળતાનો પડઘો પડતો હતો; મુનિરાજોની કાર્યપ્રણાલી વિષે, તેમના મમત્વની ઉગ્રતા વિષે, તેમની વચ્ચેના અગણીત નાના નાના મતભેદોની પૂર્વ સમાલોચનાનો ઇતિહાસ કંઇક જુદી જ ઝાખીની અપેક્ષા કરાવતો હતો, જ્યારે વાસ્તવમાં જે સંપ, સ્નેહ અને કાર્ય પ્રતિની નિષ્ઠાના દર્શન થાય તે ખરે જ આવકારદાયી, અને અભિનંદનીય જ હતા.

અરે! સૌભાગ્યની પરમ માત્રા તો જુઓ!! જે મુનિરાજો કોઇપણ સંયોગો વચ્ચે વૈશાખ સુદ ત્રીજને દિવસે-એટલે કે સાધુ સમ્મેલનને શુભ દિવસે સાદડી સ્થાને પહોંચવાની અપેક્ષા ન હોતી, તેઓ પણ તેજ દિવસે વહેલી શીતળ પ્રભાતે, શાસનદેવના બળ અને શક્તિનો સંકેત લઇ, જાણે પવનવેગે આવી પહોંચ્યા હતા અને જે ઘડી, સમય અને પળ શુભ-કાર્યની શરૂઆત માટે નિશ્ચિત થયા હતા તેજ સમયે ઐક્યના આ મહાન શુભ કાર્યની શરૂઆત થઇ મુનિરાજોને પોતાને પણ મનમાં જે ભય હતા કે આટઆટલા પ્રવાસ પછી પણ એકતા થશે કે નહિ તે ભય અદૃશ્ય થઇ ગયો અને મળતા પહેલા જ પરસ્પર સંપ્રદાયો વચ્ચે પ્રેમ અને સ્નેહના ઝરણા વહેવા લાગ્યા. જાણે કોઇ મુનિ આશ્રમમાં સૌ મુનિરાજો એક ગુરૂની છત્રછાંય તળે હોય, તેવી રીતની શરૂઆત એ ઓછા ભાગ્યની હકીકત ન હતી. સૌ મુનિરાજોના હૃદયમાં ભગવાન મહાવીરનો વાસ થયો હોય તેમ હોસાતોસી, ખેંચ પકડ કે બીજી કોઇ પણ જાતની હઠ જણાતી ન હતી, કિન્તુ ઐક્ય સાધવા આવ્યા છીએ, તો તે કાર્ય પાર પાડીને જવું છે એવી ઉત્કટ મનોવૃત્તિના સ્પષ્ટ દર્શન થતા હતાં.

આ દુર્લભ દૃશ્ય જોવા માટે અને એકત્ર મળેલા સેંકડો મુનિરાજોના દર્શનાર્થે રોજ-રોજ હજારો નરનારીઓના વૃંદો આવતા હતા. સાદડી જેવું દૂર દૂરનું ન્હાનકડું ગામ, સખત તાપ અને ધુળ, ચોમેર વેરાન, અને હજારો લોકો માટે તંબુઓની હારકતાર લગાવેલી- તેવા તંબુઓમાં હજારો નરનારીઓ આવા ઉનાળાના તાપમાં રહ્યા તે નાનીસુની હકીકત નથી ગામના પાકા મકાનમાં તો માત્ર લગભગ સાતેક હજાર માણસો રહ્યા હશે. પણ બાકીના ત્રીસ હજાર સ્ત્રી-પુરૂષો તો કાપડના તંબુઓમાં રહ્યાં હતા જેમાં સગવડતાની દૃષ્ટિએ જોઇએ તો કંઇ જ ન ગણાય, પરન્તુ જ્યારે અમે આ સર્વ ભાવિક યાત્રિકોની સુખદુખની તપાસ કરવા જાતે જતા, ત્યારે આ હજારો સ્ત્રી-પુરૂષોના વૃંદો આનંદ અને સ્નેહભર્યા અવાજે કહેતા કે 'ભાઇજી, અમને સર્વ સગવડ મળે છે, પાણી પણ ચિકાર અને ઠંડુ મળે છે; આવા મુનિરાજોના દર્શનનો લાભ મળે તેથી વધુ શું જોઇએ? ઇત્યાદી શબ્દોથી આનંદ વ્યક્ત કરતા હતા. શહેરોની સગવડતાથી ટેવાએલા, શરીરની વધુ પડતી પાતળી સંભાળ લેનાર થોડાક અત્યંત શ્રીમન્ત અને માંદા માણસો સિવાયના સર્વ કોઇ ભારે પ્રસન્ન ચિત્તે રહેતા હતા. હા! સાદડી એ ન્હાનું ગામ હતું, રેલ્વે સ્ટેશનથી દૂર દૂરનું સ્થળ હતું, એટલે સ્વાગત સમિતિ ગમે તેટલા પ્રમાણિક પ્રયત્નો કરે તો પણ બધી સગવડો મળવાની હતી જ નહિ અને તેટલા માટે જ કોન્ફરન્સ ઓફીસે પ્રથમથી જ લોકોને ચેતવણી આપી હતી, પરન્તુ શ્રદ્ધા ભાવિકતા અને સમાજોન્નતિની ભાવનાના બળને આધારે અનેક કઠિનાઇઓ હોવા છતાં પણ હજારો લોકો રોજ રોજ આવતા હતા.

હિન્દના લોકો તો આવા જંગલમાં મંગળના પ્રસંગોથી ટેવાઇ ગયેલા છે તેમાં શંકા નથી. મહાત્મા ગાંધીજીના નેતૃત્વ નીચે ભરાતી રાષ્ટ્રિય કોંગ્રેસના અધિવેશનો ગામથી દૂર દૂર જંગલમાં અને આવી જ પરિસ્થિતિમાં ભરાતાં હોવાથી કાર્યકરો કે જનતાને કાંઇ નવાઇ લાગતી ન હતી તેમાં વળી સેંકડો તપસ્વી મુનિરાજોની છત્રછાયા તળે મળવાનું એટલે બીજો પ્રશ્ન હતો જ નહિ

સ્થાનકવાસી જૈન સમાજને માટે આ ભારે મહત્ત્વનો અને અજોડ ગૌરવ લેવા જેવો અદ્‌ભુત પ્રસંગ હતો. સંપ્રદાયવાદની દિવાલો તોડી, સંકુચિતપણાના ભેદોને ઉખેડી-વિખેરી ફેંકી દેવા, મુનિરાજ અને લોકસમાજ એક પ્રચંડ ક્રાંતિકારી વાતાવરણ નીચે મળ્યા હતા. આટલી વિશાળ માનવ મેદની રાષ્ટ્રિય કોંગ્રેસના પ્રચંડ

મેળાનો ખ્યાલ આપતી હતી. જાણે કોઇ મહાન કાર્યની સિદ્ધિ થવાની હોય તેવા ખ્યાલો અને વાતો આસપાસના હજારો ગામોમાં ફેલાઇ રહ્યા હતા અને વાતાવરણ એક વિશિષ્ઠ પ્રકારની ભાવનાથી ગૂજતુ હતુ. માંદા કે સાજા, નાના કે મોટા નજીકના કે દુરના, એક પણ સ્થા. જૈન કાર્યકર અહી હાજર નહોતા તેમ નહોતુ બન્યુ. આટલા ન્હાના સમાજના આટલા બધા કાર્યકરો એક સ્થળે, એકી વખતે, આટલો વધુ સમય સાથે રહ્યા હોય તેવો આ પહેલો જ પ્રસગ હતો એટલે સ્વભાવિક જ વિચારોની તથા પોતપોતાના સ્થાનિક પ્રશ્નો તથા વિશાળ પ્રશ્નોની ચર્ચાઓ વાતાવરણમા ગૂજતી રહેતી.

પડિત જવાહરલાલે હમણાં જ પૂરી થયેલ રાષ્ટ્રીય ચૂટણીના વિશાળ પ્રવાસ પછી પોતાની અનુભવગાથામા જે રીતે જણાવ્યુ કે ભારતના કરોડો લોકો ભલે અક્ષરજ્ઞાન રહિત હોય, પરન્તુ તેમનામા સાધારણ બુદ્ધિનો સપૂર્ણ સમભાવ છે અને વ્યવહારૂ જ્ઞાનની પૂર્ણતા છે, એ અનુભવ અમને અહી હાજર રહેલા હજારો જનસાધારણની વ્યવહારૂ બુદ્ધિના દર્શનમા મળ્યો. અક્ષરજ્ઞાન જરૂરી છે, મહત્ત્વનુ છે, તેમ છતા તેની ગેરહાજરીમાં લોકો જડ છે તેમ કહેનાર માણુસ હિદનો વતની કે હિદના લોકોથી જ્ઞાત છે તેમ કહી શકાય જ નહિ. જનતાની વિચક્ષણ બુદ્ધિ મુનિરાજોની રોજીદી કાર્યવાહીથી જ્ઞાત થઇ જતી અને બરાબર તુલનાત્મક બુદ્ધિથી સફળતા આંકતી હતી. આવા સાદા, ભલા, ભોળા અને વ્યવહારૂ જૈન સમાજના સ્વબન્ધુઓના દર્શનની તક એ પણ જીવનનો એક વિરલ પ્રસગ અને લ્હાવો હતો

જ્યારે સર્વ મુનિરાજોએ "એક આચાર્ય અને એક સમાચારી"ના સર્વ નિયમો સર્વાનુમતિથી સ્વીકૃત કર્યા અને તા. ૭–૫–'૫૨ ના રોજ ૫૬ર હજારની માનવમેદની વચ્ચે પોત પોતાના સપ્રદાયો, આચાર્ય, ઉપાધ્યાય ઇત્યાદિ પદ્દીઓનો સામુદાયિક વિધિસર ત્યાગ કર્યો અને નવા આચાર્યશ્રીને ચાદર ઓઢાડવાની વિધિ કરી, તે સમયનુ દૃશ્ય તો દેવોને પણ દુર્લભ અને ભાવભીનુ હતું મૂર્તિપૂજક આચાર્ય શ્રી પુણ્યવિજયજી કે જેઓ આગમોદ્ધારનુ ભગીરથ કાર્ય કરી રહ્યા છે, તેઓશ્રી પણ આ પ્રસગે ખાસ હાજર રહ્યા હતા–તેઓએ પણ આ પ્રસગે આશીર્વાદ આપ્યા ને જે ઐક્ય કર્યું છે તેને નિભાવવાની સૂચના કરી. આ એકાચાર્ય પદ્દી ચાદર ઓઢાડવાની વિધિ સમયે થએલા ટૂકા પણ મનનીય પ્રવચનો અને ત્યાગભાવના પૂર્ણ વૃત્તિથી થએલ પદ્દી ત્યાગ સમારભ ખરે જ અદ્ભુત હતા. માનવ જીવનની ધન્ય ઘડી હોય, ઉત્કૃષ્ટ ભાવના હોય અને ઉદ્દાત વૃત્તિનો સમય હોય ત્યારે જ માનવી આટલી સયમવૃત્તિથી યથાયોગ્ય પરિસ્થિતિમા વિચારી શકે છે. અનેક ભૂલો કે સમવિષમ ભાવનાથી ભરપૂર હોવા છતા પણ મુનિરાજોએ સર્વાગી રીતે આ વખતે જે ઉદારતા, ત્યાગ અને ઐક્યભાવ દાખવ્યો છે તે ખરે જ પ્રશસનીય છે.

જો કે આ મહાન દ અને મહાયોજનાના ભયસ્થાનો છે અને તેનાથી જૈનસમાજ સુપરિચિત છે. જે મહાન યોજના સર્વના સપૂર્ણ સહકારથી સપૂર્ણ બની છે તેને વ્યવહારૂ સ્વરૂપ આપવા માટે પણ સર્વના હાર્દિક સહકારની જરૂર પડવાની. એવા પણ પ્રસગો સમાજમાં આવશે કે જ્યારે ઉગ્ર મતભેદ અને મોટાઇના અભિમાનના વમળમાં તોફાનો ઉડવાના–પણ જે સમાજે પ્રસગોચિત શૌર્ય–ધૈર્ય દાખવી મુસ્કેલીઓ હલ કરી છે તે નવા ઉપસ્થિત સયોગોમા પણ હિમતભેર સર્વ પ્રશ્નોને હલ કરશે તેવી શ્રદ્ધા કરવી અસ્થાને નથી. જે મુનિરાજો તથા સપ્રદાયો–સૌરાષ્ટ્ર કચ્છ ગુજરાતના–હજુ આ યોજનામાં ભળ્યા નથી, તેઓ પણ વહેલી તકે, નવરચના તથા નવસર્જનમાં પોતાનો હિસ્સો આપવાની ઉત્સુકતા દાખવશે તેમા પણ શકા નથી. એટલે તે બાકી રહેલુ કાર્ય પણ પૂર્ણ થશે જ્યા ઘણા લોકોની, ઘણા સારા કામ માટે ઐક્યની ભાવના છે, ત્યાં બળ, બુદ્ધિ અને શકિત દ્વારા અધૂરા કાર્યો સદૈવ પાર પડે છે.

આ વખતના અધિવેશનનુ મુખ્ય કાર્ય મુનિરાજોએ જે એકતા સ્થાપી છે તે મુનિરાજોની એકતાના કાર્યને મહોર મારી, તેને સહાયકારી બનવાનુ હતુ. એટલે અધિવેશનના પ્રસ્તાવો મુખ્યત્વે શ્રાવક–શ્રાવિકા વર્ગે મુનિરાજોની એકતાને સહકાર આપવા વિષેના કર્યા હતા. અહિસા દ્વારા જે સ્વરાજ આવ્યુ છે તે સુરાજ્યમા સવિશેષ અહિસક વાતાવરણ ફેલાય તથા જીવહિસા બધ થાય તે વિષે જૈન લોકસભાઓ વિચારે તે સ્વાભાવિક છે. એકદરે અધિવેશનની કાર્યવાહી, ઓછામા ઓછા પ્રસ્તાવો તથા ક્રિયાત્મક કાર્યોપૂર્ણ બની હતી.

હાજર રહેલા હજારો બહેનો મળે અને વિચારોની આપ

લે કરે તે માટે મહિલા સમ્મેલન પણ ઉત્સાહી કાર્યકરોએ યોજવાની તક લીધી હતી તથા ચારપાંચ હજાર બહેનોએ આ સમ્મેલનમાં ભાગ લઇ કોન્ફરન્સના કાર્યમાં પોતાનો સૂર પૂરાવ્યો હતો. તેવી જ રીતે યુવકોએ પરસ્પરની નિકટ આવવાની આ તકનો લાભ લઇ યુવક સમ્મેલન પણ યોજ્યું હતું તથા વિચારોની આપ–લે કરી હતી.

ઉત્સાહ, આશા, કંઇક કરવાની મનોવૃત્તિ અને સફળતાના હર્ષનાદો વચ્ચે સાધુ સમ્મેલન તથા યુવક સમ્મેલન પાર પડયા હતા અને હાજર રહેલ હજારો લોકોના હર્ષનાદ વચ્ચે જૈન સમાજનું ઐતિહાસિક મહાન કાર્ય પાર પડયું હતું. ભગવાન મહાવીર પછીથી ઉત્તરોત્તર જે ભાગલાની પરિસ્થિતિ જૈન સમાજમાં પ્રવર્તતી, તેને સ્થાને જૈન સમાજે એકતાના શુભ પગરણ માંડવા શરૂ કર્યાં છે એ હકીકત જૈન સમાજ માટે ભારે મહત્ત્વની તથા ગૌરવપૂર્ણ છે. સ્થાનકવાસી સમાજે મુનિરાજોની એકતા સાધી સર્વ ફિરકાઓની એકતાનાં દ્વારો ખુલ્લા મૂકયાં છે એમ કહી શકાય. ભગવાન મહાવીરની અહીં-સાનો સૂર્ય જૈન સમાજના ઇતિહાસમાં આકાશમાં ચમકી ઊઠયો છે અને જો સમાજનું વિચારક બળ મક્કમપણે પણ ધૈર્યપૂર્વક પ્રગતિ પન્થે પોતાની કૂચ ચાલુ રાખશે તો માત્ર જૈન સમાજનું જ નહિ, કિન્તુ જે વિશાળ રાષ્ટ્રના પોતે અંગ છે તેનું પણ હિત સાધી શકાશે તેમાં શંકા નથી.

जैनम् जयति शासनम्! એ શુભ ભાવના!

—ચુનીલાલ કામદાર

શ્રાવિકાશ્રમ, ઘાટકોપર (મુંબઈ)

જૈન ધર્મના ઉન્નાયકો (બૃહદ્ ગુજરાત)

પૂજ્યશ્રી ધર્મસિંહજી મહારાજનો સંપ્રદાય
(દરિયાપુરી સંપ્રદાય)

પૂજ્યશ્રી ધર્મસિંહજી મહારાજ સં. ૧૬૮૫માં યતિઓથી જુદા પડયા અને તેમણે શુદ્ધ સાધુધર્મની દીક્ષા લીધી. તેઓ સ. ૧૭૨૮ના આસો સુદ ૪ ના રોજ ૪૩, વર્ષની દીક્ષા પાળી, સ્વર્ગવાસ પામ્યા.

તેમની પાટે તેમના શિષ્ય સોમજી ઋષિ થયા, ત્યાર પછી અનુક્રમે મેઘજીઋષિ દ્વારકાદાસજી, મોરારજી, નાથાજી, જયચંદ્રજી અને મોરારજી ઋષિ થયા.

મોરારજીઋષિના શિષ્ય સુંદરજીને ત્રણ શિષ્યો–નાથાઋષિ, જીવણઋષિ અને પ્રાગજીઋષિ હતા. આ ત્રણે સંતો પ્રભાવિક હતા. સુંદરજીઋષિ, મોરારજીઋષિના જીવન કાળ દરમિયાન ગુજરી ગયા હોવાથી નાથાજીઋષિ તેમની પાટે બિરાજ્યા નાથાજીઋષિને ચાર શિષ્યો હતા. શંકરજી, નાનચંદ્રજી, ભગવાનજી.

નાથાજીઋષિની પાટે તેમના ગુરુભાઇ જીવણજીઋષિ આવ્યા અને તેમની પાટે પ્રાગજીઋષિ આવ્યા.

પ્રાગજી ઋષિ

પ્રાગજીઋષિ, વિરમગામના ભાવસાર રણછોડદાસના પુત્ર હતા. પ્રથમ શ્રી સુંદરજી મહારાજના ઉપદેશથી બોધ પામી શ્રાવકના બાર વ્રતો અંગીકાર કર્યા કેટલાક વર્ષ પર્યંત શ્રાવકનાં વ્રતો પાળ્યાં પછી તેઓ દીક્ષા ગ્રહણ કરવા તૈયાર થયા પરંતુ તેમનાં માતાપિતાએ આજ્ઞા ન આપી. આથી તેમણે ભિક્ષાચરી કરવા માંડી. એએક માસ આમ કર્યા પછી માબાપની સંમતિ મેળવી સ. ૧૮૩૦મા વિરમગામ મુકામે ભારે ઠાઠથી તેમણે દીક્ષા લીધી. તેઓ સૂત્રસિદ્ધાંતના અભ્યાસી અને પ્રતાપી સાધુ હતા. તેમને પંદર શિષ્યો હતા.

અમદાવાદથી નજીકના વિસલપુરના શ્રાવકોએ વિનતી કરવાથી તેઓ ત્યા પધાર્યા. તેમણે પ્રાંતીજ, વીજાપુર, ઇડર, ખેરાળુ વિગેરે ક્ષેત્રો ખોલી ત્યાં ધર્મનો ખૂબ ફેલાવો કર્યો તેમના પગમા દર્દ હોવાને લીધે પચ્ચીસ વર્ષ તેઓએ વીસલપુરમાં સ્થિરવાસ કર્યો.

તેમના સમયમા અમદાવાદમાં સાધુમાર્ગી સંતો બહુ ઓછા પધારતા. કારણ કે તે સમયે ત્યાં ચૈત્યવાસીઓનુ ઘણું જોમ હતુ. અને તેમના તરફથી ઘણા ઉપદ્રવો થતા. આ પરિસ્થિતિ સુધારવા માટે પ્રાગજીઋષિ અમદાવાદ આવ્યા. અને સારંગપુર તળિયાની પોળમાં ગુલાબચંદ હીરાચંદના મકાનમાં ઊતર્યા.

તેઓશ્રીના ઉપદેશથી અમદાવાદમા શા. ગિરધર શંકર, પાનાચંદ ઝવેરચંદ, રાયચંદ ઝવેરચંદ, ખીમચંદ ઝવેરચંદ વગેરે શ્રાવકોને શુદ્ધ સાધુમાર્ગી જૈનધર્મની શ્રદ્ધા થઇ. આમ અમદાવાદમા આ ધર્મનો પ્રચાર કરવાનુ શ્રેય શ્રી પ્રાગજીઋષિને છે.

આ શુદ્ધ ધર્મના પ્રચારને લીધે સ. ૧૮૭૮મા સાધુમાર્ગી પ્રત્યે મંદિરમાર્ગી શ્રાવકોને ઇર્ષ્યા થવા લાગી. છેવટે આ ઝઘડો કોર્ટમાં પહોચ્યો.

સાધુમાર્ગીઓ તરફથી પૂજ્યશ્રી રૂપચંદ્રજીના શિષ્ય શ્રી જેઠમલજી વિગેરે સાધુઓ તથા સામા પક્ષ તરફથી વીરવિજય વિગેરે મુનિઓ અને શાસ્ત્રીઓ કોર્ટમા હાજર રહ્યા હતા.

સ. ૧૮૭૮માં માહ વદ ૩ના રોજ આ ખટલાનો ચૂકાદો ન્યાયાધિશ જ્હોન સાહેબે આપ્યો અને તેમા સાધુમાર્ગીઓનો વિજય થયો

આ ઝઘડાના સ્મારકરૂપે સાધુમાર્ગીઓના સરદાર જેઠમલજી મહારાજે "સમકિત સાર" નામનો શાસ્ત્રીય ચર્ચા કરતો ગ્રંથ રચ્યો છે, અને સામા પક્ષે ઉત્તમવિજયે 'ઢુંઢકમત ખંડનરાસ' નામે ૯૭ કડીનો એક રાસ લખ્યો છે, જેમાં સાધુમાર્ગીઓને પેટ ભરીને ગાળો જ દેવામા આવી છે. આ રાસમાં લખ્યું છે કે.

> "જેઠો રીખ આવ્યો રે, કાગળ વાચી ફરી;
> પુસ્તક બહુ લાવ્યો રે, ગાડું એક ભરી"

વિરોધ પક્ષના પ્રતિસ્પર્ધીઓ જ્યારે આમ લખે છે, ત્યારે એ સ્પષ્ટ થાય છે કે તે જમાનામાં જ્યારે મુદ્રણકળાનો વિકાસ થયો નહતો ત્યારે પણ આટલા બધા ગ્રંથો અદાલતમાં રજૂ કરનાર શ્રી જેઠમલજીનુ વાંચન કેટલુ વિશાળ હશે! ખરેખર તેઓ શાસ્ત્રજ્ઞાનના મલ્લ અને જ્યેષ્ટ મલ્લ જ હશે એમ સાધારણ રીતે માનવું જ પડે તેમ છે.

આ પછી સં ૧૮૯૦માં શ્રી પ્રાગજીઋષિ વિસલપુર મુકામે કાળધર્મ પામ્યા.

પ્રાગજીઋષિ પછી તેમની પાટે, શ્રી શંકરઋષિ, શ્રી ખુશાલજી, શ્રી હર્ષસિંહજી, શ્રી મોરારજીઋષિ થયા.

ઝવેરઋષિજી

શ્રી મોરારજીઋષિ પછી તેમની પાટે શ્રી ઝવેરઋષિ આવ્યા.

તેઓ વિરમગામના દશાશ્રીમાળી વણિક કલ્યાણભાઈના પુત્ર હતા. તેમણે સં. ૧૮૬૧ના માહ સુદ ૫ના તેમના ભાઈ સહિત શ્રી પ્રાગજીઋષિ પાસે દીક્ષા લીધી હતી.

પૂજ્ય પદવી પર આવ્યા પછી તેઓએ જાવજીવ સુધી છઠ છઠના પારણાં કર્યાં હતા.

સં. ૧૯૨૩માં તેઓ વિરમગામ મુકામે કાળધર્મ પામ્યા.

શ્રી પૂંજાજીસ્વામી

શ્રી ઝવેરઋષિજીની પાટે શ્રી પૂંજાજીસ્વામી આવ્યા. તેઓ કડીના ભાવસાર હતા. તેમણે શાસ્ત્રાભ્યાસ બહુ સારો કર્યો હતો. તેઓ બીજા સંઘાડાના સાધુઓને પણ ભણાવતા હતા.

તેઓ સં. ૧૯૧૫ના શ્રાવણવદિ ૫ ના રોજ વઢવાણ મુકામે કાળધર્મ પામ્યા.

ત્યાર પછી તેમની પાટે નાના ભગવાનજી મહારાજ આવ્યા. તેઓ સં. ૧૯૧૯મા કાળધર્મ પામ્યા.

ત્યાર પછી પૂજ્ય શ્રી મુલુકચંદજી મહારાજ ૧૯મી પાટે આવ્યા. તેઓએ તેમના કુટુંબના ચાર જણાની સાથે દીક્ષા લીધી હતી. તેઓ સં. ૧૯૨૯ ના જેઠ વદ ૦))ના રોજ સ્વર્ગવાસી થયા.

શ્રી હીરાચંદજીસ્વામી

શ્રી મુલુકચંદજી મહારાજની પાટે પૂજ્યશ્રી હીરાચંદજીસ્વામી બેઠા.

તેઓ અમદાવાદ નજીકના પારડી ગામના આંજણા કણબી હતા. તેમના પિતાશ્રીનું નામ હીમાજી હતું તેમણે માત્ર તેર વરસની ઉમરે શ્રી ઝવેરઋષિ પાસે સં. ૧૯૧૧ના ફાગણ સુદ ૭ના રોજ દીક્ષા લીધી હતી. તેઓ ઘણા વિદ્વાન હતા. તેમને તેર શિષ્યો હતા. તેમણે સં. ૧૯૩૯ના આસો સુદ ૧૧ના રોજ વિસલપુર મુકામે કાળ કર્યો.

પૂજ્યશ્રી રઘુનાથજી મહારાજ

પૂજ્યશ્રી રઘુનાથજી મહારાજ વિરમગામના ભાવસાર ડાહ્યાભાઈ અને તેમની સહધર્મચારિણી જવલબાઈના પુત્ર થાય. તેમનો જન્મ સં. ૧૯૦૪માં થયો હતો. તેમણે સં. ૧૯૨૦ના માહ સુદ ૧૫ના રોજ પૂજ્યશ્રી મુલુકચંદજીસ્વામી પાસે કલોલમાં દીક્ષા અંગિકાર કરી.

પૂજ્યશ્રી હીરાચંદજીના કાળધર્મ પછી પૂજ્યશ્રી રઘુનાથજીને સં. ૧૯૪૦ના ફાગણ વદ ૧ ને બુધવારે આચાર્ય પદવી અર્પણ કરવામાં આવી.

તેઓશ્રી યુગને ઓળખનાર હતા તેમણે સમય પલટાતો જોઈ દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ અને ભાવને અનુરૂપ ધાર્મિક ઉન્નતિ માટે ધારાધોરણો ઘડવા સં. ૧૮૬૫માં સાધુ સંમેલન મેળવી કેટલાક સુધારાઓ કર્યા. તેઓ સં. ૧૯૭૨મા કાળધર્મ પામ્યા તેમની પાટે પૂજ્યશ્રી હાથીજી મહારાજ આવ્યા.

પૂજ્યશ્રી હાથીજી મહારાજ

પૂજ્યશ્રી હાથીજી મહારાજ, ચરોતરના પાટીદાર હતા. તેઓ શાસ્ત્રના અભ્યાસી અને લેખક તથા કવિ પણ હતા પ્રકૃતિના ભદ્રિક અને શાંત, સરળ સ્વભાવી મહાત્મા હતા તેમના સમય દરમિયાન શ્રી દિવાળીબાઈ મહાસતીજી તથા રૂક્ષ્મણિબાઈ મહાસતીજીએ અમદાવાદમા છીપાપોળના ઉપાશ્રયે સંથારા કર્યા હતા. તેઓએ અમદાવાદમા સરસપુર મુકામે સ્વર્ગગમન કર્યું.

તેમની પછી ઉત્તમચંદજી મહારાજ પૂજ્ય પદવી પર આવ્યા. તેઓ આજીવન બ્રહ્મચર્યપાલક હતા.

પૂજ્યશ્રી ઇશ્વરલાલજી મહારાજ

પૂજ્યશ્રી ઉત્તમચંદજી મહારાજ પછી પૂજ્યશ્રી ઇશ્વરલાલજી મહારાજને પૂજ્ય પદવી અર્પણ કરવામાં આવી. તેઓશ્રી ચરોતરના પાટીદાર છે. શાસ્ત્રોનો ખૂબ ઊંડો અભ્યાસ અને બુદ્ધિ તેમ જ તર્કના ધણી છે. આજે લગભગ ૮૮ વર્ષની ઉમરે પણ તેમનામા તેજસ્વી બુદ્ધિ અને અજેય દલીલો જોઈ શકાય છે. તેમની અત્યંત વૃદ્ધાવસ્થા અને ગળાના દર્દને કારણે અમદાવાદમા શાહપુરના ઉપાશ્રયે તેઓ કેટલાક વખતથી સ્થિરવાસ કરી રહ્યા છે.

શ્રી હર્ષચંદજી મહારાજ

આ સંપ્રદાયમાં મુનિશ્રી હર્ષચંદજી એક સમર્થ

વિદ્વાન થઇ ગયા. તેઓનો જન્મ સ. ૧૯૩૮મા વઢવાણ નજીક રાજપર ગામે થયો હતો. તેમનો પિતાશ્રીનું નામ ખુટાભાઇ અને માતાનુ નામ ઊજમબાઇ હતુ. તેમનુ સસારી નામ પુરુષોત્તમ હતુ તેમણે સ. ૧૯૫૨મા માત્ર ચૌદ વર્ષની શિશુ વયે કારતક વદ ૭ના રોજ પૂજ્યશ્રી રઘુનાથજી મહારાજ પાસે દીક્ષા લીધી.

તેઓ સસ્કૃત, પ્રાકૃત, અર્ધ માગધી, તેમ જ અગ્રેજી, ઉર્દૂ ફારસી તથા હિદી ભાષાના પણ જાણકાર હતા.

તેઓ કવિ તેમ જ લેખક હતા. તેમણે તેર પુસ્તકો અને કેટલી યે કવિતાઓ લખી છે. તેમનુ છેલ્લુ પુસ્તક "સમ્યગ્ સાહિત્ય" દરેક સ્થાનકવાસી જૈનોએ ખાસ અભ્યાસ કરવા જેવુ છે. તેમણે ૧૯૮૯માં અજમેર સાધુ સમેલનમા હાજરી આપી, સાધુ સમાચારી નક્કી કરવામા મહત્ત્વપૂર્ણ ભાગ લીધો હતો. તેઓએ સ. ૨૦૦૮ના ફાગણ સુદ ૧૧ ને ગુરુવારે રાતના સાડા નવ વાગે વિરમગામ મુકામે દેહત્યાગ કર્યો.

મુનિશ્રી ભાઇચંદજી

મુનિશ્રી ભાઇચદજી મહારાજ આજે આ સપ્રદાયમા એક રત્ન સમાન છે. લગભગ પચોતેર વર્ષની ઉમરે પહોંચેલા આ મુનિરાજને પહેલી નજરે જોનાર ભાગ્યે જ પીસ્તાળીસની ઉમર કહી શકે, એટલુ શરીરસૌષ્ઠવ અને કાતિ તેમનામા છે. તેમનામા વિદ્વતા છે, સાધુતા છે, વકતૃત્વશકિત છે. તેમની ખાસ વિશેષતા એ છે કે તેમને ક્રોધ કરતા કોઇએ જોયા નહી હોય. સરળ છતાં બુદ્ધિમાન, વૃદ્ધ છતાં યુવાન, અને નિરહકારી છતાં પ્રતિભાપ્રેરક એવા આ મુનિશ્રી જોતાવેંત સામાના હૃદયમાં માન પેદા કરે તેવા છે. તેમના યુવાન શિષ્ય શ્રી શાતિલાલજી મહારાજ શાસ્ત્રોના અભ્યાસી છે. તેમની વ્યાખ્યાનશૈલી રોચક અને મધુર છે. આ ઉપરાંત આ સપ્રદાયમા વસુમતીબાઇ મહાસતી, તારાબાઇ મહાસતી વિગેરે વિદ્વાન સાધ્વીઓ છે.

ઊજમબાઇ મહાસતી અને દિવાળીબાઇ મહાસતી ઘણાં વિદ્વાન થઇ ગયાં.

૨. ખંભાત સંપ્રદાય

પૂજ્યશ્રી ત્રિલોકઋષિના શિષ્ય મગળાઋષિજી ગુજરાતમા વિચર્યા અને તેમને ખભાતમાં ઘણા શિષ્યો થયા તેથી તે સપ્રદાય ખભાત સપ્રદાયના નામથી પ્રખ્યાત થયો,

શ્રી મગળાઋષિજી પછી અનુક્રમે પૂજ્યશ્રી રણછોડજી મહારાજ, પૂજ્યશ્રી નાથાજી, બેચરદાસજી મોટા માણેકચદજી પાટે આવ્યા. ત્યાર પછી શ્રી હરખચદજી મહારાજના વખતમા પણ આ સપ્રદાય ખૂબ સદ્ધર થયો તેમની પછી ભાણજી ઋષિ પાટે આવ્યા.

પૂજ્યશ્રી ગિરધરલાલજી મહારાજ

શ્રી ભાણજીઋષિ પછી પૂજ્યશ્રી ગિરધરલાલજી મહારાજ પાટ ઉપર આવ્યા. તેઓશ્રી સસ્કૃત, પ્રાકૃત વગેરે ભાષાઓના જાણકાર અને સમર્થ પડિત હતા

તેઓ એક મહાન કવિ પણ હતા. તેમની કવિતાઓ સૌષ્ઠવયુકત અને પિગળબદ્ધ રચાયેલી છે.

તેઓએ મુબઇમા પણ ચાતુર્માસ કર્યા હતાં. તેઓ અન્ય દર્શનશાસ્ત્રોમાં પણ પ્રવીણ હતા. યોગ અને જ્યોતિષના પણ પ્રખર અભ્યાસી હતા. તેમનામા ઊડુ જ્ઞાન અને અગાધ બુદ્ધિ હતી.

ખભાતમાં અકસ્માત માથામાં વાગી જવાથી તેઓ કાળધર્મ પામ્યા.

પૂજ્યશ્રી છગનલાલજી

પૂજ્યશ્રી ગિરધરલાલજી પછી પૂજ્યશ્રી છગનલાલજી મહારાજ આચાર્ય થયા. તેઓશ્રીએ સ. ૧૯૪૫માં માત્ર બાવીસ વર્ષની ઉમરે દીક્ષા લીધી હતી. તેઓ પહાડી અવાજ ધરાવતા નિર્ભય વકતા હતા અને શુદ્ધહૃદયી સંતપુરુષ હતા.

તત્કાલીન ધર્મપ્રધાન આચાર્યોમા તેમની ખૂબ સારી પ્રતિષ્ઠા હતી. અજમેર સાધુ સંમેલનમાં તેઓ પધાર્યા હતા.

પૂજ્યશ્રી ગુલાબચદજી મહારાજ

પૂજ્યશ્રી ગુલાબચદજી મહારાજ સરળ હૃદયના હતા તેઓ ઉગ્ર તપશ્ચર્યા કરતા. પોતાના શરીર પ્રત્યે સહેજ પણ મમત્વભાવ તેમને નહોતો. સારણગાંઠનુ તેમને દર્દ હતુ તેનુ ઓપરેશન કરાવવા શ્રાવકો તેમને અનેક વાર વિનતિઓ કરતા છતાં દેહ પ્રત્યેની મમત્વહીનતાને લીધે તેઓ ના પાડતા.

સ. ૨૦૧૧ની સાલની શરૂઆતમા આ સપ્રદાયના આ છેલ્લા આચાર્ય અને છેલ્લા તપસ્વી સાધુ અમદા-

વાદમાં કાળધર્મ પામ્યા આ સંપ્રદાયમાં હવે બે સાધુ અને સાધ્વીજીઓ છે.

આ સંપ્રદાયનાં સાધ્વીજીઓમાં શ્રી શારદાબાઇ મહાસતીજી ઘણાં વિદ્વાન છે. તેઓ અમદાવાદ પાસે સાણંદ ગામના વતની છે. ખૂબ નાની ઉંમરમાં દીક્ષા અંગીકાર કરી સારો અભ્યાસ કર્યો છે. તેમની વ્યાખ્યાન-શૈલી આકર્ષક છે. તેઓ ધર્મનો સુંદર પ્રચાર કરે છે.

પૂજ્યશ્રી ધર્મદાસજી મહારાજનો સંપ્રદાય

પૂજ્યશ્રી ધર્મદાસજી મહારાજના ૯૯ શિષ્યોમાંથી ૨૨ વિદ્વાન મુનિરાજોએ બાવીસ સંપ્રદાયોનું નિર્માણ કર્યું. તે પૈકી ૨૧ તો રાજસ્થાન, પંજાબ, આદિ પ્રાંતોમાં ફેલાયા. તેમના પહેલા શિષ્ય મૂળચંદજી મહારાજ થયા. તેમના ૭ શિષ્યો બહુ પ્રભાવશાળી પંડિતો થયા. તે દરેકે અલગ સંગઠન જમાવ્યું. તેમાં સૌથી વિશાળ સંઘના સ્થાપક અજરામરજીસ્વામી હતા.

પૂજ્યશ્રી અમરામરજીસ્વામી

પૂજ્યશ્રી અજરામરજી સ્વામીએ કાનજીસ્વામી પાસે દીક્ષા લીધી.

તેઓશ્રી જામનગરની પાસે પડાણા ગામમાં માણેકચંદજીની કુળવતી ભાર્યા કંકુબાઇની કૂખે વિ. સં. ૧૮૦૯માં જન્મ્યા હતા

માત્ર દસ વર્ષની ઉંમરે તેમણે અને તેમની માતાએ દીક્ષા ગ્રહણ કરી.

સુરતમાં પૂજ્ય ગુલાબચંદજી યતિવર્યની પાસે રહી તેમણે સંસ્કૃત, પ્રાકૃત તથા આગમોનો અભ્યાસ કર્યો. તેમની સ્મરણશક્તિ ઘણી તીવ્ર હતી. પૂજ્યશ્રી દોલતરામજી મહારાજ પાસે રહીને પણ તેમણે શાસ્ત્રોનો પરમાર્થ જાણ્યો હતો. ૨૭ વર્ષની ઉંમરે તેઓ એક પ્રકાંડ પંડિત તરીકે પ્રખ્યાતિ પામ્યા

વિ. સં. ૧૮૪૫માં આચાર્ય પદવી પર બિરાજમાન થઇ ચારિત્ર્યની નિર્મળતાના પ્રભાવે તેઓશ્રીએ સર્વ વિઘ્નો-બાધાઓનું નિવારણ કર્યું અને શિથિલ તથા વિપરિત વિચારધારાઓનો સામનો કર્યો

તેઓશ્રીના પ્રચારની અસર સ્થાયી હતી. તે વખતે શેઠ નાનજી ડુંગરશીને તેમણે ખૂબ જ્ઞાન સહાયતા કરી જેથી જૈન ધર્મના પ્રચારમાં પૂરી સફળતા થઇ ગઇ.

તેમની પછી અનુક્રમે દેવરાજજીસ્વામી, ભાણજીસ્વામી, કરમશીસ્વામી અને અવિચળજીસ્વામી થયા.

શ્રી અવિચળજીસ્વામીના બે શિષ્યો હરખચંદજીસ્વામી તથા હીમચંદજી મહારાજ થયા. તે બંનેનો પરિવાર અલગ થયો.

૧. લીંબડી મોટો સંપ્રદાય

હીરચંદજીસ્વામી પછી દેવજીસ્વામી, ગોવિંદજીસ્વામી, કાનજીસ્વામી, નથુજીસ્વામી, દીપચંદજીસ્વામી, અને લાધાજીસ્વામી થયા.

પૂજ્ય લાધાજીસ્વામી

પૂજ્ય લાધાજીસ્વામી કચ્છના ગુંદાળા ગામના રહીશ માલસીભાઇ અને તેમની સહધર્મચારિણી સૌ. ગંગાબાઇના પુત્ર હતા.

તેઓશ્રીએ સં. ૧૯૦૮માં વાંકાનેરમાં દીક્ષા લીધી હતી. સં. ૧૯૬૩માં તેઓને આચાર્યપદ પર અભિષિક્ત કરવામાં આવ્યા.

તે વખતના વિદ્વાન સંતોમાં તેઓ ખૂબ પ્રખ્યાત હતા જૈન શાસ્ત્રોનું અધ્યયન કરી 'પ્રકરણ સંગ્રહ' નામના ગ્રંથની તેમણે રચના કરી. આ ગ્રંથ સર્વત્ર ઉપયોગી સિદ્ધ થયો છે. પ્રસિદ્ધ જ્યોતિષશાસ્ત્રજ્ઞ શ્રી સદાનંદી છોટાલાલજી મહારાજ તેમના જ શિષ્ય છે.

લાધાજીસ્વામી પછી મેઘરાજજીસ્વામી અને તેમની પછી પૂજ્ય દેવચંદજીસ્વામી થયા

પૂજ્ય દેવચંદજીસ્વામી

પૂજ્ય દેવચંદજીસ્વામીનો જન્મ વિ. સં. ૧૯૦૨માં કચ્છના સભાણિયા ગામમાં થયો હતો. ૧૧ વર્ષની ઉંમરમાં જ તેમણે દીક્ષા લીધી હતી. તેમના પિતાશ્રી રંગજી સ્વામીએ પણ સાથે જ પંચમહાવ્રત ધારણ કર્યાં હતાં

તેમણે નિષ્પક્ષપણે શાસ્ત્રોનો બહુમુખી સ્વાધ્યાય કર્યો. અનેકાંતનો મર્મ સમભાવ રૂપમાં હૃદયંગમ કર્યો. કવિવર નાનચંદજી મહારાજ તેમના શિષ્ય છે.

વિ. સં. ૧૯૭૭ માં તેઓ સ્વર્ગવાસ પામ્યા.

પૂજ્યશ્રી ગુલાબચંદજી મહારાજ

પૂજ્ય શ્રી દેવચંદજી સ્વામી પછી પૂજ્ય શ્રી લવજી સ્વામી અને તેમની પછી પૂજ્ય શ્રી ગુલાબચંદજી મહારાજ થયા

તેમણે તેમના ભાઈ વીરજીસ્વામી સાથે કચ્છના અંજાર નગરમાં દીક્ષા લીધી હતી

વિ. સ. ૧૯૨૧માં મારોલા નામના ગામમાં તેમનો જન્મ થયો હતો.

સ. ૧૯૮૮માં તેઓશ્રી આચાર્યપદે વિભૂષિત થયા. પંડિતરત્ન શતાવધાની રત્નચંદ્રજી મહારાજ તેમનાજ શિષ્ય હતા. તેમને મૂળ સુત્રોનુ ગંભીર અધ્યયન કર્યું હતુ અને સંસ્કૃત અને પ્રાકૃત ભાષાઓના પણ પ્રકાંડ પંડિત હતા.

પૂજ્ય નાગજીસ્વામી

પૂજ્ય નાગજી સ્વામીમાં પ્રબળ વ્યવસ્થાશક્તિ હતી. વિદ્વતા, ગાંભીર્ય અને આચાર વિચારની સુદૃઢતા તેમનામાં ખૂબ હતી. તેઓશ્રી આચાર્ય પદ પર ન હોવા છતા, સંપ્રદાયનું સર્વ સંચાલન કાર્ય તેઓશ્રીને હસ્તક જ થતુ. તેઓશ્રીએ લીંબડીમા જ દીક્ષા લીધી અને જીવનની અંતિમ પળો પણ ત્યાં જ કાઢી.

તેઓશ્રીના સ્વર્ગવાસ બાદ એક યુરોપીયન મહિલા તથા લીંબડીના ઠાકોર સાહેબની જે દયાજનક સ્થિતિ થઈ તે પરથી તેમની ભાવનાશીલતા તથા ધર્માનુરાગનો ઉત્તમ પરિચય પ્રાપ્ત થાય છે.

શતાવધાની પં. મુનિશ્રી રત્નચંદ્રજી મહારાજ

શતાવધાની પંડીત મુનીશ્રી રત્નચંદ્રજી મહારાજે પોતાની પત્નીના અવસાન બાદ એક કન્યા સાથે થયેલ વેવીશાળ છોડીને દીક્ષા લીધી.

સ. ૧૯૩૬માં મારોતા (કચ્છ)મા તેમનો જન્મ થયો હતો.

તેઓ સ્વભાવે અત્યંત શાંત અને હૃદયે સ્ફટિક સમાન નિર્મળ હતા. તેમણે શ્રી ગુલાબચંદજી મહારાજની નિશ્રામા રહી વિદ્યાનુ વિશાળ અધ્યયન કર્યું સંસ્કૃત ભાષામા તેઓ અસ્ખલિત ધારાના રૂપમા પ્રવચન કરતા હતા. અનેક ગદ્ય-પદ્યાત્મક કાવ્યો તેમણે રચ્યા છે. અર્ધમાગધી કોષ તૈયાર કરી આગમોના અધ્યમનનો માર્ગ સરળ અને સુગમ બનાવવાનુ કામ પણ તેમણે કર્યું. સંશોધન કરનાર વિદ્વાનોને માટે તેમનો કોષ સહાયતા જનક છે

જૈન સિદ્ધાંત કૌમુદીના નામે સુબોધ પ્રાકૃત વ્યાકરણ પણ તેમણે તૈયાર કર્યું છે. કર્તવ્ય કૌમુદી અને ભાવનાશતક જેવા ઉપદેશાત્મક ગ્રંથોની તેમણે રચના કરી છે. ન્યાય શાસ્ત્રના પણ તેઓ પ્રખર પંડિત હતા. અવધાન શક્તિના પ્રયોગોને કારણે તેઓ શતાવધાનીના નામે ઓળખાય છે.

સમાજ સુધારણા અને સંગઠન કાર્યમાં તેમને ખૂબ રસ હતો. અજમેરના સાધુ સંમેલનમા શાંતિ સ્થાપકોમા તેમનુ અગ્રગણ્ય સ્થાન હતુ જયપુર (રાજસ્થાન)મા તેમને 'ભારતરત્ન'ની ઉપાધી આપવામાં આવી હતી. સાધુ સંગઠન માટે તેઓ સતત પ્રયત્નશીલ રહેતા. ઘાટકોપરમા તેમણે વીર સંઘની યોજના કરી હતી.

વિ. સ. ૧૯૪૦માં તેમને શારીરિક વ્યાધિ ઉત્પન્ન થઈ. તેના પર શસ્ત્રક્રિયા કરવામા આવી, પરંતુ આયુષ્ય પૂર્ણ થવાને લીધે મુંબઈમા તેઓશ્રી ઘાટકોપર ખાતે સ્વર્ગવાસ પામ્યા

આચાર્યપદ પર ન ગયા હોવા છતાં તેઓ એક સન્માનનીય સંત ગણાતા હતા. તેમની પ્રવચન શૈલી અત્યંત સુબોધક અને લોકપ્રિય હતી.

તેમના દેહાવસાનથી સમાજે એક ધુરંધર વિદ્વાન અને મહાન સંગઠન પ્રિય ભારતરત્નને ગુમાવ્યું છે. તેમના સ્મારક રૂપે ઘાટકોપરમાં કન્યા હાઈસ્કુલ, સુરેન્દ્રનગરમાં જ્ઞાનમંદીર અને બનારસમાં લાયબ્રેરી બનાવી શ્રાવકોએ પોતાનો ભક્તિભાવ પ્રગટ કર્યો છે

કવિવર્યશ્રી નાનચંદજી મહારાજ

કવિવર્ય શ્રી નાનચંદજી મહારાજનો જન્મ વિ. સ. ૧૯૩૪મા સૌરાષ્ટ્રના સાયલા ગામે થયો હતો.

વિ સ. ૧૯૫૬માં સગપણ છોડી તેઓએ દીક્ષા લીધી. તેઓ પ્રસિદ્ધ સંગીતજ્ઞ અને ભાવનાશીલ વિદ્વાન કવિ છે. તેઓશ્રીના સદુપદેશે અનેક શિક્ષણ સંસ્થાઓને જન્મ આપ્યો છે. અને પુસ્તકાલયોની સ્થાપનાની પ્રેરણા કરનાર જ્ઞાન પ્રચારક તરીકે તેઓશ્રી પ્રસિદ્ધ છે

અજમેર સાધુ સંમેલનના સૂત્રધારોમા તેઓશ્રીનુ અગ્રગણ્ય સ્થાન હતુ. તેમની વિચારધારા અત્યંત નિષ્પક્ષ અને સ્વતંત્ર છે.

માનવતાનુ મીઠું જગત' તેમની લોકપ્રિય કૃતિ છે. સૌરાષ્ટ્રમા દયાદાન વિરોધી પ્રવૃત્તિને ડાલતી અટકાવવામા તેમને પર્યાપ્ત સફળતા પ્રાપ્ત થઈ છે.

સંતબાલજી જેવા તેમના પ્રિય શિષ્યને પણ જરૂર પડે શિષ્ય તરીકે રદ કરવાની જાહેરાત કરવામા પણ

તેમણે પાછી પાની કરી નથી. આ તેમની સિધ્ધાતપ્રિયતાનુ ભવ્ય દ્રષ્ટાત છે.

શ્રી સતબાલજી

કવિવર્ય નાનચદજી પાસે સારાષ્ટ્રમા ટકારા નજીકનાં ટોલ ગામના વતની શીવલાલે દીક્ષા લીધી

શિવલાલનો જન્મ વિ સ. ૧૯૬૦ મા થયો હતો. તેમની માતાના અવસાન બાદ સગપણ છોડીને તેમણે દીક્ષા લીધી.

દીક્ષા પછી તેમનુ નામ સૌભાગ્યચદજી રાખવામાં આવ્યુ. તેઓ 'સતબાલ'ના ઉપનામથી લેખનકાર્ય કરતા. આથી તે નામ રૂઢ બન્યુ અને તે સતબાલના નામે ઓળખાય છે.

શ્રી સતબાલની વિચારધારા તેમની પોતાની જ છે. તેઓ એક સારા વિદ્વાન, અવધાની, લેખક, વકતા અને સમાજસેવક છે. તેમણે કેટલાક સૂત્રોના સરળ ગુજરાતી અનુવાદ તેમની વિચારધારા મુજબ કર્યા છે. 'ગીતા' પર પણ તેમણે ટીકા લખી છે.

કવિવર્ય શ્રી. નાનચદજી મહારાજે, સાધુમાર્ગી સપ્રદાયની મર્યાદાઓનુ અતિક્રમણ કરવાથી, તેમને સપ્રદાયથી અલગ કર્યા.

ત્યારબાદ તેઓ ગાધીવાદી રચનાત્મક કાર્યોમા રસ લઇ સમાજ સુધારણા અને જનસેવાના પથે વળ્યા છે.

સૌરાષ્ટ્ર અને ભાલના પ્રદેશમા તેમની એક સત તરીકે પ્રતિષ્ઠા છે

સસારીઓના ઝગડાઓ પતાવવા તેઓ વિવેકપૂર્ણ, ન્યાયયુક્ત, નિષ્પક્ષ, નિર્ણય આપી પારસ્પરિક કલહોનો અત લાવે છે અને આમ કેટલા ય દાવાઓ અદાલતમા જતા અટકાવે છે. સૌરાષ્ટ્ર સરકાર તેમના માર્ગદર્શનને બહુમૂલુ માને છે

'વિશ્વવાત્સલ્ય' નામનુ એક પાક્ષિક પત્ર પણ તેમની પ્રેરણાથી નીકળે છે.

મુનીશ્રી છોટાલાલજી મહારાજ

મુનિશ્રી છોટાલાલજી મહારાજ પૂજ્ય શ્રી લાધાજી સ્વામીના શિષ્ય છે. ગુરૂદેવના નામે તેમણે લીંબડીમા એક પુસ્તકાલય પણ સ્થપાવ્યુ છે તેઓ એક સારા લેખક અને જ્યોતિષ-શાસ્ત્રજ્ઞ તરીકે પ્રસિદ્ધ છે. 'વિદ્યાસાગર'ના નામે એક ધાર્મિક ઉપન્યાસ પણ લખેલ છે. તેમણે કરેલ રાજપ્રશ્નીય સૂત્રનુ ગુજરાતી ભાષાંતર બહુ જ સુદર છે

શ્રી જેઠમલજી સ્વામી

સ્વામી શ્રી જેઠમલજી મહારાજ ક્ષત્રીય કુળમા જન્મેલ સત છે.

સ. ૧૯૫૮મા પૂજ્ય લવજીસ્વામી પાસે તેમણે દીક્ષા લીધી. તેમણે કુવ્યસનો ઉપર પણ આદોલન ચલાવ્યુ છે

અગ્રેજીનો અભ્યાસ થોડો કર્યો હોવા છતા તેઓ તેમની અસ્ખલીત વાગ્ધારા વડે, અનેક પ્રોફેસરોને પણ નૈતિકતાના સસ્કાર આપવામાં સફળ થયા છે. તેઓ ગામેગામ ફરી મહાવીર સ્વામીની જયતીની રજા માટે પ્રચાર કરે છે મદ્યમાસનો ત્યાગ કરાવે છે, અને જૈનેતરોમા પણ આધ્યાત્મિક સાહસ અને અહિસાનો પ્રખર પ્રચાર કરે છે

૨ લીંબડી નાનો (સંઘવી) સંપ્રદાય

વિ. સ ૧૯૧૫મા લીબડી સપ્રદાયના બે વિભાગ થયા. મોટા સંપ્રદાયના વિશિષ્ટ મુનિવરોનો પરિચય આપણે આ પહેલાં કર્યો.

પૂજ્ય શ્રી હીમચદજી મહારાજ

પૂજ્ય શ્રી હીમચદજી મહારાજના વખતથી લીબડી નાનો (સઘવી) સપ્રદાય શરૂ થયો. પૂ શ્રી હીમચદજી મહારાજે પૂજ્ય દેવરાજજી સ્વામીના શિષ્ય મુનિશ્રી અવિચળદાસજી પાસે દીક્ષા લીધી હતી.

તેઓ વઢવાણ તાબે ટીમ્બા નિવાસી વીશા શ્રીમાળી જાતીમા જનમ્યા હતા. વિ. સ ૧૮૭૫ મા તેમણે પચ મહાવ્રત ધારણ કર્યા સ ૧૯૧૫ મા ધોલેરામા તેમણે ચાતુર્માસ કર્યું. ત્યારથી લીબડી સપ્રદાયના બે વિભાગ પડયા

તેઓશ્રીનો સ. ૧૯૨૯ મા દેહાન્ત થતાં તેમની પાટે પૂજ્ય શ્રી ગોપાલજી સ્વામી આચાર્ય થયા.

પૂજ્ય ગોપાલજી સ્વામી

વિ સ. ૧૮૮૬ મા બ્રહ્મક્ષત્રીય વંશના શ્રી મૂળચદજીની સહધર્મિણી સેજાબાઇની કુક્ષિએ તેમનો જન્મ જેતપુરમા થયો હતો.

માત્ર દસ વર્ષની અવસ્થામાં તેમણે દીક્ષા લઇ સુત્રોનુ ગહન અધ્યયન કર્યુ. આગમના અધ્યયનમાં તેમની પાસે શાસ્ત્ર સ્વાધ્યાય માટે ઘણા પધારતા.

વિ. સ. ૧૯૪૮માં તેમનો સ્વર્ગવાસ થયો. લીંબડીનો

નાનો સંપ્રદાય તેમના નામથી શ્રી ગોપાલજી સ્વામીના સંઘાડાને નામે પણ ઓળખાય છે.

પૂજ્ય મોહનલાલજી મહારાજ

પૂજ્ય શ્રી મોહનલાલજી મહારાજનો જન્મ ધ્રોલેરા નિવાસી શ્રી કોઠારીની સુભાર્યા શ્રી ધનીબાઇના કુખે થયો હતો.

વિ. સં. ૧૯૩૮ મા તેમણે તેમની બ્હેન મુળીબાઇની સાથે દીક્ષા લીધી.

તેમની લેખનશૈલિ સરળ અને પ્રબળ શક્તિવંત હતી. તેમણે લખેલ 'પ્રશ્નોત્તર મોહનમાળા એક પ્રસિધ્ધ ચર્ચા ગ્રંથ તરીકે ખ્યાતિ પામેલ છે.

પૂજ્ય શ્રી મણીલાલજી મહારાજ

પૂ. શ્રી મણીલાલજી મહારાજે વિ સં. ૧૯૪૬ મા ધ્રોલેરામાં દીક્ષા લીધી હતી. શાસ્ત્રોનો તેમણે ઘણો ઉંડો અભ્યાસ કર્યો હતો. તેઓ ઘણા લોકપ્રીય વિનીત અને સરળ સ્વભાવી મુનીરાજ હતા. જ્યોતિષના વિષયમા પણ તેઓ ઘણા નિષ્ણાત હતા.

'પ્રભુવીર પટ્ટાવલિ' જેવો ઐતિહાસિક ગ્રંથ લખી તેમણે સમાજની ઉલ્લેખપાત્ર સેવા કરી છે. 'મ્હારી વિશુદ્ધ ભાવના' અને શાસ્ત્રીય વિષયો ઉપર પ્રશ્નોતરના પુસ્તકો પણ તેમણે લખ્યાં છે અજમેરના સાધુસમેલનમા તેઓ એક અગ્રગણ્ય સુરક્ષક હતા.

જ્ઞાનની સાથે ક્રિયા પણ હોવી એ વિરલ પુરુષોમાં જ જોઇ શકાય છે પૂજ્ય શ્રી મણીલાલજીમા આ બન્નેનો સમનવય હતો. છેલ્લા કેટલાક વખતથી તો તેઓ માત્ર દુધ, છાશ, પાપડ, ગાઠીયા, રોટલી કે ભાખરી અને પાણી એટલા જ દ્રવ્યો માત્ર વાપરતા રોટલી અગર ભાખરી, છાશ અગર દુધ અને પાપડ અગર ગાંઠીઆ. અને તે પણ નક્કી કરેલ પરિમાણમાં જ લેતા

આવા જ્ઞાન—ક્રિયાવાન મુનિશ્રી સં. ૧૯૮૯ મા અવસાન પામ્યા.

તેમના શિષ્ય મુનિશ્રી કેશવલાલજી અને તપસ્વી શ્રી ઉત્તમચંદજી મહારાજ આ સંપ્રદાયમા મુખ્ય છે.

પૂ. મુનિશ્રી કેશવલાલજી મહારાજ

પૂજ્ય મુનિશ્રી કેશવલાલજી મહારાજ કચ્છ, દેશલપુર, કંઠીવાલીના રહીશ વોરા જેતશી કરમચંદના પુત્ર થાય. તેમણે બાળબ્રહ્મચારીપણે સં. ૧૯૮૬ ના જેઠ વદ ૮ ના રોજ કચ્છ પાસે દેશલપુરમાં દીક્ષા અંગીકાર કરી.

સં. ૧૯૮૪મા કારતક વદ ૫ ને રવિવારે તેઓ શ્રી કચ્છ નાની પક્ષમાથી જુદા થયા અને પૂજ્ય શ્રી મણીલાલજી મહારાજ પાસે આવ્યા.

તેમણે શાસ્ત્રોનો સારો અભ્યાસ કર્યો છે અને ધર્મનો સુંદર પ્રચાર કરી રહ્યા છે.

૩. ગોંડળ સંપ્રદાય

પૂજ્ય ડુંગરશી સ્વામી

પૂજ્ય ડુંગરશી સ્વામી ગોંડળ સંપ્રદાયના આદ્ય સંત છે. પૂજ્ય શ્રી ધર્મદાસજી મહારાજના શિષ્ય પચાણજી મહારાજ પાસે તેમણે પંચમહાવ્રત અંગીકાર કર્યા હતા.

તેમનો જન્મ સૌરાષ્ટ્રના મેંદરડા ગામના શેઠ કમળશીભાઇની સુપત્ની હીરબાઇની કુખે વિ સં. ૧૭૯૨મા થયો હતો.

૨૫ વર્ષની વયે દીવ મુકામે તેમણે દીક્ષા લીધી હતી સં. ૧૮૪૫મા તેઓ આચાર્યપદારૂઢ થયા.

શાસ્ત્ર સ્વાધ્યાયમા તેઓ નિરંતર જાગૃત રહેતા તેમ કરતા તેઓ નિન્દ્રાનો પણ ત્યાગ કરતા. પ્રખ્યાત રાજ્યમાન્ય શેઠ સોભાગચંદજી તેમના જ શિષ્ય હતા.

સં. ૧૮૭૭ માં ગોંડલમા તેમનો સ્વર્ગવાસ થયો તેમની ચારિત્રશીલતા અને સંપ્રદાયપરાયણતા આગમાનુસાર શુદ્ધિ મૂલક હતી.

તપસ્વી શ્રી ગણેશજી સ્વામી

તપસ્વી શ્રી ગણેશજીસ્વામીનો જન્મ રાજકોટ પાસે ખેરડી ગામે થયો હતો. તેઓ એકાંતર ઉપવાસ કરતા અભિગ્રહપૂર્વક તપશ્ચર્યાઓ પણ તેમણે ઘણી કરી હતી. વિક્રમ સં. ૧૮૬૬મા ૬૦ દિવસના સંથારામા તેમનો સ્વર્ગવાસ થયો.

પૂજ્ય મોટા નેણશી સ્વામીનો પરિવાર

પૂજ્ય ખોડાજી સ્વામી

પૂજ્ય ખોડાજી સ્વામી, પૂજ્ય મોટા નેણશી સ્વામીના ૭ શિષ્યોના પરિવારમા મોટા પ્રભાવશાળી સંત હતા. પૂજ્ય મૂળજી સ્વામીના શિષ્ય પૂજ્ય ધ્રેલાજી સ્વામી પાસે તેમણે સં. ૧૯૦૮મા દીક્ષા લીધી હતી.

તેમનુ શાસ્ત્રીય જ્ઞાન વિશાળ હતુ. પ્રવચનની શૈલી બહુ જ આકર્ષક હતી. તેઓ પ્રસાદ ગુણસંપન્ન સુકંઠ

અને ગાયક હતા. શ્રી ખોડાજી કાવ્યમાળાના નામે તેમના સ્તવન સ્વાધ્યાય ગીતોનો સગ્રહ પ્રકાશિત થઇ ચૂક્યો છે. ગુજરાતીમાં ભક્ત કવિ અખાનુ જેવુ સ્થાન છે, તેવુ જ ગુજરાતી જૈન સાહિત્યમા પૂજ્ય ખોડાજીનુ છે સ્વ. વા. મો શાહે જૈન કવિ અખાના નામે તેમને બિરદાવેલ છે.

પૂજ્ય જસાજી મહારાજ

પૂજ્ય જસાજી મહારાજ રાજસ્થાનમા જન્મ્યા છતા ગુજરાત તથા સૌરાષ્ટ્રમા નામી સત તરીકે વિખ્યાત થયા. તેઓ શાસ્ત્રના જ્ઞાની અને ક્રિયાવાન હતા.

વિ. સ. ૧૯૦૭મા તેમણે દીક્ષા લીધી હતી. ૭૦ વર્ષ દીક્ષા પાળી તેઓ દેવલોક સિધાવ્યા

પૂજ્ય જસાજી સ્વામીના ગુરુભાઇ હીરાચદજી સ્વામીના શિષ્ય પૂજ્ય દેવજીસ્વામી થયા. તેમની પાસે પૂજ્ય કવિવર્ય આસાજી સ્વામી દીક્ષિત થયા તેમણે 'મહાવીર' પક્ષીના મહાપુરુષો' નામનુ પુસ્તક લખવામાં ઘણો પરિશ્રમ ઉઠાવ્યો છે.

પૂજ્ય આસાજી સ્વામીના શિષ્ય ભીમજી સ્વામી થયા તેમની સેવામા નાના નેણશી સ્વામીએ દીક્ષા લીધી. તેમના શિષ્ય પૂજ્ય દેવજીસ્વામી હતા તેમના શિષ્યોમા પૂજ્ય જયચદજી સ્વામી વિદ્વાન થયા અને પૂજ્ય માણેકચદજી સ્વામી તપસ્વી બન્ને સગા ભાઇઓ હતા.

પૂજ્ય જયચંદજી સ્વામી

જેતપુરના દશાશ્રીમાળી શેઠ પ્રેમજીભાઇની સહધર્મચારિણી કુવરબાઇની કુક્ષીએ સ. ૧૯૦૬ માં પૂજ્ય શ્રી જયચદજી સ્વામીનો જન્મ થયો હતો.

મેંદરડા ગામમાં ૨૨ વર્ષની ઉમરે તેમણે દીક્ષા લીધી હતી. વિ. સ. ૧૯૮૭માં સ્વર્ગવાસ થયો.

તેમના પ્રવચનો અત્યંત લોકપ્રીય હતા પ્રકૃતિના ગભીર, વિનીત અને પ્રશાત હોવાથી શ્રી સઘ પર પણ તેમનો પ્રભાવ પડતો. એકીસાથે તેમણે ૩૫ ઉપવાસ કર્યા હતા હમેશા તેઓ તપસ્યામાં રહેતા, જેથી તેમનુ તેજ દિનપ્રતિદિન દિવ્ય થતુ જતુ હતુ. અનેક શિક્ષણ સંસ્થાઓના જન્મદાતા મુનિશ્રી પ્રાણલાલજી, જેવા સમાજસેવી મુનિરાજની ભેટ સ્થાનકવાસી સમાજને તેમના તરફથી મળી છે. તેમના શિષ્યોમા મુનિશ્રી જયતીલાલજી આજે મુનીરાજોમાં પ્રકાંડ વિદ્વાન ગણાય છે. તેમણે કાશીમા રહી ન્યાય–દર્શનનો ઘણો ઊડો અભ્યાસ કર્યો છે. તેમના પિતાશ્રીએ પણ દીક્ષા લીધી છે. તેમની બે બ્હેનો પણ દીક્ષિત થઇ છે આ સંપ્રદાયની અન્ય સાધ્વીઓ પણ વિદુષી છે.

તપસ્વી મુનિશ્રી માણેકચંદજી મહારાજ

તપસ્વી મુનિશ્રી માણેકચદજી મહારાજ જયચદજી મહારાજથી મોટા હતા પણ, દીક્ષામાં પાછળ હતા તેમનુ આગમ જ્ઞાન ઘણુ બહોળુ હતું. જેમ જેમ તેઓ સ્વમત અને પરમતનો અભ્યાસ કરતા જતા હતા, તેમ તેમ તેમની જીજ્ઞાસાવૃત્તિ અધિકાધિક વધતી જતી હતી. તેઓ અત્યત નમ્ર અને તીવ્ર તપસ્વી હતા

તેમણે અનેક શિક્ષણ સસ્થાઓનુ સચાલન કર્યું છે. યોગના આસનોમા પણ તેઓ પ્રવીણ હતા. સૌરાષ્ટ્રના મુનિઓમાં તેઓ અગ્રગણ્ય મનાતા.

પૂજ્ય પુરૂષોત્તમજી મહારાજ

પૂજ્ય પુરુષોતમજી મહારાજનો જન્મ બલદાણા, નામના ગામમા કણબી કુટુબમાં થયો હતો. માગરોળમાં પૂજ્ય જાદવજી મહારાજ પાસે તેમણે દીક્ષા લીધી હતી. આજે ગોડળ સપ્રદાયમા તેઓ વયોવૃદ્ધ, જ્ઞાનવૃદ્ધ અને તપોવૃદ્ધ આચાર્ય છે. તેમની ક્રિયાપરાયણતા પણ આદર્શ છે.

૪. સાયલા સંપ્રદાય.

પૂજ્ય નાગજીસ્વામીનો પરિવાર.

વિ. સં. ૧૮૭૨ મા પૂજ્ય વાલજી સ્વામીના શિષ્ય પૂજ્ય નાગજી સ્વામીએ આ સંપ્રદાયની સ્થાપના કરી છે. તેઓ છઠ છઠનાં પારણાં કરતા, અને પારણામાં આયબીલ કરતા. અભિગ્રહો પણ અનેક તેમણે ધારણ કર્યા હતા. ચર્ચાવાદી પૂજ્ય ભીમજી સ્વામી અને શાસ્ત્રોના અભ્યાસી મુલજી સ્વામી તેમના જ શિષ્ય હતા. જ્યોતિષ શાસ્ત્રજ્ઞ પૂજ્ય મેઘરાજજી મહારાજ અને લોકપ્રીય પ્રવચનકાર પૂજ્ય સઘજી મહારાજ પણ તેમનાજ પરિવારમા થયા છે. આજે તપસ્વી મગનલાલજી, કાનજીમુનિ વગેરે ચારેક મુનિઓ સાયલા સપ્રદાયમાં છે

૫. બોટાદ સંપ્રદાય

પૂજ્ય જસરાજજી મહારાજ

પૂજ્ય ધર્મદાસજી મહારાજની પાંચમી પાટે પૂજ્ય જસરાજજી મહારાજ આચાર્ય થયા. વિ. સ. ૧૮૬૭મા તેમણે માત્ર ૧૩ વર્ષની ઉમરે પૂજ્ય વશરામજી મહારાજ

પાસે મોરબીમાં દીક્ષા લીધી હતી. તેમની તેજસ્વીતા સમાજમાં વિખ્યાત હતી. આગમોના ગંભીરતાભર્યા જ્ઞાનને લીધે તે વખતના સાધુ સમાજમાં તેમનો યશ ઘણો ફેલાયો હતો. ધ્રાગધ્રાથી તેઓ બોટાદમા સ્થિરવાસ કરવા આવ્યા, ત્યારથી આ સપ્રદાયનુ નામ બોટાદ સપ્રદાય પડયુ. વિ. સ. ૧૯૨૯મા તેમનો સ્વર્ગવાસ થયો.

પૂજ્ય અમરશીજી મહારાજ

પૂજ્ય અમરશીજી મહારાજ ક્ષત્રીય વશમાં જન્મેલ પ્રભાવશાળી સાધુ હતા. વિ. સ. ૧૮૮૬ માં તેમનો જન્મ થયો હતો. નાની ઉમરમાં જ તેમના માતા પિતા અવસાન પામવાથી લાઠીના દરબાર શ્રી. લાખાજીરાજે તેમને મોટા કર્યા હતા સ. ૧૯૦૧મા પૂજ્ય જસરાજજી મહારાજની પાસે તેમણે દીક્ષા લીધી. સસ્કૃત, પ્રાકૃત અને જ્યોતિષ આદિ વિષયોનુ તેમણે વિશિષ્ટ જ્ઞાન પ્રાપ્ત કર્યું હતુ. વર્તમાન આચાર્ય માણેકચદજી મહારાજ તેમના જ શિષ્ય છે.

પૂજ્ય હીરાચંદજી મહારાજ

પૂજ્ય હીરાચદજી મહારાજનો જન્મ રેવડી (મારવાડ) માં થયો હતો. વિ. સ. ૧૯૨૫મા દામનગરમા પૂજ્ય જસરાજજી સ્વામીના શિષ્ય રણછોડદાસજી મહારાજ પાસે તેમણે દીક્ષા લીધી હતી. તેમની વ્યાખ્યાનશૈલી ઘણી રોચક હતી. તેઓ ક્રીયાશીલ અને સ્વાધ્યાયપ્રેમી હતા સં. ૧૯૭૪મા વઢવાણ શહેરમાં તેમનો સ્વર્ગવાસ થયો.

પૂજ્ય મૂળચદજી સ્વામી

પૂજ્ય મૂળચદજી સ્વામીનો જન્મ વિ. સ ૧૯૨૦મા નાગનેશ ગામમાં થયો હતો. તેમની સ્મરણશક્તિ ખૂબ તીવ્ર હતી. વિ. સં. ૧૯૪૮મા તેમણે પૂજ્ય હિરાચદજી મહારાજ પાસે દીક્ષા લીધી.

સૂત્ર સિદ્ધાતોનો તેમણે અત્યત ભક્તિપૂર્વક અભ્યાસ કર્યો હતો ચર્ચામા આગમ પ્રમાણ વિના બોલવુ તેમને પસદ નહોતુ.

પૂજ્ય માણેકચદજી મહારાજ

પૃજ્ય માણેકચદજી મહારાજનો જન્મ બોટાદ પાસે તુરખા ગામમા થયો હતો. વિ. સ. ૧૯૪૩મા પૂજ્ય અમરશી મહારાજ પાસે તેમણે દીક્ષા લીધી હતી. સસ્કૃત પ્રાકૃત ભાષાઓનો તેમણે ખૂબ અભ્યાસ કર્યો હતો.

તેમણે પોતાના ચારિત્ર્યબળથી ઘણા પરીસહો સહન કર્યો. બોટાદ સપ્રદાયમા તેમની ખુબ પ્રતિષ્ઠા હતી. તેમના શિષ્ય ન્યાલચદજી શુધ્ધ ચિત્તવાળા શાંત મુનિરાજ હતા મૃત્યુને પહેલેથીજ તેઓ ઓળખી ગયા હતા. જે દિવસે તેમણે કહ્યુ કે આજ શરીર છોડવુ છે તેજ દિવસે તેઓ સ્વર્ગે ગયા.

પૂજ્ય શીવલાલજી મહારાજ

પૂજ્ય શિવલાલજી મહારાજ ભાવસાર જ્ઞાતિમા જન્મ્યા હતા સગપણ છોડી, સ. ૧૯૭૪માં તેમણે પૂજ્ય માણેકચદજી મહારાજ પાસે દીક્ષા લીધી. 'પચ પરમેષ્ઠીનો પ્રભાવ' નામનુ પુસ્તક તેમણે લખ્યુ છે. બીજા પુસ્તકો પણ તેમણે લખ્યાં છે. તેમની પ્રવચન શૈલી અત્યત સુશ્રાવ્ય છે. બોટાદના મુનિવરોમાં તેઓ ક્રિયાપાત્ર છે

શ્રી કાનજી સ્વામી

સ ૧૯૭૦મા બોટાદ સપ્રદાયના પૂજ્ય હીરાચદજી મહારાજ પાસે કાનજી સ્વામીએ દીક્ષા લીધી. તેમની પ્રવચનશૈલી યુક્તિપૂર્ણ અને રોચક હતી. સ. ૧૯૯૦ મા દિગમ્બર જૈન સાહિત્યનો અભ્યાસ કરતા તેમના વિચારોમા પરિવર્તન આવ્યુ તેમણે મુહપત્તિનો ત્યાગ કરી સોનગઢમા સ્થિરવાસ કર્યો. સમયસારના આધાર પર તે પ્રવચન કરે છે. સીમધર સ્વામીના મંદીરો બનાવરાવતા જાય છે. નિશ્ચય દ્રષ્ટિ પર જ તેમના ઉપદેશનુ જોર છે વ્યવહાર ધર્મના આચારોને પુણ્યકર કહીને તેને ઉપેક્ષણીય માને છે. તેમના ઉપદેશનો ભયંકર પ્રભાવ જનતા પર પડે છે. તે સમજે છે કે આધ્યાત્મિકતાની વાર્તા સમજી લીધી એટલે જીવન સફળ થઇ ગયુ. પછી ભલે મુડીવાદીઓના સમસ્ત વૈભવવિલાસનો ઉપભોગ કેમ ન કરીએ! આથી ઉલ્ટુ મહાન તપસ્યા અને ત્યાગમય જીવન હોવા છતા અધ્યાત્મને ન જાણે તો બધુ વ્યર્થ છે.

૬. કચ્છ આઠકોટિ મોટીપક્ષ

કચ્છમાં સ્થાનકવાસી જૈન ધર્મની શરૂઆત

એકલપાત્રિયા શ્રાવકો વિ. સ ૧૬૦૮ લગભગમા થયેલા તેમનુ જોર જામનગરમા વિશેષ હતુ.

જામનગર અને કચ્છ માંડવીના શ્રાવકોમા પરસ્પર ઘણો સારો સબધ હતો તેમજ વેપાર ધધા માટે પણ એ બનેના શ્રાવકોની એક બીજાને ત્યાં આવજાવ રહેતી આથી એકલપાત્રિયા શ્રાવકો કચ્છમાં આવતા થયા. તેઓ કચ્છના મોટા ગામોમા ચોમાસામા રોકા

અને ગામડાંઓમા પણ વરસના બીજા સમય દરમ્યાન ફરી ધર્મનો બોધ દેતા. તેઓ શ્રાવકોને આઠ કોટિથી સામાયિક-પૌષધ કરાવતા.

સ. ૧૭૭૨ મા પૂજ્ય ધર્મદાસજી મહારાજના શિષ્ય મુળચંદજી સ્વામી અને તેમના શિષ્ય ઇંદજીસ્વામી ઠાણા બે પ્રથમવાર કચ્છમા પધાર્યા

પૂજ્ય શ્રી સોમચંદજી મહારાજ

પૂજ્યશ્રી ઇંદ્રજી મહારાજે ધર્મસિંહજી મુનિના ટબ્બા તથા શાસ્ત્રોનો સારો અભ્યાસ કરેલો હતો. આથી તેમણે ધર્મસિંહજી મુનિની આઠ કોટિની શ્રદ્ધામા પ્રતિતિ થવાથી આઠ કોટિ ઉપદેશ પ્રરૂપ્યો. તેમની પાસે સ. ૧૭૮૬માં પૂજ્ય શ્રી સોમચંદજી સ્વામીએ દીક્ષા અંગીકાર કરી.

પૂજ્ય શ્રી સોમચંદજી પાસે, કચ્છના મહારાવ શ્રી લખપતજીના કારભારી શ્રોભણ પારેખ તથા બળદીયા ગામના રહીશ કૃષ્ણજી તથા તેમની માતા મૃગાબાઇએ સ. ૧૮૧૬ના કારતક વદ ૧૧ના રોજ ભૂજ શહેરમા દીક્ષા લીધી.

સ. ૧૮૩૧મા દેવકરણજીએ દીક્ષા અંગીકાર કરી.

સ. ૧૮૪૨મા પૂજ્ય ડાહ્યાજી સ્વામીએ દીક્ષા લીધી. તેમના વખતથી કૃષ્ણજીસ્વામીનો સંઘાડો આઠ કોટિના નામથી ઓળખાયો.

પૂજ્ય કૃષ્ણજી મહારાજ

સં ૧૮૪૪ માં લીંબડી સંપ્રદાયના પૂજ્ય અજરામરજી સ્વામી કચ્છમા પધાર્યા ત્યારે કચ્છી સંપ્રદાયના પૂજ્ય શ્રી કૃષ્ણજી મહારાજે તેમની સમક્ષ એકવીસ બોલ રજુ કર્યા

૧. મકાનના મેડા ઉપર ઉતરવુ નહિ.
૨. ગૃહસ્થ સ્ત્રીને ભણાવવી નહિ
૩ ગૃહસ્થીઓને ઘેર કપડાના પોટલા રાખવાં નહિ.
૪. ગૌચરીએ જાય ત્યારે વહોરનારનો પગ ત્રસ સ્થાવર જીવ પર આવી જાય તો વહોરવુ નહી.
૫. સંસારી ઉઘાડે મોઢે બોલે તો બોલવુ નહી.
૬. નાળીયેરના ગોળા લેવા નહિ
૭. બદામના ગોળા લેવા નહિ.
૮. દાડમના દાણા લેવા નહિ.
૯ પગડીના ગોળા આખા લેવા નહી.
૧૦. શેરડીની કાતરી કે રાતી જારના સાંઠા લેવા નહિ.
૧૧. પાકા ચીભડાનુ રાયતુ બીજ સહિત લેવુ નહિ.
૧૨. ડુંગળી, લસણ કે મૂળાના ખારીયા લેવા નહિ
૧૩. પુસ્તક વેચાતાં લઇ આપે તો લેવા નહી.
૧૪ છોકરા વેચાતા લઇ આપે તો દીક્ષા આપવી નહિ.
૧૫. ડુંગળી કે ગાજરનુ શાક વહોરવુ નહિ.
૧૬. માળ ઉપરથી કોઇ વસ્તુ લઇને આવે તો વહોરવી નહિ.
૧૭. ભોંયરામાંથી કાઢીને વસ્તુ આપે તે વહોરવી નહિ.
૧૮. ન દેખાય તેવા અંધારામાથી વસ્તુ લાવી આપે તે લેવી નહી.
૧૯. આહાર ઉપર કીડી ચઢી હોય તો તે વહોરવો નહિ.
૨૦. મિષ્ટાન્ન આદિ કાળવ્યતિક્રમ્યા પછી વહોરવાં નહિ
૨૧. મડી પાવડીએ, બળી પાઉડીએ, સઝીએ, સહસાગારે-ના દોષવાળો આહાર લેવો નહિ.

આ એકવીસ બોલ પૂજ્ય અજરામરજીએ કબુલ ન કરવાથી આહાર પાણીનો વ્યવહાર બંધ થયો.

ત્યારથી છકોટી અને આઠકોટી બે પક્ષ થયા

સ. ૧૮૫૫ માં લીંબડીથી અજરામરજી સ્વામીના શિષ્ય દેવરાજજી કચ્છમા આવ્યા. તેમણે સ. ૧૮૫૬મા કચ્છ માંડવીમાં ચાતુર્માસ કર્યું. તે વખતે પ્રથમ શ્રાવણ વદી પક્ષમાં એક સાંજે શા. હંસરાજ અમીદાસના પત્ની રામબાઇને છ કોટિએ સામાયિક કરાવી. ત્યાર પછી સ. ૧૮૫૭ મા મુંદ્રામા તથા સ. ૧૮૫૮ મા અંજારમા ચોમાસુ કર્યું. આમ છ કોટિની શ્રદ્ધા ત્યા ચાલુ થઇ

પૂજ્ય ડાહ્યાજી સ્વામીના બે શિષ્યો થયા.

સ. ૧૮૪૫ માં જસરાજજી સ્વામીએ દીક્ષા લીધી.

આ બન્ને શિષ્યો પોતપોતાના અલગ શિષ્યો બનાવતા. આથી ધીમે ધીમે ક્રિયાઓમા ફરક પડવા માંડયો. આથી સ. ૧૮૭૨ મા જસરાજજી મહારાજે બત્રીસ બોલ નક્કી કર્યા તે નીચે મુજબ છે,

૧ પાત્ર લઇ વિના કારણે ગામમા જવુ નહિ
૨. ગૃહસ્થોને ત્યાં વિના કારણ રોકાવુ નહી.
૩. સૂત્રો વેચાતા લેવા કે લખવા નહી
૪. કાપડ વેચાતુ લઇ આપે તો લેવું નહી.
૫. વરસીતપના પારણા પ્રસંગે જવુ પડે ત્યારે કાપડ વગેરે વહોરાવે તે લેવુ નહી.

૬. મીઠાઇ, ગોળ કે ખાંડ વેચાતાં લઇ આપે તે લેવાં નહિ.
૭. કબાટ, છાજલી કે પેટી બનાવરાવવી નહીં.
૮. કંદમૂળનું શાક કે અથાણું લેવું નહિ.
૯. સંસારીને ગુચ્છો, મુહપત્તી કે દોરો આપવો નહિ
૧૦. સંસારીનું આશ્રવનું કોઇ કામ કરવું નહિ
૧૧. આહાર કરતા માંડલીઓ રાખવો તથા પાત્રા ચીકણા હોય તો લોટથી સાફ કરી પી જવા.
૧૨. રાતવાસી આહાર રાખવો નહિ.
૧૩. કાગળ લખવો કે લખાવવો નહિ.
૧૪. દ્રાક્ષ, કીસમીસ, નળિયેરના ગોળા, બદામના ગોળા લેવા નહિ.
૧૫. પૂઠા મશરૂ કે છીટ વહોરવી નહિ
૧૬. બાગ, બગીચા પ્રમુખ જોવા માટે જવું નહિ
૧૭. પ્રતિક્રમણ કરતા વચ્ચે વાતો કરવી નહિ
૧૮. પડિલેહણ કરતા વચ્ચે વાતો કરવી નહિ
૧૯. રાત્રીના સમયે સ્ત્રીએ ઉપાશ્રયમા આવવું નહિ.
૨૦. અચેત પાણીમા સચેત પાણીની શંકા હોય તો લેવું નહિ.
૨૧. ચોમાસાની આલોચના છ માસમાં કરવી.
૨૨ સાજા સારા હોય ત્યારે સ્થાનકમા ઠંડીલ જવા માટે બેસવું નહિ
૨૩. વધારે પાત્રા કે માટીનું વાસણ રાખવું નહિ.
૨૪. જંત્ર, મંત્ર કે ઔષધ કરવા નહિ.
૨૫ નાના ગામડામા પૂછયા વગર આહાર પાણી લેવા નહિ.
૨૬. સંસારીની જગામા સ્ત્રીઓ હોય ત્યા રાત્રે રહેવું નહિ.
૨૭. સંસારી ઉઘાડે મોઢે બોલે તેમની સાથે બોલવું નહિ.
૨૮. અગાસે ઉભા રહી રાત્રે વાતો કરવી નહિ.
૨૯. સંસારીને ઘેર કપડાં માટે વારંવાર જાચવું નહિ.
૩૦. વાંદવા આવે તેના ભાતામાથી આહાર વહોરવો નહિ.
૩૧. શ્રાવિકાઓની બારવ્રત આદરવાની ચોપડી પાટે બેસી વાંચવી નહિ.
૩૨. ચોમાસુ તથા શેળાકાળ પૂરો થયા પછી છતી શક્તિએ વિના કારણ રોકાવું નહિ.

આ બત્રીસ બોલ સાથે દેવજી સ્વામી સંમત થયા નહિ. આથી કચ્છ આઠ કોટીના બે પક્ષ પડયા દેવજી સ્વામીનો સંઘાડો આઠ કોટી મોટી પક્ષને નામે ઓળખાયો અને જસરાજજી સ્વામીનો સંઘાડો આઠ કોટી નાની પક્ષને નામે ઓળખાય છે.

આઠકોટિ મોટીપક્ષ

પૂજ્ય કરમશીજી મહારાજ

પૂજ્ય કૃષ્ણજી મહારાજની દસમી પાટે પૂજ્ય કરમશીજી મહારાજ થયા.

તેમનો જન્મ સં. ૧૮૮૬ મા કચ્છ વાકીના શેઠ હેમરાજજીની સહધર્મિણી માણબાઇની કુખે થયો હતો

ગુજરાતના સિદ્ધપુર ગામે પૂજ્ય પાનાચંદજી મહારાજ પાસે તેમણે સં. ૧૯૦૪ માં દીક્ષા લીધી હતી.

સં. ૧૯૫૯ મા તેઓ આચાર્યપદે આવ્યા. તેઓ કર્તવ્યપરાયણ અને ઉગ્રવિહારી મુનિ હતા જ્ઞાનચર્યાનો તેમને ઘણો શોખ હતો. શાંતિ અને સહિષ્ણુતા તેમના ખાસ ગુણો હતા. વિ. સં. ૧૯૬૯ મા તેમને સ્વર્ગવાસ થયો. તેમની પછી પૂજ્ય શ્રી વ્રજપાલજી, થયા અને પૂજ્યશ્રી કાનજીસ્વામી આજે બિરાજમાન છે.

પૂજ્યશ્રી નાગજીસ્વામી

કચ્છ ભોજાયના શ્રીમાન શા લાલજી જેવતની સુભાર્યા પાંચીબાઇની કુક્ષિએ તેમનો જન્મ થયો હતો સં. ૧૯૪૭ મા માત્ર ૧૧ વર્ષની ઉમરમા જ તેમણે પૂજ્ય કરમશીજી મહારાજ પાસે દીક્ષા લીધી સં. ૧૯૮૫ માં તેમને આચાર્યપદવી આપવામા આવી તેઓ ઉત્તમ વિદ્વાન અને સરસ કવિ છે. ગુજરાતી ભાષામા અનેક રાસ પણ તેમણે બનાવ્યા છે.

પૂજ્યશ્રી દેવચંદજી મહારાજ

પૂજ્ય શ્રી. દેવચંદજી મહારાજ આ સંપ્રદાયના ઉપાધ્યાય હતા. વિ. સં. ૧૯૪૭મા તેમનો જન્મ શેઠ સાંકળચંદની પત્ની લક્ષ્મીબાઇની કુક્ષિએ થયો હતો. તેમણે વિ સં. ૧૯૫૭માં દીક્ષા લીધી ન્યાય, વ્યાકરણ અને સાહિત્યના તેઓ પ્રખર પંડિત હતા. ઠાણાંગ સૂત્ર પર ભાષાંતર પણ તેમણે લખ્યું છે. ન્યાયના પારિભાષિક

શબ્દોને સરળ રીતે સમજાવતો ગ્રંથ પણ તેમણે રચ્યો છે.

સં ૨૦૦૦ માં પોરબંદરમાં તેમનો સ્વર્ગવાસ થયો.

પૂ. મુનિ રત્નચંદ્રજી મહારાજ

સં. ૧૯૭૫ મા પૂજ્ય નાગજી સ્વામી પાસે પૂ. મુનિ રત્નચંદ્રજી મહારાજે દીક્ષા લીધી.

તેમના પિતાશ્રીનુ નામ કાનજીભાઇ તથા માતાનુ નામ મોતી બાઇ હતુ. પૂ રત્નચંદ્રજી મહારાજની કચ્છી તરીકે પ્રખ્યાતિ હતી

તેમણે સંસ્કૃત, પ્રાકૃત ભાષાનો ઉંડો અભ્યાસ કર્યો હતો. ત્રણ ચરિત્ર ગ્રંથોની રચના પણ તેમણે સંસ્કૃતમા કરી છે.

કચ્છ આઠ કોટી નાની પક્ષ

પૂજ્ય ડાહ્યાજી મહારાજના બે શિષ્યોએ જુદા જુદા સંઘાડાઓ ચલાવ્યા, તેમાં પૂજ્ય દેવજી સ્વામીના આઠકોટિ મોટી પક્ષની હકીકત આગળ જોઇ ગયા

બીજા શિષ્ય જસરાજજી સ્વામીનો સંઘાડો આઠકોટિ નાની પક્ષને નામે ઓળખાયો.

પૂજ્ય જસરાજજી સ્વામી પછી પુજ્ય વસ્તાજી સ્વામી અને પૂજ્ય નથુજી સ્વામી પાટે આવ્યા

પૂજ્ય હંસરાજજી સ્વામી

સં. ૧૯૦૩મા પૂજ્ય નથુજી સ્વામી પાસે પૂજ્ય હંસરાજજી સ્વામીએ કચ્છ માંડવીમા દીક્ષા લીધી.

તેમણે કચ્છમાંથી વિહાર કરી, રણ પાર કરી, ગોંડળ જઇ શ્રી પુંજાજી સ્વામી પાસે શાસ્ત્રનો અભ્યાસ કર્યો હતો સં. ૧૯૧૬ મા તેઓ કચ્છ પાછા ર્ક્યા અને શુદ્ધ જિનમાર્ગ ધર્મની પ્રરૂપણા કરી.

તેમણે ઘણા ઉપસર્ગો તથા પરીસહો સમભાવે સહન ર્ક્યા

સં ૧૯૩૫ના ભાદરવા વદ ૦))ના રોજ કચ્છ વડાલા ગામે તેઓ સ્વર્ગે સિધાવ્યા.

પૂજ્ય શ્રી વ્રીજપાળજી સ્વામી

પૂજ્ય શ્રી હંસરાજજી સ્વામીની પાટે પૂજ્ય શ્રી વ્રીજપાળજી સ્વામી થયા.

તેમણે બાળ બ્રહ્મચારીપણે સં. ૧૯૧૯ માં દીક્ષા લીધી. સં. ૧૯૩૫ માં તેમને પૂજ્ય પદવી આપવામા આવી. તેઓ મહાવૈરાગ્યવાન હતા.

સં. ૧૯૫૭ના મહા સુદ ૧૨ કે ૧૩ ના રોજ તેઓ કાળધર્મ પામ્યા

પૂજ્ય શ્રી ડુગરશી સ્વામી

પૂજ્યશ્રી વ્રીજપાળજી સ્વામીની પાટે તેમના ગુરૂ ભાઇ ડુંગરશી સ્વામી આવ્યા.

તેઓ પણ બાળબ્રહ્મચારી હતા, અને મહાવૈરાગી હતા. તેમણે કચ્છ વડાલા મુકામે સં. ૧૯૩૨ ના કારતક વદ ૩ ના રોજ દીક્ષા લીધી હતી.

સં ૧૯૯૯ નાં અસાડ વદ ૧૪ના રોજ તેઓ સ્વર્ગે સિધાવ્યા.

પૂજ્ય શ્રી શામજી સ્વામી

પૂજ્ય શ્રી ડુંગરશી સ્વામી પછી પૂજ્ય શ્રી શામજી સ્વામી આચાર્ય પદારૂઢ થયા.

તેઓ સં. ૨૦૧૦ માં ૬૭ વર્ષનો સંયમ પાળી કચ્છ સાડાઉમાં કાળધર્મ પામ્યા.

પૂજ્ય શ્રી લાલજી સ્વામી

પૂજ્ય શ્રી શામજી સ્વામીની પાટે પૂજ્ય શ્રી લાલજી સ્વામી આવ્યા. તેમણે સં. ૧૯૭૨ મા દીક્ષા લીધી હતી.

આજે આ સંપ્રદાયમાં ૧૯ સાધુ મુનિરાજો અને ૨૮ મહાસતીજીઓ બીરાજે છે.

આ બધા ઉપર પૂજ્ય શ્રી લાલજી સ્વામીનુ શાસન છે. આ સંપ્રદાયનો એક એવો નિયમ છે કે ગુરૂની હયાતી દરમ્યાન શિષ્યો પોતાના અલગ શિષ્યો બનાવી શકતા નથી, જેથી સંપ્રદાયના ભાગલા પડી નવા ફણગા ફુટવાનો સંભવ ઓછો રહે અને સમાચારીમા પણ સામ્ય જળવાય છે.

શ્રી શાસન ઉદ્ધારક પરમ પ્રભાવક પુજ્ય આચાર્ય મહારાજશ્રી અજરામરજી સ્વામીના આજ્ઞાનુવર્તિ સાધુ, સાધ્વીજીઓની નામાવલી તેમજ જન્મતિથિ, દિક્ષાદાન વિગેરેનું પત્રક

ક્રમાંક	નામ	જન્મસ્થળ	જન્મસાલ તિથિ	દિક્ષા ગ્રામ	દિક્ષાદાન
૧	પુજ્ય સાહેબ શ્રી ધનજી સ્વામી	લીંબડી (સૌરાષ્ટ્ર)	વિ. સ ૧૯૩૩ના આસો શુ ૮	લીંબડી (સૌરાષ્ટ્ર)	સં ૧૯૪૬ના વૈશાખ શુ ૧૩ શુક્રવાર
૨	બહુશ્રુત તપસ્વી શ્રી શામજી સ્વામી	સુઇ કચ્છ વાગડ	વિ સં ૧૯૩૪ના મહા શુ ૧૧	ચંદીયા (કચ્છ)	સ ૧૯૫૦ના વૈશાખ શુ ૧૦ સોમવાર
૩	પંડિત શ્રી હીરાચંદજી સ્વામી	ભચાઉ (કચ્છ)	વિ. સ ૧૯૩૭	વાકાનેર (સૌરાષ્ટ્ર)	સં. ૧૯૫૩ના મહા વ. ૧૩ ગુરૂવાર
૪	પ્ર. વ. પં. કવિવર્ય શ્રી નાનચંદજી સ્વામી	સાયલા (સૌરાષ્ટ્ર)	વિ. સં ૧૯૩૩ના માગ. શુ ૧	અંજાર (કચ્છ)	સ ૧૯૫૭ના ફાગણ શુ ૩
૫	સદ્વકતા મહાનંદી શ્રી છોટાલાલજી સ્વામી	લીંબડી (સૌરાષ્ટ્ર)	વિ. સ ૧૯૪૪ના ભાદ. શુ ૧૫	અમદાવાદ (ગુજરાત)	સ ૧૯૫૫ના જેઠ શુ. ૩ શુક્રવાર
૬	વિનયમૂર્તિ શ્રી લક્ષ્મીચંદજી સ્વામી	શીહાણી (સૌરાષ્ટ્ર)	વિ સં ૧૯૪૨	લીંબડી (સૌરાષ્ટ્ર)	સં ૧૯૫૯ના વૈશાખ વ ૩
૭	શાતમુનિશ્રી રૂપચંદજી સ્વામી	ભચાઉ (કચ્છ)	વિ સં ૧૯૪૪ના મહા વ ૭	ભચાઉ (કચ્છ)	સ ૧૯૫૯ના ફાગણ શુ ૩ ગુરૂવાર
૮	મહારાજશ્રી ચુનીલાલજી સ્વામી	સજ્જનપર (મોરબી પાસે)	વિ સં ૧૯૬૧, ઇ સ. ૧૯૦૫	લીંબડી (સૌરાષ્ટ્ર)	સ ૧૯૮૪ના માગશર શુ ૬ બુધવાર
૯	મહારાજશ્રી ડુંગરસીહજી સ્વામી	ભોરારા (કચ્છ)	વિ. સ ૧૯૫૫ના ભાદ શુ ૨	ભોરારા (કચ્છ)	સ. ૧૯૮૫ના જેઠ શુ ૮ શુક્રવાર
૧૦	મહારાજશ્રી નાગજી સ્વામી	ભચાઉ (કચ્છ)	વિ. સ ૧૯૩૬ના મહા શુ ..	ગુંદાળા (કચ્છ)	સં. ૧૯૮૬ના માગશર શુ ૩ બુધવાર
૧૧	મહારાજશ્રી નવલચંદજી સ્વામી	ભચાઉ (કચ્છ)	વિ. સ. ૧૯૭૩ના અશાઢ શુ ૧૩	ગુંદાળા (કચ્છ)	સ. ૧૯૮૬ના માગશર શુ ૩ બુધવાર
૧૨	મહારાજશ્રી કેવળચંદજી સ્વામી	ભચાઉ (કચ્છ)	વિ. સ ૧૯૭૪ના કાર્તિક શુ ૧૫	ભચાઉ (કચ્છ)	સં ૧૯૯૨ના મહા શુ ૧૪ ગુરૂવાર
૧૩	મહારાજશ્રી માધવસીહજી સ્વામી	ગોંડલ (સૌરાષ્ટ્ર)	વિ. સં. ૧૯૭૮ના અશાઢ વ ૫	લીંબડી (સૌરાષ્ટ્ર)	સં ૧૯૯૯ના વૈશાખ શુ ૫ રવિવાર
૧૪	મહારાજશ્રી જયન્તીલાલજી સ્વામી	વઢવાણ શહેર (સૌરાષ્ટ્ર)	વિ. સં ૧૯૮૪ના ફાગણ વ. ૧૧	માટુંગા (મુંબઇ)	સ ૨૦૦૩ના મહા શુ ૧૫
૧૫	મહારાજશ્રી ધનંજયજી સ્વામી	ગુંદાળા (કચ્છ)	વિ સ ૧૯૮૫ અનુમાન	લીંબડી (સૌરાષ્ટ્ર)	સ ૨૦૦૯ના મહા શુ ૫
૧૬	મહારાજશ્રી કીશોરચંદજી સ્વામી	સમાઘોઘા (કચ્છ)	વિ સં ૧૯૮૮ના ભાદ. વ. ૮	મોરબી (સૌરાષ્ટ્ર)	સં ૨૦૦૯ના ફાગણ વ ૭ શનીવાર
૧૭	મહારાજશ્રી નરસીહજી સ્વામી	લાકડીયા (કચ્છ)	વિ. સં ૧૯૮૦	ખીરસ્રા (કચ્છ)	સં ૨૦૧૦ના મહા શુ ૧૦

લીંબડી સંપ્રદાયના સાધ્વીજીઓ વર્તમાનકાળે સૌરાષ્ટ્રમાં વિચરતાઓની હકીકત

ક્રમાંક	નામ	જન્મસ્થળ	જન્મસાલ તિથિ	દિક્ષા ગ્રામ	દિક્ષાદાન
૧	મહાસતી બા પ્ર. શીવકુંવરબાઇ સ્વામી	લોય (સૌરાષ્ટ્ર)	વિ. સં ૧૯૩૬ના મહા વ. ૫	વઢવાણ શહેર	સં ૧૯૫૬ના મહા વદી ૧૩
૨	મહાસતી લક્ષ્મીબાઇ સ્વામી	ખંભાલાવ (સૌરાષ્ટ્ર)	વિ સં ૧૯૪૮	ચૈદરા	સં ૧૯૫૭ના વૈશાખ વદી ૬
૩	મહાસતી કસુંબાબાઇ સ્વામી	મોટુ કાલાવડ (સૌરાષ્ટ્ર)	વિ સ ૧૯૪૪ના મહા	મોરબી	સ ૧૯૬૧ના મહા શુદી ૪
૪	મહાસતી મોતીબાઇ સ્વામી	મજેવડી (સૌરાષ્ટ્ર)	વિ. સં. ૧૯૪૩	જેતપુર	સં ૧૯૭૦ના જેઠ વદી ૧૦
૫	મહાસતી પારવતીબાઇ સ્વામી	લીંબડી (સૌરાષ્ટ્ર)	વિ. સ ૧૯૫૫ના આસો શુ ૮	લીંબડી	સ ૧૯૭૨ના પોષ વદી ૮
૬	મહાસતી કપુરબાઇ સ્વામી	મોરબી (સૌરાષ્ટ્ર)	વિ. સં ૧૯૫૪	લીંબડી	સં ૧૯૭૧ના વૈશાખ શુદી ૭
૭	મહાસતી હેમકોરબાઇ સ્વામી	જુનાગઢ (સૌરાષ્ટ્ર)	વિ સ ૧૯૫૨	જેતપુર	સ ૧૯૮૦ના વૈશાખ શુદી ૧૧
૮	મહાસતી પ્રભાકુંવરબાઇ સ્વામી	સરસાઇ (મીમ્પ્રદેશ)	વિ સં ૧૯૬૪ના ચૈત્ર શુ ૧	મોરબી	સ ૧૯૮૨ના વૈશાખ શુ ૩ શુક્રવાર
૯	મહાસતી સમજુબાઇ સ્વામી	વીંછીયા (સૌરાષ્ટ્ર)	વિ સ ૧૯૫૮ના ફાગણ વ ૨	વીંછીયા	સ ૧૯૮૬ના વૈશાખ શુદી ૧૧
૧૦	મહાસતી રંભાબાઇ સ્વામી	પોરબંદર (સૌરાષ્ટ્ર)	વિ. સ ૧૯૫૫	વીરમગામ	સ ૧૯૮૮ના ચૈત્ર શુદી ૧૫

ક્રમ	નામ	જન્મસ્થળ	જન્મ તિથિ	દીક્ષા સ્થળ	દીક્ષા તિથિ
૧૧	મહાસતી ભાનુમતીબાઇ સ્વામી	લાકડીઆ (કચ્છ)	વિ સ ૧૯૬૮	વઢવાણ શહેર	સ ૧૯૯૮ના ફાગણ વદી ૫
૧૨	મહાસતી ચંદનબાઇ સ્વામી	ગુજરવદી (ધ્રાંગધ્રા)	વિ સ. ૧૯૭૭ના પોષ શુદી ૪	થાનગઢ	સ ૧૯૯૮ના ફાગણ વ ૬ બુધવાર
૧૩	મહાસતી હીરાબાઇ સ્વામી	બોટાદ (સૌરાષ્ટ્ર)	વિ સ ૧૯૭૩	થાનગઢ	સ. ૨૦૦૩ના માગશર વદી ૪
૧૪	મહાસતી ચંપાબાઇ સ્વામી	લીંબડી (સૌરાષ્ટ્ર)	વિ. સ ૧૯૬૩ના અશાઢ વ ૧૦	ચોટીલા	સ ૨૦૦૩ના વૈશાખ શુ ૫ શુક્રવાર
૧૫	મહાસતી બા. બ્ર પુષ્પાબાઇ સ્વામી	થાનગઢ (સૌરાષ્ટ્ર)	વિ સ ૧૯૮૪ના આસો શુ. ૧૧	સાયલા	સ ૨૦૦૬ના ચૈત્ર શુદી ૭
૧૬	મહાસતી બા. બ્ર હંસાકુમારીબાઇ સ્વામી	મોરબી (સૌરાષ્ટ્ર)		મોરબી	સ ૨૦૦૯ના ફાગણ

લીંબડી સંપ્રદાયના મહાસતીજી ભાણબાઇ સ્વામી, મહાસતીજી પુરીબાઇ સ્વામી, મહાસતીજી કેસરીબાઇ સ્વામી, તેઓશ્રીનો પરિવાર કચ્છમાં વિચરે છે તેઓની હકીકત

ક્રમ	નામ	જન્મસ્થળ	જન્મ તિથિ	દીક્ષા સ્થળ	દીક્ષા તિથિ
૧	મહાસતી કુંવરબાઇ સ્વામી	ગુંદાળા (કચ્છ)	વિ સ ૧૯૩૬	ગુંદાળા (કચ્છ)	સં ૧૯૫૫ના વૈશાખ શુદી ૫
૨	મહાસતી મોટા રતનબાઇ સ્વામી	મેરાઉ (કચ્છ)	વિ સ ૧૯૪૨ના કાર્તિક શુ ૧૩	માંડવી (કચ્છ)	સં ૧૯૫૭ના પોષ શુદી ૫
૩	મહાસતી મોટા માણેકબાઇ સ્વામી	બીદડા (કચ્છ)	વિ સ ૧૯૩૮ના આસો શુ ૫	તુંબડી (કચ્છ)	સ ૧૯૬૦ના માહા શુદી ૫
૪	મહાસતી વેલબાઇ સ્વામી	ગુંદાળા (કચ્છ)	વિ સં ૧૯૪૫	ગુંદાળા (કચ્છ)	સ ૧૯૬૭ના માહા શુદી ૧૦
૫	મહાસતી દીવાળીબાઇ સ્વામી	સમાઘોઘા (કચ્છ)	વિ સ ૧૯૪૬ના શ્રાવણ શુ ૭	કપાય (કચ્છ)	સ ૧૯૬૮ના મહા શુદી ૨ ગુરૂવાર
૬	મહાસતી સુંદરબાઇ સ્વામી	દેશલપર (કચ્છ)	વિ. સં ૧૯૫૨ના મહા શુ ૫	દેશલપર (કચ્છ)	સં ૧૯૬૮ના વૈશાખ સુદી ૮
૭	મહાસતી માણેકબાઇ સ્વામી	મુંદ્રા (કચ્છ)	વિ સ ૧૯૪૭ના ભાદરવા વ. ૫	માનકુવા (કચ્છ)	સ ૧૯૭૧ના માહા શુદી ૧૧ મંગળવાર
૮	મહાસતી મેઘબાઇ સ્વામી	સમાઘોઘા (કચ્છ)	વિ સ ૧૯૫૩	સમાઘોઘા (કચ્છ)	સ ૧૯૭૩ના વૈશાખ શુદી ૧૧
૯	મહાસતી રતનબાઇ સ્વામી	માંડવી (કચ્છ)	વિ સં ૧૯૪૩	તુંબડી (કચ્છ)	સ ૧૯૭૬ના વૈશાખ શુદી ૪ ગુરૂવાર
૧૦	મહાસતી ઇંદ્રાબાઇ સ્વામી	ભુજ (કચ્છ)	વિ સં ૧૯૫૬ના ફાગણ વ ૮	ભુજ (કચ્છ)	સ ૧૯૭૭ના માહા શુદી ૧૧
૧૧	મહાસતી દેવકુંવરબાઇ સ્વામી	ભોરારા (કચ્છ)	વિ સં ૧૯૫૩	લુણી (કચ્છ)	સં. ૧૯૭૮ના વૈશાખ શુદી ૩ શનીવાર
૧૨	મહાસતી બા બ્ર ગુલાબબાઇ સ્વામી	લાકડીયા (કચ્છ)	વિ સં ૧૯૬૧ના ફાગણ શુ ૫	લાકડીયા (કચ્છ)	સ ૧૯૮૩ના વૈશાખ શુદી ૮ રવિવાર
૧૩	મહાસતી ઝવેરબાઇ સ્વામી	ખારોઇ (કચ્છ)	વિ સ ૧૯૬૪ના જેઠ શુ ૪	ખારોઇ (કચ્છ)	સ ૧૯૮૩ના જેઠ વદી ૨
૧૪	મહાસતી જયતીબાઇ સ્વામી	રાપર (કચ્છ)	વિ સં. ૧૯૪૪ના કાર્તિક શુ ૨	ભેલા (કચ્છ–વાગડ)	સ ૧૯૮૭ના વૈશાખ શુદી ૧૩ ગુરૂવાર
૧૫	મહાસતી હરીબાઇ સ્વામી	લાકડીયા (કચ્છ)	વિ સ ૧૯૬૩ના જેઠ શુ ૧	લાકડીયા (કચ્છ)	સ ૧૯૮૮ના કારતક વદી ૨
૧૬	મહાસતી મણીબાઇ સ્વામી	રામાણીયા (કચ્છ)	વિ સં ૧૯૭૬ના માગશર શુ ૬	રામાણીયા (કચ્છ)	સ ૧૯૯૫ના વૈશાખ શુદી ૩ શનીવાર
૧૭	મહાસતી બા બ્ર રૂક્ષ્માણીબાઇ સ્વામી	ભુજ (કચ્છ)	વિ સં ૧૯૮૦	ભુજ (કચ્છ)	સ ૧૯૯૭ના માગશર શુદી ૬
૧૮	મહાસતી વીમળાબાઇ સ્વામી	લાકડીયા (કચ્છ)	વિ સ ૧૯૭૮	લાકડીયા (કચ્છ)	સ ૧૯૯૯ના ફાગણ શુદી ૨
૧૯	મહાસતી ધનવંતીબાઇ સ્વામી	ભુજ (કચ્છ)	વિ. સં ૧૯૮૦ના ફાગણ વ ૪	તુંબડી (કચ્છ)	સ ૨૦૦૦ના વૈશાખ શુદી ૧૧
૨૦	મહાસતી બા બ્ર સુરજબાઇ સ્વામી	લાકડીયા (કચ્છ)	વિ સ ૧૯૮૮ના જેઠ શુ ૯	લાકડીયા (કચ્છ)	સ ૨૦૦૩ના માહા શુદી ૩
૨૧	મહાસતી બા બ્ર ઉજવળબાઇ સ્વામી	ગુંદાળા (કચ્છ)	વિ સ ૧૯૮૫ના ફાગણ	ગુંદાળા (કચ્છ)	સ ૨૦૦૫ના માહા શુદી ૫
૨૨	મહાસતી ચંદ્રાવતીબાઇ સ્વામી	માંડવી (કચ્છ)	વિ સ ૧૯૮૫(કચ્છી)ના શ્રાવણ	માંડવી (કચ્છ)	સ ૨૦૦૫ના માહા વદી ૫
૨૩	મહાસતી દમયંતીબાઇ સ્વામી	રતાડીયા (કચ્છ)	વિ સ ૧૯૮૭ના મહા શુ ૨	સમાઘોઘા (કચ્છ)	સં ૨૦૦૯ના માગશર શુદી ૧૧ ગુરૂવાર
૨૪	મહાસતી કલાવતીબાઇ સ્વામી	મુંબાઇ	વિ સ ૧૯૮૭ના ચૈત્ર શુ ૭	સમાઘોઘા (કચ્છ)	સ ,,
૨૫	મહાસતી બા બ્ર પ્રભાવતીબાઇ સ્વામી	હેન્ઝલા (બર્મા)	વિ. સ ૧૯૮૬ તા ૧–૧–૩૧	સમાઘોઘા (કચ્છ)	સ ૨૦૦૯ના માહા વદી ૫
૨૬	મહાસતી પ્રભાવતીબાઇ સ્વામી	ગુંદાળા (કચ્છ)		જેતપુર (સૌરાષ્ટ્ર)	સં ,,
૨૭	મહાસતી મંજુલાબાઇ સ્વામી	જીસડા (કચ્છ)		જીસડા (કચ્છ)	સ ૨૦૧૦ના માહા શુદી ૧૦
૨૮	મહાસતી મુકતાબાઇ સ્વામી	લાકડીયા (કચ્છ)		લાકડીયા (કચ્છ)	સ ૨૦૧૦ના ફાગણ

લીંબડી સંપ્રદાયના ચોમાસી ક્ષેત્રોમાં પુસ્તક ભંડારો ચાલે છે તેનું યાદીપત્રક

ક્રમાંક	નામ	ગામ	ક્રમાંક	નામ	ગામ
૧	પૂજ્યશ્રી અજરામરજીસ્વામી પુસ્તક ભંડાર	લીંબડી	૩૧	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન પુસ્તક ભંડાર સગરામપુરા	સુરત
૨	પૂજ્યશ્રી લાધાજીસ્વામી પુસ્તકાલય	લીંબડી	૩૨	શતાવધાની પંડિત શ્રી રત્નચંદ્રજી પુસ્તક ભંડાર	કંઠોર
૩	પૂજ્યશ્રી દેવચંદ્રજીસ્વામી પુસ્તકાલય	લીંબડી	૩૩	પૂજ્યશ્રી લવજીસ્વામી લાયબ્રેરી	ચોટીલા
૪	શેઠ નાનજી ડુંગરશી જ્ઞાનભંડાર	લીંબડી	૩૪	શ્રી કપુરચંદ્રજી પુસ્તકાલય	,,
૫	પંડિતશ્રી ઉત્તમચંદ્રજી પુસ્તક ભંડાર	મોરબી	૩૫	પૂજ્યશ્રી લાધાજીસ્વામી પુસ્તકાલય	સુદામડા
૬	શ્રી જૈન જ્ઞાનવર્ધક લાયબ્રેરી	મોરબી	૩૬	પૂજ્યશ્રી લવજીસ્વામી લાયબ્રેરી	ધાંધલપુર
૭	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન પુસ્તકાલય	મોરબી	૩૭	પૂજ્યશ્રી અજરામરજીસ્વામી પુસ્તક ભંડાર	વીંછિયા
૮	પૂજ્યશ્રી અજરામરજીસ્વામી પૌષધશાળા પુસ્તકાલય	રાજકોટ	૩૮	પૂજ્યશ્રી દીપચંદ્રજી પુસ્તકાલય	પાળિયાદ
૯	પૂજ્યશ્રી ગુલાબવીર પુસ્તક ભંડાર	થાનગઢ	૩૯	પંડિત શ્રી મોટા જીવણજી પુસ્તક ભંડાર	,,
૧૦	શ્રી ઉત્તમચંદ્રજી પુસ્તકાલય	થાનગઢ	૪૦	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન પુસ્તક ભંડાર	ચૂડા
૧૧	પૂજ્યશ્રી અજરામરજીસ્વામી પુસ્તક ભંડાર	માંડવી–કચ્છ	૪૧	પૂજ્યશ્રી લવજીસ્વામી લાયબ્રેરી	ચૂડા
૧૨	સદર	ગુંદાળા–કચ્છ	૪૨	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન પુસ્તક ભંડાર	લખતર
૧૩	પૂજ્યશ્રી ગુલાબચંદ્રજી પુસ્તકાલય	ભોરારા–કચ્છ	૪૩	શ્રી સ્થાનકવાસી છ કોટી જૈન સંઘ પુસ્તક ભંડાર	વીરમગામ
૧૪	પૂજ્યશ્રી દેવચંદ્રજી પુસ્તકાલય	સમાઘોઘા–કચ્છ	૪૪	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન પુસ્તકાલય	સરા
૧૫	સદર	મુંદ્રા–કચ્છ	૪૫	પૂજ્યશ્રી અજરામરજીસ્વામી પુસ્તક ભંડાર	તુંબડી–કચ્છ
૧૬	શ્રી મંગળ જૈન પુસ્તક ભંડાર	લાકડિયા–કચ્છ વાગડ	૪૬	પૂજ્યશ્રી લાધાજીસ્વામી પુસ્તક ભંડાર	રતાડિયા–કચ્છ
૧૭	શતાવધાની પંડિતશ્રી રત્નચંદ્રજી જ્ઞાનમંદિર	સુરેન્દ્રનગર	૪૭	શ્રી વીર જ્ઞાન ભંડાર	પ્રાગપુર–કચ્છ
૧૮	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન પુસ્તક ભંડાર	અમદાવાદ	૪૮	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન પુસ્તક ભંડાર	રોહા–કચ્છ
૧૯	પૂજ્ય શ્રી અજરામરજી પુસ્તકાલય	વાંકાનેર	૪૯	શ્રી મંગળ જૈન પુસ્તક ભંડાર	ત્રંબૌ–કચ્છ વાગડ
૨૦	પંડિત શ્રી ઉત્તમચંદ્રજી પુસ્તક ભંડાર	,,	૫૦	શ્રી મંગળ જૈન પુસ્તક ભંડાર	શામખીઆરી કચ્છ વાગડ
૨૧	પૂજ્યશ્રી અજરામરજીસ્વામી પુસ્તકાલય	જેતપુર			
૨૨	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન પુસ્તક ભંડાર	જૂનાગઢ	૫૧	શ્રી વીર જ્ઞાન ભંડાર	આધોઇ–કચ્છ વાગડ
૨૩	પૂજ્યશ્રી દેવચંદ્રજી પુસ્તકાલય	સાયલા	૫૨	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન પુસ્તક ભંડાર	સુવઇ–કચ્છ વાગડ
૨૪	પૂજ્યશ્રી દીપચંદ્રજી પુસ્તક ભંડાર	ભુજ–કચ્છ	૫૩	શ્રી વીર જ્ઞાન ભંડાર	ખારોઇ–કચ્છ વાગડ
૨૫	પૂજ્યશ્રી લવજીસ્વામી પુસ્તકાલય	અંજાર–કચ્છ	૫૪	પૂજ્યશ્રી અજરામરજીસ્વામી પુસ્તક ભંડાર	મનફરા–કચ્છ વાગડ
૨૬	પૂજ્યશ્રી દેવચંદ્રજી પુસ્તકાલય	રામાણિયા–કચ્છ	૫૫	પૂજ્યશ્રી લવજીસ્વામી લાયબ્રેરી	રામપરા
૨૭	શ્રી સુંદર પુસ્તકાલય	બીદડા–કચ્છ	૫૬	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન પુસ્તક ભંડાર	ધોલેરા
૨૮	શ્રી મંગળ જૈન પુસ્તક ભંડાર	રાપર–કચ્છ વાગડ	૫૭	પૂજ્યશ્રી લવજીસ્વામી લાયબ્રેરી	સેજકપુર
૨૯	સદર	રવ–કચ્છ વાગડ	૫૮	શ્રી નાનચંદ્રજી પુસ્તકાલય	કથારિયા
૩૦	શ્રી વીરજ્ઞાન ભંડાર	ભચાઉ–કચ્છ વાગડ	૫૯	પૂજ્યશ્રી લવજીસ્વામી લાયબ્રેરી	ખાંભડાપર

ક્રમાંક	નામ	ગામ
૬૦	શ્રી પાનચંદજી પુસ્તકાલય	ચણાકા
૬૧	પૂજ્ય શ્રી લવજીસ્વામી લાઇબ્રેરી	જામ–કંડોરણા
૬૨	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન પુસ્તક ભંડાર	જામનગર
૬૩	પૂજ્ય શ્રી ગુલાબવીર પુસ્તક ભંડાર	નેકનામ
૬૪	શ્રી જૈન જ્ઞાનવર્ધક લાયબ્રેરી	સુરેન્દ્રનગર
૬૫	નાનાલાલ પંડિત શ્રી રત્નચંદ્રજી બાલપુસ્તકાલય	વઢવાણ શહેર
૬૬	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન પુસ્તક ભંડાર	અમદાવાદ
૬૭	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન પુસ્તક ભંડાર	જેસડ–કચ્છ
૬૮	પૂજ્ય શ્રી અજરામરજીસ્વામી પુસ્તક ભંડાર	કચ્છ
૬૯	પૂજ્ય શ્રી અજરામરજીસ્વામી પુસ્તક ભંડાર	ખેડોઇ–કચ્છ
૭૦	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન પુસ્તક ભંડાર	ગગોદર–કચ્છ વાગડ
૭૧	સદર	મથડા–કચ્છ
૭૨	પૂજ્ય શ્રી ગુલાબચંદ્રજીસ્વામી પુસ્તક ભંડાર	ભોરારા–કચ્છ
૭૩	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન પુસ્તક ભંડાર	જોરાવરનગર
૭૪	શ્રી મંગળ જૈન પુસ્તક ભંડાર	સઇ–કચ્છ વાગડ
૭૫	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન પુસ્તક ભંડાર	માનકુવા–કચ્છ
૭૬	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન પુસ્તક ભંડાર	ચંદિયા–કચ્છ

શ્રી લીંબડી સંપ્રદાયના નાનાં મોટાં કુલ ૧૨૬ ક્ષેત્રોનું લિસ્ટ

શ્રી ઝાલાવાડી ક્ષેત્રોનાં

ક્રમાંક	નામ
૧	લીંબડી
૨	ભલગામડા
૩	ચંકવાળિયા
૪	સાકળી
૫	કેરાળા
૬	વઢવાણ
૭	જોરાવરનગર
૮	સુરેન્દ્રનગર
૯	ઉમરડા
૧૦	ચોરવીરા
૧૧	થાનગઢ
૧૨	સરા
૧૩	ખોડુ
૧૪	કોઢ
૧૫	લખતર
૧૬	દેવળિયા
૧૭	તનસાણા
૧૮	તાવી
૧૯	નિંગાણી
૨૦	મોટા ટીંબલા
૨૧	જેડી
૨૨	ઝોબાળા
૨૩	ચૂડા
૨૪	સુદામડા
૨૫	સેજકપર
૨૬	ખીટલા
૨૭	પ્રાગપર
૨૮	પીપરાળી
૨૯	વીંછિયા
૩૦	આણંદપર
૩૧	ચોટીલા
૩૨	ડોળિયા
૩૩	સાયલા
૩૪	મુંજપર
૩૫	રામપરા
૩૬	ટુવા
૩૭	ગુંદીઆળી
૩૮	વરતડી
૩૯	રાળકા

ભાલનાં ક્ષેત્રોનાં

ક્રમાંક	નામ
૧	પાણસીણા
૨	ખભલાવ
૩	મોટા ત્રાડિયા
૪	ઝાંઝરકા
૫	રંગપુર
૬	ગોલેરા
૭	અડવાળ
૮	હડાળા
૯	કમાલપર
૧૦	દેવપરા
૧૧	મોજીદડ
૧૨	કથારિયા
૧૩	ખડિયા

કાઠીયાવાડનાં ક્ષેત્રોનાં

ક્રમાંક	નામ
૧	જેતપર
૨	ગાણુાક
૩	જૂનાગઢ
૪	મોરબી
૫	જામ–કંડોરણા
૬	કોટડા
૭	જામનગર

ગુજરાતનાં ક્ષેત્રોનાં

ક્રમાંક	નામ
૧	સુરત
૨	કડોર
૩	અમદાવાદ
૪	મોરૈયા
૫	વિરમગામ

કચ્છનાં ક્ષેત્રોનાં નામ

ક્રમાંક	નામ
૧	અંજાર
૨	ભુવડ
૩	ખેડોઇ
૪	મથડા
૫	ચાંદરડા
૬	ચંદીઆ
૭	ભુજનગર
૮	માનકુવા
૯	મંજલ (ભગવાણા)
૧૦	ચૂનડી
૧૧	પુનડી
૧૨	ડુમરી
૧૩	રામાણિયા
૧૪	લાખાપર
૧૫	ટોડા
૧૬	ભોરારા
૧૭	ગુંદાલા
૧૮	રતાડિયે
૧૯	કુંદરોડી
૨૦	મુંદ્રા બંદર
૨૧	સમાઘોઘા
૨૨	ભુજપર
૨૩	મોટી ખાખર
૨૪	બીદડા
૨૫	કોડાઇ
૨૬	દ્રોણ
૨૭	માંડવી બંદર

કચ્છ વાગડનાં ક્ષેત્રોનાં નામ

ક્રમાંક	નામ
૧	પેથાપુર
૨	સરકારપર
૩	થોરીઆળી
૪	ગાગોદર
૫	ગવલખા
૬	લાકડિયા
૭	ગામખીઆરી
૮	આધોઇ
૯	હળરા
૧૦	કકરવા
૧૧	બાદરગઢ
૧૨	સુઇ
૧૩	રાપર–
૧૪	નંદાસર
૧૫	સલાડી
૧૬	રવ
૧૭	ત્રંબૌ
૧૮	જેસડા
૧૯	સુવઇ
૨૦	ગામવાવ
૨૧	ખેંગારપર
૨૨	વણોઇ
૨૩	ભસેડિયા
૨૪	કણખોઇ
૨૫	મનફરા
૨૬	ખારોઇ
૨૭	શીકરા
૨૮	ભચાઉ

મચ્છુકાંઠાનાં ક્ષેત્રોનાં

ક્રમાંક	નામ
૧	વાંકાનેર
૨	તીથવા
૩	લજાઇ
૪	વીરપુર
૫	મોરબી
૬	બાનપર
૭	માળિયા

સંઘવી ઉપાશ્રયના સાધુમુનિરાજોની નામાવલી

લીંબડી નાનો સંપ્રદાય

	જન્મ ગામ	દીક્ષા ગામ
(૧) પુજ્યશ્રી ત્રીભોવનજી મ. સાહેબ ૧૬ વર્ષની ઉમરે દીક્ષા લીધી હાલમાં ઉ. વ ૭૬ છે.	દીક્ષર દાણાવાડા,	રણુતીટીકર
(૨) ધરમસિહજી મહારાજ સાહેબ ૩૦ વર્ષની ઉંમરે દીક્ષા લીધી	મોટુકા	ધોલેરા
(૩) તપસ્વીશ્રી વૃજલાલજી મ. સાહેબ જન્મ ૧૯૭૭ જેઠ શુદ ૪	વેજલકા	લીંબડી
(૪) પંડિત રત્ન મહારાજશ્રી કેશવલાલજી મહારાજ સાહેબ.	દેશળપુર કચ્છ જન્મ ૧૯૬૪	દેશળપુર કચ્છ સં. ૧૯૮૧
(૫) તપસ્વી મહારાજશ્રી રામજી મહારાજ	ખારોઇ	ધ્રાંગધ્રા સ. ૧૯૯૫
(૬) કેવળદાસજી મહારાજ સાહેબ.	વાવડી સ. ૧૯૮૫ મહાવદ ૧૧	જોરાવરનગર સ. ૨૦૦૦ વૈ. વ. ૧૧
(૭) મનહરલાલજી મહારાજ સાહેબ	માંડવી કચ્છ	લિંબડી સ. ૨૦૦૩ મહા શુદ ૫.

મહાસતીજી સાહેબોના નામો

		જન્મ ગામ	દીક્ષા ગામ
(૧)	મ. સ શ્રી. મણીબાઇસ્વામી મોટા.		
(૨)	,, સુંદરબાઇ સ્વામી	લખતર	
(૩)	,, ઝબકબાઇ સ્વામી		
(૪)	,, ચંચળબાઇ સ્વામી	ધોલેરા	
(૫)	,, લીલાવંતીબાઇ સ્વામી	વાંકાનેર	વાંકાનેર ૧૯૯૨
(૬)	,, મોંઘીબાઇ સ્વામી		
(૭)	,, મંજુલાબાઇ સ્વામી	નાગનેશ	વઢવાણ સીટી ૧૯૯૮
(૮)	,, મુક્તાબાઇ સ્વામી	થાન	થાન ૧૯૯૮
(૯)	,, જસીબાઇ સ્વામી	વઢવાણ સીટી	વઢવાણ સીટી ૨૦૦૧
(૧૦)	,, ચંદનાબાઇ સ્વામી	વઢવાણ કેમ્પ	વઢવાણ કેમ્પ ૨૦૦૭
(૧૧)	,, તારાબાઇ સ્વામી	વઢવાણ સીટી	વઢવાણ સીટી ૨૦૦૩
(૧૨)	,, કમળાબાઇ સ્વામી	,,	બોટાદ ૨૦૦૪
(૧૩)	,, દયાબાઇ સ્વામી	,,	વઢવાણ ૨૦૦૮
(૧૪)	,, કંચનબાઇ સ્વામી	વાંકાનેર	વાંકાનેર ૨૦૦૮

સંઘાણી ઉપાશ્રય

સંપ્રદાયના મહાસતીજીની નામાવલી

			જન્મ ગામ	દીક્ષા ગામ	સંવત
(૧)	મહાસતીજી	ગલાલબાઇ સ્વામી	જાલીઆ	જાલીઆ	૧૯૫૭
(૨)	,,	કસુંબાબાઇ સ્વામી	રાજકોટ	ગોંડલ	
(૩)	,,	હેમકુંવરબાઇ સ્વામી	મોરબી	રાજકોટ	
(૪)	,,	દીવાળીબાઇ સ્વામી	,,	મોરબી	
(૫)	,,	મોતીબાઇ સ્વામી	,,	વાકાનેર	
(૬)	,,	સુરજબાઇ સ્વામી	,,	હુવા	૧૯૭૪
(૭)	,,	રેવાકુંવરબાઇ સ્વામી મોટા	ધોરાજી	ધોરાજી	
(૮)	,,	રેવાકુંવરબાઇ નાના	ગોંડલ	ગોંડલ	
(૯)	,,	પ્રાણકુંવરબાઇ સ્વામી	મોરબી	રાજકોટ	૧૯૮૨
(૧૦)	,,	કાશીબાઇ સ્વામી	,,	મોરબી	
(૧૧)	,,	ચંપાબાઇ સ્વામી	ગોંડલ	ગોંડલ	
(૧૨)	,,	દુધીબાઇ સ્વામી	ટંકારા	ટંકારા	૧૯૯૫
(૧૩)	,,	બા. બ્ર. જયાબાઇ સ્વામી	,,	ગોંડલ	૧૯૯૬
(૧૪)	,,	બા. બ્ર. વિજયાબાઇ સ્વામી	,,	,,	,,
(૧૫)	બા. બ્ર.	કાન્તાબાઇ સ્વામી	,,	ટંકારા	૨૦૦૭
(૧૬)	બા. બ્ર	લીલાવતીબાઇ સ્વામી	ગોંડલ	ગોંડલ	૨૦૦૯

શ્રી લીંબડી સંપ્રદાયના ગાદીધર તથા આચાર્યોની નામાવલી

(૧) પૂજ્ય શ્રી ધરમદાસજીસ્વામી
(૨) ,, મુલચંદજીસ્વામી
(૩) ,, પચાણજીસ્વામી
(૪) ,, ઇચ્છાજીસ્વામી
(૫) ,, હીરાજીસ્વામી
(૬) ,, કાનજીસ્વામી
(૭) ,, અજરામરજીસ્વામી
(૮) ,, દેવરાજજીસ્વામી
(૯) ,, ભાણજીસ્વામી
(૧૦) ,, હરખચંદજીસ્વામી
(૧૧) ,, દેવજીસ્વામી
(૧૨) ,, ગોવિંદજીસ્વામી
(૧૩) ,, કાનજીસ્વામી
(૧૪) ,, નથુજીસ્વામી
(૧૫) ,, દીપચંદજીસ્વામી
(૧૬) ,, લાધાજીસ્વામી
(૧૭) ,, મેઘરાજજીસ્વામી
(૧૮) ,, દેવચંદજીસ્વામી
(૧૯) ,, લવજીસ્વામી
(૨૦) ,, ગુલાબચંદજીસ્વામી
(૨૧) ,, વર્તમાનકાળે બીરાજતા ધનજીસ્વામી

ગોંડળ મોટો સંપ્રદાય

પ્રાતઃસ્મરણીય પૂજ્ય શ્રી ૧૦૦૮ ડુંગરસિંહજી મહારાજના હાલ વિચરતા મુનીવરો તથા આર્યાજીઓની નામાવલી –

પૂજ્ય શ્રી ડુંગરસિંહજી સ્વામીએ ગોંડળ સંપ્રદાયની સંવત ૧૮૪૫માં સ્થાપના કરી અને ગોંડળને ગાદીનું ગામ સ્થાપ્યું. ત્યાર બાદ તેઓશ્રીની પાટે ઉત્તરોત્તર મહાપુરૂષો આચાર્યપદે આવ્યા. જેમાં ઘણાખરા પ્રતાપી તથા પ્રભાવશાળી હતા હાલમાં નીચે બતાવેલ નામાવલી મુજબ મુનિશ્રીઓ વીચરે છે.

મુનીવરો

૧. બા. બ્ર. પૂજ્ય શ્રી પુરૂષોત્તમજી મહારાજ દિક્ષા સંવત ૧૯૫૮ના વૈશાખ સુદ ૩ માંગરોળ મુકામે.
૨. મુનીશ્રી દેવરાજજી સ્વામી, દિક્ષા સંવત ૧૯૭૦ના કાર્તિક વદ ૪ ચેલા મુકામે.
૩. પૂજ્ય શ્રી બા. બ્ર પ્રાણલાલજી સ્વામી, દિક્ષા સંવત ૧૯૭૬ના ફાગણ વદ ૬ બગસરા મુકામે
૪. મુનીશ્રી વીરજીસ્વામી.
૫. મુનીશ્રી છગનલાલજીસ્વામી.
૬. મુનીશ્રી બા. બ્ર. મોટા રતિલાલજી સ્વામી.
૭. મુનીશ્રી બા. બ્ર. અમીચંદજી સ્વામી.
૮. મુનીશ્રી જગજીવનજી સ્વામી.
૯. મુનીશ્રી નાના રતિલાલજી સ્વામી.
૧૦. મુનીશ્રી બા બ્ર. જયતિલાલજી સ્વામી
૧૧. મુનીશ્રી જીવરાજજી સ્વામી.
૧૨. મુનીશ્રી બા. બ્ર. ગીરીષચંદ્રજી સ્વામી.
૧૩. મુનીશ્રી અમૃતલાલજી સ્વામી.

આર્યાજીઓ

૧. મહાસતીજી દુધીબાઇસ્વામી ઠા. ૩, અમૃતબાઇ સ્વામી, સમજુબાઇસ્વામી.
૨. મહાસતીજી રામકુંવરબાઇસ્વામી ઠા. ૩, હેમકુંવરબાઇ સ્વામી, મણીબાઇસ્વામી.
૩. મહાસતીજી વેણીબાઇસ્વામી ૧
૪ મહાસતીજી કુંવરબાઇસ્વામી ઠા. ૪, બા. બ્ર, ચંપાબાઇસ્વામી, બા. બ્ર નિર્મળાબાઇસ્વામી, બા. બ્ર ગુલાબબાઇસ્વામી.
૫. મહાસતીજી અંબાબાઇસ્વામી ઠા. ૩, સમરતબાઇ સ્વામી, લક્ષ્મીબાઇસ્વામી.
૬. મહાસતીજી મોતીબાઇ સ્વામી ઠા. ૬, સમરતબાઇ સ્વામી, બા બ્ર. ચંપાબાઇ સ્વામી, બા. બ્ર. પ્રાણકુંવરબાઇસ્વામી, અમૃતબાઇ સ્વામી, બા. બ્ર. લલિતાબાઇસ્વામી.
૭. મહાસતીજી મીઠીબાઇસ્વામી ઠા. ૪, બા. બ્ર. જયાકુંવરબાઇસ્વામી, બા બ્ર. શાન્તાબાઇસ્વામી, કંચનબાઇસ્વામી.
૮ મહાસતીજી મણીબાઇસ્વામી ઠા. ૪, પાર્વતીબાઇ સ્વામી, બા. બ્ર. સવિતાબાઇસ્વામી, બા બ્ર વિજયાબાઇસ્વામી.
૯. મહાસતીજી સંતોકબાઇસ્વામી ઠા. ૨, પુરીબાઇસ્વામી.
૧૦ મહાસતીજી જીવીબાઇસ્વામી ઠા ૮, બા બ્ર અચરત બાઇસ્વામી, જેકોરબાઇસ્વામી, બા બ્ર વખતબાઇ સ્વામી, બા. બ્ર. પ્રભાકુંવરબાઇસ્વામી, બા બ્ર. હીરાબાઇ સ્વામી, બા. બ્ર. ઇન્દુબાઇસ્વામી, બા બ્ર. હંસાબાઇસ્વામી.
૧૦ મહાસતીજી મણીબાઇસ્વામી ઠા ૨, ધનકુંવરબાઇ સ્વામી.
૧૧. મહાસતીજી ઝબકબાઇ સ્વામી ઠા. ૨, હીરાબાઇસ્વામી.
૧૨. બા. બ્ર મહાસતીજી પ્રભાકુંવરબાઇસ્વામી ઠા. ૪. બા બ્ર. જયાબાઇસ્વામી, બા બ્ર લીલાવતીબાઇસ્વામી, બા બ્ર. માનકુંવરબાઇસ્વામી.
૧૩. મહાસતીજી રંભાબાઇસ્વામી, ઠા ૮ જેકુંવરબાઇસ્વામી, છબલબાઇસ્વામી, જયાબાઇસ્વામી, નર્મદાબાઇસ્વામી, અનસુયાબાઇ સ્વામી, બા. બ્ર. જ્યોત્સનાબાઇસ્વામી, બા. બ્ર. લાભકુંવરબાઇસ્વામી
૧૪ મહાસતીજી, સમરતબાઇસ્વામીઠા ૪. લલિતાબાઇસ્વામી બા. બ્ર. શાન્તાબાઇસ્વામી, બા બ્ર. ઇન્દુબાઇસ્વામી
૧૫ મહાસતીજી સમરતબાઇસ્વામી

સાયલા સંપ્રદાયના મુનિઓ

સ્વ. શ્રી મેઘરાજજી મહારાજ સાહેબના શિષ્ય દીક્ષા

(૧) તપસ્વી શ્રી મગનલાલજી મહારાજ ભાવસાર સાયલા
(૨) કાનજી મહારાજ સાહેબ ”
(૩) હરજીવનજી મહારાજ ”
(૪) બળદેવજી મહારાજ જોગવનગર

વિવિધ સંઘ પરિચય

શ્રી વર્ધમાન શ્વે. સ્થા. જૈન શ્રાવક સંઘ, કાંદાવાડી, મુંબઇ

મુબઇમા ધર્મકરણી કરવા માટે લગભગ સવત ૧૯૪૭મા ચીચપોકલીમાં શેઠ દામજી લખમીચદ જૈન ધર્મ સ્થાનકવાળી જગ્યા ભાડેથી લેવામાં આવી અને ત્યારબાદ તે ધર્મકરણી કરવા માટે વેચાતી લેવામાં આવી, અને તે સમયે શેઠ દામજીભાઇએ સ્થાનક માટે સારી રકમ આપી અને તેથી સ્થાનકનુ નામ શેઠ દામજી લખમીચદ જૈન ધર્મ સ્થાનક રાખવામાં આવ્યુ. પહેલુ ચોમાસુ સવત ૧૯૪૯માં મુનિ શ્રી ભકતાવરમલજી મહારાજ સાહેબનુ થયુ, થોડા વરસે અમુક કારણસર કચ્છી વીસા ઓશવાલ અને બીજા ભાઇઓ વચ્ચે મતભેદ પડતા કચ્છી ભાઇઓ આપણાથી જુદા પડયા. આ વાતથી બીજા ભાઇઓને દુખ થયુ અને સને ૧૯૧૯માં આપણા અગ્રેસરો શેઠ મેઘજીભાઇ થોભણ, શેઠ વેલશીભાઇ લખમશી નપ્પુ, શેઠ સુરજમલ લલ્લુભાઇ ઝવેરી, શેઠ હીરાચદ વનેચદ દેશાઇ તથા શેઠ શીવજીભાઇ ગોસર વગેરેને લાગ્યુ કે આપણા સઘમા એકસંપ હોવો જોઇએ અને તેથી સન ૧૯૧૯ની ઓગષ્ટની ૨૩મી તારીખના રોજ આપણા અગ્રેસરોની એક સભા કાદાવાડીમા શ્રી કચ્છી દશા શ્રીમાળીની જ્ઞાતિની વાડીમા મળી અને ઠરાવ કર્યો કે આપણે "સકળ સઘ" સ્થાપવો અને મુબઇમાં મધ્ય સ્થળે ઉપાશ્રય માટે જગ્યા લેવી. તા. ૪ ૧૧-૧૯૧૯ના રોજ કાર્યવાહક કમિટીની ચૂંટણી કરવામા આવી અને ૧૯૨૦ના ફેબ્રુઆરી માસમા સાત ટ્રસ્ટીઓ નિમવામાં આવ્યા અને ફડ શરૂ કર્યું તરત જ લગભગ ૨,૪૦,૦૦૦ રૂપિયા આ ફડમા ભરાયા અને કાદાવાડીમા ઉપાશ્રય માટે મકાન રૂ. ૨,૪૧,૨૫૦મા ખરીદવામા આવ્યુ અને શ્રી. શ્વે સ્થા. જૈન સકળ સઘ-મુબઇ' સ્થાપવામાં આવ્યો, તે મકાન જૂનુ અને નાનુ હોવાથી આપણી વધતી જતી વસ્તીને નાનુ પડવાથી નવો હોલ બાધવા વિચાર કર્યો શેઠ વીરચદભાઇ મેઘજીભાઇએ રૂ. ૫૧૦૦૦) શ્રી સઘને તેમના પિતાશ્રીનુ નામ ઉપાશ્રયને જોડવાની શરતે આપ્યા. જૂના સ્થાનકની જે જગ્યા કુલ ૧૬૫૦ વાર હતી તે જગ્યા ટુકી પડે તેમ લાગવાથી બાજુમાથી ૪૦૦ વાર ખરીદી અને ત્યાં ૭૫x૪૮નો મોટો હોલ તથા ૧૦ ફુટની ગેલેરી અને તેના ઉપર તેવડો જ હોલ બાંધવામા આવ્યા અને તેનુ ખર્ચ માત્ર રૂા ૬૫૦૦૦ પાંસઠ હજાર થયુ. શ્રી સઘને ચાલુ આવક રહે તે માટે નાની ૧૬ દુકાનો પણ બાધવામાં આવી. શ્રી સકળ સઘ એટલે મુબઇ અને મુબઇના પરાઓનો સઘ ગણાય

સવત ૧૯૮૧ની સાલમાં કાદાવાડી ઉપાશ્રયમાં પ્રથમ ચાતુર્માસ પૂજ્ય શ્રી. છગનલાલ મહારાજનુ થયુ હતુ. પૂજ્ય શ્રી. જવાહરલાલજી મહારાજ તથા શતાવધાની પડીતરત્ન મુનિશ્રી રત્નચદ્રજી મહારાજ તથા કવિવર્ય શ્રી નાનચદ્રજી મહારાજ આદિ મુનિશ્રીના ચાતુર્માસ ઘાટકોપરમા થયા; પૂજ્ય શ્રી જવાહરલાલજી મહારાજ સાહેબના સદુપદેશથી કસાઇખાને જતાં ઢોરોને બચાવવા માટે ઘાટકોપરમા જીવદયા ખાતુ ખોલવામાં આવ્યુ. આ સસ્થાનુ નામ "શ્રી ઘાટકોપર સાર્વજનિક જીવદયા ખાતુ" રાખવામા આવ્યુ. આ સસ્થા દ્વારા સેંકડો કસાઇખાને જતા મુગા પ્રાણીઓ બચાવવામા આવ્યા છે, વળી તદ્દન ચોકખુ દુધ સેકડો કુટુબોને દરરોજ પૂરૂ પાડવામા આવે છે.

મુબઇમા દિન પ્રતિદિન વસ્તી વધવા લાગી અને પરામા રહેનારને મુબઇ ધર્મકરણી કરવા આવવાનુ મુસ્કેલ જણાવા લાગ્યુ, તેથી ઘાટકોપરમાં એક ઉપાશ્રય બનાવવાનુ વિચારાયુ અને ફડ શરૂ કરવામા આવ્યુ. શેઠ ધનજીભાઇ દેવશીભાઇએ પોતાની જગ્યા આપી અને રૂપિયા એક લાખના ખર્ચે ઉપાશ્રય બધાવ્યો. ઘાટકોપરમાં ઉપાશ્રય થવાથી આજુબાજુના પરામા ભાઇ-બહેનો વ્યાખ્યાનવાણીનો તથા ધર્મધ્યાનનો લાભ સારી રીતે લ્યે છે. વહિવટની સગવડ ખાતર ઘાટકોપરના ઉપાશ્રયના ટ્રસ્ટીઓ તરીકે ઘાટકોપરના ભાઇઓને નિમવામાં આવ્યા હતા, ત્યાર પછી ઘાટકોપર શ્રી સઘને બધી રીતે સ્વતંત્ર કરવામાં આવ્યો.

મુબઇમા કોઇ પણ સમ્પ્રદાયવાદ નથી, તેથી જ મુબઇમા પજાબ, મારવાડ, મેવાડ, કચ્છ, ગુજરાત

અને સૌરાષ્ટ્રના સાધુ સાધ્વીજીઓના ચાતુર્માસ થયા છે.

શ્રી સંઘની પ્રવૃત્તિઓ

(૧) શ્રી વર્ધમાન તપ આયબિલ ખાતુ મુબઇમા ઓળીના દિવસોમ આય બિલની ઓળીઓ કરવામા આવતી હતી, પણ બહેનો અને ભાઇઓ હમેશા આયબિલ કરી શકે તેટલા માટે શ્રી વર્ધમાન તપ આયબિલ ખાતુ સંવત ૧૯૯૭ ની સાલથી શરૂ કરવામા આવ્યુ અને તે આયબિલ ખાતાનો સારો લાભ લેવાય છે. તે આયબિલ ખાતામાં રૂ. ૫૦૧) આપનાર તરફથી તે દિવસે તેમના આયબિલ કરાવવામાં આવે છે અને તેવી તિથિઓ અત્યાર સુધીમાં ૩૨૦ ભરાઇ ગઇ છે.

(૨) જૈન શાળા–શ્રી સઘ જૈન શાળા ચલાવે છે, તેમા ૭૦ થી ૭૫ બાળકો અને બાળાઓ ધાર્મિક શિક્ષણનો લાભ લઇ રહેલ છે દર વર્ષે આમાથી પ્રતિક્રમણ કરાવવા પર્યુષણના દિવસોમાં જ્યાં પ્રતિક્રમણ કરાવવાની જરૂરીયાત હોય ત્યાં મોકલવામા આવે છે. મુબઇ તેમજ પરામાં ચાલતી જૈન શાળાઓની પરીક્ષા એકીસાથે લેવાની ગોઠવણ પણ કરવામા આવે છે.

(૩) જીવદયા તથા સાધારણ ખાતુ–શ્રી સઘ દર સાલ ૧૦ થી ૧૫ હજાર રૂપિયા જીવદયા અને સાધારણ ખાતામાં વાપરે છે, અને મુબઇ તેમજ બહારની સસ્થાઓ જેવી કે પાંજરાપોળો બાળાશ્રમો, બોર્ડીંગો, ઉપાશ્રયો, પાઠશાળાઓ, અનાથાશ્રમો, વૃધ્ધાશ્રમો, વિદ્યાગૃહો વિગેરેને સહાયતા મોકલવામાં આવે છે. દુષ્કાળ તેમજ રેલ વખતે હજારો રૂપિયાની મદદ શ્રી સઘે મોકલેલ છે.

(૪) સસ્તા ભાડાની ચાલીઓ–આપણા ભાઇઓને માટે સસ્તા ભાડાંના મકાનો માટે મકાનો ખરીદાયાં છે. પરન્તુ રેન્ટ એક્ટને લીધે તે મકાનો ખાલી કરાવી શકાયાં નહિ હોવાથી આપણા ભાઇઓને તે લાભ હાલ તુરત આપી શકાયો નથી.

(૫) સાર્વજનિક દવાખાનુ. શ્રી સઘે એક સાર્વજનિક દવાખાનુ ખોલવાનો વિચાર કર્યો કે તુરત જ મોરબીવાળા શેઠ રસિકલાલ પ્રભાશકરભાઇએ તેઓના પિતાશ્રીના નામે રૂ. ૬૫૦૦૦) હજાર શ્રી સઘને આપ્યા અને શેઠ પ્રભાશકર પોપટભાઇ સાર્વજનિક ડીસ્પેન્સરીના નામથી દવાખાનુ શરૂ કરવામાં આવ્યુ. આ દવાખાનામાં અત્યારે દરરોજના ૩૨૫ થી ૩૫૦ દર્દીઓ લાભ લઇ રહેલ છે. દવાનો ચાર્જ રૂ. ૦–૩–૦ મોટા માટે અને રૂ ૦–૨–૦ બાળકો માટે રાખવામા આવેલ છે. આ દવાખાનામાં પણ રૂ. ૫૦૧)ની તિથિ રાખવામાં આવી છે અને તે તિથિને દિવસે દવાનો અર્ધો ચાર્જ લેવામા આવે છે.

(૬) શ્રી ગોકલદાસ શીવલાલ એક્સરે ઇન્સ્ટીટ્યુટ:—શ્રી સંઘને દવાખાના સાથે એક્સરે ઇન્સ્ટીટ્યુટની પણ જરૂરીઆત હોવાથી અને શ્રી ગોકુળદાસ શીવલાલ અજમેરાએ રૂ. ૨૫૦૦૦) આપતા સને ૧૯૫૧ માં એક્સરે ઇન્સ્ટીટ્યુટ ચાલુ કરવામા આવ્યુ અને તેનુ નામ શ્રી ગોકળદાસ શીવલાલ અજમેરા ઇન્સ્ટીટ્યુટ રાખવામાં આવ્યુ રૂ. ૪૦,૦૦૦) હજારનુ એક્સરે મશીન ૨૦૦ M. A નુ લીધુ. એક્સરે પ્લેટના રૂ. ૧૦) (તે વખતે બહારના ડોકટરો રૂ ૨૫–૩૦ ચાર્જ લેતા હતા.) અને સ્ક્રીનીગના રૂ. ૨, ફી રાખવામાં આવેલ છે.

(૭) વિદ્યાર્થી શિક્ષણ ફડ–શ્રી સઘને આપણાં બાળકોને ચોપડીઓ આપવાનો વિચાર થયો અને તેના માટે ફડ શરૂ કર્યુ. આપણા સમાજના જરૂરીઆતવાળા વિદ્યાર્થીઓને બાળપોથીથી માંડી અગ્યારમા ધોરણ સુધીના વિદ્યાર્થીઓને વિના મૂલ્યે પુસ્તકો અપાય છે. ગઇ સાલ ૪૦૦ વિદ્યાર્થીઓને પુસ્તકો આપવામાં આવ્યાં હતા.

(૮) શ્રી સ્વધર્મી સહાયક ફડ–શ્રી સંઘ હસ્તક એક સ્વધર્મી સહાયક ફડ દર સાલ એકઠુ કરવામાં આવે છે. આ ફડમાંથી આપણા સ્વધર્મી જરૂરીઆતવાળા કુટુબોને (મુબઇ તેમજ બહારગામવાલાઓને) મદદ અપાય છે, અને ધધો કરનારને નાની રકમ પણ આપવામાં આવે છે.

(૯) શ્રી માનવ રાહત ફડ–આ ફડમાથી કોઇ પણ દુખી ભાઇ-બહેનને (કોઇ પણ જાતના ભેદભાવ વિના) આર્થિક મદદ આપવામાં આવે છે, તેમાં મુખ્યત્વે ટી. બી. ના દર્દીને સ્ટ્રેપ્ટોમાઇસીન ઇન્જેક્શનો તથા ટી. બી. ની દવાઓ મફત આપવામાં આવે છે.

(૧૦) શ્રી ખેગારભાઇ શોભણભાઇ ધાર્મિક પુસ્તક ભડાર–આ ભડારમાં ધાર્મિક પુસ્તકો તથા શાસ્ત્રો રાખવામાં આવેલ છે, પણ તેનો ઉપયોગ જોઇએ તેવો કરવામાં આવતો નથી.

મુંબઇમાં દર વર્ષે બહારગામથી ઉપાશ્રયો માટે સાળાઓ

આવે છે અને સારી રકમો તેઓને મળી જાય છે.

હિંદુસ્તાન અને પાકિસ્તાનના ભાગલા પડયા તે સમયે કરાચીથી આવતી સ્ટીમરોમાથી માણસોને કોઇપણ જાતના ભેદભાવ વિના મોલ સ્ટેશન ઉપર જમવાની વ્યવસ્થા પણ શ્રી સંઘ હસ્તક કરવામા આવી હતી. તેમજ પંજાબથી આપણા ભાઇઓને લાવવા માટે કોન્ફરન્સે એરોપ્લેનની ગોઠવણ કરી હતી, ત્યારે શ્રી સંઘે પણ કોન્ફરન્સને સારી રકમ આપી હતી.

શ્રી સંઘે કાંદાવાડીના ઉપાશ્રયની બાજુમા એક નવુ મકાન ચાર માળનુ બાંધવાનુ શરૂ કર્યુ છે તેમાં આયંબિલ ખાતુ, એકસરે ઇન્સ્ટીટયુટ રહેશે તે ઉપરાત આંખની હોસ્પીટલ કરવાનો વિચાર રાખેલ છે. આરામ ગૃહ (બહારગામથી આવનાર આપણા ભાઇઓ માટે) બનાવવામા આવશે, જેને માટે શ્રી વીરચંદભાઇ મેઘજીભાઇના પુત્રોએ રૂા ૨૦,૦૦૦) હજાર અને ઘાટકોપરના શ્રી અમૃતલાલ નાગરદાસભાઇ તરફથી રૂા ૧૫૦૦૦) હજારની રકમો શ્રી સંઘને મળનાર છે

મુંબઇ શ્રી સંઘ હમેશા કોન્ફરન્સના ઠરાવોને માન્ય રાખે છે. કોન્ફરન્સના ઠરાવ અનુસાર શ્રી સંઘે બીજા ભાદરવા માસમા સંવત્સરી પર્વની ઉજવણી કરેલ હતી.

આ ઉપરથી જોઇ શકાશે કે મુંબઇ સંઘ ધાર્મિક કાર્યો ઉપરાત સામાજીક કાર્યોમા પણ સારો રસ લઇ રહેલ છે, અને આપણા ભાઇઓને સીધી કે આડકતરી રીતે સહાયભૂત બનવા બનતુ કરે છે.

શ્રી સંઘના હાલના ટ્રસ્ટીઓ અને પદાધિકારીઓ

શ્રી વેલજીભાઇ લખમશીભાઇ નપ્પુ J. P. પ્રમુખ અને ટ્રસ્ટી
,, પ્રાણલાલ ઇંદરજીભાઇ શેઠ ઉપ–પ્રમુખ ,, ,,
,, ગિરધરલાલ દામોદર દફતરી માનદ્ મંત્રી ,, ,,
,, જમનાદાસ હરખચંદ ,,
,, ખુશાલદાસ ખેંગારભાઇ ,,
,, ચીમનલાલ ચકુભાઇ શાહ M. P. ,,
,, ગોકળદાસ શીવલાલ અજમેરા ,,
,, લાલદાસ જમનાદાસ ,,

આસીસ્ટન્ટ સેક્રેટરીઓ

શ્રી નાથાલાલ જાદવજીભાઇ ,,
,, હુકમીચંદ વીસનજીભાઇ ,,

શ્રી સંઘની મેનેજીંગ કમિટી ૩૫ સભ્યોની છે, જેમાં મુંબઇ અને પરાઓના ભાઇઓનો સમાવેશ થાય છે.

મુંબઇના કે પરાના કોઇ પણ ભાઇ અગર બહેન રૂા. ૩) વાર્ષિક લવાજમ આપી શ્રી સંઘનાં સભ્ય બની શકે છે. રૂા. ૨૫૧) આપી લાઇફ મેમ્બર બની શકાય છે તેમ જ રૂપિયા ૧૦૦૧) આપી કૌટુમ્બિક સભ્ય બની શકાય છે.

ચીચપોકલી સ્થા. જૈન સંઘ મુંબઇ

સંવત ૧૯૨૭માં ચીચપોકલી ખાતે સર્વપ્રથમ શ્રી મુંબઇ સંઘની સ્થાપના થઇ અને મુનિ મહારાજોના ચોમાસા કરાવવા માટે જગ્યા ભાડે રાખવામા આવી. ત્યાર પહેલા પાયધુની અને ભીંડી બજારમા ધર્મકરણી જગ્યા ભાડે લઇ કરવામા આવતી. ત્યારબાદ ચીચપોકલીમાં હાલ જે સ્થાનક છે તે જગ્યા સંવત ૧૯૪૯મા વેચાતી લીધી અને તે જગ્યા લેવામા શેઠ દામજીભાઇ લક્ષ્મીચંદે શ્રી સંઘને સારી રકમ આપી તેથી તેમનુ નામ ઉપાશ્રય સાથે જોડવામાં આવ્યુ અને શેઠ દામજીભાઇ લક્ષ્મીચંદ જૈન ધર્મ સ્થાનક નામ રાખવામા આવ્યુ તેમજ શ્રી સંઘનુ નામ મુંબઇ સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ રાખવામાં આવ્યુ.

આ ઉપાશ્રયમાં પહેલુ ચોમાસુ મુનિ શ્રી ભકતાવરમલજી મહારાજ સાહેબનુ થયુ હતુ અને ત્યાર પછી ગુજરાત, કાઠિયાવાડ, મારવાડ, મેવાડ અને કચ્છ તેમજ પંજાબી સાધુ–સાધ્વીજીઓનાં ચોમાસા અત્રે થયા.

અમુક કારણોને લઇને કચ્છી વિસા ઓશવાળ ભાઇઓ જુદા પડયા પછી ત્રણ સ્થાનકવાસી જૈન જ્ઞાતી આ સંઘમા રહી (૧) સાપરીઆ, (૨) કચ્છી ગુર્જર દશા તથા વિસા શ્રીમાળી (૩) કચ્છી ગુર્જર દશા ઓશવાળ ન્યાતના મુંબઇમા રહેનાર ભાઇઓ. આમાં સાપરીઆનો અર્થ પોરબંદર, માંગરોળ અને વેરાવળના ભાઇઓ. તેમ જ કાઠિયાવાડ, ઝાલાવાડ અને ગુજરાતના સ્થાનકવાસી થાય છે.

આ સંઘનુ ટ્રસ્ટ સને ૧૯૦૭માં કરવામાં આવ્યુ અને દરેક ભાઇઓના સાથને લઇને ચૌદ ભાઇઓનુ ટ્રસ્ટીપદ નિમવામા આવ્યુ અને અત્યારે પણ એ જ પ્રથા ચાલુ છે. શ્રી સંઘમા વાર્ષિક રૂા. ૫) આપનાર સંઘના ટ્રસ્ટી થઇ શકે છે અને કોઇ જગ્યા ખાલી પડયે તેજ વિભાગની જ્ઞાતિને ટ્રસ્ટી ચૂંટીને મોકલવાનુ

જણાવવામાં આવે છે. અને જો તે જ્ઞાતિ ત્રણ માસમાં ટ્રસ્ટી ચૂંટીને ન મોકલાવે તો પણ જનરલ સભા તે ખાલી પડેલ જગ્યા માટે તે જ જ્ઞાતિમાંથી ટ્રસ્ટીની ચૂંટણી કરે. તે પ્રમાણે બધા વિભાગના ટ્રસ્ટીઓ રહે છે. આ જૂની પ્રથામાં ફેરફાર કરવા માટે વિચારણા ચાલી રહેલ છે અને થોડા જ વખતમા નવા રિવાજ પ્રમાણે ટ્રસ્ટીમંડળ કાર્યવાહક કમિટી નિમવાનો રિવાજ ચાલુ કરવામાં આવશે

શ્રી સંઘના સૌ ભાઇઓને લાગ્યુ કે કચ્છી વિસા ઓશવાળ આ પ્રમાણે આપણાથી જુદા રહે તે ઠીક નહિ, તેથી મુંબઇ સકળસંઘના નામથી જુદો સંઘ મુંબઇ કાંદાવાડી ખાતે સ્થાપવામાં આવ્યો અને ત્યા સંવત ૧૯૧૯માં જગ્યા લઇને મોટો ભવ્ય ઉપાશ્રય બનાવવામાં આવ્યો.

ચીચપોકલી શ્રી સંઘ પાસે નાણા ન હતા પણ જગ્યા ઘણી હતી, તેથી ટ્રામના મેઇન રસ્તા ઉપર બે ચાલીઓ બાંધી તેમજ બે ચાલીઓ દુકાનો સાથે બાંધવામા આવી, જેથી તેની ભાડાની આવકથી શ્રી સંઘની નાણાકીય સ્થિતિ સારી બની. તેમ જ આપણા હાલના સ્થાનકની બાજુમા એક ચાલી જેમાં મહારાષ્ટ્રી ભાઇઓ રહે છે તે ચાલી શ્રી સંઘે રૂા. ૫૦૦૦) મા વેચાતી લીધી. મુંબઇમાં દિનપ્રતિદિન વસ્તી વધતી જતી હોવાથી અને આપણા ભાઇઓને રહેવાની મુશ્કેલી હોવાથી શ્રી સંઘે ૫૦ રૂમોની રૂા. ત્રણ લાખના ખર્ચે એક બીજી ચાલી બાંધી, જેમાં આપણા ભાઇઓને રહેવાની વ્યવસ્થા કરી આપવામાં આવી. શ્રી સંઘની ભાવના ત્યાં જૈન કોલોની બનાવવાની છે, પરન્તુ નાણાની અગવડને કારણે બીજી ચાલી બાંધી શકાઇ નથી.

ઉપાશ્રયનુ મકાન સાઠ વર્ષ પહેલાંનુ જૂનુ હોવાથી આ મકાન તોડી આ જગ્યાએ ૭૫×૫૨ ફુટનો નવા ઉપાશ્રય આજુબાજુમા ૧૦ ફુટની ગેલેરી સાથે રૂા. દોઢ લાખના ખર્ચે બનાવાય છે, જે એકાદ બે માસમાં પૂરો થઇ જશે.

શ્રી સંઘ હસ્તક એક જૈન શાળા ચલાવવામાં આવે છે, જેમા અત્યારે ૭૫ થી ૯૦ બાળક-બાળિકાઓ ભણવા આવે છે ઉપરાંત શ્રી સંઘ હસ્તક એક સાર્વજનિક દવાખાનુ ચલાવવામાં આવે છે. જેનો લાભ આપણા સમાજ ઉપરાંત બહારના ભાઇઓ પણ ઠીક સંખ્યામાં લઇ રહેલ છે.

ચીચપોકલી શ્રી સંઘની જગ્યાથી દરેક સ્થળે જવા આવવા માટે ટ્રામ, બસ અને ટ્રેનની વ્યવસ્થા સારી છે, જેથી આ સ્થળ દરેક રીતે આજુ બાજુથી ધર્મ કરણી કરવા આવનાર ભાઇબહેનોને અનુકુળ છે તેમજ જગ્યા વિશાળ અને વાતાવરણ સાનુકુળ હોવાથી સાધુ–સાધ્વીજી ઓને માટે પણ આ સ્થળ ઘણુ સગવડવાળુ છે.

હાલના શ્રી સંઘના હોદ્દેદારો

શ્રી પ્રાણલાલ ઇંદરજીભાઇ,	પ્રમુખ
,, ખુશાલદાસભાઇ ખેંગારભાઇ,	ઉપ–પ્રમુખ
,, ગોકળદાસભાઇ શીવલાલ અજમેરા	માનદ્–મંત્રી
,, હરિલાલ શંભુલાલ	,,

શ્રી ઘાટકોપર સંઘ, મુંબઇ

અત્રે શ્રી ઘાટકોપરમાં સંવત ૧૯૮૨ ની સાલમા શ્રી લીંબડી મોટા સંપ્રદાયના કવિવર્ય શ્રી નાનચંદજી મહારાજના ચાતુર્માસ દરમિયાન ઘાટકોપરમા ધર્મ સ્થાનક બનાવવા અંગે અને તેના ફંડ માટે સ્થાનિક આગેવાન અને સેવાભાવી કાર્યકર્તા સ્વ. શ્રીયુત હીરાચંદભાઇ વનેચંદભાઇ દેશાઇ, સ્વ. શેઠ નગીનદાસ અમુલખરાય મહેતા, શ્રીયુત માણેકલાલ અમુલખરાય મહેતા અને શ્રીયુત્ ચિમનલાલ પોપટલાલ શાહના પ્રયત્નોથી આશરે રૂા. ૨૮૦૦૦)નુ ફંડ એકઠું થએલુ. આ અરસામા જમીન મેળવવાની તજવીજ અને પ્રયત્નો થતાં સ્વ. શેઠ ધનજીભાઇ દેવશીભાઇએ પોતાની જમીનના ત્રણ પ્લોટ આશરે વાર ૫૫૦૦ જગ્યા શ્રી સંઘને ભેટ આપી. ત્યારબાદ શ્રી સંઘના સેવાભાવી કાર્યકર્તાઓની મદદથી ટકે ટકે આ ફંડ રૂા. ૮૫૦૦૦)નુ થતાં ઉપાશ્રયના મકાનનુ બાંધકામ હાથ ધરવામાં આવ્યુ અને શ્રી સંઘની સ્થાપના ૧૯૮૫ મા કરવામા આવી અને શ્રી સંઘનું બંધારણ ઘડી બંધારણીય રીતે ૫ ટ્રસ્ટીઓ અને ૧૬ સભ્યો મળી કુલ ૨૧ સભ્યોનુ કાર્યવાહક મંડળ નિમવામા આવ્યુ. સંવત ૧૯૯૧ માં ધર્મ સ્થાનક તૈયાર થઇ જતાં શ્રી સંઘની વિનંતિની પ્રથમ ચાતુર્માસ કવિવર્ય મુનિ નાનચંદજી મહારાજનુ થયુ હતુ. ત્યાર બાદ પ્રથમ ચાતુર્માસથી જ શ્રી સંઘની ઉત્તરોત્તર પ્રવૃત્તિ વધતી રહી છે. હાલ શ્રી સંઘ હસ્તક સ્વ. શેઠ નગીનદાસ અ. મહેતા વાચનાલય, શ્રી સંઘ તરફથી જૈન શાળા ચાલે છે તથા છેલ્લા બે વર્ષથી ચાતુર્માસમાં આયંબિલ ખાતુ પણ ખોલવામા આવેલ છે. હાલ શ્રી ઘાટકોપર સંઘમા

૬૦૦ સભ્યો છે અને આપણી વસ્તી ૮૦૦ થી ૧૦૦૦ ઘરની ગણાય. સંવત ૧૯૯૧ ની સાલથી આજ સુધી ઘાટકોપરને આગણે પ્રતિવર્ષ સાધુ-સાધ્વીજીઓના ચાતુર્માસ થયેલ છે.

વિશેષમાં ઘાટકોપર શ્રી સંઘને આગણે સંવત ૧૯૯૬ની સાલમા સાધુ સંમેલન, કોન્ફરન્સની જનરલ મિટિંગ તેમજ કોન્ફરન્સનુ ૧૦મુ અધિવેશન શ્રી સંઘની વિનંતિથી ભરવામા આવ્યુ હતુ.

ઘાટકોપરને આંગણે ઉપર જણાવ્યા મુજબ કવિ-વર્ય શ્રી નાનચંદ્રજી મહારાજ તેમજ શતાવધાની પંડિત રત્ન શ્રી રત્નચંદ્રજી મહારાજ, પંડિત રત્ન શ્રી કિશન-લાલજી મહારાજ, તેઓશ્રીના સુશિષ્ય પ્રખર વક્તા શ્રી સૌભાગ્યમલજી મહારાજ, ઋષિ સંપ્રદાયના મુનિશ્રી મોહન ઋષિજી મહારાજ, પંજાબી મુનિશ્રી ફુલચંદજી મહારાજ તેમ જ વિદુષી મહાસતિજી શ્રી ઉજ્જવળકુંવરજી મહા-સતિજી આદિ સાધુ સાધ્વીજીઓના ચાતુર્માસ થયેલ છે

ઘાટકોપરમા સ્થાનકવાસી જૈનોની વસ્તી વધતી જતી હોઇ સંવત ૨૦૦૦ની સાલમા મહાસતિજી શ્રી ઉજ્વળકુંવરજીના ચાતુર્માસ દરમિયાન બહેનોને ધર્મક્રિયા કરવા માટે જગ્યાની મુશ્કેલી પડતી, જેથી બહેનો માટે ધર્મ સ્થાનકની જરૂરીઆત જણાતા ૨૦૦૦ વાર જમીનનો પ્લોટ તથા રૂા. ૧૬૦૦૦, રોકડા સ્વ. શેઠ ધનજીભાઇ દેવશીભાઇએ તેઓશ્રીના માતુશ્રીના નામે ઘાટકોપર શ્રી સંઘને અર્પણ કરેલ છે, ઉપરાત બીજુ ફંડ એકઠુ કરી શ્રાવિકા શાળાનુ મકાન તૈયાર થઇ ગયુ છે. જે મકાનનુ નામ શ્રી હિરબાઇ શ્રાવિકા-શાળા આપેલ છે

હાલ શ્રી સંઘનું ચાલુ કાર્યવાહક મંડળ નીચેના હોદ્દેદારોનુ બનેલુ છે.

૧ પ્રમુખ ને ટ્રસ્ટી શ્રીયુત માણેકલાલ અમુલખરાય મહેતા
૨ ઉપપ્રમુખ ને ટ્રસ્ટી ,, ચીમનલાલ પોપટલાલ શાહ
૩ સભ્ય અને ટ્રસ્ટી ,, દુર્લભજી કેશવજી ખેતાણી
૪ ,, ,, ,, ,, મણિલાલ ધનજીભાઇ દેવશીભાઇ
૫ ,, ,, ,, ,, ફીરચંદભાઇ ખેતસીભાઇ
માનદ્ મંત્રી ,, નરભેરામ મોરારજી ઝાટકીઆ
,, ,, ઉત્તમચંદ ફીરચંદભાઇ ગોસળીઆ
,, ,, હઠીસંગ ડાહ્યાભાઇ ગોળવાળા

ઉપરાંત શ્રી સંઘના કાર્યવાહક મંડળમાં બીજા ૧૩ સભ્યો છે

આયંબિલની ઓળીઓ શ્રી સંઘની સ્થાપના થઇ ત્યારથી જ ચૈત્ર અને આસો માસની કરાવવામા આવે છે

શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રાવક સંઘ, માટુંગા.

સંઘના અધિકારીઓ તથા કાર્યવાહક સમિતિના સભ્યો.

શ્રી. ગંભીરભાઇ ઉમેદચંદ — પ્રમુખ તથા ટ્રસ્ટી.
,, શાંતિલાલ હેમચંદ સંઘવી — ઉપ-પ્રમુખ તથા ટ્રસ્ટી તથા ખજાનચી.
,, રામજી અંદરજી શેઠ — ટ્રસ્ટી તથા સેક્રેટરી.
,, કાન્તીલાલ જાદવજી — ટ્રસ્ટી.
,, ઝવેરચંદ રાઘવજી સંઘરાજકા — ટ્રસ્ટી.
,, ત્રંબકલાલ અમુલખ મણીઆર — ટ્રસ્ટી
,, ફુલચંદ માણેકચંદ દોશી — ટ્રસ્ટી.
,, શીવલાલ જાદવજી શાહ }
,, જગજીવનદાસ સુખલાલ અજમેરા } સેક્રેટરી

તથા ૨૩ કાર્યવાહક સભ્યો છે.

સંઘ સંચાલિત ખાતાંઓ—શ્રી **કેશવલાલ ચુનીલાલ સંઘૈયા આયંબીલ** ખાતુ—છેલ્લા ચાર વર્ષથી આ ખાતુ ચાલે છે. એની સાથે શ્રી. કેશવલાલ ચુનીલાલ સંઘૈયાનુ શુભ નામ જોડવા માટે રૂા. ૧૫૦૦૧) તેઓશ્રીએ આપ્યા છે. આ ઉપરાંત તેઓશ્રી તરફથી રૂા. ૫૦૦૧) ચૈત્ર માસની ઓળી માટે પણ આપવામા આવ્યા છે.

આશ્વિન માસની ઓળી માટે રૂા. ૫૦૦૧) શ્રી ફુલચંદ માણેકચંદ દોશી તરફથી મળ્યા છે. આ ખાતામા અત્યારે લગભગ રૂા. ૮૦,૦૦૦)નુ ફંડ છે. લગભગ ૨૦૦ તીથીઓ ભરાણી છે. આ ખાતાનો લાભ સ્થાનકવાસી-દેરાવાસી કોઇ પણ ભાઇ-બ્હેન લઇ શકે છે. ખાતાનુ સંચાલન સંઘના મંત્રી શ્રી શીવલાલભાઇ તથા શ્રી. શાંતિલાલ સંઘવી કરે છે.

શ્રી નરભેરામ અંદરજી જૈન પાઠશાળા—આ પાઠશાળા લગભગ આઠેક વર્ષ પહેલા પૂ. બા. બ્ર. મહા-સતિજી શ્રી ઉજ્જ્વલ, કુંવરજીના શુભ હસ્તે શરૂ થઇ હતી. આજે તો લગભગ ૩૨૫ બાળક-બાળકીઓ આ શાળામાં ધાર્મિક અભ્યાસ કરે છે. પંડીત સોહનલાલજી શિક્ષક તરીકે તથા શ્રી સમતાબેન હિંમતલાલ શાહ શિક્ષિકા તરીકે

કામ કરે છે શ્રી. હિંમતલાલ હરિચંદ ખંધાર તથા જગજીવનદાસ સુખલાલ અજમેરા આ સસ્થાનુ સચાલન કરે છે. ધાર્મિક શિક્ષણ ઉપરાંત વ્યવહારિક તથા સાંસ્કૃતિક શિક્ષણ પણ આપવામાં આવે છે. આ સસ્થા સાથે સંઘના સેક્રેટરી શ્રી રામજીભાઇના સ્વ. ભ્રાતાનુ શુભ નામ જોડવા માટે રૂા. ૧૦,૦૦૧) તેઓશ્રી તરફથી મળ્યા છે.

સહધર્મી સહાયક ફંડ:- આ ખાતુ પણ ત્રણેક વર્ષથી શરૂ કરવામાં આવ્યુ છે. સમાજના મદદ યોગ્ય ભાઇ બ્હેનોને ગુપ્ત રીતે મદદ કરવામાં આવે છે.

વાંચનાલય: આ ખાતાની હજી શરૂઆત જ થઇ છે. રૂા. ૫૦૦૧ શ્રી શાતિલાલ હેમચદ સઘવી તરફથી એમના પૂ. સ્વ. પિતાશ્રીના સ્મરણાર્થે સસ્થાને આપવામા આવ્યા છે, અને ખાતુ શ્રી હેમચદ જેચદ સઘવી વાંચનાલયના નામથી ચાલે છે.

જીવદયા ખાતુ-આ ખાતું તો સઘની સ્થાપના થઇ તેજ વર્ષથી ચાલુ છે વાર્ષિક લગભગ રૂા. ૫૦૦૦ જુદી જુદી જીવદયા સાથે સકળાયેલી સસ્થાઓને આપવામા આવે છે. આ ઉપરાંત લગભગ પાંચેક માસ થયા **સાર્વજનિક જન દવાખનું** પણ શરૂ કરવામા આવ્યુ છે. આ દવ.ખાનાનો લાભ જૈન-જૈનેત્તર કોઇ પણ લ્યે છે. ફી નામની જ રાખવામાં આવી છે અને ડૉક્ટર તરીકે શ્રી હરકીશોરભાઇ કામદારને નીમ્યા છે. તેઓ સેવાભાવી છે. આ સસ્થાને વિકસાવવા અને એને અદ્યતન સ્વરૂપનુ કલીનીક બનાવવા માટેની કાર્યકરોની ઉંડી ધગશ છે.

સંઘ તરફથી એક **સસ્તા ભાડાની ચાલી** બાંધવાની યોજના પણ નક્કર સ્વરૂપ લઇ રહી છે. શીવમા પ્લોટ લેવાઇ ગયો છે અને થોડા જ દિવસોમા ત્યાં બાંધકામ શરૂ થશે. આ સંસ્થા માટે રૂા ૪૫,૦૦૧) શ્રી ગભીરભાઇ તરફથી મળ્યા છે.

સઘની માલિકીનાં અત્યારે બે મકાનો છે. ઉપાશ્રયનાં મકાન સાથે શ્રી કાનજી શીવજીનુ નામ જોડવામાં આવ્યું છે. તેઓના સુપુત્રો તરફથી રૂ. ૩૫૦૦૧) આ માટે મળ્યા છે. આ ઉપાશ્રયનાં મકાનના ભોયતળીયાના વ્યાખ્યાન ગૃહને સ્વ. હાથીભાઇ સાકરચદનુ નામ આપવામાં આવ્યુ છે. રૂા. ૨૫૦૦૧) એમના ધર્મપત્ની શ્રી વહુજીબાઇ તરફથી આ માટે મળ્યા છે.

આ ઉપાશ્રયનાં મકાનના પહેલા માળના વ્યાખ્યાન ગૃહને શ્રી ગભીરભાઇના સ્વ. પૂ. પિતાશ્રીનુ નામ આપવામા આવ્યું છે. એના માટે તેઓશ્રી તરફથી રૂા ૨૦૦૧) મળ્યા છે. ઉપાશ્રયનાં મકાનની આજુબાજુમા જ બીજુ મકાન છે. આયબીલ ખાતુ-જૈનશાળા-પુસ્તકાલય-દવાખાનું વિગેરે આવેલા છે.

સંસ્થાના અત્યારે લગભગ ૫૦૦ સભ્યો છે, એમા કૌટુબીક, આજીવન અને વાર્ષિક ત્રણ પ્રકારના સભ્યોનો સમાવેશ થઇ જાય છે.

શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રાવક સંઘ, દાદર

સંઘની સ્થાપના: સંવત ૨૦૦૨માં "શ્રી દાદર શ્વે. સ્થા. જૈન સંઘ"ની સ્થાપના કરવામા આવી. સસ્થાની પ્રવૃત્તિઓ તથા વહિવટ સાત ટ્રસ્ટીઓ સહિત સત્તર સભ્યોના એક કાર્યવાહક મંડળ દ્વારા ચાલે છે. આશરે ૨૫૦ જેટલા સામાન્ય સભ્યો છે. આપણી કૉન્ફરન્સના ઠરાવ અનુસાર "શ્રી દાદર શ્વે. સ્થા. જૈન સઘ" ના નામમાં ફેરફાર કરી શ્રી "વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રાવક સંઘ, દાદર" રાખેલ છે.

ઊપાશ્રય ફંડ: દાદરમા ધર્મકરણી કરવા માટે ઉપાશ્રય નહિ હોવાથી શ્રી સઘે ઊપાશ્રય માટે મકાન લેવા સારૂ "ઊપાશ્રય ફડ" શરૂ કર્યું જેની અદર મોટે ભાગે દાદરવાસી ભાઇઓએ તથા બહારના કેટલાક ભાઇઓએ તથા સસ્થાઓએ આ ફડમો સુદર ફાળો આપેલ છે. આજે આ ફંડ લગભગ રૂા. ૧૨૫,૦૦૦) સુધી પહોંચ્યુ છે.

ઉપાશ્રય ઉદ્દ્ઘાટન:—સંવત ૨૦૧૧ માં ઉપાશ્રય માટે આપણા સહધર્મીભાઇઓથી વસવાટ થએલ એવા સુદર લત્તામા અને દાદર સ્ટેશનની નજીકમાં એક જગ્યા આશરે ૩૫૦૦ ચો. વાર મધ્યમા એક બગલા સહિત રૂા. ૧,૨૫,૦૦૦) મા ખરીદી અને બગલાની અદર વ્યાખ્યાન માટે ઉપર એક મોટો "વ્યાખ્યાન હોલ" તથા નીચે બ્હેનો માટે ધર્મકરણી કરવા વિશાળ ઓરડાઓ તથા ઊપાશ્રય માટે બધી રીતે અનુકુળ બનાવવા માટે શ્રી સઘે આશરે રૂા. ૧૮,૦૦૦) નો ખર્ચ કર્યો અને ઉપાશ્રય માટે સુદર જગ્યા બનાવવા ઉપાશ્રય ફડમા ભરાયેલ રકમ મકાન ખરીદવા માટે પૂરતી ન હોવાથી તાત્કાળિક એ ખાતને પહોંચી વળવા માટે

શ્રી. શેઠ ચીમનલાલ અમરચંદ સંઘવી (પ્રમુખ) શ્રી શેઠ અમૃતલાલ ગોબરભાઇ મહેતા (ઉપપ્રમુખ) શ્રી શેઠ મોતીલાલ બાવલભાઈ મહેતા (ટ્રસ્ટી) શ્રી શેઠ શંભુલાલ લવજી ભાઇ (ટ્રસ્ટી) તથા શ્રી શેઠ મદમશી લખમશી મહેતાએ શ્રી સંઘને વગર વ્યાજે લોન આપવા ઉદારતા બતાવી હતી.

આ ઉપાશ્રયની ઉદ્‌ઘાટન–વિધી તા. ૧૭–૪–૫૫ના દીવસે મુંબઇની ધારાસભાના માજી સ્પીકર શ્રી. કુન્દનમલ ફિરોદીઆના વરદ હસ્તે એક ભવ્ય સમારંભ યોજીને શ્રીયુત ચીમનલાલ ચકુભાઇ શાહ (M. P.)ના અધ્યક્ષપદે કરવામા આવી હતી. આ પ્રસંગે ઘાટકોપરથી ખાસ વિહાર કરીને પૂજ્ય પંડિતરત્ન મંત્રી મુનિશ્રી ફુલચંદજી મહારાજ આદિ ઠાણાઓ પધાર્યા હતા આ પ્રસંગે "ઉપાશ્રય ફંડ" માટે જોરદાર અપીલ બહાર પાડવામા આવી હતી. તેને બધા તરફથી ઘણો સુંદર આવકાર મળ્યો હતો. અને તે પ્રસંગે ફંડમા લગભગ રૂા. ૩૦,૦૦૦ ત્રીસ હજાર આશરે ભરાયા હતા.

ચાતુર્માસ: દાદરમા ઉપાશ્રય થયા પછી સંવત ૨૦૧૧મા પહેલા જ ચાતુર્માસ માટે શ્રી સંઘની આગ્રહભરી વિનતીને માન આપી પૂજ્ય પંડીતરત્ન મંત્રીમુનિશ્રી ફુલચંદજી મહારાજ આદી ઠાણા ૫ પધાર્યા હતા, પર્યુંષણપર્વ દરમીઆન ઘણા ભાઇઓ તથા બહેનોએ માસખમણથી માંડી નાની મોટી તપસ્યાઓ કરી હતી પૂજ્ય મહારાજસાહેબના વ્યાખ્યાનનો મોટી સંખ્યામા ભાઇઓ તથા બહેનો લાભ લેતા હતા

જૈનશાળા: શ્રી સંઘ તરફથી "અમોલ જૈન પાઠશાળા" છેલ્લા પંદર વરસોથી ચાલે છે. જેની અંદર સરેરાશ ૧૦૦ જેટલા બાળકોને સામાયિક, પ્રતિક્રમણાદિ ધાર્મિક શિક્ષણ આપવામા આવે છે. આ શાળા હાલ ઉપાશ્રયના મકાનમાં જ ચાલુ છે.

શ્રી આયંબીલ ખાતુ: શ્રી વર્ધમાન તપ આયંબીલ ખાતુ પર્યુષણના દિવસો દરમિયાન ખોલવમા આવ્યુ હતુ. જેની અંદર આસો અને ચૈત્ર માસની ઓળીઓની કાયમી તીથી માટે રૂા. ૭૫૧) તથા પાંચ પાખીની કાયમી તીથી માટે રૂા. ૫૦૧, અને બાકીની તીથીઓ માટે રૂા. ૩૫૧, અને એક દીવસ માટે રૂા. ૨૫, એ મુજબ નક્કી કરવામાં આવ્યુ હતુ. આ ખાતું ખોલતાની સાથે જ આસો તથા ચૈત્ર માસની ઓળીઓના અઢારે દીવસો તથા રૂા. ૫૦૧ તથા રૂા. ૩૫૧, તીથીઓમા પણ કેટલાંક નામો નોંધાયાં છે. આ ખાતાંમાં આશરે રૂા ૨૭૦૦૦) નોંધાયા છે અને શ્રી સંઘે આયંબીલ ખાતુ શરૂ પણ કરી દીધુ છે.

અન્ય પ્રવૃત્તિઓ: આ સંઘ પાસે વિશાળ જગ્યા હોવાથી અન્ય ઘણી પ્રવૃત્તિઓ જેવી કે હુન્નરઉદ્યોગ શાળા, દવાખાનુ, લાયબ્રેરી વિગેરે જેમ જેમ અનુકુળતા મળે તેમ તેમ શરૂ કરવા અભિલાષા ધરાવે છે. દાદરની અંદર આપણા સહધર્મીઓનાં લગભગ ૫૦૦ ઘરો છે, અને એ સર્વે ભાઇઓ શ્રી સંઘના કાર્યમાં રસ લઇ ખૂબ ઉત્સાહથી બધી પ્રવૃત્તિઓમાં સુંદર ફાળો આપી રહ્યા છે.

કાર્યવાહક સમિતિ:—

૧	શ્રી.	ચીમનલાલ અમરચંદ સંઘવી	પ્રમુખ
૨	,,	અમૃતલાલ ગોબરભાઇ મહેતા	ઉપ–પ્રમુખ
૩	,,	મોતીલાલ બાવલભાઇ મહેતા	
૪	,,	વાલજીભાઇ શંભુલાલ શાહ	ખજાનચી
૫	,,	મણીલાલ નાનજીભાઇ શાહ	
૬	,,	તારાચંદ મોરારજી મહેતા	
૭	,,	લીલાધર મલુકચંદ શાહ	
૮	,,	રતિલાલ રેવાશંકર મહેતા	માનદ્ મંત્રી
૯	,,	શાંતિલાલ ડુંગરશી શાહ	,,
૧૦	,,	ગીજુભાઇ ઊમિયાશંકર મહેતા	,,
૧૧	,,	કરશનભાઇ લધુભાઇ નિશર	,,
૧૨	,,	રમણીકલાલ અમરચંદ સંઘવી	
૧૩	,,	પદમશી લખમશી મહેતા	
૧૪	,,	રવિચંદ સુખલાલ શાહ	
૧૫	,,	ભીમજીભાઇ ત્રિભોવનદાસ શાહ	
૧૬	,,	શીવજીભાઇ ડોસાભાઇ નિશર	
૧૭	,,	નાનાલાલ કેશવજી મહેતા	

'શ્રી કોટ વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રાવક સંઘ'
કોટ, મુંબઇ–૧

મુંબઇમાં સંઘ સ્થાપવા તથા ઉપાશ્રય બનાવવાની પહેલી આવશ્યકતા કોટમાં હતી, છતાં આજે મોડે મોડે પણ કોટના ભાઇઓ જાગૃત થયા છે.

શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રમણ સંઘના મહારાષ્ટ્ર મંત્રી પૂજ્ય શ્રી કીશનલાલજી મહારાજ સાહેબ તથા શ્રી. સૌભાગ્ય મલજીમહારાજ સાહેબ, વગેરે મુનિવરો,

ચારેક વર્ષ પહેલા કોટમા પધારેલા, તે વખતે સંઘની સ્થાપના કરવામાં આવી હતી.

કોટમાં સ્થાનકવાસી કુટુંબો લગભગ ત્રણસો વસે છે એટલે ઉપાશ્રયની ખાસ જરૂર હોવાથી, કોટના કાર્યકર ભાઈઓએ, ઉપાશ્રય બંધાવવા નિર્ણય કર્યો. ફંડ કરી લગભગ એક લાખ રૂપીઆ ભેગા કર્યા અને એક લાખ રૂપીઆનો જમીનનો પ્લોટ બજારગેટમાં ખરીદી લીધો છે

કોટમા શ્રી વરજીવનદાસ ત્રીભોવન નેમચંદ, શ્રી મગનલાલ પી. દોશી, શ્રી લાલદાસ જમનાદાસ, શ્રી પોપટલાલ પાનાચંદ, શ્રી ધનસુખલાલ અમૃતલાલ પોપટભાઈ, શ્રી વિઠલદાસ પીતાંબર, શ્રી માણેકલાલ પરશોતમ, શ્રી ચુનીલાલ સોભાગચંદ, શ્રી ધીરજલાલ કલ્યાણજી વગેરે ભાઈઓએ ઘણો સારો પ્રયાસ કરી ફંડ એકઠું કર્યું છે.

ઉપાશ્રય માટે બીલકુલ ફંડ નથી. એક લાખનુ ફંડ થયું છે તેની જમીન લેવાઈ છે. બાંધકામ માટે ફંડ ચાલુ છે. સંઘના આગેવાન કાર્યકરો શ્રી મગનલાલ પી. દોશી શ્રી પોપટલાલ પાનાચંદ, શ્રી ચુનીલાલ સોભાગચંદ વગેરે તનતોડ પ્રયાસ કરી રહ્યા છે, અને તેને સફળતા મળતી જાય છે. આશા છે કે આ વર્ષમાં ઉપાશ્રય તૈયાર થઇ જશે. દરેક ધર્મપ્રેમી ભાઈઓએ પોતાનો ફાળો કોટ ઉપાશ્રય માટે આપવાની ખાસ જરૂર છે

શ્રી અખિલ ભારતવર્ષીય શ્વે. સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સના નિયમોને અનુસરીને સંઘ પોતાની પ્રવૃત્તિ કરે છે.

સંઘ તરફથી કોટમાં એક જૈન શાળા (બાળકો તથા બાલિકાઓની) તથા એક શ્રાવિકા શાળા ચાલે છે.

સંઘની કાર્યવાહક સમિતિની ચૂંટણી તાજેતરમાં થઇ હતી. તેના પ્રમુખ તરીકે શ્રી વરજીવનદાસ ત્રીભોવનદાસ, ઉપપ્રમુખ શ્રી મગનલાલ પી. દોશી, સહિત પાંચ ટ્રસ્ટીઓ અને બીજા સત્તર સભ્યો છે. શ્રી વિઠલદાસ પીતાંબર, શ્રી ધીરજલાલ કલ્યાણજી, શ્રી ધનસુખલાલ અમૃતલાલ પોપટલાલ, શ્રી પોપટલાલ પાનાચંદ, શ્રી લાલદાસ જમનાદાસ, શ્રી શીવલાલ જગજીવન, શ્રી મોહનલાલ લાધાભાઈ, શ્રી ચુનીલાલ સોભાગચંદ, શ્રી રતિલાલ ચીમનલાલ શાહ વિગેરે સંઘના ખાસ કાર્યકર્તા છે.

સંઘના બંધારણમા ધાર્મિક પ્રવૃત્તિઓ ઉપર જ ખાસ લક્ષ્ય આપવામા આવ્યુ છે. અહિંસા, પ્રાણી રક્ષા અને જૈન સિદ્ધાંતોના પ્રચાર માટે સંઘ ખાસ પ્રવૃત્તિ કરશે. જો બની શકે તેમ હોય તો એક વાંચનાલાય તથા પ્રકાશન ખાતુ પણ ચાલુ કરવા ઇરાદો રાખે છે.

શ્રી વિલેપાર્લે વર્ધમાન સ્થ. જૈન શ્રાવક સંઘ

ઉપરની સંસ્થાની સ્થાપના પૂજ્ય મુનીશ્રી પૂનમચંદજી મહારાજની પ્રેરણાથી તા ૨૭-૧૨-૪૭ના રોજ કરવામા આવી હતી.

સંસ્થાનો ઉદ્દેશ સ્થાનકવાસી જૈન સમાજની ધાર્મિક તેમજ સામાજીક ઉન્નતિ વધારવાનો રાખવામા આવેલ છે.

મુંબઇના પશ્ચિમ બાજુના પરાઓમા મોટી સંખ્યામા વસતા સ્થાનકવાસી ભાઇબહેનોને ધર્મકરણી કરવા કાંદાવાડી સુધી દૂર જવું પડતું હોવાથી પશ્ચિમના પરામા મધ્ય સ્થળે એક સ્થાનકની જરૂરત ઘણા સમયથી હતી તે વિલેપાર્લેમા સ્થાનક થતાં ઘણેખરે અંશે પુરી પડી છે

શ્રી વિલેપાર્લેનો સંઘ મુંબઇ સકલ સંઘ સાથે જોડાયેલ છે મુંબઈ સકલ સંઘની મદદથી જ વિલેપાર્લેમા સ્થાનક થઇ શક્યું છે.

વિલેપાર્લેમા સ્થાનકનુ મકાન ગામ વચ્ચે જૈનોની વસ્તીમા તેમજ સ્ટેશનની નજીક આવેલ છે તેની ખરીદી તેમ જ ઘટતા સુધારાવધારા કરવામાં આશરે રૂા ૧,૩૦,૦૦૦નો ખર્ચ થયેલ છે. તેમાં રૂા. ૫૦,૦૦૦ મુબઇ સકલ સંઘે, રૂા. ૫૦,૦૦૦, શ્રી વિલેપાર્લે સંઘે તેમ જ રૂા. ૩૧,૦૦૦ રાજકોટનિવાસી શ્રીયુત શામજી વેલજી વીરાણીએ આપેલ છે અને સ્થાનકનુ નામ શ્રીમતી કડવીબાઇ શામજી વેલજી વિરાણી જૈન ધર્મસ્થાનક રાખવામા આવેલ છે. સ્થાનકની જગ્યા ઘણી શાંત અને સુંદર વાતાવરણમાં આવેલ છે તેમ જ ઘણી વિશાળ છે

સ્થાનકમાં છેલ્લાં સાત વર્ષથી દર વર્ષે પૂજ્ય મહારાજ સાહેબો તેમ જ મહાસતીજીઓના નિયમીત ચાતુર્માસ થાય છે તેમ જ શેષ કાળમા પણ મહારાજ સાહેબો તેમ જ મહાસતીજીઓનો લાભ મળે છે તેથી ધર્મપ્રવૃત્તિ તેમ જ સામાજિક પ્રવૃત્તિઓ સારા પ્રમાણમા થાય છે.

બહેનો માટે ધર્મકરણી કરવા માટે અલગ મકાનની ખાસ જરૂરત હોવાથી તે માટે ફંડ ભેગુ કરવામાં આવેલ છે. તેમા સંસ્થાના પ્રમુખ શ્રી ખુશાલભાઈ ખેંગારભાઈ

તરફથી રૂ. ૧૫,૦૦૦, પંદર હજાર આપવાનુ વચન આપવામાં આવેલ છે, કાયદાની આંટીઘૂંટીનો નિકાલ આવ્યેથી વહેલી તકે મકાન તૈયાર થઇ જશે. સંસ્થા હાલમા નીચે મુજબ પ્રવૃત્તિઓ ચલાવે છે·

૧. **આયંબીલખાતુ** : દરેક વર્ષે ચૈત્ર તથા આસો મહીનાની ઓળી કરાવવામા આવે છે તેમા બેઉ ઓળીમા કુલ્લે ૧૫,૦૦) ભાઇબહેનો લાભ ઉઠાવે છે.

૨. **પાઠશાળા** (જૈનશાળા): નિયમિત ચલાવવામા આવે છે. તેનો ૩૫ થી ૪૦ વિદ્યાર્થીઓ લાભ ઉઠાવે છે.

૩. **પુસ્તકાલય તથા વાંચનાલય**· પુસ્તકાલય તથા વાંચનાલયનો લાભ ઘણા ભાઇબહેનો ઉઠાવે છે. પુસ્તકાલયમાં ધાર્મિક ગ્રથો તેમજ અન્ય પુસ્તકોનો સારો સગ્રહ કરેલ છે તેમ જ માસિક, અઠવાડિક સામાયિકો પણ મંગાવવામા આવે છે તેનો સારો લાભ લેવાય છે.

૩. **પાઠયપુસ્તકોની સહાય** ૧ લા ધોરણથી ૧૧ ધોરણ સુધી ભણતા વિદ્યાર્થીઓને પાઠ્યપુસ્તકોની સહાય કરવામા આવે છે તેનો સારા પ્રમાણમાં લાભ લેવાય છે.

૫. **વૈદ્યકીય સહાય** બીમાર માણસોને દવાદારૂની સહાય કરવામાં આવે છે તેમ જ માંદાની માવજતના સાધનો વસાવવામા આવે છે, તેનો લાભ કોઇપણ જાતના બદલા શિવાય આપવામા આવે છે તેનો સારો લાભ લેવાય છે.

૬ તપસ્વીઓને પારણા કરાવવામાં આવે છે.

૭. છેલ્લાં ત્રણ વર્ષથી સ્વામીવાત્સલ્યનુ જમણ કરવામા આવે છે, જેમા આજુબાજુના પરાંમા વસતા તેમજ સ્થાનીક ભાઇબહેનો ભાગ લે છે ૨૫,૦૦) આસપાસની સંખ્યા થાય છે.

૮. સંસ્થાએ રસોઇ તથા જમવાનાં વાસણો પાટલા વિગેરે વસાવેલ છે, તેનો લાભ ઘણા લોકો લે છે અને ભાડુ સારુ આપે છે.

ઉપરની તમામ પ્રવૃત્તિઓનો વાર્ષિક ખર્ચ આશરે રૂ ૧૨,૦૦૦) આસપાસ આવે છે અને તે ખર્ચ દર વર્ષે ફંડ ફાળો કરી તેમ જ વાસણ–ભાડામાથી પ્રાપ્ત કરવામા આવે છે.

સંસ્થામા હાલ નીચે મુજબ સભ્યો છે

કૌટુબિક	સભ્યો	૨૮
આજીવન	,, ...	૫૮
સામાન્ય	,, ...	૨૨૦

સંસ્થાનો વહીવટ પંદર સભ્યોની ચૂંટાયેલ કાર્યવાહક સમિતિ દ્વારા ચાલે છે કાર્યવાહક સમિતિની ચૂટણી દર ત્રણ વર્ષે કરવામાં આવે છે. ૧૮ વર્ષની વયના કોઇ પણ સ્થાનકવાસી ભાઇબહેન સંસ્થાના ધારાધોરણ અનુસાર સભ્ય થઇશકે છે. આજુબાજુના પરામા વસતા ઘણા ભાઇઓ આ સંસ્થાના સભ્યો છે.

સંસ્થાની હાલની કાર્યવાહક સમિતિના સભ્યો નીચે મુજબ છે :

૧	શ્રી ખુશાલભાઇ ખેંગારભાઇ	પ્રમુખ
૨.	,, વાડીલાલ અમરસી શાહ	ઉપપ્રમુખ
૩.	,, ધનજીભાઇ ભવાનભાઇ મહેતા	મંત્રી
૪.	,, ઉમરસીભાઇ રાયશી શેઠિયા	,,
૫.	,, પ્રવીણચંદ્ર સુંદરજી કાપડિયા	સભ્યો
૬.	,, ભોગીલાલ અમુતભાઇ મહેતા	,,
૭.	,, નરસીભાઇ કરસનજી દોશી	,,
૮.	,, વૃજલાલ વીરજી	,,
૯	,, જેઠાલાલ જેતસી દડિયા	,,
૧૦.	,, જગનાથ હંસરાજ	,,
૧૧.	,, કલ્યાણજી હરિદાસ શેઠ	,,
૧૨.	,, વિનાયક વૃજલાલ કોઠારી	,,
૧૩.	,, છગનલાલ નંદલાલ સરવૈયા	,,
૧૪.	,, રમણિકલાલ વૃજલાલ કોઠારી	,,
૧૫.	,, ખાલી છે.	

શ્રી વર્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન શ્રાવક સંઘ–મલાડ

મલાડ સંઘ, મુંબઇ

મલાડમાં લગભગ સ્થાનકવાસી જૈનોનાં ૩૦૦ ઘરો છે. ઉપરાંત આજુબાજુના પરાંઓમા પણ સ્થાનકવાસી જૈનોની સારી વસ્તી છે. ધાર્મિક ક્રિયાઓ, સાધુ–સાધ્વીઓના ચાતુર્માસ માટે ધર્મસ્થાનક તેમજ વિહાર વખતે રસ્તા, વિરામસ્થળ અને વિરારથી વિલેપાર્લે સુધીના લાંબા ગાળામાં એકેય સ્થાનકવાસી ઉપાશ્રય ન હોવાથી ઉપાશ્રયના મકાનની ખૂબ જ આવશ્યકતા હતી તે શ્રી વર્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન શ્રાવક સંઘ, મલાડ તરફથી પૂર્ણ કરવામાં

આવી અને એક ભવ્ય, વિશાળ અને આલીશાન મકાન સવત ૨૦૦૯ માં તૈયાર કરવામા આવ્યુ. આ મકાનનુ નામ શેઠ કેશરીમલ અનોપચદજી ગુગલિયા સ્થાનકવાસી જૈન પૌષધશાળા રાખવામાં આવ્યુ છે કારણ કે તેમના પુત્ર શ્રી વસ્તીમલજી કેશરીમલજી ગુગલિયા તરફથી મલાડ સઘને ૧૫,૦૦૦) જેવી મોટી રકમ અર્પણ કરેલ છે. આ ઉપરાત સઘના હાલના પ્રમુખ શ્રી કાનજીભાઇ પતુભાઇ શાહ તરફથી રૂ. ૭,૫૦૦) જેવી મોટી રકમ મળવાથી ઉપાશ્રય મકાન ફડને સારો વેગ મળેલ. આ ઉપરાત સેવાભાવી ઇન્જિનિયર શ્રી ચુનીલાલ સગાણીની દેખરેખ અને માર્ગદર્શન હેઠળ ઉપાશ્રયનુ ભવ્ય મકાન તૈયાર થયેલ.

આ ઉપાશ્રયનું મકાન થતાજ પહેલુ ચાતુર્માસ પૂજ્ય મહાસતીશ્રી સજ્જન કુવરજીના શિષ્ય શ્રી પુષ્પ-કુવરજી આદીઠાણા ૪નુ થયુ. બીજુ ચાતુર્માસ પૂજ્ય મહાસતીશ્રી ચપાકુવરજીના શિષ્ય આદીઠાણા ૩નુ થયેલ અને હાલમા ત્રીજુ ચાતુર્માસ પૂજ્ય શ્રી માંગીલાલજી આદીઠાણા ૩નુ થયુ છે. આ ઉપરાત આ ધર્મસ્થાન-કમાં અન્ય મુનિરાજો અને મહાસતીશ્રીઓએ વિહાર વખતે અને શેષકાળ વખતે આ ધર્મસ્થાનકમા ટૂક સમય માટે રોકાઇને અમુલ્ય ધર્મલાભ જૈન સમાજ તથા અન્ય સમાજને આપે છે.

આ ઉપરાંત શ્રી મલાડ સઘ તરફથી આએલ ખાતુ, જૈન શાળા, ઠામવાસણ ખાતુ વગેરે ચાલે છે જૈન શાળામાં લગભગ ૪૦થી ૫૦ બાળકોની સખ્યા છે અને હાલમા કાદાવાડી ઉપાશ્રયમાં લેવાયેલ ધાર્મિક પરીક્ષામા આ જૈન શાળાના બાળકોએ સારા માર્ક ઉપરાત ઇનામો મેળવેલ હતા આએલ ખાતાનો અને ઠામવાસણ ખાતાનો સ્થાનકવાસી જૈનો સારો લાભ લઇ રહ્યા છે.

હાલની સઘની કાર્યવાહક કમિટીના નીચે મુજબ સભ્યો અને હોદ્દેદારો છે. તેઓનો આછો પરિચય નીચે મુજબ છે.

શ્રી કાનજીભાઇ પતુભાઇ શાહ

એઓશ્રી સઘના પ્રમુખ, ટ્રસ્ટી અને આજીવન સભ્ય છે. શ્રી સઘને તેમના તરફથી રૂ. ૭,૫૦૦) જેવી ઉદાર સખાવત મળે છે. એઓશ્રી શ્રીસઘમા પ્રિય છે, જેનુ મુખ્ય કારણ તેઓના મિલનસાર સ્વભાવ, સરળતા, સાદાઇ અને સેવાનિષ્ઠતાના મુખ્ય ગુણો છે. એઓશ્રીને અ. ભા શ્વે. સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સમા પ્રતિનિધિ તરીકે નિયુક્ત કરેલ છે. એએશ્રી અન્ય સસ્થાઓ જેવી કે કોંગ્રેસ, વ્યાપારી મડળ અને અનેક કચ્છી સસ્થાઓમાં સક્રિય કાર્યકર્તા છે. પોતે વ્યાપારી સમાજમા અગ્રસ્થાને હોવાથી સઘના મકાન ફડમાં વેપારી આલમમથી ફાળો મેળવી આપેલ છે. સઘના મકાન બાંધવામા, મકાન ફડ મેળવવામાં, સઘનુ કાર્ય વ્યવસ્થિત ચલાવવામા અને સઘના દરેક કાર્યમા તન, મન અને ધનથી મદદ આપી રહેલ છે. ટૂકમાં સેવા એ જ એમનુ જીવનધ્યેય છે.

શ્રી ઉમરશી ભીમશીભાઇ શાહ

એઓશ્રી સઘના ઉપપ્રમુખ, ટ્રસ્ટી અને આજીવન સભ્ય છે. એઓશ્રી મેસર્સ હીરજી ઉમરશી કું.ના મુખ્ય ભાગીદાર છે. જેના તરફથી સઘને રૂ. ૧,૫૦૧) જેવી ઉદાર સખાવત મળેલ છે. એઓશ્રીની પેઢી બિલ્ડિગ મટિરિયલ સપ્લાઇનુ કાર્ય કરતી હોવાથી બિલ્ડિગ લાઇનમા સારામા સારો અનુભવ અને કારીગરો સાથે સારામા સારો સપર્ક ધરાવતા હોવાથી સઘને સારામા સારુ મકાન, ટૂકામા ટૂકી કીમતે બનાવી આપવામા તેઓશ્રીનો મુખ્ય ફાળો છે એટલુ જ નહી પરંતુ સઘનુ મકાન વહેલામા વહેલુ બનાવવા અને લોઢુ, સીમેન્ટ જેવી કન્ટ્રોલની વસ્તુઓ મેળવી આપવા દિવસ–રાત એઓશ્રીએ જહેમત ઉઠાવેલ છે. બીજા સઘના કાર્યકર્તાઓએ મલાડ સઘનુ મકાન આટલી ઝડપથી અને આટલુ ભવ્ય અને ટૂકી કીમતમા બનાવવા માટે ધન્યવાદ પણ આપેલ છે. સઘ પણ મક્કમ માને છે કે ઉમરશીભાઇના અથાગ પરિશ્રમનુ જ ફળ આજનુ ભવ્ય અને વિશાળ ઉપાશ્રયનુ મકાન છે. એઓશ્રી જૈન કોમ તથા કચ્છી કોમમા પણ એટલા જ પ્રિય અને સેવાભાવી છે. તેમનો ઉદ્દેશ કોઇ પણ માટે કાંઇક કરી છૂટવુ એ જ છે. તેઓશ્રી મલાડ બજારના પટેલ (પ્રમુખ) છે અને વ્યાપારી મડળના મત્રી, ઉપરાત મલાડ ડિસ્ટ્રિક્ટ મ્યુનિ-સિપાલિટીના કાઉન્સિલર છે. એઓશ્રી મકાન ફડ માટે અથાગ પરિશ્રમ કરી પોતાની લાગવગ અને ઓળખાણનો ઉપયોગ શ્રી સઘના ઉત્કર્ષ માટે કરે છે. ટૂકમાં એઓશ્રી સઘના સ્થભ સમાન છે.

શ્રી વસ્તીમલજી કેશરીમલજી ગુગલિયા

એઓશ્રી સઘના ખજાનચી, ટ્રસ્ટી અને આજીવન સભ્ય છે. મલાડ-સઘના મકાનના પ્રાણદાતા છે એમ

કહીએ તો વ્યાજબી ગણાશે. મલાડ સંઘના મકાનની પ્રેરણા અને ફંડની શુભ શરૂઆત એઓશ્રીની સખાવતથી જ થયેલ. રૂા ૧૫,૦૦૧) જેવી ઉદાર રકમ આપી પોતાના પિતાશ્રીનું નામ અમર કરાવી મલાડ સંઘને મકાન બાંધવામાં તેઓશ્રી મુખ્ય પ્રેરક હતા. સંઘની સ્થાપનથી આજ સુધી દરેક સંઘના કાર્યોમાં તેઓશ્રી સક્રીય ભાગ લઇ તન, મન અને ધનથી સેવા આપે છે. એઓશ્રી મલાડના જૂનામાં જૂના વતની હોવાથી અને સંઘના જૂનામાં જૂના કાર્યકર હોવાથી સંઘને તેઓશ્રીનું માર્ગદર્શન મળે છે. ઉપરાંત એઓશ્રી ધાર્મિક વૃત્તિવાળા, અત્યંત વિનયી અને સાદા હોવાથી સંઘમાં અતિ પ્રિય થઇ પડેલ છે ટૂંકમાં ગૃહસ્થી સાધુ કહીએ તો કાંઇ ખોટું ન ગણાય. એઓશ્રી મારવાડી સમાજમાં, અન્ય સામાજિક સંસ્થાઓમાં પણ સક્રીય ભાગ લઇ સેવા બજાવી રહ્યા છે. મલાડ સંઘના પ્રાણ કહો તો તે છે.

શ્રી ચંદુલાલ ગુલાબચંદ દેશાઇ

એઓશ્રી સંઘના માનદમંત્રી, કાર્યવાહી કમિટીના સભ્ય અને આજીવન સભ્ય છે. શ્રી સંઘને એઓશ્રી તરફથી રૂા. ૫૦૧) જેવી ઉદાર સખાવત મળેલ છે. એઓશ્રી સંઘને દરેક પ્રકારે સેવા આપે છે સાધુ-મુનિરાજોના ચાતુર્માસ, તેઓના દર્શનનો લાભ અને સંઘ માટે ફંડ એકઠું કરવું એ જ એઓશ્રીનો દૈનિક કાર્યક્રમ રહેલ છે. સ્વભાવે અત્યંત માયાળુ હોવાથી અતિ પ્રિય બની ગયેલ છે. એઓશ્રી ગોરેગાંવ રહેતા હોવાથી દરેક સાધુ-સાધ્વીશ્રીઓને માટે પોતાનો બંગલો વિરામસ્થળ તરીકે વાપરવા આપી ધર્મલાભ મેળવે છે. આ ઉપરાંત અન્ય સંસ્થાઓમાં પણ અગ્ર ભાગ લઇ રહેલ છે. એઓશ્રી શ્રી. સૌરાષ્ટ્ર દશ તાલુકા સ્થાનકવાસી જૈન સમાજના પ્રમુખ છે. અંતમાં તેઓશ્રીનો સહકાર મલાડ સંઘને હરહંમેશ મળે છે અને તન, મન અને ધનથી આપે છે

શ્રી મુલચંદ દેવચંદ સંઘવી

તેઓશ્રી સંઘના કાર્યવાહક કમિટીના સભ્ય ઉપરાંત માનદમંત્રી છે. તેઓશ્રી તરફથી શ્રી સંઘને રૂા. ૬,૦૦૧ જેવી સખાવત તેઓશ્રીના પિતાશ્રી દેવચંદ નેણશી સંઘવીના નામથી મળેલ છે. તેઓશ્રી અગાઉ કરાચી સ્થાનકવાસી જૈન સંઘમાં અગ્રસ્થાને કાર્ય કરતા હોવાથી અને તેઓના પિતાશ્રી કરાચી સ્થાનકવાસી જૈન સંઘના મેનેજિંગ ટ્રસ્ટી હોવાથી સંઘનું સંચાલન તેઓશ્રી કરતા હતા અને તેઓશ્રીનો અનુભવ, કાર્યદક્ષતા, અને વ્યવસ્થાનો લાભ મલાડ સંઘને મળેલ છે. તેઓશ્રી યુવાન છે અને યુવકો અને પ્રૌઢો વચ્ચે સુમેળ સ્થાપી મલાડ સંઘમાં ટૂંક સમયમાં જ સંઘના મંત્રી તરીકેનું સ્થાન પ્રાપ્ત કરેલ છે. તેઓશ્રી સેવાભાવી ઉપરાંત સ્વભાવે મિલનસાર હોવાથી બહોળું મિત્રમંડળ ધરાવે છે. અને સાધનસંપન્ન હોવાથી ઘણોખરો વખત સંઘની તથા અન્ય સામાજિક સંસ્થાઓની સેવામાં આપે છે. મલાડ સંઘનું વ્યવસ્થિત કાર્ય અને સેવા એ જ એમનું ધ્યેય છે. તેઓશ્રી આ ઉપરાંત શ્રી શ્વે સ્થાનકવાસી જૈન યુવક મંડળના પ્રમુખ તરીકે, શ્રી સૌરાષ્ટ્ર દશ તાલુકા સ્થાનકવાસી જૈન સમાજના મંત્રી તરીકે અને અનેક સંસ્થાઓમાં અગ્ર કાર્યકર તરીકે પોતાની સેવા આપે છે. ટૂંકમાં યુવાન, ઉત્સાહી અને સેવાભાવી કાર્યકર છે.

શ્રી છગનલાલ તારાચંદ કોઠારી

એઓશ્રી સંઘના કાર્યવાહક કમિટીના સભ્ય, આજીવન સભ્ય અને અગ્ર કાર્યકર છે. એઓશ્રીએ સંઘને રૂા. ૫૦૧) જેવી રકમ મકાન ફંડમાં આપેલ છે. એઓશ્રી મલાડ સંઘની સ્થાપનાથી જ સંઘના દરેક કાર્યમાં ખૂબ રસ લઇ સેવા આપી રહેલ છે અને શરૂઆતથી આજ સુધી કાર્યવાહક કમિટીમાં ચૂંટાઇ આવેલ છે અને સંઘના સભ્યોમાં પ્રિય બનેલ છે. તેએશ્રીએ મકાન ફંડ મેળવી આપવામાં પોતાના બહોળા મિત્રમંડળ અને ઓળખીતાઓમાંથી સારી એવી રકમ મેળવી આપેલ છે. શ્રી મલાડ સંઘને તેઓ હરહંમેશ તન, મન અને ધનથી સેવા આપે છે. આ ઉપરાંત તેઓશ્રી અન્ય સંસ્થાઓમાં સક્રિય ભાગ લઇ રહેલ છે. તેએશ્રી સૌરાષ્ટ્ર દશ તાલુકા સ્થાનકવાસી જૈન સમાજના ઉપપ્રમુખ તરીકે કાર્ય કરે છે. ટૂંકમાં સંઘના જૂના અને સેવાભાવી ઉત્સાહી કાર્યકર છે.

શ્રી નટવરલાલ ગિરધરલાલ કગથરા

એઓશ્રી સંઘના કાર્યવાહક કમિટીના સભ્ય ઉપરાંત જૈન શાળા કમિટીના સભ્ય છે. મલાડ સંઘની શરૂઆતથી જ એઓશ્રી સક્રિય ભાગ લઇ રહેલ છે એઓશ્રી મલાડમાં જ પોતાનો સ્વતંત્ર વ્યવસાય

ચલાવતા હોવાથી મલાડ સંઘની તેઓ સારી સેવા બજાવે છે. અને સારો વખત સંઘની સેવામાં આપે છે. આબેલખાતામા, જૈન શાળામા અને અનેક કાર્યોમાં સમયનો ભોગ આપી સેવા કરે છે એઓશ્રી યુવાન અને ઉત્સાહી છે અને બહોળો મિત્રસમુદાય ધરાવતા હોવાથી મલાડમા જૈનો ઉપરાત અન્ય કોમોમાં પણ નટુભાઇના પ્રિય નામથી પ્રખ્યાત છે આ ઉપરાત અન્ય ઘણીક સસ્થાઓમા સક્રિય કાર્યકર્તા છે. ઉપરાત શ્રી સૌરાષ્ટ્ર દશ તાલુકા સ્થાનકવાસી જૈન સમાજના મંત્રી, ડિસ્ટ્રિક્ટ કોંગ્રેસ કમિટીના સભ્ય, શ્રી શ્વેતામ્બર સ્થા. જૈન યુવક મંડળની કાર્યવાહક કમિટીના સભ્ય, શ્રી મલાડ વ્યાપારી મંડળના મંત્રી, શ્રી મલાડ યુવક મંડળના સક્રિય કાર્યકર તથા કાર્યવાહક કમિટીના સભ્ય તરીકે સેવાઓ આપે છે. સંઘનાં અનેક કાર્યો જેવાં કે આબેલખાતુ, જૈનશાળા, મકાન ફંડ વગેરેમા આગળ પડતો ભાગ લઇ સંઘની સારામાં સારી સેવા બજાવી રહેલ છે. ટૂંકમાં તેઓશ્રી યુવાન ઉત્સાહી અને સક્રિય કાર્યકર્તા છે.

શ્રી વૃજલાલ નારણજી શાહ

એઓશ્રી સંઘની શરૂઆતથી આજ સુધી સંઘમાં અગ્રગણ્ય ભાગ લઇ રહ્યા છે સંઘની શરૂઆતમાં સંઘનું સંગઠન કરવામા મુખ્ય ફાળો તેઓનો હતો. સંઘમા તેઓશ્રીએ મંત્રી તરીકે અને કાર્યવાહક કમિટીના સભ્ય તરીકે અનેક વર્ષો કાર્ય કરેલ છે. હાલમા એઓશ્રી સંઘની કાર્યવાહક કમિટીના સભ્ય છે. ઉપરાત એએ શ્રી સંઘની કાર્યવાહક કમિટીના સભ્ય છે. ઉપરાત એએ શ્રી અન્ય સસ્થાઓમાં સક્રિય ભાગ લઇ રહ્યા છે. તેઓશ્રી ઝાલાવાડી સ્થાનકવાસી મિત્રમંડળના મંત્રી તરીકે પણ સેવા આપે છે. ટૂંકમાં સંઘના કાર્યમાં ઊંડો રસ ધરાવે છે.

શ્રી ચીમનલાલ ભૂધરદાસ ગાંધી

એઓશ્રી સંઘની કાર્યવાહક કમિટીના સભ્ય છે, ઉપરાત સંઘના મંત્રી તરીકે પણ કાર્ય કરેલ અને સંઘના દરેક કાર્યમા આગળ પડતો ભાગ લે છે. આ ઉપરાત અન્ય સસ્થાઓમા પણ સક્રિય ભાગ લે છે અને સેવા આપે છે. તેઓશ્રી ઝાલાવાડી સ્થાનકવાસી મિત્ર મંડળમા મંત્રી તરીકે હોદ્દો ભોગવે છે ટૂંકમા સંઘને તેઓએ અનુપમ સેવા આપેલ છે.

શ્રી વરજાંગ શિવજીભાઇ

એઓશ્રી સંઘના કાર્યવાહક કમિટીના સભ્ય ઉપરાત આજીવન સભ્ય છે. એઓશ્રીએ શ્રી સંઘને રૂ. ૩૫૧) જેવી રકમ આપી મંઘના મકાન ફંડમા મદદ કરેલ છે. ઉપરાત એઓશ્રી વેપારી આલમમાં જાણીતા હોઇ, સંઘના મકાન ફંડ માટે ભારે જહેમત ઉઠાવી સંઘને મકાન ફંડમા સારી એવી રકમ મેળવી આપેલ છે. તેઓ ઉત્સાહી અને સેવાવૃત્તિવાળા હોવાથી સંઘમા તેમજ તેમની કચ્છી કોમમા અગ્રસ્થાન ભોગવે છે. ટૂંકમા સંઘને તેઓ ઘણી રીતે સહાયરૂપ થયેલ છે.

શ્રી મેઘજી દેવશીભાઇ

એઓશ્રી સંઘના કાર્યવાહક કમિટીના સભ્ય, ઉપરાંત આજીવન સભ્ય પણ છે. એઓશ્રીએ સંઘના મકાન ફંડમાં રૂ. ૫૦૧) આપી સંઘને સહાય કરેલ છે. એઓશ્રી વયોવૃદ્ધ હોવા છતા અતિ ઉત્સાહી અને ધાર્મિક-વૃત્તિવાળા હોવાથી સંઘની તેઓ હંમેશ તન, મન અને ધનથી સેવા આપી રહ્યા છે

શ્રી રવજી શામજીભાઇ

એઓશ્રી સંઘના કાર્યવાહક કમિટીના સભ્ય ઉપરાત આજીવન સભ્ય છે. એઓશ્રીએ સંઘને રૂ. ૩૫૧) જેવી રકમ આપી મકાન ફંડને મદદ કરેલ છે. તેઓશ્રી યુવાન અને ઉત્સાહી હોવાથી સંઘના દરેક કાર્યમા તન, મન અને ધનથી સેવા આપે છે. એઓશ્રી કાંદીવલીમા રહેતા હોવાથી ત્યા પણ જૈન શાળા અને સંઘના કાર્યમા આગળ પડતો ભાગ લે છે.

શ્રી મોહનલાલ વર્ધમાન દેશાઇ

એઓશ્રી સંઘની કાર્યવાહક કમિટીના સભ્ય છે. ઉપરાંત સંઘના આજીવન સભ્ય પણ છે. તેઓશ્રીની મુખ્ય સેવામા સંઘના મકાન ફંડ માટે એમના બહોળા મિત્રસમુદાયમાં અને વેપારી આલમમા ભારે જહેમત ઉઠાવી સારી એવી રકમ મેળવી આપેલ છે. તેઓશ્રી ધાર્મિકવૃત્તિના અને અતિ મિલનસાર સ્વભાવના હોવાથી સંઘના દરેક કાર્યમા ઉત્સાહથી કામ કરે છે અને સંઘને તેમની સેવા આપે છે.

શ્રી રામજી નાગશીભાઇ

એઓશ્રી સંઘની કાર્યવાહક કમિટીના સભ્ય છે. ઉપરાંત સંઘના આજીવન સભ્ય પણ છે. ઉપરાત સંઘને મકાન ફંડમા રૂ. ૫૦૧) જેવી રકમ આપી સંઘને મદદ કરેલ છે. એઓશ્રી સંઘના દરેક કાર્યમાં તન, મન અને

વનથી સેવા આપે છે. ગત વર્ષો આએલખાતાના રસોડાનો કુલ ખર્ચ તેમના તરફથી સંઘને મળેલ હતો. પોતે વેપારી આલમમાં બહોળુ મિત્રમંડળ ધરાવતા હોવાથી સંઘને મકાન ફંડમાં સારી રકમ મેળવી આપવા, સારી જહેમત ઉઠાવેલ અને હજુ પણ ઉઠાવી રહેલ છે.

આ ઉપરાંત મલાડમા સ્થાનકવાસી જૈનોની અન્ય પ્રવૃત્તિઓમા શ્રી શ્વે. સ્થાનકવાસી જૈન યુવક મંડળ છે. તેઓની મુખ્ય પ્રવૃત્તિઓ સામાજિક છે. તેઓ તરફથી માંદાની માવજતના સાધનો, વિદ્યોત્તેજક પ્રવૃત્તિઓ જેમાં પુસ્તકો વગેરે ફ્રી આપવા, આનંદ પર્યટનો, સ્નેહસમેલનો ભરવા, ઉપરાંત સંઘની દરેક પ્રવૃત્તિઓમાં ઉત્સાહથી મદદ કરવા તૈયાર રહે છે તે મંડળના પ્રમુખ શ્રી. ઉમરશી ભીમશીભાઈ વીરા છે અને ઉપપ્રમુખ શ્રી. મલચંદ દેવચંદ સંઘવી છે. મંત્રીઓ તરીકે શ્રી. મણિલાલ ગુલાબચંદ પંચમિયા તથા પોપટલાલ સી. શેઠ છે. મલાડમાં તે મંડળ તરફથી એક જમીન ખરીદ કરવામા આવેલ છે અને તેના ઉપર મકાન કરી નાઈટ સ્કૂલ, વાંચનાલય, પુસ્તકાલય, વ્યાયામશાળા વગેરે કરવા તેઓની નેમ છે. હાલમા તેઓ એક લાઇબ્રેરી પણ ચલાવે છે.

આ ઉપરંત સ્થાનકવાસી જૈનોની એક બીજી સસ્થા શ્રી સૌરાષ્ટ્ર દશ તાલુકા સ્થાનકવાસી જૈન સમાજ છે, જેઓનુ મુખ્ય કાર્ય સગઠન, સેવા અને ભાઈચારો વધારવાનો છે. તેના પ્રમુખ શ્રી ચંદુલાલ ગુલાબચંદ દેશાઈ અને ઉપપ્રમુખ તરીકે શ્રી. છગનલાલ તારાચંદ કોઠારી છે. મંત્રી તરીકે શ્રી. મુલચંદ દેવચંદ સંઘવી તથા નટવરલાલ ગિરધરલાલ કગથરા છે. હાલમા તેઓના તરફથી એક સમૂહ પ્રીતીભોજન કરવામા આવેલ હતુ.

શ્રી વર્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન શ્રાવક સંઘ, અંધેરી, મુંબઈ

સ્થાપના—પંડિત મુનિશ્રી સહસ્રમલજી મહારાજ, આદિઠાણા પાંચ, તા. ૨૬-૧૨-૧૯૫૪ના દિને પધારતા તેમની પ્રેરણાથી થઈ છે.

આપણા સ્થાનકવાસી ઘરની સંખ્યા, એકંદરે લગભગ સોની છે.

ભાઈઓનો ઉત્સાહ સારો છે. બનતી ત્વરાએ ઉપાશ્રયનુ મકાન બાંધવાની ઇચ્છા છે. મકાન થયે જૈન શાળા વિગેરે પ્રવૃત્તિઓ ચાલુ થશે.

સંઘના ઓધ્ધેદારો નીચે મુજબ છે:

પ્રમુખ: શ્રી. માણેકલાલભાઈ કેશવલાલભાઈ.
ઉપપ્રમુખ: શ્રી. વીજપારભાઈ કેશવજીભાઈ.
ખજાનચી: શ્રી. ડાહ્યાભાઈ મયાચંદ.
મંત્રીઓ: શ્રી. રૂપચંદ શિવલાલ કામદાર
શ્રી. ધીરજલાલ હરજીવનદાસ ઝોબાલિયા

ઉપાશ્રયના મકાન માટે શ્રીયુત્ ભાઈશ્રી દેવજીભાઈ કરમશીભાઈ સારી મહેનત લઈ રહ્યા છે.

શ્રી વર્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ, બોરીવલી, મુંબઈ

ભારતની રાજકીય આઝાદીના ઉદય સમયે, મુંબઈના પરાંઓમાં આપણા સહધર્મી બંધુઓની વસ્તીનુ પ્રમાણ વધતુ જતુ હતુ. આ રીતે વધતી જતી સહધર્મી જનસંખ્યાને ધાર્મિક તેમજ સામાજિક ક્ષેત્રે સંગઠિત કરી સુવ્યવસ્થિત કરવાની ખાસ જરૂર હતી. થોડા ઉત્સાહી ભાઈઓના પ્રયત્નોથી તા ૩-૮-૧૯૫૨ ના રોજ ઉપરોક્ત સંસ્થાનુ સ્થાપન કરવામાં આવ્યુ.

બોરીવલીનો સ્થા. જૈન સમાજ મુખ્યત્વે મધ્યમ-વર્ગીય છે. સંસ્થાના કાર્યકર્તાઓ ખૂબ જ ઉત્સાહી છે અને સુંદર વ્યવસ્થાશક્તિ ધરાવે છે જ્યારે માત્ર રૂા. ૬,૦૦૦નુ જ સ્થાનક ભંડોળ એકઠુ થયુ હતું ત્યારે શ્રી સંઘના કાર્યકર્તાઓએ અજોડ સાહસવૃત્તિ દાખવીને રૂા. ૬૫,૦૦૦ની કિંમતનું આશરે ૩,૯૦૦ ચોરસ વારના ક્ષેત્રફળનુ તૈયાર મકાન ખરીદી લીધું, અને રૂા. ૫,૦૦૦ બાનાના પણ આપી દીધા. અત્યારે ઉપરોકત સંઘને મકાન ફાળામા રૂા. ૭,૫૦૦ ની ખાધ છે.

ત્રણ વરસની ટૂંકી કારકિર્દીમાં શ્રી સંઘે પ્રશંસનીય પ્રગતિ સાધી છે. શ્રી સંઘે **ગુપ્તદાનના ભવ્ય આદર્શને અપનાવીને,** શ્રી ઉપાશ્રય મકાન ઉપર તેમજ તેના કોઈ પણ વિભાગ પર નામાભિધાનની પ્રથા બંધ રાખેલ છે; અને એ રીતે મુંબઈ ક્ષેત્રના સંઘોની સંસ્થાપન કારકિર્દીમા શ્રી બોરીવલી સંઘે એક વિશિષ્ટ અને અનુકરણીય આદર્શનો ઉમેરો કર્યો છે.

શ્રી સંઘના ટ્રસ્ટીઓ તથા મુખ્ય કાર્યકર્તાઓ

(૧) શ્રીયુત વેલજીભાઈ મોણસીભાઈ ટ્રસ્ટી તથા પ્રમુખ
(૨) ,, શાન્તિલાલ ભાણજીભાઈ અંબાણી ,, તથા ઉપપ્રમુખ.
(૩) ,, ભીખાલાલ ખેતસીભાઈ મહેતા ,, તથા ખજાનચી.
(૪) ,, છોટાલાલ કેશવજી શાહ ,,

(૫) ,, મોહનલાલ અમીચંદ ટોળીયા ,,
(૬) ,, ઝવેરચંદ માણેકચંદ ભાયાણી ,,
(૭) ,, ભાઇલાલ ભૂરાલાલ શેઠ માનદમંત્રી.
(૮) ,, હીરાચંદ મોતીચંદ દેશાઇ ,, ,,

ઉપરાંત બીજા ૫૬ર કાર્યકરોનું જૂથ, ઉત્સાહપૂર્વક કાર્ય કરી રહેલ છે.

સાબરમતી (અમદાવાદ) સંઘ

અત્રે એક સ્થાનકવાસી છ કોટી જૈન ઉપાશ્રય માળસહિત છે તથા બીજા ઉપાશ્રય માટે જમીન લીધી છે (ભેટ મળેલી છે).

અત્રે બાળા તથા બાળકોની જૈન પાઠશાળા ચાલે છે. તેમા આશરે ૫૦) બાળકો અભ્યાસ કરે છે.

સંઘના આશરે ૬૫) ઘર છે. સંઘનો વહીવટ નીચેની કારોબારી સમિતિ કરે છે. દર સાલ હિસાબ બહાર પાડવામા આવે છે.

શ્રી. ધારસીભાઇ ઝવેરચંદ હીરાણી-પ્રમુખ, કાપડના વેપારી, રેવડી બજાર, અમદાવાદ.

શ્રી. ભૂરાભાઇ નાગરદાસ ખંધાર–ઉપપ્રમુખ, કાપડના વેપારી, રેવડી બજાર, અમદાવાદ.

શ્રી. મણીલાલ ઉજમશી ખારા–મંત્રી, કાપડના વેપારી, મસ્કતી મારકેટ, અમદાવાદ.

શ્રી. હરીલાલ જેઠાલાલ–સહમંત્રી, મિલ સ્ટોર. કપાસિયા બજાર, અમદાવાદ.

શ્રી. મનસુખભાઇ જગજીવનદાસ ગોસળિયા, હાર્ડવેરના વેપારી, રીલીફ રોડ, લુક્કો એંકની બાજુમાં, અમદાવાદ.

શ્રી. પ્રેમચંદભાઇ માણેકચંદભાઇ–એરંડા તથા તેલના વેપારી, એરંડા હોલ, કપાસિયા બજાર, અમદાવાદ.

શ્રી. કરચંદ ઝવેરચંદ હીરાણી–ખજાનચી, કાપડના વેપારી, રેવડી બજાર, અમદાવાદ.

ઉપરના સભ્યો સિવાય નીચેના આગેવાન કાર્યકર્તા પણ છે

શ્રી કેશવલાલ હરીચંદ મોદી–દામનગરવાળા, એલાયડ એન્જિનિયર્સ, રીડ રોડ, અમદાવાદ.

શ્રી. વાડીલાલ માણેકચંદ–પાંચકૂવા, કાપડ બજાર, અમદાવાદ.

શ્રી મણિનગર સ્થા. જૈન સંઘ, મણિનગર, અમદાવાદ

આ સંઘની વ્યવસ્થા માટે ત્રીસ સભ્યોની વ્યવસ્થાપક સમિતિ નિમાઇ છે. વર્તમાન પદાધિકારીઓ નીચે પ્રમાણે છે:

શ્રી ચંદ્રકાંત સી. બેન્કર, પ્રમુખ
શ્રી મૂલચંદજી જવાહરજી, ઉપપ્રમુખ
શ્રી ચીમનલાલ જગજીવનદાસ, સેક્રેટરી
શ્રી નટવરલાલ ગોકળદાસ શાહ. સેક્રેટરી

આ સંઘ આશરે દશ વર્ષથી સ્થપાયેલ છે. મણિનગરમાં આપણા સ્થાનકવાસી ભાઇઓના ૪૦ ઘર છે અને તેઓ સંઘના મેમ્બર્સ છે. અત્રે ઉપાશ્રય નથી. જેની ઘણી જ જરૂરિયાત છે, અત્રે વસતા ભાઇઓ મધ્યમવર્ગના હોઇ ધર્મસ્થાનક થઇ શક્યું નથી; છતાં અત્રે થઇને જતા આવતા સ્થાનકવાસી જૈન સાધુ-સાધ્વીજીને ઊતરવા માટે, વિરામ માટે ચાર–આઠ દિવસ માટેની વ્યવસ્થા અત્રેના કાર્યકર્તાઓના બંગલામાં કરવામાં આવે છે. સાધુ–સાધ્વીઓના પ્રવચનનો લાભ મળે છે. દર વર્ષે પર્યુષણમા–અત્રે વસતા તમામ ભાઇઓના કુટુંબો સંવત્સરી પ્રતિક્રમણ ઘણી જ સારી રીતે કરે છે અને તે અંગે જમણવાર પણ કરવામાં આવે છે. આ અંગે સ્થાનકની જરૂરિયાત છે, અને ખાસ કરીને અમદાવાદમાં વસતા આગેવાનોએ અને અગ્રેસર ભાઇઓએ તે અંગે આંગળી ચીંધવાની જરૂરિયાત છે કારણ કે મણીનગર થઇને વિહાર કરતા સાધુ–સાધ્વીઓને વિરામ કરવાની આવશ્યકતા છે.

શ્રી સૌરાષ્ટ્ર સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ
તથા
શ્રી સૌરાષ્ટ્ર સ્થા. જૈન સહાયક મંડળ,
અમદાવાદ

શ્રી કાંતિલાલ જીવણલાલ શાહ–પ્રમુખ.
શ્રી અમૃતલાલ મગનલાલ ગાંધી–મંત્રી,
શ્રી સૌરાષ્ટ્ર સ્થા. જૈન સંઘ.
શ્રી અમુલખભાઇ નાગરભાઇ શેઠવાળા–પ્રમુખ
શ્રી જાદવજી મોહનલાલ શાહ–સહમંત્રી,
શ્રી સૌરાષ્ટ્ર સ્થા. જૈન સહાયક મંડળ.

સૌરાષ્ટ્રથી આવેલા અને અત્રે લગભગ કાયમી જેવા થઇ ગયેલા આ ભાઇઓએ પોતાનો ભ્રાતૃભાવ જાળવી રાખવા આશરે પાત્રીસેક વર્ષ પહેલાં એક સંગઠન કર્યું અને એ રીતે સૌરાષ્ટ્ર સ્થા. જૈન સંઘની સ્થાપના થઇ. આ સંઘની મુખ્ય પ્રવૃત્તિ દર વરસે એક સ્વામીવાત્સલ્ય કરવું અને આવકના પ્રમાણમા યથાયોગ્ય શિક્ષણ તથા રાહત કાર્યમાં મદદ કરવી એ હતી આવી જૂજ પ્રવૃત્તિ હોવા છતા આ સંઘના ઉત્સાહી કાર્યકરોએ એકધારી રીતે વર્ષો સુધી પોતાની પ્રવૃત્તિઓ જારી રાખી અને સંઘનુ અસ્તિત્વ કાયમ રાખ્યુ. આશરે દોઢસો સભ્યોની શરૂઆતથી થયેલા આ સંઘમા ક્રમેક્રમે સભ્યસંખ્યા આશરે સવા છસો સુધીની પહોંચી ગઇ. શહેરની ચોમેર પથરાયેલા વિસ્તારોમાં હજુ પણ અનેક કુટુંબો છે. જેઓ દૂર હોવાને લીધે અગર બીજા કોઇ કારણે સંઘમા જોડાઇ શકયા નથી. એ બધી ગણતરી કરતાં સૌરાષ્ટ્રના સ્થા. જૈન કુટુંબોની સંખ્યા આશરે એક હજાર થવા જાય છે.

આમ દિવસે દિવસે સમુદાય વધતો જતો હોઇ સામાજિક તથા ધાર્મિક પ્રવૃત્તિઓમાં ઉપયોગી થઇ શકે એ માટે સ્થાવર મિલકત (વાડી-ઉપાશ્રય) વસાવવાનો કાર્યકરોમાં વિચાર ઉદ્ભવ્યો, આમ તો ઘણા સમયથી આ જરૂરિયાત લાગ્યા કરતી હતી પણ એ માટે સંજોગો અને વાતાવરણ તૈયાર નહોતુ, પરંતુ એક પુણ્ય પવિત્ર દિને સંઘના કાર્યકરોએ સંઘના સભ્યો પાસે વાડી અંગેનો વિચાર રજૂ કર્યો અને સંઘના સૌ ભાઇઓએ આ વિચારને સહર્ષ વધાવી લીધો અને સંઘના ઇતિહાસના એ ચિરસ્મરણીય દિને તા. ૯-૯-૫૧ના રોજ આ કાર્યને મૂર્તિમંત બનાવવા માટે સંઘના અંગ તરીકે એક સહાયક મંડળ ઊભુ કરવામાં આવ્યું અને સૌ કાર્યકરોએ તનતોડ મહેનત કરીને જોતજોતામા રૂ. ૯૦,૦૦૦] નેવું હજારનો ફાળો ઉઘરાવ્યો. સંઘના સદ્ભાગ્યે શહેરની મધ્યમાં નગરશેઠના વંડાને નામે ઓળખાતી આશરે ૧૦૫૦] વાર જમીન રૂ. ૧,૦૬,૪૨૩-૦-૦ની કીંમતે માર્યંકરો મેળવી શકયા. તેમના પ્લાન મુજબ તેમની યોજના બે વિભાગમા વહેંચાયેલી છેઃ

વિભાગ એ- વ્યાખ્યાન હોલઃ ૪૪×૫૫ ફૂટના આશરેનો. બાંધકામ ઊંચું અને વધારે ક્ષેત્રફળવાળુ હોઇ તેનો અંદાજ આશરે રૂ. ૬૫,૦૦૦]નો છે. આ હોલને અડીને પાછળના ભાગમાં ત્રણ રૂમો ૨૦×૧૫ની તથા ૧૪×૧૨ની થશે. આયંબીલ ખાતુ પણ શરૂ કરવાનુ ધારેલુ છે.

વિભાગ બી-વ્યાખ્યાન હોલની દક્ષિણ બાજુમા છ રૂમોની સળંગ લાઇન, જેનો ઉપયોગ જૈન શાળા, પુસ્તકાલય વિ.માં કરવાનો વિચારાયો છે.

રાજકોટ સંઘ

રાજકોટમાં સ્થા જૈનોનાં ઘરો લગભગ ૧૧૦૦ છે અને મોટા સંઘમાં તથા નાના સંઘમા લગભગ ૫૦૦ છે. શ્રી સંઘના હોદ્દેદારોની દર ત્રણ વરસે ચૂંટણી કરવામા આવે છે. હિસાબ પણ ઓડિટ કરાવવામા આવે છે. શ્રી. વિરાણીભાઇઓ તન, મન, ધનથી આખા સમાજની સેવા કરે છે.

સંઘના વિશાળ ઉપાશ્રયો પૌષધશાળા જૈન શાળાનાં મકાનો તથા સારા પ્રમાણમાં જગ્યા છે. શ્રી સંઘની ૨૦ જણાની કમિટી કામ કરે છે.

માનદ્મંત્રીઓ: સ્થા. જૈન મોટા સંઘ

હાલમાં સેક્રેટરીઓ તરીકે મહેતા ગુલાબચંદ પાનાચંદભાઇ અને શ્રી. કીરચંદ કચરાભાઇ મકાણી છે.

શ્રી સંઘના નીચે મુજબ ખાતાંઓ છે:

(૧) કાયમી પારણા પ્રભાવના ખાતું: લગભગ ૧૨૧ કાયમી તિથિઓ છે અને જેમાં સવા લાખ રૂપિયાનુ ફંડ છે. દરેક તિથિઓએ સંવર પૌષધ કરનાર ભાઇઓ ને બહેનોને ઉપરોક્ત રકમની વ્યાજની રકમ સરખે ભાગે વહેંચી આપવામાં આવે છે.

(૨) આયંબિલ ખાતું: વર્ધમાનતપ આયંબિલ ખાતું કાયમી ચાલુ છે. જેમાં દર વર્ષે લગભગ ૧૧,૦૦૦ આયંબિલ થાય છે.

(૩) જૈન શાળા કન્યાશાળા· શ્રાવિકા શાળા· શ્રી સંઘ હસ્તક છેલ્લાં ૬૨ વરસથી ચાલે છે લગભગ ૫૦૦ બાળ-બાલિકાઓ એનો લાભ લે છે. ૨૬ શિક્ષકો તથા શિક્ષિકાઓ ધાર્મિક વર્ગોમા કામ કરે છે.

શ્રાવિકા શાળામાં લગભગ ૧૫ બહેનો લાભ લે છે.

(૪) શ્રી ડુંગરશીસ્વામી પુસ્તકાલય: આ પુસ્તકાલય શ્રી સંઘ હસ્તક ચાલે છે. લગભગ ૭,૦૦૦ પુસ્તકો છે. ઘણાં ભાઇઓ અને બહેનો લાભ લે છે. દરેક પેપર્સ પણ મંગાવે છે.

(૫) શ્રી સ્વધર્મી બંધુ રાહત: સ્વધર્મી બંધુને રાહત આપવાનુ કાર્ય શ્રી સંઘ તરફથી ચાલુ છે. એક

વરસમા લગભગ ૧,૭૦૦ કુટુંબોને રાહત આપવામાં આવેલી છે. દર વરસે લગભગ ૨૦,૦૦૦) રૂપિયા રાહત અર્થે આપવામાં આવે છે.

જોરાવરનગર સંઘ

સ્થા. ઘર ૩૦૦ લગભગ છે.
સખ્યા ૧૫૦૦ છે.
સ્થાનક ૩ છે. ભોજનશાળા એક છે. વિશાળ મકાન છે.
વર્ધમાન તપ આયબીલ ખાતુ ચાલે છે.
જૈન શાળા કન્યાશાળા બન્ને ચાલુ છે.
સખ્યા ૧૫૦ લગભગ છે.

શ્રી મહાવીર જૈન કેળવણી મડળ તરફથી સરકારી ગ્રાંટ મજુર કરાવેલી મીડલ સ્કુલ ચાલે છે, જેમા સારી સંખ્યામાં વિદ્યાર્થીઓ લાભ લઇ રહ્યા છે. દીક્ષા ઓચ્છવો ઘણાં થયા હતા સપ સારો છે.

સઘમાં સાત મેમ્બરોની કમીટી છે સ્વ લખમીચદ મનસુખભાઇની સેવા નોંધપાત્ર છે.

હાલની કમિટી

(૧) ચપકલાલ ધનજીભાઇ શેઠ.
(૨) પરભુલાલ ત્રીભોવનદાસ ગોસળીયા,
(૩) જીવણલાલ કરશનદાસ,
(૪) હરીલાલ માણેકચંદ નોલીવાળા.
(૫) અમુલખ જગજીવનભાઇ.
(૬) રતિલાલ ત્રિભોવનદાસ.
(૭) હિંમતલાલ ચાંપશીભાઇ.

શેઠ નાનજી ડુંગરશી, શ્રી સ્થાનકવાસી મોટા ઉપાશ્રય જૈન સંઘ, લીંબડી.

મેનેજીગ કમીટી ૧૩ મેમ્બરોની છે. તેમાં સં. ૨૦૧૨ માટે.

૧. રા. રા. શેઠ લલ્લુભાઇ નાગરદાસ પ્રમુખ,

૨. રા. રા. ચીમનલાલ એમ. શાહ ઓનરરી સેક્રેટરી

૩. રા. રા. શાહ ભીખાલાલ શીવલાલ ઓનરરી ટ્રેઝરર અને બીજા ૧૦ મેમ્બરો છે.

કમિટીની ચૂંટણી દર વરસે થાય છે.

ઘરની સખ્યા ૪૨૫ ઉઘાડા ઘર-૩૦૦) બાકીના ૧૨૫ ઘરવાળા બહારગામ રહે છે. ચાલુ સખ્યા ૧૨૦૦.

જૈન શાળાના વિદ્યાર્થીઓની સંખ્યા ૧૫૦.
શ્રાવિકા શાળાની વિદ્યાર્થિનીઓની સખ્યા ૬૦.
બોર્ડીંગના વિદ્યાર્થીઓની સખ્યા ૬૪.

પૂજ્યશ્રી દેવચદજી સાર્વજનિક પુસ્તકાલયના પુસ્તકોની સંખ્યા દશ હજાર આસપાસ

પૂજ્યશ્રી દેવચદજી સ્કોલરશીપ ફડમાંથી ચાલુ સાલ સુધી સ્કોલરશીપ અપાઇ છે,. પરતુ હવે ફડ ખલાસ થવા આવ્યુ છે

પૂજ્યશ્રી ગુલાબચદ વિદ્યોત્તેજક ફડમાથી સઘના વિદ્યાર્થી ભાઇબ્હેનોને સ્કુલની ચોપડીઓ ફ્રી આપવામાં આવે છે.

સઘ નીચે ચાલતા ખાતાંઓ :-

૧ તલસાણીઆ ઉજમસી ઓધવજી સ્થાનકવાસી જૈન વિદ્યાર્થી ભુવન

૨. શ્રી. અજરામરજી જૈન વિદ્યાશાળા.

૩ શ્રી. સખીદા ગીરધરલાલ મનસુખલાલ વર્ધમાન તપનુ આયબીત ખાતુ

૪. શ્રી. દીપચદજી શ્રાવિકા શાળા.

૫. પૂજ્ય શ્રી. દેવચદજી સાર્વજનિક પુસ્તકાલય.

૬. પૂજ્ય શ્રી દેવચદજી સ્કોલરશીપ ફડ ખાતુ.

૭ પૂજ્ય શ્રી ગુલાબચદજી વિદ્યોત્તેજક ફડ ખાતુ.

૮. શ્રી. કુસુમબેન લગડીવાળા સાધર્મી સાહિત્ય ફડ ખાતુ.

શાસ્ત્રવિશારદ પૂજ્ય આચાર્યશ્રી ગુલાબચંદજી સ્વામી તથા કવિવર્યશ્રી વીરજી સ્વામીએ રચેલાં તેમજ સંશોધીત કરેલાં પ્રકાશિત પુસ્તકો.

૧ શ્રી જૈન શિક્ષણ પાઠમાળા.
૨ શ્રી જૈન નિત્ય શિક્ષણપોથી.
૩ શ્રી સામાયિક સૂત્ર મૂળ.
૪ શ્રી સામાયિક પ્રતિક્રમણ સૂત્ર મૂળ.
૫ શ્રી ત્રણશ્લોક સગ્રહ.
૬ શ્રી જૈનોપદેશ મુક્તાવલી.
૭ શ્રી નીતિદીપક શતક (હીન્દી ભાષાનુવાદ તથા ગુર્જર ભાષાનુવાદ સહીત)
૮ શ્રી છંદ સગ્રહ.
૯ શ્રી ચારશ્લોક સગ્રહ.
૧૦ શ્રી વીર ગહુલી સગ્રહ.
૧૧ શ્રી વીર પદ્યાવલી.

૧૨ શ્રી આનુપૂર્વી, સાધુવંદણા અને રત્નાકરપચીશી.
૧૩ શ્રી નિત્ય પાઠાવલી.
૧૪ શ્રી ધર્મસિંહ મંત્રીનો રાસ અને શિવબોધ
૧૫ શ્રી વીરકથા મૃત ભાગ ૧ લો.
૧૬ શ્રી શ્રાવક આલોયણા.
૧૭ શ્રી વીર કથામૃત ભાગ ૨ જો.
૧૭ શ્રી વીર કથામૃત ભાગ ૩ જો.

જામનગર સંઘ

સ્થા ઘર ૭૦૦ છે સખ્યા લગભગ ૩૫૦૦ છે. જેમાં વિસા, દશા ભાવસાર, સંઘાડીઆ, ખત્રી, પોરવાળ, ઓશવાળ બધા મળીને છે.

સ્થાનક ૨ છે મહેમાનોને ઉતરવા માટે મકાન પણ છે. સંઘની ભોજનશાળા છે.

શ્રી. સંઘ તરફથી શ્રી ડુંગરશી સ્વામી જૈન લાયબ્રેરી છે, જેમાં લગભગ ૫૦૦૦ પુસ્તકો વિગેરે સારી સ્થિતિમા સગ્રહી રાખવામા આવેલ છે. દરરોજ સારી સખ્યામાં ભાઇઓ લાભ લે છે. શાસ્ત્ર ભંડાર પણ છે. જેના સેક્રેટરી તરીકે શ્રી હરીલાલ પ્રભુલાલ શાહ એલ એલ બી એડવોકેટ છે, જેઓ સારી દેખરેખ રાખે છે. જૈન શાળા, કન્યાશાળા, શ્રાવિકા શાળા ચાલુ છે

સખ્યા લગભગ ૩૦૦ની છે. જેમાં ગ. સ્વ વિજ્યાબ્હેન સારી રીતે સેવા આપે છે. ૯ કલાસ ચાલુ છે.

શ્રી સંઘ કેળવણી પાછળ પૂરતુ ધ્યાન આપે છે.

આયબીલની ઓળી બન્ને થાય છે. ચાતુર્માસ થાય છે.

સંઘમા સંપ સારો છે. હાલમાં શેઠ ભગવાનજીભાઇ વારીઆની સેવા નોંધપાત્ર છે.

શ્રી સંઘમા અગાઉ સ્વ. શેઠ જેસંગભાઇ હરખચંદ સ્વ. શાહ દેવચંદ મલુકચંદભાઇએ સારી સેવા બજાવેલી હતી.

હાલમાં ૨૧ મેમ્બરોની કમિટી સંઘની બનેલી છે.

(૧) શેઠ વલમજી ખેતશીભાઇ

(૨) શ્રી. ભગવાનજી રતનશી વારીઆ માજી સેશન્સ જજ ઘણાં વરસો થયાં સેક્રેટરી તરીકે સેવા આપે છે.

(૩) શ્રી. મોનજીભાઇ તુલશીદાસ વોરા વિગેરે કાર્યકર્તા છે.

દશા શ્રીમાળી જ્ઞાતિની વિશાળ જગ્યા છે. જેમા મંડળ તરફથી વિદ્યાર્થીઓને પુસ્તકો વિ.ની સહાયતા આપવામાં આવે છે, જેમા શ્રી. જમનાદાસ નરભેરામ કોઠારી અગ્રેસર છે જામનગરમાં શ્રી જૈન ભોજનાલય પણ ચાલુ છે, ઓછા ચાર્જમા જમાડવામા આવે છે.

(૧) શ્રી વિશા ઓશવાળ મહાજન બોર્ડીંગ છે. (૨) શ્રી જૈન વિદ્યાર્થી ભુવન છે, જેમા બધા ફીરકાના વિદ્યાર્થીઓ લાભ લઇ રહ્યા છે. સંખ્યા ૧૫૦ લગભગ છે.

સંઘવી હાકરસી જેઠાભાઇ ટ્રસ્ટ તરફથી સાધર્મી ભાઇઓને મદદ આપવામા આવે છે.

સંઘવી પદમશી વિક્રમસીભાઇ ટ્રસ્ટ તરફથી સાર્વજનિક ફ્રી દવાખાનુ કેટલાય વરસો થયાં ચાલુ છે.

વિદ્યાર્થીઓને કેળવણી માટે સહાયતા આપવામાં આવે છે.

શેઠ નરભેરામભાઇ ઝવેરચંદ તરફથી સાર્વજનિક દવાખાનુ ૧૫/૨૦ વરસો થયાં ચાલુ છે.

ડો. અનોપચંદભાઇ ડી. સંઘવી સારી સેવા બજાવે છે.

વિશા શ્રીમાળી લોકાગચ્છ જ્ઞાતિ કુંવરજી પક્ષના ૩૦૦ ઘર છે. શ્રી યુવક મંડળ તરફથી માંદાની માવજતનાં સાધનો અપાય છે. વિશા શ્રીમાળી જ્ઞાતીના બે વિશાળ ઉપાશ્રય છે વંડો છે, દુકાનો પણ ને, ભાડાંની આવક સારી છે.

સ્વધર્મી ભાઇઓને ગુપ્ત રાહત પણ આપવામાં આવે છે. વિદ્યાર્થીઓને ફ્રી ચોપડીઓ સ્કોલરશીપ પણ અપાય છે. જેના પ્રમુખ તરીકે ઘણા વરસો થયાં શેઠશ્રી નરભેરામ ઝવેરચંદભાઇ સારી સેવા આપે છે. શેઠશ્રી કાળુભાઇ નવલચંદ પુનાતર સેક્રેટરી તરીકે ૫ દર વરસ થયા સારી સેવા બજાવે છે.

મહેતા માનસંગ મંગળજી વિશા શ્રીમાળી જૈન વણિક બોર્ડિંગ છે. જેમાં સારી સખ્યામા વિદ્યાર્થીઓ લાભ લે છે. શ્રી રવજીભાઇ માનસંગ મહેતા તથા શ્રી ફુલચંદભાઇ વર્ધમાનભાઇ વિ. અગ્રેસર સેક્રેટરી તરીકે સેવા આપે છે

શેઠ શ્રી કપુરચંદ કાળીદાસભાઇએ સેક્રેટરી તરીકે ઘણો વખત સારી સેવા બજાવેલ હતી.

હાલ નીચે પ્રમાણે ટ્રસ્ટીઓ છે જે સારી સેવા આપે છે.

શ્રી મણીલાલ માનસંગ મહેતા, શ્રી. ભગવાનજી બેચરભાઇ શેઠ, શ્રી નરભેરામ ઝવેરચંદ શેઠ, શ્રી પોપટલાલ કાળીદાસ પટેલ, શ્રી કપુરચંદ કાળીદાસ મહેતા.

સુરેન્દ્રનગર સંઘ

સ્થા. ઘર ૪૦૦. સંખ્યા ૨૦૦૦. લગભગ છે ત્રણ સંઘ છે. ઉપાશ્રય એક ભેગો છે.

સાધુ સાધ્વીજીના ચાતુર્માસ વારાફરતી થાય છે.

જૈન શાળામાં ૧૦૦, કન્યાશાળામા ૬૫૦, લગભગ સંખ્યા છે.

૧. વર્ધમાન તપ આયંબીલ ખાતું કાયમી ચલુ છે.

૨. બોર્ડીંગ ચાલુ છે, જેમાં વિદ્યાર્થીઓ ૫૦ છે કોલેજનું કામ પણ સરકાર તરફથી શરૂ થયેલ છે તે પણ જુન માસમાં તૈયાર થઇ જશે તો, કોલેજમાં વિદ્યાર્થીઓ વધશે.

બોર્ડીંગ માટે સેનીટોરીઅમનુ મકાન વેચાણ લીધું છે. તેમા દરેક જાતની સગવડ થઇ શકે તેમ છે, રીપેરીંગ તથા સુધારો કરતા રૂ. ૫૦ હજારનુ થશે.

બોર્ડિંગમાં શીવણ કલાસ તથા ટાઇપ-રાઇટીંગ કલાસ ચાલુ કરેલ છે.

૩. રત્નચંદ્રજી જ્ઞાન મંદિર પણ ચાલે છે. તેમાં શિક્ષણ પ્રાઢ ઉમરનાને અપાય છે તથા શિવણ કલાસ બ્હાઇઓનો ચાલે છે અને 'રત્નજ્યોત' પત્ર નીકળે છે.

સંઘનું સહાયક ફંડ ચાલુ છે, જેમાથી સાધારણ સ્થિતિવાળાને અનાજ તથા રોકડ રકમની સહાયતા આપવામા આવે છે. અહીઆ શ્રી ત્રણે સંઘમા સંપ સારો હોવાથી ત્રણે સંઘના આગેવાનોની સલાહ મુજબ દરેક કાર્યો કરવામાં આવે છે

આગેવાનો નીચે પ્રમાણે છે:

(૧) વકીલ જાદવજી મગનલાલ.
(૨) વલમજી લેરાભાઇ દોશી.
(૩) દોશી ફત્તેહચંદ ત્રીભોવન.
(૪) ન્યાલચંદ અમ્બાવીદાસ ઘડીઆલી.
(૫) રા. સા મણીલાલ ત્રીભોવનદાસ બરોડીઆ.
(૬) મોદી શાંતિલાલ ત્રીભોવનદાસ.

ધ્રાંગધ્રા સંઘ

સ્થા. ઘર ૩૦૦ છે. એ સંઘ છે. સંપ સારો છે.

ઉપાશ્રય ૩ છે. શ્રી સંઘની ભોજનશાળા છે.

જૈનશાળા કન્યાશાળા ચાલુ છે. સંખ્યા લગભગ ૧૨૫ છે ૩ કલાસ ચાલુ છે. સંઘ પુરતી કાળજી રાખી ધાર્મિક અભ્યાસ કરાવે છે. ઇનામો પણ વહેંચવામા આવે છે

આયબીલનુ કાયમી રસોડુ ચાલુ છે. જેમાં સુરજબેન સંઘવીની સેવા અમૂલ્ય છે સંઘના હાલના આગેવાનો નીચે પ્રમાણે છે:

(૧) સંઘવી નરશીદાસ વખતચંદ
(૨) સંઘવી મગળજી જીવરાજ સેક્રેટરી તરીકે કામ કરે છે.
(૩) શાહ હરીલાલ મગળજી.
(૪) શાહ અભેચંદ વાલજીભાઇ

વિ. ની કમીટી કામ કરે છે. ચાતુર્માસ થાય છે. ચાતુર્માસમા તપશ્ચર્યા વિ. સારા પ્રમાણમા થાય છે. ધર્મભાવના સારી છે. ઓળી બન્ને થાય છે. પુસ્તક ભંડાર પણ છે. પાઠશાળા કન્યાશાળાની પરીક્ષા રાજકોટ શિક્ષણ સંઘ તરફથી લેવામાં આવે છે. શાહ પ્રભુદાસ વખતચંદની સેવા નોંધપાત્ર છે.

હળવદ સંઘ

સ્થા. ઘર લગભગ ૪૦ છે સ્થાનક છે. આયબીલ ઓળી બને થાય છે. ચોમાસા કોઇ કોઇ વખત થાય છે. સંઘમાં ધર્મપ્રેમ સારો છે. સંપ સારો છે.

હાલમાં કોઠારી વાડીલાલ હિંમચંદ, કોઠારી કાંતિલાલ પાનચંદ, કોઠારી અમૃતલાલ વખતચંદ, શાહ મોહનલાલ વાલજી, શાહ મનસુખલાલ ત્રીભોવન, વકીલ ઉમેદચંદભાઇ વિગેરે આગેવાનો છે.

જુનાગઢ સંઘ

સ્થાનકવાસી જૈન સંઘના ૩ સ્થાનક છે, સંઘની જગ્યા પણ છે, આરોગ્ય ભુવન પણ છે. પ્લોટમાં પણ શ્રી જૈન ધર્મશાળા છે.

જૈન શાળા-કન્યા શાળા-શ્રાવિકા શાળા ચાલે છે. ૬ કલાસ ચાલે છે.

સંખ્યા લગભગ ૧૫૦ છે.

આયંબીલની ઓળી બને થાય છે. સ્થાનકવાસીના ઘર ૨૭૫ છે.

શ્રી દશા શ્રીમાળી જૈન વણિક વિદ્યાર્થી ભુવન છે. સંઘમાં સંપ સારો છે.

જેમા કોઇ પણ જાતના ભેદભાવ વિના શાકાહારીને દાખલ કરવામાં આવે છે. ૬૦ વિદ્યાર્થીઓ લાભ લે છે, જેમા કે ફ્રી લાભ લે છે.

માસિક રૂ. ૨૫) લેવામા આવે છે.

લાયબ્રેરી છે. પુસ્તકભંડાર છે. સંઘમા સપ સારો છે.

બોર્ડિંગની કમિટીના મેમ્બરો નીચે પ્રમાણે છેઃ

શ્રીમાન જેઠાલાલ પ્રાગજીભાઇ રૂપાણી, પ્રમુખ

શ્રીમાન જયંત પીપલીયા B. A. સેક્રેટરી

શ્રીમાન માસ્તર કુરજીભાઇ કાલીદાસ સેક્રેટરી વિગેરે સારી સેવા બજાવે છે.

શ્રી સ્થા. સંઘના હોદ્દેદારો નીચે પ્રમાણે છેઃ

શ્રીયુત દેવચંદભાઇ ઝવેરચંદ પારેખ, ચોકસી જમનાદાસ વિરજીભાઇ, વકીલ જેઠાલાલ પ્રાગજીભાઇ, માસ્તર કુરજીભાઇ કાળીદાસ, ચોકસી મગનલાલ કાળીદાસ, ચોકસી કપુરચંદ જાદવજી પટેલ, અમેચંદભાઇ ધરમશી મહેતા, ત્રીભોવનદાસ મુળજીભાઇ શાહ, (સેક્રેટરી)

ડો. ચુનીલાલ વાલજીભાઇ વિગેરે ૯ કમિટી મેમ્બરો છે સારી સેવા બજાવે છે.

અગાઉ પણ— સ્વ. ચોકસી કપુરચંદ નાથાભાઇ, સ્વ પારેખ ઝવેરચંદ રતનજી, સ્વ. પારેખ વલભજી લખમીચંદભાઇએ સારી સેવા બજાવેલ હતી આદર્શ નૂતન ગૌશાળા છે. જેમાં ૧૨૫ લગભગ જનાવરો છે જુનાગઢથી ૩ માઇલ દુર છે, મેંદપરા ગૌશાળા જુનાગઢથી ૧૨ માઇલ દુર છે, જેમા ૧૦૦થી ૧૨૫ ગાયો છે. જેમા શ્રી. જેઠાલાલભાઇ સારી સેવા આપે છે.

માંગરોલ (સૌરાષ્ટ્ર) સંઘ

સ્થા. ઘર ૧૫૦ છે. ઉપાશ્રય ૨ છે, પાઠશાળાનાં મકાન છે, કન્યાશાળા પાઠશાળા ચાલુ છે, સંખ્યા ૭૫ લગભગ છે, લાયબ્રેરી છે. ભોજનશાળા પણ છે ચાતુર્માસ કોઇ વખતે થાય છે, કાર્યવાહક કમિટી ૧૧ જણની છે. સપ સારો છે, મહાજનની પાંજરાપોળ પણ સાગમા સારી છે. દર ત્રણ વર્ષે ચૂંટણી કરવામા આવે છે

સ્વ જેચંદભાઇ હરજીવનભાઇ બાબુ, સ્વ. વસનજી અમરચંદ, સ્વ નેમચંદ વસનજીભાઇએ સારી સેવા આપેલ છે.

હાલમાં ચાલુ નીચે પ્રમાણે હોદ્દેદારો છે. શ્રી- ઝવેરચંદભાઇ લીલાધર શાહ, સેક્રેટરી, મણીલાલ પાનાચંદ સુતરીયા. આ ઉપરાંત સાત કમીટી મેમ્બરો પણ છે.

ટ્રસ્ટીઓ · (૧) શ્રી. વરજીવનભાઇ ત્રીભોવનદાસ શેઠ. (૨) શ્રી. હેમચંદભાઇ રામજીભાઇ શેઠ, (૩) શ્રી. જાદવજીભાઇ, લીલાધરભાઇ, (૪) શ્રી. ત્રીભોવનદાસ હરીદાસ.

મજેવડી સંઘ (વાયા વડાળ)

સ્થા સંઘના ઘર આઠ છે. શ્રી મગનલાલ માણેકચંદભાઇ શેઠ તથા શ્રી. જગજીવનભાઇ ધરમશીભાઇ વિ. આગેવાનો છે. સંઘમાં સંપ-ધર્મભાવના સારી છે.

વડાળ સંઘ (સોરઠ-સૌરાષ્ટ્ર)

વડાળમાં સ્થા ઘર ૩૫ છે, સંખ્યા ૧૫૦ છે, ઉપાશ્રય ૧ છે, પોષધશાળા ૧ છે, જૈનશાળા, કન્યાશાળા ચાલુ છે, સંખ્યા ૨૫ છે, ઓળી થાય છે. બન્ને સપ સારો છે. સંઘના કાર્યકર્તા સેક્રે. શ્રી. ગીરધરભાઇ વીસનજીભાઇ છે તથા કોઠારી ન્યાલચંદ જેચંદભાઇ છે.

વડીઆ (સૌરાષ્ટ્ર) સંઘ

સ્થાનકવાસી સંઘના ઉપાશ્રય ૨ છે એક પૌષધ શાળા છે, જૈન શાળા કન્યાશાળા ચાલુ છે, સંખ્યા ૬૦ લગભગ છે, સ્થા ઘર ૧૪૦ છે આયંબીલ ઓળી થાય છે.

ધર્મભાવના અને શ્રી સંઘમાં સંપ સારો છે કાયમી ચાતુર્માસ થાય છે. શ્રી. અમૃતલાલ ભવાનભાઇ પંચમીઆએ પોતાના સ્વ. માતુશ્રીના નામથી ઉજમબાઇ પૌષધશાળા રૂ. ૧૬૦૦૦) ખર્ચીને બનાવી આપેલ છે. અહીઆ દીક્ષા મહોત્સવો પણ થયા હતા નીચે પ્રમાણે શ્રી સંઘના કાર્યકર ભાઇઓ છે.

(૧) શ્રીયુત અમૃતલાલ ભવાનભાઇ પંચમીઆ
(૨) ,, કેશવજી મોનજીભાઇ ખેતાણી
(૩) ,, પ્રાણલાલભાઇ મોતીચંદ શેઠ
(૪) ,, પ્રાણજીવનભાઇ જેચંદભાઇ દામાણી
(૫) ,, પ્રેમચંદભાઇ દેવકરણ કામદાર
(૬) ,, ફુલચંદ કાલાભાઇ પંચમીઆ
(૭) ,, ઓત્તમચંદ ભગવાનજી દોશી

તે ઉપરાંત સ્વ. અમૃતલાલ મોતીચંદભાઇની સેવા નોંધપાત્ર છે. અહીઆ તપસ્વીજી માણેકચંદજી સ્થા. જૈન વિદ્યાલય છે. વિશાળ જગા છે. જેમાં ૮૨ વિદ્યાર્થીઓ

સુરેન્દ્રનગર સંઘ

સ્થા. ઘર ૪૦૦. સખ્યા ૨૦૦૦. લગભગ છે ત્રણ સઘ છે. ઉપાશ્રય એક ભેગો છે.

સાધુ સાધ્વીજીના ચાતુર્માસ વારાફરતી થાય છે.

જૈન શાળામા ૧૦૦, કન્યાશાળામા ૧૫૦, લગભગ સખ્યા છે.

૧. વર્ધમાન તપ આયબીલ ખાતુ કાયમી ચલુ છે.

૨. બોર્ડીંગ ચાલુ છે, જેમાં વિદ્યાર્થીઓ ૫૦ છે કોલેજનુ કામ પણ સરકાર તરફથી શરૂ થયેલ છે તે પણ જુન માસમા તૈયાર થઇ જશે તો, કોલેજમાં વિદ્યાર્થીઓ વધશે.

બોર્ડીંગ માટે સેનીટોરીઅમનુ મકાન વેચાણ લીધુ છે. તેમા દરેક જાતની સગવડ થઇ શકે તેમ છે, રીપેરીંગ તથા સુધારો કરતાં રૂા. ૫૦ હજારનુ થશે.

બોર્ડિંગમાં શીવણ ક્લાસ તથા ટાઇપ–રાઇટીંગ ક્લાસ ચાલુ કરેલ છે.

૩. રત્નચંદ્રજી જ્ઞાન મદિર પણ ચાલે છે. તેમાં શિક્ષણ પ્રૌઢ ઉમરનાને અપાય છે તથા શિવણ ક્લાસ બાઇઓનો ચાલે છે અને 'રત્નજ્યોત' પત્ર નીકળે છે.

સઘનુ સહાયક ફંડ ચાલુ છે, જેમાથી સાધારણ સ્થિતિવાળાને અનાજ તથા રોકડ રકમની સહાયતા આપવામાં આવે છે. અહીઆ શ્રી ત્રણે સઘમાં સપ સારો હોવાથી ત્રણે સઘના આગેવાનોની સલાહ મુજબ દરેક કાર્યો કરવામાં આવે છે

આગેવાનો નીચે પ્રમાણે છે:

(૧) વકીલ જાદવજી મગનલાલ.
(૨) વલમજી લેરાભાઇ દોશી.
(૩) દોશી ફત્તેહચદ ત્રીભોવન.
(૪) ન્યાલચદ અમ્બાવીદાસ ઘડીઆલી.
(૫) રા. સા મણીલાલ ત્રીભોવનદાસ બરોડીઆ.
(૬) મોદી શાતિલાલ ત્રીભોવનદાસ.

ધ્રાંગધ્રા સંઘ

સ્થા. ઘર ૩૦૦ છે. એ સઘ છે. સંપ સારો છે.

ઉપાશ્રય ૩ છે. શ્રી સઘની ભોજનશાળા છે.

જૈનશાળા કન્યાશાળા ચાલુ છે. સખ્યા લગભગ ૧૨૫ છે ૩ ક્લાસ ચાલુ છે. સઘ પુરતી કાળજી રાખી ધાર્મિક અભ્યાસ કરાવે છે. ઇનામો પણ વહેચવામા આવે છે

આયબીલનુ કાયમી રસોડુ ચાલુ છે. જેમાં સુરજબેન સઘવીની સેવા અમૂલ્ય છે સઘના હલના આગેવાનો નીચે પ્રમાણે છે·

(૧) સઘવી નરશીદાસ વખતચદ
(૨) સઘવી મગળજી જીવરાજ સેક્રેટરી તરીકે કામ કરે છે.
(૩) શાહ હરીલાલ મગળજી.
(૪) શાહ અભેચદ વાલજીભાઇ

વિ. ની કમીટી કામ કરે છે ચાર્તુમાસ થાય છે. ચાતુર્માસમા તપશ્ચર્યા વિ. સારા પ્રમાણમાં થાય છે. ધર્મભાવના સારી છે. ઓળી બન્ને થાય છે. પુસ્તક ભડાર પણ છે. પાઠશાળા કન્યાશાળાની પરીક્ષા રાજકોટ શિક્ષણ સંઘ તરફથી લેવામા આવે છે શાહ પ્રભુદાસ વખતચંદની સેવા નોંધપાત્ર છે.

હળવદ સંઘ

સ્થા. ઘર લગભગ ૪૦ છે સ્થાનક છે. આયબીલ ઓળી બને થાય છે. ચોમાસાં કોઇ કોઇ વખત થાય છે. સઘમાં ધર્મપ્રેમ સારો છે. સપ સારો છે.

હાલમાં કોઠારી વાડીલાલ હિમચદ, કોઠારી કાતિલાલ પાનચદ, કોઠારી અમૃતલાલ વખતચદ, શાહ મોહનલાલ વાલજી, શાહ મનસુખલાલ ત્રીભોવન, વકીલ ઉમેદચદભાઇ વિગેરે આગેવાનો છે.

જુનાગઢ સંઘ

સ્થાનકવાસી જૈન સઘના ૩ સ્થાનક છે, સઘની જગ્યા પણ છે, આરોગ્ય ભુવન પણ છે. પ્લોટમાં પણ શ્રી જૈન ધર્મશાળા છે.

જૈન શાળા–કન્યા શાળા–શ્રાવિકા શાળા ચાલે છે. ૬ ક્લાસ ચાલે છે.

સખ્યા લગભગ ૧૫૦ છે.

આયંબીલની ઓળી બને થાય છે. સ્થાનકવાસીના ઘર ૨૭૫ છે.

શ્રી દશા શ્રીમાળી જૈન વણિક વિદ્યાર્થી ભુવન છે. સંઘમા સંપ સારો છે.

જેમા કોઇ પણ જાતના ભેદભાવ વિના શાકાહારીને દાખલ કરવામાં આવે છે. ૬૦ વિદ્યાર્થીઓ લાભ લે છે, જેમા કે ફ્રી લાભ લે છે.

માસિક રૂા. ૨૫) લેવામાં આવે છે.

લાયબ્રેરી છે. પુસ્તક ભંડાર છે. સંઘમાં સપ સારો છે.

બોર્ડિંગની કમિટીના મેમ્બરો નીચે પ્રમાણે છેઃ

શ્રીમાન જેઠાલાલ પ્રાગજીભાઇ રૂપાણી, પ્રમુખ

શ્રીમાન જયંત પીપલીયા B. A. સેક્રેટરી

શ્રીમાન માસ્તર કુરજીભાઇ કાલીદાસ સેક્રેટરી વિગેરે સારી સેવા બજાવે છે.

શ્રી સ્થા. સંઘના હોદ્દેદારો નીચે પ્રમાણે છેઃ

શ્રીયુત દેવચંદભાઇ ઝવેરચંદ પારેખ, ચોકસી જમનાદાસ વિરજીભાઇ, વકીલ જેઠાલાલ પ્રાગજીભાઇ, માસ્તર કુરજીભાઇ કાળીદાસ, ચોકસી મગનલાલ કાળીદાસ, ચોકસી કપુરચંદ જાદવજી પટેલ, અમેચંદભાઇ ધરમશી મહેતા, ત્રીભોવનદાસ મુલજીભાઇ શાહ, (સેક્રેટરી)

ડો. ચુનીલાલ વાલજીભાઇ વિગેરે ૯ કમિટી મેમ્બરો છે સારી સેવા બજાવે છે.

અગાઉ પણ— સ્વ. ચોકસી કપુરચંદ નાથાભાઇ, સ્વ. પારેખ ઝવેરચંદ રતનજી, સ્વ. પારેખ વલભજી લખમીચંદભાઇએ સારી સેવા બજાવેલ હતી આદર્શ નૂતન ગૌશાળા છે. જેમા ૧૨૫ લગભગ જનાવરો છે જુનાગઢથી ૩ માઇલ દુર છે, મેંદપરા ગૌશાળા જુનાગઢથી ૧૨ માઇલ દુર છે, જેમા ૧૦૦થી ૧૨૫ ગાયો છે. જેમા શ્રી. જેઠાલાલભાઇ સારી સેવા આપે છે.

માંગરોલ (સૌરાષ્ટ્ર) સંઘ

સ્થા. ઘર ૧૫૦ છે. ઉપાશ્રય ૨ છે, પાઠશાળાના મકાન છે, કન્યાશાળા પાઠશાળા ચાલુ છે, સંખ્યા ૭૫ લગભગ છે, લાયબ્રેરી છે. ભોજનશાળા પણ છે ચાતુર્માસ કોઇ વખતે થાય છે, કાર્યવાહક કમિટી ૧૧ જણની છે, સપ સારો છે, મહાજનની પાંજરાપોળ પણ સારામા સારી છે. દર ત્રણ વર્ષે ચૂટણી કરવામા આવે છે

સ્વ જેચંદભાઇ હરજીવનભાઇ બાબુ, સ્વ. વલભજી અમરચંદ, સ્વ નેમચંદ વસનજીભાઇ એ સારી સેવા આપેલ છે.

હાલમાં ચાલુ નીચે પ્રમાણે હોદ્દેદારો છે. શ્રી- ઝવેરચંદભાઇ લીલાધર શાહ, સેક્રેટરી, મણીલાલ પાનાચંદ સુતરીયા. આ ઉપરાંત સાત કમીટી મેમ્બરો પણ છે.

ટ્રસ્ટીઓ : (૧) શ્રી. વરજીવનભાઇ ત્રીભોવનદાસ શેઠ. (૨) શ્રી. હેમચંદભાઇ રામજીભાઇ શેઠ, (૩) શ્રી. જાદવજીભાઇ, લીલાધરભાઇ, (૪) શ્રી. ત્રીભોવનદાસ હરીદાસ.

મજેવડી સંઘ (વાયા વડાળ)

સ્થા સંઘના ઘર આઠ છે. શ્રી. મગનલાલ માણેકચંદભાઇ શેઠ તથા શ્રી. જગજીવનભાઇ ધરમશીભાઇ વિ. આગેવાનો છે. સંઘમાં સંપ–ધર્મભાવના સારી છે.

વડાળ સંઘ (સોરઠ–સૌરાષ્ટ્ર)

વડાળમાં સ્થા ઘર ૩૫ છે, સંખ્યા ૧૫૦ છે, ઉપાશ્રય ૧ છે, પોષધશાળા ૧ છે, જૈનશાળા, કન્યાશાળા ચાલુ છે, સંખ્યા ૨૫ છે, ઓળી થાય છે. બન્ને સપ સારો છે. સંઘના કાર્યકર્તા સેક્રે. શ્રી. ગીરધરભાઇ વીસનજીભાઇ છે તથા કોઠારી ન્યાલચંદ જેચંદભાઇ છે.

વડીઆ (સૌરાષ્ટ્ર) સંઘ

સ્થાનકવાસી સંઘના ઉપાશ્રય ૨ છે એક પૌષધ શાળા છે, જૈન શાળા કન્યાશાળા ચાલુ છે, સંખ્યા ૬૦ લગભગ છે, સ્થા ઘર ૧૪૦ છે આયબીલ ઓળી થાય છે.

ધર્મભાવના અને શ્રી સંઘમાં સંપ સારો છે. કાયમી ચાતુર્માસ થાય છે. શ્રી. અમૃતલાલ ભવાનભાઇ પચમીઆએ પોતાના સ્વ. માતુશ્રીના નામથી ઉજમબાઇ પૌષધશાળા રૂા. ૧૬૦૦૦) ખર્ચીને બનાવી આપેલ છે. અહીઆ દીક્ષા મહોત્સવો પણ થયા હતા નીચે પ્રમાણે શ્રી સંઘના કાર્યકર ભાઇઓ છે

(૧) શ્રીયુત અમૃતલાલ ભવાનભાઇ પચમીઆ
(૨) „ કેશવજી મોનજીભાઇ ખેતાણી
(૩) „ પ્રાણલાલભાઇ મોતીચંદ શેઠ
(૪) „ પ્રાણજીવનભાઇ જેચંદભાઇ દામાણી
(૫) „ પ્રેમચંદભાઇ દેવકરણ કામદાર
(૬) „ ફુલચંદ કાલાભાઇ પચમીઆ
(૭) „ ઓત્તમચંદ ભગવાનજી દોશી

તે ઉપરાંત સ્વ. અમૃતલાલ મોતીચંદભાઇની સેવા નોંધપાત્ર છે. અહીઆ તપસ્વીજી માણેકચંદજી સ્થા. જૈન વિદ્યાલય છે. વિશાળ જગા છે. જેમા ૮૨ વિદ્યાર્થીઓ

ચાલુ લાભ લે છે. તેના ગૃહપતિ તરીકે પંડિત રોશનલાલજી જૈન છે. જેઓ ઘણાં જ માયાળુ, શાંત અને ધર્મ ભાવનાવાળા હોવાથી સમાજનો તેમજ વિદ્યાર્થીઓનો પ્રેમ ઘણો જ મેળવેલ છે. મુનિમહારાજ સાહેબો તથા મહાસતીજી સાહેબો પણ અભ્યાસ માટે અહીંઆ પધારે છે ત્યારે સારો લાભ મળે છે. બોડીંગમા લાયબ્રેરી સારામાં સારી છે, જેમા ઘણી જ સુંદર અને સફાઈથી વ્યવસ્થિત રીતે ૭૦૦૦ પુસ્તકોનો સગ્રહ છે. સુંદર ગ્રંથો હસ્તલેખીત ૫૦૦નો સગ્રહ છે. ૨૦૦૦ પુસ્તક છે. સારા ગોદરેજના ૨૦ કબાટ પુસ્તકોનો સગ્રહ કરવા સારૂ શેઠ વલ્લભભાઈ ફુલચંદભાઈ પ્રમુખ (ભાવનગર સ્થા. જૈન સંઘ) તરફથી મોકલવામાં આવેલ છે.

ગોરધનદાસ મુળજીભાઈ કાપડીઆ પ્રાર્થના હોલ વિશાળ છે. શામજી વેલજી વિરાણી ગૌશાળા સારી છે. શ્રી. અમૃતલાલ ભવાનભાઈ તરફથી ભવાન કાળાભાઈ આરોગ્ય-ગૃહ બનાવેલ છે. સ્વ. કડવીબાઈ વિરાણી તરફથી સ્વાધ્યાય ગૃહ બનાવેલ છે. હાલમાં આ વિદ્યાલયની દેખરેખ તથા સેવા આપનાર તપસ્વી રા. સાહેબ મણીલાલભાઈ વનમાળીદાસભાઈ છે

નીચે પ્રમાણે હોદ્દેદારો છે.

પ્રમુખ: શ્રી દુર્લભજી શામજી વિરાણી.

ઉપ–પ્રમુખ: શ્રી છગનલાલ શામજી વિરાણી, શ્રી. કેશવલાલ અમૃતલાલ પારેખ.

માનદ્ મંત્રીઓ: શ્રી રતિલાલ ભાઈચંદ ગોડા, શ્રી મણીલાલ કેશવજી ખેતાણી, શ્રી. શીવલાલ ગુલાબચંદ શેઠ, શ્રી. પ્રાણલાલ મોતીચંદ દોશી.

નિરીક્ષકો: શ્રી. જેઠાલાલ પ્રાગજીભાઈ રૂપાણી, શ્રી મણીલાલ વનમાલી શાહ, શ્રી નાથાલાલ ઝવેરચંદ કામદાર, શ્રી ભાઈચંદ દામોદર લાઠીઆ.

આ વિદ્યાલયમા શ્રી. અમૃતલાલ ભવાનભાઈએ આપેલ સેવા નોંધપાત્ર છે.

ટંકારા (મોરબી) સંઘ

દશાશ્રીમાળી વિશાશ્રીમાળી બન્ને મળીને સ્થા. ઘર ૫૦ છે. ઉપાશ્રય ૨ છે. કન્યાશાળા જૈનશાળા ચાલુ છે. સંખ્યા ૧૦૦ લગભગ છે. જૈન લાયબ્રેરી પણ છે. ચોમાસાં થાય છે. સ્વ. પુંજાભાઈ મનજીભાઈ, તથા સ્વ. ફુલચંદ વીરજીભાઈએ સારી સેવા બજાવેલ છે.

હાલમાં–શેઠ છગનલાલ પોપટલાલભાઈ, શ્રી. મોહનલાલ પ્રાણજીવનભાઈ દોશી, મગનલાલ પ્રાણજીવનભાઈ દોશી, સંઘવી રાયચંદ ગોવિંદજી, ગાંધી મોહનલાલ ચત્રભુજ, વિગેરે આગેવાનો છે. સંઘમાં સંપ અને ધર્મભાવના સારી છે.

જામ ખંભાળીયા સંઘ

સ્થા. ઘર ૪૦ છે. સંખ્યા ૨૨૫ લગભગ છે, સ્થાનક ૧ છે, પુસ્તક ભંડાર પણ છે, જ્ઞાતિની જગ્યા છે. ચોમાસા કોઈ કોઈ વખત થાય છે, જૈનશાળા પ્રથમ ચાલુ હતી. હમણા બંધ છે. આયંબીલ ઓળી થાય છે. મહેતા વેલજીભાઈ ગલાલચંદે અગાઉ પ્રમુખ તરીકે સારી સેવા બજાવેલ છે. હાલમા નિવૃત થયા છે.

હાલમાં મહેતા રણછોડભાઈ પરમાનંદ પ્રમુખ, સતવારાવાડમા અનાજના વેપારી, મહેતા જીવરાજ ઓધવજી, સંઘવી મોહનલાલ મોરારજીભાઈ સંઘવી અમૃતલાલ સુંદરજીભાઈ, સંઘવી વસનજીભાઈ નારણજીભાઈની સેવા નોંધપાત્ર છે.

લાલપુર સંઘ

સ્થા. ઘર ૨૬ સંખ્યા ૧૫૦ છે, ઉપાશ્રય ૩ છે, ન્યાતની વંડી છે વિશાળ વંડી પોપટલાલ મુળજીભાઈએ બંધાવી આપી છે જૈનશાળા–કન્યાશાળા ચાલુ છે. સંખ્યા ૩૧ છે. માસ્તર છોટાલાલ જીવજીભાઈની સેવા સારી છે.

આયંબીલની ઓળી બન્ને થાય છે, ચોમાસા કોઈ વખતે થાય છે, મહારાજ સાહેબોને પધારવા ખાસ વિનંતી છે. સંઘમાં સંપ સારો છે, એક ઉપાશ્રય, અમુલખ ડાયાભાઈએ પોતાના ખર્ચે બંધાવી આપેલ છે. બીજો ઉપાશ્રય મીઠાલાલ દેવચંદભાઈએ પોતાના ખર્ચે બંધાવી આપેલ છે, જેઓ આફ્રિકામા રહેતા હતા. તેઓનો સ્વર્ગવાસ થવાથી સમાજને મહાન ખોટ પડી છે સ્વ. મીઠાલાલ દેવચંદ શાહ, સ્વ. કચરાભાઈ લાધાભાઈ શાહ, સ્વ. નેમચંદ સવજીભાઈ મોદી વિગેરેની સેવા નોંધપાત્ર છે.

હાલમા ચાલુ પ્રમુખ: શેઠ લાલજીભાઈ કાળીદાસ, મોદી મુલજીભાઈ નેમચંદ, શ્રી. વસનજીભાઈ લાધાભાઈ, તથા શ્રી. પ્રાણજીવન ડાયાભાઈની કમિટી સેવા આપે છે.

વિસાવદર સંઘ

સ્થા. ઘર ૬૩ છે. સંખ્યા ૩૦૦ છે, સ્થાનક ૨ છે, મહાજનની જગ્યા પણ છે, પાઠશાળા કન્યાશાળા

ચાલુ છે, સખ્યા ૪૦ થી ૪૫ છે, સઘ કેળવણી પાછળ સારી દેખરેખ રાખે છે. હમણા ૫૫૦૦૦)ના ખર્ચે નવો ઉપાશ્રય બનાવેલ છે, આયબીલ ઓળી બન્ને થાય છે. ચાતુર્માસ કોઇ વખતે થાય છે. દીક્ષા મહોત્સવો પણ અહી થઇ ગયેલ છે, પાંજરાપોળ મહાજનની છે. પુસ્તક ભડાર પણ છે.

અગાઉના સઘના આગેવાનોનાં નામો જેઓએ સારી સેવા આપેલ હતી:—

સ્વ ગોપાલજી ત્રીભોવનદાસ, સ્વ. શામળજી ઝવેરચદ, સ્વ. કપુરચદ રામજીભાઇ.

હાલમા નીચે પ્રમાણે આગેવાનો છે: (૧) શ્રી ભોગીલાલ ગોપાલજી ગાડાણી, (૨) શ્રી. હરજીવન કલ્યાણજીભાઇ શેઠ, ( ) શ્રી જયતિલાલ શામળજી દોશી (૪) શ્રી. રાયચદભાઇ રામજીભાઇ ભીમાણી, (૫) શ્રી ન્યાલચદ મોતીચદ ગાડાણી, (૬) શ્રી. વલભભાઇ કાળાભાઇ માટલીયા

બિલખા સંઘ

બીલખામા સ્થા. ૧૦૦ ઘર છે. સખ્યા ૫૦૦ લગભગ છે. ઉપાશ્રય ૨ છે સઘની જગ્યા વિશાળ છે. મહાજનની પાંજરાપોળ છે કોઇ કોઇ વખતે ચાતુર્માસ થાય છે, ઓળી થાય છે, પુસ્તક ભડાર છે. જૈન લાયબ્રેરી છે, જૈનશાળા, કન્યાશાળા બન્ને ચાલુ છે, સખ્યા ૭૫ છે, સઘમા સપ સારો છે, ધાર્મિક કેળવણી પાછળ સઘ કાળજી રાખે છે. હાલના કાર્યકર્તાઓ, પ્રમુખ, શેઠશ્રી જેચદભાઇ નાગજીભાઇ ટીબડીઆ, શેઠશ્રી માણેકચદ કરશનજી દોશી, શેઠશ્રી રામજીભાઇ ડાયાભાઇ દોશી ઓન સેક્રેટરી-વનમાલીદાસ કેશવજી ટીબડીઆ અગાઉ-સેવા આપનારાઓની નામાવલી નીચે પ્રમાણે છે: સ્વ. મોનજી જેતસીભાઇ, સ્વ. નાગજી વેલજીભાઇ, સ્વ. કરશનજી રાઘવજી દોશી, સ્વ. ત્રીકમજી પુજાભાઇ, સ્વ. કેશવજી ઝીણાભાઇ સારી સેવા આપેલી હતી.

પડધરી સંઘ

પડધરીમા સ્થાનકવાસીનાં ઘર ૫૦ છે. સખ્યા ૩૦૦ છે. સ્થાનક ૨ છે. શ્રી વિસા શ્રીમાળી સ્થા. જૈન જ્ઞાતિની વડી છે, જૈન શાળા ૩૦ વર્ષથી ચાલુ છે. હાલમાં ૭૫ બાળક બાલિકાઓ લાભ છે. શ્રી સઘ કેળવણી પાછળ સારી દેખરેખ રાખે છે, અને ૧૦૦૦) ખર્ચ કરે છે. ચાતુર્માસ થાય છે. નવુ સ્થાનક હમણા ૧૨૦૦૦/ના ખર્ચે બનાવેલ છે. શ્રી સઘની કમિટી છે. પાંચ મેમ્બરો છે. સઘમાં સપ સારો છે.

હાલમા શ્રી. પોપટલાલ કાલીદાસ પટેલ, પ્રમુખ શ્રી, શીવલાલ કપુરચદ ગાધી, શ્રી. જેચદભાઇ પાનાચદ પટેલ, આધવજી નારાણજી મહેતા, શ્રી. કનૈયાલાલ કેવળચદ ગારડી.

અગાઉ મહારાજ શ્રી. સુદરજી સ્વામીએ આ તરફ ખુબ ધર્મ પ્રચાર કરેલ હતો. સૌરાષ્ટ શિક્ષણ સઘની પરીક્ષામાં અહી સૌથી પ્રથમ નબર આવેલ હતો

અગાઉ સ્વ. કાલીદાસ પાસવીર પટેલ તથા સ્વ કપુરચદ સુદરજી ગાધી, સ્વ. ગણેશ બાવાભાઇએ સમાજ સેવા સારી કરી હતી.

પુસ્તકાલય પણ છે. જૂનામાં જૂનાં પુસ્તકો અહિઆ છે. જામનગર ધ્રોળનો વિહાર માર્ગ હોઇને મુનિ મહારાજો અવારનવાર પધારે છે.

ધ્રોળ સંઘ

સ્થા ઘર ૧૦૦ છે. સખ્યા ૪૦૦ છે. સ્થાનક ૩ છે. સારી સ્થિતિમાં છે. જૈનશાળા કન્યાશાળા ઘણાં વરસો થયાં ચાલુ છે. સંખ્યા ૫૦ અદાજ છે. સઘમાં સપ સારો છે ધાર્મિક અભ્યાસ પાછળ સારી દેખરેખ છે. દર આઠ દિવસે ઇનામો આપવામાં આવે છે. સૌરાષ્ટ્ર શિક્ષણ સઘની પરીક્ષામા અહીના વિદ્યાર્થી રમણીકલાલ મગનલાલ સૌથી પ્રથમ નબરે આવેલ હતા.

આયંબીલની ઓળી થાય છે. આયબીલ ખાતાંનુ મકાન પણ સારૂ છે દશા શ્રીમાળી જ્ઞાતીની ભોજન-શાળા છે, જૈનવણિક બોર્ડીંગ ૯ વરસ થયાં ચાલુ છે, જેમાં ધાર્મિક શિક્ષણ પણ અપાય છે, બોર્ડીંગનુ મકાન રૂા. ૪૬,૦૦૦ના ખર્ચે બનાવેલ છે. હાલમાં ૧૫ વિદ્યાર્થીઓ લાભ લે છે. આજ સુધીમાં ૩૦૦ વિદ્યાર્થીઓએ લાભ લીધો છે, સમસ્ત જૈન સમાજના દરેક ફીરકાના વિદ્યાર્થીઓ લાભ લે છે.

હાલના સેક્રેટરી તરીકે વકીલ વસતલાલ મગનલાલ. તથા શેઠ ભવાનભાઇ ખેતશીભાઇ છે ધ્રોળમાં સપ સારો છે ચાતુર્માસ થાય છે, દીક્ષાઓ પણ થાય છે. ચાતુર્માસમા વ્યાખ્યાન ભવાનભાઇ ખેતશી—

ભાઇ શેઠ આપે છે. જૈન લાયબ્રેરી છે, પુસ્તકો પણ છે, સૂત્ર ભંડાર પણ છે.

સંઘની કાર્યવાહક કમિટી નીચે મુજબ છે:

૧. મોદી દોલતચંદભાઇ રામજીભાઇ
૨. ગાંધી હીરાચંદ નથુભાઇ
૩. દોશી લાભશંકર ઓધવજીભાઇ
૪. શેઠ ભવાનભાઇ ખેતશીભાઇ

આ તરફ અગાઉ મોદી દામોદરભાઇ બારવ્રતધારી શ્રાવક હતા અને જસાજી સ્વામી તથા કવિશ્રી ખોડાજી સ્વામી તથા સુંદરજી સ્વામીએ સારામાં સારી ધર્મજાગૃતિ કરેલી હતી.

જોડીઆ બંદર

સૌરાષ્ટ્રમાં જૂનું બંદર જોડીઆ બંદર છે. સ્થા. ઘર લગભગ ૧૦૦ છે. ૨ સ્થાનક છે. જૈન શાળાનું મકાન પણ છે. એક જ્ઞાતીનો ડેલો છે. પાંજરાપોળ મહાજનની છે. શ્રી સંઘની લાયબ્રેરી છે. પુસ્તક ભંડાર છે. ઓળી બન્ને થાય છે. જૈનશાળા કન્યાશાળા ચાલુ છે. ૬૦ વિદ્યાર્થીઓ છે. શ્રી. મગનલાલભાઇ જેહાલાલ ધોલાણી (મુંબઇવાળા) શ્રી જૈનશાળાનું શિક્ષણખર્ચ આપી ચલાવે છે સંઘમાં સંપ સારો છે. શાહ સોમચંદ જેઠાભાઇ કું. તરફથી કોઇ વખતે ચાતુર્માસનો ખર્ચ થાય છે.

સંઘના આગેવાનો નીચે મુજબ છે —

૧. શેઠ શ્રી શીવલાલ ભાઇચંદભાઇ શાહ
૨. ,, ,, ધરમશીભાઇ ડાયાભાઇ શાહ
૩. ધોલાણી હાથીભાઇ પ્રેમચંદ
૪. મહેતા શાંતિલાલ રતનશી.

સંવત ૨૦૧૧ માં મહાસતીજી જડાવબાઇ સ્વામી ઉ. ૮૦ જોડીઆ બંદરનાં વતની હતા. દીક્ષા પણ અહીં થઇ હતી અને બાર વરસે અહી ચાતુર્માસ કરવા પધારેલ તે વખતે ગત વરસે સ્વર્ગવાસ થયેલ હતાં. તેઓ એ ધર્મ-જાગૃતિ સારી કરેલ હતી.

હડમતીઆ સંઘ

સ્થા ઘર ૩ છે ઉપાશ્રય નથી, ૧. શાંતિલાલ દયાળજી મહેતા; ૨. નરસીદાસ દેવકરણ, ૩. શામળદાસ કેશળચંદ વિગેરે ત્રણ ઘર છે

સરાપાદર સંઘ

સ્થા. ઘર ૨ છે, ઉપાશ્રય નથી હંસરાજ અમરસી મહેતા તથા અજરામર જસરાજ ઉપરોક્ત બે ભાઇઓ રહે છે.

કાલાવડ સંઘ

સ્થા. ઘર ૧૫૦ છે સંખ્યા ૮૦૦ છે, ઉપાશ્રય ૨ છે, જ્ઞાતિની જગ્યા પણ છે જૈન શાળાનું મકાન પણ છે. સંખ્યા ૧૨૫ લગભગ છે. ચાતુર્માસ થાય છે. દીક્ષા ઓચ્છવો પણ થાય છે, ચાલુ પાંચ વર્ષમાં ૩ દીક્ષા ઓચ્છવો થઇ ગયા છે.

અહી ૮ જણાની કમિટી છે, સંઘમાં સંપ સારો છે. રવાણી શાંતિલાલ ધરમશી સુંદરજીભાઇ પ્રમુખ, દોશી છગનલાલ જાદવજી, શ્રી ન્યાલચંદ નથુભાઇ દેવાણી, શ્રી. જેચંદભાઇ ખીમજીભાઇ પટેલ, જેઓએ ઘણી જ સારી સેવા આપેલ છે.

શ્રી. શાંતિલાલભાઇ રવાણી મ્યુ. પ્રમુખ છે, ઘણા જ સરળ સ્વભાવી છે. સેવા સારી બજાવે છે. શ્રી. રણછોડ-લાલભાઇ કોઠારી જામનગરના વતની છે. તેઓ અહી ચીફ ઓફીસર તરીકે છે. તેઓ ઘણા જ માયાળુ અને ધર્મભાવનાવાળા છે.

નિકાવા સંઘ

(કાલાવડ શીતળા થઇને)

સ્થા. ઘર ૯ છે. સંખ્યા ૫૦ ઉપાશ્રય ૧ છે. જૈનશાળા છે. મકાન પણ છે. ગોંડલ કાલાવડનો વિહારમાર્ગ છે.

અહી શ્રી. નરભેરામ ડોસાભાઇ વોરા, શ્રી. હરીલાલ ડાયાભાઇ વોરા, શ્રી. ભાઇચંદ ડાયાભાઇ વોરા, શ્રી. વીઠલજી કાલીદાસ મહેતા આગેવાનો છે.

ખરેડી સંઘ

(જામકંડોરણા થઇને)

સ્થા. ઘર ૬ છે. સ્થાનક છે. સંપ સારો છે. શ્રી. ભાઇચંદભાઇ વલભજીભાઇ કોઠારી, શ્રી દેવચંદભાઇ પાનાચંદ, શ્રી. તારાચંદ રતનશીભાઇ, શ્રી. મુળચંદભાઇ તલકશી, શ્રી અમૃતલાલ ગીરધરલાલ, શ્રી દલપતરામ મેઘજીભાઇ વિગેરે ભાઇઓ સેવા બજાવે છે

મતવા સંઘ

(જામનગર થઇને)

સ્થા. ઘર ૩ છે. ઉપાશ્રય છે. મહેતા કાનજીભાઇ વીરજીભાઇ, શ્રી. ઝવેરચંદ અમરશી, શ્રી. કપુરચંદ જીવરાજ, વિ. આગેવાનો છે.

વેરાવળ સંઘ

સ્થાનકવાસીના ઘર ૨૦૦, સંખ્યા ૮૦૦ લગભગ છે. ઉપાશ્રય ૩ છે. હમણા ઉપાશ્રય ૨ લાખના ખર્ચે નવો બંધાવેલ છે.

જેમા મુખ્ય રકમ ધર્મપ્રેમી સ્વ. શેઠ શ્રીમાન માણેકલાલ પુરૂષોતમદાસ એડનવાળાએ આપેલ હતી. ફરીથી સ્ત્રીઓ માટે નવા ઉપાશ્રય માટે રૂા ૫૧,૦૦૦ની રકમ સ્વ. શેઠ શ્રી. માણેકલાલભાઇ તરફથી જાહેર કરવામાં આવેલ છે.

બીજી રકમો શ્રી સંઘના જુદા જુદા ગૃહસ્થો તરફથી મળેલ છે

ઓળી બન્ને થાય છે. જૈન શાળા, કન્યા શાળા, શ્રાવિકા શાળા ચાલુ છે. સંખ્યા ૨૦૦ છે. સંઘની મેનેજીંગ કમિટી નવ મેમ્બરોની છે. શેઠ શ્રી નેમીદાસભાઇ મદનજીભાઇ તથા શેઠ જમનાદાસ લીલાધરભાઇ તથા કાકુભાઇ સોજપારની સેવા નોંધપાત્ર છે.

(૧) શ્રી, ત્રીભોવનદાસ રામચંદ (૨) શ્રી ચિમનલાલ ભીમજીભાઇ (૩) શ્રી હેમચંદ રામજીભાઇ (સેક્રેટરી) (૪) શ્રી જયતીલાલભાઇ, જો સેક્રેટરી (૫) શ્રી રવજીભાઇ હીરાચંદ સંઘના મુખ્ય કાર્યવાહકો છે.

ચોરવાડ સંઘ.

સ્થા જૈનોના ઘર ૫ છે. ૨ ઉપાશ્રય જૂનો છે. જીર્ણોધ્ધાર કરવાની જરૂરીઆત છે. વિહારનો માર્ગ છે –

૧. શ્રી. વિસનજી સૌભાગ્યચંદ શાહ પ્રમુખ છે. ૨. જમનાદાસ ત્રીભોવન ગાંધી ૩. શ્રી. કાંતિલાલ પ્રાણજીવનદાસ ૪. શ્રી. પાનાચંદ સૌભાગ્યચંદ ૫ શ્રી. વોરા રમણીકલાલ વગેરે આગેવાનો છે.

સાયલામાં ત્રણ સંઘ છે

સાયલા સંઘના ૨૨ ઘર છે. ઉપાશ્રય ૧ છે. ચોમાસા થાય છે. (૧) દેસાઇ છોટાલાલ મગનલાલભાઇ પ્રમુખ છે. તથા (૨) શાહ રતિલાલ ઓધવજી ખારા કાર્યવાહક છે.

સાયલા-લીંબડી સંપ્રદાય

સ્થા. ઘર ૩૭ છે. સંખ્યા ૧૭૫ છે ઉપાશ્રય ૨ છે. એક અતિથીગૃહ છે આંયખીલની ઓળી થાય છે. ચોમાસા થાય છે. જૈન શાળા કન્યાશાળા ચાલુ છે. સંખ્યા ૪૦ છે (૧) શેઠ મણીલાલ મોહનલાલ તથા (૨) મણીલાલ કચરાભાઈ શાહ વિગેરે આગેવાનો છે

સાયલા દરીઆપુરી સંઘ

સ્થા. (દરીઆપુરી) આશરે ૪૦ ઘર છે. સંખ્યા ૨૦૦ છે. ઉપાશ્રય ૨ છે. જૈન શાળા કન્યાશાળા ચાલુ છે. સંખ્યા ૫૦ છે ઓળી બને થાય છે. પુસ્તક ભંડાર છે. લાયબ્રેરી છે. ચાતુર્માસ થાય છે આગેવાનો (૧) શ્રી. જેઠાલાલ મગનલાલ શાહ (૨) શ્રી. જગજીવન ગુલાબચંદ શાહ વગેરે છે. શ્રી. પીતાંબર શીવલાલ તથા શેઠ નકુભાઇ કાલુભાઇ તરફથી ઉપાશ્રયમા સારી રકમ દાન મળેલ હતી.

બરવાળા
(ઘેલાશાહ) સંઘ

બરવાળા–સંપ્રદાયનું ગાદીનું ગામ છે. ઘર ૧૨૫ છે. સંખ્યા ૬૦૦ લગભગ છે. પુસ્તક ભંડાર, લાયબ્રેરી તથા જૂના શાસ્ત્રોનો ભંડાર છે. ઉપાશ્રય ૨ છે. ભોજનશાળા પણ છે. જૈનશાળા, કન્યાશાળા બન્ને ચાલુ છે. સંખ્યા ૧૦૦ છે. ચાતુર્માસ થાય છે સંઘના કાર્યકર્તાઓ (૧) પ્રમુખ મોહનલાલ પાનાચંદ ખોખાણી (૨) જીવણલાલ તુલસીદાસ (૩) મનસુખલાલ નથુભાઇ (૪) રાઘવજી હાકેમચંદ (૫) હરજીવન ઓધવજી (૬) રામજીભાઇ જગજીવન (૭) છબીલભાઇ ચુનીલાલ શાહ (૮) જીવરાજ રણછોડ (૯) અમૃતલાલ ધનજીભાઇ.

રાજસીતાપુર
(ઝાલાવાડ) સંઘ

સ્થા. જૈનોનાં ઘર ૯ છે. ઉપાશ્રય એક છે, ભોજનશાળા છે, ઓળી થાય છે. સંઘના પાંચ આગેવાનો (૧) વોરા લાડકચંદ ચુનીલાલ (૨) ભાવસાર નાગર ડામર, (૩) વકીલ ઉમેદચંદ પોપટલાલ (૪) ભાઇચંદ ઝવેરચંદ શેઠ (૫) ભાવસાર કલ્યાણજી ડામરસી છે.

બોટાદ સંઘ

સ્થા. જૈનોના ઘર ૩૫૦ છે. સંખ્યા ૨૫૦૦ છે. ઉપાશ્રય ૧ છે. ભોજનશાળા ૧ છે. જૈન શાળાનુ મકાન છે. જૈનશાળા, કન્યાશાળા અને શ્રાવિકા શાળા ચાલુ છે. સંખ્યા ૨૨૫ છે. આયંબીલની બન્ને ઓળી થાય છે. ચાતુર્મોસ થાય છે. સ્વધર્મી બંધુઓને ગુપ્ત રાહત

પણ અપાય છે. શ્રી સંઘની કમિટી ૧૫ મેમ્બરોની છે જેમાં વકીલ શ્રીયુત ગાડાલાલ નાગરદાસ સેક્રેટરી છે. શેઠ અમૃતલાલ માણેકચંદ, શ્રી. નાનાલાલ ભુદરભાઇ સંઘવી વિગેરે આગેવાનો છે. શ્રી. મૂળચંદજી સ્થા. જૈન લાયબ્રેરી છે જેમાં ૫૦૦૦) લગભગ પુસ્તકો છે, વાંચનાલય છે. બોટાદમા સ્થા જૈન છાત્રાલય પણ ચાલે છે, જેમા ૫૫ લગભગ વિદ્યાર્થીઓ લાભ લઇ રહ્યા છે, ધાર્મિક અભ્યાસ પણ કરાવવામાં આવે છે વિશા શ્રીમાળી સ્થા. જૈન જ્ઞાતી તરફથી પણ સ્વધર્મી બંધુઓને ગુપ્ત રાહત આપવામા આવે છે

લીંબડી નાનો સંઘ

(સંઘવી ઉપાશ્રય)

લીંબડી સંઘવી ઉપાશ્રયનું ગાદીનું ગામ છે. સ્થા જૈનોના ઘર ૧૦૦ છે. સંખ્યા ૪૦૦ છે. ઉપાશ્રય ૩ છે. ભોજનશાળા છે, ચોમાસા થાય છે. બીજા મકાનો પણ છે, ભાડાની આવક થાય છે, જૈન શાળા કન્યાશાળા ચાલુ છે. પુસ્તક ભંડાર છે, અગાઉ પ્રેમચંદ ભુરાભાઇ સંઘવીએ ઘણા વરસો સુધી સેવા બજાવેલ છે.

વર્તમાન કાર્યકર્તાઓ શ્રી. ધરમશી માણેકચંદ સંઘવી, શ્રી. પ્રાણજીવનભાઇ સંઘવી, શ્રી. ગીરધરલાલ જીવણલાલ સંઘવી, શ્રી. સૌભાગ્યચંદ શ્રી. માણેકલાલ સંઘવી અને મારફતીઆ દીપચંદ નાનચંદ છે.

ચુડા સંઘ

સ્થા જૈનોના ઘર ૧૨૫ અને સંખ્યા ૫૦૦ છે. સ્થાનક ૨ છે. પાઠશાળા તથા કન્યાશાળા ચાલુ છે છાત્ર સંખ્યા ૧૦૦ છે. ધાર્મિક કેળવણી પાછળ શ્રી સંઘ પુરતી કાળજી રાખે છે. ચૈત્ર માસની ઓળી શેઠ ગોકળદાસ શીવલાલભાઇ તરફથી કરવામાં આવે છે. બન્ને ઓળી થાય છે. શ્રી લવજી સ્વામી જૈન પુસ્તકાલય છે. ચાતુર્માસ થાય છે. અગાઉ સ્વ. ગોસલીઆ ઓઘડદાસ નીમજીભાઇ ત્થા તેમના ધર્મ પત્ની કંકુમેને સારી સેવા બજાવેલ છે. સ્વ. વોરા વિરચંદ મોહનલાલ તરફથી ઉપાશ્રયમા રૂા. ૭૦૦૦) તેમના ધર્મપત્ની મરવાબાઇએ આપેલ છે

શ્રી સંઘની સાત મેમ્બરોની કમિટી છે. (૧) ગાંધી રતીલાલ મગનલાલ, (૨) વોરા રતિલાલ જેચંદભાઇ, (૩) ગોસળીયા મગનલાલ ઓઘડભાઇ (૪) વોરા નાગજી લલ્લુભાઇ, (૫) શાહ લલ્લુભાઇ ઉજમશી, (૬) ગો. પ્રેમચંદ ઓઘડભાઇ, (૭) ગો. ચતુરદાસ લહેરાભાઇ.

શ્રી કલકત્તા જૈન શ્વે. સ્થા. (ગુજરાતી) સંઘ

અહી સ્થા. જૈન ગુજરાતી સંઘના આશરે ૭૦૦ ઘર છે. સંખ્યા લગભગ ૩૫૦૦ છે. ઉપાશ્રય એક નવો હમણાં થોડાં વરસો પહેલા ત્રણ લાખના ખર્ચે બનવેલ છે. જેમાં ધર્મકરણી સારા પ્રમાણમાં થાય છે.

શ્રી વીરજી સુંદરજી જૈન કન્યાશાળા ચાલુ છે બન્ને મળીને સંખ્યા ૨૫૦ છે. પાંચ કલાસ ચાલુ છે. કોન્ફરન્સ તરફથી છપાયેલ પાઠાવલી ચલાવે છે. રાજકોટ શિક્ષણ સંઘ તરફથી પરીક્ષા લેવામા આવે છે જેમાં સારામા સારૂં પરિણામ આવેલ છે. શ્રી સંઘ ધાર્મિક કેળવણી પાછળ દર સાલ સારી રકમ ખર્ચ કરે છે, અને પુરતી કાળજી રાખે છે. આયબીલની બન્ને ઓળી થાય છે. જેમાં બન્ને વખત થઇને લગભગ ૩૩૦૦ આયબીલ છેલ્લા થયેલ. જેમા ભાઇશ્રી ત્રંબકલાલ દેવશીભાઇ દામાણી તથા માસ્તર વૃજલાલભાઇ જગજીવન દોમડીઆની સેવા નોંધપાત્ર છે.

શ્રી સંઘ તરફથી જૈન ભોજનાલય ચાલુ છે. જેમા હાલમાં ૨૦૦ મેમ્બરો લાભ લઇ રહ્યા છે. માસીક રૂા. ૧૮) લેવામાં આવે છે. ભોજનાલયમા શુદ્ધ ઘી તેમ જ સારામાં સારૂ અનાજ વાપરવામાં આવે છે. ભોજનાલયમા વાર્ષિક રૂા. ૯૦૦૦)ના આશરે ખોટ જાય છે. તે રકમ અગાઉ કલકત્તામા ભાઇશ્રી ભુપનભાઇની શુભ દીક્ષા પ્રસંગે થયેલ ફાળાની રકમના વ્યાજમાથી તેમજ પર્યુષણ પર્વમા ફાળો કરીને તેમજ લગ્ન આદિ શુભ પ્રસંગોમા મળતી રકમમાંથી શ્રી સંઘ ચલાવે છે. ભોજનાલયમાં આઠમ પાખી લીલોતરી શાક તેમજ કંદમૂળ સદંતર વાપરવામા આવતું નથી ભોજનાલયની શરૂઆતમા ત્રંબકલાલભાઇ દામાણી એ આપેલ સેવા નોંધપાત્ર છે. ભોજનાલય કમિટીમા શ્રી વૃજલાલ જગજીવન દોમડીઆ, શ્રી. છોટાલાલ હરીદાસ ગાંધી તથા શ્રી. કેશવલાલ જે ખંઢેરીઆ સેવા આપે છે.

શ્રી સંઘમા ૨૧ મેમ્બરોની કમિટી કામ કરે છે.

પ્રમુખ: શેઠશ્રી કાનજીભાઇ પાનાચંદ ભીમાણી.

ઉપપ્રમુખ: શ્રી. ગીરધરલાલભાઇ હંસરાજભાઇ કામાણી.

જનરલ સેક્રેટરી: શ્રી. જગજીવનભાઇ શીવલાલભાઇ દેશાઇ

જેઓ શ્રી સંઘના સેક્રેટરી તરીકે આજે ૧૫ વરસ થયા તન, મન, ધનથી અમૂલ્ય સેવા બજાવી રહ્યા છે.

જોઇન્ટ સેક્રેટરી: શાહ કેશવલાલ હીરાચંદ શાહ (જેઓ ઘણા જ ઉત્સાહી કાર્યકર્તા હોઇને શ્રી સંઘના દરેક સેવાના કાર્યમા અગ્રભાગ લઇ સારી સેવા બજાવે છે)

સંઘના ટ્રસ્ટીઓ સાત છે

પ્રમુખ સાહેબ તથા ઉપપ્રમુખ સાહેબ—બન્ને, શ્રી. ઝવેરચંદ પાનાચંદ મહેતા, શ્રી. નગીનદાસ કેશવજીભાઇ, શ્રી વનેચંદભાઇ ઝવેરચંદ દેશાઇ, શ્રી. કેશવલાલભાઇ જે. ખંઢેરીઆ, શ્રી. વૃજલાલભાઇ જગજીવન દોમડીઆ.

ઝરીઆ સંઘ

ઝરીઆમા આપણા સ્થાનકવાસી જૈન ભાઇઓનાં લગભગ ૧૦૦/૧૨૫ ઘર હશે આસપાસ ખાણનો વિસ્તાર હોઇ સંઘ જમણ વખતે લગભગ ૮૦૦—૧૦૦૦ માણસો થાય છે શરૂઆતમાં સને- ૧૯૩૫—૩૬માં પૂજ્ય મુનિશ્રી ફુલચંદજી મહારાજે લાંબો પંથ કરાચીથી કાપતાં ઝરીઆના શ્રાવકોની વિનંતિ ધ્યાનમાં લઇ ચોમાસુ કરી ઘણો જ લાભ આપ્યો ત્યાર બાદ કલકત્તા ચોમાસુ કરેલ. આ તરફ ૪/૫ વરસ રહી દીલ્હી તરફ પ્રયાણ કર્યું. ત્યાર બાદ સાધુ મહારાજનો જોગ થતો નહોતો, પણ પૂજ્ય મુનિશ્રી જગજીવનજી મહારાજ તથા શ્રી. જયંતિલાલજી મુનિ વિગેરે બનારસમાં અભ્યાસ માટે આવેલ, ત્યા અભ્યાસ પૂર્ણ કર્યા બાદ બંગાળ બિહારના શ્રાવકોની ઇચ્છાને માન આપી બનારસથી કલકત્તાના સંઘની આગેવાની હેઠળ વિહાર શરૂ કરેલ. રાજગૃહી આવતા ઝરીઆ સંઘની વિનતિને માન આપી ત્યાથી ઝરીઆ—કલકત્તામા સંઘની સાથે વિહાર શરૂ કરી ઝરીઆમા પધાર્યા એકાદ માસ રોકાઇ કમાશગઢ સરકેન્દ્ર થઇ બેરમો પધાર્યા ત્યાથી તાતાનગર તરફ વિહાર કર્યો અને પહેલુ ચોમાસુ કલકત્તામા કર્યુ તથા દીક્ષા ઓચ્છવ બહુ જ ધામધુમથી કલકત્તામાં થયો. બીજુ ચોમાસુ ઝરીઆ ત્રીજુ તાતાનગર. ત્યાથી વિહાર કરી આખો ઓરીસાનો પ્રવાસ કરી કટક સુધી જૈન ધર્મનો લાભ આપ્યો. ત્યાથી વિહાર કરી રાંચીમા ચોમાસુ કરેલ હતુ. આવી રીતે ૪ ચોમાસા થયાં. રાંચીથી વિહાર કરી બિહાર પધારેલ છે ગયા, હઝારીબાગ રસ્તો રહી જતાં તે તરફ પધારવા ધારણા છે, ઘણુ કરીને આવતી સાલનુ ચોમાસુ કલકત્તા કરશે તેમ અંદાજથી જાણી શકાય છે, ત્રણે મહારાજશ્રી સુખસાતામા છે. આ બાજુ અવારનવાર સાધુજી આવતા રહે તો શ્રાવકોમાં ધર્મની લાગણી જળવાઇ રહે ત્યાર બાદ મારવાડના સાધુઓ શ્રી પ્રતાપમલજી મહારાજ તથા શ્રી હીરાલાલજી મહારાજે પધારી ધર્મની લાગણીમા ઉમેરો કર્યો છે.

સ્વ. શ્રી. ઉમિયાશંકર કેશવજી મહેતા

તેઓ શ્રી મોરબીના વતની છે. ઝરીઆ સંઘમાં ઘણા વર્ષ સેક્રેટરી તરીકે તેમણે કામ કર્યું છે. તેમના સ્વર્ગવાસ પછી તેમના દીકરા શ્રી. અમૃતલાલભાઇએ કામકાજ સંભાળ્યુ હતુ તે પણ સ્વર્ગવાસ પામ્યા છે.

સંઘવી વીરજી રતનશી બેંકર

તેઓ મુદ્રા (કચ્છ)ના વતની છે. સંઘનાં કાર્યોમાં સારો ભાગ લે છે. કેળવણીના કાર્યમા તેઓ ખાસ રસપૂર્વક કાર્ય કરે છે તેઓ દાન પણ સારૂ કરે છે.

શ્રી મગનલાલ પ્રાગજી દોશી

તેઓશ્રી સંઘના સેક્રેટરી તરીકે સેવા બજાવે છે ખૂબ ધાર્મિક વૃત્તિવાળા છે તેઓ કાલાવડના વતની છે. તેમનો કોલસાની ખાણનો ધંધો છે તેઓ સમાજ સેવા સારી કરે છે. તેમના પુત્ર હરસુખલાલ પણ સેવાનાં કાર્યોમા તેમને મદદ કરે છે. પિતા પુત્ર બન્ને ઘણા જ સેવાભાવી છે.

શ્રી. હરીલાલ ગુલાબચંદ કામદાર

તેઓશ્રી રાજકોટના વતની છે. ઝરીઆમાં શ્રી. અમૃતલાલભાઇના સ્વર્ગવાસ પછી સંઘના સેક્રેટરી તરીકે કાર્ય સંભાળતા હતા, તેઓને દેશમા રહેવાનુ થતા તેમણે શ્રી મગનલાલભાઇને કામ સોપેલુ. તેમના ચિ ભાઇ નગીનદાસ હાલ વહીવટ સંભાળે છે.

શ્રી. કનૈયાલાલ બેચરલાલ દોશી

તેઓશ્રી રાજકોટના વતની છે સ્થિતિ સંપન્ન છે, નવો ઉપાશ્રય બનાવવામાં તેમણે સારો ફાળો આપેલ છે તથા રૂા. ૩૦૦૦, ની કીમતની જમીન પણ આપી છે. તેઓ ઘણા જ ધાર્મિક વૃત્તિવાળા અને ઉદાર છે.

શ્રી. જગજીવન માણેકચંદ મહેતા

તેઓ જામનગરના વતની છે. સમાજના દરેક કાર્યમાં આગળ પડતો ભાગ લે છે, તેઓ ઘણા સેવાભાવી છે. નવા ઉપાશ્રયના કામમાં રસપૂર્વક કાર્ય કરી તે કાર્ય પૂરૂ

કરી આપેલુ. મુનિશ્રી જયતીલાલજીના વિહાર સમયે તેઓ પણ અડવડિયા સુધી સાથે રહ્યા હતા, તથા કલકત્તાના વિહારમા પણ સાથે હતા.

શ્રી. ભાઇચંદ ફુલચદ દોશી

તેઓ રાજપરના વતની છે. જૂના ઉપાશ્રયની જમીન તેમણે દાનમા આપી હતી.

શ્રી. દેવચંદ અમુલખ મહેતા

તેઓ મોરબીના વતની છે. સમાજના દરેક કાર્યમા આગેવાનીભર્યો ભાગ લે છે. દાન કરવામાં પણ મોખરે રહે છે. મુનિશ્રી જયતીલાલજીના સદુપદેશથી ઉપાશ્રય બનાવવા માટે એ ત્રણ માસ સુધી આખો સમય તેમણે કાર્ય કર્યું હતું અને આર્થિક સહાય પણ ખુબ આપેલી. કમાસમાં તેમનુ સ્થાન પ્રથમ નબરનુ છે.

આ ઉપરાત શ્રી. લવજી વલમજી માટલીયા, સઘવી શીવલાલ પોપટભાઇ, શ્રી. મણીલાલ બી. સઘવી, કોઠારી જગજીવન કેશવજી વિ. ભાઇઓની સેવાઓ પણ ઉલ્લેખનીય છે.

ધી જૈન ટ્રેનીંગ કોલેજ, જયપુરના સ્નાતકો

આપણી સંસ્થાઓ

પ્રકાશન સંસ્થાઓ

૧ સેઠિયા જૈન ગ્રંથમાળા, બિકાનેર
૨. આત્મ જાગૃતિ કાર્યાલય, બ્યાવર
૩. જવાહર સાહિત્યમાળા, ભીનાસર
૪ જૈનોદય પુસ્તક પ્રકાશક સમિતિ, રતલામ
૫. અમોલ જૈન જ્ઞાનાલય, ધુલિયા પૂ. અમોલખ ઋષિ મ. નાં પ્રકાશનો
૬ સ્થાનકવાસી જૈન કાર્યાલય, અમદાવાદ
૭ શતા રત્નચંદ્રજી મહારાજના પ્રકાશનો, સુરેન્દ્રનગર
૮ લીંબડી સંપ્રદાયના પં. નાનચંદ્રજી મ. છોટાલાલજી મ. ના પ્રકાશનો
૯. કચ્છના પ્રકાશનો નાગજી સ્વામી, રત્નચંદ્રજી સ્વામી ઇ. ના.
૧૦. લીંબડી નાના સંઘાડાના પ્રકાશનો, પૂ. મોહનલાલજી તથા શ્રી. મણીલાલજી મ આદિના.
૧૧ પં. હસ્તીમલજી મ. ના પ્રકાશનો.
૧૨ પૂ. આત્મારામ મ. ના પ્રકાશનો
૧૩ ડૉ જીવરાજ ઘેલાભાઇના પ્રકાશનો
૧૪. બાલાભાઇ છગનલાલ ઠે. ફીકાભટની પોળ, અમદાવાદ
૧૫. દરિયાપુરી શ્રી હર્ષચંદ્રજી મ વગેરેના પ્રકાશનો
૧૬. બોટાદ સંપ્રદાયના મુનીઓનાં પ્રકાશનો.
૧૮. ગોંડલ સંઘાડાના મુનિઓનાં પ્રકાશનો.
૧૯ બરવાળા સંઘાડાના મુનિઓના પ્રકાશનો
૨૦. વા મો. શાહના પ્રકાશનો
૨ . જૈન કલ્ચરલ સોસાયટી બનારસના પ્રકાશનો
૨૨. સન્મતિ જ્ઞાનપીઠ, લોહામંડી, આગ્રાના પ્રકાશનો
૨૩. જૈન ગુરુકુળ પ્રેસ, બ્યાવરના પ્રકાશનો
૨૪ મહાવીર પ્રીન્ટીંગ પ્રેસ, બ્યાવરનાં પ્રકાશનો
૨૫ શ્વે સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સના પ્રકાશનો
૨૬. પં. શુક્લચંદ્રજી મ.ના (પંજાબ) પ્રકાશનો.
૨૭. મહાસતી પાર્વતીજી મ.ના (પંજાબ) પ્રકાશનો.
૨૮. જૈન સિદ્ધાંત સભા, મુંબઇના પ્રકાશનો.
૨૯ શ્રી રતનલાલજી દોશી, સૈલાણાનાં પ્રકાશનો.
૩૦. 'જિનવાણી' અને સમ્યગ્ જ્ઞાન પ્ર. સમિતિના પ્રકાશનો.
૩૧. મહાસતિજી ઉજ્જવળકુંવરજીનાં પ્રકાશનો.
૩૨ જૈન હિતેચ્છુ મંડળ, રતલામના પ્રકાશનો
૩૩ શ્રી ત્રિલોકરત્ન ધાર્મિક પરિક્ષા બોર્ડ પાથર્ડીનાં પ્રકાશનો
૩૪. ડૉ. અમૃતલાલ સ. ગોપાણી એમ. એ., પી એચ. ડી નાં પ્રકાશનો
૩૫. જૈન સાહિત્ય પ્ર. સમિતિ, બ્યાવરનાં પ્રકાશનો

સ્થા. જૈન પત્રો

૧ **જૈન પ્રકાશ**:-અ. ભા. શ્રી શ્વે. સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સનુ મુખપત્ર, સાપ્તાહિક હિન્દી તથા ગુજરાતી ભાષામાં ૧૩૦૦, ચાંદની ચોક, દિલ્હીથી પ્રકટ થાય છે. તંત્રીઓ શ્રી. ધીરજલાલ કે તુરખીઆ, શ્રી ખીમચંદ ભાઇ મ વોરા અને શ્રી શાંતિલાલ વ. શેઠ છે.

૨ **સ્થાનકવાસી જૈન** પાક્ષિક ગુજરાતી ભાષામાં પંચભાઇની પોળ, અમદાવાદથી પ્રગટ થાય છે તંત્રી શ્રી. જીવણલાલ છગનલાલ સંઘવી

૩ **રત્ન જ્યોત**: શ. પં. શ્રી. રત્નચંદ્રજી જૈન જ્ઞાન મંદિરનુ મુખપત્ર પાક્ષિક ગુજરાતી ભાષામાં સુરેન્દ્રનગરથી પ્રકટ થાય છે. તંત્રી-'સંજય.'

૪. **તરુણ જૈન**-સાપ્તાહિક, હિન્દી ભાષામાં મહાવીર પ્રેસ જોધપુરથી પ્રકટ થાય છે. તંત્રી. બાબુ પદ્મસિંહજી જૈન.

૫. **જૈન જાગૃતિ**: પાક્ષિક ગુજરાતી ભાષામા રાણપુર (સૌરાષ્ટ્ર-ઝાલાવાડ)થી પ્રગટ થાય છે. તંત્રી શ્રી. મહાસુખલાલ જે. દેસાઇ તથા શ્રી. બચુભાઇ પી. દોશી.

૬. **જિનવાણી**: શ્રી સમ્યગ જ્ઞાન પ્રચારક મંડળ તરફથી માસિક હિન્દી ભાષામાં ચોડા બજાર, લાલભવન, જયપુરથી પ્રકટ થાય છે. તંત્રી ચંપાલાલજી કર્ણાવટ, તથા શ્રી. શશિકાન્ત ઝા. B. A. L. L. B. શાસ્ત્રી.

૭. **જૈન સિદ્ધાંત**: જૈન સિદ્ધાન્ત સભાનુ મુખપત્ર માસિક. ગુજરાતી ભાષામા. શાંતિસદન, લેમિંગ્ટન રોડ, મુંબઇથી પ્રગટ થાય છે. તંત્રી શ્રી નગીનદાસ ગી. શેઠ.

૮. **સ્થાનકવાસી યુગધર્મ**: સૌરાષ્ટ્ર સ્થા. જૈન યુવક મંડળનુ માસિક પત્ર. તંત્રી-બાબુભાઇ સાકરચંદ સંઘવી.

૯. **સમ્યગ્ દર્શન** માસીક હિંદી ભાષામાં સૈલાણા (મધ્ય ભારત) થી પ્રકટ થાય છે. તંત્રી શ્રી. રતનલાલજી દોશી.

૧૦. શ્રમણ શ્રી જૈન સાંસ્કૃતિક મંડળનું મુખપત્ર માસિક હિન્દી ભાષામાં પાર્શ્વનાથ જૈનાશ્રમ હિન્દુ યુનિવર્સિટી, બનારસથી પ્રકટ થાય છે. તંત્રી: પં શ્રી. કૃષ્ણચંદ્રજી શાસ્ત્રી.

શ્રી જૈન કેળવણી મંડળ, મુંબઈ

આપણી શ્વે. સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સને સુવર્ણ જયંતિ મહોત્સવ ઉજવવાની તૈયારીઓ ચાલી રહી છે ત્યારે આ પ્રસંગે સામાજીક તેમજ ધાર્મિક સ્થા. જૈન સંસ્થાઓનો ટુંક ઇતિહાસ તેમજ વર્તમાન પ્રવૃત્તિઓ જાણવી જરૂરી છે.

સંવત ૧૯૬૦ એટલે લગભગ સન ૧૯૦૪માં મુંબઈમાં સ્વ. પૂજ્ય અમોલખ ઋષિજી મહારાજશ્રીની પ્રેરણાથી સ્થા. જૈન બાળકોમાં **જૈન ધર્મના શિક્ષણ સંસ્કારનું સિંચન થાય તે માટે** તે વખતના મુંબઈના આગેવાન શ્રાવકો શ્રી ઇંદરજી રતનજી, નેમીદાસ રતનજી, હરિદાસ પ્રેમજી, જેઠાલાલ પ્રેમજી, છોટાલાલ કેશવજી, જગજીવન દયાળ, શેઠ પ્રાણલાલ ઇન્દરજી, તુળસીદાસ મોનજી, ગોકુળદાસ પ્રેમજી, પુંજા લાધા વિગેરે ભાવિકોએ શ્રી રત્નચિંતામણિ સ્થા જૈન મિત્રમંડળની સ્થાપના કરી અને મંડળ દ્વારા ધાર્મિક પ્રવૃત્તિના પગરણ થયા મુંબઈ અને તેના વિસ્તારમાં જુદા જુદા સ્થળોએ જૈન પાઠશાળાઓ શરૂ કરવામાં આવી. આ સમયમાં મુંબઈમાં આપણા સ્થા. જૈન સમાજની-ધર્મની-લગભગ ૧૨ જેટલી સંસ્થાઓ ચાલતી હતી.

સેવાભાવી નિઃસ્વાર્થ યુવાન કાર્યકર ભાઈ-બહેનોનું જૂથ આ જૈન શાળાઓનું સંચાલન કરતું હતું. ભાઈઓ અને બહેનો માટે ધાર્મિક વર્ગો ચાલતા હતા, ધાર્મિક તહેવારોના ઉત્સવનું આયોજન થતું હતું. મુંબઈનો સ્થા. જૈન સમાજ ધર્મ જ્ઞાનની લ્હાણ લઈ રહ્યો હતો. ધીમે ધીમે મંડળની પ્રવૃત્તિઓ વધતી ગઈ. બહેનો માટે વ્યવહારિક શિક્ષણના-શિવણના-સંગીતના વર્ગો શરૂ થયા આ રીતે આપણી સામાજિક પ્રવૃત્તિઓનો ઉદય શરૂ થયો.

આપણા સમાજના વર્તમાન અગ્રગણ્ય કાર્યકરોએ આ સંસ્થામાં શિક્ષણ લીધું છે સંસ્કાર સિંચનના પયપાન બીજાને કરાવ્યા છે, અને આજે કરાવી રહ્યા છે.

ધીમે ધીમે આપણા સમાજમાં-રાષ્ટ્રમાં વ્યવહારિક શિક્ષણનો પ્રચાર વધતો ગયો. પરિણામે આગેવાન કાર્યકરોને લાગ્યું કે ધાર્મિક શિક્ષણ સાથે વ્યવહારીક શિક્ષણ આપતી શાળાની શરૂઆત કરી હોય તો સારૂં. આ માટે શ્રી રત્નચિંતામણી સ્થા. જૈન સ્કુલ શરૂ કરવામાં આવી. રત્નચિંતામણી સ્થા જૈન મિત્રમંડળે આ રીતે સ્કુલની શરૂઆત કરી.

આ કાર્યકર્તાઓને એમ લાગ્યું કે આપણે સ્કુલને હાઇસ્કુલ સુધી વિકસાવવી; ઉચ્ચ શિક્ષણ લેવા માગતા સ્થા જૈન વિદ્યાર્થીઓ માટે વિદ્યાલય-બોર્ડીંગની વ્યવસ્થા કરવી. તેમજ બીજી શિક્ષણ વિષયક પ્રવૃત્તિઓ જૈન સમાજ માટે તેમજ દેશને માટે શરૂ કરવી. પરિણામે રત્નચિંતામણિ સ્થા. જૈન મિત્ર મંડળના આજીવન કાર્યકર અને પ્રમુખશ્રી શેઠ પ્રાણલાલ ઇંદરજીભાઈ, શ્રી ચીમનલાલ ચકુભાઈ શાહ, શ્રી. દુર્લભજીભાઈ કેશવજીભાઈ ખેતાણી, શ્રી. વનેચંદદાસ ત્રિભોવનદાસ શેઠ વિગેરેના પ્રયત્નોથી આ મંડળે પોતાની સર્વ મિલ્કત અને સંસ્થાનું સંચાલન જૈન કેળવણી મંડળ Jain Education Society ઉભી કરવામાં સોંપી દીધું, અને આ રીતે રત્ન ચિંતામણિ સ્થા. જૈન-મિત્ર મંડળની સંસ્થામાંથી જૈન કેળવણી મંડળ જેવી વિશાળ સંસ્થાનો પ્રાદુર્ભાવ થયો. શ્રી જૈન કેળવણી મંડળને શ્રી રત્ન ચિંતામણી સ્થા. જૈન મિત્ર મંડળનું રૂપાંતરિત નામ પણ ગણીએ તો વધુ વ્યાજબી ગણાશે.

હાલ નીચે મુજબ શિક્ષણ સંસ્થાઓ જૈન કેળવણી મંડળ દ્વારા ચાલી રહી છે.

શ્રી. ચુનિલાલ મહેતા જૈન વિદ્યાલય

મુંબઈના અગ્રગણ્ય શાહ સોદાગર શ્રી ચુનિલાલ ભાઈચંદ મહેતાએ આ સંસ્થાને રૂપિયા ત્રણ લાખનું દાન કર્યું છે અને તેઓશ્રીનું નામ સંસ્થા સાથે જોડવામાં આવ્યું છે. આ સંસ્થામાં આજે ૪૦ વિદ્યાર્થીઓ લાભ લે છે. લગભગ ૧૫૦ વિદ્યાર્થીઓ ઉચ્ચ શિક્ષણનું જ્ઞાન લઈ ભારતના ખૂણે ખૂણે કામ કરી રહ્યા છે. કેટલાક વિદ્યાર્થીઓ પરદેશ ગયા છે, વિદ્યાલયમાં વિદ્યાર્થીઓને દરેક જાતની સગવડતા આપવામાં આવે છે, હિંદભરના સ્થા. જૈન વિદ્યાર્થીઓ માટે આશીર્વાદ રૂપ છે.

શ્રી શ્વે. સ્થા. જૈન વિદ્યાલય-પૂના

વર્ષોથી ભારતના અને મહારાષ્ટ્રના આપણા સ્થા. જૈન વિદ્યાર્થીઓ માટે શિવાજીનગર-પુનામાં આપણું શ્વે. સ્થા. જૈન વિદ્યાલય ચાલે છે. શ્રી અખિલ ભારત વર્ષીય શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સે તેની માલ

મિલ્કત સહિત આ વિદ્યાલય કેળવણી મંડળને સોંપેલ છે. સંસ્થાએ પાછળથી સારો ખર્ચ કરેલ છે. પુના વિદ્યાલયની કિંમત લગભગ ૧॥ લાખ જેટલી થાય છે. લગભગ ૮૦ વિદ્યાર્થીઓ માટે સગવડ છે, પુના શહેર મહારાષ્ટ્રનું કેળવણીનું અગત્યનું કેન્દ્ર છે દક્ષિણ ભારતના વિદ્યાર્થીઓ માટે આ સંસ્થા આશીર્વાદરૂપ છે.

શ્રી. કેશવલાલ રાઘવજી સંઘરાજકા એન્ડ બ્રધર્સ વિદ્યાલય, વડાલા

શ્રી. સંઘરાજકા ભાઈઓની રૂા. ૧,૧૧,૧૧૧ની ઉદાર સખાવતથી મુંબઈમાં માટુંગા વડાલા પાસે સંસ્થા તરફથી ૨॥ લાખના ખર્ચે ભવ્ય આલીશાન મકાન બાંધવામાં આવ્યું છે. હાલ ૫૦ વિદ્યાર્થીઓ આ સંસ્થામાં દાખલ થયા છે. કુલ્લે ૮૦ વિદ્યાર્થીઓની સગવડતા છે. આ વિદ્યાલયમાં અદ્યતન સાધનસામગ્રી છે. પોસ્ટ ગ્રેજ્યુએટ વિદ્યાર્થીઓ તેમજ માટુંગા વિસ્તારમાં આવેલી કોલેજના વિદ્યાર્થીઓ માટે આ સંસ્થા ઘણી જ ઉપયોગી થઈ રહી છે.

શ્રીમતિ રતનબાઈ કેશવજી ખેતાણી રત્નચિંતામણી સ્થા. જૈન હાઈસ્કૂલ

(૧) કેળેવાડી-ગીરગામ જેવા શહેરના મધ્ય લત્તામાં અને આલીશાન મકાનમાં ચાલતી આ શાળા શિક્ષણ સરગમથી ગુંજતું એક આદર્શ કેળવણી ધામ બની રહેલું છે.

(૨) હાઈસ્કુલના બન્ને વિભાગો પ્રાથમિક અને માધ્યમિક હવે કેળેવાડીના મકાનમાં આવી ગયા છે, કોલભાટ લેન, કાલબાદેવી રોડ પર બાળમંદિર શરૂ કરવામાં આવ્યું છે.

(૩) વિદ્યાર્થીઓને ઉચ્ચ પ્રકારનું, આધુનિક શિક્ષણ મળે એ માટે સરકારી ધોરણે પદ્વીધર, ઉચ્ચ ડીગ્રી ધરાવતા ટ્રેઈન્ડ શિક્ષક-શિક્ષિકાઓને રોકવામાં આવેલ છે.

(૪) શાળામાં સહશિક્ષણ પ્રથા હોવાથી વિદ્યાર્થીઓ તેમજ વિદ્યાર્થીનીઓ, બન્નેને દાખલ કરાય છે.

(૫) નૈતિક શિક્ષણ પ્રત્યે સંપૂર્ણ લક્ષ્ય અપાય છે.

(૬) વિજ્ઞાનનાં શિક્ષણ માટે આધુનિક ઢબની વિશાળ લેબોરેટરી છે.

(૭) હેન્ડીક્રેફ્ટ લેધરવર્ક, કાર્ડબોર્ડ વર્ક, હસ્ત ઉદ્યોગ, ચિત્રકામ, આદિ શિક્ષણ ટ્રેઈન્ડ શિક્ષકો દ્વારા અપાય છે.

(૮) શારિરીક શિક્ષણ પ્રત્યે વધારેમાં વધારે લક્ષ્ય અપાય છે.

(૯) વાચનાલય, પુસ્તકાલય, રેડીયો અને લાઉડ સ્પીકરની, પણ વ્યવસ્થા છે અને આ વર્ષે કેળવણી વિષયક ફીલ્મોનું પ્રદર્શન કરવા માટે ફીલ્મ પ્રોજેક્ટર, સ્ક્રીન, આદિ વસાવવાની યોજના વિચારણા હેઠળ છે

(૧૦) ગયા વર્ષથી A. C. C. ની પણ શરૂઆત કરી છે અને ૫૦ વિદ્યાર્થીઓની એક ટુકડી તૈયાર કરવામાં આવી છે.

(૧૧) જૈન દર્શનની ઉચ્ચ સંસ્કૃતિને પોસતી આ શાળાની વિશિષ્ટતા એ છે કે એનાં વ્યવહારિક શિક્ષણની સાથોસાથ, માનવજીવનસ્પર્શી જીવંત, નૈતિક શિક્ષણ અપાય છે વિદ્યાર્થીઓમાં શિસ્ત, સંયમ, સ્વચ્છતા, વિવેક અને વ્યવસ્થાની સુયોગ્ય ટેવો ખીલવવા માટે પ્રત્યક્ષ અને પરોક્ષ પ્રયાસો થાય છે.

શ્રી રત્નચિંતામણિ સ્થા. જૈન પાઠશાળા

શ્રી રત્નચિંતામણિ સ્થા. જૈન સ્કુલમાં સવારના ભાગમાં બાળકો માટે ધાર્મિક શિક્ષણનો વર્ગ નિયમિત ચાલે છે, અને હાલ આ સંસ્થામાં ૬૦ બાળકો લાભ લે છે.

શ્રી મધુ બાળમંદિર

શ્રી અમુલખભાઈ અમીચંદે સોસાયટીને બાળમંદિર શરૂ કરવા માટે અગાઉ રૂા. ૨૫૦૦૧ આપ્યા છે, જગ્યાના અભાવે સંસ્થા બાળમંદિર શરૂ કરી શકતી ન હતી, પરંતુ કોલભાટ લેનમાં ચાલતી રત્નચિંતામણિ સ્થા. જૈન સ્કુલને કેળેવાડી-ગીરગામ પર લઈ ગયા તેથી ત્યાં જગ્યાની અનુકૂળતા થવાથી બાળમંદિર જુન ૧૯૫૧થી શરૂ કરવામાં આવેલ છે. બાળમંદિરનું નામ દાતાની ઇચ્છાથી "મધુ બાળમંદિર" રાખવામાં આવ્યું છે. આ બાળમંદિરમાં હાલ ૫૦ બાળકોની સંખ્યા છે

૭. આ રીતે આ સંસ્થા દ્વારા આજે મુંબઈમાં શિક્ષણની અનેકવિધ પ્રવૃત્તિ થઈ રહેલ છે. ઘાટકોપરમાં આવેલી શ્રી રત્નચિંતામણિ સ્થા. જૈન સ્કુલ (પંડિત રત્નચંદ્રજી જૈન કન્યાશાળા) એ પણ આ જ સંસ્થાની સ્થાપેલી છે.

શ્રી જૈન કેળવણી મંડળે સમાજમાં અનન્ય સ્થાન પ્રાપ્ત કરેલ છે. જૈન સમાજ આજે સાધન સંપન્ન હોવા સાથે જાગૃત છે, પ્રગતિવાન છે, પોતાની ભાવિ પેઢીના

શિક્ષણ સંસ્કારવર્ધન માટે ચિંતનશીલ છે, એ એક પ્રેરણાદાયી ચિન્હ છે.

સંસ્થાના હોદ્દેદારોની કમિટી નીચેના ભાઇઓની બનેલી છે:

૧. શ્રી પ્રાણલાલ ઇંદરજી શેઠ, પ્રમુખ

૨. શ્રી ઝવેરચંદ રાઘવજી સંઘરાજકા, ઉપ-પ્રમુખ

૩. શ્રી. વરજીવનદાસ ત્રીભોવનદાસ, ખજાનચી.

૪. ચિમનલાલ ચકુભાઇ શાહ એમ. પી , માનદમંત્રી.

૫. શ્રી દુર્લભજી કેશવજી ખેતાણી, માનદમંત્રી.

એ શિવાય બીજા ૨૯ સભ્યો મળીને કુલ્લે ૩૪ ભાઇઓની વર્તમાન કમિટી છે. આ સંસ્થાના મેનેજર તરીકે છેલ્લાં સાત વર્ષથી જૈન સમાજના કાર્યકર્તા શ્રી બચુભાઇ પી. દોશી કામ કરી રહ્યા છે

મંડળનું સભ્યપદ

એકસાથે રૂા. ૧૦,૦૦૦ કે તેથી વધુ રકમ આપે તે આશ્રયદાતા.

એકસાથે રૂા. ૫૦૦૦ કે તેથી વધુ રકમ આપે તે ઉપ-આશ્રયદાતા.

એકસાથે રૂા. ૧,૦૦૦ કે તેથી વધુ રકમ આપે તે આજીવન સભ્ય, વાર્ષિક રૂા. ૫૦ આપે તે સામાન્ય સભ્ય.

આ રીતે આ સંસ્થા સમસ્ત 'જૈન સમાજના શિક્ષણમા' અદ્વિતીય અને અજોડ કામ કરી રહી છે.

શ્રી શ્વે. સ્થાનકવાસી જૈન યુવક મંડળ, મુંબઇ

આ મંડળની સ્થાપના તા. ૬-૫-૧૯૪૫ને રવિવારના રોજ કરવામાં આવેલ છે.

સ્થાનકવાસી જૈન યુવાનો માટે મુંબઇમાં ચાલતું આ મંડળ લગભગ ૫૦૦ નવલોહીયા યુવાનોનું સંખ્યાબળ ધરાવે છે. અગિયાર વર્ષથી મંડળ મુંબઇના જૈન જૈનેત્તર સમાજની અનેકવિધ સેવાની પ્રવૃત્તિ કરી રહ્યુ છે.

મંડળની જુદી જુદી પ્રવૃત્તિઓ

મફત પેટન્ટ દવાની રાહત યોજના—સેવા એ જ મંડળનુ ધ્યેય છે, વર્ષોથી મંડળ તરફથી મધ્યમ વર્ગને મફત પેટંટ દવાઓ માદગીના સમયે આપવાની પ્રવૃત્તિ ચાલે છે. દિનપ્રતિદિન આ યોજનાનો લાભ મધ્યમ વર્ગનાં ભાઇ-બહેનો વધુ પ્રમાણમા લઇ રહેલ છે.

ધાર્મિક શિક્ષણ—મંડળ તરફથી પાયધુની ટી. જી. શાહ બિલ્ડીંગમા સાંજે જૈનશાળા ચાલે છે. જેમાં ૫૦ જેટલા બાળક-બાળીકાઓ ધાર્મિક શિક્ષણનો લાભ લઇ રહેલ છે.

શ્રાવિકાશાળા—બપોરના ૨ થી ૪ બહેનો માટે પણ ધાર્મિક શિક્ષણના વર્ગો ઉદ્યોગ મંદિરની સાથે ચાલે છે અને આ માટે ખાસ ધાર્મિક શિક્ષિકા બહેનની વ્યવસ્થા કરવામાં આવી છે.

ઉદ્યોગ મંદિર—આજે ઉદ્યોગ મંદિરો આ મંડળની પ્રવૃત્તિના મુખ્ય કેન્દ્રો છે. આપણા સમાજની બહેનો પોતાના ફાજલ સમયનો ઉપયોગ કરી શકે અને ગૃહઉદ્યોગો વડે સ્વતંત્ર બની કુટુંબની આવકમા ઉમેરો કરી શકે તેમજ આર્થિક રીતે પગભર બની સ્વમાનપૂર્વક જીંદગી વ્યતિત કરી શકે તે દૃષ્ટિએ આ ઉદ્યોગમંદિરની સ્થાપના કરવામા આવી છે.

હાલ ઉદ્યોગ મંદિર નીચેનાં બે સ્થળોએ ચાલી રહેલ છે. (૧) પાયધુની, ટી. જી. શાહ બિલ્ડીંગ, ચોથે માળે, (૨) ગોપાળ નિવાસ, પ્રીન્સેસ સ્ટ્રીટ, મુંબઇ. ૨. આ બન્ને ઉદ્યોગશાળામા હાલ ૧૦૦ જેટલી બહેનો ખાસ શીવણની તાલીમ પામેલા નિષ્ણાત શિક્ષિકા બહેનો પાસે શીવણનુ કાર્ય શીખી રહેલ છે. તેમજ શીવણ ઉપરાંત ભરત-ગુંથણ તેમજ એમ્બ્રોઇડરીનુ જ્ઞાન પણ આપવામા આવે છે. કોઇ પણ જાતની ફી લેવામાં આવતી નથી. કોઇ પણ જાતના ફિરકાના ભેદભાવ વિના કોઇ પણ જૈન બહેનને દાખલ કરવામા આવે છે, કેટલીક બહેનો આજે શીવણનુ કાર્ય શીખી બહારનું કામ મેળવી રહી છે. તેમજ પોતાના ઘરના કપડાં સીવી ઘર ખર્ચમાં બચાવ કરી રહી છે તે ધન્યવાદને પાત્ર છે સમાજમા તૈયાર થએલ શીવણ કાર્ય શીખેલી બહેનોને કામ આપવાની દિશામાં પણ મંડળે પોતાની શુભ યાત્રા શરૂ કરી દીધી છે.

સ્નેહ સંમેલન: એ યુવક મંડળની સામાજિક પ્રવૃત્તિઓનુ પ્રતિબિંબ છે. પ્રતિવર્ષે સ્નેહ સંમેલનના પ્રસંગે મંડળના સભ્યો એક બીજાના પરિચયમાં આવે છે. આ ઉપરાંત ઉદ્યોગ મંદિરની બહેનો તથા જૈન શાળાના બાળક-બાળિકાઓ રાસ, ગરબા નાટિકા, નૃત્ય

વિ. સંસ્કારી પ્રવૃત્તિ દ્વારા પ્રતિવર્ષે સમાજ સમક્ષ હેતુલક્ષી મનોરંજન કાર્યક્રમ રજૂ કરે છે.

નિબંધ - હરીફાઇ–જુદા જુદા વિષયો પર આપણા સમાજના યુવાન ભાઇબ્હેનોના વિચારો જાણી શકાય. તેમ જ તેમનામા લેખન પ્રવૃત્તિનો વિકાસ થઇ શકે તે માટે પ્રતિવર્ષે નિબંધ હરીફાઇ યોજનામા આવે છે. આજ સુધીમાં સાત ઇનામી નિબંધ હરીફાઇ યોજવામા આવી છે. આઠમી ઇનામી નિબંધ હરીફાઇ હમણાં જ જાહેર કરવામા આવી છે.

પર્યટન અને પ્રીતિ ભોજન: દર વર્ષે મંડળના સભ્યો કુટુંબ સહિત એક બીજાના પરિચયમાં આવી શકે તે માટે આનંદ પર્યટનો ગોઠવવામા આવે છે. ઉપરાત ૧૯૫૫થી મંડળના સભ્યોનુ કુટુંબ સહિત પ્રીતિ ભોજન રાખવાનુ શરૂ કર્યુ છે.

ક્રિકેટ ટીમ આપણા યુવાનોનાં દિલમા ખેલદીલી અને શિસ્તની ભાવના જાગે તે માટે મંડળ શારીરિક પ્રવૃત્તિઓ કરવા માગે છે દર વર્ષે ક્રિકેટ ટીમ ચાલે છે.

મંડળની ભાવી પ્રવૃત્તિઓ: સગપણ, લગ્નમાં થતા ખોટા ખર્ચના રિવાજો બંધ કરાવવા બાબતમા મંડળ તરફથી એક વગદાર કમિટી નિમવાની યોજના વિચારાઇ રહેલ છે. નર્સીંગ, તથા ગૃહવિજ્ઞાનના વર્ગો ખોલવાની ઇચ્છા છે તેમજ ભાઇઓ માટે ટાઇપ રાઇટીંગ, દેશીનામુ, અંગ્રેજી નામુ, અંગ્રેજી પત્રવ્યવહારના વર્ગો શરૂ કરવાની ભાવના છે. ઉપરાત સુંદર વાંચનાલય અને સુંદર પુસ્તકાલય શરૂ કરવાની ઇચ્છા છે.

આ રીતે ઉપર્યુક્ત પ્રવૃત્તિઓનો પ્રવાહ નિરંતર વહી રહ્યો છે, તેમ છતા અન્ય પ્રવૃત્તિના ઝરણા સમાજના સહૃદયી સહકારથી વહેવડાવવાની ભાવના છે.

સેવા, સમર્પણ અને સહકાર એ જ મંડળનું ધ્યેય છે

મંડળના સને ૧૯૫૫–૫૬ ના હોદ્દેદારો અને પદાધિકારીઓ નીચે પ્રમાણે છે :

શ્રી. કેશવલાલ દુર્લભજીભાઇ વીરાણી, પ્રમુખ
શ્રી. રમણીકલાલ કસ્તુરચંદ કોઠારી, ઉપપ્રમુખ
શ્રી. નવિનચંદ્ર ફુલચંદ ખંઢેરીઆ, મંત્રી
શ્રી. કાંતિલાલ લક્ષ્મીચંદ મોદી ,,
શ્રી. ડાહ્યાલાલ નાગરદાસ સંઘાણી ,,
શ્રી. મફતલાલ ઠાકરસી શાહ, ખજાનચી
શ્રી. ચંપકલાલ અજમેરા, કોપાધ્યક્ષ

આ ઉપરાત મંડળની સ્થાપનાથી આજ સુધી કાર્યકર બંધુઓ પણ સક્રિય રસ લઇ મંડળની પ્રવૃત્તિને વેગવાન બનાવી રહ્યાં છે.

શ્રી સૌરાષ્ટ્ર સ્થા. જૈન શિક્ષણ સંઘ, રાજકોટ

આ સાથે જૈન શાળા તથા કન્યાશાળા જોડાયેલ છે. દર વર્ષે શ્રી શિક્ષણ સંઘ તરફથી લેવાતી ધાર્મિક વાર્ષિક પરીક્ષામાં બાલકબાલિકાઓ બેસે છે

શ્રી દશા શ્રીમાળી જૈન વણીક વિદ્યાર્થી ભવન, રાજકોટ

બોર્ડીંગમાં લગભગ ૭૦ વિદ્યાર્થીઓ લાભ લે છે, આજસુધીમા ૨૩૦૦ વિદ્યાર્થીઓએ લાભ લીધો છે, ૪૬ વરસ થયા આ સંસ્થા કાર્ય કરી રહી છે. આ સંસ્થાના પ્રમુખ હકમીચંદ લક્ષ્મીચંદભાઇ છે, સેક્રેટરી તરીકે શ્રી. મગનલાલ અમૃતલાલ મહેતા છે, જેમાં ૧૩ જણની કમિટી છે, જેમાં ૩૯ વરસ સુધી એકધારી સેવા આપી શાહ મોહનલાલ કસ્તુરચંદભાઇ હાલમા નિવૃત થયા છે.

કાન્તાબેન સ્ત્રી વિકાસ ગૃહ–શેઠ કેશવલાલ તલકચંદ ભાઇએ રૂા. ૩,૦૦,૦૦૦ ખર્ચ કરી બનાવેલ છે. જેમા ત્યજાયેલી, ગુંડાનો ભોગ બનેલી, અનાથ બ્હેનોને આશ્રય આપી સ્વાવલંબી બનાવવામા આવે છે. આજ સુધીમા ઘણી બ્હેનોને હુન્નર ઉદ્યોગનુ શિક્ષણ આપીને ધંધા ઉપર ચડાવી સ્વાવલંબી બનાવેલ છે. હીરાબ્હેન સારી સેવા આપે છે. સૌરાષ્ટ્રના રાજપ્રમુખ જામસાહેબે પણ ઉપરોક્ત વિકાસગૃહ માટે સંતોષ વ્યક્ત કરેલ છે.

શ્રી નિર્મળાબેન રામજીભાઇ વિરાણી નિરાધાર અશક્ત સ્ત્રી વૃદ્ધાશ્રમ, રાજકોટ

આ આશ્રમમા રૂા ૧||| લાખનુ દાન આપીને શ્રી વિરાણી રામજીભાઇએ વિશાળ મકાન બનાવી આપેલ છે, જેમા આજ સુધીમા ૪૦૦ માતાઓએ લાભ લીધો છે, અને હાલમા ૩૦ માતાઓ લાભ લઇ રહ્યા છે. શ્રી પ્રેમકુંવરબેન દેશાઇ માનદ મંત્રી તરીકે ઘણા વરસો થયા સારી સેવા બજાવી રહ્યા છે.

નિરાધાર વૃદ્ધ માતાઓને રહેવાનુ, જમવાનુ અને માંદગીની સારામા સારી સગવડતા આપવામાં આવે છે. આવુ આશ્રમ આખા સૌરાષ્ટ્ર ગુજરાતમાં પ્રથમ છે.

કોંગ્રેસ પ્રમુખ શ્રી. ઢેબરભાઈએ ઉદ્ઘાટન વિધિ વખતે સંતોષ વ્યક્ત કરેલ હતો.

શ્રી ઝાલાવાડી સ્થા. જૈન મિત્રમંડળ, મલાડ, મુંબઈ

શ્રી ઝાલાવાડી સ્થાનકવાસી જૈન મંડળ સ. ૨૦૧૦ના મહા સુ. ૫ના રોજ તા. ૩૧–૧–૫૪ના રોજ સ્થાપવામાં આવ્યુ. આ મંડળ સ્થાપવાનો હેતુ પરસ્પર સહાયરૂપ થવું, સમાજનો ઉત્કર્ષ સાધવો, માંદાની માવજતના સાધનો આપવા, દરેક ઝાલા. ભાઈઓના કુટુંબના વિદ્યાર્થી ભાઈઓને પાઠ્યપુસ્તક ફરજીઆત મફત આપવા અને સહકાર અને સહાયની ભાવના કેળવવી.

૧. શ્રી હિંમતલાલ જાદવજી કોઠારી, પ્રમુખ
૨. શ્રી રતિલાલ ત્રિ. સરખેજી
૩ શ્રી વૃજલાલ નારણજી શાહ
૪ શ્રી ભાઈલાલ કે. સંઘવી
૫. શ્રી ચીમનલાલ ભૂ. ગાંધી
૬. શ્રી ખીમચંદ હીરાલાલ શાહ
૭. શ્રી પ્રાણલાલ મ. સખીદા
૮. શ્રી રમણિકલાલ ધી. શાહ
૯. શ્રી વીરચંદ ભૂદરભાઈ શાહ
૧૦. શ્રી ચંદુલાલ એસ. ગોપાણી

શ્રી ઝાલાવાડી સ્થા. જૈન સભા, મુંબઈ

પ્રમુખ: શ્રી ચીમનલાલ ચકુભાઈ શાહ M. P.

ઉપપ્રમુખ અને ટ્રસ્ટી. શ્રી. ગોકળદાસ શીવલાલ અજમેરા.

ટ્રસ્ટી· શ્રી. રામજી કરસનજી ડોઢીવાળા, તથા શ્રી. હરખચંદ ત્રિભોવનદાસ.

સેક્રેટરી: શ્રી. નંદલાલ તારાચંદ વોરા તથા શ્રી. શ્રી. પ્રેમચંદ ઉજમશી.

સંસ્થાએ કેળવણીના ક્ષેત્રે વિદ્યાર્થીઓને ઉપયોગી થવા શક્ય પ્રયત્ન કર્યા છે. વિધવા બ્હેનોને સહાયતા આપવાની પોતાની પ્રાથમિક ફરજ માની છે. જરૂરીઆત-વાળા કુટુંબોને સહાયતા આપવા માટે પણ સંસ્થા તત્પર રહી છે આ ઉપરાંત સ્વયંસેવક દળ વડે પણ સમાજની ઉપયોગી સેવા બજાવી રહેલ છે. મધ્યમ વર્ગને ઉપયોગી થવા માટે માસિક પત્રિકા પણ ચલાવી રહેલ છે. આ બધી પ્રવૃત્તિઓની ટુંકી રૂપરેખા નીચે-મુજબ છે:

સહાયતાની પ્રવૃત્તિઓ

કેળવણીને ઉત્તેજન: કેળવણી એ આજના યુગની મુખ્ય જરૂરીઆત છે અને તેથી સમાજમાં કેળવણીનુ પ્રમાણુ વધે તે માટે આ સભા તરફથી વિદ્યાર્થીઓને પાઠ્યપુસ્તકો અને ઉચ્ચ કેળવણી લેતા વિદ્યાર્થીઓને લોન આપવામા આવે છે. દર વર્ષે લોન તરીકે રૂા. ૩૦૦૦) વાપરવામાં આવે છે. અત્યાર સુધીમાં આ સંસ્થાએ કેળવણી પાછળ આશરે રૂા. ૫૦,૦૦૦ ખર્ચ્યા છે.

સ્વધર્મી બંધુઓને અને વિધવા બ્હેનોને સહાય: બહારગામથી ધંધાર્થે મુંબઈમાં આવતા સાધન વગરના ઝાલાવાડી સ્થા બંધુઓને યતકિંચિત ઉપયોગી થવા માટે આ યોજના શરૂ કરવામા આવેલ છે. આ યોજના હેઠળ સ્વધર્મી બંધુઓને આર્થિક સહાય આપવામા આવે છે, એટલુ જ નહિ, પરંતુ સભાના આગેવાન ભાઈઓની લાગવગનો ઉપયોગ કરીને, બેકાર ભાઈઓને કામે લગાડવાનો પણ પ્રયત્ન કરવામા આવે છે.

સભા તરફથી વિધવા બહેનોને પણ શક્ય સહાયતા આપવામાં આવે છે.

સહાયતાની અન્ય પ્રવૃત્તિઓ: આ સભા તરફથી બહારગામની પાંજરાપોળોને આર્થિક સહાયતા આપ-વામા આવે છે. અનેક સંસ્થાઓને અને બોર્ડીંગોને પણ કેટલાક વર્ષોથી સભા તરફથી નિયમિત સહાય આપવામાં આવે છે.

ધાર્મિક પર્વોની ઊજવણી

પર્યુષણ પર્વ દરમિયાન પ્રતિક્રમણ આદિ ધાર્મિક ક્રિયાઓ કરવા માટે સભા તરફથી વિશાળ જગ્યાની વ્યવસ્થા કરવામાં આવે છે. પર્યુષણ પર્વના આઠેય દિવસોમાં સભાના જુદા જુદા સદ્ગૃહસ્થો તરફથી વાસણ વગેરે વસ્તુઓની પ્રભાવના પણ કરવામાં આવે છે. લ્હાણીની યોજનાને મોટા ફંડ વડે સ્થાયી બનાવવામા આવેલ છે.

સંવત્સરી બાદ સભા તરફથી સ્વામી વાત્સલ્ય જમણ પણ યોજવામાં આવે છે

સ્વયંસેવક, સ્વયંસેવિકા અને દળ બેન્ડ

સભાની અનેકવિધ પ્રવૃત્તિઓનું એક વિશિષ્ટ અંગ, એ સભાનું શિસ્તબદ્ધ સ્વયંસેવક દળ છે. આ સ્વયંસેવક

દળ ૩૦ વર્ષથી સુંદર સેવા આપી રહેલ છે. માત્ર જૈન સમાજ જ નહિ, પરન્તુ રાષ્ટ્રીય સેવાના સખ્યાબધ પ્રસંગોએ આ દળે પ્રશસતીય સેવા આપેલી છે, એટલું જ નહિ પરન્તુ પોતાની આદર્શ સેવા અને શિસ્ત વડે અનેક માનચાંદો અને અભિનંદનો પ્રાપ્ત કરેલ છે. છેલ્લે શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રાવક સંઘ, મુબઇ તરફથી આ દળને ચાંદો પ્રાપ્ત થયેલ છે.

સભાના આશ્રયે એક બેંડ ટીમ પણ તૈયાર થઇ રહેલ છે, તેમજ સ્વયંસેવિકા દળની પણ સ્થાપના કરવામા આવેલ છે.

વસતીપત્રક

તાજેતરમા આ સભા તરફથી મુબઇ અને પરાંઓમાં વસતા ઝાલાવાડી સ્થા. જૈનોનુ એક વસતીપત્રક તૈયાર કરવામાં આવેલ છે ઝાલાવાડના સ્થા. જૈનો પરસ્પર પરિચીત બને અને જરૂરી માહિતી મેળવી શકે તે માટે ખાસ જહેમત ઉઠાવીને આ વસતીપત્રક તૈયાર કરવામા આવેલ છે અને છપાઇ પણ રહેલ છે.

માસિક પત્રિકા

સભા તરફથી એક માસિક પત્રિકા પણ પ્રગટ કરવામા આવે છે. આ પત્રિકાના તંત્રીઓ આપણા સમાજના જાણીતા કાર્યકર્તાઓ શ્રી. ખીમચદભાઇ મગનલાલ વોરા અને શ્રી. કેશવલાલ મગનલાલ શાહ છે. સસ્થાના ધ્યેયોને પાર પાડવા માટે, પ્રચલિત ખર્ચાળ રીતરીવાજો ઓછા કરવા માટે અને રચનાત્મક પ્રવૃત્તિઓ હાથ ધરવા માટે આ પત્રિકા પ્રગટ કરવામા આવે છે

તેનુ વાર્ષિક લવાજમ માત્ર રૂા. ૧–૦–૦ નામનુ રાખવામા આવેલ છે સભ્યોને મફત મોકલવામા આવે છે

સભાના મુખ્ય કાર્યકર્તાઓ

સભાની સ્થાપનાથી અત્યાર સુધીમા જે જે કાર્યકર્તાઓએ સેવા આપી છે તેમા શ્રી. વ્રજલાલ ખીમચંદ શાહ, શ્રી. દીપચંદ ગોપાલજી શાહ, શ્રી વ્રજલાલ કાળીદાસ વોરા, શ્રી. જગજીવન ડોસાભાઇ, શ્રી જીવરાજ માસ્તર અને શ્રી ધીરજલાલ કેશવલાલ તુરખીઆની સેવાઓ મુખ્ય છે.

વર્તમાનમાં પણ અનેક કાર્યકર્તાઓનો સાથ સભાને સુંદર રીતે સાંપડી રહેલ છે.

શ્રી મોરબી દશા શ્રીમાળી વણિક વિદ્યાર્થી ભુવન, મોરબી

ટ્રસ્ટ બોર્ડના પદાધિકારીઓ નીચે પ્રમાણે છે :—

ઝવેરી ડાહ્યાલાલ મકનજી, પ્રમુખ

શાહ હરિચંદ મોરારજી, મંત્રી

તે ઉપરાંત નવ સભ્યો છે.

આ સસ્થાના ઉત્પાદક, ધર્મપ્રેમી અને દાનવીર શેઠ અંબાવીદાસભાઇ ડોસાણી હતા. તેનુ ઉદ્દ્ઘાટન સને ૧૯૨૩ના સપ્ટેમ્બરની ૧૨મી તારીખે મોરબીના મહારાજા સાહેબ શ્રી લખધીરસિહજી બહાદુરના વરદહસ્તે થયુ હતુ. આજે ૩૨ વર્ષોના ગાળા પછી આ સંસ્થા ખૂબ ફૂલીફાલી છે મહારાજા સાહેબે આ સસ્થાને રૂા ૨૫,૦૦૦) અર્પણ કર્યા છે, તે જ તેઓ નામદારનો સસ્થા પ્રત્યે પ્રેમ દર્શાવે છે. કુલ રૂા ૪૨,૦૦૦ નુ ફડ થયેલું, તેમાંથી રૂા ૨૦૦૦ ખર્ચ માટે રાખી બાકી રૂા. ૪૦,૦૦૦ કાયમ રાખી તેના વ્યાજમાંથી સસ્થાનો વહીવટ ચલાવવાની વ્યવસ્થા કરવામાં આવી હતી વિદ્યાપ્રેમી અને ઉદાર જ્ઞાતિબંધુઓની સહાયતાથી તથા સસ્થાનો વહીવટ સુચારુ રીતે થવાથી આજે આ સસ્થાનુ કાયમી ફડ રૂા. ૧,૦૫,૦૦૦) ઉપર પહોંચેલ છે. શરૂઆતમાં ભાડાનુ મકાન રાખ્યુ હતુ, તેને બદલે આજે સસ્થાન. પોતાનાં મકાનો બની ગયા છે અને તેમાં લગભગ ૧૦૦ વિદ્યાર્થીઓની સગવડ થઇ શકે તેમ છે.

સસ્થાની શરૂઆતમાં વિદ્યાર્થીઓની સખ્યા ૨૬ ની હતી, જ્યારે આજે ૭૦ થી ૧૦૦ સુધીની રહે છે, જેમા માધ્યમિક કેળવણી લેતા તથા મોરબીના ટેકનીકલ ઇન્સ્ટિટ્યૂટમા ઉચ્ચ કેળવણી લેતા વિદ્યાર્થીઓનો સમાવેશ થાય છે.

આ સંસ્થામાં વિદ્યાર્થીઓ પાસેથી કેવળ માસિક રૂા. ૨૦) લેવામા આવે છે, જો કે સસ્થાને ઘણો ખર્ચો આવે છે. વિદ્યાર્થીઓ આ છાત્રાલયમાં રહી અભ્યાસમા પૂરતુ ધ્યાન આપે છે શારીરિક તંદુરસ્તી જાળવે, ચારિત્રશીલ બને અને અભ્યાસમાં નબળા હોય તેને માટે શિક્ષકોના પ્રબધથી હોશયાર બને, ધાર્મિક જ્ઞાન સપાદન કરે, તેને માટે સસ્થા તરફથી યોગ્ય પ્રબધ કરવામા આવેલ છે. વિદ્યાર્થીઓને રહેવાની, ખાવાપીવાની સગવડો ઉપરાન સાધારણ માંદગી વખતે પ્રાથમિક દવાનાં

સાધનોનો પણ પ્રબંધ કરેલ છે. ગરીબ વિદ્યાર્થીઓને પુસ્તકો આપવાનો પણ પ્રબંધ કરેલ છે.

આ સંસ્થાનો આજ સુધી લગભગ ૧૨૦૦ વિદ્યાર્થીઓએ લાભ લીધો છે તેમાંના કેટલાકે ઉચ્ચ કેળવણી પ્રાપ્ત કરી છે કેટલાકે એન્જિનિયર, ડાકટર સાયન્ટિસ્ટ, કેળવણીકાર, કારખાનાના માલિક, સ્વતંત્ર વ્યાપારી કે ઉચ્ચ પદાધિકારી બની આ સંસ્થાના નામને ઉજ્વળ કરેલ છે.

આ સંસ્થાના પાયાને મજબૂત કરવામાં શ્રીયુત મનસુખલાલભાઈ જીવરાજ મહેતાનો પરિશ્રમ પણ નોંધપાત્ર છે. તેમણે સંસ્થાની શરૂઆતથી લગાતાર સાત વર્ષ સુધી મંત્રી તરીકે રહી સંસ્થાને અનેક સેવાઓ આપી છે અને તેના મૂળ મજબૂત કર્યા છે

સ્થા. જૈન સેવા મંડળ, રાજકોટ

આ મંડળની સ્થાપના સં. ૨૦૦૦ના ચૈત્ર સુદ ૧૩ ના રોજ કરવામાં આવેલી છે. શરૂઆતમાં રાજકોટ શહેરનુ વસ્તીપત્રક વિગતવાર બનાવેલ છે ત્યાર બાદ તેના ઉપરથી આપણા અહી વસતા શ્રાવક બંધુઓની આર્થિક સ્થિતિ નબળી જણાતાં તેઓનાં નામો ખાનગી રાખી આજ સુધીમાં મંડળ તરફથી લગભગ ૯૦,૦૦૦ રૂપિયા રોકડ રકમ તથા કપડા, અનાજ, દવા, સુવાવડી બહેનો માટે મદદ, ગરીબ ભાઈઓને ટિકિટ ભાડુ, વિદ્યાર્થીઓને સ્કોલરશિપો વિગેરે મદદ આપવામાં આવેલ છે. મરણ પ્રસંગે આપવામાં આવતો નિહાળનો સામાન આપવાની વ્યવસ્થા પણ કરેલ છે.

વધુમાં, આપણી સ્વધર્મી બહેનોને સ્વાવલંબી બનાવવા માટે ડબલ મજૂરી આપી પાપડ બનાવવામાં આવે છે પરંતુ જોઈએ તેટલો વિશેષ બહેનો રસ ન લેતાં હોવાથી એક આપણા લત્તામા પાપડનુ કારખાનુ શરૂ કરવામાં આવેલ. પણ આ જગ્યાને પણ બહેનો એ વિશેષ લાભ નહી લેતા હોવાથી બંધ કરેલ છે અને ઓફિસેથી દાળ આપવામા આવે છે અને પાપડ વણીને આપી જાય છે.

દેશીનામાનો ક્લાસ પણ ૬ વરસ થયા ફ્રી ચાલુ છે તે ઉપરાત ઇંગ્લિશ ટાઇપરાઇટિંગ ક્લાસ પણ ૩ વર્ષ થયાં ચાલુ છે, જેમાં ટર્મના રૂ. પાંચ ફક્ત લેવામા આવે છે. આ મંડળ રાજકોટમા વસતા ભાઈઓનુ બનેલ છે. રાજકોટમા સંઘ જમણવાર, જ્ઞાતિ જમણવાર કે સાધુ–મુનિરાજોના કાળધર્મ વખતે માંડવી બનાવવી કે કોઈ પણ સેવાનુ કામ કરવામાં આવે છે. આ સંસ્થાનો હિસાબ ઓડિટ કરાવવામાં આવે છે. આ મંડળમાં ૧૧ કમિટી મેમ્બરો છે.

(૧) પ્રમુખ–નગીનદાસ કપુરચંદ મહેતા, (૨) શિવલાલ હેમચંદ મહેતા–સેક્રેટરી, (૩) કાનિલાલ ભુદરદાસ પારેખ–સેક્રેટરી, (૪) છોટાલાલ નાનજી ભીમાણી–ટ્રેઝરર

લીંબડી મહિલા મંડળ

કવિવર્ય મહારાજ શ્રી નાનચંદ્રજી મહારાજ સાહેબના સદુપદેશથી શ્રી લીંબડી સાર્વજનિક મહિલા મંડળની સ્થાપના થઈ છે. તે ૧૦ વરસ થયા ચાલુ છે. પાંચ શાખાઓ છે. બધી કોમોની બહેનો લાભ લે છે. સંખ્યા ૩૦૦ લગભગ છે. ઘણી બહેનો તેનો લાભ લઈ સ્વાવલંબી બનેલ છે. બહેનો દર મહિને ૪૦/૫૦ રૂપિયા કમાઈ શકે તેવી જોગવાઈ છે આ સંસ્થામા પ્રાણસમી સેવા આપનાર શ્રી ધીરજબેન પોપટલાલ સંઘવી છે. સૌરાષ્ટ્રના વડા પ્રધાન શ્રી રસિકલાલભાઈ પરીખે મુલાકાત લઈને આ મંડળ પ્રત્યે સંતોષ વ્યક્ત કરેલ છે તથા ભાવનગરના મહારાજા સાહેબે મુલાકાત લઈને રૂ. ૨,૦૦૦) બે હજારની ભેટ કરેલ હતી.

સ્થાનકવાસી જૈન સમાજનાં

સ્થંભો, સેવકો અને કાર્યકરો

◆

કૉન્ફરન્સના જન્મદાતા

શ્રીમાન્ સ્વ. શેઠ અંબાવીદાસ ડોસાણી, મોરબી.

તેમનો જન્મ મોરબી (સૌરાષ્ટ્ર)મા ઉચ્ચ સસ્કારી નાથાણી કુટુબમા થયો હતો. તેઓનો દેખાવ સુદર, ભરાવદાર, પ્રભાવોત્પાક અને સ્વસ્થ હતો. સ્વભાવે શાંત, ઉદાર અને વાત્સલ્યપ્રેમી હતા. તેમનામા માતુશ્રી ગગામાએ બાલ્યાવસ્થાથી જ ઉચ્ચ સસ્કારો રેડયા હતા.

તેમણે પુખ્ત વયે ધધામા પ્રમાણિકપણે પુષ્કળ ધન મેળવ્યુ હતુ. તેમને માત્ર એક પુત્રી હતી. પુત્રીની કુક્ષીએ જન્મેલ પુત્ર (ભાણેજ)ને તેઓ પોતાનો જ પુત્ર માની સતોષ માનતા હતા. પરતુ તે પણ યુવાનીના આગણે આવતા જ પરલોકવાસી થયો. આ વખતે પ. કવિશ્રી નાનચદજી મહારાજે તેમને સસારી મમત્વ અસાર સમજાવીને પ્રાપ્ત સાધન (ધન આદિ)નો સદુપયોગ કરવાનુ સમજાવ્યુ શેઠ અબાવીદાસભાઇમા ઉદારતા અને અમમત્વના મૂળ સસ્કારો તો હતા જ. તે સતેજ થયા તેમના સુયોગ્ય મિત્રોએ પણ તેમને ટેકો આપ્યો નથી એમનુ લક્ષ્ય ધન કમાવાને બદલે દાન કરવા તરફ વળ્યું. એ વખતે ધનનું મૂલ્ય હતુ. ભાગ્યે જ થોડા લક્ષાધિપતિ હતા એ વખતે લાખોની સપત્તિ ધરાવતા શેઠે હવે છૂટે હાથે ધનનો સદુપયોગ શરૂ કર્યો.

મોરબી શહેરને ધુમાડાબધ જમાડી ભવ્ય વાત્સલ્ય-ભાવના વ્યકત કરી. સમાજના સાધનવિહોણાં ભાઇબહેનોને ગુપ્ત દાન આપીને કેટલાયના દારિદ્રય દૂર કર્યા મૂગા પ્રાણીઓ (જાનવરો)ને ઘાસચારો, દાણા–પાણીથી પોષ્યાં. આવી રીતે લક્ષ્મીનો લહાવો લીધો. આ ઉપરાત બે મહાન કાર્યો તો ચિરસ્મરણીય રહ્યાં છે.

૧. અખિલ ભારતવર્ષના સ્થા. જૈન ભાઇઓને સગઠન અને પ્રગતિપથે વિહરવાની વિચારણા માટે સૌથી પ્રથમ મોરબીમા પોતાને ખર્ચે સન ૧૯૦૬ના માર્ચ માસમા એકત્ર કર્યા. રૂ. ૨૫,૦૦૦ ખર્ચ્યા. આજે એ અખિલ ભારતવર્ષીય શ્રી શ્વે. સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સ ૫૦ વર્ષથી કામ કરી રહી છે.

૨. શ્રી. દા. શ્રી. સ્થા. જૈન વિદ્યાર્થી ભુવન, મોરબીને શરૂ કરવા માટે રૂ. ૪૨,૦૦૦)ની રકમ અર્પણ કરી આ વિદ્યાભુવન સન ૧૯૨૩ થી આજ સુધી સારી રીતે ચાલી રહ્યુ છે. સેકડો વિદ્યાર્થીઓએ તેનો લાભ લીધો છે. વિદ્યાર્થીભુવનનુ પોતાનુ ભવ્ય મકાન છે અને એક લાખ રૂપિયા જેટલુ સ્થાયી ફડ ધરાવે છે.

આ બે સસ્થાઓ શેઠ અંબાવીદાસભાઇ ડોસાણીની ચિરસ્મૃતિરૂપ છે.

કૉન્ફરન્સના કર્ણધાર

ધર્મવીર શ્રી દુર્લભભાઇ ઝવેરી, મોરબી–જૈપુર.

તેમનો જન્મ મોરબીમા સ. ૧૯૩૩ ના ચૈત્ર વદ ૧૩ ના થયો હતો. તેમના પિતાનુ નામ ત્રિભોવનભાઇ હતુ. તેમના પિતાનો ધર્મ પ્રત્યેનો પ્રેમ પ્રશસનીય હતો. તેમની છાપ શ્રી દુર્લભજીભાઇ ઉપર પડી હતી અને તેમણે આજીવન સમાજની સેવા કરી હતી.

શ્રી દુર્લભજીભાઇએ મેટ્રિક સુધી અભ્યાસ કર્યો હતો. તેમને સાહિત્યનો શોખ હતો. મેટ્રિકમા બે વાર અનુત્તીર્ણ થવાથી, તેમણે પોતાનો ઝવેરાતનો પારિવારિક ધધો ચાલુ કર્યો. તેમણે આખા ય હિન્દુસ્તાનનો પ્રવાસ કર્યો હતો અને અતિ પ્રમાણિક તથા મિલનસાર હતા તેથી તેમનો ધધો સારી રીતે વિકસ્યો હતો.

એક વાર ગુજરાતમાં શ્વે. મૂર્તિપૂજક જૈન કોન્ફરન્સના અધિવેશનમાં જવાનો તેમને પ્રસંગ મળ્યો. ત્યારથી આપણી સ્થાનકવાસીની પણ એવી સસ્થા હોવી જોઇએ એ વિચાર તેમને આવ્યો અને તે કાર્ય માટે પ્રયત્નો શરૂ કર્યા શ્રી લક્ષ્મીચદભાઇ ખોખાણીને પોતાના સહયોગી બનાવ્યા શ્રી અબાવીદાસભાઇ ડોસાણીને કોન્ફરન્સનો સમસ્ત ખર્ચ ઉપાડી લેવા તૈયાર કર્યા અને મોરબીમાં સ. ૧૯૬૧મા કોન્ફરન્સનુ પહેલુ અધિવેશન થયુ. તે માટે તેમણે હિદુસ્તાનભરમા પર્યટન કર્યુ હતુ. કોન્ફરન્સનો પાયો નાખવામા અને તેને વ્યવસ્થિત કરવામા તેમનો ખાસ હાથ રહ્યો છે

તેમણે કોન્ફરન્સની શરૂઆતથી ૩૫ વર્ષ સુધી એકધારી સેવા બજાવી હતી અને પ્રતિકૂળ સજોગોમાં પણ ધૈર્યથી કામ કરતા રહ્યા હતા. તેઓ અન્ય કાર્યકર્તાઓ સાથે પ્રેમથી મળીને કામ કરતા.

ઇ સ ૧૯૧૧મા તેઓ જૈપુર આવીને રહ્યા અને મોણસી અમુલખ પેઢીની સ્થાપના કરી. તેમનો વેપાર વધતો ગયો. યુરોપમા પણ શાખાઓ ખોલી. તેમને બે ભાઇઓ હતા–શ્રી. મગનભાઇ તથા છગનભાઇ બન્ને સ્વર્ગવાસી થયા છે.

સ. ૧૯૭૮મા તેમણે જયપુરમા સ્વતત્ર વ્યાપાર શરૂ કર્યો. કરાચી–રગૂનમ શાખાઓ ખોલી. પચાસ વર્ષની વયે તેમણે પુત્રોને ધધો સોપી દીધો અને નિવૃત જીવન જીવવા લાગ્યા. તેઓ ગરીબો પ્રત્યે ખૂબ જ લાગણી વાળા અને ગુપ્તદાની હતા.

શ્રી દુર્લભજીભાઇ અનેક પત્રોમા લેખો લખતા હતા સાહિત્ય પ્રત્યે તેમને પ્રેમ હતો. તેમનુ ધાર્મિક જીવન પ્રશસ્ત હતુ: મુનિઓ પ્રત્યે ભક્તિભાવ હતો ચાતુર્માસમા એક બે મુનિઓ પાસે રહી આત્મ ધ્યાનમા સમય ગાળતા સર્વે સંપ્રદાયોના સાધુઓનુ સમેલન કરવાનો વિચાર તેમને જ આવ્યો હતો તેને મ ટે સતત્ પ્રયત્ન કરી સ. ૧૯૮૯મા અજમેરમાં બૃહદ્ સાધુસમેલન ભરાવ્યુ. તેમા લગભગ સ્થા. સમાજના બધા મુનિઓ પધાર્યા હતા જુદી જુદી જગ્યા-એથી લગભગ ૪૦ હજાર શ્રાવક–શ્રાવિકાઓ એકત્રિત થયા હતાં આ સમેલન સ્થા. ઇતિહાસમાં અજોડ છે. આ સમેલનમાં તેમને "ધર્મવીર"ની પદવી મળી અને નવ-રત્નનુ પદક અર્પણ કર્યું

જૈન ટ્રે. કોલેજનુ પણ તેમણે સફળ સચાલન કર્યું અને ઘણા વિદ્વાન યુવકો તૈયાર કર્યા અને સમાજસેવામા લગાડયા. શ્રી દુર્લભજીભાઇની સેવાઓ બહુમુખી હતી. તેમણે જૈન ગુરુકુળ બ્યાવરની ઘણી સેવા બજાવી છે. તેઓ તેના કુળપતિ હતા ગુરુકુળનુ ભવન બનાવતા તેમણે રૂા. ત્રીશ હજાર ભેળા કર્યા હતા. તેમનો તા. ૩૦ ૩-'૩૮મા સ્વર્ગવાસ થયો.

તેમને પાંચ પુત્રો છે. મોટા પુત્ર શ્રી વનેચદભ ઇથી સમાજ પરિચિત છે તેઓ તેમના પિતાના સ્મરણાર્થે પ્રત્યેક વર્ષે રૂા ૩,૦૦૦)ની સ્કોલરશિપ આપે છે. તેમના પુત્રો શ્રી ગિરધરલાલભાઇ તથા ઇશ્વરલાલભાઇનું દેહાત થઇ ગયુ છે. શ્રી શાતિભાઇ પોતાના વ્યવસાયમાં લાગેલા છે. શ્રી ખેલશકરભાઇ શ્રી વનેચદભાઇની સાથે જ જયપુરમા ઝવેરાતનો ધીકતો ધધો કરે છે.

જૈન સમાજના જ્યોતિર્ધર

સ્વ. શ્રી. વાડીલાલ મોતીલાલ શાહ

વા. મો. શાહનો જન્મ ઇ. સ. ૧૮૭૮ના જુલાઇની અગીઆરમી તારીખે તેમના મોસાળમા વિરમગામ મુકામે થયો હતો અને નાનપણમા ઘણે ભાગે તેઓ ત્યાં જ રહેતા હતા. માત્ર ગુજરાતી અભ્યાસ માટે થોડા વર્ષ તેમના પિતાશ્રીની સાથે રહેવા પામ્યા હતા. ગુજરાતી છઠ્ઠું ધોરણ એ વિરમગામમા જ પસાર થયા પછી અગ્રેજી પાચ ધોરણનો અભ્યાસ પણ ત્યાં જ કર્યો હતો, કારણ કે વિરમ-ગામમા એ સમયે પાંચ જ ધોરણ શિખવાતા હતા, એટલે આગળ અભ્યાસ કરવા માટે ચૌદ વર્ષની વયે એ એકલા અમદાવાદ જઇ રહ્યા અને 'ખાનગી ટયુશન' માથી કરાતી આમદાની વડે પોતાનુ ગુજરાન ચલાવી રહ્યા હતા.

શ્રી વાડીભાઇએ જાહેર જિંદગીની શરૂઆત ખરૂ કહીએ તો સ્થાનકવાસી જૈન ધર્મના એક અભ્યાસક તેમજ સુધારક તરીકે કરી હતી તેમના કોલેજ જીવન દરમ્યાન એક દિવસે ગુજરાતનાં પાટનગર અમદાવાદમા ખભાત સપ્ર-દાયના ઉત્સાહી મુનિશ્રી છગનલાલજી મહારાજે એ સમયના વર્તમાન જૈનોની સકુચિત વૃતિ અને સમાજમા ચાલી રહેલા અધેર માટે તેમના દિલમા ઝળહળી રહેલી બળતરા એ યુવાન વાડીલાલ સમક્ષ કાઢીજેને પરિણામે વા. મો. શાહને જૈન સમાજમા ઉદાચિત્ત વિચારોનો ફેલાવો તેમ જ પ્રચાર કરવાના ઉચ્ચ આશયથી એક માસિક પત્ર

પ્રગટાવવાની ઉત્કંઠા થઇ આવી અને તે માટેની મજૂરી પણ તેમના વડિલ પાસે તેમણે માગી, પરંતુ કોલેજ જીવન દરમિયાન વિદ્યાભ્યાસ કરતાં કરતાં સાથેસાથે જાહેર જિંદગીમાં પડવા દેવાનુ તેઓશ્રીને વાધાભર્યું લાગ્યુ એટલે તેમના પિતાશ્રીનાં સંપાદન નીચે એક માસિક પત્ર શરૂ કરવામા આવ્યુ, એમ 'જૈન હિતેચ્છુ'ની શરૂઆત થવા પામી હતી શરૂઆતમાં વાડીલાલ શાહે નીતિ અને કેળવણી વિષયક લેખો લખવામા તેમની કલમની અજમાયશ કરી જોઇ અને તેમના પિતાએ શાસ્ત્રીય વિભાગ સંભાળી લીધો હતો તેમણે ધારણ કરેલા કેટલાયે તખલ્લુસો માંહેના 'સ્થાનક સ્પેક્ટેટર' તથા 'સમય ધર્મ'ને તો જૈન હિતેચ્છુ'ના રસમગ્ન વાચકો ભાગ્યે જ ભૂલી શક્યા હશે એ માસિકનુ સંચાલન એ પિતાપુત્રની બેલડીએ શરૂઆતમાં તો અત્યંત શાંત શૈલીએ ચલાવવાનુ રાખ્યુ હતુ. છતા પણ કેટલાયે શિથિલાચારીઓએ જનસમાજને તેમની સામે ઉશ્કેરી મૂકવામાં કચાશ રાખી નહોતી છતાં પણ એ પિતા-પુત્ર તો અજબ પ્રકારની જાહેર હિમ્મતથી તેમજ અનેરી વિદ્વતાપૂર્વક એ માસિકનુ સંચાલન કર્યે જતા હતા. ત્યાર પછી એકાદ વર્ષનો ગાળો પસાર થયા બાદ 'જૈન હિતેચ્છુ' નામનુ એક હિંદી પાક્ષિક ચલાવવાની જોખમદારી પણ તેઓએ માથે લીધી હતી, અને એ બન્ને પત્રોનાં સંચાલન માટે થતા નુકસાનને પહોંચી વળવા માટે શ્રીમંતો તરફની મદદની દરકાર કરવાને બદલે જરૂર પૂરતુ દ્રવ્યોપાર્જન કરવા સારૂ શ્રી વાડીલાલે રંગુન જઇ દ્રવ્યપ્રાપ્તિ કરવા સાથે એ બને પત્રોનાં સંચાલનમા થોડી ઘણી પણ ખામી આવવા દીધી નહોતી.

'જૈન સમાચાર' અને જોડકે જન્મેલી 'સ્થાનકવાસી જૈન કૉન્ફરંસ'

'જૈન હિતેચ્છુ'ના જન્મ પછી એકાદ વર્ષ રહીને સદ્‌ગત વાડીલાલે સ્થાનકવાસી જૈનોની એક કોન્કરસ સ્થાપવા માટે જુદી જુદી લેખમાળાઓ લખીને અને તે માટેનો રીતસરનો પત્રવ્યવહાર કરીને ખૂબ જ ઉહાપોહ કર્યો હતો. પરિણામે એ કોન્કરસના જન્મ પહેલા થોડા રોજ પર પુનાનાં જૈન પબ્લિક તરફથી આમ ત્રણ મળતાં 'જૈન હિતેચ્છુ'કાર વાડીલાલ ત્યા ગયા હતા, જ્યા લોકમાન્ય બાલ ગંગાધર તિલક મહારાજના શુભ હસ્તે એક જંગી સભામાં તેમને માનપત્ર અને 'પર્સ' એનાયત કરવામા આવ્યાં હતા અને ખુદ લોકમાન્યે એ વાડીલાલની કલમ તેમજ પ્રવૃત્તિ માટે તારીફ કરી હતી. આવા જબ્બર માનને લાયક થવા માટે તેમજ લોકકલ્યાણકારી કાર્ય કર્યા સિવાય એ પ્રકારના માનનો જશ ખાટી જવો એ તાત્વિક દ્રષ્ટિએ દેવુ કરવા બરાબર છે એમ સમજીને તેમણે ત્યેર જઇને એક હિંદી-ગુજરાતી અઠવાડીક પત્ર શરૂ કરવાની પ્રતિજ્ઞાની જાહેરાત એજ સભા સમક્ષ કરી બતાવવાની હામ ભીડી હતી અને વાચક વર્ગ જાણીને આશ્ચર્યમાં ગરકાવ થશે કે મોરબી મુકામે ભરાયેલા સ્થાનકવાસી જૈનોની કોન્કરસના પ્રથમ અધિવેશનના રોજ એ સેવાવ્રતધારી વાડીલાલે 'જૈન સમાચાર'નો પહેલો અંક મોરબીમાં જ પ્રસિદ્ધ કર્યો હતો.

સમાજ સુધારકને વેશે

ત્રણ ત્રણ અખબારોનાં સંચાલનનો ભાર વહેતા વહેતાં સાથેસાથ વા. મો. શાહે પંજાબ, માળવા, કાઠિયાવાડ તથા દક્ષિણમા છેક કોચીન સુધી પોતાના જ ખર્ચે મુસાફરી કરીને લોકજાગ્રતિ માટે તથા સમાજમા ઘર કરી રહેલા અંદર અંદરના કુસંપને અટકાવવા માટે યથાશક્તિ પ્રયાસો કર્યા હતા.

જૈન સાધુઓમાં ઘુસી ચૂકેલો સડો દૂર કરવા તેમણે આરંભેલા જોખમભર્યા પ્રયાસોને પરિણામે તેમને સેંકડો મનુષ્યોના શત્રુ બનવુ પડયુ હતુ અને પરિણામે તેમને અનેક પ્રકારના માનસિક ત્રાસનો અનુભવ થવા પામ્યો હતો. પરંતુ આખર સુધી પોતાના સિદ્ધાંતને ચુસ્તપણે વળગી રહેવાના અજબ પ્રકારના ગુણને લઇને છેવટે સાધુઓ પૈકીના સુજ્ઞ વિભાગે તેમના તરફ સંપૂર્ણ માનની લાગણી દર્શાવવા માંડી હતી. કચ્છમાં પહેલવહેલી 'સાધુ પરિષદ' પણ તેમના જ સૂચનોને પરિણામે ભરાવા પામી હતી એ પરિષદમા સાધુવર્ગોએ વાડીલાલ શાહને 'જૈન સાધુઓમાં નવુ લોહી રેડનાર ઉપકારી પુરુષ' તરીકે સ્વીકારી તેમનો આભાર માનવાનો ઠરાવ પણ કર્યો હતો. એ ઉપરાત મારવાડ પ્રાંતના સાધુવર્ગોની 'સાધુ પરિષદ' ભરાઇને સંગઠન માટે શુભ પ્રયાસો થવા પામ્યા, એ પણ એ વા. મો. શાહની જહેમતના પરિણામરૂપ હતુ.

વળી તેમની ખરાબમા ખરાબ આર્થિક સ્થિતિના સમયે પણ સ્ત્રીધન વેચીને મળેલી રકમની મદદથી કોન્ફરન્સ દ્વારા જ એક વિદ્યોત્તેજક ફંડ ખોલવાની અરજ કરનાર એ વાડીલાલ શાહ પોતે હતા

આ બધા ઉપરાંત 'જૈન સમાચાર' ઓફિસમાં જ એક 'ફ્રી નાઇટ ક્લાસ' તેમણે ખોલ્યો હતો.

ધર્મસેવા કરવા જતાં નડેલી 'ધાડ'

'વિદ્યોત્તેજક ફંડ'મા ચારથી પાચ લાખની રકમ અપાવવાનો પ્રયાસ કરવા જતા પત્રકારોને માથે લટકતી 'ડેમોક્લિસની તલવાર' રૂપી માનહાનિ (ડેફેમેશન) ના સપાટામા પણ એ વા. મો. શાહ એક વખતે આવી જવા પામ્યા હતા. અને બે માસની સાદી કેદની શિક્ષાનો હસ્તેમુખે તેમણે સ્વીકાર કરી લીધો હતો

ઇ. સ. ૧૯૧૭મા મહાત્મા ગાધીજી તેમજ બીજા અનેક દેશનેતાઓની હાજરી વચ્ચે એ વિચારકે ઝાલરાપાટણના મહારાજાના શુભ હસ્તે એવા એક 'ગૃહ'ની ઉદ્ઘાટન ક્રિયા કરાવી હતી. એ ગૃહ'મા રહીને ઉચ્ચ કેળવણી લેવા ઇચ્છતા કોઇ પણ વિદ્યાર્થીને દાખલ થવા માટે કોઇ પણ વાડા કે ફિરકા કે જ્ઞાતિનુ બધન તેમણે રાખ્યુ ન હોતુ.

સાહિત્યકાર અને ફિલસૂફ

વાડીલાલ શાહે કદી પણ સાહિત્યકાર તેમ જ સાક્ષર હોવાનો દાવો કર્યો નથી. સમાજ સેવા કરવા જતાં તેમજ ત્રણ ત્રણ સામયિક પત્રોનુ સપાદન કરતા કરતાં તેમના હાથે અનોખુ સાહિત્ય અનાયાસે પરન્તુ સ્વાભાવિક રીતે સર્જાઇ જવા પામ્યુ હતુ

તેમનુ પહેલુ પુસ્તક **'મધુમક્ષિકા'** વીસ વર્ષની યુવાન વયે લખાયુ હતુ. તે ઉપરાત ધર્મજ્ઞાન મેળવવાની જિજ્ઞાસાવાળા વાચકવર્ગ માટે **'બારવ્રત'** (૧૯૦૫), **'હિતશિક્ષા'** (૧૯૦૪), **'સમ્યક્ત્વ અથવા ધર્મનો દરવાજો'** (૧૯૦૩), **'ધર્મતત્ત્વ સગ્રહ'** (૧૯૦૬) **'સંસારમાં સુખ ક્યાં છે?'** (૧૯૦૬), **કબીરનાં 'આધ્યાત્મિક પદો** (૧૯૧૧), **'સદ્‌ગુણ પ્રાપ્તિનો ઉપાય'** (૧૯૦૮), **ભક્તામર સ્તોત્ર:** વિવેચન સહિત (૧૯૦૯), કલ્યાણ મદિર સ્તોત્ર (૧૯૧૦) **'ધર્મસિંહ બાવની'** (૧૯૧૧) **'દશવૈકાલિક સુત્ર'** (૧૯૧૨), **'પર્યુષણ પર્વ અથવા પવિત્ર જીવનનો પરિચય'**(૧૯૧૪) ઇત્યાદિ વિવિધ પુસ્તકો પ્રગટ કર્યા હતા

વળી–ધર્મ તેમજ નીતિના રહસ્યને વાર્તાના વળામા ગૂથી લઇને તેમણે પ્રગટાવેલા **'સતી દમયતી'** (૧૯૦૨), **'ઋષિદત્તા આખ્યાયિકા'** (૧૯૦૪), **'નમીરાજ'** (૧૯૦૬), **'સુદર્શન ભાગ પહેલો'** (૧૯૧૨), **'બ્રહ્મદત્ત ચક્રવર્તી'** (૧૯૧૨), **'મહાવીર કહેતા હવા'** (૧૯૧૫), **મૃત્યુના મ્હોંમાં** (૧૯૨૧), ઇત્યાદિ પુસ્તકો ખરેખર જીવનને ઉચ્ચ બનાવવાની પ્રેરણા થાય તેવી શૈલીમા લખાયલા છે. તેમાંનુ **'મહાવીર કહેતા હવા'** તો ભવિષ્યમા એ વિચારકને હાથે લખાવાનાં કોઇ આદર્શ પુસ્તકની ગરજ સારે એ દૃષ્ટિએ લખાયેલુ છે અને ગાંધી યુગની શરૂઆતના જ વર્ષોમાં પ્રગટ થવા પામેલુ **'મૃત્યુનાં મ્હોંમાં'** ની અદર ભારતના આઝાદી જગની એક કાલ્પનિક કથા આલેખાયેલી છે.

તે ઉપરાત, જૈનિઝમ, વેદાત અને નિત્શેઅન તત્વજ્ઞાનને એકાકાર બનાવીને પ્રગટાવેલાં 'મસ્તવિલાસ' (૧૯૨૫)માં તો તત્ત્વજ્ઞાન અને જીવન વચ્ચેના સબધને દર્શાવનારી તત્ત્વકથાઓનાં દર્શન થાય છે.

એ વિચારકે તેમના ઐહિક જીવન દરમિયાન પ્રગટ કરેલુ છેલ્લુ પુસ્તક તે 'જૈનદીક્ષા' (૧૯૨૯) એ પુસ્તકને તો સને ૧૯૨૯ના ગુજરાતી પ્રકાશનો માંહેના શાસ્ત્રીય વાડમયના શ્રેષ્ઠ પુસ્તકોમાના એક તરીકે વિદ્વાનોએ પ્રાદ્યુ હતુ.

'અસહકાર' (૧૯૨૦) અને **'પોલીટીકલ ગીતા;** (૧૯૨૧) એ પુસ્તકોમા ખાસ કરીને બીજામાં, લેખકે હાલના ગદા પોલિટિકસને આડકતરી રીતે પ્રગટ કરીને સર્વદેશીય 'પોલિટિકલ રિફોર્મ' અને એ કામ માથે લેનારની સર્વદેશીય યોગ્યતાના લક્ષણ બતાવી આપ્યાં હતાં.

ઇ સ ૧૯૨૫ના અરસામાં **'મુઝાઇ પડેલી દુનિયા'** શિર્ષક લેખમાળા દ્વારા જનતા સમક્ષ આજની દુનિયાની ખરી મૂઝવણનાં સાચા કારણોનો ચિતાર રજૂ કરવામા આવ્યો હતો અને **'આ બધો પ્રતાપ વેપારનો!'** (૧૯૨૭) નામનો મહાનિબધ પ્રગટ કરીને, ઉચ્ચત્તમ જીવનને અનુકુળ તેમજ જરૂરી એવા વાતાવરણને અશક્ય બનાવનાર આજના વ્યાપારી યુગનુ હોઇ રજૂ કર્યુ હતુ.

વળી વિધવા વિવાહનો સુધારો પોતાના ઘેરથી જ શરૂ કર્યો હતો એટલુ જ નહિ પણ એ વિધવા વિવાહનુ આદોલન સારાયે જૈનસમાજની ખફગી વહોરીને તેમણે વર્ષો સુધી લખાણો તેમજ ભાષણો દ્વારા ચલાવ્યુ હતુ. ઇ સ. ૧૯૨૫મા ભરાયેલા મલકાપુર અધિવેશન વખતે તેમજ ઇ. સ. ૧૯૨૭ની અંત્રવચમાં તેમને ખુબ જ આગ્રહ કરીને તેમજ સમાજહિતને લગતી તેમની આકરી માગણીઓને સતોષવાની ખાત્રી આપીને શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી જૈન સમાજે, નિવૃત્તિનો આસ્વાદ

લઇ રહેલા એ ફિલસૂફને ફરી એક વાર જાહેર જીવનમા ઘસડયા હતા અને તેને પરિણામે બિકાનેર મુકામે ભરાયેલી સ્થાનકવાસી જૈન કોમની કોન્ફરન્સના નવમાં અધિવેશનના સભાપતિ તરીકેનુ તેમ જ તેજ મુકામે ભરાયેલા સમસ્ત જૈન મહામંડળના વીસમા અધિવેશનના પ્રમુખ તરીકેનુ તથા તારણ સમાજ દિગમ્બર જૈન સમાજના કુલમુખત્યાર તરીકેનુ ગૌરવભર્યું પદ તેઓએ એક લોક નેતાને છાજે તેવી અદા તેમજ કુનેહથી શોભાવ્યુ હતુ.

શ્રી દુર્લભજીભાઇ કેશવજી ખેતાણી, ઘાટકોપર (મુંબઇ)

શ્રી. દુર્લભજીભાઇનો જન્મ તા. ૧૫–૧૦–૧૯૦૦માં સૌરાષ્ટ્રમાં થયો હતો. પ્રતિભા અને તીવ્રબુદ્ધિ હોવા છતા આર્થિક પરિસ્થિતિને લીધે મેટ્રિકથી વધુ અભ્યાસ કરી શકયા નહિ. સન ૧૯૧૬મા એમને અભ્યાસ છોડવો પડયો. ધાર્મિક જ્ઞાનનો સારો શોખ અને વાંચન છે. રત્નચિંતામણિ મંડળની શાળાઓનો ધાર્મિક જ્ઞાનમાં સારો વિકાસ કર્યો. ધાર્મિક તથા સામાજિક પ્રવૃત્તિઓમાં ખૂબ જ ઊંડો રસ ધરાવતા હોવાથી મુંબઇની અને ઘાટકોપરની કોઇ સસ્થાઓ અને પ્રવૃત્તિઓ એમની સેવાથી વચિત રહી નહિ હોય.

શ્રી દુર્લભજીભાઇ કેશવજી ખેતાણી, ઘાટકોપર (મુંબઇ)

વ્યાપાર–બી. દુર્લભજીની કું.ના નામે રેશમી કાપડનો શરૂ કર્યો ખૂબ જ વિકસાવ્યો અને જાપાન, ચીન, ઇગ્લંડ તથા અમેરિકામા પણ પેઢીઓ ખોલી હતી. પોતે પણ દેશવિદેશોનો કેટલીયે વાર પ્રવાસ ખેડયો છે. આ રીતે આપબળે જ તેઓ આગળ વધ્યા છે. મુબઇ (કુર્લા)મા ખેતાણી ટેક્ષ્ટાઇલ ઇન્ડસ્ટ્રીઝ (મિલ) અને છીપી ચાલમાં દુકાન ચાલે છે. હજારો તો શુ ? લાખોની રકમોનું મુક્ત હાથે વિના શરતે દાન કર્યું છે. છતા પોતાનુ નામ કયાય આવવા દીધુ નથી. દાન સ્વીકારનારાઓના અત્યાગ્રહે પોતાનાં પિતા, માતા, સ્વ ભાઇ કે કાકાના નામ આપ્યાં છે. અમરેલી બોર્ડિંગમા રૂા. ૨૫,૦૦૦ આપ્યા છે તેમા સ્વ. હરિલાલભાઇનુ નામ રાખેલુ છે સ્થા. જૈન કેળવણી મડળ હસ્તક રત્નચિતામણિ હાઇસ્કૂલને સવા લાખ રૂપિયા આપ્યા. તેમાં સ્વ. માતા રતનબાઇનુ નામ રાખ્યુ છે. ઠેકઠેકાણે જ્યા તેઓ કે તેમના ભાઇઓ નાગજીભાઇ, મણિલાલભાઇ કે નાનાલાલભાઇ ખેતાણી જાય ત્યાં છૂટે હાથે ધન આપ્યે જ જાય છે.

વેપારમાં ભરતી–ઓટના વખતે પણ તેમની હિંમત અને પુરુપાર્થ આશ્ચર્યજનક હોય છે. ગરીબો અને બીમારો પ્રત્યે ખૂબ લાગણી અને સેવાવૃત્તિ બતાવે છે. સાવ સાદા, ખાદીધારી, સદા હસતા, આનદી અને વાત્સલ્યભર્યા દુર્લભજીભાઇ નવલોહિયા યુવક જેવા સ્ફૂર્તિદાયક અને આધ્યાત્મિક પુરુપ જેવા દેખાય છે. તેઓનુ જાહેર જીવન અને મિત્રમડળ બહોળુ છે. તેઓ શ્રી સ્થા. જૈન કેળવણી મડળના મત્રી અને ટ્રસ્ટી છે. સ્થા. જૈન વિદ્યાલય, વડિયાના તેઓ ટ્રસ્ટી અને સભ્ય છે. મુબઇ રાજ્યના અને ઘાટકોપરની બાલ્કન જી બારીના પ્રમુખ, અને અખિલ હિદ બાલ્કન જી બારીના કોપાધ્યક્ષ છે બોમ્બે ઇન્ડસ્ટ્રીઝ એસોસીએશન તથા રોટરી કલબ (બોમ્બે ઇસ્ટ)ના પ્રમુખ છે પ. રત્નચદ્રજી કન્યા હાઇસ્કૂલના ઘાટકોપર, ટ્રસ્ટી છે. મુંબઇ-મધ્યપ્રદેશ રેલવે ઇકિવપમેન્ટ બોર્ડના સદસ્ય છે. મદ્રાસ કોન્ફરન્સ વખતે યુવક પરિષદના પ્રમુખ ચૂટાયા હતા. આપણી કોન્ફરન્સના ઉપપ્રમુખ તરીકે વર્ષો સુધી સેવા આપી છે તેઓએ સૌરાષ્ટ્રમા રહેણાક તરીકે વાંડયા પસદ કર્યું છે ત્યા પણ કેશવકુજ વગેરે ઘણા વિશાળ ભવનો બધાવ્યા છે. વડિયામા હાઇસ્કૂલ કરવા માટે રૂા. પચાસ હજાર આપ્યા છે.

મુંબઇનુ નિવાસસ્થાન કેશવકુજ, ઘાટકોપરમાં રાખેલ છે આવા ઉત્સાહી, કાર્યદક્ષ, હિંમતબાજ, પ્રભાવશાળી અને આધ્યાત્મિક નેતાઓ સમાજને સદ્‌ભાગ્યે જ સાપડે છે.

શ્રી ચીમનલાલ ચકુભાઇ શાહ M. P.

શ્રી ચકુભાઇ ગુલાબચદ શાહને ત્યા પાણીસણા (લીબડી)મા એમનો જન્મ થયો. અત્યારે એમની વય ૫૪ વર્ષની છે. અભ્યાસ એમ. એ., એલ. એલ. બી. નો કર્યા બાદ સોલિસિટર તરીકે મુબઇમા કામ કરે છે. નાનપણથી ધર્મના ઊડા સસ્કારો પડયા છે. સમાજ, ધર્મ અને રાષ્ટ્ર પ્રત્યે તેમનો અનન્ય પ્રેમ અને સક્રિય સેવાઓ છે.

શ્રી ચીમનલાલ ચકુભાઇ શાહ M. P
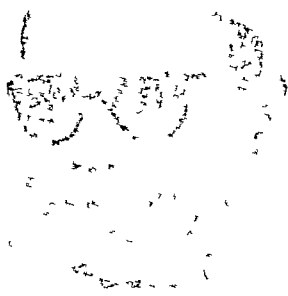
સારા યે જૈન સમાજમાં જે થોડી ઘણી વ્યક્તિઓ અગ્રસ્થાન ભોગવે છે તેમાં આપણા સમાજના પ્રથમ પક્તિના કાર્યકર્તા શ્રી ચીમનલાલભાઇ ચકુભાઇ શાહનુ નામ આવે છે. પોતાની સ્પષ્ટ વિચારસરણી, દીર્ઘદષ્ટિ અને પોતાને જે લાગે તે કોઇની પણ શેહમા દબાયા વિના રજૂ કરવાની નૈતિક હિમતને કારણે તેઓ જૈન સમાજમા જ નહિ, પરન્તુ સારા યે હિન્દમાં મહત્ત્વનુ સ્થાન પ્રાપ્ત કરી શકયા છે.

સામાન્ય નિયમ એવો છે કે રાજકીય ક્ષેત્રમા કામ કરનાર વ્યક્તિ સામાજિક કે ધામિક જીવનમા બધએસતી થઇ શકે નહિ, પરન્તુ શ્રી ચીમનલાલભાઇ પોતાની વિશિષ્ટ ખાસિયતને કારણે વિવિધ વિચારસરણી ધરાવતી સામાજિક તેમ જ ધાર્મિક સસ્થાઓમાં માનભર્યુ સ્થાન પ્રાપ્ત કરી શકયા છે, એટલુ જ નહિ. પરન્તુ તેમનુ માર્ગદર્શન એક અવાજે સ્વીકારાય છે આ વિશિષ્ટતાને કારણે તેઓ રાજકીય ક્ષેત્રે પણ આગળ વધી રહ્યા છે.

શ્રી અ ભા શ્વે. સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સના માનદ્-મત્રી તરીકે તેમણે વર્ષો સુધી સેવા બજાવી છે. શ્રી ઝાલાવાડી સ્થા. જૈન સભાનુ પ્રમુખસ્થાન પણ તેઓ શોભાવી રહ્યા છે. મુબઇ જૈન યુવક સંઘના પ્રમુખપદે વર્ષો સુધી રહી, તેનુ સફળ સચાલન પણ તેમણે કર્યુ છે. જૈન એજ્યુકેશન સોસાયટીના મત્રીપદેથી તેમણે સસ્થાને ખૂબ જ વિકસિત કરેલ છે. આજે આ સસ્થા ત્રણ વિદ્યાલય અને એક હાઇસ્કૂલ ચલાવી રહે છે. આ સિદ્ધિમા તેમનો ફાળો મહત્ત્વનો છે. સ્થાનકવાસી સમાજની કોઇ પણ એવી સસ્થા મુબઇમાં નહિ હોઇ, જેને તેમનુ સીધુ યા આડકતરુ માર્ગદર્શન મળતુ ન હોય. જુદાં જુદા દૃષ્ટિબિદુઓ ધરાવતી અનેક સસ્થાઓમાં માનભર્યુ સ્થાન જાળવી રાખવુ એ એક અતિ વિકટ કાર્ય છે આમ છતાં જૂના અને નવા વિચારોનો સુમેળ સાધવાની અને સ્પષ્ટ દર્શન વડે સમજાવવાની શક્તિને કારણે તેઓ સહજ રીતે સૌના હૃદયમાં સ્થાન પ્રાપ્ત કરી શકેલ છે.

આવી જ ઉજ્વળ કારકિર્દી તેમના રાજકીય ક્ષેત્રે છે. આ ક્ષેત્રે પણ તેઓ ઉત્તરોત્તર વિકાસ સાધી રહ્યા છે. ન્યૂઝીલેન્ડ પાર્લામેન્ટરી ડેલિગેશનના સભ્ય તરીકે તેઓ ગયેલા જ્યા તેમણે મહત્ત્વનો ભાગ લીધો હતો. ટેન્ડુલકર કમિટિના સભ્ય તરીકે પણ તેમણે સ્પષ્ટ માર્ગદર્શન આપ્યુ હતુ. સૌરાષ્ટ્ર તરફથી સસદના સભ્ય (M. P.) તરીકે તેઓ આગળ પડતો ભાગ લઇ રહેલ છે 'મુમઇ'ના પ્રશ્ન પરત્વે તેમણે સસદમાં આપેલુ અભ્યાસપૂર્ણ વક્તવ્ય બૃહદ્ ગુજરાતના ઇતિહાસમા ઐતિહાસિક બની રહેશે. યૂનોના હિન્દી પ્રતિનિધિમંડળના સભ્ય તરીકે તેમણે બજાવેલી કામગીરી પણ નોંધપાત્ર છે.

સામાજિક તેમ જ રાજકીય પ્રવૃત્તિઓ ઉપરાત સાહિત્યની પ્રવૃત્તિઓ સાથે પણ તેઓ સકળાયેલ છે. ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદ અને સસદના મત્રી તરીકે તેમણે કાર્ય કર્યુ છે. જન્મભૂમિ ટ્રસ્ટના ટ્રસ્ટી તરીકે આજે તેઓ સફળ સચાલન કરી રહેલ છે.

તેઓ લેખક પણ છે તેમનાં લખાણમા સ્પષ્ટ માર્ગદર્શન, અભ્યાસપૂર્ણ અને તુલનાત્મક માહિતી અને અસરકારક શૈલી માલૂમ પડે છે.

લેખક કરતાં યે વકતા તરીકે તેઓ બહુ જ ઊડી છાપ પાડી શકે છે અને ધારી અસર ઉપજાવી શકે છે. તેમના કોઇપણ વ્યાખ્યાન વખતે સારી હાજરી રહે છે. તેમણે સસદમા આપેલાં અભ્યાસપૂર્ણ ભાષણો આ વાતની પુષ્ટિ આપે છે

ટૂકામાં કહીએ તો શ્રી ચીમનલાલભાઇ પોતાની પ્રતિભા અને સ્પષ્ટ વિચારસરણીને કારણે સામાજિક, ધાર્મિક અને રાજકીય ક્ષેત્રે મહત્ત્વપૂર્ણ સેવા આપી રહ્યા છે. છતાં, સમાજ માગે ત્યારે સહર્ષ સેવા આપે છે એ તેમની વિશિષ્ટતા છે, તેથી સ્થાનકવાસી સમાજ શ્રી ચીમનલાલભાઇને 'આપણા ચીમનભાઇ'' તરીકે સબોધે છે

શ્રી ચીમનલાલ પોપટલાલ શાહ

શ્રી ચીમનભાઈનો જન્મ અમદાવાદ પાસે ગોધાવી ગામમાં થયો હતો.
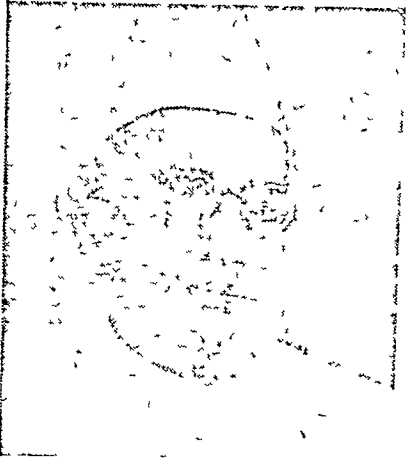
શ્રી ચીમનલાલ પોપટલાલ શાહ

ઘણા વર્ષોથી ધધાર્થે તેઓ મુબઈમા રહે છે.

ઘાટકોપરના સિંહ તરીકે મુબઈના જૈન સમાજમાં તેઓશ્રી સુવિખ્યાત છે.

અમેરિકા, ઇગ્લાંડ, ફ્રાન્સ, સ્વિટ્ઝર્લાંડ, હોલાડની મુસાફરી કરી આવેલ છે

સામાજિક તેમ જ ધાર્મિક પ્રવૃત્તિઓની વિગત

(૧) સને ૧૯૨૧મા ઘાટકોપર કોગ્રેસ કમિટીની સ્થાપના થઈ ત્યારે ઉપપ્રમુખ અને ૧૯૨૨મા પ્રમુખ, ૧૯૩૨ સુધી એટલે બાર વર્ષ સુધી પ્રમુખ તરીકે રહ્યા.

(૨) સને ૧૯૨૫મા મ્યુનિસિપાલિટિના પ્રથમ પ્રમુખ (Frist Elected Piesident) તરીકે ઘણા સુધારા કર્યા. પાંચ વર્ષ સુધી પ્રમુખ તરીકે રહ્યા, જેના માનમાં પ્રજા તરફથી અભિનદન સમારભ યોજાયો હતો

(૩) સને ૧૯૨૩મા શ્રી ધનજી દેવસી રાષ્ટ્રીય કન્યાશાળા, હાઇસ્કૂલના ઘાટકોપરના ટ્રસ્ટી અને પ્રમુખ શરૂઆતથી ૩૫ વર્ષથી હજી ચાલુ છે.

(૪) સાર્વજનિક જીવદયા ખાતુ–ઘાટકોપરના ઉપ–પ્રમુખ અને ટ્રસ્ટી શરૂઆતથી સને ૧૯૨૩થી હજી સુધી એટલે ૩૨ વર્ષથી ચાલુ છે.

(૫) સને ૧૯૨૫મા ઘાટકોપર સ્થા. જૈન સઘની સ્થાપનાની શરૂઆતથી ટ્રસ્ટી તથા ઉપ–પ્રમુખ હજી ચાલુ છે.

(૬) ઘાટકોપર હિદુ મહાસભાના માજી ઉપ–પ્રમુખ

(૭) સને ૧૯૪૦માં ઘાટકોપર ખાતે દશમ અધિવેશનમા શ્રી અ. ભા. શ્વે. સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સની સ્વાગત સમિતિના મહામત્રી, આ સમયની અમૂલ્ય સેવા બદલ અધિવેશનના પ્રમુખ શ્રી વીરચંદભાઈ મેઘજીભાઈ તરફથી સુવર્ણચદ્રક અને સોના–ચાદીની મોટી રકાબી ભેટ. આપવામાં આવેલી

(૮) સને ૧૯૪૩માં સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સના રેસિડન્ટ જનરલ સેક્રેટરી (મહામત્રી) નિમાયા અને ૧૨ વર્ષ સુધી રહ્યા.

(૯) ઘાટકોપર સાર્વજનિક દવાખાનાના સચાલક તરીકે.

(૧૦) મુંબઇ અને ઉપનગરના સઘો તરફથી નિમાયેલ ધર્મરક્ષક સમિતિના પ્રમુખ.

(૧૧) શ્રી સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સ, મુબઇ શાખાના ઉપ–પ્રમુખ.

(૧૨) હિદુસ્તાન સ્કાઉટ એસોસીએશન–ઘાટકોપર શાખાના પ્રમુખ

(૧૩) સને ૧૯૪૪થી મુબઇની જૈન એજ્યુકેશન સોસાયટી (શ્રી જૈન કેળવણી મડળ)ના શરૂઆતથી આજીવન સભ્ય અને કાર્યવાહક મડળના સભ્ય હજી ચાલુ.

ફડ માટેની તેમની જુસ્સાદાર અપીલથી લાખો રૂપિયા એકઠા થયા છે. તિલક સ્વરાજ્ય ફડમા એક જ રાતમા રૂ ૬,૪૦૦ એકઠા કર્યા. ઘાટકોપર જીવદયા ખાતાની સ્થાપના વખતે અને પછીથી પણ હજારો રૂપિયા એકઠા કર્યા છે.

ઘાટકોપર હિદુ સભાના સ્વતત્ર મકાન ફડ માટે પણ સારી જહેમત ઉઠાવી હતી

ઘાટકોપર સ્થા. જૈન ઉપાશ્રય અને અ. ભા. શ્વે. સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સ માટે પણ ફડ એકઠું કરવામાં સારી જહેમત ઉઠાવેલ છે

શ્રી હીરાચદ વનેચદ દેસાઇ, શ્રી જયતીલાલ કલ્યાણદાસ વૈદ્ય, શ્રી અમૃતલાલ લક્ષ્મીચદ ખોખાણી, શ્રી જેઠાલાલ પ્રમુદાસ પારેખ, સોલિસિટર અને શ્રી ધનજીભાઇ દેવસીભાઇના સ્મારકો માટે ફડ એકઠું કરવામા સારી જહેમત ઉઠાવેલી છે.

અહિસક અસહકારની આપણા દેશના સ્વાતત્ર્ય માટેની લડત વખતે ૧૯૩૦માં એક વર્ષ જેલમા ગયા હતા.

ઘાટકોપરમાં કતલખાનુ થતુ અટકાવ્યુ હતુ.

કાર્યવાહક સમિતિના સભ્ય

શ્રી રામજી આસર હાઇસ્કૂલ, ઘાટકોપર.

શ્રી વાડીલાલ ચત્રભુજ ગાધી ગુરુકુળ, હાઇસ્કૂલ, સેવા સમાજ, ઘાટકોપર

શ્રી સસ્કૃત પાઠશાળા, ઘાટકોપર

શ્રી અ. ભા. શ્વે. સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સ તરફથી ઉપાડેલ "સઘ ઐકય"ના કાર્યમાં મહત્ત્વનો ફાળો આપેલ છે.

સમાજસેવામાં તેઓ વીરલ છે. સમાજ પણ તેમની સેવાઓની કદર કરી તેમની હાકલને સદા વધાવી લઇ તેમને સન્માને છે સમાજ પાસેથી જોઇએ તેટલાં નાણા મેળવવામાં તેઓ સફળ રીતે કામ કરી શકે છે જે પ્રશસનીય છે.

સમસ્ત સમાજ શ્રી ચીમનલાલભાઇને સન્માન દષ્ટિથી જુએ છે. તેઓ સમાજ સઘની કોઇ પણ આજ્ઞા ઉઠાવવા હર પળે તૈયાર હોય છે. તેઓ છટાદાર વકતા અને સાહૃદયી કાર્યકર્તા છે. બાળક જેવી નિર્દોષતા, યુવાન જેવો ઉત્સાહ અને વૃદ્ધ જેવી ગભીરતા ધરાવે છે. સાદાઇ સરળતા, સહૃદયતા, સેવા અને નિખાલસતા એ એમના જીવનની વિશિષ્ટતાઓ છે.

તેઓ સર્વોચ્ચ સમાજ સેવક છે, અને સમાજના કલ્પવૃક્ષ છે, તેમાં શકા નથી.

શ્રી ધીરજલાલ કેશવલાલ તુરખીઆ, રાણપુર

જન્મ સ. ૧૯૫૪માં થયો હતો. શ્રી જૈન ટ્રે કોલેજ, રતલામના યશસ્વી સ્નાતક છે સ્થા. જૈન સમાજના ચતુર્વિધ સઘમા 'શ્રી ધીરજભાઇ'ના નામથી સૌ કોઇ પરિચિત છે. એનુ કારણ એમના નિ:સ્વાર્થી કાર્યો, પ્રવૃત્તિઓ, અથાગ પરિશ્રમ, સતત પ્રવાસ, મળતાવડાપણુ અને સૌ સાથે વિનમ્ર અને મીઠો વર્તાવ છે. સાદગી સયમ, ધર્મનિષ્ઠા, મુનિભક્તિ અને સતત કાર્યશક્તિ એમનામાં ભારોભાર છે
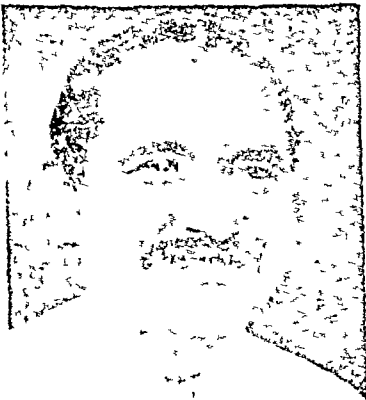
શ્રી ધીરજલાલ કેશવલાલ તુરખીઆ, રાણપુર

ટ્રે કોલેજના સ્નાતક થયા છે. મુબઇમા ગયા. પછી સસારી જીવન સાથે જાહેર જીવનમા 'જાગૃતિ' માસિકનુ સચાલન, રત્નચિતામણી શાળામા ધાર્મિક જ્ઞાનનુ સચાલન અને શ્રી સૂરજમલભાઇ ઝવેરી સાથે કોન્ફરસની પ્રવૃત્તિઓમાં સાથ આપતા. ત્યાથી જૈન ટ્રે. કોલેજ (બિકાનેર)ની શરૂઆત કરાવી ગૃહપાત તરીકે સેવા આપી. બિકાનેર કોન્ફરસ વખતે સેવા આપી.

શ્રી જૈન ગુરુકુળ, બ્યાવરમા એકધારી ૨૫ વર્ષ સેવા આપી એ વખતમા સેકડો છાત્રો તૈયાર થયા. ધર્મની, સમાજની અને રાષ્ટ્રની સેવા કરી, સાહિત્યસેવા પણ ચાલતી જ હતી. આત્મજાગૃતિના પ્રકાશનો સાથે બૃહદ્ જૈન થોક સંગ્રહ (૧૦૧ થોકડા) તથા તત્ત્વાર્થ સૂત્રનુ સપાદન કર્યુ. મારવાડની કેટલીયે સસ્થાઓનુ માર્ગદર્શક સચાલન કર્યુ અને કોન્ફરસની પ્રવૃત્તિઓમાં સક્રિય સેવા આપી અજમેર સાધુ સમેલનમા ધર્મવીર દુર્લભજીભાઇ ઝવેરીની નિરતર સાથે રહીને સહમત્રી તરીકે, શ્રી ઋષિ શ્રાવક સમિતિના મત્રી તરીકે, કોન્ફરસની ધાર્મિક શિક્ષણ સમિતિ આગમ પ્રકાશન સમિતિ અને સઘ–ઐકય સમિતિના માનદ્–મત્રી તરીકે આપણા દરેક પ્રાન્તીય, સાંપ્રદાયિક અને બૃહત્ સાધુ સમેલનો વખતે એમની સેવા પ્રમુખ રહી છે. એમની અવિશ્રાત સેવાઓ જ આ સિદ્ધિઓમા મુખ્ય છે ધર્મવીર દુર્લભજીભાઇ તેમને પોતાનો વડો પુત્ર ગણતા અને કહેતા કે ધીરજભાઇના નાનકડા દેહમાં મહાન્ આત્મા જોઉ છુ. મુબઇ કોન્ફરસ ઓફિસના અધિકારીઓ તેમને 'વર્તમાન સમયના સત' તરીકે ઓળખાવે છે. આજે પણ શ્રી. ધીરજભાઇ સઘ–ઐકય સમિતિના મત્રી, દિલ્હી કોન્ફરન્સ ઓફિસના મંત્રી અને જૈન પ્રકાશના તત્રી છે. કોન્ફરસના મલકાપુર અધિવેશનથી આજ સુધી એમની અવિરત સેવાઓ છે. સામાન્ય સ્થિતિમાં પણ જીવનભરની માનદ્ સેવાઓ આપવી એ અપૂર્વ આદર્શ છે. એમનુ વિશાળ પ્રશસક મિત્રમંડળ એમની સેવાઓને સદા પ્રોત્સાહન આપે છે. જુગ જુગ જીવો એ સમાજ સેવક.

શ્રી ચુનીલાલ નાગજીભાઇ વોરા, રાજકોટ

તેઓશ્રી પોતાની બુદ્ધિ અને શકિતથી સરકારી ખાતામાની એક કારકુનની નોકરીમાંથી આપબળે આગળ વધી શ્રી સરસ્વતી સ્ટોર્મ કો, રાજકોટના માલિક, મદ્રાસની બકીંગહામ કર્ણાટક મિલ તથા બેંગલોર વૂલન મિલના સૌરાષ્ટ્ર, કચ્છ, ગુજરાત, મધ્યભારત, મધ્યપ્રદેશ વિગેરેના સોલ એજન્ટ સુધીની સ્થિતિએ પહોચેલ અને તેઓના પ્રમાણિકપણાના સિદ્ધાંતથી વેપારમા સારી વૃદ્ધિ કરી અનેક મિલો તેમ જ વેપારી આલમમા ઘણી જ ચાહના મેળવેલ.

શ્રી ચુનીલાલ નાગજીભાઇ વોરા, રાજકોટ

જન્મ : તા ૯–૭–૧૮૮૨

સ્વર્ગારોહણ : તા ૨૪–૨–'૫૪

તેઓ ૪૦/૪૫ વર્ષથી દરેક સેવાકાર્યમા સારી રીતે તન, મન અને ધનથી અગ્રગણ્ય ભાગ લેતા હતા અને પરિણામે તેઓને દેશદેશાવર ખાતે બહોળુ મિત્રમંડળ પણ હતુ. તેઓ 'જૈન જ્ઞાનોદય સોસાયટી' ચલાવતા. તે દ્વારા ધાર્મિક પરીક્ષાઓ લેવાનુ તથા સાહિત્ય પ્રકાશનનુ કામ કરતા. કૉન્ફરન્સની પ્રવૃત્તિઓમાં પણ સારો રસ લેતા. રાજકોટમાં ગુરુકુળ ખોલવામા, મારવાડ તથા પંજાબના મોટા મોટા મુનિવરોના ચાતુર્માસ કરાવવામાં અને રાજકોટ સંઘની તથા જાહેર પ્રવૃત્તિઓમા તેઓ અગ્રગણ્ય રહેતા.

સ્થાનકવાસી જૈન સમાજમાં તેઓ અગ્રગણ્ય ગણાતા અને મુખ્યત્વે સ્થા. સમાજની દરેક સસ્થા તેમ જ પાંજરાપોળ, છવદયા, માનવરાહત, દુષ્કાળ, બોર્ડિંગ, બાલાશ્રમ વિ. સસ્થાઓમાં સેવાઓ અર્પણ કરેલ અને તેઓની પ્રેરણાથી ઘણી ઉપયોગી સસ્થાઓ પણ શરૂ થયેલ છે. રાજકોટમા ભાગ્યે જ કોઇ એવી સસ્થાઓ હશે કે જેમા પોતે સભ્યથી માંડીને પ્રમુખ તરીકે કામ કર્યું ન હોય.

સ્વર્ગવાસી થયા પહેલા બે વર્ષ દરમિયાન લગભગ બે લાખ રૂપિયા ઉપરાતની સખાવત કરેલ છે. જૈન દવાખાના, આરામગૃહ, ધનકુવર સ્મારક, જયતીભાઇ મેમોરિયલ અને લાઇબ્રેરી, અંબાબાઇ સ્નાનગૃહ, પરસોતમભાઇ પીયાવો અને જયતીભાઇ ગૌશાળા તેઓએ બધાવેલ છે.

તેઓ સ્થાનકવાસી જૈન સમાજના પ્રમુખ હતા, પરતુ અન્ય સમાજને પણ પ્રસગોપાત બહુ જ મદદગાર થતા કોઇ પણ નિરાધાર, પછી ગમે તે જ્ઞાતિનો હોય તેને, આર્થિક મદદ કરવામા ચૂકતા નહી ધર્મ પ્રત્યે તેમને અગાધ શ્રદ્ધા હતી અને ભારતવર્ષના પંજાબ, મારવાડ તેમ જ અન્ય પ્રદેશોના જૈનાચાર્યો તેમ જ મુનિમહારાજોને કાઠિયાવાડ અને રાજકોટમા ચાતુર્માસ કરાવવામા કારણભૂત બનતા અને જાતે જઇ મહારાજશ્રીઓને વિનતી કરી વિહાર કરાવતા શ્રી ચુ ના. વોરા ઉદાર અને પ્રભાવશાળી નેતા હતા સાચા શ્રદ્ધાળુ અને આદર્શ શ્રાવક હતા. અજમેર સાધુ સમેલન વખતે પણ તેમણે સારી સેવાઓ આપી હતી.

શ્રી ગીરધરલાલ દામોદર દફતરી

જે સમાજનેતાનો ટૂકો પરિચય લખવા જતા પણ એક પુસ્તક ભરાય એ વર્ણન અમુક લીટીઓમાં કેમ કરી શકાય.

સરનામુ : C/O મે. ગાધી એન્ડ કો, લિલામવાળા, નં ૭૨ મેડોઝ સ્ટ્રીટ, કોટ, મુબઇ–૧.

જન્મસ્થાન : મોરબી, તા. ૩૦–૨–૧૮૯૨.

પિતાનુ નામ દામોદર અબાવીદાસ.

શ્રી ગીરધરલાલ દામોદર દફતરી

૧૯૨૦મા નાગપુર કોંગ્રેસમા ગયા અને ત્યા વિલાયતી કપડાં બાળી, ખાદી પહેરવાની શરૂઆત કરી. ૧૯૩૫ મા બારવ્રત અગીકાર કર્યા, ૫૦ વર્ષની ઉમરે

આજીવન બ્રહ્મચર્ય પાળવાની પ્રતિજ્ઞા લીધી.

(૧)-૧૯૨૫માં માટુંગા કોંગ્રેસ કમિટીના મંત્રી.

(૨) માટુંગા રેસિડન્ટસ એસોસીએશનના મંત્રી

(મંત્રી તરીકે દમના દર્દીઓને ચિત્રકુટના મહંતની મફત દવા ખવરાવવાની માટુંગામા ગોઠવણુ કરેલ. લગભગ દસ હજાર માણસોએ દવા ખાધી.)

(૩) ૧૯૨૯માં શ્રી શ્વે. સ્થા. જૈન સકળ સંઘ, મુંબઇના મંત્રી નિમાયા. ત્યાર પછી ટ્રસ્ટી નિમાયા અને પછી મેનેજિંગ ટ્રસ્ટી, મંત્રી ટ્રસ્ટી અને મેનેજિંગ ટ્રસ્ટી તરીકે. આ ૨૬ વર્ષના ગાળામા

૧. શ્રી વર્ધમાન તપ આયંબિલ ખાતુ શરૂ થયુ.

૨. શ્રી પ્રભાશંકર પોપટભાઇ સાર્વજનિક દવાખાનુ શરૂ થયુ.

૩. શ્રી ગોકલદાસ શીવલાલ એકસ-રે ઇન્સ્ટિટયૂટ શરૂ થયુ

૪. આંખની હોસ્પિટલ શરૂ કરવા માટે મકાન બંધાઇ રહેલ છે

૫ સ્થાનકવાસી આરામગૃહો થયા.

(૪) શ્રી દામજી લક્ષ્મીચંદ જૈન સ્થાનક, ચીંચપોકલીમા ટ્રસ્ટી ૧૯૩૫થી.

(૫) શ્રી ભાણજી દામજી ચેરીટી ટ્રસ્ટ (ગુલાલવાડી)મા ટ્રસ્ટી હતા. ૫ંદર વર્ષ કામ કર્યું. હાલમાં રાજીનામુ આપેલ છે.

પરિગ્રહની મર્યાદા હોવાથી, ધારેલી રકમ ઉપરાંતની આવક શુભ કાર્યમાં વાપરે છે.

ચીંચપોકલી સ્થાનકમા રૂા. ૧૨,૧૧૧ આપ્યા છે.

૧૯૪૭ મા મુંબઇમા ક્ષયના રોગનુ નિદાન કરવા માટે સસ્તા દરે એકસ-રે ઇન્સ્ટિટયૂની પોતાના માતુશ્રીની યાદગીરીમા સ્થાપના કરી અને શ્રી રામકુંવર ચેરિટેબલ એકસ-રે ઇન્સ્ટિટયુટ શરૂ કર્યું. ૧૯૪૯ મા ૨૦૦ M. A નુ મોટુ મશીન રૂા. ૨૫,૦૦૦ ના ખર્ચે લીધુ અને એકસ-રે પ્લેટ માત્ર રૂા. ૧૦માં હાલમા રૂા. ૮ લેવાય છે અને સ્ક્રીનિંગ માત્ર રૂા ૨ લેવાની સગવડતા કરી; આ સંસ્થાનો અત્યાર સુધીમાં લગભગ ૭૦,૦૦૦ દર્દીઓએ લાભ લીધેલ છે.

૧૯૪૯માં શ્રી રામકુંવર ચેરિટેબલ એકસ-રે ઇન્સ્ટિટયૂટ કર્યું.

દાદર (સે. રેલવે)મા મુંબઇ મ્યુનિસિપાલિટી તરફથી ખોલાનારી ૮૦ ખાટલાની ટી. બી. હૉસ્પિટલમાં ૧૯૫૩મા રૂા. ૫૧,૦૦૧] ઉપરોકત ટ્રસ્ટ તરફથી આપવામાં આવ્યા છે. આ હોસ્પીટલનુ નામ "રામકુંવર દફતરી ટી. બી. હોસ્પિટલ એન્ડ કિલનિક" રહેશે.

૧૯૫૫માં ચેમ્બુરમા હાઉસિંગ કોલોનીમા એક સાર્વજનિક દવાખાનુ ઉપરના ટ્રસ્ટ તરફથી ખોલવામા આવેલ છે, જેને શ્રી દફતરીના પિતાશ્રીની યાદગીરીમા "શ્રી દામોદર અંબાવીદાસ દફતરી" સાર્વજનિક ડિસ્પેન્સરી"ના નામથી શરૂ કર્યું. નવ માસમાં ૨૫,૦૦૦ દરદીઓને લાભ લીધો.

(૬) શ્રી ઘાટકોપર સાર્વજનિક જીવદયા ખાતામાં દસ વરસ મંત્રી, હાલ ખજાનચી.

(૭) શ્રી જૈન એજ્યુકેશન સોસાયટી લગભગ ૫ંદર વરસથી શરૂ થઇ ત્યારથી સભ્ય તરીકે.

(૮) શ્રી અ. ભા. શ્વે. જૈન કોન્ફરન્સના મંત્રી તરીકે કામ કરેલ છે, હાલમા મુંબઇ શાખાના માનદમંત્રી તરીકે.

(૯) શ્રી રામકુંવર ચેરિટેબલ એકસ-રે ઇન્સ્ટિટયૂટ-દાદરમા મેનેજિંગ ટ્રસ્ટી

(૧૦) શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન આયંબીલ ખાતામા પ્રમુખ

(૧૧) જૈન કિલનિક મુંબઇના મંત્રી.

(૧૨) મોરબી દશા શ્રીમાળી વણિક મંડળ-ખજાનચી

(૧૩) શતાવધાની શ્રી રત્નચંદ્રજી જૈન જ્ઞાન મંદિર (સુરેન્દ્રનગર)ના મંત્રી

(૧૪) ૧૯૨૫-'૨૯ સુધી 'એ' વોર્ડ કોન્ગ્રેસ સમિતિમા અને ત્રણ વર્ષ સુધી બી. પી. સી. સી.ના સભાસદ.

શ્રી ખીમચંદ મગનલાલ વોરા

શ્રી ખીમચંદ મગનલાલ વોરા
ઉમર: વર્ષ ૪૮ વતન: નાયકા (સૌરાષ્ટ્ર)

આપણા સ્થાનકવાસી સમાજમાં શ્રી ખીમચંદભાઈ વોરાના નામથી ભાગ્યે જ કોઈ અજાણ હશે, માત્ર સ્થાનકવાસી સમાજમા જ નહિ, પરન્તુ સારા યે જૈન સમાજમા તેમનુ નામ જાણીતુ છે.

શ્રી ખીમચંદભાઈ વોરાએ સામાજિક તેમ જ ધાર્મિક ક્ષેત્રે સેવા આપવાની શરૂઆત કરાચીમા કરી. કરાંચીમાં ઘણી સસ્થાઓનું મંત્રીપદ તેમને સોંપાયું, જે તેમણે સફળતાપૂર્વક સભાળ્યુ. કરાંચીમાં શ્રી સ્થા જૈન સંઘ, શ્રી જૈન સહાયક મંડળ, શ્રી જૈન એજ્યુકેશન સોસાયટી, શ્રી સુંદરલાલજી જૈન શાળા, શ્રી જૈન મ્યૂઝિક એન્ડ ટીમ. વગેરે સસ્થાઓમા મંત્રી તરીકે તેમણે આપેલી સેવાઓ કરાચીના સ્થાનકવાસી જૈન સમાજના ઇતિહાસમાં નોંધપાત્ર સ્થાન ભોગવે છે.

ઇ. સ. ૧૯૪૦માં શ્રી ખીમચંદભાઈ વોરા, મુબઈમાં આવ્યા, ત્યારથી આજ સુધી અનેક સંસ્થાઓને તેમની સેવાઓનો લાભ મળ્યો છે શ્રી અ. ભા. શ્વે સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સના મંત્રી તરીકે ૧૪ વર્ષ રહીને તેમણે સેવા બજાવી છે.

શ્રી જૈન કેળવણી મંડળ સંચાલિત શ્રી રત્નચિંતામણિ સ્થા જૈન હાઈસ્કૂલના મંત્રીપદે રહ્યા છે. તેમણે આ શાળાનું મંત્રીપદ સંભાળ્યું ત્યારે નાના પાયા પર ચાલતી આ શાળા આજે વિશાળ વટવૃક્ષની જેમ વિકસી છે અને મેટ્રિકના ધોરણો સુધી પહોંચી છે.

શ્રી વોરા લેખક પણ છે. સાહિત્યના ક્ષેત્રમાં તેમણે સખ્યાબધ નાટિકાઓ સુદર રીતે લખી છે અને આ નાટિકાઓ ભજવાયેલ પણ છે. કેટલાક નાટકો ઓલ ઇન્ડિયા રેડિયો પરથી પણ ભજવાયેલ છે. તેમના લખાણમા ચિંતન, સમાજને સમજવાની વિશિષ્ટ શક્તિ અને સ્પષ્ટ માર્ગદર્શન રહેલાં હોય છે તેનો ખ્યાલ જૈન પ્રકાશમાં પ્રગટ થયેલા તેમના અગ્રલેખો પરથી આવી શકે તેમ છે, તે જ કારણે જૈન પ્રકાશના તંત્રી તેમ જ ઝાલાવાડી જૈન સભાની પત્રિકાના તંત્રી તરીકે તેમની વરણી થયેલી છે. તેમણે સામાજિક તેમ જ ધાર્મિકોત્કર્ષની પ્રવૃત્તિઓમા દાન પણ કરેલ છે. તાજેતરમા તેમણે નાયકામાં ઉપાશ્રય માટે રૂા. ૫૦૦૦નુ દાન કરેલ છે. તેમના વતી ઉચ્ચ ધોરણમાં અભ્યાસ કરતા વિદ્યાર્થીઓને કોન્ફરન્સ મારફતે શિષ્યવૃત્તિઓ પણ અપાય છે

આ રીતે શ્રી વોરા સક્રિય કાર્યકર, કુશળ વ્યાપારી, લેખક અને વક્તા છે. તેમની નિષ્ઠા, પ્રમાણિકતા, ઉચ્ચ ચારિત્ર્ય, સતત કામ કરવાની શક્તિ, વ્યવસ્થાશક્તિ, જૂના અને નવા વિચારોનો સુમેળ સાધવાની આવડત અને જે કામ હાથમા લે તે પૂરું કરવાની ખાસિયત મુખ્ય છે.

શ્રી ચુનીલાલ કલ્યાણજી કામદાર, મુબઇ

સૌરાષ્ટ્રના સનાળા ગામમાં શ્રી કલ્યાણજી ગોવિંદજીના ધર્મપત્ની મૂળીબાઇની કૂખે સન ૧૯૧૦મા તેમનો જન્મ થયો. મોસાળમા ઊછર્યા અને ઉદાર મનનાં માતુશ્રીના સસ્કારો મળ્યા.

શ્રી. ચુનીલાલ કલ્યાણજી કામદાર, મુંબઇ.

મેટ્રિકના અભ્યાસ બાદ ૧૪ વર્ષની ઉમ્મરથી જ સાહિત્ય ક્ષેત્રે નવલિકાદિ બારેક પુસ્તકો પ્રકટ કર્યાં. 'પડઘમ,' 'યુવક' ઇ. માસિકનુ તંત્રીપદ સભાળ્યુ. 'કિશોર વયમા જ સામાજિક ક્રાંતિ અને પ્રગતિનાં આંદોલન કર્યાં.

વેપાર–દેશી દવાઓની બનાવટ ઉપરાંત ઓરિએન્ટલ

ફાર્મસી, ઇસ્ટર્ન ઇમ્પોર્ટિંગ કું. તથા એશીઅન સેલ્સ કોર્પોરેશન ચલાવ્યા.

શ્રી રત્નચિંતામણિ શાળાના મંત્રી તરીકે તથા સ્થા. જૈન સંઘ, જૈન કેળવણી મંડળ, મુંબઇ, મે. શ્વે. જૈન વાંચનાલય, જૈન યુવક સંઘ, સાવરકુંડલા યુવક મંડળ, મુંબઇ વગેરેમાં સેવાઓ આપી છે.

શ્રી અ. ભા. સ્થા. જૈન કૉન્ફરન્સના મંત્રી અને જૈન પ્રકાશના તંત્રી તરીકે વર્ષો સુધી સેવા આપી છે.

મહાગુજરાત યુવક સંમેલનમાં, પંજાબ સિંધ નિર્વાસિતોની 'પવાઇ છાવણી'માં બાલ્કન જી બારીની પ્રવૃત્તિઓમાં, મોડેલ કૉઑપરેટિવ હાઉસિંગ સોસાયટી લિ૦, મુંબઇ. પ્રા. હાઉસિંગ ફેડરેશન, મુંબઇ ભાતૃત મંડળ વગેરે સંસ્થાઓમાં અગત્યની સેવાઓ આપી છે અને આપી રહ્યા છે. દરેક કામગીરીમાં ભારે ઉત્સાહ અને આવડત ધરાવે છે સામાજિક અને ધાર્મિક સંસ્થાઓને સેવા અને સહાયતા આપે છે. એમના વિચારો સૈદ્ધાંતિક, ક્રાંતિકારી, સુધારક અને જમાનાને અનુકૂળ રહે છે. સ્વભાવ મમતાળુ, મિલનસાર અને તરવરાટવાળો છે.

શ્રી મગનલાલ પી. દોશી

શ્રી મગનલાલ પી. દોશીનો જન્મ સને ૧૮૯૮ના ઓગસ્ટ માસની ૮મી તારીખે સૌરાષ્ટ્રના મોરબી નજીકના ટંકારા ગામે થયો હતો.

શ્રી મગનલાલ પી. દોશી

તેમણે રાજકોટની આલ્ફ્રેડ હાઇસ્કૂલમાં કેળવણી લીધી છે.

સને ૧૯૨૨માં તેમણે પોતાના નાનાભાઇના નામે, પોતાની એક્સપોર્ટ-ઇમ્પોર્ટની ઓફિસ "સી. પી. દોસી એન્ડ કંપની"ના નામે મુંબઇમાં શરૂ કરી.

પોતાના ધંધાના વધુ વિકાસ અર્થે તેઓ ૧૯૩૫માં જાપાન ગયા અને ત્યાંની મોટી ધંધાદારી પેઢીઓ સાથે તથા કારખાનાઓ સાથે તેમણે સંબંધો શરૂ કર્યા. તેઓ આપબળે આગળ વધેલા છે અને ધંધાની નીતિમત્તા અને પ્રમાણિકતાવાળા છે.

સામાજિક કાર્યો

શ્રી મગનભાઇને પોતાની જન્મભૂમિ, ટંકારા પ્રત્યે ઘણો જ પ્રેમ છે. તેઓ કેળવણીમાં ખૂબ રસ ધરાવે છે

જ્યારે ટંકારામાં કેળવણીનું કાંઇ સાધન નહોતું ત્યારે, પોતે શ્રી ટંકારા હિતવર્ધક મંડળ નામની સંસ્થાની સ્થાપના કરી, ત્યાં મિડલ સ્કૂલ અને કન્યાશાળા ઉઘાડી.

સને ૧૯૧૩માં તેમણે ટંકારામાં એક વાચનાલય ચાલુ કર્યું હતું તે આજે પણ ચાલુ છે.

સને ૧૯૪૧માં જ્યારે કેટલાય લોકો હરિજનોને અડકતા પણ નહોતા, ત્યારે તેમણે ટંકારામાં એક હરિજન શાળા ખોલી અને ત્રણ ચાર વરસ સુધી ચલાવી. તેમાં દરેક હરિજનને પ્રાથમિક શિક્ષણ મફત આપવામાં આવતું. ચોપડીઓ, કપડાં, શાળાના મકાનનું ભાડું, શિક્ષકોના પગાર વિ. તમામ ખર્ચો પોતે એકલા ભોગવતા.

મુંબઇમાં મોટી સંખ્યા ધરાવતી શ્રી કાઠિયાવાડ દશા શ્રીમાળી સેવા સંઘ નામની સંસ્થાના ઘણા વર્ષોથી તેઓ પ્રમુખ છે.

ટંકારામાં ચાલતા બાલ સંસ્કાર કેન્દ્રના તેઓ પ્રમુખ છે. મુંબઇની દશા શ્રીમાળી વણિક સોસાયટીના તેઓ ટ્રસ્ટી છે. મુંબઇમાં ચાલતી જૈન એજ્યુકેશન સોસાયટીના આજીવન સભ્ય છે તથા રત્નચિંતામણિ સ્કૂલના પેટ્રન છે

સને ૧૯૨૭માં ટંકારા ખાતે શ્રી સેવાસમાજ નામની સંસ્થાની તેમણે સ્થાપના કરેલી, જે સંસ્થા આજે પણ સારી સેવા બજાવી રહી છે.

સને ૧૯૧૮માં શ્રી ટંકારા હિતવર્ધક મંડળની તેમણે સ્થાપના કરેલી, જેના આજે તેઓ પ્રમુખ છે

તેઓ વિદ્યાર્થીઓને સ્કોલરશિપ આપે છે તથા ઘણા વિદ્યાર્થીઓને વર્ષો થયા ફી, પુસ્તકો વિ.ની મદદ કરે છે. ગુપ્તદાની અને મળતાવડા સ્વભાવના છે.

તેમની સેવાઓની કદર કરીને સમસ્ત ટંકારા ગામના રહેવાસીઓએ સને ૧૯૪૮માં તેમને 'માનપત્ર' એનાયત કર્યું હતું. સન ૧૯૧૩થી સ્વદેશી વસ્તુઓ વાપરવાનો આગ્રહ રાખે છે.

ધાર્મિક કાર્યો

ટંકારામાં તેમણે ઉપાશ્રય અને કબૂતરખાનું બંધાવ્યું છે.

મુંબઇના કોટના સ્થાનકવાસી સંઘના તેઓ અગ્રગણ્ય કાર્યકર્તા છે કોટમાં ઉપાશ્રય બાંધવા માટે ફંડ એકઠું

કરવા માટે તેમણે અથાગ શ્રમ ઉઠાવ્યો છે. પોતે પણ તેમા રૂ. ૫,૦૦૦ આપ્યા છે.

શ્રી મોરબી પૌષધશાળાનો પાયો તેમના જ હાથે નંખાયો છે અને તેમાં પણ તેમણે સારી રકમ આપી છે. શ્રી મોરબી જૈન બોર્ડિંગને પણ તેમણે સારી મદદ કરી છે. ટંકારા પાસેના હડબટીઆરી ગામમાં પોતાનાં માતુશ્રીની યાદમા તેમણે એક ઉપાશ્રય બનાવ્યો છે.

અહિંસાના પ્રચાર માટેની ધગશ અજબ જેવી છે. પંડિતરત્ન મુનિશ્રી સુશીલકુમારજીએ શ્રી ભારતીય અહિંસક સંઘની સ્થાપના કરી છે તેનુ સમગ્ર સંચાલન તેઓ એકલા હાથે કરી રહ્યા છે, સારાયે ભારતમા તેમ જ યુરોપ, અમેરિકા, જાપાન વિ. દેશોમાં અહિંસાનો પ્રચાર કરવા તથા માંસાહાર છોડાવવા પ્રયત્ન કરી રહ્યા છે.

સાહિત્યસેવા

તેમને સાહિત્યનો ઘણો શોખ છે. નાની ઉમ્મરથી જ તેઓ હસ્તલિખિત માસિક કાઢતા. આજે પણ તેમના લેખો જુદા જુદા વિષયો ઉપર મુબઇના તેમ જ અન્ય વર્તમાનપત્રોમાં પ્રસિદ્ધ થતા રહે છે.

દરરોજ સવારમા સામાયિક કર્યા સિવાય તો તેઓ ઘરની બહાર પણ નીકળતા નથી. જૈન ધર્મ પ્રત્યે અનન્ય દૃઢ શ્રદ્ધા તેઓ ધરાવે છે.

શેઠ હંસરાજભાઇ લક્ષ્મીચંદ કામાણી, અમરેલી

સ્વ. શેઠ હંસરાજભાઇનો જન્મ ધારી (સારાષ્ટ્ર)ના પ્રતિષ્ઠિત અને ધર્મપરાયણ શેઠ લક્ષ્મીચદ દેવશીને ત્યાં થયો હતો. એમની બચપણથી જ ધર્મ-પરાયણ વૃત્તિ હતી. સાધુ–સાધ્વીઓના પરિચયમા રહેતા અને શાસ્ત્રાભ્યાસ કરતા હતા.

શેઠ હંસરાજભાઇ લક્ષ્મીચંદ કામાણી, અમરેલી.

વેપાર શરૂમા કરી-આણાનો શરૂ કર્યો. વેપાર ઠીક ન ચાલવાથી સં. ૧૯૦૦માં લગભગ મુંબઇ આવીને ત્રણ વર્ષ રહ્યા. ત્યાથી તેમને કલકત્તા મોકલ્યા. કલકત્તામાં થોડો સમય નોકરી કરી અને ત્યાર બાદ સ્વતંત્ર ધધો શરૂ કર્યો.

કલકત્તામા સાધુઓનુ આવાગમાન ન થતું હોવાથી શ્રી હંસરાજભાઇ શાસ્ત્ર વાચતા અને વ્યાખ્યાન સંભળાવતા. કલકત્તામાં સારુ કમાયા પણ ખરા તેમને શાસ્ત્ર સ્વાધ્યાય અને સંશોધનનો શોખ હતો. તેથી જ ૫૫ વર્ષની ઉમ્મરે પણ કાશીની યશોવિજય પાઠશાળામા રહીને સંસ્કૃત ભાષા શીખ્યા. અને નિવૃત્તિમય જીવન શરૂ કર્યું અને શાસ્ત્ર સ્વાધ્યાયમાં જ સમય વ્યતીત કરવા લાગ્યા. કર્મવાદનો તેમને ઊંડો અભ્યાસ હતો અસાંપ્રદાયિક ભાવના હતી. દરેક ફિરકાના સાહિત્યને પ્રેમથી વાચતા અને સાહિત્ય પ્રકાશનને પ્રોત્સાહન આપતા.

શ્રી હંસરાજભાઇએ અમરેલીમા વિશાળ પુસ્તકાલયનો સંગ્રહ કર્યો હતો. જૈન શાસ્ત્રોના પ્રચારની તેમની ભાવના હતી તેથી અજમેર કોન્ફરસ વખતે તેમણે રૂ. ૧૫ હજારનુ દાન આપ્યુ હતુ શ્રી હંસરાજભાઇનો સ્વર્ગવાસ તા. ૫–૪–૪૦ માં થયો હતો.

શ્રી રામજીભાઇ હંસરાજ કામાણી

શ્રી રામજીભાઇ હંસરાજ કામાણી

તેમનો જન્મ સને ૧૮૮૯માં માતાજી દુધીબાઇની કૂખે થયો. પિતાજીનુ નામ હંસરાજ લક્ષ્મીચદ. જન્મ સ્થળ : અમરેલી (સૌરાષ્ટ્ર).

ઘણી જ ગરીબ સ્થિતિને લીધે તેઓએ થોડુ ઇંગ્રેજી ભણી કલકત્તામાં ખભે કોથળો નાંખી એલ્યુમિનિયમનાં વાસણોનો ભગાર એકઠો કરવાનો ધંધો શરૂ કર્યો.

સને ૧૯૧૩ માં ચોરવાડ (સૌરાષ્ટ્ર)ના વતની શ્રી

જીવનલાલ મોતીચદ નામના બાહોશ કાર્યકર સાથે દોસ્તી થઇ અને તે બન્ને જણાએ "જીવનલાલ (૧૯૨૯) લિમિટેડ" ના નામથી એલ્યુમિનિયમનાં વાસણોનો વેપાર શરૂ કર્યો, જે એટલો બધો ફાલ્યો કે તેમના વેપારનો ભાગ્યે જ કોઇ મુકાબલો કરી શકે

સને ૧૯૪૧ મા જયપુરમા ૨૦ લાખ રૂપિયાની પેડ અપ કેપિટલથી એલ્યુમિનિયમ, પિત્તળ અને તાંબાના વાસણો બનાવવાનુ જગી કારખાનુ નાખ્યુ.

સને ૧૯૪૮મા મેસર્સ કામાણી મેટલ્સ અને એલોયઝ લિમિટેડના નામથી પિત્તળ, જસત અને તાબાના પતરાં બનાવવાનુ રૂ. ૪૦ લાખની પેડ અપ કેપિટલથી મુબઇમા કારખાનુ નાખ્યુ, જે અત્યારે એ લાઇનના સારામા સારા કારખાનામાનુ એક છે સને ૧૯૪૫ મા ૬૦ લાખ રૂપિયાની કેપિટલથી "કામાણી એન્જિનિયરિગ કૉર્પોરેશન લિમિટેડ" નામથી ખેતીવાડીનાં ઓજારો, ઇનેમલવેર વિગેરે બનાવવાનુ શરૂ કર્યું, જેમાં મોટા મોટા વેપારીઓ અને ઉદ્યોગપતિઓ જોડાયા.

સને ૧૯૨૧ ની અસહકારની ચળવળમાં પોતાનો ધીકતો ધધો છોડીને આપણા રામજીભાઇએ અમરેલીમા અને તેની આસપાસના અનેક ગામોમાં ખાદીનો ધધો અને પ્રચાર શરૂ કર્યા.

સને ૧૯૩૧મા ગ્રામોદ્ધારની યોજના ઉપાડી અને ખેડૂતોને કેળવવાની શાળા ઉઘાડી એટલુ જ નહિ, પોતાની જન્મભૂમિમા "રામબાગ" નામનો એક મોટો બગીચો બનાવ્યો, જે અત્યારે કાઠિયાવાડમા સર્વોત્તમ તરીકે ગણાય છે.

વિદ્યાર્થીઓને સ્કોલરશિપો, ગામડામાં લાયબ્રેરીઓ હરિજન ઉદ્ધારની યોજનાઓ, બહેનો માટે કસરતશાળાઓ વિગેરે વિગેરે તેમના આખા જીવનના વ્યવસાયો છે. તેમના આવા ઉમદા ચારિત્ર્યથી આકર્ષાઇને બરોડા સ્ટેટ તરફથી તેમને 'રાજરત્ન'નો ખેતાબ આપવામાં આવ્યો છે.

તેઓ સખાવતે શુરા છે આપણા બિયાવર ગુરુકુળને રૂ. ૧૦,૦૦૦ આપ્યા છે. મુબઇની જૈન એજ્યુકેશન સોસાયટીને રૂ. ૧૦૦૦૦ આપ્યા છે આગમ પ્રકાશનના કાર્યને વેગ મળે એ હેતુથી તેમના પિતાશ્રીએ આપેલા રૂ. ૧૫,૦૦૦ ઉપરાંત બીજા રૂ. ૧૦,૦૦૦આપવાનુ વચન આપેલ છે. ઘાટકોપરમા સ્થાપાયેલ શ્રાવિકાશ્રમ ફડમા એક લાખ રૂપિયા ન થાય ત્યાં સુધી દૂધ ન પીવાની આપણા સમાજસેવક શ્રી ટી જી શાહની પ્રતિજ્ઞાને રૂ. ૧૧,૧૧૧ આપી પૂરી કરી હતી.

સ્વભાવે શાંત, ભારે મિલનસાર, ગભીર, નખશિખ ખાદીધારી, જનકલ્યાણની ભાવનાથી ભરેલા શ્રીરામજીભાઇને જોઇને આપણુ મન પુલકિત થયા વિના રહેતુ નથી.

સૌથી જ્યેષ્ઠ પુત્ર શ્રી પૂનમચદભાઇએ ધધાનો કારભાર પોતાને ખભે ઉપાડી લીધેલો હોવાથી પોતાના પેડર રોડ ઉપરના કામાણી હાઉસમાં હાલ નિવૃત્ત જીવન ગાળી રહ્યા છે

શ્રી નરભેરામભાઇ હંસરાજભાઇ કામાણી

શેઠ હસરાજભાઇ લક્ષ્મીચદ, અમરેલી (સૌરાષ્ટ્ર)ના સુપુત્ર છે. અત્યારે એમની ઉમર ૬૩ વર્ષની છે જમશેદપુરમા ૩૫ વર્ષથી એમની પ્રતિષ્ઠિત દુકાનો અને ધીખતો ધધો છે, જેમા લાખો રૂપિયાનુ કામકાજ થાય છે.

શ્રી નરભેરામભાઇ હંસરાજભાઇ કામાણી

કુટુબના ધાર્મિક સસ્કારોને લીધે સાધુ-સાધ્વીઓ પ્રત્યેની શ્રદ્ધાભક્તિ, ધર્મની રુચિ, વિદ્યા-પ્રેમ અને દિલની ઉદારતા છે. હજારો રૂપીઆ ઉદારતાથી ધર્મ કાર્યમા ખર્ચે છે

જમશેદપુર જૈન સઘના વર્ષોથી પ્રમુખ છે બગાળ-બિહાર તરફ પધારતા મુનિવરોની તન, મન, ધનથી સેવા કરે છે, અને દરેક પ્રવૃત્તિમા આગેવાનીભર્યો ભાગ લે છે.

અહીની ગુજરાતી સ્કૂલમા પ્રમુખ સેવા કરે છે. જમશેદપુરમાં વસતા અને બહારથી આવતા સ્વદેશી અને સ્વધર્મી ભાઇઓની પણ યથાયોગ્ય સેવા કરે છે.

શ્રી ટી. જી. શાહ

ઉમર વર્ષ ૭૦ ટી. જી શાહ

શ્રી ત્રિભુવન ગોવિંદજી શાહ, પાયધોની, મુંબઇ–૩.

જન્મસ્થાન–વઢવાણ શહેર, જન્મ તા ૮–૬–૧૮૮૯. ગરીબીમાં ઊછરીને આપબળે આગળ વધનાર, સેવામાં સદા મોખરે રહેનાર, વ્યસનોના કટ્ટર વિરોધી, સીધા-સાદા શ્રી ટી જી. શાહના ટૂંકા નામથી સુપ્રસિદ્ધ છે.

તેમના ધર્મપત્ની સૌ ચચળબહેન પણ તપસ્વી, ધર્મપ્રેમી અને સાધ્વી જેવાં હોઇ શ્રી શાહના પ્રત્યેક સેવા-કાર્યમાં સહભાગી અને પ્રેરક બને છે

કોન્ફરન્સનાં પ્રથમના પાચ અધિવેશનોમા સ્વય સેવક તરીકે અને પછીના બધા અધિવેશનોમાં વોલટીઅર કેપ્ટન તરીકે સેવા કરી છે. દરેક અધિવેશન વખતે એક કે બે માસ અગાઉથી પહોચી જઇને ત્યાંનીસ્વાગત સમિતિને અને સઘને સેવા આપતા રહ્યા છે.

કોન્ફરન્સનાં માનદ્મત્રી તરીકે ૨૦ વર્ષના લાંબા સમય સુધી સેવા આપી છે. શ્રાવિકાશ્રમ, ઘાટકોપરના ફડ માટે તેમણે દઢ પ્રતિજ્ઞાપૂર્વક સૌ. લીલાબહેન કામદાર તથા સૌ. ચચળબહેન શાહ સાથે ખુબ શ્રમ સેવ્યો છે. મકાન બનાવવામાં પણ શ્રમ સેવ્યો છે. એ સસ્થાના તેઓ મત્રી પણ છે

શ્રી નથમલજી ફીમેલ એજ્યુકેશન ચોરડિયા ટ્રસ્ટના વર્ષો સુધી પ્રમુખ રહ્યા

પજાબના સ્વધર્મી શરણાર્થીઓ માટે તેમણે પ્રશસનીય પ્રયાસ અને પ્રવાસ કર્યો હતો સ્થા. જૈન કેળવણી મડળ, મુબઇના પેટ્રન અને સ્થા જૈન હિતકારિણી ટ્રસ્ટ ઇંદોરના ટ્રસ્ટી છે

શતાવધાનો કરવાની શક્તિ સાથે લેખક અને કવિત્વ શક્તિ પણ ધરાવે છે. શતાવધાન શીખવવાનો તેમને ભારે શોખ છે અત્યાર સુધીમા વિસેક શતાવધાનીઓ તેમણે તૈયાર કર્યા છે. ઉદાર અસાપ્રદાયિક વિચારોથી સેવાક્ષેત્રમાં જ્યા બોલાવાય ત્યાં બધે જ પહોંચીને આજે ૭૦ વર્ષની ઉમ્મરે પણ યુવકને શોભાવે એવા પરિશ્રમ અને લગનપૂર્વક કાર્ય કર્યે જાય છે.

પુના ખાતેનું સ્થાનકવાસી જૈન વિદ્યાલય તેમની દેખરેખ નીચે બાંધવામા આવ્યુ હતુ. તે માટે સને ૧૯૪૭ની આખી સાલ તેઓએ પુના ખાતે વસવાટ કર્યો હતો. અને વર્ષોથી ખાલી પડી રહેલા આ પ્લોટમા જગલમાં મગલ સર્જ્યું.

હિન્દુસ્તાનના જૈન ઉપાશ્રયોમાં શાન્તિ જાળવવા માટે તેમણે ભગીરથ પ્રયત્નો કર્યા છે. પહેલા તો તેમણે લાઉડ-સ્પીકરો મુકવાની હિમાયત કરી, પુષ્કળ લેખો પણ લખ્યા. પણ રૂઢીચુસ્ત સમાજ તેમ કરવા તૈયાર ન થયો ત્યારે ઉપાશ્રયમાં વ્યાખ્યાન ચાલતુ હોય ત્યારે મૌન સેવનાર ૫૦૦૦ પાચ હજાર જૈનો બહાર ન પડે તો આમરણાંત ઉપવાસ પર ઉતરવાનો સત્યાગ્રહ આદર્યો. અને ફકત ૩ દીવસના ઉપવાસ બાદ જ ૫૦૦૦ ભાઇ–બહેનો તૈયાર થઇ ગયા.

શ્રી શાહ પોતે નિર્વ્યસની છે. અને જગતને નિર્વ્યસની બનાવવા માટે અવિશ્રાંત પ્રયત્ન આજ ૭૦ વર્ષની ઉમરે પણ કરી રહ્યા છે.

સને ૧૯૫૩ના ઓકટોબર માસમા શ્રી શાહ આફ્રિકા ગયા હતા. અને ત્યા જતાવેત પોતાની પાસેના તમામ પૈસા ચોરાઇ જતાં તેમણે વગર પૈસે મુસાફરી કરવાની અને આફ્રિકામા માણવાની એક નવી સ્કીમ અજમાવી

તેમણે ત્યા જુદી જુદી સસ્થાઓના લાભાર્થે પોતાની સ્મરણ શક્તિના, તર્ક શક્તિના, હાથચાલાકીના જાદુના અને ગણિત શાસ્ત્રના આશ્ચર્યકારક પ્રયોગો ત્યાની જનતાને બતાવવા માડયા.

આફ્રિકાની ૨૫ સસ્થાઓએ આનો લાભ લીધો અને એક દરે તેમને ૨૫,૦૦૦ પચીસ હજાર શીલીગ મળ્યા.

આમાં નૈરોબી શહેરના આપણા સ્થાનકવાસી જૈન ઉપાશ્રયના લાભાર્થે એક પ્રયોગ કર્યો હતો. અને તેમા તેને ૭,૦૦૦ સાત હજાર શીલીગનો લાભ થયો હતો

આ પ્રસગના સ્મરણાર્થે ત્યાંના શ્રી સઘે શ્રી શાહને ઇવનીંગ પાર્ટી આપી એક સોનાનુ સુદર ઘડીઆળ ભેટ આપ્યુ હતુ.

શ્રી ખેલશંકરભાઇ દુર્લભજી ઝવેરી, જયપુર

શ્રી ખેલુભાઇ સ્વ. ધર્મવીર દુર્લભજીભાઇ ઝવેરીના સૌથી નાના લાડકવાયા પુત્ર છે તેમનો જન્મ તા ૧૧–૬–૧૨ નો છે. શિક્ષણ–જયપુરમા ૧૯૩૦ મા મેટ્રિક, પીલાનીમા ઇન્ટર ૧૯૩૨ મા તથા લખનૌમાં બી. કોમ ૧૯૩૪મા થયા ત્યાર બાદ વૃજલાલ કુ. પાસે ઝવેરાતના અનુભવ માટે સન ૧૯૩૫મા કલક ત્તામા રહ્યા. સન ૧૯૩૬મા વિલાયત

શ્રી ખેલશંકરભાઇ દુર્લભજી ઝવેરી, જયપુર

ધધાર્થે ગયા અને ૧૯૩૭માં સપત્નિક રહેવાનુ શરૂ કર્યુ; પરતુ વિશ્વયુદ્ધ શરૂ થવાથી જયપુર પાછા ફર્યા અને પોતાના ધધામાં જોડાયા. અત્યારે મોટા ભાઇ શ્રી વનેચદભાઇ સાથે જયપુરની પ્રતિષ્ઠિત પેઢી આર. વી દુર્લભજી ઝવેરીની સાથે લાખો રૂપિયાનુ કામકાજ કરે છે.

પૂ. બાપુજીને પગલે ચાલી શ્રી વનેચદભાઇની સાથે સાથે દરેક સમાજિક અને ધાર્મિક પ્રવૃત્તિઓમાં ભાગ લે છે. અને ઉદાર દિલે દાન આપે છે. ભવન–નિર્માણ માટે કોન્ફરસની અપીલમાં શ્રી વનેચદભાઇએ ૩૦ હજાર તો શ્રી ખેલુભાઇએ રૂા ૨૧ હજાર આપીને રૂા. ૫૧ હજારનો ફાળો આપ્યો છે.

બિકાનેર બેકની લોકલ બોર્ડ ડાઇરેક્ટર, રોટરી કલબના એકટિગ મેમ્બર અને જયપુરના ચેમ્બર ઓફ કોમર્સના ઉપપ્રમુખ છે

સ્વ. ધર્મવીર દુર્લભજીભાઇના અનેક ગુણોના વારસદાર છે સ્વભાવે શાંત, વિવેકી, ધર્મનિષ્ઠ, ગરીબો અને નોકરો પ્રત્યે લાગણીપ્રધાન છે.

સ્વ. માતુશ્રી સતોકબાઇના વારસાનો હક્ક ન ભોગવતા વિધવા ભાભીને અર્પણ કરવાનુ ઠરાવી ઉદાર કૌટુબિક ભાવના અને દિલની ઉદારતા બતાવી છે.

ઝવેરાતના ધધાર્થે યુરોપ, અમેરિકા, રૂસ, બર્મા આદિની વિદેશ યાત્રા તેમણે ૭ વાર કરી છે. તેમના મોટા પુત્ર રશ્મિકાંત ૧૯ વર્ષના છે. તે બી. એ. ઑનર્સમાં અભ્યાસ કરે છે. એમની આગળ અભ્યાસ કરવા માટે અમેરિકા જવાની પણ ભાવના છે.

શ્રી રવીચંદ સુખલાલ શાહ મોરબી

શ્રી વર્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન શ્રાવક સધ, કાદાવાડી, મુબઇના મત્રી

શ્રી જૈન ક્લિનિક કમિટીના મેમ્બર.

શ્રી મોરબી દશા શ્રીમાળી વણિક મડળ – મુબઇના ઓનરરી સેક્રેટરી.

શ્રી મોરબી ફલડ રીલીફ (જળપ્રલય કમિટી) ફડ–મુબઇના ઓનરરી સેક્રેટરી.

શ્રી મુબઇ આયબીલ ખાતામા ઓનરરી સેક્રેટરી.

શ્રી રવીચંદ સુખલાલ શાહ મોરબી

સરનામુ: સઘવી સદન, રાનડે રોડ, દાદર (મુબઇ)

કાંદીવલી કન્ઝ્યુમર્સ કો–ઓપરેટિવ સોસાયટીના Ex સેક્રેટરી

કાંદીવલી હિતવર્ધક મડળના Ex સેક્રેટરી પણ હતા.

શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રાવક સઘ, દાદર, કમિટી મેમ્બર

મોરબી રાજ્ય પ્રજામડળ, મુબઇના Ex-Hon.Secy.

શ્રી જૈન એજ્યુકેશન સોસાયટી કમિટીના મેમ્બર.

મોરબી રાજ્ય પ્રજામડળમા મત્રી તરીકે કામ કર્યું હતુ.

શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રાવક સઘ આયંબીલ ખાતાના–સેક્રેટરી.

શ્રી મહાજન એસોસીએશનના ડિરેક્ટર હતા.

સિવાય જ્યારે પોતે કાંદીવલીમા રહેતા હતા ત્યારે કાંદીવલીની અનેક ધાર્મિક તેમજ સામાજિક અને રાષ્ટ્રીય સંસ્થાઓમા વર્ષો સુધી સેવા આપેલી છે.

શ્રી ગંભીરચદ ઉમેદચદ શાહ, લીંબડી.

જન્મ: ૧–૫–૧૯૧૩

ધાર્મિક તેમ જ સામાજિક પ્રવૃત્તિ

પિતાશ્રીનુ અવસાન થવાથી ૧૯૩૧માં વેપારમાં જોડાયા. ત્યાર બાદ સન ૧૯૫૧માં જે. પી. અને ઓનરરી મેજિસ્ટ્રેટ થયા.

માટુગા સ્થા જૈન સઘના તેઓ આગ્રેસર છે. છેલ્લા ત્રણ વર્ષથી પ્રમુખ સ્થાન મળેલ છે ઉપરાત માટુગા સઘની નાની–મોટી સામાજિક અને ધામિક પ્રવૃત્તિઓમા પોતાના હસ્તક રૂ. એક લાખનુ દાન કર્યું છે. સિવાય મુબઇ અને પરાઓની નાની મોટી ધાર્મિક અને સામાજિક સસ્થાઓના હમેશાં સારો રસ લે છે અને પોતાનાથી બનતો શારીરિક અને આર્થિક સહકાર વખતોવખત આપે છે.

શ્રી ગિરધરલાલભાઇ હસરાજભાઇ કામાણી

શેઠ હસરાજભાઇ લક્ષ્મીચદ, અમરેલી (સૌરાષ્ટ્ર)ના સુપુત્ર છે. એમની ઉમર અત્યારે ૬૦ વર્ષની છે. ગિરધરલાલ એન્ડ કુાં.ના નામે ૩૫ વર્ષથી કેનિગ સ્ટ્રીટ કલકત્તામા વ્યાપાર ચલાવે છે. લક્ષાધિપતિ હોવા છતાં બહુ જ સરળ, સાદા, નમ્ર અને ધાર્મિક વૃત્તિવાળા છે. ધર્મકાર્યમા ઉદારતા પણ સારી છે. ધર્મપ્રેમ, સાધુ-સાધ્વીઓ પ્રત્યેની શ્રદ્ધાભક્તિ અને સેવાભાવનાવાળા છે.

શ્રી ગિરધરલાલભાઇ હંસરાજભાઇ કામાણી

કલકત્તામા ગુજરાતી ભાઇઓની સારી સખ્યા છે તેમણે મુનિઓને બગાળમાં લાવી ધર્મપ્રચાર માટે વર્ષોથી પ્રયત્નો કર્યા છે. ભવ્ય સ્થાનક બનાવ્યુ છે. તેના ટ્રસ્ટી અને સંઘના ઉપપ્રમુખ છે.

કલકત્તાની ગુજરાતી સસ્થાઓ–દવાખાનુ, બાલમદિર, સ્કૂલ, ભોજનશાળા આદિની કાર્યવાહક કમિટીઓમાં સેવા આપે છે. આ રીતે કલકત્તાના સ્થા. જૈન સઘમાં શ્રી ગિરધરલાલભાઇ સુપ્રસિદ્ધ શ્રાવક છે.

શ્રી ચુનીલાલ વર્ધમાન શાહ

શ્રી ચુનીલાલ વર્ધમાન શાહ

જન્મ સને ૧૮૮૭મા સૌરાષ્ટ્રમા આવેલા વઢવાણ શહેરમા થયો હતો. સને ૧૯૦૩માં મેટ્રિક પાસ થયા પછી તે પત્રકારના વ્યવસાયમાં જોડાયા હતા. 'જૈનોદય' નામનુ એક જૈન માસિક પત્ર થોડા વર્ષ સુધી તેમના સપાદકત્વ હેઠળ પ્રસિદ્ધ થયુ હતુ. પછીથી તે અમદાવાદમા 'રાજસ્થાન' પત્રના સપાદક તરીકે ત્રણેક વર્ષ રહીને 'પ્રજાબધુ' પત્ર સાથે જોડાયા હતા. એ પત્રના ઉપ-સપાદક તથા સપાદક તરીકે ૪૪ વર્ષ રહીને બે વર્ષ પૂર્વે તે નિવૃત્ત થયા છે

અધેરીની સાહિત્ય પરિષદના પત્રકારત્વ વિભાગના પ્રમુખ તરીકે તેમની વરણી થઇ હતી. તે એક સારા સાહિત્યકાર અને વિવેચક પણ છે. 'પ્રજાબધુ'મા 'સાહિત્યપ્રિય'ની સાહિત્યચર્ચા એક વખતે ખૂબ પ્રશસા પામી હતી. તેમણે કેટલીક નવલકથાઓ પણ લખી છે. કર્મયોગી રાજેશ્વર ગજહત્યા, નીલકહતુ બાણ, એકલવીર, રૂપમતી, અવતીનાથ, પરમ આર્હત ઇત્યાદિ તેમની મુખ્ય ઐતિહાસિક

નવલકથાઓ છે. જિગર અને અમી, તપોવન, ભસ્મરેખા, વિષચક્ર, પ્રણય અને પરિણય, જ્યોત અને જ્વાળા, છાશ અને માખણ ઇત્યાદિ તેમની મુખ્ય સામાજિક નવલકથાઓ છે. તે ઉપરાત તેમના પાંચેક નવલિકા સગ્રહો બહાર પડયા છે. તેમની સાહિત્યસેવા માટે તેમને રણજિતરામ સુવર્ણચન્દ્રક મળેલો છે. સદ્‌ગત પ. મુનિવર શ્રી રત્નચન્દ્રજીકૃત કર્તવ્ય–કૌમુદીના શ્લોકો પર તેમણે વિસ્તૃત વિવેચન લખી બે ગ્રથો બહાર પાડેલા છે. હાલના નિવૃત્તિ સમયમા તેમની સાહિત્યસેવા ચાલુ છે. તેમના ચિંતનના ફળરૂપ લેખો અને કથાઓ ગુજરાતી સામયિકોમાં પ્રસિદ્ધ થતાં રહે છે.

શ્રી શેઠ કાનજીભાઇ પાનાચદભાઇ ભીમાણી

શેઠ કાનજીભાઇ પાનાચદ ભીમાણી, રાજકોટ (સૌરાષ્ટ્ર)ના વતની છે તેમની ઉમર ૬૫ વર્ષની છે. વ્યાપાર સોના-ચાદીનો ધીખતો ધધો કલકત્તામા લાંબો વખત થયા કરે છે. પ્રતિભાશાળી હોવા ઉપરાત ધર્મપ્રેમી, સેવાપ્રેમી અને ઉદાર શ્રીમત છે. કલકત્તાના સ્થા. જૈન ગુજરાતી સઘના ટ્રસ્ટી અને પ્રમુખ છે ધર્મના શ્રદ્ધાળુ, સાધુ–સાધ્વી પ્રત્યે ભક્તિભાવવાળા, અને કલકત્તામાં આવનાર ભાઇઓને સહાયકરૂપ છે. કલકત્તાની ગુજરાતી દરેક સસ્થાઓમા તેમનો સક્રિય ફાળો છે. સઘની તમામ પ્રવૃત્તિઓમાં શેઠ કાનજીભાઇની મુખ્યતા હોય છે.
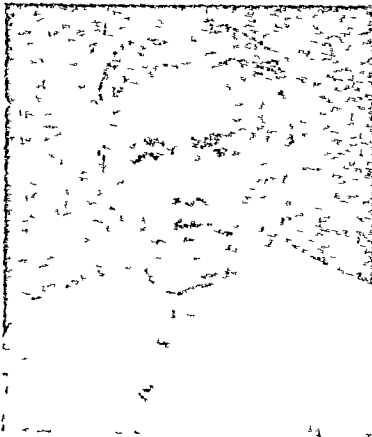
શ્રી. શેઠ કાનજીભાઇ પાનાચંદ-ભાઇ ભીમાણી.

કલકત્તાનો ભવ્ય ઉપાશ્રય બનાવવામા અને બગાળ જેવા સુદૂર પ્રદેશમા સાધુ–સાધ્વીઓને લાવવામા પણ એમની મુખ્યતા છે. વૃદ્ધાવસ્થા હોવા છતા યુવક જેવા ઉત્સાહ અને ભડવીરના પડકારથી કામ કરાવી શકે છે.

રાજકોટની સસ્થાઓ તરફ પણ તેમનુ લક્ષ રહે છે.

શ્રી નવલચદ અભેચંદભાઇ મ્હેતા, મુબઇ

તેઓ મોરબીના વતની છે અને હાલમા શીપિગ, ફોરવર્ડિંગ વગેરેનો ધધો કરે છે. તેમણે ધાર્મિક અભ્યાસ ઠીક કર્યો છે. સૂત્રો પણ વાંચ્યા છે. તેમાંનો ધર્મપ્રેમ સારો હોવાથી કરાચીમાં પધારેલા મુનિવરોની સારી સેવા કરી છે.

શ્રી નવલચંદ અભેચંદ મ્હેતા, મુંબઇ
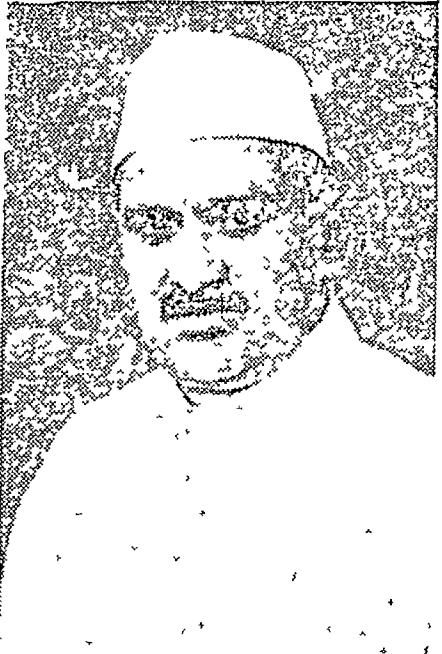
તેઓ રાષ્ટ્રપ્રેમી પણ છે અને તેમણે કોંગ્રેસની રચનાત્મક પ્રવૃત્તિઓમાં રસપૂર્વક ભાગ લીધો છે અને પદાધિકારી તરીકે પણ બહુમૂલી સેવા બજાવી છે.

કરાચી અને સિધની કેટલીયે ગૌશાળાઓને સેવા આપી છે કરાચીના સિધ જીવદયા મડળને પણ ૧૦ વર્ષ સુધી સેવાઓ આપી છે. હોસ્પિટલોમાં જઇ ગરીબ રોગીઓને સહાયતા અને સેવા આપતા હતા. કરાંચીના બધુમડળ સગ્રહસ્થાનના સહમત્રી તરીકે સેવાઓ આપી છે. મજૂર, હરિજન તથા પછાત વર્ગમા જઇને તેમને સુધારવાના પ્રયત્નો કર્યો છે. સ્થા. જૈન સઘમા પણ અગ્રગણ્ય હતા.

સસ્તા અનાજની રાહત કમિટીમા તથા પાંજરાપોળ કમિટીમા સેવાઓ આપી છે. આપણી કોન્ફરન્સના પ્રાતિક મત્રી તરીકે તથા મુબઇ આવ્યા બાદ કોન્ફરન્સના મત્રી તરીકે સેવા કરી છે.

શ્રી હીરાચદ વનેચદ દેસાઇ, મોરબી.

મોરબી (સૌરાષ્ટ્ર)ના સુપ્રસિદ્ધ દેશાઇ પરિવારમા એમનો જન્મ થયો હતો. મેટ્રિક સુધીનુ શિક્ષણ લઇને તેઓ મુબઇ ગયા અને પેઢી શરૂ કરી, સોના–ચાદી અને રૂનો ધધો શરૂ કર્યો. મુબઇના પ્રતિષ્ઠિત વેપારીઓમા એમની ગણના હતી.

સન ૧૯૨૦ માં ઘાટકોપરની કોંગ્રેસ કમિટીના પ્રમુખ ચૂંટાયા હતા. સ્થા. જૈન સંઘની પ્રત્યેક પ્રવૃત્તિઓમાં એમનો આગેવાનીભર્યો ભાગ હતો. ઘાટકોપરનો સ્થા. જૈન ઉપાશ્રય તૈયાર કરાવવામાં એમનો પ્રમુખ ભાગ હતો.

મુંબઈ શરાફ મહાજનના તથા ઘાટકોપર મ્યુનિસિપાલિટીના પ્રમુખ, રાષ્ટ્રીયશાળા, ઘાટકોપરના સંસ્થાપક અને ઘાટકોપરના ટ્રસ્ટી હતા. પોષધશાળામાં તેમણે રૂા. ૧૦,૦૦૦) આપ્યા હતા. તેઓ સમાજસુધારક અને દેશભક્ત હતા. તેમનો સ્વર્ગવાસ તા. ૧૫–૫–'૩૫ ને રોજ થયો. પત્ની, ૨ પુત્ર અને ૨ પુત્રીઓને પાછળ મૂકી ગયા છે. તેમના શોકમાં ઘાટકોપર મ્યુનિસિપાલિટી અને બજાર બંધ રહ્યા હતા.

ડૉ. મણિલાલ સૌભાગ્યચંદ શાહ

જન્મ માંગરોળ (સૌરાષ્ટ્ર)માં તા. ૨–૧૧–૧૯૧૬ ને રોજ દશા શ્રીમાળી કુટુંબમાં થયેલો. માંગરોળમાં મેટ્રિક સુધીનો અભ્યાસ કર્યો બાદ તેજસ્વિતા અને હોશિયારીને લીધે જુદે જુદે સ્થળે રહી ઉપરની ડીગ્રીઓ મેળવી હતી

ડૉ. મણિલાલ સૌભાગ્યચંદ શાહ
M. D., F. I. G. S., D. G. O.
મુંબઈ

મરીન ડ્રાઇવ (મુંબઈ)માં તેઓ સ્વતંત્ર સુવાવડ-ખાતાની જનરલ હોસ્પિટલ ચલાવે છે. તે ઉપરાંત નિઃસ્વાર્થભાવે મુંબઈમાં જૈન ક્લિનિક, ચિંચપોકલી જૈન ક્લિનિક, શ્રી છ. વા.ની સુવાવડ હૉસ્પીટલ, માંગરોળ સમાજ વગેરેમાં સેવા આપે છે.

સ્વભાવે સરળ, શાંત અને મળતાવડા છે. એમનું કુટુંબ ધર્મપ્રેમી છે. તેઓ મધ્યમ અને ગરીબોની મફત સારવાર પણ કરે છે.

મંત્રી મુનિશ્રી પ્રેમચંદ્રજી વ સા. તુ પં. મુનિશ્રી સુશીલકુમારજીના ગાળા તથા એપેન્ડિક્સનું ઓપરેશન પોતાની હૉસ્પિટલમાં ડૉ. મણિલાલભાઈએ કરી સુંદર સેવા બજાવી હતી.

શ્રી ચીમનલાલ અમરચંદ સંઘવી

સંવત ૧૯૧૯માં મુંબઈ આવ્યા.

૧૯૨૪માં ભાગીદારીમાં સોના ચાંદીનો વેપાર શરૂ કર્યો.

૧૯૩૪માં સ્વતંત્ર સોના–ચાંદી અને ઝવેરાતની દુકાન શરૂ કરી.

સંવત ૧૯૩૫માં સંઘવી એન્ડ કું.ના નામથી કાપડનો સ્ટોર્સ શરૂ કર્યો

શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રાવક સંઘ (દાદર) ના ટ્રસ્ટી અને પ્રમુખ છે.

શ્રી ચીમનલાલ અમરચંદ સંઘવી
મોરબી, હાલ દાદર, મુંબઈ

શ્રી રત્નચંદ્રજી જ્ઞાનમંદિર (સુરેન્દ્રનગર)ના ટ્રસ્ટી છે.

શ્રી દાદર સોનાપુરના મેનેજિંગ કમિટીમાં પાંચ વર્ષ સુધી કામ કર્યું.

ગીરજાશંકર ઊમિયાશંકર મહેતા, મોરબી

સરનામું : સંઘવી સદન, રાનડે રોડ, દાદર

ધંધો : ફાર્માસ્યુટિકલ મેન્યુફેકચરર્સ.

સામાજિક તથા ધાર્મિક પ્રવૃત્તિઓ

વ્યાપારી ક્ષેત્રે નેશનલ ટાઇલ્સ એન્ડ ઇન્ડસ્ટ્રીઝ લિ.ના ચેરમેન છે.

'અતુલ સ્ટોર્સ લિ.'ના ડાયરેક્ટર છે.

શ્રી જૈન કેળવણી મંડળ, મુંબઈની કમિટીના મેમ્બર છે

શ્રી વર્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ, મુંબઈની કમિટીના મેમ્બર છે.

શ્રી જૈન ક્લિનિક, મુંબઈની કમિટીના મેમ્બર છે.

શ્રી વર્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ, દાદરના માનદ મંત્રી છે.

શ્રી વી. સી. હાઈસ્કૂલ, મોરબી, હીરક મહોત્સવ ફંડ સમિતિના માનદ ખજાનચી છે.

શ્રી સમર્થ વ્યાયામ મંદિર, દાદરના કમિટી મેમ્બર છે. શ્રી મોરબી દશા શ્રીમાળી મંડળ, મુંબઈના માનદ મંત્રી છે.

શ્રી અમૃતલાલ સવચંદભાઇ ગોપાણી

જન્મ : બોટાદ (સૌરાષ્ટ્ર)માં તા. ૧૨–૧૦–૧૯૦૭ને રોજ થયો હતો.

શિક્ષણ : એમ. એ., પીએચ. ડી. બન્નેમા અર્ધ માગધી ભાષા મુખ્ય વિષય તરીકે લીધેલ.

શ્રી અમૃતલાલ 'સવચંદભાઇ ગોપાણી M. A., Ph. D.

(૧) બ્યાવર જૈન ગુરુકુળના પ્રિન્સિપાલ, (૨) એસ. એસ. જૈન ટ્રેનિંગ કૉલેજના અંગ્રેજીના શિક્ષક તથા સુપરિન્ટેન્ડન્ટ, (૩) બરોડા કોલેજમાં અર્ધ માગધીના પ્રાધ્યાપક; (૪) ભારતીય વિદ્યાભવન (મુંબઇ)માં શ્રી સિંધી જૈન ધર્મ શિક્ષાપીઠના પ્રાધ્યાપક; (૫) ભારતીય વિદ્યાભવન સંચાલિત આર્ટ્સ કોલેજમાં હાલમાં અર્ધ માગધીના પ્રાધ્યાપક તરીકે કામ કરે છે.

વિશિષ્ટતાઓથી અર્ધ માગધી તથા એન્શ્યન્ટ ઇંડેયન કલ્ચરના એમ. એ. ના મુંબઇ યુનિવર્સિટી સન્માનિત પ્રાધ્યાપક તથા અર્ધ માગધીમા પીએચ. ડી. ના મુંબઇ યુનિવર્સિટી સન્માનિત ગાઇડ. મુંબઇ, ગુજરાત અને પૂનાની યુનિવર્સિટીઓમા છેલ્લા સોળ વર્ષોથી ઇન્ટર, બી. એ. અને એમ એ મા અર્ધ મ ગધીના પરીક્ષક. તેમણે શિષ્ટ સમુચ્ચય આદિ ૧૧ પુસ્તકો સંપાદિત કર્યા છે. પ્રાકૃતમા અને અંગ્રેજી તથા ગુજરાતીમા લખેલા કેટલાય ગ્રંથો અપ્રકાશિત તૈયાર પડયા છે.

'રત્નજ્યોત' પત્રના તંત્રી છે અર્ધ માગધી શબ્દકોષમાના ભા ૪–૫મા તેમણે સારો સહયોગ આપેલો આજે પણ પરીક્ષક, લેખક અને પ્રોફેસર તરીકે સમાજને અને સંસ્થાઓને સારી સેવાઓ આપે છે

શ્રી કપૂરચંદ અમીચંદ કામદાર, ઉમર વર્ષ ૭૫

હાલ નિવૃત્ત. મુંબઇમા ઘીનો ધંધો કરતા સં ૦૦૭થી ગોંડળ સંઘના સંઘપતિ તરીકે કામ કરે છે.

શ્રી બચુભાઇ પોપટલાલ દોશી, રાણપુર

જન્મ બોટાદમાં તા. ૧-૩-૯૬માં પોપટલાલ છગનલાલ દોશીને ત્યા વીશા શ્રીમાળી સ્થાનકવાસી જૈન કુટુંબમાં થયો છે બી એ. સુધી અભ્યાસ કર્યો હાલ સ્થા. જૈન એજ્યુકેશન સોસાયટી, મુંબઇના મેનેજર છે.
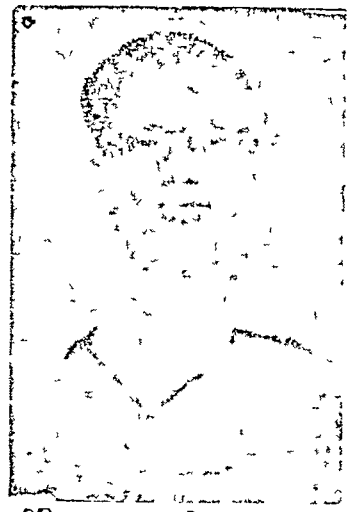
શ્રી બચુભાઇ પોપટલાલ દોશી, રાણપુર

સામાજિક તથા ધાર્મિક પ્રવૃત્તિઓ

શ્રી શ્વે. સ્થા. જૈન યુવક મંડળ, મુંબઇના માનદ્‌મંત્રી તરીકે સેવા આપી છે અને અત્યારે એ મંડળના કાર્યવાહક સભ્ય છે

શ્રી ભૂતપૂર્વ વિદ્યાર્થી સંયુક્ત વિદ્યાર્થી ગૃહના મંત્રી છે. શ્રી રાણપુર પ્રજામંડળ, મુંબઇના મંત્રી છે. બોટાદ પ્રજામંડળ, મુંબઇના કાર્યવાહક સભ્ય છે. શ્રી વર્દ્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક સંઘની લાયબ્રેરી કમિટીના સભ્ય તથા સૌરાષ્ટ્ર હૉસ્ટેલ, મુંબઇના માનદ્ ગૃહપતિ છે.

'જૈન જાગૃતિ' પાક્ષિકના માનદ્ તંત્રી છે.

મદ્રાસ કોન્ફરન્સ વખતે યુવક પરિષદના સંયોજક તરીકે અને સાદડી કોન્ફરન્સ વખતે પ્રચારમંત્રીની સેવા બજાવી હતી. આ રીતે શ્રી બચુભાઇ દોશી સમાજના ઉત્સાહી અને કર્તવ્યનિષ્ઠ યુવક કાર્યકર્તા છે.

સ્વ. શ્રી પુરુષોત્તમ માવજી પારેખ

શ્રી પુરુષોત્તમભાઇનો જન્મ રાજકોટના પારેખ કુટુમ્બમા સંવત ૧૯૧૯ની સાલમાં થયેલ હતો.

પોતે જન્મથીજ પ્રભાવશાળી, બુદ્ધિશાળી અને સંસ્કારી હોઇ, આલ્ફ્રેડ હાઇસ્કૂલ, રાજકોટમાં મેટ્રીકની પરીક્ષા સારા નંબરે ઉત્તીર્ણ કરેલ હતી. વિદ્યાર્થી જીવન દરેક રીતે દેદીપ્યમાન હોઇ, બધાનો પ્રેમ સંપાદન કરેલ હતો. ત્યાર બાદ ધારાશાસ્ત્રીની પરીક્ષા પસાર કરી સંવત ૧૯૪૩ની સાલમા રાજકોટમા વકીલાત શરૂ કરી

પવિત્ર આત્મા હોઇ, વકીલાતનો ધંધો ધમધોકાર ચાલતો હતો. માનવ તથા મૂગા પ્રાણીની તન, મન

અને ધનથી આજીવન સેવા કરી હતી. તેમને લક્ષ્મીનો મોહ હતો નહિ. પોતાનુ મનુષ્ય તરીકે કર્તવ્ય બજાવવાની અહોનિશ તાલાવેલી અને તમન્ના હતી અને એ પ્રમાણે કરી રહ્યા હતા. ધર્મ તરફ રુચિ દ્રઢ હતી અને પોતે એક સુશ્રાવક તરીકે જીવન જીવેલ હતા.

અત્રેના સ્થા. સંઘના સેક્રેટરી તરીકે અનુપમ સેવા કરી હતી.

મોરબી ખાતે પ્રથમ સ્થા. કોન્ફરન્સના અધિવેશન પ્રસંગે તેમનો ઘણો મોટો ફાળો હતો.

રાજકોટ મહાજનની પાંજરાપોળમા પોતે સેક્રેટરી તરીકે અદ્વિતીય સેવા આપી હતી.

ઉપરના બન્ને ખાતાંને વ્યવસ્થિત રીતે મૂકવામા એમની અસાધારણ તેજસ્વી બુદ્ધિએ ઘણો ફાળો આપ્યો હતો.

સંવત ૧૯૫૬ના દુષ્કાળમા માનવ તથા પશુઓને બચાવવા માટે અહોનિશ જે મહેનત અને શ્રમ ઉઠાવેલ તે ભુલાય તેમ નથી. ત્યાર પછીના દુષ્કાળોમાં ચારે તરફ ઘૂમીને અવિશ્રાંત સેવા આપેલ. આ દુષ્કાળોમાં સેવા અર્પવા બદલ સરકારે તેઓશ્રીને ‘રાવસાહેબ’નો ઇલ્કાબ આપવાની ઇચ્છા જાહેર કરી ત્યારે તેઓશ્રીએ તે જૂના જમાનામાં પણ ઇલ્કાબ સ્વીકારેલ નહોતો અને પોતે સેવા કરેલ તે કર્તવ્ય માટે કરેલ હતી એમ નમ્રભાવે કહેલ હતુ.

ત્યાર બાદ શ્રી દશા શ્રીમાળી અને વણિક જૈન વિદ્યાર્થી ભુવનનુ કામ હાથમાં લીધુ. સુંદર જમીનના વિશાળ પ્લોટો અને તેના ઉપર ભવ્ય મકાનો હાલ છે તે તેમના નિષ્કામ શ્રમને જ આભારી છે. આ સંસ્થાના તેઓ પ્રાણપિતા કહીએ તો ચાલે.

પોતે નિર્મોહી હતા. સ્વ. શ્રી દેવજી પ્રાગજી તથા સ્વ. શ્રી ત્રિભોવન પ્રાગજીની તે વખતની સારી મિલકતના તેઓ વારસદાર હતા, છતાં તે મોહમા ન પડતાં, બધી મિલકત સ્વ. શ્રી દેવજી પ્રાગજી તથા સ્વ. શ્રી ત્રિભોવન પ્રાગજી સ્થા જૈન બાળાશ્રમની સંસ્થા ઉઘાડી તેમાં અર્પણ કરાવી હતી.

આ સ્થા. બાળાશ્રમ પણ તેઓના અનેક કાર્યો પૈકીનુ એક સુંદર પ્રતિક છે. પોતાની જિંદગીનાં છેલ્લાં ૧૫ વર્ષ વકીલાત ન કરતાં સામાજિક સેવામાં પોતે પોતાનુ જીવન ગાળેલ હતુ.

ટૂંકામાં, છેલ્લા શ્વાસોચ્છ્વાસ સુધી તેઓ અનેકવિધ કલ્યાણકારી સેવા અર્પતા રહ્યા હતા. તેમનુ અવસાન સને ૧૯૨૯ માં થયું હતું.

દોશી વલ્લભાઇ લેરાભાઇ, સુરેન્દ્રનગર

દોશી વલ્લભભાઇ લેરાભાઇ, સુરેન્દ્રનગર

શ્રીયુત્ વલ્લભભાઇનો જન્મ સંવત ૧૯૪૨ ના શ્રાવણ માસમાં થયેલ છે. તેઓ રૂના નામાંકિત વેપારી છે અને હાલ નગીનદાસ હિંમતલાલ દોશીના નામથી સુરેન્દ્રનગર તથા ધ્રાંગધ્રામા પેઢીઓ ચાલે છે. તેઓ સુરેન્દ્રનગરમા આઠ કોટી સંપ્રદાયના આગેવાન છે અને સુરેન્દ્રનગર સંઘ હસ્તક ચાલતી સંસ્થાઓમા અગ્ર ભાગ લે છે. અત્રેની સ્થા. જૈન બોર્ડિંગના તેઓ સેક્રેટરી છે અને તેની પ્રગતિમા તેમનો નોંધપાત્ર ફાળો છે. આ ઉપરાંત કોન્ફરન્સના કાર્યમાં ઊંડો રસ ધરાવે છે અને હર વખત કોન્ફરન્સનું ડેપ્યુટેશન જ્યારે સૌરાષ્ટ્રના પ્રવાસે આવે છે ત્યારે ડેપ્યુટેશનના મેમ્બર તરીકે જોડાઇ કોન્ફરન્સના ડેપ્યુટેશન સાથે સૌરાષ્ટ્ર તથા કચ્છમા જઇને કોન્ફરન્સને સહકાર આપે છે.

મહાસુખલાલ જેઠાલાલ દેસાઇ

સરનામુ: ૨૭, ગુરુકુળ ચેમ્બર્સ, ઝવેરી બજાર, મુબઇ-૨
જન્મસ્થાન: ગોંડલ
જન્મ તારીખ: ઇ. સ. ૧૯૧૪.
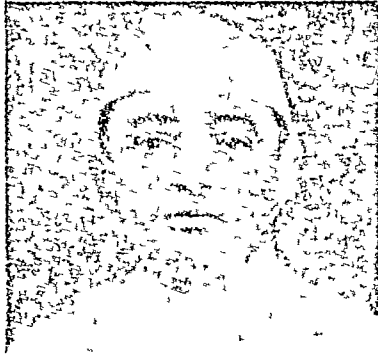
સામાજિક તથા ધાર્મિક પ્રવૃત્તિઓની વિગતો.

અ. ભા શ્વે સ્થા જૈન કોન્ફરન્સના મેનેજર અને જૈન પ્રકાશના સહતંત્રી તરીકે આઠ વર્ષ.

મહાસુખલાલ જેઠાલાલ દેસાઇ

અત્યારે તંત્રી, દશા શ્રીમાળી, તંત્રી, જૈન જાગૃતિ.

મુબઇની સામાજિક અને ધાર્મિક સસ્થા સાથે સકળાયેલ.

ઘડિયાળી ન્યાલચદ અબાવીદાસ સુરેન્દ્રનગર

તેઓ મળ થાનગઢના વતની છે અને દોઢીવાળા કુટુબમા સવત ૧૯૪૫ના વૈશાખ માસમાં તેમનો જન્મ થયેલ છે. તેઓએ ઘડિયાળ રીપેરના કામની શરૂઆત કરી છેલ્લા ૪૮ વરસ થયા ઘડિયાળ- ગ્રામોફોન- ચશ્મા, રેડિયો, રેકોર્ડો વગેરેની મોટી દુકાન ચલાવે છે તેઓ છેલ્લાં ૧૨ વરસથયાં દુકાનનો વહીવટ તેમના પુત્રોને સોંપીને નિવૃત્ત જીવન ગાળે છે અને નિવૃત્ત જીવનનો ઉપયોગ સઘની સેવામા તેમ જ બીજી સસ્થાઓની સેવામા કરે છે સુરેન્દ્રનગરના સઘ હસ્તક ચાલતી સસ્થાઓમા તેઓ અગ્રભાગ લે છે અને લીબડી મોટા ઉપાશ્રયના સુરેન્દ્રનગરના વહીવટમાં તેઓ મુખ્યત્વે પોતાની સેવા આપે છે. કોન્ફરન્સના ડેપ્યુટેશનમા દરેક પ્રસગે પોતે જોડાઇને ડેપ્યુટેશનના સભ્ય તરીકે સૌરાષ્ટ્ર તથા કચ્છમા ગયેલા હતા. તેઓ સુરેન્દ્રનગરની મ્યુનિસિપાલિટીના સભ્ય છે તેમ જ અત્રેના હિંદુ અનાથાશ્રમની સમિતિના સભ્ય છે. વિનમ્ર, સેવાભાવી અને ઉદાર ધર્મપ્રેમી છે.
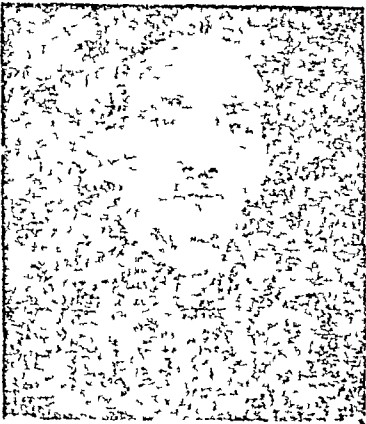
ઘડિયાળી ન્યાલચંદ અંબાવીદાસ, સુરેન્દ્રનગર

શ્રી રતિલાલ ભાઇચદ ગોડા

જન્મ: સવત ૧૯૫૮ના આસો સુદ ૩, તા. ૪-૧૦-૧૯૦૨, બી. એ., એલએમ. બી પાસ સને ૧૯૨૮, વકીલાતની શરૂઆત સને ૧૯૨૮ થી અત્યાર સુધી.

શ્રી રતિલાલ ભાઇચંદ ગોડા

ધાર્મિક પ્રવૃત્તિઓ

૧ શ્રી જૈન બોર્ડિંગના મત્રી સને ૧૯૩૬થી.
૨ શ્રી જૈન દવાશાળા, મત્રી સને ૧૯૪૫થી.
૩ શ્રી ડુંગરસિંહજીસ્વામી, જૈન પુસ્તકાલયના ઉપ-પ્ર
૪ શ્રી ગોંડળ જૈનશાળા-મત્રી.
૫ શ્રી ગોડળ સઘ-મત્રી સવત ૨૦૦૫થી
૬ શ્રી વડિયા જૈન વિદ્યાલય-મત્રી
૭ શ્રી ગોડળ સપ્રદાય શ્રાવક સમિતિ-મત્રી.
૮ શ્રી સૌરાષ્ટ્રવીર શ્રાવક સઘ વિલીનીકરણ સમિતિ-મંત્રી.

અન્ય પ્રવૃત્તિઓ

૧ ચેરમેન-ગોડળ મ્યુનિસિપાલીટી.
૨ મત્રી-શ્રી ગોડળ કોંગ્રેસ તાલુકા સમિતિ.

ડૉ. એન. કે. ગાંધી, રાજકોટ

શ્રી નેમચંદ કુવરજી ગાંધીની જન્મભૂમિ મેંદરડા નાનપણથી ધર્મના સસ્કારો અને જૈન ધર્મનું શિક્ષણ મેળવવાનો શોખ. રાજકોટમાં મેટ્રિક થયા બાદ અમદાવાદમા એલ. સી. પી. એસ. અને મુંબઇમા એમ. સી પી એસ. થયા. (સન ૧૯૨૬મા સરકારી નોકરી સાથે) સને ૧૯૨૮-૩૦માં મેડિકલ સ્કૂલમાં બેકટેરીઓલોજી અને પેથોલોજીના ટયૂટર હતા. મેડિકલ ઓફિસર તરીકે પાથર્ડીમા પણ રહેવાનુ થયુ.

ડૉ. એન. કે. ગાધી, રાજકોટ

મુનિશ્રી જીવણજી મહારાજ, પૂજ્ય હાથીજી મ., પુરુષોત્તમજી મ., અને ઘણા મુનિઓના પરિચયમા રહી ધાર્મિક પુસ્તકો અને આગમોનુ જ્ઞાન મેળવ્યુ છે. પૂજ્યશ્રી અમોલખઋષિજી અનુવાદિત ૩૨ સૂત્રો ઉપરાંત અધ્યાત્મકલ્પદ્રુમ, મુક્તિ સોપાન, પરમાત્મ માર્ગદર્શક, પ્રવચનસાર, સમકિતસાર, સમયસાર તત્ત્વાર્થ સૂત્ર, ષટખડાગમ અને કથા ગ્રથો વાંચ્યા, વિચાર્યા, અને નોંધ કરી છે. સમ્યગ્દર્શન અને અધ્યાત્મજ્ઞાન એમના પ્રિય વિષયો છે. આ સંબધે જૈન પ્રકાશ, જૈન સિદ્ધાંત ઇ. પત્રોમા તેઓ સારા લેખકનુ સ્થાન સાચવે છે

ગ્રથો વાચવા, સારાંશ લખવો, એમાથી તારવણી કરી નોંધ-કરવી આ રીતે તેઓ દૂધમાથી માખણ અને માખણમાથી ઘીવત્ ગ્રથોનો સાર ખેંચી નોંધ રાખે છે.

સન ૧૯૫૧ થી રાજકોટ, પ્રહ્લાદ પ્લૉટમાં નેમ-નિવાસ બનાવી સ્થિર થયા છે.

શ્રી હરગોવિંદભાઇ જેચંદભાઇ કોઠારી, રાજકોટ.

ધાર્મિક વૃત્તિના આદર્શ ત્યાગી શ્રાવક જેચંદભાઇ કોઠારી જેઓ ૩૫ વર્ષથી અનાજ લેતા નથી. દૂધ છાશ અને ફળના રસ ઉપર જ રહે છે. ઉ. વ ૯૬ની છે. તેમના નિર્ભિક પુત્ર હરગોવિંદભાઇ જેઓ 'કાકા'ના નામે પ્રસિદ્ધ છે, તેમનો જન્મ સ. ૧૯૪૪ના કારતક વદ ૮ને મગળવારે થયો હતો. યોગ્ય ઉમ્મરે પહોંચતા જ તા. ૪-૪-૧૯૦૬ થી પોલીસખાતામા ઓફિસર તરીકે દાખલ થયા કારકિર્દીપૂર્વક કર્તવ્ય બજાવી તા ૨૫-૭-'૩૮ થી રીટાયર થઇ પેન્શન પર ઉતર્યા છે. ચા, પાન કે બીડી જેવુ પણ એમને વ્યસન નથી. તેમને બે પુત્રો છે. નિવૃત્ત થયા પછી જુદા જુદા રજવાડામાં સલાહકાર તરીકે કાર્ય કરતા. ધર્મના સસ્કાર દૃઢ હોવાથી સ. ૧૯૯૨માં ૫૦૦ માણસ બેસી શકે એવી પોષધશાળા બનાવી અને સ. ૨૦૦૨માં ૪-૫ હજાર શ્રોતા બેસી શકે એવો વ્યાખ્યાન તેઓ હોલ બનાવ્યો સાધુ-સાધ્વીઓ તથા સઘની યથાશક્ય સેવા કરે છે. અ. ભા શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિના મત્રી રહ્યા અને રૂ. ૫,૦૦૦) દાન પણ આપ્યું. આ ઉપરાંત વિભિન્ન સંસ્થાઓમા પણ રૂ. ૭,૦૦૦ અર્પણ કર્યા છે. દર વર્ષે યથાશક્તિ દાન કરે છે.

જીવદયા પ્રત્યે એમને સારો પ્રેમ છે. જીવદયાના પ્રખર કાર્યકર્તા મુનિ જેઠમલજી મ. ને પડખે સદા ઊભા રહી કાર્ય કરે છે. જીવદયા માટે સભાઓ ભરવી, અને આદોલન ચલાવવુ, લેખો લખવા અને એને અગે રૂ. મેળવવા, ખર્ચવા વગેરે જીવનકાર્ય છે. જીવદયા મડળની પત્રિકા પણ ચલાવે છે. જે કાર્ય હાથમા લે છે તે પૂરુ પાડવામા દૃઢ છે.

સ્વ. શ્રી. ગિરધરલાલ શોભાગચંદ શેઠ. મોરબી

જન્મ ઇ. સ. ૧૮૬૭, સ્વર્ગવાસ ઇ. સ ૧૯૪૨. કોન્ફરન્સનુ પહેલુ અધિવેશન મોરબીમા ભરાયુ ત્યારે તેઓ આમત્રણ આપવા માટે પજાબ વગેરે પ્રાંતોમાં ગયા હતા તથા ઓફિસમા પણ કામ કર્યુ હતુ. તે ઉપરંત મોરબી કોન્ફરન્સમાં તેમણે જોઇંટ સેક્રેટરી તરીકે કામ કર્યુ હતુ અને કોન્ફરન્સની સફળતા માટે ખૂબ રસ લીધો હતો. તેઓએ મોરબી સ્ટેટમાં એકાઉન્ટસ ઓફિસર તરીકે ઘણાં વર્ષો કામ કર્યુ હતુ. તેમનામા ધર્મની ઊડી ભાવના હતી. નિવૃત્ત જીવનમા તેઓ આખો ય દિવસ સ્વાધ્યાય, સૂત્રવાંચન. ધર્મચર્ચા વગેરેમાં જ ગાળતા. છેલ્લાં કેટલા ય વર્ષો સસારમાં રહીને પણ સસારથી વિરક્ત એવુ જીવન તેઓ વ્યતીત કરતા હતા ફક્ત ૨૪ કલાકની માંદગીમાં તેમનો મોરબીમા સ્વર્ગવાસ થયો.

શ્રી નગીનદાસ ગિરધરલાલ શેઠ, મુંબઈ

જન્મ સને ૧૮૯૧. રહેવાસી મોરબી-સૌરાષ્ટ્ર. તેઓ ઇન્ડો-યુરોપ ટ્રેડિંગ કંપની, મુંબઈ તથા દિલ્હીના સંસ્થાપક તથા ભાગીદાર છે કોન્ફરન્સની શરૂઆતથી તેમણે તેમા રસપૂર્વક ભાગ લીધો છે. મોરબીની પહેલી કોન્ફરન્સમા તેમણે વોલન્ટિયર તરીકે કામ કરેલુ હતુ. અજમેર કોન્ફરન્સમા પણ વોલન્ટિયર તરીકે ભાગ લીધો હતો સ્થાનકવાસી જૈન સમાજના ઉત્કર્ષ માટે તેમણે સને ૧૯૪૫ માં "જૈન સિદ્ધાંત સભા" મુંબઈમા સ્થાપન કરી છે, જેની દ્વારા "જૈન સિદ્ધાંત" નામનુ માસિક પત્ર નિયમિત નીકળે છે તથા ધાર્મિક પુસ્તકોનુ પ્રકાશન થાય છે અત્યાર સુધીમા આ સસ્થાએ ઉચ્ચ શ્રેણીના સત્તર પુસ્તકો પ્રકાશિત કર્યા છે. તેમણે પોતે પણ પ્રાતસ્મરણ ભાગ ૧–૨, જૈન સૂત્રો, ઇતિહાસ અને સમીક્ષા સંપાદિત કર્યા છે અને સમાન હક્ક નામની બોધક નવલકથા લખી છે અત્યારે ૬૫ વર્ષની ઉમરે પણ તેઓ સાહિત્યિક પ્રવૃત્તિ ઉત્સાહપૂર્વક કરી રહ્યા છે.

શ્રી કેશવલાલ હરિચંદ મોદી, દામનગર

શ્રી કે. હ. મોદી દામનગર (સૌરાષ્ટ્ર)ના વતની છે. હાલ સાબરમતી (અમદાવાદ)માં રહે છે.

શ્રી. કેશવલાલ હરિચંદ મોદી

પોતે ખૂબ ધર્મપ્રેમી અને આધ્યાત્મિક-વૃત્તિના શ્રાવક છે. તેમનાં પત્ની અ. સૌ. વૃજકુંવરબાઇ પણ ધાર્મિક વૃત્તિના અને તપસ્વી હોવાથી કુટુંબના સંસ્કારો પણ ધાર્મિક અને નૈતિક છે તેઓશ્રી પ્રકૃતિથી જ ભજનો બનાવવા તથા ગાવાનો શોખ ધરાવે છે. દિલના ઉદાર છે દામનગરમાં અને સાબરમતીમાં મુનિવરોના ચાતુર્માસ કરાવી હજારો રૂપિયા ખર્ચે છે. પોતે ધર્મધ્યાન કરે છે અને મુનિવરોની સેવા પણ કરે છે.

વિદ્વાન મુનિરાજો રચિત સાહિત્ય પ્રકાશન કરવામા, આગમો અને પુસ્તકો વહોરાવવામા, સ્વધર્મિઓની સહાયતા કરવામા ધાર્મિક પુસ્તકોની પ્રભાવના કરવામાં તેમ જ વિદ્યાર્થીઓને અને જ્ઞાન સસ્થાઓને મદદ કરવામાં તેઓ હજારો રૂપિયા ઉદાર હાથે ખર્ચે છે.

સ્વાધ્યાય માટે ધાર્મિક–આધ્યાત્મિક પુસ્તકો પ્રકટ કરી ઉદાર હાથે પ્રભાવના કરે છે.

દામનગરમા સેવા સમિતિ સ. ૧૯૪૩ શરૂ કરી તે આજ સુધી સારી રીતે ચલાવી રહ્યા છે. ઉત્તમચંદ મોરારજી સાર્વજનિક દવાખાનુ, અમરેલી જૈન બોર્ડિંગ, બોટાદ સ્થા જૈન બોર્ડિંગ, જલગાવ–ઓસવાલ જૈન બોર્ડિંગ, મુંબઈ દશા શ્રીમાળી સસ્તા ભાડાની ચાલી, ચિત્તોડ ચતુર્થ વૃદ્ધાશ્રમ, સહાયતા ફડો વગેરે સુધી તેમનુ દાન પહોચ્યુ છે. દામનગર અને અમદાવાદ ખાતે તેમનો દાનપ્રવાહ ચાલુ હોય છે. કેટલીક સસ્થાઓને વાર્ષિક સહાયતાઓ પણ આપે છે.

કોન્ફરન્સની સંઘ. ઐક્ય યોજનોમા પણ મુનિરાજોને સમજાવી, વિનવી સમ્મિલિત કરવામાં વખતોવખત સાથ આપે છે. શ્રદ્ધા–ભક્તિભર્યુ આદર્શ શ્રાવક જીવન ગાળે છે.

શ્રી મગનલાલ મોતીચંદ શાહ 'સાહિત્યપ્રેમી' સુરેન્દ્રનગર

તેમનુ જન્મસ્થાન લીબડી તાબાનુ ગામ રમોલ છે, પરતુ ઘણાં વર્ષોથી સુરેન્દ્રનગરમા રહે છે. તેઓએ ઉચ્ચ કેળવણી પ્રાપ્ત કરી છે. સસ્કૃતના પણ સારા વિદ્વાન છે તેઓએ મુંબઈમાં ૩૪ વર્ષો સુધી કેળવણી ક્ષેત્રે સેવાઓ આપી છે. છેલ્લે તેઓ મુંબઈની ભૂલેશ્વર સ્કૂલમા હેડમાસ્તર હતા
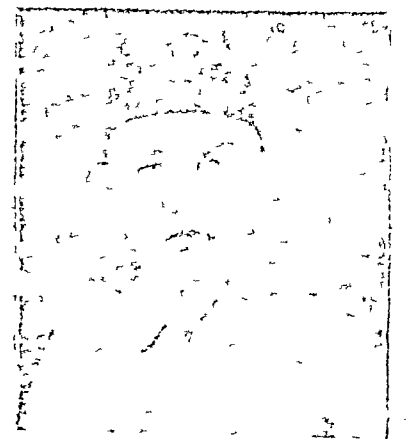
શ્રી મગનલાલ મોતીચંદ શાહ 'સાહિત્યપ્રેમી', સુરેન્દ્રનગર

મુંબઈના વસવાટ દરમિયાન તેમણે ઘણી સેવાઓ બજાવી છે. શ્રી. ઝાલાવાડી સ્થા. જૈન સભાના તેઓ માનદ્ મંત્રી

હતા. શ્રી. રત્નચિંતામણિ સ્થા. જૈન મંડળની શાળાઓમાં ત્રણ વર્ષ ધાર્મિક શિક્ષણ આપ્યું હતુ. મુબઇમા ભરાયેલ કોન્ફરન્સના અધિવેશનમા અગ્ર ભાગ લીધો હતો.

તેમની સાહિત્યપ્રવૃત્તિ પણ નોંધપાત્ર છે. સ્વ. શતાવધાની મહારાજશ્રી રત્નચંદ્રજી મ. ના અવધાનોનુ પુસ્તક તથા તેમના લેખો અને ભાષણોનો સગ્રહ પ્રસિદ્ધ કર્યો છે સ્વ. શ્રી નાગજીસ્વામીનુ જીવનચરિત્ર પણ તેમણે લખી પ્રસિદ્ધ કર્યું છે. તેમણે શ્રી રત્નચંદ્રજી મ. ના સુપ્રસિદ્ધ "ભાવનાશતક"નો પદ્યાનુવાદ, સ્યાદ્વાદ મંજરી, અયોગ વ્યવચ્છેદિકા, ન્યાયખંડ આર્યા આદિનો સમશ્લોકી અનુવાદ અને તે ઉપરાત ભક્તામર, કલ્યાણ મંદિર, કિંકપૂરમય, રત્નાકર પચીશી, સવેગભાવના વગેરેના અનુવાદો કર્યા છે તદુપરાંત જૈન પત્રોમાં પણ તેઓ સૈદ્ધાંતિક લેખો લખે છે. શ્રી જૈન સિદ્ધાંત માસિક તરફથી બહાર પાડવામા આવેલી લેખોની હરીફાઇઓમા તેઓ પહેલે નંબરે આવતા રહ્યા છે.

શ. ૫. રત્ન જૈન જ્ઞાનમંદિરના ઉપપ્રમુખ તરીકે તેમણે સુંદર સેવાઓ આપી છે. આ સસ્થાના પ્રારભ-કાળથી જ તેઓ તે સસ્થાને સેવા આપી રહ્યા છે. સુરેન્દ્રનગરની સ્થા. જૈન બોર્ડિંગ તથા સઘ તરફથી ચાલતી જૈન શાળા, કન્યાશાળા, પુસ્તકાલય વગેરેની સેવા પણ બજાવી રહ્યા છે.

શ્રી ભીખાલાલ ગિરધરલાલ શેઠ

તેઓ મોરબી, સૌરાષ્ટ્રના રહેવાસી છે. હાલમાં તેઓ વ્યવસાયાર્થે દિલ્હીમા રહે છે. તેઓ યુરેસિયા ટ્રેડીંગ કંપની, દિલ્હીના માલિક છે. કોન્ફરન્સનુ કેન્દ્રીય કાર્યાલય જ્યારથી દિલ્હીમાં આવ્યુ ત્યારથી તેઓ માનદ્ મંત્રી તરીકે કામ કરતા રહ્યા છે. અત્યારે તેઓ મેનેજિંગ કમિટીના સભ્ય છે. જૈન પ્રકાશના માનદ્ સંપાદક તરીકે પણ તેમણે કામ કર્યું છે. દિલ્હીમાં પૂ. ખૂબચંદજી મહારાજ અસ્વસ્થ તબિયતને કારણે લગભગ ચાર વર્ષ બિરાજમાન હતા, ત્યારે તેમની પાસેથી તેમને સૂત્રાભ્યાસનો સારો લાભ મળ્યો હતો. મૂળથી જ સ્થા. જૈન ધર્મની ઊંડી શ્રદ્ધા ધરાવે છે. જૈન સિદ્ધાંત સભા, મુબઇના તેઓ વાઇસ પ્રેસિડેન્ટ છે. તેમણે જૈન સિદ્ધાંત બોલ સગ્રહ ભા. ૧-૨-૩, અહિંસા દર્શન, સત્ય દર્શન, પ્રતિક્રમણ સૂત્ર ભા. ૧ વગેરે હિંદીમાંથી ગુજરાતી ભાષામા અનુવાદ કરેલા છે અને વીર વાણી ભા. ૧-૨, પ્રતિક્રમણ સૂત્ર ટીકા અને વિવેચન સહિત સંપાદિત કરેલા છે. હજુ પણ તેમની સાહિત્યિક પ્રવૃત્તિ ચાલુ છે.

શ્રી ભીખાલાલ ગિરધરલાલ શેઠ, દિલ્હી

શ્રી શેઠ સોમચંદભાઇ તુલસીદાસ મહેતા, રતલામ

એમની જન્મભૂમિ રાજકોટ (સૌરાષ્ટ્ર) છે સ. ૧૯૬૬મા કોન્ફરન્સ તરફથી રતલામમા શરૂ થયેલ જૈન ટ્રેનિંગ કોલેજમાં તેઓ દાખલ થયા હતા. કોલેજમા ધાર્મિક અને વ્યવહારિક શિક્ષણ લઇને તેઓ યોગ્ય સ્નાતક થયા. તેમનુ ચારિત્ર્ય અને ધાર્મિક ભાવના પ્રશસનીય છે.

અભ્યાસ કર્યા પછી તેમણે સૌરાષ્ટ્રની જૈન શાળા-ઓમા ધાર્મિક શિક્ષણ આપવાની પવિત્ર પ્રવૃત્તિઓ કરી. આજે પણ તેઓનુ પ્રતિક્રમણ રસમય અને શ્રાવ્ય હોય છે. ધર્મભાવના, સાધુ-સાધ્વીઓની ભક્તિ, તપોમય જીવન અને ઉદારતા એમની વૃદ્ધાવસ્થામાં પણ આદર્શ શ્રાવકને શોભાવે તેવી છે.

સાધુ સમ્મેલન અને સઘ-ઐક્યના ડેપ્યુટેશનોમા વૃદ્ધ છતા ઉત્સાહભર્યો ભાગ લે છે. ભાઇઓ બહેનોને જરૂર પ્રમાણે તેઓ ગુપ્ત સહાયતા પણ પહોંચાડે છે. તેમનાં ધર્મપત્ની સૌ. મણિબહેન પણ સુશિક્ષિત, સુસંસ્કારી, ધર્મપ્રેમી અને ઉદાર સેવાભાવી હોવાથી પ્રત્યેક સત્પ્રવૃત્તિમા સાથ આપે છે.

બર્મા ગેસ કં.ની એજન્સી હોવાથી તેમાં તેમણે સારી અર્થપ્રાપ્તિ કરી છે. પોતાના ધાન મંડીના મકાનમા નિવૃત્તિપરાયણ આદર્શ શ્રાવકનુ જીવન વિતાવે છે

શેઠ નરભેરામ ઝવેરચંદ
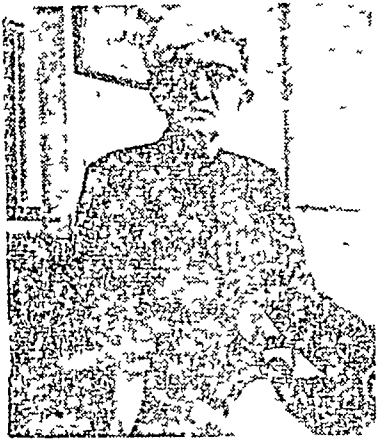
જામનગરમા અઢાર વરસની ઉમ્મરે મેટ્રિક સુધી અભ્યાસ કરી સદ્‌ગત મહારાજા જામશ્રી જસાજી સાહેબના મોઢીરાણી શ્રી સાહેબના કામદાર તરીકે કામ કર્યુ. ત્યાર બાદ મર્હૂમ જામસાહેબ જસાજી સાહેબનો સ્વર્ગવાસ થયા પછી કલકત્તા ગયા અને ત્યા બે વરસ નોકરી કરી ત્યાર બાદ દલાલી શરૂ કરી. અને દલાલી છોડી સ્વતંત્ર ધધો સંવત ૧૯૭૧થી કમિશન એજન્ટ તરીકે કર્યો.

શેઠ નરભેરામ ઝવેરચંદ

ત્યાર બાદ નિવૃત્ત થઇ જામનગરમા હરિજન પ્રવૃત્તિમા તથા ખોરાકી વહેચણીમા કામ કર્યુ.

તેઓ દિલના ઉદાર છે તથા મોટી સખાવતો કરેલી છે. જેવી કે, રૂા. ૨,૦૦૦ કુસ્તુરબાઇ નરભેરામકુમાર બાળમંદિરમાં, રૂા. ૫,૦૦૦ જ્ઞાતિ સહાયતા ફંડમા, રૂા. ૨,૦૦૦ અયબીલ ખાતામાં તથા રૂા. ૧,૦૦ સ્થાયી કેળવણી ફંડમાં વગેરેમા આપેલ છે.

શ્રી જામનગર પાંજરાપોળનું આઠ વરસ પ્રેસિડેન્ટ રહી કામ કર્યુ તેમ જ શ્રી જામનગર વીશા શ્રીમાળી સ્થાનકવાસી જ્ઞાતિના પ્રેસિડેન્ટ તરીકે તથા શ્રી ડુંગરજી-સ્વામી પુસ્તકાલયના પ્રેસિડન્ટ તરીકે ચાલુ છે. તેમ જ શ્રી સ્થાનકવાસી સઘની તેમ જ શ્રીમાન પૂજ્ય સાધુ મહારાજો તેમ જ શ્રી આર્યાજીની શક્તિ અનુસાર સેવા કરી છે તેમ જ શ્રી માનસગ મગળજી વીશા શ્રીમાળી જૈન બોર્ડિંગના ટ્રસ્ટી તથા પ્રમુખપણે ચાલુ કામ થાય છે, તેમ જ આ સિવાય પબ્લિક તથા શ્રી ધર્મના બીજા નાના-મોટા કામોમાં સેવા આપી છે અને હજુ ચાલુ છે.

શેઠ શ્રી. પડધરીવાળા પોપટલાલ કાલિદાસ પાસવીર પટેલ

શ્રીમાન્ પોપટલાલ કાલીદાસ પાસવીર પટેલ પડધરીમા ઘણા જ માયાળુ, ધર્મપ્રેમી સેવાભાવી હોવાથી સમાજના દરેક ધર્મકાર્યમા મોખરે રહે છે.

અહીયાં સ્થાનકમા પોતાના પિતાશ્રીના નામથી રૂા ૨,૦૦૦ બે હજારની રકમ આપેલ છે.

રૂા. ૨,૫૦૦ જામનગર શ્રી વીશા શ્રીમાળી જૈન વણિક બોર્ડિંગમાં પણ સારી રકમની સખાવત આપેલ છે પોતે મેનેજિંગ ટ્રસ્ટી પણ છે.

રૂા ૨,૦૦૦) શ્રી પડધરીમાં શ્રી વીશા શ્રીમાળી વંડી જગ્યા માટે પણ આપેલ છે.

તે ઉપરાત પાંજરાપોળની સેવા સારી બજાવે છે. પડધરી સઘના પ્રમુખ તરીકે સારી સેવા બજાવે છે. સાદડી અધિવેશન વખતે પોતે પોતાના ખર્ચે અહીના કેટલાક ભાઇઓને સાથે લાવી ધર્મપ્રચાર કરેલ હતો.

આખા કુટુબમાં ધર્મપ્રેમ અને સેવા સમાયેલી છે.

સ્વ. વ્રજલાલ ખીમચંદ શાહ, સોલિસિટર મુંબઇ

સ્વ. વ્રજલાલ ખીમચંદ શાહ, સોલિસિટર મુંબઇ

શ્રી વ્રજલાલભાઇનો જન્મ લીંબડીમાં સ. ૧૯૩૩માં થયો હતો. તેમની મુબઇમા સોલિસિટરની પેઢી હતી તેઓ પોતાના વ્યવસાયમાં ઘણા જ રોકાયેલ રહેવા છતાં પણ સામાજિક કાર્યોમાં ભાગ લેતા હતા. તેઓ વર્ષો સુધી કોન્ફરન્સના રેસિડેન્ટ જનરલ સેક્રેટરીપદે રહ્યા હતા. તે

ઉપરાંત શ્રી શ્વે. સ્થા. જૈન સકળ સઘ, શ્રી ઝાલાવાડ સ્થા. જૈન સભા, શ્રી શ્વે. સ્થા. જૈન સઘ, ચીચપોકલી આદિ સંસ્થાઓના કાર્યકર્તા તથા પ્રેરણાદાતા હતા. ચીચપોકલીમા ગરીબ બધુઓ માટે મકાન બનાવવામા તેમણે પોતાની ખૂબ જ શક્તિ વાપરી હતી

સ. ૨૦૦૪મા તેઓશ્રીનો સ્વર્ગવાસ થયો.

શ્રી તુલસીદાસ મોનજી વોરા, માંગરોળ

તેમનો જન્મ સં. ૧૯૨૮માં માગરોળમા થયો હતો. નાનપણમાં જ ધધાર્થે તેમને મુબઇ જવુ પડયુ. ત્યાં જઇ તેમણે પોતાના વ્યાપારનો પ્રારભ કર્યો અને હસરાજ કુ.ના નામથી દલાલીનુ કામ શરૂ કર્યું. તેમા તેમને સારી કમાણી થઇ તેમણે પોતાના જીવનમા ગુપ્ત રીતે તથા કોઇપણ જાતના ભેદભાવ વિના હજારો રૂપિયાનુ દાન કર્યું.

માગરોળમા તેમણે પોતાનાં ધર્મપત્ની શ્રીમતી ગગાબાઇના સ્મરણાર્થે શ્રી માંગરોળ શ્રીમાળી વણિક દવાખાના માટે રૂા. ૨૫,૦૦૦)નુ દાન કર્યુ. તુલસી ટાવર પણ બનાવ્યુ. ઉચ્ચ શિક્ષણ લેનાર છાત્રોને તેમણે શિષ્યવૃત્તિ આપી તેઓના જીવન ઉન્નત બનાવવામાં સહયોગ આપ્યો છે તેઓ કેટલીયે સસ્થાઓના સ્થભ હતા. કોન્ફરન્સના આજીવન સદસ્ય હતા મુબઇ સ્થા. જૈન સઘના ઉપ-પ્રમુખ તથા અન્ય કેટલી ય સસ્થાઓના પ્રમુખ હતા. સ. ૧૯૭૮માં દુકાળના સમયે માગરોળમાં સસ્તા ભાવે અનાજ આપવાની દુકાન ખોલી હતી અને તેમા તેમનો મુખ્ય હાથ હતો

મુંબઇમાં મુસલમાનો માટે પણ સસ્તા ભાવે અનાજ આપવાની વ્યવસ્થા કરાવી હતી એ મ તેઓ ગરીબોના દુ ખ દૂર કરવાના ખૂબ જ પ્રયત્નો કરતા હતા.

તા. ૧૪-૭-૧૯૨૬ના રોજ તેઓ સ્વર્ગવાસ પામ્યા.

શ્રી જગજીવનદાસ ગિરધરલાલ અજમેરા

અજમેરા કોમ, અજમેરમા રહેતી હતી એમ કહેવાય છે. પાછળથી વ્યાપારાર્થે ગમે ત્યાં જઇ વસી. શ્રી જગજીવનદાસનુ કુટુ બ લગભગ ૨૫૦ વર્ષથી સૌરાષ્ટ્રમા જઇને વસ્યુ હતુ. તેમનો જન્મ ઘેલાશાના બગ્વાળામાં સં. ૧૯૪૮ ના શ્રાવણ સુદિ પૂનમના દિવસે થયો હતો. તેમના પિતશ્રીનુ નામ ગિરધરલાલ તથા માતુશ્રીનુ નામ મોંઘીબાઇ હતુ.

માત્ર ૫૬ર વર્ષની ઉમરમાં જ માતપિતા ગુજરી જવાથી વ્યાપારાર્થે તેઓ મુંબઇ આવ્યા. શરૂઆતમાં નોકરી કરી, પછી, મશીનરીની સ્વતત્ર દુકાન કરી તેમા તેમણે સારુ દ્રવ્ય ઉપાર્જન કર્યું.

તેમનો અનુભવ વિશાળ છે. તેઓની રહેણીકરણી સાદી અને ચહેરો હસમુખો તથા તેઓ ખાદીધારી છે.

સાધુ–સતોની સેવા તેમને ઘણી પ્રિય છે સામાજિક કાર્યોમા પણ તેઓ ઘણો જ રસ લે છે.

બ્યાવર ગુરુકુલના ૧૭ મા વાર્ષિકોત્સવ વખતે તેઓશ્રી અધ્યક્ષ હતા વખતોવખત સત્કાર્યોમા ઉદારતાપૂર્વક આર્થિક સહાય આપવામાં પણ તેઓ પાછા પડતા નથી.

શ્રી આત્મારામ મોહનલાલ, કલોલ

શ્રી આત્મારામભાઇનો જન્મ સ. ૧૯૪૭ મા અમદાવાદ નજીક કલોલ ગામે થયો હતો. તેમના પિતાશ્રીનુ નામ શ્રી મોહનલાલ જેઠાભાઇ હતુ.

તેમણે શરૂઆતથી જ પોતાનો ધીરધારનો આપીકો ધધો કર્યો. સ. ૧૯૫૮માં અનાજનો ધધો પણ શરૂ કર્યો. આ વ્યવસાયમા તેમને ધન અને કીર્તિ બન્નેની પ્રાપ્તિ થઇ સ. ૧૯૭૬માં તેમણે કમિશન એજન્ટ તથા વેપારની દુકાન કરી જે આજે પણ ચાલુ છે જેમ જેમ સગવડતા વધતી ગઇ તેમ તેમ તેઓ ધધો વધારતા ગયા. સ. ૧૯૭૯મા તેમણે જેઠાભાઇ મુળચદના નામથી અમદાવાદમા શરાફી તથા કમિશન એજન્ટની દુકાન કરી. તેનું કાર્ય તેમના નાના ભાઇ રમણલાલભાઇ કરે છે. સ ૧૯૯૨મા તેમણે તૈયાર રૂનો વેપાર શરૂ કર્યો. તેમા તેમને ખૂબ સફળતા સાંપડી.

સ. ૧૯૯૮મા કડીમાં તેમણે 'ધી કડી જીનિગ ફેક્ટરી' ખરીદ કરી. તેઓ પોતે કલોલમાં જ રહે છે અને ત્યાંના જ વ્યાપાર ઉપર ધ્યાન આપે છે બીજી જગાઓના ધધા તેમના બન્ને નાના ભાઇઓ સભાળે છે.

તેઓ ધાર્મિક મનોવૃત્તિવાળા તથા સાદાઇપ્રિય સજ્જન છે અવારનવાર ધાર્મિક કાર્યોમા તેઓ પોતાની ઉદારતાનો પરિચય કરાવતા રહે છે. કલોલના શ્રી દરિયાપુરી સ્થા. જૈન સઘને રૂા. ૧૦,૦૦૦) આપી શેઠ મોહનલાલ જેઠાભાઇ સ્થા જૈન પાઠશાળા શરૂ કરાવી છે. જૈન ગુરુકુળ બ્યાવરના ૨૨મા વાર્ષિકોત્સવના તેઓ પ્રમુખ હતા

શ્રી નટવરલાલ કપુરચંદ શાહ, મુંબઇ

શ્રી જૈન ગુરુકુળ, બ્યાવરના સુયોગ્ય સ્નાતક છે. "આગમ મનીષી" હોવાની સાથે સાથે તેઓ ગ્રેજ્યુએટ પણ છે શ્રી જૈન ગુરુકુળ, બ્યાવર તથા શ્રી અ. ભા શ્વે. સ્થા જૈન કોન્ફરન્સની વર્ષો સુધી તેમણે સેવા કરી છે. જૈન પ્રકાશના સંપાદક તથા જૈન પટ્ટાવલિના લેખક તરીકેની તેમની સેવાઓ ગણનાપાત્ર છે. ત્યાર બાદ વેપારમા જોડાઇ એક વેપારી તરીકે પણ સફળતા પ્રાપ્ત કરી છે. બાડિયા એન્ડ, મુંબઇ તથા આર વી દુર્લભજી ઝવેરી, જયપુર અને મુંબઇમાં વર્ષો સુધી કામ કરી આજે 'શાહ બ્રધર્સ'ના નામે મુંબઇમા પેટ્રોમેક્સ અને પ્રાયમસ વિ વસ્તુઓની ૩-૪ દુકાનો ચલાવી રહ્યા છે.

શ્રી નટવરલાલ કપુરચંદ શાહ, મુંબઇ

સામાજિક અને ધાર્મિક ક્ષેત્રમા તેઓ સુપરિચિત વિદ્વાન, કાર્યકર્તા છે જો તેઓ વેપારમા ન પડ્યા હોત તો જરૂર સમાજના એક કુશળ, બુદ્ધિવાન, સર્વોગ્ય કાર્યકર્તા બની શકત એ નિર્વિવાદ છે. છતા પણ સમય પર તેમના વિચારોથી સમાજને લાભ થતો રહે છે.

શ્રી ગુલાબચંદ જૈન

તેઓ મૂળ કચ્છના રહીશ છે તેમનો જન્મ અને પ્રાથમિક અભ્યાસ રગુનમા થયો હતો. ત્યારબાદ શ્રી જૈન ગુરુકુળ, બ્યાવરમા રહી તેમણે ઇન્ટર કોમર્સ સુધી અભ્યાસ કર્યો અને ગુરુકુળમાં 'વિદ્યારત્ન'ની ઉપાધિ મેળવી. તેમનુ કાર્યક્ષેત્ર મુખ્યત્વે લેખન અને સંપાદનનુ છે. ચિત્રપ્રકાશ, જૈન પ્રકાશ, જૈન સિદ્ધાત, યુગ સંદેશ શ્રીલેખા આદિ પત્રોના સંપાદક બની ચુકયા છે. હાલમા 'ચાંદામામા' પત્રોમા ગુજરાતી વિભાગના અધ્યક્ષ છે અને શ્રી જૈન બોર્ડિંગ, મદ્રાસના ગૃહપતિ છે તે સિવાય ગુજરાતીમા સ્વતંત્ર વાર્તાલેખક તરીકે તેમણે ૧૦૦ ઉપરાત વાર્તાઓ લખી છે. તેમના વાર્તાસંગ્રહ 'રેખાચિત્રો'નો મરાઠી અનુવાદ પણ થયો છે જૈન બાલ સાહિત્યમા તેમનુ 'ભગવાન ઋષભદેવ' પર લખેલ પુસ્તક પ્રગટ થયેલ છે.

લેખ અને પ્રવાસવર્ણનના નીચેના યતિ રાજચંદ્રજીના પુસ્તકોનુ સંપાદન તેમણે કર્યું છે

૧. યુગવાણી, ૨. ભારતીય તત્વજ્ઞાન, ૩. જીવન સોપાન માનવધર્મનાં સોપાનો (પદ્ય સંગ્રહ), ૪. બ્રહ્મદેશમાં (પ્રવાસ વર્ણન)

શ્રી ડાહ્યાલાલ જીઠાલાલ, કાલાવડ

તેઓ સ્થાનકવાસી સમાજના મુખ્ય શ્રાવક છે. તેમનુ જીવન મુનિરાજોની સેવાભકિત તથા ધર્મારાધનમા જ વ્યતીત થાય છે. અવારનવાર તેઓ ખૂબ દાન પણ કરે છે. તેઓ જથ્થાબંધ કાપડના વેપારી છે. તેઓને ચાર પુત્રો છે.

શ્રી જાદવજીભાઇ મગનલાલ વકીલ, સુરેન્દ્રનગર

તેમનો જન્મ લીંબડીના શેઠ કુટુંબમા થયેલો છે. સદ્દગત શ્રી વૃજલાલ ખીમચંદ સોલિસિટરના તેઓ ભત્રીજા થાય છે. સને ૧૯૨૧મા મુંબઇની હાઇકોર્ટ પ્લીડરની પરીક્ષા તેમણે પ્રથમ નંબરે પાસ કરી હતી. શ્રી ગાંધીજી ખાદી ઉદ્યોગશાળામા માનદ્ મંત્રી તરીકે ચૌદ વર્ષ જેટલા લાંબા સમય સુધી તેમણે સેવા આપી હતી. ઘણાં વર્ષથી તેઓએ સુરેન્દ્રનગરમા વસવાટ કર્યો છે. વઢવાણ કેમ્પમા તેમણે ઘણી જ પબ્લિક તેમ જ સંઘની સેવા બજાવી છે. વઢવાણ કેમ્પ ભરાયેલ કાઠિયાવાડ રાજકોટ પરિષદના અધિવેશનના તેઓ માનદ્મંત્રી હતા. વઢવાણ કેમ્પ પ્રજામંડળના માનદ્મંત્રી તરીકે ઘણાં વર્ષો સુધી રહીને એજન્સી

શ્રી જાદવજીભાઇ મગનલાલ વકીલ, સુરેન્દ્રનગર

સાથે અવારનવાર કડી પ્રજાહિતનુ રક્ષણ કુનેહથી અને ભાવથી કર્યું હતુ

પ્રજાકીય સાર્વજનિક પુસ્તકાલયના પણ તેઓ માનદ્-મંત્રી હતા.

સવત ૧૯૯૫ના ભયકર દુષ્કાળ વખતે તેમણે અથાગ શ્રમ વેઠીને ગામડે ગામડે ફરીને ગરીબ, અનાથ વિગેરેને આવશ્યક વસ્તુઓ પૂરી પાડી હતી.

તેઓ પીઢ સમાજસેવક છે. છેલ્લા ૩૩ વર્ષથી તેઓ સ્થ જૈન સઘના અગ્રણી છે. સ્થા. જૈન બોર્ડિંગના પ્રમુખ છે શ. પ. મુનિશ્રી રત્નચદ્રજી જ્ઞાનમદિરના ઘણા વર્ષો સુધી ઉપ-પ્રમુખ તરીકે સુદર સેવાઓ અપી છે. બાળમદિર કાર્યકારિણી સમિતિના તેઓ સદસ્ય હતા. ધર્મરક્ષક સમિતિના પ્રમુખ તરીકે તેમણે સ્થા. જૈન ધર્મનુ સારી રીતે રક્ષણ કર્યું છે.

અ. ભા શ્વે. સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સના ઝાલાવાડના પ્રાતિક મત્રી તરીકે તથા ઝાલાવાડ તથા ગોહિલવાડ બને પ્રાંતોના મત્રી તરીકે તેમણે કોન્ફરન્સની સેવા બજાવી છે. તેઓ શાતિપ્રિય છે. અને જ્યા મતભેદ પ્રવર્તતા હોય ત્યા બને પક્ષોનુ સમાધાન કુશળતાપૂર્વક કરાવે છે. કોન્ફરસની સઘપ્રવૃત્તિ સબધી જ્યારે જ્યારે સૌરાષ્ટ્રમા કોન્ફરન્સ તરફથી ડેપ્યુટેશનો મોકલવામાં આવ્યાં છે ત્યારે ત્યારે પોતાનો સક્રિય સહકાર આપ્યો છે.

તે ઉપરાંત સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણ સઘની સ્થાપના સમયે સૌરાષ્ટ્રના શ્રમણવર્ગ તથા અગ્રગણ્ય શ્રાવકોને પોતાને આગણે બોલાવી તેની સ્થાપનામા મોટો ફાળો આપ્યો હતો.

સૌરાષ્ટ્ર શ્રાવક સમિતિ તથા વિકેન્દ્રીકરણ સમિતિના તેઓ સભ્ય છે, અને સૌરાષ્ટ્ર શિક્ષણ સઘના ઉપ-પ્રમુખ છે.

સ્વ. શેઠ વલ્લભજી અમરચંદ, માંગરોળ

તેઓશ્રી માંગરોળની વણિક જ્ઞાતિના આગેવાન તથા સ્થા. જૈન સઘના પ્રમુખ હતા. તેમનો જન્મ સ. ૧૯૨૪ માં થયો હતો. તેમના પિતાશ્રીનુ અવસાન તેમની બાલ્યાવસ્થા દરમ્યાન જ થયુ હતુ.

તેઓ મોટા શ્રીમત સજ્જન હતા. તેમની શિક્ષણ પ્રત્યેની અભિરુચિ ઉલ્લેખનીય હતી. તેમણે ધધામાં સારી રીતે ધન પેદા કર્યું અને છુટે હાથે દાન પણ દીધુ. તેઓ સઘના સંઘપતિ તરીકે પણ રહ્યા હતા.

તા. ૨૮-૪-૬૫ના રોજ તેમનો સ્વર્ગવાસ થયો

જગજીવનભાઇ જુઠાભાઇ કોઠારી, રાજકોટ

તેમનો જન્મ સને ૧૮૮૮મા ધર્મચુસ્ત જૈન કુટુબમાં થયો હતો તેઓ મેટ્રિક સુધીનો અભ્યાસ કર્યા પછી એડન ગયા હતા અને ત્યાં તેમણે અમુક સમય નોકરી કર્યા પછી સને ૧૯૧૪મા પોતાનો સ્વતત્ર ધધો શરૂ કર્યો.
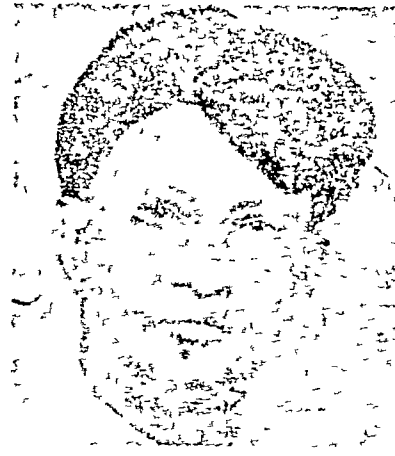
જગજીવનભાઇ જુઠાભાઇ કોઠારી રાજકોટ

તેમણે એડનમાં જૈનશાળા શરૂ કરાવી હતી તથા તેના માનદ્મત્રી તરીકે સેવા આપી હતી. વિલાયત જતા દેશભક્તોને એડનમાં પોતાને ત્યા ઉતારી સક્રિય સહયોગ આપતા હતા.

ગુજરાત રેલસકટ નિવારણ ફંડમા એડનના વ્યાપારીઓ સાથે મળીને તેમણે રૂા. ૨,૦ ૦૦) ભેગા કરી સરદાર વલ્લભભાઇ પટેલ દ્વારા ગુજરાતમા મોકલ્યા હતા.

તેઓ ઘણી સસ્થા સાથે જોડાયેલા હતા અને તેમા અનેક સેવાઓ આપી હતી. મોટા સઘના માનદ મત્રી, સ્થા. જૈનશાળાના માનદ્મત્રી, પાંજરાપોળ તથા દશા શ્રીમાળી જૈન છાત્રાલયના માનદ્મત્રી, વર્ધમાન આયબીલ ખાતાના મત્રી તથા સૌરાષ્ટ્ર શ્રાવક સમિતિ, ધાર્મિક શિક્ષણ સમિતિના સભ્ય, તથા વાકાનેર સમેલનના પ્રતિનિધિ તરીકે તેમણે સેવાઓ અર્પણ કરેલી છે.

તેઓ ઉદાર દિલના સખીગૃહસ્થ છે. તેમણે ઘણી સંસ્થાઓને આર્થિક સહાયતા આપેલી છે જેમા રૂા. ૧,૦૦૧) પાજરાપોળ રૂા ૧૨,૦૦૧) દશા શ્રીમાળી જૈન વિદ્યાર્થી ભુવન, રૂા. ૬,૦૦૦) જુદી જુદી સસ્થાઓમા તેમના ધર્મપત્નીના વર્ષીતપના પારણા સમયે, તેમના ત્રણ પુત્રોના લગ્ન વખતે રૂા. ૩,૦૦૦) ઉપરાતરૂા ૧,૫૦૦) આયબીલ ખાતામા વગેરે સખાવતો કરેલી છે. તે ઉપરાંત તેમની તરફથી છાશ ખાતુ ચાલે છે તથા કેટલીક સસ્થાઓમા વાર્ષિક સહાયતા આપી છે.

પ. મુનિશ્રી ગબ્બુલાલજી મહારાજના ચાતુર્માસ

વખતે તેમણે શ્રાવક વ્રતો અંગીકાર કર્યા હતા તથા મહાસતીજી શ્રી લીલાવતીબાઇ સ્વામી પાસે સજોડે ચતુર્થ વ્રત અંગીકાર કર્યું હતુ

તેમનો ગત વર્ષમા જ રાજકોટ મુકામે સ્વર્ગવાસ થયો છે, તેથી ત્યાંના સઘને તથા સમાજને સેવાભાવી તથા ઉદાર કાર્યકર્તાની ખોટ પડી છે.

શ્રીમાન છબીલદાસ હરખચંદ કોઠારી, બોટાદ

એમનો જન્મ સ. ૧૯૫૬ના શ્રાવણ વદ ૧૨ તા. ૧૨-૮-૧૯૦૦ને રોજ જામનગરમા ધર્મપરાયણ શ્રી હરખચદભાઇ કોઠારીને ત્યા થયો શ્રી હરખચદભાઇ કોઠારી બહુ ધર્મનિષ્ઠ આદર્શ શ્રાવક હતા. તેઓ સન ૧૯૨૨થી નિવૃત્ત થયા ત્યારથી સન ૧૯૩૯ સુધી દિવસના લગભગ ૧૭ વર્ષ સામાયિક પ્રતિક્રમણ, વાચન-મનન અને સ્વાધ્યાયમા જ ગાળતા. આવા ધર્મપ્રધાન શ્રાવકના સુસસ્કાર શ્રી. છબીલદાસભાઇમા ઉતર્યા હોવાથી ૯ વર્ષની વયમાં જ તેમણે કદમૂળ અને સર્વ પ્રકારનાં વ્યસન સેવનનો ત્યાગ કર્યો હતો, જે આજ સુધી બરાબર નિભાવે છે, છટ્ઠી અગ્રેજીમા ભણતાં સુધી નિયમિત જૈનશાળામા જઇ સારો ધાર્મિક અભ્યાસ કર્યો. અને પોતાનું જીવન ધર્મ અને ત્યાગમય સુસ્ત સ્થા જૈન તરીકે વિતાવે છે.
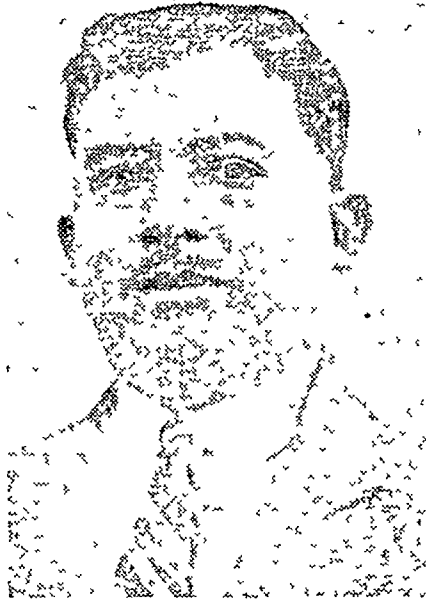
શ્રીમાન છબીલદાસ હરખચંદ કોઠારી, બોટાદ

પૂનામા જઇને ઇન્જિનિયરીંગનો અભ્યાસ કરીને સન ૧૯૨૩ માં B. E. થયા. કોલેજ જીવનમા પણ તેઓ નિર્વ્યસની જ રહ્યા. શરૂઆતમા લીમડી સ્ટેટ ઇન્જિનીયર બન્યા. ત્યાંથી ભાવનગર રેલ્વેમા એકધારા ૨૮ વર્ષ એન્જીનીયરનો અધિકાર ભોગવ્યો. સન ૧૯૩૯થી મુબઇમાં કાપડની દુકાન કરી અને પોતે ઇલેક્ટ્રીકનો ધધો શરૂ કર્યો આપબળે આગળ વધી લાખો કમાયા અને હજારો સ્થા જૈનોના હિતમા વાપર્યા આજે તેઓ જોહારમા બેકેલાઇટને પ્લાસ્ટીક પાઉડર તથા ઇલેક્ટ્રીક એસેસરીઝ બનાવવાનુ પોતાનુ મોટુ કારખાનુ ચલાવે છે.

તેઓ ચુસ્ત સ્થા. જૈન છે. સન ૧૯૩૫થી તેમણે રાત્રિભોજનનો પણ ત્યાગ કર્યો છે. સોનગઢ અને તેરાપથના સૌરાષ્ટ્રમા પ્રાદુર્ભાવથી એટલે સન ૧૯૪૩થી તેમણે વિરોધી ઝુંબેશ ઉપાડી હતી અને સફળ રીતે જનજાગૃતિ આણી હતી. એ જ વખતે બોટાદમાં સ્થા. જૈન બોર્ડિંગ શરૂ કરી હતી, જે આજે પણ ચાલે છે શરૂઆતથી જ તેઓ પ્રમુખ છે. શાસ્ત્રોદ્ધારના કાર્યની શરૂઆત પણ તેમણે જ કરાવી છે. શ્રી. કોઠારીજી અજમેર સાધુ સમેલન વખતે દોઢ માસ અજમેરમા રહીને પોતાની સેવાઓ આપી હતી ત્યારથી જ જનરલ કમિટીના સદસ્ય છે સઘ-ઐકયની યોજનામાં તેમને રસ છે અને તેથી સૌરાષ્ટ્રનાં એક ડેપ્યુટેશનમા તેઓ જોડાયા હતા મલાડ સઘના તેઓ પ્રમુખ હતા ટ્રસ્ટી તો આજે પણ છે. ચિત્તોડમા જયતિ ઉત્સવ વખતે એક મુખ્ય સભાના તેઓ મનોનીત પ્રમુખ હતા.

આ રીતે ધર્મપાલન, ધર્મરક્ષા, ઉદાર સખાવત, નિર્વ્યસની અને સદાચારી જીવન, સ્વધર્મી વાત્સલ્ય, એમના જીવનમા વણાએલા છે. હાથ ધરેલુ કામ પૂરૂ કરવાનો ઉત્સાહ, આવડત અને દઢતા તેમનામાં છે.

શ્રી કપૂરચદભાઇ પાનાચદ મહેતા, રાજકોટ

તેમનો જન્મ રાજકોટમા સ. ૧૯૩૫ ના શ્રાવણ વદ ૧૩ (અઠાઇધર)ના રોજ સાધારણ કુટુબમા થયો હતો. તેમના પિતાશ્રી તથા માતુશ્રી ધર્માનુરાગી તથા ભદ્રિક હતા.

શ્રી. કપૂરચદભાઇએ નાની વયમા ધર્મશાસ્ત્રનુ સારૂ જ્ઞાન મેળવ્યુ હતુ એમણે ઇમારતી લાકડાની દુકાનથી ધધો શરૂ કર્યો હતો. તેમા ઉત્તરોત્તર પ્રગતિ સારી હતી. વ્યાપારમા પ્રમાણિકતા અને નીતિ જાળવી રાખવાને લીધે વ્યાપારી સમાજમા તથા બજારમા સારી પ્રતિષ્ઠા મેળવી હતી. શરીર અસ્વસ્થ હોવા છતા પણ જીવન પર્યન્ત

ધર્માદા સંસ્થાઓની તેમણે સેવા બજાવી હતી એટલે કે તેઓ પાંજરાપોળના પ્રાણ હતા, જૈન શાળાનું જીવન હતા, સંઘના અનન્ય સેવક હતા, મુંગા પશુઓના માતાપિતા હતા અને શ્રાવકોના સાચા સલાહકાર હતા. કેટલીયે જાહેર સંસ્થાઓના તેઓ કોષાધ્યક્ષ હતા અને કાળજીપૂર્વક બધી સંસ્થાઓનો હિસાબ બહાર પાડતા હતા.

તેઓ સ્વભાવે ઉદાર અને ગુપ્તદાની હતા. અનેક પ્રવૃત્તિમાં પડેલા હોવા છતાં તેઓ સવાર સાંજ પોતાનું ધર્મધ્યાન ચૂકતા નહિ. તેમણે મૃત્યુ પહેલા પોતાના કુટુંબીજનોને તથા સંઘને પત્રદ્વારા કેટલાક સૂચનો કર્યા હતા જેથી તેમની પંડિત મરણની ઉચ્ચ ભાવનાઓ વ્યક્ત થતી હતી તેમની ધર્મપ્રત્યે અટલ શ્રદ્ધા હતી. તેમનું જીવન ધર્મના રંગે રંગાયલું હતું. તેમનો સ્વર્ગવાસ સમાધિ મરણપૂર્વક સં. ૧૯૮૯ ના મહા શુદ ૩ શનિવારે થયો હતો.

જટુભાઇ મહેતા, મુંબઇ
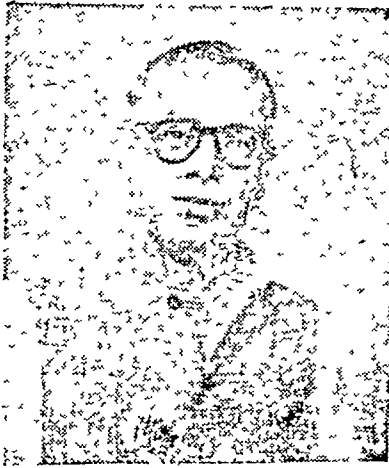
સૌરાષ્ટ્ર અને મુંબઇનાં જાહેર જીવનમાં 'જટુભાઇ મહેતા' ના નામથી જાણીતા સામાજિક કાર્યકર વિચારે સમાજવાદી અને આચારે રાષ્ટ્રવાદી યુવાન છે. યુવાન વયથી નહિ, પરંતુ તેમના ક્રાન્તિકારી વિચારોથી અને કાર્યથી. સૌરાષ્ટ્રના રાજસ્થાનોની આપખુદી સામેની લડતોમાં તેમણે મોખરે રહીને સ્વરાજ મળ્યું ત્યાં સુધી ભાગ લીધો છે, અને અનેકવાર જેલયાત્રા પણ કરી છે. પ્રજાસમાજવાદી પક્ષના તેઓ આગેવાન સભ્ય છે. રાજકારણમાં અગ્રપદે રહીને પ્રવૃત્તિઓ કરવા સાથે તેઓ સમાજસેવાના વિવિધ કાર્યોમાં પણ પ્રથમથી જ રસ લેતા આવ્યા છે, અને મુંબઇ જૈન યુવક સંઘ તથા અખિલ ભારત શ્વે. સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સ સાથે સંકળાએલા રહીને તેમણે જૈન સમાજને પ્રગતિને માર્ગે લઇ જવાનો ઠીક પ્રયાસ કરેલ છે. ઉપરાંત બીજી પણ સામાજિક પ્રવૃત્તિઓમાં, ખાદીનો, ગુમાસ્તાઓ, હરિજનો તેમ જ મધ્યમ વર્ગની મુશ્કેલીઓમાં પણ તેઓ સક્રીય સહાય કરતા આવ્યા છે.

જટુભાઇ મહેતા, મુંબઇ

શ્રી. જટુભાઇ સિદ્ધહસ્ત લેખક અને વક્તા પણ છે. અનેક વર્તમાનપત્રોમાં તેઓ વિવિધ વિષયો ઉપર લેખો લખે છે. 'કોડિલ', 'પરિવર્તન', 'પ્રબુદ્ધ જૈન', 'જનશક્તિ', 'નવવિધાન' વગેરે પત્રોના સંપાદક તરીકે પણ એમણે કામ કર્યું છે.

રાજકારણના અભ્યાસની સાથે તેમણે ધાર્મિક અભ્યાસ પણ સારો કરેલ છે. કોન્ફરન્સ તરફથી લેવાએલ અખિલ ભારત જૈન અધ્યાપક પરીક્ષામાં તેઓ પ્રથમ સ્થાન મેળવી શક્યા હતા. કોન્ફરન્સની પ્રવૃત્તિઓ પ્રત્યે તેઓ ખૂબ આદર ધરાવે છે, અને જૈન સમાજની પ્રગતિ માટે સતત ચિંતા સેવતા રહે છે.

કેળવણી પ્રત્યે તેઓ ખૂબ જ આદર ધરાવે છે. 'ધંધા સાથે સેવા' એ સૂત્રને તેઓ માને છે અને ધંધામાં જોડાયા ત્યારથી સાથોસાથ સેવાની પ્રવૃત્તિ તેમણે શરૂ કરી છે, જે હજુ યે ચાલુ છે.

(માસ્તર) વ્રજલાલ જગજીવન દોમડીઆ (કલકત્તા)

જન્મ તા. ૨-૪-૧૮૯૨ રાજકોટમાં થયો હતો. મેટ્રીક સુધી અભ્યાસ કરી રાજકોટથી ધંધાર્થે ૧૯૧૬માં કલકત્તા આવ્યા. બાદ કલકત્તા શ્રી સંઘ તરફથી ચાલતી જૈન શાળાના માસ્તર તરીકે ઓનરરી સેવા આપેલ હતી તેમ જ પર્યુષણ પર્વમાં આઠે દિવસ પ્રતિક્રમણ કરાવતા હતા. તે ઉપરાંત શ્રી સંઘના કાર્યવાહક કમીટીના મેમ્બર તરીકે તેમ જ ઓન. સેક્રેટરી તરીકે પણ સેવા બજાવેલ હતી. હાલમાં છેલ્લા ૩ વરસ થયાં શ્રી સંઘના ટ્રસ્ટી તરીકે પણ નિમાયેલ છે.

ગુજરાતી સહાયકારી દવાખાનામાં કાર્યવાહક કમિટીના મેમ્બર તરીકે સહતનાં કાર્યોમા, આયંબીલ ખાતામાં તેમજ શ્રી જૈન ભોજનાલયના મેમ્બર તરીકે સેવા આપે છે.

સ્થા. જૈન બાળાશ્રમ રાજકોટ, શ્રી મહાજન પાજરાપોળ રાજકોટ, તથા શ્રી ગુજરાતી સહાયકારી દવાખાનામા કલકત્તામાં, પણ શક્તિ પ્રમાણે સખાવતો કરેલી છે.

પોતે ઘણા જ સેવાભાવી હોઇ ને સેવાના કોઇ પણ કાર્યમા પોતે તૈયાર જ રહે છે.

ચાલુ વર્ષમા આપણી કોન્ફ. ના લાઇફ મેમ્બર પણ બનેલ છે.

શ્રી કપુરચંદ નરભેરામ સુતરીઆ

વતન: રાજકોટ.

હાલ: ૨૩ વર્ષ થયાં મદ્રાસમા.
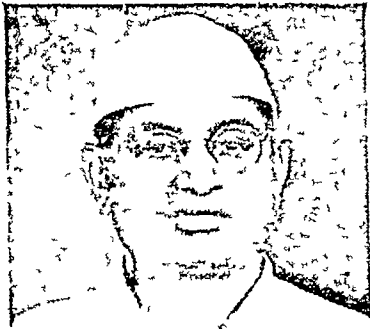
ઉમર: ૪૩ વરસ

શ્રી કપુરચંદ નરભેરામ સુતરીયા

મદ્રાસમા આવ્યા પછી જૈન સમાજની બની શકી તેટલી તન, ધન અને મનથી સેવા કરે છે.

છેલ્લી આપણી કોન્ફરન્સ વખતે વોલંટીઅર કોરના નાયક તરીકે તેમ જ બીજાં કાર્યો કર્યાં છે.

કોન્ફરન્સ વખતે તેમનુ આખુ કુટુંબ વોલન્ટીયર કોરમા જોડાયેલ. તેમનાં પત્ની જયાલક્ષ્મી સ્ત્રી વોલન્ટીઅર કોરના એક જથ્થા નાયક હતા. દિકરો રમેશચંદ્ર પણ વોલન્ટીઅર હતો બંને દિકરીઓ પ્રેમીલા તથા સરલા પણ વોલન્ટીયર કોરમાં જોડાયેલ. આમ આ રીતે આખા કુટુંબે સેવા કરેલી.

આ ઉપરાંત ગામની જૈન સમાજની સંસ્થાઓમાં સેવાકાર્ય કરે છે

શ્રી રતીલાલ ચીમનલાલ શાહ

મુનિશ્રી સુશીલકુમારજીના મુંબઇમા ચાતુર્માસ દરમ્યાન કેટલીક અજાણુ વ્યક્તિઓની શક્તિ જાહેરમાં આવી તે પૈકીના એક શ્રી રતીભાઇ પણ છે.

શ્રી રતીલાલ ચીમનલાલ શાહ

તેમનો જન્મ અમદાવાદમા સને ૧૯૧૫ના જુલાઇની ૨૧ મી તારીખે થયો હતો

તેમના પિતાશ્રી શ્રી ચીમનલાલ કચરાભાઇ શાહ, સદ્‌ગત સાક્ષર શ્રી વા મો. શાહના સહાધ્યાયી હતા. તેમણે તત્વજ્ઞાનના ઘણા પુસ્તકો લખ્યાં છે.

પિતાશ્રીના સસ્કારો પુત્રમા પણ ઉતર્યા છે.

મુબઇ સમાચારમા જૈન-હિંદુના વિષયમા તેમણે ઘણા લેખો લખ્યા છે.

મુનિશ્રી સુશીલકુમારજીના "જૈન-ધર્મ અને તેરહપથ," "આતુ નામ ધર્મ" તથા "જૈન ધર્મના ઇતિહાસ"નો અનુવાદ તેમણે સફળ રીતે કર્યો છે.

જૈન-પ્રકાશમાં પણ તેમના લેખો અવારનવાર પ્રગટ થાય છે.

જૈન શાસ્ત્રોનુ તેમણે સારૂં જેવું અધ્યયન કર્યું છે તે ઉપરાંત વડોદરાની રામાયણ પ્રચાર સમિતિની રામાયણની પ્રારંભિક તથા 'પરીચય' પરીક્ષાઓ પણ પાસ કરી છે અને તેમાં પારિતોષિક પણ મેળવેલ છે.

ડ્રોઇગનો પણ અભ્યાસ કર્યો છે અને તેની બે પરીક્ષાઓ તેમણે પસાર કરી છે.

"સેવા સમાજ" નામના એક બિનસાંપ્રદાયિક જૈન પત્રના તેઓ સહસંપાદક છે.

કોન્ફરન્સ પ્રત્યે તેમને ઘણો આદર અને પ્રેમ છે.

શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રાવક સઘ, કોટ-મુબઇની કાર્યવાહક સમિતિના સભ્ય તરીકે પણ તેઓ ચૂંટાયા છે.

કોન્ફરન્સના આ સુવર્ણ જયન્તિ ગ્રંથના ગુજરાતી વિભાગના સંપાદન તથા મુદ્રણ કાર્ય માટે, રાત્રિ દિવસ ખૂબ શ્રમપૂર્વક કાર્ય કર્યું છે.

શ્રી અ. ભા. શ્વે. સ્થા. જૈન કૉન્ફરન્સના તેરમા અધિવેશનના પ્રમુખ તરીકે જેમની વરણી થઇ છે

શ્રી વનેચંદભાઇ દુર્લભજી ઝવેરી
જયપુર સીટી

શ્રી અને સરસ્વતીનો સંગમ

શેઠ શાંતલાલ મંગળદાસ
અમદાવાદ

સેવા, નિડરતા અને અજોડ પત્રકારિત્વ

સ્વ. શ્રી અમૃતલાલ દલપતભાઇ શેઠ

શ્રી અખિલ ભારતવર્ષીય શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સનું

સંશોધિત નવું બંધારણ

[અગ્યારમા મદ્રાસ અધિવેશનમાં પ્રસ્તાવ ન. ૧૭ થી સર્વાનુમતે મંજુર થયેલ અને જોધપુર જનરલ કમિટી દ્વારા સંશોધિત]

(૧) નામ

આ સંસ્થાનુ નામ શ્રી અખિલ ભારતવર્ષીય શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સ રહેશે

(૨) ઉદ્દેશ

આ સંસ્થાનો નીચે મુજબ ઉદ્દેશ રહેશે:

(અ) માનવ સમાજના નૈતિક અને ધાર્મિક જીવન-સ્તરને ઉચુ ઉઠાવવાના પ્રયત્નો કરવા.

(બ) ગરીબ, અસહાય અને અપંગોને હરપ્રકારે સહાયતા આપવી.

(ક) સ્ત્રી સમાજના ઉત્થાન માટે શિક્ષણ સંસ્થાઓ અને હુન્નર-ઉદ્યોગશાળા આદિ ચલાવવા.

(ખ) શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી જૈનોની ધાર્મિક, સામાજિક, આર્થીક, શારીરિક, શિક્ષા વિષયક અને સર્વદેશીય ઉન્નતિ અને પ્રગતિ કરવી,

(ગ) જૈન ધર્મના સિદ્ધાંતોનો પ્રચાર કરવો અને તે માટે ઉપદેશક તેમજ પ્રચારક તૈયાર કરવા તેમજ નિમવા;

(ઘ) ધાર્મિક શિક્ષણ આપવાનો પ્રબંધ કરવો અને તે માટે સંસ્થાઓ ચલાવવી, પાઠ્યપુસ્તકો તૈયાર કરવા, શિક્ષક તૈયાર કરવા, વગેરે;

(ઙ) જૈન ઇતિહાસ, જૈન સાહિત્ય વગેરેનુ સંશોધન કરવું અને પ્રકાશન કરવુ;

(ચ) જૈનશાસ્ત્રોનુ પ્રકાશન કરવુ-કરાવવું,

(છ) સાધુ-સાધ્વીઓના અભ્યાસનો પ્રબંધ કરવો

(જ) સાધુ-સાધ્વીઓના આચાર-વિચારની શુદ્ધિ સાથે પારસ્પરિક વ્યવહાર વિસ્તૃત થાય તેનો પ્રયત્ન કરવો.

(ઝ) જુદા જુદા સંપ્રદાયોને મીટાવીને, એક શ્રમણ સંઘ અને એક શ્રાવક સંઘની સ્થાપના માટે કાર્યવાહી કરવી.

(ટ) સ્થાનકવાસી જૈનોનું સંગઠન કરવુ અને એકતાની સ્થાપના કરવી;

(ઠ) સામાજિક રિવાજોમા સમયાનુકૂળ સુધારા કરવા,

(ડ) જૈન ધર્મના બધા ફિરકાઓમા પ્રેમ સ્થાપિત કરવો.

ઉપરોક્ત ઉદ્દેશોને પૂર્ણ કરવા માટે આવશ્યકતાનુસાર:—

૧. સંસ્થાઓ સ્થાપવી સ્થાપેલ સંસ્થાઓને ચલાવવી અને ચાલતી સાંપ્રદાયિકતા રહિત સંસ્થાઓને મદદ કરવી,

૨. અનુકૂળ સમય પર સંમેલન, પ્રદર્શન અને અધિવેશન કરવા,

૩. ઉપરોક્ત ઉદ્દેશોથી કામ કરતી સંસ્થાઓ અને વ્યક્તિઓ સાથે મળીને કાર્ય કરવુ, કરાવવુ અને એવી સંસ્થાઓ સાથે સંમિલિત થવું અથવા પોતાનામાં તેનો સમાવેશ કરવો અથવા તેને મદદ કરવી,

૪. વ્યાખ્યાનો યોજવા, પુસ્તકો તૈયાર કરવાં, પ્રકાશિત કરવા, તથા પત્ર-પત્રિકાઓ પ્રગટ કરવા,

૫. જનરલ સમિતિ સમય સમય પર નક્કી કરે તેવી પ્રવૃત્તિઓ હાથ પર ધરવી,

૬. કોન્ફરન્સના ઉદ્દેશો પૂર્ણ કરવામાં-મદદરૂપ થઇ શકે તે માટે ફંડ કરવા, કરાવવા, સ્વીકારવા તથા તેનો ઉપયોગ જનરલ કમિટીની મંજુરીથી કરવો;

૭ શક્ય હોય ત્યાં જૈનોના અન્ય ફિરકાઓ સાથે મળીને કાર્ય કરવું

(૩) રચના

શ્રી કોન્ફરન્સના સભ્યોના નીચે મુજબ પ્રકાર રહેશે –

૧. અઢાર વર્ષ અથવા તેથી વધુ ઉમરના કોઇ પણ સ્થાનકવાસી પુરૂષ અથવા સ્ત્રી–

અ. વાર્ષિક રૂપીઓ ૧) એક લવાજમ આપશે તે **સામાન્ય સભ્ય** ગણાશે,

બ. વાર્ષિક રૂ. ૧૦) દશ લવાજમ આપે તે **સહાયક સભ્ય** ગણાશે,

ક. એકીસાથે રૂા. ૫૦૧) અથવા તેથી વધુ લવાજમ આપશે તે પ્રથમ શ્રેણીના અને રૂા. ૨૫૧ આપનાર બીજી શ્રેણીના **આજીવન સભાસદ** ગણાશે,

ખ. એકીસાથે રૂા. ૧૫૦૧) આપનાર **વાઇસ-પેટ્રન** અને રૂા ૫૦૦૧) આપનાર **પેટ્રન** ગણાશે;

૨ જનરલ કમિટી માન્ય કરે તેવા સંઘ અને સંસ્થાઓના પ્રતિનિધિ-જેમાંથી પ્રત્યેક પ્રતિનિધિને વાર્ષિક રૂા. ૧૦] ભરવા પડશે; તે સભાસદ **પ્રતિનિધિ સભ્ય** કહેવાશે; પ્રત્યેક સંઘ અથવા સંસ્થા દર બે વર્ષે પોતાના પ્રતિનિધિ નિયુક્ત કરશે;

(૩) જે વ્યક્તિ કોન્ફરન્સની ઓનરરી સેવા કરતા હોય તે કોન્ફરન્સના માનદ્ સભાસદ ગણાશે. માનદ્ સભ્યપદ આપવાનો અધિકાર કોન્ફરંસની જનરલ કમિટીને રહેશે. આ અધિકાર બીજી જનરલ કમિટી મળે ત્યાસુધી જ રહેશે અને પ્રતિવર્ષ માનદ્ સદસ્યોની નામાવલી જનરલ કમિટીમાં નિશ્ચિત થશે માનદ્ સભ્યો જનરલ કમિટીના પણ સદસ્ય ગણાશે.

નોંધ: ૧ આ વિધાન અમલમાં આવે ત્યાં સુધીમાં જેમણે કોન્ફરન્સના કોઇ પણ ફંડમાં એકસાથે રૂા. ૨૫૧] અથવા તેથી વધારે રકમ આપી હોય તેમને કોન્ફરન્સના આજીવન સભ્ય ગણવામાં આવશે.

૨. સભાસદોને મતાધિકાર આપવાનો સમય આવે તે પહેલાં ઓછામાં ઓછા ૩ મહિના પહેલાં તે સભ્ય બનેલ હોવો જોઇએ અને પોતાનું લવાજમ ભરી દીધેલ હોવુ જોઇએ;

૩. ૧ લી કલમના ન, क, ख પ્રકારના સભાસદોને 'જૈન પ્રકાશ' વિના લવાજમે આપવામાં આવશે,

૪. વંશપરંપરાના વર્તમાન સભ્યો ચાલુ રહેશે પરંતુ તેમને આજીવન સભ્ય બનવાની પ્રાર્થના કરવામાં આવશે.

(૪) પ્રાંત

શ્રી કોન્ફરન્સના આ બંધારણ માટે ભારતવર્ષના નીચે પ્રમાણે પ્રાંતો નિશ્ચિત કરવામાં આવે છેઃ—

૧. મુબઇ શહેર અને ઉપનગર,
૨. મદ્રાસ અને તામિલનાડ,
૩. આન્ધ્ર અને હૈદ્રાબાદ
૪. બંગાલ, ઉડીસા અને બિહાર
૫. સંયુકત પ્રાંત (દિલ્હી સહિત)
૬. પંજાબ અને ઓરિસ્સા
૭. પૂર્વી રાજસ્થાન
૮. પશ્ચિમી રાજસ્થાન (અજમેર પ્રાંત સહિત)
૯. મધ્યભારત,
૧૦. મધ્ય પ્રદેશ (સી પી.)
૧૧. મહારાષ્ટ્ર,
૧૨. ગુજરાત.
૧૩. સૌરાષ્ટ્ર;
૧૪. કચ્છ,
૧૫ કેરલ, કોચીન, મલબાર-ત્રાવણકોર સહિત;
૧૬. કર્ણાટક—મ્હૈસુર,
૧૮. સંયુક્ત પ્રાંત (યુ.પી.)

જનરલ કમિટી મંજુર કરશે તે સ્થાન પર દરેક પ્રાંતોનુ કાર્યાલય રહેશે; પ્રાંતોની ભૌગોલીક મર્યાદા જનરલ કમિટી નક્કી કરી શકશે અને એવી ભૌગોલીક મર્યાદામાં અને પ્રાંતોની સંખ્યામાં આવશ્યકતાનુસાર ફેરફાર કરી શકશે.

(૫) પ્રાંતિક સમિતિ

કાર્યવાહક કમિટી સમય સમય પર પ્રાંતિક સમિતિઓ રચશે અને તેમની રચના, કાર્યક્રમ તેમ જ સત્તા નક્કી કરશે.

(૬) જનરલ કમિટિ

જનરલ કમિટી નીચેના સભ્યોની બનશે :—

૧. સર્વ આજીવન સભાસદ, સર્વ વાઇસ-પેટ્રન અને પેટ્રન,

૨. સર્વ પ્રતિનિધિ સભાસદ,

૩. સામાન્ય અને સહાયક સભાસદના પ્રતિનિધિ-જે દર દશ સભાસદે એક ચુંટાશે;

૪. ગત વર્ષોના પ્રમુખ

(૭) કાર્યવાહક સમિતિ

૧. દર વર્ષે જનરલ કમિટી કાર્યવાહક સમિતિ માટે ૩૦ સભ્યોની ચૂંટણી કરશે;

૨. કાર્યવાહક સમિતિ પોતાના અધિકારીઓની ચૂંટણી કરશે,

૩. કાર્યવાહક સમિતિના અધિકારી જનરલ કમિટી અને કોન્ફરન્સના અધિકારી ગણવામાં આવશે,

૪. અધિવેશનના પ્રમુખ, ત્યાર બાદ બે વર્ષ સુધી કાર્યવાહક સમિતિના પ્રમુખ રહેશે.

(૮) કાર્ય વિભાજન અને સત્તા

૧. શ્રી કોન્ફરન્સના અધિવેશનના પ્રસ્તાવોને આધીન રહીને, જનરલ કમિટી કોન્ફરન્સના સંપૂર્ણ કાર્ય અને

વ્યવસ્થા કરશે, કોન્ફરન્સની સંપૂર્ણ સત્તા જનરલ કમિટી હસ્તક રહેશે;

૨. કાર્યવાહક સમિતિ કોન્ફરન્સના અધિવેશન તેમજ જનરલ કમિટીના પ્રસ્તાવોને આધીન રહીને કોન્ફરન્સની સંપૂર્ણ પ્રવૃત્તિઓ અમલમાં લાવવા માટે યોગ્ય કાર્યવાહી કરશે અને તેને માટે જવાબદાર રહેશે.

૩. આ બંધારણ અમલમા મૂકવા અને આ બંધારણમા ઉલ્લેખ થયો ન હોય તેવી સઘળી બાબતો સંબંધે, આ બંધારણથી વિરોધી ન હોય તેવા ધારાધોરણ ઘડવાની અને વખતો વખત પ્રાંતિક અને બીજી સમિતિઓને આદેશ આપવાની અને તેમાં વખતો વખત ફેરફાર કરવાની કાર્યવાહક સમિતિની સત્તા રહેશે. કાર્યવાહક સમિતિ, પ્રાંતિક અને બીજી સમિતિઓના કામકાજ ઉપર દેખરેખ અને કાબૂ રાખશે અને તેનો હિસાબ તપાસશે.

(૯) સમિતિની બેઠકો

૧. પ્રમુખ અને મંત્રીઓને જરૂર જણાય ત્યારે અથવા કાર્યવાહક સમિતિના સાત સભ્યોની લેખીત માગણીથી, કાર્યવાહક સમિતિની બેઠક અને કાર્યવાહક સમિતિને જરૂર જણાય ત્યારે અથવા જનરલ કમિટીના ૨૫ સભ્યોની લેખિત માગણીથી જનરલ કમિટીની બેઠક બોલાવવામા આવશે,

લેખિત માગણીથી બોલાવવામાં આવેલ કાર્યવાહક સમિતિ અને જનરલ કમિટીની બેઠક માટે, તે માગણીઓમાં બેઠક બોલાવવાના હેતુઓ સ્પષ્ટપણે દર્શાવાયેલા હોવા જોઇએ.

કાર્યવાહક સમિતિની બેઠક માટે ૭ દિવસ અને જનરલ કમિટીની બેઠક માટે ૧૪ દિવસ પહેલાં ખબર આપવી પડશે, પ્રમુખ અને મંત્રીઓને તાત્કાલિક જરૂરીઆત લાગે તો તેથી ટુંકી મુદતે બેઠક બોલાવી શકશે

૨. કાર્યવાહક સમિતિની બેઠક માટે ૭ સભ્ય અને જનરલ કમિટીની બેઠક માટે ૩૦ સભ્ય અથવા તેના કુલ સભ્યોની ૧,૫ સંખ્યા (બેમા જે સંખ્યા ઓછી હોય તે)ની હાજરી કાર્યસાધક હાજરી લેખાશે, જનરલ કમિટીની બેઠકમાં આમંત્રણ આપનાર પ્રાંત સિવાયના ૧૦ સભ્યોની હાજરી આવશ્યક હોવી જોઇએ, કોઇ બેઠકમા કાર્યસાધક હાજરી ન હોય તો તે બેઠક મુલતવી રહેશે અને તેવી બીજી બેઠક માટે કાર્યસાધક હાજરીની જરૂરી રહેશે નહીં; પણ તેવી બીજી બેઠકમા પ્રથમની બેઠક માટે જાહેર થયેલ કામકાજ સિવાય બીજુ કામકાજ થઇ શકશે નહિ. મુલ્તવી રહેલ બેઠક ૨૪ કલાક બાદ મળી શકશે.

૩. જનરલ કમિટીની બેઠક વર્ષમાં ઓછામાં ઓછી એક વાર, વર્ષ પૂરું થયા પછી ત્રણ માસમાં બોલાવવી જોઇશે અને તે બેઠકમાં બીજા કાર્યો ઉપરાંત નીચે મુજબ કામકાજ કરવામા આવશે :—

અ. કાર્યવાહક સમિતિની ચુંટણી,

બ. કાર્યવાહક સમિતિ એક વર્ષનો પોતાના કામકાજનો અહેવાલ રજુ કરશે;

ક ઓડિટ થયેલ હિસાબ મંજુરી માટે રજુ કરવામા આવશે.

ડ. આગામી સાલનુ બજેટ મંજુરી માટે રજૂ કરવામા આવશે;

૪. અધિવેશન પહેલા ઓછામાં ઓછા એક દિવસ અને અધિવેશન બાદ યથાશીઘ્ર જનરલ કમિટીની બેઠક બોલાવવામા આવશે;

(૧૦) અધિવેશન

૧. કાર્યવાહક સમિતિ નક્કી કરે તે સમયે અને સ્થળે કોન્ફરન્સનુ અધિવેશન થશે,

૨. જે સંઘ તરફથી અધિવેશનનુ આમંત્રણ મળે તે સંઘ અધિવેશનના ખર્ચ માટે જવાબદાર રહેશે અને અધિવેશન માટે સઘળો પ્રબંધ કરશે,

કાર્યવાહક સમિતિની દેખરેખ નીચે અને સૂચનાનુસાર આમંત્રણ આપનાર સંઘ સ્વાગત સમિતિની રચના કરશે અને અધિવેશનની સંપૂર્ણ વ્યવસ્થા કરશે,

અધિવેશનનુ ખર્ચ બાદ કરતાં, વધારો રહે તેના ૨૫% આમંત્રણ આપનાર સંઘને રહેશે અને બાકીની રકમ કોન્ફરન્સને રહેશે,

અધિવેશન બાદ ત્રણ માસમાં સ્વાગત સમિતિએ અધિવેશનનો સંપૂર્ણ હિસાબ કાર્યવાહક સમિતિ પાસે રજૂ કરવો પડશે.

૩ ત્રણ વર્ષ સુધી, કોઇ પણ સંઘ તરફથી અધિવેશનનુ આમંત્રણ ન મળે તો ચોથે વર્ષે કોન્ફરન્સના ખર્ચે અધિવેશન ભરવાનુ રહેશે;

૪. અધિવેશનના **પ્રમુખની ચૂંટણી** સ્વાગત સમિતિનો અભિપ્રાય જાણીને કાર્યવાહક સમિતિ કરશે.

૫. અધિવેશનમાં **મતાધિકાર** નીચેના સભ્યોને રહેશે –

અ. પ્રતિનિધિની ટીકીટ ખરીદનારને,

બ સ્વાગત સમિતિની ટીકીટ ખરીદનારને;

ક કોન્ફરન્સની જનરલ કમિટીના સર્વે સભ્યોને,

નોંધ:—પ્રતિનિધિ અને સ્વાગત સમિતિના ટિકીટના દર અધિવેશન પહેલાં કાર્યવાહક સમિતિ નક્કી કરશે.

૯ અધિવેશનની **વિષય વિચારિણી સમિતિની** રચના આ પ્રકારે થશે —

અ. જનરલ કમિટીના ઉપસ્થિત સભ્યોના ૨૫%

બ. પ્રત્યેક પ્રાંતના પાંચ સભ્ય.

ક. સ્વાગત સમિતિના સભ્યોમાંથી ૨૫ સભ્ય.

ખ. અધિવેશનના પ્રમુખ તરફથી ૫ સભ્ય,

ગ. કોન્ફરન્સના વર્તમાન સર્વ અધિકારીઓ.

ઘ. ભૂતકાળના પ્રમુખો.

(૧૧) અધિવેશનના પ્રમુખની સમયમર્યાદા

અધિવેશનના પ્રમુખ ત્યાર બાદ બે વર્ષ સુધી કોન્ફરન્સ તેમજ જનરલ કમિટીના પ્રમુખ રહેશે; બે વર્ષમાં અધિવેશન ન થાય તો ત્યારબાદ મળનારી જનરલ કમિટીની બેઠકમાં બે વર્ષ માટે પ્રમુખની ચૂંટણી થશે.

(૧૨) વિશિષ્ટ ફંડ

વિશિષ્ટ ઉદ્દેશ્ય વડે કોન્ફરન્સને મળેલ ફંડોમાંથી કોન્ફરન્સના ખર્ચ માટે કાર્યવાહક સમિતિ નિશ્ચિત કરે તે મુજબ ૧૦% સુધી લેવાનો કોન્ફરન્સને અધિકાર રહેશે,

વિશિષ્ટ ઉદ્દેશ માટે મળેલ ફંડોનો ઉપયોગ તે ઉદ્દેશ માટે નિરૂપયોગી અથવા અશક્ય જણાય તો શ્રી કોન્ફરન્સના બીજા ઉદ્દેશ માટે તે ફંડ અથવા તેની આવકનો ઉપયોગ કરવાની સત્તા જનરલ કમિટીની ખાસ બેઠકને રહેશે

(૧૩) ટ્રસ્ટીઓ

પોતાની પ્રથમ બેઠક વખતે જનરલ કમિટી આજીવન સભ્યો, પેટ્રન અને વાઇસ પેટ્રનોમાંથી પાંચ ટ્રસ્ટીઓની ચૂંટણી કરશે; ત્યાર બાદ દર પાંચ વર્ષે જનરલ કમિટી ટ્રસ્ટીઓની ચૂંટણી કરશે;

ટ્રસ્ટીની કોઇ પણ જગ્યા ખાલી પડે ત્યારે જનરલ કમિટી ચૂંટણી કરશે.

(૧૪) કોન્ફરન્સની મિલકત

૧. જનરલ કમિટીએ મંજૂર કરેલ બજેટ અનુસાર આવશ્યક રકમ કોન્ફરન્સના મંત્રીઓ પાસે રહેશે; તે ઉપરાંતની કોન્ફરન્સની રોકડ, જામીનગીરીઓ, જરૂરી ખત; દસ્તાવેજો, વગેરે કોન્ફરન્સના ટ્રસ્ટીઓ પાસે રહેશે;

૨. જનરલ કમિટી અથવા કાર્યવાહક સમિતિના પ્રસ્તાવ અનુસાર, ટ્રસ્ટીઓ કોન્ફરન્સના મંત્રીઓને આવશ્યક રકમ આપશે;

(૧૫) સ્થાવર મિલ્કત

કોન્ફરન્સની બધી સ્થાવર મિલ્કત ટ્રસ્ટીઓના નામે રહેશે,

(૧૬) કરાર, વગેરે

કોન્ફરન્સ વતી સ્થાવર મિલકત સાથે સંબંધ ન હોય તેવા ખતપત્રો, લખાણો અને કરારો કોન્ફરન્સના મંત્રીઓના નામે થશે; કોન્ફરન્સને દાવો કરવો પડે તો કોન્ફરન્સના મંત્રીઓના નામે થશે

(૧૭) કાર્યાલય

કોન્ફરન્સનું કાર્યાલય જનરલ કમિટી નક્કી કરે તે સ્થાન પર રહેશે.

(૧૮) વહીવટી વર્ષ

કોન્ફરન્સનું વહીવટી વર્ષ તા ૧ જુલાઈથી તા. ૩૦ જુન સુધીનું રહેશે.

(૧૯) ચૂંટણી અને મતાધિકાર સંબંધી મતભેદ અંગે

ચૂંટણી અથવા મતાધિકાર સંબંધી કોઇ મતભેદ અથવા તકરાર હોય અથવા નિર્ણયની આવશ્યકતા હોય ત્યારે કાર્યવાહક સમિતિનો નિર્ણય છેવટનો ગણાશે.

(૨૦) બંધારણમાં ફેરફાર

આ બંધારણમાં ફેરફાર કરવાની સત્તા જનરલ કમિટીને રહેશે, બેઠકમાં ઉપસ્થિત સભ્યોની ૩/૪ બહુમતિથી બંધારણમા ફેરફાર થઇ શકશે. બંધારણમાં ફેરફારની સ્પષ્ટ વિગત કાર્ય વિવરણ (Agenda) માં દર્શાવવી જોઇશે

(૨૧) મધ્યકાલીન વ્યવસ્થા

૧. આ બંધારણને અમલમાં લાવવા માટે અને તે મુજબ પ્રથમ જનરલ કમિટી અને કાર્યવાહક સમિતિની રચના કરવા માટે જે કંઇ પગલા લેવા પડે તે કરવાની સત્તા આ અધિવેશનના પ્રમુખને આપવામાં આવે છે.

૨. આ બંધારણને અમલમા લાવવામાં કાંઇ પણ મુશ્કેલી અથવા અસુવિધા માલૂમ પડે તો તે દૂર કરવા માટે યોગ્ય પગલા લેવાની સત્તા આ અધિવેશનના પ્રમુખને રહેશે.

૩. આ બંધારણ ચૈત્ર શુદ ૧૩ સં. ૨૦૦૬ (ચૈત્રી સં. ૨૦૦૭)થી અમલમાં આવશે.

નોંધ :— કોઇ કારણસર આ સમય દરમ્યાન, આ બંધારણ અનુસાર સભ્ય બનાવવાનું અને જનરલ કમિટી તેમજ કાર્યવાહક સમિતિની રચના કરવાનું ન બની શકે તો ત્યાં સુધી જુના બંધારણ અનુસાર સભ્યો. જનરલ કમિટી અને કાર્યવાહક સમિતિ ચાલુ રહેશે;

આ સિવાયની બાબતમાં આ બંધારણ અમલમાં આવશે અને આ બધી કલમોમાં બતાવાયેલ સર્વ બાબતનો નિર્ણય આ અધિવેશનના પ્રમુખ કરશે.

શ્રી અખિલ ભારતીય શ્વેતાંબર સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સ સંચાલિત પ્રવૃત્તિઓનો

સંક્ષિપ્ત પરિચય

કોન્ફરન્સ તરફથી પ્રગટ થએલું સાહિત્ય

(૧) અર્ધમાગધી કોષ-આગમ તથા માગધી ભાષામા આ કોષ પ્રમાણભૂત મનાય છે શતાવધાની પ. મુનિશ્રી રત્નચંદ્રજી મ. કૃત આ શબ્દકોષ ૫ ભાગમાં પ્રગટ થએલ છે. દરેક ભાગની છુટક કિમત રૂ ૫૦) છે. પાચેય ભાગના સેટની કિમત રૂ. ૨૫૦) છે

ઇંગ્લેડ, ફ્રાન્સ, જર્મની વિગેરે પશ્ચિમના ઘણા દેશોમા આ કોષ મોકલાવેલ છે અને અત્યારે પણ ત્યાંથી આ કોષ માટે માગણીઓ ચાલુ છે.

(૨) ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર—શ્રી સતબાલજી કૃત હિન્દીમા અનુવાદ. પૃ. ૪૫૪ કિમત રૂ. ૨)

(૩) દશવૈકાલિક સૂત્ર—શ્રી સતબાલજી કૃત. હિન્દીમાં અનુવાદ. પૃ. ૧૯૦ કિમત રૂ. ૦ાા

(૪) આચારાગ સૂત્ર—શ્રી. ગો. જી. પટેલ કૃત છાયાનુવાદ. હિન્દીમાં પૃ. ૧૪૪ કિમત રૂ. ૦ાા

(૫) સૂત્ર કૃતાંગ સૂત્ર—શ્રી ગો જી. પટેલ કૃત છાયાનુવાદ હિન્દીમાં પૃ. ૧૪૨ કિમત ૦ાા.

(૬) સામાયિક-પ્રતિક્રમણુ સૂત્ર—સામાયિક અને પ્રતિક્રમણુ સરળ અને શુદ્ધ ભાષામાં અર્થ સહિત પ્રગટ કરેલ છે ગુજરાતી આવૃત્તિની કિમત રૂ ૦-૧૦-૦ પોસ્ટેજ ચાર્જ અલગ.

મળવાનું ઠેકાણુ—શ્રી અ. ભા. શ્વે. સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સ, ૧૩૯૦, ચાંદની ચોક, દિલ્હી ૬

કોન્ફરન્સ સંચાલિત પ્રવૃત્તિઓનો સંક્ષિપ્ત પરિચય

શ્રી અખિલ ભારતવર્ષીય શ્વેતાબર સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સની સ્થાપના ઇ. સ. ૧૯૦૬માં થઇ હતી. મોરબીમાં તેનુ સૌથી પહેલુ અધિવેશન થયુ હતું. તે વખતે જનતામાં પણ ઉત્સાહ હતો તેથી ઉત્તરોત્તર પ્રગતિ થતી ગઇ અને દરેક વર્ષે અધિવેશનો પણ થવા લાગ્યા. મોરબીનાં અધિવેશન પછી ઇ. સ. ૧૯૦૮માં રતલામમાં, ૧૯૦૯માં અજમેરમા, ૧૯૧૦મા જાલધરમા, ૧૯૧૩માં સિકન્દ્રાબાદમા અને ૧૯૨૫મા મલકાપુરમાં છઠ્ઠું અધિવેશન થયુ પછી કોન્ફરન્સ ઓફિસ મુબઇમા આવી મુબઇ ઓફિસના પ્રયત્નથી સન ૧૯૨૬મા મુબઇમા, ૧૯૨૭મા બીકાનેરમાં, ૧૯૩૩મા અજમેરમા, ૧૯૪૧મા ઘાટકોપરમાં, ૧૯૪૯મા મદ્રાસમાં, અને ૧૯૫૨મા સાદડીમાં બારમુ અધિવેશન કરવામા આવ્યુ. આ અધિવેશન દરેક રીતે પૂર્ણ સફળ થયુ. સ્થાનકવાસી જૈન સમાજમા ક્રાન્તિની ચિનગારી પ્રગટ કરનાર અજમેરનુ અધિવેશન હતુ. બીજા શબ્દોમા કહેવામા આવે તો અજમેરમા સ્થાનકવાસી જૈન સમાજના અભ્યુદયનુ બીજારોપણ થયુ કે જે આગળ વધી ઘાટકોપરમાં નવપલ્લવિત થયુ. મદ્રાસમા તેનો પૂરો વિકાસ થયો અને સાદડીમાં તો સમાજે તેના મધુર ફળોનુ આસ્વાદન પણ કર્યું.

લગભગ ૨૭ વર્ષ સુધી કોન્ફરન્સની ઓફિસ મુબઇમા રહી. ઇ. સ. ૧૯૫૩મા કોન્ફરન્સની જનરલ કમિટીએ ઓફિસ દિલ્હી લઇ જવાનો નિર્ણય કર્યો અને તે પ્રમાણે ફેબ્રુઆરી ૧૯૫૩મા કોન્ફરન્સ ઓફિસ મુબઇથી દિલ્હી આવી

દિલ્હી ભારતની રાજધાની હોવાથી અને તટસ્થ શહેર હોવાથી સર્વત્ર આ નિર્ણયનુ સ્વાગત થયુ.

કોન્ફરન્સનાં રચનાત્મક કાર્યો

(૧) પંજાબ—સિંધ સહાયતા ફંડ

હિંદુસ્તાનના વિભાજનથી પાકિસ્તાનમા જે ઘોર અત્યાચાર થયો તે વખતે આપણા સ્વધર્મી ભાઇઓ પણ મહાન સંકટમાં ફસાઇ ગયા હતા આ વિષમ પરિસ્થિતિમા આવી પડેલા આપણા ભાઇઓના જીવન બચાવવા માટે અને તેમને યોગ્ય સહાયતા પહોચાડવા માટે કોન્ફરન્સે "જૈન પ્રકાશ" દ્વારા સમસ્ત સમાજને સહાયતા માટે ભારપૂર્વક વિનંતિ કરી. સમસ્ત જૈન સમાજને માટે આ પ્રશ્ન ઘણો મહત્ત્વનો હતો, અને તે તાત્કાલિક નિર્ણય માગતો હતો. ફલત ચારે બાજુથી રૂપિયાનો વરસાદ વરસવા લાગ્યો. બધા મળીને આ ફંડમા પોણા બે લાખ રૂપિયા ભેગા થયા; ચાર્ટર્ડ વિમાનો, રેલ્વે, મોટર વિગેરે વાહનો દ્વારા કોન્ફરન્સે આ સંકટગ્રસ્ત ભાઇઓને સુરક્ષિત

સ્થાન પર પહોંચાડયા. આ ફંડમાંથી લગભગ રૂ. ૧,૫૦,૦૦૦) એક લાખ પચાસ હજાર લોન અને પુનર્વાસના કાર્યમાં વપરાયા.

બાકીના રૂપિયા સ્વધર્મી સહાયક ફંડમાં (અધિવેશનના આદેશાનુસાર) જમા કરવામાં આવ્યા, જેમાંથી આજે પણ ગરીબ ભાઇ-બહેનોને સહાયતા આપવામા આવે છે.

આ ફંડમાથી મુખ્યત સ્થાનકવાસી જૈન ભાઇઓ સિવાય શ્વેતાંબર તથા દિગબર જૈન ભાઇઓને અને જૈનેતર ભાઇઓને પણ કોઇ પણ ભેદભાવ રાખ્યા વિના સહાયતા અપાય છે, તે ખાસ ઉલ્લેખનીય વાત છે.

વિભાજનના સમયે તો પં નહેરૂ, ડૉ. જોન મથાઇ, શ્રીમતિ જોન મથાઇ અને તે વખતના પુનર્વાસ મંત્રી શ્રી મોહનલાલ સકસેનાની વિશેષ સૂચનાઓથી પણ ઘણા જૈનેતર ભાઇઓને સહાયતા આપવામા આવી હતી. તે વખતે આપણા આ રાષ્ટ્રનેતા કોન્ફરન્સનાં આ કાર્યથી ઘણા પ્રભાવિત થયા હતા.

(૨) શ્રાવિકાશ્રમ ફંડ

સમાજની દુખી અને ગરીબ બહેનોને શિક્ષા આપી તથા હુન્નરઉદ્યોગ શીખવાડી સ્વાવલબી બનાવવા માટે કોન્ફરન્સે શ્રાવિકાશ્રમનો પાયો નાખ્યો હતો. તેને માટે સવાલાખ રૂપિયાથી પણ વધારે ફંડ કરવામાં આવ્યુ હતુ. મુબઇના ઉપનગર ઘાટકોપરમા ૮૫ હજાર રૂપિયામાં એક મકાન ખરીદ કરવામા આવ્યુ, પરતુ તે ખાલી કરાવી શકાયુ નહિ. તેથી તેની ઉપર એક બીજો નવો માળ લગભગ ૪૫ હજાર રૂપિયાને ખર્ચે બનાવવામા આવ્યો છે.

(૩) સઘ ઐક્ય યોજના

કોન્ફરન્સની સ્થાપના થયાને આજે ૪૬ વર્ષ વીતી ચુકયા છે. આ લાંબી અવધિમા કોન્ફરન્સે કાઇ પણ અપૂર્વ અને અદ્વિતીય કાર્ય કર્યું હોય તો તે સંઘ ઐક્યયોજનાનું છે. આ કાર્ય માત્ર રચનાત્મકજ નહિ પરતુ ક્રાન્તિકારી અને આધ્યાત્મિક ઉન્નતિનુ પોષક પણ કહી શકાય તેમ છે. વર્ષોના પ્રયત્નોથી આ યોજના દ્વારા સાદડી (મારવાડ) માં શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રમણ સઘની સ્થાપના થઇ લગભગ બત્રીસમાથી બાવીસ સપ્રદાયોનું એકીકરણ થયુ. સપ્રદાયોના ઉપસ્થિત સાધુઓ પોતપોતાની શાસ્ત્રોક્ત પદવીઓ છોડીને શ્રમણ-સઘમાં સમિલિત થયા. આપણા દેશમાં રાજકીય ક્ષેત્રમા જેમ સાતસો રાજ્યોનુ વિલીનીકરણ થઇ સંયુક્ત રાજ્યોની સ્થાપના થઇ, તેવી જ રીતે લગભગ દોઢ હજાર સાધુ સાધ્વીઓનુ એક જ આચાર્યની નેશ્રાયમાં સગઠન થયુ. સ્થા. જૈન સમાજની આ અજોડ સિદ્ધિ કહી શકાય તેમ છે. ગુજરાત, સૌરાષ્ટ્ર અને કચ્છના સપ્રદાયોનું એકીકરણ થવાનુ હજુ બાકી છે. તેને માટે પ્રયત્નો ચાલે છે. આ બધા સપ્રદાયો શ્રમણ સઘમા મળી જશે ત્યારે શ્રમણ સંઘ આપણી સ્થા જૈન સમાજની એકતાનુ એક અપૂર્વ પ્રતીક બની જશે.

શ્રમણ સંઘની પેઠે શ્રાવકોની પણ એકતા થવી જરૂરી છે, કેમકે શ્રાવકોના સગઠન ઉપર જ શ્રમણ સઘનો પાયો અવલબિત છે. તેને માટે દરેક જગ્યાએ શ્રાવક સઘોની સ્થાપના કરવાના પ્રયત્નો ચાલુ છે.

(૪) ધાર્મિક પાઠ્ય પુસ્તક પ્રકાશન

સમસ્ત ભારતની સ્થાનકવાસી જૈન પાઠશાળાઓમા એક જ પ્રકારનુ ધાર્મિક શિક્ષણ આપવામાં આવે તે માટે કોન્ફરન્સે પાઠાવલીના ક્રમશ સાત ભાગો તૈયાર કરાવ્યા છે. તેમાથી પાંચ ભાગ તો હિદી અને ગુજરાતી બને ભાષામા પ્રગટ થઇ ચૂકયા છે. આ પુસ્તકોની અત્યધિક માગણી થવાથી પહેલા ભાગની સશોધિત તૃતીયાવૃત્તિ અને બીજા ભાગની દ્વિતીયાવૃત્તિ પ્રગટ કરવામા આવી છે. આગળના બાકી બે ભાગો પણ યથાસમય જલ્દી પ્રગટ કરવામા આવશે.

જો આ પુસ્તકો મોટી સખ્યામાં છપાવવામાં આવે અને આર્થિક સહયોગ માટે દાનવીર શ્રીમતોની સહાયતા પ્રાપ્ત થાય તો વિદ્યાર્થીઓને ઓછી કિંમતે આ પાઠાવલી ક્રમ મળી શકે તેમ છે. અમે ઇચ્છીએ છીએ કે આપણા દાનવીર શ્રીમતો આર્થિક સહયોગ આપે કે જેથી બાળકોનાં હૃદયમા ધાર્મિક સંસ્કારોનુ સિંચન કરવા માટે આ પાઠાવલીનો બહોળો પ્રચાર થઇ શકે.

હિન્દી અને ગુજરાતી પાઠાવલીના પાંચ ભાગોની કિમત આ પ્રમાણે છે :—

		રૂ. આ. પા.
જૈન પાઠાવલી	ભાગ ૧ લો	૦—૬—૦
,,	ભાગ ૨ જો	૦—૧૪—૦
,,	ભાગ ૩ જો	૧—૦—૦
,,	ભાગ ૪ થો	૧—૨—૦
,,	ભાગ ૫ મો	૧—૦—૦

(૫) આગમ બત્રીસી

સ્થાનકવાસી જૈન સમાજમા એવી કેઇ આગમ બત્રીસી નથી કે જે પ્રમાણભૂત કહી શકાય. થોડા વર્ષો પહેલાં સ્વ. પૂજ્યશ્રી અમોલકઋષિજી મહારાજે ઘણો પરિ-શ્રમ લઇ એક આગમ બત્રીસી તૈયાર કરી હતી, તેમાં ઘણી ત્રુટિઓ રહી જવા પામી છે અને તેની છપાઇ પણ સારી નથી. ત્યાર બાદ અન્ય મુનિરાજોએ કેટલાક સૂત્રોનુ સપાદન કર્યું છે અને તે પ્રગટ પણ થયા છે, પરતુ સપૂર્ણ આગમ બત્રીસીની આવશ્યકતા તો હજુ પણ એમ ને એમ ચાલુ રહી છે. આની પૂર્તિ માટે કોન્ફરન્સે સ્થા. જૈન સમાજના અગ્રગણ્ય બહુશ્રુત વિદ્વાન મુનિરાજોની અને શાસ્ત્રજ્ઞ શ્રાવકોની એક સમિતિ બનાવી, આગમસંપાદનનુ આ મહાન કાર્ય શરૂ કરી દીધુ. એકી સાથે સાત વર્ષો સુધી આ કાર્ય ચાલુ રહ્યુ. ફલત્ આજે આગમ બત્રીસીનુ સપાદન કાર્ય પૂરૂં થઇ ગયુ છે આજ સુધીમા તો એક બે સૂત્ર છપાઇને પણ પ્રગટ થઇ ગયા હોત, પરતુ સાદડી અધિવેશનમા એવો નિર્ણય લેવાયો કે આગમ પ્રકાશનનુ કાર્ય શ્રમણ સઘના સાહિત્ય મત્રી–મુનિરાજોને બતાવીને જ કરવામાં આવે. તેથી આ કાર્યમા વિલબ થઇ રહ્યો છે. શ્રમણ સઘના મુનિરાજો પોતાની ગુચ ઉકેલવામાં પડી ગયા, જેથી આજ સુધી તેઓશ્રી એક પણ સૂત્ર જોઇ શકયા નથી. તેમના જોઇ ન શકવાથી જ પ્રકાશનમા વિલબ થઇ રહેલ છે. અમારી ધારણા છે કે હવે આ કાર્યમા વધારે વિલબ થશે નહિ.

આગમ પ્રકાશનનુ કાર્ય વિશાળ છે. કારણવશ તેમાં જરા વિલબ થયો છે તો ક્ષમ્ય સમજવો જોઇએ. શ્રમણસઘના સાહિત્ય મત્રી–મુનિરાજોના તપાસ્યા બાદ આ કાર્ય શીઘ્ર શરૂ કરવામા આવશે

(૬) અન્ય સહાયતા કાર્ય

કોન્ફરન્સની પાસે નીચે પ્રમાણે ફડો છે જેમાથી સ્થાનકવાસી જૈન ભાઇ–બહેનોને પ્રાતના કોઇપણ ભેદભાવ વિના યોગ્ય સહાયતા કરવામા આવે છે.

સ્ત્રી શિક્ષણ અને વિધવા સહાયતા ફડ

આ ફડમાથી વિધવા બહેનોને અને વિદ્યાભ્યાસ કરનાર બહેનોને છાત્રવૃત્તિ રૂપે સહાયતા આપવામાં આવે છે. કોઇ પણ અનાથ, દીન, દુખી બહેન અરજી કરી કોન્ફરન્સ પાસેથી સહાયતા મેળવી શકે છે. આખા હિન્દુસ્તાનમાંથી સેકડો અરજીઓ આવે છે, કે જે લગભગ બધી સ્વીકારવામાં આવે છે અને ફડના પ્રમાણમા દરેકને યથાયોગ્ય સહાયતા મોકલવામાં આવે છે

પુજ્યપાઞન વીરચદ મોહનલાલ વિદ્યોત્તેજક ફડ

આ ફડમાથી મેટ્રીક સુધીના વિદ્યાર્થીઓને દર વર્ષે સ્કુલની ફી અને પુસ્તકો માટે સહાયતા આપવામાં આવે છે દરેક પ્રાતના વિદ્યાર્થીઓ આ યોજનાનો લાભ લે છે.

શ્રી આર. વી. દુર્લભજી છાત્રવૃત્તિ ફંડ

આ ફડમાથી કોલેજોમા અભ્યાસ કરનાર વિદ્યાર્થી-ઓને દર વર્ષે લગભગ રૂ. ૩૦૦૦) સ્કોલરશીપ અપાય છે.

સ્વધર્મી સહાયક ફડ

આ ફડમાંથી ગરીબ ભાઇ–બહેનોને તાત્કાલિક સહાયતા આપવામાં આવે છે.

ઉપરોકત ફડમાથી સહાય મેળવવા માટે અરજી-ઓની સખ્યા ઘણી હોય છે, પરતુ ફડોમાં વિશેષ રકમ ન હોવાથી અને આપવામાં આવતી રકમ ઘણી થોડી હોવાથી દરેકને વધારે પ્રમાણમાં યોગ્ય સહાયતા મોકલી શકાતી નથી. કેટલાક ફડો તો લગભગ પૂરા થવા આવ્યા છે, તેથી **દાનવીર શ્રીમતોએ ઉદારતા પ્રદ-ર્શિત કરીને આ ફડોની રકમમાં વધારો કરવો જોઇએ,** જેથી સમાજના દીન દુખી ભાઇ બહેનોને થોડી ઘણી પણ મદદ પહોચતી રહે.

(૭) કોન્ફરન્સનું મુખપત્ર જૈન પ્રકાશ

કોન્ફરન્સનુ મુખપત્ર જૈન પ્રકાશ' (પાક્ષિક) છેલ્લા ૪૨ વર્ષોથી હિન્દી અને ગુજરાતી ભાષામાં નીકળે છે. સ્થા. જૈન સમાજના સાધુ–સાધ્વીઓના આ પત્રમા પ્રામાણિક અને તાજા વિહાર સમાચાર તથા પ્રવચનો આપવામા આવે છે. કોન્ફરન્સની પ્રવૃત્તિ-ઓના સમાચારો પણ વખતોવખત આપવામા આવે છે. ઉપરાત સામાજિક, તાત્ત્વિક, ધાર્મિક લેખો, કવિતાઓ અને વાર્તાઓ પણ પ્રગટ કરવામા આવે છે. વખતોવખત યોગ્ય માર્ગદર્શન અને વિશિષ્ટ પ્રશ્નોની ચર્ચા પણ તેમાં આપવામાં આવે છે. તેનુ વાર્ષિક લવાજમ રૂા ૬) છે. દરેક સ્થા. જૈન ભાઇ–બહેને સમાજની વર્તમાન

પરિસ્થિતિઓથી પરિચિત રહેવા માટે "જૈન પ્રકાશ"ના ગ્રાહક થવું અત્યાવશ્યક છે.

કૉન્ફરન્સના સભ્યો

કોઇ પણ સ્થાનકવાસી જૈન ભાઇ કે બહેન, જે ૧૮ વર્ષથી ઉપરના હોય તે કોન્ફરન્સનાં સભ્ય બની શકે છે. પહેલાં સભ્ય ફી રૂપિયા ૧૦) જ હતી જેથી દરેક ભાઇ તેના સભ્ય બની શકતા ન હતા. પરંતુ ત્યાર બાદ મદ્રાસ અધિવેશનમાં નવું બંધારણ પાસ કરી સભ્ય ફી રૂા. ૧) પણ કરવામાં આવેલ છે. તેથી દરેક વ્યક્તિ તેના સભ્ય બની શકે છે. કોન્ફરન્સના સભ્યો વધારેમા વધારે સંખ્યામાં હોય અને તે સ્થાનકવાસી જૈનોની સાચી પ્રતિનિધિ સંસ્થા બની શકે તેટલા માટે જ ઉપરોક્ત પરિવર્તન કરવામા આવ્યુ છે.

કોન્ફરન્સના સભ્યો જેટલા વધુ બનશે તેટલી કોન્ફરન્સની શક્તિ વધતી જશે. તેથી કોન્ફરન્સની શક્તિમા વધારો કરવા માટે, તેની પ્રવૃત્તિઓને વિકસાવવા માટે દરેક ભાઇ બહેનો તેના મેમ્બર બને એવી અમારી વિનંતિ છે.

કોન્ફરન્સના મેમ્બર નીચે પ્રમાણે બની શકાય છે

રૂા ૫૦૧) એક જ વખતે આપનાર કૉન્ફરન્સના 'પ્રથમ શ્રેણીના આજીવન સદસ્ય' ગણાશે.

રૂા. ૨૫૧) એક જ વખતે આપનાર 'દ્વિતીય શ્રેણીના આજીવન સદસ્ય' ગણાશે.

રૂા ૧૦) વાર્ષિક આપનાર "સહાયક સદસ્ય" બનશે.

ઉપરના ત્રણે પ્રકારના સભ્યોને "જૈન પ્રકાશ" કાંઇ પણ લવાજમ લીધા વિના મોકલવામાં આવે છે.

આજીવન સભ્યોને "જૈન પ્રકાશ" જીવન પર્યન્ત મોકલવામાં આવશે અને રૂા. ૧૦) વાળા સહાયક સભ્યોને તેઓ જ્યા સુધી સભ્ય તરીકે ચાલુ રહેશે ત્યાં સુધી મોકલવામાં આવશે.

રૂા. ૧) વાર્ષિક આપનાર "સામાન્ય સભ્ય" ગણાશે. આવા સભ્યો "જૈન પ્રકાશ" મંગાવવા ઇચ્છતા હોય તો તેમણે રૂા. ૬) લવાજમ વધારે ભરવુ પડશે.

શક્તિ અનુસાર દરેક ભાઇ બહેને કોન્ફરન્સના સભ્ય બની સમાજ–સેવાનાં કાર્યમાં પોતાનો સક્રિય સહયોગ દેવો જોઇએ.

પ્રાંતીય શાખાઓ

કોન્ફરન્સના પ્રચાર અને સેવાક્ષેત્રો વધારવા માટે પ્રાંતીય શાખાઓ ખોલવાનો નિર્ણય થયો છે, તે પ્રમાણે મુંબઇ, મધ્યભારત, મહારાષ્ટ્ર અને રાજસ્થાનમા પ્રાંતીય શાખાઓ ખોલવામાં આવી છે. કલકત્તા (બંગાલ, બિહાર, આસામ માટે), મદ્રાસ (મદ્રાસ પ્રાંત, મૈસુર, કેરલ માટે), રાજકોટ (કચ્છ, સૌરાષ્ટ્ર, ગુજરાત માટે), અને પંજાબ વિગેરેમાં પણ પ્રાંતીય શાખાઓ ખોલવાના પ્રયત્નો ચાલુ છે.

જે પ્રાંતોમા પ્રાંતીય શાખાઓ ખૂલી નથી ત્યાના આગેવાન ગૃહસ્થોએ પોતપોતાના પ્રાંતમાં કોન્ફરન્સની પ્રાંતીય શાખા ખૂલે એવા પ્રયત્ન કરવા જોઇએ.

કૉન્ફરન્સની કાર્યવાહક સમિતિ (મેનેજીંગ કમિટી)

૧ શેઠ શ્રી ચમ્પાલાલજી બાંઠીયા ભીનાસર (બીકાનેર) પ્રમુખ

૨ ડૉ. શ્રી દૌલતસિંહજી કોઠારી M Sc. Ph. D. દિલ્હી, ઉપપ્રમુખ

૩ શ્રી. આનંદરાજ સુરાણા M L. A. ,, માનદમંત્રી

૪ ,, ભીખાલાલ ગિરધરલાલ શેઠ ,, ,,

૫ ,, ધીરજલાલ કે. તુરખિયા ,, ,,

૬ ,, ઉત્તમચંદ જૈન B A. LL.B. ,, ,,

૭ ,, ગિરધારીલાલ જૈન M A. ,, ,,

૮ ,, કુંદનમલજી ફિરોદિઆ B.A, LL B. અહમદનગર સદસ્ય

૯ ,, શેઠ મોહનમલજી ચોરડિયા મદ્રાસ ,,

૧૦ ,, ,, અચલસિંહજી જૈન આગ્રા ,,

૧૧ ,, વનેચંદ દુર્લભજી ઝવેરી જયપુર ,,

૧૨ ,, ચીમનલાલ ચકુભાઇ શાહ M P. મુંબઇ ,,

૧૩ ,, દુર્લભજી કેશવજી ખેતાણી ,, ,,

૧૪ ,, ચીમનલાલ પોપટલાલ શાહ ,, ,,

૧૫ ,, ગિરધરલાલ દામોદર દફતરી ,, ,,

૧૬ ,, હરજસરાય જૈન B.A. અમૃતસર ,,

૧૭ ,, જવાહરલાલ મુણોત અમરાવતી ,,

૧૮ ,, નાથુલાલજી સેઠિયા રતલામ ,,

૧૯ ,, કાનમલજી નાહટા જોધપુર ,,

૨૦ ,, દુર્લભજી શામજી વિરાણી રાજકોટ ,,

૨૧ ,, ફુસરાજજી બચ્છાવત કલકત્તા ,,

૨૨ શેઠ રામાનંદજી જૈન B.A LL.B. દિલ્હી ,,
૨૩ ,, ભિખુરામજી જૈન ,, ,,
૨૪ ,, મનોહરલાલજી જૈન એડવોકેટ દિલ્હી સદસ્ય
૨૫ ,, રતનલાલજી પારખ ,, ,,
૨૬ ,, ગુગનમલજી જૈન ,, ,,
૨૭ ,, નવીનચદ્ર રામજીભાઇ કામાણી ,, ,,
૨૮ ,, વિલાયતીરામ જૈન ન્યુ દિલ્હી ,,
૨૯ ,, પન્નાલાલજી જૈન (સબ્જીમડી) દિલ્હી ,,
૩૦ ,, જસવતસિહજી જૈન ,, ,,
૩૧ ,, ડો. ઇન્દ્રચદ્ર જૈન M. A. Ph. D. ,, ,,

શ્રી ગુર્જર શ્રાવક સંમેલન, રાજકોટ

સમાજના ઘડવૈયા

સ્વ. સુરજમલ લલ્લુભાઇ ઝવેરી

શ્રી માણેકલાલ અમુલખરાય મહેતા

સંયમ અને શિસ્ત

સ્વ. શ્રી નથમલજી ચોરડીયા

શ્રી અ. ભા. શ્વે. સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સ

સુદૃઢ, સમૃદ્ધ અને પ્રગતિશીલ કેમ બને?

યોજના અને અપીલ

યોજના

આપણી આ કોન્ફરન્સ (મહાસભા) ભારતવર્ષના સમસ્ત સ્થાનકવાસી (૮ આઠ લાખ) જૈનોની એકમાત્ર પ્રતિનિધિ સસ્થા છે આ કોન્ફરન્સની સ્થાપના ઇ. સ. ૧૯૦૮માં મોરબી (સૌરાષ્ટ્ર)માં થઇ હતી આ કોન્ફરન્સ–માતાની કૃપાથી જ આપણે કાશ્મીરથી કોલબો અને કચ્છથી બર્મા સુધી—ભારતના ખૂણે ખૂણે પથરાયેલા આપણા સ્વધર્મી ભાઇઓના પરિચયમા આવી શકયા, એક બીજાના સુખ–દુઃખના સમભાગી બની શકયા અને પારસ્પરિક સહયોગથી ધાર્મિક, સામાજિક, રાષ્ટ્રીય અને વ્યાપારિક સપર્ક વધારીને વિકાસ સાધી શકયા.

આપણી કોન્ફરન્સની લગભગ ૫૦ વર્ષની કારકિર્દીમાં ભિન્નભિન્ન સ્થળોએ ૧૨ અધિવેશનો થયા છે અને સમાજ–વિકાસની વિચારણા કરવા માટે જનરલ કમિટીની બેઠકો તો પ્રતિવર્ષ થતી રહે છે. કોન્ફરન્સે સ્થાનકવાસી જૈનસમાજ તથા ધર્મ સબધી અનેક મહત્વપૂર્ણ પ્રસ્તાવો અને કાર્યો કર્યા છે, જે જૈન ઇતિહાસમાં સુવર્ણાક્ષરોથી અકિત રહેશે. જેમાના કેટલાક નીચે પ્રમાણે છે.–

૧. 'જૈન પ્રકાશ' પત્ર હિન્દી તથા ગુજરાતી ભાષામા ૩૨ વર્ષોથી પાક્ષિક તેમજ સાપ્તાહિકરૂપે નિયમિત પ્રકાશિત થઇ રહ્યુ છે. (૨) જૈન ટ્રેનિગ કોલેજ રતલામ, બીકાનેર, જૈતુગ્મા સફલતાપૂર્વક ચલાવવામા આવી. (૩) મુબઇ તથા પુનામાં જૈન બોર્ડિંગની સ્થાપના કરવામાં આવી. (૪) પજાબ તથા સિધના નિર્વાસિત ભાઇઓ માટે ૧ લાખ ૫૦ હજાર રૂા એકત્રિત કરી સહાયતા આપવામા આવી. ( ) અર્ધ-માગધી બૃહત્ કોષના ૫ ભાગો, કેટલાંક આગમોનો અનુવાદ તથા ધાર્મિક પાઠ્ય-પુસ્તકોનુ પ્રકાશન કર્યું. (૬) સ્થાનકવાસી શ્રમણ સપ્રદાયોનુ 'શ્રી વર્ધમાન શ્વે. સ્થા. જૈન શ્રમણ સઘ રૂપે સગઠન કર્યું (૭) જીવ-દયા, સ્વધર્મી સહાયતા, વિદ્યાર્થી સહાયતા, સામાજીક સુધાર આદિ અનેક સમાજોપયોગી કાર્યો કર્યા અને કરવામા આવે છે (૮) શ્રાવિકાશ્રમ માટે સવા લાખ રૂપિયાનુ ભવ્ય ભવન ઘાટકોપરમા બનાવવામાં આવેલ છે

કોન્ફરન્સની અનેક પ્રકારની પ્રવૃત્તિઓને વિશેષ પ્રગતિ-શીલ બનાવવા અને સ્થા જૈન સમાજની વિશેષ સેવા કરવા માટે સ્થા. જૈન શ્રીમાનો, વિદ્વાનો, સપાદકો અને યુવકો વગેરેના હાર્દિક સહયોગની અમે આશા રાખીએ છીએ, એટલુ જ નહિ પણ કાર્ય માટે અમે ત્યાગી મુનિવરો અને મહાસતીઓના આશીર્વાદ અને પથ–પ્રદર્શનની પણ પ્રાર્થના કરીએ છીએ.

સોજતમા મત્રી મુનિવરોની બેઠક વખતે કોન્ફરન્સની જનરલ સભા (તા. ૨૫-૧-૫૩)મા કોન્ફરન્સનુ પ્રધાન કાર્યાલય દિલ્હીમા લઇ જવાનો દીર્ઘદૃષ્ટિપૂર્ણ નિર્ણય લેવામા આવ્યો. તદનુસાર અત્યારે કોન્ફરન્સનુ કાર્યાલય ફેબ્રુઆરી ૧૯૫૩થી (૧૩૯૦, ચાંદની ચોક) દિલ્હીમા ચાલી રહ્યું છે કોન્ફરન્સનુ પ્રધાન કાર્યાલય માનો કે સ્થાનકવાસી જૈનસમાજનુ વિજળીઘર (Power House) છે આ કાર્યાલય જેટલુ સ્થાયી, સમૃદ્ધ અને શકિત–સપન્ન હશે તેટલુ જ તે વધારે સમાજને સક્રિય સહયોગ, પ્રેરણા અને પથ–પ્રદર્શન કરી શકશે, એ નિર્વિવાદ વાત છે. એટલા માટે સ્થા. જૈનસમાજના મસ્તકને ઉન્નત બનાવે એવુ એક ભવ્ય કોન્ફરન્સ–ભવનનુ નિર્માણ કરવુ જોઇએ કે જ્યા જૈન સસ્કૃતિ, સાહિત્ય, તત્ત્વજ્ઞાન, ધર્મપ્રચાર સગઠન, સહાયતા આદિ સમાજ–વિકાસની ઉપયોગી પ્રવૃત્તિઓ બરાબર ચલાવી શકાય અને દેશમાં તથા વિદેશમા જૈનત્વ, જીવન અને જાગૃતિનો વ્યવસ્થિત પ્રચાર કરી શકાય.

ભવન-નિર્માણ દિલ્હીમાં શા માટે?

ભારતીય ગણતંત્રની રાજધાની–દિલ્હીનુ અત્યારે આખી દુનિયામા અભૂતપૂર્વ અને મહત્વપૂર્ણ સ્થાન છે.

સમાજના ઘડવૈયા

સ્વ. સુરજમલ લલ્લુભાઇ ઝવેરી

શ્રી માણેકલાલ અમુલખરાય મહેતા

સંયમ અને શિસ્ત

સ્વ. શ્રી નથમલજી ચોરડીયા

શ્રી અ. ભા. શ્વે. સ્થા. જૈન કૉન્ફરન્સ

સુદૃઢ, સમૃદ્ધ અને પ્રગતિશીલ કેમ બને?

યોજના અને અપીલ

યોજના

આપણી આ કોન્ફરન્સ (મહાસભા) ભારતવર્ષના સમસ્ત સ્થાનકવાસી (૮ આઠ લાખ) જૈનોની એકમાત્ર પ્રતિનિધિ સસ્થા છે આ કોન્ફરન્સની સ્થાપના ઇ.સ. ૧૯૦૮મા મોરબી (સૌરાષ્ટ્ર)માં થઇ હતી. આ કોન્ફરન્સ-માતાની કૃપાથી જ આપણે કાશ્મીરથી કોલબો અને કચ્છથી બર્મા સુધી—ભારતના ખૂણે ખૂણે પથરાયેલા આપણા સ્વધર્મી ભાઇઓના પરિચયમાં આવી શકયા, એક બીજાના સુખ-દુઃખના સમભાગી બની શકયા અને પારસ્પરિક સહયોગથી ધાર્મિક, સામાજિક, રાષ્ટ્રીય અને વ્યાપારિક સપર્ક વધારીને વિકાસ સાધી શકયા.

આપણી કોન્ફરન્સની લગભગ ૫૦ વર્ષની કાર્કિર્દીમા ભિન્નભિન્ન સ્થળોએ ૧૨ અધિવેશનો થયા છે અને સમાજ-વિકાસની વિચારણા કરવા માટે જનરલ કમિટીની બેઠકો તો પ્રતિવર્ષ થતી રહે છે. કોન્ફરન્સે સ્થાનકવાસી જૈનસમાજ તથા ધર્મ સબધી અનેક મહત્ત્વપૂર્ણ પ્રસ્તાવો અને કાર્યો કર્યા છે, જે જૈન ઇતિહાસમા સુવર્ણાક્ષરોથી અકિત રહેશે. જેમાના કેટલાંક નીચે પ્રમાણે છે —

૧. 'જૈન પ્રકાશ' પત્ર હિન્દી તથા ગુજરાતી ભાષામા ૧૨ વર્ષોથી પાક્ષિક તેમજ સાપ્તાહિકરૂપે નિયમિત પ્રકાશિત થઇ રહ્યુ છે. (૨) જૈન ટ્રેનિગ કોલેજ રતલામ, બીકાનેર, જૈપુરમા સફલતાપૂર્વક ચલાવવામા આવી. (૩) મુબઇ તથા પુનામા જૈન બોર્ડિંગની સ્થાપના કરવામાં આવી. (૪) પજાબ તથા સિધના નિર્વાસિત ભાઇઓ માટે ૧ લાખ ૬૦ હજાર રૂ. એકત્રિત કરી સહાયતા આપવામા આવી. ( ) અર્ધ-માગધી બૃહત્ કોષના ૫ ભાગો, કેટલાક આગમોનો અનુવાદ તથા ધાર્મિક પાઠ્ય-પુસ્તકોનુ પ્રકાશન કર્યું. (૬) સ્થાનકવાસી શ્રમણ સપ્રદાયોનુ 'શ્રી વર્ધમાન શ્વે. સ્થા. જૈન શ્રમણ સઘ રૂપે સગઠન કર્યું (૭) જીવ-દયા, સ્વધર્મી સહાયતા, વિદ્યાર્થી સહાયતા, સામાજીક સુધાર આદિ અનેક સમાજોપયોગી કાર્યો કર્યા અને કરવામા આવે છે (૮) શ્રાવિકાશ્રમ માટે સવા લાખ રૂપિયાનુ ભવ્ય ભવન ઘાટકોપરમા બનાવવામાં આવેલ છે

કોન્ફરન્સની અનેક પ્રકારની પ્રવૃત્તિઓને વિશેષ પ્રગતિ-શીલ બનાવવા અને સ્થા જૈન સમાજની વિશેષ સેવા કરવા માટે સ્થા. જૈન શ્રીમાનો, વિદ્વાનો, સંપાદકો અને યુવકો વગેરેના હાર્દિક સહયોગની અમે આશા રાખીએ છીએ, એટલુ જ નહિ પણ કાર્ય માટે અમે ત્યાગી મુનિવરો અને મહાસતીઓના આશીર્વાદ અને પથ-પ્રદર્શનની પણ પ્રાર્થના કરીએ છીએ.

સોજતમાં મત્રી મુનિવરોની બેઠક વખતે કોન્ફરન્સની જનરલ સભા (તા. ૨૫-૧-૫૩)માં કોન્ફરન્સનુ પ્રધાન કાર્યાલય દિલ્હીમા લઇ જવાનો દીર્ઘદૃષ્ટિપૂર્ણ નિર્ણય લેવામા આવ્યો. તદનુસાર અત્યારે કોન્ફરન્સનુ કાર્યાલય ફેબ્રુઆરી ૧૯૫૩થી (૧૩૯૦, ચાંદની ચોક) દિલ્હીમા ચાલી રહ્યુ છે કોન્ફરન્સનુ પ્રધાન કાર્યાલય માનો કે સ્થાનકવાસી જૈનસમાજનુ વિજળીઘર (Power House) છે આ કાર્યાલય જેટલુ સ્થાયી, સમૃદ્ધ અને શક્તિ-સંપન્ન હશે તેટલુ જ તે વધારે સમાજને સક્રિય સહયોગ, પ્રેરણા અને પથ-પ્રદર્શન કરી શકશે, એ નિર્વિવાદ વાત છે. એટલા માટે સ્થા. જૈનસમાજના મસ્તકને ઉન્નત બનાવે એવુ એક ભવ્ય કોન્ફરન્સ-ભવનનુ નિર્માણ કરવું જોઇએ કે જયા જૈન સસ્કૃતિ, સાહિત્ય, તત્ત્વજ્ઞાન, ધર્મપ્રચાર સગઠન, સહાયતા આદિ સમાજ-વિકાસની ઉપયોગી પ્રવૃત્તિઓ બરાબર ચલાવી શકાય અને દેશમાં તથા વિદેશમા જૈનત્વ, જીવન અને જાગૃતિનો વ્યવસ્થિત પ્રચાર કરી શકાય.

ભવન-નિર્માણ દિલ્હીમાં શા માટે?

ભારતીય ગણતંત્રની રાજધાની-દિલ્હીનુ અત્યારે આખી દુનિયામા અભૂતપૂર્વ અને મહત્ત્વપૂર્ણ સ્થાન છે.

રાજનીતિની સાથે સાથે સંસ્કૃતિ, સાહિત્ય, શિક્ષણ અને વ્યવસાયનુ પણ કેન્દ્રસ્થાન છે. સંસારના બધા દેશના રાજદૂતો Ambassadors અહી રહે છે. આખી દુનિયાનો સંપર્ક જોડી શકાય છે. આ જ કારણે ભારતના દરેક રાજનૈતિક સંગઠનનો (Political Parties)ના કેન્દ્રો પણ દિલ્હીમા જ છે. પ્રત્યેક સમાજ અને ધર્મની પ્રતિનિધિ સંસ્થાઓનાં પ્રધાન કાર્યાલયો દિલ્હીમા સ્થાપિત કરવામાં આવ્યાં છે કે જેથી તેઓ બહિર્જગત્ સાથે સંબંધ-સંપર્ક સ્થાપિત કરી પોતાનો પરિચય અને પ્રચારનુ ક્ષેત્ર વધારી શકે

દિલ્હી, જેમ ભારતવર્ષનુ કેન્દ્રસ્થાન છે તેજ પ્રમાણે જૈનસમાજ માટે પણ મધ્યવર્તી સ્થાન છે. પંજાબ, રાજસ્થાન, મધ્યભારત, ઉત્તરપ્રદેશ, પેપ્સૂ આદિ નજદીકના પ્રાંતોમાં સ્થા. જૈનોની વધારે સંખ્યા છે. સૌરાષ્ટ્ર, કચ્છ, ગુજરાત, મુંબઇ, કલકત્તા, મહારાષ્ટ્ર આદિ દૂર-દૂર પ્રાંતોના જૈનબંધુઓનુ આવાગમન રાજનૈતિક તેમ જ વ્યાપારિક કારણોને લીધે દિલ્હીમાં થતુ જ રહે છે. આ પ્રમાણે જૈનોનો સંપર્ક-સંબંધ દિલ્હી સાથે પણ ઘણો જોડાયેલો છે

કેન્દ્રીય રાજસભા Parliament મા ૨૨ સદસ્ય (M. P.) અને દિલ્હી સ્ટેટ ધારાસભામાં ૩ સદસ્ય (M. L. A)—કુલ ૨૫ જૈન હોવાથી તેમના સક્રિય સહયોગ દ્વારા જૈન ધર્મ અને સમાજનાં હિતોની રક્ષાનો સફળ પ્રયત્ન કરી શકાય એમ છે. એટલુ જ નહિ, દિલ્હીમા રાષ્ટ્રપતિ, મંત્રીમંડળ, બીજા ધારાસભ્યો તથા વિદેશી રાજદૂતોનું ધ્યાન જૈન ધર્મના વિશ્વોપયોગી ઉદાર સિદ્ધાતો તરફ આકર્ષવામા આવે તો જૈન ધર્મના પ્રચારમા પણ ઘણો સહયોગ મળી શકે એવો સંભવ છે.

કોન્ફરન્સ ભવનમાં નીચે જણાવેલી કાર્ય-પ્રવૃત્તિઓ શરૂ કરવાની ભાવના છે અને તેને અનુરૂપ ભવન-નિર્માણ કરવાની યોજના છે:

૧ **પ્રધાન કાર્યાલય**-જેમા સ્થા. જૈન સમાજની બધી પ્રવૃત્તિઓનુ કેન્દ્રીકરણ કરી, ચતુર્વિધ શ્રી સંઘની સાથે સંપર્ક તેમજ પ્રાન્તીય શાખાઓ તથા પ્રચારકોને માર્ગદર્શન તથા નિયંત્રણ કરવાની વ્યવસ્થા કરવામાં આવશે.

૨ **જૈન પ્રકાશ કાર્યાલય**—જેમાં કોન્ફરન્સના સાપ્તાહિક મુખપત્ર જૈન પ્રકાશ'નુ પ્રકાશન તથા વિતરણની વ્યવસ્થા કરવામાં આવશે.

૩. **જિનાગમ તથા જૈનસાહિત્યનુ** સંપાદન તથા પ્રકાશન-વિભાગનુ કાર્ય વિદ્વાન મુનિવર્યો તથા લેખકો દ્વારા સંપન્ન કરવામાં આવશે; જેમાં ૩૨ જિનાગમોનુ સંશોધિત મૂળપાઠ, અર્થ, પાઠાંતર, ટિપ્પણીઓ, પારિભાષિક શબ્દકોષ આદિ નૂતનશૈલીથી સંપાદન અને પ્રકાશન કરવામા આવશે. આ ઉપરાંત :-

(અ) **જૈન ધર્મનો સુંદર પરિચય-ગ્રંથ**-જૈનગીતા રૂપે-૩૨ સૂત્રોના સારરૂપે જૈન ધર્મના વિશ્વોપયોગી ઉદાર સિદ્ધાંતોનું સુંદર સંકલન કરવામા આવશે. આ સર્વોપયોગી જૈન ગ્રંથનો ભારતીય તથા વિદેશીય ભિન્ન-ભિન્ન ભાષાઓમા અનુવાદ કરાવી, વિશ્વમાં બીજા ધર્માવલંબીઓ પાસે જૈન ગીતા, કુરાન, બાઇબલ, ધમ્મપદની માફક સર્વમાન્ય જૈન ધર્મનો પરિચય આપી શકે એવી મહાવીર-વાણી-જૈનગીતા કે નિર્ગ્રંથ-પ્રવચનનુ પ્રકાશન કરી ઘેર ઘેર બહોળો પ્રચાર કરવામાં આવશે.

આજના તૃષ્ણાપૂર્ણ હિંસક યુગમાં આ 'મહાવીરવાણી-એટમ બોમ્બ, હાઇડ્રોજન બોમ્બની કલ્પના માત્રથી સંત્રસ્ત સંસારને-સુખ શાંતિનો માર્ગ બતાવનાર તરીકે સિદ્ધ થશે. એટલુ જ નહિ પણ અહિંસાના અવતાર, શાંતિદૂત ભગવાન મહાવીરનુ આ શાંતિ-શસ્ત્ર Peace Bomb નુ કામ કરશે.

(બ) **જૈન સાહિત્યમાળાનુ પ્રકાશન**-સર્વોપયોગી આ સાહિત્યમાળામા અહિંસા, સત્ય, આત્મ-શાંતિ, વિશ્વપ્રેમ, સેવાધર્મ, કર્તવ્ય, સંયમ, સંતોષ આદિ વિવિધ વિષયોનુ રુચિકર, પઠનીય, આકર્ષક પ્રકાશન સસ્તા મૂલ્યમા વેચવામા આવશે કે જેથી સર્વ સાધારણ જનતા આ ઉપયોગી જૈનસાહિત્ય પ્રેમપૂર્વક વાચી શકે અને તેના સિદ્ધાંતોને જીવનમાં ઉતારી શકે.

૪. **જૈન સ્થાનક અને વ્યાખ્યાન-ભવન** (Lecture Hall) નવી દિલ્હીમા સ્થા. જૈનોની ઘણી સંખ્યા હોવા છતાં સ્થા. જૈનોનુ કોઇ ધર્મસ્થાનક નથી એટલા માટે પણ કોન્ફરન્સ ભવન બનવાથી મુનિરાજોને બિરાજવાનો, વ્યાખ્યાન-વાણી સાંભળવાનો તથા ધર્મધ્યાન કરવાનો પણ લાભ મળી શકશે. વ્યાખ્યાન-ભવન બનવાથી અનેક ભારતીય તથા વિદેશીય વિદ્વાનોનો વ્યાખ્યાન દ્વારા સંપર્ક સ્થાપિત કરી શકાશે અને વિશ્વના

નેતાઓને આમન્ત્રિત કરી જૈનધર્મ પ્રત્યે પ્રભાવિત કરી શકાશે.

૫. **શાસ્ત્ર-સ્વાધ્યાય**—આ ભવનમા શાસ્ત્રોનુ નિયમિત વાચન અને ધર્મગ્રથોનુ સ્વાધ્યાય-વાચન બરાબર થતુ રહે તેવી વ્યવસ્થા કરવામા આવશે.

૬. **શાસ્ત્ર-ભડાર**—આપણા શ્વેતાબર તથા દિગબર જૈનભાઇઓના આરા, જૈપુર, જેસલમેર, પાટણ, ખભાત, કોડાઇ, વડોદરા, કપડવજ આદિ અનેક સ્થળોએ પ્રાચીન શાસ્ત્રસગ્રહાલયો-ભડાર અને પુસ્તક-સગ્રહાલયો છે; પરતુ આપણે ત્યાં ઘોરાજી, વડિયા, લીબડી, બીકાનેર, બનારસ આદિ મુખ્ય ભડારોને બાદ કરતા સ્થાનકવાસી જૈન ધર્મનો એવો એક પણ વિશાળ કેન્દ્રીય શાસ્ત્રભડાર કયાંય નથી. સ્થા. જૈન શાસ્ત્રો તથા બીજુ સાહિત્ય આજે કયાય ગૃહસ્થોની પાસે તો કોઇ ઉપાશ્રયના કબાટોમા પેટી-પટારાઓમા અસ્તવ્યસ્ત અવસ્થામા વિખરાયેલુ પડેલુ છે. તે સમસ્ત બહુમૂલ્ય સાહિત્યને એકત્રિત કરી સુરક્ષિત અને સુવ્યવસ્થિત કરી એક કેન્દ્રીય શાસ્ત્રભડાર (ગ્રથ-સગ્રહ) બનાવવાની ખાસ જરૂર છે.

૭. **સિદ્ધાંતશાળા**—સ્થા. જૈન ધર્મનો આધાર પૂ. મુનિવર્યો અને મહાસતિજી મહારાજ છે. તેઓ જેટલા જ્ઞાની, સ્વમત પરમતના જ્ઞાતા અને ચારિત્રશીલ બનશે તેટલો જ જૈન ધર્મનો પ્રભાવ વિશેષ પડશે. એટલા માટે સાધુ-સાધ્વીઓને વ્યવસ્થિત શિક્ષણ આપવાની ખાસ જરૂર છે આ માટે એક કેન્દ્રીય સિદ્ધાન્તશાળા અહી સ્થાપિત કરવી અને તેની શાખાઓ બીજા પ્રાતોમાં પણ ચાલુ કરવાનો વિચાર છે

૮. **વીર સેવા સઘ**—જૈન સાધુ-સાધ્વી પાદવિહારી અને મર્યાદાજીવી હોવાથી દૂર-દૂરના પ્રાન્તોમાં અને દરિયાપાર વિદેશોમાં વિચરી શકતા નથી. પૂ. સાધુ-મુનિરાજોની સંખ્યા અત્યલ્પ હોવાથી બધે ઠેકાણે પહોંચી પણ શકતા નથી. જેથી બધાં ક્ષેત્રોમાં પૂર્ણ ધર્મ-પ્રચાર થઇ શકતો નથી. આ માટે સ્વ. પૂજ્યશ્રી જવાહિરલાલજી મ સા.ની કલ્પના તેમજ મુબઇ અને બીકાનેર કોન્ફરન્સના નિર્ણયાનુસાર સાધુ-વર્ગ અને ગૃહસ્થ-વર્ગની વચ્ચેનો એક ત્યાગી-બ્રહ્મચારી વર્ગ તૈયાર કરવાની ખાસ જરૂર છે. જે 'વીર સેવાસઘ'ના નામે 'જૈન મિશનરી' રૂપે કામ કરી શકે. આવા સસારથી વિરક્ત અને ધર્મ-પ્રચાર માટે જીવન-દાન આપનાર સેવાભાવી ભાઇઓને સુખ અને સુવિધાપૂર્વક રહેવાની તથા કામ કરવાની વ્યવસ્થા આ 'ભવન'મા કરવામાં આવશે કે જેથી તેમની દ્વારા દેશ-વિદેશમા ધર્મ પ્રચાર અને સાસ્કૃતિક સપર્ક સવિશેષ કરી શકાશે

૯. **જૈન ટ્રેનીગ કોલેજ**—સમાજમા કાર્યકર્તા, ઉપદેશક, પ્રચારક અને ધર્માધ્યાપક તૈયાર કરવા માટે જૈન ટ્રેનીગ કોલેજની ખાસ જરૂર જણાય છે. કોન્ફરન્સે પહેલા પણ રતલામ, બીકાનેર તથા જૈપુરમાં જૈન ટ્રેનીગ કોલેજ કેટલાક વર્ષો સુધી ચલાવી હતી. આજે સમાજમા જે ગણ્યા-ગાંઠયા કાર્યકર્તા જોવામાં આવે છે, તે આ કોલેજનુ જ પરિણામ છે. અત્યારે સમાજમાં આવા પ્રભાવિક કાર્યકર્તા અને ધર્માધ્યાપકોની બહુ જ આવશ્યકતા અનુભવાય છે. એટલા માટે જ ભવનમાં ટ્રેનીગ કોલેજને પુન ચાલૂ કરવાનો વિચાર છે.

૧૦. **જૈન સશોધન સસ્થા**—જૈન ધર્મ બહુ જ પ્રાચીન અને વૈજ્ઞાનિક ધર્મ હોવાથી તેનુ સશોધન, અન્વેષણ કરવુ, એ આ યુગમા બહુ જ આવશ્યક છે. આ કાર્ય માટે કોન્ફરન્સ એક Research Institute-અન્વેષણ સસ્થા તથા સમૃદ્ધ પુસ્તકાલય જે અન્વેષણ-કાર્ય કરવામાં ઉપયોગી નીવડી શકે-સ્થાપિત કરવાનો વિચાર કરી રહી છે જ્યાં જૈન તથા જૈનેતર વિદ્વાનો પણ જૈન ધર્મના સિદ્ધાતોનુ અધ્યયન કરી શકે અને જૈન ધર્મ, તત્ત્વજ્ઞાન આદિ વિષે મહાનિબધ લખી સંસારમાં જૈન ધર્મનો પ્રચાર કરી શકે,

૧૧. **ઉદ્યોગશાળા**—કોન્ફરન્સ તરફથી ગરીબ સ્વધર્મી ભાઇ-બહેનોને, વિધવા બહેનોને તથા વિદ્યાર્થીઓને હજારો રૂ.ની સહાયતા પ્રતિવર્ષ આપવામાં આવે છે પરતુ આ તો 'ગરમ તવા ઉપર પાણીનાં ટીપા છોડવા, સમાન નહિવત્ છે. સમાજમાં શિક્ષા વધવાની સાથે બેકારી પણ વધી રહી છે. આ બેકારીને નિવારવાનો એકમાત્ર ઉપાય ઉદ્યોગ-ઉત્પાદન વધારવુ તથા જાત મહેનતની ભાવના જાગ્રત કરવી એ જ છે. આને માટે કોન્ફરન્સ-ભવનમાં 'ઉદ્યોગ શાળા'ની સ્થાપના કરવા ચાહીએ છીએ, જેમાં ગૃહ-ઉદ્યોગ મશીનરી, રિપેરીગ, વિજળી આદિ હુન્નરકળા દ્વારા પરિશ્રમ-પ્રતિષ્ઠા જાગ્રત કરી દરરોજ ૫-૬ રૂ. કમાઇ શકે એવી વ્યવસ્થા કરવામાં આવે કે જેથી સ્વ-

ધર્મી ભાઇ સુખપૂર્વક જીવન નિર્વાહ કરી શકે, આગ્રાના દયાળબાગનો પ્રારંભ પણ આજ પ્રકારે થયો હતો.

૧૨. મુદ્રણાલય (પ્રિન્ટિંગ પ્રેસ)—પણ આ ભવનમાં ચાલુ કરવાનો વિચાર છે. જે ઉદ્યોગશાળાનુ એક અંગ બની રહેશે અને એમાં જ 'જૈન પ્રકાશ', આગમ તથા સાહિત્ય પ્રકાશનનું કાર્ય પણ થતુ રહેશે. જૈન સંસ્થાઓનુ પણ શુદ્ધ પ્રકાશન-કાર્ય કરી આપવામા આવશે. આ પ્રેસ-કાર્યમાં અનેક સ્વધર્મી ભાઇઓને કામધંધો આપી શકાશે.

૧૩. અતિથિગૃહ—દિલ્હી, ભારતનુ કેન્દ્રસ્થાન હોવાથી અનેક જૈન ભાઇઓને દિલ્હી આવવાનુ બને છે. નવી દિલ્હીમાં ઊતરવા માટે કોઇ સગવડતાભર્યું સ્થાન નથી, અને હોટલોમાં ઊતરવુ એ ખર્ચાળ હોવા ઉપરાંત અગવડતાભર્યું પણ હોય છે એટલા માટે તેમને થોડાક દિવસ ઊતરવા માટે કોન્ફરન્સ ભવનમા સમુચિત પ્રબંધવાળુ અતિથિગૃહ બનાવવુ પણ જરૂરી જણાય છે.

આપણી કોન્ફરન્સ એટલી સમૃદ્ધ હોવી જોઇએ કે-ભારતવર્ષમાં જ્યા જ્યા સ્થાનકવાસી જૈનોનાં ૧૫-૨૦ ઘર હોય ત્યા ધર્મસ્થાન બનાવવાની વ્યવસ્થામાં (જે પ્રમાણે શ્વે. મૂર્તિપૂજક જૈનોમાં આણંદજી કલ્યાણજીની પેઢી ધાર્મિક સ્થાનોમા આર્થિક સહયોગ આપે છે તે પ્રમાણે) ઓછામા ઓછો અડધો આર્થિક સહયોગ આપી શકે.

સ્થાનકવાસી જૈન સમાજની બધી કાર્ય-પ્રવૃત્તિઓને પ્રગતિશીલ બનાવવા માટે નવી દિલ્હીમાં 'કોન્ફરન્સ-ભવન'નુ નિર્માણ કરવુ અને તેમાં પ્રસિદ્ધ જૈનતત્ત્વજ્ઞ સ્વ. વા. મો. શાહની 'મહાવીર-મિશન'ની યોજના અને સ્વ. ધર્મવીર દુર્લભજીભાઇ ઝવેરીના 'આદિનાથ આશ્રમ'ની યોજનાને મૂર્તરૂપ આપવુ, એ હવે મારા જીવનનુ ધ્યેય બની ગયુ છે. તેને હુ બહુ જલ્દી કાર્યરૂપમાં પરિણત કરવા ચાહુ છુ.

અપીલ

ઉપર જણાવેલ યોજનાને મૂર્તરૂપ આપવાને માટે અઢી લાખ રૂપિયા કોન્ફરન્સ-ભવનના નિર્માણ માટે, એક લાખ આગમ તથા સાહિત્યના નિર્માણ તથા પ્રકાશન માટે તથા દોઢ લાખ રૂપિયા ઉપર જણાવેલ વિવિધ પ્રવૃત્તિઓને ચાલુ કરવા માટે-એમ કુલ પાંચ લાખ રૂપિયાની હુ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સમાજ સમક્ષ અપીલ કરુ છુ. આટલા મોટા અને સમૃદ્ધ સમાજમાથી-

૫૧-૫૧ હજાર રૂપિયા આપનાર બે સજ્જનો
૧૦-૧૦ હજાર રૂપિયા આપનાર દશ ,,
૫- ૫ હજાર રૂપિયા આપનાર વીશ ,,
૧- ૧ હજાર રૂપિયા આપનાર સો ,,

મળી જશે એવી આશા છે અને બાકીના એક લાખ રૂપિઆ આથી નાની-નાની રકમો જૈન સંઘો તથા ધર્મપ્રેમી પાસેથી એકત્રિત કરી શકાશે એવી મને શ્રધ્ધા છે. મારા આ વિચારો સાભળતાં જ સમાજના જૂના અને જાણીતા સમાજસેવક શ્રી. ટી. જી. શાહે રૂા. ૧૧૧૧) આપવાનું મને તુરત જ લખી જણાવ્યુ હતુ પરન્તુ તેમની પાસેથી હુ રૂા. પાચ હજાર ખુશીથી લઇ શકીશ એવી મને આશા છે

મને જણાવતાં અત્યંત ખુશી થાય છે કે, સ્વ. 'ધર્મવીર' દુર્લભજીભાઇના સુપુત્ર શ્રીમાન શ્રી. વનેચંદભાઇ અને શ્રી. ખેલશંકરભાઇ ઝવેરીએ આ કાર્ય માટે ૫૧ હજાર રૂપિયાનુ વચન આપીને મારી આશાને ઘણુ બળ આપ્યુ છે તથા દિલ્હીના ભાઇઓએ ૫-૫ હજાર રૂપિયાનું વચન આપીને મારો ઉત્સાહ વધાર્યો છે. મારી આશાના પ્રદીપ રાજકોટના દાનવીર વીરાણી બંધુઓ શ્રી કેશુભાઇ પારેખ, મુંબઇના દાનવીર શ્રી મેઘજીભાઇનો પરિવાર સર ચુનીલાલભાઇ મહેતા. કામાણી બ્રધર્સ, શ્રી સંઘરાજકા વગેરે, કલકત્તાના કાંકરિયા બંધુઓ, દુગડજી વગેરે, મારવાડી ભાઇઓ તથા ગુજરાતી સાહસિક વ્યાપારી ભાઇઓ વગેરે, અમદાવાદના

મિલ-માલિક શેઠ શાંતિલાલ મગલદાસભાઇ તથા અન્ય શ્રીમાન્ વ્યાપારી બંધુઓ, બીકાનેર, ભીનાસરના સેઠિયા, બાઠિયા તથા વેદપરિવારના બધુઓ ઉપરાંત ખાનદેશ, દક્ષિણ, મહારાષ્ટ્ર, મધ્યપ્રદેશ, મધ્યભારત અને રાજસ્થાનના ધર્મપ્રેમી શ્રીમાન સજ્જનો તથા કચ્છ, સૌરાષ્ટ્ર, ગુજરાત, મારવાડના દેશ–વિદેશોના સાહસિક વ્યાપારી બધુઓ સમક્ષ પાંચ લાખ રૂપિયાની અપીલ બહુ મોટી નથી જો સમાજ ધારી લે તો બહુ જ સરળતાપૂર્વક મારી આ અપીલને ધ્યાનમા લઇ માગણી પૂરી કરી શકે એમ છે.

હુ તો આશા રાખુ છુ કે—મારી આ પ્રાર્થના વાંચીને સમાજપ્રેમી સજ્જનો સ્થાનકવાસી જૈનસમાજના ઉત્થાન–કાર્ય માટે પોતપોતાના ઉદાર આશ્વાસન (વચન) મોકલી આપશે.

આ પ્રમાણે સ્થા. જૈનસમાજ પોતાની પ્રગતિ માટે, ધર્મ સેવા માટે આ ધર્મયજ્ઞમા યશાશકિત પોતાનુ અર્ધ્ય સમર્પશે અને આ યોજનાને સફળ બનાવશે એવી શુભાશા છે

આ અપીલને પૂરી કરવા માટે થોડા સમય બાદ એક પ્રતિનિધિ–મડળ Deputation બહાર નીકળશે. સ્થા. જૈન સમાજ પોતાના ઉત્થાન માટે સર્વસ્વ આપવા તૈયાર છે, એવુ કરી બતાવવા પાછળ નહી પડે એવી ભાવના અને શ્રદ્ધા છે.

નિવેદક—સંઘ સેવક
આનદરાજ સુરાણા એમ. એલ. એ.
માનદ-મત્રી–શ્રી અ. ભા. શ્વે. સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સ, દિલ્હી.

શ્રી ગુર્જર શ્રાવક સમિતિ–રાજકોટ: પ્રમુખ તથા મંત્રીઓ
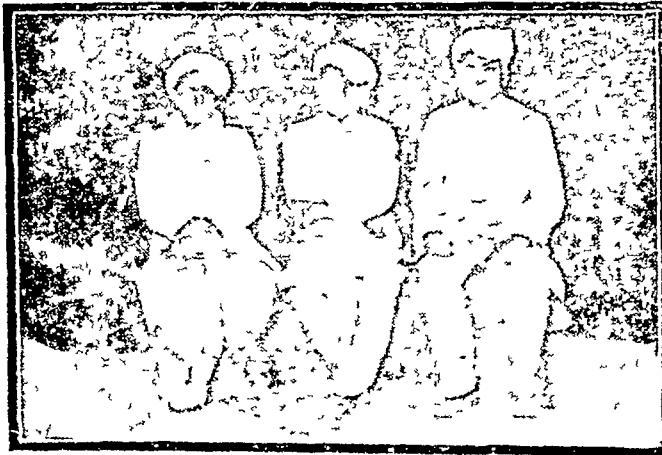
૧. શ્રી દામોદરભાઇ જગજીવનભાઇ, પ્રમુખ.
૨. શ્રી. દુર્લભજીભાઇ ઝવેરી, મંત્રી.
૩. શ્રી ભાઇચંદભાઇ વકીલ, મંત્રી.

સંઘ–ઐકય સમિતિ

૧. શ્રી ધીરજલાલ તુરખીયા

૧. શ્રી સોમચંદભાઇ મહેતા, રતલામ

૩. શ્રી લક્ષ્મીચંદજી સુણોત, રતલામ

☆

કોન્ફરન્સની જનરલ કમિટિ ઘાટકોપર–૧૯૪૧
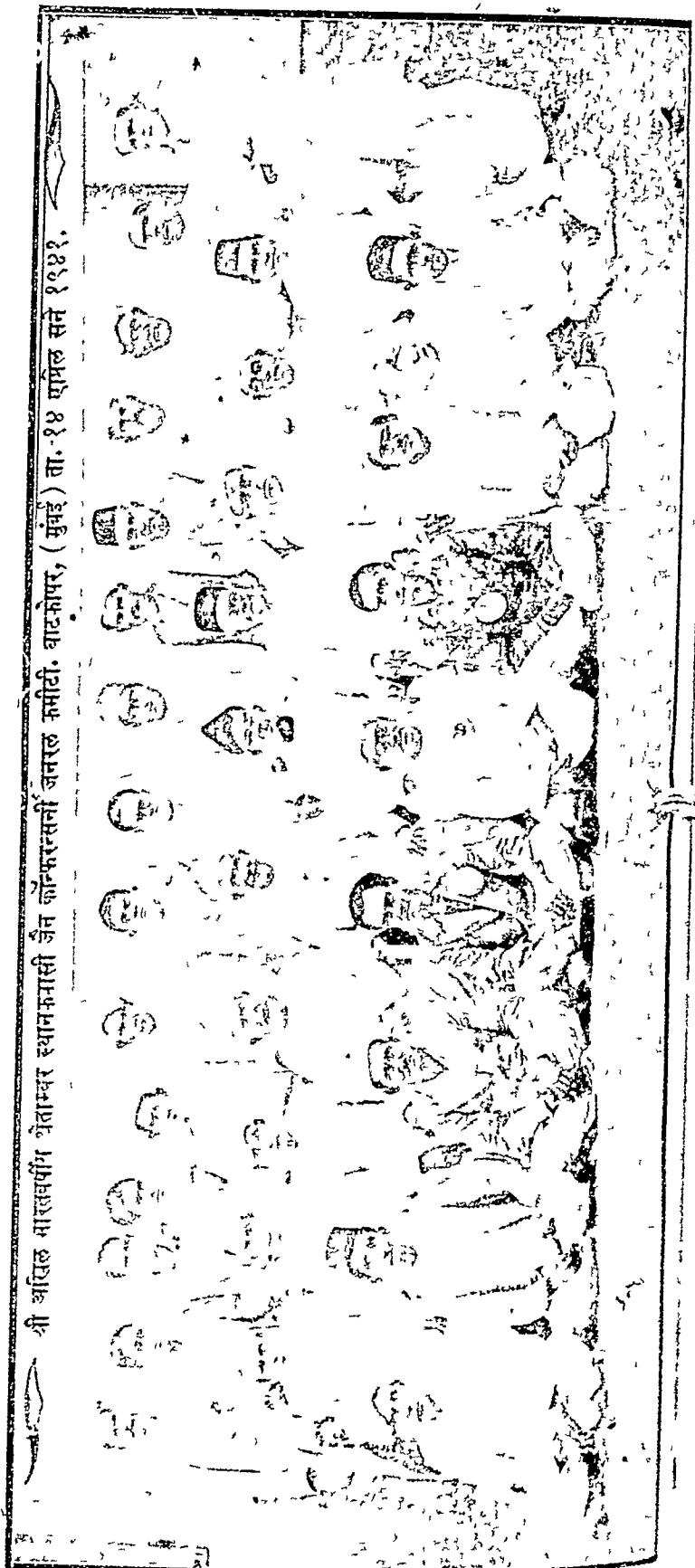
श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्सनी जनरल कमीटी. घाटकोपर, (मुंबई) ता. १४ एप्रिल सने १९४१.

શ્રી જૈન ટ્રેનિંગ કોલેજના છાત્રો સાથે અધ્યક્ષ શ્રી. હેમરાજભાઈ

શ્રી અખિલ ભારતવર્ષીય શ્વે. સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સના પ્રથમ અધિવેશનના અધ્યક્ષ
રા. સા. ચાંદમલજી રીયાંવાલા પાશ્ચાત્ય વિદ્વાન ડૉ. હર્મન જેકોબી સાથે

શ્રી. શ્વે. સ્થા. જૈન સ્વયંસેવક દળ–ઘાટકોપર

श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स स्वयंसेवक दल. दशम अधिवेशन. घाटकोपर, (मुंबई) एप्रिल ता. ११-१२-१३ सने १९४१.
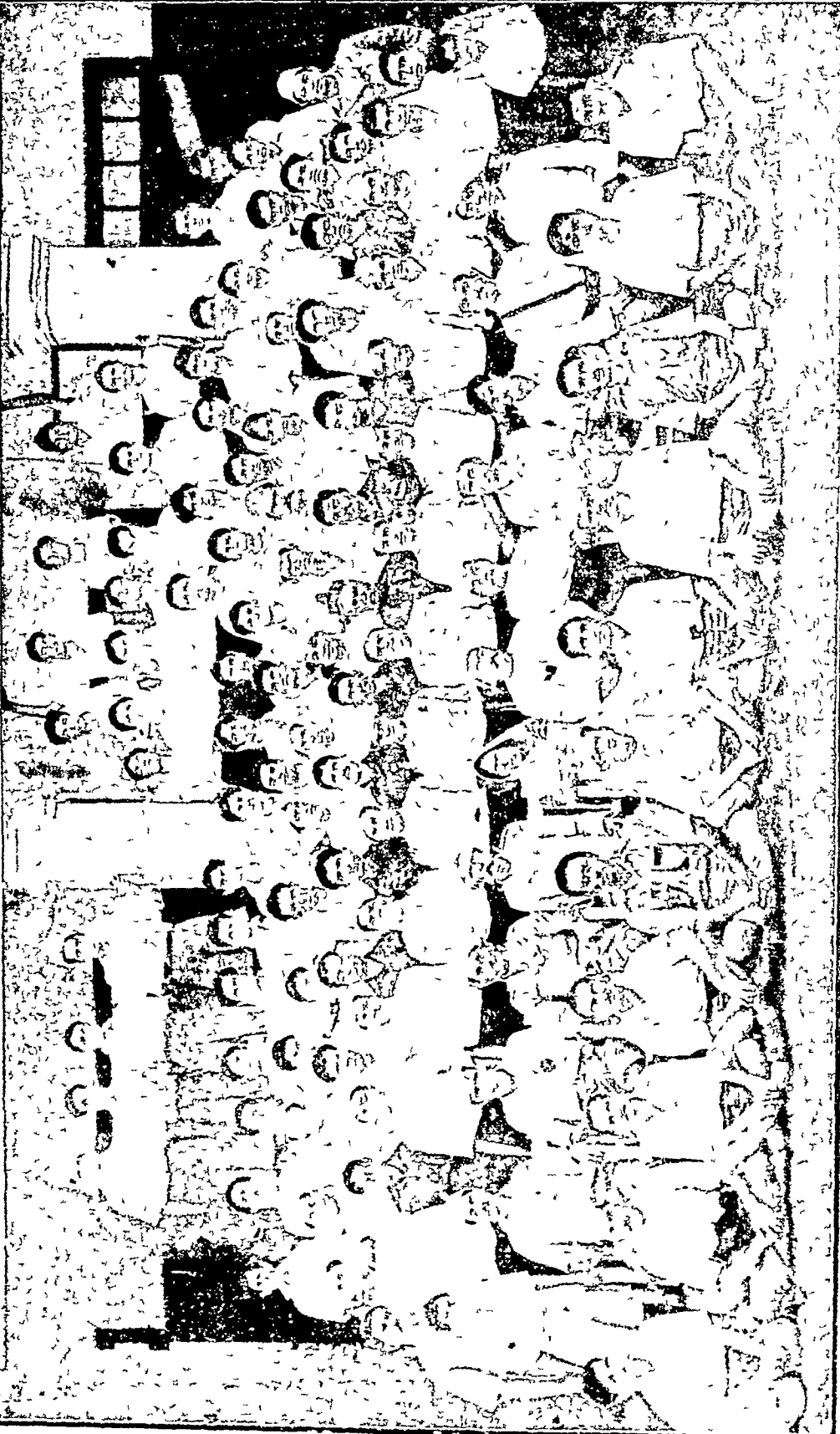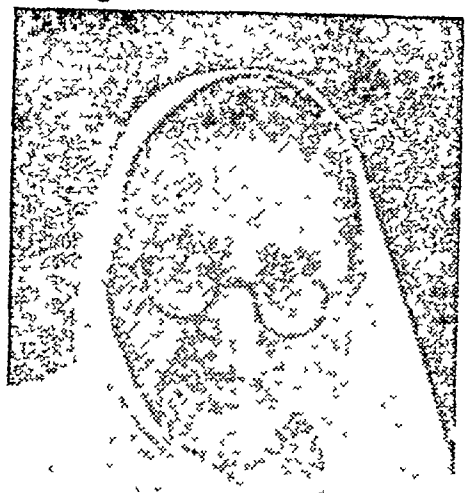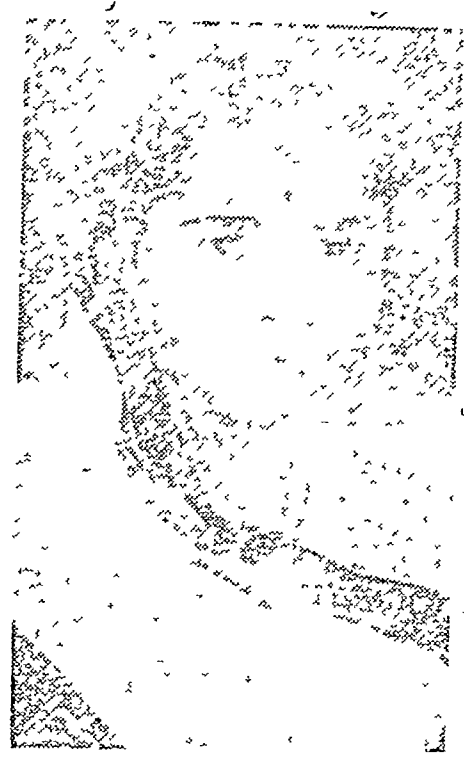
સ્થા. સમાજનાં સ્ત્રી રત્નો

શ્રીમતિ ચંચળબેન ટી. જી. શાહ

શ્રીમતિ લીલાવતીબેન કામદાર

શાસ્ત્ર નિષ્ણાતો

સ્વ. શેઠ દામોદરભાઇ જગજીવનદાસ
દામનગર, સૌરાષ્ટ્ર

સ્વ. ડૉ. જીવરાજભાઇ ઘેલાભાઇ દોશી
અમદાવાદ
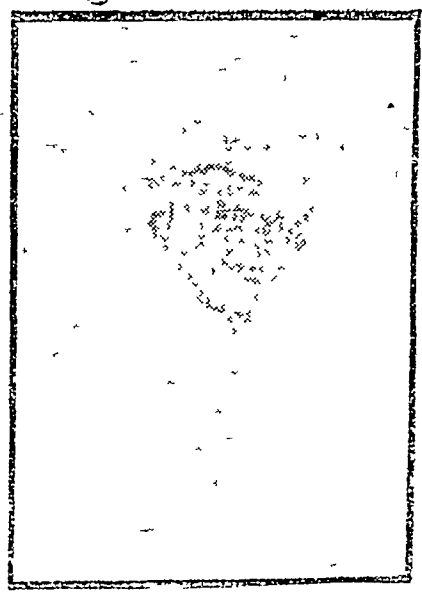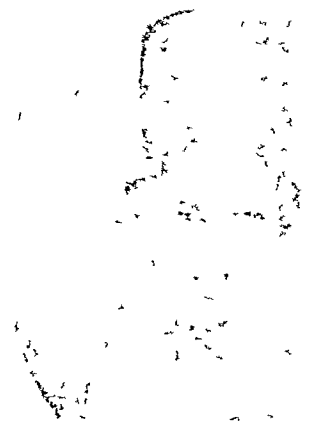
શ્રી સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણ-સંઘ

શ્રી સૌરાષ્ટ્ર સાધુ-સમ્મેલન

શ્રી સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણ સંઘની થયેલી સ્થાપના

લાંબો વિહાર કરીને, પ્રતિનિધિ મુનિરાજો સાધુ-સંમેલનમા હાજરી આપવા માટે સમયસર પધારી ગયા હતા તા ૧૫ મીએ સુરેન્દ્રનગરમાં નક્કી થયું હોવાથી, જોરાવરનગરમાં બધા મુનિરાજો એકઠા થયા હતા; લીંબડી મોટા સંપ્રદાય, બોટાદ સંપ્રદાય, ગોંડલ સંપ્રદાય તથા સાયલા સંપ્રદાયના પ્રતિનિધિ મુનિરાજો જોરાવરનગરમાં બિરાજતા હતા અને લીંબડી સંઘવી ઉપાશ્રયના પ્રતિનિધિ મુનિરાજો સુરેન્દ્રનગરમા બિરાજતા હતા.

તે જ દિવસે તા. ૧૫-૧-૫૨ ના રોજ મંગળવારે બપોરે ૩-૦ વાગ્યે સાધુ-સંમેલનની કાર્યવાહી શરૂ થઇ; લીંબડી મોટા સંપ્રદાય, લીંબડી સંઘવી સંપ્રદાય, બોટાદ સંપ્રદાય, ગોંડલ સંપ્રદાય, સાયલા સંપ્રદાયના અનુક્રમે ૮, ૪, ૧૦, ૨ અને ૪ સાધુજીઓ પધાર્યા હતા. ખંભાત સંપ્રદાયના પૂ. ગુલાબચંદજી મ. સંમેલનમાં પધારવાના સમાચાર મળ્યા હતા. પરંતુ તેમની તબિયત ન દુરૂસ્ત થવાને કારણે હાજરી આપી શકયા ન હોતા; બરવાળા સમ્પ્રદાયમા ત્રણ મુનિરાજો એકલા વિચરે છે અને તેઓ હાલમા કયા વિચરે છે તે સમાચાર ન મળવાથી, તેમને ખબર પહોંચી શકેલ નથી, કચ્છના આઠ કોટી મોટી પક્ષના મુનિશ્રી કપુરચંદજી મ , છોટાલાલજી મ ઠા. ૩ ને સમ્મેલનમા હાજરી આપવા માટે મોકલ્યાના સમાચાર હતા, પરંતુ કોઇ કારણસર તેઓ આવી શકેલ નથી; કચ્છ આઠ કોટી નાની પક્ષના પ્રતિનિધિઓ કચ્છ છોડીને આ બાજુ આવે તેવી વર્તમાને પરિસ્થિતિ નથી. ગોંડલ સંઘાણી સમ્પ્રદાય તરફથી પત્ર હતો કે તે સમ્પ્રદાયમા કોઇ સાધુજીઓ ન હોવાથી, ગોંડલ સંઘાણી સમ્પ્રદાયના પ્રતિનિધિ આવી શકશે નહિ, પરંતુ ગોંડલ સંપ્રદાયના પ્રતિનિધિ આવેલ છે તેથી ચલાવી લેશો દરિયાપુરી સમ્પ્રદાય ૭ કોટીનું સંગઠન થયે વિચારણા કરવા ઇચ્છે છે. આ રીતે આ સમ્મેલનમા સૌરાષ્ટ્રના પ્રતિનિધિઓ આવેલ હોઇ, આ સમ્મેલનને સૌરાષ્ટ્ર સાધુ-સમ્મેલન નામ આપવું વધું યોગ્ય થશે.

સમ્મેલનની કાર્યવાહી શરૂ થઇ, તે પહેલાં પ્રતિનિધિઓના પ્રમાણ અંગે વિચારણા થઇ હતી અને નીચે મુજબ ધોરણ નક્કી થયું હતું —

૧૦	સાધુ-સાધ્વીઓની સંખ્યા સુધી	૨ પ્રતિનિધિ
૧૦-૨૦	,, ,, ,,	૩ ,,
૨૦ થી વધુ	,, ,, હોય તો	૪ ,,

આ ધોરણે નીચે મુજબ ઉપસ્થિત સમ્પ્રદાયોના પ્રતિનિધિઓ નિયુકત થયા હતા.

લીંબડી મોટા સમ્પ્રદાય :—(૧) તપસ્વી શ્રી શામજી સ્વામી (૨) કવિવર્ય શ્રી નાનચંદ્રજી મ. (૩) સદાનંદી મુનિ શ્રી છોટાલાલજી મ. (૪) મુનિશ્રી રૂપચંદજી મ

લીંબડી સંઘવી સમ્પ્રદાય —(૨) પ . મુનિશ્રી કેશવલાલજી મ. (૨) મુનિશ્રી વ્રજલાલજી મ.

ગોંડલ સમ્પ્રદાય :—(૧) મુનિશ્રી અમીચંદજી મ (૨) મુનિશ્રી નાના રતિલાલજી મ ઉપરના ધોરણે ગોંડલ સમ્પ્રદાયના ૪ પ્રતિનિધિઓ નિયુકત થઇ શકે, પરંતુ ૨ મુનિરાજો જ પધારેલ હતા.

બોટાદ સમ્પ્રદાય :—(૧) મુનિશ્રી શીવલાલજી મ (૨) મુનિશ્રી નવીનચંદ્રજી મ. (પૂ શ્રી માણેકચંદજી મહારાજે કાર્યવાહી સમયે હાજરી આપી હતી)

સાયલા સમ્પ્રદાય :—(૧) મુનિશ્રી મગનલાલજી મ. (૨) મુનિશ્રી કાનજી મ.

સાત દિવસ ચાલેલી કાર્યવાહી

તા. ૧૫-૧-૫૨ ના રોજ બપોરે ત્રણ વાગ્યાથી શરૂ થયેલ કાર્યવાહી તા. ૨૧ મી સુધી ચાલી હતી; હમેશા ત્રણ-ત્રણ વખત બેઠકો થતી હતી; બેઠકો દરમ્યાન બેઠકમા બેઠેલ મુનિરાજોના દર્શનાર્થે આવવાનું બંધ રાખવામાં આવેલ

હોવાથી, કાર્યવાહી શાંતિથી થતી હતી સવારે ૯-૦ થી ૧૧-૩૦ બપોરે ૩-૦ થી ૫-૩૦ અને રાત્રે ૮-૩૦ થી ૧૦-૩૦ સુધી લગભગ કાર્યવાહી ચાલી હતી

કાર્યવાહીની વિગત

વિચાર-વિનિમયને અંતે નીચે મુજબ કાર્યવાહી સર્વાનુમતે થઇ હતી :—

(૧) સૌરાષ્ટ્ર જૈન વીર શ્રમણ સંઘની સ્થાપના કરવામા આવી—જેના ચાર પ્રવર્તકો નીમવામા આવ્યા : લીંબડી મોટા ઉપાશ્રય અને લીંબડી સંઘવી ઉપાશ્રયના એક પ્રવર્તક, ગોંડલ મોટા ઉપાશ્રય અને સંઘાણી ઉપાશ્રયના એક પ્રવર્તક, બોટાદ સંપ્રદાયના એક પ્રવર્તક, બરવાળા અને સાયલા સંપ્રદાયના એક પ્રવર્તક, ચાર પ્રવર્તકોમા એક મુખ્ય પ્રવર્તક રાખવાનું નક્કી થયું હતું. આ પ્રવર્તકોનુ કાર્ય-ક્ષેત્ર હાલ તુરત માટે મર્યાદિત રાખવામાં આવેલ છે પરંતુ ધીમેધીમે સૌરાષ્ટ્રના બધા સંપ્રદાયોના વિલીનીકરણની દૃષ્ટિએ આગળ વધવાનો પ્રયત્ન કરવાનું ધ્યેય રાખવામા આવેલ છે

(૨) દીક્ષા આપવાની, પચ્ચખ્ખાણ કરવાની, પ્રતિક્રમણ કરવાની, વગેરે વિધિઓ પૃથક્-પૃથક્ અસ્તિત્વમા હતી તે બધી એક કરવામાં આવી.

(૩) શ્રી અ. ભા. શ્વે. સ્થા જૈન કોન્ફરન્સ તરફથી અભિપ્રાયાર્થે બહાર પાડવામા આવેલ સમાચારીને નજર સમક્ષ રાખીને 'સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણસંઘ' ની સમાચારી તૈયાર કરવામા આવી

(૪) બૃહદ્ સાધુ-સમ્મેલનમા હાજરી આપવા માટે સૌરાષ્ટ્ર જૈન વીર શ્રમણ સંઘ વતી પ્રતિનિધિઓ મોકલવાનો નિર્ણય કરવામા આવ્યો, (પ્રતિનિધિઓના નામો લગભગ નક્કી થયા હતા. જે મળ્યે આગામી અંકમાં પ્રગટ કરવામા આવશે.) પ્રતિનિધિ મુનિરાજો મહા શુદમા લીંબડી મુકામે ભેગા થશે અને ત્યાથી એક સાથે સાદડી તરફ વિહાર કરશે. આ પ્રતિ-નિધિઓ આ સંઘનું દૃષ્ટિબિંદુ બૃહદ્ સાધુ-સમ્મેલનમા રજુ કરશે

(૫) આ પ્રસંગે મોટા ભાગના સંપ્રદાયના પ્રતિનિધિ શ્રાવકો પણ આવ્યા હતા, તેમની સાથે વિચાર-વિનિમય થયા બાદ આ શ્રમણસંઘને સહાયક થવા માટે નીચે મુજબ [illegible] શ્રાવક સમિતિ નીમવામા આવી હતી.—

લીંબડી મોટા ઉપાશ્રય :—(૧) લલ્લુભાઈ ના[illegible] લીંબડી (૨) શ્રી જાદવજીભાઈ મગનલાલ વકીલ, સુ[illegible] (૩) શ્રી કહાનદાસ જીવરાજ કોઠારી, જેતપુર (૪) શ્રી [illegible] ભાઈ વાલજી, વાંકાનેર (૫) શ્રી રતિલાલ ભગવાનજી માંડ[illegible]

લીંબડી સંઘવી ઉપાશ્રય :—શ્રી પ્રેમચંદ ભ[illegible] સંઘવી લીંબડી (૨) શ્રી પાનાચંદ ગોબરભાઈ વોરા, વઢવા[illegible]

ગોંડલ મોટા સમ્પ્રદાય—(૧) શ્રી રામજીભાઈ [illegible] ભાઈ વિરાણી હા શ્રી દુર્લભજીભાઈ વિરાણી રાજકોટ [illegible] જેઠાલાલ પ્રાગજીભાઈ રૂપાણી, જુનાગઢ (૩) શ્રી [illegible] ભાઈચંદ ગોડા, ગોંડલ (૪) શ્રી નાથાલાલ ઝવેરચંદ [illegible] જેતપુર.

ગોંડલ સંઘાણી ઉપાશ્રય—રા. બ. શ્રી મો[illegible] પોપટભાઈ, રાજકોટ

બોટાદ સમ્પ્રદાય—(૧) શ્રી ગાડાલાલ નાગરદાસ બોટાદ (૨) શ્રી પ્રભુદાસ વશરામ, લાઠી (૩) શ્રી ચી[illegible] પ્રેમચંદ વલ્લભ ગોપાણી, પાળીયાદ (૪) શ્રી જગજીવન બગડીઆ, દામનગર.

સાયલા સમ્પ્રદાય—શ્રી છોટાલાલ મગનલાલ [illegible] સાયલા.

બરવાળા સમ્પ્રદાય—ના નામો આવવા બ[illegible]

આ સમિતિના મંત્રીઓ તરીકે શ્રી જાદવજીભાઈ મ[illegible] વકીલ અને શ્રી રતિલાલભાઈ ભાઇચંદ ગોડા નિયુક્ત [illegible]

જે સમેલન મેળવવા માટે કોન્ફરન્સને અને સાધુ-નિયોજન સમિતિને વધુમા વધુ પ્રયત્ન કરવો પડ[illegible] જે સમેલનની તારીખો ત્રણ ત્રણ વખત બદલવી પ[illegible] સમેલનમા થયેલ કાર્યવહી ઉપર મુજબ છે

જે 'સંઘ ઐક્ય યોજના'ને સૌરાષ્ટ્રના સંપ્રદાયોએ આપી છે. જે સંઘ-ઐક્ય યોજના તેઓએ સ્વીકાર[illegible] શ્રી સૌરાષ્ટ્ર જૈન વીર શ્રમણસંઘ વળગી રહેશે, એમ [illegible] પંચમહાવ્રત ધારી મુનિરાજો માટે ભાગ્યે જ જરૂર રહે

શ્રી સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણ સંઘ

દ્વિતીય અધિવેશન –વાંકાનેર–

સંવત્ ૨૦૧૦ ચૈત્ર શુદ ૨ રવિવાર તા. ૪-૪-૧૯૫૪

ભૂમિકા

આજથી બે વર્ષ પૂર્વે એટલે કે સંવત ૨૦૦૮ના પોષ વદમાં "શ્રી સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણ સંઘ" નો ઉદ્ભવ શ્રી સુરેન્દ્ર નગર મુકામે થતો હતો. ત્યારે તેના પ્રેરક તરીકે અ.ભા શ્વે. સ્થા જૈન કોન્ફરન્સે શ્રી સાદડી મુકામે ભરાનાર સાધુ સંમેલનને નિમિત્તરૂપ બનાવેલ અને સૌરાષ્ટ્રમા વિચરતા સાધુજીઓને એ સંમેલનમા ભાગ લેવા સંગઠિત થવાની કોન્ફરંસે નિનંતિ કરેલ તે મુજબ સૌરાષ્ટ્રના મુખ્ય સંપ્રદાયો સુરેન્દ્રનગરમાં ભેગા થયા હતા. કોન્ફરન્સે વિચારણા માટે રજુ કરેલ 'વીરસંઘ' ની યોજના, તે વખતે સૌરાષ્ટ્ર સાધુ સંમેલન માટે મુખ્ય વિચારણીય મુદ્દો હતો

પાચ પાંચ દિવસની સતત વિચારણા પછી એ સાધુસમેલનમાં એવો નિર્ણય થયો હતો કે 'વીર સંઘની યોજના સુંદર હોવા છતાં, વર્તમાન કાળે તેનો અમલ થઈ શકે તેમ નથી' છતા પણ નિરાશાવાદી સૂર ન કાઢતા સૌરાષ્ટ્ર સાધુ સમેલને તે વખતે વીર સંઘની યોજનાને અનુરૂપ થવા, પૂર્વ તૈયારી રૂપે સૌરાષ્ટ્ર પૂરતું સંગઠન કેમ કરી શકાય તેનો વ્યવહારુ ઉકેલ કર્યો હતો.

પરંતુ અનુકૂળ સંજોગોના અભાવે, તે વખતે સૌરાષ્ટ્ર સાધુ સમેલનની કાર્યવાહીનો અમલ થઈ શકયો નહિ. દરમિયાન સાદડી મુકામે સાધુ સંમેલન ભરાઈ ગયુ અને ત્યા શ્રી વર્ધમાન શ્રમણ સંઘની સ્થાપના થઈ. સૌરાષ્ટ્ર પ્રાંતના સાધુજીઓનો યથાશકય સહકાર ન મળવાથી બધાને જરા ઊણપ જેવું લાગ્યુ એટલે કોન્ફરન્સે ફરીને સૌરાષ્ટ્ર સાધુ સંમેલન ભરાવી તેનો યોગ્ય નિર્ણય લેવાની જાહેર અપીલ કરી ......કેટલીક આટીઘુટી, કેટલાક મતભેદો હોવા છતા પણ આખરે વાંકાનેર મુકામે સૌરાષ્ટ્ર સાધુ સમેલન ભરાવાનું નકકી થયું આ સંમેલનમાં બે મુદ્દાઓની વિચારણા કરવાનુ અગાઉથી સ્પષ્ટ કર- કરવામા આવ્યું હતુ તે મુદ્દાઓ નીચે મુજબ છે:—

(૧) સુરેન્દ્રનગરમા મળેલ સૌરાષ્ટ્ર સાધુ સંમેલનની કાર્યવાહીને અમલી બનાવવા તેમ જ સૌરાષ્ટ્રના સાધુ સંપ્રદાયોનુ સંગઠન કરવા તેમ જ પરસ્પર આતરિક સહૃદયતા સ્થાપિત કરવાનો નિર્ણય કરવા.

(૨) સાદડીમા અખિલ ભારતીય સાધુ સંમેલન બોલાવીને જે અખિલ ભારતીય નિર્ણય લેવામાં આવ્યો છે અને એ અંગેનું જે બંધારણ ઘડી કાઢવામા આવેલ છે એના ઉપર વિચાર કરી યોગ્ય નિર્ણય કરવો

ઉપરના બે મુદ્દાઓ આ સમેલનનો ખાસ હેતુ છે. એક દૃષ્ટિએ વિચારીએ તો અમારું આ સમેલન એ "શ્રી સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણ સંઘ"નું દ્વિતીય અધિવેશન ગણી શકાય. અને બીજી રીતે વિચારીએ તો આજથી સૌરાષ્ટ્રના ભિન્ન-ભિન્ન સંપ્રદાયોનું વ્યવસ્થિત સંગઠન થવાના પગરણ રૂપે આ એક અનોખી બેઠક છે

સૌરાષ્ટ્રવાસી સ્થાનકવાસી જૈનોને અનુભવ છે કે અહીં જુદા સંપ્રદાયો હોવા છતા પરસ્પર સહકાર અને સુમેળની ભાવના કાયમ બની રહે છે. અહીં સંગઠન જ છે. પરંતુ તેને વ્યવસ્થિત અને દૃઢમૂળ કરવાની તક લેવામા આવી ન હતી... આજે અમો ભેગા થયા. પરસ્પર ખુલ્લા દિલથી ચર્ચાઓ કરી પરિણામે હવે અમો વધુને વધુ નજીક આવ્યા છીએ. એટલે સૌરાષ્ટ્રના સાધુ સમેલનનો પહેલો મુદ્દો તો આપોઆપ સહજ ભાવે સિદ્ધ થઈ ગયો છે. એટલે કે સુરેન્દ્રનગર મુકામે જે કાર્યવાહી થઈ હતી તેના મંડાણ ઉપર જ આજનું અમારૂ કાર્ય શરૂ થયેલ છે. ટૂંકામા તેનું સ્વરૂપ નીચે મુજબ છે:—

સૌરાષ્ટ્રમા કુલ સાત સંપ્રદાયો છે:—૧. લીંબડી (મોટો) સંપ્રદાય ૨ લીંબડી (નાનો) સંપ્રદાય, ૩. ગોંડળ સંપ્રદાય ૪. ગોડળ (સંઘાણી) સંપ્રદાય, ૫ બોટાદ સંપ્રદાય, ૬. બરવાળા સંપ્રદાય, ૭ સાયલા સંપ્રદાય.

આ સાત સંપ્રદાયોના સાધુજીઓ પૈકી આજે અહીં મુખ્ય ચાર સંપ્રદાયના સાધુજીઓ પધારેલ છે,

લીંબડી સંપ્રદાય— (મોટો)—તપસ્વી મહારાજ શ્રી ...જી સ્વામી, કવિવર્ય પં. મહારાજશ્રી નાનચંદ્રજી સ્વામી.

. **ગોંડળ સંપ્રદાય—પૂ.** સાહેબશ્રી પુરૂષોત્તમજી સ્વામી.

. **બોટાદ સંપ્રદાય-પં.** મહારાજશ્રી શિવલાલજી મહારાજ

. **લીંબડી સમ્પ્રદાય**—(નાનો) પં મહારાજશ્રી કેશવલાલજી સ્વામી.

બાકી રહેલ બરવાળા સંપ્રદાયની સંમતિ મેળવી લઈશું ...ે સાયલા સંપ્રદાયનું પ્રતિનિધિત્વ લીંબડી મોટા સંપ્રદાયને ...યું છે. સુરેન્દ્રનગરમાં સ્થપાએલ "શ્રી સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણ ...ઘ" ના પ્રવર્તક મુનિરાજોની અહીં હાજરી છે વધારામાં ...જે અહીં પં. મહારાજ શ્રી કેશવલાલજી સ્વામીને પ્રવર્તક ...ક સામેલ કરવામાં આવેલ છે. એટલે નીચે મુજબ ચાર ...ર્તક મુનિરાજોએ આ સંમેલનનું સફળ સંચાલન કરેલ છે

...—કવિવર્ય પં. શ્રી નાનચંદ્રજી સ્વામી (લીંબડી સંપ્રદાય)
...—પૂજ્ય સાહેબ શ્રી પુરૂષોત્તમજી સ્વામી (ગોંડલ સંપ્રદાય)
...—પં. મહારાજ શ્રી શીવલાલજી સ્વામી (બોટાદ સંપ્રદાય)
...—પં. શ્રી કેશવલાલજી સ્વામી (લીંબડી નાનો સંપ્રદાય)

—:સંમેલનની કાર્યવાહી.—

તપસ્વી મહારાજ શ્રી શામજી સ્વામીની સાન્નિધ્યમાં મંગળ ...ધાન પૂર્વક ઉપર મુજબના ચારે પ્રવર્તક મુનિરાજોએ કાર્ય ...રૂ કર્યું તેની સંક્ષિપ્ત નોંધ નીચે પ્રમાણે છે.—

સૌથી પહેલા સૌરાષ્ટ્રના સંગઠનનો મુદ્દો સુંદર રીતે ચર્ચાઈ ...યા બાદ, સાદડી સંમેલનમાં લેવાયેલ અ૦ ભા૦ નિર્ણય ઉપર ...ચારણા કરી નીચે મુજબ નિર્ણય કરવામાં આવ્યો.

જ્યાં સુધી 'સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણ સંઘ' નું સંગઠન મજબૂત ...અને સ્થાયી ન બને ત્યાં સુધી વર્ધમાન શ્રમણ સંઘ પ્રત્યે ...અમારી સહાનુભૂતિ છે. એટલે જ સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણસંઘ તેને ...અનુરૂપ થવા બે પ્રકારની વિચારધારાનો સુનિશ્ચિત રૂપે સ્વીકાર ...રે છે: તે નીચે મુજબ—

(૧) સંપ્રદાયોનું વિલીનીકરણ કરવું.

(૨) સંપ્રદાયોનું અસ્તિત્વ કાયમ રાખી સમીકરણ કરવું. સમીકરણ કરવું એટલે સંપ્રદાયમોહ છોડી દઈ પરસ્પર આત્મીયતા કેળવવી

અમો એમ ભારપૂર્વક માનીએ છીએ કે, સંપ્રદાયોનું વિલીનીકરણ સૌથી વિશેષ જરૂરનું છે અને તે થવું જ ઘટે, પરંતુ તેવું વિલીનીકરણ થવા પહેલાં, દરેક સંપ્રદાયના શ્રાવક-સંઘનું એકીકરણ અનિવાર્ય છે એવા નિર્ણય ઉપર અમો આવેલ છીએ. એટલે કે દરેક સંપ્રદાયના આગેવાન શ્રાવકો પોતપોતાના સંઘને લગતું વહીવટી તંત્ર એક જ સંસ્થાના નામે કરે એમ અમે શ્રીસંઘોને ભલામણ કરીએ છીએ અને તેઓ એવું વહીવટી તંત્ર જ્યાં સુધી ન કરે ત્યાં સુધી અમારો અનુભવ અમોને કહે છે કે સૌરાષ્ટ્રના સાધુ-સમ્પ્રદાયોનું વિલીનીકરણ અમલી બનવું શક્ય નથી. હવે જ્યાં સુધી આ રીતે દરેક સંપ્રદાયના શ્રાવક સંઘો પોતાના વહીવટી તંત્રનું એકીકરણ કરીને અમોને ખાતરી ન આપે ત્યાં સુધી અમારા માટે (સાધુ-સંસ્થા માટે) સમીકરણની યોજનાનો અમલ કરવાનો છે

સમીકરણની યોજનાનો અમલ કરવા માટે, ચારે પ્રવર્તકની બનેલ સંયુક્ત સમિતિ 'શ્રી સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણ સંઘ' નું ઉદાર અને વ્યાપક દૃષ્ટિએ સંચાલન કરશે તંત્રના સફળ સંચાલન માટે, પ્રધાન પ્રવર્તક તરીકે, સમિતિ કવિવર્ય પં મહારાજશ્રી નાનચંદ્રજી મહારાજને નીમે છે.

"સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણ સંઘ" ના ધારા-ધોરણોને અમલી બનાવવા તેમ જ શ્રી ચતુર્વિધ સંઘ રૂપ શાસનના યોગ-ક્ષેમનું વહન કરવા માટે 'અમ્માપિયા' સમાન શ્રાવક વર્ગની પણ અનિવાર્ય જરૂર રહે છે તેથી ચારે પ્રવર્તક મુનિરાજોએ, દીર્ઘ-દૃષ્ટિથી વધારે સભ્યો ઉમેરવાની સત્તા સાથે નીચે મુજબ સલાહકાર શ્રાવક-સમિતિ નિયુક્ત કરેલ છે.

લીંબડી સમ્પ્રદાય મોટો—(કુલ સભ્યો ૮)

૧ શેઠ શ્રી લલ્લુભાઈ નાગરદાસ, લીંબડી
૨. શ્રી પ્રાણલાલ મગનલાલ શાહ, લીંબડી

૩. ,, ચમનલાલ મોતીચંદ, લીંબડી
૪. ,, જાદવજી મગનલાલ વકીલ, સુરેન્દ્રનગર
૫. ,, કહાનદાસ જીવરાજભાઈ, જેતપુર (કાઠીનું)
૬. ,, દીપચંદ વાલજીભાઈ, વાંકાનેર
૭ ,, રવિલાલ ભગવાનજી, કચ્છ-માંડવી
૮ ,, પ્રાણલાલ ચુનીલાલ મહેતા

લીંબડી સમ્પ્રદાય નાનો—(કુલ સભ્યો ૫)

૧. શ્રી પ્રેમચંદ ભુરાભાઇ, લીંબડી
૨. ,, પાનાચંદ ગોબરભાઇ, વઢવાણ શહેર
૩ ,, ભગવાનજી ભાઇચંદ સંઘવી, વાંકાનેર
૪. ,, મંગળજી જીવરાજ, ધ્રાંગધ્રા
૫. રાવસાહેબ મણીલાલ ત્રિભુવન બોરડિયા, સુરેન્દ્રનગર

ગોંડલ સમ્પ્રદાય—(કુલ સભ્યો ૭)

૧. શ્રી રતિલાલ ભાઈચંદ ગોડા, ગોંડલ
૨. ,, રામજીભાઈ શામજીભાઈ વિરાણી, રાજકોટ
૩. ,, જેઠાલાલ પ્રાગજીભાઈ રૂપાણી. જુનાગઢ
૪ ,, ભગવાનજી રતનશી, જામનગર
૫ ,, નાથાભાઇ ઝવેરચંદ, જેતપુર
૬ ,, દુર્લભજી શામજી વીરાણી
૭ ,, જગજીવન જુઠાભાઈ કોઠારી, રાજકોટ

ગોંડલ સંઘાણી સમ્પ્રદાય—(કુલ સભ્યો ૨)

૧ શ્રી મોહનલાલ પોપટલાલભાઈ શાહ, રાજકોટ
૨ ,, મગનલાલ વજેશંકર સંઘાણી, ગોંડલ

બોટાદ સમ્પ્રદાય—(કુલ સભ્યો ૫)

શ્રી નાનાલાલ ભુદરભાઈ દોશી
૨. ,, અમૃતલાલ માણેકચંદ, બોટાદ
૩. ,, મોહનલાલ દીપચંદ શાહ, બોટાદ
૪, ,, પ્રભુદાસ વશરામ, લાઠી
૫. ,, વનેચંદ દામોદર શેઠ દામનગર

બરવાળા સમ્પ્રદાય—(સભ્ય ૧)

૧. શ્રી છબીલદાસ ચુનીલાલ, બરવાળા

સાયલા સમ્પ્રદાય—(કુલ સભ્યો ૨)

૧. શ્રી છોટાલાલ મગનલાલ દેશાઇ, સાયલા
૨. શ્રી રતિલાલ ઓધવજી ખારા, સાયલા

ઉપરની સલાહકાર શ્રાવક-સમિતિમાંથી નીચેના સભ્યોની એક વિલીનીકરણ સમિતિ નીમવામા આવે છે :—

ઉપરોક્ત શ્રાવક સમિતિના સંયોજક તરીકે શ્રી નાથાભાઇ ઝવેરચંદ નામદાર તથા શ્રી કહાનદાસ જીવરાજભાઈ કોઠારી નીમવામાં આવે છે.

૧. શ્રી જાદવજીભાઈ મગનલાલભાઈ વકીલ, સુરેન્દ્રનગર
૨. ,, કહાનદાસભાઈ જીવરાજભાઈ કોઠારી, જેતપુર(કાઠીનુ)
૩. ,, પ્રાણલાલ મગનલાલ શાહ, લીંબડી
૪ ,, નાથાભાઈ ઝવેરચંદ, જેતપુર
૫. ,, જેઠાલાલ પ્રાગજી રૂપાણી, જુનાગઢ
૬. ,, રતિલાલ ભાઇચંદ ગોડા, ગોંડલ
૭ રા મોહનલાલ પોપટભાઈ શાહ, રાજકોટ
૮. શ્રી પ્રેમચંદ ભુરાભાઈ, લીંબડી
૯. ,, ભગવાનજી ભાઇચંદ સંઘવી, વાંકાનેર
૧૦ રાવ સાહેબ મણીલાલ ત્રિભોવન બોરડિયા, સુરેન્દ્રનગર
૧૧. શ્રી અમૃતલાલ માણેકચંદ, બોટાદ
૧૨. ,, જગજીવન જૂઠાભાઈ કોઠારી, રાજકોટ
૧૩. ,, દુર્લભજી શામજી વીરાણી, રાજકોટ
૧૪ ,, છોટાલાલ મગનલાલ દેશાઇ, સાયલા
૧૫. ,, છબીલદાસ ચુનીલાલ, બરવાળા

સમાચારી

સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણસંઘની સમાચારી જે સુરેન્દ્રનગર મુકામે નક્કી થઇ હતી તેમા નામનો સુધારો વધારો કરી તે જ (સમાચારી) સ્વીકારવામા આવેલ છે.

સર્વાનુમતે પસાર થયેલા ઠરાવો

ઉપરની કાર્યવાહી ઉપરાંત સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણસંઘે નીચેના ઠરાવો સર્વાનુમતે સ્વીકારેલ છે

(૧) સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણસંઘના કોઈ પણ સમ્પ્રદાય સાધુ કે સાધ્વીએ ચોથા વ્રતના ખંડન રૂપ મહાન દોષ સેવ્યો છે એવી તે તે સમ્પ્રદાયના શ્રી પ્રવર્તક મુનિરાજને જાણ થાય ત્યાર યોગ્ય તપાસ કરતાં, પોતાના અભિપ્રાયમાં તે સાધુ કે સાધ્વી દોષિત લાગે તો સમ્પ્રદાયના રિવાજ પ્રમાણે જે પ્રાયશ્ચિત્ત આપવુ ઘટે તે આપવુ અને આપેલ પ્રાયશ્ચિત્ત જો દોષિત સાધુ કે સાધ્વી ન સ્વીકારે તો પ્રવર્તક મુનિરાજે આગેવાન શ્રાવકોની હાજરીમા એવા દોષિતનો વેષ ઉતરાવી લેવો.

(૨) સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણ સંઘના કોઇ પણ સમ્પ્રદાયો પોતાના સાધુ કે સાધ્વીને દોષિત તરીકે જાહેર કરેલ હોય, અગર સમ્પ્રદાયમાથી અલગ કર્યાં હોય અગર કોઈ સાધુ કે સાધ્વી સ્વચ્છંદે છૂટા થયેલ હોય તો એવા સાધુ કે સાધ્વીને શ્રી ચતુર્વિધ સંઘ પ્રાયશ્ચિત્ત આપવાની શરતે યોગ્ય લાગે તો સમ્પ્રદાયમાં ભેળવવા પ્રયત્ન કરે છતાંય જો એવા દોષિત સાધુ કે સાધ્વી સમ્પ્રદાયમાં ભળવા ના પાડે, તો તેઓને શ્રી ચતુર્વિધ સંઘે કોઇ પણ પ્રકારની સહાયતા આપવી નહિ.

(૩) સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણસંઘના કોઇ પણ સમ્પ્રદાયમાથી કોઇ પણ સાધુ કે સાધ્વીને ભૂતકાળમા સમ્પ્રદાય બહાર કરેલ હોય અગર ભવિષ્યમા સમ્પ્રદાય બહાર કરવામા આવે તો એવા સાધુ કે સાધ્વીને કોઇ પણ ગામના સંઘે પીઠબળ રૂપે કોઇ પણ જાતનો સહકાર આપવો નહિ છતા પણ જો કોઇ ગામનો સંઘ કોઇ પણ જાતનુ પીઠબળ આપે છે તેવુ જણાશે તો તે ગામનો શ્રી સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણસંઘના સાધુ-સાધ્વીજીઓ બહિષ્કાર કરશે એટલે કે તે ગામમા જવુ-આવવું બંધ કરશે.

અપવાદ—જો તે જ ગામમાં કોઇ અશકત સાધુ-સાધ્વીજી બિરાજતા હોય તો તેનો આગાર છે.

(૪) સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણસંઘના કોઇ પણ સાધુ સાધ્વીજી પ્રત્યે કોઇ પણ ગામનો શ્રાવક-સમૂહ અપમાન-જનક અનુચિત વર્તન કરે અને સમ્પ્રદાયના પ્રવર્તક મુનિરાજ તરફથી તેની જાણ થાય તો જ્યાં સુધી તે ગામના શ્રીસંઘ સાથે સંતોષકારક સમાધાન ન થાય ત્યા સુધી સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણ સંઘના કોઇ પણ સાધુ-સાધ્વીજીએ તે ગામમા ચાતુર્માસ કરવું નહિ.

(૫) પરિગ્રહવૃત્તિનો ત્યાગ કરવા ખાતર, સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણ સંઘના કોઇ સાધુ-સાધ્વીજી પાસે છપાયેલ પુસ્તકોનો ભંડાર હોય તો તેમાથી પોતાને જરૂરના પુસ્તકો રાખી બાકીના, પોતાની મરજી મુજબ કોઇ પણ ગામના શ્રીસંઘને સદુપયોગ માટે અર્પણ કરી દેવા.

(૬) વસ્ત્ર, પાત્ર, ઉપધિ જેની પાસે જે જે હોય તે જ્યા સુધી ચાલે ત્યાં સુધી નવા લેવા નહિ. કોઈ વસ્તુ ન હોય તે જરૂર પડયે લેવી પડે તો જુદી વાત છે પરંતુ સંગ્રહબુદ્ધિથી લેવું નહિ.

(૭) જ્યાં સુધી શ્રી વર્દ્ધમાન શ્રમણ સંઘ તરફથી કોઇ પણ જાતનો નિર્ણય બહાર પડે નહિ ત્યા સુધી શ્રી સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણ સંઘના સાધુ-સાધ્વીજીએ ધ્વનિવર્ધક યંત્ર (લાઉડ-સ્પીકર) નો ઉપયોગ કરવો નહિ.

(૮) જે સ્થાનમાં કે ઉપાશ્રયમાં સાધુ-સાધ્વીજી બિરાજતા હોય ત્યા વીજળીની બત્તી કે કોઇ બીજી બત્તીનો ખાસ કારણ સિવાય ઉપયોગ થવા દેવો નહિ.

(૯) સૂર્યાસ્ત પછી, સ્થાનક કે ઉપાશ્રયના કમ્પાઉન્ડમાથી બહાર જઇ ખાસ અપવાદ સિવાય જાહેર પ્રાર્થના કે પ્રવચન કરવા નહિ.

(૧૦) આપણા બત્રીસ સિદ્ધાન્ત પૈકી કોઇ સિદ્ધાન્ત શ્રાવકો છપાવે તો તેમા સાધુ-સાધ્વીજીના ફોટા ન હોવા જોઇએ.

(૧૧) દીક્ષા વખતે સમવસરણમા સૂત્રનો ખરડો કરવો નહિ આગળ થયો હોય (પર્સ નિમિત્તે) તો તે રકમની વ્યવસ્થા જો દીક્ષા પોતની ધરથી આપવાની હોય તે તેના વડીલો પોતાની ઇચ્છા પ્રમાણે તેનો ઉપયોગ કરે અને જો સંઘ તરફથી દીક્ષા આપવાની હોય તો તેની વ્યવસ્થા સંઘ કરે.

(૧૨) સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્રમણ સંઘમા સંકળાયેલ સાતે સંપ્રદાયના તમામ સાધુ-સાધ્વીઓએ બાર સંભોગો (વ્યવહારો) પૈકી બે સિવાય (૧ આહાર-પાણી તથા ૨ શિષ્ય સેવા-દેવા)

આકીના દસ સંભોગો પરસ્પર ખુલ્લાં રાખવા—ને દસ સંભોગ નીચે મુજબ છે:—

૧. વસ્ત્ર ઉપધિ પાત્રનુ લેવું દેવુ.
૨. સૂત્ર સિદ્ધાન્તની વાચણી લેવી દેવી
૩. નમસ્કાર કરવા કે ખમાવવુ.
૪ બહારથી આવ્યે ઊભા થવું.
૪. વૈયાવચ્ચ કરવો
૬. એક ઠેકાણે ઉતરવુ.
૭. એક આસને બેસવું.
૮ સાથે વ્યાખ્યાન આપવુ.
૯. સાથે સાથે સ્વાધ્યાય કરવો
૧૦. પ્રતિક્રમણ સાથે કરવું.

(૧૩) સૌરાષ્ટ્ર વીર શ્ર ણસંઘના સાધુ-સાધ્વીજીએ પાટ, ગાદી, પગલાં, ફોટા વગેરેની જડ માન્યતા કરવી-કરાવી નહિ. તેમ જ પગે લાગવુ નહિ. તેમ જ શ્રાવકોને આવી પ્રવૃત્તિ કરતા રોકવાનો બોધ કરવો

(૧૪) કોઈ ગામ અથવા શહેરમા સાધ્વીજીનું ચાતુર્માસ નિશ્ચિત થાય અને પછી તે ગામ અથવા શહેરમા બિમારીના કારણે મુનિરાજને રોકાવું પડે અથવા ત્યા સ્થવિર સાધુજી બિરાજતા હોય ત્યારે આર્યાજી પોતે વ્યાખ્યાન વાચવાની અરજ કરે તો મુનિશ્રીએ આર્યાજીને વ્યાખ્યાન વાચવાની આજ્ઞા આપવી.

(૧૫) દોરા, તાવીજ, જડી, બુટીનો ઉપયોગ સાધુ-સાધ્વીજીએ કરવો નહિ, તથા જ્યોતિષ, ઔષધાદિ ક્રિયાના ઉપયોગ ગૃહસ્થ માટે કરવો નહિ, ખાસ કરીને સાધુ જીવનને દૂષણ લાગે તેવા પ્રયોગ ન કરવા.

(૧૬) ક્ષેત્ર-સ્પર્શના પ્રમાણે, અનુકૂલ સમયે પ્રવર્તક મુનિરાજોએ ત્રણ ત્રણ વર્ષે ભેગા થવુ છતા પણ કોઈ સ જોગમા ટૂંકી મુદ્દતમા ભેગા થવાની મુખ્ય પ્રવર્તક મુનિરાજને જરૂર જણાય ત્યારે તેઓના આદેશ મુજબ ભેગા થવું.
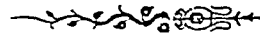
સુધારો

પૃષ્ઠ સાત ઉપર કોલમ પહેલામાં છેલ્લા બે પેરેગ્રાફ—"અહિંસા સત્ય-વગેરે" ભૂલથી છપાયા છે તેને બદલે આ પ્રમાણે વાચવું—"અહિંસા, સત્ય, અસ્તેય, બ્રહ્મચર્ય, અપરિગ્રહ, તૃષ્ણા-નિવૃત્તિ વગેરે માટે શ્રી બુદ્ધ ઉપદેશ આપતા હતા, કિંતુ તેમની દૃષ્ટિ ભગવાન મહાવીર જેવી ગહન ન હતી.